CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Pragati Mangusha Jan-June 1983 G.K.U.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

111896

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

भारतीय विदेश नीति

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रगति मंजूषा

प्रतियोगितात्मक परीक्षाओं हेतु सर्वाधिक लोकप्रिय मासिक

7 1179 Usha 26-3-83
77 20.1.83
446 Usha 9.9.83
(18)

पी. सी. एस. परीक्षा के लिये उपयोगी

- भारतीय बुद्धिजीवी (२)
- जनसंख्या वृद्धि एवं आर्थिक विकास
- भारत में राजनीतिक संस्थाओं का ह्रास
- अन्तरिक्ष प्रौद्योगिकी
- एशियाड-८२

111896

- बी.पी.एस.सी., सिविल सर्विसेज प्रारम्भिक परीक्षा, सुपरवाइजर कानूनगो परीक्षा हेतु महत्त्वपूर्ण सामग्री
- संक्षिप्त वार्षिक घटनाचक्र १९८२
- विश्व [illegible]

111896

॥नव वर्ष मंगलमय हो॥

सिविल सर्विस परीक्षा
बी.पी.एस.सी.
पी.सी.एस.(उ.प्र.)
वन सेवा
आर.एस.सी.
पी.एस.सी.(म.प्र.)
डी.एफ.पी.ओ.
भा. अर्थ सेवा

जनवरी १९८३

रु. 4·50

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बात जो आपसे कहनी है ....

मेरे स्नेही दोस्तों !

वर्ष 1982 और आपके मध्य का रिश्ता-जैसा भी और जो भी था—वह अब अतीत की पृष्ठभूमि का धरोहर बन चुका है। समय और व्यक्ति के मध्य का यह रिश्ता सदैव परिवर्तनशील रहेगा क्योंकि व्यक्ति की समग्र चेतना के विकास अथवा ह्रास के सम्बन्ध में समय निरपेक्ष सत्ता का अधिकारी कभी नहीं होता। सत्ता होती है मात्र मानव बोध की और वह भी व्यवस्था सापेक्ष। मानवीय दृष्टि से संवेदना शून्य वर्तमान व्यवस्था में मानव का यह बोध भी अब लुप्तप्राय है। स्थान ग्रहण कर रहा है 'अमानवीयकरण'। और यह स्थिति व्यक्ति की उस मूल चेतना को कभी स्वीकार्य नहीं होगी जिसने अपनी अस्मिता को सुरक्षित रखने हेतु आज से करोड़ों वर्ष किसी कालखण्ड में 'समाज' और 'व्यवस्था' बोध के बन्धन को स्वीकार किया था। स्थिति अस्वीकार्य का कारण ? यह कि इस बन्धन के परिवर्तित स्वरूपों में निरन्तर व्यक्ति की अस्मिता के मूल तत्वों पर प्रहार होता आया और अस्मिता असुरक्षित होती गयी। क्या आप इस असुरक्षा का अनुभव नहीं करते ? इसी असुरक्षा के उन्मूलन और व्यक्ति के बुनियादी अस्तित्व की स्थापना हेतु आप द्वारा किये जा रहे सर्जनात्मक प्रयासों को आपकी रचनात्मक क्रियाशीलता के माध्यम से निरन्तर सार्थक आयाम प्राप्त हो,.....यही अपने हज़ारों युवा दोस्तों को उनकी संघर्ष यात्रा के सहचर एक युवा दोस्त की तरफ से नववर्ष की शुभकामना है। यह सार्थक आयाम कैसे विस्तृत हो ? आपका यह प्रश्न स्वाभाविक है। इस सन्दर्भ में यहाँ इतना ही कहना उचित होगा कि एक प्रसिद्ध दार्शनिक के अनुसार "मानव के दो रूप है, एक वह जो घने अन्धकार में जागता है और दूसरा वह जो कि प्रकाश में भी सोता रहता है।" आप निराशा व्यक्त कर सकते है कि अंतःकरण की दृष्टि में आज चारों तरफ अंधकार ही अंधकार है, प्रकाश कहाँ ? आपका यह दृष्टिकोण निश्चित ही विश्वास के संकट से ग्रस्त है। आपका प्रकाश आपमें ही अंतर्निहित आत्मबल है। आप इससे अपरिचित है। शीघ्र इससे परिचय विस्तार कर लीजिये, इससे सशक्त सहचर आपके संघर्ष में कोई अन्य नहीं हो सकता। .....आप पुनः आशंका व्यक्त करेंगे—हमारी अस्मिता के विरुद्ध विस्तृत होती मूल्यहीन वर्तमान व्यवस्था। इस परिप्रेक्ष्य में मेरा यही विश्वास है कि जिस क्षण आप आत्मबल से युक्त हो जायेंगे उसी क्षण यह व्यवस्था आपके लिये शव होगी। आखिरकार हम नियोजक है तो नियोजित बन कर कब तक रहेंगे ?

उपर्युक्त प्रश्न का समाधान आप पर ही छोड़ कर मैं पुनः आपके समुज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुये आपको यह विश्वास दिलाता हूँ कि 'प्रगति मंजूषा' भी आपकी संघर्ष यात्रा के एक प्रमुख चरण में एक कर्तव्यनिष्ठ सहचर की भूमिका सदैव जीवंतता के साथ निर्वाह करती रहेगी ..... मेरे इन शब्दों को व्यावसायिक औपचारिकता के रूप में ग्रहण नहीं कीजियेगा—ऐसा मेरा अनुरोध है। क्योंकि 'प्रगति मंजूषा' का प्रकाशन भी संवेदना तथा संकल्प की पृष्ठभूमि में पोषित हो रहे एक मूक संघर्ष की निरंतरता है, जो कभी-कभी अभिव्यक्ति चाहने लगता है। पर, हृदय की बात को अधरों पर आने में समय लगता ही है। और यदि पारिवेशिक संतुलन के विरुद्ध मरुस्थल में विकसित हो रहा वृक्ष अपनी ही इतिवृत्ति लिखने लगेगा तो यह उसकी ही लघुता का बोध प्रदर्शित करेगा। .....फिर संघर्ष अभी अधूरा है,विकास अभी अपूर्ण है।

शेष फिर कभी ....

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

आपका शुभकांक्षी

सम्पादक

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जनवरी—1983

प्रगति मंजूषा

प्रतियोगितात्मक परीक्षाओं हेतु सर्वाधिक लोकप्रिय मासिक

[राष्ट्र की भाषा में राष्ट्र को समर्पित]

वर्ष—6

अंक—1

इस अंक का मूल्य—रु० 4.50

पृष्ठ संख्या—96

सम्पादक
रतन कुमार दीक्षित

सह-सम्पादक
प्रदीप कुमार वर्मा 'रूप'

उप-सम्पादक
जी. शंकर घोष, राकेश सिंह सेंगर

मुख्य कार्यालय
436, मम्फोर्डगंज
इलाहाबाद-211002

शाखा जन सम्पर्क
ए-7, प्रेम एन्क्लेव
साकेत, नई-दिल्ली

डी. 47/5, कबीर मार्ग,
क्ले स्क्वायर, लखनऊ

विज्ञापन सम्पर्क-सूत्र।
169/20 ख्यालीगंज, लखनऊ
दूरभाष : 43792

आवरण : कोलोरैड, इलाहाबाद
कलाकृति : सौजन्य : 'नवनीत', बम्बई

चन्दे की दर
वार्षिक : रु. 44.00, अर्द्ध वार्षिक : रु. 22.00
सामान्य अंक (एक प्रति) : रु. 4.00
(चन्दा मनीआर्डर द्वारा मुख्य कार्यालय को ही भेजें)

©पत्रिका में प्रकाशित सामग्री का सर्वाधिकार प्रकाशक के अधीन सुरक्षित है। पत्रिका में प्रकाशित लेखों के विचारों से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

विशेष आकर्षण

■ संक्षिप्त वार्षिक घटनाचक्र-1982/2
■ विश्व राजनीति समीक्षा-1982/17
■ नवम् एशियाई खेल : संक्षिप्त अवलोकन/73
■ बी.पी.एस.सी. (बिहार) तथा सुपरवाइजर, कानूनगो (उ. प्र.) परीक्षा हेतु सामान्य ज्ञान का मॉडल प्रश्न-पत्र (3)/44

परीक्षोपयोगी महत्वपूर्ण निबन्ध

■ भारतीय बुद्धिजीवी (2)/33
■ जनसंख्या वृद्धि एवं आर्थिक विकास/37
■ अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी के विविध आयाम/49
■ भारत में राजनीतिक संस्थाओं का ह्रास : क्यों और कैसे ? /53
■ सोवियत विदेश नीति के संभावित आयाम/63
■ भारतीय विदेश नीति : ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में (1) /65

स्थायी स्तम्भ

■ क्षेत्रीय संगठन/25
■ भारतीय संविधान/27
■ सामान्य अध्ययन वस्तुपरक परीक्षण/29
■ व्यक्तित्व विकास/41
■ विचार दर्शन/42
■ क्रीड़ा जगत/80
■ Focus on Banking/Civil/Defence Services Examination / 81

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पूर्ण वार्षिक घटनाचक्र

1982

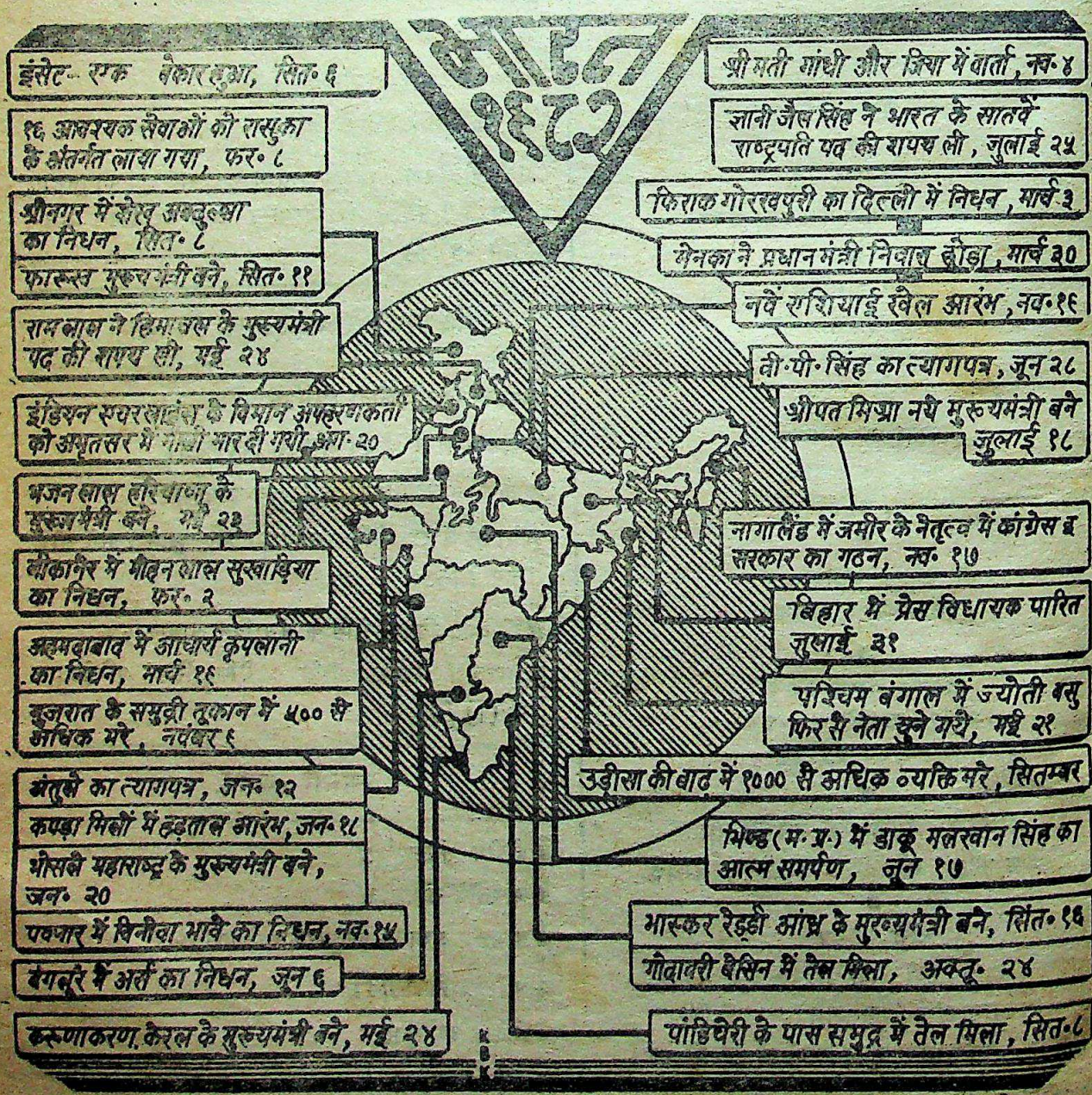

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

? कौन, कहाँ, क्या (भारत)

(31-12-82 तक सामयिक)

केन्द्रीय सरकार

राष्ट्रपति— ज्ञानी जैल सिंह
उप-राष्ट्रपति — मोहम्मद हिदायतुल्लाह

केन्द्रीय मंत्रिमण्डल

प्रधान मंत्री तथा समस्त अवितरित विभाग [परमाणु ऊर्जा, अंतरिक्ष विज्ञान एवं टेक्नालॉजी सहित]— श्रीमती इंदिरा गाँधी
गृह— प्रकाश चन्द्र सेठी
विदेश— पी. वी. नरसिंह राव
वित्त— प्रणव कुमार मुखर्जी
रक्षा— आर. वेंकटरमन
योजना— एस. बी. चव्हाण
रेल— अब्दुल गनी खाँ चौधरी
संचार— वसन्त साठे ~~अनन्त प्रसाद शर्मा~~
उद्योग, इस्पात और खनिज— नारायण दत्त तिवारी
कृषि— राव वीरेन्द्र सिंह
सिंचाई— ~~केदार पाण्डे~~
रसायन व उर्वरक— वसन्त साठे
ऊर्जा, कोयला एवं पेट्रोलियम— शिव शंकर
परिवहन एवं जहाजरानी— ~~सी. एम. स्टीफेन~~
विधि, न्याय और कम्पनी कार्य— जगन्नाथ कौशल
श्रम और पुनर्वास— वीरेन्द्र पाटिल
सार्वजनिक निर्माण, आवास एवं संसदीय मामलें— ~~भीष्म नारायण सिंह~~
स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण— बी. शंकरानन्द

केन्द्रीय राज्य मंत्री (स्वतंत्र विभाग वाले)

सूचना एवं प्रसारण— एन. के. पी. साल्वे
शिक्षा व समाज कल्याण— श्रीमती शीला कौल
पर्यटन — खुर्शीद आलम खान
वाणिज्य— शिवराज पाटिल
नागरिक उड्डयन, नागरिक आपूर्ति —भगवत झा आजाद
आपूर्ति, खेल-कूद— बूटा सिंह

केन्द्रीय राज्य मंत्री

श्रम और पुनर्वास — श्रीमती मोहसिना किदवई
वित्त— एस. एस. पट्टाभि रामाराव
कृषि— आर. वी. स्वामीनाथन
कृषि— बालेश्वर राम
रेल— सी. के. जफर शरीफ
विदेश— ए. ए. रहीम
निर्माण, आवास व संसदीय मामले—एच. के. एल. भगत
गृह— एन. आर. लस्कर
गृह— पी. वेंकट सुब्बैया
संचार— योगेन्द्र मकवाना
सिंचाई— जेड. ए. अंसारी
ऊर्जा— विक्रम महाजन
ऊर्जा— दलबीर सिंह
जहाजरानी एवं परिवहन— सीताराम केसरी
उद्योग, इस्पात और खान— श्रीमती राम दुलारी सिन्हा
गैर परम्परागत ऊर्जा स्त्रोत एवं इलेक्ट्रानिक्स व समुद्र विकास— सी. पी. एन. सिंह
रसायन एवं उर्वरक— राम चन्द्र रथ
उद्योग— वीरभद्र सिंह

केन्द्रीय उप-मंत्री

रक्षा — के. पी. सिंह देव
वित्त— जनार्दन पुजारी
संसदीय मामले तथा उद्योग— कल्पनाथ राय
श्रम— धर्मवीर
शिक्षा— पी. के. थुंगन
सूचना एवं प्रसारण— आरिफ मोहम्मद खान
नागरिक आपूर्ति— मोहम्मद उस्मान आरिफ
कृषि— कुमारी कमला कुमारी
श्रम तथा पुनर्वास— गिरिधर गोमांगो
इलेक्ट्रानिक्स— एम. एस. संजीव राव
संचार— विजय एन. पाटिल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाणिज्य—	पी. ए. संगमा
विधि—	गुलाम नबी आजाद
पर्यटन—	अशोक गहलौत
पर्यावरण—	दिग्विजय सिंह
सार्वजनिक निर्माण—	ब्रजमोहन मोहंती
रेल एवं संसदीय मामले—	मल्लिकार्जुन
स्वास्थ्य—	कुमुद बेन जोशी

संसद के पदाधिकारी

अध्यक्ष, लोकसभा—	बलराम जाखड़
उपाध्यक्ष, लोकसभा—	जी. लक्ष्मण
सभापति, राज्य सभा—	मोहम्मद हिदायतुल्लाह
उप-सभापति, राज्य सभा—	श्याम लाल यादव

सेनाओं के प्रधान

स्थल सेनाध्यक्ष—	जनरल के. बी. कृष्णाराव
वायु सेनाध्यक्ष—	एयर चीफ मार्शल दिलबाग सिंह
नौ सेनाध्यक्ष—	एडमिरल ओ. एस. डासन

राज्यों के मुख्यमंत्री तथा राज्यपाल

राज्य	मुख्यमंत्री	राज्यपाल
असम	राष्ट्रपति शासन	प्रकाश मल्होत्रा
आन्ध्र प्रदेश	के. विजय भास्कर रेड्डी	के. सी. अब्राहम
जम्मू एवं कश्मीर	डा. फारुख अब्दुल्ला	बी. के नेहरू
बिहार	डा. जगन्नाथ मिश्र	ए. आर. किदवई
गुजरात	माधव सिंह सोलंकी	श्रीमती शारदा मुखर्जी
हिमाचल प्रदेश	राम लाल	ए. एन. मुखर्जी
महाराष्ट्र	बाबा साहब भोसले	इदरीस हसन लतीफ
हरियाणा	भजन लाल	गणपति देव तपासे
मध्य प्रदेश	अर्जुन सिंह	भगवत दयाल शर्मा
पंजाब	दरबारा सिंह	डा. चेन्ना रेड्डी
राजस्थान	शिव चरण माथुर	ओ. पी. मेहरा
तमिलनाडु	एम. जी. रामचन्द्रन	सादिक अली
केरल	के. करुणाकरन	पी. रामचंद्रन
कर्नाटक	आर. गुन्डुराव	गोविन्द नारायण
उत्तर प्रदेश	श्रीपति मिश्र	सी. पी. एन. सिंह
प. बंगाल	ज्योति बसु	बी. डी. पाण्डेय
मेघालय	विलियम संगमा	प्रकाश मल्होत्रा
त्रिपुरा	नृपेन चक्रवर्ती	एस. एम. एच. बर्नी
मणिपुर	रिशांग कीशिंग	एस. एम. एच. बर्नी
नागालैण्ड	एस. सी. जमीर	एस. एम. एच. बर्नी
सिक्किम	नर बहादुर भण्डारी	होमी जे.एच. तलयारखां
उड़ीसा	जानकी बल्लभ पटनायक	न्यायमूर्ति रंगनाथ मिश्र

केन्द्र प्रशासित क्षेत्रों का प्रशासन

दिल्ली—जगमोहन (लेफ्टीनेंट गवर्नर)

चण्डीगढ़—एस. बनर्जी (चीफ कमिश्नर)

पांडिचेरी—के. एम. चन्डी (लेफ्टीनेंट गवर्नर), डी. रामचन्द्रन (मुख्यमन्त्री)

अरुणाचल प्रदेश—हरिशंकर दूबे (लेफ्टीनेंट गवर्नर) गेगोंग अपाँग (मुख्यमन्त्री)

मिजोरम—ब्रिगेडियर टी. सैलो (मुख्यमन्त्री), एस. एन. कोहली (लेफ्टीनेंट गवर्नर)

अंडमान तथा निकोबार द्वीप समूह—मनोहरलाल कम्पानी (लेफ्टीनेंट गवर्नर)

दादर एवं नगर हवेली—जे. सी. अग्रवाल (चीफ कमिश्नर)

गोवा, दमन तथा दीव —प्रताप सिंह राने (मुख्यमन्त्री) —सुन्दर लाल खुराना (लेफ्टिनेंट गवर्नर)

महत्वपूर्ण भारतीय उच्चाधिकारी

मुख्य न्यायाधीश, सर्वोच्च न्यायालय	—यशवन्त विष्णु चन्द्रचूड़
गवर्नर, रिजर्व बैंक आफ इण्डिया	—मनमोहन सिंह
अध्यक्ष, योजना आयोग	—श्रीमती इन्दिरा गांधी
उपाध्यक्ष, योजना आयोग	—शंकर बी. चव्हाण
मुख्य चुनाव आयुक्त	—राम कृष्ण त्रिवेदी
अध्यक्ष, संघीय लोक सेवा-आयोग	—एम. एल. शहारे
अध्यक्ष, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग	—डा. श्रीमती माधुरी शा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अध्यक्ष, प्रेस कौंसिल —ए. एन. ग्रोवर
अध्यक्ष, परमाणु शक्ति आयोग —एच. एन. सेठाना
अध्यक्ष, भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन तथा अंतरिक्ष आयोग—प्रो. सतीश धवन
कम्पट्रोलर एण्ड आडीटर जनरल—ज्ञान प्रकाश
सॉलीसीटर जनरल —के. पाराशरन
एटार्नी जनरल —लाल नारायण सिन्हा
जनगणना आयुक्त —पी. पद्मनाभ
अध्यक्ष, स्टेट बैंक आफ इंडिया —पी. सी. डी. नाम्बियार
अध्यक्ष, रेलवे बोर्ड —महेन्द्र सिंह गुजराल
अध्यक्ष, ऊर्जा आयोग —एम. जी. के. मेनन
संयुक्त राष्ट्र संघ में भारत के स्थायी प्रतिनिधि —नटराज कृष्णन
निदेशक, भाभा एटोमिक रिसर्च सेन्टर —डा. राजा रमन्ना
अध्यक्ष, द्वितीय प्रेस आयोग —न्यायामूर्ति के. के. मैथ्यू
अध्यक्ष, विधि आयोग —न्यायामूर्ति के. के. मैथ्यू
अध्यक्ष, अल्पसंख्यक आयोग —एम. एच. बेग
अध्यक्ष, इलेक्ट्रॉनिक्स आयोग—डा. विश्वजीत नाग
भारत के विदेश सचिव —एम. के. रसगोत्रा
अध्यक्ष, भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड—एन. के. पी. साल्वे
अध्यक्ष, भारतीय ओलम्पिक समिति—भालिन्द्र सिंह
अध्यक्ष, नवें एशियाई खेलों की विशेष आयोजन समिति —बूटा सिंह
अध्यक्ष, आठवाँ वित्त आयोग —वाई. बी. चव्हाण
अध्यक्ष, इण्डियन चैम्बर्स ऑव कामर्स एण्ड इन्डस्ट्री —जी. के. देवराजुलु
अध्यक्ष, कृषि मूल्य आयोग —वाई. के. अलघ
अस्सिटेंट सालिसिटर जनरल—के. जी. भगत
अध्यक्ष, इण्टरनेशनल एयर ट्रान्सपोर्ट एसोसिएशन—रघुराज
डायरेक्टर, लाल बहादुर शास्त्री नेशनल एकेडमी, मसूरी—आर. के. शास्त्री
रजिस्ट्रार, न्युजपेपर्स ऑव इण्डिया—आर. एन. महादेवन

भारत में प्रमुख देशों के प्रतिनिधि

● पाकिस्तान के राजदूत—रियाज पिराचा ● संयुक्त राज्य अमेरिका के राजदूत—हैरी. जे. बानर्स ● सोवियत संघ के राजदूत—यूली वोरोंत्सोव ● ब्रिटेन के हाई कमिश्नर—राबर्ट वेड जेरी ● चीन के राजदूत—शेन जियान ● बंगला देश के हाई कमिश्नर—ए. के. खांडेकर ● नेपाल के राजदूत—वेदानन्द झा ● जापान के राजदूत—ई. हारा ● फ्रांस के राजदूत—जीन क्लाड बेंक्लयेर।

कुछ प्रमुख देशों में भारत के राजदूत व हाई कमिश्नर

● चीन में राजदूत—ए. पी. वेंकटेश्वरन ● प. जर्मनी में राजदूत—आर. डी. साठे ● सोवियत रूस में राजदूत—विष्णु के. अहूजा ● संयुक्त राज्य अमेरिका में राजदूत—के. आर. नारायण ● यूगोस्लाविया में राजदूत—अरविंद रामचन्द्र ● बंगला देश में हाई कमिश्नर—इन्दर पाल खोसला ● पाकिस्तान में राजदूत—कृष्ण दयाल शर्मा ● ब्रिटेन में हाई कमिश्नर—डा. सैयद मोहम्मद ● नेपाल में राजदूत—एच. सी. सरीन ● फ्रांस में राजदूत—नरेन्द्र सिंह ● आस्ट्रेलिया में हाई कमिश्नर—डी. एस. कास्टेकर ● कनाडा में हाई कमिश्नर—एम. आर. स्वामीकृष्ण।

कौन, कहाँ, क्या (विश्व)?

विश्व के प्रमुख देशों के राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री तथा नरेश

राष्ट्रपति, सोवियत संघ —यूरी आन्द्रोपोव
राष्ट्रपति, संयुक्त राज्य अमेरिका —रोनाल्ड रीगन
प्रधानमंत्री, सोवियत संघ —निकोलोई तिखोनोव
महारानी, ब्रिटेन —एलिजाबेथ द्वितीय
प्रधानमंत्री, ब्रिटेन —श्रीमती मार्गरेट टैचर
सम्राट, जापान —हिरहितो
प्रधानमंत्री, जापान —मासुहिरो नाकासोन
राष्ट्रपति, फ्रांस —फ्रांस्वा मितेरां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रधानमंत्री, फ्रांस —पियरे मोराय
राष्ट्रपति, लेबनान —अमीन जमील
प्रधानमंत्री, लेबनान —शफीक अल बजान
प्रधानमंत्री, स्वीडन —ओल्फ पामें
प्रधानमंत्री, डेनमार्क —पाल सुचेलटर
सम्राट, स्पेन —जुआन कार्लोस
प्रधानमंत्री, स्पेन —फिलिप गोंजालेज
राष्ट्रपति, इटली —सांद्रो पार्तीनी
प्रधानमंत्री, इटली —अभिनंतार फनफनी
राष्ट्रपति, बोलेविया —हरनाथ सिलेक्स जुआजो
राष्ट्रपति, प. जर्मनी —डा. कार्ल कारस्टन
चांसलर, प. जर्मनी —हैल्मुठ कोल
राष्ट्रपति, बंगलादेश —ए. एम. चौधरी
मुख्य मार्शल लॉ प्रशासक, बंगलादेश —लेफ्टी. जनरल एच. एम. इरशाद
राष्ट्रपति, पाकिस्तान —जियाउल हक
राष्ट्रपति, इस्राइल —इतिजहाक नेवोन
प्रधानमंत्री, इस्राइल —मेंशेम बेगिन
प्रधानमंत्री, चीन —झाओ झियांग
राष्ट्रपति, अफगानिस्तान —बाब्रक करमाल
प्रधानमंत्री, अफगानिस्तान —सुलतान अली केश्तमंद
महाराजा, नेपाल —वीरेन्द्र वीर विक्रम शाह
प्रधानमंत्री, नेपाल —सूर्य बहादुर थापा
राष्ट्रपति, मिस्र —हुस्नी मुबारक
राष्ट्रपति, यूगोस्लाविया —पीटर स्टैम्बिलक
प्रधानमंत्री, यूगोस्लाविया —मिल्का प्लेनिन्क
राष्ट्रपति, फिलीपाइन्स —फर्डिनेन्ड मार्कोस
राष्ट्रपति, तंजानिया —जुलियस न्यरेरे
राष्ट्रपति, यूगांडा —मिल्टन ओबोटे
प्रधानमंत्री, न्यूजीलैण्ड —राबर्ट मुल्डन
प्रधानमंत्री, सिंगापुर —ली कुआन यू
राष्ट्रपति, इण्डोनेशिया —जनरल सुहार्तो
राष्ट्रपति, क्यूबा —फिडेल कास्त्रो
गवर्नर जनरल, कनाडा —आर. सेंगर
प्रधानमंत्री, कनाडा —पियरे इलियट त्रुदो
गवर्नर जनरल, आस्ट्रेलिया —सर विनयन मार्टिन
प्रधानमंत्री, आस्ट्रेलिया —मेलकाम फ्रेजर

राष्ट्रपति, लीबिया —लेफ्टि. जनरल गद्दाफी
राष्ट्रपति, जाम्बिया —केनेथ कौण्डा
राष्ट्रपति, सीरिया —हाफिज अल असद
राष्ट्रपति, वियतनाम —न्यूगन हू थो
प्रधानमंत्री, वियतनाम —फाम वान डांग
प्रधानमंत्री, जिम्बाब्वे —राबर्ट मुगाबे
राष्ट्रपति, श्री लंका —जे आर. जयवर्द्धन
प्रधानमंत्री, श्री लंका —रणसिंघे प्रेमदास
नरेश, भूटान —जिग्मे सिंघे वांग्चुक
राष्ट्रपति, इराक —साद्दाम हुसैन
राष्ट्रपति, पुर्तगाल —अंतोनिया रामल्हो आनेस
प्रधानमंत्री, मारीशस —अनिरुद्ध जगन्नाथ
शाह, सऊदी अरब —शाह फाहद बिन अब्दुल अजीज
शाह, जार्डन —शाह हुसैन प्रथम
शासनाध्यक्ष, कंपुचिया —हेंग सामरिन
प्रधानमंत्री तथा पोलैण्ड की कम्युनिस्ट पार्टी के महासचिव —जनरल जारुजेल्स्की
राष्ट्रपति, ईरान —होजातीलेस्सलाम अली खोमेनी
प्रधानमन्त्री, ईरान —मीर हुसैन मुसावी
राष्ट्रपति, बर्मा —ऊ सान यू
प्रधानमन्त्री, द. अफ्रीका —पीटर विलियम बोथा
राष्ट्रपति, रुमानिया —निकोलाई सेसस्कू
राष्ट्रपति, चेकोस्लोवाकिया —गुस्ताव हसक
राष्ट्रपति, उ. कोरिया —किम इल सुंग
राष्ट्रपति, द. कोरिया —चुन द हान
सम्राट, मलेशिया —सुल्तान टुंक अहमद शाह
प्रधानमन्त्री, मलेशिया —महाथीर मोहम्मद
राष्ट्रपति, अर्जेण्टीना —जनरल टेनाल्डो विगनोन

अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों के प्रमुख तथा अन्य महत्वपूर्ण व्यक्ति

● अध्यक्ष, विश्व बैंक—आल्डेन विशिप क्लासेन ● महासचिव, संयुक्त राष्ट्र संघ—जेवियर पी.द. क्यूलर ● अध्यक्ष, फिलीस्तीनी मुक्ति संगठन—यासिर अराफत ● अध्यक्ष, अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय—टी. ओ. इलियास ● प्रबन्ध-निदेशक, अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष—जेकस डी. लारोसियर ● अध्यक्ष, यूरोपीय आर्थिक समुदाय-गेस्टर्न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थान ● महासचिव, कामनवेल्थ नेशन्स--श्रीदथ रामफल ● सहायक महासचिव, कामनवेल्थ नेशन्स—मनमोहन मल्होत्रा ● संयुक्त राष्ट्र महासभा के 37 वें अधिवेशन के अध्यक्ष —इमरी होलाई ● उप-राष्ट्रपति, अमेरिका—जार्ज बुश ● डायरेक्टर जनरल, यूनेस्को—ए. एम. बो. ● अध्यक्ष, विश्व खाद्य संगठन—जे. बी. अगुआरडो ● अध्यक्ष, अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन—एच. गोंज़ालेस मार्तिन्ज ● महासचिव, अंकटाड—जमानी कोरिया ● अध्यक्ष, विश्व स्वास्थ्य संगठन—मतादो डिम्प ● अध्यक्ष, एशियन डेवलपमेंट बैंक—एस. फुजिअको ● अध्यक्ष, अन्तर्राष्ट्रीय हाकी संघ—रेने फ्रांक ● विदेश मंत्री, पाकिस्तान—साहिबजादा याकुब अली खाँ ● विदेश मंत्री, सोवियत संघ—एन्ड्रयू ग्रोमिको ● विदेश मंत्री, संयुक्त राज्य अमेरिका—जार्ज शुल्टज ● विदेश मंत्री, फ्रांस—क्लाड चेशा ● विदेश मंत्री, बंगला देश—अमीनुर रहमान शमशाद दोहा ● विदेश मन्त्री, अफगानिस्तान—शाह मोहम्मद दोस्त ● विदेश मन्त्री, चीन—वस्यूक्वियन ● विदेश मन्त्री, पोलैण्ड—स्टीफन ओल्सजोवस्की ● नामीबिया के लिये संयुक्त राष्ट्र संघ के आयुक्त—ब्रजेश चन्द्र मिश्र ।

प्रमुख शब्द संक्षेप

- A.G.S.O.C.—एशियन गेम्स स्पेमंल आर्गेनाइजिंग कमेटी
- A.P.C.—एग्रीकल्चर प्राइसेज कमीशन
- A.S.L.V.—आगमेन्टेड सैटेलाइट लॉंच व्हीकल
- A.W.A.C.S.—एयरबार्न वार्निङ् एण्ड कन्ट्रोल सिस्टम
- M.B.R.F.—म्युट्युअलि बैलेन्सड् रिडक्शन ऑव फोर्सेज
- C.O.P.U.—कमिटि ऑन पब्लिक अन्डरटेकिंग
- D.P.S.A.—डीप पेनीट्रेशन स्ट्राइक एयरक्राफ्ट
- E.E.Z.—इक्सक्लुसिव इकानामिक जोन
- E.X.I.M.—एक्सपोर्ट इम्पोर्ट बैंक ऑव इण्डिया
- F.T.Z.—फ्री ट्रेड जोन
- F.W.P.—फूड फॉर वर्क प्रोग्राम
- G.A.T.T.—जनरल एग्रीमेन्ट ऑन टैरिफ एण्ड ट्रेड
- G.C.C.—गल्फ कोऑपरेन काउन्सिल
- I.A.C.S.—ऑल इण्डिया काउन्सिल ऑव स्पोर्ट्स
- I.A.E.A.—इन्टरनेशनल एटॉमिक एनर्जी एजेन्सी
- I.C.W.A.—इण्डियन काउन्सिल ऑव वर्ल्ड एफेयर्स
- I.M.F.—इन्टरनेशनल मॉनीटरी फन्ड
- I.N.S.A.T.—इण्डियन नेशनल सैटीलाइट
- I.N.T.E.L.S.A.T.—इन्टरनेशनल टेलीकम्यूनिकेशन
- I.Y.A.P.—इन्टरनेशनल इयर फॉर एजेड् पर्सन
- L.D.C.—लैस डेवेलप्ड कन्ट्रीज
- M.O.X.—मिक्सड आक्साइड फ्यूअल
- M.R.T.P.C.—मोनोपॉलीज एण्ड रिसट्रिक्टिव ट्रेड प्रैक्टिसेज कमीशन
- N.A.B.A.R.D.—नैशनल बैंक फॉर एग्रीकल्चर एण्ड रूरल डेवलपमेन्ट
- N.F.D.C.—नेशनल फिल्म डेवलपमेन्ट कार्पोरेशन
- N.I.O.—(1) न्यू इन्फारमेशन आर्डर (4) नेशनल इन्स्टीट्यूट ऑव ओसोनोग्राफी
- N.P.T.—न्यूक्लियर नान प्रालिफेरेशन ट्रीटी
- N.R.E.P.—नेशनल रूरल इम्प्लायमेन्ट प्रोग्राम
- N.R.S.E.—न्यू एण्ड रिन्यूएबिल सोर्सेज ऑव एनर्जी
- O.N.G.C.—ऑयल एण्ड नेचुरल गैस कमीशन
- O.E.C.D.—आर्गेनाइजेशन फॉर इकानामिक कोआपरेशन एण्ड डेवलपमेन्ट
- P.S.L.V.—पोलर सैटीलाइट लॉंच व्हीकल
- R.R.B.—रीजनल रूरल बैंक
- S.D.R.—स्पेशल ड्राइंग राइट्स
- S.T.A.R.T.—स्ट्रेटीजिक आर्म्स रिडक्शन टॉक्स
- S.W.A.P.O.—साउथ वेस्ट अफ्रीकन पीपुल्स आर्गेनाइजेशन
- T.A.P.S.—तारापुर एटामिक पावर स्टेशन
- T.R.Y.S.E.M.—ट्रेनिंग ऑव रूरल यूथ फॉर सेल्फ एम्पलॉयमेन्ट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

- U.N.E.S.C.O.—यूनाइटेड नेशन्स एजूकेशनल, साईन्टीफिक् एण्ड कल्चरल आर्गेनाइजेशन
- U.N.C.L.O.S.—यूनाइटेड नेशन्स कांन्फ्रेन्स ऑन लॉ ऑव सी
- U.N.I.D.O.—यूनाइटेड नेशन्स इन्टरनेशनल डेवलपमेन्ट आर्गेनाइजेशन
- U.N.I.F.I.L.—यूनाइटेड नेशन्स इन्टरिम फोर्स इन लेबनान
- V.S.S.C.—विक्रम साराभाई स्पेस सेन्टर
- W.W.P.A.—वर्ल्ड वाइड लाइफ प्रोटेक्शन एजेंसी
- U.N.I.S.P.A.C.E.—यूनाईटेड नेशन्स कान्फ्रेन्स ऑन पिसफुल यूसेज ऑव स्पेस

प्रमुख पुस्तकें

- वन हनड्रेड इयर्स ऑव सालिट्यूड—ग्रेब्रियल गार्सिया मारकुएज
- इनसाइड मिडल ईस्ट—दिलीप हीरो
- पालिटिक्स आफ्टर फ्रीडम—मधु लिमाये
- द फोर्थ राउन्ड (इन्डो-पाक वॉर 1984)—रवि रिखी
- नार्थ-साऊथ डिबेट—ले. के. झा
- फुड, न्युट्रिशन एण्ड पावर्टी—वी. के. आर. वी. राव
- ब्रेड, ब्यूटी एण्ड रेवूल्यूशन—ख्वाजा अहमद अब्बास
- रिफलेक्शन्स ऑव अँवर टाइम्स—पी. एन. हक्सर
- पालिटिक्स आफ्टर फ्रीडम—मधुलिमाये
- ए गाइड फार परप्लेक्स्ड—इ. एफ. शुमाखर
- क्राइसिस, कॉन्शन्स एण्ड द कॉस्टीट्यूशन—एम. वी. पाइली
- थर्ड वेव—एल्विन टाफलर
- कागज ते कनवास—अमृता प्रीतम
- माउन्टबेटन एण्ड द पार्टिशन ऑव इण्डिया—लैरी फालिन्स व डोमिनिके लैपियरे
- द नाइटमेयर एण्ड आफ्टर—जे. बी. कृपलानी
- एशियन ड्रामा—गुन्नार मिरडल
- मिडनाइट् चिल्ड्रेनस—सलमान रशदी
- लीडर्स—रिचर्ड निक्सन
- द वर्जिन लैण्ड्स—लियोनिद ब्रेझनेव
- द बीट एण्ड द चैफ—फ्रांस्वा मित्तरां
- स्वदेश गीतंगल—सुब्रह्मणियम भारती
- टू हैल विद हॉकी—असलम शेर खाँ
- रेवुल्यूशन एण्ड रेवूल्यूशनिरिज—ए. जे. पी. टेलर
- स्माल् इज पॉसिबल—जार्ज मैकरोबी
- शिन्डलर्स आर्क—टॉमस केनेली
- मेनी वर्ल्ड्स—के. पी. एस. मेनन
- इण्डिया एण्ड द वेस्ट—बारबरा वॉर्ड
- टू लिव ऑर नाट टू लिव—नीरद सी. चौधरी
- लॉ, जस्टिस एण्ड द डिसएविल्ड—वी. आर. कृष्णा अय्यर
- पोर्ट्रेट ऑव अ रेवूल्युशनिरि : बी. पी. कोइराला—भोला चटर्जी
- थ्रू द इण्डियन लुकिंग ग्लास—डेविड सेलबोर्न
- नेताजी एण्ड गाधीजी—बी. के आल्हुवालिया व शशी आल्हुवालिया
- ग्रेट फ्रॉम द इस्ट—फ्रेड हैलीडे
- इनसाइड थर्ड वर्ल्ड—वी. हैरीसन
- आइडॅल ऑवर—ले. के. लक्ष्मण
- नदी किनारा का मांझी—मोहन कोइराला
- लॉफ विथ कुट्टी: अ कलेक्शन ऑव कार्टून्स—पी. के. एस. कुट्टी
- एक लेख की जेल डायरी—निगूजी वा थिओंग
- स्मृति सन्ता भविष्यत्—विष्णु दे
- ब्लाइंड फराओ—बर्क कैंपबेल
- द ईसथेटिक डाइमेन्शन—हरबर्ट मारक्यूज
- ब्राइटर दैन अ. थाउजैन्ड सेंन्सेस—राबर्ट जुंग्क
- द मेकिंग ऑव मैनकाइण्ड—रिचर्ड ई. लीके
- टेन डेज दैट शुक द वर्ल्ड—जॉन रीड
- सुपर पावर्स इन कोलीसन—चोम्स्की
- द माइन्ड ऑव द स्ट्रेटीजिस्ट—केनीची ओहमे
- द गेम ऑव डिसआर्ममिन्ट—अल्वा मिरदाल
- द फेट ऑव द अर्थ—जे. शेल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महत्वपूर्ण व्यक्ति

● डा. बार्नी क्लार्क—साल्ट लेक सिटी (सं. रा. अमेरिका) के यूट्राह विश्वविद्यालय के मेडीकल सेन्टर में 2 दिसम्बर को 61 वर्षीय डा. बार्नी क्लार्क के शरीर में प्लास्टिक व ऐल्मुनियम से निर्मित 2 पाउन्ड वजन के एक स्थायी कृत्रिम हृदय को सफलतापूर्वक प्रतिरोपित किया गया। डा. क्लार्क इस प्रकार के स्थायी कृत्रिम हृदय प्रतिरोपित करने वाले विश्व के प्रथम प्रापक है।

● फिलीप हबीब—अमेरिकी राष्ट्रपति रोनाल्ड रीगन के विशेष दूत फिलीप हबीब लेबनान पर इस्रायली आक्रमण से सम्पूर्ण पश्चिम एशिया में उत्पन्न संकट को शान्त करने के अपने प्रयासों में काफी सीमा तक सफल सिद्ध हुए।

● मीरा बहन - प्रख्यात गांधीवादी सामाजिक कार्यकर्त्री व 1981 के पद्म विभूषण की उपाधि से सम्मानित मीरा बहन (मेडीलीन स्लेड) का निधन 20 जुलाई 82 को वियना में हो गया।

● यासिर अराफत—लेबनान पर इस्रायली आक्रमण के फलस्वरूप फिलिस्तीनी मुक्ति मोर्चे के अध्यक्ष यासिर अराफत को अपने छापामार साथियों के साथ बेरुत स्थित मुख्यालय को 2 सितम्बर 82 को त्याग कर ट्युनिशिया चले जाना पड़ा।

● लेक वालेसा—साम्यवादी पोलेण्ड के स्वतन्त्र श्रमिक संगठन 'सोलिदारनोश्च' के प्रमुख नेता, जो पोलिश श्रमिकों की हड़ताल के नेतृत्व के कारण चर्चित हुए, को 11 नवम्बर 82 को 11 महिनों की नजरबन्दी के पश्चात रिहा कर दिया गया। 16 दिसम्बर को उन्हें गिरफ्तार कर पुनः रिहा कर दिया गया।

● गुन्नार मिरदाल व अल्वा मिरदाल स्वीडन के प्रमुख अर्थशास्त्री गुन्नार मिरदाल व उनकी पत्नी अल्वा मिरदाल को स्टॉकहोम में 14 नवम्बर 82 को अन्तर्राष्ट्रीय सद्-भावना के लिये नेहरू पुरस्कार प्रदान किया गया।

● शाह फाहद—सऊदी अरब के नये शासक शाह फाहद द्वारा मध्यपूर्व की समस्या के समाधान के लिये प्रस्तुत 8 सूत्रीय प्रस्ताव को अरब लीग के फेज सम्मेलन में सर्व-सम्मति से स्वीकार कर लिया गया।

● एरियल शेरों—इस्रायल के वर्तमान रक्षामन्त्री तथा अति कुशल सेनानायक। लेबनान पर अभी हाल के सफल इस्रायली आक्रमण तथा फिलिस्तीनी छापामारों की घेराबन्दी का मूल श्रेय उन्हीं की कार्यशैली को दिया गया। साथ में लेबनान में हुए फिलिस्तीनी नरसंहार के सन्दर्भ में उनके त्यागपत्र की मांग की गयी।

● एस. के. पोट्टेक्काट्—'ओरु दिसात्तिण्डे काठू' नामक पुस्तक पर भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित प्रसिद्ध मलयाली साहित्यकार जिनका 6 अगस्त 82 को निधन हो गया।

● रिचर्ड एटिनबरो—प्रख्यात ब्रिटिश अभिनेता-निर्देशक सर रिचर्ड एटिनबरो द्वारा निर्देशित 'गांधी' फिल्म का विश्व भर में प्रीमियर 30 नवम्बर 82 को हुआ और इस फिल्म को भूरि-भूरि प्रशंसा प्राप्त हुई। इस फिल्म में गान्धी की भूमिका बेन किंग्स्ले तथा कस्तूरबा की भूमिका रोहिणी हट्टनगढ़ी ने निभायी है।

● सुब्रमणियम् भारती—प्रसिद्ध तमिल कवि और विचारक, जिनकी 11 दिसम्बर 82 से सम्पूर्ण देश में जन्मशतवार्षिकी मनायी जा रही है। यूनेस्को ने उनकी रचनाओं का प्रचार करने का निर्णय लिया है।

● डा. प्रमोद करण सेठी—जयपुरिया टाँग (कृत्रिम पैर) के अविष्कार के लिये 1981 के रेमन मैग्सेसे पुरस्कार और पद्मश्री से सम्मानित डा. प्रमोद करण सेठी की उपलब्धि को गिन्ईज बुक ऑव वर्ल्ड रिकार्ड 1982 में अंकित किया गया है।

● फादर कामिल बुल्के—पिछले 47 वर्षों के भारत में निवास कर यहाँ के साहित्यक व सामाजिक जीवन में सक्रिय सुप्रसिद्ध हिन्दी मनीषी, कोशकार तथा राम कथा मर्मज्ञ फादर कामिल बुल्के का निधन 17 अगस्त 82 को हो गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

● चंडी प्रसाद भट्ट—प्रख्यात सामाजिक कार्यकर्त्ता तथा "चिपको आन्दोलन" के प्रणेता, जिनको सामुदायिक नेतृत्व हेतु 1982 के रेमन मैग्सेसे पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

● मणिभाई भीमभाई देसाई—सुप्रसिद्ध गांधीवादी समाज-सेवी, जिन्हे जनसेवा हेतु 1982 के रेमन मैग्सेसे पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

● अरुण शौरी—भारत के प्रख्यात और निर्भीक पत्रकार अरुण शौरी को भ्रष्टाचार, असमानता तथा अन्याय के विरुद्ध सशक्त लेखन के कारण पत्रकारिता, साहित्य और रचनात्मक लेखन के लिये वर्ष 1982 के रेमन मैग्सेसे पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इण्डियन एक्सप्रेस के मालिक से नीति सम्बन्धी विवादों के फलस्वरूप उन्हे अधिशासी सम्पादक से नवम्बर 82 में पदत्याग करना पड़ा। इस समय वे भारतीय राजनीतिक व्यवस्था, तथा कुरान पर पुस्तक लिख रहे हैं।

● सन्त जनरैल सिंह भिण्डारवाला—सिखों के उग्रवादी धार्मिक नेता, जो विगत वर्ष से अब तक पंजाब में हो रही हिंसात्मक घटनाओं के सन्दर्भ में चर्चित है।

● डा. मनमोहन सिंह—प्रख्यात अर्थशास्त्री, जिन्होंने 16 सितम्बर 82 से रिजर्व बैंक ऑव इण्डिया के गवर्नर का पद ग्रहण किया है। अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष द्वारा भारत को स्वीकृत 5.8 अरब डालर के ऋण सम्बन्धी सफल वार्तालाप में उनका काफी योगदान था।

● विश्वेश्वर प्रसाद कोइराला—नेपाल के भूतपूर्व प्रधान मन्त्री तथा पिछले 32 वर्षो से वहाँ निरकुंश राजतन्त्र के विरुद्ध संसदीय लोकतान्त्रिक व्यवस्था की स्थापना हेतु संघर्ष करने वाले नेपाली कांग्रेस के प्रमुख नेता वी.पी. कोइराला का निधन 2 जुलाई 82 को हो गया।

● ज्ञानी जैल सिंह—66 वर्षीय ज्ञानी जैल सिंह ने 25 जुलाई 82 को आगामी पांच वर्ष के लिये भारत के राष्ट्र-पति का कार्यभार संभाला। ज्ञानी जैल सिंह सिख समुदाय व पिछड़ी जाति के ऐसे पहले व्यक्ति है जिन्हें राष्ट्रपति बनने का गौरव प्राप्त हुआ।

● लियोपाल्डो गाल्टेयरी—अर्जेन्टीना के राष्ट्रपति, जिन्हें फाकलैण्ड युद्ध में ब्रिटेन के हाथ अर्जेन्टीना की शर्मनाक पराजय के कारण 17 जुलाई 82 को अपने पद से त्यागपत्र देना पड़ा।

● हंसराज खन्ना—सर्वोच्च न्यायालय के भू. पू. न्यायाधीश हंसराज खन्ना, जो 12 जून 82 को सम्पन्न भारत के सातवें राष्ट्रपति के चुनाव में विरोधी दल के उम्मीदवार थे, चुनाव में पराजित हुए।

● शेख अब्दुल्ला—'शेरे कश्मीर' के नाम से लोकप्रिय, कश्मीर के वयोवृद्ध नेता, स्वतन्त्रता संग्रामी व मुख्यमन्त्री जिनका 77 वर्ष की अवस्था में निधन हो गया। केन्द्र से मतविरोध होने के कारण स्वात्र्योत्तर काल के अनेक वर्ष उन्हें बन्दी जीवन के रूप में व्यतीत करना पड़ा। 1975 में केन्द्र से समझौते के फलस्वरूप वे जम्मू कश्मीर के मुख्यमन्त्री बने और मृत्युपर्यन्त इस पद पर बने रहे।

● विंग कमाण्डर आर. मल्होत्रा व स्क्वेड्रन लीडर आर. शर्मा—वर्ष 1984 में अन्तरिक्ष यात्रा पर भेजे जाने के लिये चुने गये दो भारतीय परीक्षण चालक। भारत-सोवियत सघ अन्तरिक्ष सहयोग कार्यक्रम के अन्तर्गत भेजे जाने वाले इन विमान चालकों को सोवियत संघ की 'सितारों की नगरी' में प्रशिक्षण दिया जायेगा। इसके बाद इनमें से एक को अन्तरिक्ष यात्रा पर भेजा जायेगा और दूसरे को वैकल्पिक चालक के रूप में तैयार रखा जायेगा।

● बशीर गमाएल व अमीन गमाएल—लेबनान के नव निर्वाचित राष्ट्रपति बशीर गमाएल की 14 सितम्बर को पद ग्रहण के पूर्व ही हत्या कर दी गयी। 23 सितम्बर को उनके कनिष्ठ भ्राता अमीन गमाएल ने राष्ट्रपति का पद संभाला।

● दत्ता सामन्त—महाराष्ट्र के श्रमिक नेता जो पिछले 1 वर्ष से बम्बई में चल रहे कपड़ा मिल श्रमिकों की हड़ताल को विवादास्पद नेतृत्व प्रदान करने के लिये चर्चित है।

● रेड अडॉयर—विश्वभर में तेल के कुओं में लगे आग से जूझने का 35 वर्ष का अनुभव रखने वाले एक अमेरिकी नागरिक तथा उसी नाम की कम्पनी। अगस्त 82 में बम्बई हाई के एक तेल कुएँ "सागर विकास" में ब्लो आउट के फलस्वरूप लगी आग को बुझाने के लिये ओ. एन. जी. सी. ने उनकी सेवा ग्रहण की थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

● प्रिंस एंड्रू व कू स्टार्क —22 वर्षीय ब्रितानी राजकुमार एंड्रू 26 वर्षीय अमेरिकी अभिनेत्री कू स्टार्क से प्रेम सम्बन्धों के कारण विश्व चर्चा के केन्द्र बनें।

● डा. केनिथ सी. विलन्सन—कार्नेल विश्वविद्यालय, न्यू यार्क के भौतिक विज्ञानी डा. केनिथ सी. विलन्सन को उनके इस आविष्कार कि "किसी पदार्थ की अवस्था परिवर्तन में वाह्य कारक-उष्मा और चुम्बकत्व-किस प्रकार प्रभाव डालते हैं," पर 1982 के भौतिक नोबल पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

● एरोन क्लुग—ब्रितानी रसायन शास्त्री एरोन क्लुग को "न्यूट्रॉन स्कैटरिंग व इलेक्ट्रान माइक्रोस्कोप पद्धति जैसे समस्याओं का निदान करने के लिये 1982 का रसायन नोबल पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

● डा. जॉन वाने, डा. सुने बर्गस्ट्राम व डा. बेंट सैमुयलशन—ब्रितानी वैज्ञानिक डा. जॉन वाने, स्वीडिश वैज्ञानिक डा. सुने बर्गस्ट्राम तथा डा. बेंट सैमुयलसन को "प्रोस्टेग्लैन्डिन तथा उससे सम्बन्धित सक्रिय जैविक पदार्थ की खोज" के लिये 1982 का औषधि नोबेल पुरस्कार प्रदान किया गया।

● जार्ज स्टिगलर—शिकागो विश्वविद्यालय (सं. रा. अमेरिका) के जार्ज स्टिगलर को बाजार की क्रियाशीलता और सरकारी नियन्त्रण का बाजार पर प्रभाव का सिद्धान्त प्रतिपादित करने के लिये 1982 के आर्थिक नोबल पुरस्कार दिया गया।

● गारब्रील गार्सिया मारकुएस—कोलम्बिया में जन्मे परन्तु पिछले 32 वर्षों से मेक्सिको के निर्वासित जीवन व्यतीत करने वाले 54 वर्षीय वामपन्थी विचारों से प्रभावित गारब्रील गार्सिया मारकुएस को उनकी चर्चित पुस्तक "हन्ड्रेड इयर ऑव सालीट्यूड" (तन्हाई के सौ वर्ष) में विद्यमान यथार्थ व कल्पना के अनोखे मिश्रण के लिये 1982 का साहित्य का नोबल पुरस्कार प्रदान किया गया।

● अल्वा मिरदाल व अल्फान्सों गार्सिया रोबेल्स--आणविक निरस्त्रीकरण अभियान में अभूतपूर्व योगदान के लिये स्वीडन के राजनीतिक व सामाजिक कार्यकत्ता 80 वर्षीया अल्वा मिरदाल तथा मेक्सिको के भूतपूर्व विदेश मन्त्री अल्फान्सो गार्सिया रोबेल्स को संयुक्त रूप में 1982 का नोबल शान्ति पुरस्कार प्रदान किया गया।

● प्यारे लाल नैयर—सुप्रसिद्ध गांधीवादी, तथा महात्मा गांधी के निजी सलाहकार प्यारे लाल नैयर का निधन 27 अक्टूबर 82 को हो गया। महात्मा : द लास्ट फेज (दो खण्ड) उनकी प्रमुख कृति है।

● राजकुमारी ग्रेस—मोनाको की राजकुमारी ग्रेस (भूतपूर्व हालीवुड फिल्म अभिनेत्री) का 15 सितम्बर 82 को कार दुर्घटना में निधन हो गया। उनकी प्रमुख फिल्में 'एम फार मर्डर, टु कैच ए थीफ' इत्यादि थी।

● आनन्दमयी माँ 87 वर्षीय धार्मिक नेता आनन्दमयी माँ (वास्तविक नाम निर्मला) ने 27 अगस्त 82 को देहरादून के निकट स्थित आश्रम में अपना देहत्याग दिया।

● जी एस. पाठक—भारत के भू. पू. उपराष्ट्रपति एवं सर्वोच्च न्यायालय के भू. पू. न्यायाधीश गोपाल स्वरूप पाठक का 86 वर्ष की अवस्था में 31 अगस्त 82 को निधन हो गया।

● हनुत सिंह—विश्वप्रख्यात पोलो खिलाड़ी हनुत सिंह का 82 वर्ष की अवस्था में जोधपुर में 9 अक्टूबर 82 को देहान्त हो गया।

● जे. आर. डी. टाटा—प्रसिद्ध उद्योगपति और भारतीय विमान चालकों में अग्रणी 78 वर्षीय जे. आर. डी. टाटा ने 15 अक्टूबर को एक इंजन वाले लेपर्ड मॉथ विमान से करांची से बम्बई तक पहुँच कर 50 वर्ष पूर्व की ऐतिहासिक उड़ान को दोहराया।

● लियोनिद ब्रेझनेव—75 वर्षीय सोवियत राष्ट्रपति व सोवियत साम्यवादी दल के अध्यक्ष लियोनिद ब्रेझनेव का 10 नवम्बर 82 को निधन हो गया। उनके 18 वर्षीय शासनकाल में सोवियत संघ सभी क्षेत्रों में अमेरिका के समकक्ष खड़ा हुआ। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में ब्रेझनेव देतां, निशस्त्रीकरण व परस्पर सहयोग के हिमायती थे।

● यूरी आन्द्रोपोव—लियोनिद ब्रेझनेव की मृत्यु के पश्चात रूसी गुप्तचर संस्था-के. जी. बी., के भू. पू. प्रधान यूरी आन्द्रोपोव को सोवियत साम्यवादी दल का अध्यक्ष तथा सोवियत राष्ट्रपति निर्वाचित किया गया।

● विनोबा भावे—88 वर्षीय सर्वोदयी नेता आचार्य विनोबा भावे का 15 नवम्बर 82 को पवनार आश्रम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में निधन हो गया। वे अपने भूदान कार्यक्रम तथा गो-हत्या विरोधी आन्दोलन के लिये काफी चर्चित रहे।

● दिबेन्दु बरुआ—16 वर्षीय दिबेन्दु बरुआ विश्व के दो नम्बर के खिलाड़ी विक्टर कोर्चनॉय को मास्टर्स चैम्पियनशिप शतरंज प्रतियोगिता (लन्दन) में अप्रत्याशित रूप से हराकर चर्चित हुए।

● अमिताभ बच्चन—हिन्दी फिल्मों के 'सुपरस्टार, अमिताभ बच्चन बंगलूर में शूटिंग के दौरान 26 जुलाई 82 को चोट लगने के दो महीने बाद ब्रीच कैन्डी अस्पताल (बम्बई) से स्वस्थ होकर अपने घर लौटे।

● एच. वी. कामथ—प्रख्यात स्वतन्त्रता सेनानी, गान्धी जी व नेता जी के सहयोगी, संविधान निर्मात्री सभा के सक्रिय सदस्य एवं भूतपूर्व सांसद 75 वर्षीय हरि विष्णु कामथ का 8 अक्टूबर 82 को नागपुर में निधन हो गया।

● रोजर मूर—'जेम्स बाण्ड' की भूमिका निभाने वाले 54 वर्षीय ब्रितानी अभिनेता रोजर मूर अपनी नवीनतम जेम्स बाण्ड फिल्म 'आक्टोपसी' की शुटिंग के लिये अभी हाल में भारत में आये थे।

● नोएल बेकर—राजनीतिज्ञ, दार्शनिक, ओलम्पिक खिलाड़ी, प्रभावशाली वक्ता, विद्वान और नोबल शान्ति पुरस्कार विजेता (1959) लार्ड नोएल बेकर का 92 वर्ष की अवस्था में लन्दन में 9 अक्टूबर 82 को देहान्त हो गया।

● शेरपा संगदारे—संसार के सबसे ऊंचे पर्वत शिखर एवरेस्ट (29028 फुट) पर काठमन्डु के शेरपा संगदारे ने 5 अक्टूबर 82 को तीसरी बार पहुँच कर नया कीर्तिमान स्थापित किया। इसके पूर्व वे 1979 व 1981 में इस चोटी पर जा चुके थे।

● सन्त लोंगोवाल—अभी तक नरमपन्थी माने जाने वाले अकाली नेता सन्त लोंगोवाल ने आनन्दपुर साहिब प्रस्ताव (1970) के क्रियान्वयन पर इधर उग्रवादी दृष्टिकोण अपना कर केन्द्र से सीधे टक्कर लेने का निर्णय लिया है।

● फ्रान्कोई मित्तरां—वर्ष 1981 में निर्वाचित फ्रान्स के समाजवादी राष्ट्रपति फ्रान्कोई मित्तरां के पदासीन होने के पश्चात भारत-फ्राँस के मध्य सम्बन्ध काफी अधिक सुदृढ़ हुए। विकासशील देशों के प्रति आम सहानुभूति रखने वाले मित्तरां के शासनकाल में भारत को मिराज-2000 विमान व परिष्कृत यूरेनियम की आपूर्ति के साथ-साथ अनेक फ्रांसिसी सुविधाएं मिली। नवम्बर के अंतिम सप्ताह में मितरां का भारत आगमन हुआ था।

● इलाचन्द्र जोशी—हिन्दी के प्रख्यात उपन्यासकार व पत्रकार इलाचन्द्र जोशी का 14 दिसम्बर 82 को 80 वर्ष की अवस्था में इलाहाबाद में निधन हो गया। उनकी अन्यतम कृति 'जहाज का पंछी' थी।

● डॉ. विलियम डि ब्राइस—साल्ट लेक सिटी (सं. रा. अमेरिका) के उट्टाह विश्वविद्यालय के शल्य चिकित्सा कक्ष में विश्व में पहली बार डॉ. विलियम डिब्राइस ने डॉ. बार्नी क्लार्क पर स्थायी कृत्रिम हृदय का सफल प्रतिरोपण किया है।

● इ. एच. कार—प्रख्यात ब्रितानी इतिहासविज्ञ डॉ. इ. एच. कार का निधन 90 वर्ष की आयु में 5 नवम्बर 82 को कैम्ब्रिज (इंग्लैण्ड) में हो गया। उनकी प्रमुख पुस्तक 'ए हिस्टरी ऑव सोवियत एशिया' 'इन्टरनेशनल रिलेशन विटवी टू वर्ल्ड वार्स' तथा 'सोशलिज्म इन वन कन्ट्री' है। उन्होंने वार्साई शान्ति सम्मेलन (1919) में एक कूटनीतिज्ञ की हैसियत से भी भाग लिया था।

प्रमुख आयोग तथा समितियाँ

● आठवां वित्त आयोग—संविधान के अनुच्छेद 280 (1) के अन्तर्गत राष्ट्रपति ने 21 जून 82 को वाई. बी. चह्वाण की अध्यक्षता में आठवां वित्त आयोग नियुक्त किया है। आयोग का निर्णय वर्ष 1984-85 से वर्ष 1988-89 तक प्रभावी रहेगा। आयोग को पहली रिपोर्ट 31 अक्टूबर 1983 तक प्रस्तुत करनी है जिससे कि वर्ष 1984-85 के बजट को अन्तिम रूप देने में आयोग की सिफारिशों पर ध्यान दिया जा सके। वित्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयोग को निम्नलिखित विषयों पर सुझाव देने का कार्य सौंपा गया है—(क) केन्द्रीय करों जैसे, आयकर (कारपोरेशन कर को छोड़कर) और केन्द्रीय उत्पादन शुल्कों से प्राप्त होने वाली शुद्ध आय का केन्द्र एवं राज्यों तथा राज्यों में आपस में वितरण, (ख) भारत की संचित निधि में राज्य के राजस्वों की अनुदान सहायता देने के लिये फार्मूले का प्रतिपादन एवं जरुरतमन्द राज्यों को अनुच्छेद 275 (1) के अन्तर्गत दी जाने वाली सहायता राशि, तथा (ग) कोई भी ऐसा विषय जिसे राष्ट्रपति एक अच्छी व सुदृढ़ वित्त व्यवस्था के लिये आवश्यक समझता हो।

● मण्डल आयोग—जनता सरकार ने 1979 में बी. पी. मण्डल की अध्यक्षता में पिछड़े वर्ग आयोग की स्थापना की थी जिसे नौकरियों और शिक्षण संस्थाओं में पिछड़े वर्ग के लिये आरक्षण की व्यवस्था के सम्बन्ध में सुझाव प्रस्तुत करने के लिये कहा गया। आयोग के अनुसार, भारत में कुल 3743 पिछड़ी जातियाँ है। भारत की कुल जनसंख्या में इस वर्ग की जनसंख्या 52% है। इस तरह जनसंख्या के आधार पर पिछड़े वर्ग को कुल 52% आरक्षण प्राप्त होना चाहिए। परन्तु संविधान की धारा 14 (4) व 16 (4) के सन्दर्भ में नौकरी व शैक्षणिक संस्थाओं में कुल आरक्षण 50% से अधिक नहीं होना चाहिए। चूँकि अनुसूचित जातियों व जनजातियों को इस समय 22.5% आरक्षण उपलब्ध है, इसलिये आयोग के अनुसार पिछड़े वर्ग के लिये केन्द्र व राज्य सरकारों तथा अन्य उद्यमों की नौकरियों तथा शैक्षणिक संस्थाओं में प्रवेश के लिये 27% आरक्षित किया जाय।

● विधि आयोग—दिसम्बर 81 में के. के. मैथ्यू की अध्यक्षता में नियुक्त विधि आयोग को दिसम्बर 84 तक निम्नलिखित विषयों पर प्रतिवेदन देने के लिए कहा गया. (क) न्याय मिलने में विलम्ब को समाप्त करने, तकनीकी न्याय-प्रक्रिया को सरल बनाने एव न्यायिक प्रशासन के स्तर को सुधारने के उपाय (ख) राज्य के नीति निदेशक तत्वों के परिपेक्ष्य में वर्तमान कानूनों एवं नियमों का परीक्षण तथा संविधान की प्रस्तावना में समाविष्ट उद्देश्यों की पूर्ति एवं राज्य के नीति निदेशक तत्वों को प्रभावी करने के लिये विधि निर्माण (ग) केन्द्रीय अधिनियमों को सरल एवं विरोधाभासों से मुक्त करने के उपाय तथा (घ) अधिनियमों के अनुपयोगी भागों को संशोधित कर उन्हें अद्यतन बनाये जाने के उपाय।

● द्वितीय प्रेस आयोग—भारतीय प्रेस के विकास तथा स्थिति का अध्ययन करने और भावी विकास के सम्बन्ध में सिफारिश देने के लिये अप्रैल 80 में के. के. मैथ्यू की अध्यक्षता में द्वितीय प्रेस आयोग की नियुक्ति की गयी। आयोग ने अप्रैल 82 में बहुमत से 278 सिफारिशे पेश कीं जिनमें निम्नलिखित मुख्य हैं -(क) समाचार पत्रों का सूचना प्राप्त करने का अधिकार पूर्णतः सुरक्षित हो, (ख) समाचार पत्रों को अन्य उद्योगों से स्वतन्त्र करने की प्रक्रिया शीघ्रातिशीघ्र प्रारम्भ हो, (ग) समाचार पत्रों को सस्ते मूल्य पर न्यूज प्रिन्ट तथा एक विज्ञापन नीति के अन्तर्गत विज्ञापन वितरण के कार्य के लिये एक स्वायत्त संगठन का गठन हो (घ) छोटे व मध्यम श्रेणी के समाचार पत्रों को एक विकास निगम के माध्यम से विशेष सुविधाएं प्रदान की जाए, (ङ) समाचार पत्रों के ट्रस्टी बोर्ड की नियुक्ति प्रेस परिषद और सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश के परामर्श से करने की आवश्यकता समाचार पत्रों के मालिकों पर लगायी जाय। समाचार पत्रों के सम्पादकों की नियुक्ति के लिये मालिकों को पूरी छूट दी जाय परन्तु इसका ध्यान रखा जाय कि ये व्यक्ति ऐसे हों जो समाचार पत्र को सार्वजनिक हित में चलाने के योग्य हों तथा प्रेस परिषद के अधिकार में वृद्धि की जाय।

● आर्थिक प्रशासन सुधार आयोग—केन्द्र सरकार द्वारा वर्तमान कर ढांचे तथा आर्थिक प्रशासन में सुधार हेतु प्रख्यात अर्थशास्त्री एल. के. झा की अध्यक्षता में गठित इस आयोग को निम्नलिखित विषयों पर सिफारिश प्रस्तुत करने के लिये कहा गया—(क) कर प्रशासन, उसके वैज्ञानिकीकरण और सुधार पर, (ख) विभिन्न राज्यों में किराया नियन्त्रण सन्तुलन की समीक्षा पर तथा (ग) बचत के प्रोत्साहन पर।

● निर्वाचन आयोग—भारतीय संविधान के अनुच्छेद 324 के अन्तर्गत निर्वाचन आयोग की एक स्वतन्त्र निकाय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के रूप में स्थापना हुई। इस आयोग में एक मुख्य निर्वाचन आयुक्त, कई निर्वाचन आयुक्त तथा क्षेत्रीय आयुक्त होते हैं जिनकी नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा संसद निर्मित विधि के अन्तर्गत होती है। मुख्य निर्वाचन आयुक्त को केवल विशेष प्रक्रिया तथा आधारों पर हटाया जा सकता है। निर्वाचन आयोग के प्रमुख कार्य—(क) संसद व विधान मण्डलों के निर्वाचन के लिये मतदाताओं की सूची तैयार करना तथा इन निर्वाचनों का संचालन, निरीक्षण व नियन्त्रण करना, (ख) राष्ट्रपति व उपराष्ट्रपति के निर्वाचनों का अधीक्षण, निर्देश व नियंत्रण करना, (ग) संसद व विधान मण्डलों के निर्वाचन सम्बन्धी सन्देहों और विवादों के समाधान हेतु निर्वाचन न्यायाधिकरण की नियुक्ति करना, (घ) संसद व विधान मण्डलों के सदस्यों की अनर्हतायें के प्रश्न पर राष्ट्रपति व राज्यपालों को परामर्श देना तथा (द) राजनीतिक दलों को स्वीकृति, इन्हें तथा स्वतन्त्र प्रत्याशियों को निर्वाचन चिन्ह प्रदान करना इत्यादि।

● गोकाक समिति—कर्नाटक के विद्यालयों में प्रथम भाषा की संस्तुति प्रदान करने हेतु कर्नाटक सरकार द्वारा गठित इस समिति ने अपनी आख्या में कन्नड़ भाषा को ही विद्यालय के पाठ्यक्रम में एकमात्र प्रथम भाषा बनाने की संस्तुति की है। राज्य सरकार ने इस आख्या को संशोधन सहित स्वीकार किया है, जिसमें कन्नड़ या अन्य मातृभाषा (हिन्दी, उर्दू, मराठी, अंग्रेजी या तेलगू) को प्रथम भाषा के रूप में स्वीकार किया है।

● ब्राण्ड्ट आयोग—विश्व के विकसित (उत्तर) और विकासशील (दक्षिणी) देशों के मध्य बढ़ती हुई विषमता के कारणों की समीक्षा हेतु विली ब्राण्ड्ट की अध्यक्षता में नियुक्त उत्तर-दक्षिण आयोग ने मार्च 80 में प्रस्तुत अपनी आख्या में मुख्य रूप से विकसित व विकासशील राष्ट्रों के मध्य शान्ति, निःशस्त्रीकरण और विकास के सम्बन्धों के विस्तार पर बल देते हुए नयी अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था की स्थापना को आवश्यक बताया।

पुरस्कार तथा सम्मान

● नोबेल पुरस्कार, 1982—विभिन्न क्षेत्रों में अनुपम योगदान हेतु नोबेल पुरस्कार, जिसकी पुरस्कार राशि इस वर्ष 1.15 मिलियन क्राउन ($1,50,000) है, अधोलिखित व्यक्तियों को प्रदान किये गये :

शान्ति : स्वीड्न की एल्वा मिर्डल व मेक्सिको के भूतपूर्व विदेश मन्त्री एलफॉन्सो गार्सिया रॉबेल्स को संयुक्त रूप से ;

अर्थनीति : प्रो. जॉर्ज स्टिग्लर (स. रा. अ.)

साहित्य : ग्रेब्रियल गार्सिया मारक्वेज (कोलम्बिया) ;

आयुर्विज्ञान : डॉ. स्ऊन बर्गस्ट्रोम व डॉ. बेंग्ट सेम्युलसन (स्वीडन) एवं इंग्लैण्ड के डॉ. जॉन वेन को संयुक्त रूप से;

भौतिकी : सं. रा. अ. के प्रो. कैनिथ जी. विल्सन;

रासायनिकी : डॉ. आराँ क्लुग (ब्रिटेन)।

● एलबर्ट आइन्स्टीन शान्ति पुरस्कार—सं. रा. अ. के रॉबर्ट मक्नमारा, मक्जॉर्ज बेन्डी व जेरार्ड स्मिथ को उनके आणविक शस्त्रास्त्रों के प्रयोग पर लेख के कारण $50,000 के शान्ति पुरस्कार हेतु सुपात्र घोषित किया गया।

● हेमरषोल्ड अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति पुरस्कार, 1982—फिलिपीन्स के विदेश मन्त्री कार्लोस पी. रॉम्यूलो को अन्तर्राष्ट्रीय समेकता व सहयोग हेतु किये गये कार्यों के सम्मान में यह पुरस्कार प्रदान किया गया।

● गिनेस पुरस्कार, 1982—भारत के प्रसिद्ध विरूप-शोधन-शल्यचिकित्सक तथा "जयपुर पद" के आविष्कर्त्ता डॉ. प्रमोद करण सेठी व रामचन्द्र शर्मा (भारत) तथा बारबेडॉस शुगर प्रड्यूसर्स् एसोसिएशन से सम्बद्ध कृषि अन्वेषक डॉ. कोलन हडसन को वैज्ञानिक उपलब्धियों हेतु इस पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

● तृतीय विश्व में अनुपम योगदान पुरस्कार, 1982—अन्तर्राष्ट्रीय तण्डुल अन्वेषण संस्थान (International Rice Research Institute), फिलिपीन्स, को तृतीय विश्व में अनुपम योगदान हेतु, थर्ड वर्ल्ड फाउन्डेशन फॉर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोशल एण्ड ईकनॉमिक स्टडीज द्वारा स्थापित, $100,000 का पुरस्कार प्रदान किया गया।

● कलिङ्ग पुरस्कार, 1981—विज्ञान सम्प्रेषण हेतु प्रयासों के निमित्त, यूनेस्को द्वारा प्रदत्त, यह पुरस्कार ब्रिटेन के डेविड फ्रेडेरिक एटेनबरो व सं. रा. अ. के डेनिस फ्लेंगन को दिया गया।

● संयुक्त राष्ट्र स्वर्ण पदक—वर्ल्ड पीस काउन्सिल के अध्यक्ष, रमेश चन्द्र को, द. अफ्रीका में स्वातन्त्र्य व मानव गरिमा हेतु अनुपम योगदान के निमित्त सं. रा. स्वर्ण पदक से विभूषित किया गया। अन्य प्राप्तकर्त्ता : आर्कबिशप ट्रेवर हडिल्स्टन्, मैडम जीन-मार्टिन सिस (गिनी), एब्राहम ऑडिया (नाइजेरिया), व जेन नीको षोल्टेन् (नीदरलेन्ड्स) एवं हौरी बॉमेडीन (अल्जीरिया) व डॉ मार्टिन लूथर किंग [सं. रा. अ.] को निधनोत्तर।

● सोवियत भूमि नेहरू पुरस्कृति, 1982—उर्दू नाटककारा इस्मत चुंगताई, तेलुगू लेखक डॉ. सी. नारायणरेड्डी व साहित्य समालोचक डॉ. राम विलास शर्मा को रु. 15,000 का यह पुरस्कार प्रदान किया गया। रु. 7,500 की पुरस्कृति जय प्रकाश भारती [हिन्दी], प्रो. के. पी. शशिधरन [मलयालम] व रूमा गुहाठाकुरता को प्रदान की गयी।

● न्यूजवीक पुरस्कृति, 1982—भारत के निवर्तमान पर्यटन उप-महानिदेशक प्राण सेठ को एशियाई देशों में पर्यटन प्रोत्साहन कार्यक्रम के आर्हापण करने हेतु इस सम्मान से विभूषित किया गया।

● बोरलॉग पुरस्कृति, 1981—भारतीय कृषि-अन्वेषणालय (आई. ए. आर. आई.), नई दिल्ली, के निदेशक डॉ. हरि कृष्ण जैन को 1981 के पुरस्कार हेतु चुना गया है। 1980 का पुरस्कार डॉ. आर. एस मूर्ति को प्रदान किया गया है।

● पञ्चम् जमनालाल बजाज पुरस्कृति, 1982—इस पुरस्कृति के प्राप्तकर्ता प्रेमभाई (उ. प्र.), गकुल भाई भट्ट (राज.) व तारावेन मशरुवाला (महा.) हैं, जिन्हें क्रमशः ग्राम्य विकास में विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी की प्रयुक्ति पर अन्वेषण, रचनात्मक कार्य व स्त्री तथा बाल कल्याण एवं उत्थान में अनुपम योगदान हेतु पुरस्कृत किया गया।

● ग़ालिब पुरस्कृति, 1981—महेश्वर दयाल को उर्दू नाटक, गुलाम रब्बानी तबान को शायरी, अली अहमद सुरूर को उर्दू गद्य व मोहम्मद अतीक सिद्दीकी को (निधनोत्तर) उर्दू तथा फारसी साहित्य में अन्वेषण हेतु पुरस्कृत किया गया।

● नेहरू साक्षरता पुरस्कार, 1982—देश में प्रौढ़ शिक्षा के प्रोत्साहन हेतु अनुपम योगदान के लिये कर्णाटक के एन. भदरैया को पुरस्कृत किया गया।

● धनवन्तरी पुरस्कृति, 1982—देश के प्रकृष्टतम् आयुर्विज्ञानी को दी जाने वाली धनवन्तरी पुरस्कृति से प्रसिद्ध विरूपशोधन-शल्यचिकित्सक डॉ. के. टी. ढोलकिया को सम्मानित किया गया है।

● विश्व खाद्य दिवस पुरस्कृति—भारतीय समाचारपत्र 'इन्डियन एक्सप्रेस' के प्रधान सम्पादक बी. जी. वर्गीस को कृषि पर आधारित "ब्लैक इज़ ब्यूटी" नामक कथा पर पुरस्कार प्रदान किया गया।

● जी. डी. पारिख स्मारक पुरस्कृति सुप्रसिद्ध शिक्षण प्रसारिका व समाज-सेविका दिवङ्गता श्रीमती वेल्दी फिशर द्वारा संस्थापित 'द लिटेरेसी हाउस', लखनऊ, को भारत में शिक्षण के क्षेत्र में प्रकृष्ट योगदान करने हेतु प्रो. जी. डी. पारिख स्मारक पुरस्कृति से सम्मानित किया गया।

● तानसेन सङ्गीत पुरस्कृति—प्रसिद्ध सङ्गीत-विज्ञ पं. नारायण राव व्यास, उस्ताद निसार हुसैन व दिलीपचन्द्र बेदी को तानसेन पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

● शरत् चन्द्र राय पदक, 1982—एशियेटिक सोसायटी का यह सम्मानजनक पदक प्रो. एम. एस. ए. राव को "सांस्कृतिक मानविकी" में उनके योगदान हेतु प्रदान किया गया।

● विश्व भारती सम्मान—गगनेन्द्र-अवनीन्द्र पुरस्कृति—प्रो. नारायण श्रीधर बेन्द्रा (रचनात्मक कला व शिक्षा); रथीन्द्र नाथ पुरस्कृति—डॉ. अमूल्य कुमार रेड्डी (विज्ञान तथा मानव कल्याण को लोकप्रिय बनाना); देशिकोत्तम उपाधि—प्रो गुनार मिर्डल, डॉ. उमा शङ्कर जोशी व पं. रवि शङ्कर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

● कालिदास सम्मान--सुप्रसिद्ध बङ्गाली नाटककार शंभू मित्र को 1982 के कलिदास सम्मान हेतु चयनित किया गया है। यह सम्मान कृत्यन व अभिघटन-कला के लिये दिया जाता है।

● साहित्य अकादमी पुरस्कार, 1982 —साहित्य अकादमी द्वारा 22 लेखकों को उनकी साहित्यिक कृतियों पर पुरस्कृत किया गया है। इन रचनाकारों में प्रमुख हैं :

हरि शङ्कर परसाई—विकलाङ्ग श्रद्धा का दौर (हिन्दी; व्यंग्य) ;

अरुण जोशी—द लास्ट लैबरिन्थ ((The Last Labrynth—अंग्रेजी)

वी. के. नारायण कुट्टी—पय्यनकथाकाल (मलयालम)

● पी. के. नारायण पिलै—विश्वभानु (संस्कृत)।

● बूकर अवार्ड, 1982—सर्वश्रेष्ठ फिक्शन लेखन पर दिया जाने वाला सम्मान जनक बूकर पुरस्कार ऑस्ट्रेलिया के टॉमस कैनेली को उनकी पुस्तक "शिन्डलर्स आर्क" पर प्रदान किया गया है।

● यूनेस्को पुरस्कृति—स्टॉकहोम इन्टरनैशनल पीस रिसर्च इन्स्टीट्यूट (सिपरी) को 'शान्ति हेतु शिक्षा' पर यह पुरस्कार दिया गया है।

● रेमन मेग्सेसे पुरस्कार, 1982—अरुण शौरी—पत्रकारिता, साहित्य एवं रचनात्मक सम्प्रेषण कला;

मणिभाई भीमभाई देसाई—सार्वजनिक सेवा;

चण्डी प्रसाद भट्ट—सामुदायिक नेतृत्व;

आर्थुरो पी. एल्काराज (फिलिपीन्स)—शासकीय सेवा।

विज्ञान जगत

● ऊर्जा का नवीन स्रोत : कैनेडियन विज्ञानियों ने कूड़ाकर्कट व मल से ऊर्जा प्राप्त करने का नया साधन खोजा है। मल-क्षेप्य से ऊर्जा तथा तेल प्राप्त करके एक 2 अश्वशक्ति का डीजल एन्जिन चलाने का सफल प्रयास किया गया।

● सयूज टी-7 : सो. सं. की स्वितलाना सवीत्स्कया ने ल्योनिद पपोव व अलिक्सान्द्र स्पेरबोव के साथ 19 अगस्त को सयूज टी-7 अन्तरिक्ष यान में यात्रा करके विश्व में द्वितीय स्त्री अन्तरिक्ष यात्री होने का गौरव प्राप्त किया। प्रथम स्त्री यात्री सो. सं. की वलेन्तिना तिरिशकोवा थीं। सजूअ टी-7 अन्तरिक्ष-स्थात्र सल्यूत-7 से ग्रथित हुआ।

● अन्तरिक्ष त्रसर 'कोलम्बिया' : सं. रा. अ. की स्पेस शटल 'कोलम्बिया' 11 नव. 1982 को केप कैनावेरल स्थत्र (स्टेशन) से वातानीत (airborne) हुआ। यह कोलम्बिया की पञ्चम् उड़ान थी। इस अन्तरिक्ष त्रसर (shuttle) में चार कारुक (crew), तथा दो सञ्चार उपग्रह थे जिन्हें अन्तरिक्ष में प्रक्षेपित किया गया।

● इन्सेट 1-ए : 10 अप्रैल, 1982 को सं. रा. अ. के केप कैनावेरल अन्तरिक्ष स्थत्र से थोर डेल्टा रॉकेट द्वारा प्रक्षेपित भारत का प्रथम बहुद्देशीय उपग्रह इन्सेट 1-ए ने, जिसे अन्तरिक्ष में 7 वर्ष तक रहना था, ईंधन की कमी के कारण केवल 150 दिन अन्तरिक्ष में रहकर कार्य करना बन्द कर दिया।

● रक्षा उपग्रह : सो. सं ने वायु दुर्घटनाओं की सूचना तथा दुर्घटनाग्रस्त यानों को खोजने के लिये, अन्तर्राष्ट्रीय खोज तथा निस्तारण (rescue) कार्यक्रम के अन्तर्गत, एक रक्षा उपग्रह प्रक्षेपित किया है जो अनेक पूर्व-सूचनाएं देने में सक्षम है।

● तृतीय पीढ़ी के आणविक आयुध : सं. रा. अ. में तृतीय पीढ़ी के आणविक आयुधों का विकास किया जा रहा है जिसके अन्तर्गत ऐसे प्रस्फोट (bomb) होगें जो विस्तृत विद्युत-चुम्बकीय क्षेत्र उत्पन्न कर शत्रुओं की सम्प्रेषण प्रणाली को नष्ट कर देंगे। प्रक्षेपास्त्रों को नष्ट करने हेतु लेसर बीमों का विकास भी हो रहा है।

● भारत-सो. सं. संयुक्त अन्तरिक्ष उड़ान : भारत के विंग कमान्डर रवीश मल्होत्रा तथा स्क्वॉड्रन लीडर राकेश शर्मा को 1984 में सो. सं. से होने वाली अन्तरिक्ष उड़ान हेतु चयनित किया गया है। इन्हें सो. सं. द्वारा प्रशिक्षित किया जायेगा।

(शेष पृष्ट 89 पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्व-राजनीति

वर्ष 1982 : रीगेन की उग्रवादिता का वर्ष

नन्दलाल* एवं उर्मिला लाल †

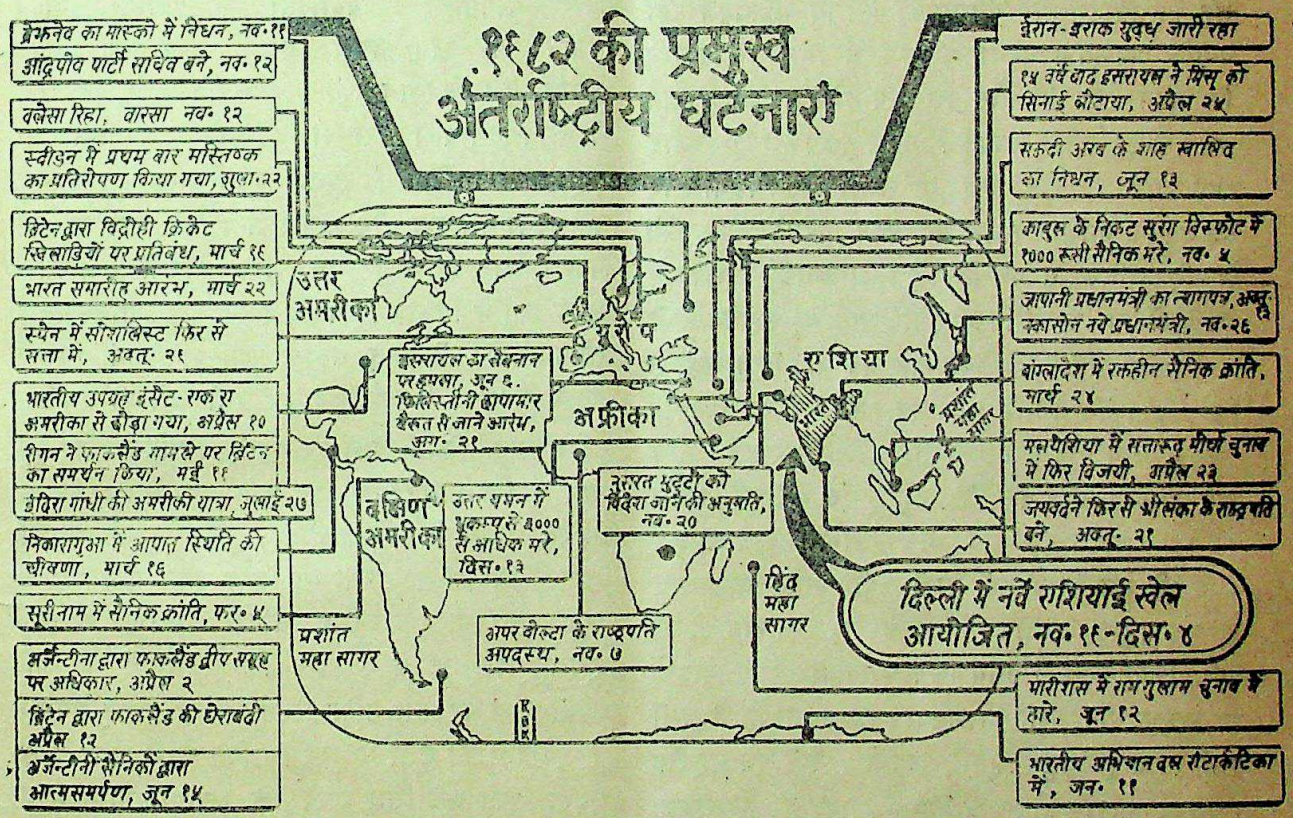

1982 विगत हो गया, आठवें दशक के दूसरे वर्ष के प्रारंभ की सर्वाधिक चर्चापूर्ण घटना पोलैण्ड में आपात स्थिति की घोषणा (13 दिसम्बर, 1981) रही जबकि सर्वाधिक महत्वपूर्ण अंतिम घटना, 18 वर्ष के उथल-पुथल पूर्ण समय तक 'सोवियत भालू' (RUSSIAN BEAR) की बागडोर संभाले रखने वाले सोवियत राष्ट्रपति श्री लियोनिद ब्रेझनेव की मृत्यु (10 नवम्बर) रही। इन दो घटनाओं के मध्य में विश्व राजनीति के टेढ़े-मेढ़े मार्गों में अनेक समीकरण उभरे; पुराने समीकरणों को नवीन रूप दिया गया। 'तनाव शैथिल्यीकरण' या 'देतां' की जो आशा आठवें दशक के प्रारंभिक दो वर्षों में, दोनों महाशक्तियों के मध्य अनेकानेक बार बातचीत के आधार पर, बनी था, वह राष्ट्रपति ब्रेझनेव की मृत्यु के साथ ही समाप्त-प्राय हो गयी है, अफगानिस्तान में सोवियत सैनिक हस्तक्षेप तथा सतत् सैनिक उपस्थिति का प्रश्न अब भी विश्व राजनीति की एक वास्तविकता बनी हुयी है। लेबनान-संकट 3-4 महीनों के 'नरसंहार' के उपरांत यद्यपि अब त्वरित ढंग से सुलझ गया है किन्तु ब्रेझनेव, रीगेन एवं फैज योजनाओं के बावजूद फिलीस्तीनी स्वायत्तता का प्रश्न अभी भी किसी

*प्रवक्ता, राजनीति विज्ञान, काशी विद्यापीठ विश्वविद्यालय, वाराणसी
† अनुसंधात्री, राजनीति विज्ञान, काशी विद्यापीठ, विश्वविद्यालय, वाराणसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मरीचिका की भाँति अधर में लटका है। ईरान-इराक युद्ध वैसे ही जारी है और किसी भी समय विस्फोटक मोड़ ले सकता है। साम्यवादी विश्व में पोलैण्ड में 'सालिडैरिटी' पर प्रतिबंध ने एक बार पुनः साम्यवाद की उग्रवादिता (संगठनात्मक) को स्पष्ट किया है। 12 नवम्बर को लेक वालेसा की रिहाई से पोलैण्ड में श्रमिक ऊहा-पोह की स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं आया। यह वर्ष ब्रिटिश नीति-नियामकों के लिये महत्वपूर्ण रहा क्योंकि फाकलैण्ड-घटनाक्रम ने यह सिद्ध कर दिया है कि ब्रिटेन अब भी नौसैनिक उपनिवेशवाद के पुराने समय में रह रहा है। फाकलैण्ड घटनाक्रम ने एक और तथ्य को उभार कर विश्व के समक्ष प्रस्तुत किया और वह यह कि वाशिंगटन अब भी अपने यूरोपीय समर्थकों के प्रति अधिक संवेदनशील है। एशियाई महाद्वीप में यद्यपि क्षेत्रीय राजनीतिक तथा आर्थिक सहयोग की चर्चा जोर-शोर से की गयी और अब भी की जा रही है किन्तु द्वि-पक्षीय मसलों पर अब भी विभिन्न एशियाई देशों के मध्य वही पुरानी कटुता दृष्टिगोचर हुई। चीन पाकिस्तान के मध्य वैसे ही मधुर एवं मैत्रीपूर्ण सम्बंध बने रहे; भारत-चीन के बीच सीमा-विवाद को हल करने की बात बराबर की जाती रही; भारत-पाकिस्तान के मध्य संयुक्त आयोग के गठन पर सहमति तो हो गयी, किन्तु गठन के समय जिन व्यावहारिक कठिनाइयों का सामना दोनों पक्षों को करना पड़ सकता है, वे अभी से ही स्पष्ट हैं, 'अयुद्ध संधि' अथवा 'मैत्री एवं सहयोग संधि' पर सहमति होना अभी भी बाकी है; कम्प्यूचिया में तीन वर्गों की साझा सरकार के गठन के रूप में 'एशियान' को महत्वपूर्ण उपलब्धि प्राप्त हुयी, चीन-सोवियत संघ आगामी वर्षों में एक दूसरे के और निकट आयेंगे, इस दृष्टिकोण के स्पष्ट संकेत 1982 में प्राप्त हैं। अफ्रीकाई महाद्वीप अभी भी जागरण के प्रारंभिक चरण से गुजर रहा है। नामीबिया की स्वतंत्रता का प्रश्न 1982 में भी एक आदर्श बना रहा यद्यपि समय-असमय इसकी चर्चा जबानी जमाखर्च वाले विभिन्न सम्मेलनों में की जाती रही। हाँ, यह जरूर हुआ कि 28 फरवरी को राष्ट्रपति रीगेन ने भू. पू. अमरीकी राष्ट्रपति कार्टर द्वारा दक्षिण अफ्रीका को सैनिक साज सामान पर आरोपित प्रतिबंध को समाप्त कर एक बार पुनः विश्वशांति तथा विश्व-बंधुत्व स्थापित करने की इच्छा का परिचय दिया।

उपरोल्लिखित घटना-क्रम का यदि मूल्यांकन किया जाय तो वह इससे सहज ही दो निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं : एक तो यह कि 1982 रीगन की उग्रवादिता का वर्ष रहा। स्वयं अमरीका में अमरीकी विदेश नीति और रीगेनाइट उग्रवादिता के विरूद्ध व्यापक पैमाने पर जन-प्रदर्शन इस तथ्य के सबल प्रमाण हैं। लेबनान की घटना-प्रक्रिया में अमरीका के नीति-नियामकों द्वारा जो दृष्टिकोण अपनाया गया, वह इस उग्रवादिता की स्वतः चुगलीखाता है। लेबनॉन का घटना क्रम एक और प्रमुख तत्व को उजागर कर गया। ईरान-इराक युद्ध एवं अन्य कारणों से आपस में अरब देशों के विभाजन एव वैमनस्य, अफगानिस्तान में सोवियत संघ की सतत् सैनिक उपस्थिति एवं मिस्र के नेतृत्व में 'अरब विश्व' के दक्षिण पंथी देशों की अमरीका सहित अन्य पश्चिमी देशों पर बढ़ती निर्भरता का पूरा लाभ उठाया। प्रारंभिक रूप से 6 जून के आक्रमण का उद्देश्य उग्रवादी फिलिस्तीनी गुरिल्लों को पश्चिमी बेरूत से निष्कासित करना था किन्तु सबल सैनिक शक्ति तथा अमरीका के परोक्ष सैनिक समर्थन का लाभ उठाकर इस्तेमाल ने न केवल फिलिस्तीनियों के प्रति अपनी घृणा का यथा-शक्ति प्रदर्शन किया, वरन् लेबनॉन में फलंगियों को सत्ता में पुनः स्थापित करने तथा 'अरब एकता' को झूठ सिद्ध करने के अपने प्रयास में भी सफलता प्राप्त की। स्वयं फिलिस्तीनी मुक्ति संगठन के अध्यक्ष यासिर अराफत ने यही बात कही कि 'अरब एकता एक गल्प (FARCE) है। परन्तु महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि अमरीकी उग्रवादिता के चलते, विशेष अमरीकी दूत फिलिप हबीब के 18 अगस्त के पांच सूत्री शांति-योजना तथा राष्ट्रपति रीगेन के। सितम्बर की शांति-योजना के बावजूद, फिलिस्तीनी स्वायत्तता का प्रश्न अभी भी अधर में लटका हुआ है। अमरीकी विदेशनीति किस प्रकार अल्पकालिक (SHORT-TERM) राष्ट्रीय हितों पर अवलंबित है, इसका सहज अनुमान इसी तथ्य से लगाया जा सकता है कि एक ओर अमरीका फिलिस्तीनी स्वायत्तता का चर्चा जोर-शोर से करता है और दूसरी ओर ईरान द्वारा संयुक्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्र से इस्राइल के निष्कासन के प्रस्ताव के प्रतिक्रिया स्वरूप अमरीका ने स्वयं संयुक्त राष्ट्र को छोड़ देने तथा सभी प्रकार की आर्थिक सहायता को बंद कर देने की धमकी दी। 1982 के उत्तरार्ध के घटना-क्रम को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि अब अमरीका भी इस तथ्य से परिचित हो चुका है कि पश्चिमी एशिया में इस्राइल एक सशक्त सैनिक शक्ति का स्थान प्राप्त कर चुका है। किसी भी संभावित अरब सैन्य-गठबंधन की तुलना में इस्राइल अधिक शक्तिशाली पड़ेगा, यह भी अमरीका जानता है, किन्तु अमरीका की एक समस्या और है। वह वह यह कि खाड़ी के क्षेत्र में सूडान तथा मिस्र जैसे पश्चिमी समर्थक राष्ट्रों का अस्तित्व भी निरापद होना चाहिये। शायद यही कारण माना जा सकता है कि अपनी विश्व-परक कूटनीति के अन्तर्गत अमरीका इस्राइल तथा नरमवादी अरब राष्ट्रों के मध्य एक संतुलन की स्थापना करना चाहता है। इसी कारण पिछले कुछ वर्षों के काल में अब तक का सर्वाधिक उग्रवादी रीगेन प्रशासन, इस्राइल के विरूद्ध किसी प्रकार उग्र कदम उठाने में पूर्णतया असमर्थ है।

अमरीकी उग्रतवादिता से जुड़ा हुआ ही 1982 की विश्वनीति का दूसरा निष्कर्ष है, और वह है कि 1982 के घटनाक्रम ने संयुक्त राष्ट्र जैसे महत्वपूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों के औचित्य के समक्ष एक और प्रश्न चिन्ह लगा दिया गया। लेबनॉन के घटनाक्रम के दौरान ही संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा 'नरसंहार' को अविलम्ब रोकने के लिये कितने ही प्रस्ताव पारित किये गये किन्तु..... ....। इसी प्रकार निःशस्त्रीकरण की दिशा में भी संयुक्त राष्ट्र की कोई ठोस उपलब्धि 1982 में नहीं हो पायी। 8 जून से प्रारंभ होकर 157 सदस्य राष्ट्र की उपस्थिति में, 1 माह तक चलने वाला, संयुक्त राष्ट्र का द्वितीय निःशस्त्रीकरण सम्मेलन अपने परिणाम की दृष्टि से औपचारिक ही रहा। सम्मेलन प्रारंभ होने के पूर्व यद्यपि यह अनुमान था कि सदस्य-राष्ट्र इस दिशा में कुछ ठोस प्रस्ताव प्रस्तुत करेंगे जिन पर आम सहमति हो सकेगी, किन्तु ऐसा कुछ भी न हो सका। वास्तव में इस प्रकार के प्रयास की असफलता के निश्चित कारण हैं: (क) निवर्तमान विश्व में निःशस्त्रीकरण के लिये स्वस्थ राजनीतिक वातावरण तथा इच्छा-शक्ति का अभाव है। इस दिशा में किये गये किसी भी प्रयास के दौरान, चाहे वह संयुक्त राष्ट्र के माध्यम से किया गया हो अथवा अन्य क्षेत्रीय संगठनों अथवा द्वि-पक्षीय वार्ता के माध्यम से, हमेशा बाह्य घटनाओं, यथा—पोलैण्ड, अफगानिस्तान अथवा लेबनॉन को आधार बनाने का प्रयास किया जाता रहा है। 1982 के पूरे वर्ष ने यह और अधिक स्पष्ट रूप से सिद्ध कर दिया है कि महा-शक्तियों की विदेश-नीति का विशिष्ट घटनाओं से संबंधीकरण (LINKAGE) मात्र राजनीतिक सिद्धान्त नहीं, वरन् अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति की वास्तविकता बन चुकी है; (ख) दिन-प्रतिदिन अविकसित या विकासशील राष्ट्रों की भांति महाशक्तियाँ भी असुरक्षा की भावना से ग्रस्त होती जा रही है। मास्को द्वारा एस. एस.-20 तथा अमरीका द्वारा पर्शिंग-2 एवं क्रूजे प्रक्षेपास्त्रों का अधिकाधिक नियोजन इस तथ्य का ज्वलंत प्रमाण है। दोनों महाशक्तियों के मध्य आज मुख्य विवाद इस तथ्य पर नहीं है कि दोनों की शक्तियों में एक संतुलित संतुलन (BALANCED BALANCE) होना चाहिये, वरन् मुख्य विवाद इस बात पर है कि यूरोप में दोनों की वास्तविक शक्ति कितनी है। इस प्रकार 1982 का वर्ष एक सशक्त विश्व-शांति संगठन के रूप में संयुक्त राष्ट्र की निरर्थकता को और अधिक उजागर कर गया।

वाशिंगटन एवं मास्को के मध्य परमाणु अस्त्रों के परिसीमन पर 1982 के दौरान कई खण्डों में जो वार्ताएँ हुई, उनका भी कोई ठोस परिणाम परस्पर समझ के अभाव के कारण नहीं निकल पाया। प्रारम्भिक रूप से मई 82, में राष्ट्रपति रीगेन द्वारा सोवियत नेतृत्व के समक्ष यह प्रस्ताव रखा गया कि दोनों महाशक्तियों को अपने-अपने परमाणु प्रक्षेपास्त्र 30% से 50% कम कर देना चाहिए किन्तु चूंकि साल्ट का अनुमोदन अभी तक अमरीकी सीनेट द्वारा नहीं किया गया है, मास्को ने अमरीकी प्रस्ताव पर कटु प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि इस प्रकार का प्रस्ताव अमरीकी नीति-नियामकों द्वारा, अमरीकी नेतृत्व को स्वीकार करने की अनिच्छा वाले पश्चिमी यूरोप के राष्ट्रों, विशेषतया फ्रांस तथा पश्चिमी जर्मनी, की सहानुभूति प्राप्त करने के उद्देश्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से किया गया है। पुनः जुलाई के प्रथम सप्ताह में प्रस्ताव जिनेवा-वार्ता के अवसर पर भी दोनों देशों के मध्य परमाणु अस्त्रों के निश्चित परिसीमन पर कोई आम सहमति न हो पायी। यद्यपि दिवंगत सोवियत राष्ट्रपति श्री लियोनिद ब्रेझनेव द्वारा यह घोषणा की गयी कि सोवियत-संघ परमाणु अस्त्रों के प्रयोग में कभी भी पहल नहीं करेगा, किन्तु फिर भी वर्ष के अंत में निःशस्त्रीकरण प्रयासों की 'बैलेंस शीट' निराशाजनक रही।

साम्यवादी विश्व में पोलैण्ड में श्रमिक अस्थिरता इस अर्थ में सर्वाधिक महत्वपूर्ण रही कि स्वतंत्र श्रमिक संगठन 'सालिडैरिटी' या 'सालदिरनाश्च' की गति-विधियों ने साम्यवादी विश्व की मौलिक मूल्यों के समक्ष प्रश्न-चिन्ह लगा दिया। ज्ञातव्य है कि जुलाई, 1980 में मांस के बढ़े हुए मूल्यों के विरोध में श्रमिकों की व्यापक हड़ताल साम्यवादी पोलैण्ड में प्रारम्भ हुई थी। तब से लेकर, दिसम्बर, 1981 तक की राजनीतिक अस्थिरता का चरम परिणति 13 दिसम्बर, 1981 को पोलैण्ड में राष्ट्रीय आपात की घोषणा के रूप में हुई। पुनः 30 सितम्बर से 2 अक्तूबर तक 'सॉलिडैरिटी' की द्वितीय वर्ष-गाँठ के अवसर पर ग्डांस्क, लूबिन आदि प्रमुख शहरों में श्रमिकों की व्यापक हड़ताल एवं गिरफ्तारी के परिणाम स्वरूप 1 अक्तूबर को 'सॉलिडैरिटी' पर प्रतिबंध लगा दिया गया। बाद में 11 नवम्बर को 'सॉलिडैरिटी' के नेतृत्व कर्त्ता लेक वालेसा को इस आधार पर रिहा कर दिया गया कि वे पोलिश सरकार से श्रमिक अशांति के मसले पर वार्ता करना चाहते हैं। किन्तु पोलैण्ड की आंतरिक स्थिति अभी वैसी ही ऊहा-पोह की है। पोलैण्ड का घटनाक्रम इस अर्थ में यथेष्ट महत्वपूर्ण है कि सोवियत-खेमे के किसी भी राष्ट्र में साम्यवादी दल से पृथक् किसी अन्य श्रमिक संगठन की स्थापना का यह पहला दृष्टांत रहा। 'सॉलिडैरिटी' पर सरकारी प्रतिबन्ध पर सर्वाधिक उग्रवादी प्रतिक्रिया रीगेन प्रशासन पर हुई, जिसने पोलैण्ड पर पूर्व-काल में आरोपित आर्थिक प्रतिबन्ध को और बढ़ाने का निर्णय लिया है। 14 दिसम्बर, 1982 को पोलैण्ड में आपात-स्थिति की घोषणा की पहली वर्ष-गाँठ के अवसर पर स्थिति की समीक्षा तथा भावीक्रम के विषय पर बोलते हुए जनरल जारुजेल्स्की ने आशा व्यक्त की है कि कुछ ही समय में देश में न केवल आपात-स्थिति की घोषणा को समाप्त कर दिया जायेगा, वरन् मार्शल लॉ कानूनों को भी समाप्त कर दिया जायेगा।

इस प्रकार 1982 ने इस तथ्य को आवश्यकता से अधिक प्रमाणित कर दिया कि सोवियत-विश्व में भी दरारें पड़ रही हैं। किन्तु दूसरी ओर वर्ष का उत्तरार्द्ध, एक समय के दो 'साम्यवादी भ्राताओं' (सोवियत संघ एवं चीन) के परस्पर सम्बन्धों की दृष्टि से महत्वपूर्ण रहा। लगभग 20 वर्षों के पश्चात् चीन एवं सोवियत संघ के मध्य वार्तालाप के लिये महौल तैयार हुआ है। ब्रेझनेव की अन्त्येष्टि के अवसर पर तत्कालीन चीनी विदेशमंत्री ह्वांग हुआ की उपस्थिति एवं नये सोवियत महासचिव यूरी ऐन्द्रोपोव द्वारा उनमें प्रदर्शित रुचि—ये दोनों ही तथ्य इंगित करते हैं कि हो सकता है निकट भविष्य में दरार कम हो जाय? चीनी पक्ष द्वारा इस संदर्भ में अफगानिस्तान में सोवियत सैनिक उपस्थिति; कम्प्यूचिया के मसले पर आक्रमणकारी वियतनाम को मास्को द्वारा समर्थन तथा चीनी सीमाओं पर सोवियत—सैनिकों की भारी संख्या में एकत्रीकरण की चर्चा की गयी है। बीजिंग के अनुसार सोवियत विदेश-नीति के इन विसंगतियों के चलते, बीजिंग एवं मास्को के मध्य किसी सामञ्जस्यपूर्ण समझौते की बात कठिन होगी, किन्तु फिर भी दोनों पक्षों द्वारा अनेक बार परस्पर सम्बन्ध सुधारने की इच्छा का हवाला दिया गया। निकट भविष्य में दोनों साम्यवादी राष्ट्रों के मध्य द्वि-पक्षीय वार्ता होने वाली है, किन्तु इसका क्या कोई महत्वपूर्ण परिणाम निकलेगा अथवा क्या विश्व राजनीति के समीकरणों में कोई ठोस परिवर्तन आयेगा, अभी से कुछ भी कहना कठिन है।

जहाँ तक अफ्रीकाई महाद्वीप का प्रश्न है, पूरे वर्ष नामीबिया की स्वतंत्रता का प्रश्न पहले की ही भाँति अधर में लटकता रहा। ज्ञातव्य है कि रीगेन ने शासन की बागडोर संभालते ही अफ्रीका के संदर्भ में जिमी कार्टर द्वारा अनुसरित नीति को बदल दिया। यह भी उल्लेखनीय है कि कार्टर ने हमेशा अपनी अफ्रीकाई नीति में मानव-अधिकारों को सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया और हमेशा इस बात के लिये प्रयत्नशील रहे कि नामीबिया की स्वतंत्रता के प्रश्न का एक सामञ्जस्यपूर्ण हल सोवियत-संघ के साथ सहयो-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गात्मक दृष्टिकोण से निकाला जा सका, किन्तु, रीगेन ने अफ्रीका में पूर्व-पश्चिम-मतभेद को अधिकतम प्रश्रय दिया है। दक्षिणी अफ्रीका की परिकल्पना पूरे 1982 वर्ष के दौरान रीगेन प्रशासन अफ्रीकाई महाद्वीप में सोवियत साम्यवाद के प्रसार को रोकने के एक महत्वपूर्ण क्षेत्रीय संयंत्र के रूप में करता रहा। इस नीति की प्रारंभिक शुरूआत के अन्तर्गत रीगेन प्रशासन ने 28 फरवरी, 1982 को, पूर्व-काल में 'रंगभेद की नीति को प्रश्रय देने' के कारण दक्षिण अफ्रीका पर आरोपित व्यापारिक प्रतिबन्ध को, समाप्त कर दिया। वास्तव में अमरीका तथा उसके सहयोगी देशों के लिये अफ्रीकाई महाद्वीप में दक्षिण अफ्रीका ही प्रमुख वैचारिक ठौर है। किन्त अन्य प्रमुख अफ्रीकाई देश नामीबिया की स्वतंत्रता के प्रश्न पर अमरीकी-नीति के कितने सबल विरोधी हैं, इसका अनुमान नवम्बर, 82 के तीसरे सप्ताह में अमरीकी उपराष्ट्रपति जार्ज बुश की सात अफ्रीकी देशों की यात्रा के दौरान, स्पष्ट हो गया। इन सभी सात देशों ने नामीबिया की स्वतंत्रता के पूर्व शर्त के रूप में क्यूबा द्वारा अंगोला से अपनी सेनाएं वापस बुलाये जाने की दक्षिणी अफ्रीका की माँग की समर्थन किये जाने की अमरीकी नीति की कटु आलोचना की है। कीनिया (जो महाद्वीप में सर्वप्रमुख पश्चिम समर्थक देश है) के राष्ट्र पति डेनियल ऐरप मोई भी इनमें शामिल थे। मोई द्वारा इस प्रकार अमरीकी नीति की इस प्रकार की आलोचना का यथेष्ट महत्व है क्योंकि वे निवर्तमान समय में अफ्रीकी एकता संगठन के अध्यक्ष भी हैं। वास्तव में सभी अफ्रीकाई देश, उनके महाशक्तियों से सम्बन्ध कुछ भी हों, इस बारे में संदेहास्पद है कि यदि क्यूबा अंगोला से अपनी सेनाएं वापस भी बुला ले तो भी क्या बोथा-शासन संयुक्त राष्ट्र के पर्यवेक्षण में प्रस्तावित चुनावों के बाद नामीबिया की स्वतंत्रता के प्रश्न को सुलझ जाने देगा? इसके विपरीत सभी अफ्रीकाई देश इस मत में एकमत प्रतीत होते हैं कि अंगोला से क्यूबा द्वारा अपनी सेनाएँ वापस बुला लिये जाने के बाद दक्षिण अफ्रीका अंगोला में पुनः विद्रोहियों को सहायता देगा। इस प्रकार 1982 के वर्ष में नामीबिया की स्वतंत्रता के प्रश्न का कोई ठोस समाधान न ढूँढ़ा जा सका।

पश्चिमी एशिया में लेबनान समस्या के अतिरिक्त ईरान-इराक युद्ध भी 1982 के पूरे वर्ष में महत्वपूर्ण घटनाक्रम रहा। सितम्बर, 1980 में प्रारम्भ खाड़ा का यह युद्ध अब 27 माह पूरे कर चुका है। किन्तु अब भी यह छिट-पुट ढंग से जारी है। 10 जून, 1982 को इराक की क्रांति कमान परिषद् ने एक पक्षीय युद्ध विराम की घोषणा की थी जिस प्रारम्भिक रूप से अस्वीकार करने के बाद ईरानी सरकार ने युद्ध समाप्त करने के लिये ईरानी क्षेत्रों से इराकी सेनाओं के लौटने, इराक द्वारा ईरान को मुआवजे तथा सद्दाम हुसैन को पद से हटाये जाने जैसी तीन शर्तों का उल्लेख किया था। 2 नवम्बर, 82 को ईरानी सेनाओं ने इराकी सीमा के 10 कि.मी. भीतर घुसकर ईराकी सेना पर आक्रमण किया, जिससे बड़ी संख्या में इराकी सैनिक हताहत् हुए। ईस्लामिक कान्फ्रेन्स आर्गनाइजेशन (ICO) तथा गुट निरपेक्ष देशों की समन्वय समिति द्वारा किये गये शाँति-प्रयास निरर्थक प्रमाणित हुए। इस प्रकार खाड़ी का युद्ध और उसके चलते यह अपूर्व में अस्थिरता 1982 को विरासत में प्राप्त हुयी है। इसी युद्ध के चलते गुटनिरपेक्ष देशों का अगला सम्मेलन बगदाद में न होकर नयी दिल्ली में हो रहा है।

पश्चिमी योरोप ने भी 1982 की विश्वराजनीति में तीन कारणों से महत्वपूर्ण भूमिका निभायी (क) आज सोवियत संघ सातवें दशक की तुलना में पश्चिमी यूरोप से अधिक शक्तिशाली है। (ख) पश्चिमी यूरोप (विशेषतया फ्राँस एवं पश्चिमी जर्मनी) निरंतर अमरीकी प्रभुत्व या नेतृत्व के समक्ष नये प्रश्न-चिन्ह लगाता जा रहा है। यह प्रवृत्ति आर्थिक तथा राजनीतिक दोनों ही क्षेत्रों में द्रष्टव्य है; और अन्ततः यूरोपीय सामञ्जस्यीकरण (European Cohersion) की दिशा में जो प्रयास छठवें दशक में यूरोपीय आर्थिक समुदाय (EEC) की स्थापना के बाद से प्रारम्भ हुआ था, वह क्रमशः मन्द पड़ता जा रहा है। इस प्रकार की प्रवृत्तियाँ वरसाई शिखर-सम्मेलन (4-7 जून) में सहज ही प्राप्त हैं। सम्मेलन में फ्राँस और जर्मनी ने अमरीकी आर्थिक नीति की कटु आलोचना के उपराँत सोवित-संघ के विरूद्ध आर्थिक प्रतिबन्धों को और अधिक कड़ा करने के रीगेन के पूर्वाग्रह को स्वीकार किया। इसी से जुड़ा हुआ प्रश्न सोवियत-संघ को पश्चिमी यूरोप से जोड़ने वाली 5 हजार कि.मी. लम्बी ट्राँस-साइबेरियन 'गैस पाइप-लाइन' का विवाद रहा। इस गैस पाइप-लाइन

111846

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के निर्माण के लिये सोवियत-संघ के साथ फ्रांस, पश्चिमी जर्मनी, इटली आदि पश्चिमी देशों ने समझौते किये थे। किंतु 13 दिसम्बर, 1981 को पोलैण्ड में जारुजेल्स्की सरकार द्वारा आपात-स्थिति की घोषणा के साथ यह पाइप-लाइन अमरीका तथा नाटो सहयोगी यूरोपीय देशों के मध्य विवाद का प्रमुख कारण बन गया। अमरीका चाहता था कि प. यूरोपीय देश सोवियत-संघ के प्रति अपेक्षाकृत और कठोर दृष्टिकोण अपनायें, उसे भय था कि इस पाइप-लाइन के निर्माण से प. यूरोप की सुरक्षा का प्रश्न यथेष्ट मात्रा में सोवियत-संघ पर निर्भर हो जायेगा। दूसरी ओर यूरोपीय देशों को पाइप-लाइन के निर्माण से दोहरा लाभ है, एक तो यह कि इससे इन यूरोपीय देशों की अरब देशों पर निर्भरता में कमी आयेगी, दूसरे, आर्थिक मंदी के इस वातावरण में यूरोपीय बेरोजगारों को काफी संख्या में रोजगार प्राप्त होगा। इस वातावरण में पूरे वर्ष प्रमुख पश्चिमी यूरोपीय देश (ब्रिटेन सहित) अमरीका का विरोध करते रहे, किन्तु लेक वालेसा को मुक्त किये जाने के उपरांत, वाशिंगटन ने बड़े अप्रत्याशित ढंग से पूर्व-काल में सोवियत-संघ पर आरोपित समस्त आर्थिक प्रतिबन्ध समाप्त कर दिये।

एशिया महाद्वीप पूरे वर्ष में, राष्ट्रीय, द्वि-पक्षीय क्षेत्रीय अथवा अन्तर्राष्ट्रीय-सभी दृष्टियों से पूरे वर्ष में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किये रहा। पूर्वी एशिया में अमरीका की विश्व-परक नीति के अन्तर्गत चीन पूरे वर्ष क्षेत्रीय रक्षक (Regional po iceman) की भूमिका निभाता रहा। वर्ष के मध्य में ताइवान को अमरीकी हथियारों की आपूर्ति के प्रश्न को लेकर दोनों देशों के मध्य कतिपय मतभेद हुए, किन्तु 17 अगस्त, को एक आंशिक समझौते के माध्यम से इस तनाव को हल कर लिया गया। समझौते के अन्तर्गत, जहाँ चीन ने यह आश्वासन दिया कि वह शांतिपूर्ण तरीके से ही ताइवान का मुख्य चीनी भूमि के साथ एकीकरण चाहता है, वहीं अमरीका ने ताइवान को लम्बे समय तक हथियारों की आपूर्ति न करने का आश्वासन दिया है। इस प्रकार का विकास पर्यवेक्षकों के विश्लेषण के अनुकूल ही रहा। चीन के लिये अभी यह संभव नहीं है कि वह अमरीका का खुलकर विरोध कर सके, यद्यपि सोवियत-संघ के साथ चीन के अच्छे सम्बन्ध की आशा की जा रही है, किन्तु पूर्ण 'शैथिल्यीकरण' में अभी वक्त लगेगा। दूसरे, चीन यह कभी नहीं चाहेगा कि अमरीका ताइवान को मान्यता दे। दूसरी ओर अमरीका की विश्व-परक कूटनीति के अन्तर्गत एशिया में चीन सर्वाधिक महत्वपूर्ण कड़ी है, कम से कम जब तक काबुल में सोवियत-संघ विद्यमान है। किन्तु इसके साथ ही चीन यही कभी नहीं चाहेगा कि सोवियत संघ के विरुद्ध शक्ति-संतुलन पूर्णतया अमरीका के पक्ष में हो जाय। इस प्रकार अमरीकी नीति-निर्धारकों की भी यह इच्छा कदापि नहीं होगी कि चीन एक बड़ी सैनिक शक्ति का रूप ले ले। इस प्रकार स्वाभाविक आधारों पर चीन अमरीका के मध्य इसी प्रकार के पारस्परिक मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध आने वाले वर्षों में भी कायम रहेंगे, ऐसी आशा की जा सकती है।

भारतीय उप-महाद्वीप भी कुछ विशिष्ट कारणों से पर्यवेक्षकों की रुचि का केन्द्र बना रहा। भारत और पाकिस्तान के मध्य 'अयुद्ध संधि' अथवा 'मैत्री एवं सहयोग की संधि' के सम्बन्ध में इन पंक्तियों के लिखे जाने तक किसी प्रकार की निश्चित उपलब्धि की प्राप्ति नहीं हो सकी है किन्तु 1 नवम्बर को जनरल जिया की श्रीमती गांधी के साथ बातचीत के दौरान दोनों देश "भारत-पाक सम्मिलित आयोग" Indo-Pak Joint Commission) के गठन पर सहमत हो गये, किन्तु इस आयोग की कार्य-क्षेत्र एवं परिधि-निर्धारण के विषय में अभी तक कोई विचार विमर्श न हो सका है। पूरे वर्ष पाकिस्तान को 3.2 बिलियन डॉलर की अमरीकी हथियारों की आपूर्ति चर्चा का विषय बना रहा। F-16 विमानों के गुणात्मक स्तर को लेकर पाकिस्तान एवं अमरीका के मध्य कुछ प्रारम्भिक मतभेद भी हुए, किन्तु जनरल जिया की वाशिंगटन-यात्रा के पूर्व ही इसे सुलझा भी लिया गया। भारत-चीन सम्बन्ध भी पूर्व के वर्षों की भाँति दोहरे और परस्पर समानान्तर आयामों पर चलते रहे। चीनी पक्ष की ओर से पूरे वर्ष-भर भारत के साथ सम्बन्धों को सुधारने की बात की जाती रही, किन्तु इसके समानांतर ही पूरे वर्ष चीन पाकिस्तान का उन मुद्दों पर खुलकर समर्थन करता रहा, जो भारत तथा पाकिस्तान के मध्य विवाद के मुख्य मुद्दे रहे हैं। चीन की सम्बन्ध-सुधार की ईमानदारी का नवीनतम् परिचायक 'एशियाड' के दौरान अरुणाचल प्रदेश के नृत्य पर आपत्ति प्रकट किये जाने की घटना है। बंगलादेश एवं चीन के मध्य सम्बन्ध पूरे वर्ष बने रहे। भारत और बंगलादेश के मध्य यद्यपि एक नवीनतम् आयोग के गठन पर पारस्परिक सहमति हो गयी, किन्तु फिर भी बृहद् रूप से चीनी नेतृत्व के चलते बंगलादेश का भारत के प्रति स्वर मैत्रीपूर्ण कम, विरोधपूर्ण अधिक रहा।

वैसे 1982 का वर्ष 'दक्षिण-दक्षिण सहयोग' तथा क्षेत्रीय सहयोग दोनों ही दृष्टियों से काफी महत्वपूर्ण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहा। इसकी शुरूआत विकासशील अथवा अर्ध-विकसित देशों के नयी दिल्ली सम्मेलन (22-24 फरवरी, 1982) के साथ हुयी जिसमें तीसरी दुनिया के 44 देशों ने भाग लिया। सम्मेलन के दौरान मुख्य रूप से गिरती हुई सार्वभौमिक अर्थ-व्यवस्था के कारण दक्षिण क्षेत्र में सामूहिक आत्म-निर्भरता की आवश्यकता पर बल दिया गया। 7 अगस्त को इस्लामाबाद में दक्षिण एशिया के 7 राष्ट्रों-बंगलादेश, भूटान, भारत, मालदीव, नेपाल, पाकिस्तान तथा श्रीलंका के विदेश-सचिवों की बैठक दक्षिण एशिया में पारस्परिक सहयोग की संभावनाओं को निर्धारित करने के लिये हुई यद्यपि कोई ठोस उपलब्धि सम्मेलन के दौरान न हुयी किन्तु आने वाले वर्षों में इस प्रकार की क्षेत्रीय आर्थिक सहयोग की प्रवृत्ति निश्चय ही और बढ़ेगी।

1980 को महत्वपूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय यात्राओं का वर्ष भी कहा जा सकता है। 1981 से ही इस प्रक्रिया की शुरूआत हो गयी थी जब अंतिम महीनों में भारतीय प्रधानमंत्री श्रीमती गांधी फ्रांस और प. जर्मनी की यात्रा पर गयी थी जिसके दौरान आर्थिक महत्व के अनेक समझौते या तो सम्पन्न हुए या उनके लिये सम्यक् वातावरण का निर्माण किया गया। इसी क्रम में 18-21 अप्रैल के दौरान भारतीय प्रधानमंत्री ने सऊदी अरब की चार दिवसीय यात्रा की। दोनों राष्ट्राध्यक्षो के मध्य मुख्य रूप से शांति क्षेत्र के रूप हिन्द महासागर का महत्व भारत-पाक संबन्ध, दक्षिणी एशिया में महाशक्तियों की भूमिका, अफगानिस्तान सम्बन्ध, पश्चिमी एशिया में इस्रायल के विरूद्ध अरब देशों को भारतीय समर्थन तथा परस्पर व्यापार एवं आर्थिक सहयोग आदि विषयों पर सफल वार्ता हुयी। सऊदी अरब के शाह फहद ने भारत द्वारा अपने पड़ोसियों के साथ संबन्ध सुधार के प्रयासों की सराहना की। इस संबन्ध में सर्वाधिक महत्वपूर्ण, श्रीमती गांधी की अमरीका (27 जुलाई) और सोवियत संघ (20-25 सितम्बर) की यात्राएं रही। जहां तक भारतीय प्रधानमंत्री की अमरीकी यात्रा का प्रश्न है, यात्रा के पूर्व भारत अमरीका संबन्धों में तीन विवादास्पद तत्व थे (क) पाकिस्तान को F-16 विमान सहित 3-2 बिलियन डॉलर के अमरीकी हथियारों की आपूर्ति, (ख) तारापुर परमाणु संयंत्र को अमरीकी यूरेनियम की आपूर्ति का मसला तथा (ग) हिन्द महासागर को शांति-क्षेत्र बनाये जाने की सतत् भारतीय मांग। श्रीमती गांधी की यात्रा का मुख्य परिणाम तारापुर के मसले पर एक त्रि-पक्षीय समझौता तथा इससे भी कहीं अधिक महत्वपूर्ण परिणाम दोनों देशों के मध्य आपसी समझ एवं परस्पर सौहार्द्र की भावना का विकास होना रहा। जबकि सोवियत-यात्रा के परिणाम-स्वरुप भारत और सोवियत संघ के मध्य पहले से विद्यमान मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध और अधिक घनिष्ठ हुए। आर्थिक महत्व के अनेक समझौतों को भी अंतिम रुप दिया गया। इसी प्रकार की एक और महत्वपूर्ण यात्रा अक्तूबर की तीसरे सप्ताह में पाकिस्तानी राष्ट्रपति जनरल जिया द्वारा चीन की, की गयी। यात्रा के दौरान दोनों देशों के मध्य पुरानी मैत्री की और अधिक प्रगाढ़ बनाया गया। इसी क्रम में अन्य महत्वपूर्ण यात्रा फ्रांस के राष्ट्रपति फ्रांस्वा मितरां तथा मिस्र के राष्ट्रपति हुस्नी मुबारक की भारत-यात्रा तथा पं. जर्मनी के नये चांसलर हेल्मूट कोहल की वाशिंगटन यात्रा रही (इनकी चर्चा इसी अंक में अन्तर्राष्ट्रीय सामयिकी स्तम्भ में की गयी है)

इस प्रकार 1984 का वर्ष विश्व राजनीति की दृष्टि से अनेक उथल-पुथलों से भरा रहा। इसी कारण कुछ पर्यवेक्षक इसे, हो सकता है, नये समीकरणों का वर्ष भी कहें पर वास्तव में इसे पुराने समीकरणों के पुनर्जीवन का वर्ष कहना अधिक विषय-संगत होगा। किन्तु 1982 को रीगेन की उग्रवादिता का वर्ष कहना सर्वाधिक सुरक्षित तथा तर्क-संगत इस कारण है कि लेबनॉन, फाकलैण्ड, पोलैण्ड, दक्षिणी अफ्रीका या विभिन्न महाद्वीपों की क्षेत्रीय राजनीति में उग्रवादी रीगेन प्रशासन ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। आगामी वर्षों में भी रीगेन प्रशासन इसी प्रकार की नीति अपनायेगा, इसके प्रमाण 1982 से ही मिलने लगे हैं। अमरीकी सामान्य लेखा-कार्यालय की एक रिपोर्ट के अनुसार रीगेन प्रशासन ने 1983-84 के दौरान पाकिस्तान, दक्षिण कोरिया, थाईलैण्ड जॉर्डन मोरक्को 'ट्यूनीशिया स्पेन, पुर्तगाल, टर्की, कीनिया लाइबेरिया, सोमालिया, सूडान, जैरे तथा अल-साल्वोडार को शस्त्रास्त्रों की खरीद के लिये और अधिक धन-राशि कर्ज के रूप में देने का प्रस्ताव रखा है।

1982 के दौरान भी अमरीका सोवियत-संघ के साथ किसी प्रकार के सम्बन्ध-प्रक्रिया में 'सोवियत साम्यवाद के प्रसार को अवरोधित करने (Containment of Soviet Communism) की अमरीकी मनोवृत्ति कार्य करती रही। किन्तु अमरीकी नीति-नियामक इस विषय में स्वयं भ्रमित हैं कि उन्हें किसे अवरोधित करना है। पाकिस्तान या दक्षिणी अफ्रीका अथवा इस्राइल आदि जिन भी देशों को 1982 के दौरान सैनिक सहायता दी गयी, सबके पीछे 'सोवियत भालू' की चिन्ता व्याप्त थी। पर अमरीकी भय निश्चित रूप से अतिशयोक्तिपूर्ण है जैसा कि कोलंबिया विश्वविद्यालय के सोवियत अध्ययन-विभाग के निदेशक प्रो एलेक्जेण्डर डैलिन ने लिखा, "न केवल अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवाद अलग-थलग पड़ गया है वरन् विभिन्न देशों की कम्युनिष्ट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरकारें भी अपने व्यक्तिगत राष्ट्रीय हितों के प्रति साम्यवादी मूल्यों की तुलना में अधिक प्रतिबद्ध हैं" इस लिये रीगेन प्रशासन ने न केवल एक ऐसे सिद्धान्त (Ideology) के प्रसार को रोकने के लिए शस्त्रास्त्रों का नियोजन किया, जो स्वतः हतासोन्मुख है ? वरन् एक ऐसे शक्ति (Power) के विरुद्ध भी जो दिन पर दिन कम उग्र होती जा रही है, हथियारों का नियोजन कर। रीगेन प्रशासन ने दोहरी उग्रवादिता का परिचय दिया है। क्योंकि इस तथ्य के सशक्त प्रमाण उपस्थित हैं कि उत्तर-1945 युग, जबकि विश्व का स्वरूप द्वि-ध्रुवीकृत हो गया, में सोवियत संघ कमोबेश मात्रा में यथास्थितवाद (Status-Quo) को बरकरार रखने में इच्छुक रहा है। वाशिंगटन स्थित 'सेन्टर फॉर डिफेंस इन्फार्मेशन' द्वारा किये गये विस्तृत अध्ययन के पश्चात् जारी रिपोर्ट में कहा गया है कि 'यह तर्क कि पिछले 37 वर्षों में विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में प्रभाव कायम करने में सोवियत-संघ ने अमरीका को पीछे छोड़ दिया है, मात्र एक गल्प है।' 1945 में विश्व के 90% देश सोवियत-समर्थक थे, 1960 तक यह प्रतिशत 14 हो गया जबकि आज विश्व के 157 देशों में मात्र 20 सोवियत-समर्थक हैं, जो लगभग 12 प्रतिशत हैं। यद्यपि यह सत्य है कि अफगानिस्तान, अंगोला, इथोपिया अथवा कम्पूचिया के सम्बन्ध में सोवियत-नीति तथा गतिविधि ने विश्व-परक सोवियत कूटनीति का आभास दिया। रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि कुछ अवसरों पर सोवियत-संघ 'तीसरी दुनिया' के मित्र देशों को सहायता के रूप में सैनिक समर्थन दिया किन्तु ऐसा या तो संबंधित देश में उपनिवेशवादी प्रवृत्तियों की समाप्ति के कारण राजनीतिक शून्यता की स्थिति पैदा हो गयी हो, जैसे कि अंगोला अथवा जब सोवियत संघ तीसरी दुनिया' के किसी देश की राजनीतिक क्षेत्रीय संप्रभुता की रक्षा कर सकता हो जैसे कि इथोपिया तथा कम्पूचिया, अथवा जब पहले से विद्यमान मार्क्सवादी शक्ति को शासन में बनाये रखना हो, जैसे कि अफगानिस्तान में। जबकि दूसरी ओर अमरीकी उग्रवादिता ने किसी क्षेत्र-विशेष में सोवियत प्रभाव को बढ़ाने में सहायता की है; न्यूबा, अंगोला या अफगानिस्तान इस दृष्टिकोण के प्रमाण हैं।

इस कारण आगामी वर्ष में विश्व-राजनीति का क्या स्वरूप होगा ? इस विषय में किसी प्रकार के क्रांतिकारी परिवर्तन की आशा करना व्यर्थ होगा। यूरी एन्द्रोपोव के सोवियत संघ की बागडोर संभालने के बाद और जिस प्रकार से ब्रेझनेव की अन्त्येष्टि के समय पाकिस्तानी तथा अफगानी राष्ट्राध्यक्षों से जिस प्रकार उनकी बातचीत हुयी, उसे देखते हुए यह कहा जा सकता है कि हो सकता है आने वाले वर्षों में अफगानिस्तान की समस्या का कोई राजनीतिक हल निकल सके। जून के अंत में समस्या के राजनीतिक हल के लिये अफगान तथा पाक-विदेश मंत्रियों के मध्य जिनेवा-वार्ता की मनोवृत्ति आगे भी कायम रहेगी। दोनों महाशक्ति के मध्य विभिन्न मुद्दों पर संबंध निश्चित रूप से आगामी वर्ष की विश्व राजनीति को प्रभावित करेंगे। अमरीकी राष्ट्रपति ने 23 नवम्बर को नये सोवियत नेतृत्व से भावी युद्ध के खतरे कम करने की दिशा में सम्मिलित प्रयास करने का आह्वान किया है। रीगेन ने अणु-आयुधों के नियोजन के विषय में जानकारी के परस्पर-प्रदान का भी प्रस्ताव रखा है किन्तु इस पत्र के समानांतर ही 100 MX प्रक्षेपास्त्रों के नियोजन की घोषणा भी ह्वाइट हाऊस द्वारा की गयी। इसी के समानांतर कम्युनिष्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति को संबोधित करते हुए एन्द्रोपोव ने कहा कि भविष्य का संबन्ध तनाव "शैथिल्यीकरण" से है। साथ ही नये सोवियत महासचिव ने परम्परागत तथा अणु-दोनों प्रकार के आयुधों में परस्पर सहमति के आधार पर, कमी लाने की भी बात कही है। MX प्रक्षेपास्त्र के नियोजन की अमरीकी योजना को सोवियत संघ ने मानवता के लिये एक खतरनाक कदम की संज्ञा दी है।

निश्चित रूप से यदि तनाव शैथिल्यीकरण की दिशा में नये सोवियत नेतृत्व से उत्पन्न नये वातावरण में नया प्रयास न किया जा सका और दोनों महाशक्तियाँ यदि शस्त्रों की नयी दौड़ में शामिल हो गयी तो यह विश्व का दुर्भाग्य होगा। हमारा निश्चित मत है कि परस्पर समझ की भावना के आधार पर ही विश्व राजनीति का भावी कलेवर सुखमय बनाया जा सकेगा, किन्तु यह एक विडम्बना ही तो कही जायेगी कि इन पंक्तियों के लिखे जाने तक इस प्रकार के पारस्परिक समझ के प्रारंभिक संकेत भी अप्राप्य हैं। ■

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दक्षिण-पूर्व एशिया राष्ट्र समुदाय (ASEAN)

■ प्रस्तुति : निशांत

परिचयात्मक :

'दक्षिण पूर्व एशिया राष्ट्र समुदाय' (Association of South East Asian Nations) या 'एशियान' की स्थापना लगभग 15 वर्षों पूर्व 8 अगस्त 1967 को हुई। इसका प्रारंभिक स्वरूप एक परामर्शदात्री संस्था का था जिसके माध्यम से इसके 5 सदस्य-थाईलैण्ड, मलेशिया, सिंगापुर, फिलीपीन्स तथा इण्डोनेशिया—परस्पर आर्थिक, राजनीतिक तथा स्त्रात्जिक मसलों पर परस्पर विचार—विमर्श एवं संभावित सहयोग भी कर सकें। एशियान के ये पांचों सदस्य क्षेत्रीय राजनीतिक स्थिति तथा क्षेत्र में आर्थिक सहयोग की आवश्यकताओं एवं संभावनाओं के विषय में लगभग एक जैसे दृष्टिकोण रखते हैं।

पृष्ठभूमि :

एशियान की स्थापना के प्रारंभिक या मुख्य कारण के रूप में क्षेत्र में साम्यवाद के बढ़ते प्रभाव का उल्लेख किया जा सकता है। जिस समय 'एशियान' की स्थापना हुयी उस समय 'हिन्दचीन' में संघर्ष अपनी चरम सीमा पर था। दक्षिण वियतनाम में 'कम्युनिस्ट उग्रपंथी गुरिल्ले' भारी संख्या में कार्यरत थे। इन सभी देशों ने सम्मिलित रूप से यह सोचा कि 'दक्षिण वियतनाम' में कम्युनिस्ट शक्ति का प्रतिस्थापन सम्पूर्ण क्षेत्र के संतुलन को प्रभावित कर सकता है किन्तु बिना आपसी सहयोग के 'एशियान' के पांच सदस्यों में से कोई भी अकेला 'कम्युनिस्ट खतरे' को रोकने में समर्थ न था। बाह्य परिस्थितियों के अतिरिक्त कम्युनिस्टों की आंतरिक गतिविधियों के कारण भी ये राष्ट्र एक सबल क्षेत्रीय संगठन की स्थापना करना चाहते थे। इन्डोनेशिया, जो 'एशियान' राष्ट्रों में सर्वाधिक विशाल है, 1965 में एक साम्यवाद समर्थक क्रांति का स्वाद चख चुका था। मलेशिया में भी साम्यवादी प्रभाव क्रमशः बढ़ रहा था। इस पृष्ठभूमि में ही 'एशियान' की स्थापना की आवश्यकता एवं औचित्य का सम्यक् मूल्यांकन संभव है।

उद्देश्य :

संगठन के घोषणापत्र के अनुसार 'एशियान' का उद्देश्य दक्षिण पूर्व एशिया में आर्थिक विकास की गति को तीव्र करना तथा क्षेत्रीय आर्थिक स्थिरता का वातावरण पैदा करना है किन्तु क्षेत्र के राजनीतिक विकास क्रम को भी 'एशियान' ने व्यापक रूप से प्रभावित किया है।

संगठनात्मक ढांचा :

समुदाय की सर्वोच्च संस्था सदस्य राष्ट्रों के विदेश-मंत्रियों की सभा है। इस सभा द्वारा एक स्थायी समिति (Standing Committee) की संरचना की जाती है जो दिन-प्रतिदिन की क्षेत्रीय घटनाओं पर या ऐसी अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं, जो क्षेत्र के आर्थिक या राजनीतिक घटनाक्रम को प्रभावित कर सकती हैं, पर विचार करती है। समुदाय की स्थापना थाईलैण्ड की राजधानी बैंकाक में हुयी थी। बैंकाक ही समुदाय का मुख्यालय भी है।

विगत इतिहास तथा अधुनातन प्रवृत्तियाँ :

हमने ऊपर चर्चा की है कि 'एशियान' की स्थापना संभावित कम्युनिस्ट खतरे की प्रतिक्रिया स्वरूप हुयी, अतः यह तथ्य स्वाभाविक था कि समुदाय पश्चिम मुख्यतया वाशिंगटन समर्थक दृष्टिकोण अपनाता। ज्ञातव्य है कि 'एशियान' के दो सदस्यों—थाईलैण्ड तथा फ़िलीपीन्स का संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ औपचारिक 'सुरक्षा संधि' है। इसके अतिरिक्त समय-समय पर न्यूजीलैण्ड एवं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आस्ट्रेलिया ने भी संगठन में यथेष्ट रुचि दिखायी है जिसे अप्रत्यक्ष रूप से अमेरिकी प्रभाव के एक संयंत्र के रूप में ही देखा जा सकता है। सिंगापुर, मलेशिया तथा फिलीपीन्स गुटनिरपेक्ष आंदोलन के सदस्य हैं।

'एशियान', यद्यपि मुख्यरूप से एक आर्थिक संगठन है किन्तु हाल के वर्षों में 'एशियान' ने क्षेत्रीय सुरक्षा के प्रश्नों में विशेष रुचि प्रदर्शित की है। प्रायः 'एशियान' राष्ट्र सम्मिलित सैनिक प्रयासों से साम्यवादी गुरिल्लों से लोहा लेते हैं। इस प्रकार ये राष्ट्र 'साम्यवादी प्रभाव' का मुकाबला करना व्यावहारिक रूप से अपना सर्वप्रमुख लक्ष्य मानते हैं किन्तु इस उद्देश्य की प्राप्ति जनता के आर्थिक विकास के बाद ही संभव है—ऐसी इनकी धारणा है।

साम्यवाद के विरोध की इस नीति ने ही 'एशियान' राष्ट्रों के कम्प्यूचिया के प्रति दृष्टिकोण को निर्धारित किया है। 'एशियान' ने कम्प्यूचिया में वियतनाम के सैनिक हस्तक्षेप की कटु आलोचना की है और इस हेतु विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय मंचों के माध्यम से इसने वियतनाम के विरुद्ध व्यापक जनमत निर्माण का भी सबल प्रयास किया है ताकि वियतनाम को कम्प्यूचिया से अपनी सेनाएं वापस बुलाने के लिये बाध्य किया जा सके। अक्टूबर, 1981 में संयुक्त राष्ट्र महासभा की बैठक के दौरान 74 राष्ट्रों ने एक प्रस्ताव के माध्यम से कम्प्यूचिया में वियतनामी सैनिक उपस्थिति की तीव्र भर्त्सना की। इसी प्रकार कम्प्यूचिया के मसले को सुलझाने के लिये एक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन बुलाया जाय—'एशियान' की इस मांग का भी सं. रा. के 97 सदस्यों द्वारा समर्थन किया गया। किन्तु 'एशियान' क्षेत्र में अन्य शक्तियों के हस्तक्षेप के प्रति कितना संवेदनशील है, इसका अनुमान इसी तथ्य से लगाया जा सकता है कि मसले को सुलझाने के लिये 'एशियान राष्ट्रों' ने चीनी योजना को पूर्णतया अस्वीकार कर दिया। चीन ने अपनी सेनाएँ भेजने की इच्छा प्रकट की थी।

22 जून, 1982 को क्वालालंपुर में कम्प्यूचिया में एक साझा सरकार के गठन पर समझौते के माध्यम से 'एशियान' देशों को एक व्यापक सफलता प्राप्त हुयी है। समझौते पर तीन व्यक्तियों द्वारा हस्ताक्षर किये गये जो कम्प्यूचिया में वियतनामी सैनिकों के तीन विरोधी समूहों प्रतिनिधित्व करते हैं : क्यिू शंफन (खमेर रॉग), सॉन सैन (खमेर पिपुल्स नेशनल लिबरेशन फ्रंट) तथा राजकुमार नारडाम सिहानुक (माऊलिनाका समूह)। 'एशियान' देश प्रारंभ से ही इस प्रकार की साझा सरकार की स्थापना का प्रयास करते रहे हैं ताकि चीन का प्रभाव कम किया जा सके।

'एशियान' एवं भारत :

जहां तक 'एशियान' राष्ट्रों के भारत के साथ संबंधों का प्रश्न है, प्रारम्भ में ये संबंध मधुर रहे क्योंकि 1967-70 के काल में भारत इस तथ्य का प्रबल समर्थक था कि क्षेत्रीय राजनीति में विदेशी शक्तियों का प्रभाव रोका जाना चाहिये चाहे वह अमरीकी हो या सोवियत। किन्तु 1971 में जब भारत ने सोवियत संघ के साथ 'मैत्री तथा सहयोग की संधि' सम्पादित की उस समय 'एशियान' देशों का रवैया विरोधपूर्ण था। इसके अतिरिक्त 1971 में बंगलादेश के अभ्युदय के संदर्भ में भारत-पाक युद्ध के संदर्भ में भी 'एशियान' ने भारतीय भूमिका की आलोचना की। इस प्रकार 1971-77 के मध्य दोनों के मध्य अस्थिर संबंध रहे। जनता शासन तथा श्रीमती गांधी के पुनः सत्ता में आने के बाद फिर से दोनों के मध्य सौहार्द्रपूर्ण संबंध स्थापित हुए। किन्तु अफगानिस्तान में सोवियत सैनिक उपस्थिति का भारतीय पक्ष द्वारा परोक्ष समर्थन तथा वियतनाम समर्थक हेंग समेरिन की कम्प्यूचियाई सरकार को मान्यता—इन दो तथ्यों ने पुनः संबंधों को तनावपूर्ण बना दिया।

किन्तु फिर भी भारत 'एशियान' देशों के साथ मधुर तथा घनिष्ठ संबंध बनाने का इच्छुक है। पिछले वर्ष प्रधानमंत्री श्रीमती गांधी तथा विदेश मंत्री श्री नरसिम्हा राव की यात्राएँ इस इच्छा की द्योतक हैं। पिछले माह पाकिस्तानी राष्ट्रपति जनरल जिया ने भी 'एशियान' देशों की अपनी यात्रा के दौरान ऐसी ही इच्छा प्रकट की थी। ■

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंत्रिपरिषद और प्रधानमंत्री

■ प्रस्तुति : उर्मिला लाल*

पिछले अंक में हम चर्चा कर चुके हैं कि संवैधानिक उपबंधों के तहत् मंत्रिपरिषद् राष्ट्रपति को उसके कार्यों तथा दायित्वों के निर्वाहन में सहायता और परामर्श देने वाली एक संस्था है। इस परिषद् का नेतृत्व प्रधानमंत्री द्वारा किया जाता है। अब यह विवाद संवैधानिक रूप से तय किया जा चुका है कि राष्ट्रपति मंत्रिपरिषद् की परामर्श मानने के लिए बाध्य है, अधिक से अधिक वह मंत्रिपरिषद् द्वारा प्रदत्त किसी परामर्श को पुनर्विचार के लिये मंत्रिपरिषद् को वापस कर सकता है, किन्तु पुनर्विचार के उपरान्त प्रेषित परामर्श को मानने के लिये राष्ट्रपति बाध्य है, ऐसा संविधान का (अनु. 74) (1) व्यवस्था करता है।

संवैधानिक उपबंधों के तहत् प्रधानमंत्री मंत्रिपरिषद् का नेतृत्वकर्ता है। किन्तु दलबंदी की राजनीति के चलते संसदीय शासन प्रणालियों में प्रधानमंत्री का महत्व इतना बढ़ गया है कि अब संसदीय सरकारों को प्रधानमंत्रीय (PRIME MINISTERIAL) सरकार कहना अधिक न्यायसंगत प्रतीत होता है। यह तत्व ब्रिटिश और भारतीय दोनों ही शासन प्रणालियों के सम्बन्ध में समान रूप से विद्यमान है।

मंत्रिपरिषद् के नेतृत्वकर्ता के रूप में प्रधानमंत्री की शक्तियां इतनी व्यापक हैं कि भारत के संसदीय प्रजातंत्र में नाममात्र की कार्यपालिका तथा वास्तविक कार्यपालिका का विभेद नगण्य सा प्रतीत होता है। मंत्रिपरिषद् का गठन प्रधानमंत्री के परामर्श पर राष्ट्रपति द्वारा किया जाता है। संविधान के अनु. 75 (1) के अन्तर्गत ऐसी व्यवस्था की गयी है। वास्तव में प्रधानमंत्री द्वारा मंत्रियों की सूची राष्ट्रपति को प्रेषित करना तथा राष्ट्रपति द्वारा उसे स्वीकार किया जाना, मात्र संवैधानिक औपचारिकता रह गयी है। इसी तरह मंत्रिपरिषद् के सदस्यों के मध्य विभागों का वितरण भी प्रधानमंत्री का ही कार्य है। इस प्रकार ब्रिटिश प्रधानमंत्री की भांति भारतीय प्रधानमंत्री भी मंत्रियों के चयन, उनके मध्य विभागों के वितरण आदि के संबंध में पूर्णतया स्वतंत्र है यद्यपि उसे मंत्रिपरिषद् के गठन करते समय तमाम प्रशासनिक, राजनीतिक, क्षेत्रीय तथा धार्मिक तत्व प्रभावित करते हैं। इसके अतिरिक्त सामान्यतया कोई भी प्रधानमंत्री सदन में अपने दल के वरिष्ठ सदस्यों की उपेक्षा नहीं करता। यहां तक कि नेहरू जैसे प्रभावशाली व्यक्तित्व वाले व्यक्ति को भी मोरारजी देसाई तथा गुलजारी लाल नंदा जैसे कुछ सदस्यों को मंत्रिमण्डल में स्थान देना पड़ा, यद्यपि व्यक्तिगत रूप से पं. नेहरू उन्हें पसंद नहीं करते थे किन्तु दल में उनके पीछे विद्यमान समर्थन की अवहेलना करना उनके लिये कठिन था।

इसके अतिरिक्त कभी-कभी प्रधानमंत्री को इस प्रकार की समस्या का भी सामना करना पड़ सकता है कि कुछ विशेष सदस्य किन्हीं विशिष्ट पदों के लिये ही उत्सुक हों। 1967 में चतुर्थ आम चुनाव के बाद श्रीमती गांधी मोरारजी देशाई को वित्त मंत्रालय के साथ-साथ उप-प्रधानमंत्री बनाने को तैयार थी बशर्ते कि वे गृहमंत्रालय के लिये अपनी जिद छोड़ दें। इस प्रकार के अनेक दृष्टांत पिछले

*अनुसंधात्री, राजनीति विज्ञान विभाग, काशी विद्यापीठ विश्व., वाराणसी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

35 वर्षों के संवैधानिक इतिहास में प्राप्त हैं जबकि किसी सदस्य को उसके प्रभाव के आधार पर मंत्रिपरिषद् में शामिल करना अनिवार्य हो गया है।

कहना न होगा कि इस प्रकार की स्थितियों में प्रधानमंत्री की स्वतंत्रता काफी कुछ सीमित हो जाती हैं किन्तु इस प्रकार की स्थिति 2-4 मंत्रियों के संदर्भ में ही हो सकती है। यह भी हो सकता है कि किसी समय विशेष पर राजनीतिक तथा दलीय समर्थन की दृष्टि से प्रधानमंत्री किसी सदस्य विशेष को कोई पद विशेष प्रदान कर दे किन्तु बाद में, जब स्थिति प्रधान मंत्री के अनुकूल हो जाय, पुनर्गठन के माध्यम से वह उसे पद विमुक्त कर सकता है।

मंत्रिपरिषद् के गठन के साथ ही साथ प्रधानमंत्री समय समय पर मंत्रिपरिषद् के पुनर्गठन के लिये भी पूर्णतया स्वतंत्र है। वह किसी भी मंत्री को किसी भी समय दलीय हितों के लिये पद से त्यागपत्र देने को कह सकता है। वह किसी भी विभाग के कार्यों की आलोचना कर सकता है और फिर इस आधार पर राष्ट्रपति से किसी मंत्री विशेष को पदच्युत करने का आग्रह कर सकता है। कुछ समय पूर्व विद्याचरण शुक्ल तथा कमलापति त्रिपाठी द्वारा मंत्रिमण्डल प्रधानमंत्री के परामर्श पर ही छोड़ा गया था। इसके सर्वथा विपरीत प्रधानमंत्री राष्ट्रपति को इस आशय का परामर्श भी दे सकता है कि वह किसी मंत्री विशेष के त्यागपत्र को न स्वीकार करे। इस प्रकार की नीति के पीछे यह तत्व विद्यमान है कि इसी प्रकार से सामूहिक उत्तरदायित्व के सिद्धान्त को अधिक कारगर तरीके से लागू किया जा सकेगा।

वास्तविक रूप से प्रधानमंत्री मंत्रिपरिषद् में या कम से कम मंत्रिमण्डल में अपने परम विश्वासपात्रों को रखता है। ऐसा भारतीय मंत्रिपरिषद् के पिछले दस वर्षों के इतिहास में यथेष्ट मात्रा में स्पष्ट हो चुका है। यह सत्य है कि एक साझा सरकार (COALITION GOVT.) के संदर्भ में स्थिति कुछ भिन्न हो सकती है। जनता सरकार के 2-3 वर्षों का संक्षिप्त इतिहास इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि किस प्रकार, साझा सरकार के दौरान प्रधान मंत्री काफी कुछ दलीय राजनीति एवं दलों की आंतरिक गुटबंदी द्वारा नियंत्रित होता है।

उपर की गयी चर्चा के आधार पर यह कहा जा सकता है कि मंत्रिपरिषद् के गठन, पुनर्गठन तथा विघटन में प्रधानमंत्री की केन्द्रीय भूमिका के चलते, इस संदर्भ में राष्ट्रपति का महत्व नहीं के बराबर है। किन्तु निश्चित रूप से ऐसा कहना भ्रामक होगा। यह काफी कुछ सीमा तक राष्ट्रपति के व्यक्तित्व, प्रधानमंत्री से उसके व्यक्तिगत संबंध तथा प्रधानमंत्री की संसद में क्या स्थिति है, इन सभी तथ्यों पर निर्भर करता है।

इस प्रकार मंत्रिपरिषद् के जीवन और मरण में प्रधानमंत्री की केन्द्रीय भूमिका होती है। डा. अम्बेदकर ने संविधान-सभा में कहा था, 'प्रधानमंत्री वास्तव में मंत्रिमण्डल रूपी भवन के वृत्तखण्ड की मुख्य शिला हैं तथा जब तक हम इस अधिकारी को इतनी अधिकार पूर्ण स्थिति न प्रदान करें कि वह स्वेच्छा से मंत्रियों की नियुक्ति या पदविमुक्ति कर सके, मंत्रिमण्डल का सामूहिक उत्तरदायित्व कभी प्राप्त नहीं हो सकता।' इस प्रकार संविधान के निर्माताओं द्वारा भी प्रधानमंत्री के पद को यथेष्ठ शक्ति से सम्पन्न गौरवशाली पद माना गया। विशेषरूप से पं. नेहरू तथा निवर्तमान भारतीय प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी के प्रभावशाली व्यक्तित्व के कारण, यह पद काफी प्रभावशाली हो चला है। डा. सिंघवी का यह कथन कि, 'संस्थागत दृष्टि से मंत्रिमण्डल के सदस्यों की स्थिति बहुत कुछ प्रधानमंत्री के सहयोगियों की अपेक्षा प्रधानमंत्री के अभिकर्ताओं जैसी हो गयी है", पूर्णतया उचित प्रतीत होता है।

[अगले अंक में : भारतीय मंत्रिमण्डलीय व्यवस्था की विशेषतायें]

शोषक

"समाज में शोषक ने कभी भी नहीं चाहा है कि मनुष्य में विचार हो। क्योंकि जहां विचार है, वहाँ विद्रोह का बीज है। विचार मूलतः विद्रोही है, क्योंकि विचार अंधा नहीं है, विचार के पास अपनी आंखे है। उसे हर कहीं नहीं ले जाया जा सकता। उसे हर कुछ करने और मानने को राजी नहीं किया जा सकता है। उसे अंधानुयायी नहीं बनाया जा सकता है। इसलिए शोषक विचार के पक्ष में नहीं है। वे विश्वास के पक्ष में है, क्यों कि विश्वास अंधा है। और मनुष्य अंधा हो तो उसे स्वयं उसके ही अमंगल में संलग्न किया जा सकता है।"

—एक विचारक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सामान्य अध्ययन वस्तुपरक परीक्षण

सिविल सर्विसेज / बैंकिंग तथा अन्य परीक्षाओं हेतु उपयोगी

1. विवादास्पद नाटक 'भुट्टो' का निर्देशक कौन है ?
   (अ) अलीक पदमसी (ब) हबीब तनवीर
   (स) अरुण कुकरेजा (द) विजय तेन्दुलकर
2. एम. एक्स. प्रक्षेपणास्त्र किस देश से सम्बन्धित है ?
   (अ) सोवियत संघ (ब) सं. रा. अमेरिका
   (स) प. जर्मनी (द) फ्रान्स
3. दो वर्ष के सैनिक शासन के पश्चात हाल में दक्षिणी अमेरिका के किस देश में लोकतन्त्र लौट आया ?
   (अ) अर्जेन्टीना (ब) ब्राजील
   (स) उरुग्वे (द) बोलिविया
4. जे. आर. डी. टाटा ने किस विमान से 15 अक्टूबर 82 को करांची से बम्बई तक पहुँच कर 50 वर्ष पूर्व की ऐतिहासिक उड़ान को दोहराया ?
   (अ) लेपर्ड मॉथ (ब) क्वान्ट्स
   (स) ट्राइ स्टार (द) बोनोंजा
5. नवम्बर 82 में नई दिल्ली में चौथा अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार मेला आयोजित किया गया था। भारतीय व्यापार मेला अधिकरण का अध्यक्ष कौन है ?
   (अ) प्रणव कुमार मुखर्जी (ब) सी. एम. स्टीफन
   (स) मोहम्मद यूनुस (द) एस. बी. रमन्ना
6. प. यूरोप के उस देश का नाम बताइए जहां हाल में समाजवादी सरकार सत्ता में आयी ?
   (अ) स्पेन (ब) पुर्तगाल
   (स) इटली (द) डेनमार्क
7. सं. राष्ट्र महासभा के चल रहे अधिवेशन में किस देश को इस संगठन से निकालने का असफल प्रयत्न किया गया ?
   (अ) दक्षिण अफ्रीका (ब) कम्पूचिया
   (स) इस्रायल (द) उपर्युक्त सभी
8. जयन्त शाह व असलम खान किस हिमालय कार रैली के विजेता हैं ?
   (अ) द्वितीय (ब) तृतीय
   (स) चतुर्थ (द) पंचम
9. भारत की पूंजी नियोजन की दर 25 प्रतिशत है। इस पूंजी नियोजन में कितना प्रतिशत विदेशी स्रोतों पर आश्रित है ?
   (अ) 3% (ब) 7%
   (स) 11% (द) 16.5%
10. उर्दू साहित्य की लेखिका इस्मत चुगताई को हाल में किस पुरस्कार से सम्मानित किया गया है ?
    (अ) साहित्य अकादमी पुरस्कार
    (ब) सोवियत लैण्ड पुरस्कार
    (स) राष्ट्रीय एकता पुरस्कार (द) लोट्स पुरस्कार
11. डा. बी. के. रैना की अध्यक्षता में भारतीय अभियान दल 1 दिसम्बर को किस बन्दरगाह से दूसरी बार अन्टार्कटिका के लिये रवाना हुआ ?
    (अ) कांधला (ब) कोचीन
    (स) बम्बई (द) मार्मागोवा
12. भारत की अब तक की कुल स्थापित विद्युत क्षमता लगभग 33,010 मेगावाट है। सम्पूर्ण क्षमता का औसतन कितना प्रतिशत विद्युत उत्पादित होता है ?
    (अ) 30% (ब) 37%
    (स) 50% (द) 61%

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

13. नवें एशियाई खेलों का मंगलगीत 'अथ स्वागतम् शुभ स्वागतम्.....शाश्वत सुविकसित इति शुभम्'-के रचयिता कौन हैं ?
(अ) नरेन्द्र शर्मा (ब) हरिवंश बच्चन
(स) महादेवी वर्मा (द) श्रीकान्त वर्मा

14. नवें एशियाई खेलों में प्रतिस्पर्धियों को क्रमशः कितने स्वर्ण, रजत और कांस्य पदक दिये गये ?
(अ) 503, 463, 463 (ब) 463, 483, 503
(स) 463, 463, 503 (द) 483, 483, 523

15. नवें एशियाई खेलों का आयोजन किसके तत्वावधान में किया गया ?
(अ) एशियाई खेल संघ (ब) एशियाई खेल परिषद
(स) एशियाई ओलम्पिक संगठन
(द) एशियाई खेल व प्रतियोगिता संघ

16. पोलैण्ड के प्रतिबन्धित संगठन 'सालिडारिटी यूनियन' के नेता लेक वालेसा के सम्बन्ध में क्या सत्य है ?
(अ) लेक वालेसा अभी भी बन्दी हैं।
(ब) लेक वालेसा को रिहा कर दिया गया है।
(स) लेक वालेसा अभी भी बन्दी हैं, परन्तु उन्हें शीघ्र ही रिहा कर दिया जायेगा।
(द) लेक वालेसा को देश निकाला दे दिया गया है।

17. सोवियत गैस पाइप लाइन के सम्बन्ध में क्या सत्य है ?
(अ) सोवियत गैस पाइप लाइन पर अमेरिकी प्रतिबन्ध बरक़रार है।
(ब) पश्चिमी यूरोपीय देशों ने भी सोवियत गैस पाइप लाइन पर प्रतिबन्ध लगा दिया है।
(स) सोवियत गैस पाइप लाइन पर अमेरिकी प्रतिबन्ध हाल में हटा लिया गया है।
(द) उपर्युक्त सभी असत्य हैं।

18. सफेद सोना (हाथी दांत) शिल्प के लिये भारत का कौन सा नगर प्रख्यात है ?
(अ) कोचीन (ब) पुरी
(स) जयपुर (द) मैसूर

19. 1982 में साहित्य के लिए नोबेल पुरस्कार (ग्रेबियल गार्सिया मारक्वेज (कोलम्बिया) को उनकी किस पुस्तक के लिये दिया गया है ?
(अ) वन हंनड्रेड ईयर्स ऑव सालीट्यूड
(ब) लीफ स्टॉम्र
(स) क्रानिकल ऑव ए डेथ फोरटोल्ड
(द) इन ईवेंल ऑवर
(य) इनोसेन्ट इरोनडेरा
(र) नो वन राइट्स टु द कर्नल
(ल) द ऑटम ऑव द पेट्रिआक

20. भारतीय रंगीन दूरदर्शन के लिये PAL (Phase alternation by line) रंगीन संचारण पद्धति को अपनाया गया है। यह टेक्नोलॉजी किस देश में सर्वप्रथम विकसित की गयी थी ?
(अ) जापान (ब) प. जर्मनी
(स) इंग्लैण्ड (द) द. कोरिया

21. रंगीन दूरदर्शन में किस प्राथमिक रंगों का प्रयोग नहीं किया जाता है ?
(अ) लाल (ब) पीला
(स) नीला (द) हरा

22. "गिन्नीस बुक ऑव वर्ल्ड रिकार्ड्स 1982 संस्करण में किस प्रमुख भारतीय की उपलब्धि को अंकित किया गया है ?
(अ) सुनील गावस्कर
(ब) प्रमोद करण सेठी
(स) लता मंगेशकर
(द) होमी सेठना

23. विश्व भर में प्रति वर्ष अस्त्र-शस्त्र का अनुमानित व्यय कितना है ?
(अ) 300 बिलियन डालर
(ब) 500 बिलियन डालर
(स) 600 बिलियन डालर
(द) 800 बिलियन डालर

24. सबरा व चतीला हाल में चर्चा के विषय किस कारण से बने ?
(अ) भूकम्प (ब) बाढ़
(स) गृह युद्ध (द) नरसंहार

25. इनग्रीड बर्गमैन ने किस क्षेत्र में सुप्रसिद्धि प्राप्त किया ?
(अ) साहित्य (ब) फ़िल्म अभिनय
(स) पाश्चात्य संगीत (द) क्रीड़ा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

26. कुद्रेमुख से लौह अयस्क का निर्यात किन राष्ट्रों को किया जा रहा है ?
(अ) ईरान, लीबिया
(ब) इराक, रूमानिया
(स) रूमानिया, चेकोस्लोवाकिया
(द) सोवियत संघ, जापान

27. सोवियत अन्तरिक्ष यान सोयूज-टी-6 से अन्तरिक्ष में जाने वाले पश्चिम यूरोप के प्रथम अन्तरिक्ष यात्री का नाम बताइए।
(अ) जीन लुप क्रीसीयन (फ्रांस)
(ब) जीन जैक्स प्रोंधा (स्पैन)
(स) लेपियर क्रूगर (प. जर्मनी)
(द) वितेली अगुआरडो (इटली)

28. 'सूखा कृषि क्षेत्र (dry farming area) के निम्न में से कौन सी विशेषता नहीं है ?
(अ) ऐसा क्षेत्र जहां पूरे वर्ष में केवल 40 इन्च वर्षा होती है
(ब) ऐसा क्षेत्र जहां सिंचाई साधन जैसे ट्यूबवेल व नहर का नितान्त अभाव हो
(स) ऐसा क्षेत्र जो आर्थिक दृष्टि से पिछड़ा हुआ हो
(द) उपर्युक्त सभी

29. लघु उद्योगों के लिये पूंजीनिवेश की अधिकतम सीमा क्या निश्चित की गयी है ?
(अ) 1 लाख रु. (ब) 5 लाख रु.
(स) 7.5 लाख रु. (द) 20 लाख रु.

30. किसी विश्व बड़े उद्योग में पूंजीनिवेश की कितनी न्यूनतम राशि होने से उस पर 'मोनोपोलीज एण्ड ट्रेड रिस्ट्रिक्टिव प्रैक्टीसेज एक्ट' लागू हो जाता है ?
(अ) 5 करोड़ रु. (ब) 10 करोड़ रु.
(स) 20 करोड़ रु. (द) 35 करोड़ रु.

31. नेशनल पावर थर्मल कार्पोरेशन के अधीन कार्यरत व निर्माणाधीन सुपर थर्मल पावर स्टेशन कहां स्थित नही है ?
(अ) सिंगरौली (उ. प्र.)
(ब) कोरबा (म. प्र.)
(स) फरक्का (प. बंगाल)
(द) बदरपुर (दिल्ली)
(य) कहलगांव (बिहार)
(र) रामागुण्डम (आ. प्र.)

32. जनवरी 83 में अन्तरिक्ष में प्रक्षेपित होने वाले अमेरिकी स्पेस शटल का क्या नाम है ?
(अ) कोलम्बिया-II (ब) लूना
(स) चैलेन्जर (द) अपोलो

33 कुल उच्च न्यायालयों में विचाराधीन मुकदमों की संख्या लगभग 18 लाख है। सर्वाधिक मुकदमें किस उच्च—न्यायालय में विचाराधीन हैं ?
(अ) इलाहाबाद उच्च—न्यायालय
(ब) कलकत्ता उच्च—न्यायालय
(स) बम्बई उच्च—न्यायालय
(द) पटना उच्च—न्यायालय

34. इस समय भारत में क्रमशः कितने नेशनल पार्क और वन्य जीव विहार है ?
(अ) 19;202 (ब) 25;116
(स) 45;225 (द) 34;96

35. सामान्यतः आयातित इलेक्ट्रानिक सामानों पर 330% का आयात शुल्क लगता है। परन्तु सरकार ने कुछ समय के लिये आयातित रंगीन दूर दर्शन हेतु आयात शुल्क कम कर दिया था। यह आयात शुल्क कितना था ?
(अ) 100% (ब) 145% (स) 190% (द) 225%

36. विश्व व्यापार में भारत का अंश कितना है ?
(अ) 6% (ब) 4% (स) 1% (द) .5%

37. उत्तर बसई, दक्षिण बसई, बी-37, बी-38, रत्नागिरि नामक क्षेत्र किस खनिज से सम्बन्धित हैं ?
(अ) तांबा (ब) एल्युमिनियम
(स) तेल व प्राकृतिक गैस (द) यूरेनियम

38. विश्व स्वास्थ्य संगठन वर्ष 1982 को 'वृद्धजनों का वर्ष' के रूप में मना रहा है। वृद्धावस्था की ओर विश्व का ध्यान आकर्षित करने के लिये कौन सा नारा चुना गया है ?
(अ) 'वृद्धावस्था को सरस बनाइए।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(ब) 'वृद्धजन आगे आओ'।
(स) वृद्धावस्था भी उद्देश्य पूर्ण रूप से व्यतीत करो।
(द) 'वृद्धजनों के जीवन को सुखी बनाइए।'

39. वर्तमान विश्व के सन्दर्भ में निम्नलिखित कौन सा कथन सत्य है ?
(अ) बच्चों की तुलना में वृद्धों की संख्या में बढ़ोत्तरी हो रही है।
(ब) वृद्धों की तुलना में बच्चों की संख्या में बढ़ोत्तरी हो रही है।
(स) वृद्धों और बच्चों की संख्या में समान रूप से बढ़ोत्तरी हो रही है।
(द) उपर्युक्त सभी कथन असत्य हैं।

40. भारत ने बंगलादेश को 15, 130 वर्ग मीटर के तीन बीघा क्षेत्र को अनिश्चित् काल के लिये पट्टे पर दे दिया है। मूल रूप से इस क्षेत्र पर किस भारतीय राज्य का कब्जा था ?
(अ) त्रिपुरा (ब) पं. बंगाल
(स) असम (द) मणिपुर

41. अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष ने हाल में किस देश को विवादास्पद ऋण प्रदान किया है ?
(अ) इस्रायल (ब) पोलैण्ड
(स) द. अफ्रीका (द) अल सल्वाडोर

42. खंजरे आब क्या है ?
(अ) रत्नों से जड़ा हुआ मुगल कालीन 'खंजर' जो अभी हाल में खुदाई के दौरान मिला।
(ब) ईरान के कब्जे में आया इराकी क्षेत्र।
(स) पाकिस्तान और चीन को जोड़ने वाला स्त्रातजिक दर्रा।
(द) वह स्थान जहां भारी संख्या में अफगानी विद्रोही मारे गये।

43. किस नगर में मानव निर्मित हृदय को मानव शरीर में प्रतिरोपित किया गया है ?
(अ) जोहान्सबर्ग (द. अफ्रीका)
(ब) साल्ट लेक सिटी (सं.रा. अमेरिका)
(स) पर्थ (आस्ट्रेलिया)
(द) ज्यूरिख (स्विटजरलैण्ड)

44. बर्मा को ब्रिटिश भारत से कब अलग किया गया था ?
(अ) 1911 (ब) 1919 (स) 1931 (द) 1937

45. एशियन खेल प्रारम्भ करने का सुझाव किसने दिया था ?
(अ) जवाहर लाल नेहरू (ब) जे. डी. चोकसी
(स) ए. एफ. एफ. तलयारखान (द) राजकुमारी अमृत कौर

46. विश्व में सर्वप्रथम भूमिगत रेलवे लाइन लन्दन में 1963 में प्रारम्भ की गयी। 1985 से भारत के किस नगर में भूमिगत रेलवे लाइन प्रारम्भ होगी ?
(अ) बम्बई (ब) दिल्ली
(स) मद्रास (द) कलकत्ता

47. किस क्षेत्र में अपने विशिष्ट योगदान के लिये अल्वा मिरडल (स्वीडन) व अलफान्सो गार्सिया रोबल्स (मेक्सिको) को 1982 का नोबल शान्ति पुरस्कार प्रदान किया गया ?
(अ) अस्त्र परिसीमन (ब) आणविक निरस्त्रीकरण
(स) अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग (द) उपर्युक्त सभी

48. 'इनकम यूनिट स्कीम 1982' नामक नवीन योजना किस संगठन द्वारा प्रारंभ की गयी है ?
(अ) रिजर्व बैंक ऑव इण्डिया (ब) एक्सिम बैंक
(स) यूनिट ट्रस्ट ऑव इण्डिया (द) फाई नैनशियल यूनिट कार्पोरेशन ऑव इण्डिया

49. जम्मू कश्मीर की राजकीय भाषा कौन सी है ?
(अ) उर्दू (ब) डोगरी
(स) कश्मीरी (द) डोगरी व कश्मीरी

50. भारत का सर्वोत्तम प्राकृतिक बन्दरगाह कौन सा है ?
(अ) कांधला (ब) बम्बई
(स) कोचीन (द) विशाखापट्टनम

51. भारत के किस राज्य/केन्द्र प्रशासित प्रदेश में फ्रांसीसी संस्कृति की सर्वाधिक झलक मिलती है ?
(अ) गोआ, दमन, द्वीव (ब) पाण्डिचेरी
(स) नागालैण्ड (द) कर्नाटक

52. सं. रा. अमेरिका के दो प्रमुख राजनीति का दल कौन से हैं ?
(अ) लेबर दल, लिबरल दल
(ब) लेबर दल, डेमोक्रेटिक दल
(स) डेमोक्रेटिक दल, रिपब्लिकन दल
(द) क्रिश्चियन डेमोक्रेटिक दल, लिबरल रिपब्लिकन दल

53. हम्पी स्थित भग्नावशेष निम्नलिखित में से किससे सम्बन्धित है ?
(अ) मौर्य साम्राज्य (ब) चोल साम्राज्य
(स) गुप्त साम्राज्य (द) विजयनगर साम्राज्य

54. विश्व का प्रमुख फिल्म केन्द्र हालीवुड कहाँ स्थित है ?
(अ) हमबुर्ग (प. जर्मनी) (ब) यार्कशायर (इंग्लैण्ड)
(स) सैन फ्रांसिस्को (सं. रा. अमेरिका)
(द) लॉस एन्जेल्स (सं. रा. अमेरिका)

(शेष पृष्ठ 40 पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय बुद्धिजीवी (2)

डॉ. सम्पूर्णानन्द

भारतीय बुद्धिजीवियों की नितान्त विश्वासहीनता की जड़ उनकी कुण्ठा है। अंग्रेजी के 'फेथ' शब्द के लिए संस्कृत में 'श्रद्धा' शब्द का प्रयोग होता है। 'श्रद्धा' शब्द 'श्रत' धातु से निकला है जिसका अर्थ है सत्य। मनुष्य श्रद्धा उसी के प्रति रख सकता है जिसे वह अटल सत्य मानता है। वह वस्तु जिसमें कोई अपना अडिग विश्वास आरोपित कर सके, उसके लिए जीवन संबल के समान है अथवा प्रतिकूल नियति के समस्त घात-प्रतिघातों को सहन करने की शक्ति उसी से प्राप्त होती है और उसी से मनुष्य को न केवल भविष्य का सामना करने वरन् उसका इच्छानुकूल निर्माण करने के लिए भी आशा, उत्साह एवं प्रेरणा प्राप्त होती है। यदि किसी प्रकार यह प्रकट हो जाय कि जिस वस्तु पर हमारा विश्वास है, वह विश्वास के योग्य नहीं है तो एक ऐसे खोखलेपन का अनुभव होने लगेगा जिसमें जीवन दुखमय हो जायगा।

जिस संकट और परीक्षा के काल से भारत गुजर रहा है उसमें कोई असाधारणता नहीं है। समान परिस्थितियों में किसी भी देश को संक्रान्ति काल में इनका सामना करना पड़ सकता है। किन्तु जिस कारण हमारा बोझा भारी मालूम पड़ता है, वह तो यह है कि इसको सहन करने योग्य आत्मिक बल का हममें अभाव है। न इसमें विश्वास है और न वह वस्तु ही है जिस पर हम अपना विश्वास टिका सकें। सामाजिक और आर्थिक ढांचे के विघटन के साथ पुराने मूल्य भी स्थानभ्रष्ट होते जा रहे हैं, परन्तु उनका स्थान नये मूल्यों ने अभी तक ग्रहण नहीं किया है। धर्म एक स्वांग भर रह गया है और वे प्राचीन परम्परायें जिनमें इस राष्ट्र के हजारों वर्षों के इतिहास की स्मृतियां हैं, जिनमें उसकी आशा और आकांक्षाएं उसके आदर्श और अनुभव निहित हैं, संजो रखने वाली हमारी प्राचीन परम्पराओं की ओर से उपेक्षा के साथ मुंह फेर लिया जाने लगा है। आज आध्यात्मिक खोखलापन ही अधिकांशतः बौद्धिक उच्चता का चिन्ह बन गया है।

किन्तु बुद्धिजीवियों की नयी पीढ़ी को इसके लिए दोष नहीं दिया जा सकता, वे स्वयं एक विचित्र षड़यन्त्र के शिकार हैं। इसके लिए तो कुछ ही लोग उत्तरदायी हैं।

उदाहरण के लिए विश्वविद्यालयों को ही लीजिये। विशुद्ध बौद्धिक क्षेत्र में उन्होंने जितना भी बड़ा कार्य किया है मैं उसे कम करके आंकना नहीं चाहता हूँ, परन्तु सांस्कृतिक क्षेत्र में उन्होंने अपने कर्तव्य का बिल्कुल पालन नहीं किया है। जहां तक मेरी जानकारी है उन्होंने एक नया सांस्कृतिक आन्दोलन चलाने, एक नयी विचारधारा का सृजन करने अथवा एक ऐसी नयी संस्कृति (या धर्म कहिए) को रूप देने का प्रयत्न नहीं के बराबर किया है, जो वर्तमान युग के सभी नवीन एवं मंगलकारी तत्वों को अपने में पचा कर एक ऐसा ढांचा प्रस्तुत करती, जिसके भीतर अपनी आध्यात्मिक भूमि पर दृढ़ता के साथ जमी हुई राष्ट्र की आत्मा विकास और आत्माभिव्यक्ति का पूरा अवसर प्राप्त करती। हमारे विश्वविद्यालय समाज के प्रति अपने कर्तव्य से अवगत प्रतीत नहीं होते हैं। उनमें से कुछ ने भारतीय संस्कृति और समाज शास्त्र की शिक्षा की व्यवस्था भी की है, लेकिन कुल मिलाकर उससे उतना ही लाभ है जितना कि सुमेरियन या पूर्व-मान्टेज्यूमा पेरू सभ्यता की पढ़ाई से हो सकता है।

इस शिक्षा में अतीत को वर्तमान से इस प्रकार जोड़ने का कोई प्रयत्न नहीं है जिसमें वह भविष्य के लिए सीढ़ी का काम कर सके। कला और विज्ञान के विभिन्न पाठ्य-विषय न्यूनाधिक कुशलता के साथ पढ़ा दिये जाते हैं। कुछ शोधकार्य के उपक्रम का भी प्रयास रहता है परन्तु ज्ञान को एक सुसम्बद्ध रूप देने की कोई चेष्टा नहीं दिखाई देती है। सम्पूर्ण व्यक्ति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की आवश्यकताओं का ध्यान नहीं रखा जाता और न ऐसे साधन ढूंढ़ निकालने का सचेष्ट प्रयत्न किया जाता है जिनसे मनुष्य के पूर्ण व्यक्तित्व का विकास हो सके। अतः यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि हमारे विश्वविद्यालयों का वातावरण अनास्था एवं अश्रद्धा के भाव से पूर्ण है।

एक और दिशा से भी हमें इस कठिन समय में निराशा मिली है। अपनी महान क्रान्ति के बाद भी रूस किसी भीषण आध्यात्मिक अव्यवस्था में भी नहीं फंसा। इसका एक कारण यह था कि रिक्त स्थान को भरने के लिए मार्क्सवादी दर्शन उपलब्ध था और दूसरा यह था कि उसे सौभाग्य से लेनिन जैसा कर्णधार प्राप्त था जिसकी सहायता के लिए एक गोर्की भी था। इसका परिणाम यह हुआ कि देश में मार्क्सवाद का प्रचार तो हुआ परन्तु वहाँ की संस्कृति की जड़ें जमीं रही। मध्यवर्गीय होने पर भी पुरानी कला और साहित्य को इसका पूरा अवसर दिया गया कि वे नये साहित्य और कला के निर्माण में पूरा योग दे सकें। इसीलिए आज इन क्षेत्रों में रूस योरप का नेतृत्व कर रहा है। जिनके हाथों में शासन की बागडोर थी, उनका देश की जनता से गहरा सांस्कृतिक लगाव था। अतः वे इसका नेतृत्व करने के लिये पूरी तरह उपयुक्त थे।

हमारी स्थिति इससे एकदम भिन्न है। वे व्यक्ति जो भारत की जनता को पूरी तरह पहचानते थे, क्यों कि उनके दिल की धड़कन उनकी धड़कनों से मिली थीं, जिनकी आवाज में हमारी पुरातन परम्परायें और आदर्श बोलते थे, वे आज नहीं रहे। उन्हें क्रूरतापूर्वक हमसे छीन लिया गया। जो नेता बचे हैं उनका भारतीय मनोदशा से कोई सम्पर्क नहीं है। उनके और जनता के बीच आचार और विचार की गहरी खाई है। वे रीति-रिवाज, गीत और लोक कथायें जो जनता के लिये बड़ा आकर्षण रखती हैं, उनसे हमारे राष्ट्रीय नेताओं को चिढ़ है। जैसा बच्चों के खिलवाड़ को सहन किया जाता है, उस तरह अपने मूढ़ देश-भाइयों की कमजोरियों को सहन करना एक बात है और उनकी आत्मा में पैठ कर उनके हृदय की धड़कन को समझना दूसरी बात है। यह सत्य है कि सभी भारतीय संस्कृति की बात करते और दावा करते हैं कि उनके अतिरिक्त इस शब्द का अर्थ भी कोई नहीं जानता। उस्तादों को प्रश्रय देते हैं, सुदूर देशों तक भारतीय संस्कृति का संदेश पहुंचाने के लिये अपने गायक और नर्तक भेजते हैं। परन्तु इन चीजों के लिये हमारे मन में यदि कुछ मूल्य है भी तो वह केवल बौद्धिक है। जिस प्रकार युग-युग से हमारी गायन और नृत्य कला का विकास होता आया है, उस प्रकार के विकास के लिये कोई गम्भीर प्रयत्न नहीं किया जा रहा है, क्यों कि वास्तव में हमारे नेताओं के मन में उनके लिये कोई आकर्षण नहीं है। यही बात साहित्य के सम्बन्ध में भी लागू होती है। जो लोग विदेश जाते हैं, वे अपने साथ प्राचीन परम्पराओं का भाव मात्र ले जाते हैं। जैसे कोई हजारों वर्ष पुरानी कला के स्मारक के रूप में खुदाई से प्राप्त कुछ प्रस्तर खण्ड तथा मिट्टी के बर्तनों के टुकड़े ले जायँ।

हमारे बीच से कोई राधाकृष्णन संसार का दौरा करता है और वह घूम-घूम कर वेदान्त की जीवन सम्बन्धी मान्यताओं की व्याख्या करता है। हममें से प्रत्येक बात-बात में महात्मा जी और उनके उपदेशों का हवाला देता है। परन्तु यह सब विदेशियों के लिये ही है। देश के जीवन पर इसका प्रभाव नहीं के तुल्य है। हमारे संविधान में निस्संदेह बड़ी बड़ी बातें हैं। यह स्वीकार करना होगा कि उसमें वे सभी गुण हैं जो उन संविधानों में पाये जाते हैं जिनके आधार पर उसकी

'जिस संकट और परीक्षा के काल से भारत गुजर रहा है उसमें कोई असाधारणता नहीं है। समान परिस्थितियों में किसी भी देश को संक्रान्ति काल में इनका सामना करना पड़ सकता है। किन्तु जिस कारण हमारा बोझा भारी मालम पड़ता है वह तो यह है कि इसको सहन करने योग्य आत्मिक बल का हममें अभाव है।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

111896

रचना की गयी है। परन्तु इसकी एक अपनी विशेषता यह है कि कितनी भी खोज करने पर इसमें वेदान्त अथवा गांधीवाद या किसी अन्य सैद्धांतिक आधार का चिन्ह भी नहीं मिलेगा। संविधानकारों को क्या इसका तनिक भी अनुमान न था कि जीवन का उद्देश्य और उसकी प्राप्ति के उपाय क्या होने चाहिये? इस बात का कोई संकेत इसमें नही मिलता। अतः जहां तक संविधान का सम्बन्ध है उससे ऐसा कोई निर्देश नहीं प्राप्त होता कि जीवन में सफलता प्राप्ति के लिये किस प्रकार की शिक्षा-व्यवस्था अपेक्षित है। उसमें किसी ऐसे आदर्श की स्थापना नहीं जिसकी प्राप्ति के लिये कोई प्रयत्न कर सके अ[illegible] जिसकी प्राप्ति के लिये आत्मोत्सर्ग कर सके। फलतः आदर्श का यह अभाव रिक्तता का कारण बनता जा रहा है।

लिये संघर्ष को [illegible] करता है, उस संघर्ष की जिसमें सबल अर्थात अविचारी एवं अहम्वादी की ही विजय होती है। जीवन की वास्तविकताओं पर यह दर्शन इतना सच्चा उतरता प्रतीत होता है कि परस्पर सहयोग के लिये कितनी ही अपील की जाय, वह लोगों के दिमाग से एकदम नहीं निकल सकता। इस तरह के संघर्ष में उत्सर्ग के लिये भला क्या स्थान हो सकता है। अधिक से अधिक यही हो सकता है कि व्यक्ति अपने स्वार्थ के साथ दूसरों के प्रति भी जागरुक हो जाये।

हमारे वर्तमान नेताओं की सफलता की द्योतक एक और चीज जो सामने रखी जाती है वह है धर्मनिरपेक्ष राज्य की कल्पना। मैं तो केवल इतना कहूंगा कि इस पद का मूल भाव उतना ही प्राचीन है जितना हमारा इतिहास। अशोक, गुप्त राजाओं और अकबर के

'इस शिक्षा में अतीत को वर्तमान से इस प्रकार जोड़ने का कोई प्रयत्न नहीं है जिसमें वह भविष्य के लिए सीढ़ी का काम कर सके.....अतः यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि हमारे विश्वविद्यालयों का वातावरण अनास्था एवं अश्रद्धा के भाव से पूर्ण है।'

यह सच है कि लोक-कल्याणकारी राज्य की कल्पना उसमें है। परन्तु दुर्भाग्यवश यह अत्यधिक साधारण है। आदर्श तो ऐसा हो। चाहिये जो मनुष्य को अपने से ऊँचा उठा सके, जो उसके व्यक्तिगत स्वार्थ से परे हो। लोककल्याणकारी राज्य की कल्पना में यह बात नहीं है, क्योंकि व्यक्ति स्वयं उस कल्याण का भागी होगा। साधारणतः मनुष्य ऐसी चीजों के लिये अपने जीवन का उत्सर्ग नहीं करता। भोजन, वस्त्र, मकान, सड़क, अस्पताल, स्कूल सभी अच्छी चीजें हैं परन्तु यह दैनिक जीवन की छोटी-छोटी आवश्यकताओं के ही कुछ ऐसे विस्तृत रूप हैं जिनमें उस पवित्रता का निवास नहीं हो सकता, जो किसी भी आदर्श में होती है।

हमारे नेता ऐसा समझते प्रतीत नहीं होते हैं। यह सत्य है कि लोक-कल्याणकारी राज्य की सफल स्थापना परस्पर सहयोग से ही हो सकती है। भारतीय दर्शन ने हमें और सृष्टि के शेष प्राणियों को एक विराट का ही अंग बताया है और कहा है कि 'परस्परं, भावयन्तः श्रेय परमबाप्स्यथ' एक दूसरे की सेवा से ही तुम परम कल्याण को प्राप्त कर सकते हो। परन्तु यह पद, 'वेलफेयर स्टेट' हमें पश्चिम से प्राप्त हुआ है, जहां के निवासियों को पीढ़ियों से जीव-विज्ञान पर गलत ढंग से आधारित उस दर्शन पीढ़ियों का पाठ पढ़ाया गया है जो अस्तित्व के

साम्राज्य सभी दृष्टियों से धर्मनिरपेक्ष थे। शासक का अपना एक धर्म होता था जिसको शासन प्रोत्साहन देता था परन्तु उत्तर-दायित्वपूर्ण पदों पर नियुक्ति एकमात्र योग्यता के आधार पर ही होती थी। ब्रिटेन में एक राजधर्म है, अतः वह सही अर्थ में धर्मनिरपेक्ष राज्य नहीं है, यह कहना एक कोरा अटकल होगा। परन्तु हमारे देश में तो साम्प्रदायिकता के हौवे ने धर्मनिरपेक्षता को धर्म-विरोधिता का समानार्थक बना दिया है। किसी मामले में हिन्दू धर्म की ओर तनिक सा संकेत भी संशय की दृष्टि से देखा जाता है। हम भारतीय संस्कृति और उसके संयुक्त रूप की बात करते हैं। ठीक है, परन्तु यह भी नहीं भुलाया जा सकता कि इसकी मुख्य धारा जिसमें अनेक सहायक स्रोत मिलते गये हैं, सरस्वती के तट पर प्रथम वैदिक ऋषि के सामगान से ही फूट कर मानवोचित सभ्यता के प्रसार को निकल पड़ी थी।

मानवोचित सभ्यता के प्रसार की बात मैं इसलिये कहता हूं कि सहनशीलता की महान शिक्षा ऋषि के इन्हीं शब्दों से ही मिली—'एकं सत् विप्रा बहुधा-बदन्ति' अर्थात परमतत्व एक ही है, बुधजन उसे अनेक नामों से पुकारते हैं। प्रतियोगिता के स्थान पर सहकारिता को जीवन का सिद्धांत बनाने की शिक्षा देने के लिये क्या इससे अधिक उत्तम तरीका हो सकता है कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम बतायें कि मानवमात्र एक ही तेजपुंज विराट का अविभाज्य अंग है। उपनिषदों में कहा गया है 'कुर्वन्तेवेह कर्माणि जिजीविषेत् शतं समा' मनुष्य को अपना समस्त जीवन कर्म से रत होकर ही व्यतीत करना चाहिये और आगे स्पष्ट किया गया है कि 'त्यक्तेन भुंजी'—'त्याग द्वारा भोग' का आनन्द प्राप्त करो। मानव आचरण के इनसे अधिक सुन्दर नियम और क्या हो सकते हैं। निराशमन व्यक्ति में क्या एक नये उत्साह का संचार न हो उठेगा यदि उसे स्मरण करायें कि वह भाग्य का दास नहीं है वरन स्वयं अपने भाग्य का निर्माता है। वह 'अमृतस्य पुत्रः' में से एक है और उसमें और ईश्वर में कोई तात्त्विक अन्तर नहीं है।

भारतीय विचार जगत के श्रेष्ठतम तत्वों पर जो हमारे राष्ट्रीय जीवन के ताने-बाने हैं, हम अपनी भावी संस्कृति को आधारित कर सकते हैं। आवश्यकता इस बात की है कि नयी चेतना प्रदान कर एक बार पुनः इन्हें क्रियाशील शक्ति के रूप में परिणत कर दिया जाय। इस आधार पर यदि कोई अपील की जायगी तो उसका गहरा प्रभाव पड़ेगा और हमारा जीवन एक जीवन उद्देश्य से प्रेरित हो उठेगा। इन तत्वों में एक नयी मानवता के सृजन की कल्पना है जिसमें सहनशीलता और सद्भाव होगा, जिसमें व्यक्ति समाज की चिन्ता करेगा और समाज व्यक्ति की, जिसमें मनुष्य अपने पड़ोसी से अपने ही समान प्रेम करेगा, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति का यह अटल विश्वास होगा कि उनका पड़ोसी वास्तव में उससे पृथक नहीं है। वह महान सन्देश किसी एक जाति, धर्म, देश और राजनीतिक दल तक सीमित नहीं रहेगा। 'इमांवाचं कल्याणी भावदानि जनेभ्यः' यह मंगलवाणी जन-जन तक पहुंचा दो।

हम जो जनता के नेता कहे जाते हैं उससे उस भाषा में बात करते हैं जो पश्चिम से उधार ली गयी है, क्योंकि दूसरी भाषा हमें आती ही नहीं है। साथ ही यह भय भी बना रहता है, जो निर्मूल होते हुये भी पूरी तरह छाया हुआ है, कि गत चार हजार वर्षों के व्यवहार द्वारा शक्तिसम्पन्न अपने यहां की भाषा का प्रयोग करने से हिंदू-साम्प्रदायिकता को प्रोत्साहन मिलेगा। इसका परिणाम वही हुआ है जो कि ऐसी स्थिति में होना चाहिये था। नयी पीढ़ी के बुद्धिजीवी जो हमारा अनुकरण करते हैं, हमसे इतना सीख गये हैं कि जो कुछ प्राचीन है उससे वे घृणा करें, उनकी दृष्टि में धर्म निरर्थक बकवास और प्राचीन वैदिक जीवन अंधविश्वासों और पुजारियों की शोषणकलाओं का विवरण मात्र है। परन्तु अविश्वास और उपेक्षा ही मस्तिष्क का भोजन नहीं है। अपनी विवेकहीनता के कारण जो स्थान हमने रिक्त कर दिया उसे भरने के लिये कोई नयी सामग्री हमने प्रस्तुत की नहीं। यही हमारे नये बुद्धिजीवियों का रोग है। बाहर से उन्हें कुछ प्रकाश प्राप्त नहीं हो रहा है, क्योंकि ऐसा प्रतीत होता है कि पाश्चात्य जगत स्वयं बौद्धिक विप्लव की अवस्था में है। आत्मा के क्षेत्र में और उसी प्रकार आर्थिक जगत में पुरानी अहस्तक्षेप नीति [लैसी फेयर] का अन्त होता जा रहा है। किसी एक राजनीतिक दल के अनुकूल मार्ग को अपनाने के लिये बलात् सैनिकीकरण जैसा प्रयत्न तो अत्यधिक हानिकर होगा ही परन्तु यह भी अधिकांशतः स्वीकार किया जाने लगा है कि आर्थिक सम्पन्नता के लिये व्यक्ति के उच्चतर अहं-आत्मा की उपेक्षा का भयंकर परिणाम हुआ। मनुष्य के प्रयत्नों का एक निश्चित लक्ष्य क्या है, यह जाने बिना ज्ञान की खोज कभी भयंकर हानि का कारण बन जाती है। यह तो प्रत्यक्ष ही दिखायी दे रहा है कि किस प्रकार बड़े-बड़े शक्तिशाली राष्ट्र, जहां बौद्धिक विकास का पूरा अवसर रहा है, एक ऐसे मार्ग पर तेजी से अग्रसर हो रहे हैं कि उनका अन्त यदि मानव जाति के विनाश में नहीं तो उनकी सभ्यता के विनाश में तो होगा ही। अतः पश्चिम के देश जो स्वयं घोर मानसिक परेशानी के चंगुल में फंसे हुये हैं, दूसरों की मानसिक संतुलन की दिशा में सहायता करने की स्थिति में नहीं है।

हमें स्वयं अपना घर संभालना है। इस देश के निवासियों के सांस्कृतिक जीवन को ढालने में हमारे नेताओं को सक्रिय भाग लेना चाहिये। भारतीय बुद्धिजीवी आज जिस निराशा, असहायावस्था और अनास्था के दलदल में फंसे हुये हैं, उससे उनका उद्धार करने का यही एकमात्र उपाय है। तभी भारतीय बुद्धिजीवी वर्ग राष्ट्र के और शेष मानवता के चतुर्दिक विकास में योगदान कर सकेगा। ■

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जनसंख्या वृद्धि एवं आर्थिक विकास

शिव नारायण गुप्त, प्रवक्ता अर्थशास्त्र, राजकीय महाविद्यालय, धानापुर, वाराणसी

वर्तमान युग में संसाधनों के सीमित होने की समस्या (जनसंख्या वृद्धि जनित) अपने भयावहरूप में परिलक्षित हो रही है, चाहे वे विकसित देश हों अथवा विकासशील या अल्पविकसित देश। देश की आर्थिक विकास[1] प्रक्रिया में हमारे प्रयत्नों से 'राष्ट्रीय आय' में जो भी वृद्धि आती है, जनसंख्या वृद्धि उसका अधिकांश भाग हड़प जाती है। इससे देश का समग्र आर्थिक-विकास बाधित होता है।

यदि हम विश्व की औसत वार्षिक जनसंख्या वृद्धि पर विचार करें तो हमें यह ज्ञात होता है कि 1650-1900 के मध्य यह वृद्धि 0.3 प्रतिशत से बढ़कर 0.6 प्रतिशत हुई है। इसके बाद की जनसंख्या वृद्धि का प्रतिशत अत्यन्त तीव्र रहा है और मात्र 71 वर्ष की अवधि में ही 2.0 प्रतिशत की वृद्धि हुई है जो टामस माल्थस के अनुमान की पुष्टि करता है कि उत्पादन विधियों की एक दी हुई दशा के अन्तर्गत जनसंख्या जीवन निर्वाह साधनों से अधिक तीव्रगति से बढ़ने की प्रवृति दिखलाती है और इस प्रकार 25 वर्षों में जनसंख्या दुगुनी हो जाती है। (यहां 0.6 प्रतिशत की प्रारम्भिक जनसंख्या वृद्धि 1971 में तीन गुने से भी अधिक बढ़ गई है)। 1975 में इस वृद्धि का प्रतिशत 2.18 रहा है जो 1930 की 1.14 प्रतिशत की तुलना में लगभग दुगुनी है।

जनसंख्या की प्राकृतिक वृद्धि के संदर्भ में अब तक प्राप्त अद्यतन आंकड़ों के आधार पर अफ्रीका का सर्वोच्च स्थान रहा है। (1975 में 2.8 प्रतिशत) किन्तु जनसंख्या की वास्तविक वृद्धि की तुलना में चीन एवं भारत का विश्व में स्थान क्रमशः पांचवा एवं सातवां है। भारत की जनसंख्या में 1891 से 1981 की अवधि में लगभग तीन गुनी वृद्धि हुई है। यदि हम भारत की जनसंख्या वृद्धि का अध्ययन अवस्थावार करें तो भारत 1891-1921 तक जनांकिकी संक्रमण[2] की प्रथम अवस्था में था जिसमें कुल जनसंख्या 74.18 करोड़ थी। 1921-1951 की अवधि द्वितीय अवस्था का प्रदर्शन करती है जिसमें जनसंख्या की कुल वृद्धि 95.88 करोड़ हुई। जनसंख्या वृद्धि की गति पूर्व अवस्था की तुलना में अत्यन्त तीव्र रही है जो भविष्य में प्राप्त होने वाली 'जनसंख्या विस्फोटक' दशा का पूर्वाभास प्रस्तुत कर रही है। इस

1—अर्थ साहित्य में वृद्धि (Growth) एवं विकास (development) का एक ही अर्थ में प्रयोग अनेक स्थानों पर किया गया है किन्तु ऐसा करना उचित नहीं है। विकास वृद्धि से भिन्न है क्योंकि :

(i) वृद्धि की अवधारणा का सम्बन्ध 'आय' से है जबकि विकास की अवधारणा का सम्बन्ध 'पूँजी' से है।

(ii) पूँजी एक 'स्टाक' अवधारणा है, किन्तु आय एक 'प्रवाह' अवधारणा है।

(iii) विकास का महत्व गुणात्मक और अथवा मात्रात्मक है किन्तु यदि किसी देश की जनसंख्या कुल आय, सकल राष्ट्रीय उत्पाद, प्रतिव्यक्ति आय, विनियोग, बचत, अथवा विदेशी व्यापार एक अवधि में मात्रात्मक रूप में बढ़े तो इसे वृद्धि अथवा संवृद्धि कहेंगे।

2—वस्तुतः जनांकिकी चरों में स्थिरता नहीं है, वे समय-समय पर परिवर्तित होती रहती हैं। इसी आधार पर किसी देश की जनसंख्या वृद्धि की प्रक्रिया में अनेक अवस्थाओं से होकर गुजरती है। इस रूप में, विभिन्न जनांकिकी अवस्थाओं का अध्ययन ही 'जनांकिकी संक्रमण' कहा जाता है। जनांकिकी संक्रमण के सैद्धान्तिक विश्लेषण का विशेष श्रेय लाण्ड्री नोटस्टीन, थाम्पसन, साक्स, काउगिल, एवं ब्लेकर को है। इन विचारकों ने सामान्यतः जनांकिकी संक्रमण की उच्चस्थित अवस्था, जनसंख्या विस्फोट की अवस्था, निम्न स्थिर अवस्था नाम से तीन अवस्थाओं का उल्लेख किया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तरह की अवस्था का संकेत 1951 के बाद (कोई-कभी इसे 1959 के बाद भी स्वीकार करते हैं) से प्राप्त हो रहा है। भारत में जनसंख्या वृद्धि की तीनों दशाएँ इस प्रकार हैं :

अवधि	जनसंख्या वृद्धि (करोड़ में)	अवस्था
1891-1921	74.18	1
1921-1951	95.88	2
1951-1981	167.12	3

किसी देश की जनसंख्या वृद्धि जैविकघटक (Biological Components) तथा सांस्कृतिक घटक (Cultural components) के माध्यम से नियंत्रित होता है। इनमें प्रथम के अन्तर्गत जन्म लेना जो मानवीय प्रजनन शीलता (Human Fertility) एवं मर जाना जिसका सम्बन्ध 'मरणशीलता' (Mortality) तत्व से है, जैसी दो प्रमुख घटनाएँ घटित होती हैं। दूसरे सांस्कृतिक घटक के ऊपर 'प्रवसन' (Migration) का प्रभाव पड़ता है जो जन्म एवं मृत्यु के मध्य सम्पन्न होने वाले आवास-प्रवास जैसी प्रमुख घटनाओं से संम्बन्धित है। सारांश यह कि जनसंख्या वृद्धि (परिणाम तत्व) मानवीय प्रजनन शीलता, मरणशीलता तथा प्रवसन (कारण तत्वों) का शुद्ध परिणाम है।

जनसंख्या में प्राकृतिक वृद्धि, मानवीय प्रजनन शीलता एवं मरण शीलता के अन्तर पर आश्रित है। यदि मृत्युदर को निम्न एवं ह्रासोन्मुखी मान लिया जाय तो,

(1) निम्न प्रजनन दर की स्थिति में जनसंख्या वृद्धि की दर स्थिरोन्मुखी निम्नस्तर की होगी।

(2) उच्च प्रजनन की स्थिति में जनसंख्या वृद्धि की दर उच्च एवं विस्फोटक होगी। किन्तु यदि प्रजनन दर को उच्च एवं स्थिर मान लिया जाय तो,

(1) उच्च मृत्युदर की स्थिति में जनसंख्या वृद्धि की दर स्थिरोन्मुखी निम्नस्तर की होगी।

(2) निम्न अथवा शीघ्र ह्रासोन्मुखी मृत्युदर की स्थिति में जनसंख्या वृद्धि की दर उच्च एवं विस्फोटक होगी।

वस्तुतः जीव विज्ञान मनुष्य को जन्म और मृत्यु की अवधारणा देता है किन्तु संस्कृति उसे मनुष्यता का जामा पहनाती है अर्थात मनुष्य की वह सांस्कृतिक प्रक्रिया जिसके माध्यम से वह अपनी कुछ आवश्यकताओं की पूर्ति करना चाहता है अथवा वातावरण जनित कुछ असुविधाओं से बचना चाहता है। इस सन्दर्भ में एक को हम 'अनुकूल' तत्व तथा दूसरे को 'प्रतिकूल तत्व' कहते हैं। ये दोनों तत्व ही क्रमशः आवास (In-migration) एवं प्रवास (out-migration) हेतु मनुष्य को उत्प्रेरित करते हैं जिनका ही अपनी बारी में जनसंख्या परिवर्तन पर प्रभाव पड़ता है।

प्रवसन से यदि किसी अर्थव्यवस्था की जनसंख्या में वृद्धि आती है तो इससे वहां के साधनों पर जनसंख्या का भार बढ़ जाता है। यह भार अर्थ व्यवस्था के आर्थिक विकास को दुहरे ढंग से प्रभावित करती है। एक तरफ लोगों की संख्या में वृद्धि श्रम साधनों में वृद्धि लाती है जिससे अर्थव्यवस्था के समग्र उत्पादन एवं आय में वृद्धि आती है। अतः आर्थिक विकास होता है। प्रवसन का यह विस्तारक- प्रभाव (Spread Effect) है। किन्तु दूसरी ओर लोगों की संख्या में वृद्धि निर्धारित साधन (बाल एवं वृद्ध वर्ग) तथा स्वतंत्र साधन (श्रमिक वर्ग) के उपभोग व्यय में वृद्धि लाती है जिससे लोगों द्वारा की जाने वाली बचत में कमी प्राप्त होती है। इसका अर्थ व्यवस्था की समग्र पूँजी विनियोग एवं उत्पादन पर ऋणात्मक प्रभाव पड़ता है जो अपनी बारी में देश के आर्थिक विकास में अवरोध उत्पन्न करता है। प्रवसन का यह संकोचक प्रमाण (Back wash Effect) है।

सभ्यता के विकास के प्रारम्भ से ही मनुष्य प्रकृति में स्वतः प्राप्त पारिस्थितिक संतुलन (Ecological Balance) की एक अवस्था से पारिस्थितिक संतुलन की दूसरी किन्तु उच्च अवस्था को प्राप्त करने का प्रयास करता रहा है। उसका यह कार्य जनसंख्या वृद्धि और जीविका के साधन (आर्थिक विकास) के मध्य सम्पादित होता है। जनसंख्या में वृद्धि ज्यामितीय क्रम यथा 1, 2, 4, 8, 16 ……में होती है किन्तु जीविका के साधन में वृद्धि अंकगणितीय क्रम यथा 1,2, 3,4,5,6, में होती है। प्रारम्भिक जनसंख्या के दुगने की दशा तक ही जीविका के साधन में भी दुगने होने की प्रवृत्ति प्राप्त होती है और तब तक ही पारिस्थितक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संतुलन की दशा भी प्राप्त होती है किन्तु इस सीमा के बाद यदि अन्य बातें पूर्ववत ही रहती हैं तो दोनों में प्राप्त संतुलन की दशा भंग हो जाती है। प्रकृति में प्राप्त होने वाले पारिस्थितिक संतुलन की प्रथम वैज्ञानिक व्याख्या टॉमस माल्थस ने अपने जनसंख्या सिद्धान्त (1798) में की थी। उसके अनुसार यदि कृत्रिम प्रतिबन्धों को लागू न किया गया तो प्राकृतिक प्रतिबन्ध यथा अकाल, महामारी, युद्ध, सूखा, बाढ़ आदि से मृत्युदर में वृद्धि हो कर जनसंख्या में कमी आती है और इससे बढ़ी हुई जनसंख्या का जीविका के साधन के साथ सन्तुलन स्थापित हो जाता है। यद्यपि यह सन्तुलन अल्पकालिक होता है क्योंकि मनुष्य में स्वजाति को बढ़ाने की इच्छा स्वाभाविक रूप से कार्य करने लगती है।

जनसंख्या वृद्धि एवं आर्थिक विकास में परस्पर अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है। सर्वप्रथम जनसंख्या वृद्धि का आर्थिक विकास पर पड़ने वाले प्रभाव का विश्लेषण करने पर हमें ज्ञात होता है कि वर्तमान जनसंख्या एक सीमा तक गरीबी का उन्मूलन करने एवं जीवन स्तर को उच्च बनाने में सहायक है। यह वस्तुओं एवं सेवाओं के एक विस्तृत बाजार के सृजन में तथा उस बाजार में उत्पादित विभिन्न उपभोक्ता वस्तुओं के उपभोग में योगदान करता है जिससे औद्योगिकरण को एक नवीन दिशा मिलती है। इसके अतिरिक्त यह उन्नत प्रौद्योगिकी एवं नव प्रवर्तन (innovation) को प्रोत्साहन के माध्यम से उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों का पूर्ण विदोहन करने में भी सहायक है। इस दृष्टि से न केवल प्रवसन से प्राप्त जनसंख्या ही वरन् सम्पूर्ण जनसंख्या वृद्धि अर्थ व्यवस्था के तीव्र आर्थिक विकास में सहायक है। उदाहरण स्वरूप जापान द्रष्टव्य है। वस्तुतः इस सन्दर्भ में, माल्थस के पूर्व अनेक विचारकों ने अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है। उनमें प्रमुख नाम अरस्तू, एडवर्ड मेयर, रोशे, पेट्टी, चाइल्ड एडम स्मिथ आदि विचारकों का है। चाइल्ड ने यह तर्क प्रस्तुत किया था कि जिस किसी कारण से किसी देश की जनसंख्या में कमी हो उससे वह देश निर्धन होता जाएगा। एडम स्मिथ के समय औद्योगिक क्रान्ति जनित दुष्परिणाम सम्मुख न आने के कारण अपने विचारों में वे भी आशावादिता की चरम सीमा पर हैं।

किन्तु माल्थस का दृष्टिकोण निराशावादी था: जनसंख्या वृद्धि पर यदि नियन्त्रण न किया गया तो उसकी वृद्धि निर्धनता अथवा अन्य किसी कष्ट दायक परिणाम को जन्म देगी। जनसंख्या वृद्धि के प्रथम चरण में जनसंख्या एवं खाद्यान्न उत्पादन में अनुपात 1:1 से 2:2 का अनुपात सम्भव है किन्तु दूसरे चरण से ही इसमें व्यक्तिक्रम उत्पन्न होने लगता है और दोनों में प्राप्त यह अनुपात 4:3, 8:4, 16:5, 32:6, ... के क्रम में जनसंख्या विकास की दृष्टि से एक निषेध (taboo) बन जाती है। यही नहीं, जहां जनसंख्या वृद्धि से उत्पादक-श्रम (स्वतन्त्र साधन) में वृद्धि आती है, निर्भरित श्रम (बाल एवं वृद्ध वर्ग) में भी वृद्धि आती है और तब जनसंख्या वृद्धि द्वारा आर्थिक विकास पर संकोचक प्रभाव पड़ने लगता है।

इससे अर्थ व्यवस्था भयंकर खाद्य समस्या से ग्रसित हो जाती है जो अपनी बारी में एक बड़ी मात्रा में आवश्यक आवश्यकता जनित वस्तुओं के आयात (import) को प्रोत्साहित करती है।

(ii) सम्पूर्ण कार्यशील जनसंख्या का वृहद स्त्री समुदाय मातृत्व के बोझ में फँसा रहता है जिससे उनका किसी अन्य उत्पादन कार्य में सहयोग न मिल पाने से दैनिक जीवनोपयोगी उपभोक्ता वस्तुओं का उत्पादन बाधित होता है।

(iii) जनसंख्या की त्वरित वृद्धि बेरोजगारी जैसी समस्या, मुख्यतः छिपी बेरोजगारी (disgusied unemployment) में योग देती है। यह बेरोजगारी ग्रामीण एवं नगरीय दोनों ही स्तर पर अपना प्रभाव डालती है। इससे प्रवसन जनित सांस्कृतिक उथल-पुथल को बढ़ावा मिलता है तथा पारिस्थितक संतुलन पर क्षेत्रीय दाब कहीं बढ़ जाता है और कहीं घट जाता है। दोनों ही दिशाओं में अर्थ व्यवस्था को कष्ट भोगना पड़ता है।

(iv) जनसंख्या का दाब एवं जीविका के साधन में प्राप्त अन्तराल (gap) के कारण ही अर्थव्यवस्था की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पूर्ण बचत में ह्रास आता है जिससे पूँजी सृजन में अवरोध उत्पन्न होता है और इसका अन्तिम परिणाम देश के आर्थिक विकास को अवरुद्ध कर देता है। रेगनर नर्क्स इसी दशा की व्याख्या 'गरीबी के दुष्चक्र' (Vicious Circle of Poverty) के रूप में करते हैं।

इसके अतिरिक्त रिचर्ड नेल्सन, लाइबेस्टीन, लेविस, रेनिस, फाई. एस. फ्रेड, सिंगर, वी. के. आर. वी. राव, कोल एवं हूवर प्रभृति विचारकों के निष्कर्ष भी इसी तथ्य की पुष्टि करते हैं। रिचर्ड नेल्सन ने अल्पविकसित एवं विकासशील देशों के आर्थिक विकास के संदर्भ में अपने द्वारा किये गए अध्ययनों से यह निष्कर्ष प्राप्त किया कि ऐसे देशों में जनसंख्या सम्बन्धी अनेक ऐसी बाधाएँ प्राप्त होती हैं, जिनसे आर्थिक विकास प्रारम्भ ही नहीं हो पाता और जनसंख्या 'अल्प स्तरीय जीवन निर्वाह के संस्थिति जाल' में फँसकर कष्ट उठाती है।

आर्थिक विकास की इस बाधा को रोकने के लिए पारिस्थितिक प्रतिमान एवं माल्थस-सिद्धांत के सुझाव एक जैसे हैं—'मनुष्य चाहे तो स्वयं को नियंत्रित करके अपनी सीमाओं में परिवर्तन ला सकता है।' फिर भी माल्थस यह नियंत्रण नैतिक प्रतिबन्ध को लागूकर जनसंख्या की वृद्धि (की गति) को रोकने का सुझाव प्रस्तुत करते हैं, जबकि पारिस्थितिक प्रतिमान आर्थिक विकास के वास्तविक पक्ष पर जोर देते हुए प्रदूषण से परे वातावरण की शुद्धता का सुझाव प्रस्तुत करता है। इन्हीं संदर्भों में, माल्थस-सिद्धांत के विपरीत 'अनुकूलतम जनसंख्या' का सुझाव पारिस्थितिक प्रतिमान से साम्य रखता है—'नित्य नई शोधों, आविष्कारों एवं नवप्रवर्तनों के फलस्वरूप आर्थिक विकास का वास्तविक पक्ष जनसंख्या वृद्धि की गति को प्रभाव शून्य कर देगा।' जनसंख्या वृद्धि के प्रतिविधान पहलू को ही दृष्टिगत रखते हुए लाइबेंस्टोन' लेविस, रेनिस एवं फ्राई ने उत्पादकों को अधिमान्यता देते हुए रोजगार में वृद्धि हेतु श्रम प्रधान प्रौद्योगिकी चयन का सुझाव दिया है तथा आर्थिक विकास को प्रारम्भ करने एवं स्थाई बनाने हेतु 'आवश्यक न्यूनतम प्रयास' कसौटी के परिप्रेक्ष्य में अपना विश्लेषण प्रस्तुत किया है। ■

(पृष्ठ 32 का शेष)

55. 'युव वाणी' क्या है ?
   (अ) कालेज के युवा छात्र-छात्राओं के लिये आल इण्डिया रेडियो का विशेष कार्यक्रम
   (ब) केन्द्रीय शिक्षा मन्त्रालय द्वारा प्रकाशित युवा पत्रिका
   (स) शिक्षित युवकों द्वारा गांवों में जाकर निरक्षरता दूर करने का कार्यक्रम
   (द) अखिल भारतीय स्तर पर युवकों का गैर राजनीति संगठन
56. इण्डियन एयर लाइन्स व एयर इण्डिया ने अभी किस देश से 'एयर बस' खरीदा है ?
   (अ) सं. रा. अमेरिका (ब) ब्रिटेन
   (स) फ्रान्स (द) सोवियत रूस
57. इन्सेट—IA के खराब हो जाने पर भारत ने किस विदेशी उपग्रह की सेवा ली है ?
   (अ) स्पुतनिक—IV (ब) इंटलसैट V
   (स) कॉनस्टलेट—I (द) ओमोनसैट II
58. भारत सरकार को वैधानिक विषयों पर सलाह देने के लिये किसको नियुक्त किया जाता है ?
   (अ) विधि मन्त्री (ब) सर्वोच्च न्यायालय
   (स) अटार्नी जनरल (द) गृह मन्त्री
   (य) सालिसीटर जनरल
59. किस देश का नागरिक सं. रा. संघ की महासभा के वर्तमान अधिवेशन के अध्यक्ष है ?
   (अ) इराक (ब) कोलम्बिया
   (स) जाम्बिया (द) जापान
60. जगन्नाथ मन्दिर (पुरी) का निर्माण किसने कराया था ?
   (अ) अवन्ती वर्मा (ब) राजकुमार अवन्ती
   (स) चोलगंग अवन्ती (द) अवन्ती कुमार चोलगंग

उत्तरमाला

1स, 2ब, 3द, 4अ, 5स, 6अ, 7स, 8ब, 9अ, 10ब, 11द, 12स, 13अ, 14स, 15स, 16ब, 17स, 18स, 19अ, 20ब, 21द, 22ब, 23स, 24द, 25ब, 26स, 27अ, 28स, 29द, 30स, 31य, 32स, 33अ, 34अ, 35स, 36द, 37स, 38अ, 39अ, 40ब, 41स, 42स, 43ब, 44द, 45अ, 46द, 47ब, 48स, 49अ, 50ब, 51ब, 52स, 53द, 54द, 55अ, 56अ, 57ब, 58स, 59अ, 60द ■

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साक्षात्कार के दौरान अभ्यर्थी और आयोग के बीच होने वाली बातचीत में आयोग यह भी देखने का प्रयत्न करता है कि क्या अभ्यर्थी उन विभिन्न परिस्थितियों का सामना करने की योग्यता रखता है जो कि एक प्रशासक के सम्मुख आया करती हैं। इस परीक्षण के कई उद्देश्य होते हैं। इनमें से मुख्य यह है कि हर पद की एक विशेष भूमिका होती है जिसके अलग-अलग उत्तरदायित्व होते हैं और आयोग यह देखना चाहता है कि अभ्यर्थी ने किस सीमा तक इन उत्तरदायित्वों को समझने का प्रयत्न किया है और यह गुण उसके व्यक्तित्व में किस रूप में प्रकट होता है। इस परीक्षण के लिए आयोग, अभ्यर्थी के सम्मुख कुछ विशिष्ट परिस्थितियां प्रस्तुत करता है और एक प्रशासक के रूप में अभ्यर्थी को उक्त परिस्थितियों में प्रतिक्रिया जानना चाहता है। तो आइए, ऐसी कुछ परिस्थितियों और प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण किया जाय।

परिस्थिति संख्या—1

आयोग : मान लीजिए कि आप जिलाधिकारी हैं और सरकारी दौरे पर कहीं बाहर गए हुए हैं। आपको समाचार मिलता है कि आपके जिले में एक रेल दुर्घटना हो गई है। ऐसी स्थिति में एक जिलाधिकारी की हैसियत से आप क्या करेंगे ?

अभ्यर्थी (1) : श्रीमन्, मैं यह समाचार मिलते ही रक्षा और बचाव कार्यों के लिए दौरा स्थगित करके अपने जिले में जल्दी से जल्दी लौटने का प्रयत्न करूँगा।

अभ्यर्थी (2) : श्रीमन्, ऐसी स्थिति में मैं जिले के अतिरिक्त जिलाधिकारी को यह निर्देश दूँगा कि दौरे की समाप्ति और मेरी वापसी तक वह स्थिति को नियंत्रण में बनाए रखने का हर संभव प्रयास करें।

अभ्यर्थी (3) : श्रीमन्, सर्वप्रथम मैं जिले के प्रशासकीय, पुलिस और रेलवे अधिकारियों से दुर्घटना की भीषणता का अनुमान लगाऊँगा। दौरे पर जिस कार्य से मैं बाहर गया हूँ, उससे तुलना करने पर यदि रेलवे दुर्घटना स्थल पर पहुँचना मुझे अधिक महत्व पूर्ण प्रतीत होता है तो मैं शिघ्रातिशीघ्र वापस लौटने का प्रयत्न करूँगा। अन्यथा, तत्सम्बन्धित अधिकारियों को उचित निर्देश देने के बाद मैं यह प्रयत्न करूँगा कि वस्तुस्थिति से मेरा सम्पर्क लगातार बना रहे और मैं तदनुसार आगे के निर्णय ले सकूँ।

विश्लेषण—1

उपर्युक्त स्थिति की तीनों प्रतिक्रियाओं को देख कर सहजता के साथ अनुमान लगाया जा सकता है कि तीसरे अभ्यर्थी की प्रतिक्रिया शेष दो की तुलना में सर्वश्रेष्ठ है। पहले और दूसरे अभ्यर्थी ने परिस्थिति का पूर्ण ज्ञान प्राप्त किए बिना ही जल्दबाजी में निर्णय ले लिया कि उन्हें क्या करना है। दूसरे और तीसरे अभ्यर्थी ने (1) वस्तु स्थिति से सम्बद्ध सभी पक्षों (प्रशासन-नागरिक एवं पुलिस, तथा रेलवे) से जानकारी हासिल करके एक समग्र दृष्टिकोण बनाने का प्रयत्न किया (2) दौरे के उद्देश्य और दुर्घटना की तुलना करके यह निर्धारित करने का प्रयत्न किया कि किस स्थिति में उसकी उपस्थिति अधिक आवश्यक और महत्वपूर्ण है। (3) प्रत्येक स्थिति में अभ्यर्थी ने अपने विकल्पों पर पूरा विचार किया और उन्हें समाप्त न करके अन्तिम क्षण तक खुला रखा जिससे तेजी से परिवर्तित होने वाली उक्त स्थिति में समयानुकूल निर्णय लिए जा सकें। इन्हीं कारणों से इस प्रतिक्रिया को अन्य की तुलना में श्रेष्ठ समझा गया।

परिस्थिति संख्या—2

आयोग : यदि आपका चयन भारतीय रेल सेवा में होता है तो एक रेलवे प्रशासक की हैसियत से आप सबसे पहले किन कार्यों को पूरा करने का प्रयत्न करेंगे ?

अभ्यर्थी (1) : श्रीमन्, रेलों की सुरक्षा, रेलों में होने वाली डकैतियों और रेलों का देर से चलना जैसे उद्देश्य मेरे प्राथमिकता क्रम में सर्वोपरि रहेंगे।

(शेष पृष्ठ 48 पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गीता दर्शन

संगम लाल द्विवेदी

ज्ञान का परिमार्जित रूप प्रस्तुत करने वाला, मानव जीवन के सम्पूर्ण दायित्वों का सही आकलन ओजस्विनी धारा के रूप में प्रवाहित करने वाला, भारतीय मनीषियों के चिरकालीन ज्ञान का वास्तविक दर्पण सत्यं, शिवं, सुन्दरम् का प्रतीक गीता एक महाकाव्य है। भारतीय दर्शन में नैराश्य नाम की कोई वस्तु नहीं यही कारण है कि स्वार्जित कर्मों से उत्पन्न मनोव्यथा से व्यथित आक्रान्त मानव हृदय जब चूर-चूर होकर अपने कर्म, भाग्य एवं ईश्वर को कलंकित करने लगता है तो गीता उसका यथेष्ट मार्ग दर्शन का कार्य करती है। गीता मानव जीवन का वह अमोघ अस्त्र है जिसको धारण कर मनुष्य जीवन के किसी भी मोड़ पर ठोकर नहीं खा सकता। नैराश्यपूर्ण जीवन के श्रम से कातर मानव हृदय जब कायर बन कर कार्यक्षेत्र से विचलित होने लगता है तो गीता उसमें जीवन की नयी लहर फूंकने का कार्य करती है। गीता में निष्काम कर्म की प्रधानता अवश्य है परन्तु गृहस्थों के सकाम जीवन को कम महत्व नहीं दिया गया।

कांक्ष्यन्ते कर्मणां सिद्धि यजन्त इह देवता ।
क्षिप्रं ही मानुषे लोके सिद्धिर्भवति कर्मजा ॥

साधक अपने साध्य की प्राप्ति के लिये देवत्व के शरण में आकर साधन को पवित्र बनावे जिससे समाज में सृजनात्मक कार्यों की बाहुल्यता हो, यह गीता के समीचीन तथा युगीन रूप का प्रतीक है। गीता में जहां ज्ञान का निरूपण है, कर्म की अभिव्यक्ति भी दर्शनीय है। ज्ञानाभाव में मनुष्य कर्म पथ से विचलित हो जाता है। गीता कर्मयोगी मानवीय प्रवृत्ति को उद्वेलित करती है। कर्मों में योगस्थ होकर एकांकी चिन्तन गीता का प्रधान विषय है। जनमानस की वृत्तियों ही विचित्र होती है अतः यह एक समस्या है कि सारी वृत्तियों का वास्तविक स्वरूप किस जगह परिलक्षित हो। गीता में वह सर्वव्यापकता का सामन्जस्य है जहां, संसार का कोई भी मानव अपने वास्तविक रूप को देख सकता है। फल के प्रति लिप्त कर्म के माधुर्य को मर्माहत कर देती है, यही कारण है कि गीता में निष्काम कर्मयोग की प्रधानता है।

आधारहीन संसार की कोई भी वस्तु हो, महत्वहीन होती है। जीवन का मूल आधार यदि अध्यात्म को माना जाय तो गीता वह धरातल है जहां संसार के सभी मनुष्यों की स्थिति परिलक्षित होती है। पाश्चात्य दर्शन का वैज्ञानिक जीवन पूर्ण रूपेण अध्यात्म है। यज्ञों का मानव जीवन में आध्यात्मिक महत्व है। गीता में आध्यात्मिक तत्व को जीवन से जोड़ने का सफल प्रयास है। जीवन ही यज्ञ है। कर्मरूपी हवि को जीवानाग्नि में स्वाहा करने वाला ही कर्मवीर है। कृत्रिम हवि की यज्ञशाला के अग्निकुण्ड में स्वाहा करके हम गोतीत ब्रह्म का साक्षात्कार करने की बात सोचते हैं। क्या यह हमारे वश की बात है? अगर इस प्रश्न पर तर्क किया जाय तो निष्कर्ष रूप में यही विदित होता है कि यह मानवीय शक्ति से परे की चीज है। अतः यह स्पष्ट है कि उस ब्रह्मतत्व की विशद व्याख्या कर पारखी बनने की कोशिश करते हैं परन्तु जो अपनी परख नहीं कर सकता सच्चा पारखी कैसे हो सकता? यह जीवन का एक जटिल प्रश्न है जिसका उचित समाधान हमें गीता के अमियमय प्रवाह में देखने को मिलता है। यह जीवन ही ब्रह्म है जिसकी प्राप्ति हम स्वतः कर सकते हैं।

कर्मों से दूर रहकर हम सुख पूर्वक जीने की बात सोचते हैं जो मिलकर भी अचेतनता एवं नैराश्य का कारण है। मानव जीवन में नैराश्य एवं अचेतनता का उद्भव ही कायरता है। गीता इस कायरता के भभकते चिराग को विनष्ट करती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्ग्य ।

जीत्वा वा मोक्ष्यसे महीं ।।

मानव जीवन की सार्थकता तभी मानी जा सकती जब उद्देश्य पूर्ण हो जाय । उद्देश्य की एकता अत्यावश्य है । अतः अपने जीवन के न्यायसंगत मार्ग को निश्चित करके उस पर संसार की समस्त बाधाओं को काटना ही जीवन युद्ध है तथा आने वाली समस्यायें संग्रामस्थली । युद्धक्षेत्र से पीठ दिखाने वाले को यदि कायर कहा जाय तो जीवन रूपी संग्रामस्थल से मुख मोड़ना क्या हो सकता है ।

जगत् में वर्तमान चर-अचर समस्त वस्तुओं में स्थूल एवं सूक्ष्म दो तत्वों की प्रधानता है । स्थूल तत्व नश्वर है तथा सूक्ष्म तत्व अनश्वर । जीव में जो सूक्ष्म तत्व हैं वह ज्ञान है । ज्ञान ही ब्रह्म है । अज्ञान के वशीभूत होकर अपने कर्मों में हम लिपायमान न हो जाय गीता के ज्ञान से इसका परिमार्जन होता है । अब प्रश्न यह उठता है कि ज्ञान और अज्ञान दोनों तत्वों का द्वन्द्व समान रूप मानव-मानस पटल पर चलता है । द्वन्द्व युद्ध शाश्वत है परन्तु ज्ञान की जीत शाश्वत नहीं है जबकी अज्ञानतत्व की विजय अक्सर ही हुआ करती है । लेकिन ज्ञान तत्व की विजय कभी-कभी किसी-किसी व्यक्ति में होती है । ज्ञानतत्व पर विजय प्राप्त करने वाला पुरुषवर ही ब्रह्म ज्ञानी है, जो ब्रह्मज्ञानी हैं, वही संसार का कर्णधार है । ज्ञानतत्व पर विजय प्राप्त करने के लिये स्थित प्रज्ञ होना नितान्त आवश्यक है जो की गीता का प्रधान विषय है । निष्कर्ष यह है कि प्रज्ञता लोक कल्याणकारी भावनाओं की जननी है । यह मानव मस्तिष्क की वह उद्गम स्थली है जहां से जीवन के सारे दर्शन अनेकानेक मार्गों से प्रवाहित होते रहते हैं ।

कर्मयोगी दृढ़ प्रतिज्ञ होते हुये भी बन्धन के भय से कर्मों का त्याग करने लगता है । बन्धन के भय से कर्मों का त्याग करना योग्य नहीं क्योंकि उपर जीवन ही यज्ञ है कि शास्त्र सम्मत कल्पना है । बन्धन के भय से कर्मों का त्याग करने वाला व्यक्ति आशक्त है कर्मठ नहीं । पृथ्वी की उन्नति तथा देवताओं की उन्नति भी यदि यज्ञ द्वारा संभव है तो जीवन की उन्नति तभी संभव है जब हमारा कार्य भाव अनाशक्त है । अनाशक्त कर्मयोगी कहीं बँधता नहीं क्योंकि प्रारंभिक गति लिप्सायुक्त नहीं होती जिसका मार्ग दर्शन गीता का दर्शन है ।

जो व्यक्ति आत्म तृप्ति, आत्म सुख एवं आत्म प्रीति की भावना से प्रभावित होते हैं वे कभी कर्तव्य पथ पर अग्रसर नहीं हो सकते । वह व्यक्ति कोरा स्वार्थी है समाज में उसका कोई स्थान नहीं हो सकता ऐसे विचारों का प्रादुर्भाव भी अज्ञान है जो गीता रूपी गंगाजल से प्राक्षालित किया जाता है । समस्त जीवों में स्वार्थ त्याग कर अपने कर्तव्य कर्म का पालन करने वाला व्यक्ति ही अनाशक्त कर्मवीर है । परम तत्व की प्राप्ति परम सिद्धि से ही संभव है जिसकी प्राप्ति आसक्ति रहित कर्म करने वाला कर्मयोगी ही प्राप्त कर सकता है । कर्मवीर को बांधने वाले दो तत्व और हैं—संताप तथा ममत्व । यह दोनों भी अज्ञान रूपी विकार है जिनका परित्याग किये बिना व्यक्ति अनाशक्त कर्मयोगी नहीं हो सकता है । इन दोनों प्रवृत्तियों का प्रादुर्भाव मनुष्य की दोष दृष्टि का परिचायक है । राग और द्वेष ये दो बलवती प्रवृत्तियां भी अपने बंधन में कर्मयोगी को जकड़े रहती हैं ये चारों वृत्तियां मानवीय मस्तिष्क की असाध्य व्याधियां हैं जिनका उचित निदान किये बिना निष्काम कर्मयोग की प्राप्ति असंभव है ।

"सुख दुःखे समंकृत्वा लाभा लाभी जया जयौ ।"

ऐसे समय में मानवीय हृदय को समभाव में आसक्त कर गीता चिन्त वृत्तियों को एकाग्र करती है । इंद्रियों की एकाग्रता ही स्थित प्रज्ञता का प्रारम्भिक लक्षण है । जब तक ये अज्ञानता रूपी आवरण हृदय पट को आच्छादित किये रहते हैं मनुष्य किंकर्तव्यविमूढ़ावस्था में विचरण करता रहता है । जीव व्याकुल होकर आसक्ति पूर्ण भागों को सामने कर देवशरण में मानसिक शांति खोजता है । परंतु वह स्थल ऐसा है जहां पर फल की प्राप्ति कर्मों के आधार पर होती है । ऐसे परिवेश में उस व्यक्ति द्वारा किये गये सारे पुण्य कर्म ढोंग एवं चाटुकारिता है जिनका न तो उसके जीवन से कोई सान्निध्य है न समाज से । उसके ये समस्त कार्य समाज को पतन के गर्त में डालने के सिवाय क्या कर सकते हैं । कामना ही आसक्ति का मूल है तथा आसक्ति ही विनाश का कारण है । शरीर इंद्रियों से परे हैं, मन से परे बुद्धि है । बुद्धि से भी परे एक तत्व है वही आत्मा है, आत्म नियंत्रण ही स्थिति प्रज्ञता है, स्थिति प्रज्ञता ही जीवन की उपलब्धि है । अतः आत्मा को सबसे बलवान जानकर बुद्धि के द्वारा मन को वशीभूत करना नितांत आवश्यक है । इसको जानना शक्ति की परख है जिसको परखने वाला सच्चा पारखी ही नहीं सच्चा आत्मदृष्टा है, जो सच्चा आत्मदृष्टा है वही सच्चा समाज सृष्टा हो सकता है ।

नैराश्यपूर्ण जीवन को बिताने वाले सांसारिक प्राणी ही महत्वहीन है तथा यह संसार उनके लिये आधारहीन है । चर-अचर में सूक्ष्म तत्व की विवेचना ज्ञान की प्रधानता से ही संभव है । ज्ञान प्रधान जीवन ही यज्ञ है तथा यज्ञकर्ता ही ब्रह्म स्वरूप उसके सारे कर्म ब्रह्म है । यही गीता दर्शन है जिसके पवित्र दर्पण में संसार के समस्त थके मांदे व्यक्ति चैन की सांसें लेते हैं । ■

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विशिष्ट परिशिष्ट

सामान्य ज्ञान का मॉडल प्रश्नपत्र (3)

प्रश्न 1 (क)—निम्नलिखित उक्तियां किसने कही/लिखी हैं ?

(1) "Oh, East is East, and West is West, and never the twain shall meet" (2) "We have made a tryst with destiny" (3) "To save the Succeeding generations from the scoiurage of war which twice is our life time had brought unfold sufferings to the mankind" (4) "Patriotism is the last refuge of a scoundral" (5) "I have nothing to offer, but blood, toil, tears and Sweat" (6) "Cowards die many times before their death; the valiant never taste of death but once" (7) "Let a hundred flowers bloom and let a hundred schools of thought contend" (8) "कर्मण्येवाधिका रास्ते मा फलेषु कदाचन" (9) "सत्य और अहिंसा ही मेरा ईश्वर है" (10) पराधीन सपनेहुं सुख नाहीं।

उत्तर 1 (क)—(1) रुडयार्ड किपलिंग (2) जवाहर लाल नेहरू (3) संयुक्त राष्ट्र का चार्टर (4) डॉ. सेमुयल जानसन (5) विन्स्टन चर्चिल (6) शेक्सपीयर : जुलियस सीजर (7) माओ त्से तुंग (8) गीता में श्रीकृष्ण का उपदेश (9) महात्मा गांधी (10) तुलसीदास।

प्र. 1 (ख)—निम्नलिखित लेखक/कवियों ने मूलतः किस भाषा में अपनी रचनायें लिखीं ?

(1) उमा शंकर जोशी (2) पम्पान् (3) जी. शंकर कुरुप (4) विष्णु दे (5) विष्णु सखाराम खान्डेकर (6) कल्हण (7) सुब्रमनयन भारती (8) जोश मलीहाबादी (9) हरीश चन्द्र (10) प्लेटो (11) कालिदास (12) अमृता प्रीतम (13) लियो टाल्सटाय (14) फिरदौसी (15) शेक्सपीयर (16) उपेन्द्रनाथ अश्क (17) कबीर

उ. 1 (ख)—(1) गुजराती (2) कन्नड़ (3) मलयालम (4) बंगला (5) मराठी (6) संस्कृत (7) तमिल (8) उर्दू (9) हिन्दी (10) यूनानी (11) संस्कृत (12) पंजाबी (13) रूसी (14) फारसी (15) अंग्रेजी (16) हिन्दी (17) हिन्दी

प्र. 1 (ग)—निम्नलिखित पात्रों की रचनाएं किसने की है ?

(1) घासीराम (2) ओथेलो (3) पैरीमेसन (4) जेम्स बाण्ड् (5) मिस् मेफिट (6) डाक्टर जिवागो (7) शकुन्तला (8) डॉ. जेकिल (9) डॉन क्विटर (10) ब्रूट्स (11) शरलॉक होम्स (12) रोबिन्सन क्रुसो (13) हरक्यूल पोयरट (14) टैस (15) दुर्गेश नन्दिनी (16) डेविड कापर फिल्ड (17) मदर (18) फेलूदा (19) पद्मावती (20) गोरा

उ. 1 (ग)—(1) विजय तेंदुलकर (2) शेक्सपीयर (3) अर्ल स्टेनले गार्डनर (4) आयन फ्लेमिंग (5) अगाथा क्रिस्टी (6) बोरिस पास्तरनाक (7) कालिदास (8) राबर्ट लुईस स्टीवेंसन (9) सर्वेन्टीज (10) शेक्सपीयर (11) आर्थर कॉनन डायल (12) डेनियल डेफो (13) आगाथा क्रिस्टी (14) टॉमस हार्डी (15) बंकिम चन्द्र चट्टोपध्याय (16) चार्ल्स डिकेन्स (17) लियो टाल्सटाय (18) सत्यजित राय (19) जायसी (20) रवीन्द्र नाथ ठाकुर।

प्र. 2 (क)—निम्नलिखित परियोजनाओं से कौन-कौन राज्य/केन्द्र प्रशासित प्रदेश लाभान्वित हो रहे हैं ?

(1) दामोदर घाटी परियोजना (2) दण्डकारण्य परियोजना (3) भाखड़ा नांगल परियोजना (4) नागार्जुन सागर परियोजना (5) कोयना परियोजना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(6) तुंगभद्रा परियोजना (7) हरिका परियोजना (8) धुवारन ताप विद्युत परियोजना (9) कोशी परियोजना (10) गण्डक परियोजना (11) शारावती परियोजना (12) साईलेन्ट वैली परियोजना

उ. 2 (क)—(1) प. बंगाल व बिहार (2) उड़ीसा, म. प्र. व आ. प्र. (3) पंजाब, हिलाचल प्रदेश व राजस्थान (4) आ. प्र. (5) महाराष्ट्र (6) आ. प्र. व कर्नाटक (7) प. बंगाल (8) गुजरात (9) बिहार व नेपाल (10) उ. प्र., बिहार व नेपाल (11) कर्नाटक (12) केरल।

प्र. 2 (ख)—निम्नलिखित नेशनल पार्क/सैंक्चुरी किस राज्य केन्द्र प्रशासित प्रदेश में स्थित है?
(1) मदुमलाई सैंकचुरी (2) काजीरंगा सैंकचुरी (3) मानस सैंक्चुयरी (4) कम्बा नेशनल पार्क (5) कॉर्बेट नेशनल पार्क (6) घाना बर्ड सैंक्चुरी (7) घद्दीगाम सैंक्चुरी (8) बांदीपुर सैंक्चुरी (9) वेदानथन्गल बर्ड सैंक्चुरी (10) चन्द्रप्रभा सैंक्चुरी (11) रंगनथिट्टो बर्ड सैंक्चुरी (12) पेरियर गेम सैंक्चुरी (13) गिर फारेस्ट (14) हजारीबाग नेशनल पार्क (15) शिवपुरी नेशनल पार्क (16) भरतपुर बर्ड सैंक्चुरी

उ. 2 (ख) (1) तमिलनाडु (2) असम (3) असम (4) म. प्र. (5) उ. प्र. (6) म. प्र. (7) कश्मीर (8) कर्नाटक (9) तमिलनाडु (10) उ. प्र. (11) कर्नाटक (12) केरल (13) गुजरात (14) बिहार (15) म. प. (16) म. प्र.

प्र. 3 (क)—भारत के निम्नांकित प्रधान बन्दरगाह किन राज्य/केन्द्र प्रशासित प्रदेश में स्थित हैं?
(1) कांधला (2) पाराद्वीप (3) बम्बई (4) विशाखापट्टनम (5) तूतीकोरन (6) मद्रास (7) कोचीन (8) मार्मागोवा (9) कलकत्ता (10) मंगलूर

उ. 3 [क]—[1] गुजरात [2] उड़ीसा [3] महाराष्ट्र [4] आ. प्र. [5] तमिलनाडु [6] तमिलनाडु [7] केरल [8] गोवा [9] प. बंगाल [10] कर्नाटक।

प्र. 3 [ख]—निम्नलिखित नगर किन उद्योगों से संबंधित हैं?
[1] मानपुर [2] चुर्क [3] धारीवाल [4] गन्टूर [5] मोरादाबाद [6] रानीगंज [7] टीटागढ़ [8] सूरत [9] मिर्जापुर [10] कटनी [11] बरेली [12] कोलार [13] फिरोजाबाद [14] कोचीन [15] सिंदरी।

उ. 3 [ख]—[1] सिल्क [2] सीमेंट [3] ऊनी कपड़ा [4] तम्बाकू [5] बर्तन [6] कोयला [7] कागज व जूट [8] सिल्क व सूती कपड़ा [9] बर्तन व कालीन [10] सीमेंट व चूना [11] बेंत संबंधी कार्य [12] सोना [13] कांच की चूड़ी [14] नारियल से सम्बंधित उद्योग व जहाज निर्माण [15] उर्वरक।

प्र. 3 [ग]—निम्नलिखित नामों से किन वस्तुओं को जाना जाता है?
[9] अगफा [2] ब्रुक बाण्ड [3] कोल्ट [4] डालडा [5] डकबक [6] किवी [7] गुडइयर [8] ओबेराय [9] रोलेक्स [10] विलकिनसन् [11] मैक्स फैक्टर [12] माऊजर [13] सिंगर [14] इण्डेन [15] लाल इमली [16] लिप्टन।

उ. 3 [ग]—[1] फोटोग्राफी [2] चाय [3] रिवाल्वर [4] वनस्पति घी [5] बरसाती [6] जूते की पालिश [7] टायर व ट्यूब [8] होटल [9] घड़ी [10] ब्लेड [11] सौन्दर्य प्रसाधन सामग्री [12] पिस्टल [13] सिलाई मशीन [14] कुकिंग गैस [15] ऊनी कपड़े [16] चाय।

प्र.4 (क) निम्नलिखित वायुसेवा/अन्तर्राष्ट्रीय विमान अड्डे किस देश से सम्बन्धित है? (1) गरुड़ (2) एस. आई. ए. (3) कैथी पेसिफिक (4) नरीटा (5) अलिन्दा (6) शेरीमेतीवे न्युकोवो (7) लुफ्टहंजा (8) एयरोफ्लोट (9) क्वान्टास (10) सबीना (11) लियोनार्दो दा विन्ची (12) ओर्ली (13) हीथ्रो (14) मीना बक्कम (15) के. एल.एम. (16) बी. ओ. ए. सी. (17) जाल (18) कास्ट्रेप

उ.4 (क) (1) इन्डोनेशिया (2) सिंगापुर (3) हांगकांग (4) टोक्यो (जापान) (5) स्टाकहोम (स्वीडन) (6) मास्को (सोवियत रूस) (7) प. जर्मनी (8) सोवियत रूस (9) आस्ट्रेलिया (10)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(11) रोम (इटली) (12) पेरिस (फ्रांस) (13) लन्दन (इंग्लैण्ड) (14) मद्रास (भारत) (15) नीदरलैण्ड (16) ब्रिटेन (17) जापान (18) कोपेनहेगन (डेनमार्क)

प्र.4 (ख) निम्नलिखित रेल गाडियां कहां से कहां जाती हैं ? (1) ताज एक्सप्रेस (2) तमिलनाडु एक्सप्रेस (3) सर्वोदय एक्सप्रेस (4) डेकान क्वीन (5) झेलम एक्सप्रेस (6) गीतांजलि एक्सप्रेस (7) फलाईगं रानी (8) जयन्ती जनता (1) ग्रान्ड ट्रंक एक्सप्रेस (10) फ्रान्टियर मेल (11) चेतक एक्सप्रेस (12) जम्मू तवी एक्सप्रेस (13) हवा महल एक्सप्रेस (14) के. के. एक्सप्रेस (15) राजधानी एक्सप्रेस ।

उ.4 (ख) (1) नई दिल्ली से आगरा (2) नई दिल्ली से मद्रास (3) नई दिल्ली से अहमदाबाद (4) बम्बई से पूना (5) पूना से जम्मूतवी (6) कलकत्ता से बम्बई (7) बम्बई से सूरत (8) दिल्ली से मुजफ्फरनगर, दिल्ली से कोचीन व दिल्ली से अहमदाबाद (9) नई दिल्ली से मद्रास (10) अमृतसर से बम्बई (11) नई दिल्ली से उदयपुर (12) कलकत्ता से जम्मूतवी (13) आगरा से जयपुर (14) नई दिल्ली से कन्याकुमारी (15) नई दिल्ली से हावड़ा (कलकत्ता) व नई दिल्ली से बम्बई ।

प्र.5 (क) निम्नलिखित के उत्तर दीजिये ? (1) वॉस्केट बाल में प्रत्येक तरफ खेलने वाले पुरुष/महिला खिलाड़ियों की संख्या (2) खेल जिसके लिये सन्तोष ट्राफी दिया जाता है (3) खेल जिसके लिये इजरा कप दिया जाता है, (4) सं. रा. का राष्ट्रीय खेल (5) आस्ट्रेलिया का राष्ट्रीय खेल (6) स्काटलैण्ड का राष्ट्रीय खेल (7) भारत का राष्ट्रीय खेल (8) विश्व फुटबाल चैम्पियन शिप विजेता को कौन सी कप प्रदान की जाती है (9) राष्ट्रीय पुरुष चैम्पियन को कौन सी कप प्रदान की जाती है । (10) डुरन्ड कप किस खेल से सम्बन्धित है (11) विम्बलडन किस खेल से सम्बन्धित है (12) चीपक मैदान में सामान्यतः कौन सा खेल खेला जाता है । (13) पोलो में प्रत्येक तरफ खेलने वालों की संख्या (14) वह खेल जिसमें 'स्कूप' शब्द का प्रयोग किया जाता है (15) हैट्रीक किस खेल से सम्बन्धित है (16) नेशनल इन्स्टीट्यूट ऑव स्पोर्टस कहां स्थित है ?

उ. 5 (क) (1) 5/6 (2) फुटबाल (3) पोलो (4) बेसबाल (5) क्रिकेट (6) रगबी (7) हाकी (8) फीका कप (9) रंगास्वामी कप (10) फुटबाल (11) क्रिकेट (12) 4 (13) हाकी (14) क्रिकेट, फुटबाल व हाकी (15) पटियाला ।

प्र.5 (ख) निम्नलिखित खिलाड़ी किस खेल से सम्बन्धित हैं ? (1) बुला चौधरी (2) ब्योर्न बोर्ग (3) इमरान खान (4) मार्टिना नावारतिलोवा (5) क्रिस इवर्ट लायड (6) हसन सरदार (7) भास्कार गांगुली (8) लक्ष्मण सिंह (9) मोनालिसा बरुआ (10) कौर सिंह (11) पी. टी. उषा (12) जाहिर अब्बास (13) जान मैकनरो (14) हान जियान (15) राजबीर कौर (16) योंग थान (17) जयन्त शाह (18) नादिया कोमेन्स्की (19) आर. जी. डी. विलिस (20) गीता जुत्सी (21) लैन कोपेन (22) मन्जूर (23 ली. स्वाई किंग (24) मोहसीन खान (25) रविशास्त्री (26) खजान सिंह ।

उ.5 (ख (1) तैराकी (2) टेनिस (3) क्रिकेट (4) टेनिस (5) टेनिस (6) हाकी (7) फुटबाल (8) गोल्फ (9) टेबिल टेनिस (10) बाक्सिंग (11) दौड़कूद (12) क्रिकेट (13) टेनिस (14) बैडमिण्टन (15) हाकी (16) जिमनास्टिक (17) कारटैली (18) जिमनास्टिक (19) क्रिकेट (20) दौड़कूद (21) बैडमिन्टन (22) हाकी (23) बैडमिंटन (24) क्रिकेट (25) क्रिकेट (26) तैराकी ।

प्र.6 (क) स्थल सेना (ख) वायु सेना व (ग) जल सेना के समान कमीशण्ड अफसरों की पद श्रेणियां क्या हैं ?

उ.6 (क) फील्ड मार्शल, (ख) मार्शल ऑव द एयर फोर्स (ग) एडमिरल ऑव दी फ्लीट, (2) (क) जनरल, (ख) एयर चीफ मार्शल, (ग) एडमिरल, (3) (क) लेफ्टिनेंट जनरल, (ख) एयर मार्शल, (ग) वाइस एडमिरल (4) (क) मेजर जनरल, (ख) एयर वाईस मार्शल, (ग) रीयर एडमिरल, (5) (क) ब्रिगेडियर, (ख) एयर कमोडोर, (ग) कमोडोर, (6)(क) कर्नल, (ख) ग्रुप कैप्टन, (ग) कैप्टन(7)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेफ्टिनेन्ट कर्नल, (ख) विंग कमाण्डर, (ग) कमाण्डर, (8) (क) मेजर, (ख) स्क्वेड्रन लीडर, (ग) लेफ्टिनेन्ट कमाण्डर, (9) (क) कैप्टन, (ख) फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट, (ग) लेफ्टिनेन्ट, (10) (क) लेफ्टिनेन्ट, (ख फ्लाइंग आफीसर, (ग सब लेफ्टिनेन्ट, (11) (क) सेकिंड लेफ्टिनेन्ट, (ख) पायलट आफीसर (ग) वारन्ट आफीसर।

प्र.7 ? निम्नलिखित स्थान कहां स्थित हैं एवं क्यों चर्चित हैं—(1 बेलफास्ट (2) जिब्राल्टर (3) न्यूरेमबर्ग [4] सेलिसबरी [5] प्लासी [6] बारदोली [7] हल्दिया [8] पवनार [9] मथुरा [10] श्रीहरिकोटा [11] रेड स्कवायर [12] तारापुर।

उ.7 [1] यह उत्तरी आयरलैण्ड की राजधानी है। यह नगर रेशम व जलयान उद्योग के लिये सुप्रसिद्ध है। यहां आये दिन कैथोलिक ईसाइयों व प्रोटेस्टेन्ट ईसाइयों के मध्य हिंसात्मक बारदातें होती रहती हैं। [2] यह द्वीप ब्रिटिश नौसेनाघाटी के लिये और भूमध्य सागर के मुहाने पर स्थित होने के कारण स्त्रातजिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। स्पेन भी इस द्वीप पर अपना दावा करता है [3] यह अविभाजित जर्मनी के पूर्वी भागों में स्थित था और हिटलर के नाजी पार्टी के जलूस यहां प्रायः हुआ करते थे। द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात नाजी युद्ध अपराधियों पर मुकदमे इसी नगर में चलाये गये थे। [4] यह 1980 में स्वतंत्र जिम्बाम्बवे की राजधानी का पुराना नाम है। जिम्बाम्बवे की मुगाबे सरकार ने इसका नाम देश के प्रथम स्वतंत्रता संग्रामी कबीलाई नेता के स्मरण में बदलकर हरेरा सिटी रखा है। [5] यह पश्चिम बंगाल के मालदा जिले में स्थित एक गांव है। सन् 1957 में लार्ड क्लाइव ने इसी स्थान पर बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला को परास्त कर भारत में ब्रिटिश सम्राज्य की नींव रखी थी। [6] गुजरात में स्थित एक नगर है जो कि सरदार पटेल के स्वतंत्रता संग्राम की कार्य विधियों से सम्बद्ध है। उन्होंने 1928 में यहां असहयोग आन्दोलन का नेतृत्व किया था। [7] यह स्थान पश्चिम बंगाल के मेदिनीपुर जिले में स्थित है। यहां तेल शोधक कारखाना व बन्दरगाह स्थित होने के कारण पूर्वी भारत के लिये महत्वपूर्ण है। यहां उर्वरक कारखाना स्थापित करने का कार्य चल रहा है। [8] महाराष्ट्र के नागपुर जिले में स्थित इस स्थान पर सर्वोदय नेता आचार्य विनोबा भावे का आश्रम है। 15 नवम्बर 82 को आचार्य भावे को निर्वाण प्राप्त हुआ। [9] मथुरा का वृन्दावन श्रीकृष्ण का जन्मस्थान होने के कारण हिन्दुओं के लिये धार्मिक स्थल है। मन्दिरों के इस शहर में द्वारिकाधीश का मन्दिर सुप्रसिद्ध है। यहां सोवियत रूस की सहायता से देश का सबसे बड़ा तेल शोधक कारखाना स्थापित किया जा रहा है। [10] यह आन्ध्र प्रदेश के तट पर एक छोटा सा द्वीप है जहां भारत के अन्तरिक्ष अनुसन्धान के तमाम कार्य, विशेषकर उपग्रह प्रक्षेपण व निरीक्षण का कार्य होता है। [11] यह सोवियत रूस की राजधानी मास्को का एक भाग है जहां देश के सम्मानित नेताओं को मृत्योपरांत दफनाया जाता है। नवम्बर 82 में रूस के राष्ट्रपति ब्रेझनेव को भी यहां दफनाया गया था। [12] यह क्षेत्र बम्बई से 80 कि. मी. दूर ट्राम्बे में स्थित है। यहां भारत का प्रथम परमाणु बिजली घर 1963 में स्थापित किया गया था। अमेरिका द्वारा सम्बर्द्धित यूरेनियम की आपूर्ति नियमित रूप से न करने के कारण तारापुर परमाणु बिजली घर क्षमता से बहुत कम बिजली उत्पन्न कर रहा था। अब फ्रांस सम्बर्द्धित यूरेनियम की आपूर्ति करेगा।

प्र.8 निम्नलिखित किस देश के निवासी हैं और वे किस लिये प्रसिद्ध हुए।—[1] एडम स्मिथ [2] कोपरनिक्स [3] लेनिन [4] पिकासो [5] दयानंद सरस्वती [6] राजा राम मोहन राय [7] टीपू सुल्तान [8] नेल्सन मन्डेला [9] कोलम्बस [10] सुब्रणियम भारती।

उ.8 [1] 18 वीं शताब्दी के अंग्रेज अर्थशास्त्री जिन्होंने राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर स्वतंत्र व्यापार को आर्थिक दृष्टि से सर्वाधिक उपयोगी बनाया 'वेल्थ ऑव नेशन्स' उनकी सर्वाधिक प्रसिद्ध है। [2] कोपरनिकस [1473-1543] पोलैंड

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नक्षत्र वैज्ञानिक था। उन्होंने शताब्दियों से चली आ रही भ्रम धारणा को त्याग कर यह बताया कि पृथ्वी सूर्य के चारो ओर परिक्रमा करती है, सूर्य नहीं। (3) रूसी क्रांतिकारी नेता ब्लादीमीर इलिच लेनिन (1870-1924) ने 1917 में बोल्शेविक क्रांति द्वारा रूस में जार के शासन को समाप्त किया और वहां समाजवाद स्थापित किया। बाद में वे रूसी गणराज्य के सर्वेसर्वा बने। उन्होंने मार्क्सवादी दर्शन में उल्लेखनीय योगदान प्रदान किया। (4) पेबिलो रूज पिकासो (1881-1973) स्पेन का छविकार व मूर्तिकार थे। वे क्यूबिस्ट स्कूल के माध्यम से इन दोनों क्षेत्रों में नयापन लाने में सफल हुए। उनकी सर्वप्रमुख कृति 'ग्युयेरनीका' है। (5) गुजरात में जन्मे दयानन्द सरस्वती ने उन्नसवीं शताब्दी में हिन्दु धर्म के पुर्नस्थापन हेतु आर्य समाज की स्थापना की और वेद के अध्ययन को आवश्यक बताया। (6) बंगाल में पैदा राजा राममोहन राय 19वीं शताब्दी के प्रमुख भारतीय समाज सुधारक थे। सती प्रथा, पर्दा प्रथा, बाल विवाह आदि सामाजिक कुरीतियों को समाप्त कराने में इनका विशेष योगदान था। इन्होंने ब्रह्म समाज की स्थापना कर बहुदेववाद व मूर्ति पूजा का विरोध किया। (7) टीपू सुल्तान (1749-99) दक्षिण भारत के मैसूर राज्य का अंतिम शासक था जो 1799 में अंग्रेजों से लड़ते हुए सेरिंगापट्नम के युद्ध में मारा गया। (8) दक्षिण अफ्रीका के अश्वेत नेता नेल्सन मन्डेला को छठें दशक में तथाकथित राष्ट्र विरोधी आन्दोलन को बढ़ावा देने के आरोप में गिरफ्तार कर आजीवन सजा प्रदान की गयी थी। 1979 में उन्हें जवाहर लाल नेहरू का अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना का पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया गया। (9) क्रिस्टोफोर कोलम्बस (1446-1506) एक इतालवी नाविक था जिसने 1492 में बहामा, क्यूबा व अन्य वेस्ट-इण्डीज द्वीप समूह तथा 1498 में दक्षिण अमेरिका की खोज की थी। (10) सुब्रमणियम भारती (1882-1921) तमिल पुनर्जागरण काल के सर्वाधिक प्रसिद्ध कवि हैं। उनकी अनेक कविताएं देशभक्ति पर है। 1982 में सम्पूर्ण देश में उनकी जन्मशतवार्षिकी मनायी गयी। ■

(पृष्ठ 41 का शेष)

अभ्यर्थी (2) : श्रीमन्, मेरा प्रथम उद्देश्य रेलवे प्रशासन में व्याप्त उन समस्याकारक कारणों का पता लगाना होगा जिनके कारण आज रेल दुर्घटनाओं की संख्या लगातार बढ़ रही है, रेलें समय से नहीं चल रही हैं और रेलों में अपराध की प्रवृत्ति भी बढ़ती दिखाई देती है।

अभ्यर्थी (3) : श्रीमन्, मैं अपने उद्देश्यों का निर्धारण, चयन के बाद ही करना बेहतर समझूंगा। अन्यथा, कारगर उद्देश्यों का निर्धारण किया जाना सम्भव नहीं होगा।

विश्लेषण —2 तीनों प्रतिक्रियाओं में किसी को भी यह कह कर अलग नहीं किया जा सकता कि उनमें स्वाभाविकता या तथ्यों का अभाव है। पहले अभ्यर्थी ने एक सामान्य दृष्टिकोण से जो उद्देश्य बताए हैं उनसे किसी को भी असहमति नहीं होगी। दूसरे अभ्यर्थी के भी अन्तिम उद्देश्य पहले अभ्यर्थी जैसे ही हैं। अन्तर यह है कि दूसरी प्रतिक्रिया में विषय का विश्लेषण तुलनात्मक रुप से अधिक गहन है और अभ्यर्थी ने ऊपरी तौर पर दिखाई देने वाली समस्याओं को रेलवे प्रशासन में व्याप्त किन्हीं गहरे रोगों का संकेत माना है। तीसरे अभ्यर्थी ने यद्यपि एक यथार्थवादी दृष्टिकोण का परिचय दिया है किन्तु उसमें कल्पनाशीलता का अभाव स्पष्ट झलकता है। इसलिए दूसरे अभ्यर्थी की प्रतिक्रिया को अन्य की तुलना में श्रेष्ठ माना जाना चाहिए।

परिस्थिति संख्या—3

आयोग : यदि आप इस परीक्षा में असफल हो जाते हैं, तो ऐसी स्थिति में आप क्या करेंगे ?

अभ्यर्थी (1) : श्रीमन्, मैं समझता हूँ कि मैंने सफलता प्राप्त करने के लिए भरसक मेहनत की है और हर संभव प्रयत्न किए हैं। इसलिए मैं इस संभावना को मानने के लिए तैयार नहीं हूँ।

अभ्यर्थी (2) : श्रीमन्, ऐसी स्थिति में अपने जीवन को नई दिशा देने के लिए मुझे काफी समय लगेगा क्यों कि विद्यार्थी जीवन से ही मेरा उद्देश्य किसी प्रशासकीय पद को अर्जित करना रहा है।

अभ्यर्थी (3) : श्रीमन्, मैं असफलता के कारणों को जानने का प्रयत्न करूंगा और पूरी तैयारी के साथ अगले वर्ष पुनः सफल होने के लिए प्रयत्न करूंगा।

विश्लेषण 3—आशावादी दृष्टिकोण के बावजूद पहली प्रतिक्रिया अव्यावहारिक है जबकि दूसरे अभ्यर्थी ने अपने जीवन के उद्देश्यों को बहुत ही सीमित संदर्भ में परिभाषित किया। तीसरी प्रतिक्रिया में असफलता को तर्कपूर्ण पद्धति से विश्लेषित करते हुए आशावादिता का परिचय दिया गया है। इसीलिए यह उत्तर श्रेष्ठतम है। ■

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी के विविध आयाम

शुकदेव प्रसाद*

'हम इस बात से आश्वस्त हैं कि यदि हमें राष्ट्रों के समुदाय में अर्थपूर्ण योग देना है, तब हमें मनुष्य और समाज की समस्याओं को हल करने के लिए किसी से पीछे नहीं रहना चाहिए।'

—डा. विक्रम साराभाई

वस्तुतः बाह्य अंतरिक्ष में अनुसंधान आज मात्र जिज्ञासा अथवा विश्व मंच पर राष्ट्रों का अपनी प्रतिष्ठा के प्रदर्शन का विषय नहीं रह गया है, बल्कि यह वर्तमान युग की आवश्यकता है। अंतरिक्ष अनुसंधान मानव जीवन को और अधिक सुखद तथा बेहतर ढंग से जीने एवं धरती के संसाधनों के समुचित उपयोग एवं नियोजन के लिए वांछनीय है। वस्तुतः अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी (space technology) जैसा अधुनातन शिल्प विज्ञान वर्तमान युग की महती आवश्यकता है, जैसा कि संयुक्त राष्ट्र संघ महासभा के 27 जनवरी, 1967 के प्रस्ताव में कहा गया था—'बाह्य अंतरिक्ष की खोज तथा उपयोग—सभी देशों के लाभ तथा हित के लिए होंगे, इसमें उनके आर्थिक या वैज्ञानिक विकास के स्तर का विचार नहीं रखा जायेगा और ये सम्पूर्ण मानव जाति के हित के लिए होंगे।'

इस संदर्भ में मैं भारत में अन्तरिक्ष युग के प्रणेता स्व. डॉ. अम्बालाल साराभाई के विचार उद्धृत करना चाहूँगा जो उन्होंने 1968 में बाह्य अंतरिक्ष की खोज व शांति पूर्ण उपयोगों के संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन में अपने व्याख्यान में कहा था—

'बाह्य अंतरिक्ष के शांति पूर्ण अन्वेषण ने हमारी आंखें खोल दी हैं और हमें यह बता दिया है कि पृथ्वी स्वयं में एक पूर्ण अन्तरिक्ष यान है और उस पर रहने वाले व यात्री स्वरूप हमारी बाह्य सप्लाई केवल ऊर्जा है; बाकी सब वस्तुएँ हमारे पास हैं और हमें मानव के सुखद भविष्य हेतु उनका उपयोग ध्यान पूर्वक करना चाहिए।'

बढ़ती जनसंख्या के साथ, हमारे उपलब्ध स्रोतों की खोज और उनका सतर्कता पूर्ण उपयोग बहुत महत्वपूर्ण हो जायगा। हमारे सम्मुख केवल स्रोतों के समाप्त हो जाने की ही आशंका नहीं है, वरन वायु और पानी, जिनपर हमारा पूर्ण जीवन निर्भर है, दूषित न होने देने की समस्या है। यह ग्रह, पृथ्वी, हमारा घर, इतना सिकुड़ गया है कि मानव निर्मित उपग्रह एक दिन में 16 बार इसकी परिक्रमा कर लेते हैं। मानव जाति एक परस्पर निर्भर बिरादरी है जिससे कि हमारी त्रुटियां विश्वव्यापी स्तर तक बढ़ जाती हैं।

अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अल्प विकास स्रोतों के सर्वेक्षण और प्रबंध तथा विश्व स्तर पर प्रदूषण नियंत्रण जैसी कुछ अत्यंत विशाल समस्याओं को हल करने हेतु अपनाया जा सकता है। आगामी दशक में यह अनिवार्य हो जायेगा कि ऐसी क्षेत्रीय कार्यवाहियों की योजना बनाकर, जिन्हें अंततः एक अन्तर्राष्ट्रीय योजना का अंग बनाया जा सके, स्थिति का मुकाबला करें।'

अंतरिक्ष विज्ञान बनाम प्रौद्योगिकी

ग्रह-नक्षत्रों को मानव अरसे से जिज्ञासा भरी नजर से देखता रहा, पक्षियों को उड़ता देखकर उन्हीं की भांति उड़कर अंतरिक्ष के सारे रहस्य जान लेने की चेष्टा करता रहा, कालांतर में ये सपने साकार हुए। 21 जुलाई 1969 को अमेरिकी अंतरिक्ष यात्री नील

*निदेशक, विज्ञान वैचारिकी अकादमी, 34, एलनगंज, इलाहाबाद-211 002

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

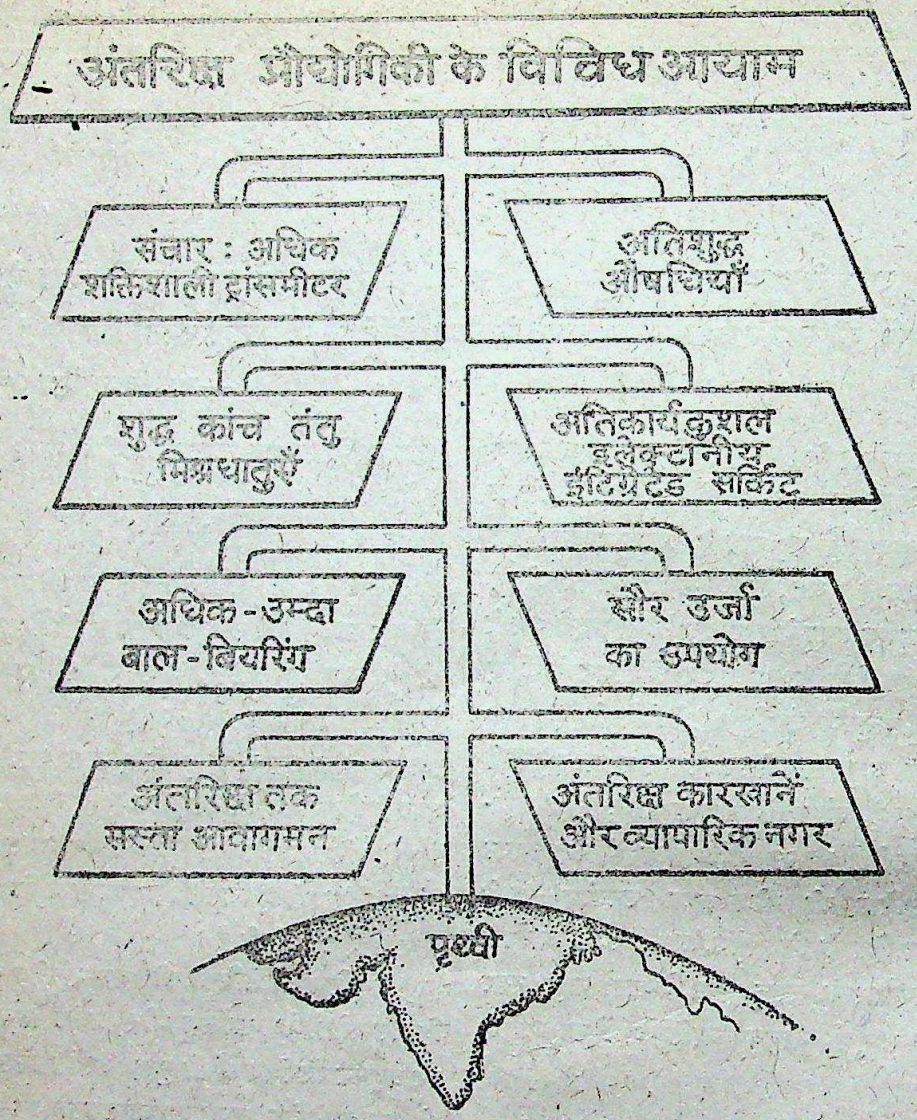

आर्मस्ट्रांग ने चांद की धरती पर कदम रखा और मानव सभ्यता के इतिहास में यहीं से नये अध्याय का श्रीगणेश हुआ। यह विज्ञान एवं मानवता के समूचे इतिहास में सबसे रोमांचकारी घटना एवं उपलब्धि थी। तब से अन्य कई ग्रहों की ओर यान भेजे गए। उपग्रहों का प्रक्षेपण तो कोई नई बात नहीं रही। आज धरती के चारों ओर प्रायः अधिकांश राष्ट्रों के वैज्ञानिक, प्रायोगिक, संचार उपग्रह चक्कर काट रहे हैं।

अमेरिका द्वारा स्थापित प्रयोगशाला (स्काईलैब) और रूसी यान 'सैल्यूत-टी-7,' में क्रमशः 171 दिन और 211 दिन तक रहकर अंतरिक्ष यात्रियों का दल सकुशल धरती पर वापस आ चुका है।

अंतरिक्ष अनुसंधान की दिशा में अमेरिकी अंतरिक्ष गाड़ी (स्पेश शटल) 'कोलम्बिया' सबसे अद्यतन चरण है, जिसे बार-बार अंतरिक्ष यात्राओं में प्रयुक्त किया जा सकता है। ज्ञातव्य है कि कोलम्बिया अपनी चार सफल उड़ानें भर चुका है और इसने आशातीत सफलताएं भी प्राप्त की हैं।

वस्तुतः इन अभियानों में जिज्ञासा के सहत जो ज्ञान हमने अर्जित किया, वह अपने सजीव ग्रह यानी धरती के लिए जीवन को और सुखद तथा बेहतर बनाए जाने के लिए सर्वथा उपयुक्त है। अतः आज बाह्य अंतरिक्ष अनुसंधान, विज्ञान से हटकर प्रौद्योगिकी का रुप ले चुका है अर्थात् अब तक अर्जित ज्ञान को हम अपने दैनिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन के उपयोगों में प्रयुक्त कर सकते हैं अथवा धरती के लिए अच्छी एवं सस्ती सुविधाएँ जुटा सकते हैं।

अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी के विविध आयाम

अब आइए, अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी के विविध उपयोगों की चर्चा की जाय, कि किन रूपों में यह ज्ञान हमारे दैनिक जीवन में उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

उद्योगों के नए-नए द्वार

अंतरिक्ष प्रयोगशालाओं में किए गए अध्ययनों से उद्योगों की नई शृंखलाओं के द्वार खुल रहे हैं। बहुत से धातुई पुर्जे जो यहां की परिस्थितियों में मजबूत और अच्छे नहीं बन सकते, वे अंतरिक्ष की भारहीन परिस्थितियों में आसानी से निर्मित हो सकते हैं।

इस बात को स्पष्ट करने के लिए धातुओं के मिश्रण यानी मिश्र धातुओं (एलॉय) के निर्माण की बात ली जा सकती है। पृथ्वी पर गुरुत्वाकर्षण के कारण हल्की धातुएँ ऊपर सतह तक उठ आती हैं जब कि भारी धातुएँ नीचे बैठ जाती हैं और इस प्रकार हम देखते हैं कि धरती पर एकरूप मिश्रण का उत्पादन संभव नहीं है पर अंतरिक्ष की भारहीनता (Weightlessness condition) में धातुओं के अलग-अलग अंश अत्यधिक एक रूपीय ढंग से मिश्रित होते हैं, अतः वहां सर्वथा नए गुण-धर्मों वाले मिश्र धातुओं का निर्माण संभव है जो अत्यंत औद्योगिक महत्व के सिद्ध हो सकते हैं।

फोम स्टील यानी स्पंज सरीखी स्टील जिसके बीच-बीच में वायु के बुलबुले मौजूद हों, धरती पर कदापि नहीं बन सकते क्योंकि धरती का गुरुत्व पूरे द्रव्यमान को ठोस बना देता है। उसमें बुलबुलों का प्रवेश महां असम्भव है। इसके विपरीत भारहीनता की दशा में फोम स्टील आसानी से उत्पादित किए जा सकते हैं जिनसे हल्के तथा मजबूत किस्म के चिकित्सा सम्बंधी उपकरण एवं वैद्युत संचालक निर्मित किए जा सकते हैं।

धरती पर पूर्ण रूप से खोखले गोले बनाना टेढ़ा कार्य है पर अंतरिक्ष में अत्यंत सरल। इस सुविधा का उपयोग अत्यंत कम कर्षण उत्पन्न करने वाले बाल-बियरिंग के निर्माण में किया जा सकता है। गुरुत्वविहीन अंतरिक्ष में अच्छे लैंस निर्मित किये जा सकते हैं।

यहां पर गुरुत्वाकर्षण के कारण भिन्न-भिन्न अणु-भारों के रसायनों का अलगाव कष्ट साध्य कार्य है पर अंतरिक्ष की भारहीनता में उपलब्ध यह सुविधा अधिक शक्तिशाली वैक्सीनों और औषधियों के निर्माण में हमारी सहायता कर सकती है।

स्काईलैब द्वारा संचालित धातु विज्ञान सम्बंधी प्रयोगों से अंतरिक्ष में नए-नए उद्योगों की स्थापना की संभावना पनप चुकी है। भविष्य में अंतरिक्ष स्टेशनों अथवा अंतरिक्ष बस्तियों (Space colonies) में फैक्ट्रियां स्थापित की जायेंगी, जिनमें सुघड़ और मजबूत यंत्र, दैनिक उपयोग के कल पुर्जे उत्पादित होंगे।

अंतरिक्ष नगरों (Space Colonies) के साकार होते सपने

अंतरिक्ष में अब प्रयोगशाला ही नहीं, घर भी होगा। 'स्काईलैब' और 'सैल्यूट' यान में अरसे तक रहकर सकुशल लौटे अंतरिक्ष यात्रियों के अनुभवों से यह स्पष्ट हो गया है कि अंतरिक्ष में स्थायी रूप से वास किया जा सकता है और आवास की असुविधाएँ धीरे-धीरे सुलझ जायेंगी।

अंतरिक्ष में स्थायी रूप से बस्तियां बसाना अब इसलिए भी आवश्यक हो गया है कि धरती पर जन संख्या इतनी अधिक होती जा रही है कि सबको न तो भरपेट भोजन मिल पायेगा और न ही स्वस्थ सुरक्षित वातावरण; अतः इन्हीं समस्याओं के निराकरण के लिए अंतरिक्ष में बस्तियां बसाने की बात सोची जा रही है।

आकाश में अंतरिक्ष बस्ती बसाने का सपना देख रहे हैं—प्रिंस्टन विश्वविद्यालय (अमेरिका) के भौतिक विज्ञानी डॉ. जेरार्ड ओ' नील तथा उनके चंद उत्साही सहकर्मी। प्रो. ओ' नील का ख्याल है कि काम आरंभ करने के पंद्रह वर्षों के अंदर ही ऐसी बस्ती तैयार हो सकती है। यह बस्ती एक बड़े से खोखले बेलन (सिलिंडर) जैसी होगी। इसकी लम्बाई करीब 1.5 किलोमीटर होगी और सैकड़ों मीटर अर्ध व्यास।

यह बस्ती आकाश में लटकती रहेगी। आकाश में ऐसा स्थल है जहां चंद्रमा और पृथ्वी दोनों की आकर्षण शक्तियां एक दूसरे को प्रभावहीन कर देती हैं। उस स्थल का नाम 'एल-5' है। अंतरिक्ष बस्ती होगी बेलन सरीखी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वेलन के अंदर ही कैद होगी एक सजीव दुनिया, अपनी धरती जैसी। कृत्रिम बस्ती को हर तरह से प्राकृतिक रूप देने का भरसक प्रयास किया जायेगा ताकि वहां के वासी यह न महसूस करें कि वे कहीं कैद हैं। वे अपने को स्वछंद, उन्मुक्त अनुभव करें, इसका पूरा ख्याल रखा जायेगा।

धरती के जैसे ही पशु-पक्षी वहां होंगे। लोग खेती करेंगे। कुछ लोग खेती बाड़ी में लगे रहेंगे तो कुछ उद्योग में जुटेंगे। वहां सभी कुछ धरती जैसा ही होगा लेकिन नियमित, यंत्र वत। फसलें ठीक से भरपूर अन्न उपजायेंगी, क्यों कि प्राकृतिक कोप से डरने की कोई आवश्यकता नहीं। ऋतुएं, मौसम, वातावरण तो मनचाहा होगा, एकदम से नियंत्रित। अंतरिक्ष बस्ती के लोग रोगों से भी कम ग्रस्त होंगे। चिर यौवन की सुखद कल्पनाएं वहां जीवंत हो उठेंगी। वहां की परिस्थितियों में वृद्धावस्था का असर अति सूक्ष्म होगा।

वहां गुरूत्वाकर्षण पृथ्वी के मुकाबले बहुत कम हैं, अतः इस सुविधा का लाभ उठाकर नए उद्योग वहां पनपेंगे। रेडियो, बड़े-बड़े यान, दूरबीनें आदि वहां आसानी से निर्मित किए जा सकेंगे।

ऊर्जा आपूर्ति

अंतरिक्ष बस्तियों के निर्माण से ऊर्जा की समस्या सुलझ जायेगी। वहां पर अधिक मात्रा में ऊर्जा का उत्पादन हो सकेगा। 'एल-5' ऐसा स्थल है जहां सौर ऊर्जा हमेशा उपलब्ध रहती है। अतः बिजली की उत्पादन लागत पृथ्वी की अपेक्षा बहुत कम होगी। वहां सौर ऊर्जा की इतनी अधिकता होगी कि उसे सूक्ष्म तरंगों (micro waves) में परिवर्तित करके धरती को सप्लाई किया जा सकेगा। ऐसी सुविधा हो जाने पर हम राहत की सांस ले सकेंगे और धरती पर उत्पन्न ऊर्जा संकट पर आसानी से काबू किया जा सकेगा।

चूंकि धरती पर ऊर्जा के प्राकृतिक भंडार सीमित हैं अतः बढ़ते औद्योगीकरण के नाते उनके शीघ्र चुकने की संभावना है। सच तो यह है कि बिना ऊर्जा के जीवन की कल्पना भी अधूरी है। ■

उत्थान प्रतियोगिता अकादमी इलाहाबाद

सफलता का प्रवेश द्वार

हिन्दी भाषी परीक्षार्थियों की लम्बी प्रतीक्षा का अन्त
भारत में सर्वप्रथम अनुभवी शिक्षकों के परिश्रम का परिणाम
हिन्दी माध्यम से आइ. ए. एस. का अद्वितीय करेस्पांडेन्स कोर्स

भारतीय प्रशासनिक सेवायें (प्रारम्भिक) परीक्षा 1983

I. A. S. PRELIMINRY' 83

सामान्य अध्ययन व चयनित वैकल्पिक विषयों के लिये पत्राचार (Correspondence) कोर्स में प्रवेश प्रारम्भ। विवरण पुस्तिका हेतु रुपये 5/— मनीआर्डर द्वारा अधोलिखित पते पर प्रेषित करें :

उत्थान प्रतियोगिता अकादमी

59 नेहरू नगर, इलाहाबाद-211003

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत में राजनीतिक संस्थाओं का ह्रास : क्यों और कैसे ?

नन्दलाल* एवं उर्मिला लाल †

(1)

पिछले कुछ वर्षों से भारत में राजनीतिक संस्थाओं के मूल्यों में ह्रास की चर्चा एक आम बात हो गयी है। इस सन्दर्भ में अनेक समाज-वैज्ञानिकों ने शक्ति के बढ़ते केन्द्रीयकरण, व्यक्ति-पूजा और शक्ति एवं नेतृत्व के वैयक्तिक स्रोतों की ओर ध्यान आकृष्ट किया है। लगभग दो वर्ष पूर्व आंग्ल विद्वान मारिस जोन्स ने भारतीय राजनीति में बढ़ते एकाधिकारवाद पर चिन्ता व्यक्त की थी।[1] इसी प्रकार एक और प्रमुख विद्वान का विचार है कि वर्तमान भारतीय राजनीतिक संस्थाओं का क्रमशः ह्रास होता जा रहा है। इसका कारण न केवल इन संस्थाओं के संस्थापक दोष हैं, वरन् इनकी नीतियों और कार्यक्रमों के लुप्त होते आयाम भी हैं।[2] जब भारत में राजनीतिक व्यवस्था के ह्रास की बात की जाती है तो विद्वानों का एक वर्ग ऐसा भी है जो समग्र राजनीतिक व्यवस्था के ह्रास की चर्चा न करके कुछ विशिष्ट राजनीतिक संस्थाओं के ह्रास की चर्चा करता है : उदाहरण के लिये, प्रख्यात भारतीय राजनीतिक समालोचक वर्गीज के अनुसार भारतीय संसदीय व्यवस्था विनाश के कगार तक पहुँच चुकी है; प्रो. सूरी के अनुसार भारतीय संसद का चौतरफा ह्रास हो रहा है। लगभग इसी प्रकार के विचार सहाय, वाजपेयी और अन्य विद्वानों द्वारा भी प्रकट किये गये हैं।[3]

यदि ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में देखा जाय तो भारतीय विद्वानों के इस प्रकार के विचार विद्वानों द्वारा विकासशील देशों के राजनीतिक संस्थाओं के मूल्यांकन से काफी कुछ मिलते हैं। कहना न होगा कि यह मूल्यांकन न्यूनाधिक मात्रा में हमेशा नकारात्मक ही रहा है। यदि आइंस्टैन्ट को इन विकासशील समाजों में आधुनिकीकरण की दरारें परिलक्षित होती हैं तो फ्रेडरिक रिग्स के विचार में ये देश 'विकास के जालों में फंस गये हैं। सेमुअल हटिंग्टन इसी वातावरण के राजनीतिक स्खलन का नाम देते हैं और इसे संस्थाओं के ह्रास का परिणाम मानते हैं।[3]

किन्तु, इस प्रकार के किये गये अध्ययनों में प्रायः एक मूल दोष होता है : ये विचारक इन विकासशील समाजों का मूल्यांकन प्रायः समुचित ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में नहीं कर पाते हैं। परिणामतः जहां एक और इनके दोष आवश्यकता से अधिक उभरकर सामने आते हैं, वहीं दूसरी और इनका सकारात्मक पक्ष' दब जाता है। जब भारतीय और विदेशी विद्वान यह कहते हैं कि अधिकांश भारतीय राजनीतिक संस्थाओं ने आशानुरूप कार्य नहीं किया तो शायद वे इस तथ्य को नज़रंदाज कर जाते हैं कि लगभग सभी जगह राजनीतिक संस्थाओं का यही हाल है। इस तथ्य के यथेष्ट मात्रा में सबल प्रमाण उपलब्ध हैं कि पश्चिमी देशों में भी, जहां से हमने अपने उदारवादी दृष्टिकोण को ऋण के रूप में लिया है, राजनीतिक संस्थाओं की अपेक्षा कहीं अधिक ह्रास ही हुआ है। किन्तु, जब राजनीतिक संस्थाओं के ह्रास की चर्चा होती है तो सामान्य रूप से विद्वान पश्चिमी राजनीतिक संस्थाओं के सकारात्मक पक्ष की तो चर्चा करते हैं किन्तु एशिया और अफ्रीकी और लातीनी अमरीकी देशों के राजनीतिक व्यवस्था के संस्थात्मक और क्रियापरक दोषों की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट किया जाता है। इस पक्षपात की मानसिकता को स्पष्ट करने हेतु कुछ दृष्टान्त काफी होंगे। उदाहरण के लिये, संसदीय प्रजातंत्र से हम प्रायः कार्यपालिका के ऊपर व्यवस्थापिका के नियंत्रण का तात्पर्य

*प्रवक्ता, राजनीति विज्ञान, काशी विद्यापीठ विश्वविद्यालय, वाराणसी
† अनुसंधात्री, राजनीति विज्ञान, काशी विद्यापीठ, विश्वविद्यालय, वाराणसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समझते हैं। किन्तु, आज चाहे ब्रिटेन हो या भारत, व्यवस्थापिका के कार्यपालिका के ऊपर नियंत्रण का प्रत्यय 'वास्तविक' की अपेक्षा 'सैद्धान्तिक' अधिक रह गया है। प्रायः यह सुना जाता है कि संसदीय प्रजातंत्रात्मक शासन में मंत्रिमण्डल का नियंत्रण दिन-प्रतिदिन संसद पर बढ़ता जा रहा है जिसे मंत्रिमण्डल का अधिनायकवाद या प्रधानमंत्रीय सरकार, की संज्ञा दी जाती है। कहने का तात्पर्य यह कि यदि किसी संस्था के गुण-अवगुण की व्याख्या किसी अन्य संस्था के संदर्भ में की जाती है तो हमेशा काल एवं परिस्थितियों का भी ध्यान रखा जाना चाहिये।

इस विवाद का निर्धारण करने के पूर्व कि भारत में राजनीतिक संस्थाओं के मूल्यों या राजनीतिक व्यवस्था, का ह्रास हुआ है अथवा नहीं, यह तथ्य हमेशा ध्यान में रखना चाहिये कि ऐतिहासिक अनुभवों, सामाजिक व्यवस्था आर्थिक विकास और सांस्कृतिक मूल्यों के स्तर पर, भारतीय वातावरण पाश्चात्य देशों या एशिया और अफ्रीका के अन्य देशों की तुलना में कहीं अधिक वैभिन्नताओं से आप्लावित है। यही वह विवादपूर्ण तथ्य है जहां आकर अधिकांश विश्लेषक किंकर्तव्यविमूढ़ हो जाते हैं। कहना न होगा कि ऐतिहासिक अनुभवों, सामाजिक व्यवस्था तथा आर्थिक विकास के आयामों के आधार पर भारतीय व्यवस्था, पश्चिमी देशों के स्थान पर पाकिस्तानी या बंगलादेश की व्यवस्था के अधिक निकट है। यह विचार इस तथ्य के बावजूद काफी कुछ सत्य है कि पिछले एक दशक में इन दो देशों और भारत के अनुभवों में काफी अन्तर रहा है।

कहना न होगा कि समकालीन भारत राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक परिवर्तनों की एक रोचक प्रयोगशाला है। यह संक्रमणकालीन अवस्था में गुजरते समाज का एक महत्वपूर्ण उदाहरण है। इसकी राजनीतिक संस्थाओं का स्वरूप जटिल है, जबकि वे जटिलतर सामाजिक व्यवस्था में प्रतिस्थापित है। प्रो. रजनी कोठारी के अनुसार, वह ढांचा जिस पर भारतीय राजनीतिक संस्थाएँ आधारित हैं, खुले प्रशासनतंत्र के सन्दर्भ में, एक प्राचीन और नितान्त वैभिन्न समाज के आधुनिकीकरण का ढांचा है।[5] सैद्धान्तिक स्तर पर भारतीय राजनीतिक संस्थाओं की प्रकृति का विवेचन नितांत सरल है। ये संस्थाओं (व्यवस्था) मूलतः ब्रिटिश ढांचे पर आधारित संसदात्मक प्रजातंत्र की अंग हैं, यद्यपि संस्थागत और वैचारिक स्तर पर दोनों में काफी कुछ अन्तर है यह व्यवस्था एक संघीय उपरि-व्यवस्था में स्थित एक ऐसी व्यवस्था है जिसमें समय-समय पर केन्द्रीयकारी और विकेन्द्रीकारी प्रवृत्तियां परिलक्षित होती हैं। भारतीय राजनीतिक व्यवस्था एक उभरती हुयी राजनीतिक व्यवस्था है, पर इसका केन्द्र एक ऐसा समाज है जो अभी भी काफी कठोर और स्तरयुक्त है। जैसा कि डेविड ऐप्टर का कथन है[6] भारतीय व्यवस्था गतिशील से कहीं अधिक समन्वयकारी है; यद्यपि इसके समक्ष सबसे बड़ी समस्या समन्वयवादी उपागमों से गतिशील उद्देश्यों को प्राप्त करने की है।' उल्लेखनीय है कि राजनीतिक संस्थाओं की औचित्यता, जिनके सम्मिलित रूप को राजनीतिक व्यवस्था की संज्ञा दी जा सकती है, उन कार्यों को सम्पादित करने की समर्थता पर निर्भर करती है, जिनकी आशा सामाजिक विकास के विभिन्न स्तरों पर समाज के विभिन्न वर्गों द्वारा की जाती है, निश्चित रूप से इन संस्थाओं की सफलता या असफलता अन्ततः विभिन्न विपरीत हितों के समन्वय करने की उनकी सामर्थ्य पर निर्भर करती है। इस प्रकार की सामर्थ्यता का मापदण्ड राष्ट्र-निर्माण की राजनीति में ठोस कार्य का आग्रह करता है। इस प्रकार आपातकाल (1975-1977) और जनता शासन (1977-1980) के काल में संस्थाओं के ऊपर आरोपित 'असामान्य दबाव' और स्वयं इन संस्थाओं की 'अकर्मण्यता' ने भारतीय राजनीतिक संस्थाओं को उद्देश्यहीन बना दिया और इस प्रकार समग्र राजनीतिक व्यवस्था की क्षति पहुँची। दोनों ही स्थितियों में देश ने कोई प्रगति नहीं की। यह एक प्रमाणित सत्य है कि 1974-1981 तक या कुछ अपवादों के साथ 1982 तक, भारतीय राजनीतिक संस्थाओं का मुख्य बल संस्थात्मक मूल्यों पर न होकर, समूहों और व्यक्तियों पर रहा है। और इस प्रक्रिया में आर्थिक विकास एवं समाज के निर्बल वर्ग की स्थिति सुधारने का लक्ष्य गौण-सा हो गया। इस प्रकार भारत में राजनीतिक संस्थाएँ 'राजनीतिक नेताओं' तथा सरकार पर अपने अत्यधिक बल के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कारण पंगु-सी हो गयी है। व्यवस्था के लिये राजनीतिक सहयोग जिसका संचयन राजनीतिक दलों द्वारा किया जाता है, वर्तमान भारतीय राजनीतिक और सामाजिक व्यवस्था में अप्राप्य है। उदाहरण के लिये, जमींदारों द्वारा भूमिहीनों और समाज के अन्य निर्बल वर्ग के ऊपर किये जा रहे अत्याचारों को मात्र सरकारी कानूनों द्वारा तब तक नहीं समाप्त किया जा सकता जब तक कि राजनीतिक संस्थाओं—जैसे कि राजनीतिक दल अपने वैचारिक नीतियों तथा रचनात्मक कार्यों और संसद अपने द्वारा बनाये गये कानूनों द्वारा-इन वर्गों को संगठित न करे और उन्हें सामाजिक रूप से इस योग्य न बनाये कि वे अत्याचारियों का खुलकर सामना कर सकें। इस प्रकार राष्ट्र-निर्माण और समाज-निर्माण में राजनीतिक व्यवस्था दल-प्रणाली के बिखराव के कारण यह तनिक मुश्किल प्रतीत होता है।

पिछले कुछ वर्षों में 'वैयक्तिक राजनीति' के विकास के कारण राजनीतिक संस्थाओं के मूल्यों का तीव्रता से स्खलन हुआ है। वास्तव में इन वर्षों में समग्र बल संस्थाओं की एकात्मकता और स्वायत्तता पर न होकर व्यक्तिगत नेतृत्व पर रहा है। भारतीय राजनीतिक व्यवस्था के इस विकास के कारण दलगत व्यवस्था से नौकरशाही तथा कानून एवं शांति व्यवस्था तक में प्रभावशीलता एवं मनोबल में गिरावट आयी है।

पिछले लगभग एक दशक में भारतीय राजनीतिक संस्थाओं की अवस्था बेहतर होती जा रही है। इस विकास की सबसे केन्द्रीय परणति आम चुनावों की बढ़ती हुई महत्वहीनता में हुयी है। 1971, 1977 तथा 1980 में भारतीय जनमानस ने एक दल के पक्ष में निश्चित समर्थन प्रदान किया किन्तु प्रत्येक अवसर पर शासन प्राप्त दल सरकार की सामाजिक औचित्यता सिद्ध करने में समर्थ न रहा। इस तथ्य पर किसी को आश्चर्य नहीं होना चाहिए क्योंकि आम चुनाव प्रभावशाली या औचित्यपूर्ण सरकार के गारंटी के संयंत्र नहीं माने जा सकते।

सी. एस. चित्तरंजन के अनुसार, 'आत्मकेन्द्रित नेतृत्व की प्रवृत्ति के विकास के कारण आज सभी भारतीय राजनीतिक संस्थाएँ लगभग पूर्ण अस्त-व्यस्तता की अवस्था की ओर अग्रसर हो रही है।' उल्लेखनीय है कि विशुद्ध राजनीतिक स्तर पर, कांग्रेसी सरकारों के माडल की इतिश्री हो चुकी है। संगठित विपक्ष के रूप में एक वैकल्पिक सरकार का माडल भी भारतीय राजनीतिक वातावरण में असफल सा सिद्ध हो चुका है। ऐसा क्यों हुआ? इस पर विचार किया जाना चाहिए किन्तु राजनीतिक संस्थाओं का भविष्य क्या होगा? यह भी विचारणीय प्रश्न है।

समाज विज्ञानियों का विचार है कि वर्तमान भारतीय राजनीतिक और सामाजिक वातावरण में एक सशक्त, अस्त-व्यस्तकारी शक्ति विद्यमान है किन्तु साथ ही संस्थात्मक व्यवस्था की भी प्रवृत्तियां मौजूद हैं। अतः निकट भविष्य में भारतीय राजनीतिक संस्थाओं के समक्ष सबसे प्रमुख चुनौती है उन तत्वों के विस्तार का अधिकतम अवसर प्रदान करना जिनके कारण संस्थात्मक व्यवस्था की प्रवृत्तियां, अस्त-व्यस्तकारी शक्ति से अधिक महत्व प्राप्त कर सकें।

यहां यह तर्क भी दिया जा सकता है कि ऊपर लिखित समस्त तथ्य पूर्णतया अनौचित्यपूर्ण हैं। उदाहरण के लिये यह कहा जा सकता है कि जब हम भारतीय राजनीतिक संस्थाओं के ह्रास की चर्चा करते हैं, तो हमें इसकी चर्चा पश्चिम के उदारवादी-प्रजातांत्रिक संस्थाओं के सन्दर्भ में न करके विशिष्ट भारतीय अनुभवों के सन्दर्भ में करना चाहिए। इस तर्क में निश्चय ही कुछ बल है। यह सत्य है कि अपने जीवन के प्रारम्भिक चरण में इन संस्थाओं की व्यवहार प्रक्रिया निश्चय ही उनकी आज की व्यवहार-प्रक्रिया की तुलना में अधिक प्रभावशाली रही। किन्तु इन संस्थाओं के वर्तमान ह्रास' की चर्चा में इनकी क्षणिक पूर्वकालिक सफलता की चर्चा शायद असंगत होगी। बल्कि जो प्रश्न यहां उभरता है, वह यह है कि स्वतंत्रता के कुछ वर्षों बाद तक इन संस्थाओं की कार्य-प्रक्रिया संतोषजनक क्यों रही? यह प्रश्न इसलिये औचित्यपूर्ण माना जा सकता है क्योंकि इन संस्थाओं की कार्य-प्रक्रिया में कुछ दोष तो अनुभवों की कमी के आधार पर इनकी स्थापना के तुरन्त बाद आ जाने चाहिए थे किन्तु यदि ऐसा उस समय न होकर अब हो रहा है और आशा से कहीं अधिक बढ़-चढ़कर हो रहा है, तो क्यों?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस जटिल प्रश्न का उत्तर प्राप्त करने के लिये हमें ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में उन भूमिकाओं का विश्लेषण करना होगा जो क्रांतिकारी पीढ़ी और उत्तर क्रांतिकारी पीढ़ी के नेतृत्व ने अदा की या अदा कर रही हैं। यदि विश्व इतिहास पर एक विहंगम दृष्टिपात किया जाय तो स्पष्ट हो जाता है कि क्रांति के बाद क्रांतिकारी नेतृत्व द्वारा जिन संस्थाओं की प्रतिस्थापना की गयी, उनका पतन तब तक नहीं हुआ जब तक कि राजनीतिक व्यवस्था पर इस क्रांतिकारी पीढ़ी के नेतृत्व का नियंत्रण बना रहा। इस प्रकार, यहां निरपेक्ष कारणों की आपेक्षा सापेक्ष कारण कहीं अधिक महत्वपूर्ण हो जाते हैं। उत्तर क्रांतिकारी वर्षों के दौरान लेनिन की सक्रिय भूमिका के कारण सोवियत राजनीतिक संस्थाओं का कभी ह्रास नहीं हुआ। किन्तु स्टालिन के शासन के दौरान उनमें तेजी से परावर्तन आने लगा और उत्तर-स्टालिन नेतृत्व द्वारा कुछ संस्थाओं में अप्रत्याशित परिवर्तन भी किये गये। इसी प्रकार उत्तर-माओ युगीन चीन में माओ-युग की संस्थाओं का तेजी से ह्रास हुआ, इससे विश्व भली-भांति परिचित है। इसी प्रकार जिन्ना की मृत्यु के बाद पाकिस्तान और शेख मुजीब की मृत्यु के बाद बंगलादेश में राजनीतिक संस्थाएँ अपने प्रारम्भिक रूप की प्रतिच्छाया भी न रहीं। जबकि इसी के समानान्तर पं. नेहरू, अब्दुल नासिर और माओत्से-तुंग राष्ट्रीय क्रांति के पश्चात् काफी समय तक जीवित रहे। परिणामतः उनकी व्यवस्था में राजनीतिक संस्थाओं में अवमूल्यन के लक्षण अपेक्षाकृत विलम्ब से स्पष्ट हुए। इसी प्रकार वाशिंगटन-हैमिल्टन के शासनकाल में जिन राजनीतिक मूल्यों की प्रतिस्थापना हुयी, बाद में उनकी रक्षा न हो सकी। यहां ज्ञातव्य है कि इस प्रकार का सिद्धान्त विकासशील देशों के सन्दर्भ में अधिक खरा उतरा है, क्योंकि इन राज्यों में राजनीतिक संस्था प्रकृत्या विकसित नहीं हुयी हैं, बल्कि इनके आधार दूसरे देशों से आयातित किये गये हैं।

इस प्रकार के विकास के अनेक कारण बतलाये जा सकते हैं। एक प्रमुख कारण तो यह है कि नेतृत्व जो सकल क्रांति का संचालन करता है, क्रांति के बाद भी अपने को राजनीतिक गतिविधियों में क्रियाशील सहभागी बनाता है और निरन्तर इन संस्थाओं की सफल कार्य-प्रणाली के लिये चिन्तित रहता है। इसके अतिरिक्त क्रांतिकारी युग के नेतृत्व में स्वयं का आत्म-विश्वास होता है, क्योंकि स्वयं यह विपरीत परिस्थितियों का सामना करते हुए क्रांति का संचालन करता है किन्तु अगले पीढ़ी के नेतृत्व में इस प्रकार के आत्मविश्वास का प्रायः अभाव होता है। पं. नेहरू के बारे में प्रायः यह कहा जाता है कि संसद की कार्यवाही में भाग लेते समय और शक्ति के विकेन्द्रीकरण के प्रश्न पर वह बहुत सावधान रहा करते थे। समकालीन राजनीतिक संस्थाओं पर उनका पूर्ण नियंत्रण था, क्योंकि वह स्वयं उन संस्थाओं के निर्माता या जन्मदाता थे। परन्तु श्रीमती इन्दिरा गांधी की स्थिति इससे कहीं भिन्न है। श्रीमती गांधी में न तो स्वयं इतना आत्मविश्वास है और न ही वह इन संस्थाओं की कार्य-प्रणाली से इतनी विज्ञ हैं। और ऐसी राजनीतिक स्थिति एवं वातावरण में यह भी ऐतिहासिक स्वाभाविकता है कि वह अपने विरोधियों के उद्देश्यों के प्रति सन्देहास्पद दृष्टिकोण अपनायें। इसके अतिरिक्त उन्हें हर उपलब्ध और सम्भव साधन द्वारा अपने पद को भी बरकरार रखना है। इसी प्रकार उल्लेखनीय है कि माओ यह कह सकते थे कि, सैकड़ों पुष्पों को प्रस्फुटित होने दो, या मुख्य कार्यालय पर बमबारी करो किन्तु शायद हुआ-गुओ-फेंग के लिये ऐसा आह्वान नामुमकिन होगा। संक्षेप में कहने का तात्पर्य यह है कि क्रांति-काल के राजनीतिक नेतृत्व और उत्तर-क्रांति-काल के नेतृत्व को विभिन्न पारिस्थितिकीय वातावरण में अपनी नीतियां और कार्य प्रणाली निर्धारित करना पड़ता है और इसी कारण से पहली स्थिति की तुलना में दूसरी स्थिति में राजनीतिक संस्थाओं और मूल्यों के ह्रास की अधिक सम्भावना होती है।

हाल के वर्षों में भारत में राजनीतिक संस्थाओं में अवमूल्यन के सम्बन्ध में एक और तथ्य उभरकर सामने आता है जो न केवल भारत वरन् अन्य देशों की राजनीतिक व्यवस्था के सम्बन्ध में भी उतना ही सत्य है। राजनीतिक मूल्यों में हाल में आयी गिरावट का सबसे प्रमुख कारण है वर्तमान नेतृत्व में असुरक्षा की भावना जो जन-मानस की आर्थिक समस्याओं को हल करने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के उद्देश्य में असफलता का परिणाम माना जा सकता है। इस सामर्थ्य विहीनता का इस्तेमाल विरोधी अभिजन वर्ग द्वारा किया जाता है। किन्तु, जन-मानस की इस असन्तुष्टि का इतना भयानक परिणाम क्यों हो रहा है? इसका सबसे प्रमुख कारण है—आशा और वास्तविक उपलब्धि के मध्य बढ़ती हुई दूरी। कहने का तात्पर्य यह है कि अब किसी भी देश के निवासी अपने लिये किन्हीं विशिष्ट राजनीतिक संस्था का चयन करते हैं (ज्ञातव्य है कि भारतीय संविधान, जिसके अन्तर्गत विभिन्न राजनीतिक संस्थाओं तथा शासन की संसदीय प्रजातांत्रिक व्यवस्था को अंगीकार किया गया है, जनता द्वारा निर्मित है) तो उससे वे कुछ निश्चय उद्देश्यों की प्राप्ति की परिकल्पना करते हैं, यह बात और है कि उनकी परिकल्पना अ-वास्तविक या अतिशयोक्तिपूर्ण हो। कुछ समय लगता है, इसके पहले कि लोग यह महसूस करें कि कोई संस्था उनकी आशाओं पर खरी नहीं उतरी है। खालिस्तान या असम की समस्या अथवा हरिजनों और समाज के निर्बल वर्ग के ऊपर बढ़ते अत्याचार अथवा धर्म परिवर्तन की समस्या अथवा दलीय-पद्धति का विघटन आदि समस्यायें जन-मानस में शासन के प्रति बढ़ रहे आक्रोश का परिणाम हैं। कम से कम विकासशील या अर्द्ध-विकसित व्यवस्थाओं में इसका एक और दुष्परिणाम होता है: ऐसी स्थिति में शासन प्राप्त अभिजन वर्ग 'येन-केन-प्रकारेण' अपने हाथ में सत्ता बनाये रखने का प्रयास करता है। और यह एक सार्वकालिक सत्य है कि मानव की शक्ति-प्रवृत्ति असीमित होती है और राजनीतिक संस्थाएं वे साधन हैं, जिनके माध्यम से व्यक्ति शक्ति प्राप्त कर सकता है, उसे अपने पास बरकरार रख सकता है और पूर्व-प्राप्त शक्ति का विस्तार कर सकता है?

यदि कोई व्यक्ति यह निर्णय लेता है कि भारत में राजनीतिक संस्थाओं का अवमूल्यन हो चुका है तो उसे निरपेक्ष और सापेक्ष, दोनों ही तथ्यों को ध्यान में रखना चाहिये। इसलिये समस्त तथ्यों को समुचित ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में रखा जाना चाहिये।

(2)

विश्व के सबसे वृहत्तर लिखित संविधान भारतीय संविधान में विश्व के लगभग सभी प्रमुख संविधानों के 'सकारात्मक लक्षणों' को समन्वित करने का प्रयास किया गया है ताकि शक्ति और सन्तुलन के सिद्धान्त के अनुरूप सावधानी बरतते हुए व्यवस्था को स्थायित्व प्रदान किया जा सके। किन्तु, संसदीय प्रजातंत्र वाले इस देश में प्रायः यह बात भी सुनी जाती है कि देश की व्यवस्था में आयी गिरावट का सबसे प्रमुख कारण संसद के दोनों सदनों में चुने जाने वाले सदस्यों की अयोग्यता है। और इस विकास ने भारतीय प्रजातंत्र में संसद की शक्ति और भूमिका-दोनों को प्रभावित किया है। समस्या नवीन नहीं है और समस्या भारतीय प्रजातंत्र की हो, ऐसी भी कोई बात नहीं है। संसद के वास्तविक कार्यों और कार्य-प्रणाली के विरोध में नयी दिल्ली के संसद भवन में आवाज उठाये जाने के बहुत पहले ऐसा ही विरोध वेस्ट मिनस्टर में प्रकट किया गया था। ग्रेट ब्रिटेन और 'श्वेत' राष्ट्रमण्डलीय देशों को छोड़कर, 'तीसरी दुनिया' का भारत एकमात्र देश है जिसने सफलता-पूर्वक 'वेस्ट-मिनस्टर' प्रकार की संसदीय-प्रजातांत्रिक शासन-पद्धति का सफलता-पूर्वक निर्वाह किया है। यहां उल्लेखनीय है कि अपनी समस्त खामियों और असफलताओं के बावजूद 'राष्ट्रीय शक्ति-ढांचे' में भारतीय संसद का अपना विशिष्ट स्थान है। निस्सन्देह भारतीय संसद के उत्थान और पतन का अपना इतिहास है। किन्तु, औसतन आपातकाल के 19 महीनों को छोड़कर भारतीय संसद ने स्वतंत्रता पश्चात् के अब तक के 34 वर्षों में राष्ट्र की समग्र राजनीति में एक उपयोगी, लाभप्रद और जीवन्त भूमिका का निर्वाह किया है, यद्यपि कभी-कभी यह भूमिका काफी अपूर्ण रही है।

किसी सभ्यता की भांति किसी भी संस्था के जीवन के भी विकास के तीन स्तर या चरण होते हैं: उत्थान, पतन और इन दोनों के मध्य में एक स्वर्ण युग होता है जब संस्था का गौरव अपने चरम बिन्दु पर होता है। ऐसा प्रतीत होता है कि भारतीय संसद की विकास-प्रक्रिया में ये तीनों ही युग बहुत शीघ्रता से बीत गये। यद्यपि तिथि-क्रम से यह बताना कठिन है कि कौन सा युग कब तक चला, किन्तु भारतीय संसद की शक्तियों और कार्य-प्रणाली का अध्ययन करने वाला विद्वानों का बहुमत इस विषय पर एकमत है कि वर्तमान समय में भारतीय संसद संकट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और 'अनिश्चयात्मकता' के गम्भीर दौर से गुजर रही है।

प्रायः यह कहा जाता है; जैसा कि प्रारम्भ में ही कहा गया है कि भारतीय संसद की प्रकृति और प्रतिष्ठा में हाल के वर्षों में गम्भीर गिरावट आयी है। यद्यपि यह भी उतना ही सत्य है। कि अधिकांश खामियां जिन पर जनमानस और देश के राजनीतिज्ञ चिन्तित हैं, टेम्स के तट पर स्थित ब्रिटिश संसद, जिसे 'संसदों की जननी' भी कहा जाता है, में भी विद्यमान है। और इन समस्त खामियों के कारण भी दोनों ही राजनीतिक व्यवस्थाओं में सामान्य रूप से विद्यमान है : आधुनिक राष्ट्रीय राज्यों के दायित्वों और कर्तव्यों का निरन्तर जटिल से जटिलतर होता जा रहा दायरा।

अब, यह लगभग सिद्ध हो चुका है कि भारतीय राजनीति में संसद की भूमिका एक 'विवाद-क्लब' से अधिक हो, यह भारत में संसदीय प्रजातंत्र की सफलता की पूर्व शर्त है। इसी के समान्तर संसद समान अर्थों में भारतीय जन-मानस का सम्पूर्ण प्रतिनिधित्व कर सके, इस हेतु यह भी आवश्यक है कि संसदीय-प्रजातंत्रीय कार्य-प्रणाली के निश्चित नियमों का निर्माण किया जाय, जिसे सभी स्वीकार करें ताकि संसद अपने कर्तव्यों और दायित्वों का प्रभावशाली ढंग से निर्वहन कर सके। ब्रिटेन, फ्रांस और इसी प्रकार कुछ अन्य पुरातन संसदीय प्रजातंत्रों में संसद को क्रमशः विकसित होने का लाभ मिला और शनैः शनैः चलने वाली इस राजनीतिक विकास प्रक्रिया में व्यावहारिक नियमों का निर्माण होता गया। किन्तु वर्तमान भारत के संसदीय प्रजातंत्र की सबसे प्रमुख समस्या यही है कि यह इस प्रकार के राजनीतिक विकास के पहले चरण में है। अभी भी हमने अपने अनुभवों के आधार पर इस प्रकार के संसदीय नियमों और परम्पराओं का विकास नहीं किया है। हमें इन नियमों (यद्यपि ये बहुत कम हैं) को दूसरी व्यवस्थाओं की नकल के आधार पर एक कृत्रिम ढंग से क्रियान्वित करना पड़ रहा है। कभी-कभी, इस प्रकार का प्रयास संसदीय व्यवस्था के समय अ-वास्तविक समस्यायें उत्पन्न कर देता है।

कहना न होगा कि भारतीय संसद मुख्य रूप से दो कारणों से पंगु बना दी गयी है : सर्व प्रथम, दोनों सदनों की बैठक वर्ष में मात्र 120 दिनों तक ही चलती है और इस कालावधि का भी अधिकांश भाग सरकारी कार्यकलाप में निकल जाता है। सरकारी और गैर-सरकारी कार्यकलाप के मध्य समय का बंटवारा न्यायसंगत होता है कि नहीं, यह तथ्य भी विवाद का प्रश्न हो सकता है। पिछले कुछ वर्षों में सदन की कम से कम बैठक आयोजित करने की प्रवृत्ति ने और पकड़ा है। एक समय था जब पंजाब असेम्बली के प्रतिवर्ष तीन सत्र आयोजित हुआ करते थे। किन्तु, पिछले कुछ वर्षों में प्रतिवर्ष सदन के दो सत्र आयोजित करने की प्रक्रिया ने बल पकड़ा है : बजट-सत्र और एक सामान्य सत्र। इसके अतिरिक्त, बाद वाला सत्र एक संवैधानिक औपचारिकता अधिक बन गया है; यह मात्र तीन-चार दिनों तक चलता है और इसका आयोजन भी मात्र इस लिये किया जाता है क्योंकि संविधान के उपबंधों के तहत् संसद के दो सत्रों के मध्य लगभग 7 माह से अधिक का अन्तर नहीं होना चाहिए। बजट को पारित करने की विस्तृत प्रक्रिया का उल्लेख स्वयं संविधान में किया गया है और इस कारण बजट सत्र के समयकाल में कटौती करने की तनिक कम गुंजाइश रहती है।

जिस प्रकार से विधायनी कार्य का संसद में सम्पादन होता है वह चिन्ताजनक है। प्रायः वह कम से कम समय, जो सदन के सदस्यों को विधेयक के अध्ययन के लिये दिया जाना चाहिए, वह भी नहीं दिया जाता। इस सन्दर्भ में कार्य-प्रणाली के नियमों का खुलकर विरोध किया जाता है। दिन पर दिन यह प्रवृत्ति दृष्टिगत हो रही है कि सदन के समक्ष लाये जाने वाले विधेयक अधिक से अधिक दोषपूर्ण होते हैं। इसी प्रकार इस व्यावहारिक नियम कि विधेयक न केवल अंग्रेजी वरन् अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में भी सदन के सामने प्रस्तुत किये जाने चाहिये, का भी खुलकर उल्लंघन किया जाता है। ऐसे भी विधेयकों के उदाहरण दिये जा सकते हैं जिनका प्रस्तुतीकरण 1 घंटे से भी कम समय में किया गया है। कार्य-प्रणाली के नियमों का उल्लंघन के अतिरिक्त भी अनेक संयंत्रों का उपयोग सत्र की अवधि कम से कम करने के लिये किया जाता है। इसी प्रकार से अध्यादेश के माध्यम से विधि-निर्माण के अधिकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का भी खुला दुरुपयोग किया जा रहा है। उल्लेखनीय है कि सत्र की अवधि जितनी कम होती है, जन-मानस की शिकायतों, समस्याओं तथा कठिनाइयों पर बहस एवं निराकरण की उतनी ही कम सम्भावना रहती है। यहाँ, यह भी उल्लेखनीय है कि आधुनिक राज्य के बढ़ते हुए दायित्वों एवं कर्तव्यों को देखते हुए यदि संसद और इसकी समितियां वर्ष भर यदि 12 घंटे प्रतिदिन के हिसाब से भी कार्य करें तो भी ये प्रशासन तंत्र की समस्त नीतियों पर ध्यान न केन्द्रित कर पायेंगी। सरकारी नीतियां गुप्त रखी जाय-इस प्रकार की संसदीय परम्परा कार्य को और कठिन बना देती है। इसी प्रकार दलीय विश्वसनीयता, जिसके अन्तर्गत सत्ता-प्राप्त दल के प्रत्येक सदस्य का यह नैतिक कर्तव्य है कि वह अपने दल की नीतियों का समर्थन करें, संसद द्वारा राष्ट्रीय राजनीति में एक केन्द्रीय भूमिका के निर्वहन के मार्ग में एक और बड़ी बाधा है। स्मरणीय है कि भारतीय संसदीय प्रणाली में ही यह दोष है—ऐसी कोई बात नही है। विचारणीय है कि ब्रिटेन जैसे छोटे और एकरूप देश, जहां संसदीय परम्परा का पिछले 700 वर्षों का संगठित इतिहास है, के विषय में यह तथ्य सही है तो वृहदाकार और विभिन्न वैभिन्नताओं से आवृत देश भारत, जहाँ संसदीय शासन-पद्धति का प्रयोग पिछले 34 वर्षों से चल रहा है, के सन्दर्भ में यह तथ्य कितना सही होगा, इसका सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है।

दोनों सदनों में बहस के दौरान प्रायः दिखाई पड़ने वाली अव्यवस्था के कारण संसद के गौरव में चिंताजनक ह्रास है। यदि इस समस्या पर समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से विचार किया जाय तो यह कहा जा सकता है कि यह समाज में बढ़ रही अव्यवस्था का परिणाम है। प्रतिदिन समाचार पत्रों में सदनों में फैल रही अव्यवस्था के बारे में जानकारी मिलती है। शोर-गुल तो होता ही है, कभी-कभी दो सदस्यों के बीच गुत्थम-गुत्थी के भी समाचार मिलते हैं। सदन की कार्यवाही को नियंत्रित करने में प्रायः अध्यक्ष को कठिनाई का सामना करना पड़ता है। इस सबके कारण न केवल संसदीय संस्थाओं की कार्य-प्रणाली में व्यवधान उत्पन्न होता है, वरन् देश के समस्त प्रतिनिधि संस्थाओं की गरिमा को इस प्रकार की बातों से धक्का पहुंचता है। इस तथ्य को मद्देनजर रखते हुए कि समाज के विभिन्न वर्गों में तेजी से अनैतिकता प्रसारित हो रही है, संसद में बढ़ रहे 'व्यवस्थात्मक तनाव' का समाज के लिये 'ऋणात्मक प्रभाव' हो सकता है।

हाल के वर्षों में दलीय पद्धति के स्खलन ने भी संसदीय कार्य-प्रणाली के समक्ष कठिनाइयां पैदा की हैं। यह एक सर्वमान्य तथ्य है कि एक 'सुसंगठित-दलीय-व्यवस्था' के अभाव में प्रजातंत्र का क्रियान्वयन असम्भव है। जो कुछ शेष समाज में घटित होता है उसका प्रभाव संसद की आन्तरिक गतिविधि पर पड़ना निश्चित है। यह तो सर्वमान्य है कि संसदीय प्रजातंत्र में संसद को जनमत का प्रतिरूप प्रतिबिम्ब होना चाहिये और कार्यपालिका को व्यवस्थापिका के आकांक्षाओं के अनुरूप होना चाहिये। संसदीय शासन प्रणाली के सफल क्रियान्वयन के लिये न केवल एक सबल और सुसंगठित विपक्ष का होना, वरन् कार्यपालिका में विपक्ष के स्वस्थ विचारों तथा आलोचना को, 'पारस्परिक वार्तालाप' की पद्धति के आधार पर, आत्मसात करने की इच्छा का होना भी आवश्यक है[9]। सदन की गौरव और गरिमा को बरकरार रखने का संकल्प, विचारों के परस्पर सोद्देश्यपूर्ण आदान-प्रदान के लिये सम्यक् माहौल तथा एक प्रजातांत्रिक मानसिकता-ये सभी संसदीय प्रजातंत्र के मूल तत्व है। इन समस्त तत्वों की प्राप्ति परम्पराओं एवं व्यावहारिक नियमों के आधार पर की जा सकती है, कार्य-प्रणाली के मात्र वैधानिक नियमों के आधार पर नहीं। हम कहना चाहेंगे कि अपनी जीवन-यात्रा के प्रारम्भिक वर्षों (नेहरू काल) में भारतीय संसद इस ओर उन्मुख होती रही, परन्तु कालान्तर में यह दिशाहीन हो गयी।

अब, हम यह स्वीकार करने की स्थिति में हैं कि भारतीय संसद की कतिपय ऐसी खामियां हैं जो अपने स्वरूप में विशिष्ट रूप से भारतीय हैं। उदाहरण के लिये, विश्व के किसी भी देश में, यहां तक कि विकासवादी जापान या क्रांतिवादी इटली में भी नही, संसद सदस्य अपनी 'कुर्सी' से इतना प्रेम नहीं करते जितना कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत में। यही बात भारतीय प्रजातंत्र की 'दरबार-परम्परा' के विषय में कही जा सकती हैं। इसके अतिरिक्त, जैसा कि हम ऊपर भी इंगित कर चुके हैं कि संसदीय सरकार का मूलभूत तत्व है : विरोध को सहन कर सकने की क्षमता तथा अपने मत से भिन्न विचार सुनने और समझने की इच्छा। किन्तु, इस बात पर मात्र अफ़सोस ही प्रकट किया जा सकता है कि यही वह तत्व है जिससे भारत का संसदीय प्रजातंत्र महरूम है? इससे अधिक दुःख का विषय तो यह है कि इस प्रवृत्ति में सुधार लाये जाने तथा संसद की कार्य-प्रणाली को वास्तविक रूप से 'संसदीय' बनाने के लिये कोई प्रयास भी नहीं किया जा रहा है।

बात यहीं तक नहीं है। वर्तमान मतदान-व्यवस्था के अन्तर्गत गठित भारतीय संसद सच्चे अर्थों में भारतीय जन की प्रतिनिधि नहीं कही जा सकती है। इस मतदान व्यवस्था के अन्तर्गत निर्मित सरकार अल्पमत प्राप्त बहुमत स्थान प्राप्त दल की सरकार है। इस प्रकार यह तर्क कि भारतीय संसद राष्ट्र की प्रतिनिधिकारी संस्था है, वक्त की कसौटी पर मिथ्या प्रमाणित हो चुका है। उल्लेखनीय है कि लोकसभा के अब तक सम्पन्न 7 आमचुनावों में विजयी दल को सम्पूर्ण प्रदत्त मतों के 50 प्रतिशत से कम मत ही हमेशा प्राप्त हुए हैं। इसलिये यदि भारतीय संसद को प्रतिनिधिकारी संस्था का नाम दिया जाता है तो हमें यह भी स्वीकार करना होगा कि यह राष्ट्र के अल्पमत का प्रतिनिधित्व करती है, क्योंकि प्रत्येक संसदीय आमचुनाव के बाद हम देखते हैं कि एक पक्ष तो शासन-सत्ता प्राप्त दल का है और दूसरे पक्ष यानि विपक्ष में कुछ छोटे-छोटे बिखरे हुए समूह हैं। इसी प्रकार अब तक लोकसभा में 70 प्रतिशत स्थान प्राप्त शासक दल कभी भी समस्त मतों का 45 प्रतिशत से अधिक नहीं प्राप्त कर पाया। इस आधार पर हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि पिछले तीन दशकों से जिस दल के हाथ शासन की बागडोर है वह कभी भी निर्वाचक मण्डल के बहुमत (50 प्रतिशत) की स्वीकृति न प्राप्त कर सका।[10]

इसके अतिरिक्त यह निष्कर्ष संसद के विषय में एक और तथ्य की ओर ध्यान आकर्षित करता है : पिछले तीन दशकों में भारतीय संसद एक संगठित विपक्ष के अभाव में कार्य करती रही है। दल-बदलवाद की नीति ने विपक्ष की भूमिका को और प्रभावहीन कर दिया है। कहना न होगा कि इसके लिये निर्वाचन-प्रणाली ही मुख्य रूप से उत्तरदायी है।

इन तथ्यों के आधार पर यदि यह कहा जाय कि 1947 के बाद के काल में भारतीय संसद की प्रकृति में तीव्र गिरावट आयी है तो शायद अत्युक्ति न होगी। ऐसा क्यों और कैसे हुआ? इस सम्बन्ध में कुछ क्रमबद्ध कारण इस प्रकार से बताये जा सकते हैं —

1-भारत में संविधान लागू होने के बाद से ही एकओर संसद और न्यायपालिका के मध्य और दूसरी ओर कार्यपालिका तथा संसद के मध्य विवाद की प्रवृत्ति प्रारम्भ रही। कार्यपालिका और संसद के मध्य विवाद में हमेशा कार्यपालिका ही विजयी रही और इसकी शक्ति में क्रमिक विकास होता गया है किन्तु शक्ति के इस असन्तुलन को दूर करने के लिये कुछ नहीं किया जा रहा है। वस्तुस्थिति वहीं की वहीं स्थिर है। प्रश्न उठता है कि नीतियों के क्रियान्वयन में क्या बाधा है? क्या शासक वर्ग में राजनीतिक इच्छा का अभाव है? या अपने परम्परावादी प्रतिमानों के कारण संसद प्रगति का मार्ग अवरूद्ध कर रही है? या न्यायपालिका बाधा पैदा कर रही है? ये कुछ ऐसे प्रश्न हैं जिनका उत्तर दिया जाना अभी भी शेष है।

2—संविधान के अन्तर्गत मूल रूप से संसद को प्राप्त शक्ति के एक बड़े भाग का हस्तगन मंत्रिमण्डल द्वारा कर लिया गया है। जिस निर्ममता के साथ श्रीमती इंदिरा गांधी की सरकार ने 1971 में 24वें और 25वें संशोधन विधेयक एवं 1975 में 38वें तथा 39वें संशोधन विधेयक को पारित किया, उससे यह स्पष्ट जाहिर होता है कि कार्यपालिका, न्यायपालिका द्वारा प्रस्तुत शक्ति की चुनौती को निरस्त करने हेतु संसद का प्रयोग एक संयंत्र के रूप में कर रही है। इसके अतिरिक्त संसद की कार्य-प्रणाली व्यावहारिक रूप से किस प्रकार चलती है? इस ओर भी ध्यान दिया जाना चाहिये। संसद की बैठक कब बुलायी जाय और कब स्थगित की जाय? संसद की दैनिक कार्य-सूची का निर्धारण और राष्ट्रपति द्वारा नयी संसद के उद्घाटन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में भाषण का स्वरूप आदि का निर्धारण मंत्रिमण्डल करता है। इस सबके आधार पर क्या ऐसा नहीं लगता कि **संसद अब मात्र एक मंच रह गयी है जहाँ नीतियाँ और कार्यक्रम निर्धारित नहीं किये जाते वरन् पहले से निर्धारित नीतियों और कार्यक्रमों का वहाँ प्रकाशन किया जाता है और एक निर्धारित संवैधानिक प्रक्रिया के तहत् उन्हें संवैधानिक वैधता प्रदान की जाती है।**

3—भारतीय संसद की बढ़ती हुई प्रभावहीनता और इसकी गरिमा में गिरावट हेतु अब जन-सम्पर्क साधनों के अनुत्तरदायी पूर्ण व्यवहार को भी उत्तरदायी माना जाना चाहिये। एक स्वतंत्र और उतरदायी संचार साधन न केवल जन आकांक्षाओं के कुशल सूचनादाता है वरन् राजनीतिज्ञों और नागरिक प्रशासनकर्ताओं द्वारा किये जा रहे अत्याचारों के विरूद्ध आवाज भी इन्हीं के द्वारा उठायी जाती है। भारतीय समाचारपत्रों तथा अन्य संचार साधनों को चाहिये कि समाचार बढ़ाने तथा पाठकों को सनसनीखेज खबरें देने की लालसा में वे संसद के योग्य सदस्यों के योगदान के स्थान पर कुछ अयोग्य सदस्यों के गैर-संसदीय कार्यों तथा व्यवहार को अवांछनीय प्रकाशन न दें।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि यदि कोई भारतीय संसद की परिकल्पना राष्ट्रीय इच्छा के प्रतीक और जन-इच्छा के प्रतिबिंब के रूप में करता है तो निश्चय ही वह निराश होगा। ऐसा इसलिये है क्योंकि पिछले **तीन दशकों के अपने इतिहास में भारतीय संसद एक अभिजन वर्ग तथा निहित स्वार्थों की शरणदात्री बन** गयी है, और ऐसी स्थिति में भारतीय प्रजातंत्र की परिभाषा प्रो. अम्बादत्त पंत के शब्दों में, 'अभिजन का शासन, अभिजन के द्वारा और अभिजन के लिये, के रूप में की जा सकती है। आज भारत में विधायिनी व्यवस्था और प्रक्रिया महज एक औपचारिकता रह गयी है। उसके सद्-परिणाम नहीं निकले हैं; संसदीय प्रजातंत्र की आशायें दुःस्वप्नों में परावर्तित हो गयी है; विभेद अब भी विद्यमान हैं; हर तरफ निराशा फैली हुई है। आर्थिक और सामाजिक उद्देश्यों की सम्प्राप्ति नहीं हो पायी है। संस्थाओं का निरन्तर ह्रास होता जा रहा है। यहाँ तक कि संसद की भूमिका भी एक वाद-विवाद क्लब से अधिक नहीं रह गयी है। इस भावना ने, कि राष्ट्रीय समस्याओं के सुलझाने में संसद की भूमिका गौण होती जा रही है, आम जन को आन्दोलनों का सहारा लेने पर बाध्य किया है। असम आन्दोलन और कृषक आन्दोलन (गुजरात) इसी मनोवृत्ति के परिणाम माने जा सकते हैं।

(3)

अब, प्रश्न इस बात का है कि संसद के ह्रास को रोकने और राष्ट्रीय राजनीति में उसकी भूमिका को प्रभावशील बनाये जाने के लिये क्या किया जाना चाहिये? उल्लेखनीय है कि किसी भी संसद या और भी किसी संस्था में, प्रभावशील कार्य बहुमत द्वारा नहीं, वरन् प्रतिभावान एवं निष्ठावान कुछ सदस्यों द्वारा किया जाता है। स्पष्ट है कि राजनीतिक दल ही इस बात की गारण्टी ले सकते हैं कि संसद के दोनों सदनों के निर्वाचित सदस्य योग्य और कार्य करने में समर्थ हैं। इस हेतु राजनीतिक दलों को चाहिये कि वे अपने दल के संसद सदस्यों को किसी एक निश्चित क्षेत्र में विशिष्टीकरण प्राप्त करने के लिये प्रेरित करें। वास्तव में इस प्रकार की प्रक्रिया चुनाव के पहले ही प्रारम्भ हो जानी चाहिये; प्रत्याशियों का चयन केवल उनके विजय के अवसर को ही मद्देनजर रखते हुए नहीं, वरन् इस तथ्य को भी ध्यान में रखकर किया जाना चाहिये कि वे सम्बन्धित पद के कर्तव्यों का निर्वहन पूर्ण योग्यता के साथ कर सकेंगे।

इसके अतिरिक्त संसदीय प्रजातांत्रिक पद्धति वाले देश भारत में जहां न तो स्विटजरलैण्ड की भांति जन-प्रतिनिधियों को वापस बुलाने का प्रावधान है और न ही सरकारी नीतियों एवं संवैधानिक संशोधनों पर जनमत का प्रावधान है, आर्थिक और सामाजिक बिन्दु पर सरकार की असफलता की अवस्था में, जनमानस असहाय की तरह पांच वर्षों तक चुनाव के माध्यम से सरकार को पदच्युत करने का इन्तजार नहीं कर सकता। जनता को चाहिये कि वह सरकारी तंत्र में व्याप्त अव्यवस्था को दूर करने और सामाजिक न्याय की प्राप्ति के लिये जन-आन्दोलनों का गठन करें। केवल एक उत्तरदायी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरकार ही एक उत्तरदायी विपक्ष के गठन में सहायक हो सकती है। किन्तु एक अनुत्तरदायी सरकार और भ्रष्ट प्रशासनतंत्र के समक्ष जन-मानस को स्वयं प्रभावशाली ढंग से संगठित करना होगा ताकि संसद और संसदीय प्रजातंत्र को सम्पूर्ण ह्रास से बचाया जा सके। ■

सन्दर्भ सूची

1. प्रो. डब्ल्यू. एच. मारिस जोन्स : क्रीपिंग बट, अनइजी अथारटेरियनिज्म : इंडिया-1976, गवर्नमेंट एण्ड अपोजीशन, पृष्ठ 20-21।
2. गुन्नार मिरडल : (क) एशियन ड्रामा : ऐन इन्क्वायरी इन्टू दि पावर्टी आफ नेशन्स, पृष्ठ 44।
   (ख) दि चैलेन्ज आफ वर्ल्ड पावर्टी : एवर्ड सेन्टी पावर्टी प्रोग्राम इन आउटलाइन, पृष्ठ 2117।
3. (क) पी. जी. वर्गीस : पार्लियामेन्ट्री सिस्टम : क्राइसिस विदिन द क्राइसिस (इकानामिक टाइम्स, 17 सितम्बर, 1979)।
   (ख) प्रो. सुरिंदरसू : डिक्लाइन आफ इंडियन पार्लियामेंट : नीड फार कन्वेंशन्स एण्ड रिव्यूल्स (टाइम्स आफ इंडिया, 3 जनवरी, 1981)।
   (ग) एस. सहाय : वेस्टमिन्स्टर माडल क्रमबिल्स (सेमिनार, सितम्बर, 1980, पृष्ठ 31-33)।
4. (क) सेमुअल हंटिंग्टन : पालिटिकल आर्डर इन चेंजिंग सोसाइटीज, पृष्ठ 63-64
   (ख) एस. एन. आईसेंट : माडर्नाइजेशन : प्रोटेस्ट एण्ड चेंज।
   (ग) फ्रेडिरिक रिग्स : दि थियरी आफ पालिटिकल डेवलपमेण्ट (जेम्स सी. चाल्सवर्थ द्वारा सम्पादित पुस्तक 'कन्टेम्परेरी पालिटिकल अनालिसिस' पृष्ठ 341)।
5. प्रो. रजनी कोठारी : पालिटिक्स इन इण्डिया, पृष्ठ 121।
6. डेविड एप्टर : इन्ट्रोडक्शन टू पालिटिकल अनालिसिस, पृष्ठ 363-365।
7. सी. एन. चित्तारंजन : विदर द सिस्टम् (मैनस्ट्रीम, अंक 20-14)।
8. प्रो. के. वी. राव : पार्लियामेन्ट्री डिमाक्रेसी इन इण्डिया।
9. प्रो. रजनी कोठारी : लीडरशिप एण्ड सोशल चेंज : दि टास्क आफ इंस्टीट्यूशन बिल्डिंग (टाइम्स आफ इंडिया, 6 जून, 1980)
10. (क) नन्दलाल : फ्यूचर आफ डिमाक्रेसी इन इण्डिया (प्रगति मंजूषा, नवम्बर, 1981)
    (ख) नन्दलाल : भारत में प्रजातंत्र का भविष्य (प्रगति मंजूषा, सितम्बर, 1981)।
11. प्रो. अम्बादत्त पंत : डिमाक्रेटी एण्ड लीडरशिप

उपरोक्त लेख 21-22 फरवरी, 1982 को मुजफ्फरपुर (उ.प्र.) में 'इण्डियन डेमोक्रेसी : रिसेन्ट ट्रेन्ड्स एण्ड इश्यूज' विषय पर आयोजित आल-इण्डिया सेमिनार में लेखकद्वय द्वारा 'कोलेप्स आफ पोलिटिकल इन्सटीट्यूशन्स इन इण्डिया : डिक्लाइन आफ इण्डियन पार्लियामेण्ट-हाऊ एण्ड व्हाई इट हैपेन्ड?' शीर्षक से प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध का स्वयं लेखकद्वय द्वारा किया गया हिन्दी रूपान्तर है।

(पृष्ठ 88 का शेष)

2. a. Environ; b. Envelope; c. Epitome d. Entice e. Exult; f. Explain; g. Eternal h. Eclectic; i. Edify; j. Elegant.
3. a. ent; b. amp; c heel; d. ach; e. eld.
4. a. Babe. Take the letters corresponding to the numbers (i. e. A=1, B=2, etc) in the reverse order.
   b. Cache. The letters infront of the brackets, in inverse order, are the last two letters of the word in the bracket. The 9th, 2nd and 1st letters of the alphabet, in inverse order, gives the first three letters of 'Abide'; likewise 'Cache'.
   c. 39. Take the number corresponding to the letter (i. e. 1=A, 2=B, etc) Multiply GH and FG and subtract the products to get the difference of 14, likewise get 39.
   d. 63. Subtract the numbers outside the brackets and multiply the difference by 3 to get the figure inside the bracket.
   e. 89, J. Take the 1st, 4th, 7th and 10th letter of the alphabet. The 2nd and 3rd letter correspond to 23, the 5th and 6th to 56 etc.
5. (a) 39, (b) I, (c) 11, (d) 35, (e) P/K
6. 5 and 6, 7. 4, 8. 4, 9. (a) 5, (b) 4

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन्दर्भ : नया सोवियत नेतृत्व

विदेश नीति के संभावित आयाम

—अशोक तिवारी—

सारी आशंकाओं को निर्मूल साबित कर यूरी आन्द्रोपोव ने सोवियत साम्यवादी दल के महासचिव का पद संभाल लिया है। यद्यपि यूरी आन्द्रोपोव की स्थिति ब्रेजनेव जितनी निरापद नहीं हो पायी है क्योंकि अभी उन्हें अपने दल के ही विभिन्न मतों में अपने प्रति विश्वास भाव जगाना है फिर भी ब्रेजनेव ने अपने लम्बे स्थाई युग के साथ यूरी आन्द्रोपोव को जो व्यवस्था सौंपी है, उसमें इसी बात की अधिक सम्भावना प्रतीत होती है कि सामूहिक नेतृत्व को मान्यता दी जायगी। इसलिए विदेश नीति के सन्दर्भों में अनुमान लगाने के पूर्व हमें ब्रेजनेव कालीन स्थितियों का विश्लेषण करना होगा। सन् 1960 के 'क्यूबा मिसाइल' संकट के समय सोवियत संघ ने अपने शर्मनाक ढंग से पीछे हटने को राष्ट्रीय अपमान मान कर जिस तरह की रणनीतियाँ निर्धारित की थीं उन्ही सुविचारित रणनीतियों का परिणाम है कि ब्रेजनेव सोवियत सामरिक सामर्थ्य को अमरीका के बराबर कर सोवियत संघ को सच्चे अर्थों में विश्व स्तरीय महाशक्ति बना सके हैं। अपनी मृत्यु के कुछ दिन पूर्व उन्होंने जिन नीतियों की ओर संकेत किया था, वह वस्तुतः पश्चिमी राष्ट्रों के प्रति सोवियत राष्ट्र की मानसिकता का यथार्थ चित्रण है। उनकी यह आशंका सदैव सोवियत नीति निर्माताओं को चेतावनी देती रहेगी कि अमरीका येन केन प्रकारेण पचास के दशक के एकाधिपत्य को लौटा लेना चाहता है और इस सन्दर्भ में उनकी घोषणा कि 'हम सम्पूर्ण शक्ति के साथ ऐसी प्रत्येक अमरीकी रणनीति का मुँहतोड़ जबाब देते रहेंगे।' भी काफी महत्वपूर्ण है।

अमरीका द्वारा एम. एक्स. प्रक्षेपास्त्र पश्चिमी यूरोप में स्थापित करने का निश्चय, पश्चिम जर्मनी, ग्रेट ब्रिटेन सदृश रूढ़िवादी पश्चिम यूरोपीय राष्ट्रों द्वारा विरोध तथा ब्रेजनेव की अन्त्येष्टि पर राष्ट्रपति रीगन का स्वयं मस्कवा न जाना भावी अमरीकी-रूसी सम्बन्धों की जो दिशा बता रहे हैं उनसे यही निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि यूरी आन्द्रोपोव के मनोनयन को अमरीकी नीति निर्माता सोवियत नीतियों में गुणात्मक परिवर्तन का संकेत नहीं मानते हैं। गैस पाइप लाइन के पुर्जों के निर्यात पर लगाये गये प्रतिबन्ध को हटाने की घोषणा का उद्देश्य वस्तुतः यूरी आन्द्रोपोव को सम्बन्धी बनाना कम अपने पश्चिम यूरोपीय राष्ट्रों के रिश्तों में खिचाव दूर करना ज्यादा है। सोवियत संघ द्वारा पोलैण्ड में लेक वालेसा की रिहाया की मौन सहमति, अफगानिस्तान में राजनीतिक हल पर पाकिस्तान से वार्ता की पेशकश अथवा चीन के साथ सम्बन्ध सामान्य बनाने के लिए चीनी अन्त्येष्टि मंडल के नेता हुआंग हुआ और यूरी आन्द्रोपोव के बीच वार्ता आदि इन राष्ट्रों के साथ सोवियत सम्बन्धों में किसी गुणात्मक परिवर्तन का संकेत कर रहे हैं। वास्तव में सोवियत संघ अफगानिस्तान में अपने उलझाव को राजनीतिक स्तर पर ले जाकर यह आश्वासन खोज रहा है कि अफगानिस्तान एक सीमा तक उसका परोक्ष रूप से प्रभाव क्षेत्र मान लिया जाय। अभी हाल ही में संयुक्त राष्ट्र संघ में सोवियत संघ के प्रतिनिधि ने कुछ इसी तरह के विचार व्यक्त किये थे। चीन से सम्बन्ध सामान्य करने की दिशा में पहल करके भी यूरी आन्द्रोपोव अमरीका-चीन के सम्बन्धों में ताइवान को अधुनातन एफ-15 दिये जाने के अमरीकी निर्णय से आये तनाव का फायदा उठाना चाहेंगे। यद्यपि इस बात की सम्भावना से इन्कार नहीं किया जा सकता है कि अमरीका सोवियत-संघ की इस अभीप्सा को नाकामयाब करने के लिए कम्यूनिस्ट चीन के सैन्य आधुनिकीकरण अभियान में आयी तकनीकी बाधाएं उठा लें और नैटो गठबन्धन के अपने पश्चिम यूरोपीय मित्र राष्ट्रों को अत्याधुनिक शस्त्रों के निर्यात का मार्ग प्रशस्त कर दे। वस्तुतः इस समय की जटिल अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियों में अमरीकी राष्ट्रपति रोनाल्ड रीगन की एम एक्स. योजना के क्रियान्वयन हेतु अमरीकी कांग्रेस जिस तरह न चाहते हुए भी अपनी स्वीकृति दे चुकी है उससे इतना तो अनुमान लगाया जा सकता है कि अमरीका पारम्परिक सामरिकता के रूसी सैन्य बल से अत्यन्त चिन्तित हो उठा है और उसे एस. एस-20 और एस. एस-16 से अपने पश्चिम यूरोपीय सैन्यक्षेत्र की सुरक्षा पर भारी खतरा महसूस होने लगा है इसीलिए सम्भवतया पश्चिम जर्मनी और ग्रेट ब्रिटेन की सरकारें भी इनके विरोध में मुखर नहीं हो रहीं हैं। सच तो यही प्रतीत होता है कि सोवियत संघ और अमरीका विश्व में अपने-अपने प्रभावक्षेत्र को बढ़ाते रहने में कृत संकल्प हैं। एम. एक्स. प्रक्षेपास्त्रों के प्रस्थापन के अमरीकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निर्णय की आलोचना में सोवियत रक्षा मंत्री ने जो दिशा संकेत दिया उनसे यह निष्कर्ष निकालना अनुचित नहीं होगा कि सोवियत भी एम. एक्स. निर्माण प्रारम्भ कर सकते हैं। वस्तुतः ब्रेजनेव की मृत्युकालीन कमजोर विदेश नीति ओर ढुलमुलपन को यूरी आन्द्रोपोव का नवीन नेतृत्व ज्यादा समुचित ढंग से चला सकने के लिए सन्नद्ध हो सकता है। पोलैन्ड में लेक वालेसा की लम्बे समय की नजरबन्दी को समाप्त करने के पीछे पोलैन्ड वासियों के मन में सोवियत संघ के प्रति पनप रहे दुर्भावनापूर्ण विचारों को कम करना ही है। यूरी आन्द्रोपोव और ब्रेजनेव की नीतियों में अधिक अन्तर की आशा इसलिए नहीं की जा सकती कि ब्रेजनेव ने उत्तराधिकार में आन्द्रोपोव को कई अधूरे कार्य दिये हैं और उनसे गुणात्मक विचलन रूसी राष्ट्रवाद के लिए अपमानजनक होगा और यदि कहीं यूरी आन्द्रोपोव ख्रुश्चेव की तरह अपने पूर्ववर्ती ब्रेजनेव की नीतियों को पूर्णतया उलट कर चलने लगेंगे तो कट्टर साम्यवादी उन्हें अपदस्थ करके किसी अन्य को मनोनीत करने में संकोच नहीं करेंगे और उनका भी वही हश्र हो सकता है जो स्टालिन की नीतियों में लचीलापन लाने का प्रयत्न कर रहे ख्रुश्चेव का हुआ था। इस सम्बन्ध में यूरी आन्द्रोपोव के व्यक्ति चरित्र का विश्लेषण भी अत्यावश्यक है। के. जी. बी. के निदेशक पद पर रहते हुए उन्होंने जिस तरह की कट्टरता का परिचय दिया था वह उनके व्यक्तित्व का महत्वपूर्ण अंग है उन्हीं के कार्यकाल में के. जी. बी., सी. आई. ए. और ब्रिटिश सीक्रेट सर्विस के भीतर अपने डबल क्रास एजेन्ट घुसाने में सफल हुई थी और अनेक देशों (यथा मिस्र) में रूसी हितों पर चोट पहुँचते देख के. जी. बी. ने अनेक राष्ट्रीय सरकारों को अपदस्थ करने का अमरीका सदृश खेल शुरू किया था इसलिए हमें यही मानकर चलना चाहिए कि सोवियत विदेश नीति के बारे में निर्णय लेते हुए यूरी आन्द्रोपोव सोवियत हितों को सर्वप्रमुखता देंगे और ब्रेजनेव के हस्तक्षेपवाद की नीति में कोई परिवर्तन नही लायेंगे और सम्भावना तो यह भी है कि अपने पश्चिमेशियाई सीमा पर लेबनान में शान्ति स्थापना के नाम पर धँस आयी अमरीकी, इतालवी और फ्रांसीसी सेनाओं की काट हेतु सीरिया में 1977 की सैन्य सन्धि की शर्तों के अनुरूप अपनी फौजें उतार दे क्योंकि सोवियत संघ यह तो कभी बरदाश्त नहीं करेगा कि अमरीकी हथियारों की ताकत पर इस्राइल फिलिस्तानी मुक्ति सेना सदृश सीरियाई सेनाओं को भी रौंदता फिरे। पश्चिमेशिया में इस्रायली सेनाओं ने अमरीकी हथियारों का प्रयोग कर जिस तरह बेक्का घाटी में लगायी गयी सैम-6 मिसाइलों को नेस्तनाबूद कर सोवियत सैन्यास्त्रों की विश्वसनीयता सन्दिग्ध कर दी है, सोवियत संघ पुनः ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति नहीं होने देगा। देखा जाय तो अब सोवियत संघ के और भी आक्रामक बन जाने की सम्भावनाएँ अधिक हैं। भारत-सोवियत सम्बन्धों में यद्यपि सोवियत पोलित ब्यूरो में भारत परिचित चेहरे एक-एक करके समाप्त हो रहे है फिर भी अन्तर्राष्ट्रीय शक्ति सन्तुलन में जिस तरह पाकिस्तान और चीन के गठबन्धन से अमरीका सोवियत संघ को घेरने का प्रयास कर रहा है उसको निष्प्रभावी करने के लिए सोवियत संघ और भारत का एक दूसरे के प्रति झुकाव कम नहीं होना चाहिए और यही आशा की जानी चाहिए कि पूर्व सदृश सम्बन्धों की मधुरता बनी रहेगी। ■

VISIT WRITE OR RING 52384

ASIA BOOK CO.

9, University Road, Allahabad.

BOOKS FOR ALL COMPETITION'S

1.	O. P. Malaveya	: Modern Approch to General English	15.00
2.	ओम प्रकाश मालवीय	: आधुनिक हिन्दी निबन्ध	8.00
3.	ओम प्रकाश मालवीय	: सामान्य हिन्दी	10.00
4.	G. N. Ray Chaudhary	: English Grammer	40.00
5.	डॉ एम० पी० श्रीवास्तव	: प्राचीन भारतीय संस्कृति, कला और दर्शन	

● अन्य महत्वपूर्ण प्रकाशन—

6.	डॉ. एम० पी० श्रीवास्तव	: समाज कार्य	25.00
		: पी० सी० एस० परीक्षा की सभी अन्य विषयों की गाइडें और पेपर्स जनवरी 1983 तक उपलब्ध।	

नोट : पुस्तकों के लिए आर्डर करते समय 10/- रु. अग्रिम मनीआर्डर द्वारा भेजें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय विदेश नीति : ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में (1)

डॉ. आलोक पन्त*

प्रस्तुत लेख में भारतीय विदेशनीति के विविध पक्षों की विश्लेषणात्मक एवं सैद्धांतिक व्याख्या प्रस्तुत की गयी है। इसके प्रथम खण्ड में विदेशनीति के परिवर्तनशील आयामों, स्वतन्त्रता पूर्व भारतीय विदेशनीति के गतिशील चरित्र, सन् 1947 में अन्तर्राष्ट्रीय समीकरण व शक्तियां एवं इनके पारस्परिक सम्बन्धों की ऐतिहासिक अनिवार्यता को तलाशने की कोशिश की गयी है। इसी खण्ड में ही, भारतीय विदेशनीति के प्रमुख निर्धारक तत्व एवं नेहरू युग में इसके धनात्मक एवं ऋणात्मक रूपों को भी रेखांकित किया गया है।

कैसे सन् 1964 में भारतीय विदेशनीति में गुणात्मक एवं मात्रात्मक बदलाव आता है और कैसे यह परिवर्तन अन्तर्राष्ट्रीय बहुध्रुवीय राजनीतिक दबावों एवं उप-महाद्वीपीय परिवर्तनों के फलस्वरूप भारत-रूस मैत्री संधि में विकसित होता है? कैसे श्रीमती गांधी के नेतृत्व में भारतीय विदेशनीति को एक शक्तिशाली क्षेत्रीय देश की विदेशनीति के रूप में मान्यता प्राप्त हो जाती है—और इसी क्रम में गुटनिरपेक्षता, क्षेत्रीय पहचान एवं पड़ोसी राष्ट्रों से मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध कैसे हमारी विदेश-नीति के अभिन्न अंग बन गये? नवें दशक तक आते-आते भारतीय विदेशनीति के सामने प्रस्तुत चुनौतियां क्या हैं? अंततः अपनी समग्रता में भारतीय विदेशनीति जनहित को स्वर देने में सक्षम हो सकी है या नहीं? ये कतिपय प्रश्न है जो आगामी अंक में प्रकाशित द्वितीय खण्ड में लगातार ठोस तर्कों के माध्यम से उलझ व सुलझ रहे हैं।

विदेश नीति के अध्ययन के पूर्व यह जानना आवश्यक है कि विदेश नीति क्या होती है, क्यों होती है, और किस लिए होती है? परम्परागत अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में विदेश नीति प्रमुखतः एक राष्ट्र द्वारा अन्य राष्ट्रों के साथ युद्ध, शान्ति, व्यापारिक सम्बन्ध एवम् तटस्थता की स्थितियों में आवश्यक सम्बन्ध स्थापित करने की प्रक्रिया होती थी। यह प्रक्रिया निर्धारित परम्पराओं पर आधारित थी और एक सरल तथा स्पष्ट समीकरण के रूप में होती थी। पर, 19वीं शताब्दी से राष्ट्रों के मध्य सम्बन्ध स्थापित करने का महत्व और आवश्यकता आकस्मिक न रहकर एक दैनिक प्रक्रिया बनती गई। राष्ट्र अपनी अनेक आवश्यकताओं के लिए एक दूसरे पर अधिक आश्रित होते गये; साथ ही राजनीति अमूर्त संस्थाओं का अध्ययन न रहकर राजनीतिक व्यवहार और सम्पूर्ण राजतीतिक व्यवस्था को समझने की एक व्यावहारिक प्रक्रिया बन गई। जिस प्रकार एक राजनीतिक व्यवस्था के विभिन्न अंग आपस में गत्यात्मक सम्बन्ध निर्धारित करते हैं उसी प्रकार अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था में विभिन्न राजनीतिक इकाईयों के मध्य जैविक व गतिशील सम्बन्ध निर्धारित होते है। कहने का तात्पर्य यह है कि राष्ट्र की आन्तरिक स्थिति और अवस्था उसके अन्य राष्ट्रों के साथ सम्बन्धों को प्रभावित करती है। आन्तरिक और बाह्य परिवेश और स्थितियों के मध्य एक कड़ी का सम्बन्ध है। इस कारण समकालीन राजनीति शास्त्री यह मानते हैं कि एक राष्ट्र की आर्थिक शक्ति और सम्भावनाएँ, उसकी सुरक्षा क्षमता, उसकी राजनीतिक और सैद्धान्तिक प्राथमिकताएँ विदेश नीति के निर्धारण में प्रमुख हो जाती हैं। इससे स्पष्ट है कि किसी भी

*प्रवक्ता, राजनीति शास्त्र विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश की विदेश नीति को उसकी आन्तरिक आवश्यकताओं के अनुरूप ही ढलना होता है अर्थात राष्ट्रीय सुरक्षा व राष्ट्रीय संगठन की अनिवार्यता एवम् आर्थिक विकास और सामाजिक परिवर्तन के आदर्श किसी भी राष्ट्र के लिए उसकी अभीष्ट भूमिका को निर्धारित करते हैं। सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि इन विभिन्न आवश्यकताओं का सही चयन कोई राष्ट्र या इसका नेतृत्व किस सीमा तक कर पाता है और उनमें सामाँजस्य स्थापित करने में कहाँ तक सफल हो पाता है।

सामान्यतः एक देश के विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय प्रसंगों में उसके मत उसकी विदेश नीति की अभिव्यक्ति के रूप में लिये जा सकते हैं। यह मत उसके तात्कालिक आन्तरिक आवश्यकताओं, दूरगामी आकांक्षाओं एवं तात्कालिक संकट तीनों से निर्धारित होते हैं। किसी भी देश का सामान्य झुकाव किसी एक निर्णय द्वारा निर्धारित नहीं किया जा सकता है। वैदेशिक झुकाव एक समग्र प्रक्रिया हो जाती है जिसमें तात्कालिक उद्देश्य, विकास की अनिवार्यतायें, राष्ट्रीय चरित्र सभी प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में निहित होते है। राष्ट्रों का अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था के ईकाई रूप में आचरण तीन प्रकार का देखा गया है। ये हैं (क) अलगाव एवं पृथक्करण (ख) गुट-निरपेक्षता (ग) संधियाँ एवं समझौतों के द्वारा सक्रिय भागीदारी। यहाँ ये भी पूछा जा सकता है कि किन परिस्थितियों में कोई शासन व्यवस्था उपरोक्त में से कोई एक स्थिति का चयन करती है। इस चयन की सफलता में आन्तरिक और बाह्य परिस्थितियों की क्या भूमिका है इनका समाकलन भी महत्वपूर्ण होता है। अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था में प्रभुत्व अथवा अधीनता, क्षेत्रीय नेतृत्व अथवा अन्तर्राष्ट्रीय नेतृत्व अन्य देशों एवं शक्तियों का किसी भी राष्ट्र की विदेशनीति की स्वायत्ता पर अपना प्रभाव डालते हैं। निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता हैं कि किसी राष्ट्र की विदेशनीति, अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था के सन्दर्भ में सामान्यतः उस राष्ट्र विशेष की शक्ति द्वारा राष्ट्रीय झुकाव तथा सामाजिक-आर्थिक आवश्यकताओं एवं राष्ट्र की भौगोलिक स्थिति द्वारा निर्धारित होती है। उदाहरणार्थ, भारत की भौगोलिक स्थिति ऐसी है कि तीन ओर समुद्र से घिरे होने के कारण हिन्द महासागर में किसी भी परिवर्तन अथवा गतिविधियों के प्रति भारत सदैव सचेत रहेगा। ब्रिटिश शासन काल से ही ब्रिटेन का हिन्द महासागर पर पूर्ण प्रभुत्व था क्यों कि माल परिवहन के लिये ब्रिटेन के संदर्भ में इस क्षेत्र की सुरक्षा अनिवार्य थी। इस रूप में आज भी हिन्द महासागर में घटित परिवर्तनों के प्रति हमारा सहज ध्यान देना समझा जा सकता है। उत्तर में- सोवियत संघ और चीन- दो विशाल राज्य और दोनों ही अपेक्षाकृत शक्तिशाली, हमारी सीमा निर्धारित करते हैं। आंग्ल काल में अफगानिस्तान को ब्रिटेन ने इसीलिये 'अंतस्थ राज्य, (बफर स्टेट) के रूप में अपनाया। चीन के संदर्भ में मैक मोहन लाइन के समझौते (1914) में भी तिब्बत को भारत चीन के मध्य एक (बफर स्टेट) अंतस्थ राज्य के रूप में रखा गया। साथ ही हिमालय पर्वत में नेपाल, भूटान और सिक्किम राज्यों की वैदेशिक नीति अंग्रेजों ने अपने हाथों में रखी। बाह्य जगत से आंग्ल युग में हमारा सम्पर्क मुख्यतः इन्हीं राज्यों से होता था। यह कहा जा सकता है कि प्रथम महायुद्ध के पश्चात राष्ट्र संघ में भारत की भूमिका एवं विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में भारत का योगदान भी तो वैदेशिक नीति में आयेगा, सतही रूप से सही है। पर, यह ध्यान रखना आवश्यक है कि भारत की यह भूमिका आंग्ल राष्ट्रहितों के संदर्भ में ही निर्धारित होती थी। इस रूप में विदेश नीति का पक्ष आंग्लहितों के अधीन था। अतः दो बातें स्पष्ट है कि स्वतंत्रता के पूर्व भारत की स्वतन्त्र विदेशनीति नहीं थी पर साथ ही उत्तर और दक्षिण में सम्बन्ध स्थापित करने के लिये विरासत में बहुत कुछ मिला था।

इस संदर्भ में राष्ट्रीय आंदोलन का उल्लेख भी आवश्यक है। कराँची के अधिवेशन (1931) के पश्चात कांग्रेस में उग्रवादियों का एक समूह हमें दिखाई पड़ता है जो प्रमुख अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं के प्रति काफी सजग था। साम्राज्य विरोधी, उपनिवेशवाद विरोधी, रंगभेद नीति विरोधी तथा प्रजातंन्त्र और समाजवादी आदर्शों का समर्थन इस गुट की एक समान नीति रही। इस समूह का नेतृत्व पंडित जवाहर लाल नेहरू स्वयं कर रहे थे। और यह निर्विवाद है कि अन्तर्राष्ट्रीय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थितियों से उत्पन्न राष्ट्रीय मानसिकता की अभिव्यक्ति पूर्णतः नेहरू के व्यक्तिगत मत और सम्मत पर आधारित थी। इसी कारण अनेक पाश्चात्य एवं भारतीय विदेश-नीति विशेषज्ञ यह मानते हैं कि भारतीय विदेशनीति की सही समझ नेहरू के व्यक्तित्व की समझ पर निर्भर करेगी। नेहरू, जिन्होंने स्वतन्त्रता आंदोलन में सामाजिक और आर्थिक पक्ष रखा था, (पूर्ण स्वराज के रूप में) उस समय रूस की औद्योगिक उन्नति से अत्यन्त प्रभावित थे। साथ ही इंगलैंड में विधि का अध्ययन करते हुए वे सुप्रसिद्ध 'फेबियन सोसाइटी' के सक्रिय सदस्य बन गये थे। जिसके कारण उनका वैचारिक दृष्टिकोण हेरल्ड लास्की, बर्नेड शॉ एवं वेब्बस् के समाजवाद से पूर्णतः प्रभावित रहा, इसका ज्वलंत उदाहरण 1930 के बाद से आजादी की संध्यावेला तक पंडित नेहरू का प्रत्येक भाषण है जिसमें सामंतवाद का विरोध और एक समाजवादी भारत की परिकल्पना का स्वप्न निहित था। यही समाजवादी नेहरू 1935 के पश्चात गांधी के सम्पर्क में आये और उनकी भारत की पहचान में भारतीयता का दृष्टिकोण हम उजागर होते हुए देखते है। उनकी पुस्तक 'भारत की खोज' इसी बात का द्योतक है अतः 1946 में जब प्रथम अन्तरिम सरकार का गठन हुआ तो विदेशी मामलों का पद गर्वनर जनरल की काउंसिल में सम्हालते हुए 7 सितम्बर 1946 को उन्होंने कहा, "हमारी इच्छा है जहाँ तक सम्भव हो वर्तमान गुटों की शक्ति प्रधान राजनीति से सम्बद्ध न हो, हमारा विश्वास शांति और स्वतंत्रताओं की अवधारणाओं के प्रति दृढ़ है और हम चाहते हैं कि उपनिवेशों का स्वतंत्र होना और शोषण का अन्त शीघ्र सम्भव हो पाये। स्वतंत्र भारत एक ऐसे विश्व के लिये सक्रिय रहेगा जो शोषण एवं प्रभुत्व की भावनाओं से मुक्त हो।" आगामी वर्ष उन्होंने प्रथम प्रधानमंत्री के पद के अतिरिक्त विदेशी मामलों का पद भी स्वयं ग्रहण किया और 27 मई 1964 तक विदेशी मामलों में अंतिम निर्णायक वही रहे। इसी कारण भारतीय विदेशनीति के सभी टीकाकार नेहरू को भारतीय विदेश-नीति का निर्धारक, निर्माता, टीकाकार और व्याख्याकार सब कुछ मानते है। इससे यह भाव प्रगट हो सकता है कि व्यक्ति विशेष ही विदेशनीति में महत्वपूर्ण है पर ऐसा होता नहीं। 1947 में विश्व की स्थिति जो थी उसकी भी हमारी विदेशनीति के निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका रही।

1947 का विश्व शक्ति प्रधान दो गुटों में बँटा था। जिनके मध्य प्रतिस्पर्धा और संघर्ष की स्थिति शीतयुद्ध के रूप में अभिव्यक्त हुई। इस युद्ध में सफलता के लिये दोनों ही खेमें अपने समर्थक व राज्यों की संख्या में विस्तार चाहते थे और इसके लिये परोक्ष रूप से विभिन्न शस्त्रों का प्रयोग उन्होंने किया जैसे वैदेशिक आर्थिक सहायता, सैनिक सहायता, विभिन्न स्वतंन्त्रता आंदोलनों का समर्थन, यानी महाशक्तियाँ अपनी पारस्परिक शंकायें एवं भयों को अपनी लड़ाई के लिये नवमुक्त राष्ट्रों पर लादना चाहते थे जिसके परिणाम-स्वरुप नवमुक्त राष्ट्र अनिश्चतता, अस्थिरता और असुरक्षा की स्थिति में अपने को प्रारम्भ से पाने लगे। नवयुक्त राष्ट्र जिनमें भारत भी था, इन विषम परिस्थितियों में अपनी अस्मिता की खोज कर रहा था। बाह्य जगत की विषम परिस्थितियों के मध्य अपनी भूमिका निर्धारित करना आंतरिक जटिलताओं के कारण और भी कठिन था। एवं नवराष्ट्र के रूप में हमें मिला था-एक जर्जर आर्थिक ढांचा, एक सामाजिक शृंखलात्मक व्यवस्था जिसके दैनिक जीवन में जाति और रूढ़ियों की महत्वपूर्ण भूमिका थी और राजनीतिक स्तर में 552 छोटे बड़े राज्यों का एकीकरण करना था। इनके अतिरिक्त साम्प्रदायिक आधार पर देश के बँटवारे के कारण 70 लाख से अधिक शरणार्थियों के लिये आवास-निवास और भोजन की समस्या भी थी। नवनिर्मित राज्य पाकिस्तान के बनने के कारण पुरानी हिन्दू-मुस्लिम समस्या गुणात्मक रूप में परिवर्तित होकर अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में हिन्द-पाक समस्या के रूप में उभरी। वास्तव में पाकिस्तान मुस्लिम साम्प्रदायिकता के भारतीय राष्ट्रवाद के विरुद्ध गठबंधन के फलस्वरूप बना था। अतः प्रारम्भ से पाक की विदेश-नीति का प्रमुख स्वर भारत विरोधी ही बना रहा और भविष्य में भी इसके कम होने की आशा नहीं। इसी कारण सभी विदेशी समीक्षकों ने भारत की विदेश-नीति की प्रमुख समस्या प्रारम्भ से ही पाकिस्तान से ही सम्बन्ध सुधारने के रूप में प्रस्तुत की। कालान्तर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में हम देखते हैं कि जहाँ भारत की विदेशनीति एशियाई पुनरोत्थान का प्रतीक बनी वहाँ पाकिस्तान साम्राज्यवादी षड्यंत्रों का अड्डा बना जिसमें आगे चलकर साम्यवादी चीन के निरन्तर बढ़ते हस्तक्षेप ने भारत-पाक समस्या को और भी जटिल बना दिया। पाकिस्तान को भारत विरोधी दृष्टिकोण अपनाने व उसके षड्यंत्रकारी शत्रुता के भाव को जीवित रखने का दायित्व ब्रिटिश साम्राज्यवाद की जगह अमेरिकी साम्राज्यवाद और चीनी साम्यवाद ने ले लिया। ये भी कहना आवश्यक है। नवभारत में जो साम्प्रदायिक हिंसा पनपी उसके संदर्भ में इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि यह सोचना कि भारत में आजादी अहिंसा और शांतिपूर्ण ढंग से हासिल हुई पूर्णतः निराधार है। साम्प्रदायिक दंगों का जो सिलसिला चला उसने आंतरिक और बाह्य प्रत्येक क्षेत्र को ठोस रूप से प्रभावित किया है। इन सभी स्थितियों के अतिरिक्त कांग्रेस दल का आंतिरिक गठबंधन भी हमारी विदेशनीति के निर्धारण में महत्वपूर्ण था। नेहरू एवं उनके समर्थकों को यदि अपना नेतृत्व सुरक्षित रखना था तो निश्चित था कि दोनों ध्रुवों के मध्य में अपनी नीति निर्धारित करनी थी। कांग्रेस में (जैसा कि स्पष्ट है) दक्षिण पंथी ग्रुप हावी था अतः साम्यवादी खेमे में जाने का प्रश्न ही नहीं उठता था इन चुनौतियों को देखते हुए अपने अतीत की गरिमा को समक्ष रखते हुए भारत एक नवमुक्त राष्ट्र के रूप में उन्मुक्त भूमिका का इच्छुक था पर इस ऐच्छिक लक्ष्य को इस तथ्य के संदर्भ में रख के देखने को भी भारत बाध्य था कि आर्थिक रूप से वह स्वतंत्र नहीं था और आर्थिक विषमतायें मानव की तरह राष्ट्र को भी प्रायः समझौता करने के लिये बाध्य करती हैं। संक्षेप में इस समग्रता के कारण भारतीय विदेश नीति के निम्नलिखित पहलू 1947 के समय सामने आये—

(क) विश्व में गुटों के प्रति निरपेक्षता

(ख) निकटवर्ती राज्यों से मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध

(ग) आपसी मतभेदों में सीमा सम्बन्धी या अन्य समझौते की नीति की पक्षधरता

(घ) शीत युद्ध में हस्तक्षेप न करना और शांति एवं अन्तर्राष्ट्रीय समझदारी को बढ़ाने के प्रयास जारी रखना।

विदेश नीति का कोई पक्ष आकस्मिक सामने नहीं आता, वह परिस्थितियों द्वारा शनैः-शनैः विकसित होता है और एक स्पष्ट समीकरण के रूप में भी उसे दर्शाया एवं मूल्यांकन नहीं किया जा सकता है। साधारणतः स्थायी और अस्थायी तत्वों में बाँट कर विदेश नीति दर्शायी जाती है। स्थायी में राष्ट्रीय सुरक्षा एवं अखंडता के प्रश्न आते हैं—इस सम्बन्ध में हम कह सकते है कि विदेश नीति प्रत्येक राष्ट्र की स्पष्ट होती है। पर अस्थायी तत्वों का सम्बन्ध राष्ट्रहित से होता है और राष्ट्रहित प्रायः राष्ट्रहित न होकर शासकों का हित हो जाता है।

पं. नेहरू ने विदेश नीति स्पष्ट करते हुये कहा कि यह हमारी गृहनीति द्वारा निर्धारित होगी, और हमारी गृहनीति भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की नीति नहीं और न ही पश्चिम के पूँजीवादी समाजों का अनुकरण करना, सोवियत संघ हमारा निकटवर्ती राष्ट्र है इसलिए उससे समीप के सम्बन्ध स्थापित करने ही होंगे पर सोवियत संघ और संयुक्त राष्ट्र अमेरिका का समूहगत लड़ाई में हम निरपेक्ष रहेंगे। गुट-निरपेक्षता उस समय विशेष में निश्चय ही एक सार्थक कदम था। और आज भी यह नीति इस रूप में सफल कही जा सकती है कि लगभग 98 राज्य यानि दो तिहाई राष्ट्र गुट-निरपेक्षता को अपनी-अपनी विदेश नीति में अंगीकार कर चुके है। प्रायः पश्चिमी लेखकों ने गुट-निरपेक्षता को आर्थिक कारणों से प्रभावित दर्शाया है। ये सही है कि भारत को इस नीति के कारण आर्थिक और तकनीकि सहायता दोनों ही खेमों से मिलती रही पर जैसा कि कृष्णा मेनन् ने माईकेल ब्रीचर के साथ अपने अनेक साक्षात्कारों में स्पष्ट रूप के कहा है कि हम इस नीति को अपनाते समय मात्र आर्थिक दृष्टिकोण से प्रेरित हुए हो ऐसा नहीं है। और ये सही भी है। जैसा कि पूर्व कहा गया है कि यह निर्णय आन्तरिक, बाह्य, ऐतिहासिक समीकरण द्वारा प्रेरित हुआ था। सामान्यतः गुटनिरपेक्षता को बान्डुग के सम्मेलन तक नकारात्मक गुटनिरपेक्षता के रूप में प्रदर्शित किया जाता है तत्पश्चात् सकारात्मक गुटनिरपेक्षता के रूप में।

प्रारम्भ में ही यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि विदेश नीति को ठोस राष्ट्रीय हितों के आधार पर विभिन्न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशों के साथ समय-समय पर जो जूझना पड़ा वह समय विशेष में व्याप्त आन्तरिक और बाह्य परिस्थितियों द्वारा ही स्पष्ट होता है। उदाहरण के लिए भारत-पाकिस्तान के सम्बन्ध एवं भारत-चीन सीमा विवाद,युद्ध व कूट-नीति दोनों के निपटने में अलग-अलग तरीके अपनाने पड़े इसी प्रकार हमारे रूस और अमेरिका के साथ संबन्ध उनकी विदेश नीति के संदर्भ में भी बदले एवं बने। कहने का तात्पर्य है कि अन्य राष्ट्रों के साथ हमारे सम्बन्धों की विस्तृत विवेचना यहाँ अलग से संभव नहीं है, क्योंकि उनकी समीक्षा के लिए प्रत्येक के साथ सम्बन्धों को पृथक करके ही प्रस्तुत किया जा सकता है। अतः हम विदेश नीति की सामान्य अभिव्यक्ति जो नेहरू युग में हुई, उसका मात्र एक सैद्धांतिक पक्ष प्रस्तुत कर पायेंगे। साधारणतः यह विदेश नीति के महत्वपूर्ण स्तम्भ नेहरू युग में गुट-निरपेक्षता एवं पंचशील माने गये हैं। गुट-निरपेक्षता यद्यपि भारतीय विदेश नीति की एक विशिष्ट पहचान है फिर भी यह मानना पड़ेगा कि गुट-निरपेक्षता सम्पूर्ण विदेश नीति का पर्याय नहीं है। यद्यपि आज गुटनिरपेक्ष आन्दोलन एक नवीन शक्ति के रूप में विश्व राजनीति में उभरा है, फिर भी हम यह नहीं कह सकते है कि यह कोई ऐसी अवधारणा है जिसके आधार पर एक स्थायी अन्तर्राष्ट्रीय गुट का निर्माण किया जा सके। गुट-निरपेक्ष राज्यों में कोई राज्य दोनों गुटों प्रति निरपेक्ष आन्तरिक कारणों से हो सकता है। कोई अन्य समय विशेष में दोनों से आर्थिक सहायता लेने के लिए गुट-निरपेक्ष हो सकता है और कोई अन्यत्र गुट-निरपेक्षता को नवीन साम्राज्यवाद का विरोध करने के रूप में अपना सकता है। यद्यपि गुट निरपेक्षता में साम्राज्यवाद का विरोध स्पष्ट है और प्रायः सभी गुट निरपेक्ष राज्यों ने 1961 के बेलग्रेड के सम्मेलन में साम्राज्यवादी शोषण एवं रंग भेद शोषण का विरोध किया। परन्तु इससे यह निष्कर्ष नहीं निकल सकता कि वे सभी जो साम्राज्यवाद एवं रंग भेद नीति का विरोध करते हैं उन्हें गुटनिरपेक्ष की कोटि में रखा जा सकता है। उदाहरणार्थ-सोवियत संघ भी साम्राज्यवाद विरोधी है पर वह गुट-निरपेक्ष नहीं। भारत के संदर्भ में हम यह कह सकते है कि यह एक ऐसी नीति थी जिसका सैद्धांतिक आधार राष्ट्रीय आन्दोलन की विरासत थी तथा जिसका व्यावहारिक पक्ष तात्कालिक सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियों द्वारा निर्धारित हुआ। आर्थिक क्षेत्र में दरिद्रता को दूर करने के लिए एवं एक सशक्त औद्योगिक राज्य के रूप में नव-भारत के विकास के लिए आर्थिक और तकनीकी सहायता पश्चिमी देशों से ही सम्भव थी। यह ध्यान देने योग्य है कि हमारे राष्ट्र निर्माताओं ने विशेषतः नेहरू जी ने जिस नवभारत की परिकल्पना की थी, (नव औद्योगिक मंदिरों के रूप में) उनके लिए पूंजी तकनीकि पश्चिम के पूंजीवादी समाजों से ही सम्भव था। कामनवेल्थ की सदस्यता जो प्रायः आलोचना का कारण भी बनी वह एक सीमा तक पश्चिम पर हमारा आश्रय भी दर्शाती थी। नवभारत में विदेशी पूंजी नियोजन का पचास प्रतिशत से अधिक भाग ब्रिटेन का था। अतः यह कहना कि हम साम्यवादी गुट में शामिल हो सकते थे, पूर्णतः काल्पनिक प्रतीत होता है। वैसे भी स्टालिन की मृत्यु तक रूस से हमारे संबन्ध अच्छे नहीं थे। राजनीतिक रूप में एक मध्यम मार्ग अपनाना वास्तव में हमारी आन्तरिक नीति की अभिव्यक्ति थी। एशियाई तथा अफ्रीकी नवमुक्त राष्ट्रों का समर्थन, राष्ट्रीय आन्दोलन की विरासत थी। इस संदर्भ में यह भी कहा गया है (पश्चिमी टीकाकारों द्वारा) कि वैदेशिक क्षेत्र में दोनों महाशक्तियों से अलग रहने की भूमिका और एक विशिष्ट नीति युद्ध विरोधी रखना, भारत जैसे प्राचीन गौरवान्वित सभ्यता के लिए एक मनोवैज्ञानिक श्रेष्ठता की कृत्रिम भावना को सबल करता है क्योंकि इसके द्वारा यह अनुभव होता है कि हम किसी के अधीन नहीं और किसी से कम नहीं। पनिक्कर (Panikkar) जैसे प्रसिद्ध टीकाकारों का यह भी कहना है कि गुट-निरपेक्षता जो कि स्वतंत्रता का दूसरा नाम है वास्तव में हमारी सांस्कृतिक और धार्मिक मानसिकता की भी अभिव्यक्ति थी। अहिंसा भारतीय संस्कृति का एक अनिवार्य अंग है, साथ ही एक मध्यम मार्ग को अपनाना भी हमारी संस्कृति का अनिवार्य लक्षण रहा है। गुट-निरपेक्षता इन्हीं प्राचीन मान्यताओं की लयबद्धता थी। सामाजिक क्षेत्र में राष्ट्रीय आन्दोलन के दिनों से ही हमने विभिन्न जातियों तथा उप-जातियों को आश्वासन दे रखा था कि एक बहुलवादी शासन की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थापना होगी जिनमें विभिन्न धर्मों तथा सम्प्रदायों की विशिष्ट पहचान बनाये रखने की स्वतंत्रता होगी। अतः बाह्य सम्बन्धों में भी किसी एक सिद्धान्त का समर्थन आन्तरिक नीति के विरूद्ध होता। अतः सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक तीनों ही दृष्टिकोणों से दोनों ही गुटों के प्रति निरपेक्ष रहना भारत के हित में था। कोरिया के युद्ध के दौरान भारत ने संयुक्त राष्ट्र का समर्थन करते हुए इसके समापन में युद्ध के बंदियों की कमेटी में महत्वपूर्ण योगदान दिया। अन्तर्राष्ट्रीय क्षितिज में भारत की यह भूमिका काफी सराहनीय रही परन्तु इसी बीच कश्मीर की समस्या को लेकर पाश्चात्य शक्तियों ने जो पाकिस्तान का समर्थन प्रारम्भ किया उससे भारत के पश्चिम के साथ संबन्धों में निश्चित ही एक दूरी आयी। पाकिस्तान ने सन् 1954 में दक्षिण पूर्व एशिया सैनिक संघ की सदस्यता ग्रहण करके शीत युद्ध को, नेहरू जी के शब्दों में 'भारतीय उपमहाद्वीप में घसीट दिया' यह कदम मूलतः कश्मीर के मामले में सुरक्षा परिषद में अमेरिका समर्थन पाने के लिए था और ऐसा हुआ भी। संयुक्त राष्ट्र ने कश्मीर के लिए मतदान द्वारा फैसले का निर्णय दिया जबकि भारत का यह मत था कि मतदान के पूर्व पाकिस्तानी सेनाओं का सम्पूर्ण विवाद के क्षेत्र से इतना एक पूर्व अनिवार्य स्थित थी। इस बीच कश्मीर में बड़ी संख्या में मुसलमानों का आगमन भी होता रहा। सौभाग्यवश सुरक्षा परिषद के इस निर्णय को रूस ने अपने विशेष अधिकार का प्रयोग कर रद्द कर दिया। सन् 1953 ई. में स्तालिन की मृत्यु के बाद रूस के समर्थन के साथ भारत तथा रूस संबन्धों में सुधार का क्रम शुरू हुआ तथा अमरीका तथा भारत में तनाव का एक क्रम बनना शुरू होता है। अमेरिका के विख्यात कूटनीतिज्ञ जान फ़ास्ट्र डलिस ने गुट-निरपेक्षता को रूसी नीति के समर्थन के रूप में दर्शाया और यह कहा कि 'जो हमारे साथ नहीं वह हमारा शत्रु है' तत्पश्चात अमेरिका ने अप्रैल 1954 ई. में भारत चीन संबन्धी पंचशील के सिद्धान्तों की भी आलोचना की। सन् 55 में बान्डुंग (Bandung) का प्रसिद्ध सम्मेलन हुआ। प्रायः भारतीय विदेश नीति के संदर्भ यह एक मील सूचक-स्तम्भ के समान है। इसी सम्मेलन में गुट-निरपेक्षता का त्रिगुट-नेहरू, नासिर, टीटो, विश्व राजनीति में उभरे थे और यह भी स्पष्ट होने लगा था कि कालान्तर में भारत द्वारा प्रारंभ गुट-निरपेक्षता का सिद्धान्त एक सार्थक शक्ति के रूप में एक नवीन अन्तर्राष्ट्रीय आन्दोलन में परिणित हो सकता है। इस अवधि में नेहरू एशिया के नवयुक्त राष्ट्रों के नेता के रूप में उभरने सफल हुए। कालान्तर में गुटनिरपेक्ष आन्दोलन तो बढ़ा और 1961 तक आते-आते गुटनिरपेक्ष देशों का प्रथम सम्मेलन बेलग्रेड में संभव हो सका। परन्तु भारतीय विदेश नीति जो बहुत तेजी से उभरी थी उसमें विरोधाभास दिखने लगे। मुद्रास्फीतीकरण एवं पश्चिमी पूंजी की आवश्यकता ने दूसरी पंचवर्षीय योजना ने भारत को पश्चिम से ऋण लेने को बाध्य किया इस अवधि में स्वेज के संकट (1956) में मिस्र का समर्थन तथा इग्लैण्ड की आलोचना जहाँ भारत ने की' परन्तु वही हंगरी एवं पोलैण्ड में रूसी आक्रमणों की आलोचना नहीं की इससे पश्चिमी प्रेस में विशेषतः भारतीय गुट निरपेक्षिता की नीति को एक पक्षीय दर्शाया गया। यही आलोचना सन् 1961 में जब भारत ने गोवा पर आक्रमण किया तो और अधिक हुई। पश्चिमी प्रेस ने इसे भारतीय साम्राज्यवादी नीति के रूप में दर्शाया। 1960 के आते आते भारतीय आन्तरिक राजनीति में अनेक विरोधा-भास स्पष्ट होने लगे थे। स्वयं पं. नेहरू का राष्ट्रीय स्तर पर कांग्रेस दल पर नियन्त्रण भी घटने लगा था। 1959 में चीन के तिब्बती आक्रमण के कारण दलाई लामा और लाखों तिब्बतियों को भारत में शरण देने के कारण चीन से सम्बन्ध काफी बिगड़ चुके थे। सीमा विवाद अक्साई चीन के क्षेत्र को लेकर भी विस्फोटक रूप धारण कर चुका था। जो कि सन् 1962 में भारत चीन युद्ध के रूप में अभिव्यक्त हुआ। इस युद्ध के साथ-साथ हमारी विदेश नीति का एक अध्याय समाप्त होता है और एक प्रकार से नेहरू युग का अंत भी सन् 62 में ही हो चला था। लद्दाख और नेफा में हमारी बुरी हार जो हुई उसने हमें पश्चिमी राष्ट्रों से मदद माँगने के लिए बाध्य कर दिया। यानि गुटों के प्रति निरपेक्ष नहीं रह पाये स्वयं भारत में ही गुट निरपेक्षता की नीति के विषय में संदेह व्यक्त किये जाने लगे क्योंकि विदेश नीति का प्रथम दायित्व राष्ट्रीय अखण्डता सुरक्षा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत चीन युद्ध के बाद भारतीय विदेश नीति नेहरू की मृत्यु तक स्पष्टतः पश्चिमी राष्ट्रों की ओर झुक गयी थी। भारत अमेरिकी सम्बन्धों में अत्यन्त सुधार हुआ। पर नेहरू युग एक प्रकार से 1962 में ही समाप्त हो जाता है। इस पूरे युग में शनैः-शनैः गुटनिरपेक्षता का स्वरूप सैद्धांतिक रूप में विकसित हुआ और कोरिया, बांदूंग, संयुक्त राष्ट्र की महासभा, गोवा का संकट जसे प्रमुख मुद्दों में अभिव्यक्त हुआ। रिचर्ड एल. पार्क (Richard L. Park) ने भारतीय विदेशनीति को तीन भागों में बाँटा है। 1947 से 1954 तक जिसे आदर्श और उपलब्धि की संज्ञा दी है। भारत इस अवधि में अपनी आन्तरिक स्थिति के अनुरूप अधिक सफलता अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में पाने में हो सका। नेहरू नवएशिया की आवाज बन गये। और विश्व-शांति के प्रतीक के रूप में भी उभरे परन्तु विदेशनीति कीतात्कालिक चुनौतियों से नहीं निपट पाये। उदाहरणार्थ 1950 से तिब्बत पर घुसपैठ का सिलसिला चीन द्वारा जो चला उसे नहीं रोक सके। 1954 से 61 तक की अवधि नेहरू युग का दूसरा अध्याय है। यह विरोधाभासी भी था और सफल भी। इसमें 1959 तक सोवियत संघ और साम्यवादी चीन के साथ संबंध मधुर रहे। पर अमेरिका के साथ उतार चढ़ाव पूर्ण रहे। इसके बाद 1961 से 65 तक तक अवधि अनिश्चतता और अस्पष्टता की अवधि रही। इस अवधि में हम आर्थिक और सुरक्षा सम्बन्धी आवश्यकताओं के लिये सोवियत संघ और अमेरिका दोनों पर ही आश्रित हो चले। जिससे दोनों महाशक्तियों के दबाव भी हमें सहने पड़े।

विदेशनीति के क्षेत्र में सर्वाधिक कठिनाई मूल्यांकन सम्बन्धी होती है। यही कारण है कि भारतीय विदेश-नीति पर जितनी अधिक पुस्तकें हैं उतना ही अधिक मूल्यांकन है। प्रायः सभी पाश्चात्य लेखकों ने पाश्चात्य शासकों की तरह या तो तटस्थता शब्द को सीमित परिधि में समझने का प्रयास किया या इसे अवसरवादी नैतिक और स्पष्ट नीति के रूप में दर्शाया। अधिकांश भारतीय लेखकों में आज यह प्रवृति देखी जा रही है कि वे प्रचलित पाश्चात्य 'व्यवहारिक राजनीति' नवीन मॉडलों के सन्दर्भ में जटिल अवधारणाओं की सहायता से सफल अथवा असफल दिखाते हैं या यह कहना आवश्यक है कि पश्चिम की तरह हमारे यहाँ विदेशनीति में जनता की सक्रिय भागीदारी की परम्परा आज तक स्थापित नहीं हुई है अतः यह कहना कि जनमत पक्ष अथवा विपक्ष में हैं पूर्णतया अर्थहीन है। जहाँ अधिकांश जनसंख्या 35 वर्ष पश्चात भी जीवन की विषमताओं से जूझते रहने में ही जीवन का बड़ा भाग देती है वहाँ ये आशा करना कि हमारी विदेश नीति को जनमानसिकता की स्वीकृत मिल गयी है कोरी कल्पना होगी। साधारणतया यही कहा जा सकता है कि नेहरू युग में विदेशनीति भी शीत युद्ध की परिधि में घूमती रही और भारत महाशक्तियों के मध्य खाई पाटने का असफल प्रयास करता रहा क्योंकि न तो इसके लिये सामर्थ ही था ओर न ही साधन थे। अगर यह मानें कि विदेशनीति राष्ट्र हितों का पर्याय है तो भी यह प्रश्न बना रहता है—क्या राष्ट्रहित मात्र राष्ट्रीय सुरक्षा और राष्ट्रीय अखंडता बनाये रखने के रूप में परिभाषित किये जायेंगे? राष्ट्रहित के माने उन असंख्य लोगों की स्थिति में सुधार भी तो होगा जो शताब्दियों से अंधकार और रुढ़ियों से बंधे चले आ रहे थे। संक्षेप में पंडित नेहरु की विदेशनीति की मूल कमी यही रही कि उन्होंने विदेश नीति को तात्कालिक राष्ट्रहितों से नहीं जोड़ा। दूसरे शब्दों में हमें किस प्रकार की तकनीकी विज्ञान चाहिये, किस प्रकार के उद्योगों के लगाने से अधिकांश जनता की नौकरी मिलती, किस प्रकार का विकास का मॉडल हमारे समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप होता—इन सबका निर्धारण भी तो विदेशनीति राष्ट्रहितों के संदर्भ में किया करती है। क्या हमारी बढ़ती हुई आंकाक्षाओं का सिद्धान्त पूर्ण हो पाया? (THEORY OF RISING EXPECTATIONS) अर्थात बहुसंख्या का राष्ट्रहित पूर्ण नहीं हो सका और भारत की एशिया में कोई अस्मिता भी नहीं बन पायी। परन्तु इन अनेकानेक आलोचनाओं के होते हुए भी यह मानना पड़ेगा कि जहाँ गाँधी ने भारतीयों को भारत की पहचान से अवगत कराया वहीं नेहरू ने भारतीयों को विश्व की पहचान करवायी। ■

संदर्भिका

Seminar : Feb. 1975

Richard L Park ; Change and continuty.

J Bhanduopadhyay : Making of Indian F. Policy.

Michel Brecher : Nehrua Political blography.

K P.Mishra : Studies in Indian Foriegn policy.

S.P Verma & K.P.Mishra : Studies in Foriegn Policy of South Asia.

Annual No. : Economical Polo weekly 1976-1981

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—: आवश्यकता है :—

मैट्रिक उत्तीर्ण पटल-विक्रेताओं [काउन्टर सेल्समेन] एवं क्षेत्र-विक्रेताओं [फील्ड सेल्समेन] की जो हमारे गृह वितरण वैभागिक भंडारों [होम डिलवरी डिपार्टमेन्टल स्टोर्स] के लिये कार्य कर सकें।

यह योजना उन शहरों में जिनकी आबादी 10,000 या उससे अधिक है, वहाँ अविलम्ब प्रारम्भ हो रही है।

वेतन : 500 रु. एवं सरकारी नियमानुसार अन्य सुविधाएँ

अभ्यर्थी उपरोक्त स्थानों हेतु केवल अंग्रेजी तथा हिन्दी में ही आवेदन करें।

सम्पर्क सूत्र —

पंजाब सेविंग्स प्राइवेट लिमिटेड

रोहित हाउस, ग्राउण्ड फ्लोर

3, टॉलस्टॉय मार्ग, नई-दिल्ली-110001

फोन : 741150, 717827, 385616, 381116

ग्राम्स [Grams] : सर्विस फाइन [SERVICE FINE]

टेलेक्स [Telex] : 5032 NDOS IN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवम् एशियाई खेल 1982 : संक्षिप्त अवलोकन

■ शंकर घोष

19 नवम्बर 1982 को अपराह्न 3 बजे नई दिल्ली के जवाहर लाल नेहरू स्टेडियम में पचहत्तर हजार से अधिक दर्शकों की तालियों की गड़गड़ाहट के मध्य भारत के राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह ने नवम् एशियाई खेलों का उद्घाटन किया। इसके पश्चात् नवम् एशियाई खेलों के मशाल, को जिसे भारत की प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी प्रथम एशियाई खेलों के आयोजन स्थल, नेशनल स्टेडियम में प्रज्वलित कर चुकी थी, भारत के भूतपूर्व एथलीट गुरुबचन सिंह रंधावा लेकर मुख्य स्टेडियम आये। यह मशाल मिल्खा सिंह व कमलजीत सन्धु के हाथों से होते हुए बलबीर सिंह व डायना साइम्स को मिला। उन्होंने मुख्य स्टेडियम का चक्कर लगा कर नवें एशियाई खेलों को ज्योति को प्रज्वलित किया जो खेलों के दौरान रात दिन जलती रही। नवम् एशियाई खेलों में भाग लेने वाले 33 देशों के पांच हजार खिलाड़ियों की टीमों ने देवनागरी वर्णमाला के क्रम में स्टेडियम में मार्च-पास्ट में भाग लिया। सबसे आगे अफगानिस्तान की टीम थी और सबसे अन्त में, मेजबान देश होने के कारण, भारत की टीम थी। भारत की ऐथलीट गीता जुत्शी ने सभी सम्मिलित खिलाड़ियों की ओर से "खेल के गौरव और राष्ट्र की प्रतिष्ठा के लिये ....."शपथ ली। साथ ही में पण्डित रविशंकर द्वारा स्वरबद्ध नरेन्द्र शर्मा का गीत "अथ् स्वागतम्, शुभ स्वागतम् ..... शाश्वत सुविकसित इति शुभम्" एवं फिल्म सुपर स्टार अमिताभ बच्चन के स्वर में "वी वेलकम यू ....."से सारा स्टेडियम गूंज उठा।

16 दिनों तक चलने वाली इस खेल प्रतियोगिता की 21 स्पर्धाओं में भाग लेने वाले खिलाड़ियों में 199 स्वर्णपदक, 200 रजतपदक व 215 कांस्यपदक (वसे खिलाड़ियों को कुल 463 स्वर्णपदक, 464 रजतपदक व 503 कास्यपदक मिले) को जीतकर अपने देश की इज्जत और अपनी सफलता के लिये अथक होड़ चली। इन रोमांचक दिनों में किसी को सफलता मिली तो किसी को निराशा। "सदा आगे" अभियान में एशिया के खिलाड़ियों ने अपने खेल के स्तर में अभूतपूर्व सुधार का परिचय देते हुए 74 नये कीर्तिमान स्थापित किये। हालांकि इस दौरान एक भी ओलम्पिक व विश्व कीर्तिमान नहीं स्थापित हुआ। पिछले 31 वर्षों के आठ एशियाई खेलों में जापान के लम्बे एकाधिकार को समाप्त कर इसबार चीन ने प्रथम स्थान पाने का गौरव प्राप्त किया। चीन की महत्वपूर्ण उपलब्धि तैराकी, जिम्नास्टिक, बैडमिन्टन, नौकायन और भारोत्तोलन में रही। जापान को दूसरे स्थान से सन्तुष्ट रहना पड़ा। वह तैराकी, कुश्ती व साइकिल दौड़ में पूर्णतः हावी रहा। तृतीय व चतुर्थ स्थान क्रमशः द. कोरिया व उ. कोरिया को मिला। पिछले एशियाई खेलों में भारत के प्रदर्शन को देखते हुए इस बार भारत का प्रदर्शन निश्चय ही उल्लेखनीय था, परन्तु पदकतालिका में भारत को सम्मानजनक स्थान दिलाने में नवम् एशियाई खेलों में सम्मिलित किये गये तीन नये खेल—अश्वारोहण, गोल्फ व महिला हॉकी, जिनमें भारत को आधे से अधिक स्वर्णपदक मिले। नवें एशियाई खेलों में उत्कृष्ट खेल भावना व कौशल के लिये लगातार चौथी बार हैमर थ्रो के विजेता शिगेनोबू मुरोफोशी (जापान) को "सांग यांग ली कप" प्रदान किया गया। सीपक टकरा (मलेशिया) व कबड्डी (भारत) को इस खेल प्रतियोगिता के दौरान खेलकर प्रदर्शित किया गया।

4 दिसम्बर 1982 को जवाहर लाल नेहरू स्टेडियम में एशियाई खेल महासंघ के अध्यक्ष भालेन्द्र सिंह ने नवम् एशियाई खेलों के शुभंकर हाथी शावक 'अप्पू' की विदाई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर तथा खेलों के मशाल को बुझाकर दसवें एशियाई खेलों के लिये सिओल (द. कोरिया) में 1986 में पुनः मिलने का वादा कर नवम् एशियाई खेलों के समापन की विधिवत घोषणा की। नवम् एशियाई खेलों के आयोजन की प्रशंसा करते हुए अन्तर्राष्ट्रीय ओलम्पिक समिति के अध्यक्ष जुआन अंतोनियो सामारांच ने कहा "फैंटास्टिक, भारतीय आयोजकों को मेरी बधाई।" साथ में यह भी कहा कि "अब भारत को ओलम्पिक की तैयारियों का अध्ययन प्रारम्भ कर देना चाहिए। भारत यदि चाहे तो 1992 में 25वें ओलम्पिक को आयोजित कर सकता है।"

■ नवम् एशियाई खेल : विजय एवं सफलताएं

● **तीरंदाजी**—दिल्ली विश्वविद्यालय ग्राउन्ड में आयोजित तीरंदाजी प्रतियोगिता में 10 देशों ने भाग लिया। इसमें नौ एशियाई खेल रिकार्ड ध्वस्त हुए और एक विश्व रिकार्ड बराबर हुआ। पिछले विजेता जापान को चौथे स्थान पर ढकेल कर द. कोरिया ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। भारत ने आठवां स्थान अर्जित किया।

(1) टीम स्पर्धा—पु. : द. कोरिया; म. : द. कोरिया। (2) व्यक्तिगत स्पर्धा—पु. : हिरोशो यामामोटो (जा.); म. : किम हिन हो (द. को.)।

● **बैडमिन्टन**—इन्द्रप्रस्थ स्टेडियम में सम्पन्न बैडमिन्टन प्रतियोगिता में 13 देशों ने भाग लिया। टीम स्पर्धा के पुरुष वर्ग में चीन ने पिछले विजेता इण्डोनेशिया को पराजित कर स्वर्णपदक प्राप्त किया तथा महिला वर्ग में चीन को लगातार तीसरी बार सिरमौर जीतने का गौरव प्राप्त हुआ। महिला युगल स्पर्धा तथा महिला एकल स्पर्धा को छोड़कर शेष सभी स्पर्धाओं में एक-एक कांस्यपदक जीत कर भारत पांचवे स्थान पर रहा। भारत के सईद मोदी (पुरुष एकल), लिराया डीसा व प्रदीप गाँधी (पुरुष युगल) तथा लिराया डीसा व कंवल ठाकुर सिंह (मिश्रित युगल) को कांस्य पदक मिला।

(1) टीम स्पर्धा—पु. : चीन; म. : चीन। (2) व्यक्तिगत स्पर्धा-एकल : पु. : हेन जिआन (ची.); म. : लिंग एलिंग (ची.)। युगल—पु. : सुगीआर्तो व हादियांता (इंडो.); म. : सुन एल हुआंग व हेयुंग सूक पेंग (द. को.) मिश्रित युगल :—हादिनाता व इबन्ना ली (इन्डो.)।

● **बास्केटबाल**—तालकटोरा इन्डोर स्टेडियम में आयोजित बास्केटबाल प्रतियोगिता में 13 देशों ने भाग लिया। द. कोरिया तथा चीन ने क्रमशः पुरुष तथा महिला वर्ग का खिताब जीता। पुरुष वर्ग में भारत को आठवां तथा महिला वर्ग में पांचवां स्थान प्राप्त हुआ।

● **बाक्सिंग**—प्रगति मैदान के हॉल ऑव स्टेट्स में आयोजित बाक्सिंग प्रतियोगिता में द. कोरिया का वर्चस्व रहा। उसने बाक्सिंग के 12 स्पर्धाओं में 7 में स्वर्णपदक जीता। उ. कोरिया ने 3 स्वर्णपदक प्राप्त किया। भारत का तीसरा स्थान रहा। भारत के कौर सिंह (हेवी वेट) ने स्वर्णपदक, गिरवार सिंह (लाइट हेवी) व रजिन्दर सिंह (मिडल हेवी) में एक एक रजतपदक तथा जे. एस. प्रधान (लाइट वेट), सी. मर्चेंहा (वेल्टर वेट) व मूलक सिंह (लाईट मिडिल) ने एक-एक कांस्य पदक जीता।

(1) लाईट फ्लाई वेट—योंग मो हिओ (द. को.) (2) फ्लाई वेट—एस. ओ. तिरोपरन (थाई.) (3) बैंटम वेट—सुंग गिल मुन (द. को.) (4) फेदर वेट—रियोन सिक यो (उ. को.); (5) लाइट वेट जो उंग चोंग (उ. को.) (6) लाइट वेल्टर वेट—किल किम डोंग (द. को.) (7) वेल्टर वेट—चंग विओन चुंग (द. को.) (8) लाइट मिडिल वेट—हाई युंग ली (द. को.) (9) मिडिल वेट—नाम ली इयी (द. को.) (10) लाईट हैवी वेट—कि हो होंग (द. को.) (11) हैवी वेट—कौर सिंह (भा.) (12) सुपर हैवी वेट— बोग गिल चो (उ. को.)।

● **साइकिल दौड़**—जमुना वेलड्रोम में आयोजित साइकिल दौड़ प्रतियोगिता में 13 देशों ने भाग लिया। जापान ने सात स्पर्धाओं में पांच स्वर्णपदक प्राप्त कर अपना वर्चस्व कायम रखा। शेष दो स्वर्ण पदक द. कोरिया ने जीता। 180 कि. मी. की साइकिल दौड़ की स्पर्धा सी रोंग पार्क (द कोरिया) ने जीता। इस प्रतियोगिता में पांच नये एशियाई खेल रिकार्ड स्थापित हुए। भारत का प्रदर्शन अत्यन्त निराशाजनक रहा।

● **अश्वारोहण**— एशियाई खेलों में प्रथम बार शामिल अश्वारोहण प्रतियोगिता हरबक्स स्टेडियम में आयोजित की गयी। इसमें सात देशों ने भाग लिया। भारत के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

नवम एशियाड पदक तालिका

● स्वर्ण ○ रजत ⊙ कांस्य

	तीरंदाजी ●○⊙ (पु व म)	एथलेटिक्स ●○⊙ (पु व म)	बैडमिंटन ●○⊙ (पु व म)	बास्केटबाल ●○⊙ (पु व म)	मुक्केबाजी ●○⊙	साइकल दौड़ ●○⊙ (पु)	घुड़सवारी ●○⊙	फुटबाल ●○⊙	जिम्नास्टिक्स ●○⊙ (पु व म)	गोल्फ ●○⊙ (पु)	हैंडबाल ●○⊙ (पु)	हाकी ●○⊙ (पु व म)	नौकायन ●○⊙	निशानेबाजी ●○⊙	तैराकी ●○⊙ (पु व म)	टेबल टेनिस ●○⊙ (पु व म)	लान टेनिस ●○⊙ (पु व म)	वालीबाल ●○⊙ (पु व म)	भारोत्तोलन ●○⊙	कुश्ती ●○⊙	याल नौकायन ●○⊙	योग ●○⊙
चीन	0-0-2	12-11-11	4-2-3	1-1-0		0-0-1			12-9-3		1-0-0		4-0-0	8-7-4	8-14-9	6-3-2	0-1-3	1-1-0	4-2-3			61-51-41
जापान	1-0-1	15-12-10	0-1-2	0-0-2	0-0-3	5-3-0	0-1-0		2-6-3	0-0-2	0-1-0		0-3-0	3-4-6	21-13-10	1-2-2	1-2-1	1-1-0	2-2-0	4-1-1	1-2-1	57-52-44
द० कोरिया	2-1-0	3-3-4	1-1-4	1-1-0	7-2-3	2-3-1			0-0-2	0-1-0	0-0-1	0-1-0	0-0-3	3-3-4	3-4-5	0-2-3	4-3-0	0-1-2	2-0-1	0-2-3		28-28-37
उ० कोरिया	1-2-1	3-1-2			3-1-3				3-4-1				0-1-0	7-4-3	2-2-0	0-0-5			0-3-2	0-1-2		17-19-20
भारत		4-9-8	0-0-5		1-2-3		3-1-1			2-1-0		1-1-0	0-0-1	6-2-1	0-0-1		0-1-0		0-0-2	1-1-2	1-1-1	13-19-25
इंडोनेशिया	0-1-0		2-3-0						0-0-1						0-0-5		2-0-0			0-0-1		4-4-7
ईरान						0-0-2													1-2-0	3-2-2		4-4-4
पाकिस्तान					0-2-5		0-1-0					1-0-0									2-0-0	3-3-5
मंगोलिया					0-0-1									1-1-0						2-1-0		3-3-1
फिलीपीन		1-0-1			0-1-2	0-0-3	0-0-1							0-0-1	1-1-0						0-1-1	2-3-9
इराक		1-1-1			0-1-1		0-0-1	1-0-0											0-0-1	0-1-0		2-3-4
थाईलैंड		0-2-1			1-2-0									0-1-2							0-0-1	1-5-4
कुवैत		0-1-0			0-0-2		1-1-1	0-1-0														1-3-3
मलयेशिया		1-0-1										0-0-2										1-0-3
सिंगापुर															1-0-2							1-0-2
सीरिया					0-1-1														1-0-0			1-1-1
लेबनान																			0-1-0			0-1-0
अफगानिस्तान																				0-1-0		0-1-0
हांगकांग																					0-0-1	0-0-1
वियतनाम														0-0-1								0-0-1
बहरैन		0-0-1																				0-0-1
कतर		0-0-1																				0-0-1
सऊदी अरब								0-0-1														0-0-1

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चार स्पर्धाओं में तीन स्वर्णपदक प्राप्त कर प्रथम स्थान प्राप्त किया। नवें एशियाई खेल में भारत का सर्वप्रथम स्वर्णपदक रघुवीर सिंह ने शो जम्पिग स्पर्धा में जीता। टीम स्पर्धा के अलावा रूपेन्द्र सिंह (टेन्ट पेगिंग) ने स्वर्णपदक जीता। कुवैत के तीन युवतियों ने पुरुषों को मात देकर व्यक्तिगत शो जम्पिग स्पर्धा के सभी पदकों को जीता।

● **फुटबाल**—जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम, अम्बेदकर स्टेडियम व छत्रसाल स्टेडियम में आयोजित फुटबाल प्रतियोगिता में 16 देशों ने भाग लिया। जवाहर लाल नेहरू स्टेडियम में खेले गये फाइनल में इराक ने कुवैत को 1—0 से पराजित कर स्वर्णपदक जीता। यह गोल हुसैन सईद ने किया। भारत क्वाटर फाइनल में सौदी अरब से पराजित हुआ।

● **जिमनास्टिक**—इन्द्रप्रस्थ स्टेडियम में आयोजित 13 देशों की जिमनास्टिक प्रतियोगिता में चीन की पुरुष व महिला दल को लगातार तीसरी बार चैम्पियनशिप जीतने का श्रेय प्राप्त हुआ। पुरुष वर्ग में दूसरा व तीसरा स्थान क्रमशः जापान व उ. कोरिया को मिला जबकि महिला वर्ग में यह स्थान क्रमशः उ. कोरिया व जापान को मिला। भारत को पुरुष व महिला वर्ग में क्रमशः पांचवाँ व सांतवां स्थान मिला। बू जियानी (चीन), जिसे गोल्डेन गर्ल की उपाधि दी गयी, ने बैलेंसिंग बीम पर दस अंकों का पूर्ण स्कोर अर्जित कर नादिया कोमानेची (रूमानिया) की याद ताजा कर दी। हिराता नोरीतोशी (जापान) भी दस अंक प्राप्त कर नया कीर्तिमान स्थापित किया। पुरुष के व्यक्तिगत साइड हार्स में प्रथम तीनो खिलाड़ियों ने समान अंक अर्जित कर एक अद्वितीय व अभूतपूर्व घटना प्रस्तुत किया।

● **गोल्फ**—दिल्ली गोल्फ क्लब में सम्पन्न 12 देशों की गोल्फ प्रतियोगिता के व्यक्तिगत व टीम; दोनों ही स्पर्धाओं में भारत ने अपनी श्रेष्ठता का परिचय दिया। गोल्फ प्रथम बार एशियाई खेल में सम्मिलित किया गया है।

(1) टीम स्पर्धा—1. भारत 2. द. कोरिया 3. जापान
(2) व्यक्तिगत स्पर्धा—1. लक्ष्मण सिंह (भा.) 2. राजीव मोहता (भा.) 3. टी सकाता (जा.)।

● **हैण्डबाल**—दिल्ली विश्वविद्यालय ग्राउन्ड के टेराफ्लेक्स कोर्ट पर आयोजित हैण्डबाल प्रतियोगिता के फाइनल में चीन ने जापान को 24—19 गोल से पराजित कर स्वर्णपदक जीता। भारत का अन्तिम स्थान रहा। हैण्डबाल पहली बार एशियाई खेल में शामिल किया गया है।

● **हाकी**—(अ) पुरुष—नेशनल स्टेडियम के एस्ट्रोटर्फ में खेले गये पुरुष हाकी प्रतियोगिता के फाइनल में विश्व विजेता पाकिस्तान ने ओलम्पिक विजेता भारत को 7—1 गोल से पराजित कर छठीं बार स्वर्णपदक प्राप्त किया। पाकिस्तान के कलिमुल्लाह (2), हनीफ खान (2), मन्जुर जूनियर (1) मन्जुर सीनियर (1), व हसन सरदार (1) गोल किये। भारत के कप्तान जफर इकबाल ने एकमात्र गोल किया। मलेशिया ने कांस्यपदक जीता। सम्पूर्ण प्रतियोगिता में सर्वाधिक गोल (10) जफर इकबाल (भारत) ने किया। (ब) महिला—शिवाजी स्टेडियम में आयोजित महिला हाकी प्रतियोगिता के राउन्ड रोबिन लीग में भारत ने सभी मैच जीत कर स्वर्णपदक हासिल किया। रजतपदक व कांस्यपदक क्रमशः द. कोरिया व मलेशिया को प्राप्त हुआ। सम्पूर्ण प्रतियोगिता में सर्वाधिक गोल (16) राजबीर कौर (भारत) ने किया। यह खेल एशियाई खेल में प्रथम बार सम्मिलित किया गया।

● **नौकायन**—जयपुर के निकट स्थित रामगढ़ झील में सम्पन्न नौकायन प्रतियोगिता के चारों स्पर्धाओं (काक्सड पेयर, काक्सवेन लैस, काक्सड कोर तथा एकल चप्पू) में चीन ने स्वर्णपदक प्राप्त कर विजयश्री अर्जित की। द्वितीय व तृतीय स्थान क्रमशः जापान व द. कोरिया को मिला। भारतीय खिलाड़ी तीन स्पर्धाओं के अन्तिम चरण में पहुँचने के बावजूद कोई सफलता न पा सके। यह पहली बार एशियाई खेल में शामिल किया गया।

● **निशानेबाजी**—तुगलकाबाद रेंज में आयोजित 20 देशों की निशानेबाजी प्रतियोगिता के 22 स्पर्धाओं में चीन 8 स्वर्णपदक, 7 रजतपदक तथा 4 कांस्यपदक, और उ. कोरिया 7 स्वर्णपदक, 4 रजतपदक तथा 3 कांस्य पदक पाकर क्रमशः प्रथम और द्वितीय स्थान अर्जित किया। भारत का पांचवा स्थान रहा। भारत के रणधीर सिंह (ट्रैप शुटिंग) व शरद चौहान (स्टैंडर्ड

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिस्टल) ने एक एक रजतपदक, तथा दलगत स्पर्धा (ट्रैप शुटिंग) में एक कांस्यपदक प्राप्त किया। गिल मान सो (उ. कोरिया) ने चार व्यक्तिगत स्पर्धाओं (रायल पिस्टल, रेपिड फायर, फ्री पिस्टल व सेन्टर फायर पिस्टल) में चार स्वर्णपदक के साथ दो दलगत स्वर्णपदक प्राप्त कर नवम् एशियाई खेल में सर्वाधिक स्वर्णपदक विजेता का श्रेय प्राप्त किया।

● **टेबिल टेनिस**—प्रगति मैदान के हॉल ऑव स्टेट्स में खेले गये टेबिल टेनिस प्रतियोगिता में चीन की पुरुष व महिला टीम तीसरी बार लगातार चैम्पियनशिप जीत कर अपना वर्चस्व कायम रखा। पुरुष वर्ग में द्वितीय व तृतीय स्थान क्रमशः जापान व उ. कोरिया को मिला जबकि यह स्थान महिला वर्ग में क्रमशः द. कोरिया व उ. कोरिया को मिला। भारत को दोनों वर्गों में पांचवा स्थान मिला।

(1) टीम स्पर्धा—पु. : चीन; म. : चीन, (2) व्यक्तिगत स्पर्धा:—(क) एकल-पु. : शीऊ साइके (ची.); म. : काओ यान हुआ (ची.), (ख) युगल-पु. : सीजी ओतों व हिरोयुकी अबे (जा.); म. : काओ यान हुआ व डाई लिलि (ची.), (ग) मिश्रित युगल—काओ यान हुआ व शाऊ साइके (ची.)।

● **लान टेनिस**—हौज खास स्टेडियम में आयोजित लान टेनिस प्रतियोगिता में द. कोरिया का प्रदर्शन उल्लेखनीय रहा। प्रत्याशित भारतीय पुरुष व महिला टेनिस खिलाड़ियों का प्रदर्शन अत्यन्त निराशाजनक रहा।

(1) टीम स्पर्धा—पु. : 1. इण्डोनेशिया 2. भारत 3. चीन; म. : द. कोरिया 2. चीन 3. जापान, (2) व्यक्तिगत स्पर्धा—(क) एकल-पु. : मुस्जादा तारिक (इण्डो.); म. : इत्सुको इनोड (जा.), (ख) युगल-पु. : किम जून हो व ली वू रियोंग (द. को.); म. : शिन सुन हु व किम चुन हु (द. को.), (ग) मिश्रित युगल—किम सून हो व शिन सून हो (द. को.)। भारत को दलगत स्पर्धा (पुरुष) में एक रजतपदक, तथा नन्दन बाल को पुरुष एकल में एक कांस्यपदक प्राप्त हुआ।

● **वालीबाल**—इन्द्रप्रस्थ स्टेडियम में खेले गये वालीबाल प्रतियोगिता में पुरुष वर्ग में 15 देशों और महिला वर्ग में 6 देशों ने भाग लिया। पुरुष वर्ग के सुपर लीग में 1. जापान 2. चीन 3. द. कोरिया 4. भारत, तथा महिला वर्ग के राउन्ड राबिन लीग में 1. चीन (विश्व विजेता) 2. जापान 3. द. कोरिया 4. उ. कोरिया 5. फिलीपीन्स तथा 6. भारत का स्थान रहा।

● **पाल नौकायन**—पाल नौकायन प्रतियोगिता बम्बई के अरब सागरतट पर आयोजित किया गया। पाकिस्तान चार स्पर्धाओं में दो स्वर्णपदक जीत कर सबसे आगे रहा। भारत का तीसरा स्थान रहा। इसमें 15 देशों ने भाग लिया। (1) फायर बाल वर्ग फारुख तारापोर व जहीर करजिया (भा.), (2) इन्टरप्राइज वर्ग – बाइरस अवारी व गोस्की अवारी (पाकि.), (3) ओ. के. डिंगी—खालिद अख्तर (पाकि.), (4) विंड कमान्डर-त्सुनेमोतो इशीवाला (जा.)। भारत के जीजी ऊनवाला फाली ऊनवाला में एक रजतपदक, तथा चोदागम प्रदीपक को एक कांस्यपदक मिला।

● **भारोत्तलन**—खेल गांव में आयोजित भारोत्तोलन प्रतियोगिता में 18 देशों के खिलाड़ियों ने 27 एशियाई खेल रिकार्ड व 9 एशियाई रिकार्ड स्थापित किये। कुल पदकों में चीन 10 स्वर्णपदक, 8 रजत पदक, व 6 कांस्यपदक जीत कर भारोत्तोलन में भी अपना बोलबाला कायम रखा। द. कोरिया व उ. कोरिया को क्रमशः द्वितीय व तृतीय स्थान मिला। भारत का छठवां स्थान रहा। भारत के ज्ञान सिंह चीमा (100 कि. ग्रा.) व तारा सिंह (110 कि. ग्रा.) ने एक कांस्यपदक प्राप्त किया।

● **कुश्ती**—अम्बेदकर स्टेडियम में सम्पन्न कुश्ती प्रतियोगिता में 17 देशों ने भाग लिया। चैम्पियनशिप की मुख्य स्पर्धा जापान और ईरान के मध्य थी। जापान कम भार वाले कुश्ती स्पर्धाओं में और ईरान अधिक भार वाले कुश्ती स्पर्धाओं में हावी रहा। जापान, ईरान व मंगोलिया को क्रमशः प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान मिला। भारत को चौथा स्थान प्राप्त हुआ बावजूद कि उसके कुश्तीगरों का प्रदर्शन आशानुरूप नहीं था। सतपाल (100 कि.ग्रा.) ने स्वर्णपदक, करतार सिंह (90 कि.ग्रा.) ने रजतपदक और रजिन्दर सिंह (110 कि.ग्रा. के ऊपर) तथा अशोक कुमार (57 कि. ग्रा.) ने कांस्यपदक जीता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(1) 48 कि. ग्रा. तक—कोबायशी ताकाशी (जा.), (2) 52 कि. ग्रा. तक—आसाकुरा तोशिओ (जा.), (3) 57 कि. ग्रा.तक-तोमियामा हिरोशी (जा.), (4) 62 कि. ग्रा.तक—कानेको हिरोशी (जा.), (5) 68 कि. ग्रा. तक बोल्ड युयांडेल्गर (मंगोलिया), (6) 74 कि. ग्रा. तक—मोहेब्बी मोहम्मद हसन (ईरान), (7) 82 कि. ग्रा. तक—डूवचीन जेवेग (मंगोलिया), (8) 90 कि. ग्रा. तक मोहेब्बी मोहम्मद हसन (ईरान), (9) 100 कि. ग्रा. तक—सतपाल सिंह (भारत), (10) 100 कि.ग्रा. से ऊपर—शौकत सराई मोहम्मद रेजा (ईरान)।

● तैराकी—तालकटोरा इन्डोर स्टेडियम में आयोजित तैराकी प्रतियोगिता में 19 देशों ने भाग लिया। इसमें पुरुष वर्ग में 10 तथा महिला वर्ग में 13 नये कीर्तिमान स्थापित हुए। प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान क्रमशः जापान, चीन व द. कोरिया को मिला। हालांकि भारतीय तैराकों ने कोई पदक नहीं जीता परन्तु विश्व के सर्वश्रेष्ठ तैराकों से भीषण प्रतिस्पर्धा के मध्य 24 राष्ट्रीय कीर्तिमान स्थापित किये। सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन खजान सिंह का था जिन्होंने 400 मीटर व्यक्तिगत मेडले में चौथा स्थान प्राप्त किया। महिला वर्ग में काओरी यनासे (जा.) ने दो व्यक्तिगत व दो दलगत स्वर्णपदक, तथा योन ही चोई (द. कोरिया) ने तीन व्यक्तिगत स्वर्णपदक जीतकर "एशियाड की जलपरी" का सम्मान प्राप्त किया। पुरुषों में येंग सियोंग (सिंगापुर) तथा महिलाओं में काओरी यनासे (जा.) एशिया के द्रुततम तैराक सिद्ध हुए।

(1) 100 मी. फ्रीस्टाइल—पु. : वेन लियोंग आंग (सिंगा.)*; म. : काओरी यनासे (जा.)*। (2) 200 मी. फ्रीस्टाइल—पु. : विलियम विल्सन (फिली.); म : काओरी यनासे (जा.)। (3) 400 मी. फ्रीस्टाइल—पु. : इकुहिरो तेराशिता (जा.); म. : मिका साइनों (जा.)*। (4) 800 मी. फ्रीस्टाइल—म. : नाओमी सेकिदो (जा.)* (5) 1500 मी. फ्रीस्टाइल—पु. : किमोहिरो अंजाई (जा.)। (6) 100 मी. बैक स्ट्रोक—पु. : कैंजी इकेदा (जा.)*; म. : योन ही चोई (द. को.)*। (7) 200 मी. बैक स्ट्रोक—पु. : हिदेतोशी ताकाशाही (जा.)*; म. : योन ही चोई (द. को.)*। (8) 100 ब्रेस्ट स्ट्रोक—पु. : रूनचेंगयी (चीं.); म. : हिरोको नागासाकी (जा.)। (9) 200 मी. ब्रेस्ट स्ट्रोक—पु. : नारीतोशी मत्सुदा (जा.); म. : हिरोको नागासाकी (जा.)*। (10) 100 मी. बटरफ्लाई—पु. : ताइछेई साका (जा.)*; म. : तकेमी इसे (जा.)। (11) 200 मी. बटर फ्लाई—पु. : ताकाई साइ (चीं.)*; म. : कियोमी ताकाशाही (जा.)। (12) 200 मी. व्यक्तिगत मेडले—पु. : झांगाईली (चीं.); म. : योन ही चोई (द को.)*। (13) 400 मी. व्यक्तिगत मेडले—पु. : केइची ओहाता (जा.)*; म. : हिदेका कोशामि (जा.)*। (14) 4×100 मी. फ्रीस्टाइल रिले—पु. : चीन*; म. : जापान। (15) 4×100 मी. मेडले रिले—पु. : जापान*; म. : जापान*। (16) 4×200 मी. फ्रीस्टाइल रिले—पु. : जापान। (17) फ्लेटफार्म गोताखोरी—पु. : टोंगहुई (चीं.)*; म. : वुई लु ने (चीं.)। (18) स्प्रिंग बोर्ड गोताखोरी—पु : कोंग जेंग (चीं.)*; म. : युहिआ ली (चीं.)*

वाटर पोलो—1. चीन 2. जापान 3. भारत

● दौड़कूद—जवाहर लाल नेहरू स्टेडियम व इन्द्रप्रस्थ स्टेडियम में खेले गये दौड़कूद प्रतियोगिता में जापान ने पिछले खेल के विजेता चीन को दूसरे स्थान पर पछाड़ कर पुनः प्रथम स्थान प्राप्त कर लिया। 40 स्पर्धाओं में कुल 27 नये कीर्तिमान स्थापित हुए। लीडिया डिवेगा (फिलीपीन्स) व रबुआत पिन (मलेशिया) क्रमशः एशिया के सबसे तेज धाविका व धावक सिद्ध हुए। दौड़कूद में दुहरा शतक का श्रेय जापान की हिरोमी इसोजाकी (200 मी. व 400 मी. दौड़) तथा चांग योंग ए (800 मी. व 1500 मी.) को ही मिला। भारत को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ। भारत के बहादुर सिंह (शाट पुट), चाँद राम (20 कि. मी. पैदल चाल), चार्ल्स बोरोमियो (800 मी. दौड़) तथा एम. डी. वालसम्मा (400 मी. हर्डल्स) ने स्वर्णपदक; कुलदीप सिंह (डिस्कस थ्रो), मर्सी मैथ्यूज कुट्टन (लम्बी कूद), पी. टी. उषा (100 मी. व 200 मी. दौड़), के. के. प्रेमचन्द्र (400 मी. दौड़), गीता जुत्शी (800 मी. व 1500 मी. दौड़), गोपाल सैनी (3000 मी. स्टीपलचेस) तथा 4×400 मी. रिले में रजतपदक, बलविन्दर सिंह

*नया एशियाई खेल रिकार्ड

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(शाट पुट), एस. बालसुब्रह्मण्यम, (त्रिकूद), पद्मिनी टामस (400 मी. दौड़), गुरतेज सिंह (जेवलिन थ्रो), प्रवीण जौली (110 मी. हर्डल्स), टी. सुरेश यादव (1500 मी. स्टीपलचेस), राजकुमार (5000 मी. दौड़-कूद) तथा एस. सीतारमन् (मेरॉथन) में कांस्यपदक प्राप्त हुआ।

(1) 100 मीटर दौड़—पु. : रबुआत पित (मले); म. : लीडिया डिवेगा (फिली.)। (2) 200 मीटर दौड़—पु. : जेइ कुएन जेंग (द. को.)*; म. : हिरोमी इसोजाकी (जा.)। (3) 400 मी. दौड़—पु. सुसमो तकानो (जा.); म : हिरोमी इसोजाकी (जा.)। (4) 800 मी. दौड़—पु. : चार्ल्स बोरोमिया (भा.)*; म. : योंग इच चेंग (उ. को.)*। (5) 1500 मी. दौड़—पु. : फलेह एन. जराल (इराक)*; म. : योंग इच चेंग (उ. को.)*। (6) 3000 मी. दौड़—पु. : ओक सन किम (उ. को)। (7) 5000 मी. दौड़—पु : मसानेरी शिताकू (जा.)*। (8) 10000 मी. दौड़—पु. : गुओ वेई झेंग (ची.)*। (9) 20 कि. मी. पैदल चाल—पु. : चांद राम (भा.)*। (10) 50 कि. मी. पैदल चाल—चुंग तेंग वेंग (ची.)*। (11) मेरॉथन दौड़—पु. : येंग कोन किम (द. को.)। (12) 110 मी. हर्डल्स—पु. : योशीफुमी फूजीमोरी (जा.)*; म. : इमी एकीमोतो (जा.)। (13) 400 मी हर्डल्स—पु. : तकाशी नगाओ (जा.); म. : एम. डी वालसम्मा (भा.)*। (14) 3000 मी स्टीपलचेस—पु. : तदासु कवानो (जा.)। (15) ऊँची कूद—पु. : जिआन हुआ झू (ची.)*; म. : डाजहेन झेंग (ची.)*। (16) लम्बी कूद—पु. : चोंगली किम (द. को.)*; म. : वेन फेन लियाओ (ची.)*। (17) त्रिकूद—पु. : झेन जिआन जाऊ (ची.)*। (18) पोल वाल्ट—पु. : तोमोसो ताकाशाही (जा.)*। (19) जेवलिन थ्रो—पु. : सूसुमू तकानो (जा.); म. : एमी मात्सुई (जा.)*। (20) शाटपुट—पु. : बहादुर सिंह (भा.)*; म. : मेइसू ली (ची.)*। (21) डिस्कस थ्रो—पु. : वेइनेन ली (ची.)*; म. : जिआ ओहुइ ली (ची.)*। (22) हैमर थ्रो—सिगेनोबू मुरोफुशी (जा.)*। (23) 4×100 मीटर रिले—पु. : चीन*; म. : जापान*। (24) 4×400 मी. रिले—पु. : जापान*; म. : जापान*। (25) डिकेथलन (दस विभिन्न खेल)—पु. : कांग जिआंग वेंग (ची.)। (26) हेप्टथलन (सात विभिन्न खेल)—म. : पेत्सु ये (ची.)।

■ **नवम् एशियाई खेल सम्बन्धी कुछ रोचक तथ्य—**

● नवम् एशियाई खेलों में सम्मिलित 445 सदस्यीय चीनी दल किसी भी एशियाई खेलों में भाग लेने वाला अब तक सबसे बड़ा दल था। ● इस बार लेबनान का दल (10) सबसे छोटा था। ● इस खेल में सबसे अधिक उम्र तथा सबसे कम उम्र के खिलाड़ी क्रमशः इण्डोनेशिया के जार्ज फडीनान्ड मुण्टू (नौकायन) तथा द. यमन के अह्म अली शराही (टेबिल टेनिस) थे। ● नवम् एशियाई खेल में बंगलादेश, ब्रुनाई, बर्मा, लाओस, मालद्वीप, नेपाल श्रीलंका, ओमान, यू. ए. ई., पी. डी. आर. यमन एक भी पदक न जीत सके। ● अन्तर्राष्ट्रीय ओलम्पिक समिति ने प्रथम बार किसी एशियाई खेल को संरक्षण (Patronage) प्रदान किया। सम्पूर्ण खेल के दौरान ओलम्पिक का पताका फहरता रहा। ● विजित खिलाड़ियों को स्वर्ण, रजत व कास्य के कुल 1430 पदक मिले। इन पदकों पर एशियाई खेलों के प्रतीक—'सूर्य' तथा आदर्शवाणी (motto)—'सदा आगे, (Ever onward) व 34 गोला अंकित है। यह 34 गोले एशियाई खेल महासंघ के सदस्य संख्या के प्रतीक है। अब यह सदस्य संख्या ओमान व मालद्वीव के सम्मिलित होने के कारण 36 हो गयी है। ● उद्घाटन समारोह के दौरान मार्च-पास्ट में भारत के राष्ट्रीय ध्वज के धारक डा. कर्ण सिंह (निशानेबाज) थे। ● नवम् एशियाई खेल के समाचार के रिपर्ताज के लिये अंग्रेजी में खेल समाचार दैनिक 'एशियन क्रानिकल' प्रकाशित किया गया। ● सम्पूर्ण प्रतियोगिता के दौरान केवल एक अशोभनीय प्रसंग घटित हुआ। कुवैत और उ. कोरिया के मध्य फुटबाल के सेमी फाईनल मैच में उ. कोरिया के खिलाड़ियों ने थाईलैण्ड के रेफरी जी. विजित पर खतरनाक हमला किया। इस कृत्य के लिये उ. कोरिया की फुटबाल दल को दो वर्ष के लिये सभी अन्तर्राष्ट्रीय फुटबाल प्रतियोगिता से निष्कासित कर दिया गया। ● मशाल पर एशियाड-82 का प्रतीक 'जन्तर मन्तर' व एशियाड-82 अंकित है। ● 5 दिसम्बर 82 से एशियाई खेल महासंघ एशियाई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओलम्पिक समिति के नाम से जाना जायेगा। ● नवम् एशियाई खेल के दौरान नवम्बर 1983 में नई दिल्ली में प्रथम अफ्रो-एशियाई खेल प्रतियोगिता के आयोजन करने का निर्णय लिया गया। साथ में, जुलाई-अगस्त 8 नई दिल्ली में चतुर्थ विश्व दौड़कूद प्रतियोगिता आयोजन की सम्भावना है। ■

क्रीड़ा जगत

■ क्रिकेट—26 नवम्बर 82 से ब्रिसबेन में खेले गये द्वितीय टेस्ट मैच में आस्ट्रेलिया ने इंग्लैण्ड को सात विकेट से पराजित किया। अन्तिम स्कोर—इंग्लैण्ड : 219 व 309 रन; आस्ट्रेलिया : 341 व 190 रन पर 3 विकेट। ● 5 दिसम्बर 82 को गुजरानवाला में सम्पन्न प्रथम एक दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय मैच में पाकिस्तान ने भारत को 14 रनों से पराजित किया। अन्तिम स्कोर-पाकिस्तान : 224 रन पर 4 विकेट; भारत : 210 रन पर 6 विकेट। ● 10 दिसम्बर से लाहौर में आयोजित पाकिस्तान और भारत का प्रथम टेस्ट मैच अनिर्णीत रहा। अन्तिम स्कोर—पाकिस्तान : 485 व 135 रन पर एक विकेट; भारत : 379 रन। ● 10 दिसम्बर 82 से एडीलेड में आयोजित तृतीय क्रिकेट टेस्ट मैच में आस्ट्रेलिया ने इंग्लैण्ड को आठ विकेट से हराया। अन्तिम स्कोर—आस्ट्रेलिया : 438 व 83 रन पर 2 विकेट; इंग्लैण्ड : 216 व 304 रन। ● 17 दिसम्बर 82 को मुल्तान में खेले गये द्वितीय एक दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय मैच में भारत पाकिस्तान से 37 रनों से पराजित हुआ। अन्तिम स्कोर—पाकिस्तान : 263 रन पर 2 विकेट; भारत : 226 रनों पर 7 विकेट। ● कलकत्ता में सम्पन्न कूचबिहार ट्राफी फाइनल में मध्य-क्षेत्र ने दक्षिणी क्षेत्र को प्रथम पारी में रनों की बढ़ौती के आधार पर पराजित किया। अन्तिम स्कोर—मध्य क्षेत्र : 343 व 444 रन पर 3 विकेट; दक्षिण क्षेत्र : 258 व 111 रन पर 2 विकेट।

■ हाकी—दिसम्बर 82 के तृतीय सप्ताह में मेलबीर्न (आस्ट्रेलिया) में खेले गये एसांडा हाकी प्रतियोगिता के फाइनल में आस्ट्रेलिया ने भारत को 6-1 से पराजित कर कप जीत लिया। विश्व कप विजेता पाकिस्तान को छठा स्थान प्राप्त हुआ। लीग मैच में भारत ने पाकिस्तान को 2-1 से पराजित कर नवम् एशियाई खेल में पराजय का बदला लिया। प्रतियोगिता में सर्वाधिक गोलदाता (14) राडिक वोऊमैन (हालैण्ड) रहे।

■ टेनिस— ● ग्रेनोबेल (फ्रान्स) में आयोजित फाइनल विजेता सं. रा. अमेरिका ने फ्रान्स को 4-1 से पराजित कर 1982 के डेविस कप पर अपना वर्चस्व कायम रखा। ● एन्टवर्प (बेल्जियम) में आयोजित फाइनल इवान लैण्ड्ल (चेकोस्लावाकिया) ने जान मैकेन्रो (अमेरिका) को 3-6, 7-6, 6-3 व 6-3 से पराजित कर यूरोपीयन टूर्नामेन्ट ऑव टेनिस चैम्पियनशिप जीती। ● मेलबोर्न में सम्पन्न आस्ट्रेलिया ओपन टेनिस चैम्पियनशिप में जोहन कियर्क ने स्टीव डेन्टन को 6-3, 6-3, 6-2 से तथा क्रिस ईवर्ट लायड ने मार्टिना नावारतिलोवा को 6-3, 2-6 व 6 3 से पराजित कर क्रमशः पुरुष तथा महिला का एकल खिताब जीता। ● चण्डीगढ़ में आयोजित फाइनल में पुरुष वर्ग में एस. वासुदेवन ने जयकुमार रोयप्पा को 6-1, 6-1 से तथा महिला वर्ग में अनु पेशावरिया ने जेनोविया ईरानी को 3-6, 6-1, 6-1 से पराजित कर राष्ट्रीय लान टेनिस चैम्पियनशिप जीता।

■ विवधा—करांची में आयोजित पेनीनसुलर टेनिस प्रतियोगिता की पांचों स्पर्धाओं में भारत ने अपना वर्चस्व कायम रखा। ● मॉरियो मिकायेव (फिलीपीन्स) ने बागुई सिटी में खेले गयी छठी एशियाई जूनियर शतरंज चैम्पियनशिप जीती। भारत के प्रमोद कुमार सिंह चौथे स्थान पर रहे। ● हैदराबाद में आयोजित 24वीं राष्ट्रीय ब्रिज प्रतियोगिता में अग्रवाल ने रूइया ट्राफी, रोबी घोष व एस. आर. घोष ने होल्कर ट्राफी तथा सिक्टा महाजन ने नेवाटिया ट्राफी जीती। ● भारत सहित पेरिस व नीस (फ्रांस), स्टॉकहोम (स्वीडन), बुडापेस्ट (हंगरी), ब्रिसबेन (आस्ट्रेलिया), एम्स्टरडम (हालैण्ड) तथा वियेना (आस्ट्रिया) 1992 में आयोजित होने वाले 25 वें ओलम्पिक की मेजबानी की उम्मीदवार है। ■

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

FOCUS: Banking/Civil/Defence Services Examination

Sparkles ! !

"It is better to endure (these) particular pains so that we may enjoy greater joys. It is well to abstain from (these) particular pleasures in order that we may not suffer more severe pains."

—Epicurus.

Test of English Language.

1. Tick the word *nearest* in meaning to the key word.

(i) Chaff.
(a) husks (b) to talk (c) to tease (d) to love.

(ii) Astringent.
(a) sarcastic (b) tangible (c) termaganic (d) rumbling.

(iii) Bathos.
(a) pleasure (b) pain (c) anticlimax (d) wash.

(iv) Carnal.
(a) delf (b) erudite (c) lasque (d) fleshly.

(v) Eschew.
(a) eat (b) abstain (c) munch (d) crunch.

(vi) Dulcet.
(a) majestic (b) regal (c) repulsive (d) sweet.

(vii) Gangway.
(a) dacoits (b) passage (c) gaol (d) redundant.

(viii) Heinous;
(a) generous (b) howel (c) atrocious (d) magnanimous.

(ix) Lentitude.
(a) sluggishness (b) mopping (c) ravishing (d) shrewd.

(x) Peregrine.
(a) slavish (b) outlandish (c) foreign (d) grotesque.

2. Pick the word you believe is *opposite* in meaning to the key word.

(i) Accession.
(a) diminution (b) declination (c) dissimation (d) reduction.

(ii) Conscientious.
(a) divine (b) unscrupulous (c) satan (d) irreverent.

(iii) Discourteous.
(a) exalt (b) commendable (c) bland (d) raucous.

(iv) Resoluteness.
(a) firmness (b) captious (c) persevere (d) indecision.

(v) Defile.
(a) cleanse (b) unconnect (c) accept (d) indecent.

(vi) Imposture.
(a) illicit (b) offspring (c) honest (d) mon ami.

(vii) Hilarity.
(a) devilish (b) gravity (c) gaiety (d) repugnant.

(viii) Posterior.
(a) anterior (b) powerful (c) prowess (d) epilogue.

(ix) Licence.
(a) permission (b) value (c) intent (d) propriety.

(x) Wither.
(a) where (b) luxuriate (c) wherewithall (d) incumbant.

3. Point out errors (*if any*) in the following sentences. Mark the part where an error occurs.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(i) It snowed the whole night (1) and Agnima could not reach him till (2) the roads were cleared (3) and made passible. (4) No Error (5)

(ii) "The smile she gave (1) a young boy (2) is (3) lecherous and lewd." (4) No Error. (5)

(iii) Rantika and me is (1) to meet at (2) the theatre (3) at six o'clock (4) No Error. (5)

(iv) Violet has been too (1) unhappy ever since her (2) quarrel with Arunabh; (3) he has never spoken to her from than. (4) No Error. (5)

(v) Neither Vatsala nor Siddhartha (1) are seriously interested (2) in getting married (3) as soon as possible. (4) No Error. (5)

(vi) Although Anusri does not consider it (1) womanish to wear jeans (2) she is a fine (3) example of modern womanhood. (4) No Error. (5)

(vii) Anagat was transfixed by amazement (1) when he saw a raven-haired (2) beauty with sparkling eyes (3) glide slowly in the dark. (4) No Error. (5)

(viii) The advantage of culture (1) is that (2) it enables you to (3) talk nonsense with distinction. (4) No Error. (5)

(ix) When Apala finally decided (1) to go with Pradyot (2) Suparna cautioned her (3) of the consequences (4) No Error. (5)

(x) When Parantak tried to (1) make a pass on Nilakshi she gave him (2) a smart slap on his cheek and he is still (3) smarting from her insult. (4) No Error. (5)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

4. Fill in the blank space (s) in each sentence meaningfully.

(i) The Greek temple is the perfect.... .... of men.....were intellectual artists.
(a) expression/who (b) projection/that
(c) reflection, who (d) impression/that.

(ii) We arrived.....the meeting before seven.
(a) in (b) on (c) about (d) at

(iii) You must write the answers.....ink.
(a) with (b) by (c) in (d) at

(iv) You must finish the work.....seven o' clock.
(a) at (b) on (c) within (d) by.

(v) She bought the house her daughter now lives ....
(a) into (b) at (c) in (d) with.

(vi) I cannot think what induced Shrila.... ..... such a thing.
(a) to do (b) for (c) in (d)into.

(vii) An intellectual snob often.....the efforts of others to improve themselves.
(a) jeers at (b) sneers at (c) titters on
(d) sniggers on.

(viii) 'Analika.....speak Russian fluently when I knew her.'
(a) can' t (b) couldn' t (c) must
(d) mustn' t.

(ix) .....he was a reckless driver, I refused to go with him.
(a) as (b) since (c) though
(d) because.

(x) She went.....the house to meet him.
(a) in (b) within (c) into (d) at

5. Give one-word/idiom substitution to each of the following.

(i) Violating sacred things.
(a) Sacrilege (b) Sacrament (c) Sacrosanct (d) Sanctify.

(ii) A foreboding that something bad is about to happen.
(a) forewarning (b) surmise
(c) presumption (d) presentiment.

(iii) 'To be under suspicion or disfavour'.
(a) to be up and doing
(b) to be under a cloud
(c) sink in
(d) to be on one's toes'

(iv) 'A person who roams from one place to the other, not staying in any one place for very long'.
(a) a river of descent
(b) a feather in the sea
(c) a bird of passage
(d) a rock in jazz

(v) 'A person who spends his money recklessly'.
(a) worthless (b) thrifty
(c) moneymonger (d) spendthrift.

(vi) 'Bridge carrying a road or line across a river or valley'.
(a) viaduct (b) acquaduct
(c) metaduct (d) pyroduct

(vii) 'To try to find out the truth of a problem, mystery etc.'.
(a) to burrow the earth
(b) to blow the oceans
(c) to scan the sky
(d) to plumb the depths.

(viii) 'An article which was bought without previous inspection and which turns out to be worthless'.
(a) a pie in a roost
(b) an ion in rust
(c) a soldier of misfortune
(d) a pig in a poke

(ix) 'That which can be drunk'.
(a) wine (b) potable
(c) sippable (d) muck

(x) 'To urge to commit a crime'.
(a) invocate (b) provocate
(c) instigate (d) surrogate

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

6. Complete the following idiomatic expressions/comparisions appropriately.

(i) As cautious as a.....
(a) cat (b) bat (c) fox (d) ox.

(ii) As treacherous as the.....
(a) memory (b) lion (c) traitor (d) love.

(iii) To keep a stiff.....
(a) upper lip; (b) rod (c) posture (d) tool.

(iv) To ride hell for.....
(a) evil (b) leather (c) heaven (d) devil.

(v) As spotless as..... .....
(a) black (b) water (c) snow (d) air.

(vi) As unstable as.....
(a) fire (b) water (c) air (d) clouds.

(vii) To play.....
(a) truant (b) back (c) work (d) knot.

7. Read the following passage carefully, and answer the questions that follow it. Your answers must be brief.

A certain merchant had two sons. The elder was his favourite, and he intended to leave all his wealth to him when he died. His mother felt sorry for the younger son, and she asked her husband not to tell the boy of his intentions. She hoped to find some way of making her sons equal. The merchant heeded her wish and did not make known his decision.

One day the mother was sitting at the window weeping. A pilgrim approached the window and asked her why she was weeping.

"How can I help weeping ?" she said. "There is no difference between my two sons, but their father wishes to leave everything to one and nothing to the other. I have asked him not to tell them of his decision until I have thought of some way of helping the younger. But I have no money of my own, and I do not know what to do in my misery."

Then the pilgrim said to her :

"There is help for your trouble : tell your sons that the elder will receive the entire inheritence, and that the younger will receive nothing; then they will be equal."

The younger son, on learning that he would inherit nothing, went to another land, where he served his apprenticeship and learned a trade. The elder son lived at home and learned nothing, knowing that someday he would be rich.

When the father died, the elder son did not know how to do anything and spent all his inheritence, while the younger son, who had learned how to earn money in a foreign country, became rich. (*Equal Inheritance* in 'Fables And Fairy Tales' *by* Lev Tolstoy).

(i) What was the intention of the merchant ?

(ii) What request did his wife make ?

(iii) What was the mother doing when the pilgrim approached her ?

(iv) Did the mother love the younger son more than the elder ?

(v) What was the advise of the pilgrim ?

(vi) What did the younger son do when he learnt his father's decision ?

(vii) Was the decision of the merchant just ?

(viii) Was the mother successful in persuading the merchant to change his decision ?

(ix) Who is the wisest character in the story : the merchant, the elder son, the younger son or the pilgrim ? Why ?

(x) What happend to the brothers after the death of their father ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Test of Numerical Ability.

1. How many centuries are there in 1873 years ?
(a) 1800 (b) 800 (c) 80 (d) 18

2. A garden is 43 m long and 17 m wide. What distance will you cover, if you walk once round it ?
(a) 60 m (b) 120 m (c) 731 m (d) 1 km.

3. Vasumitra was 10 years old two decades ago. What will be his age after three scores of years and a decade ?
(a) 40 years (b) 60 years (c) 80 years (d) 100 years.

4. $\frac{5}{8} \times \frac{14}{36} \div \frac{7}{25} \times \frac{42}{75} = ?$
(a) 5/38 (b) 10/19 (c) 5/9 (d) 9.

5. $\frac{525}{7} - (5 + 37) = ?$
(a) $\frac{291}{7}$ (b) 49 (c) 76 (d) $\frac{149}{7}$

6. A student loses ½ a mark on every wrong answer but secures 2 marks for every correct answer. After answering 100 questions like this he got 0. How many wrong answers did he give ?
(a) 80 (b) 70 (c) 60 (d) 85

7. Tathagat and Anagat are standing at a point. If they walk at the speed of 10 km/hr and 8 km/hr respectively in opposite directions, what will be the distance between them after 4½ hours ?
(a) 72 km (b) 36 km (c) 54 km (d) 81 km

8. Which of the following fractions is the largest ?
(a) $\frac{3}{4}$ (b) $\frac{5}{6}$ (c) $\frac{1}{3}$ (d) $\frac{5}{12}$

9. Which of the following fractions is the smallest ?
(a) $\frac{1}{3}$ (b) $\frac{2}{5}$ (c) $\frac{1}{2}$ (d) $\frac{3}{10}$

10. 11½% of 1250 is :
(a) 112.50 (b) 145.25 (c) 143.75 (d) 129.75

Test of Reasoning.

1. Unscramble these ten Jumbles to form ten ordinary words.
   a. rodif
   b. laudt
   c. bleete
   d. relphe
   e. neoso
   f. yarpt
   g. anzats
   h. infish
   i. nagap
   j. rifay

2. Unscramble these Jumbles, add the letter 'E' to each of the mazy word to make it meaningful.

a. virnon	f. paxnil
b. poleevn	g. rentol
c. pimtoe	h. tileccc
d. cinte	i. fidy
e. tulx	j. tangle

3. Insert the word that completes the first word and star s the second.
   a. r(. . .)ice c. w(. . .)er
   b. cr(. . .)le d. pe(. . .)e
   e. yi(. . .)ritch.

4. Insert the missing number/letter.
   a. 87 (High) 98
      52 (.....) 12
   b. ED (Abide) 129
      EH (.....) 313
   c. FG (14) GH
      DF (....) GI
   d. 193 (72) 217
      172 (....) 193
   e. A 23 D 56 G ....

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

5. Insert the missing number/Letter.

(a)

(b)

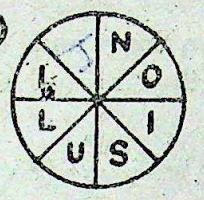

(c)

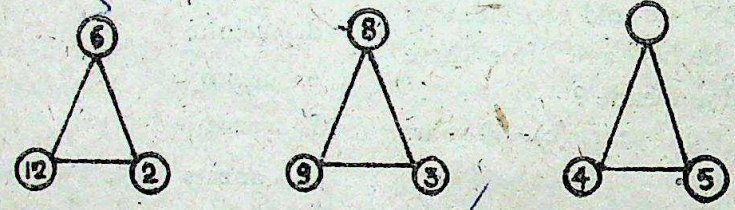

(d)

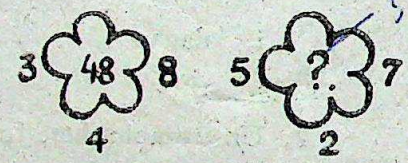

(e)

6. Two of the following drawings are in the wrong order. Which two?

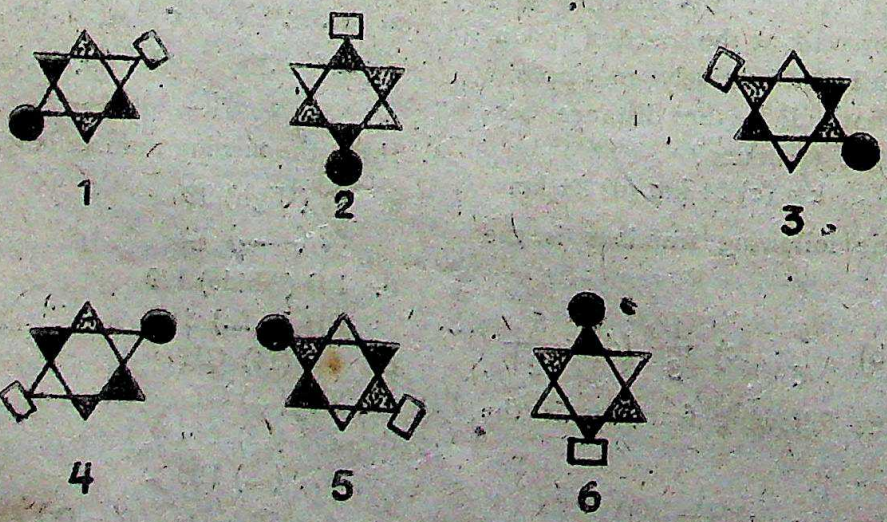

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

7. Which of the six numbered figures fits into the vacant circle?

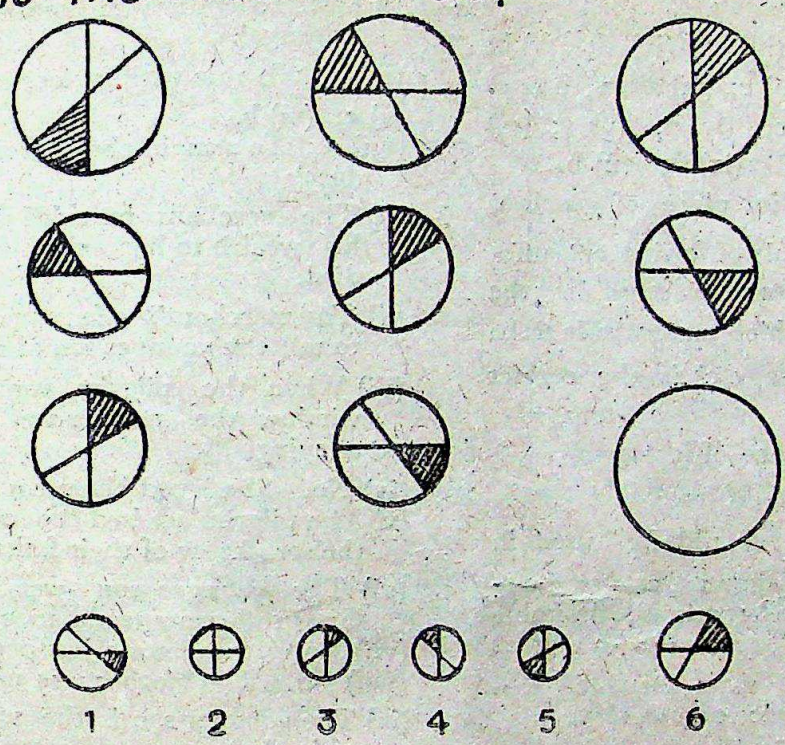

8. The figures given below belong to one class. Which one is the odd man out?

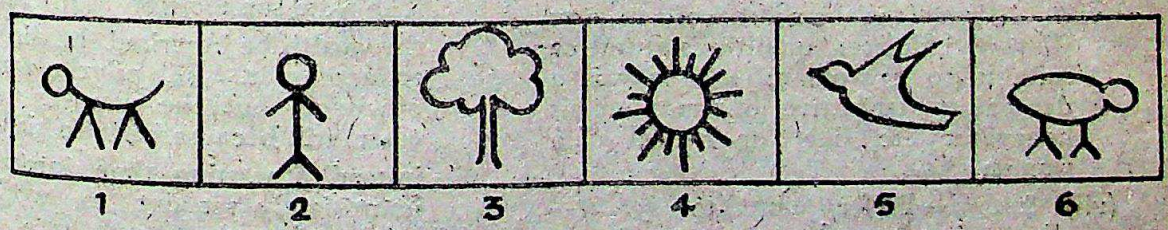

9(a) Mark the odd man out.

(b)

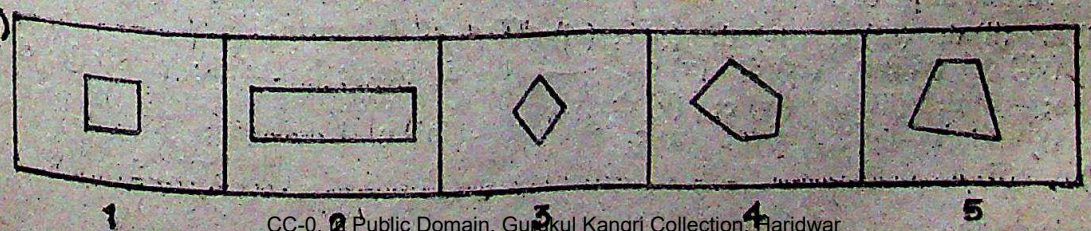

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Test of English Language :

1. (i) a & c; (ii) a; (iii) c; (iv) d; (v) b; (vi) d; (vii) b; (viii) c; (ix) a; (x) b & c.
2. (i) a; (ii) b; (iii) c; (iv) d; (v) a; (vi) c; (vii) b; (viii) a; (ix) d; (x) b.
3. (i) 4. Put *passable* in place of *passible*. *Passible* means 'capable of feeling or suffering' which makes no sense in the sentence. *Passable*, which means 'able to be passed; travelled over etc' is the correct word.

   (ii) 3. Use *was* in place of *is*.

   (iii) 1. *I* in place of *me*.

   (iv) 1 & 4. 1—*Very* should be used in place of *too*. *Too* shows excess or something more, than is required, desirable or suitable while *very* means 'to a great degree' and is the most suitable. 4—Put *since then* in place of *from than*.

   (v) 2. *Is* in place of *are*. However, the sentence should be : "Neither Vatsála nor Siddhartha is seriously interested in getting married". 'as soon as possible' is redundant.

   (vi) 2. *Womanly* is the right word to use. *Womanly* indicates qualities natural or suitable to a woman; *womanish* is a derogatory attributive, of a man or his behaviour etc, like, or typical of, a woman.

   (vii) 1 &4. 1—Prefer *with* to *by*. 4—*Through* in place of *in*.

   (viii) 5.

   (ix) 3. Prefer *warned* to *cautioned*. You warn a person in advance about a danger but you caution a person for carefulness because of possible danger.

   (x) 2 & 3. 2—Use *at* in place of *on*, and, 3, use *on* in place of *at*.
4. (i) a. (ii) d; (iii) c; (iv) d; (v) c; (vi) a; (vii) d, (viii) b, (ix) d, (x) c.
5. (i) a; (ii) d; (iii) b; (iv) c; (v) d; (vi) a; (vii) d; (viii) d; (ix) b; (x) c.
6. (i) c, (ii) a,

   (iii) a : 'To endure misfortune with courage'.

   (iv) b : 'To ride with furious speed',

   (v) c, (vi) b,

   (vii) a : 'To remain absent from work duty'.
7. (i) The merchant intended to leave his wealth to his elder son, when died.

   (ii) The merchant's wife requested him to tell the younger son of his decisio

   (iii) When the pilgrim approached window the mother was sitting th weeping.

   (iv) No. She loved them equally.

   (v) The pilgrim advised the mother to the sons know of their father's decisi

   (vi) The younger son went to for lands to learn a trade, to earn a livi

   (vii) No. It was not a just decision.

   (viii) No. The mother was unsuccessfu

   (ix) The younger son is the wisest char ter in the story. The merchant m have been a good trader but he unjust and unwise. The mother is loving and affectionate as mothers but she could not think of a way o The elder son foolishly squandered the wealth he inherited, he did noth to increase it. The pilgrim was a m of wisdom but the younger son wiser still because he took his cue instead of wasting time lamenting immediately set out to work for brighter future.

   (x) The elder son spent all the wea recklessly and became poor. The you ger son by sheer dent of merit a labour became rich.

Test of Numerical Ability.

1. (d), 2. (b), 3. (d), 4. (c), 5. (a), 6. 7. (d), 8. (b), 9. (d), 10. (c).

Test of Reasoning.

1. a. Fiord; b. Adult; c. Beetle; d. Hel e. Noose; f. Party; g. Stanza; Finish; i. Pagan; j. Fairy.

(शेष पृष्ठ 62 पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

(पृष्ठ का 16 शेष)
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

● वेगा—हेली धूमकेतू का अध्ययन करने के लिये फ्रेन्च, सोवियत, प. जर्मन व ऑस्ट्रियन विज्ञानियों द्वारा 'वेगा' नामक अन्तरिक्ष-वाहन का विकास किया जा रहा है। 8 मार्च, 1986 को वेगा हेली धूमकेतू के नाभिक से केवल 10,000 कि मी. की दूरी से अध्ययन करेगा।

● इन्टेल्सेट् v-ई :—हिन्द महासागर में जलयानों को भूमि-आवृत दूरभाषों से जोड़ने के लिये सितम्बर, 1982 में इन्टेल्सेट v-ई को सं. रा. अ. से प्रक्षेपित किया गया। जल-यान से भूमि सम्प्रेषण के अतिरिक्त यह सञ्चार उपग्रह 12,000 वाक् परिपथों का तथा दो रङ्गीन दूरदर्श मार्गों का अभिचालन करेगा।

● स्पुतनिक रजत जयन्ती—4 अक्टूबर, 1957 को सो. सं. का स्पुतनिक अन्तरिक्ष-यान बाह्य अन्तरिक्ष में प्रक्षेपित किया गया था। इसी के साथ अन्तरिक्ष यात्रा का युग आरम्भ हुआ जिसकी रजत जयन्ती मनाई जा रही है।

● द्वितीय एन्टार्कटिका अभियान—1 दिसम्बर 1982 को, नॉर्वे के अन्वेषण जल-यान "पोलर सर्किल" में, गोआ से द्वितीय अभियान दल ने एन्टार्कटिका की ओर प्रयाण किया। डॉ. वी. के. रैना की अध्यक्षता में यह वैज्ञानिक दल गभीर समुद्र समन्वेषण तथा हिन्द महासागर व एन्टार्कटिका क्षेत्र में जैविक व अजैविक संसाधनों का अध्ययन करेगा।

● एट्रीप्लेक्स—केन्द्रीय मृदा एवं सामुद्र-रसायन अन्वेषणालय (सी. एस. एम. सी. आर. आई.) ने एक पौधे का विकास किया है जो मिट्टी की लवण-मात्रा का चूषण करता है तथा जिसकी पत्तियाँ खाद के काम आ सकती हैं। इस प्रकार, इस पौधे-एट्रीप्लेक्स, से भारत की सहस्रों हेक्टेअर लवणयुक्त भूमि का उद्धार हो सकता है।

चर्चित स्थल

● श्री लङ्का—दिसम्बर, 1982 के मध्य में, श्रीलङ्का की संसद का कार्यकाल छह वर्ष तक बढ़ा देने हेतु सम्पन्न जनमत-संग्रह में राष्ट्रपति जूनियस आर. जयवर्दने द्वारा नेतृत यूनाईटेड नेशनल पार्टी को सफलता प्राप्त हुई। 8.1 मिलियन पञ्जीकृत मतदाताओं में से 3.1 मिलियन ने अगस्त, 1983 से श्रीलङ्का की संसद का कार्यकाल छह वर्ष करने के समर्थन में मतदान किया। इस जननिर्देश के आधार पर आगामी आम चुनाव 1989 में होगें।

● ऑरॉविले—भारत सरकार ने नवम्बर, 1980 में एक परिपृच्छा समिति की अनुशंसा के आधार पर इस अन्तर्राष्ट्रीय नगर को अपने नियन्त्रण में ले लिया था। इसके मूल उत्तरदायी-प्राधिकारी श्री अरबिन्द सोसायटी पर धन के कुप्रयोग व अपाहरण का आरोप था। 8 नवम्बर, 1982 को उच्चतम् न्यायालय ने सरकार द्वारा इस नगर के प्रभार-ग्रहण को संविधान सम्मत् घोषित किया।

● बड़ोदरा—गुजरात का प्रमुख नगर बड़ोदरा साम्प्रदायिक उपद्रवों के कारण चर्चित रहा। इन उपद्रवों में सैकड़ों व्यक्ति हताहत हुए।

● नई दिल्ली—1-14 नवम्बर, 1982 को यहाँ चतुर्थ अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार मेले का आयोजन हुआ जिसमें 36 देश सम्मिलित हुए।

● लन्दन—आठ माह तक निरन्तर चलने वाला 'भारत उत्सव' (फैस्टिवल ऑव इन्डिया) 14 नवम्बर, 1982 को समाप्त हो गया।

● जेनीवा—जनरल अग्रीमेन्ट ऑन टेरिफ्स एन्ड ट्रेड (GATT) मिनिस्ट्रियल कॉनफरेन्स का आयोजन नवम्बर, 1982 में जेनीवा में हुआ। 50 देश इस सम्मेलन में सम्मिलित हुये।

● स्टार सिटी—सो. सं. का अन्तरिक्ष-यात्री प्रशिक्षण नगर, जहाँ दो भारतीयों को प्रशिक्षित किया जा रहा है, का नाम दिवङ्गत राष्ट्रपति ल्योनिद ब्रेझनेव के नाम पर "ब्रेझनेव सिटी" निर्धारित किया गया है।

● नागालैण्ड—10 नवम्बर, 1982 को नागालैण्ड विधान सभा चुनाव सम्पन्न हुए जिसमें कॉंग्रेस (इं) की सफलता के साथ एस. सी. जमीर मुख्यमन्त्री घोषित हुए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

• गुजरात—8 नवम्बर, 1982 के भीषण साइक्लोन—जिसमें अपार क्षति हुई—के बाद भारी वर्षा से खोडियार बाँध का जलस्तर असामान्य रूप से बढ़ जाने के कारण आतङ्कित हो बाँध प्राधिकारियों ने बाँध के द्वार बिना पूर्वसूचना के खोल दिये जिससे वांकिया, बावापुरा व मफतपुरा गाँव जल-प्लावित हो गये तथा लगभग 100 व्यक्ति व 4000 पशु जलमग्न हो गये।

• मैडूगुरी (नाइजीरिया) : मैडूगुरी में धार्मिक उपद्रवों के कुचक्र में लगभग 500 व्यक्ति मृत्यु को प्राप्त हुए।

• डाबका बड़ौदरा के निकट स्थित तेल क्षेत्र जहाँ तेल चोरी करने वालों के कारण सितम्बर, 1982 के अन्तिम सप्ताह में भीषण अग्निकाण्ड हुआ।

• देवपुरा—माधोपुर (राजस्थान) जिले के अन्तर्गत वह स्थान जहाँ केन्द्र सरकार गैस पर आधारित भारत की अष्टम् व राजस्थान की प्रथम खाद उत्पादनशाला का निर्माण करेगी।

• पुणे: - शिमला स्थित इन्डियन इन्स्टीट्यूट ऑव एडवान्स्ड स्टडीज का स्थानान्तरण शिमला से पुणे करने का निश्चय किया गया है।

• बंगलौर विकासशील देशों में ग्राम्य समाचार पत्रों की स्थापना तथा प्रबन्ध की समस्या पर विमर्श करने हेतु फरवरी, 1983 में, बंगलौर में एक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन होगा।

• लिसोथो—दक्षिणी अफ्रीका के इस देश पर दिसम्बर, 1982 के प्रारम्भ में, दक्षिण अफ्रीका ने राष्ट्रवादी आतङ्कवादियों को समाप्त करने हेतु आक्रमण किया। द. अफ्रीका का आरोप है कि लिसोथो में आतङ्कवादियों ने शरण ले रखी है।

• झरिया झरिया अङ्गार क्षेत्र (कोल फील्ड) की जोगता खनि में 1916 से लगी विश्व की सर्वाधिक विनष्टकारी भूमिगत अग्नि का शमन दो वर्षों के प्रयासो के पश्चात दिसम्बर 1982 में सम्भव हुआ। 90 मी. भूमिगत इस खनि से 14 मिलियन टन कोयले का समुत्थान हो सकेगा।

• विएना—पेट्रोलियम निर्यातक देश सङ्गठन (OPEC) की बैठक 20 दिस. 1982 को बिना किसी निर्णय के समाप्त हो गयी। तेल के मूल्य व उत्पादन की मात्रा निर्धारण पर सहज सहमति सम्भव न हो सकी।

• न्यू यॉर्क—सिख मत के सन्देश का प्रचार करने हेतु डॉ. गोपाल सिंह, अध्यक्ष, अल्पसंख्यक आयोग, यहाँ विश्व सिख केन्द्र की स्थापना की है।

• अपर वोल्टा—नवम्बर, 1982 में हुये सैनिक विद्रोह में राष्ट्रपति कर्नल साये जेर्बो को सत्ताच्युत कर दिया गया।

• हरारे सिटी—हरारे, जिम्बाब्वे की राजधानी सॉल्सबरी का नया नाम है।

• चश्मा—पाकिस्तान स्थित वह स्थान जहाँ आणविक शक्ति परियोजना की स्थापना प्रायोजित है।

• खुन्जेरब दर्रा—पाकिस्तान अधिकृत काश्मीर में पाकिस्तान व चीन द्वारा संयुक्त रूप से निर्मित खुन्जेरब दर्रा यारकन्द (सिकियाङ्) से बनी नयी सड़क को काराकोरम राजपथ से जोड़ता है। इसका प्रमुख उद्देश्य स्पष्टतः भारत व सो. स. के विरुद्ध चीन तथा पाकिस्तान की समरनीति को सुदृढ़ करना है।

• वखान संपथ—वखान संपथ (कॉरिडोर) सोवियत ताजीकिस्तान को पाकिस्तान अधिकृत काश्मीर से पृथक करता है। वखान संपथ इस सूचना से चर्चित हुआ कि सोवियत सेना ने इसको अभिधृत (occupy) कर लिया है जिसके फलस्वरूप सोवियत सेनाएँ, अवरोधरहित पाकिस्तान में सीधे प्रवेश करने में सक्षम होंगी।

• वास्को डी गामा गोआ के इस पत्तन नगर में गोवा व कन्नड़िगाओं के मध्य नवम्बर, 1982 में उपद्रव हुये।

• देसर—गुजरात के पंचमहल जिले का एक गाँव जहाँ के 90 प्रतिशत व्यक्ति चौर कर्म करते हैं। चोरी करना उनका वंशानुगत 'व्यवसाय' है।

• ब्रिसबेन : ऑस्ट्रेलिया के इस नगर में 9 अक्टूबर 1982 को XII कॉमनवैल्थ गेम्स समाप्त हुये।

नेहरू प्लोषद् : मॉस्को का एक रथ्या-मिथश्छेद (रोड इन्टरसेक्शन) जिसका नामकरण जवाहर लाल नेहरू की स्मृति में 'नेहरू प्लोषद्' किया गया है।

• मलन्जखण्ड : म. प्र. के बालाघाट जिले में स्थित विशाल ताम्र परियोजना जिसका उद्घाटन 12 नवम्बर 1982 को किया गया।

• नई दिल्ली : गुट निरपेक्ष देशों का सप्तम् सम्मेलन 7 से 11 मार्च, 1983 को नई दिल्ली में होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलन सितम्बर, 1982 में बगदाद में होने वाला था किन्तु ईरान-इराक युद्ध के कारण स्थानान्तरित करना पड़ा।

• सूवा (फीजी) : 17 राष्ट्रमण्डल देशों के अध्यक्षों का सम्मेलन (CHOGRM) 15-18 अक्टूबर, 1982 को सूवा में सम्पन्न हुआ जिसमें कम्पूचिया, अफगानिस्तान व हिन्दमहासागर आदि समस्याओं पर विमर्श हुआ।

• तीन बीघा : बाङ्गलादेश के दाहाग्राम तथा अङ्गारपोता अन्तरावेशों (enc ave) को जोड़ने वाले 178 × 85 मीटर के इस भारतीय क्षेत्र को पट्टे पर बाङ्गलादेश को दे दिया गया है, किन्तु इस पर भारत की प्रभुसत्ता बनी रहेगी।

• बैरन्कास : बैरन्कास (मैक्सिको) विश्व का मात्र एक स्थान है जो पूर्णतः सौर ऊर्जा द्वारा प्रदायित होगा। इस जनपद में सौर ऊर्जा का अधिकतम् प्रयोग होगा।

• मेरठ : उ. प्र. का वह जिला जो सितम्बर-अक्टूबर, 1982 में साम्प्रदायिक उपद्रवों से आक्रान्त रहा।

• टेक्नॉलजी सिटी : भारतीय व अमेरिकी विज्ञानियों के मध्य भारत में एक "टेक्नॉलजी सिटी" की आयोजना पर विमर्श हो रहा है। इस प्रकार के नगर स रा. अ. (सिलिकॉन वैली) व सो. सं. (सायन्स सिटी) में हैं।

• न्यू यॉर्क : समुद्र विधि समझौते को अन्तिम रूप देने के लिये 22 सितम्बर, 1982 को यहाँ कॉनफरेन्स ऑन द लॉ ऑव द सी की बैठक हुई।

• चटीला व सावरा : लेबनन की राजधानी बेरूत के पश्चिमी भाग में स्थित शरणार्थी शिविर जहाँ इस्रायल के कथित 'सहयोग' से फिलिस्तीनी शरणार्थियों की जघन्य हत्या की गयी।

क्रीड़ा जगत

• • अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताएँ :

■ नवें एशियाई खेल 1982—देखिए, विशिष्ट परिशिष्ट [पृष्ठ 73] जनवरी 83 अंक

■ बारहवें राष्ट्रमण्डलीय खेल 1982—30 सितम्बर से 9 अक्टूबर 1982 तक ब्रिसबेन (आस्ट्रेलिया) में सम्पन्न बारहवीं राष्ट्रमण्डलीय खेल प्रतियोगिता में मेज़बान देश-आस्ट्रेलिया 39 स्वर्ण पदक, 39 रजत पदक व 29 कांस्य पदक जीत कर प्रथम स्थान पर रहा। इंग्लैण्ड व कनाडा का क्रमशः द्वितीय व तृतीय स्थान रहा। भारत ने 5 स्वर्णपदक, 8 रजत पदक व 3 कांस्य पदक जीत कर छठा स्थान प्राप्त किया। भारतीय कुश्तीगरों का प्रदर्शन प्रशंसनीय रहा। 'मटिल्डा' नाम से सम्बोधित कंगारू इस प्रतियोगिता का प्रतीक चिन्ह था। अगले राष्ट्रमण्डलीय खेलों का आयोजन 1986 में एडिनबर्ग (स्काटलैण्ड) में होगा।

■ हाकी— • ओलम्पिक चैम्पियन—पु. : भारत; म. : जिम्बाब्वे • विश्व कप चैम्पियन—पु. : पाकिस्तान; म. : हालैण्ड • जूनियर विश्व कप चैम्पियन—पश्चिमी जर्मनी • एशियाई कप चैम्पियन—पु. : पाकिस्तान; म. : भारत • चैम्पियन्स कप चैम्पियन—हालैण्ड • असांडा कप आस्ट्रेलिया।

■ फुटबाल— • विश्व कप चैम्पियन-इटली • मरडेका कप चैम्पियन-ब्राजील • एशियाई महिला चैम्पियन-ताईवान • एशियाई युवा चैम्पियन-इराक व यू.ए.ई. (संयुक्त विजेता)

■ टेनिस— • विम्बलडन चैम्पियन-पु. : जिमी कोनर्स; म. : मार्टीना नवरातिलोवा • सं. रा. अमेरिका ओपन चैम्पियन-पु. : जिमी कोनर्स; म. : क्रिस इवर्ट लॉयड • एशियन नेशन्स कप चैम्पियन- भारत • डब्ल्यू. सी. टी. कप चैम्पियन-ईवान लैण्डल • ग्रां प्री कप चैम्पियन-ईवान लैण्डल • फेडरेशन कप-सं. रा. अमेरिका • डेविस कप-सं. रा. अमेरिका।

■ बैडमिन्टन— • विश्व कप चैम्पियन-पु. : लिम स्वी किंग; म. : लेन कोपेन • ऑल इंग्लैण्ड चैम्पियन-पु. : मॉर्टन फ्रास्ट; म. : जियांग झिंग • इण्डियन मास्टर्स चैम्पियन-पु. : लुईस पोगांह; म. : जैन वेब्स्टर • राष्ट्रमण्डलीय चैम्पियन-सैयद मोदी • थामस कप-चीन • उबेर कप-जापान।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

■ क्रिकेट— ● विश्व कप चैम्पियन-पु. : वैस्ट इण्डीज; म. : आस्ट्रेलिया ● इंग्लैण्ड-पाकिस्तान टेस्ट श्रृंखला-इंग्लैण्ड 2-1 से विजयी ● पाकिस्तान-श्रीलंका टेस्ट श्रृंखला-पाकिस्तान 2-1 से विजयी ● पाकिस्तान-आस्ट्रेलिया टेस्ट श्रृंखला-पाकिस्तान 3-0 से विजयी ● भारत-श्रीलंका टेस्ट श्रृंखला-मात्र एक टेस्ट मैच खेला गया जो अनिर्णीत रहा।

■ टेबिल टेनिस— ● विश्व कप चैम्पियन- पु. : चीन; म. : चीन ● एशियाई चैम्पियन-दलगत:—पु. :चीन; म. : चीन, एकल:—पु. : लाई जेन हुआ; म. : साओ मान याहुओ ● राष्ट्रमण्डलीय चैम्पियन-दलगत:-पु. : इंग्लैण्ड; म. : इंग्लैण्ड, एकल-पु. : अतान्दा मूसा; म. : कैरोल नाइट।

■ शतरंज— ● विश्व चैम्पियन-अनातोली कार्पोव, ● विश्व जूनियर चैम्पियन-पु. : आँद्रेई सोकोलोव, म. : ए. ब्रस्टमेन ● एशियाई दलगत चैम्पियन-फिलीपीन्स ● अन्तर्राष्ट्रीय ओलम्पियाड चैम्पियन-पु. : सोवियत रूस; म. : सोवियत रूस।

■ मुक्केबाजी— ● डब्ल्यू. बी. ए. हैवीवेट चैम्पियन-लैरी होम्स ● डब्ल्यू. बी. सी. हैवीवेट चैम्पियन-माईक वेबर ● डब्ल्यू. बी. सी. लाईट हैवीवेट चैम्पियन-ड्वाईट ब्राक्सटन ● डब्ल्यू. बी. ए. बैन्टमवेट चैम्पियन-जेफ शेन्डलर ● डब्ल्यू. बी. ए. फीदरवेट चैम्पियन-यूसीबिओ पेडरोजा ● डब्ल्यू. बी. ए. लाइट हैवीवेट चैम्पियन-माईकल स्पिक्स ● डब्ल्यू. बी. ए. लाईटवेट चैम्पियन-रे मेन्सीनी ● डब्ल्यू. बी. सी. फ्लाईवेट चैम्पियन-सेन्टोस लैसियर ● डब्ल्यू. बी. सी. वाल्टरवेट चैम्पियन-एनोर प्रीयार ● एशियन एमिच्योर चैम्पियन-द. कोरिया।

■ विश्व ब्रिज चैम्पियन—फ्रान्स ■ विश्व बिलियर्ड्स् चैम्पियन-माइकेल फरेरा ■ विश्व स्नूकर चैम्पियन-टेरी पारसन ■ विश्व स्क्वॉश चैम्पियन-जहाँगीर खाँ ■ विश्व वालीबाल चैम्पियन-पु. : सोवियत रूस; म. : चीन ■ विश्व तैराकी चैम्पियन-पु. : सं रा. अमेरिका; म. : पू. जर्मनी ■ विश्व जिमनास्टिक चैम्पियन-पु. : चीन; म. : सोवियत रूस ■ हिमालय कार रैली-जयन्त शाह व असलम खाँ ● केनिया सफारी रैली-शेखर मेहता ■ विश्व कुश्ती चैम्पियन-सं. रा. अमेरिका ● एशियाई कुश्ती चैम्पियन-ईरान ■ विश्व बास्केटबाल चैम्पियन-सोवियत रूस ● एशियाई बास्केटबाल चैम्पियन-पु. : चीन; म. द. कोरिया ■ विश्व जुडो चैम्पियन—जापान ● विश्व निशानेबाजी चैम्पियन—सोवियत रूस ■ विश्व पोलो चैम्पियन—सं. रा अमेरिका।

● ● ● राष्ट्रीय प्रतियोगिताएं

■ क्रिकेट — ● रणजी ट्राफी—दिल्ली दिलीप ट्राफी—उत्तरी क्षेत्र ● ईरानी ट्राफी—शेष भारत एकादश ● विजी ट्राफी—उत्तरी क्षेत्र ● देवधर ट्राफी—पश्चिमी क्षेत्र ● कूचबिहार ट्राफी—उत्तरी क्षेत्र ● रोहिन्टन बेरिया ट्राफी—दिल्ली ● सी. के. नायडू ट्राफी—उत्तरी क्षेत्र ● राष्ट्रीय महिला क्रिकेट चैम्पियन बम्बई।

■ हाकी— ● राष्ट्रीय चैम्पियन – पु. : पंजाब; म. रेलवे; जूनियर—उत्तर प्रदेश ● आँगा खाँ कप—महिन्द्र क्लब, बम्बई ● बेटन कप—ई. एम. ई., जलन्धर व पूर्व रेलवे क्लब, कलकत्ता (संयुक्त विजेता) ● बाम्बे गोल्ड कप—आर्मी सर्विस कोर, जलन्धर ● जवाहर लाल नेहरू ट्राफी—सीमा सुरक्षा बल, जलन्धर ● ध्यान चन्द गोल्ड कप ई. एम. ई जलन्धर।

■ फुटबाल—राष्ट्रीय चैम्पियन—पु. : पं. बंगाल; म. प. बंगाल; जूनियर : प. बंगाल ● डूरन्ड कप—सीमा सुरक्षा बल ● रोवर्स कप—सलाहुद्दीन क्लब, इराक ● आई. एफ. ए. शील्ड—मोहनबागान ● फेडरेशन कप—मोहनबागान ● स्टेफर्ड कप - इराकी वायु सेना ● विठ्ठल ट्राफी—पंजाब पुलिस ● सुब्रत कप—मध्यमग्राम हाई स्कूल, पं. बंगाल।

■ बैडमिण्टन — ● राष्ट्रीय चैम्पियन—दलगत—पु. महाराष्ट्र; म. : रेलवे, एकल—पु. : सैयद मोदी; म. मधुमिता गोस्वामी।

■ टेबिल टेनिस— ● राष्ट्रीय चैम्पियन:—दलगत—पु : तामिलनाडु, म. : महाराष्ट्र, एकल—पु : चन्द्रशेखर; म. : इन्दु पुरी

■ टेनिस— ● राष्ट्रीय चैम्पियन—पु. : एस. वासुदेव; म. : अनु पेशावारिया ● राष्ट्रीय हार्डकोर्ट चैम्पियन—पु. : नन्दन बाल; म : नम्रता अप्पाराव।

■ शतरंज—राष्ट्रीय चैम्पियन—पु. : प्रवीन महाजन; थिप्से; म. : जयश्री खादिलकर ● राष्ट्रीय 'बी' चैम्पियन—दिबेन्दु बरुआ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

■ वालीबाल—राष्ट्रीय चैम्पियन—पु. : राजस्थान; म. : केरल

■ बास्केटबाल—राष्ट्रीय चेम्पियन—पु. : सेना; म.: पंजाब

■ कबड्डी—राष्ट्रीय चैम्पियन—पु. : दिल्ली; म. : महाराष्ट्र ■ साईक्लिङ्ग—राष्ट्रीय चैम्पियन—पु : रेलवे; म. : पंजाब ■ राष्ट्रीय स्क्वॉश चैम्पियन—पु. : मेजर आर. के मनचन्दा; म. : भुवनेश्वरी कुमारी

■ राष्ट्रीय बिलियर्ड्स चैम्पियन—गीत सेठी ■ राष्ट्रीय मुक्केबाजी चैम्पियन—सेना ■ राष्ट्रीय भारोत्तोलन चैम्पियन—दलगत-रेलवे; एकल: जी एस. चिम्मा ■ राष्ट्रीय तैराकी चैम्पियन—दलगत—प : पुलिस; म. : महाराष्ट्र; एकल—पु. : खजान सिंह; म : बुला चौधरी ■ राष्ट्रीय वाटरपोलो चैम्पियन—रेलवे ■ राष्ट्रीय कुश्ती चैम्पियन—रेलवे ■ राष्ट्रीय निशानेबाजी चैम्पियन—पु : राजस्थान; म. : पं. बंगाल ■ राष्ट्रीय तीरन्दाजी चैम्पियन—पु : पं बंगाल; म. : प. बंगाल ■ जिमनास्टिक—दलगत—चण्डीगढ़; एकल - बलराम शील ■ इण्डियन ओपन गॉल्फ चैम्पियन—शैगं मॉम

योजनाएँ/परियोजनाएँ/नीतियाँ

● नवीन स्वास्थ्य नीति : 2 नवम्बर, 1982 को संसद में नवीन राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति की घोषणा की गयी। नीति में अग्रलिखित कार्य-योजन पर बल दिया गया : 1. केन्द्र तथा राज्य स्तर पर स्वास्थ्य सेवा की पुनःसंरचना; 2. चिकित्सीय व स्वास्थ्य मानवशक्ति का पुनर्विन्यास· निजि चिकित्सकों व स्वयंसेवी संस्थाओं का उचित उपयोग; 3. विद्यमान व्यापक रोगों पर नियन्त्रण व उन्मूलन; 4. सांसर्गिक रोगों के निदान हेतु अन्वेषण; 5. स्वास्थ्य व परिवार नियोजन हेतु किए गए प्रयासों में समन्वयन।

● नवीन ग्राम्य बैङ्क नीति : ग्रामीणों को अधिक बैङ्क सुविधा उपलब्ध कराने व बैङ्कों को अधिकाधिक सुलभ कराने के उद्देश्य से रिजर्व बैङ्क ऑव इन्डिया ने एक नवीन त्रिवर्षीय योजना (1982—85) का प्रवर्तन किया है जिसके अन्तर्गत षष्ठम् योजना के अन्त तक 17000 व्यक्तियों पर एक बैङ्क का लक्ष्य रखा गया है। पर्वतीय व जनजातीय क्षेत्रों को प्राथमिकता दी जाएगी जहाँ बैङ्कों की कमी है।

● मलन्जखण्ड परियोजना : 120 करोड़ रु. की मलन्जखण्ड ताम्र परियोजना (म. प्र.) का निर्माण हिन्दुस्तान कॉपर लिमिटिड द्वारा किया जा रहा है। यह अपने प्रकार की सर्वाधिक परिष्कृत परियोजना है जिसमें पर्यावरण व प्रदूषण सम्बन्धी नीति का पालन होगा।

● ओबरा ताप विद्युत-निर्माणी : 200 मे. वॉ. की तृतीय इकाई चालू हो जाने के पश्चात अब यह निर्माणी (plant) एशिया की बृहत्तम ताप-विद्युत-निर्माणी है। अब इसकी अधिकतम क्षमता 1,550 मे. वॉ. हो गयी है।

● मारुति कार परियोजना : 2 अक्टूबर, 1982 को भारत सरकार, जापान की सुजुकी (Suzuki) मोटर कम्पनी व मारुति उद्योग के मध्य समझौता हुआ जिसके अन्तर्गत सुजुकी मारुति को यात्री कार, वैन व पिक-अप निर्माण में तकनीकी सहयोग देगा। सुजुकी द्वारा निवेश जापान का भारत में सर्वाधिक निवेश है।

● गोदावरी बैरेज : आं. प्र. में दौलेश्वरम् स्थित 4.6 कि. मी. लम्बा यह द्वारित वार (बैरेज) विश्व के सर्वाधिक लम्बे द्वारित वारों में एक है। इसकी जल निकासी क्षमता 35,00,000 क्यूबिक फीट प्रति सेकन्ड है।

● नवीन पर्यटन नीति : 4 नवम्बर, 1982 को प्रथमः भारत की पर्यटन नीति घोषित हुयी। इसके अन्तर्गत : 1. पर्यटन को विदेशी मुद्रा अर्जक उद्योग का दर्जा प्रदान किया गया; 2. विदेशी व घरेलू पर्यटकों को सस्ती व उचित सुविधाएं उपलब्ध कराने पर बल दिया गया; तथा, 3. पर्यटन प्रोत्साहन हेतु सरकारी व निजि क्षेत्रों की सक्रीयता; 4. पर्यटन को राष्ट्रीय अखण्डता की भावना को बलवती बनाने का माध्यम बनाने हेतु कार्यक्रम, एवं 5. इस दशक के अन्त तक 3.5 मिलियन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विदेशी पर्यटकों के भारतागमन की सीमा निर्धारित की गयी ।

● चमेरा जलविद्युत परियोजना : हि. प्र. में निर्माणाधीन इस परियोजना से 1700 मिलियन यूनिट विद्युत का उत्पादन होगा । रावी नदी पर निर्माणाधीन इस परियोजना के अंतर्गत 125 मी. ऊँचा बांध बनाया जाएगा जो रावी के जल को एक सुरङ्ग द्वारा खैटी ग्राम के भूमिगत विद्युत स्थत्र तक पहुंचायेगा ।

● ऐल्जीरियन रेलवे परियोजना : भारत की इन्डियन रेलवे कन्सट्रक्शन कम्पनी लिमिटिड एल्जरिया के सैरा के निकट रु. 350 मिलियन की इस परियोजना के अन्तर्गत 23 कि. मी. लम्बी मीटर गेज रेल लाइन बनाएगी।

● परियोजना सहायता : 11 नवम्बर, 1982 को हुए समझौते के अन्तर्गत डेनमार्क भारत को रु. 167 मिलियन की परियोजना सहायता देगा जिससे भारत डेनमार्क से मात्स्य सामुद्रिकी अन्वेषण जलयान प्राप्त करेगा तथा थाल उर्वरक परियोजना में डेनिश उपकरणों व सुझावों का मूल्य अदा करेगा ।

संविधान जगत

● बिहार प्रेस विधेयक – पीत पत्रकारिता को रोकने के उद्देश्य से 31 जुलाई, 82 को बिहार विधान सभा ने भारतीय दण्ड प्रक्रिया संहिता (बिहार संशोधन) पारित किया जो अब राष्ट्रपति के पास उनकी स्वीकृति हेतु विचाराधीन है । इस संशोधन विधेयक के अनुसार यह व्यवस्था की गयी है कि अश्लील व गन्दी सामग्री अथवा भयादोह के लिये आशयित सामग्री के मुद्रण, प्रदर्शन, प्रसार, अथवा, अपने पास रखने या बिक्री करने पर अभियुक्त को कठोर कारावास या जुर्माना या दोनों की सजा दी जा सकती है । विधेयक के अनुसार, 'गन्दा' शब्द के अन्तर्गत ऐसी कोई भी बात समझी जायेगी जो नैतिकता के लिये हानिकर हो या जिससे किसी व्यक्ति को हानि पहुँच सकती हो, लोक कृत्यों का सम्पादन करने वाले लोक सेवकों या सार्वजनिक प्रश्न से जुड़े हुए व्यक्तियों के सम्बन्ध में या उनके चरित्र के सम्बन्ध में जहाँ तक उक्त आचरण से उनका चरित्र परिलक्षित होता हो (किन्तु इसके अतिरिक्त नहीं) को प्रकट करने की केवल अनुमति प्रदान की गयी है, इस अपराध को अवेक्षणीय एवं गैर जमानती बना दिया गया । इसके पहले तमिलनाडु (1961) एवं उड़ीसा (1962), इसी प्रकार के अधिनियम पारित कर चुके हैं । सर्वोच्च न्यायालय ने तमिलनाडु के प्रेस अधिनियम के कुछ महत्वपूर्ण अंश को इस आधार पर स्थगित कर दिया कि पत्रकारिता पर इस प्रकार के प्रतिबंध संविधान के अनुच्छेद 19 (1) के अन्तर्गत न्यायसंगत नहीं हैं । भारतीय प्रेस परिषद ने इस विधेयक का विरोध किया है । बिहार सरकार इस प्रेस विधेयक में उचित संशोधन करने के लिये सहमत हो गयी है ।

● जम्मू-कश्मीर पुनर्वास विधेयक – जम्मू कश्मीर विधानसभा द्वारा 1982 के प्रारम्भ में पारित यह विधेयक अपने स्वरूप तथा प्रभाव को लेकर केन्द्र व राज्य सरकार के मध्य गम्भीर मतभेद का रूप ग्रहण कर चुका है । इस विवादास्पद विधेयक की प्रमुख व्यवस्था के अनुसार, मार्च 1947 तथा विभाजन के पश्चात कश्मीर के जो निवासी पाकिस्तान चले गये और अनिश्चित परिस्थितियों के कारण कश्मीर वापस न लौट सके, वे कुछ खास शर्तों को पूरा करने पर (जिनमें भारत के केन्द्र सरकार से 'वीसा' प्राप्त करना भी है) कश्मीर पुनः वापस लौट सकते हैं । यद्यपि यह विधेयक 1952 के नेहरू-शेख अब्दुल्ला समझौते के विरुद्ध नहीं है, फिर भी जम्मू कश्मीर के राज्यपाल ने इस विधेयक को भारतीय संविधान के अनुच्छेदों की गलत व्याख्या पर आधारित बताया और विधानसभा को वापस लौटा दिया । जम्मू-कश्मीर विधानसभा ने 4 अक्टूबर को इस विधेयक को पुनः पारित किया और यह इस प्रकार अधिनियम बन गया । भारत के राष्ट्रपति ने इस अधिनियम की संवैधानिकता की जाँच के लिये इसे सर्वोच्च न्यायालय के सुपुर्द कर दिया । जम्मू-कश्मीर सरकार ने सर्वोच्च न्यायालय द्वारा भविष्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में प्रदान किये जाने वाले निर्णय को स्वीकार करने के लिये सहमत हुई है।

• न्यायाधीशों का स्थानान्तरण वैध—संविधान के अनुच्छेद 222 के अन्तर्गत राष्ट्रपति को सर्वोच्च न्यायालय के परामर्श से उच्चन्यायालय के किसी न्यायाधीश को किसी दूसरे उच्च न्यायालय में स्थानान्तरित करने की शक्ति प्राप्त है। पिछले कई वर्षों से चले आ रहे न्यायधीशों के स्थानान्तरण सम्बन्धी विवाद को समाप्त कर हाल में 'न्यायाधीश स्थानान्तरण' के मामले में सर्वोच्च न्यायालय ने निम्नलिखित सिद्धान्त प्रतिपादित किया है—(क) नियुक्ति या अतिरिक्त न्यायाधीश को स्थायी बनाने की प्रक्रिया में उच्चन्यायालय के मुख्य न्यायाधीश, राज्यपाल एवं सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश तीनों की संस्तुति समान महत्व रखती है और राष्ट्रपति 'लोकहित' में किसी एक की संस्तुति को प्रभावी कर सकता है, (ख) यदि स्थानान्तरण न्यायाधीश के आचरण व व्यवहार के कारणों से किया जा रहा है तो वह वैधानिक है, (ग) स्थानान्तरण करते समय न्यायाधीश की भाषा की समझ, लोकहित, प्रशासनिक सुविधा एवं राष्ट्रीय एकता जैसे मूल्यों पर पूर्ण ध्यान दिया जाना चाहिए, (घ) जहां तक न्यायालय के समक्ष किसी व्यक्ति द्वारा आवेदन लाने की समर्थता का प्रश्न है, समाज का कोई व्यक्ति या निश्चित वर्ग या व्यक्तियों का समूह जिसे कोई विशेष क्षति पहुँचती है और वह वर्ग या समूह सामाजिक असक्षमता, गरीबी अथवा अन्य कारणों से यदि न्यायालय में आवदन करने में असमर्थ है तो समाज का कोई भी व्यक्ति, भले ही उसे प्रत्यक्ष रूप से कोई हानि न पहुंचती हो, न्यायालय के समक्ष 'लोकक्षति' के आधार पर आवदन कर सकता है।

• राष्ट्रीय सुरक्षा अधिनियम—24 सितम्बर, 80 को राष्ट्रपति ने राष्ट्रीय सुरक्षा अध्यादेश के नाम से निवारक निरोध अध्यादेश जारी किया जिसका उद्देश्य राष्ट्र की सुरक्षा, सार्वजनिक व्यवस्था (जैसे, साम्प्रदायिक व जातीय दंगे आदि) और आपूर्ति एवं आवश्यक वस्तुओं के विरुद्ध कार्य करने वाले व्यक्ति को सरकार 1 वर्ष की अधिकतम सीमा तक नजरबन्द कर सकती हैं। इस अध्यादेश को जनवरी 81 में अधिनियम का रूप प्रदान किया गया। इस अधिनियम को कई याचिकाओ द्वारा चुनौती दी गयी। 24 दिसम्बर 82 को अपने निर्णय में सर्वोच्च न्यायालय ने राष्ट्रीय सुरक्षा अधिनियम को वैध ठहराया।

• मृत्यु दण्ड का अधिकार—रंगा और बिल्ला की याचिका पर उच्चतम न्यायालय की विशेष पीठ ने 20 जनवरी 82 को अपने निर्णय के अन्तर्गत संविधान के अनुच्छेद 72 के अन्तगत क्षमादान की याचिकाओं पर राष्ट्रपति के स्वेच्छाधिकार को वैध ठहराया।

• ब्रिटिश नागरिकता अधिनियम—1981 में पारित ब्रिटिश नागरिकता अधिनियम के अन्तगत ब्रिटिश नागरिको को तीन श्रेणियों में विभाजित किया गया था। इस अधिनियम के अनुसार, अश्वेत ब्रिटिश नागरिको के अधिकार सीमित कर दिय गय थे। 25 अक्टूबर 82 को ब्रितानी सरकार ने एक श्वेत पत्र प्रकाशित किया जिसके अनुसार संसद की स्वीकृति मिलने पर 1 जनवरी 83 से ब्रिटिश महिला नागरिक को भी अपने विदेशी पति या मंगेतर को विधिवत ब्रिटेन लाने का अधिकार था। परन्तु 16 दिसम्बर 82 को ब्रिटिश संसद ने सम्बन्धित संशोधन विधेयन को अस्वीकार कर दिया।

विविधा

• इन्दिरा गिरि—दिसम्बर 81 के अन्टार्कटिक अभियान मे डॉ. एस. जेड. कासिम के नेतृत्व में प्रथम भारतीय दल द्वारा वहां खोजे गये पर्वत का नाम।

• एफ-16—यह अमेरिका का बहुचर्चित आधुनिकतम लड़ाकू बम-वर्षक विमान है। अमेरिका पाकिस्तान को 40 एफ-16 विमान बेच रहा है। इस विमान की आपूर्ति की एक खेप पाकिस्तान को मिल चुकी है।

• तेलुगु देशम तेलुगु फिल्मो के लोकप्रिय अभिनेता एम. टी. रामाराव द्वारा आन्ध्र प्रदेश में गठित क्षेत्रीय राजनीतिक दल, जो जनवरी 83 में सम्पन्न हो रहे मध्यावधि चुनाव में भाग ले रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

● भारत महोत्सव—ब्रिटेन में 22 माच से 14 नवम्बर, 82 तक आयोजित 'भारत उत्सव' में 20 शासकीय तथा 80 वैयक्तिक कार्यक्रम प्रदर्शित किये गये। लगभग 20 लाख लोगों ने इन कार्यक्रमों को देखा। सर माइकल वाकर व पोपुल जायकर को उक्त महोत्सव की सफलता का सम्पूर्ण श्रेय जाता है।

● अन्तर्राष्ट्रीय वृद्ध-वर्ष – संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा वर्ष 1982 को अन्तर्राष्ट्रीय वृद्ध-वर्ष के रूप में मनाया गया।

● अन्तर्राष्ट्रीय संचार-वर्ष – संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा वर्ष 1983 को अन्तर्राष्ट्रीय संचार-वर्ष के रूप में मनाया जायेगा।

● एक्जोसेट—फाकलैण्ड युद्ध के दौरान अर्जेन्टीना ने फ्रान्स में निर्मित अत्याधुनिक प्रक्षेपास्त्र एक्जोसेट, जो ध्वनि की गति से समुद्र की सतह से केवल दो मीटर ऊपर रह कर पूर्वनिर्धारित लक्ष्यों पर घातक प्रहार करता है। इसने ब्रितानी विध्वंसक युद्धपोत 'शेफील्ड' को नष्ट कर डुबो दिया।

● मारुति—सुजकी सहयोग—अप्रैल 82 में भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीयकृत मारुति उद्योग लि. और सुजुकी मोटर कम्पनी (जापान) के मध्य भारत में छोटी कार व अन्य वाहन के निर्माण के लिये समझौता हुआ। भारत में निजी प्रयोग तथा निर्माण के लिये इसका उत्पादन 1983 के अन्त तक प्रारम्भ हो जायेगा।

● मिराज-2000—अप्रैल 82 में फ्रान्सने भारत से 40 आधुनिकतम लड़ाकू बम वर्ष दूर भेदी मिराज-2000 विमान बिक्री के समझौते पर हस्ताक्षर किया। बाद में यह विमान भारत में ही निर्मित किया जायगा।

● गरुड़ –1984 में लॉस एन्जिल्स (अमेरिका) में आयोजित होने वाले 23वें ओलम्पिक खेलों का प्रतीक-चिन्ह।

● कनाडा का नया संविधान—17 अप्रैल 82 को कनाडा ने ब्रिटिश नार्थ अमेरिका एक्ट 1867 को समाप्त कर नया संविधान लागू किया और ब्रिटेन के साथ सभी संवैधानिक सम्बन्धों का विच्छेदन कर लिया गया।

● रानी पद्मिनी कोचीन शिपयार्ड द्वारा बनाया जा रहा भारत का सबसे बड़ा माल वाहक जहाज।

● झारखण्ड दल—मध्य प्रदेश, बिहार, पं. बंगाल तथा उड़ीसा के संथाल परगना तथा छोटा नागपुर के इलाकों में पृथक झारखण्ड राज्य की स्थापना हेतु आन्दोलन के लिये गठित राजनीतिक संगठन।

● क्रान्ति रंगा कर्नाटक के भूतपूर्व मुख्यमन्त्री द्वारा गठित एक क्षेत्रीय राजनीतिक दल।

● वायुदूत—एयर इण्डिया तथा इण्डियन एयर लाइन्स के साथ भारत की यह नवगठित वायु सेवा जिसका मुख्य उद्देश्य देश के छोटे नगरों तथा अन्तस्थ क्षेत्रों को वायु सेवा से जोड़ना है।

● चॉर्टर्ड विमान-सेवा—देश में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिये 31 अक्टूबर, 82 से यूरोपीय पर्यटकों के लिये चॉर्टर्ड विमान-सेवा प्रारम्भ किया गया है।

● सोवियत गैस पाइप-लाइन—सोवियत-संघ के साइबेरिया प्रान्त में पाये जाने प्राकृतिक गैस का फ्रान्स, पश्चिम जर्मनी, इटली, आस्ट्रिया, हालैण्ड, स्विट्जरलैण्ड तथा अन्य यूरोपीय देशों को आपूर्ति के लिये पाँच हजार किलो मी. लम्बी गैस पाइप लाइन के निर्माण के लिये समझौता हुआ। यह पश्चिमी देशों और सोवियत-संघ के मध्य अब तक सबसे बड़ा समझौता था। शुरू में अमेरिका इस समझौते का विरोधी था, परन्तु ब्रेझनेव की मृत्यु के पश्चात् अमेरिका ने इस सन्दर्भ में सभी आर्थिक व तकनीकी प्रतिबन्ध हटा लिया। (वार्षिक घटनाचक्र का शेष भाग आगामी अङ्क में)

पी० सी० एस० तथा अन्य प्रतियोगितात्मक परीक्षाओं के लिये
प्राचीन भारतीय इतिहास पर महत्वपूर्ण एवं उपयोगी पुस्तक

प्राचीन भारत का इतिहास

नवीन तथा नये पाठ्यक्रम के अनुसार नवीन संस्करण
(प्रारम्भ से १२ वीं शती तक)

लेखक : के० सी० श्रीवास्तव
प्रवक्ता
सी० एम० पी० डिग्री कालेज
इलाहाबाद
प्रकाशक
यूनाइटेड बुक डिपो
यूनिवर्सिटी रोड, इलाहाबाद-२११००२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रीय बचतें सदा ही सर्वोत्तम

अब पहले से भी अधिक लाभदायक

सर्वाधिक ब्याज के लिए

६-वर्षीय राष्ट्रीय बचत पत्र (षष्ठम निर्गम) क्रय करें

१२ प्रतिशत चक्रवृद्धि ब्याज-छमाही हिसाब से

जोड़कर या १६.९२ प्रतिशत साधारण ब्याज-

परिपक्व होने पर देय

१०० रुपये २०१.५० रुपये हो जाते हैं।

४००० रु० वार्षिक ब्याज कर मुक्त है।

नामाँकन की सुविधा है।

शीघ्रता करें अब यह बचत पत्र डाकघरों में उपलब्ध हैं।

राष्ट्रीय बचत निदेशालय, उत्तर प्रदेश, लखनऊ।

रतन कुमार दीक्षित द्वारा 436, ममफोर्डगंज, इलाहाबाद से प्रकाशित तथा उन्हीं के द्वारा चन्द्रा प्रिंटिंग वर्क्स, 37, एलनगंज, इलाहाबाद में मुद्रित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Postal Regd. No. AD-137
Licence No. W.P.-43
Regd. No. R. N. 39628/74
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

JUST RELEASED

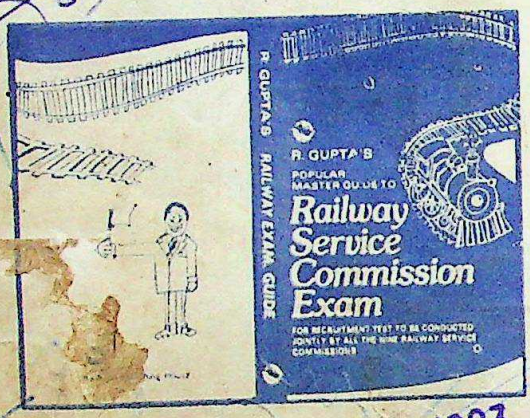

Rs 20/-

R. Gupta's Railway Exam Guide

New edition of R. Gupta's famous Railway Exam. Guide According to new syllabus announced by the Railway Board. Model test papers and intelligence test are specialities of the guide. Attractive double spread cover. For success you can depend on this book.

19 FEB 1983

A Hand Book of English Grammar

There is no dearth of good books on English Grammar. But this one is unique. It is written specially for those going to appear in competitive exams. Essentials of grammar well-explained. Lot of exercises for practice. A complete section devoted to English spelling.

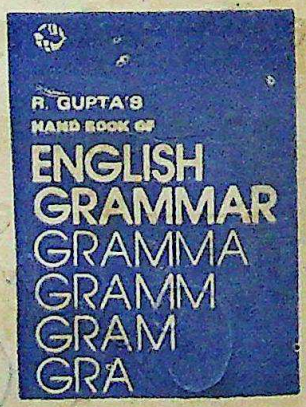

Rs. 10/-

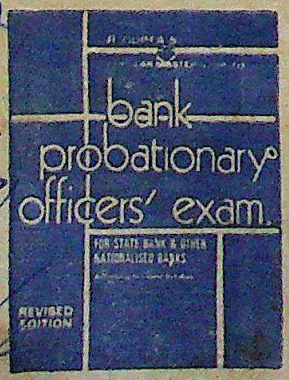

R. Gupta's Bank P.O. Exam Guide

R. Gupta's Bank P.O. Exam Guide is already a synonym of success in Bank P.O. Exam. Its 1983 edition contains a new model Test Paper and latest essays. Attractive glossy cover. Moderately priced.

Rs. 35/-

While ordering, please, send Rs. 10/- in advance by money order to :

Ramesh Publishing House
1457, Nai Sarak, Delhi-110 006

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिविल सर्विस विशेषांक (प्रथम)

प्रगति मंजूषा

प्रतियोगितात्मक परीक्षाओं हेतु सर्वाधिक लोकप्रिय मासिक

फरवरी '83 मूल्य - रु० 4.00

77
15-2-83

भारतीय विदेश नीति : ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में [2]
भारतीय निर्वाचन व्यवस्था: बदलते संदर्भ उभरते प्रश्न
भारतीय बुद्धिजीवी [3]
अकाली आन्दोलन : ऐतिहासिक संदर्भ
वार्षिक बजट निर्माण प्रक्रिया -

• सिविल सर्विसेज प्रारम्भिक -
परीक्षा की अध्ययन पद्धति संबंधी कुछ सुझाव
• सामान्य विज्ञान तथा कृषि पर महत्वपूर्ण वस्तुपरक परीक्षण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमन और खुशहाली का ध्वज लहराये,

प्रगति पथ पर उत्तर प्रदेश बढ़ता ही जाये।

प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा गाँधी के नये 20-सूत्री आर्थिक कार्यक्रम के अन्तर्गत कार्य करते उत्तर प्रदेश समग्र विकास की ओर अग्रसर है।

पिछले एक वर्ष के अरसे में ऊर्जा, सिंचाई तथा उद्योग के क्षेत्रों में विशेष प्रयासों के फलस्व ऊर्जा उत्पादन बढ़ा है, प्लॉट लोड फैक्टर बेहतर हुआ है, सिंचन क्षमता में वृद्धि हुई है तथा प्रदेश त्वरित औद्योगीकरण के लिए उचित वातावरण बना है।

गरीबी के खिलाफ नये कार्यक्रम लागू होने से समाज के कमजोर तबके के लोगों का बड़ी संख्या जीवन स्तर सुधरा है तथा सामाजिक सुरक्षा की दिशा में उल्लेखनीय प्रगति हुई है।

प्रदेश के गन्ना उत्पादक किसानों के हितों की सुरक्षा के लिए नयी गन्ना नीति लागू की गयी वहीं नयी औद्योगिक नीति में प्रावधान किया गया है कि हर ब्लाक में कम से कम दो लाख रुपये लागत वाला एक लघु उद्योग स्थापित किया जाय।

हरिजन उत्थान के लिए प्रदेश सरकार द्वारा किये गये प्रयासों के फलस्वरूप, विशेष समाव योजना के अन्तर्गत 178.02 करोड़ रुपये पिछले दो वर्षों में ही खर्च किये जा चुके हैं। इस 19,414 हरिजन बस्तियों का विद्युतीकरण हो चुका है तथा 45,070 कुँऐ, 6196 हैंड पम्प तथा 2,4 डिग्गियों का निर्माण पेयजल की सुविधा पहुँचाने के लिए किया गया है। अनुसूचित जाति के लोगों लिए 41,000 से अधिक मकानों का निर्माण भी किया जा चुका है।

प्रदेश भर मे एकीकृत ग्रामीण विकास योजना लागू कर दी गयी है जिससे 1.48 लाख परिव को अब तक लाभ मिल चुका है। अब तक अठारह लाख लोगों को उन्हें आवंटित भूमि का कब्जा दि दिया गया है तथा पन्द्रह लाख परिवारों को मकान के लिए भूमि आवंटित की गयी है। पिछले महीने में 25,000 से अधिक ग्रामीण तथा लघु औद्योगिक इकाईयों की स्थापना की गयी ताकि अधि रोजगार की सुविधायें उपलब्ध हो सके।

आवश्यक वस्तुओं की वितरण व्यवस्था को सुदृढ़ करने की दृष्टि से, सस्ती मूल्य की दुकानों सख्या 10,900 तक बढ़ा दी गयी है तथा दूरस्थ राज के इलाकों के लिए सोलह सचल सस्ते मूल्य दुकानों की व्यवस्था की गयी है।

एकीकृत दुग्धविकास योजना की प्रगति के लिए राज्य में आपरेशन फ्लड़-2 शुरू किया गया जिसस दूध के उत्पादन तथा उपलब्धि में वृद्धि हुई है।

सार्वजनिक निर्माण विभाग ने पिछले एक वर्ष में 1,675 किलो मीटर लम्बी नयी सड़कों तथा पुलों का निर्माण किया तथा 1,100 किलो मीटर लम्बी वर्तमान सड़कों का पुनर्निर्माण किया।

आर्थिक विषमताओं से मुक्ति

20 सूत्री कार्यक्रम

के

अन्तर्गत

समग्र विकास का सघन प्रयास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, उत्तर प्रदेश, लखनऊ द्वारा

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फरवरी—1983

वर्ष—6

अंक—2

इस अंक का मूल्य—रु० 4.00

पृष्ठ संख्यां—88

प्रगति मंजूषा

प्रतियोगितात्मक परीक्षाओं हेतु सर्वाधिक लोकप्रिय मासिक

[राष्ट्र की भाषा में राष्ट्र को समर्पित]

सम्पादक
रतन कुमार दीक्षित

सह-सम्पादक
प्रदीप कुमार वर्मा 'रूप'

उप-सम्पादक
जी. शंकर घोष, राकेश सिंह सेंगर

मुख्य कार्यालय
436, ममफोर्डगंज
इलाहाबाद-211002

शाखा जनसम्पर्क
ए-7, प्रेम एन्क्लेव
साकेत, नई-दिल्ली

डी. 47/5, कबीर मार्ग
क्लेस्क्वायर, लखनऊ

विज्ञापन सम्पर्क-सूत्र
169/20 ख्यालीगंज, लखनऊ
दूरभाष : 43792

आवरण : कोलोरैड, इलाहाबाद

चन्दे की दर
वार्षिक : रु. 44.00, अर्द्ध वार्षिक : रु. 22.00
सामान्य अंक (एक प्रति) : रु 4.00
(चन्दा मनीआर्डर द्वारा मुख्य कार्यालय को ही भेजें)

©पत्रिका में प्रकाशित सामग्री का सर्वाधिकार प्रकाशक के अधीन सुरक्षित है। पत्रिका में प्रकाशित लेखों के विचारों से प्रकाशक सहमति रखती है।

विशेष आकर्षण

■ सिविल सर्विस प्रारम्भिक परीक्षा की अध्ययन पद्धति सम्बन्धी कुछ सुझाव पर विशिष्ट परिशिष्ट(3)/44
■ सिविल सर्विस प्रारम्भिक परीक्षा हेतु उपयोगी कुछ पुस्तकें/ 40
■ सिविल सर्विस प्रारम्भिक परीक्षा हेतु सामान्य विज्ञान और कृषि तथा पशुपालन पर वस्तुपरक परीक्षण विशिष्ट परिशिष्ट'/57

परीक्षोपयोगी महत्वपूर्ण निबन्ध

■ वार्षिक बजट निर्माण प्रक्रिया/22
■ भारतीय निर्वाचन व्यवस्था : बदलते संदर्भ उभरते प्रश्न /25
■ अकाली आन्दोलन : ऐतिहासिक संदर्भ/31
■ भारतीय बुद्धिजीवी (3)/44
■ भारतीय विदेश नीति : ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में (2) /48
■ South Asian Cooperation/86

स्थायी स्तम्भ

■ समसामयिक सामान्य ज्ञान/2
■ राष्ट्रीय सामयिकी/6
■ अन्तरराष्ट्रीय सामयिका/13
■ सामान्य हिन्दी/42
■ क्रीड़ा जगत/55
■ Focus on Banking/Civil/Defence Services Examination / 81

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समसामयिक सामान्य ज्ञान

नये केन्द्रीय मंत्रिपरिषद की सूची

(31-1-83 तक सामयिक)

■ कैबिनेट मंत्री—

श्रीमती इन्दिरा गांधी—प्रधानमन्त्री
श्री प्रणव मुखर्जी—वित्त
श्री पी. वी. नरसिंह राव—विदेश
श्री प्रकाश चन्द्र सेठी—गृह
श्री आर. वेंकटरमन—रक्षा
श्री ए. बी. ए. गनी खां चौधरी—रेल
श्री एस. बी. चव्हाण—योजना
श्री जगन्नाथ कौशल—विधि, न्याय और कम्पनी मामले
श्री वीरेन्द्र पाटिल—श्रम और पुनर्वास
श्री बसंत साठे—रसायन और उर्वरक
श्री शिवशंकर—ऊर्जा
श्री बी. शंकरानन्द—स्वास्थ्य और परिवार कल्याण.
श्री अनन्त प्रसाद शर्मा—संचार
श्री बूटा सिंह—संसदीय मामले, खेल तथा निर्माण एवं आवास का अतिरिक्त भार
श्री वीरेन्द्र सिंह—कृषि और ग्रामीण विकास
श्री नारायण दत्त तिवारी—उद्योग, इस्पात और खान
श्री भीष्म नारायण सिंह—नागरिक आपूर्ति
श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह—वाणिज्य
श्री विजय भास्कर रेड्डी—निर्विभागीय मन्त्री

■ राज्यमन्त्री—

श्री जेड. आर. अंसारी—जहाजरानी और परिवहन
श्री भागवत झा आजाद—नागरिक उड्डयन
श्री हरकिशन लाल भगत—निर्माण और आवास
श्री कल्पनाथ राय—संसद कार्य
श्रीमती शीला कौल—शिक्षा, संस्कृति और समाज कल्याण
श्री खुर्शीद आलम खां—पर्यटन
श्री धर्मवीर—श्रम और पुनर्वास
श्री निहार रंजन लस्कर—गृह
श्री विट्ठल गाडगिल—संचार
श्री गार्गी शंकर मिश्र—पेट्रोलियम
श्री शिवराज पाटिल—विज्ञान और टेक्नोलाजी
श्री आरिफ मोहम्मद खां—कृषि
श्री ए. ए. रहीम—विदेश
श्री हरिनाथ मिश्र—ग्रामीण विकास
श्री पट्टभि रामाराव—वित्त
श्री रामचन्द्र रथ—रसायन और उर्वरक
श्री सी. के. जाफर शरीफ—रेल
श्री एन. पी. के. साल्वे—सूचना और प्रसारण
श्री चन्द्रशेखर सिंह—ऊर्जा
श्री दलवीर सिंह—कोयला

■ उपमन्त्री—

श्री मल्लिकार्जुन—संसद कार्य व सूचना एवं प्रसारण
श्री अलस्मान आरिफ—कृषि तथा नागरिक आपूर्ति
श्री पी. के. थुंगन—शिक्षा
श्री बी. एन. पाटिल—संचार
कुमारी कुमुदबेन जोशी—स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण
कुमारी कमला कुमारी—कृषि
श्री पी. के संगम्मा—वाणिज्य
श्री एम. एस. संजीवीराव—इलेक्ट्रॉनिक्स
श्री जनार्दन पुजारी—वित्त
श्री गुलाम नबी आजाद—विधि
श्री अशोक गहलोत—पर्यटन
श्री दिग्विजय सिंह—पर्यावरण

■ शब्द संक्षेप

● A.C.P.—अफ्रीकन, कैरीबियन एण्ड द पैसीफिक कन्ट्रीज
● C.A.P.—कॉमन एग्रीकल्चर पॉलिसि
● D.O.D.—डीपार्टमेन्ट ऑव ओशन डेवलपमेन्ट
● D.I.C.—डिस्ट्रिक्ट इन्डस्ट्रिज सेन्टर
● I.A.A.I.—इन्टरनेशनल एयरपोर्ट्स ऑथरिटि ऑव इण्डिया
● I.F.F.I.—इन्टरनेशनल फिल्म फेस्टीवल ऑव इण्डिया
● T.N.S.C.—इण्डियन नेशनल साइन्स कांग्रेस
● M.F.N.—मोस्ट फेव्ऑरेड नेशन
● M.X.—मिसाइल एक्सपेरीमेन्टल
● N.G.R.T.—नेशनल जिओग्रेफीकल रिसर्च इन्स्टीट्यूट
● O.G.L.—ओपन जनरल लाइसेन्स
● P.D.S.—पब्लिक डिस्ट्रीब्यूशन सिस्टम
● T.W.A.T.O.M.—थर्ड वर्ल्ड अटॉमिक इनर्जी कम्युनिटी
● W.F.P.—वर्ल्ड फुड प्रोग्राम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

■ प्रमुख पुस्तकें

● साइन्स ऑर सोसाइटी—माइक हेल्स

● स्ट्रगल फॉर चेन्ज—के. बी. लाल

● ए : अँ (Heir) अपैरेन्ट—करण सिंह

● अरब-इस्राइली वॉर—चेम हरजैग

● इण्डिया इन द एट्इज—(स) एन. एस. वासु

● एन इण्डियन फ्युचर—रोमेश थापर

● सिटी ऑव गोल्ड—गिलियन टिन्डिल

● दआर्म्स रेस एण्ड डिसआर्मामेन्ट—से. जे. आर. बिलग्रामी

● नथिंग बाई चान्स—रिचर्ड बैच

● द गंगा वाटर डिसप्यूट—बी. एम. अब्बास

● फार फ्लंग फ्रन्टियर—मेजर जनरल ओ. एम. कलाकत

● कनटेम्परारि पाकिस्तान—(सं.) प्राण चोपड़ा

● भारतीय प्रतिरक्षा—डा. हरबीर शर्मा

■ महत्वपूर्ण आंकड़े

● छठी पंचवर्षीय योजना के प्रथम दो वर्षों में विकास दर क्रमशः 7.7 प्रतिशत व 4.5 प्रतिशत रही।

● वर्ष 1982 में देश में कुल 763 फिल्मों का निर्माण हुआ। वर्ष 1981 में यह संख्या 737 थी।

● देश के 374 जिलों में से 88 जिलों में एक भी उद्योग नहीं है।

● भारत में केवल 34 लाख लोग आय कर देते हैं।

● वर्ष 1982 में देश में 129.91 अरब इकाई बिजली उत्पन्न हुई जबकि लक्ष्य 119.5 अरब इकाई निर्धारित किया गया था।

● वर्ष 1982 में देश में 1.96 करोड़ टन तेल का उत्पादन हुआ जो वर्ष 1981 की तुलना में 31 प्रतिशत अधिक है।

● 1 दिसम्बर 82 को भारत का विदेशी मुद्रा कोष 3333.47 करोड़ रु. था। इसमें अ. मु. को. से प्राप्त 1878.21 करोड़ रु. का ऋण भी सम्मिलित है।

● पिछले एक दशक में भारत में दुग्ध उत्पादन 2.2 करोड़ टन से 3.3 करोड़ टन हो गया है।

● वर्ष 1982 में भारत-सोवियत संघ के मध्य 3260 करोड़ रु. का व्यापार हुआ। वर्ष 1983 में यह राशि 3625 करोड़ रु. होगी।

● भारतीय दूरदर्शन में 30 प्रतिशत कार्यक्रमों का रंगीन प्रसारण होता है।

● भारत चालू वित्तीय वर्ष में अमेरिका से 24.95 लाख टन गेहूँ आयात कर रहा है।

● भारत में 10 लाख से अधिक जनसंख्या वाले 12 शहर हैं।

● छठी पंचवर्षीय योजना में 57.40 लाख हैक्टयर भूमि पर सिंचाई क्षमता उपलब्ध कराना है। इस दौरान बाढ़ नियन्त्रण के लिये 10 अरब 45 करोड़ रु. का प्रावधान रखा गया।

● बाम्बे हाई का दैनिक उत्पादन 3.2 लाख बैरल (पीपा) है।

● अमेरिका में 1.2 करोड़ लोग बेरोजगार है। यह चार दशकों का रिकार्ड है।

● अमेरिका अगले पांच वर्षों में अस्त्र-शस्त्र पर 1.6 ट्रिलियन डालर व्यय करेगा।

● देश में परमाणु ऊर्जा संयन्त्र की आठ और इकाईयाँ शीघ्र ही स्थापित होगी। प्रत्येक इकाई की क्षमता 235 मेगावाट होगी। इस समय परमाणु संयन्त्र की कुल क्षमता 2270 मेगावाट है परन्तु उत्पादन 860 मेगावाट का हो रहा है। वर्ष 2000 तक यह क्षमता बढ़ाकर 10000 मेगावाट किया जायेगा।

● पिछले एक वर्ष से बम्बई के कपड़ों के मिलों में चल रहे हड़ताल के फलस्वरूप अब तक 18 अरब रु. की क्षति हुई है।

● छठीं योजना के अन्त तक 11 और रेडियो प्रसारण केन्द्र खोले जायेंगे। इस समय कुल 86 रेडियो प्रसारण केन्द्र है जो देश से 90% क्षेत्र को कवर करते हैं।

● भारत में 16% से 19% परिवार औसतन 10 वर्ग मीटर क्षेत्र में निवास करते हैं।

● अ. मु. को. ने वर्ष 1983 के प्रथम तीन माह से दौरान एस. डी. आर. के लिये ब्याज दर 8.9% से घटाकर 8.37% कर दिया है।

● भारत को वर्ष 1982 में विश्व बैंक से 1.1 बिलियन डालर ऋण मिला। यह राशि वर्ष 1981 की तुलना में 8.5 प्रतिशत अधिक है।

● वर्ष 1982-83 के लिये तिलहनों का समर्थन मूल्य 295 रु. प्रति क्विन्टल निर्धारित किया गया है।

● अ. मु. को. ने मेक्सिको को 3.9 बिलियन डालर का ऋण स्वीकृत किया है।

● वर्ष 1982-83 को लिये सं. रा. संघ का बजट 1473 मिलियन डालर का है। नये संशोधन के अनुसार, भारत को कुल बजट का .32 प्रतिशत देना पड़ेगा।

■ निर्वाचन व नियुक्तियाँ

● वालिसी रिकोव—भारत में सोवियत संघ के राजदूत

● लेजन एच. कौल—भारत के उपस्थलसेनाध्यक्ष

● न्यायाधीश मुर्तजा हुसैन—लोक आयुक्त, उ. प्र

● एस. पी. गोदरेज—शैरिफ, बम्बई

● विताली फियोदोर चुक—गृहमंत्री, सोवियत संघ

● मे जन. (रिटा) अब्दुल रहमान खान—राष्ट्रपति, अधिकृत कश्मीर

● जगदीश राना—भारत में नेपाली राजदूत

● जे आर हेरमीथ—यूगोस्लाविया में भारतीय राजदूत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

● एलिजावेथ डोल—परिवहनसचिव, अमेरिका (रीगन मन्त्रिमण्डल में प्रथम महिला)

● सर्ज बोयडेवक्स—भारत में फ्रांसिसी राजदूत

● एन. टी. रामाराव—मुख्यमन्त्री, आन्ध्र प्रदेश

● आर. के. हेगड़े—मुख्यमन्त्री, कर्नाटक

● नृपेन चक्रवर्ती—मुख्यमन्त्री, त्रिपुरा (पुनर्निर्वाचित)

● बी. के. सिंह—उप निर्वाचन आयुक्त

● आई. मुनश्याख्या—भारत में उगान्डा के राजदूत

● माइकेल हैसलटीन—रक्षा सचिव, ब्रिटेन

● डी. सी. मनारस—जमैका व बेलीज में भारतीय राजदूत

● सी. पी. रवीन्द्रनाथन—फिजी व वानाआतु में भारतीय राजदूत

● अरुन्धती घोष—दक्षिण कोरिया में भारतीय राजदूत

● जी. अलीव—प्रथम उपप्रधानमन्त्री, सोवियत संघ

● आर. एन. महादेवन—रेजीस्ट्रार ऑव न्यूजपेपर, भारत

● वी. क्रेस्पो—प्रधानमन्त्री, पुर्तगाल

● पियरे ओबर्ट—राष्ट्रपति, स्विट्जरलैण्ड

● फर्नेन्डो श्वाल्व—प्रधानमन्त्री, पेरू

● एस एस. शिशोदिया—अध्यक्ष, फूड कार्पोरेशन ऑव इण्डिया

● रफीउद्दीन खान (पाकिस्तान)—अन्डरसेक्रेटरी जनरल, संयुक्त राष्ट्र संघ

■ त्याग पत्र व पद निवृत्ति—

● सी. एम. स्टीफन—केन्द्रीय परिवहन व जहाजरानी मन्त्री

● केदार पाण्डे—केन्द्रीय सिंचाई मन्त्री

● सीता राम केसरी—केन्द्रीय परिवहन व जहाजरानी राज्यमन्त्री

● विक्रम महाजन—केन्द्रीय ऊर्जा राज्यमन्त्री

● [illegible]वर राम—केन्द्रीय कृषि राज्यमन्त्री

● आर. बी. स्वामीनाथन—केन्द्रीय कृषि राज्यमन्त्री

● ब्रिज मोहन महन्ती—केन्द्रीय सार्वजनिक उपमन्त्री

● गिरधर गोमंगो—केन्द्रीय श्रम व पुनर्वास उपमन्त्री

● सी. पी. एन. सिंह—केन्द्रीय गैर परम्परागत ऊर्जा स्रोत राज्य मन्त्री

● के. विजय भास्कर रेड्डी—मुख्यमन्त्री, आन्ध्र प्रदेश

● आर. गुन्डुराव—मुख्यमन्त्री, कर्नाटक

● जॉन नाट—रक्षा सचिव, ब्रिटेन

● कार्लोस रोमूलो—विदेशमन्त्री, फिलीपीन्स

● मृणाल सेन—सदस्य, एन. एफ. डी. सी.

● बहरूल इस्लाम—न्यायाधीश, उच्चतम न्यायालय

● एम. दयाल—न्यायाधीश, इलाहाबाद उच्च न्यायालय

● ए. एम. मजूमदार—महाधिवक्ता, असम

● एम. यूलोआ—प्रधानमन्त्री, पेरू

● कलेवी सोर्सा—प्रधानमन्त्री, फिनलैण्ड

● एफ. पी. बालसेमो—प्रधानमन्त्री, पुर्तगाल

■ निधन—

● पिलू मोदी—संसद सदस्य

● जार्ज कुकोर—सुप्रसिद्ध हालीवुड फिल्म निर्देशक

● एडमिरल आर. डी. कटारी—प्रथम भारतीय नौसेनाध्यक्ष

● निकोलाई वी पोदगोर्नी—सोवियत संघ के भू. पू. राष्ट्रपति

● झाबर लाल शर्मा—प्रख्यात पत्रकार

● महेन्द्र मोहन चौधरी—असम के भू.पू. मुख्यमन्त्री

● हाफिज जलन्धरी—सुप्रसिद्ध उर्दू शायर

● यादवेन्द्र सिंह—उ.प्र. विधान सभा के उपाध्यक्ष

● शान्ति त्सेंग—भारत में रह रहे चीनी गान्धीवादी

● रौशन आरा—पाकिस्तान की शास्त्रीय संगीत गायिका

● एल. सेरेप्से—उपराष्ट्रपति, बोत्सवाना

● व्लादिमीर बकारीक—उपराष्ट्रपति, यूगोस्लाविया

● वार्टन डी' आरे—फ्रांसिसी दूरदर्शन व यूरोविशन के पथप्रदर्शक

● डा. (श्रीमती) बी. बोस—सुप्रसिद्ध समाजसेविका

● दत्ता धर्माधिकारी—मराठी फिल्म निर्देशक

● जार्ज सी. बाण्ड—सी-लैब के पथप्रदर्शक

● सुवैहा शास्त्री—संस्कृत, प्राकृत व जैन धर्म के प्रकाण्ड विद्वान

● माइकेल बिलोन—सुप्रसिद्ध हालीवुड अभिनेता

● अबु सइद अयुब—प्रख्यात बंगला लेखक व दार्शनिक

● लुइस अरॉगन—सुप्रसिद्ध फ्रांसिसी लेखक

● आर्थर रूबीन्स्टीन—विश्व विख्यात पियानो वादक

● डा. जार्ज किस्तीयाकोवस्की—प्रथम परमाणु बम के निर्माण कर्त्ताओं में अग्रणी

● सी. कांगव—उप प्रधानमन्त्री, उ. कोरिया

● पर्सीवल स्पीयर—सुप्रसिद्ध ब्रितानी इतिहासविद्

■ प्रमुख अतिथि—

● अल्हाजी शेहू शगारी—राष्ट्रपति, नाइजीरिया (33 वें गणतन्त्र दिवस में प्रमुख अतिथि)

● जनरल ज्यां देलाने—फ्रांसिसी थल सेनाध्यक्ष

● लेम्बेटो बारो लुकसी—इतालवी वायु सेनाध्यक्ष

● वम सकली—विदेश मन्त्री, दक्षिण कोरिया

लियो सक ली—विदेश मन्त्री, बेल्जियम

● नियाज नायक—विदेश मन्त्री, पाकिस्तान

● हाम्मर रोबर्ट—राष्ट्रपति, नौरू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

● करीम आगा खाँ—शिया इमामी इस्लामिया के धार्मिक गुरु

● न्यूऐन को याक—विदेशमन्त्री, वियेतनाम

● अनिरूद्ध जगन्नाथ—प्रधानमन्त्री, मारीशस

● वोहूमिल उ' वन—विदेश व्यापार मन्त्री, चेकोस्लोवाकिया

● पीटर रीस—विदेश व्यापार सचिव, ब्रिटेन

● हुस्नी मुबारक—राष्ट्रपति, मिस्र

■ चर्चित व्यक्ति —

● यासुओ कातो—माउन्ट एवरेस्ट पर तीन बार चढ़ाई करने वाले पहले विदेशी यासुओ कातो (जापान) को हाल के पर्वतारोहण के दौरान लापता हो जाने पर मृत घोषित कर दिया गया। जाड़े के मौसम में विश्व के सबसे ऊंचे शिखर पर पहुँचने वाले प्रथम पर्वतारोही थे।

● ब्योन बोर्ग—स्वीडन के 26 वर्षीय प्रसिद्ध टेनिस खिलाड़ी ब्योन बोर्ग ने टेनिस प्रतियोगिता से अवकाश ग्रहण करने की घोषणा की है। बोर्ग को लगातार पांच बार बिम्बलडन, एवं छह बार फ्रांसिसी ओपन खिताब जीतने का श्रेय प्राप्त है।

● बहरूल इस्लाम—उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश बहरूल इस्लाम ने सेवा निवृत्ति से पूर्व ही न्यायालय से पदत्याग देकर असम में कांग्रेस (इ) के प्रत्याशी के रूप में निर्वाचन लड़ने के लिये नामांकन पत्र भरा है।

● अदूर गोपाल कृष्णन्—अपनी मलयालम फिल्म 'एलिपत्थयम' के लिये ब्रिटिश फिल्म इंस्टीट्यूट द्वारा पुरस्कृत होने वाले अदूर गोपाल कृष्णन् नवें अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह (नई दिल्ली) में जूरी के सदस्य थे।

● एन. टी. रामाराव—तेलुगु फिल्म अभिनेता एन. टी. रामाराव के क्षेत्रीय राजनीतिक दल तेलुगु देशम को आन्ध्र प्रदेश में पहली गैर कांग्रेसी सरकार बनाने के लिये जनमत प्राप्त हुआ। एन. टी. आर. आन्ध्र प्रदेश के प्रथम गैर कांग्रेसी मुख्यमन्त्री बनें।

● रामकृष्ण हेगड़े—जनता दल के नेतृत्व में गठित चार राजनीतिक दलों के मोर्चे के नेता रामकृष्ण हेगड़े ने कर्नाटक के मुख्यमन्त्री का पद संभाला है।

● जियाँग क्विंग—चीन के सुप्रीम पीपुल्स कोर्ट ने माओ का विधवा जियांग क्विंग के मृत्यु दण्ड की सजा को माफ कर उसे अजीवन कारावास में परिवर्तित कर दिया है।

■ चर्चित स्थल—

● उत्तरी यमन—दिसम्बर 82 में उत्तरी यमन में आए भीषण भूकम्प से 1100 व्यक्ति की मृत्यु हुयी और लगभग 4000 लोग घायल हुए। 15 गांव पूर्ण रूप से नेस्तनाबूद हो गये।

● तिरुअनन्तपुरम—केरल के तिरुअनन्तपुरम में साम्प्रदायिक दंगों के फलस्वरूप अनेक व्यक्तियों की मृत्यु हुई और लाखों रुपये की सम्पत्ति नष्ट हुई।

● वाराणसी—वाराणसी में स्थित विश्वविख्यात विश्वनाथ मन्दिर में लाखों रुपये के सोने-चाँदी के आभूषण की चोरी हुई। बाद में चोरी के सभी सामान बरामद हुए। उत्तर प्रदेश सरकार ने मन्दिर की अव्यवस्था को देखते हुए मन्दिर का तत्काल अधिग्रहण कर लिया।

● बाम्बे हाई व गोदावरी बेसिन—बाम्बे हाई से पश्चिम की ओर एक स्थान में गैस, और आन्ध्र प्रदेश में गोदावरी नदी के घाटी क्षेत्र में तेल और गैस के विशाल भण्डार की खोज तेल व प्राकृतिक आयोग ने की।

● अरुणाचल प्रदेश—नवम् एशियाड के समापन समारोह में अरुणाचल प्रदेश के दो नृत्य शामिल किये जाने की घटना का चीन ने इस आधार पर विरोध किया कि अरुणाचल प्रदेश अभी दोनों देशों के मध्य विवादग्रस्त क्षेत्र है।

● राजमहल—बिहार के राजमहल नामक स्थान में कोयले के विशाल भण्डार (1.68 अरब टन) की खोज की गयी है।

● लीसोथो—रंगभेदी राष्ट्र दक्षिण अफ्रीका अपने पड़ोसी देश लीसोथो की राजधानी मासेरु पर सैनिक आक्रमण कर विश्व निन्दा का पात्र बना।

● अन्डमान-निकोबार द्वीपसमूह—केन्द्र सरकार ने अन्डमान निकोबार द्वीपसमूह के तीन वर्जित द्वीपों को पर्यटकों के लिये खोलने का निर्णय लिया है।

● उरीरचर—बंगलादेश के दक्षिण तट से 16 कि. मी. दूर बंगाल की खाड़ी में 250 वर्ग कि. मी. क्षेत्र वाला एक नया द्वीप उभर कर आया। बंगलादेश ने इस नवनिर्मित द्वीप का नाम 'उरीरचर' रखा है।

■ अन्तरिक्ष

● रोहिणी 560—थुम्बा स्थित विक्रम साराभाई अन्तरिक्ष केन्द्र में निर्मित रोहिणी 560 नामक राकेट का प्रक्षेपण 14 जनवरी को श्रीहरिकोटा रेन्ज से किया गया। इसमें अन्तरिक्ष गत्यात्मकता व ढांचागत विशेषता को जांचने-परखने की तकनीक जुड़ी हुई है।

● कास्मोस 1402—सोवियत संघ के परमाणु चालित उपग्रह कास्मोस 1402 में खराबी आ जाने के कारण उसके तीन टुकड़े हो गये और उसके खण्ड अरब सागर में गिरे। इससे निकटवर्ती क्षेत्रों में रेडियोधर्मिता फैलने की सम्भावना हो गयी। 20 जनवरी को सोवियत संघ द्वारा कास्मोस उपग्रह श्रृंखला में आठ और उपग्रहों का प्रक्षेपण करने पर अन्तरिक्ष में कास्मोस उपग्रहों की संख्या 1436 हो गयी।

■ प्रतिरक्षा

● सी हैरियर विमान—भारतीय नौ सेना के विमान वाहक पोत विक्रान्त

(शेष पृष्ठ 12 पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रीय समीक्षा

- मिनी आम चुनाव : दक्षिण में सत्ता परिवर्तन
- असम में चुनाव : वार्ता पुनः विफल
- दक्षिण गंगोत्री की दूसरी यात्रा : एन्टार्कटिका अभियान
- मेघालय और दिल्ली में चुनाव
- भारत पाकिस्तान आयोग
- भारत-बंगलादेश संयुक्त समिति

मिनी आम चुनाव : दक्षिण में सत्ता परिवर्तन

5 जनवरी, 1983 को दक्षिण भारत के दो राज्यों आंध्र और कर्नाटक प्रदेश तथा पूर्वोत्तर भारत के एक राज्य त्रिपुरा की विधान सभाओं के लिए चुनाव हुए। 9 जनवरी को आंध्र प्रदेश में श्री एन. टी रामाराव के नेतृत्व में उनके क्षेत्रीय दल 'तेलुगु देशम', 10 जनवरी को कर्नाटक में श्री रामकृष्ण हेगड़े के नेतृत्व में जनता पार्टी तथा 11 जनवरी को श्री नृपेन चक्रवर्ती के नेतृत्व में त्रिपुरा में मार्क्सवादी सरकारें सत्तारूढ हो गयी। त्रिपुरा में पिछली सरकार भी श्री चक्रवर्ती की ही थी अतएव कांग्रेस (इ) को कोई खास परेशानी नहीं हुई। किन्तु, दो दक्षिण भारतीय राज्यों आंध्र प्रदेश और कर्नाटक की सत्ता उसके हाथ से निकल जाने पर अवश्य ही इस पार्टी को गहरा झटका लगा है। इन दोनों राज्यों में विगत 35 वर्षों में पहली बार गैर-कांग्रेसी सरकारें सत्तारूढ़ हुई हैं। 1977 के आम चुनाव में जब समूचे उत्तर भारत में जनता लहर ने श्रीमती इंदिरा गांधी को केन्द्र से उखाड़ फेंका था तब भी ये दोनों राज्य उनके अपराजेय गढ़ बने रहे। सर्वाधिक विस्मयकारी परिणाम तो आंध्र प्रदेश के रहे जहां मात्र 9 महीने की तेलुगु देशम ने कांग्रेस (इ) को आधे स्थान भी नहीं दिये, और स्वयं दो-तिहाई बहुमत से सत्तारूढ़ हुई। कहा तो यहाँ तक जा रहा है कि कांग्रेस (इ) उन स्थानों में जीत पाई जहाँ एन. टी रामाराव नहीं पहुंच पाये थे। आंध्र में तेलुगु देशम के सहयोग से-पहली बार चुनाव मैदान में उतरने वाले संजय विचार मंच ने भी अपने पांच उम्मीदवारों में से चार को विधान सभा में भेजने में सफलता प्राप्त की।

तीनों राज्यों का कुल 576 सीटों के लिए 3280 प्रत्याशियों ने अपने भाग्य आजमाये थे, जबकि आंध्र में 293, कर्नाटक में 223 तथा त्रिपुरा में 60 सदस्य चुने जाने थे। कर्नाटक और आंध्र प्रदेश में दो प्रत्याशियों की मृत्यु हो जाने के कारण वहाँ चुनाव स्थगित कर दिये गये हैं।

चुनावों के बाद इन तीनों राज्यों में दलगत स्थिति इस प्रकार है—

आंध्र प्रदेश

कुल सीट—294
तेलुगु देशम—192
कांग्रेस—(इ)—60
मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी—5
भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी—4
भारतीय जनता पार्टी—3
जनता पार्टी—1
कांग्रेस [ज] – 1
निर्दलीय—17
(एक सीट का चुनाव स्थगित)

कर्नाटक

कुल सीट—224
जनता-क्रांतिरंगा मोर्चा—95
कांग्रेस-(इ)—80
मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी—3
भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी—3
भारतीय जनता पार्टी—18

प्रस्तुति : बच्चन सिंह, 'दैनिक जागरण', वाराणसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एम. ई. एस.—5
अन्नाद्रमुक—1
निर्दलीय—17

त्रिपुरा

कुल सीट—60
मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी—37
आर. एस. पी.—2
कांग्रेस (इ) —12
टी. यू. जे. एस.—6
निर्दलीय—3

चुनाव परिणामों से जाहिर है कि आंध्र प्रदेश तथा त्रिपुरा में तो सत्तारूढ़ दलों को दो तिहाई बहुमत प्राप्त है किन्तु, कर्नाटक में किसी भी एक पार्टी को पूर्ण बहुमत नहीं मिल पाया है। परिणामस्वरूप कर्नाटक में हेगड़े सरकार बनने की नौबत तब आयी जब उसे भारतीय जनता पार्टी, दोनों कम्युनिस्ट पार्टियों और 14 निर्दलीय विधायकों का समर्थन मिला। जनता पार्टी के सहयोगी क्षेत्रीय दल क्रान्ति रंगा ने, जिसने जनतापार्टी के ही चुनाव चिन्ह पर चुनाव लड़ा था, अपने आपको जनतापार्टी में विलीन कर दिया है यद्यपि उसके कुछ नेता जिनमें एस. बंगरप्पा प्रमुख हैं, नेतृत्व के प्रश्न पर असन्तुष्ट होने के नाते अब भी क्रांतिरंगा के जीवित होने का दावा कर रहे हैं। श्री हेगड़े को-सदन में कुल 132 विधायकों का समर्थन प्राप्त है।

वैसे जनवरी में केवल त्रिपुरा विधान सभा के लिए ही चुनाव होने चाहिए थे। आंध्र और कर्नाटक विधान सभा के चुनाव फरवरी में होने थे। किन्तु, इन दोनों विधान सभाओं के चुनाव भी समय से पूर्व त्रिपुरा के साथ ही करा दिये गये। ऐसा करने का सत्तारूढ़ दल का उद्देश्य संभवतः अपनी स्थिति का जायजा लेना था ताकि इन चुनावों के बाद लोक सभा का मध्यावधि चुनाव करा कर अगले पाँच वर्षों तक पुनः सत्ता हाथ में रखी जा सके। किन्तु, चुनाव के परिणाम आशा के विपरीत हुए। आंध्र और कर्नाटक में कांग्रेस (इ) अपनी विजय के प्रति इतना आश्वस्त थी कि उसके परिणाम सामने आने से पूर्व ही उसने 3 जनवरी को दिल्ली महानगर परिषद के चुनाव घोषित करा दिये। संभवत कांग्रेस (इ) ने सोचा था कि दक्षिण की विजय और एशियाड के दौरान किये गये निर्णयों के बल पर वह दिल्ली महानगर परिषद के चुनाव भी जीत जायेगी। किन्तु, उसके मोहरे फिलहाल फिट नहीं बैठे। देखना है, वह आगे कौन सी शतरंजी चाल चलती है।

असम में चुनाव : वार्ता पुनः विफल...?

असम समस्या पर त्रिपक्षीय वार्ता का सातवां दौर 4 और 5 जनवरी, 1983 को चलने के बाद बिना किसी नतीजे के समाप्त हो गया। सरकार ने विदेशियों की समस्या हल करने के लिए 1 जनवरी, 1966 को आधार वर्ष मानने का प्रस्ताव रखा था जिसे असम के आंदोलनकारी नेताओं ने अस्वीकार कर दिया। असम नेताओं ने सरकार के उस प्रस्ताव को भी अस्वीकार कर दिया कि राज्य में चुनाव कराने के लिए अस्थायी तौर पर मतदाता सूची से विदेशियों के नाम निकाल दिये जायें। जैसाकि अखिल असम छात्र संघ के महासचिव श्री भृगु फुकुन ने कहा, यह प्रस्ताव इसलिये स्वीकार नहीं किया जा सकता था क्योंकि उससे बाद में यथा-स्थिति कायम हो जायेगी। सरकारी प्रस्ताव के अनुसार 31 दिसम्बर, 1961 तक देश में आये विदेशियों को असम में ही बसाया जाना था। आंदोलनकारी नेता अपनी इस जिद पर अड़े रहे कि 1969 से 1971 के बीच आये विदेशियों के नाम मतदाता सूची से निकालकर उन्हें देश के अन्य राज्यों में बसाया जाये। इन नेताओं का कहना था कि 1961 और 1965 के बीच असम में अनेक लोगों ने अवैध रूप से प्रवेश किया था जिन्हें राज्य में बसाने के लिए वे हरगिज तैयार न होंगे। दूसरी ओर केन्द्र सरकार इस आधार पर असम के 'विदेशियों' को राज्य से बाहर निकालने के लिये तैयार नहीं है क्योंकि 1961 से 1971 के बीच आये इन बंगला-

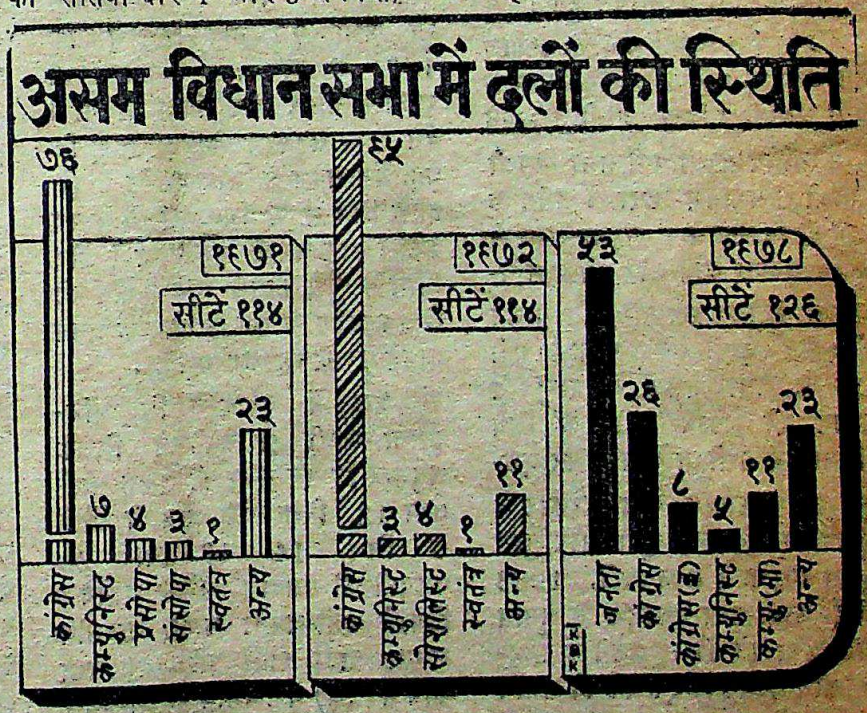

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशियों को इस आश्वासन पर पनाह दी गयी थी कि उनके पास व्यापक कागजात हों या नहीं उन्हें नागरिकता प्रदान की जायेगी। सरकार इस बारे से मुकरना नहीं चाहती।

इस त्रिपक्षीय वार्ता में, जो 3 साल से चली आ रही असम-समस्या को सुलझाने में विफल रही, असम आंदोलनकारियो की ओर से अखिल असम छात्र संगठन तथा अखिल असम गण संग्राम परिषद के 6 नेता शामिल हुए थे। सरकार का प्रतिनिधित्व गृह-मंत्री श्री पी. सी. सेठी और रक्षा मंत्री डा. आर. वेंकटरमन ने किया। इसके अलावा प्रतिपक्षी दलों की ओर से दोनों कम्युनिस्ट पार्टियों, जनता पार्टी और भारतीय जनता पार्टी के प्रतिनिधि वार्ता में शामिल हुये।

बातचीत विफल होने के तत्काल बाद असम के भविष्य के बारे में प्रधान-मंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने अपने मंत्रिमंडलीय सहयोगियों तथा विपक्षी नेताओं से परामर्श किया। असम के लिये दो विकल्प थे। पहला-राज्य में चुनाव कराया जाये और दूसरा-संविधान में संशोधन कर राष्ट्रपति शासन की अवधि बढ़ायी जाये। चूंकि विपक्षी दलों के नेता असम मे राष्ट्रपति शासन की अवधि बढ़ाने के लिये संविधान में संशोधन के प्रश्न पर एकमत नहीं थे अतएव केन्द्र सरकार ने चुनाव का विकल्प चुना और मुख्य चुनाव आयुक्त ने 6 जनवरी, 1983 को ही असम तथा मेघालय में चुनाव की घोषणा कर दी। असम में राष्ट्रपति शासन, जिसकी एक वर्ष की अवधि मार्च महीने में समाप्त हो रही है, आगे बढ़ाने के लिए आवश्यक था कि सभी विपक्षी दल इसके लिए सहमत होते क्योंकि राज्य सभा में कांग्रेस (इ) के अल्पमत में होने के कारण विपक्ष के सहयोग के बिना कोई भी संविधान संशोधन संभव नहीं था। वर्तमान कानून के अनुसार किसी भी राज्य में राष्ट्रपति शासन पहली बार 6 माह तक के लिए लागू किया जा सकता है जिसकी अवधि 6 माह के लिए पुनः बढ़ाई जा सकती है। असम में पिछले वर्ष मार्च महीने में राष्ट्रपति शासन लागू किया था। इन परिस्थितियों में असम में चुनाव कराना एक संवैधानिक आवश्यकता थी।

असम नेताओं ने चुनाव का कड़ा विरोध किया है और इसे रोकने के लिये आंदोलन भी शुरू कर दिया गया है। आंदोलनकारी नेता 1979 की मतदाता सूची के आधार पर चुनाव होने देने के लिये तैयार नहीं है। जनवरी, 1980 में लोक सभा का चुनाव भी उन्होंने नहीं होने दिया था। राज्य सरकार ने आंदोलनकारी नेताओ को दिये आश्वासन भी अभी पूरे नहीं किये हैं कि 1971 के बाद आये विदेशियों को राज्य से बाहर कर दिया जायेगा। वैसे राज्य सरकार का कहना है कि वह, बंगलादेश से और घुसपैठ न हो, इसके लिये असम-बंगलादेश सीमा पर कंटीले तार लगाने, सड़क बनाने और सीमा के कुछ फासले तक के क्षेत्र को निर्जन प्रदेश के रूप में रखने के अपने वायदे पर अमल कर रही है।

असम में चुनाव के लिए अधिसूचना जारी हो चुकी है जिसके अनुसार विधान सभा की 126 सीटों तथा 12 रिक्त लोक सभायी सीटों के लिए 14, 17 तथा 20 फरवरी को मतदान कराये जायेंगे। विपक्षी दलों-जनता पार्टी, भारतीय जनता पार्टी, दोनों लोक दल तथा कांग्रेस (ज) ने चुनाव के बहिष्कार की घोषणा की है। राज्य सरकार पूरी सुरक्षा-व्यवस्था के साथ चुनाव कराने को कटिबद्ध है और आंदोलनकारी नेता उसे न होने देने के लिए। प्रमुख आन्दोलनकारी नेता दिल्ली से वापसी पर ही गिरफ्तार कर लिये गये हैं और शेष की गिरफ्तारी जारी है। देखना यह है कि ऊंट किस करवट बैठता है।

दक्षिण गंगोत्री की दूसरी यात्रा : एन्टार्कटिका अभियान

दक्षिण ध्रुव की यात्रा पर गया दूसरा भारतीय दल सकुशल उस स्थान पर पहुँच गया जहाँ 1982 के प्रारंभ में पहला दल पहुँचा था। 28 सदस्यीय यह अभियान दल 28 दिसम्बर, 1982 को एन्टार्कटिका महाद्वीप में उत्तरा। यह दल भी किराये के उसी जहाज 'पोलर सर्किल' में गया है, जिसमें पहला अभियान दल 1 जनवरी 1982 को पहुँचा था। पोलर-सर्किल का हैलिपैड इस बार भी अभियान दल के सदस्यों को 13 किलोमीटर दूर उतारने में प्रयुक्त किया गया है। जहाज पर प्रयुक्त दोनों हेलीकाप्टर भारतीय वायु सेना के थे।

वर्तमान अभियान दल को विभिन्न क्षेत्रों में वैज्ञानिक अनुसंधान करने हैं इसलिये इसमें 8 राष्ट्रीय प्रयोग शालाओं के वैज्ञानिक शामिल हैं। भू-रचना, मौसम, पर्यावरण, जीवाष्म, जीव-वनस्पति, खनिज सम्पदा आदि सम्बन्धी वैज्ञानिक परीक्षणों को आगे बढ़ाने के लिये अभियान दल ने इस बार 60 दिनों तक इस द्वीप मे रहने का कार्यक्रम बनाया है। अभियान दल दो प्रवास-स्थलों के निर्माण के लिए बने बनाये ढांचे भी साथ लेकर आया है। दरअसल भारतीय वैज्ञानिक न केवल दक्षिणी ध्रुव तथा भारत के बीच स्थायी संचार व्यवस्था कायम करना चाहते हैं वरन् वहाँ एक प्रयोगशाला भी स्थापित करने की उनकी योजना है। यह प्रयोगशाला इस प्रकार होगी कि भारतीय वैज्ञानिक स्थायी तौर पर उसमें रहकर कार्य कर सकें।

भारतीय वैज्ञानिकों ने दक्षिण ध्रुव में मीटरों मोटी बर्फ के रहस्यों का भेदन कर उसके तह में छिपे रहस्यों की खोज शुरू कर दी है। भारत दक्षिण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ध्रुव में अपना स्थायी स्थान बनाने की तैयारी कर रहा है और इसके लिए स्वदेशी समान का परीक्षण जरूरी है। दल को मौसम, भूगर्भ-सागर, वातावरण तथा सब स्तरों पर विद्यमान जीवाणुओं और जीवों के बारे में अध्ययन करने और नमूने एकत्र करने हैं। इस दल को और भविष्य में जाने वाले अन्य दलों को भारतीय 'बस्ती' और विमान पट्टी बनाने का कार्य पूरा करना है। 1985 तक दक्षिण ध्रुव में नया तीर्थ बन जाने के साथ-साथ स्थायी संचार व्यवस्था और विमानों से आना जाना शुरू हो जायेगा। भारतीय वैज्ञानिक उस 'गोंडवाना सिद्धांत' को भी सत्यता की कसौटी पर परखेंगे जिसके अनुसार भारत कभी दक्षिण ध्रुव के साथ जुड़ा था। यह सिद्धांत देश के गोंडवाना क्षेत्र में प्राप्त शिलाखण्डों और दक्षिण ध्रुव में उपलब्ध ऐसी ही चीजों में एकरूपता के आधार पर निर्मित किया गया है।

दक्षिण ध्रुव क्षेत्र, भू-रचना और आकार में एक महाद्वीप माना जाता है। यह विश्वास है कि उसके गर्भ में प्राकृतिक तेल समेत लगभग 900 किस्म के खनिजों के भण्डार हैं। इस क्षेत्र पर किसी विश्व-शक्ति या शक्तियों ने अपनी सार्वभौमिकता तो स्थापित नहीं की है, लेकिन परीक्षणों और सम्पदा के दोहन के लिए क्षेत्र बाँट लिये हैं। आधा दर्जन राष्ट्रों के वहाँ स्थायी शिविर भी स्थापित हैं। अमेरिका ने तो उसे पर्यटन के लिए भी खोल दिया है। 1959 में 12 देशों ने सर्वसम्मति से दक्षिण ध्रुव महाद्वीप को शांतिमय उपयोगों के लिये सुरक्षित रखने का संकल्प किया था। इसके बाद 5 अन्य देश भी उस 'सहमति' पर हस्ताक्षर कर चुके हैं।

किन्तु, यह 'सहमति' कब तक बरकरार रहेगी, यह विचारणीय प्रश्न है। अन्य राष्ट्र जब कुछ 'बड़े' राष्ट्रों के बराबर के अधिकार चाहेंगे और 'शांतिपूर्ण उपयोग' के अंतर्गत दक्षिण ध्रुव की खनिज सम्पदा का दोहन करने लगेंगे तो टकराव की स्थिति आना अनिवार्य है।

मेघालय और दिल्ली में चुनाव

मेघालय और दिल्ली में भी चुनावों की घोषणा की जा चुकी है। मेघालय की साठ सदस्यीय विधान सभा के लिए चुनावों की घोषणा असम के साथ ही कर दी गयी थी जबकि दिल्ली महानगर परिषद की 56 तथा नगर निगम की सौ सीटों के लिए चुनाव की घोषणा 3 जनवरी को की गई। दोनों चुनावों के लिए अधिसूचनाएं भी जारी की जा चुकी है। मेघालय में मतदान 16 फरवरी को कराये जायेंगे जबकि दिल्ली में पाँच फरवरी को।

मेघालय की वर्तमान विधान सभा का कार्यकाल 6 मार्च को समाप्त हो रहा है। इस समय वहां संयुक्त मोर्चे का शासन है जिसमें कांग्रेस (ई) सर्वदलीय पहाड़ी नेता सम्मेलन का असंतुष्ट गुट तथा पहाड़ी राज जन लोकतंत्रीय पार्टी शामिल है। इस मोर्चे का गठन असन्तुष्ट गुट के नेता श्री वी. पी. लिंगदोह ने मई, 1979 में किया था और वही उस समय मुख्यमंत्री बने थे, ठीक दो वर्ष बाद उन्होंने मुख्यमंत्री की गद्दी कांग्रेस (ई) नेता श्री विलियम संगमा को सौंप दी। अतः सरकारी तौर पर वहाँ कांग्रेस (ई) का ही शासन माना जा सकता है। पिछले काफी अरसे से वहाँ यह प्रयत्न हो रहा है कि पहाड़ी नेता सम्मेलन एकीकृत दल का रूप ले ले और उसमें सभी असन्तुष्ट गुट शामिल हो जांय। इसमें कुछ सफलता

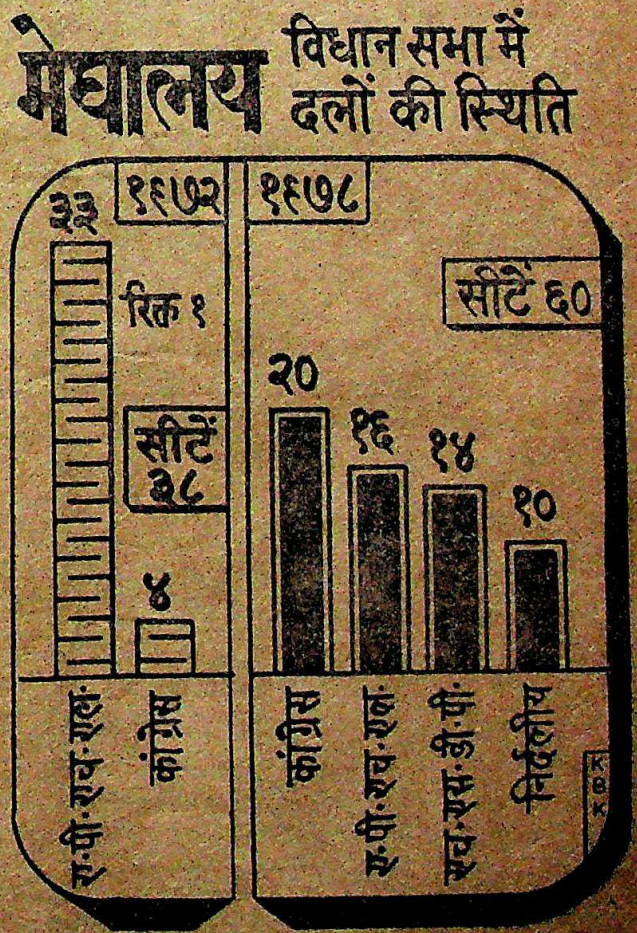

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिलती दिखाई भी दे रही है। दक्षिण में कांग्रेस (इ) का हार ने पहाड़ी सम्मेलन के नेताओं के हौसले को बुलंद कर दिया है अतएव इस संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता कि लिंगदोह गुट पुनः अपनी मूल संख्या में लौट जाये।

दिल्ली महानगर परिषद का पिछला चुनाव जून, 1977 में हुआ था, जिसमें जनता पार्टी को भारी विजय प्राप्त हुई थी। जनवरी, 1980 में सत्ता में आने के बाद केन्द्र ने 21 मार्च 1980 को महानगर परिषद भंग कर दी। मई, 1980 में 9 राज्यों में विधान सभाओं के चुनाव कराये गये किन्तु दिल्ली महानगर परिषद के चुनाव इसलिये नहीं कराये गये क्योंकि पुनः भाजपा के सत्ता में आने का खतरा था। केन्द्र सरकार लगातार 3 वर्षों से चुनाव टालती आ रही है।

दिल्ली महानगर परिषद की स्थापना 1966 में पारित एक अधिनियम के द्वारा की गयी की। प्रारम्भ में इसका गठन अंतरिम महानगर परिषद के रूप में हुआ था। परिषद का पहला चुनाव 1967 में हुआ था।

महानगर परिषद और नगर निगम की कुल 156 सीटों के लिए 1134 प्रत्याशी मैदान में है। इनमें से 400 महानगर परिषद तथा 734 नगर निगम के लिए चुनाव लड़ रहे हैं।

दिल्ली महानगर परिषद में दलों की स्थिति

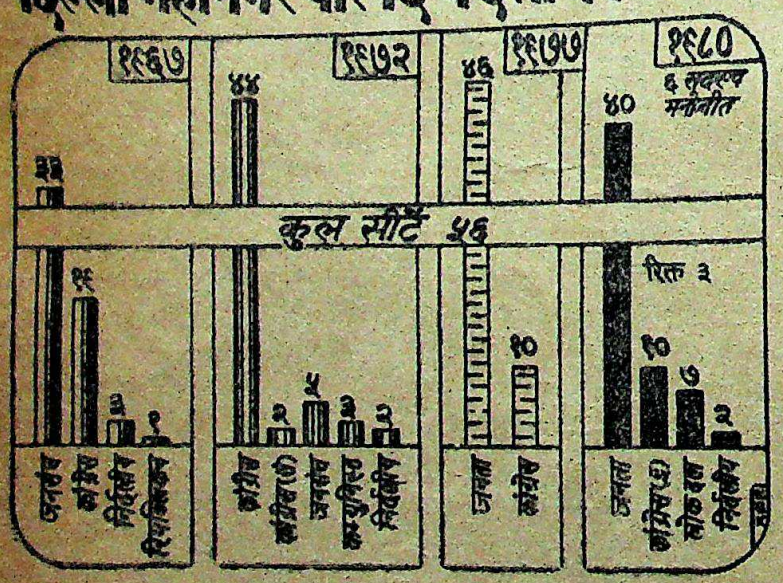

भारत-पाकिस्तान आयोग

भारत और पाकिस्तान ने गत वर्ष 24 दिसम्बर को आपसी सम्बन्धों को सुधारने तथा आर्थिक और वैज्ञानिक क्षेत्र में व्यापक सहयोग को प्रोत्साहन देने की दिशा में एक संयुक्त आयोग की स्थापना के समझौते पर हस्ताक्षर किये। दोनों देशों के विदेश सचिवों—श्री महाराज कृष्ण रसगोत्र तथा श्री नियाज नायक, द्वारा हस्ताक्षरित समझौते के अनुसार सहयोग के विशिष्ट क्षेत्रों की खोज के लिये आयोग, आवश्यक होने पर, उप आयोग स्थापित भी कर सकेगा। पहली बार, पाँच वर्ष के लिए बंध इस आयोग की अवधि स्वतः 5 वर्ष के लिए बढ़ जायेगी। दोनों देशों के विदेश मंत्री आयोग के सह-अध्यक्ष होंगे। मार्च, 1983 में इस समझौते की पुष्टि होगी। उसके बाद प्रति वर्ष इसकी बैठक एक बार नयी दिल्ली और दूसरी बार इस्लामाबाद में हुआ करेगी।

भारत और पाकिस्तान के बीच आयोग के गठन का उद्देश्य आर्थिक, व्यापारिक, वैज्ञानिक तथा सांस्कृतिक क्षेत्र में पारस्परिक सहयोग का विस्तार तथा विकास है। संयुक्त आयोग के अधीन अर्थ, व्यापार, उद्योग, शिक्षा, स्वास्थ, संस्कृति, पर्यात्रा, सूचना तथा विज्ञान और टेक्नालाजी के क्षेत्र में सहयोग के कार्यक्रम लागू किये जायेंगे। आयोग के अन्तर्गत गठित किये जाने वाले उप-आयोग विभिन्न विषयों पर गहराई से विचार कर सहयोग के कार्यक्रम तैयार करेंगे।

पाकिस्तानी प्रतिनिधि मंडल 22 दिसम्बर, 1982 को भारत आया और 23 दिसम्बर की वार्ता के बाद संयुक्त आयोग के गठन के प्रश्न पर सहमति हो गयी। बातचीत के बाद भारतीय विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता मागेशंकर अय्यर तथा पाकिस्तानी विदेश मंत्रालय में महानिदेशक श्री मुजाहिद हुसेन ने बताया कि आयोग के जरिये विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाने के बारे में निर्णय लिया जा चुका है किन्तु सांस्कृतिक सहयोग के अन्तर्गत फिल्मों के अदान-प्रदान का प्रश्न अभी तय नहीं किया गया है। संयुक्त आयोग का प्रस्ताव भारतीय प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने पिछले वर्ष जनवरी महीने में पाक विदेश मंत्री की आगाशाही के भारत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आगमन पर रखा था। पाकिस्तान ने उसी समय इसे सिद्धान्त रूप में तैयार किया था। तत्पश्चात इसका प्रारूप तैयार किया गया। पिछले वर्ष ही नवम्बर को राष्ट्रपति जिया-उल-हक और प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी की दिल्ली वार्ता में उस आयोग के सम्बन्ध में खुलासा जल्दी तय करने का निर्देश दिया गया था।

भारत और पाकिस्तान ने 23 दिसम्बर को ही कैदियों की सूची का भी आदान-प्रदान किया। दोनों देशों के प्रवक्ताओं के अनुसार भारत ने 25 तथा पाकिस्तान ने 232 कैदियों की सूची दी। ये कैदी उनमें से हैं जिन्होंने अपनी सजा की अवधि पूरी कर ली है। अब भारत सरकार पाकिस्तान से 232 लोगों की सूची की जाँच कर उनके बारे में पूरा विवरण एकत्र करेगी। इसी प्रकार भारत से प्राप्त अपने 25 नागरिकों के बारे में पाकिस्तान की सरकार जाँच करेगी। इसके बाद यथाशीघ्र उनकी अदला-बदली की व्यवस्था की जायेगी। दोनों देशों ने तय किया है कि फरवरी, 1983 से पहले कैदियों की अन्य सूचियों का आदान-प्रदान किया जायेगा। पाकिस्तान के विदेश मंत्रालय के महानिदेशक श्री मुजाहिद हुसेन के अनुसार भारत के लापता सैनिकों के बारे में उन्हें पाकिस्तानी जेलों से अभी तक कोई जानकारी नहीं मिली है। जिन कैदियों की सूची का आदान-प्रदान किया गया उन्हें बीसा की अवधि खत्म होने पर भी रुके रहने, तस्करी करने अथवा अन्य अपराधों के लिये सजा मिलेगी।

24 दिसम्बर, 1982 को दोनों देशों के प्रतिनिधियों ने पाकिस्तान के अनाक्रमण संधि और भारत के शांति तथा मैत्री संधि के प्रस्तावों पर बातचीत की। अनाक्रमण संधि तथा शांति और मैत्री संधि के कुछ मुद्दों पर सहमति तो हुई किन्तु कुछ को लेकर मतभेद बना रहा। उसे दोनों पक्षों ने गोपनीय रखा। दोनों पक्षों ने अधिकारी स्तर पर बातचीत को आगे बढ़ाने का निर्णय किया जिसके अन्तर्गत 16 से 19 जनवरी 1983 तक इस्लामाबाद में अधिकारी स्तर की वार्ता होगी।

भारत और पाकिस्तान के बीच संयुक्त आयोग के गठन का स्वागत होना स्वाभाविक है। इससे दोनों देशों के सम्बन्धों में सुधार और पारस्परिक सहयोग की दिशा में उल्लेखनीय सुधार होगा, ऐसी आशा की जानी चाहिए। किन्तु, यह मानना भूल होगी कि आयोग की स्थापना मात्र से सम्बंधों में विकास का उद्देश्य पूरा हो जायेगा। इसके लिए दोनों देशों की सरकारों को दृढ़ इच्छा शक्ति का परिचय देना होगा तथा सतत मित्रोचित उदारता अपनानी होगी। भारत ने विश्व के कई अन्य देशों के साथ भी संयुक्त आयोगों का गठन किया है, किन्तु सभी देशों के साथ सम्बन्ध और सहयोग बढ़े हों, ऐसा दावा नहीं किया जा सकता। भारत-पाक संयुक्त आयोग के उद्देश्यों को भी अंतर्राष्ट्रीय राजनीति के निरंतर परिवर्तित समीकरणों के संदर्भ से अलग करके नहीं देखा जा सकता। भारत से सहयोग की असीम संभावनाओं का नाम पाकिस्तान किस सीमा तक उठा पायेगा, यह बहुत कुछ अमेरिका और चीन से उसके सम्बंध पर निर्भर करेगा।

भारत-बंगलादेश संयुक्त समिति

भारत और बंगलादेश संयुक्त नदी आयोग की 23वीं बैठक 24 दिसम्बर, 1982 को नयी दिल्ली में समाप्त हुई। इस बैठक में भारत और बंगलादेश ने एक संयुक्त विशेषज्ञ समिति गठित करने का निर्णय किया जो फरक्का पर गंगा के पानी का प्रवाह बढ़ाने के लिए दोनों पक्षों द्वारा प्रस्तावित योजनाओं का अध्ययन करेगी। समिति द्वारा दी गयी रिपोर्ट पर फरवरी, 1983 में ढाका में होने वाली आयोग की अगली बैठक में विचार किया जायेगा। आठ सदस्यीय विशेषज्ञ समिति में दोनों देशों के सिंचाई सचिव भी शामिल हैं। बंगलादेश ने जो योजना प्रस्तुत की है उससे नेपाल और उसके सटे भारतीय क्षेत्र में जल भंडार के लिए बांध बनाने का सुझाव है जबकि भारत की योजना में ब्रह्मपुत्र से नहर निकाल कर गंगा में मिलाने की बात कही गयी है। दोनों देशों के प्रतिनिधियों ने इन योजनाओं का तकनीकी मूल्यांकन करना स्वीकार कर लिया है, यह अपने आप में एक उपलब्धि है। क्योंकि, इससे पहले दोनों में से किसी भी एक पक्ष द्वारा रखे गये इस प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया गया था।

गंगा, ब्रह्मपुत्र और तीसरी बड़ी नदी तिस्ता के जल के बंटवारे की योजनायें तथा प्रस्ताव एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। अब चूंकि बंगलादेश के आग्रह पर नेपाल की नदियों से गंगा का बहाव बढ़ाने का प्रस्ताव भी विचारणीय विषयों में शामिल कर लिया गया है, इसलिए अंतिम समाधान काफी जटिल तथा क्रियान्वयन अवधि की दृष्टि से लम्बा होगा। जहाँ तक असम में ब्रह्मपुत्र पर बैरज बनाकर फरक्का नहर के जरिये गंगा में पानी लाने की योजना का प्रश्न है, उसकी व्यवहारिकता का सर्वेक्षण हो चुका है। नेपाल की सीमा में भारत की ओर आने वाली नदियों पर जलाशय बनाने का सुझाव व्यावहारिक तो है, लेकिन उनके निर्माण में कई दशक लग सकते हैं। उसके लाभों के भागीदार होने के कारण नेपाल सहमति में देर लगा सकता है। इसलिये, फरक्का नहर योजना पर अमल ज्यादा आसान है। बंगलादेश को यह बात भी दृष्टि में रखनी होगी कि कलकत्ता बंदरगाह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को नष्ट होने से बचाने तथा हुगली को पुनः जहाजरानी के योग्य बनाने के कार्य में विलम्ब की गुंजाइश नहीं है।

भारत-बंगलादेश संयुक्त नदी आयोग की तीन दिवसीय वार्ता की समाप्ति पर जारी विज्ञप्ति के अनुसार तटबंधों को ठीक करने और नदियों को नियंत्रित करने की दिशा में अच्छी प्रगति भले ही हुई हो किंतु, फरक्का विवाद बहुत आसानी से सुलझ जायेगा, यह समझना जल्दबाजी होगी क्योंकि जिन कारणों से भारत और बंगलादेश के सुझाव एक-दूसरे को अमान्य थे वे आज भी मौजूद हैं। भारत को यह आपत्ति है कि जो विवाद दो देशों के बीच का है, उसे हल करने के लिए तीसरे देश नेपाल को क्यों बीच में लाया जाये। नेपाल की नदियों पर बाँध समझौते करने में भारत को अधिक सफलता नहीं मिली। नेपाल अपना क्षेत्र जल-प्लावित होने देने को तैयार नहीं है।

इसके विपरीत भारत का सुझाव अधिक व्यावहारिक है क्योंकि वह द्विराष्ट्रीय विवाद का द्विराष्ट्रीय हल है। किसी तीसरे देश को इसमें नहीं उलझना पड़ेगा। बंगलादेश को यह आपत्ति हो सकती है कि उसकी कुछ भूमि इस नहर में जायेगी जो बंगलादेश को आर-पार काटेगी, देश की एक भाग नहरी रेखा में कट जायेगा। परन्तु, यह आशंका निराधार है। नहर से ब्रह्मपुत्र के विनाश को रोकने के साथ ही बंगलादेश को सिंचाई पारिकल्पनाओं को पूरा करने में मदद मिलेगी। इस नहर से समस्या के हल की गुरआत करने पर भारत और बंगलादेश अन्य क्षेत्रों में नये सहयोग अपेक्षाकृत अधिक विश्वास के साथ कर सकेंगे।

आयोग की इस 23वीं बैठक में भारत और बंगलादेश के कृषि मंत्रियों श्री केदार पाण्डेय और श्री ओबैदुल्ला खाँ ने दोनों देशों का प्रतिनिधित्व किया। बंगलादेश का सदस्यीय प्रतिनिधि मंडल 21 दिसम्बर को नई दिल्ली पहुँचा और 22 दिसम्बर 1982 से बातचीत शुरू हो गयी। देखना है विशेषज्ञ समिति नया रिपोर्ट देती है और आयोग की 24 वीं वृहत समस्या का हल किस प्रकार निकलता है। ■ ■

(पृष्ठ 5 का शेष)

के पुराने सी-हाक का स्थान लेने वाले सी हैरियर विमान का पहला खेप भारत को विटिश एयरोस्पेस कम्पनी से प्राप्त हुआ।

● टी-72 टैंक—विश्व के सर्वोत्तम एवं सबसे शक्तिशाली युद्ध टैंकों में से एक, सोवियत संघ में निर्मित टी-72 टैंक को पूर्णतः भारतीय थल सेना में सम्मिलित कर लिया गया है।

● मिग-23 विमान—सोवियत संघ में विकसित मिग-23 विमान का निर्माण हिन्दुस्तान एयरोनेटिक्स लिमिटेड ने बैंगलूर में प्रारम्भ कर दिया। शीघ्र ही नासिक व कोरापुर में भी इसका निर्माण किया जायेगा।

● मिलान प्रक्षेपास्त्र—फ्रान्स व ब्रिटेन द्वारा संयुक्त रूप से निर्मित अत्याधुनिक टैंक विरोधी प्रक्षेपास्त्र मिलान की सप्लाई भारत को आरम्भ हो गया। 1985 से इसका निर्माण भारत डायनामाइट लिमिटेड (हैदराबाद) द्वारा किया जायेगा।

● एम. एक्स. मिसाइल—दिसम्बर 82 में अमेरिकी कांग्रेस ने 26 खरब डालर की एम. एक्स. मिसाइल योजना के प्रारम्भिक चरण के लिये आवश्यक 1 खरब डालर के ग्रान्ट को अस्वीकृत कर दिया। राष्ट्रपति रीगन का उद्देश्य वर्ष 1987 तक वायोमिंग एयर बेस के अभेद्य बंकरों में 100 एम. एक्स मिसाइल संग्रहित करना था। एम. एक्स. मिसाइल का प्रयोग सोवियत परमाणु अस्त्रों के विरुद्ध 'सेकेन्ड स्ट्राइक मिसाइल' के रूप में करना है।

■ विविधा :

● मद्रास के निकट अड्यार में स्थित थियोसॉफीकल सोसाइटी जनवरी 83 से अपनी जन्मशतवार्षिकी मना रही है। आर्थिक व सामाजिक विकास में संचार के महत्वपूर्ण योगदान से युवा वर्ग के परिचित कराने तथा अन्तर्राष्ट्रीय संचार व्यवस्था को संगठित रूप से विकसित करने के लिये संयुक्त राष्ट्र वर्ष 1983 को अन्तर्राष्ट्रीय संचार वर्ष के रूप में मना रहा है। ● अरबी भाषा को संयुक्त राष्ट्र संघ में शासकीय भाषा के रूप में स्वीकार कर लिया है।

● फ्रान्स के टुलुस नामक स्थान में 2.5 मेगावाट क्षमता वाले सौर संयन्त्र 'टेमिस' ने जनवरी 83 से विद्युत उत्पादन करना प्रारम्भ कर दिया। ● दिसम्बर 82 को दार्जलिंग हिमालयन रेलवे (दार्जलिंग से नई जलपाइगुड़ी) ने अपनी सेवा का 100 वर्ष पूरा किया।

● बी बी. सी. भारत के भौगोलिक, सांस्कृतिक व भाषागत विविधता को प्रस्तुत करने के लिये पांच रूपक शृंखला तैयार किया है। ● आल इण्डिया रेडियो वर्ष 1983 में अंग्रेजी में "इण्डिया 2001 : ए क्रियेटिव इन्टरप्रेटेशन" नामक 12 कार्यक्रम प्रस्तुत करेगी। ● विशाखापट्नम के निकट बंगाल की खाड़ी में एक पनडुब्बी में विश्व में पहली बार कुछ समय के लिये डाकघर खोला गया। ● चण्डीगढ़ के जोगिन्दर सिद्धू व चरणजीत कौर ने विश्व के क्षुद्रतम (1.4×.9×.4 से. मी.) और सबसे कम वजन वाला कैमरा विकसित किया है। इस कैमरा में अत्याधुनिक कैमरा के सभी सुविधाएं उपलब्ध हैं। ● जनवरी 83 में विश्व का सर्वाधिक ठण्डी राजधानी मास्को (-20° सेल्शियस) रहा। ● जनवरी 83 में तिरुपति में आयोजित 70वें भारतीय विज्ञान कांग्रेस का मुख्य विषय वस्तु "मनुष्य और समुद्र : सम्पदा व विकास" था। ■ ■

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्तर्राष्ट्रीय समीक्षा

- इस्राइल-लेबनॉन शांति वार्ता : टेढ़े मेढ़े रास्ते ..।
- यूरी ऐन्द्रोपोव : तनाव शैथिल्यीकरण में रुचि...।
- ओपेक : संकटपूर्ण भविष्य
- 'गैट' का जेनेवा सम्मेलन : बहुपक्षीय व्यापार को समर्थन
- तनाव - शैथिल्यीकरण : प्रक्रिया जारी रहेगी !
- पोलेण्ड : ऊहापोह की स्थिति, आगे क्या ..।
- अफगानिस्तान : सोवियत सेनाओं की वापसी का फिलहाल कोई प्रश्न नहीं !
- जियाउल हक की अमेरिका यात्रा
- मितरां की भारत यात्रा : उत्तर-दक्षिण सहयोग की राजनीतिक शुरुआत ?
- हुस्नी मुबारक की भारत यात्रा : राष्ट्रीय प्राथमिकताओं का प्रश्न !
- शुल्ट्ज-बोथा वार्ता : नामीबिया का प्रश्न पुनः अधर में ?

पश्चिमी एशिया :

इस्रायल-लेबनॉन शांति वार्ता : टेढ़े मेढ़े रास्ते ..... ।

लेबनान में शांति स्थापना तथा फिलिस्तीनियों की स्वायत्तता का विषय पिछले 7 महीनों से विश्व राजनीति की एक जटिल समस्या बन गया है। प्रारम्भ में तो लेबनान और इस्रायल वार्ता की विषय सूची पर ही एकमत न हो सके। लेबनान चाहता है कि बातचीत का विषय मुख्य रूप से बेरूत से इस्रायली सैनिकों की वापसी पर केन्द्रित रहे—इस्रायल दोनों राष्ट्रों के मध्य कैम्प डेविड समझौते प्रकार की शांति संधि जैसी कोई चीज चाहता है। इसके पूर्व रीगेन, ब्रेझनेव, फैज तथा संयुक्त मिस्र-फ्रांसीसी शांति योजनाओं का कोई सफल परिणाम नहीं निकला; इन सभी की चर्चा इसी स्तम्भ के अन्तर्गत पिछले कुछ महीनों में की जा चुकी है।

वैसे यह एक वास्तविकता है कि यदि लेबनान से इस्रायली सेनाओं की वापसी के मसले पर दोनों देशों के मध्य कोई समझौता हो सके तो पश्चिमी एशिया की समस्या को स्थायी तौर पर हल करने के मार्ग में प्रगति हो सकती है। बातचीत और पहले प्रारम्भ हो जानी चाहिये थी क्योंकि जब फिलिस्तीनियों ने अमरीका, फ्रांस, स्पेन तथा यूनान की सम्मिलित 'अन्तर्राष्ट्रीय पर्यवेक्षण सेना' के निरीक्षण में बेरुत छोड़ा था, उस समय ही इस्रायल ने 1982 के अंत तक अपनी सेनाएं वापस बुलाने की बात कही थी। बातचीत के पहले चरण के दौरान ही इस्रायल ने इस तथ्य पर बल दिया कि शांति वार्ता जेरूसलेम में होनी चाहिये किन्तु लेबनॉन की जेमायल सरकार ने असहमति व्यक्त की क्योंकि लेबनॉनी पक्ष के अनुसार इसे स्वीकार करने का तात्पर्य है कि पूर्व जेरूसलेम पर लेबनॉन इस्रायल की सत्ता स्वीकार कर ले। अन्ततः व्यवस्था का यह प्रश्न इस पर सुलझाया गया कि वार्ता क्रम से इस्रायल तथा लेबनॉन के किसी स्थान पर हो।

पुनः 3 जनवरी को इस्रायली पक्ष द्वारा बातचीत के दौरान सैनिकों की वापसी के पूर्व इस्रायल तथा लेबनॉन के मध्य समग्र कूटनीतिक सम्बन्धों की स्थापना पर बल ने बातचीत में एक और व्यवधान खड़ा कर दिया। दूसरी ओर लेबनॉन में इस्रायल की सतत् सैनिक उपस्थिति तथा पश्चिमी किनारे पर इस्रायल द्वारा बस्तियों की अधिकाधिक स्थापना (1985 तक इस्रा

प्रस्तुति : नन्द लाल, प्रवक्ता, राजनीति विभाग, काशी विद्यापीठ विश्वविद्यालय, वाराणसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यम पश्चिमी किनारे पर 100,000 इस्रायलियों को स्थापित करने का उद्देश्य बनाये हुए है), राष्ट्रपति जेमायल के विरुद्ध व्यापक जन आक्रोश के रूप में उभर रही है। लेबनॉनी राष्ट्रपति इस तथ्य से भली भाँति परिचित हैं कि इस्रायल की सैनिक उपस्थिति लेबनॉन के बहुसंख्यक मुस्लिम समुदाय को कभी स्वीकार्य नहीं होगी।

शायद यही कारण है कि लेबनॉन किसी भी वार्ता के प्रारम्भिक चरण के रूप में इस्रायली सैनिकों की बिना शर्त अविलम्ब वापसी पर बल दे रहा है। लेबनॉन ने यह भी मांग की है कि इस्रायल की 1949 की सैनिक संधि का इस प्रकार से पुनरीक्षण करना चाहिये कि लेबनॉन की सुरक्षा की स्थायी व्यवस्था हो सके। इस प्रकार के अनेक ऊहापोहों के जाल में लेबनॉन की शांति योजना फंसी हुई है।

ऐसी स्थिति में यह आशा की जाती है कि दोनों देश क्रमिक बात चीत के माध्यम से प. एशिया में स्थायी शांति की रूप रेखा तैयार कर सकेंगे। अस्तु इस्रायल ने अपनी सेनाओं की वापसी का प्रश्न बेक्का घाटी से सीरियाई सैनिकों की वापसी से भी जोड़ रखा है, इस कारण सर्वाधिक श्रेष्ठ एवं सामञ्जस्यपूर्ण विकल्प यह होगा कि इस्रायली एवं एशियाई सेनाओं की क्रमिक समानांतर वापसी हो। इसी के साथ पी. एल. ओ. के बचे हुए गुरिल्लों को भी क्रमशः लेबनॉन छोड़ देना चाहिये। जहाँ तक लेबनॉन तथा इस्रायल के मध्य राजनीतिक तथा कूटनीतिक सम्बन्धों का प्रश्न है, इन्हें बातचीत के माध्यम से बाद में भी तय किया जा सकता है।

किन्तु इस प्रकार का विकल्प दोनों पक्षों को शायद स्वीकार नहीं ऐसा पिछले एक पखवारे में स्पष्ट हो चला है। बेगिन एक संधि के अभाव में यह अवश्य चाहेंगे कि दोनों देशों के मध्य 40-50 कि. मी. का संरक्षण क्षेत्र अवश्य रहे। इसी प्रकार, पी. एल. ओ. गुरिल्लों तथा सीरियाई सैनिकों को वापसी के लिये राजी करना आसान कार्य नहीं है। ऐसी स्थिति में अमरीका ही मात्र एक ऐसा पक्ष बचा रहता है जो सभी पक्षों को समझौते की राह पर प्रेरित कर सकता है।

जहाँ तक फिलिस्तीनियों का प्रश्न है, अराफत स्वतंत्र फिलिस्तीनी राज्य के अभाव में किसी भी प्रकार के समझौते से असहमत हैं। अराफत इस्रायल को बिना शर्त मान्यता देने की बात का पहले ही विरोध कर चुके हैं :

परमाणु-अस्त्र-परिसीमन :

यूरी ऐन्द्रोपोव : तनाव शैथिल्यीकरण में रुचि...?

नया सोवियत नेतृत्व मास्को तथा वाशिंगटन के मध्य 'तनाव शैथिल्यीकरण' और परस्पर 'परमाणु अस्त्र परिसीमन' पर निरन्तर बल दे रहा है। 5 जनवरी को वारसा संधि के सात राष्ट्रों (बुल्गारिया, चेकोस्लोवाकिया, पूर्व जर्मनी, हंगरी, पोलैण्ड रूमानिया तथा सोवियत संघ) के राजनैतिक सलाहकार समिति की प्राग में हुई शिखर बैठक के पश्चात जारी विज्ञप्ति में यूरी ऐन्द्रोपोव के नेतृत्व में साम्यवादी विश्व ने 'नाटो' देशों के साथ एक 'अयुद्ध संधि' की पेशकश की है। यूरी ऐन्द्रोपोव द्वारा यह भी कहा गया कि 'हम निःशस्त्रीकरण के मार्ग में किसी प्रकार का व्यवधान उत्पन्न करने के इच्छुक नहीं हैं। जेनेवा वार्ता में सफलता यथा जारी रहनी चाहिये। प्राग में एकत्र प्रतिनिधि अच्छे परिणामों के लिए बिना पूर्व-शर्तों के बात करने को तैयार हैं'।

ब्रेजनेव की मृत्यु के बाद सोवियत साम्यवादी दल के महासचिव का पद संभालने वाले यूरी ऐन्द्रोपोव ने प्रारम्भ में ही दोनों ओर से 'इन्टरमीडियेट रेंज बैलिस्टिक मिसाइल (IRBM) में कमी की पेशकश की थी। 5 जनवरी को ही एक अमरीकी पत्रकार के साथ बातचीत में एन्द्रोपोव ने रीगेन के साथ शिखर वार्ता में रुचि दिखायी है। वैसे भी ऐन्द्रोपोव पद संभालने के बाद अब तक कई बार कह चुके हैं कि 'भविष्य तनाव शैथिल्यीकरण से सम्बन्धित है'। अमरीकी नेतृत्व ने प्रतिक्रियास्वरूप विचार प्रकट किया है कि बिना निश्चित सामञ्जस्यपूर्ण दृष्टिकोण के शिखर वार्ता का कोई विशेष परिणाम नहीं निकलेगा। वैसे, यह एक महत्वपूर्ण तथ्य है कि इस बार सोवियत प्रस्ताव पर अमरीकी प्रतिक्रिया अपेक्षाकृत नरम तथा समझ पर आधारित प्रतीत होती है। चूंकि रीगेन द्वारा प्रस्तावित 'शून्य विकल्प' (zero option) से सोवियत नेतृत्व पहले ही असहमति व्यक्त कर चुका है, इस कारण अब अमरीकी नीति नियामक 'शून्य धन विकल्प की संभावनाओं का पता लगा रहे हैं।

इसी के साथ एन्द्रोपोव ने पश्चिमी यूरोप की ओर उन्मुख एस. एस.-20, एस. एस.-4 तथा एस. एस.-5 प्रक्षेपास्त्रों की संख्या घटा कर 160 करने का भी प्रस्ताव रखा है। बदले में सोवियत संघ यह आशा करता है कि अमरीका 'क्रूज' तथा 'परशिंग-II' जैसे खतरनाक प्रक्षेपास्त्रों का प्रस्तावित तैनाती रोक दे। वाशिंगटन द्वारा इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया गया है क्योंकि फ्रांस और ब्रिटेन के पास सम्मिलित रूप से 160 प्रक्षेपास्त्र हैं।

फिर भी, कूटनीतिक पर्यवेक्षकों का अनुमान है कि सोवियत प्रस्ताव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक महत्वपूर्ण प्रस्ताव है जिसे यदि पश्चिमी देश स्वीकार कर सकें तो 'परमाणु अस्त्र परिसीमन' की दिशा में कुछ ठोस कार्य हो सकेगा। ऐसा प्रतीत होता है कि पश्चिमी देश इस तथ्य के प्रति संदेहास्पद हैं कि सोवियत संघ अपने प्रक्षेपास्त्र वास्तव में हटायेगा या इन्हें यूराल पर्वत श्रेणियों के पूर्व में खिसका दिया जायेगा ताकि त्वरित ढंग से तो पश्चिमी यूरोप उनकी सीमा परिधि से अलग हो जाये किन्तु आवश्यकता पड़ने पर उन्हें पुनः अपने स्थान पर लाया जा सके। किन्तु यह तथ्य भावी वार्तालापों में विशेष बाधा नहीं बनेगा, ऐसी आशा की जा सकती है।

राष्ट्रपति रीगेन भी राष्ट्रपति के आगामी चुनावों के संदर्भ में प्रशासन की गिरती हुई छवि से चिंतित हैं। 14 जनवरी को एक प्रेस वार्ता के दौरान रीगेन ने कहा कि वे, सोवियत संघ के साथ परमाणु अस्त्रों के परिसीमन के समझौते के लिये कृतसंकल्प हैं और वे तब तक वार्ता पर बल देते रहेंगे जब तक कि सोवियत पक्ष की ओर से तनिक भी आशा बनी रहेगी। इसके पूर्व 8 जनवरी को एक प्रसारण के दौरान रीगेन ने कहा था कि "जेनेवा वार्ता के ठोस परिणाम तभी मिल सकेंगे जब वार्ता गंभीर वातावरण में हो।" जानकार सूत्रों का यह भी कहना है कि प. यूरोप के देशों तथा स्वयं अमरीका में परमाणु अस्त्रों के विरुद्ध बढ़ते जनसामान्य के रोष को दूर करने हेतु, राष्ट्रपति रीगेन ने जनवरी के अंत तक अमरीकी उपराष्ट्रपति जॉर्ज बुश को हाल में परिसीमन विषयक सोवियत आमंत्रण पर बातचीत करने के लिये सोवियत संघ भी भेजने का निर्णय लिया है। परिणाम क्या होंगे? क्या निःशस्त्रीकरण की दिशा में कोई ठोस प्रगति हो सकेगी यह भविष्य में ही ज्ञात हो सकेगा।

विश्व व्यापार

ओपेक : संकटपूर्ण भविष्य।

दिसम्बर के उत्तरार्द्ध में विश्व के प्रमुख तेल निर्यातक देशों की वियना में हुई बैठक यद्यपि भंग तो नहीं हुई किन्तु बैठक में वातावरण काफी अशांतिपूर्ण रहा। सऊदी अरब ने स्पष्ट शब्दों में विचार व्यक्त किया कि वह पिछली बैठक में निर्धारित 34 डालर प्रति बैरल के मूल्य पर अब भी स्थिर है और इस हेतु कि मूल्य और न कम हों, सदस्य राष्ट्रों को अपने उत्पादन में कमी लानी चाहिए।

ज्ञातव्य हो कि इस समय ओपेक का प्रतिदिन उत्पादन 19.5 मिलियन बैरल प्रतिदिन हैं जो कि पिछले दिसम्बर 81 की बैठक में निर्धारित मात्रा से 2 मिलियन बैरल ज्यादा है। सऊदी तेल मंत्री ने ईरान, लीबिया तथा नाइजीरिया को आवश्यकता से अधिक उत्पादन और परिणाम स्वरूप मूल्यों में कमी के लिये दोषी ठहराया। जहाँ एक ओर ईरान प्रतिदिन 3 मिलियन बैरल उत्पादन कर रहा है (जबकि इसका निर्धारित कोटा 1.2 मिलियन बैरल है) वहीं लीबिया तथा नाइजीरिया अपने उच्च कोटि के खनिज तेल के लिये 3.8 डॉलर प्रति बैरल की दर से प्रीमियम के स्थान पर 1.5 डालर प्रति बैरल प्रीमियम ले रहे हैं।

'ओपेक' की दिसम्बर बैठक में सऊदी अरब के दृष्टिकोण को आंशिक सफलता ही प्राप्त हुयी। अन्य प्रतिनिधि इस बात से तो पूर्णतः सहमत रहे कि तेल के निर्यात मूल्यों में कमी को रोका जाना चाहिये किन्तु कौन-सा देश किस मात्रा में अपने उत्पादन को सीमित करे-इस मामले में कोई सर्वमान्य सहमति नहीं हो पायी। यह आंशिक सहमति भी इस कारण हो पायी है क्योंकि शीत के आधिक्य के कारण पश्चिमी देश सहजतापूर्वक, तेल उत्पादन में अप्रत्याशित बाहुल्य के बावजूद, अनुमान से अधिक आयात करने में समर्थ हो सके हैं। इस कारण 'ओपेक' की एकता का सही पहचान मार्च 1983 के बाद हो सकेगा जबकि पश्चिमी देशों में आयातित तेल की खपत पुनः तेजी से गिरेगी। ईरानी पक्ष की ओर से फिलहाल यह स्पष्ट कर दिया गया है कि वह अपना वर्तमान उत्पादन जारी रखेगा। ईरानी पक्ष भी अपने में सबल है क्योंकि 1978 में ईरान 6.4 मिलियन बैरल प्रतिदिन उत्पादन करता था। अतः यदि तेल के निर्यात मूल्यों में स्थिरता बनाये रखनी है तो कुछ अन्य सदस्य राष्ट्रों को अपने तेल के उत्पादन में कमी लानी पड़ेगी, जो एक कठिन कार्य है।

'गैट' का जेनेवा सम्मेलन : बहुपक्षीय व्यापार का समर्थन

23 जनवरी से प्रारंभ 'जनरल एग्रीमेण्ट ऑन टैरिफ्स एण्ड ट्रेड' का जेनेवा सम्मेलन 29 नवम्बर को इस राजनीतिक सहमति के साथ समाप्त हो गया कि सभी सदस्य राष्ट्र गैट के सामान्य सिद्धान्तों के अनुकूल बहुपक्षीय व्यापार व्यवस्था (Multilateral Trading System) को सशक्त बनाने के लिये प्रयत्नरत रहेंगे। सम्मेलन में 88 देशों के मंत्री स्तर के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। जबकि सम्मेलन के अंत में विज्ञप्ति जारी किये जाने के समय मात्र 20 प्रतिनिधि ही उपस्थित थे।

गैट की स्थापना 1947 में 23 राष्ट्रों द्वारा जेनेवा में आयोजित एक बैठक के दौरान एक 'एकरूप व्यापार नीति' की स्थापना, व्यापार में परस्पर भेदभाव की प्रवृत्ति तथा सदस्य राष्ट्रों के मध्य अन्यायपूर्ण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतिद्वन्द्विता को रोकने के लिये की गयी थी किन्तु यह अपने उद्देश्य में विशेष सफल न हो सका। परिणामतः इसके पूरक के रूप में 'यूनाइटेड नेशन्स कान्फ्रेंस ऑन ट्रेड एण्ड डेवेलपमेंट' की स्थापना की गयी थी।

पिछले एक दशक में 'गैट' की जेनेवा बैठक मंत्री स्तर की पहली बैठक रही। सम्मेलन का मुख्य विचारणीय विषय था कि किस प्रकार अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में संरक्षणवादी प्रवृत्तियों पर नियंत्रण लगाया जाये। किन्तु, सम्मेलन के दौरान माहौल इतना तनावपूर्ण रहा, विशेष रूप से अमरीका तथा यूरोपीय आर्थिक समुदाय के सदस्यों के मध्य इतने अधिक मतभेद उभर कर सामने आये, कि एक समय ऐसा लगा कि सम्मेलन शायद आगे ही न चल पाये। किन्तु, ऐसा नहीं हुआ, यह एक आशावादी तथ्य है। सम्मेलन के सदस्य राष्ट्रों द्वारा विभिन्न द्वि-पक्षीय समझौतों के आधार पर 'गैट' के मूलदर्शन के विपरीत स्वतंत्र व्यापार को रोकने की प्रवृत्ति परिलक्षित हुयी। किन्तु, आर्थिक समुदाय के देशों ने स्वतंत्र व्यापार विरोधी प्रवृत्तियों को समाप्त करने के तर्क का जोरदार विरोध किया। प. यूरोपीय राष्ट्रों ने विश्व व्यापार की संरक्षणवादी प्रवृत्तियों को रोकने के सदर्भ में यह कहा कि वे इसके लिये भरसक प्रयास करेंगे।

सम्मेलन की समाप्ति के उपरांत जारी 17 पृष्ठ के घोषणापत्र के मुख्यतः दो भाग हैं: प्रथम भाग के अन्तर्गत सदस्य राष्ट्रों के इस वायदे का जिक्र है कि वे 'गैट' के सामान्य सिद्धान्तों के आधार पर बहुपक्षीय व्यापार व्यवस्था को मजबूत बनायेंगे। इसी भाग में अनिश्चित निर्यात बाजार, घटती हुयी बाह्य माँग तथा उपभोक्ता वस्तुओं के मूल्य में निर्यात बाजार में कमी आदि के चलते विकासशील देशों की आर्थिक परेशानियों का भी जिक्र किया गया है। जबकि दूसरे भाग के अन्तर्गत यह घोषणा की गयी है कि 'गैट' व्यापार की संरक्षणवादी प्रवृत्तियों एवं अवधारणाओं को समाप्त करने के लिये कृतसंकल्प है।

साम्यवादी विश्व

तनाव-शैथिल्यीकरण : प्रक्रिया जारी रहेगी !

यह एक आकस्मिक संयोग ही कहा जायेगा कि ब्रेझनेव की अंत्येष्टि के अवसर पर चीनी विदेश मंत्री की रूसी नेतृत्व से संबंधों के सामान्यीकरण की बातचीत के लगभग साथ ही चीनी विदेशमंत्री श्री ह्वाँग हुआ की पदनिवृत्ति हुयी और श्री टू स्यू-क्वियन चीन के नये विदेशमंत्री नियुक्त किये गये। किन्तु इससे यह निष्कर्ष निकालना कि ह्वाँग हुआ द्वारा संबंध सामान्यीकरण की प्रारंभिक बातचीत में दिखायी गयी रुचि इस पदनिवृत्ति का कारण थी, शायद विषयसंगत न होगा। कुछ समालोचकों द्वारा यह भी तर्क दिया गया है कि यद्यपि हवाँग हुआ को पदनिवृत्त करने का प्रश्न काफी समय पूर्व से सर्वोच्च चीनी नेतृत्व के विचाराधीन था किन्तु यह अवसर इसके लिये अनुपयुक्त था। किन्तु इस संभावना से भी इंकार नहीं किया जा सकता कि हो सकता है हुआ को अब तक इस कारण ही पदनिवृत्त न किया गया हो ताकि चीन-सोवियत संघ दरार को भरे जाने के संवेदनशील मसले के प्रारंभिक वातावरण का निर्माण एक वरिष्ठ एवं अनुभवी कूटनीतिज्ञ द्वारा किया जा सके।

पिछले कुछ समय से चीन-सोवियत दरार भरे जाने के संभावित संकेत लक्षित हो रहे हैं। सरकारी तौर पर चीन की ओर चीन-सोवियत संघ संबन्धों के सामान्यीकरण के तीन अवरोधों का जिक्र किया गया है—(क) अफगानिस्तान में सोवियत सैनिक उपस्थिति; (ख) कम्पूचिया के मसले पर सोवियत संघ द्वारा वियतनाम को सैनिक सहयोग तथा (ग) रूस-चीन सीमा पर भारी मात्रा में सोवियत सैनिकों का जमाव। 20 नवम्बर को चीन द्वारा अधिकारिक तौर पर सोवियत संघ की विस्तार एवं प्रभुत्ववादी नीति की कुछ आलोचना की गयी किन्तु इससे यह निष्कर्ष निकालना कि सामान्यीकरण की प्रक्रिया ठप्प है, उचित नहीं होगा। ध्यान देने योग्य तथ्य यह है कि चीन के रवैये की उग्र प्रतिक्रिया के स्थान पर नये सोवियत महासचिव यूरी आन्द्रोपोव ने पुनः चीन के साथ संबंध सुधार की रूस की इच्छा को पुनः दुहराया है।

पदनिवृत्त चीनी विदेशमंत्री के साथ प्रत्यक्ष बातचीत के अतिरिक्त मरहूम सोवियत राष्ट्रपति ब्रेझनेव की अंत्येष्टि के घटनाक्रम के विस्तृत विवरण के आधार पर भी यही निष्कर्ष निकाला जा सकता है। अंत्येष्टि के अवसर पर हेंग सामरिन को लाओस और वियतनाम के प्रतिनिधियों से अलग स्थान दिया गया जबकि कम्पूचिया के प्रतिनिधियों को उन साम्यवादी दलों के साथ सूचीबद्ध किया गया जो शासन में नहीं हैं। पाकिस्तान के राष्ट्रपति जनरल जिया का आन्द्रोपोव ने गर्मजोशी से स्वागत किया जबकि बाब्रक करमाल से उन्होंने उतनी ही ठंडी बातचीत की।

जनरल जिया तथा अफगान राष्ट्रपति ने भी एक दूसरे से मास्को में बातचीत की। इस अवसर पर जिया, आन्द्रोपोव तथा करमाल की बातचीत के आधार पर यह अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है कि हो सकता है कि सोवियत संघ निकट भविष्य में अफगान समस्या के राजनीतिक समाधान के लिये तैयार हो जाये। 18 नवम्बर को पाकिस्तानी राष्ट्रपति जिया ने सोवियत संघ को आश्वासन दिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि पाकिस्तान अफगान विद्रोहियों को सभी सहायता (आर्थिक-सैनिक) रोक सकता है बशर्ते कि मास्को आगामी 2 वर्षों में काबुल से अपनी सेनायें वापस बुलाने के लिये राजी हो। ऐसा भी प्रतीत होता है कि सोवियत संघ स्वयं भी अफगानिस्तान के बोझ से भारित महसूस कर रहा है। यह भी हो सकता है कि रूस इस संभावना का पता लगा रहा हो कि अफगानिस्तान से अपनी सेनायें वापस बुलाने पर क्षेत्र के कितने देशों का सदभाव उसे मिल सकता है? कहना न होगा कि यदि अफगानिस्तान समस्या का कोई राजनीतिक हल निकल आता है तो निश्चय ही चीन-सोवियत संघ संबंधों का एक प्रमुख अवरोध दूर हो जायेगा। और इस प्रकार क्रमांतर में 'पूर्ण शैथिल्यीकरण की संभावना व्यक्त की जा सकती है।

पोलैण्ड : ऊहापोह की स्थिति, आगे क्या...?

पोलैण्ड में नये वर्ष के ठीक पूर्व मार्शल लॉ के हटाये जाने का पोलैण्ड पर न तो कोई व्यावहारिक प्रभाव हुआ और न ही जनजीवन में कोई विशेष विभेद आया है। पोलैण्ड आज भी अस्त-व्यस्तता के पुराने दौर से गुजर रहा है। सरकारी तौर पर बंदियों को रिहा किया गया है; आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति को अधिकाधिक सुलभ बनाने के लिये यथेष्ट व्यवस्था की गयी है यद्यपि मार्शल लॉ हटने के बावजूद संवेदनशील इलाकों में सेना का नियंत्रण पूर्ववत् है।

वर्तमान अस्त-व्यस्तता के सामान्य रूप से दो कारण बताये जा सकते हैं : (क) पिछले दो वर्षों में पोलिश अर्थव्यवस्था पूर्णतः जीर्ण-शीर्ण हो चुकी है, और (ख) जो पहले कारण की तुलना में कहीं अधिक महत्वपूर्ण है, वह यह है कि सरकार अपनी नीतियों में पूर्णतः ईमानदार नहीं है। एक ओर सरकार ने सैकड़ों राजनीतिक बंदियों को छोड़ दिया है, दूसरी ओर 'सॉलिडैरिटी' के 7 प्रमुख नेताओं को अज्ञात कारणों से बंदी बना लिया गया है। सरकारी तौर पर इसकी व्याख्या करते हुए 8 जनवरी को मार्शल लॉ उपप्रशासक जनरल रकोस्की ने कहा कि, "सरकार स्थिति को सामान्य बनाने के लिये कृतसंकल्प है। इसके लिये किसी भी विरोध को सहन नहीं किया जायेगा।" पोलिश सरकार ने 'स्थिति को सामान्य बनाने' की अपनी दीर्घकालिक नीति के अन्तर्गत पहले ही अपेक्षाकृत अधिक शक्तियों से सम्पन्न संगठनों की स्थापना की घोषणा की है। किन्तु, श्रमिक आंदोलन में इस प्रकार के संगठन कोई क्रियात्मक भूमिका निभा सकेंगे -इसमें संदेह है, क्योंकि इन संगठनों को हड़ताल के अधिकार से वंचित कर दिया गया है। दूसरे, सरकार द्वारा स्थापित इन संगठनों की सदस्य संख्या सामान्यतः बहुत कम है। 'सॉलिडैरिटी' के नेतृत्वकर्ता लेक वालेसा इसी कारण पर्याप्त आशावान हैं। क्योंकि, स्वयं वालेसा ने कहा कि, 'लोग अब भी मेरे साथ हैं। लेनिन शिपयार्ड में स्थापित नयी मजदूर यूनियन में 17,000 श्रमिकों में से 172 ही शामिल हुए हैं।'

साम्यवादी प्रशासन तथा 'सॉलिडैरिटी' के मध्य इस अप्रत्यक्ष संघर्ष में पोलीश चर्च की स्थिति स्वाभाविक रूप से सशक्त एवं प्रभावकारी हो गयी है। जनसामान्य के विरोध को सरकार के समक्ष खुलकर प्रकट करने वाली संस्था के रूप में पोलिश चर्च महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। कार्डिनल ग्लेम्प ने सरकार द्वारा विभिन्न स्थितियों में अधूरे सुधारों, सभी बंदियों की गैर-रिहाई, गैर-लोककल्याणकारी श्रमिक कानूनों, जिनके अन्तर्गत श्रमिक अपनी इच्छानुसार अपना पद भी न त्याग सकेंगे, तथा समुदाय बनाने अथवा भाषण की स्वतंत्रता पर दमनकारी प्रतिबंध लगाने की नीतियों की कटु आलोचना की है।

इस समय सरकार एक समन्वयवादी नीति के माध्यम से जर्जरित पोलिश अर्थव्यवस्था को स्थायित्व प्रदान कर सकती है। सरकार ने नये वर्ष 4% औद्योगिक विकास दर का लक्ष्य बनाया है, जिसे प्राप्त करना कठिन तो है ही, भले ही असंभव न हो। ऐसा अनुमान है कि पोलैण्ड के पहले से ही विद्यमान 27 बिलियन डॉलर के विशाल विदेशी ऋण में, 1983 के दौरान, 3 बिलियन डॉलर की और वृद्धि हो जायेगी।

पड़ोसी देश :

अफगानिस्तान : सोवियत सेनाओं की वापसी का फिलहाल कोई प्रश्न नहीं ....?

दिसम्बर, 1982 में ब्रेझनेव की मृत्यु के उपरांत जब यूरी आन्द्रोपोव ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पद भार संभाला, तब से कूटनीतिक पर्यवेक्षक यह अटकलबाजी कर रहे थे कि शायद निकट भविष्य में सोवियत संघ अफगानिस्तान से अपनी सेनायें वापस बुलाये । ब्रेझनेव की अन्त्येष्टि के अवसर पर पाकिस्तानी राष्ट्रपति जिया में प्रदर्शित अप्रत्याशित सोवियत रुचि इसका सर्वप्रमुख आधार थी । इस प्रकार के दृष्टिकोण का एक आधार यह भी था कि सोवियत सरकारी जासूसी संस्था के. जी. बी. के प्रधान की हैसियत से यूरी आन्द्रोपोव प्रारंभ में ही, अफगानिस्तान में सोवियत संघ के सैनिक हस्तक्षेप के पक्षधर नहीं थे । किन्तु, अभी तक सोवियत संघ के नीति नियामकों द्वारा अनेक वक्तव्यों से ऐसी कोई संभावना नहीं दिखती ।—जब तक अफगानिस्तान के आंतरिक मसलों में विदेशी हस्तक्षेप पूर्णतः समाप्त नहीं हो जाता । अमरीका, सऊदी अरब, मिस्र तथा पाकिस्तान अफगान विद्रोहियों को आर्थिक तथा सैनिक सहायता के माध्यम से इस प्रकार के हस्तक्षेप करते रहे हैं ।

यदि, वास्तविक अर्थों में देखा जाये तो इस प्रकार की अटकलबाजी का कोई ठोस आधार नहीं है : यदि यह मान भी लिया जाये कि आंद्रोपोव के. जी. बी. प्रधान की हैसियत से अफगानिस्तान में सोवियत सैनिक हस्तक्षेप के विरोधी थे तो भी सेनाओं की वापसी के विषय में राष्ट्राध्यक्ष की हैसियत से इतना महत्वपूर्ण निर्णय इतनी शीघ्रता से नहीं लिया जा सकता ।

आन्द्रोपोव अमरीका के साथ "तनाव शैथिल्यीकरण" में रूचिवान है । पिछले दो माह में सोवियत नेतृत्व ने परमाणु अस्त्र परिसीमन में महती रूचि प्रदर्शित की है । वाइट हाउस भी अपने दृष्टिकोण में निश्चित परिवर्तन ला रहा है, किन्तु यह ध्यान रखा जाना चाहिये कि सोवियत नेतृत्व कभी अफगानिस्तान से अपनी सेनाएं वापस बुलाने का निर्णय लेकर ऋणात्मक स्थिति से अमरीका के साथ वार्ता करना न चाहेगा ।

पाकिस्तान : जियाउल हक की अमेरिका यात्रा ...?

वर्ष 1979 में अफगानिस्तान में रूसी सैनिक हस्तक्षेप के फलस्वरूप अमेरिका में उत्पन्न रोष और असुरक्षा का पूरा-पूरा फायदा पाकिस्तान की मार्शल लॉ सरकार ने उठाया । पाकिस्तानी राष्ट्रपति जियाउल हक भलीभांति समझने लगे कि अब अमेरिका को पाकिस्तान के पूर्ण सहयोग की आवश्यकता हैं, न कि पाकिस्तान को अमेरिका की । अमेरिका ने पाकिस्तान को तुष्ट करने हेतु वर्ष 1981 में उसको सामरिक व आर्थिक सहायता पहुंचाने के लिये पांच वर्षीय समझौता भी किया । इसी समझौते के अन्तर्गत पाकिस्तान को 40 अत्याधुनिक एफ—16 लड़ाकू विमान भी मिलना है । दिसम्बर के प्रथम सप्ताह में जिया की अमेरिका यात्रा का यही उद्देश्य था कि रीगन प्रशासन से कुछ और सामरिक और आर्थिक सुविधाएं प्राप्त की जायें । परन्तु, इसमें वे पूर्णतः सफल न हुए । अमेरिका ने पाकिस्तान की सुरक्षा व्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिये हर प्रकार की सहायता देने का आश्वासन दि[illegible] और साथ में बगैर सूक्ष्म इलेक्ट्रो[illegible] यन्त्रों से लैस एफ—16 विमानों [illegible] आपूर्ति के पूर्वनिर्णय को [illegible] कर राष्ट्रपति रीगन सभी इले[illegible]निक यन्त्रों से सम्पन्न एफ—[illegible] विमान की आपूर्ति के लिये सह[illegible] हो गये । (एफ-16 विमान का प[illegible] खेप जनवरी 83 में पाकिस्तान प[illegible] चुका है) किन्तु, जिया को परम[illegible] अस्त्र के सम्बन्ध में कोई सफलता [illegible] मिली । रीगन प्रशासन ने पाकि[illegible] द्वारा परमाणु अस्त्र के निर्माण [illegible] चश्मा में परमाणु रियेक्टर की [illegible]पना पर आपत्ति प्रकट की, [illegible] फ्रांस व प. जर्मनी से अनुरोध कि[illegible] गया कि पाकिस्तान को इस दिशा [illegible] किसी प्रकार की भी सहायता प्र[illegible] न करे । जिया किसी भी प्रकार री[illegible] प्रशासन को आश्वस्त न कर पाये [illegible] पाकिस्तान परमाणु अस्त्र के नि[illegible] का कोई इरादा नहीं रखता है ।

जिया की अमेरिका यात्रा [illegible] एक उद्देश्य यह भी था कि पा[illegible]स्तान में सामरिक शासन को वर्त[illegible] परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में उ[illegible] ठहरा कर अमेरिकी जनता का सम[illegible] प्राप्त करना । परन्तु, पाकिस्तान [illegible] विरोधी दल पाकिस्तान पीपुल्स पा[illegible] के नेता डा. गुलाम हुसैन ने [illegible] समय अमेरिका में उपस्थित हो[illegible] जिया की निरंकुश कार्यवाहियों [illegible] लेखा-जोखा अमेरिकी जनता के सा[illegible] प्रस्तुत कर उनके उद्देश्यों पर प[illegible] फेर दिया । यहाँ तक कि राष्ट्र[illegible] रीगन ने अपने प्रियपात्र जिया [illegible] शीघ्रतिशीघ्र निर्वाचन करवाने [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिये कहा। बहरहाल जिया की इस अमेरिका यात्रा की आंशिक सफलता ही भारत के लिये घातक है। पाकिस्तान रूस के विस्तारवादी कदमों का मुकाबला करने के लिये अमेरिका से अत्याधुनिक विमान प्राप्त करने में सफल हो गया। पिछले अनुभवों के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जाना अनुचित नहीं होगा कि पाकिस्तान इन विमानों का उपयोग रूस के विरुद्ध न करके भारत के विरुद्ध करेगा। भारत को इस सम्भावना का सामना करने के लिये सामरिक रूप से तत्पर रहना पड़ेगा। इसके अलावा उसे पाकिस्तान में सामरिक शासन के अन्त और प्रजातान्त्रिक सरकार की स्थापना हेतु विश्व जनमत तैयार करने के लिये कदम उठाना पड़ेगा।

भारत-फ्रांस :

मितरां की भारत यात्रा : उत्तर-दक्षिण सहयोग की राजनीतिक शुरूआत ?

फ्रांस के समाजवादी राष्ट्रपति श्री फ्रांस्वा मितरां की चार दिवसीय भारत यात्रा (27-30 नवम्बर 1982) से निश्चय ही दोनों देशों के मध्य संबंध प्रगाढ़ हुए हैं। यात्रा के कुछ ही समय पूर्व तारापुर आणविक संयंत्र को 1963 के भारत-अमरीका समझौते के अन्तर्गत, परिवर्धित यूरेनियम की आपूर्ति पर दोनों देशों के मध्य समझौते को अंतिम रूप दिया गया। समझौते के अन्तर्गत फ्रांस भारत को 1963 के मूल समझौते के अन्तर्गत ही 1993 तक यूरेनियम की आपूर्ति करता रहेगा। इस समझौते को निश्चित रूप से, भारतीय पक्ष की महत्वपूर्ण कूटनीतिक विजय माना जाना चाहिये।

श्रीमती गांधी की अमरीका यात्रा के दौरान ही अमरीका ने स्वयं के स्थान पर फ्रांस द्वारा यूरेनियम की आपूर्ति का प्रस्ताव रखा था जिसे भारत और फ्रांस दोनों के द्वारा स्वीकार कर लिया गया था किन्तु मितरां की यात्रा के पूर्व तक फ्रांस द्वारा यूरेनियम की आपूर्ति के प्रश्न पर दोनों देशों के मध्य विवाद की स्थिति बनी रही। इस विवाद के प्रमुख कारण आपूर्ति के फ्रांसीसी मसौदे में 'परसूट क्लॉज, तथा 'परपेच्युटी क्लॉज' का होना था। पहले उपबंध के अनुसार फ्रांस द्वारा आपूर्त किये गये यूरेनियम के 'बाइ प्रोडक्ट' को जिस संयंत्र में प्रयोग में लाया जायेगा, उसके निरीक्षण का अधिकार 'अन्तर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा संगठन' (IAEA) को होगा। जबकि 'परपेच्युटी क्लाज' के अन्तर्गत, जब तक जले हुए ईंधन या उसके किसी बाइ-प्रोडक्ट का प्रयोग किसी भी संयंत्र में होता रहेगा, उस संयंत्र के निरीक्षण का अधिकार अ. प. ऊ. संगठन को होगा। इस प्रकार का कोई उपबंध 1963 की भारत अमरीका संधि में नहीं है।

श्रीमती गांधी द्वारा पिछले तीन माह में तारापुर को यूरेनियम की आपूर्ति के किसी भी विवाद के दौरान पर स्पष्ट कर दिया गया था कि भारत किसी भी स्थिति में इन दो उपबंधों को स्वीकार नहीं करेगा क्योंकि ये प्रतिबंध अपने स्वरूप में किसी भी प्रकार से अमरीका द्वारा पूर्वकाल में प्रस्तावित, जिसके कारण पिछले कई वर्षों से तारापुर आणविक संयंत्र को यूरेनियम की आपूर्ति का प्रश्न खटाई में पड़ा है और जिसके चलते अमरीका ने स्वयं के स्थान पर फ्रांस से शेष अवधि के लिये यूरेनियम आपूर्ति करने का आग्रह किया, सर्वाङ्गीण निरीक्षण' (Full Scope Safeguard) से किसी प्रकार भिन्न नहीं हैं। इस प्रकार के प्रतिबंध परमाणु ऊर्जा संगठन द्वारा 1975 से, 1968 में हस्ताक्षरित परमाणु अप्रसार सन्धि (NPT) एवं लंदन क्लब के सदस्यों के अनुरोध पर, लगाये जाने लगे हैं। यद्यपि फ्रांस एन. पी. टी. का सदस्य नहीं है किन्तु यूरेनियम आपूर्ति करने वाले देशों के लंदन क्लब के सदस्य होने के नाते, वह भी उन प्रतिबंधों का अनुसरण करता है। कठोर भारतीय रुख के समक्ष अन्ततः मितरां के आने के पूर्व ही इस विषय पर समझौता हो गया जिसके अनुसार 1963 के मौलिक समझौते के तहत् ही फ्रांस भारत को यूरेनियम प्रदान करेगा और 1993 में समझौते की समाप्ति के साथ ही तारापुर आणविक संयंत्र के किसी संस्था द्वारा निरीक्षण के समस्त अधिकार समाप्त हो जायेंगे हाँ, फ्रांसीसी राष्ट्रपति ने भारत से यह आश्वासन एक बार पुनः ले लिया कि "भारत फ्रांस द्वारा आपूर्तित यूरेनियम अथवा उसके किसी भी प्रकार के 'बाय प्रोडक्ट' का प्रयोग शांतिपूर्ण उद्देश्यों, शोध कार्य अथवा विद्युत ऊर्जा के उत्पादन के लिये ही करेगा।" मितरां की यात्रा के दौरान ही फ्रांस से 40 मिराज विमानों की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत द्वारा खरीद के समझौते को अंतिम रूप दिया गया। फ्रांसीसी राष्ट्रपति ने नयी दिल्ली में यह भी स्वीकार किया कि तारापुर को यूरेनियम की आपूर्ति का प्रश्न किसी भी प्रकार से भारत द्वारा मिराज की खरीद के प्रश्न से नहीं जुड़ा था।

इन महत्वपूर्ण द्वि-पक्षीय मसलों के अतिरिक्त विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय तथा क्षेत्रीय मसलों एवं परस्पर आर्थिक सहयोग की संभावनाओं पर भी दोनों नेताओं के मध्य बातचीत हुयी। मितरां ने बड़े स्पष्ट शब्दों में यह स्वीकार किया कि विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय मसलों पर फ्रांस के दृष्टिकोण 'भौगोलिक तथा ऐतिहासिक अवस्थाओं के तार्किक परिणाम हैं।' इस लिये यह स्वाभाविक था कि अफगानिस्तान, कम्पूचिया अथवा हिन्द महासागर को शांति क्षेत्र बनाये जाने के प्रश्न पर दोनों देशों के मध्य मतभेद होता।

दोनों नेताओं ने यह आशा प्रकट की कि अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति की विभिन्न समस्याओं के प्रति परस्पर भिन्न दृष्टिकोण के बावजूद 'अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्रों में दोनों एक दूसरे के प्रमुख सहयोगी हो सकते हैं। मितरां ने आशापूर्ण ढंग से यह विचार व्यक्त किया कि उत्तर-दक्षिण संवाद, विश्व-परक आर्थिक सहयोग, धनी-निर्धन के बीच की खाई कम करने के प्रयासों एवं अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं के मौद्रिक संसाधनों के अधिकाधिक उपयोग जैसे महत्वपूर्ण आर्थिक मसलों पर दोनों देशों के मध्य सहयोग के प्रभावशाली परिणाम निकल सकते हैं।

राजनीतिक सहयोग एवं विचार विमर्श के अतिरिक्त आर्थिक एवं तकनीकी सहयोग की दृष्टि से भी मितरां की यात्रा का महत्व कम नहीं आँका जाना चाहिये। एक वृहत दूर संचार समझौते पर दोनों देशों द्वारा हस्ताक्षर किये गये हैं जिसके अन्तर्गत फ्रांस भारत को न केवल अधुनातन तकनीक प्रदान करेगा वरन् इस क्षेत्र में समस्त अनुसंधान कार्य में भी फ्रांस सहायता करेगा। इस प्रकार कुल मिलाकर उत्तर देशों के एक प्रमुख प्रतिनिधि देश के राष्ट्रपति की दक्षिण देशों के नेतृत्वकारी देश की यात्रा सफल कही जा सकती है, विभिन्न मसलों पर भारतीय दृष्टिकोण के अनुकूल ही समझौता होना इस तथ्य की शुरूआत कही जा सकती है कि विकसित देश अब विकासशील देशों से द्वि-पक्षीय सम्बंध रखने में अधिक रुचि रखते हैं। एक वाक्य में, इस यात्रा के परिणामों को देखते हुए, इसे उत्तर-दक्षिण सहयोग की राजनीतिक शुरूआत कहा जा सकता है।

भारत-मिस्र :

हुस्नी मुबारक की भारत यात्रा : राष्ट्रीय प्राथमिकताओं का प्रश्न

मिस्र के राष्ट्रपति श्री हुस्नी मुबारक की दो दिवसीय (30 नवम्बर-1 दिसम्बर) भारत यात्रा ने गुट-निरपेक्ष आन्दोलन के दो प्रवर्तक राष्ट्रों के मध्य परम्परागत मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों को और आगे बढ़ाया है। पिछले कई वर्षों से इस्रायल के साथ अपनी शांति संधि (कैम्प डेविड समझौता) के कारण मिस्र यद्यपि अरब जगत में अलग थलग पड़ गया है किन्तु वृहत् परिप्रेक्ष्य में मिस्र अरब विश्व का सर्वप्रमुख राष्ट्र है। अतः यह स्वाभाविक ही था कि प. एशिया की अस्थिर विस्फोटक स्थिति ही दोनों नेताओं के मध्य बातचीत का प्रमुख आधार बनती। भारत न केवल मानवीय वरन अपने राष्ट्रीय आर्थिक हितों के कारण भी पश्चिमी एशिया में शांति स्थापना के लिये इच्छुक है क्योंकि तेल की सभी भारतीय आवश्यकताएं खाड़ी के देशों से ही पूरी होती हैं।

मिस्र के राष्ट्रपति ने प्रधान मंत्री श्रीमती गांधी से बातचीत के दौरान यह विचार प्रकट किया कि यदि आवश्यकता हो तो फिलिस्तीनी मुक्ति संगठन को एकपक्षीय रूप से इस्रायल को मान्यता दे देना चाहिये ताकि इस्रायल पर फि. मु. सं. को मान्यता देने के लिये दबाव डाला जा सके और इस प्रकार क्षेत्र में स्थायी शांति के प्रयास की ठोस शुरूआत की जा सके। भारत इस तथ्य से सहमत है कि फिलिस्तीनी स्वायत्तता का प्रश्न प. एशिया के धधकते ज्वालामुखी का केन्द्र बिन्दु है और इस कारण भारतीय प्रधानमंत्री ने मिस्री राष्ट्रपति के साथ बातचीत में अनधिकृत रूप से अधिकृत इलाकों से इस्राइली सेनाओं की वापसी की आवश्यकता पर भी बल दिया। यहाँ यह विचारणीय है कि भारत के इस प्रकार के दृष्टिकोण के पीछे दो कारक तत्व हैं : प्रथमतः भारत मिस्र की भाँति एक पश्चिमी एशियाई देश नहीं है; दूसरे, भारत का इस्राइल पर कोई ऐसा प्रभाव भी नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है जिसके चलते वह किसी प्रकार का दबाव इस्राइल पर डाल सके वरन् पूरे लेबनॉनी घटनाक्रम के दौरान भारत के अरब समर्थक दृष्टिकोण के कारण दोनों के मध्य कटुता में ही वृद्धि हुई है। हुस्नी मुबारक के समक्ष भी अपनी राष्ट्रीय प्राथमिकताएँ हैं: एक ओर वे इस्राइल के साथ सम्पन्न अपनी संधि को खतरे में डाले बिना पुनः अरब विश्व का नेतृत्व प्राप्त करना चाहते हैं, दूसरी ओर वे अमरीका के साथ सामञ्जस्यपूर्ण सम्बन्ध बनाये रखने के साथ-साथ अपने ऊपर अरबों के हित के विरुद्ध अमरीकी समर्थक का ठप्पा भी नहीं लगवाना चाहते।

राष्ट्रपति मुबारक की यात्रा का प्रमुख परिणाम मृतप्राय 'भारत-मिस्र संयुक्त आयोग' के पुनर्गठन का निर्णय रहा है। यह आयोग निश्चित रूप से दोनों देशों के मध्य विभिन्न व्यापारिक तथा सांस्कृतिक मुद्दों पर समय-समय पर द्वि-पक्षीय विचार विमर्श का मंच प्रदान करेगा। दोनों नेताओं ने विश्व के विभिन्न विवादों को सुलझाने में गुटनिरपेक्ष आन्दोलन की भूमिका की भी सराहना की।

कुल मिलाकर मुबारक की भारत यात्रा सफल कही जा सकती है, कारण यह कि इससे दोनों देशों के मध्य सौहार्द्र पूर्ण सम्बन्धों का और अधिक विकास हो सकेगा।

अफ्रीका

शुल्ट्ज-बोथा वार्ता: नामीबिया का प्रश्न पुनः अधर में?

नामीबिया की समस्या एक बार पुनः अधर में लटकी रह गयी। नवम्बर के अंतिम दिनों में अमरीकी विदेश सचिव जॉर्ज शुल्ट्ज तथा दक्षिण अफ्रीका के विदेशमंत्री पिक बोथा के मध्य नामीबिया की स्वतंत्रता के प्रश्न पर कोई सामञ्जस्यपूर्ण निष्कर्ष की प्राप्ति न हो सकी। द. अफ्रीका अब भी इस बात पर अटल है कि अंगोला से क्यूबा की सेनायें वापस बुलाये जाने के साथ ही वह नामीबिया से अपनी सेनाओं की वापसी के विषय पर विचार कर सकता है। जबकि अंगोला पहले ही अमरीका को यह आश्वासन दे चुका है कि यदि द. अफ्रीका नामीबिया से अपनी सेनायें वापस बुला ले तथा द. अंगोला में विद्रोहियों को सैनिक सहयोग देना बंद कर दे तो अंगोला क्यूबाई सेनाओं को अंगोला से वापस लौटने को कह सकता है। किन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि या तो अमरीका लुआंडा के आश्वासन के प्रति पूर्ण-तया आश्वस्त नहीं है अथवा द. अफ्रीका को नामीबिया से अपनी सेनाओं की वापसी के लिये बाध्य करने में असमर्थ है, नामीबिया की स्वतंत्रता का प्रश्न अभी भी अधर में लटका हुआ है।

इसके कुछ ही दिनों पूर्व द. अफ्रीका कई प्रमुख पश्चिमी देशों की उस योजना से भी असहमति प्रकट कर चुका है जिसमें अंगोला में क्यूबाई सैनिकों के स्थान पर एक 'बहुराष्ट्रीय शांति सेना' के नियोजन की बात कही गयी थी। इसके पूर्व नवम्बर के लगभग मध्य में अमरीकी उपराष्ट्रपति जॉर्ज बुश की कीनिया, नाइजीरिया तथा सेनेगल सहित सात अफ्रीकाई देशों की यात्रा के दौरान भी, नामीबिया से द. अफ्रीकी सेनाओं की वापसी के पूर्वशर्त के रूप अंगोला से क्यूबाई सैनिकों की वापसी की प्रिटोरिया की मांग की अमरीकी समर्थन की कटु आलोचना हुयी। कीनिया के राष्ट्रपति डेनियल ऐरप मोई ने तो यहाँ तक कहा कि प्रजातंत्र तथा स्वतंत्रता का समर्थक कोई भी देश द. अफ्रीका की इस मांग का समर्थन नहीं करेगा।

कार्टर के राष्ट्रपतित्व काल के दौरान द. अफ्रीका को सैनिक साज सामान के निर्यात पर लगे प्रतिबंध को 28 फरवरी, 1982 को समाप्त करके रीगेन ने नामीबिया की स्वतंत्रता के प्रश्न पर अमरीकी रुचि तथा ईमानदारी का परिचय दे दिया था। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के प्रस्ताव नं. 435 का, जिसके अन्तर्गत नामीबिया में सं. रा. के निर्देशन में चुनावों की पूर्व-अवस्था के रूप में नामीबिया में द. अफ्रीकी सैनिकों तथा स्वापो गुरिल्लों की गतिविधियों पर रोक की बात कही गयी थी, समर्थन अमरीका द्वारा भी किया गया था। किन्तु अब ऐसा प्रतीत होता है कि अमरीका की रुचि नामीबिया को स्वतंत्रता प्रदान किये जाने से कहीं अधिक अंगोला पर क्यूबा के माध्यम से सोवियत प्रभाव को समाप्त करने में है। इस प्रकार के विचार का आधार यह है कि पिछले दो वर्षों में अमरीकी तथा उच्च अफ्रीकी नेतृत्व में बातचीत के अनेक दौर के बावजूद नामीबिया की स्वतंत्रता के प्रश्न को अंतिम रूप देने में वाशिंगटन असमर्थ रहा है। ■

CC-0: In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वार्षिक बजट निर्माण प्रक्रिया

▭योगेश मिश्र*

राजनैतिक स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरान्त भारत को आवश्यकता हुई आत्मनिर्भरता के अलंकरण की। आत्मनिर्भरता प्रायः आर्थिक प्रगति के माध्यम से ही प्राप्त की जा सकती है, फलतः भारत में आर्थिक समृद्धि की प्राप्ति के लिए राजस्व को एक व्यवस्थित रूप में प्राप्त करने और व्यय करने की आवश्यकता महसूस हुई। परिणाम स्वरूप बजट और योजना की संकल्पना का विकास हुआ। यों तो प्रजातांत्रिक व्यवस्था के अन्तर्गत बजट व्यवस्था का विकास इंग्लैण्ड से ही माना जाता है। चूंकि कई शताब्दियों तक भारत ब्रिटिश शासकों के आधिपत्य में था अतः यह भी कहा जा सकता है कि बजट की व्यवस्था हमें आजादी की विरासत के रूप में मिली है।

बजट शब्द का सम्बन्ध लैटिन शब्द 'Bulga' से है। जिससे फ्रेन्च शब्द 'Bongette' तथा अंग्रेजी शब्द 'Bowgett' बने हैं। इनका अभिप्राय चमड़े का थैला होता है। इंग्लैण्ड के इतिहास से स्पष्ट होता है कि ब्रिटिश वित्त मंत्री आने वाले वर्ष से सम्बन्धित सभी वित्तीय कागज एक चमड़े के थैले में रखते थे और संसद में यह कागज इसी थैले से निकाल कर प्रस्तुत करते थे। फलतः इन प्रपत्रों को ही बजट की संज्ञा दी गयी। लेकिन भारतीय संविधान में इस शब्द के पर्याय के रूप में "वार्षिक वैत्तिक विवरण शब्द" (Annual-Budget) प्राप्त होता है।

भारतीय संविधान की धारा 266 एवम् 267 के अंतर्गत बजट में तीन प्रकार की निधियाँ और दो प्रकार के व्यय होते हैं।

1—समेकित निधि—
2—लोक-लेखा निधि—
3—आकस्मिकता निधि—

प्रथम प्रकार की निधि के अन्तर्गत केन्द्र द्वारा प्राप्त सभी राजस्व, ऋण, ऋणों से प्राप्त लाभ या ब्याज आदि आता है। इस निधि से भारत के राष्ट्रपति, राज्य सभा के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, लोक सभा के अध्यक्ष और उपाध्यक्ष संघीय और उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीशों, महानियंत्रक तथा लेखाकार आदि के वेतन, भत्ते आदि दिये जाते हैं, इसी निधि से ऋण प्राप्त करने, उस पर ब्याज देने उसे चलाने से सम्बन्धित क्रिया भी सम्पन्न होती है। इसके अतिरिक्त किसी न्यायालय या किसी निर्वाचक अधिकरण के फैसले लागू करने के लिए आवश्यक धन राशि भी इसी निधि से देय होती है।

दूसरे प्रकार की निधि बैंकों के लेन-देन की भांति होती है इसके अन्तर्गत प्रथम प्रकार की निधि के अतिरिक्त सरकार द्वारा प्राप्त की जाने वाली सभी राशियाँ आती हैं।

तीसरे प्रकार की निधि राष्ट्रपति के नियंत्रण में होती है। इसका उपयोग आकस्मिक रूप में आये अत्यन्त आवश्यक व्यय को संसद की स्वीकृति से पूर्व ही पूरा करने के लिए किया जाता है।

प्रथम प्रकार के व्यय वे होते हैं जिन्हें व्यय करने के लिए संसद की स्वीकृति अनिवार्य नहीं होती है जबकि व्ययों के वर्गीकरण में दूसरा प्रकार ऐसे व्ययों का होता है जिनके लिए संसद की स्वीकृति नितान्त आवश्यक होती है। लेकिन लगभग सात व आठ वर्ष पहले से राजस्व और व्ययों का वर्गीकरण कुछ नवीन प्रकार से होता है जिसमें राजस्व (प्राप्तियाँ) को कर से प्राप्त होने वाले राजस्व एवं गैर कर से प्राप्त होने वाले राजस्व तथा व्ययों को सामान्य सेवा में होने वाले व्यय, आर्थिक सेवा में होने वाले व्यय, एवं सामाजिक और सामुदायिक सेवा में होने वाले व्यय में विभक्त करते हैं।

*अर्थशास्त्र विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे संविधान में केन्द्र और राज्य सरकारों की व्यवस्था अलग-थलग तो है तथापि उनके प्रारूप में अन्तर न होकर मात्र स्तर में अन्तर है। जो केन्द्र और राज्य की प्रशासकीय व्यवस्था में अन्तर के कारण होता है। राज्यों में राज्यपाल कार्यकारिणी का प्रधान होता है, और कार्यकारिणी की निर्णय लेने वाली संस्था राज्य विधान मण्डल होती है। जो सभी राज्यों में समान नहीं है। यथा-कुछ राज्यों में दोनों सदनें हैं लेकिन कुछ में मात्र विधान सभा ही, अन्तर का एक कारण और है कि राज्यों के विषय केन्द्र से कुछ अलग होते हैं।

हमारे यहाँ बजट सत्र एक अप्रैल से आरम्भ होकर 31 मार्च तक चलता है लेकिन बजट की तैयारी सितम्बर व अक्टूबर माह से ही आरम्भ हो जाती है, इसी समय से ही भारत के समस्त विभागों की इकाइयाँ अपने-अपने विभागों के व्ययों और प्राप्तियों के आंकड़े तैयार करने लग जाती हैं। ये आँकड़े सम्बन्धित विभागों के मंत्रालय को भेजे जाते हैं जहाँ परीक्षण की प्रक्रिया से गुजरने के उपरान्त इन्हें स्वीकृति प्रदान की जाती है और वित्त मंत्रालय को सौंप दिया जाता है। इस मंत्रालय में भी इन्हें सूक्ष्म परीक्षण की प्रक्रिया से गुजरना होता है जो अग्रांकित आधारों पर होता है।

1—व्यय होने वाली सेवाओं का सापेक्षिक महत्व।

2—व्यय जिस योजना से सम्बन्धित है उसकी स्थिति क्या है?

3—उपलब्ध सीमित साधनों को ध्यान में रखते हुये मित व्ययितापूर्वक व्यय में क्या यह आ सकता है?

4—सामान्यतया दूरदर्शिता का प्रयोग करते हुए व्यय होने वाले मद की उपयोगिता का आंकलन किया जाता है।

सामान्यतया पहले से चले आ रहे व्ययों को इस प्रक्रिया से मुक्ति मिल जाती है किन्तु नये व्ययों को गम्भीरता से इसका सामना करना पड़ता है। अतः सभी विभाग अपने व्ययों की सूची को प्राथमिकता के आधार पर वित्त मंत्रालय को भेजते हैं जिससे सीमित साधनों के कारण यदि कुछ व्ययों को काटना भी पड़े तो महत्वपूर्ण व्यय समाप्त न हो सकें। यहाँ वित्त मंत्रालय की स्वीकृति के उपरान्त व्ययों की सूचियों को बजट में शामिल कर लिया जाता है। संसद के बजट का अनुमान लोक सभा और राज्य सभा के सचिवालय तैयार करके वित्त मंत्रालय को भेज देते हैं, जहाँ इसे बजट में शामिल कर लिया जाता है।

हमारे यहाँ रेल विभाग सबसे बड़ा है। अतः इसका एक अपना अलग बजट होता है जो सामान्य बजट से कुछ समय पूर्व (लगभग दो सप्ताह) रेल मंत्री द्वारा संसद में प्रस्तुत किया जाता है। इस बजट के साथ राजस्व एवं व्यय, रेल मंत्री का भाषण, रेल बजट पर व्याख्यात्मक ज्ञापन, अनुदान की माँगे, भारतीय रेल की दुर्घटनायें, वार्षिक प्रतिवेदन, यात्री किराया व भाड़ा दर में समायोजन करने के प्रस्तावों की व्याख्या करने वाला प्रपत्र, सम्पूर्ण बजट सत्र के लिए कार्य, मशीन, चल स्टाक कार्यक्रम आदि की सूचना देने वाले प्रपत्र उपलब्ध रहते हैं।

वर्तमान युग में रक्षा की विशिष्ट स्थिति के कारण सुरक्षा बजट अन्य विभागों के बजटों से कुछ भिन्न और महत्वपूर्ण स्थान रखता है। रक्षा वित्त सम्बन्धी सभी नियंत्रण रक्षा मंत्रालय के वित्त अनुभाग से होता है। इस अनुभाग से संस्तुति के उपरान्त रक्षा बजट वित्त मंत्रालय को सौंप दिया जाता है जो इसे सामान्यतया अनुदान माँग के रूप में बिना किसी टीका टिप्पणी के सम्मलित कर लेता है।

इस प्रकार सभी विभागों की प्राप्ति और व्यय अनुमान की प्रक्रिया से गुजरकर एक प्रारूप तैयार करता है जो बजट की संज्ञा पाता है। यहाँ प्राप्ति का अनुमान एक बार वित्त मंत्रालय का राजस्व अनुभाग भी करता है। जो प्रथमतः वर्तमान कराधान पर तदुपरान्त नवीन कर लगाने के उपरान्त प्राप्त होने वाले राजस्व की गणना करता है। यह अनुभाग इस बजट वर्ष में लोक ऋण से प्राप्त होने वाली प्राप्तियों का भी अनुमान लगाता है। बजट का प्रारूप तैयार हो जाने के उपरान्त फरवरी माह के अन्तिम दिनों में यह संसद में राष्ट्रपति की स्वीकृति के उपरान्त वित्त मंत्री द्वारा प्रस्तुत करने के लिए लाया जाता है जिसे वित्त मंत्री लोक सभा में अपने बजट अभिभाषण के साथ और राज्य सभा में उपवित्त मंत्री या राज्य मंत्री, वित्त मंत्री के अभिभाषण की प्रति के साथ प्रस्तुत करता है। इसी माह के आरम्भ में वित्त मंत्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को देश के आर्थिक सर्वेक्षण की एक तस्वीर राज्य व लोक सभा को देनी पड़ती है जिसके आधार पर ',Economic Survey'' नामक पुस्तिका भी निकलती है। बजट के साथ जो वित्त मंत्री का भाषण होता है वह दो भागों में होता है। पहले भाग में भारत का आर्थिक सर्वेक्षण होता है और दूसरे भाग में कराधान प्रस्ताव होता है। जबकि विधि सम्मति रूप से बिना कानून पास किये और राष्ट्रपति या राज्यपाल की अनुमति के बिना न तो कोई कर लगाया जा सकता है और न ही कोई व्यय ही स्वीकृत हो सकता है।

बजट के साथ भाषण के दोनों भागों के अतिरिक्त बजट एक दृष्टि में शीर्षक के अन्तर्गत बजट की वाह्य रूप रेखा होती है। और सभी मंत्रालयों को दिये गये अनुदानों का विवरण, वित्त विधेयक, योजना बजट सम्बन्ध दर्शाने के प्रपत्र, बजट दस्तावेज की कुन्जी आदि कागज रहते हैं।

इस लम्बी प्रक्रिया और ढेर सारे प्रपत्रों के उपरान्त बजट संसद के दोनों सदनों में आता है। प्रस्तुत करने के एक सप्ताह बाद लोक सभा के अध्यक्ष द्वारा निर्धारित अवधि में अनुदान माँगों पर सामान्य विचार विमर्श होता है। जिसमें कटौती प्रस्ताव रखे जाते हैं। इस विचार विमर्श को अध्यक्ष सदनों के नियमों के अनुसार नियमित करता है। यूं तो विचार-विमर्श का अधिकार राज्य सभा को लोकसभा के समान ही है परन्तु वह बजट के किसी विषय विशेष पर असहमति के उपरान्त भी मात्र उसे चौदह दिन तक ही रोक सकती है या वित्त मंत्री को सुझाव दे सकती है जिसे वह स्वीकार करे या नहीं यह वित्त मंत्री पर निर्भर करता है। चौदह दिनों के उपरांत भी रुके रहने पर यह स्वीकार मान लिया जाता है। यदि लोक सभा में बजट पर विचार विमर्श अध्यक्ष द्वारा निर्धारित समय में नहीं हो पाता है तो अध्यक्ष अन्तिम समय में शेष सभी माँगों पर बिना विचार-विमर्श के मतदान करवा लेता है जिसे "गिलोटीन" कहते हैं। इस विचार-विमर्श में तीन तरह के कटौती प्रस्ताव रखे जाते हैं :—

1—नीति सहमति कटौती-प्रस्ताव
2—मितव्ययिता सम्बन्धी कटौती प्रस्ताव
3—सांकेतिक कटौती प्रस्ताव

भारत में प्रायः तीसरे प्रकार के ही कटौती प्रस्ताव रखे गये हैं। इस विधेयक को विनियोजन विधेयक (Appropriation Bill) कहते हैं।

विनियोजन विधेयक के पास हो जाने के उपरान्त लोक सभा में वित्त विधेयक आता है। । इस पर विनियोजन विधेयक की अपेक्षा अधिक स्वतंत्रता से विचार-विमर्श की छूट होती है। इस विधेयक का सम्बन्ध करों को लगाने, हटाने, छूट देने और नियमित करने से होता है। यहाँ विचार-विमर्श के उपरान्त इस विधेयक को सदन की प्रवर समिति को सौंप दिया जाता है जो अपनी सम्मति के साथ सदन को लौटाती है और पुनः इसे भी विनियोजन विधेयक की प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है।

हमारे संविधान की धारा 114 के अन्तर्गत यह सुविधा उपलब्ध है कि यदि मुख्य बजट से प्राप्त राशि अपर्याप्त हो या किसी अप्रत्याशित कार्य हेतु धन की आवश्यकता किसी विभाग विशेष को हो तो राष्ट्रपति की सिफारिश पर वह मंत्रालय अतिरिक्त अनुदान की मांग पूरक बजट के माध्यम से कर सकता है। लेकिन इस पूरक बजट को भी वित्त विधेयक और विनियोजन विधेयक की प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है। अन्ततः सभी विभागों की निधियों को उन्हें सौंप दिया जाता है जो स्वीकृत व्ययों हेतु उनका उपयोग करती हैं। यदि किसी विभाग विशेष की कुछ राशि व्यय नहीं हो पाती है तो 31 मार्च को वह व्ययगत समझी जाती है। और पुनः उसको व्यय करने का अधिकार लेना पड़ता है।

बजट के बन जाने के उपरान्त इसके क्रियान्वयन का दायित्व भारत सरकार के वित्त मन्त्रालय पर आता है जिसमें यह मन्त्रालय अन्य मंत्रालयों एवं प्रशासकीय इकाइयों के माध्यम से बजट के क्रियान्वयन सम्बन्धी सूचनायें एकत्रित करता रहता है जो प्रायः मासिक होती हैं अन्यथा बजट के क्रियान्वयन की उपलब्धि की समीक्षा क्रमशः सितम्बर, दिसम्बर तथा जनवरी में होती है। इसी समय पिछली उपलब्धियों के आधार पर बजट के आंकड़ों को संशोधित किया जाता है। यहाँ यह भी अनुमान लग जाता है कि संसद के सामने पूरक विधेयक रखना पड़ेगा या नहीं। वास्तव में बजट को कार्य रूप देने का दायित्व कार्यपालिका का है किन्तु यदि संसद का बजट के क्रियान्वयन पर नियंत्रण न रहे तो व्यय का अनुमोदन जो संसद से लेना पड़ता है वह व्यर्थ हो जाएगा। कार्यपालिका एवम् संसद के समन्वय से व्यय उचित एवम् आवश्यक होता है क्योंकि अधिक वित्त एवम् कम वित्त दोनों ही वैसी ही स्थितियाँ हैं जैसे आँख का आना या जाना। इन सभी प्रक्रियाओं से गुजरने के उपरान्त "वार्षिक वैक्तिक विवरण" शब्द वास्तविक रूप में आकर योजनाबद्ध विकास के साधन, सरकार के सभी अंगों के ऊपर उत्तरदायित्व डालने के उपक्रम, सरकार में दक्षता लाने के यंत्र और प्रजातांत्रिक मूल्यों की रक्षा करने वाले प्रारूप बजट का सृजन करता है। ■ ■

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय निर्वाचन व्यवस्था : बदलते संदर्भ उभरते प्रश्न

▭ डॉ. भवानी शंकर पंचारिया

भारत एक लोकतांत्रिक गणराज्य है। इतना ही नहीं वह विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र होने का गौरव भी रखता है। लोकतांत्रिक मूल्यों के बगैर लोकतंत्र कदापि जीवित नहीं रहता। लोकतंत्र के समस्त फैसले बन्दूक की नोंक पर नहीं अपितु मतदाताओं की व्यापक सहमति अर्थात् आम राय शुमारी द्वारा ही निर्धारित होते हैं। सत्ता का हस्तान्तरण सैन्य बल के बजाय मत-पत्र द्वारा जहाँ निर्धारित होते हों—जनाकांक्षा को जहाँ सर्वोपरि तरजीह दी जाती हो और सैन्य-शक्ति जब प्रतिनिधित्व की आज्ञा में रहती हो। प्रतिनिधित्व भी वयस्क मताधिकार पर आधारित हो। किसी वर्ग विशेष, व्यक्ति विशेष तथा दल विशेष के हाथ में राज्य की बागडोर न होकर नागरिक सार्वभौमित्व की कसौटी पर निर्धारित होने की व्यवस्था ही लोकतांत्रिक गणराज्य की सही पहचान है। मतदान-कक्ष के अन्दर नागरिक जो भी निश्चय करते हैं—वही सच है। भारतीय मतदाताओं ने अभी तक जो भी निश्चय प्रथम लोकसभा से सप्तम लोकसभा के निर्वाचनों के दरम्यान दिये, वे सब उसके सही विवेक और लोक चेतना के ज्वलन्त उदाहरण कहे जा सकते हैं। जब से स्वराज्य की नीव रखी गई तभी से मतदाताओं ने सुराज्य की अभिलाषा संजोकर चुनाव रूपी पवित्र कुम्भ में अपने पावन दायित्व का सदैव निर्वहन किया। यह दीगर बात है कि राजनीतिज्ञों ने अपनी भूमिका में अनेकानेक त्रुटियाँ की। अतएव भारत में मतदाताओं की अपेक्षा प्रतिनिधियों को शिक्षित करने की अधिक आवश्यकता प्रतीत होती है।

'स्वतंत्र एवं निष्पक्ष निर्वाचन : लोकतंत्र की सच्ची कसौटी'

लोकतंत्र की परख निर्वाचनतंत्र की व्यवस्था से की जा सकती है। विश्व के अनेक समष्टिवादी (साम्यवादी) राज्यों में भी निर्वाचन होते हैं किन्तु नागरिकों को अपनी विचारधारा के अनुसार दल बनाने, प्रतिनिधित्व में प्रतिस्पर्धापूर्वक भावना से चुनाव लड़ने का अवसर नहीं दिया जाता तिस पर भी वे दावा करते हैं कि हमारे यहाँ का लोकतंत्र शत प्रतिशत मत से विजय प्राप्त कर सर्व-सम्मति से चुना जाता है। जहाँ तक साम्यवादी निर्वाचन प्रणाली का प्रश्न है—वहाँ एकल दल प्रणाली होने से केवल कम्युनिस्ट पार्टी ही चुनाव मैदान में होती है और अनिवार्य मतदान होने से सभी मत उसी की झोली में सरलता से पहुँच जाते हैं। अस्तु इसे हम निर्वाचन न कहकर निर्वाचन का मखौल ही मान सकते हैं। निर्वाचन स्वतंत्र और निष्पक्ष हों तभी निर्वाचन की सार्थकता हो सकती है। उसकी निष्पक्षता और स्वतंत्रता के औचित्य को अनुभव भी किया जाना चाहिए। सच बात तो यह है कि प्रतिनिधि लोकतंत्र हेतु वयस्क मताधिकार एक आवश्यक शर्त है। वयस्क मताधिकार के सफल और निष्पक्ष प्रयोग के लिए भी कतिपय आवश्यक परिस्थितियाँ मसलन-भाषण, लेखन, प्रेस और अभिव्यक्ति की पूर्ण आजादी आवश्यक होती है। इनकी सार्थकता के लिये भी नागरिकों को कतिपय प्रक्रियात्मक स्वतंत्रताएं भी उपलब्ध कराना जरूरी है। जैसे नागरिकों को एकत्र होने, दल बनाने, सभा करने, नीति-निर्माण पर अपने विचार व्यक्त करने के समान अवसर हो। जहाँ तक लोकतांत्रिक मूल्यों, उसके आधारभूत सिद्धांतों और प्रक्रियात्मक स्वतंत्रताओं का प्रश्न है, हमारे संविधान निर्माताओं ने अपनी विलक्षण सूझ-बूझ एवं राजनीतिक पाण्डित्य का परिचय दिया है। भारत संघ-राज्यान्तर्गत 22 राज्यों, 9 केन्द्र प्रशासित क्षेत्रों तथा

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वायत्त संस्थानों में सभी सार्वजनिक पद स्वतन्त्र और निष्पक्ष निर्वाचनों द्वारा जन सहमति द्वारा निर्धारित होते हैं। हमारी निर्वाचन व्यवस्था उदारवादी मान्यताओं का अनुसरण करती है।

निर्वाचन व्यवस्था के महान आदर्श :

प्रतिनिधि-लोकतंत्र दो आदर्शों पर चलता है-एक, सीमित सरकार की परम्परा, और द्वितीय-राजनीतिक उत्तरदायित्व का सिद्धांत। सीमित सरकार का आशय है—राजनीतिक शक्ति को नियन्त्रित करने की वह विधि जो अपने अधिकारों के सीमित दायरे में रह कर कार्य करें। संविधान का पालन, विधि का शासन, शक्ति-विभाजन, शक्ति का विकेन्द्रीकरण, मौलिक अधिकारों और अनेक स्वतन्त्रताओं के प्रावधान तथा स्वतंत्र व निष्पक्ष न्यायपालिका का समायोजन। सीमित सरकार को संचालित करने में राजनीतिक उत्तरदायित्व की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। बिना पवित्र निर्वाचन प्रणाली के राजनीतिक उत्तरदायित्व की कल्पना करना वैसे ही निरर्थक है जैसे पानी मथ कर मक्खन-पाना। राजनीतिक उत्तरदायित्व की आवश्यक शर्तें हैं—निश्चित अवधि में चुनाव, राजनीतिक दलों का अस्तित्व, समाचार पत्रों की स्वतंत्रता, लोकमत की प्रतिष्ठा और सम्मान। अब यहाँ अपनी निर्वाचन व्यवस्था के महान आदर्शों को मद्दे नजर रखते हुए उसका आकलन करना उचित होगा।

भारतीय निर्वाचन व्यवस्था का प्रथम आदर्श है—एक स्वतंत्र तथा निष्पक्ष निर्वाचन आयोग की स्थापना। भारत में एकल सदस्यीय निर्वाचन आयोग की स्थापना की गई है। प्रत्येक राज्य में भी पृथक-पृथक निर्वाचन आयोग की व्यवस्था है जिसके मार्गदर्शन में हर पांचवें वर्ष निर्वाचन कराया जाता है। आयोग की स्वतंत्रता के लिये उसे व्यापक अधिकार सौंपे गये हैं। निर्वाचन के क्षेत्र में उसकी शक्ति सर्वोपरि रखी गई है। वह मतदान की व्यवस्था करता है। मतदाता सूची का निर्माण भी उसी की अध्यक्षता में सम्पन्न होता है। वह निर्वाचन के दौरान अपने पर्यवेक्षक दल निर्वाचन क्षेत्रों में भेजकर निर्वाचन की पवित्रता हेतु हर संभव कोशिश करता है। मतदान से सम्बन्धित गड़बड़ियों की वह सुनवाई कर उचित समाधान भी प्रस्तुत करता है। पिछले वर्ष में गढ़वाल के चुनावी मैदान में उत्पन्न धांधली में उसने अपनी निष्पक्ष भूमिका का परिचय दिया था। निर्वाचन आयोग ही शासकीय सहकर्मियों की सहायता से निर्वाचन अधिकारी, पीठासीन अधिकारी, मतदान अधिकारी, मतदान केन्द्रों, मतपत्रों का प्रकाशन, मतदाता सूची का निर्माण कार्य सम्पन्न करता है जिससे निष्पक्ष निर्वाचन संभव हो सके।

हमारी निर्वाचन व्यवस्था का द्वितीय आदर्श है—व्यापक जनाधार वाला वयस्क मताधिकार। भारतीय संविधान में व्यापक जन-प्रतिनिधित्व के आदर्श को मान्यता देते हुए क्रान्तिकारी परिवर्तन का शुभारम्भ किया है। 21 वर्षीय प्रत्येक भारतीय नागरिक बिना किसी भेदभाव के 'एक व्यक्ति एक मत' के सिद्धांत पर राजनीतिक सहभागिता का प्रयोग कर सकता है। वयस्क मताधिकार के मार्ग में केवल विकृत मस्तिष्क, आर्थिक दीवालियापन, शारीरिक असमर्थता, गंभीर कुष्ट रोग, विधि-विहित कतिपय गंभीर अपराध में मिली सजा को छोड़कर सभी नागरिकों को मतदान का अधिकार है। जबकि अनेक राष्ट्रों में वर्षों तक ऐसा अधिकार नहीं दिया था। लोकतंत्री देश स्विट्जरलैण्ड में अनेक वर्षों तक स्त्रियों को मताधिकार से वंचित रखा गया था, सन् 1970 के पूर्व वहाँ महिलाओं को मताधिकार नहीं सौंपा गया था। राजनीति का एक कुशल खिलाड़ी-प्रधानमंत्री और एक सामान्य फल बेचने वाले को केवल समान एक ही मत देने का अधिकार सौंपकर हर नागरिक को समान सार्वभौम निरुपति किया गया है। जबकि कहीं पर विद्या, धन अथवा अन्य योग्यता के आधार पर किसी को एक किसी को अनेक मत देने का अधिकार देखने को मिलता है। जैसा कि बेल्जियम में आज भी 25 वर्ष की आयु एक साल कम्यून में निवास पर एक मत, 35 वर्ष की आयु एक वैध सन्तान और 5 फैन्क करदाता को दो मत और यहाँ तीन-तीन मत एक ही व्यक्ति को देने का अधिकार देकर सार्वभौमत्व का विषम प्रयोग देखने को मिलता है। अस्तु एक व्यापक जनाधार वाला वयस्क मताधिकार और एक मत अथवा समान मताधिकार का प्रयोग लोकतंत्र के अधिक निकट कहा जा सकता है।

भारतीय निर्वाचन व्यवस्था का तृतीय आदर्श है—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मतदान प्रक्रिया में गोपनीयता। इससे किसी भी प्रकार के बाह्य हस्तक्षेप और दबाव की स्थिति में मतदाता को किसी परेशानी का सामना नहीं करना पड़ता है। किस मतदाता ने किस प्रतिनिधि को मत दिया यह जानकारी लेना अपराध है। यदि कोई मतदाता किसी को दिखला कर मत की गोपनीयता को भंग करता है तो वह निर्वाचन प्रक्रिया का अतिक्रमण माना जाता है और निर्वाचन अधिकारी ऐसे मतदान को अवैध घोषित कर मतदान से रोक सकता है।

हमारी निर्वाचन व्यवस्था का का चतुर्थ आदर्श है—पिछड़े और कमजोर वर्ग के लिये आरक्षित प्रणाली। संविधान में प्रारम्भ से ही वयस्क मताधिकार के अंतर्गत पिछड़े और कमजोर वर्ग के संरक्षण हेतु जनसंख्या के अनुपात में आरक्षित सीटों का प्रावधान भी किया गया है। इससे यह लाभ है कि बहुमत द्वारा अल्पमतीय नागरिकों का शोषण न किया जा सके। पुनश्च सामान्य निर्वाचन क्षेत्रों में पिछड़े और कमजोर वर्ग को निर्वाचन हेतु अधिकृत किया गया है पर आरक्षित क्षेत्रों में सामान्य वर्गीय लोगों का वैसे ही प्रवेश निषेध है जैसे बालक विद्यालयों-महाविद्यालयों में बालिकाओं के प्रवेश की अनुमति है किन्तु कन्या विद्यालय-महाविद्यालयों में छात्रों के प्रवेश पर पाबन्दी की गयी है। कमजोर और पिछड़े वर्ग के आरक्षित क्षेत्रों में उन्हें अन्य सुविधाएं भी दी जाती है, जैसे—जमानती प्रतिभूति राशि में रियायत और उनके लिये स्वतन्त्र मतदान केन्द्र।

भारतीय निर्वाचन व्यवस्था की पंचम विलक्षणता है उसका सरलीकरण। आम मतदाता जिन सार्वजनिक पदों का निर्वाचन करता है वहाँ प्रत्यक्ष निर्वाचन की प्रणाली अपनाई गई है और एक पद हेतु अनेक प्रत्याशी प्रतियोगी हो सकते हैं। दलीय प्रतिनिधि के साथ-साथ निर्दलीय रूप में भी प्रतिनिधि का नामांकन पत्र दाखिल किया जा सकता है किन्तु उस क्षेत्र के सर्वाधिक मत प्राप्तकर्त्ता को निर्वाचित घोषित किया जाता है। केवल उन निर्वाचन क्षेत्रों में जहाँ अप्रत्यक्ष निर्वाचन की व्यवस्था है—वहाँ इससे भिन्न आनुपातिक पद्धति और एकल संक्रमणीय मत का प्रयोग भी प्रचलित है। जैसे राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, राज्यसभा तथा विधान-परिषदों के निर्वाचन में आनुपातिक प्रतिनिधित्व वाली जटिल प्रक्रिया का समावेश किया गया है। जिससे बहुमतीय और अल्पमतीय मतदाताओं को अपने-अपने क्षेत्र में अवसर मिल जाया करता है। प्रारम्भ में हर प्रतिनिधि की अलग-अलग मतपेटियाँ हुआ करती थी और वे बन्द कमरे में अपने चहेते उम्मीदवार की मतपेटी में अपना मत-पत्र डाल दिया करता था, किन्तु ज्यों ही इसके दोष ज्ञात हुए तब से सभी मत-पत्र एक ही मतपेटी में अधिकारी के समक्ष डलवाये जाते हैं। इससे मतदान केन्द्र में दो-तीन मतपेटियों का ही अधिक से अधिक उपयोग होता है। पूर्व में मत-पत्रों की बिक्री भी होने लगी क्योंकि एकान्त में मतपेटी में मत डालना या नहीं डालना, यह मतदाताओं की ईमानदारी पर निर्भर था किन्तु नवीन व्यवस्था में जिसे मत-पत्र दिया गया है, उसे अनिवार्य रूप से खुले में अधिकारी के पास रखी मतपेटी में डालना अनिवार्य है अन्यथा मत-पत्र चोरी के अपराध में उसे दण्डित किया जा सकता है।

भारतीय निर्वाचन प्रक्रिया की षष्ठम् विशेषता है—क्षेत्रीय प्रतिनिधित्व। सम्पूर्ण राज्य को जनसंख्या की गणना के आधार पर समान भागों में विभक्त किया जाता है। जैसे कि लोक सभा हेतु 22 राज्यों को 525 निर्वाचन क्षेत्रों में और नौ केन्द्र प्रशासित क्षेत्रों को कुल 17 निर्वाचन क्षेत्रों में, कुल 542 निर्वाचन क्षेत्रों में वर्गीकृत किया गया है। इसमें एकल सदस्यीय निर्वाचन क्षेत्रों की व्यवस्था की जाती है। एक निर्वाचन क्षेत्र से अनेक प्रत्याशी हो सकते हैं, किन्तु उस क्षेत्र का प्रतिनिधित्व उस प्रत्याशी के पक्ष में माना जाता है जो उस क्षेत्र के सर्वाधिक मत प्राप्त करता है। प्रतिनिधि क्षेत्र के मतदाताओं प्रति के उत्तरदायी बना रहता है और यदि उस क्षेत्र की अवहेलना करता है। तो अगले निर्वाचन में उसका पत्ता मतदाता काट कर उसको दण्डित कर सकता है। इस प्रकार जनता और प्रतिनिधियों के मध्य सम्पर्क बना रहता है और राजनीतिक उत्तरदायी का सिद्धान्त लागू हो जाता है। जिन सदनों का निर्वाचन अप्रत्यक्ष पद्धति से किया जाता है वहा बहुसदस्यीय निर्वाचन क्षेत्रों की व्यवस्था की जाती है और आनुपातिक प्रतिनिधित्व की एकल संक्रमणीय मतदान प्रथा को लागू कर एक निश्चित कोटा प्राप्त प्रत्याशी को ही निर्वाचित घोषित किया जाता हैं। इस प्रकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारी निर्वाचन प्रणाली में आम मतदाताओं के लिये सरल प्रणाली को और विशिष्ट अर्थात् अप्रत्यक्ष निर्वाचन में जटिलता को भी अंगीकृत किया गया है।

'निर्वाचन व्यवस्था : बदलते सन्दर्भ उभरते कतिपय प्रश्न' :

संविधान निर्माताओं और राजनीतिक शिल्पकारों ने यद्यपि हमारे लिये एक ऐसी निर्वाचन प्रथा की व्यवस्था की जो अधिक से अधिक सरल-आम मतदाताओं के लिये सुगमतापूर्वक अपनाई जा सके किन्तु उन्होंने यह दावा कभी नहीं किया की यह प्रणाली ही सर्वोत्तम है अर्थात् इसमें एक भी दोष नहीं हैं। सैद्धान्तिक दृष्टि से निर्वाचन की कोई भी पद्धति कितनी भी आदर्श क्यों न हो किन्तु जब उसको व्यवहारिक क्षेत्र में अपनाया जाता है तो अनेक दोष सामने उभरने लगते हैं। आकाश से कितना निर्मल जल बरसता है किन्तु भूमि के संसर्ग में आते ही वह मटमैला हो जाता है। इसी प्रकार हमारी निर्वाचन व्यवस्था भी इन सन्दर्भों में कुछ दोष लिये हुए प्रतीत होने लगी है और नवीन सन्दर्भों में कुछ नये सिरे से विचार करना जरूरी हैं। भारत संघराज्य का एक अंग असम विगत चार वर्षों से अशान्त और एक राष्ट्रीय संकट के घेरे में आबद्ध है। असम, सप्तम लोकसभा निर्वाचन (दिसम्बर 1980) से चुनाव बहिष्कार का अभियान चलाये हुए है। असम की कुल 14 सीटों में से केवल दो सीटों पर ही चुनाव सम्पन्न हो सके और 12 स्थान अभी तक रिक्त पड़े हुए हैं। विदेशी नागरिकों के असम में प्रवेश तथा निर्वाचक नामावली में प्रविष्टि को लेकर मतदाता आक्रोश की राजनीति के शिकार हो चुके हैं। अनेक प्रयत्न, वार्ताएं, गोष्ठियाँ नागरिकता के प्रश्न को लेकर हुई, किन्तु वे सब अभी तक निष्फल सिद्ध हो रही है। निर्वाचन व्यवस्था का एक हिस्सा निर्वाचक नामावली का निर्माण है किन्तु जाली नागरिकों की प्रविष्टि के विरोध में निर्वाचन का बहिष्कार जारी है। अभी हाल ही में राष्ट्रपति पद के एक प्रत्याशी श्री हीरेन मुखर्जी का नामांकन पत्र इस आधार पर निरस्त कर दिया गया कि उनका नाम कहीं भी मतदाता सूची में दर्ज नहीं है जबकि वे प्रारम्भ से ही संसद सदस्य रहे हैं और आज भी संसद की सदस्यता उन्हें प्राप्त है। क्या यह निर्वाचन व्यवस्था के प्राथमिक चरण-निर्वाचन नामावली के निर्माण-में असावधानी या जानबूझकर तोड़-फोड़ नहीं? इतना ही नहीं निर्वाचक नामावली का शिकार निर्वाचन आयोग के सदस्य, संसद सदस्य सभी होते रहे है। चुनाव करवाने के लिये निर्वाचक नामावली का निरन्तर निर्माण किया जाना अपेक्षित होता है किन्तु अभी तक इस प्रश्न का निराकरण हमारी निर्वाचन व्यवस्था ने नहीं दिया है जबकि ब्रिटेन में केवल 15 दिनों की सूचना पर कभी भी निर्वाचन कराये जा सकते हैं।

निर्वाचन प्रणाली में सुधार हेतु अनेक वक्तव्य, आलेख, गोलमेज और सभी दलों की बैठकें आयोजित की गई हैं जिनमें अनेक निर्णय लिये गये हैं और उसके अनुसार कुछ सुधार भी किये गये हैं किन्तु फिर भी आज भी कुछ ऐसे भयंकर दोष दूर नहीं किये जा सके है जो हमारे जनतंत्र के आधार को ही समाप्त करने के लिये चुनौती दे रहे हैं। मसलन निर्वाचन व्यवस्था का अत्यधिक खर्चीला होना, काले धन का दुष्प्रभाव, मतदाता नामावली में भयंकर भूलें हो जाना, निर्वाचन में शासनतंत्र का अनुचित प्रयोग, दोहरे मत-पत्र के प्रकाशन की घटनाएं, निर्वाचन के दिनों में विभिन्न दलों में मारपीट की घटनाएं, प्रतिनिधित्व के चरित्रगत दोष इत्यादि प्रश्न चिन्ह हमारी निर्वाचन व्यवस्था के दोषों के कुछ ज्वलन्त उदाहरण हैं। मतदाताओं को आज भी पेशेवर राजनीतिज्ञों के एजेन्ट मतदान की रात्रि को सोने नहीं देते जबकि मतदान के 48 घन्टे पूर्व चुनाव प्रचार पर बन्दिश का प्रावधान है। अनेक निर्वाचन क्षेत्रों पर किसी राजनीतिक दल द्वारा कब्जा करना, मतदाताओं को रिश्वत देने, सुरापान कराने, डराने-धमकाने, भविष्य में देख-लेने आदि धमकी भरे व्यवहार के किस्से समाचार-पत्रों में पढ़ने को मिलते रहते हैं। इन व्यवहारों के परिप्रेक्ष्य में यह कहा जा सकता है कि मतदान की रात्रि प्रायः कुछ पिछड़े और कमजोर वर्ग के लोगों के लिये कत्ल की रात्रि हुआ करती है।

निर्वाचन-व्यवस्था एक मनोवैज्ञानिक युद्ध :

निर्वाचन व्यवस्था को हम मनोवैज्ञानिक युद्ध की संज्ञा दे सकते हैं। युद्ध और प्रेम में जिस प्रकार सब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ जायज माना जाता है उसी प्रकार निर्वाचन के महाभियान में भी सब व्यवहारों को जायज माना जाता है भले ही वे घोर नाजायज ही क्यों न हों। निर्वाचन प्रकिया में साध्य की प्राप्ति में साधन की पवित्रता और शुचिता पर अब कोई भी ध्यान नहीं देता। हरेक दल भी जब दलीय प्रत्याशी का चयन करता है तो वह योग्य, ईमानदार, सच्चरित्र उम्मीदवार के बजाय उन उम्मीदवारों को तरजीह देता हैं जो अपार धन पानी की तरह बहा सकने में समर्थ हो, कहीं धन को, कहीं जातीय तत्व को महत्व दिया जाता है। यह सोचना मूर्खता समझी जाती है कि धनतंत्र और जातीय भावना का प्रसार जनतंत्र के आदर्श को संकीर्ण और दूषित बनायेगा। इस प्रकार जहाँ दल लोकतंत्र को व्यावहारिक बनाते हैं वहाँ उन्हें विचारों का दलाल कहा जाता है। वे दलीय हित को सर्वोपरि मानते हुए निर्वाचन के पवित्र खेल को गंदा बना देते हैं। हर दल चाहता है कि उनके दलीय दूल्हें को भले ही वह निकम्मा भ्रष्ट और निकृष्टत्तम भी क्यों न हो मतदाता गण आंख मूंद कर उनका वरण कर ले। वे बधु पक्षीय मतदाताओं को कुछ भी सोचने-समझने और उचित-अनुचित का निर्णय करने, अपने स्वविवेक का प्रयोग करने का अधिकार नहीं देना चाहते। इस प्रकार हमारी निर्वाचन व्यवस्था को सबसे बड़ा खतरा पेशेवर उन राजनीतिज्ञों से है जो येन केन-केन-प्रकारेण जायज-नाजायज तरीके से अपना उल्लू सीधा करना चाहते हैं।

निर्वाचन व्यवस्था में दल का ही दोष हो ऐसा भी नहीं मतदाता भी अपने मत का खूब दोहन करता है। भारतीय मतदाता अपने वोट की कीमत प्रत्यक्ष वसूलना चाहता हैं। उसकी शक्ल कुछ भी हो सकती है। जो राजनीतिक दल इस मनोविज्ञान का पालन करता है, वह निर्वाचन में सफल होता हैं किन्तु जो अपने को आदर्श के लौह सिद्धान्तों से जकड़ता हैं, उसका बेड़ा गर्क हो जाता है। निर्वाचन में आश्वासनों, नारों, प्रलोभनों का असर होता है। व्यवहार कुशल राजनीतिज्ञ ठीक निर्वाचन के पूर्व शिलान्यासों का नाटक, क्षेत्रीय हित के लिये बड़े-बड़े अनुदान, कर्मचारियों के लिये मंहगाई भत्तों, नये वेतनमानों की घोषणा आदि प्रायः इन्हीं अवसरों पर करते हैं। मतदाताओं के साथ धोखा भारतीय राजनीति का एक विशेष चरित्र बना हुआ है। राजनीति का वाहन बुद्धि, विवेक नही बल्कि आचरण है और आचरण के स्रोत मानव प्रवृत्तियां, परम्पराएँ, संस्कार अनुभूतियाँ और अहमन्यताएँ होते है। प्रायः पेशेवर राजनीतिज्ञ इन बातों को मद्देनजर रखते हुए निर्वाचन की रणनीति निर्धारित करते हैं।

दबाव समूह : प्रेशर ग्रुप : अदृश्य साम्राज्य :

वर्तमान निर्वाचन प्रणाली में धन का दूषित प्रभाव लोकतंत्र के आधार को कमजोर करता जा रहा है। सक्रिय राजनीति में भाग लेने वालों को धन-सम्पन्नों की शरण ग्रहण करनी होती है। इसलिए राजनीतिज्ञों और धनिकों के मध्य एक अलिखित साजिश हो जाती है या परोक्ष रूप से नेतृत्व क्रय कर लिया जाता है। जिनके बल-बूते पर धन पानी की तरह बहाया जाता है और बाद में राजनीतिज्ञों को धनिकों को उपकृत करना होता है। राजनीति के ऊंचे-ऊंचे आदर्श केवल उपदेश बन कर रह जाते हैं और राजनीतिज्ञ स्वतंत्रता, और समानता की व्याख्या अदृश्य साम्राज्य के हित में दबाव समूह के पक्ष में करने लगते हैं।

सर्वश्रेष्ठ मानवों का राजनीति से परहेज :

प्रायः देखा गया है कि दार्शनिक, साधु-सन्त और आत्मशुद्ध लोग आत्म निरीक्षण में व्यस्त रहते हैं इसलिए शक्तिशाली और अपराधी प्रवृति के लोग संसार का संचालन करते है। बहुत थोड़े ही नैतिकता को अपना आदर्श मानने वाले लोग राजनीति में प्रवेश लेते हैं, उनके साथ भीड़ नहीं होती लिहाजा वे राजनीति में कुछ भी करने लायक नहीं रह पाते हैं।

मतदाता की मतदान में उदासीनता :

मतदाताओं की अनेक किस्में हैं। कुछ मतदाता मतदान को अपना कर्तव्य समझते हुए उसमें स्वेच्छा से भाग लेते हैं किन्तु अधिकांश मतदाता प्रतीक्षा करते हैं कि उनको मतदान हेतु वैसे ही लोग बुलावा देवे जिस तरह विवाह-शादी में निमंत्रण की प्रथा है, उन्हें घर से खुशामदें करके वाहनों में बैठाकर मतदान कक्ष तक ले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जावे। कुछ मतदाता तो उदासीन होते हैं, जिनका अपना मानना होता है-'कोउ नृप होय हमहि का हानी-चेरि छोड़ न होइहिं रानी' अतएव निर्वाचन में मतदान का प्रतिशत गिरा हुआ होता है। जो इन मतदाताओं को भेड़-बकरी की तरह घेर कर ले जाता है, वह सफल हो जाता है अतः मताधिकार के प्रति उदासीनता निर्वाचन व्यवस्था का दयनीय और चिन्तनीय पहलु है। अच्छा हो मतदान को अनिवार्य घोषित कर दिया जाय।

निर्वाचन व्यवस्था में सुधार हेतु कतिपय सुझाव :

अभी तक निर्वाचन व्यवस्था के सुधार हेतु अनेक समितियां बैठ चुकी है जिनमें गैर कम्युनिस्ट दलों की तारकुण्डे समिति, चुनाव सुधार के मोहन धारिया के 11 सूत्रीय कार्यक्रम और भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के चुनाव सुधार प्रमुख हैं। उपर्युक्त चुनाव सुधारों में से बहुत कुछ सुधार तो अपनाये भी जा चुके हैं फिर भी अभी बहुत कुछ सुधार अपेक्षित हैं। हमारी दृष्टि में अग्रांकित सुधार निर्वाचन व्यवस्था में लाभदायी सिद्ध होंगे :—

सर्वप्रथम—निर्वाचक नामावली के निर्माण में अनेक गंभीर त्रुटियां देखने को मिलती है। चूंकि निर्वाचक नामावली मताधिकार और प्रतिनिधित्व के अधिकार से सम्बद्ध है अतएव निर्वाचक नामावली के निर्माण में ऐसी पद्धति अपनाई जाये कि वयस्क मताधिकार की आयु प्राप्त प्रत्येक व्यक्ति का पंजीयन हमेशा होता रहे। जिस प्रकार राशनकार्ड की व्यवस्था की गई है उसी तरह निर्वाचक का परिचय पत्र बनाकर उसका नाम पंजीकृत कर दिया जाये। वयस्क मताधिकार की आयु भी अब 21 वर्ष की जगह 18 वर्ष कर दी जाये। विज्ञान की उन्नति ने मानव मस्तिष्क को पूर्व की अपेक्षा अब अधिक प्रौढ़ बना दिया है।

द्वितीय-मतदान को संवैधानिक दृष्टि से अनिवार्य घोषित कर दिया जाय। यदि कोई मतदाता बिना किसी उचित कारण के मतदान में हिस्सा नहीं लेता है तो उसे नागरिक कर्तव्य की अवहेलना मानकर दण्ड योग्य माना जाय।

तृतीय—चुनाव आयोग में त्रिसदस्यीय मनोनयन की व्यवस्था की जावे। राष्ट्रपति द्वारा भारत के मुख्य न्यायाधीश, प्रधानमंत्री और प्रतिपक्ष के नेता या संसद के सबसे बड़े दल के नेता की सहमति से त्रिसदस्यीय मनोनयन किया जावे। अवकाश प्राप्त कर्मचारी को अयोग्य माना जावे।

चतुर्थ—निर्वाचन क्षेत्रों के परिसीमन में प्रायः सत्तारूढ़ दल अपने समर्थकों के हिसाब से जोड़-तोड़ या तोड़-फोड़ करता है अस्तु निर्वाचन क्षेत्र के परिसीमन का कार्य एक स्वतंत्र और निष्पक्ष गठित आयोग से कराया जाना चाहिए।

पंचम्—चुनाव खर्च को बढ़ाने के हर संभव प्रयास किये जावे। चुनाव में विदेशी धन के प्रयोग के प्रमाण तथा चुनावी कोष के अवैध साधनों को निर्वाचन अवैध घोषित करने का कारण माना जावे।

षष्टम्—मतदान में विलम्ब का एक कारण यह देखा गया है कि मतदान पार्टी में मतदान अधिकारी क्रमांक एक पर कार्य भार अधिक होने से अनावश्यक विलम्ब होता है अतः एक अतिरिक्त व्यक्ति उसकी सहायता हेतु मतदान पार्टी में जोड़ा जावे।

सप्तम्—निर्वाचन व्यवस्था में खर्च की समस्या को हल करने के लिये मान्यता प्राप्त प्रमुख दलों को वर्तमान में प्राप्त सुविधाओं को व्यापक बनाया जावे। उन्हें 12-12 निर्वाचक नामावली, प्रत्येक मतदाता को निःशुल्क एक-एक कार्ड-जिसमें वे अपना चुनाव चिन्ह, मतदाता क्रमांक, दिनांक, मतदान केन्द्र आदि की जानकारी भेज सके दिया जाय।

अष्टम्—प्रत्येक संसद सदस्य तथा विधायक निर्वाचनोपरान्त अनिवार्य रूप से अपनी सम्पत्ति की घोषणा कर चुनावी खर्च का शुद्ध हिसाब प्रस्तुत करे।

नवम्—दलों और उम्मीदवारों द्वारा खर्च की गई रकम को उम्मीदवारों द्वारा खर्च की गई रकम में शामिल किया जाना चाहिए।

दशम्—ऐसी परम्परा विकसित की जावे कि संसद तथा विधान सभा के भंग करने की घोषणा के समय से अगले चुनाव तक तत्कालीन सरकार काम चलाऊ सरकार के रूप में कार्य करे। चुनाव की घोषणा के बाद कार्मिक वर्ग के स्थानान्तरणों पर पूर्ण प्रतिबन्ध होना चाहिए।

(शेष पृष्ठ 35 पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रस्तुति ■ देवेन्द्र कुमार राय*

अकाली आन्दोलन : ऐतिहासिक सन्दर्भ

एक आधुनिक राष्ट्र के रूप में भारतीय गणतन्त्र को अपनी 33-वर्षीय विकास-यात्रा में जिन विरोधाभासी तत्वों को समायोजित करना पड़ा है, उनमें वर्तमान अकाली आन्दोलन निस्संदेह गम्भीरतम है जिसके विश्लेषण और समाधान के लिए व्यापक दृष्टि-बोध का विकास अनिवार्य है। अकाली आन्दोलन अपनी अतिवादिता और लम्बे जीवन के कारण विस्फोटक प्रकृति ग्रहण कर चुका है जिसको यदि ढंग से शीघ्रातिशीघ्र सुलझा नहीं लिया गया तो अन्य खतरों के अलावा शृंखला-प्रतिक्रिया से भी जूझना पड़ेगा जिसकी परिधि में अन्य राज्य और सम्प्रदाय भी सिमट जायेंगे। अकाली आन्दोलन को इस सीमा तक खींच ले आने में राजनीतिक क्षुद्रवादिता और शक्ति-संतुलन के प्रयास के अतिरिक्त ऐतिहासिक कारकों की भी अहम् भूमिका है जिसे नज़रअन्दाज़ नहीं किया जा सकता।

वर्तमान शताब्दी के द्वितीय दशक के आसपास उद्भूत अकाली आन्दोलन मूलत गुरुद्वारों के प्रबन्धतंत्र और कार्य प्रणाली के सुधार से जुड़ा था और 1920-25 की अवधि में एक शक्ति के रूप में मान्यता प्राप्त कर चुका था। सिखों के पूजा-स्थलों की स्वतंत्रता और शुद्धि के उदात्त आदर्शों से परिचालित अकाली आन्दोलन का तत्कालीन राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन पर व्यापक प्रभाव पड़ा। मुगल काल में गुरुद्वारों की देख-रेख उदासी संप्रदाय के हिन्दुओं द्वारा की जाती थी जो सिख पंथ के प्रति आस्थावान थे। महाराजा रणजीत सिंह और अन्य श्रद्धालु व्यक्तियों द्वारा ननकाना साहब, पंजा साहब और स्वर्ण मन्दिर को मिलने वाली जागीरों ने उदासी संरक्षकों को धनी और स्वार्थी बना दिया और उन्होंने अपनी शक्ति और ऐश्वर्य के बल पर गुरुद्वारों का दुरुपयोग करना प्रारम्भ कर दिया। उदासी महन्तों को ब्रिटिश सरकार का संरक्षण भी प्राप्त था। इसके बावजूद अकालियों ने अपनी निष्ठा और बलिदान के फलस्वरूप अपने लक्ष्य को प्राप्त किया और 15 नवम्बर, 1920 को गुरुद्वारों की देख-भाल के लिए

'शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक समिति' की स्थापना हुई। तार्किक परिणति के रूप में 14 दिसम्बर, 1920 को इसके 'अकाली दल' की भी स्थापना हुई जिसका उद्देश्य गुरुद्वारों के प्रजातांत्रिक प्रबन्ध के लिए स्वयंसेवकों को प्रशिक्षित करना था।

ब्रिटिश सरकार ने सत्ता स्थानान्तरण के समय 'बाँटो और राज करो' की नीति के तहत अकाली दल

*प्रवक्ता, प्राचीन इतिहास विभाग, इलाहाबाद डिग्री कॉलेज, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस और मुस्लिम लीग के समान मान्यता प्रदान की थी और उसकी दृष्टि में महात्मा गान्धी, मुहम्मद अली जिन्ना और मास्टर तारा सिंह का समान महत्व था। यद्यपि प्रारंभ में राष्ट्रीय कर्णधारों ने भी सिख नेताओं को उचित महत्व प्रदान किया, लेकिन बाद में पंजाबी-भाषी सूबे के निर्माण के प्रश्न पर केन्द्र और अकालियों में अन्तर्विरोध पैदा होते गए। 1956 में राज्य पुनर्गठन आयोग की सिफारिशों के अनुसार भारतीय राज्यों के पुनर्सीमांकन के समय भी बम्बई की भाँति पंजाब को अविभाजित ही रखा गया। अन्ततः 1966 में भाषाई आधार पर पंजाब और हरियाणा नामक दो पृथक राज्यों का गठन किया गया। अकाली दल के नेता और मास्टर तारा सिंह के उत्तराधिकारी सन्त फतेह सिंह की अनिश्चितकालीन भूख हड़ताल के कारण प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गान्धी ने यह आश्वासन दिया था कि अगले पाँच वर्षों में चंडीगढ़ पंजाब को सौंप दिया जाएगा और उसके बदले हरियाणा को अबोहर-फाजिल्का पट्टी के 144 गाँव मिलेगें। निस्संदेह, यह एक दुःखद तथ्य है कि आज तक इस आश्वासन को वास्तविकता का जामा नहीं पहनाया गया।

पिछले कुछ वर्षों में अकाली दल की राजनीति में यदि एक ओर नवीन तत्वों का समावेश हुआ तो दूसरी ओर उसमें अकल्पनीय घटनाएं भी घटित हुई। अकाली दल ने पंजाब में जनसंघ और केन्द्र में जनता पार्टी के साथ मिल कर शासन किया तथा सत्ताच्युत होने की प्रक्रिया में वह आत्म-विघटन का शिकार भी हुआ। यदि एक ओर चौक मेहता (अमृतसर) की धार्मिक गद्दी के उत्तराधिकारी के रूप में सन्त जरनैल सिंह भिंडरवाला का उदय हुआ तो दूसरी ओर 'दल खालसा' ने 'खालिस्तान' नामक एक काल्पनिक राष्ट्र की माँग शुरू की। 'ननकाना साहब न्यास' के अध्यक्ष गंगा सिंह ढिल्लों की संदेह जनक गतिविधियाँ, विमानों का अपहरण, सिखों, निहंगों और हिन्दुओं के आपसी दंगों आदि ने मिल कर इस समस्या को और भी विकृत बना दिया। 'हिन्दुस्तान टाइम्स' के संपादक और सिख संप्रदाय के प्रतिष्ठित इतिहासकार सरदार खशवन्त सिंह द्वारा व्यक्त की गयी प्रतिक्रिया इस समस्या के मूल तत्व को उद्घाटित करती है : "1947 में किसने सोचा होगा कि एक दिन ऐसा भी आएगा, जब हिन्दू और सिख एक दूसरे के विरुद्ध लड़ेगें। इस समस्या में एक मूल कारक हमारे सभी धर्मों में रूढ़िवाद का पुनरुत्थान है।" 'खालिस्तान' की माँग और अकाली आन्दोलन से प्रत्यक्ष तौर पर कोई सम्बन्ध न होते हुए भी 'खालिस्तान' की माँग से जुड़े इतिहास को जानना आवश्यक है क्यों कि अकाली दल के नेताओं के न चाहते हुए भी उनके इर्द-गिर्द राष्ट्रविरोधी और उग्रवादी तत्वों की बहुतायत हो गयी है। 'खालिस्तान' की माँग की शुरुआत लगभग एक दशक पहले की घटनाओं में ढूंढी जा सकती है, जब पंजाब के भूतपूर्व वित्तमंत्री डॉ. जगजीत सिंह ने इंग्लैंड और संयुक्त राज्य अमेरिका की यात्रा के दौरान राष्ट्र विरोधी गतिविधियों को हवा दी और बाद में श्री बलबीर सिंह संधू को 'खालिस्तान' आन्दोलन का महासचिव तो नियुक्त किया ही, अमृतसर स्थित स्वर्ण मन्दिर में जबरदस्ती एक ट्रान्समीटर की स्थापना भी कर दी। इस संदर्भ में श्री गंगा सिंह ढिल्लों की भूमिका भी कम विवादग्रस्त नहीं रही है जिन्होंने सिखों के अन्तर्राष्ट्रीय प्रसार के आधार पर उनके लिए संयुक्त राष्ट्र संघ में 'सम्बद्ध प्रस्थिति' (एसोसिएट स्टेटस) की माँग की है। अकाली आन्दोलन के समकालीन घटना क्रम में 9 सितम्बर, 1981 को लाला जगत नारायण की हत्या और 20 सितम्बर, 1981 को चौक मेहता (अमृतसर) में इस हत्या के आरोप में सन्त जरनैल सिंह भिंडरवाला की नाटकीय गिरफ्तारी और मुक्ति भी एक महत्वपूर्ण तथ्य है।

इस समय जब केन्द्र सरकार और अकाली दल के नेताओं की बीच की समझौता वार्ता लगभग भंग हो चुकी है—श्रीमती गांधी के निजी प्रतिनिधि सरदार स्वर्ण सिंह और अकाली दल की पाँच सदस्यीय समिति (श्री हरचन्द्र सिंह लोंगोवाल, श्री प्रकाश सिंह बादल, श्री गुरुचरन सिंह तोहरा, श्री जगदेव सिंह तलवंडी और संत जरनैल सिंह भिंडरवाला) की बातचीत के महत्व को नकारा नही जा सकता। अकाली दल के नेताओं द्वारा बातचीत के रास्ते को अख्तियार करना उनके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजनीतिक समझदारी का सूचक है। इसी प्रकार श्रीमती गान्धी द्वारा 25000 अकालियों को जेल से मुक्त कराने का आदेश उनकी सद्भावना का प्रतीक है। लेकिन हर आंदोलन की भाँति अकाली आंदोलन में भी कुछ फिरकापरस्त तत्व शामिल हैं जो समस्या को सुलझाने के बजाय उलझाने में संलग्न हैं। इन तत्वों के प्रभाव के कारण नवें एशियाई खेल के आयोजन के समय दिल्ली के सरदार पटेल चौक में अकालियों ने गिरफ्तारी दी और अपेक्षाकृत सौम्य समझे जाने वाले अकाली मोर्चे के 'डिक्टेटर' श्री हरचन्द सिंह लोगोंवाल ने भूत-पूर्व सैनिक अधिकारियों से इस आन्दोलन में शामिल होने की अपील की। अकाली नेताओं द्वारा वर्तमान आंदोलन को 'धर्मयुद्ध' की संज्ञा देना और 'पंथ की जीत' तथा 'राज करेगा खालसा' जैसे नारों को उछालना भी उनके अनुदारवादी दृष्टिकोण का ही परिचायक है। इसी तरह केन्द्र सरकार द्वारा 'आन्दोलन को थकाने की नीति' भी उचित नहीं कही जा सकती। यह महज एक राजनीतिक आरोप नहीं है कि उच्चाधिकारियों को घटनाओं का पूर्वाभास नहीं हो पाता और यदि होता भी है तो उनसे सही स्तर पर निपटने का माध्यम नहीं ढूंढा जाता। संत भिंडरवाला द्वारा काँग्रेस (इ) के सिख नेताओं को 'रानी दे गुलाम' कह कर उनका उपहास करना और काँग्रेसी नेताओं द्वारा अकाली आन्दोलन की तुलना में आसन्न चुनावों को अधिक तरजीह देना समान रूप से गलत है। अकाली नेताओं द्वारा 'आनन्दपुर साहब प्रस्ताव' को उसके सम्पूर्णत्व में स्वीकार कराने की माँग और केन्द्र द्वारा बीच-बीच में बातचीत बन्द कर देना दोनों पक्षों की हठवादिता का सूचक हैं।

आनन्दपुर साहब प्रस्ताव :

अकाली आन्दोलन के वर्तमान संदर्भ में 'आनन्दपुर साहब प्रस्ताव' का विशेष महत्व है। हिमालय की शिवालिक उपत्यका में भाखड़ा नंगल तथा रोपड़ के बीच सतलज नदी के तट पर सिखों का पवित्र आनन्दपुर साहब गुरुद्वारा स्थित है। दसवें गुरु गोविन्द सिंह ने मुगल बादशाहों और पड़ोसी राजाओं से रक्षा के लिए यहाँ पर अपना गढ़ बनवाया था और यहीं पर 'पंज प्यारों' को चुन कर उन्होंने खालसा पन्थ की नींव डाली थी। यहीं पर 17 अक्टूबर, 1973 को अकाली दल की कार्य समिति ने एक प्रस्ताव पारित किया था। जिसे आगे चल कर 'आनन्दपुर साहब प्रस्ताव' की संज्ञा से अभिहित किया गया। 1972 तक पंजाब में अकाली दल और जनसंघ की संविद सरकार का शासन था, जिसके मुख्यमंत्री अकाली नेता श्री प्रकाश सिंह बादल थे। 1972 के आम चुनावों में काँग्रेस पार्टी पुनः सत्तारूढ़ हुई और ज्ञानी जैल सिंह मुख्य मंत्री नियुक्त हुए। उसी वर्ष 11 दिसम्बर को अकाली दल की कार्यसमिति ने 'काँग्रेस सरकार की पथ विरोधी कार्रवाइयों' को ध्यान में रख कर 12 सदस्यों की एक समिति बनायी जिसका लक्ष्य व्यापक नीतियाँ और कार्यक्रम निर्धारित करना था। इस समिति की पहली बैठक अमृतसर में हुई और अगली दस बैठकें चंडीगढ़ में हुई। गंभीर विचार-विमर्श के बाद इस समिति ने अपनी रपट प्रस्तुत किया, जिसे अकाली दल की कार्यसमिति ने 17 अक्टूबर, 1973 को सर्वसम्मति से श्री आनन्दपुर साहब में पारित किया। बाद में अमृतसर में आयोजित अकाली दल की सामान्य सभा में 28 अगस्त, 1977 को इस प्रस्ताव का अनुमोदन किया गया। इसका भावात्मक महत्व इस बात से भी स्पष्ट है कि इस प्रस्ताव को 28 और 29 अक्टूबर, 1978 को लुधियाना में आयोजित 18वें अखिल भारतीय अकाली सम्मेलन की खुली बैठक में भी अनुमोदित किया गया और अकाली दल ने 1977 के लोकसभा और राज्य विधान सभा के चुनावों के लिए जारी किए गए 'मैनिफेस्टो' का आधार इसी प्रस्ताव को बनाया।

सामान्य उद्देश्य :—'आनन्दपुर साहब प्रस्ताव' के अनुसार अकाली दल निम्नलिखित उद्देश्यों की पूर्ति के लिए सक्रिय और प्रतिबद्ध रहेगा—1. सिख(अथवा सिक्ख) जीवन-पद्धति का प्रचार तथा नास्तिकता और गैर-सिख विचारों को हटाना; 2. सिख पंथ की एक पृथक् और स्वतंत्र सत्ता की भावना कायम करना तथा एक ऐसे वातावरण का निर्माण करना जिसमें सिखों की 'राष्ट्रीय अभिव्यक्ति' पूर्ण और सन्तोषजनक रूप से हो सके; और 3. निरक्षरता, छुआछूत, सामाजिक विषमताओं और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जातिपरक भेदभाव (जो सिख गुरुओं के महान् उपदेशों के विपरीत है) को दूर करना।

धार्मिक उद्देश्य :—प्रस्ताव के मुताबिक कुछ धार्मिक उद्देश्य इस प्रकार हैं--1. एक नया 'अखिल भारतीय गुरुद्वारा कानून' बनवाना जिससे सिखों के धार्मिक और सामुदायिक स्थलों का आज की अपेक्षा अधिक कुशल और अर्थपूर्ण प्रबन्ध हो सके तथा प्राचीन सिख-प्रचार-सम्प्रदायों (जैसे उदासियों और निर्मलों को) एक गतिशील सिख समुदाय में पुनर्गठित करने का उद्देश्य तो पूर्ण हो, किन्तु उनके वित्तीय साधनों और सम्पत्ति का अतिक्रमण न हो। 2. संसार भर के समस्त गुरुद्वारों को एक झंडे और एक संगठन के नीचे लाना जिससे कि सिख धार्मिक परिपाटियाँ और गतिविधियाँ सम्पूर्ण विश्व में एकरूप हों और धर्म प्रचार के लिए सब साधन एक जुट किये जायें ताकि वे प्रभावी बन सकें। 3. निकट अतीत में श्री ननकाना साहब (पाकिस्तान में स्थित) तथा जिन अन्य पवित्र सिख धर्मस्थलों से सिख काट-से दिए गए हैं, उन पर नियंत्रण तथा उन तक निर्बाध और स्वनियंत्रित आवागमन का अधिकार प्राप्त करना।

राजनीतिक उद्देश्य —पंथ के राजनीतिक लक्ष्य निश्चित रूप से दशम् गुरु के आदेशों, सिख इतिहास के पृष्ठों और खालसा पंथ के परिप्रेक्ष्य में निर्धारित किए गए हैं और उनका उद्देश्य खालसा की प्रमुखता की स्थापना है। खालसा के इस "जन्मसिद्ध अधिकार" को व्यावहारिक रूप देने के लिए आवश्यक वातावरण का निर्माण और एक राजनीतिक संविधान की उपलब्धि अकाली दल के आधारभूत सैद्धान्तिक पक्ष हैं। प्रस्ताव के अनुसार, अकाली दल इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए सभी संभव उपायों का प्रयोग करेगा तथा संघर्ष करेगा। प्रस्ताव में कहा गया है कि 1. सोच-समझ कर और उद्देश्य पूर्वक पंजाब से बाहर रखे गये इलाकों को तत्काल पंजाब में मिला कर एक प्रशासकीय इकाई बनायी जाय, जिससे सिख धर्म और सिखों के हितों की "विशेष रूप से रक्षा की जा सके"। ये इलाके हैं डलहौजी (जिला-गुरुदासपुर), चंडीगढ़, पिंजोर, कालका और अम्बाला, ऊना तहसील (जिला-होशियारपुर), नालागढ़ क्षेत्र, शाहाबाद और गुहला ब्लॉक (जिला-करनाल), सिरसा तहसील, तोहाना उप-तहसील और रतिया ब्लॉक (जिला-हिसार), राजस्थान में गंगानगर जिले की छह तहसीलें और अन्य पंजाबी भाषी तथा सिख क्षेत्र। 2. इस 'नए पंजाब' में केन्द्र सरकार का अधिकार देश की प्रतिरक्षा, विदेशी मामलों, संचार, रेलवे और मुद्रा तक ही सीमित हो। शेष सभी विषय (या विभाग) 'नए पंजाब' के अधिकार-क्षेत्र में हों और उसे इन विषयों में अपना निजी संविधान बनाने का अधिकार हो। 'नए पंजाब' का केन्द्र के आवश्यक वित्त में उतना ही अंशदान होना चाहिए जितना लोकसभा में उसकी सदस्य-संख्या के अनुपात से बनता है यानी बजट का $\frac{13}{141}$13. अन्य राज्यों में बसने वाले सिखों तथा अन्य संप्रदायों को भेदभावों से बचाने के लिए उचित संवैधानिक तथा राजनीतिक संरक्षण प्रदान किए जायें। 4. अकाली दल यह प्रयास करेगा कि भारत का संविधान सही अर्थों में संघीय हो और इसकी व्यवस्था हो कि केन्द्र में सभी राज्यों का अधिकार एवं प्रतिनिधित्व समान हो। 5. यह संगठन वर्तमान विदेश नीति (जिसे कांग्रेस सरकार ने बनाया है) को दोषपूर्ण, प्रभावशून्य तथा देश के लिए खतरनाक और मानव मात्र के लिए हानिकारक मानता है। अकाली दल ऐसी विदेशी नीति का समर्थन करेगा, जिसका ध्येय शान्ति तथा राष्ट्रीय हितों की वृद्धि में सहायता देना हो और जो विशेषतया उन पड़ोसी देशों के साथ, जहाँ सिख रहते हैं और उनके पवित्र धार्मिक स्थल विद्यमान हैं, मित्रता बढ़ाती हो। दल की यह निश्चित राय है कि हमारी विदेशी नीति किसी अन्य देश की विदेशी नीति की अनुगामिनी न हो। 6. राज्य और केन्द्रीय सरकारों की सेवा में रत सिखों तथा अन्य कर्मचारियों को न्याय दिलाना तथा उनकी ओर से प्रभावशाली आवाज उठाना और उनमें किसी के साथ अन्याय होने पर संघर्ष करना अकाली दल के कार्यक्रम का विशेष अंग होगा। 7. अकाली दल इस बात के लिए विशेष रूप से प्रयास करेगा कि सेना के तीनों अंगों में सिखों की जो पारम्परिक स्थिति है, वह कायम रहे तथा वह इस बात की व्यवस्था करेगा कि सशस्त्र सुरक्षा सेवाओं में सिखों की जो माँगें और आवश्यकताएं हैं, उन पर पूरा का समुचित ध्यान जाये। दल यह भी प्रयास करेगा कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुरक्षा प्रतिष्ठानों में कृपाण सिखों की वर्दी का अंग हो।
8. दल सुरक्षा सेवाओं के भूतपूर्व कर्मचारियों को नागरिक जीवन में पुनर्वास की उचित सुविधाएं प्राप्त कराना और उनके अधिकारों एवं आत्मसम्मान की रक्षा करने तथा उनकी आवाज को प्रभावशाली बनाने के लिए उन्हें संगठित करना अपना प्राथमिक कर्तव्य मानता है।
9. दल की यह राय है कि सभी स्त्री-पुरुषों को, जिन्हें नैतिक भ्रष्टता के अपराध में किसी न्यायालय द्वारा दण्डित न किया गया हो, छोटे हथियारों (जैसे रिवॉल्वर, पिस्तौल, बन्दूक, राइफल, या कार्बाइन) को रखने का हक है और इसके लिए किसी लाइसेंस की आवश्यकता नहीं है। इन्हें रखने के लिए पंजीकरण पर्याप्त है।
10. अकाली दल सार्वजनिक स्थलों पर मदिरापान और धूम्रपान पर प्रतिबन्ध की माँग करता है।

आनन्दपुर साहब प्रस्ताव के कई अंश ऐसे हैं, जिन पर किसी को एतराज नहीं हो सकता, उदाहरणार्थ— निरक्षरता, गरीबी, छुआछूत एवं शोषण का विरोध, सार्वजनिक स्थलों पर मादक द्रव्यों के उपयोग पर प्रतिबन्ध। सिख जीवन प्रणाली के प्रचार पर भी किसी को मतभेद नहीं हो सकता, लेकिन नास्तिकता और गैर-सिख विचारों को हटाने की बात संविधान द्वारा प्रदत्त धर्म तथा विश्वास की स्वतंत्रता और धर्मनिरपेक्षता की भावना के सरासर खिलाफ है। इसी प्रकार देश के किसी भी संप्रदाय का यह कहना कि उसकी पृथक् स्वतंत्र सत्ता के लिए ऐसा वातावरण बनाया जाय जिसमें उसकी 'राष्ट्रीय अभिव्यक्ति' पूर्ण और संतोषजनक ढंग से हो सके, राष्ट्रीय एकता और अखंडता में निश्चित ही बाधक माना जाएगा। दरअसल, प्रस्ताव के इसी अंश को लेकर खालिस्तान समर्थक तत्व पृथक् सिख राष्ट्र की माँग कर रहे हैं।

धार्मिक माँगे भी उतनी सरल नहीं हैं, जितनी ऊपरी तौर पर देखने में प्रतीत होती हैं। 'अखिल भारतीय गुरुद्वारा कानून' की माँग मान्य हो सकती है, बशर्ते देश के सारे सिख इसे पसन्द करें। परन्तु इस कानून के अधिकार-क्षेत्र में उदासी तथा निर्मला साधुओं के संप्रदायों को अनिवार्य रूप से शामिल करने की माँग निश्चित ही नए विवादों को जन्म देगी। गुरु नानक के पुत्र श्री चन्द ने अपने पिता का मार्ग स्वीकार न करके वेदान्त पर आधारित उदासीन सम्प्रदाय का प्रवर्तन किया जिसके अखाड़े प्रयाग, हरिद्वार और काशी जैसे हिन्दू तीर्थ-स्थलों में हैं। निर्मला सन्यासी भी उदासीनों के साथ सभी कुम्भ महापर्वों पर अगली पंक्ति में शामिल होकर पारम्परिक हिन्दू विचार-पद्धति में अपनी आस्था व्यक्त करते हैं। इसी प्रकार संसार के गुरुद्वारों को एक संगठन के अधीन करना तभी संभव है, जब संसार भर के सिख इसके लिए तैयार हों और अन्य देशों की सरकारें इस मार्ग में अवरोध न बनें। जहाँ तक राजनीतिक माँगों का प्रश्न है, वे निःसंदेह अतिवादी हैं फिर चाहे वह 'नए पंजाब' का प्रश्न हो, चाहे सेना में भर्ती का प्रश्न हो और चाहे हथियारों के लाइसेंस का प्रश्न हो। राज्यों की स्वायत्तता से जुड़ी माँग राष्ट्र की वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए और भी विवादास्पद है। भारतीय इतिहास इस बात का साक्षी है कि निर्बल केन्द्र सदैव राष्ट्रीय पतन का कारण बना और कोई भी राष्ट्रप्रेमी नागरिक उस दुःखद इतिहास की पुनरावृत्ति नहीं चाहेगा।

वर्तमान परिस्थिति में यह आवश्यक है कि अकाली दल के नेता केन्द्र सरकार द्वारा प्रस्तावित धार्मिक माँगों सम्बन्धी समझौते को स्वीकार कर लें जिससे उनकी राजनीतिक माँगों के विषय में दोनों पक्षों द्वारा खुले दिमाग से बहस की जा सके। भावात्मक दृष्टि से उग्र वातावरण में कोई अर्थपूर्ण और दीर्घजीवी समाधान नहीं ढूढ़ा जा सकता, इसलिए सम्पूर्ण परिवेश में सौहार्दपूर्ण तत्वों को प्रमुखता भी देनी होगी अन्यथा सम्प्रेषणहीनता की वर्तमान स्थिति से न तो अकालियों का हित साधन संभव हो पाएगा, न तो पंजाब का और न तो राष्ट्र का। ■ ■

(पृष्ठ 30 का शेष)

लोकतंत्र में निर्वाचन की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। निर्वाचन पद्धति जितनी अधिक स्वतंत्र, निष्पक्ष और त्रुटि रहित होगी हमारा लोकतंत्र उतना ही अधिक सुदृढ़, सबल और पुष्ट होगा। निर्वाचन व्यवस्था पर सबसे बड़ा आघात काले धन का होता है हालांकि वह मात्र चुनाव की देन नहीं, किन्तु दोनों एक दूसरे को प्रभावित किये बिना नहीं रहते है। अतएव चुनाव खर्च में सादगी लाना हरेक का नैतिक कर्तव्य है। लोकतंत्र को निर्दोष और दोषपूर्ण बनाने में मतदाता, प्रतिनिधि और दल-तीनों की संयुक्त हिस्सेदारी है अतः लोक चेतना का विकास अपेक्षित है। लोकतंत्र हर नागरिक से कुछ कीमत चाहता है। मतदाता उसे स्वस्थ मतदान द्वारा, दल अपने दलीय हित से ऊपर उठकर राष्ट्रीय हित की सोच द्वारा और प्रतिनिधि अपनी सच्ची और निरपेक्ष सेवा द्वारा लोकतंत्र को गुणोत्तर बना सकता है। अन्यथा निर्वाचन व्यवस्था हमारे लोकतंत्र की मखौल मात्र बनकर राजनीति का कोढ़ साबित होगी। ■ ■

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परीक्षा प्रसंग :

सिविल सर्विसेज परीक्षा हेतु

विशिष्ट परिशिष्ट

प्रारम्भिक परीक्षा की अध्ययन पद्धति संबंधी कुछ सुझाव

किसी भी परीक्षा के लिए अध्ययन की पद्धति, परीक्षार्थी के व्यक्तित्व और उसके समग्र जीवन परिवेश पर निर्भर होती है। इसीलिए मूलतः यह एक व्यक्तिगत विषय है। फिर भी, परीक्षार्थी अपने वरिष्ठ मित्रों के अनुभवों की दृष्टि में अपनी निर्धारित पद्धति में आवश्यक परिवर्तन करके लाभान्वित हो सकता है। इसी दृष्टिकोण से सिविल सर्विसेज की प्रारम्भिक परीक्षा के लिए कुछ सुझाव प्रस्तुत किए जा रहे हैं।

परीक्षा अध्ययन के मुख्यतः दो पक्ष होते हैं। पहला यह कि "क्या" पढ़ा जाय और दूसरा यह कि "क्या" को 'कैसे' पढ़ा जाय। आइए पहले "क्या" पर विचार किया जाय। वैकल्पिक विषयों पर यहाँ कुछ न कहना ही बेहतर रहेगा क्योंकि उन सभी पर इस सीमित स्थान में जानकारी दिया जाना सम्भव नहीं है। फिर भी "जहां तक इस परीक्षा के लिए वैकल्पिक विषयों को चुनने का प्रश्न है, यह स्मरण रखना चाहिये कि यह परीक्षा विश्वविद्यालयों की परीक्षा से बिल्कुल भिन्न होती है। तात्पर्य यह कि परीक्षा में वैकल्पिक के रूप में जो विषय चुना जाय उसके समस्त पाठ्यविवरण को पढ़-समझ जाना चाहिये। इस दृष्टि से पढ़ते समय पाठ्यविवरण के दिशा-निर्देश को भी हृदय में कर लेना चाहिये। ऐसी बोध-शक्ति प्राप्त करने के लिये प्रत्येक उम्मीदवार को चाहिए, वह जो कुछ भी पढ़ रहा है उसके लिए मन में एक अनुभूति उत्पन्न कर लेनी चाहिये। ऐसा करने पर ही पाठ्यविवरण के अनुसार अपेक्षित ज्ञान को वह आत्म-सात् कर सकता है" (प्रो. एस. राव—सिविल सेवा की परीक्षा के लिये तैयारी का रूप, रोजगार समाचार खण्ड 7 अंक 39)। हाँ, सामान्य अध्ययन को ले कर अवश्य कुछ कहा जा सकता है।

सामान्य अध्ययन के बारे में सबसे पहले यह जान लेना आवश्यक है कि उसे किन्हीं विशिष्ट पुस्तकों या प्रश्नों के सीमित दायरे में नहीं बाँधा जा सकता। प्रश्न पत्र का उद्देश्य भी यही है कि परीक्षार्थी ने दैनिक विद्यार्थी जीवन से सम्बन्धित पाठ्य पुस्तकों के अतिरिक्त, अपने परिवेश से जुड़े हुए प्रमुख कारक तत्वों की जानकारी में कितनी रुचि ली है। हालाँकि यह प्रक्रिया जीवन के आरम्भ से ही शुरू हो जाती है, इसमें से अधिकांश जीवन के कई वर्ष गुजर जाने के बाद भी इसे जागरूक गम्भीरता से नहीं ग्रहण करते। इसलिए पहली आवश्यकता यह है कि परीक्षार्थी अपनी जागरूकता की परिधि को व्यापक बनाने का प्रयत्न करे। तमाम ऐसी बातों को वह ध्यानपूर्वक देखे और समझे, जो सामान्यत अनदेखी कर दी जाती हैं। मसलन, ऑटोमैटिक घड़ी आपमें से बहुत लोग पहनते होंगे, पर क्या कभी आपने सोचा कि बिना चाभी दिए यह घड़ी कैसे चलती रहती है? या, 'स्टीरियो ध्वनि प्रणाली" को ही ले लें। आपमें बहुतों के घर पर स्टीरियो रिकार्ड प्लेयर्स या टेप रिकार्डर्स होंगे। पर क्या आपने कभी जानना चाहा कि "स्टीरियो ध्वनि प्रभाव" होता क्या है? छोटे-छोटे ऐसे प्रश्नों की श्रृंखला में सामयिकी से जुड़े हुए प्रश्नों का भी विशेष महत्व है। उदाहरण के तौर पर "एशियाड 82' को ले लीजिए। इस विषय पर आपने बहुत कुछ पढ़ा होगा, परन्तु क्या आप इन प्रश्नों के उत्तर सहजता से दे सकते हैं? (अ) अप्पू और जंतर मंतर में क्या अंतर था? (ब) एशियाड 82 में कौन से नए खेल सम्मिलित किए गए (स) उद्घाटन समारोह में प्रतियोगी देश किस क्रम में मार्च पास्ट में व्यवस्थित किए गए (द) उत्तरी कोरिया से अधिक पदक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राप्त होने के बावजूद पदक तालिका में भारत का स्थान उससे नीचे क्यों रहा ? आदि ।

अब यदि आप ऐसे प्रश्नों का उत्तर देने में कठिनाई का अनुभव करते हैं तो हमारा सुझाव है कि आप पत्र-पत्रिकाओं को गौर से पढ़ें और पढ़ते समय यह सोचें कि यदि आप परीक्षक होते तो परीक्षार्थियों से किस प्रकार के प्रश्न पूछना चाहते । ध्यानपूर्वक पढ़ने के अतिरिक्त, यहाँ यह जानना भी आवश्यक है कि कौन सी पुस्तकें पढ़ी जाय । जहाँ तक भारतीय इतिहास, राजनीति, भूगोल और अर्थव्यवस्था का प्रश्न है, अब तक यह सर्वविदित हो चुका है कि राष्ट्रीय शिक्षा एवं अनुसंधान परिषद द्वारा प्रकाशित पुस्तकों से इन विषयों के मूलाधारों को बड़ी सहजता के साथ समझा जा सकता है। इन पुस्तकों की मुख्य विशेषता यह है कि इन्हें सम्बन्धित विषयों के प्रतिष्ठित विद्वानों ने लिखा है और अपने ज्ञान बाहुल्य को बड़े ही सरल शब्दों में बड़ी ही सहज शैली में अभिव्यक्ति दी है। इसलिए इनके अध्ययन से आप बिल्कुल अनजाने विषय के गर्भ तक बहुत शीघ्र ही पहुँचने में सफल हो जाते हैं। किन्तु, यह सोचना भी ठीक न होगा कि इन्हीं पुस्तकों का अध्ययन पर्याप्त है। यह पुस्तक आपको केवल एक आधार प्रदान करती है जिसको आगे भी विकसित किया जा सकता है। इसके लिए यह आवश्यक है कि प्रत्येक उप-विषय पर एक प्रमाणित पुस्तक अवश्य पढ़ी जाय । यह पुस्तक कौन सी हो, इसका चयन आप सम्बन्धित विषय के किसी अध्यापक या वरिष्ठ विद्यार्थी की सहायता से कर सकते हैं।

हाँ, समसामयिक राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय प्रश्नों के लिए हम आपको कुछ सुझाव अवश्य दे सकते हैं। प्रतियोगितात्मक परीक्षाओं के लिए प्रकाशित की जाने वाली मासिक पत्रिकाओं से आप अवश्य लाभान्वित होंगे। परन्तु, ध्यान रखिए कि सभी पत्रिकाओं के पास प्रकाशन के लिए बहुत सीमित जगह होती है। इसलिए इनका प्रयत्न यह होता है कि महीने भर में घटी घटनाओं को, और वह भी मुख्य घटनाओं को, संक्षिप्ततम रूप में पाठकों को उपलब्ध कराया जाय। इसका परिणाम यह होता है कि विषय की बारीकियों का ज्ञान पाठक को नहीं हो पाता। इस कमी को पूरा करने के लिए यह जरूरी है कि परीक्षार्थी समाचार पत्रों का दैनिक रूप से नियमित अध्ययन करें। यहाँ यह जान लीजिए कि पढ़े जाने वाले समाचार पत्र कौन से हों। स्थानीय समाचार पत्रों का अपना अलग महत्व है, किन्तु आवश्यक यह है कि इनके साथ-साथ राष्ट्रीय समाचार पत्र पढ़े जाय और इन्हें अधिक महत्व भी दिया जाय क्योंकि इनमें राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय परिवेश की जानकारी भलीभाँति दी जाती है, जबकि स्थानीय समाचार पत्रों में इनको स्थान दिया जाना सम्भव नहीं होता । समाचारपत्रों के अतिरिक्त, पत्रिकाओं का पढ़ना भी आवश्यक है। यूँ तो सभी प्रमाणित पत्रिकाओं के अध्ययन से ज्ञानार्जन होता है, परीक्षार्थी को अपना ध्यान ऐसी पत्रिकाओं पर केन्द्रित करना चाहिए जो राजनीति, समाज, संस्कृति एवं खेलकूद, आदि, से सम्बन्धित सामयिक घटनाओं का आलोचनात्मक विश्लेषण प्रकाशित करती हों ।

II

यह तो हुई 'क्या' पढ़ें की बात । आइए अब विषय के दूसरे पक्ष पर विचार किया जाय, अर्थात इस 'क्या' को 'कैसे पढ़ें। ज्ञानार्जन तभी लाभप्रद हो सकता है जब कि वह व्यवस्थित हो और उद्देश्य के साथ भलीभाँति समायोजित हो । परीक्षा के उद्देश्यों और उसके स्वरूप को समझने के लिए यह आवश्यक है कि आप विगत वर्षों में पूछे गए प्रश्न पत्रों का अध्ययन करें। वैसे, लोक सेवा आयोग इनका प्रकाशन नहीं करता। परन्तु, प्रवेश पत्र के साथ परीक्षार्थियों को प्रश्नों के स्वरूप की जानकारी अवश्य दी जाती है। इसके अतिरिक्त, कुछ मासिक पत्रिकाएँ, परीक्षार्थियों की स्मरण-शक्ति के आधार पर प्रश्न पत्रों को प्रकाशित करती हैं। इसलिए, इन दोनों का अध्ययन आपके लिए लाभप्रद रहेगा। वैसे, हमारी अपनी धारणा यह है कि अध्ययन पद्धति का निर्धारण करने के पहले परीक्षार्थी यह समझने का प्रयत्न करे कि प्रारम्भिक परीक्षा से अभिप्राय क्या है ?

प्रारम्भिक परीक्षा का मूल उद्देश्य यह परखना है कि संघ लोक सेवा द्वारा निर्धारित ज्ञान क्षेत्र के मूलाधारों से अभ्यर्थी कितनी जानकारी रखता है। परीक्षा स्नातक स्तर के ज्ञान की अपेक्षा रखती है जहाँ विषय के विशिष्ठ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्ञान की तुलना में उसके सामान्य प्रारूप की जानकारी का महत्व अधिक होता है। इसलिए वैकल्पिक विषय की तैयारी करते समय उसके प्रमुख सिद्धांतों को समझना बहुत जरूरी है। यहाँ पर यह बता दिया जाना भी आवश्यक है कि अपेक्षा से अधिक अध्ययन आपके लिए हानिकारक सिद्ध हो सकता है। इतिहास और राजनीति शास्त्र जैसे विषयों को उदाहरण के तौर पर लें। दोनों में प्रत्येक विषय वस्तु पर अनेक अवधारणाएँ और मत प्रतिपादित हुए हैं। परीक्षा की प्रणाली वस्तुपरक है। अब यदि आपने बहुत अधिक पढ़ लिया है तो हो सकता है कि प्रश्न के उत्तर के लिए दिये गए चारों विकल्प आपको किसी न किसी अवधारणा से सम्बद्ध लगें और आप सही उत्तर का चयन न कर सकें। इसलिए आप ऐसी प्रामाणिक पुस्तकें पढ़ें जिनमें सामान्य तौर पर स्वीकृत तथ्यों का विवेचन हो जिससे उत्तरों के चयन में कठिनाई न हो।

वैकल्पिक विषय और सामान्य अध्ययन, दोनों का अध्ययन करते समय यह लाभप्रद होगा यदि आप विषय-वस्तु को सुनिश्चित खण्डों में विभाजित कर लें और उनके अन्तर्गत आने वाले प्रमुख व्यक्तित्वों एवं उसकी परिधि में घटी प्रमुख घटनाओं, उनकी तिथियों और स्थलों तथा इन सबके दीर्घकालीन प्रभावों को ध्यान में रखते हुए, पुनः यह सोचें कि इन सब पर एक परीक्षक की हैसियत से आप कैसे प्रश्न पूछना चाहते हैं। अपने अध्ययन को व्यवस्थित करने का यही सर्वोत्तम तरीका है। उदाहरण के तौर पर, इतिहास का अध्ययन करते समय यदि भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन पर ध्यान केन्द्रित हो तो विषय वस्तु को 1857-1882, 1882-1909, 1909-1919, 1919-1939, 1939-1942 और 1942-47, सरीखे खण्डों में बाँट दें और देखें कि इन कालों में (अ) किन व्यक्तित्वों की भूमिका प्रधान रही (ब) कौन सी प्रमुख घटनाएँ कब और कैसे घटीं (स) इन व्यक्तित्वों, घटनाओं और वैचारिकी के पारस्परिक अन्तर्सम्बन्ध क्या थे ?, आदि। इसी तरह यदि आप भारतीय अर्थव्यवस्था का अध्ययन कर रहे हैं तो अर्थव्यवस्था के नीति निर्देशक तत्वों को समझें और उनके परिप्रेक्ष्य में भारतीय योजनाओं का विश्लेषण करें। जैसे—(अ) विभिन्न योजनाओं के क्या उद्देश्य थे (ब) प्रत्येक योजना में विकास की निर्दिष्ट और औसत विकास गति क्या रही (स) योजनाओं में विदेशी सहायता की क्या भूमिका थी (द) धन आबंटन की पद्धति प्रत्येक योजना में कैसी रही ?, आदि।

III

इस सबके अतिरिक्त हम यहाँ बताना जरूरी समझते हैं कि परीक्षार्थी की मनोस्थिति, एवं उसके जीवन उद्देश्य सफलता के लिए सबसे अधिक महत्वपूर्ण होते हैं। ध्यान रखिए कि आपका पहला प्रयत्न सबसे जटिल और निर्णायक होता है। इसलिए इसे गम्भीरता से लें। जायजा लेने के लिए परीक्षा कभी न दें। परीक्षा देते समय आप कितने भी अगम्भीर क्यों न हों, परिणाम देखते समय आप सदैव गम्भीर रहते हैं। इसलिए सफलता को दूसरे और तीसरे प्रयत्नों के लिए न छोड़िए पहले प्रयत्न में ही सफल होने का भरसक प्रयास करें। पहले प्रयत्न में असफलता आपको हमेशा के लिए हतोत्साहित और असफल बना सकती है। इसके लिए आवश्यक है कि परीक्षा का आवेदन भरने के बाद आप जीवन के अन्य सभी पक्षों की तुलना में परीक्षा को सर्वोच्च महत्व और प्राथमिकता दें। ध्यान रहे कि यहाँ 8 महीनों की कड़ी मेहनत आपके शेष जीवन को सुखमय बना सकती है। अतः आवश्यकता कड़े एकाग्र परिश्रम की है।

बात आवेदन पत्र के साथ शुरू हुई थी। इस सम्बन्ध में भी दो शब्द कह देना लाभप्रद रहेगा। प्रारम्भिक परीक्षा का आवेदन पत्र बहुत छोटा और सरल प्रतीत होता है। परन्तु, इसे सावधानी से भरें। जन्म तिथि, आदि, के सम्बन्ध में लापरवाही न बरतें। ऐसे बहुत से अभ्यर्थी हैं जो इस स्तर पर की गई छोटी सी भूल के कारण बाद में बहुत पछताते हैं। पोस्टल आर्डर को सही नाम पर भेजें, और उसे क्रॉस कर देना न भूलें। प्रार्थना पत्र के साथ जो लिफाफे और पोस्टकार्ड मँगाए गए हैं उन्हें गिन कर अवश्य भेजें। मूल लिफाफे के ऊपर परीक्षा का नाम लिखना भी न भूलें। एक और सुझाव यह भी है कि आवेदन पत्र, सूचना के बाद शीघ्र से शीघ्र भेजें। अन्तिम तिथि से दो दिन पहले रेलवे स्टेशन पर आर. एम. एस. के दरवाजे खटखटाना ठीक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं है। मान लीजिए कि आपका प्रार्थना पत्र समय से न पहुँचा तो आपका तो पूरा साल बेकार हो जाएगा।

"एक विशेष ध्यान देने की बात परीक्षा में अंग्रेजी भाषा में उत्तर लिखने के लिए अपेक्षित क्षमता कुछ ही उम्मीदवारों में होती है, संघ लोक सेवा आयोग ने उत्तर अपनी मातृभाषा में लिखने की व्यवस्था कर दी है, किन्तु दुर्भाग्य की बात है कि उम्मीदवार इस सुविधा का उचित लाभ नहीं उठाते। इसके दो कारण है, एक तो बौद्धिक दम्भ और दूसरा यह निराधार भय कि क्षेत्रीय भाषाओं के पंडित उत्तरपत्रों की जांच करने में बड़ी कड़ाई बरतेंगे यह तो सर्वथा निश्चित है कि कोई भी व्यक्ति अपने मनोभाव अंग्रेजी भाषा की अपेक्षा अपनी मातृभाषा में अधिक आसानी और आत्मविश्वास के साथ व्यक्त कर सकता है। आज सभी क्षेत्रीय भाषाओं में कला विषयों पर अनुमोदित पाठ्य पुस्तक पर्याप्त संख्या में उपलब्ध हैं। यदि इन पुस्तकों पर अधिकार हो जाय और क्षेत्रीय भाषाओं के प्रतिष्ठित लेखकों द्वारा व्यवहृत भाषा और शैली में उत्तम गद्य लिखने की क्षमता हो तो कोई भी उम्मीदवार निश्चित रूप से कम-से-कम 55% अंक प्राप्त कर सकता है, और इतने अंक पा लेने पर अन्य सेवाओं की तो बात दूर, आई. ए. एस. के लिये चुने गये उम्मीदवारों की सूची में वह अवश्य ही स्थान पा जायेगा।" (प्रो. एस. राव-सिविल सेवा की परीक्षा के लिये तैयारी का रूप, खण्ड 7 अंक 39)

परीक्षा के लिए जाते समय अपना प्रवेश पत्र ले जाना न भूलें। इसके साथ-साथ दो तेज नोंक वाली 'एच. बी.' पेन्सिलें, एक कटर और रबर भी अवश्य ले जाय। ध्यान रहे कि पेन्सिलें एच. बी. ही हों क्योंकि आपकी उत्तर पत्रिका कम्प्यूटर जाँचता है जिसको केवल 'एच. बी' का ही रंग दिखाई देता है। 'कटर' इसलिए आवश्यक है कि उत्तर पुस्तिका पर आपके निशान सुस्पष्ट हों, जबकि एक बढ़िया रबर इसलिए जरूरी है कि यदि आप उत्तर पुस्तिका पर कुछ मिटाना चाहें तो आपकी पुस्तिका गन्दी न हो और मिटाने का प्रभाव अन्य उत्तर चिन्हों पर न पड़े।

अपनी व्यक्तिगत अध्ययन पद्धति में यदि आप इन सुझावों का समावेश करते हैं तो हमें आशा ही नहीं, वरन् पूर्ण विश्वास है कि इस परीक्षा में आप अवश्य सफल होंगे। ■ ■

उत्थान प्रतियोगिता अकादमी, इलाहाबाद

सफलता का प्रवेशद्वार

हिन्दी-भाषी परीक्षार्थियों की लम्बी प्रतीक्षा का अन्त
भारत में सर्वप्रथम-अनुभवी शिक्षकों के परिश्रम का परिणाम
हिन्दी माध्यम से आई. ए. एस. का अद्वितीय करेसपांडेंस कोर्स।

भारतीय प्रशासनिक सेवायें (प्रारम्भिक) परीक्षा, 1983
I. A. S. PRELIMINARY '83

सामान्य अध्ययन व चयनित वैकल्पिक विषयों के लिये
पत्राचार (Correspondence) कोर्स में प्रवेश प्रारम्भ
विवरण पुस्तिका हेतु रुपये 5/- मनीआर्डर द्वारा अधोलिखित पते पर प्रेषित करें

उत्थान प्रतियोगिता अकादमी
59, नेहरू नगर, इलाहाबाद - 211003

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिविल सर्विस प्रारम्भिक परीक्षा हेतु उपयोगी कुछ पुस्तकें

सिविल सर्विस परीक्षा की तैयारी करने हेतु निम्नलिखित पुस्तक/पत्रिकाएं उपयोगी हैं। पाठ्यक्रम के अनुसार सभी पुस्तक/पत्रिकाओं की सूचा देना सम्भव नहीं है। अतः सर्वाधिक महत्वपूर्ण ,पुस्तकों/पत्रिकाओं की सूची दी जा रही है। हांलाकि उपयोगिता की दृष्टिकोण से एन. सी. इ. आर. टी., एन. बी. टी. तथा प्रकाशन विभाग की प्रकाशित पुस्तकें पर्याप्त है परन्तु जो परीक्षार्थीगण विषय का विस्तृत अध्ययन करना चाहते है तो * चिन्ह लगे पुस्तकों की भी सहायता ले सकते हैं।

■ सामान्य—

- भारत 1982 (प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली)
- मनोरमा इयरबुक, 1983 (कोट्टायम)
- हिन्दुस्तान इयरबुक, 1982 (कलकत्ता)
- इण्डिया : ए जनरल सर्वे (नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली)
- पर्सपेक्टिव ऑन करेन्ट अफेयर्स (1982 के दो खण्ड तथा 1983 का प्रथम खण्ड, देहरादून)
- *टाइम्स ऑव इण्डिया इयरबुक, 1982 (बम्बई)
- *गेजेटियर ऑव इण्डिया : प्रथम खण्ड-लैण्ड एण्ड पीपुल; द्वितीय खण्ड-हिस्टरी एण्ड कल्चर; तृतीय खण्ड-इकनॉमिक स्ट्रक्चर एण्ड एक्टिविटिज, तथा चतुर्थ खण्ड-एडमिनिस्ट्रेशन एण्ड पब्लिक वेल्फेयर (प्र. वि., भा. स.)

■ भारत की राजनीतिक व्यवस्था—

- हम और हमारा शासन (एन. सी. ई. आर. टी.)
- भारतीय संविधान और शासन (एन. सी. ई. आर) टी.)
- भारत में लोकतन्त्र (एन. सी. इ. आर. टी.)
- *भारतीय शासन और राजनीति—पी. एल. जैन एण्ड फाडिया (साहित्य भवन, आगरा)

■ भारत की आर्थिक व्यवस्था—

- हमारी अर्थ व्यवस्था (एन. सी. इ. आर. टी.)
- आधुनिक भारत की आर्थिक कहानी (एन. सी. ई आर टी.)
- भारतीय अर्थव्यवस्था का विकास (एन. सी. ई आर. टी.)
- भारत विकास की ओर (एन. सी. इ. आर. टी.)
- आर्थिक सिद्धान्त का परिचय (एन. सी. इ. आर. टी.)
- *भारतीय अर्थशास्त्र—दत्त-सुन्दरम (एस. चाँद एण्ड कं., नई दिल्ली)
- *Review of Planning in India and the Sixth Plan- D. M. Mihani (Vora & co Bombay)

■ भारत एवं विश्व का भूगोल—

- भौतिक भूगोल के आधार (एन. सी. इ. आर टी.)
- भारत का सामान्य भूगोल, 2 खण्ड (एन. सी. ई आर. टी.)
- विश्व का सामान्य भूगोल, 2 खण्ड (एन. सी. ई आर. टी.)
- मनुष्य और वातावरण (एन. सी. इ. आर. टी.)
- *भारत का भूगोल—सी. मामोरिया (साहित्य भवन आगरा)
- *विश्व का भूगोल—सी. मामोरिया (साहित्य भवन आगरा)
- *Physical Geography of India (N. B. T.)
- *Economic Geography of India (N. B. T.)
- *Economic and Commercial Geography of India, T- C. Sharma (Vikas, New Delhi)

■ भारत का इतिहास एवं राष्ट्रीय आन्दोलन—

- प्राचीन भारत (एन. सी. इ. आर. टी.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

- मध्यकालीन भारत 2 खण्ड (एन. सी. इ. आर. टी.)
- आधुनिक भारत (एन. सी. इ. आर. टी.)
- स्वतन्त्रता संग्राम (एन. बी. टी.)
- *प्राचीन भारत का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास- रायचौधरी (भारती भवन, पटना)
- *मध्यकालीन भारत—आशीर्वादी लाल (शिवचरन, आगरा)
- *आधुनिक भारत का इतिहास—जैन (मैकमेलन, नई दिल्ली)
- *भारत में मुक्तिसंग्राम—अयोध्या सिंह (मैकमिलन)
- *भारत का इतिहास 3 खण्ड—दत्त, मजुमदार, रायचौधरी (मैकमिलन)

■ सामान्य विज्ञान—

- हम और हमारा स्वास्थ्य (एन. बी. टी.)
- सामान्य विज्ञान—विश्वेश्वर दास (पटना)
- सामान्य विज्ञान—बी. के. सरखाल व एस. एन. प्रसाद (पटना)
- India in Space (N. B. T)
- India's Encounter with Science and Technology—R. Girtora (New Delhi)
- Science and Technology in India—Col. Rama Rao (New Delhi)

■ भारतीय कृषि —

- भारत की प्रमुख फसलें—शर्मा (नैनीताल)
- कृषि अर्थशास्त्र—एच. एस. दास (मेरठ)
- पशुपालन एवं पशु चिकित्सा—डी. एन. पाण्डे (मेरठ)
- Indian Agriculture—A. N. Agarwal (Vikas, New Delhi)
- Hand Book of Agriculture (I. C. A. R., New Delhi)

■ सामान्य मानसिक योग्यता —

- Vikas Work Book : Mental Ability Test (Vikas, New Delhi)
- Check your own I. Q.—Eysenck (Penguin)
- G. M. A. T.—Barrons (1982 edition)
- G. R. E.—Barrons (1982 edition)

■ विविधा —

- अन्तर्राष्ट्रीय खेल और भारत (प्रकाशन विभाग, भारत सरकार)
- Festivals of India (N. B. T.)
- Dances of India (N. B. T)
- Unique Quintessence Of General Studies, 1982 (New Delhi)
- Unique Quintessence Of Advanced General Studies, 1982 (New Delhi)
- Premier I. A. S. General Studies—Francis (New Delhi)
- Premier I. A. S. Advanced General Studies Francis (New Delhi)

■ राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय महत्व की सामयिक घटनाएँ —

- समाचार पत्र—हिन्दुस्तान, नवभारत टाइम्स, Times of India, Indian Express, Statesman, Telegraph or Sunday Observer
- साप्ताहिक पत्रिकाएँ—दिनमान, रविवार, Link, Economic and Political Weekly, Mainstream, Commerce, Sunday, The Week.
- पाक्षिक पत्रिकाएँ—India Today, Surya India, Indian and Foreign Review, योजना, कुरुक्षेत्र, भागीरथ, Economic Scene Review
- मासिक पत्रिकाएँ—"प्रगति मंजूषा", अर्थशास्त्री, Science Today, Facts For You, Seminar, Strategic Analysis, Delhi Recorder

उपर्युक्त एन. सी. इ. आर. टी., एन. बी. टी. तथा प्रकाशन विभाग द्वारा प्रकाशित पुस्तकें स्थानीय पुस्तक भण्डारों में उपलब्ध न हों तो निम्नलिखित पते पर सम्पर्क करें :

Govt. Publications
Sales Emporium
Publications Division
Super Bazar, Connaught Circus
NEW DELHI 110 001

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सामान्य हिन्दी

शासकीय पत्र-1

□ डॉ. दिलीप पाण्डेय, प्रवक्ता, हिन्दी विभाग, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रानीखेत

(किसी भी स्तर के प्रशासनिक अधिकारी के लिए शासकीय पत्र लेखन का ज्ञान अपेक्षित है। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर अधिकांश प्रतियोगिता परीक्षाओं के सामान्य हिन्दी प्रश्नपत्र में शासकीय पत्र लेखन के बारे में एक प्रश्न अवश्य रहता है। इस अंक से हम शासकीय पत्रों की आधुनिक शैली के बारे में क्रमशः सामग्री प्रस्तुत कर रहे हैं।)

—सम्पादक

शासकीय पत्र, जैसा कि शब्द से स्पष्ट है—शासन से सम्बंधित होते हैं। इन्हें सरकारी पत्र भी कहा जाता हैं। सरकारी तथा गैर-सरकारी कार्यालयों में प्रशासन सम्बन्धी जो भी पत्राचार होता है, वह शासकीय पत्रों द्वारा होता है। शुद्धता, सरलता, स्पष्टता, पूर्णता और शिष्टता शासकीय पत्रों की अनिवार्य विशेषताएं होती है। सामान्य पत्रों में पत्र लेखक को कुछ स्वतंत्रता रहती है, किन्तु शासकीय पत्रों में आत्मीयता या व्यक्तिगत सम्बन्धों के उल्लेख की कोई छूट नहीं, भले ही पत्र व्यवहार करने वाले व्यक्ति परस्पर भली भाँति परिचित हो।

शासकीय पत्र लिखते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना आवश्यक है—

(1) पत्र के शीर्ष (ऊपर बीच में) में पत्रांक व दिनांक लिखें।

(2) पत्र के बायी ओर 'प्रेषक' में प्रेषक का नाम, पद, विभाग और कार्यालय का पता लिखें।

(3) पत्र के बायी ओर ही 'प्रेषक' के नीचे 'सेवा में' या 'प्रति' लिखते हुए पत्र पाने वाले का नाम, पद, विभाग और कार्यालय का पता लिखें।

(4) 'संदर्भ' या 'विषय' के अन्तर्गत पत्र में लिखें जाने वाले विषय को अत्यंत संक्षेप में (एक या दो पंक्ति से अधिक नहीं) लिखें।

(5) पत्र में सम्बोधन के लिए 'महोदय' शब्द का ही प्रयोग करें। आदरणीय या पूजनीय शब्दों का प्रयोग कभी न करें।

(6) तत्पश्चात पत्र का मुख्य विषय क्रम से लिखें।

(7) समापन सूचक शब्द (पत्र के दायी ओर) प्रायः भवदीय (कहीं-कहीं विश्वासपात्र) शब्दों का प्रयोग होता है। 'शुभाकांक्षी' 'आपका कृपापात्र' जैसे शब्दों का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

(8) 'भवदीय' के नीचे प्रेषक के हस्ताक्षर, पूरा नाम और पद-नाम होना चाहिए।

(9) अंत में, पृष्ठांकन में प्रतिलिपि सूचनार्थ अथवा आवश्यक कार्यवाही हेतु जिन्हें भेजने हो, उनके पद-नाम व विभाग का उल्लेख क्रमशः करें।

शासकीय पत्र के अन्तर्गत यदि तार भेजा जा रहा हो तो तार की प्रतिलिपि डाक से भी भेजी जानी चाहिए। साथ ही तार के अंत में 'प्रतिलिपि डाक द्वारा पुष्टि हेतु प्रेषित' का उल्लेख भी पृष्ठांकन के अन्तर्गत कर दें।

शासकीय पत्र निम्नलिखित प्रकार के होते हैं—

1. शासकीय आदेश
2. अर्धशासकीय पत्र
3. परिपत्र
4. गैर-सरकारी पत्र
5. अनुस्मरण पत्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

6. कार्यालय ज्ञापन
7. कार्यालय आदेश
8. अधिसूचना
9. पृष्ठांकन
10. प्रेस विज्ञप्ति
11. द्रुतगामी पत्र
12. तार

शासकीय आदेश (G. O.)

ये पत्र सचिवालय के सचिव, उप सचिव या इसी स्तर के समान सचिवालय के अन्य पदाधिकारियों के हस्ताक्षर से भेजे जाते हैं। इन पत्रों का उपयोग शासन द्वारा लिए गए निर्णयों से अधीनस्थ कार्यालयों को सूचित करने के लिए होता है।

पत्र के सम्बोधन में केवल 'महोदय' लिखा जाता है तथा पत्र का आरम्भ 'मुझे यह कहने का निर्देश हुआ है....' जैसे उप-वाक्य से किया जाता है। पत्र के अंत में 'भवदीय' लिखा जाता है। शासनादेश सदैव उत्तम पुरुष में लिखे जाते हैं।

नमूना

पत्रांक ए-1-2167/दस-15 (8)-82

प्रेषक,—

क ख ग
अनुसचिव
उत्तर-प्रदेश शासन

सेवा में—

समस्त विभागाध्यक्ष एवं
प्रमुख कार्यालयाध्यक्ष,
उत्तर प्रदेश

लखनऊ : दिनांक 2 सितम्बर '82

विषय—अस्थायी पदधारी सरकारी राजपत्रित कर्मचारियों को वेतन तथा भत्ते का भुगतान।

महोदय,

मुझे यह कहने का निर्देश हुआ है कि उन मामलों में जहाँ अस्थायी पदों की स्वीकृति की समाप्ति के पश्चात उन पदों को चालू रखने के लिए कार्यवाही प्रारम्भ कर दी गयी है परन्तु सक्षम अधिकारी द्वारा पदों के नैरन्तर्य के लिए अनुमोदन नहीं प्राप्त हो सका है, ऐसे अस्थायी पदधारकों को इन पदों की अवधि की समाप्ति के पश्चात अगले तीन माह तक बिना महालेखाकार के प्राधिकार पत्र के पिछले आहरित वेतन की दर पर वेतन आहरण करने की अनुमति राज्यपाल महोदय ने सहर्ष प्रदान कर दी है।

भवदीय
हस्ताक्षर
(क ख ग)
अनुसचिव

पृष्ठांकन

पत्रांक ए-1-2167 (1) दस-15 (8)-82

प्रतिलिपि निम्नांकित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित—

(i) महालेखाकार, उत्तर-प्रदेश, इलाहाबाद
(ii) सचिवालय के समस्त अनुभाग
(iii) समस्त कोषाधिकारी, उत्तर-प्रदेश
(iv) निदेशक कोषागार, उत्तर-प्रदेश, लखनऊ

आज्ञा से
क ख ग
अनु-सचिव ■

पी० सी० एस० तथा अन्य प्रतियोगितात्मक
परीक्षाओं के लिये
उपयोगी तथा महत्वपूर्ण पुस्तक

■

प्राचीन भारत का इतिहास
(प्रारम्भ से १२ वीं शती तक)

अपने नवीन संशोधित तथा परिवर्द्धित संस्करण में
लेखक : प्रो० के० सी० श्रीवास्तव

प्रकाशक
यूनाइटेड बुक डिपो
यूनिवर्सिटी रोड, इलाहाबाद-२११००२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय बुद्धिजीवी (3)

▭ डॉ. सम्पूर्णानन्द

यह एक विचित्र संसार है जिसमें हम रह रहे हैं। कोई भी मनुष्य विशुद्ध तर्क के आधार पर निश्चयपूर्वक यह नहीं कह सकता कि उसकी धारणायें जीवन में जो कुछ सत्य है उससे मेल खाती हैं। हमारी अत्यन्त प्रिय और बद्धमूल धारणाएँ चतुर्दिक मनोभावों के आवरण से ढंकी हुई हैं और उन्हीं से उनको बल मिलता है। मनोभावों का यह आवेग ज्यों-ज्यों कम होने लगता है, त्यों-त्यों हमारी धारणा भी दुर्बल पड़ने लगती है और अन्ततः सामान्य दैनिक कर्म और स्वभाव जैसी बन कर रह जाती है। विश्व के इतिहास में ऐसे भी समय आये जबकि मनुष्यों ने बलपूर्वक किन्हीं धारणाओं से चिपके रहकर उन्हीं के आधार पर अपने क्रिया-कलापों का संचालन किया और अपने इन कार्यों को भावावेग की एक ऐसी शक्ति से अनुप्राणित किया जो निश्चय ही कोरे तर्कों के आधार पर बनाये गये विश्वास में सर्वथा दुर्लभ थी। ये धारणायें सही थीं या गलत और इनसे जिन कार्यों की प्रेरणा मिली वे लाभप्रद थे या नहीं, यह बिलकुल ही एक पृथक् प्रश्न है। लेकिन गलत या सही, मनुष्य का विश्वास या उसकी धारणा जीवन को एक सुनिश्चित प्रयोजन प्रदान करती है, उसके सम्मुख एक आदर्श उपस्थित करती है, जिसे वह जीवन का लक्ष्य बना सके, जिसके लिये वह जीवित रहे और यथावसर मरने को भी उद्यत हो जाये। यह व्यक्ति के उन सभी अलग-अलग कार्यों को परस्पर संबद्ध करके एक निखरा हुआ रूप प्रदान करती है, जो ऐसा न होने पर क्षणिक चित्तवृत्तियों की बिखरी हुई अभिव्यक्ति मात्र रह जाते और साथ में सदैव यह आशा भी बनी रहती कि यदि आरम्भ में कोई धारणा गलत भी है तो कालान्तर में उसका स्थान सही धारणा ग्रहण कर लेगी। मानव स्वभाव अपनी धारणाओं के लिये तर्क का आधार प्राप्त किये बिना संतुष्ट नहीं होता और यदि किसी धारणा के तार्किक आधार अस्थिर भी हैं तो धीरे-धीरे प्रायः अनजाने ही उसका स्थान प्राय समान ही किन्तु अपेक्षाकृत अधिक तर्क-सम्मत धारणा ग्रहण कर लेती है। इसी पद्धति से विश्व के अनेकानेक धर्मों ने दर्शन के विदेशी तत्वों को आत्मसात करके उन्हें अपनी आस्था का आधार बना लिया है। मूल विश्वास तो बाह्य रूप में वस्तुतः ज्यों का त्यों बना रहता है, किन्तु उसके आन्तरिक तत्व प्रत्येक विशुद्ध तर्क के प्रकाश में निरन्तर समृद्ध होते रहते हैं।

व्यक्ति के जीवन म ऐसे भी कष्टप्रद समय आते हैं जबकि दूसरे प्रकार की धारणाओं से निश्चित रूप से संबद्ध हुये बिना ही मनोभावों का आवरण धारणाओं की एक श्रेणी पर से हट जाता है। यह संदेह का समय होता है। पुरानी धारणाओं का ढांचा ढह चुका होता है किन्तु उसके रिक्त स्थान की पूर्ति नयी धारणाओं द्वारा तब तक नहीं हो पायी रहती है। मस्तिष्क एक पतवार या लंगर से रहित नाव की भाँति काम करता है। दूसरे शब्दों में एक रिक्तता या खोखलेपन की भावना, स्नायुविक तनाव और अन्धकार में टटोलने का जैसी स्थिति बनी रहती है। इस प्रकार का सच्चा देह कितनी ही धारणाओं से अधिक अच्छा सिद्ध हो सकता है। यह मनःस्थिति जब तक रहती है कष्टप्रद होती है, किन्तु प्रायः यह किसी न किसी प्रकार के विश्वास या धारणा का पूर्वाभास होती है। एक बार मस्तिष्क को विश्वास का सहारा मिला नहीं कि मानसिक संतुलन पुनः ठीक हो जाता है और जीवन पुनः सार्थक तथा सोद्देश्य बन जाता है।

सभी देशों के बुद्धिजीवियों को इस प्रकार के अनुभव से होकर गुजरना पड़ता है और भारत का बुद्धिजीवी इसका अपवाद नहीं। जीवन के राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक स्तर पर भी संक्रान्तिकाल के अनुरूप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बौद्धिक और आध्यात्मिक स्तर पर भी संक्रमण-काल का होना अनिवार्य है। जीवन में पुराने मूल्यों को या तो नये मूल्यों के लिये स्थान रिक्त करना पड़ता है अथवा उन्हें नयी परिस्थिति के अनुसार अपने स्वरूप में परिवर्तन करना पड़ता है और पुराने तथा नये में इस ढंग से समझौता करना पड़ता है, जिससे दोनों में एक एकरूपता स्थापित हो सके। उन समस्त तत्वों का निस्संकोच भाव से बहिष्कार करना है, जो पुराने और रूढ़िग्रस्त हो गये हैं, साथ ही उन तत्वों को भी अपने से अलग ही रखना है, जिनमें नवीनता की तड़क-भड़क के अतिरिक्त कुछ नहीं है। प्राचीन और नवीन में इस प्रकार का समन्वय लाने के क्रम में जो मनुष्य को उच्चतर जीवन की दिशा में प्रेरित करता है, जितने भी कष्ट तथा मानसिक यातनायें उठानी पड़ती हैं उनकी पर्याप्त क्षति-पूर्ति हो जाती है। विश्वास की इस पुनः स्थापना के साथ जीवन अपनी भावनात्मक पूर्णता पुनः प्राप्त कर लेता है।

किन्तु यहाँ यह खतरा भी बना रहता है कि संदेह और आलोचनात्मक विश्लेषण का काल अन्ततः उस अभीप्सित मानसिक स्थिति में न भी ले जा सके। स्वयं रोग को स्वास्थ्य के लक्षण के रूप में स्वीकार करके मानसिक संतुलन फिर से प्राप्त किया जा सकता है। विश्वास का संचालन करने वाले तत्व की खोज में आकुल मानव-मस्तिष्क को शांति तो तभी मिलती है जब वह यह विश्वास करने लग जाये कि वास्तव में विश्वास करने लायक कोई वस्तु है ही नहीं। विज्ञान के नियम तो हैं सही, किन्तु उनके सिद्धान्त से उस भावात्मक शक्ति का उद्रेक नहीं होता जो वास्तविक विश्वास या धारणा की परिचायिका है। यहाँ यह भली-भांति समझ लेना होगा कि इस प्रकार की मनोदशा अनीश्वरवादी (नास्तिक) की मनोवृत्ति विशेष से सर्वथा भिन्न है। अनीश्वरवादी तो केवल 'अस्ति' तत्व को प्रकट करने वाले साधनों की निरर्थकता मात्र स्वीकार करता है। वह तो यदि संभव हो सके तो उसका अतिक्रमण करने के लिये इच्छुक रहेगा। दूसरी ओर अनास्थावादी ने अपना यह मत बना लिया है कि उन वस्तुओं के अतिरिक्त जानने या विश्वास करने को अन्य कुछ है ही नहीं जिनको जानने या मानने के लिये विवश होना पड़ता है। वह शिष्टता के आवरण में अपने भावों को छिपा सकता है किन्तु जीवन में जो कुछ पवित्र समझा जाता है उसके प्रति उसका दृष्टिकोण असम्मान का होता है तथा उसे वह उपेक्षा की दृष्टि से देखता है। जो व्यक्ति इतना दुर्बल होता है कि किन्हीं भी भौतिकेतर वस्तुओं पर अपना विश्वास आधारित करता है, प्रारम्भिक शिक्षा और स्वभाव के कारण बाह्यरूप से उसका आचरण भले ही अत्यन्त उच्चकोटि का प्रतीत हो, किन्तु उसका दृष्टिकोण अवश्य ही अधार्मिक होगा। वह अपने जीवन-सिद्धांत को इस शब्द से भले ही न प्रकट करे, किन्तु 'भोगवाद' ही एकमात्र शब्द है जिससे उसके जीवन-सिद्धांत का उचित वर्णन हो सकता है। ऐसा मनुष्य अपने वर्तमान में ही रह सकता है। उसके लिये जीवन का कोई उच्चतर उद्देश्य नहीं होता और वह वर्तमान से ही अधिकाधिक तृप्त होने की चेष्टा करता है, जबकि अन्य लोग भविष्य में इस प्रकार की तृप्ति या संतोष का आरोप करते हैं।

यह प्रवृत्ति आजकल हमारे देश में अवांछनीय व्यापकता ग्रहण करती दिखायी दे रही है। आध्यात्मिक कहे जाने वाले प्रत्येक तत्व के प्रति अविश्वास तथा धर्म सम्बन्धी सभी वस्तुओं के प्रति असम्मान और उपेक्षा का भाव प्रदर्शित करना जैसे बुद्धिजीवी वर्ग ने अपना पेशा बना लिया है। जीव-विज्ञान का विद्यार्थी चीड़फाड़ करने वाले चाकू के नीचे पड़े हुए मृत मंडूक में जिस प्रकार की रुचि दिखाता है, उसके अलावा ऐसी चीजों में अन्य किसी प्रकार की दिलचस्पी लेना पुरातनवादिता अथवा साम्प्रदायिकता, जो उससे भी अधिक निकृष्ट है, का परिचायक समझा जाता है। विरले ही लोग अपने को उपहासास्पद बनाने का साहस कर सकते हैं। इस प्रकार सत्य की खोज में रुकावट पड़ने लगती है, प्रश्न रूप से नहीं पूछा जाता। अंततः मस्तिष्क अपनी आंतरिक संघर्ष की स्थिति से बचकर एक ऐसी मानसिक स्थिति में पहुंच जाता है जहाँ अविश्वास का अभाव ही विश्वास बन जाता है। इस प्रकार अविश्वासियों की सेना बढ़ती ही जाती है और जो लोग इस सम्बन्ध में कोई प्रश्न उठाने का साहस करते हैं उन्हें चुप कर दिया जाता है। जो अब भी हृदय से अथवा स्वभाव से किसी प्रकार के विश्वास से चिपके हुये हैं, उनका इतना नैतिक ह्रास हो गया है कि वे अपने विश्वास को प्रकट भी नहीं कर पाते।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानवता नकारात्मकता के आधार पर अनेक दिनों तक विकसित नहीं रह सकती । सत्य तथा कुछ ऐसे स्थायी तत्वों, जो दृश्य जगत् के परे हैं, की खोज का प्रयास कुछ समय के लिये भले ही दबा दिया जाये किन्तु आगे चलकर खोज की यह प्रवृत्ति पुनः अधिक वेग से जागरित होगी । वर्तमान से परे जीवन का कोई अर्थ न होने से समाज में अवसरवाद एवं स्वार्थ को खुलकर खेलने का अवसर मिल जायगा । मनुष्य ने आज तक जिस प्रासाद का निर्माण किया है, उसे स्वयं ध्वस्त कर डालेगा, सभ्यता मिट्टी में मिल जायगी । कदाचित् ऐसा भी हो और इसकी सम्भावना भी है कि चक्र का फेरा दूसरी ओर हो जाय और विनाश रोका जा सके । किन्तु विवेक-बुद्धि वापस आने से पूर्व इसके लिये भारी कीमत चुकानी पड़ेगी । सत्य से विमुख होना, विश्वास तथा आस्था के लिये उपयुक्त तत्व की खोज स्थगित कर देना तथा विश्वास से जीवन भर भावुकता का जो गहरा रंग चढ़ जाता है, उसका तिरस्कार करना एक महँगा नशा है ।

जैसा मैंने पहले कहा है कि मानव जाति नकारात्मकता पर जीवित नहीं रहती है । भौतिक जगत् की भांति ही आध्यात्मिक जगत् में भी प्रकृति रिक्तता से घृणा करती है । अतः प्रायः ऐसा होता है कि मनुष्य का मस्तिष्क लगातार किसी अविश्वास से ही संतुष्ट रहने के बजाय अन्य प्रकार से अपना संतुलन स्थापित कर लेता है । किसी न किसी प्रकार का विश्वास पुरातन आस्थाओं की निन्दा द्वारा उत्पन्न अविश्वास के छद्म से मस्तिष्क में अनजाने प्रवेश कर जाता है । संशय की लहरों पर डूबते-उतराते हुये बुद्धिजीवी के नये और पुरातन के बीच उचित समन्वय स्थापित कर सकने के पूर्व ही उसके मस्तिष्क में साम्यवादी विचारधारा धीरे-धीरे घर कर लेती है और उसके मन के खाली आसन पर वह एक परम तेजवान देवता की प्रतिमा स्थापित कर देती है । यह सच है कि इस प्रसंग में एक व्यक्ति का जीवन बहुत कम महत्व रखता है । उसका उतना ही कम महत्व है जितना कि मानव शरीर में एक ग्रंथि का, परन्तु समाज का एक सदस्य होने के नाते उस व्यक्ति में यह परिवर्तन बड़ा महत्वपूर्ण और गंभीर रूप धारण कर लेता है । अपनी आयु पूरी करके व्यक्ति संसार से विदा हो जाता है परन्तु समाज तो अमर है । उसके द्वारा वह भविष्य में भी प्रविष्ट हो जाता है और उसकी आत्मशोध की प्रवृत्ति पर अंकुश लग जाता है । सिजलाव मिलोज नामक पोल लेखक ने अपनी पुस्तक "द कैपिटल माइण्ड" में इसका बड़ा सुन्दर वर्णन किया है कि किस प्रकार लौह आवरण वाले देशों में वहाँ की सरकार को सहज ही प्राप्त प्रच्छन्न साधनों की सहायता से साम्यवाद एक के बाद दूसरे बुद्धिजीवी पर अदृश्य रूप से आक्रमण करता है । साम्यवाद पर मत प्रकाशन का यहाँ अवसर नहीं है । वह मैं अनेक अवसरों पर कह चुका हूं । परन्तु जो इसके मोह में नहीं फंसे हैं उनके लिये वह विचारणीय है कि किस प्रकार आज का बौद्धिक वातावरण इस वाद के प्रसार में सहायक सिद्ध हो रहा है ।

बुद्धिजीवियों में एक ऐसा वर्ग है और ऐसा वर्ग सभी देशों में पाया जाता है, जिसमें अपनी मान्यताओं को प्रकट करने का साहस नहीं होता है । इस वर्ग के सदस्य को मन-ही-मन भास होता है कि ऐसी कुछ चीजें हैं, जिन पर वह विश्वास कर सकता है । भटकते-भटकते उनमें से कुछ तक सम्भवतः वह पहुँच भी चुका है परन्तु उनके प्रति अपनी आस्था वह स्वीकार नहीं करता । इसके विपरीत कुछ कारणवश, जो समझ में तो आते हैं परन्तु सराहनीय नहीं कहे जा सकते, वह किसी अन्य सिद्धान्त के प्रति अपनी भक्ति प्रकट करता है । एक प्रसंग में यह सिद्धान्त साम्यवाद का हो सकता है और अन्य में मात्र अनास्थावाद का भी हो सकता है, यदि नकारात्मक दृष्टिकोण रखने वाली विचारधारा को सिद्धान्त का नाम दिया जा सके । ये बुद्धिजीवी अपने मन की शांति के लिये जो समर्थ हैं ऐसी मिथ्या और काल्पनिक बातों को अपना लेते हैं जिनकी वास्तविकता छिपी हुई नहीं है ।

जिस सीमा तक कोई बुद्धिजीवी अपने मस्तिष्क को इस प्रकार कार्य करने देता है, उसी सीमा तक वह अपनी मान्यताओं के प्रति विश्वासघात करता है । उसे वास्तविकता से पलायन का सुगम मार्ग नहीं ग्रहण करना चाहिये । सत्य कटु होता है परन्तु अपने को भुलावे में डालने से या वास्तविकता से मुंह छिपाने से उसकी कटुता कम नहीं हो जावेगी । लोगों की भीड़ में अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को खो देने से गर्व और संतोष का अनुभव तो होता है परन्तु इसका अन्तिम परिणाम अकल्याणकारी होता है। बुद्धिजीवी का समाज के प्रति एक निश्चित कर्तव्य है। सत्य की खोज के मार्ग से उसे पीछे नहीं हटना चाहिये और जो सत्य है उसे प्रकट करने में हिचकना भी नहीं चाहिये चाहे वह उस समय फैशन के कितना भी प्रतिकूल दिखाई दे।

हम भारतीयों ने लोकतन्त्र को अपनी राजनीति का आधार बनाया है। यहाँ यह स्पष्ट समझ लेने की आवश्यकता है कि लोकतन्त्र उसी समाज में चल सकता है, जो यह समझता है कि व्यक्ति अपने कार्यों के लिये पूर्ण उत्तरदायी है और उसे कुछ ऐसे अधिकार प्राप्त हैं जो जन्मसिद्ध हैं, और छीने नहीं जा सकते। इस धारणा का आधार यह मान्यता है जिसमें यह स्वीकार किया जाता है कि व्यक्ति साधन मात्र नहीं हैं वरन् स्वयं साध्य है तथा उसके जीवन का एक अपना उद्देश्य और महत्व होता है। अवश्य ही वह उद्देश्य समाज में रहकर ही पूरा हो सकता है। समाज के प्रति कर्त्तव्य की बात यहीं उठती है और उसका औचित्य भी इसी से सिद्ध होता है। जीवन का यह चरम अयोजन और उद्देश्य क्या हो, इस प्रश्न का उत्तर धर्म और दर्शन ही दे सकते हैं। इस प्रश्न के उत्तर की खोज से अधिक महान् और आवश्यक शोधकार्य दूसरा नहीं है, क्योंकि इसी पर मनुष्य और उसके समाज का सम्पूर्ण आचरण आधारित होगा।

हम बुद्धिजीवी कहे जाने वाले वर्ग के लोगों को चाहिये कि अपने वर्ग अनुरूप ऊपर उठें। आज भारतीय बुद्धिजीवी के सम्मुख एक अपूर्व अवसर उपस्थित है। वह एक नये राष्ट्र के जीवन का निर्माण कर सकता है और उसे देश में तथा देश के बाहर शांति और स्वतन्त्रता के मार्ग पर ले जा सकता है। वह अपने देश-भाइयों का आस्थाहीन बौद्धिक मरुभूमि से उद्धार कर उनके मन में आस्था और भावुकता की वह उर्वरता भर सकता है, जो कर्म को आनन्दप्रद और सुन्दर बना देती है और जो देश के साधारण नागरिक को भी एक जननायक के रूप में परिवर्तित कर देती है। हमारे बुद्धिजीवी को अपने गगनलोक से नीचे उतरना चाहिये और जनता के बीच उस मंगल-उल्लास का सन्देश देना चाहिये, जो मनुष्य को मनुष्योचित प्रतिष्ठा प्रदान करेगा और प्रत्येक मनुष्य को उसकी क्षमता के अनुसार उस आध्यात्म जगत् का दर्शन करायेगा जहाँ सभी भेदभाव मिट जाते हैं। 'एनकाउंटर' मासिक के 1957 नवम्बर के अंक में आर्थर कोइस्लर ने अपने लेख 'ए गाइड टू पोलिटिकल न्यूरोसिस' में कहा है कि अनुकूलतम परिस्थितियों में भी बीसवीं सदी के मानव का आचरण विशुद्ध तर्क से निर्देशित नहीं होता है, वह न्यूनाधिक कुंठाग्रस्त होता है। आज विश्व एक सामूहिक मानसिक असन्तुलन के युग से गुजर रहा है। भारत की आर्थिक और सामाजिक परिस्थितियाँ, स्कूलों-कालेजों की हमारी नई पीढ़ी को इस असामान्य परिस्थिति का शिकार बनाने में सहायता पहुंचाती हैं उन्हें जीवन कटु लगने लगता है और इस कटुता से उत्पन्न असह्य मानसिक तनाव से छुटकारा पाने के लिये वे किसी भी उपस्थित अवसर को हाथ से जाने नहीं देते और अधिक से अधिक उच्छृंखलतापूर्ण कार्य कर बैठते हैं। समाज-विरोधी विचारों और कार्यों में उनके मन को एक सुख का अनुभव होता है क्योंकि कुछ भाग्यवानों को छोड़कर शेष के प्रति समाज जिस हृदयहीनता का व्यवहार करता प्रतीत होता है उसका प्रतिकार ऐसे ही कार्यों में उन्हें दिखाई देता है।

ऐसी मानसिक स्थिति में किसी का भी भला नहीं हो सकता। प्रौढ़ बुद्धिजीवियों का यह कर्त्तव्य है, विशेष रूप से उनका जो अध्यापक, लेखक अथवा कलाकार हैं कि वे हमारे नवयुवकों को इस भंवर में पड़ने से बचायें। जीवन को आध्यात्मिकता प्रदान करने के अपने प्रयत्नों के कारण हो सकता है उन्हें गलत समझा जाये और उपहास का पात्र बनाया जाय; परन्तु उन्हें अपने कर्त्तव्य पालन से विमुख नहीं होने देना चाहिये। आज के बुद्धिजीवी का यह कर्त्तव्य है कि वह हमारी नयी पीढ़ी में एक महान् कर्त्तव्य की भावना भर दे जो वर्तमान काल के उपयुक्त हो और हमारी पुरातन परम्पराओं के अनुरूप हो, जो उन्हें, जिन पर कि राष्ट्र की आशायें टिकी हुई हैं, अपने सीमित अहं से ऊपर उठा सके और आशा एवं उत्साह के साथ वर्तमान का सामना करने में उनकी सहायक हो सकें। ■ ■

['अधूरी क्रांति' से साभार]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय विदेश नीति : ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में (2)

□डॉ. आलोक पन्त*

इस लेख के प्रथम खंड में हमने भारतीय विदेश नीति का विश्लेषण तीन स्तरों पर करने का प्रयास किया था, यह त्रिस्तरीय पद्धति कैनिथ वॉल्स की अंतर्राष्ट्रीय राजनीति को विश्लेषित करने की अधिक वाञ्छनीय एवं नवीन पद्धति है, क्योंकि इसके द्वारा हम विदेश नीति सम्बन्धी निर्णयों को विदेश मंत्रालय द्वारा प्रस्तुत निर्देशों के रूप में ही न समझकर, उस समग्र बाह्य व आंतरिक परिवेश के संदर्भ में भी जानने का प्रयास करते हैं। समकालीन राष्ट्र अपने वाह्य सम्बन्धों के निर्धारण अन्तर्राष्ट्रीय जगत में होने वाले परिवर्तनों एवं राष्ट्रीय गतिविधियों, दोनों ही से प्रभावित होते हैं।

अर्थात अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था निश्चय ही किसी राष्ट्र के संदर्भ में उसकी विदेश नीति के निर्धारण में महत्वपूर्ण है, इसी से हमने पहले भाग में अंतर्राष्ट्रीय शीत युद्ध संबन्धी विश्वस्थिति का विवरण भारतीय विदेश नीति के निर्धारक तत्वों के संदर्भ में दिया। पर मात्र अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था के संदर्भ में विश्लेषण और व्याख्या पूर्ण सत्य को उजागर नहीं करती जब तक कि हम उस विशेष समाज का आंतरिक अध्ययन न कर पायें जो तत्कालिक रूप में राष्ट्र की तत्कालिक आवश्यकताओं को निर्धारित करते हैं। दोनों ही एक प्रकार से एक दूसरे के पूरक हैं, इनसे संलग्न निर्णय की प्रक्रिया निर्णय संबधी संस्थाओं के संचालन कर रहे व्यक्तियों से भी कुछ सीमा तक प्रभावित होती है। बहुपक्षीय विश्लेषण की पद्धति को Clausewitz ने सार रूप में अभिव्यक्त करते हुए उचित ही कहा है कि-विदेशनीति राष्ट्रीय नीति का ही अलग प्रकार के साधनों से संचालन है।

प्रथम खंड में हमने देखा कि भारतीय विदेश नीति शनैः शनैः राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय परिस्थितियों और अनिवार्यताओं के संदर्भ में एक सुनिश्चित रूप लेती गयी। जिसका प्रमुख उद्देश्य यथासंभव द्विध्रुवीय विश्व राजनीति में शीत युद्ध की चपेट से बचना था। गुट-निरपेक्षता का जो स्वरूप उभरा वह सामान्यतः 1962 तक आलोचना का कारण नहीं बना था, पर 1962 में चीन के आक्रमण के पश्चात हमारा गुटों के प्रति एक निश्चित दूरी का उद्देश्य समाप्त हो चला। क्योंकि हमें आत्मरक्षा के लिये ब्रिटेन और अमेरिका से आर्थिक और सैनिक मदद लेनी पड़ी। इसी अवसर पर देश में अनेक राजनीतिज्ञों एवं बुद्धिजीवियों ने गुट-निरपेक्षता की सार्थकता के विषय में संदेह व्यक्त किया और पराजय के कारण इस नीति के पक्ष में जनमत भी विशेष नहीं दिखलायी दिया। संसद में प्रस्तुत आलोचनाओं से यह स्पष्ट था कि दक्षिणपंथी गुट जो स्वयं कांग्रेस में था, वह भी पश्चिमोन्मुख विदेश नीति की मांग कर रहा था। पं. नेहरू की राष्ट्रीय आर्थिक नीति का बल उत्पादन की अपेक्षा न्यायोचित वितरण पर था अर्थात पश्चिमी उत्पादन माडल की अपेक्षा समाजवादी वितरण प्रधान मॉडल पर अधिक स्पष्ट बल उन्होंने दिया था। परन्तु, अमेरिका से व्यापक आर्थिक और सैनिक सहायता मिलने के कारण कालान्तर में इस आंतरिक नीति का संचालन भी संदेहात्मक लग रहा था। युद्ध का परिणाम युद्ध तक सीमित नहीं होता वह आर्थिक रूप में अर्थव्यवस्था को अव्यवस्थित कर देता है और इस आर्थिक व्यवस्था को सुव्यवस्थित करने के लिये जो आर्थिक ऋण विश्व बैंक से उपलब्ध हो सकता था उसे देखते हुए भी आंतरिक और बाह्य नीतियों

*प्रवक्ता, राजनीति शास्त्र विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिवर्तन अनिवार्य हो गया था।

गुट निरपेक्ष देशों से जो हमारी आशायें थीं वे निश्चित ही सन् 62 की लड़ाई के कारण निराधार सिद्ध हुई। भारत और चीन के मध्य गुट निरपेक्ष देश प्रायः तटस्थ ही रहे और आगामी वर्ष के कोलम्बो सम्मेलन में गुट निरपेक्ष देशों ने भारत और चीन दोनों को ही समान स्तर पर रख कर देखा। इससे भी गुट निरपेक्षता के विषय में संदेह उत्पन्न हुआ। चीन के युद्ध के साथ नेहरू युग का अन्त और विदेशनीति के क्षेत्र में एक मध्यांतर काल का प्रारम्भ होता है जो सन् 1970 तक चलता है। नेहरू की मृत्यु के पश्चात शास्त्री जी के 18 महीने के शासन में हमें विदेशनीति के क्षेत्र में कोई विशेष महत्वपूर्ण परिवर्तन नहीं दिखायी देता है। सन् 1965 में पाकिस्तान युद्ध तक, यह अवश्य था कि संयुक्त राष्ट्र अमेरिका के साथ सम्बन्धों में अत्यन्त सुधार हुआ। परिणामस्वरूप अनेक प्रकार की आर्थिक सहायता, विशेषतः ग्रामीण क्षेत्रों में हरित क्रान्ति लाने के लिये खादकारखानों की स्थापना, विश्व बैंक की ग्रामीण विकास योजनाओं का प्रारम्भ और अमेरिका के साथ सांस्कृतिक आदान-प्रदान का भी एक दौर शुरु होता है। परन्तु, पश्चिमी क्षेत्र में पाकिस्तान के साथ युद्ध ने इस नवीन मित्रता का अन्त कर दिया। क्योंकि, पाकिस्तान अमेरिकी सैनिक गुटों का सदस्य था इसलिये उसकी सहायता के लिये अमेरिका प्रतिबद्ध था। युद्ध के बाद ही ताशकन्द के सम्मेलन के समय लाल बहादुर शास्त्री के देहावसान ने पुनः विदेशनीति को पीछे छोड़ दिया। सम्पूर्ण राजनीति का केन्द्र चीन नेता का चुनाव हो गया और समझौते के रूप में कामराज ने श्रीमती गांधी को प्रधान मंत्री के पद पर लाया जो प्रारम्भिक वर्षों में कांग्रेस के अनेक प्रभावीशों पर पूर्णतः आश्रित थी। 1966 से, लगभग तीन वर्ष की अवधि भारतीय राजनीति में असंतुलन और असहाहीनता की अवधि थी — 1969 में राष्ट्रीय कांग्रेस में आंतरिक फूट के उपरांत ही जब श्रीमती गांधी एक स्वतंत्र और सशक्त प्रधान मंत्री के रूप में उभरी तभी विदेशनीति में भी दिशा एवं गति का पुनः प्रवाह आया है। दूसरे शब्दों में 1962 से सत्तर की अवधि विदेशनीति के क्षेत्र में विचित्र समन्वय की अवधि रही। प्रमुखतः एक तरफ तो गृहनीति के उतार चढ़ाव के कारण निर्धारित थी और दूसरी ओर अंतराष्ट्रीय द्विध्रुव राजनीति में घटित परिवर्तनों द्वारा भी प्रभावित थी।

नेहरू की मृत्यु के पश्चात भारतीय विदेशनीति का स्वरूप विकसित हुआ और विदेशनीति के क्षेत्र में जो महत्वपूर्ण परिवर्तन आये (जिनके विषय में अनेक हैं) उसको सुव्यवस्थित रूप में और तर्कसंगत तरीके से समझने के लिये विश्व राजनीति का संक्षिप्त उल्लेख आवश्यक है। सर्वप्रथम इस दशक में शीतयुद्ध का ह्रास और द्विध्रुवीय प्रधान राजनीति के स्थान पर अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का तीव्र विकेन्द्रीकरण दिखाई देता है। साथ ही, रूस और चीन दो शक्तिशाली साम्यवादी देशों के मध्य संघर्ष और तनाव की स्थिति विस्फोटक रूप में सामने आयी। रूस चीन का यह संघर्ष, जिसे क्रैन शॉ ने 'नवीन शीत युद्ध' की संज्ञा दी है, निर्विवाद दूसरे महायुद्ध के पश्चात अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में सर्वाधिक महत्वपूर्ण संघर्षमय स्थिति थी। इसलिये कि इसके कारण रूस को यूरोप से अपना ध्यान हटाकर एशिया में सुदूर पूर्व में लाना पड़ा। पूर्वी यूरोप में अपने साम्यवादी साम्राज्य की रक्षा के लिये अमेरिका के साथ अपने तनाव को कम करना आवश्यक था। क्योंकि, यूरोप और एशिया दोनों ही स्थानों में दो शत्रुओं से निपटने की स्थिति में रूस नहीं था। चीन से रूस का संघर्ष तत्कालिक राष्ट्रीय हितों को लेकर था (भूमि सम्बन्धी रा. हि.)। कुछ टीकाकारों का जैसे डिक विल्सन का मत है कि दो साम्यवादी देशों के मध्य यह लड़ाई एशिया में प्रभुत्व स्थापित करने की लड़ाई है। फिलहाल इस संघर्ष के कारण एवं रूस में आंतरिक विकास के कारण भी अमेरिका के संदर्भ में नवीन सहअस्तित्व की नीति, जिसका प्रारम्भ ख्रुश्चेव ने किया था, उसे 1964 के पश्चात सोवियत साम्यवादी दल के सर्वोच्च पदाधिकारी एवं 1964 से 1982 तक सोवियत संघ के निर्विवाद नेता श्री ब्रेजनेव ने और अधिक वेग से अपनाया। स्वयं अमेरिका में भी वियतनाम की लड़ाई को लेकर जनसमर्थन समाप्त होता जा रहा था। और, सहयोग एवं आर्थिक आदान प्रदान की आवश्यकता पूंजीवादी एवं साम्यवादी दोनों ही प्रकार के देशों को होने लगी थी। अंतर्राष्ट्रीय मंच पर चीन, जापान, साझा मंडी और गुटनिरपेक्ष आंदोलन के समर्थक देश नयी सद्भावनाओं को अभिव्यक्त कर रहे थे। शीतयुद्ध अथवा द्विध्रुवीयता की स्थिति में गुटनिरपेक्षता की नीति नवमुक्त देशो के लिये सौदेबाजी करने के लिये सहायक थी। क्योंकि, द्विध्रुवीयता की स्थिति में प्रत्येक ध्रुव अपने समर्थकों की संख्या में वृद्धि चाहता था। पर विकसित बहुध्रुवों में महाशक्तियों के लिये तीसरी दुनियाँ के देशों को प्रलोभन देकर मिलाना अनावश्यक होता जा रहा था। ध्रुवों के मध्य संघर्ष के जो सैद्धान्तिक कारण दर्शाये गये थे—पूंजीवाद और साम्यवाद का संघर्ष, वो भी अमेरिका में राष्ट्रपति निक्सन के आने के पश्चात अस्थायी प्रतीत होने लगे थे। कहने का तात्पर्य है कि इन अन्तर्राष्ट्रीय परिवर्तनों एवं राष्ट्रीय, सामाजिक और आर्थिक अनिवार्यताओं के संदर्भ में विदेशनीति का पुनः नेहरू युग के स्पष्ट सैद्धान्तिक गुटनिरपेक्षता के आधार पर संचालन न तो वांछनीय था और न ही संभव।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

1970 से भारतीय विदेशनीति के पंडित इन विभिन्न राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय परिवर्तनों को समझने में संलग्न थे जब हमारे सीमावर्ती राज्य पाकिस्तान में पुनः अस्थिरता और उथल पुथल का क्रम प्रारम्भ होता है— पूर्वी पाकिस्तान से बड़ी संख्या में शरणार्थी पश्चिम बंगाल में आते गये और 1970 में ये संख्या 1 करोड़ के करीब पहुँच गयी थी। भारत सरकार को प्रतिदिन इनके भोजन और आवश्यक स्थितियों के लिये तीन करोड़ रुपया व्यय करना पड़ रहा था। इस भयावह स्थिति से पश्चिम यूरोपीय और उत्तरीय अमेरिका के प्रमुख देशों की राजधानियों में स्वयं इंदिरा गांधी ने वहाँ के शासकों को इस समस्या से अवगत कराया। पर, इन शक्तियों ने इस विस्फोटक समस्या के शांतिपूर्ण सुझाव खोजने का कोई प्रयास नहीं किया। यह स्पष्ट था कि पश्चिमी शक्तियाँ भारत के विरुद्ध पाकिस्तान का पक्ष ले रही थीं अतः पाकिस्तान से युद्ध होना अनिवार्य था। और युद्ध में पाकिस्तान की सीटो की सदस्यता के कारण पश्चिमी ताकतो के हस्तक्षेप की संभावना भी नकारी नहीं जा सकती थी। अतः इस सम्भावित युद्ध में अपनी स्थिति सुदृढ़ करने हेतु 1971 में भारत-सो. सं. ने बीस वर्षीय मैत्री संधि पर हस्ताक्षर किए। संधि को लेकर संसद में और भारतीय प्रेस में तीव्र प्रतिक्रिया हुई। उस समय अधिकांश दैनिक पत्रो का यह मत था कि यह संधि हमारी गुटनिरपेक्षता की नीति के विपरीत है। संधि में यह स्पष्ट उल्लेख था (अनुच्छेद 8) कि यदि संधिकर्ताओं में से किसी एक पर भी आक्रमण होता है तो दोनों पक्षों की तात्कालिक बैठक होगी जिसमें सामूहिक रूप से स्थिति से निपटने की कार्यवाही तय की जायेगी।

यह स्पष्ट था कि संधि के द्वारा भारत अपनी सुरक्षा को किसी भी सम्भावित युद्ध हेतु अधिक सुदृढ़ कर रहा था। संधि के पश्चात दिसम्बर माह में बांगलादेश के युद्ध में भारत सरलतापूर्वक विजयी हो सका और भारत बांगलादेश की स्थापना के पश्चात एक क्षेत्रीय शक्ति अथवा मध्यम कोटि के शक्तिशाली राज्य के रूप में उभरने में प्रथम बार सफल रहा। भारत रूस की नवीन मित्रता समयान्तर में विकसित होती गयी।

गुटनिरपेक्षता : अब गुटनिरपेक्षता के विषय में मूल्यांकन आवश्यक हो जाता है क्योंकि देश और विदेश में भारत की गुट निरपेक्षता की नीति पर आरोप लगाया गया कि यह वास्तव में पश्चिम विरोधी एवं सोवियत रूस के निकट है। यह स्वतः स्पष्ट था कि अमेरिका की अपेक्षा सोवियत संघ से हमारे संबंध निश्चित रूप से अधिक अच्छे रहे हैं। इसकी पृष्ठभूमि में यथार्थपरक कारण हैं, जिनका आभास स्तालिन की मृत्यु के पश्चात से ही होने लगता है। 19[illegible] ही कश्मीर को लेकर सोवियत संघ ने हमारी [illegible] का समर्थन किया। संयुक्त राष्ट्र संघ ने भी क[illegible] की स्थिति को लेकर भारत विरोधी रुख अ[illegible] किया था। सोवियत संघ के विशेषाधिकार के [illegible] के ही कारण यह निर्णय टल गया। कालांतर [illegible] '62 के युद्ध के समय भी सोवियत संघ ने हमारी [illegible] का समर्थन किया तथा' 65 के भारत-पाक युद्ध के [illegible] जब पश्चिमी राष्ट्र भारत के विरुद्ध थे, तब भी सो[illegible] संघ ने ही भारत का यत्किंचित समर्थन किया [illegible] ताशकन्द के सम्मेलन में सोवियत संघ ने जो म[illegible] भूमिका निभाई इससे यह स्पष्ट हो गया था कि भा[illegible] उप महाद्वीप तथा हिन्द महासागर क्षेत्र की गतिवि[illegible] में सोवियत संघ की रुचि पहले की अपेक्षा ब[illegible] थी। तत्पश्चात भारत और सोवियत संघ के [illegible] प्रगाढ़ होते गये जिनकी अंतिम परिणति सन्' [illegible] संधि के रूप में हुयी। श्रीमती गांधी के आग[illegible] पश्चात देश की आंतरिक स्थित में भी उथल [illegible] प्रारम्भ हो गई थी। स्वयं काँग्रेस दल और भा[illegible] कम्युनिस्ट पार्टी (C.P.I.) में समझौता हो च[illegible] जो कि स्वयं सोवियत संघ के प्रति हमारी सर[illegible] दृष्टिकोण को दर्शाता था। 1968 में जब सोवियत [illegible] ने चेकोस्लोवाकिया पर आक्रमण किया और [illegible] विश्व मंच पर कटु आलोचना भी हुयी उस समय [illegible] ने मौन रहना अभीष्ट समझा। समयकाल में सो[illegible] संघ और भारत के संबध, ब्रोझनेव के आने के प[illegible] मधुरतर होते गये। सोवियत संघ के दृष्टिकोण में [illegible] के साथ अपने संघर्ष में विजयी होने के लि[illegible] आवश्यक था कि अधिकांश दक्षिण तथा दक्षि[illegible] एशिया के देशों से उसके संबध मधुर हों। उसके [illegible] रिक्त वियतनाम में अमेरिका की हार भी एक [illegible] से निश्चित थी। और, अमेरिका ने दियागो [illegible] एवं हिन्दमहासागर क्षेत्र में अपनी गतिविधियाँ [illegible] कर दी थीं। इस संघर्षमय स्थिति से प्रेरित [illegible] टीकाकारों का मत है कि रूस दक्षिण एशिया के [illegible] साथ घनिष्ठ संबध स्थापित करके चीन के [illegible] को अवरुद्ध कर सकता है। इस दृष्टिकोण को [illegible] राष्ट्रीय रणनीति के पंडित "इनसर्कलमेन्ट" (Encirclement) के सिद्धांत के रूप में भी अभिव्यक्त [illegible] हैं। इसी परिपेक्ष्य में आठवें दशक के प्रार[illegible] सोवियत संघ तथा अमेरिका के बीच तनाव शै[illegible] भी समझा जा सकता है। 18 जून, 1973 [illegible] 24 जून, 1973 में अपनी ऐतिहासिक अमेरि[illegible] के उपरांत सोवियत नेता लियोनिद ब्रेझनेव ने औप[illegible] रूप से शीत युद्ध की समाप्ति की उद्घोषणा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पश्चात्, 8 जुलाई, 1973 को स्वीड्न की राजधानी हेलसिंकी में 33 योरोपीय देशों तथा संयुक्त राष्ट्र अमेरिका एवं कनाडा के विदेश मंत्रियों के ऐतिहासिक सम्मेलन-के दौरान सोवियत संघ के विदेश मंत्री ग्रोमिको ने पुनः शीत युद्ध की समाप्ति को स्वीकार किया। पश्चिमी राष्ट्रों द्वारा अस्वीकृत योरोप का पूर्वी और पश्चिमी योरोप में "विभाजन" के समापन की भी घोषणा की गयी। पश्चिमी राष्ट्रों ने साम्यवादी पूर्वी योरोप की स्थिति को स्वीकृति प्रदान कर दी।

शीत युद्ध प्रधान द्विध्रुवीय अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के संदर्भ में गुटनिरपेक्षता की नीति विकसित हुई और एक सीमा तक गुटनिरपेक्षता के ढांचे में संचालित भारत, रूस, युगोस्लाविया की नीतियों ने अनेक नव मुक्त राष्ट्रों को इस नीति को अपनाने के लिए प्रेरित किया। नासिर, नेहरू और टीटो के समग्र प्रयास व घनिष्ठ मित्रता के कारण गुटनिरपेक्ष आन्दोलन सन्'55 से सन् 61 की अवधि में विकसित होकर, एक नवीन अन्तर्राष्ट्रीय शक्ति सद्भावना सहित विश्व में उभरा। संयुक्त राष्ट्र की महासभा में एक सामूहिक मंच भी गुटनिरपेक्षता के आधार पर बनता गया परन्तु, तनाव शैथिल्य की स्थिति के साथ-साथ गुटनिरपेक्षता नवमुक्त राष्ट्रों की व्यक्तिगत विदेश नीति के रूप में बहुध्रुवीय विश्व में बहुत अधिक महत्वपूर्ण प्रतीत नहीं हुआ। आठवें दशक के प्रारम्भ से यह भी स्पष्ट था कि गुटनिरपेक्षता को नवीन परिस्थितियों के संदर्भ में पुनः परिभाषित करना होगा। अभी तक भारत का प्रश्न था भारत-रूस संधि के पश्चात, सन् 71 के युद्ध की विजय व बंगलादेश की स्थापना ने भारी विदेश नीति को एक सम्मानित स्तर में प्रस्तुत कर दिया था। कालान्तर में एक एशियाई शक्ति के रूप में महाशक्तियों को भारत की सुदृढ़ स्थिति स्वीकारनी पड़ी। स्वयं राष्ट्रपति निक्सन ने सन्'73 में भारत की दृढ़ स्थित एवं एशियाई भूमिका के लिए भारत को स्वीकारा। सन्'71 से सन्'75 की अवधि में भारत दक्षिण एशिया में एक प्रमुख केन्द्रीय शक्ति के रूप में स्थापित हो गया था, तथा एक अधिक सार्थक एशियाई भूमिका की अपेक्षा भारत से की जा रही थी। श्रीमती गांधी ने इसी अवधि में सिक्किम का विलीयनीकरण भी किया और गुट निरपेक्षता को एक आन्दोलन के रूप में विकसित करने पर बल दिया।

आठवाँ दशक अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में परिवर्तन का दशक था जिसमें वियतनाम में अमेरिका की पराजय, महाशक्तियों में तनाव शैथिल्य, तीसरी दुनिया के देशों का G-77 के समूह के रूप में संगठित आदि होना उल्लेखनीय विकास है। गुट निरपेक्ष आन्दोलन ने विकासशील देशों को इस बात से अवगत करा दिया कि पश्चिमी देश भी उन पर उतने ही आश्रित हैं जितने वे पश्चिमी देशों पर। अरब राष्ट्रों ने तेल को एक हथियार के रूप में सौदेबाजी करके यह स्पष्ट कर दिया था कि पश्चिमी देशों को अपनी आर्थिक नीतियों में शीघ्र ही परिवर्तन करना होगा। गुटनिरपेक्ष आन्दोलन ने विकासशील देशों को इस तथ्य से अवगत कराया कि भविष्य में उनके देशों की विदेश नीतियों का लक्ष्य क्षेत्रीय स्तर पर सक्रिय सहयोग करना होगा जिससे अपनी स्थिति पाश्चात्य देशों के संदर्भ में सुदृढ़ कर सकें। पश्चिम पर निर्भर रहने की नीति विकास की भ्रामक स्थिति ही उत्पन्न करती है। अफ्रीकी देशों ने, विशेषतः "ऑर्गेनाइजेशन ऑव अफ्रीकन यूनिटी" में तकनीकी ज्ञान के अदान-प्रदान को, अफ्रीकी देशों के संदर्भ में प्रचारित और विकसित किया। कहने का तात्पर्य है कि राष्ट्रीय स्तर पर आठवें दशक में हम देखते हैं कि गुट निरपेक्षता की नीति प्रारम्भिक नेहरू युग के स्पष्ट सैद्धांतिक आधारों की अपेक्षा अधिक तात्कालिक आवश्यक राष्ट्रीय हितों के संदर्भ में विकसित और व्याख्यायित हुई। यह परिवर्तन गुट निरपेक्षता को लेकर भारत के संदर्भ में सैद्धांतिक परिवर्तन या अवसरवादिता को दर्शाता हो ऐसा नहीं कहा जा सकता। क्योंकि, गुट निरपेक्षता बहुध्रुवीय विश्व में अपने प्रारम्भिक मूल रूप में अर्थहीन हो गयी थी। साथ ही आठवें दशक की राजनीति में क्षेत्रीय आधारों पर विश्व राजनीति संचालित हो रही थी जिसमें कोई देश व्यक्तिगत प्रयासों के आधार पर राष्ट्र हितों को विकसित करने में सफल नहीं हो सकता था। यह भी प्रमाणित हो गया था कि दूसरे महायुद्ध के पश्चात जो नवमुक्त राष्ट्र एशिया और अफ्रीका में उभरे उन राष्ट्रों को भूतपूर्व साम्राज्यवादी शक्तियों ने शोषण के नवीन और घातक माध्यम बना लिये थे जिसके कारण नवमुक्त देश स्वतंत्रता के तीन दशक पश्चात भी राजनीतिक मुक्ति को सामाजिक और आर्थिक मुक्ति में परिणत नहीं कर पाये। गुट निरपेक्ष आन्दोलन ने भारत एवं अन्य देशों को एक मंच प्रदान किया। जिससे यह सभी देश एक नवीन अन्तर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की अनिवार्यता के महत्व को समझ सकें।

आपातकालीन स्थिति के पश्चात जनता शासन काल में भारतीय विदेश नीति को वास्तविक गुट निरपेक्षता के रूप में प्रदर्शित किया गया। इसके प्रमुख उद्देश्य में रूस के साथ-साथ पश्चिमी देशों के संदर्भ में भी सम्बन्धों को सुधारने का भाव निहित था ताकि सभी के प्रति निरपेक्षता पुनः स्थापित की जा सके। सीमावर्ती प्रांतों के साथ द्विपक्षीय सम्बन्ध की स्थापना पर बल दिया गया। बांगलादेश के साथ फरक्का योजना तथा पाकिस्तान के साथ सलाल योजना, तथा चीन के साथ सुब्रह्मण्यम स्वामी की सम्बन्ध सुधार की नाटकीय यात्रा इन अठ्ठारह माह की जनता शासन काल की वास्तविक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुट निरपेक्षता की उपलब्धियाँ हैं। यद्यपि, गहराई से देखने पर इनमें स्थायित्व और सार्थकता ही दिखायी देती है फिर भी यह कहा जा सकता है कि निकट के सीमावर्ती राज्यों के साथ मित्रतापूर्ण सम्बन्ध स्थापित करने का सिलसिला, जो जनता शासन काल में प्रारम्भ हुआ, यह निश्चित ही एक विकासशील देश के लिए सार्थक प्रयास कहा जा सकता है। पुनः श्रीमती गाँधी के अठ्ठारह महीने पश्चात आगमन से विदेश नीति ने पुराना पथ धारण कर लिया। 1980 के पश्चात भारतीय विदेश नीति के समक्ष बदलती हुई अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति को देखते हुये भारतीय उपमहाद्वीप में महाशक्तियों की बढ़ती गतिविधियों पर ध्यान आकर्षित करना पड़ा।

नवें दशक में भारतीय विदेश नीति जिस गुट निरपेक्षता द्वारा निर्धारित हो रही थी उसके स्वरूप में और नेहरू युग के गुट निरपेक्षता की अन्तः वस्तु(Content) में निश्चित ही काफी अधिक अन्तर रहा। नेहरू युग में गुट निरपेक्षता का प्रमुख उद्देश्य शीत युद्ध की परिधि से अपने को बचाये रखना था ताकि आर्थिक और सामाजिक विकास तेजी से हो सके। साथ ही यह नीति शीत युद्ध के समापन में परोक्ष रूप से अपना योगदान भी देती रही क्योंकि एशिया के एक बड़े भूभाग में इसके द्वारा शीत युद्ध को फैलने से रोका जा सका। पंडित नेहरू के नेतृत्व में गुटनिरपेक्षता एक राष्ट्र की नीति से एक अन्तर्राष्ट्रीय आन्दोलन में परिणत हो गयीं जिसका महत्व कालांतर में विकासशील देशों के लिए एक मंच प्रस्तुत करने के रूप में निश्चय ही स्वीकार करना पड़ेगा। आठवें दशक के प्रारम्भ से भारतीय विदेश नीति में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए है। जिसको संक्षेप में यह कह कर दर्शाया जाता है कि विदेश नीति तात्कालिक, व्यावहारिक राष्ट्रीय आवश्यकताओं के संदर्भ में अधिक झुकती गयी। यह वांछनीय भी था। क्योंकि बहुध्रुवीय प्रधान अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में क्षेत्रीय आधारों पर सामूहिक रूप में राष्ट्र अपनी सौदेबाजी की क्षमता बढ़ा सकते थे। भारत में भी इस समय तक आते आते विदेश नीति के महत्व के विषय में प्रबुद्ध वर्ग अधिक जागरूक हो चला था और यह मानता था कि नेहरू युग में जिस विश्व भूमिका को प्राप्त करने का लक्ष्य रखा गया था उसके लिए न तो भारत समर्थ ही है और न ही साधनसंपन्न। भारत, क्षेत्रीय स्तर पर दक्षिण एशिया तथा दक्षिण पूर्व एशिया के देशों का नेतृत्व करने का प्रयास करे तो उसमें सफलता की संम्भावना अतीत के काल्पनिक उद्देश्य से अपेक्षाकृत अधिक है। इस रूप में हम कह सकते हैं कि भारतीय गुट निरपेक्षता दोनों महाशक्तियों के प्रति निरपेक्षता की स्थिति से उठकर अनेक क्षेत्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय शक्तियों से सापेक्षता की ओर बढ़ती जा रही है। यहाँ यह कहा जा सकता है सैद्धातिक अस्पष्टता क्या इस नवीन परिवर्तन में झलकती? क्या यह अवसरवादी नहीं कहलाएगी? इ उत्तर के रूप में यही कहा जा सकता है कि आज क रर्ष्ट्रीय राजनीति स्वयं सैद्धांतिक लड़ाई की स्थिति बहुत पीछे छोड़ चुकी है। तनाव शैथिल्य इसे प्रमा करता है परन्तु पुनः तनाव का बढ़ना पुनः सैद्धा तथ्य को उजागर नहीं करता वरन् यही दर्शाता है राष्ट्रीयता और राष्ट्रहित के संदर्भ में ही आज अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति निर्धारित हो रही है। तीव्र बद अन्तर्राष्ट्रीय समीकरणों को देखते हुए यह स्पष्ट है स्थायी सैद्धांतिक ढांचे के आधार पर विदेश नी का निर्धारण निरर्थक होगा। विदेश नीति के सम्बन्ध

आज प्रमुख प्रश्न यह उठता है कि एक नव मुक्त रा के रूप में हमने पैंतीस वर्षों में जो सम्बन्ध स्थापित कि उनमे हमारी समस्याओं के समाधान में कहाँ तक सफ मिली? विदेश नीति अब स्थिर नहीं है। इ वांछनीय तथा अवांछनीय होना ठोस भौतिक आधार ही सम्भव है, इस आधार पर नहीं कि विश्व मंच

हमारी कितनी तूती बोलती है। सन्'69 तक सा वादी चीन को न तो अधिकांश देशों ने मान्यता दी और न ही उसका महत्व दर्शाया जाता था। क्यों चीन ने किसी से सम्बन्ध स्थापित ही नहीं किये

परन्तु, 1971 तक ही चीन में सर्वाधिक उन्नति हु इस रूप में नहीं कि राजधानी एक्सप्रेस चली हो या म वर्ग के लिये विलासिता प्रधान वस्तुओं का निर्माण हु हो परन्तु इस रूप में (सर्वाधिक उन्नति हुई) कि प्र युवक को रोजगार तथा प्रत्येक को भोजन तथा नि के न्यूनतम साधन प्रायः उपलब्ध हो गए। परन्तु, ह

ऐसा कुछ नहीं हासिल किया। पैंतीस वर्षों में त युद्ध, एवं सेना की स्थिति में क्रमशः वृद्धि होती ग सभी सीमांत राज्य, चाहे पाकिस्तान हो अ साम्यवादी चीन, बर्मा हो अथवा श्री लंका हो, ह असन्तुष्ट हैं। हम मानते हैं कि अपने आप में हम वि शांति के पैगम्बर हैं पर विश्व के 102 राष्ट्रों ने, 1971 में संयुक्त राष्ट्र की महासभा में हमें एक राष्ट्र के रूप में प्रस्तुत किया जिसने पाकिस्तान के आ रिक मामलों में हस्तक्षेप कर उसे बांगलादेश में प वर्तित कर दिया, तथा बांगला देश से हमारे सम्ब सर्वाधिक विवादग्रस्त हैं। साम्यवादी चीन से ह सम्बन्धों के विषय में मैक्सवेल की पुस्तक के प्रकाश पश्चात पुनः विचार आवश्यक हो गया। क्योंकि, मैक्स वेल ने, एशियाई देशों में यूरोपीय शासन द्वारा सीमाएं निर्धारित की गयी थीं, उनके एक ही पक्ष

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दर्शाया है। वास्तव में, पत्रकारिता का यह प्रमुख दोष रहा है कि उसने इन समस्याओं को समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से नहीं देखा। भारत ही नहीं दक्षिण अफ्रीका के नव मुक्त राष्ट्र सीमाओं को लेकर, (ऐसी सीमाएँ जो यूरोपीय शासकों द्वारा जाते जाते जल्दी में तय कर दी गयीं) विरासत के रूप में नव मुक्त देशों को संघर्ष की स्थिति ही मिली। इसके विपरीत विकसित देश (उदाहरण के लिए यूरोप में) सीमाओं को लेकर अन्तिम निर्णय की स्थिति में पहुँच चुके हैं और सीमावर्ती विवादों को समाप्त करके अपनी शक्तियों का केन्द्रीयकरण तथा राष्ट्रीय विकास करने में सफल हो रहे हैं। आज भारतीय विदेश नीति के समक्ष प्रमुख और प्रथम अनिवार्यता अपनी सीमाओं की समस्या को सुलझाना हैं और यह कार्य एक अदान-प्रदान की भावना से ही संभव है। क्योंकि, यह स्पष्ट है कि एकपक्षीय समाधान आज संभव नहीं। यह वांछनीय है अथवा नहीं इसको विवाद का मुद्दा बनाना निरर्थक है।

सीमावर्ती विवाद निश्चय ही हमारी विदेश नीति के सन्दर्भ में सर्वाधिक महत्वपूर्ण समस्या के रूप में है, जिनका सुलझना विदेश नीति के दूरगामी लक्ष्यों को देखते हुए नितान्त आवश्यक है। इस सम्बन्ध में एशिया तथा अफ्रीका के देशों में इसी प्रकार के विवादग्रस्त क्षेत्रों को लेकर अनेक शोधग्रन्थ विगत् वर्षों में सामने आए हैं जिनको पढ़ने से हम इन समस्याओं के प्रति अपने दृष्टिकोण को बदलने के लिए बाध्य होते हैं। वेन विलकॉक्स ने अपनी सम्पादित पुस्तक "कॉनफ्लिक्ट इन इन्टरनैशनल रिलेशन्स" में अनेक क्षेत्रों के सीमावर्ती संघर्षों का समाजशास्त्रीय पद्धति से विवेचन करके अनेक महत्वपूर्ण नवीन तथ्यों को प्रस्तुत किया है। लेखक के अनुसार अधिकांश सीमा-विवाद, योरोपीय साम्राज्यों की देन हैं और योरोपीय शासकों ने उपनिवेशों में सीमाओं का निर्धारण तात्कालिक (अपने हितों के) दृष्टिकोण से किया था जिन्हें उपनिवेशों के समापन के पश्चात, इन नवमुक्त देशों के शासकों ने, वैसे ही अपना लिया। इसका परिणाम यह हुआ कि योरोपीय साम्राज्यों के कृत्रिम विभाजन के आधार पर प्रायः सीमान्त प्रदेशों में प्रतिस्पर्धा और संघर्ष की स्थिति प्रारम्भ से ही बनी रही, उसी प्रकार जैसे शीत युद्ध की अवधि में महाशक्तियों के द्वारा जर्मनी, कोरिया या वियतनाम के कृत्रिम विभाजन के आधार पर संघर्ष और तनाव चलता रहा। लेखक ने यह भी दर्शाया है कि प्रायः भूतपूर्व उपनिवेश बहुजन जातीय समाज हैं जिनमें नवीन सरकार को एक ओर राष्ट्रीय निर्माण प्रक्रिया में संलग्न होना है, और दूसरी ओर सीमान्त निवासी बहुजन जातियों की आकांक्षाओं की अवहेलना नहीं करनी है-यदि, राष्ट्रीय निर्माण प्रक्रिया में इनका सहयोग लेना है। यह सीमान्त क्षेत्रों में निवास कर रही बहुजन जातियाँ योरोपीय विभाजन से असन्तुष्ट थी, इस कारण नवीन सीमाएं सांस्कृतिक और ऐतिहासिक आधारों पर बनना चाहिये, जिसके लिए राष्ट्रीय राजनीतिक सत्ता तैयार नहीं है। इसके कारण सीमावर्ती क्षेत्र चाहें भारत या पाकिस्तान के हों अथवा अफ्रीकी राज्यों के हों—एक गृह युद्ध की स्थिति में आ जाते हैं और उनकी समस्या राष्ट्रों के मध्य क्रमशः तनाव को भी बढ़ाती है। वेन विलकॉक्स ने अपने शोध में यह भी दर्शाया है कि दूसरे महायुद्ध के पश्चात (यूरोपीय साम्राज्यों की विरासत के अतिरिक्त) अन्तरराष्ट्रीय संस्थाओं में जो वृद्धि हुयी है एवम् महाशक्तियों के पास विश्व सैनिक सत्ता का जो केन्द्रीयकरण हुआ है उसका भी प्रभाव इन सीमान्त समस्याओं पर पड़ा है। इनकी बढ़ती और सुदृढ़ स्थिति के कारण सीमावर्ती स्थानीय समस्याएं क्षेत्रीय नहीं रह जातीं वरन् अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप धारण कर लेती हैं और इससे इन स्थानीय समस्याओं का समाधान और अधिक कठिन और दुष्कर हो जाता है। आज भारत-पाक समस्या को भी इसी समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से देखना आवश्यक है, चूँकि जब तक शासकगण अपने देखने के नजरिए में परिवर्तन नहीं करेंगे तब तक स्थायी समाधान सम्भव नहीं है। जिया के अयुद्ध-सन्धि प्रस्ताव के बाद से, देश और विदेश में अनेक विद्वानों ने इसे स्वीकार करने की बात रक्खी है। जहाँ तक सिद्धान्त का प्रश्न है इसके स्वीकारने के विषय में सन्देह नहीं हो सकता परन्तु संचित मानव अनुभव यह तो प्रमाणित करता ही है कि प्रायः स्थितियाँ वैसी नहीं होती जैसा उन्हें दर्शाया जाता है। एक ओर अमेरिका से जिया घातक शस्त्र प्राप्त कर रहे हैं और दूसरी ओर अयुद्ध सन्धि की बात कर रहे हैं। यह मानना कठिन होता है कि वे इन शस्त्रों का प्रयोग रूस के विरुद्ध करेंगे! पाकिस्तान का यह दावा कि सेना और शस्त्रों के क्षेत्र में वह भारत से बराबरी का इच्छुक है एक अत्यन्त एकपक्षीय तर्क है। क्योंकि, दोनों ही देश जब तक प्रत्येक रूप से असमान हैं तो सैनिक क्षेत्र में ही समानता की बात क्यों? ऐसी ही समानता की बात यदि पाकिस्तान चीन के साथ भी रखता तो भी समझा जा सकता था। रसेल ब्राइन्स ने, जिन्होंने भारत व पाकिस्तान के विषय में सर्वाधिक प्रामाणिक काम किया है, ने स्पष्ट रूप से कहा है कि पाकिस्तान के शासक प्रारम्भ से ही भारत के विरोध में अनेक भ्रान्तियाँ प्रचारित करते रहे और इनमें सर्वाधिक सशक्त यह भ्रान्ति रही कि भारत पाकिस्तान को पाकिस्तान के रूप में देखना ही नहीं चाहता और जिस प्रकार बँगलादेश बनवाकर उसने पाकिस्तान के आधे भाग का हिंसापूर्वक समापन किया उसी प्रकार शेष के समापन का भी इच्छुक है। इस प्रकार का प्रचार, आन्तरिक विकास की अवहेलना जो पाकिस्तान में हुयी है, उससे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जनता का ध्यान हटाने में सफल रहता है।

शासकों द्वारा अपनी आन्तरिक कमियों को पूरा करने के लिए युद्ध का सहारा लेना एक पुरानी कहानी है। स्वयं राष्ट्रपति भुट्टो ने 1971 में शिमला समझौते के समय भारत के इस प्रस्ताव पर कि वर्तमान नियंत्रण रेखाओं के आधार पर थोडा बहुत परिवर्तन करके क्यों न स्थायी समाधान कर लिया जाय—यह कहा कि भारत के विरुद्ध पाकिस्तानी जनमानस में इतनी घृणा एवं भय प्रचारित किया जा चुका है कि मेरे द्वारा यह कार्य अत्यन्त विवाद का कारण बनेगा और जनता इसे स्वीकार नहीं करेगी। अतः कुछ समय चाहिए ताकि जनमानस को सही दिशा में लाया जा सके। सत्य तो यह है कि भारत पाकिस्तान के बने रहनें में ही अधिक इच्छुक है क्योंकि यदि पाकिस्तान की स्थिति टूटने की बनती है तो भारत के लिए वह एक नकारात्मक स्थिति होगी क्योंकि तब इस क्षेत्र में रिक्तता को भरने के लिए महाशक्तियाँ पहुँच जाएंगी और उपमहाद्वीप की नीतियों के निर्धारण में (अपने हितों के सन्दर्भ में) उनकी महत्वपूर्ण भूमिका बनती जाएगी, जो कि हमारे लिये अत्यन्त दुर्भाग्य की स्थिति होगी। कहने का तात्पर्य है कि आयुद्ध संधि के हस्ताक्षर मात्र से भारत पाकिस्तान सम्बन्धों में तनाव, प्रतिस्पर्धा और विरोध समाप्त हो जायेगा, यह मानना नितान्त काल्पनिक है। भारत-पाकिस्तान सम्बन्धों का सुधरना अन्य सभी सीमा विवादों की अपेक्षा सर्वाधिक कठिन कार्य प्रतीत होता है। इनका सुधरना एक दीर्घ-कालीन प्रक्रिया ही हो सकती है और वह भी तब जब कि पाकिस्तान में सैनिक शासन समाप्त हो, और जनतांत्रिक संस्थाओं के स्थापनोपरांत जनतांत्रिक मूल्यों का जनता में समाजीकरण हो सके; क्योंकि तभी भारत के विरुद्ध जो घृणा व भय जनमानस में व्याप्त किया जा चुका है उस विष को हटाना सम्भव होगा। और, यह कार्य-जनतांत्रिक शासन व्यवस्था की स्थापना, अमेरिका के पाकिस्तान में हस्तक्षेप व हितों को देखते हुए दुष्कर प्रतीत होता है। परन्तु, यह तो निर्विवाद है कि - सीमाओं के झगड़े निपटाकर ही हम राष्ट्र की पूंजी का बड़ा भाग देश की जनता की आकांक्षाओं की अभिपूर्ति में लगा सकेंगे।

हमने इस लेख का प्रारम्भ विदेशनीति के वांछित लक्ष्यों को इंगित करते हुए किया था कि एक देश की विदेशनीति साधारणतः तात्कालिक, मध्यगामी एवं दूरगामी हितों की प्राप्ति के लिये सक्रिय रहती है। सफलता के लिये इन तीनों में सामंजस्य स्थापित करना आवश्यक है। 35 वर्षों का अनुभव यही रहा है कि-जहाँ तक तात्कालिक एवं मध्यगामी हित हैं, उन्हें हमारी विदेशनीति सुलझाने में सफल रही है। इस कार्य में बहुधा सैद्धान्तिक रूप से समझौते करने पड़े हैं, परन्तु यह आर्थिक रूप से कमजोर देश के लिये अनेक अवसरों पर आवश्यक हो जाता है। देश की अखण्डता सामान्यतः अविच्छिन्न ही कहलायेगी; परन्तु, मात्र इस संदर्भ में उपलब्धियों को देखते हुए हम विदेशनीति को सफल नहीं कह सकते। यह भी प्रश्न उठता है कि हम पैंतीस वर्षों के पश्चात् देश की अधिकांश जनसंख्या की आकांक्षाओं को किस सीमा तक पूरा कर पाये है? क्योंकि, राष्ट्रहित को उन असंख्य भारतीयों के संदर्भ में देखना होगा जो दरिद्रता में पैदा होते हैं, विकसित होते हैं, और अल्पायु में मर जाते हैं। इस प्रश्न का उत्तर इतना सरल नहीं, क्योंकि इसकी पूर्ति के लिये आन्तरिक स्थिति में महत्वपूर्ण परिवर्तन लाने होगें। देश में महाशक्तियों की, बहुराष्ट्रीय कम्पनियों की एवं विदेशी पूंजी की भूमिका का भी उल्लेख आवश्यक हो जाता है, क्योंकि विदेश नीति की प्राथमिकतायें, स्वयं स्वतंत्र रूप से निर्धारित नहीं होती हैं। अनेक गुटनिरपेक्ष देशों के सम्मेलनों में यह अप्रिय-सत्य उभरकर आया है कि हमारे शासकगणों के हित और जनता के हितों के मध्य खाई बढ़ती ही गयी है, यह इस बात से प्रमाणित होता है कि सन् 1947 में भारत में यूरोपीय साम्राज्यवादियों का कुल पूंजी नियोजन मात्र 200 करोड़ रु. था, और सन् 65 तक आते-आते बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का, या अन्य विदेशी व्यक्तियों की सम्पूर्ण पूंजी नियोजन की राशि दो हजार पाँच सौ करोड़ रु. हो जाती है। दुर्भाग्यवश हमारे बुद्धिजीवियों ने इन सभी राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं का वर्णनात्मक चित्र ही प्रस्तुत किया जिससे भ्रांतियाँ व्याप्त होती गयीं। आज गुटनिरपेक्षता की नीति की यही सार्थकता हो सकती है कि गुटनिरपेक्ष देशों को एक मंच पर लाया जाए और समग्ररूप से वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था में आधारभूत परिवर्तन की माँग की जाए एवं यह स्पष्ट हो कि वे अपने देशों का कच्चा माल पश्चिमी देशों को अपनी शर्तों पर देगें। वैसे ही, जैसे तेल उत्पादक देशों ने अमेरिका से सौदेबाजी करके मध्यपूर्व एशिया के संदर्भ में उसको अपनी नीति में परिवर्तन के लिये बाध्य किया। पश्चिम के देश अपने यहाँ तेल होते हुए भी, उस तेल को निकालने का कार्य सुचारू रूप से नहीं कर रहे है—मात्र इस कारण से कि यह कार्य अत्यन्त मंहगा पड़ेगा। मध्यपूर्व एशिया से तेल लेने की अपेक्षा इस आर्थिक शोषण की जड़े अत्यन्त गहरी हैं। इसके समापन के बिना विदेशनीति हमारे लिये राष्ट्रीय हितों के परिप्रेक्ष्य में वाञ्छनीय नहीं सिद्ध हो सकती। सौदेबाजी आज व्यक्तिगत नहीं हो सकती, वह सामाजिक ही होगी तभी हम सुदृढ़ व सुस्पष्ट विदेशनीति, जिसका अभाव अभी तक रहा है, उसे भविष्य में सम्भव बना सकेंगे। इसके अभाव में विदेशनीति व्यवस्थित, स्पष्ट और सार्थक हो सकेगी यह एक अन्य भ्रांति को पोषित करना होगा। एक अव्यवस्थित देश व्यवस्थित विदेशनीति की कल्पना नहीं कर सकता। ■

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रीड़ा जगत

■ क्रिकेट

● भारत-पाकिस्तान टेस्ट श्रृंखला— ● 20 जनवरी 83 को करांची में खेले गये चतुर्थ व अन्तिम एक दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय मैच में पाकिस्तान ने भारत को आठ विकेटों से पराजित किया। अन्तिम स्कोर—भारत : 6 विकेट पर 197 रन; पाकिस्तान : 2 विकेट पर 198 रन। इस प्रकार पाकिस्तान ने एक दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय मैच की श्रृंखला 3-1 से जीती। ● 14 जनवरी से हैदराबाद (सिन्ध) में सम्पन्न चतुर्थ क्रिकेट टेस्ट में पाकिस्तान ने भारत को एक पारी व 19 रनों से हराया। अन्तिम स्कोर—पाकिस्तान : 3 विकेट पर 581 रन; भारत : 189 व 273 रन। पाकिस्तान के जावेद मियादाद (अविजित 285 रन) व मुदस्सर नजर (231 रन) ने तीसरे विकेट की साझेदारी में 451 रन का टेस्ट क्रिकेट कीर्तिमान स्थापित किया। ● 3 जनवरी से फैसलाबाद में खेले गये तृतीय क्रिकेट टेस्ट में पाकिस्तान ने भारत को 10 विकेट से पराजित किया। अन्तिम स्कोर—भारत : 372 व 286 रन; पाकिस्तान : 652 व बिना क्षति के 10 रन। ● 31 दिसम्बर 82 को लाहौर में खेले गये तृतीय एक दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय मैच को भारत ने सीमित ओवरों में बेहतर खेल प्रदर्शन कर जीता। अन्तिम स्कोर—पाकिस्तान : 3 विकेट पर 252 रन (33 ओवर में) ; भारत : 4 विकेट पर 193 रन (27-ओवर में) ● 28 दिसम्बर से करांची में सम्पन्न द्वितीय क्रिकेट टेस्ट में पाकिस्तान ने भारत को एक पारी व 86 रनों से पराजित किया। अन्तिम स्कोर—भारत : 169 व 197 रन; पाकिस्तान : 452 रन।

● इंग्लैण्ड-ऑस्ट्रेलिया टेस्ट श्रृंखला— ● 26 दिसम्बर से मेलबर्न में सम्पन्न चतुर्थ क्रिकेट टेस्ट में इंग्लैण्ड ने अत्यन्त रोमांचपूर्ण ढंग से ऑस्ट्रेलिया पर 3 रनों से विजय पायी। अन्तिम स्कोर—इंग्लैण्ड : 284 व 294 रन; आस्ट्रेलिया : 287 व 288 रन। ● 2 जनवरी से सिडनी में खेला गया पाँचवा क्रिकेट टेस्ट अनिर्णीत रहा। अन्तिम स्कोर—ऑस्ट्रेलिया : 314 व 382 रन; इंग्लैण्ड—237 व 7 विकेट पर 314 रन। आस्ट्रेलिया ने यह श्रृंखला 2-1 से जीतकर छह वर्षों पश्चात एशेज पर पुनः कब्जा किया।

● 1 जनवरी को कलकत्ता में सम्पन्न फाइनल मैच में बम्बई ने दिल्ली को 59 रनों से पराजित कर विल्स ट्रॉफी पर पुनः कब्जा कर लिया। अन्तिम स्कोर—बम्बई : 158 रन; दिल्ली : 99 रन। ● 1 जनवरी से इन्दौर में खेले गये फाइनल मैच में मध्य क्षेत्र ने प्रथम पारी में रनों की बढ़ोतरी से विजय मर्चेन्ट ट्रॉफी जीती। अन्तिम स्कोर—उत्तर क्षेत्र : 319 व 7 विकेट पर 203 रन; मध्य क्षेत्र : 376 व 5 विकेट पर 98 रन।

■ फुटबॉल

● डी. सी. एम. ट्रॉफी—3 जनवरी को नई दिल्ली के अंबेडकर स्टेडियम में सम्पन्न फाइनल मैच के दूसरे चरण में द. कोरिया की इनचियोन विश्वविद्यालय ने मोहम्मडन स्पोर्टिंग को 3—0 से पराजित कर डी. सी.एम. ट्रॉफी जीतने का श्रेय प्राप्त किया।

■ हॉकी—

● 31 दिसम्बर को नई दिल्ली के शिवाजी स्टेडियम में खेले गये फाइनल में ब्राम्हण एंग्लो वैदिक इन्टर कालेज (मेरठ) ने एन. आई. एस. ग्रामीण, पटियाला को 3—0 से पराजित कर पुनः जूनियर नेहरू हॉकी टूर्नामेन्ट का खिताब जीता। ● 30 दिसम्बर को ग्वालियर में सम्पन्न फाइनल मैच में आर्मी सर्विस कोर, जलन्धर ने ए. एस. सी., जलन्धर को 1—0 से हरा कर सिन्धिया स्वर्ण कप जीत लिया।

■ टेनिस—

● 10 जनवरी को शिकागो में सम्पन्न फाइनल मैच में इवान लैन्डल ने जिमी कोनर्स को 4—6, 6—4, 7—5 6—4 से पराजित कर चैलेन्ज ऑव चैम्पियन टूर्नामेन्ट जीता। ● 10 जनवरी को लन्दन में खेले गये फाइनल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैच में पिछले विजेता ग्रानथार्ड व टरोक्जी ने गॉटफ्रीड व रमीरेज को 6—3, 7—5, 7—6 से पराजित कर डब्लू. सी. टी. विश्व युगल टेनिस चैम्पियनशिप पर कब्जा बनाये रखा। ● 1 जनवरी को गौहाटी में खेले गये फाइनल मैच में अमित भार्गव अजय श्रीनिवास को 6—2 6—2 से पराजित करके तथा बिना खेले विद्या प्रिया को जूनियर राष्ट्रीय टेनिस प्रतियोगिता का क्रमशः बालक व बालिका वर्ग की एकल चैम्पियन प्राप्त करने का श्रेय मिला।

■ बैडमिन्टन

● 10 जनवरी को पुणे में सम्पन्न फाइनल मैच में मंजीत कौर ने लोपा दास को 11—1, 11—6 से तथा के. डी. सेठ ने एम. जी. शर्मा को 15—6, 15—11 से पराजित कर सातवें जूनियर व मिनी राष्ट्रीय बैडमिन्टन प्रतियोगिता का क्रमशः बालिका व बुजुर्ग का एकल खिताब जीता। ● दिसम्बर-जनवरी में सम्पन्न क्षेत्रीय बैडमिन्टन प्रतियोगिता के विजेता—दक्षिणी क्षेत्र (वेलगांव) —पुः पार्थो ग. गुंली, म. : राधिका बोस; पूर्वी क्षेत्र (बरेली) — पुः सैयद मोदी, म.: अमिता कुलकर्णी; पश्चिमी क्षेत्र (बम्बई)—पुः सैयद मोदी, म.: अमिता कुलकर्णी। ● 16 जनवरी को ताईपे (ताइवान) में सम्पन्न ताइपे मास्टर्स बैडमिन्टन चैम्पियनशिप के फाइनल मैच में इचुक सुगिआरतो (इन्डोनेशिया) ने प्रकाश पादूकोन (भारत) को 15—10, 15—8 से तथा किर्स्टेन लारसेन (डेनमार्क) ने शेरी लिऊ (ताइवान) को 11—3, 11—5 से पराजित कर क्रमशः पुरुष व महिला का एकल खिताब जीता।

■ वॉलीबॉल —

● 31 दिसम्बर को भोपाल में सम्पन्न फाइनल मैच में हरियाना ने उत्तर प्रदेश को 15-13, 8-15, 15-9, 15-5 से तथा केरल ने रेलवे को 12—15, 15--10, 15-10,17—15 से पराजित कर राष्ट्रीय वॉलीबॉल प्रतियोगिता का क्रमशः पुरुष व महिला वर्ग का खिताब जीता।

■ बास्टेकबॉल—

● 1 जनवरी को जमशेदपुर में खेले गये फाइनल मैच में पंजाब ने केरल को 64—46 अंक से तथा राजस्थान ने सेना को 66—65 अंक से पराजित कर तैंतीसवीं राष्ट्रीय बास्केटबाल का क्रमशः महिला व पुरुष वर्ग का खिताब जीता।

■ टेबिल टेनिस

● 9 जनवरी को कानपुर में सम्पन्न फाइनल मैच में मनमीत सिंह ने रजत कठूरिया को 18—21, 21—15, 21—18, 21—19, तथा इन्दु पुरी ने स्निग्धा मेहता को 21—16, 21—12, 21—12 से पराजित कर अखिल भारतीय सिंघानिया इनामी टूर्नामेन्ट का क्रमशः पुरुष व महिला वर्ग का एकल खिताब जीता।

■ शतरंज

● 15 से 31 दिसम्बर तक नई दिल्ली में सम्पन्न ग्यारह चक्रीय भीलवाड़ा अन्तर्राष्ट्रीय शतरंज टूर्नामेन्ट में दोर्फमैन, कुप्रेचिक और ताइमानोव (तीनो रूसी ग्रेंडमास्टर) ने प्रथम तीन स्थान जीतने का श्रेय प्राप्त किया। भारत के दिबेन्दु बरुआ व प्रवीण थिप्से अन्तर्राष्ट्रीय मास्टर की उपाधि हासिल करने में सफल हुए। ● जनवरी में हैदराबाद में सम्पन्न एशियन मास्टर्स शतरंज टूर्नामेन्ट में टी. एन. परमेश्वरन, प्रवीण थिप्से व रविकुमार तीनों ने बराबर $8\frac{1}{2}$ अंक प्राप्त कर संयुक्त विजेता बने। ● जनवरी में नई दिल्ली में सम्पन्न जूनियर राष्ट्रीय चैम्पियनशिप सुधाकर बाबू ने 8 अंक पाकर जीती। दिबेन्दु बरुआ उप विजेता रहे। ● हैदराबाद में सम्पन्न सब जूनियर राष्ट्रीय शतरंज प्रतियोगिता जीतने का श्रेय नीरज कुमार मिश्र को मिला। ● सोवियत संघ के राफेल वग्नायन को लन्दन में आयोजित 85वें हेस्टिंग्स शतरंज प्रतियोगिता जीतने का श्रेय मिला।

■ गोल्फ

● लक्ष्मण सिंह व कवलजिंदर सिंह को राष्ट्रीय अमेच्योर गोल्फ चैम्पियनशिप का क्रमशः सीनियर व जूनियर वर्ग का खिताब प्राप्त हुआ।

■ विविधा

● विश्व मुक्केबाज एसोसिएशन ने विश्व के जूनियर वैल्टरवेट चैम्पियन आरोज प्रायर को 1982 का सर्वश्रेष्ठ मुक्केबाज घोषित किया। ● विश्व के नामी खेल पत्रकारों ने निम्नलिखित को 1982 का सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी घोषित किया : 1. पाओलो रोसी, फुटबॉलर (इटली), 2. व्लादिमीर सालेनिकोव, तैराक, (सोवियत संघ), 3 मेरिटा कचि, धावक, (पूर्व जर्मनी), 4. डिली थॉमसन, डेकथलीट (ब्रिटेन) ● 1988 में सिओल में सम्पन्न होने वाले 24वें ओलम्पिक खेलों के लिये टाइगर (चीता) को प्रतीक चिह्न निर्धारित किया गया है। ■ ■

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिविल सर्विस प्रारम्भिक परीक्षा
विशिष्ट परिशिष्ट

सामान्य विज्ञान पर वस्तुपरक परीक्षण (1)

1. पहाड़ी पर चढ़ते समय मनुष्य झुक कर चलता है जिससे उसके शरीर का गुरूत्व केन्द्र—
(अ) ऊँचा हो जाये (ब) शून्य हो जाये
(स) नीचा हो जाये
(द) पैरों की सीध में ऊँचा हो जाय

2. अंतरिक्ष यात्रियों को आकाश दिखलायी पड़ता है—
(अ) नीला (ब) काला
(स) सफेद (द) लाल

3. मोटर चालक के सामने पीछे की वस्तुओं को देखने के लिये कौन सा दर्पण लगा रहता है ?
(अ) अवतल दर्पण (ब) समतल दर्पण
(स) उत्तल दर्पण (द) इनमें से कोई नहीं

4. 'डेंगू' ज्वर होता है—
(अ) बैक्टीरिया द्वारा (ब) वायरस द्वारा
(स) मच्छरों द्वारा (द) उपर्युक्त सभी के द्वारा

5. ठोस पदार्थों में निश्चित होता है—
(अ) आयतन (ब) आकार
(स) आयतन तथा आकार
(द) न आयतन और न आकार

6. गर्मी के दिनों में सुराही का पानी ठंडा हो जाने का कारण है—
(अ) वाष्पन (ब) शीतलन
(स) क्वथन (द) क्वथन और वाष्पन

7. जैसे-जैसे पृथ्वी से ऊपर जाते है, वायु का ताप—
(अ) घटता है (ब) बढ़ता है
(स) स्थिर रहता है
(द) कभी घटता है, कभी बढ़ता है

8. अधिक जाड़ा पड़ने पर पक्षी अपने पंख फुला लेते है, क्योंकि—
(अ) उनका आकार बड़ा बन जाता है
(ब) ऐसा करके वायु भर लेते हैं जो उष्मा की कुचालक है
(स) यह उनका पारिस्थितिक लक्षण हैं
(द) उपर्युक्त सभी कारण सत्य है

9. चलती हुई ट्रेन के अन्दर मनुष्य द्वारा गेंद ऊपर उछालने पर गेंद—
(अ) हाथ के आगे गिरेगी
(ब) हाथ के पीछे गिरेगी
(स) हाथ में गिरेगी
(द) किसी भी प्रकार से गिर सकती है

10. यदि किसी व्यक्ति के चश्में में अवतल लेन्स लगा है तो उसकी दृष्टि में दोष है—
(अ) निकट दृष्टि (ब) दूर दृष्टि
(स) जरा दृष्टि (द) दृष्टि वैषम्य

11. घड़ी में चाभी भर देने पर उसमें—
(अ) यांत्रिक स्थितिज ऊर्जा संचित हो जाती है
(ब) उष्मीय ऊर्जा संचित हो जाती है
(स) यांत्रिक गतिज ऊर्जा संचित हो जाती है
(द) विद्युतीय ऊर्जा संचित हो जाती है

12. हीरे की चमक का प्रमुख कारण है—
(अ) ध्रुवण (ब) व्यतीकरण
(स) अपवर्तन (द) पूर्ण आन्तरिक परावर्तन

13. तारों के टिमटिमाने का कारण है—
(अ) परावर्तन (ब) अपवर्तन
(स) विक्षेपण (द) उपरोक्त में से कोई नहीं

14. आकाश में उड़ती हुई पतंग को पृथ्वी से देखने पर वह—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(अ) वास्तविक से अधिक ऊँचाई पर प्रतीत होगी
(ब) वास्तविक से कम ऊँचाई पर प्रतीत होगी
(स) वास्तविक ऊँचाई पर प्रतीत होगी
(द) ऊँचाई सूर्य की स्थिति पर निर्भर करेगी

15. अधोलिखित में उष्मा का कुचालक है—
(अ) अम्ल (ब) शुद्ध जल
(स) कच्चा लोहा (द) उपर्युक्त में कोई नहीं

16. विद्युत परिपथ में ताँबे के तार प्रयुक्त किये जाने का कारण है—
(अ) इसका प्रतिरोध कम होता है
(ब) इसका प्रतिरोध अधिक होता है
(स) यह अधिक उष्मा उत्पन्न करता है
(द) इसका प्रतिरोध कम या अधिक प्रवाह के अनुसार होता रहता है

17. पीले रंग की कमीज नीले रंग के काँच से देखने पर किस रंग की लगेगी ?
(अ) काली (ब) पीली
(स) नीला (द) हरी

18. लोहे के टुकड़े का भार मिट्टी के तेल की अपेक्षा पानी में—
(अ) अधिक होता है (ब) कम होता है
(स) अनिश्चित होता है (द) समान होता है

19. सूर्य से पृथ्वी तक प्रकाश को आने में लगभग समय मिलता है—
(अ) 8 मिनट और 20 सेकेण्ड
(ब) 9 मिनट
(स) 8 सेकेण्ड
(द) 6 मिनट और 15 सेकेण्ड

20. घड़ीसाज घड़ी के छोटे पुर्जे देखने के लिए कौन सा लेन्स प्रयुक्त करते है—
(अ) उत्तल (ब) अवतल
(स) युग्म (द) समतल

21. कमरे में यदि रेफ्रीजिरेटर का दरवाजा खुला छोड़ दिया जावे तो—
(अ) कमरा कुछ गर्म हो जायेगा
(ब) कमरा कुछ ठंडा हो जायेगा
(स) कमरे के तापक्रम में कोई परिवर्तन नही होगा
(द) उपरोक्त सभी कथन असत्य है

22. सड़कों पर प्रकाश के लिये प्रयुक्त बल्व सम्बन्धित होते है—
(अ) समान्तर क्रम और श्रेणी क्रम दोनों में
(ब) श्रेणीक्रम
(स) समान्तर क्रम में
(द) इनमें से कोई नहीं

23. जब वर्षा अथवा बर्फ गिरने वाली होती है तो वायु का तापक्रम—
(अ) सदैव घट जाता है
(ब) सदैव बढ़ जाता है
(स) अपरिवर्तित रहता है
(द) यदि 100°c से कम है तो घटता है

24. घरों में प्रकाश के लिए प्रयुक्त बल्व सम्बन्धित होते है—
(अ) श्रेणीक्रम में (ब) समान्तर क्रम में
(स) समान्तर और श्रेणी दोनो क्रमों में
(द) इनमें से कोई नहीं

25. लोहे का टुकडा पारे में—
(अ) तैरेगा (ब) डूब जायेगा
(स) आधा डूबेगा (द) अधिक ताप पर डूबेगा

26. बैरोमीटर में पारे की जगह पानी भरने पर नली की लम्बाई—
(अ) अधिक रखनी होगी (ब) अपरिवर्तित होगी
(स) कम रखनी होगी (द) घट या बढ़ सकती है

27. पहाड़ पर बैरोमीटर को ले जाने से उसमें पारे का तल गिर जाता हैं, क्योंकि—
(अ) पहाड़ पर वायु का दाब अधिक होता है
(ब) पहाड़ पर वायु का दाब कम हो जाता है
(स) पहाड़ पर आद्रता होती है
(द) पहाड़ पर तेज हवायें चलती है

28. सफेद रंग की वस्तुएं गर्मी में सुविधाजनक और शीतल लगती है, क्योंकि—
(अ) ये वस्तुएं उष्मीय विकिरण बहुत कम सोखती है
(ब) ये अधिक उष्मा सोखती है
(स) इसमें सभा रंग मिले रहते है
(द) इनमें वाष्पन की क्रिया सरलता से होती है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

29. नदी की अपेक्षा समुद्र के जल में तैरना आसान होता है, क्यों कि—
(अ) समुद्र का क्षेत्रफल बड़ा होता है
(ब) समुद्र के जल का घनत्व अधिक होता है
(स) समुद्र के जल का घनत्व कम होता है
(द) समुद्र के जल की श्यानता कम होती है

30. किसी ठोस का ताप बढ़ने से उसका आयतन बढ़ जाता है। इसका कारण है—
(अ) अणुओं के बीच की औसत दूरी का बढ़ना
(ब) अणुओं का आकार बढ़ना
(स) अंतर-आणविक बल का बढ़ना
(द) अंतर-आणविक बल का घटना

31. रक्त-चाप किस यन्त्र से मापा जाता है ?
(अ) बैरोमीटर (ब) एर्मामीटर
(स) स्फिग्मो-मैनोमीटर (द) उपरोक्त कोई नहीं

32. पत्तियों का हरा रंग निम्न के कारण होता है—
(अ) रन्ध्र (ब) क्लोरोफिल
(स) प्रकाश के रंग के कारण
(द) तीनो के कारण

33. विटामिन 'C' को कहते है—
(अ) थायमिन (ब) राइबो फ्लाविन
(स) निकोटिनिक एसिड (द) एसकोरबिक एसिड

34. बर्फ की आइसक्रीम और बर्फ के पानी के तापक्रम में—
(अ) लगभग समानता होती है
(ब) जल का तापमान अधिक होता है
(स) आइसक्रीम का तापमान अधिक होता है
(द) कोई भी अधिक या कम हो सकता है

35. प्रेशर कुकर में खाना जल्दी बनने का कारण यह है कि—
(अ) प्रेशर कुकर से गर्मी बाहर नहीं जाने पाती है
(ब) दाब अधिक होने से पानी का क्वथनांक कम हो जाता है
(स) दाब अधिक होने से पानी का क्वथनांक बढ़ जाता है
(द) दाब अधिक होने से खाना 100°c पर पकता है

36. मछलियाँ शीत में तालाबों के पानी के जम जाने पर भी जीवित रहती है, क्योंकि—
(अ) मछलियों के शरीर की बनावट शीत सहन करने की शक्ति रखती है
(ब) मछलियों को शीत में रहने की आदत होती है
(स) तालाबों के नीचे का जल का ताप 4°c से कम होता है
(द) मछलियों को ऊपर की ठंडी हवा नहीं लग पाती

37. दाब बढ़ने पर द्रव का क्वथनांक बढ़ जाता है। और दाब बढ़ने पर बर्फ का गलनांक—
(अ) बढ़ जाता है (ब) स्थिर रहता है
(स) कम हो जाता है
(द) पहले कम रहता है और फिर बढ़ जाता है

38. ध्वनि तरंग की चाल—
(अ) ठोस और द्रव की अपेक्षा ठोस में अधिक होती है
(ब) ठोस, द्रव तथा गैस सभी में समान होती है
(स) निर्वात में सर्वाधिक होती है
(द) ठोस तथा द्रव की अपेक्षा गैस में अधिक होती है

39. चुम्बक को नष्ट किया जा सकता है—
(अ) गर्म करके या पीट कर
(ब) बर्फ के पानी में डाल कर
(स) ठण्डा करके
(द) लोहे और जस्ते के युग्म मिश्रण के सम्पर्क में लाकर

40. एक स्वतंत्र रूप से लटका हुआ चुम्बक कहाँ पर क्षैतिज होगा—
(अ) पृथ्वी के ध्रुवों पर
(ब) भूमध्य रेखा पर
(स) प्रत्येक स्थान पर
(द) चन्द्रमा पर

41. 'प्रकाश वर्ष' कहते हैं—
(अ) प्रकाश द्वारा एक वर्ष में तय की गयी दूरी को
(ब) प्रकाश के वेग को
(स) सूर्य के प्रकाश को पृथ्वी तक पहुँचने में लगे समय को
(द) उपरोक्त सभी कथन असत्य हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

42. रेलवे में लाल सिगनल का प्रयोग किया जाता है, क्योंकि —
(अ) लाल रंग देखने में अच्छा लगता है
(ब) लाल रंग सुविधा पूर्वक विचलित हो जाता है
(स) लाल रंग का प्रकीर्णन बहुत कम होता है
(द) लाल रंग का प्रकीर्णन बहुत अधिक होता है

43. सर्वाधिक विचलित होने वाला रंग है —
(अ) लाल (ब) बैंगनी
(स) नीला (द) हरा

44. विद्युत बल्व के अन्दर गैस होती है—
(अ) नाइट्रोजन (ब) आर्गन और नाइट्रोजन
(स) आर्गन और आक्सीजन (द) केवल आर्गन

45. जेट इंजन के कार्य करने का आधार संवेग संरक्षण है, तो बताइए राकेट के आगे बढने का सिद्धांत किस पर आधारित है ?
(अ) न्यूटन के जड़त्व के नियम पर
(ब) न्यूटन के बल के नियम पर
(स) न्यूटन के क्रिया तथा प्रतिक्रिया के नियम पर

46. अंतरिक्ष में जानें वाले सर्वप्रथम मानव यूरी गागरिन थे, बताइए वह किस देश निवासी है ?
(अ) अमेरिका (ब) रूस
(स) फ्रांस (द) भारत

47. अंतरिक्ष में सर्वप्रथम कृत्रिम उपग्रह भेजने का श्रेय रूस को है, उस उपग्रह का नाम बताइए।
(अ) एक्सप्लोटर-1 (ब) स्पुटनिक-1
(स) मैग्लीना (द) आर्यभट

48. 19 अप्रैल 1975 को बियर्स लेक पास स्थित सोवियत प्रक्षेपण केन्द्र से सोवियत इंटर कास्मास राकेट द्वारा प्रथम भारतीय उपग्रह 'आर्यभट' का प्रक्षेपण हुआ था। 10, अप्रैल, 1982 को अमेरिकी डेल्टा राकेट से 'इन्सैट-1 ए' को अंतरिक्ष में भेजा गया। बताइए इसे किस केन्द्र से प्रक्षेपित किया गया ?
(अ) बियर्स लेक (ब) केप केनेवरल (फ्लोरिडा)
(स) पीन्या (बंगलूर) (द) श्री हरिकोटा

49. किसी स्थान की ऊँचाई आल्टीमीटर से नापते हैं। बैरोग्राफ से ज्ञात करते हैं—
(अ) वायु की आद्रता
(ब) वायुमण्डलीय दाब
(स) वायु का भार
(द) ऊंचाई के साथ दाब में परिवर्तन

50. पहाड़ों पर प्रायः नाक से खून रिसने लगता है। इसका कारण है।
(अ) शरीर की रक्त कोशिकाओं (blood Capillaries) का दाब वायुमण्डलीय दाब से अधिक होता है
(ब) पहाड़ों पर जमीन की अपेक्षा दाब अधिक होता है।
(स) ऊंचाइयों पर रक्त का दाब अधिक हो जाता है।

51. पानी में डूबी हुई पेंसिल तिरछी दिखायी पड़ती है। इसका कारण है—
(अ) परावर्तन (ब) अपवर्तन
(स) विकिरण (द) प्रकीर्णन

52. सूर्योदय तथा सूर्यास्त के समय लाल रंग दिखाई देने का कारण है—
(अ) अवशोषण (ब) अपवर्तन
(स) प्रकीर्णन (द) परावर्तन

53. आकाश नीला दिखाई देने का कारण है—
(अ) वायुमंडल द्वारा छोटी तरंगें बड़ी तरंगों की अपेक्षा अधिक अवशोषित हो जाती हैं।
(ब) हवा के अणुओं द्वारा छोटी तरंगें बड़ी तरंगों की अपेक्षा अधिक प्रकीर्णित (Scattered) हो जाती हैं।
(स) आकाश केवल नीला रंग ही परावर्तित करता है।

54. एक जहाज नदी से समुद्र में प्रवेश करता है, वह—
(अ) कुछ ऊपर उठेगा (ब) कुछ डूबेगा
(स) न तो डूबेगा और न ही उठेगा

55. गैस का गुब्बारा कुछ ऊँचाई पर जाकर ऊपर उठना बन्द हो जाता है। यह उस दशा में होता है जबकि गुब्बारे में गैस का घनत्व—
(अ) वायुमण्डलीय गैसों के घनत्व से अधिक हो जाता है
(ब) वायुमण्डलीय गैसों के घनत्व के बराबर हो जाता है
(स) वायुमण्डलीय गैसों के घनत्व से कम हो जाता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

56. हिमशैल (Iceberg) पानी पर तैरता रहता है। इसका कारण है —
(अ) इसकी रचना पानी के तल पर ही होती है।
(ब) जमने पर बर्फ का घनत्व पानी के घनत्व से कम हो जाता है।
(स) इन पर कम भार लादा जाता है।

57. पैराशूट द्वारा भारी वस्तुओं को भी बिना हानि के वायुयान से धीरे-धीरे नीचे उतार सकते हैं। इसका कारण यह है कि—
(अ) इसमें लगी छतरा के खुलने पर वायु का अवरोध तथा उछाल लगभग उसके-भार के बराबर हो जाते हैं।
(ब) यह स्वयं हल्के पदार्थ का बना होता है
(स) गिराई गई वस्तुओं का घनत्व हवा के घनत्व के लगभग बराबर होता है।

58. लालटेन में मिट्टी का तेल बत्ती के सहारे ऊपर चढ़ जाता है। इसका कारण है—
(अ) बत्ती में होकर-तेल का प्रसरण
(ब) मिट्टी के तेल का तल तनाव
(स) बत्ती द्वारा मिट्टी के तेल का आकर्षित करना

59. साबुन से कपड़े साफ हो जाने का कारण है—
(अ) साबुन द्वारा विलयन का तल तनाव कम कर देना
(ब) साबुन द्वारा गंदगी का शोषण
(स) साबुन द्वारा विलयन को प्रदत्त शक्ति

60. मशीनों में तेल का उपयोग उसके दक्षतापूर्ण कार्य करने के लिए किया जाता है—यह क्रिया निम्न को कम कर देने से संभव होती है—
(अ) जड़त्व (ब) घर्षण
(स) संवेग (द) विकर्षण

61. एक अंतरिक्ष यान चन्द्र तल पर उतरने के पश्चात पुनः पृथ्वी की ओर लौटता है। यात्रा में पृथ्वी पर पहुँचते समय यान का वेग, चन्द्रमा पर पहुँचते समय के वेग से कहीं अधिक होता है, क्योंकि—
(अ) पृथ्वी का गुरुत्वीय आकर्षण बल चन्द्रमा के आकर्षण बल से कहीं अधिक होता है
(ब) पृथ्वी पर वायुमंडल है जबकि चन्द्रमा पर कोई वायुमंडल नहीं है
(स) उपरोक्त कथन असत्य है क्योंकि दोनों वेग समान होते हैं

62. पृथ्वी पर पहुँचते समय अन्तरिक्ष यान का ताप अत्यधिक बढ़ जाता है जबकि चन्द्र तल पर उतरते समय ताप नहीं बढ़ता है। इसका कारण है—
(अ) पृथ्वी का चन्द्रमा की अपेक्षा अधिक ताप
(ब) पृथ्वी का चन्द्रमा की अपेक्षा सूर्य के अधिक निकट होना
(स) पृथ्वी पर वायुमंडल का होना, जो चन्द्रमा पर नहीं है

63. ऊष्मा (heat) का ताप (temperature) से अत्यंत निकट सम्बन्ध है। ऊर्जा का मूल स्रोत बताइए—
(अ) पेट्रोलियम (ब) कोयला
(स) सूर्य (द) कोई नहीं

64. जलीय जन्तु अत्यधिक जाड़ों में भी जीवित रह पाते हैं। इसका कारण है—
(अ) ऊपरी पृष्ठ पर पानी का न जमना
(ब) तली में पानी का न जमना
(स) पानी पर सर्दी का प्रभाव न पड़ना

65. पारे का तापमापी (थर्मामीटर) में प्रयोग करने का मूल कारण है—
(अ) इसका चमकदार होना
(ब) इसका ऊष्मा का अच्छा चालक होना तथा ताप के साथ आयतन का समरूप होना
(स) इसका धात्विक होना तथा सरलता पूर्वक मुक्त हो सकना

66. पारा दाबमापी (बैरोमीटर) में मूलतः इसलिए प्रयुक्त होता है कि—
(अ) यह ऊष्मा का अच्छा चालक है
(ब) इसका ताप के साथ प्रसार एक समान तथा अधिक होता है
(स) इसका वाष्प दाब कम होता है तथा घनत्व अधिक होता है।

67. गरम चिमनी पर ठण्डे पानी की बूँद गिरने से वह चटक जाती है, क्योंकि—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(अ) उस स्थान पर कांच प्रसारित होता है तथा पानी वाष्प में परिवर्तित हो जाता है

(ब) उस स्थान पर चिमनी संकुचित होती है

(स) पानी का वाष्पीकरण होता है और उस स्थान से ऊष्मा ग्रहण करता है

68. ठण्डे प्रदेशों में जाड़ों की रातों में प्रायः पानी के पाइप फट जाते हैं क्योंकि—

(अ) पानी के जमने पर उसका दाब बढ़ जाता है।

(ब) पानी के जमने पर उसका आयतन बढ़ जाता है

(स) पानी के जमने पर उसका आयतन कम हो जाता है

69. दो बर्फ के टुकड़ों को परस्पर एक दूसरे पर रखकर दाबने से वे चिपक जाते हैं। इसका कारण यह है कि—

(अ) बर्फ के टुकड़ों के बीच पानी आसंजक का कार्य करता है

(ब) वायुमंडलीय दाब उन्हें पृथक नहीं होने देता।

(स) दाब के कारण टुकड़ों के बीच बर्फ का गलनांक घट जाता है और पानी बन जाता है जो दाब हटाने पर पुनः जम जाता है और टुकड़े चिपक जाते हैं

70. बरसात के मौसम में ताप काफी अधिक होने पर भी गीले कपड़े आसानी से नहीं सूख पाते हैं। इसका कारण है—

(अ) कपड़े हवा से नमी सोखते हैं

(ब) आपेक्षिक आर्द्रता अधिक होती है

(स) आपेक्षिक आद्रता कम होती है

71. गिलास में ठंडा पानी डालने पर उसकी बाहरी दीवारें धुंधली हो जाती हैं क्योंकि—

(अ) ठण्डी धातुओं में चमक नहीं रहती

(ब) गिलास के आस-पास की हवा का ताप कम हो जाता है जिससे वह उस समय उपस्थित जल वाष्प के कारण ही लगभग संतृप्त हो जाती है और गिलास की बाहरी दीवारों पर द्रवित होने लगती हैं

(स) ठंडा पानी गिलास से बाहर की ओर निकल जाता है

72. जाड़ों में हम ऊनी कपड़ों का प्रयोग करते इसका कारण है—

(अ) यह ऊष्मा के कुचालक होते हैं

(ब) यह ऊष्मा के अच्छे अवशोषक होते हैं

(स) यह ठण्ड के अच्छे अवशोषक होते हैं

73. दो पतले कम्बल उनकी संयुक्त मोटाई के बराबर मोटे कम्बल की अपेक्षा अधिक गर्म होते हैं क्योंकि

(अ) मोटा कम्बल बनाने में उसकी गुणता न हो जाती है

(ब) उन दोनों के बीच हवा का स्तर बन जाता

(स) उनका पृष्ठ क्षेत्रफल बढ़ जाता है।

74. जाड़ों में सभी प्रायः रंगीन कपड़े पहनना पसन्द करते हैं क्योंकि यह ऊष्मा के अच्छे अवशोषक होते हैं। पर गर्मियों में सभी प्रायः सफेद कपड़े पहनते हैं क्योंकि—

(अ) यह ऊष्मा के कुचालक होते हैं

(ब) यह आकर्षक होते हैं

(स) यह ऊष्मा के बुरे अवशोषक होते हैं

75. ठण्डे प्रदेशों में झील आदि का पानी ऊपरी तल पर जमना प्रारम्भ करता है नीचे से नहीं। इसका कारण यह है कि—

(अ) पानी का घनत्व 4°c अधिकतम होता है। ताप के 4°c से नीचे गिरने पर घनत्व कम हो जाता है अतः पानी ऊपरी तल पर आ जाता है। यह क्रिया उस समय तक जारी रहती है। जब तक कि पानी जमने न लगे पर नीचे का पानी 4°c ताप पर बना रहता है

(ब) बर्फ ऊष्मा का कुचालक है।

(स) ऊपरी तल बाह्य वायुमंडल के सम्पर्क में रहने के कारण अधिक ठण्डा हो जाता है

76. मैदानी क्षेत्रों की अपेक्षा पहाड़ी क्षेत्र ठण्डे होते हैं क्योंकि—

(अ) पहाड़ों पर गुरुत्व का मान कम होता है

(ब) पहाड़ों पर हवा की विशिष्ट ऊष्मा होती है

(स) पहाड़ों पर दाब कम होता है और हवा का चलन (Circulation) अधिक होता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

7. आकाश में ऊँचाई पर उड़ते हुए पक्षी की पृथ्वी तल पर छाया नहीं पड़ती। इसका कारण है—
(अ) पक्षी का आकार पृथ्वी के आकार की तुलनामें बहुत छोटा है
(ब) प्रकाश किरणें पक्षी पर अभिलम्बवत पड़ती हैं
(स) पक्षी का आकार सूर्य की तुलना में अत्यन्त छोटा है।

8. पेरिस्कोप (Periscope) ऐसा उपकरण है जो काम आता है—
(अ) पानी में से बाहरी वस्तुओं को देखने के
(ब) पहाड़ों की ऊँचाई नापने के
(स) अत्यन्त सूक्ष्म वस्तुओं को देखने के

9. चन्द्र ग्रहण उस दशा में पड़ता है जबकि—
(अ) चन्द्रमा, सूर्य तथा पृथ्वी के बीच आ जाता है
(ब) पृथ्वी, सूर्य तथा चन्द्रमा के बीच आ जाती है
(स) सूर्य पृथ्वी तथा चन्द्रमा के बीच आ जाता है

10. सूर्य ग्रहण के समय—
(अ) चन्द्रमा, सूर्य तथा पृथ्वी के बीच आ जाता है
(ब) पृथ्वी, सूर्य तथा चन्द्रमा के बीच आ जाती है
(स) सूर्य, पृथ्वी तथा चन्द्रमा के बीच आ जाता है

11. एक मछली पानी में से पेड़ पर बैठी चिड़िया को देखती है। चिड़िया उसको वास्तविक दूरी—
(अ) पर ही दिखाई देगी
(ब) से अधिक दूरी पर दिखाई देगी
(स) से कम दूरी पर दिखाई देगी

12. सड़क के चौराहों पर स्वचालित यातायात नियंत्रक में वाहनों को रोकने के लिए लाल रंग के प्रकाश का उपयोग करते हैं जबकि उन्हें आगे बढ़ने के लिए हरे रंग के प्रकाश से संकेत देते हैं। इसका कारण है—
(अ) हरे रंग के प्रकाश को अधिक दूर तक देखा जा सकता है क्योंकि इसका प्रकीर्णन अथवा अवशोषण निम्नतम होता है
(ब) लाल रंग के प्रकाश का प्रकीर्णन कम से कम होता है—जिससे इसे अधिक दूर से देखा जा सकता है।
(स) लाल रंग का अनुभव कराता है जबकि हरा रंग सुरक्षा का।

83. चन्द्र तल पर होने वाला विस्फोट पृथ्वी पर नहीं सुना जा सकता है। इसका कारण है—
(अ) इसमें संशय नहीं कि विस्फोट की ध्वनि पृथ्वी तक पहुँच तो जायेगी परन्तु अत्यन्त क्षीण तीव्रता के कारण यह सुनाई नहीं पड़ेगी
(ब) ध्वनि इतनी अधिक दूरी तक नहीं जा सकती
(स) ध्वनि का संचरण निर्वात् व्योम (Space) में संभव नहीं है।

84. डायनेमो का कार्यकारी सिद्धांत 'विद्युत चुम्बकीय प्रेरण' पर आधारित है। डायनेमो का कार्य है—
(अ) यांत्रिक ऊर्जा को विद्युत ऊर्जा में परिवर्तित करना
(ब) विद्युत ऊर्जा को यांत्रिक ऊर्जा में परिवर्तित करना
(स) विद्युत ऊर्जा उत्पन्न करना

85. निम्न में से कौन सा मूल कण (Elementry particle) नहीं है—
(अ) इलेक्ट्रान (ब) प्रोट्रान
(स) न्यूट्रान (द) कोई नहीं

86. जब परमाणु का नाभिक दो या दो से अधिक हिस्सों में टूटता है तो इस क्रिया को कहते हैं—
(अ) नाभिकीय संलयन (ब) नाभिकीय विखंडन
(स) उर्ध्वपातन (द) असंलग्नता

87. न्यूक्लीय ऊर्जा द्रव्यमान के ऊर्जा में परिवर्तित होने से प्राप्त होती है। सर्वप्रथम 'द्रव्यमान-ऊर्जा सम्बन्ध' (mass-energy relation) की परिकल्पना वैज्ञानिक अल्बर्ट आइन्स्टाइन ने प्रस्तुत की थी। इस सिद्धांत का कौन सा सही प्रदर्शन है—
(अ) $E = mc^2$ (ब) $E = \frac{1}{2} mc^2$
(स) उपर्युक्त में से कोई नहीं

88. न्यूक्लियर रिएक्टर में प्रयुक्त की जाने वाली नियन्त्रक छड़ (Control-rods) कैडमियम की बनी होती हैं। बताइए, रिएक्टरों में मन्दक (Moderator) के रूप में निम्न में से किसका प्रयोग होता है?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(अ) भारी जल
(ब) कैडमियम की छड़ें
(स) साधारण जल

89. नाभिकीय विखंडन (nuclear fission) के प्रयोग द्वारा सर्वप्रथम प्रेक्षित किया था आटोहान तथा स्ट्रासमान ने । बताइए, इस प्रक्रिया का प्रयोग किसमें होता है—
(अ) परमाणु बम बनाने में
(ब) हाइड्रोजन बम बनाने में
(स) साधारण बम बनाने में

90. नाभिकीय संलयन (nuclear fusion) का उपयोग होता है—
(अ) परमाणु बम बनाने में
(ब) हाइड्रोजन बम बनाने में
(स) साधारण बम बनाने में
(द) न्यूट्रान बम बनाने में

91. आइसोटोप (समस्थानिक) होते हैं—
(अ) भिन्न परमाणु भारों के एक ही तत्व के परमाणु
(ब) एक ही परमाणु भार के भिन्न तत्वों के परमाण
(स) एक ही परमाणु भार के एक समान तत्व

92. आइसोबार (समभारी) के परमाणु होते हैं—
(अ) एक ही समान तत्व और एक ही परमाणु संस्था के
(ब) एक ही परमाणु भार के भिन्न तत्व
(स) एक से परमाणु भार के एक ही से तत्व

93. भारी हाइड्रोजन अभिक्रियाओं की क्रिया विधि (mechanism) को समझने के लिये दाव के रूप में काम में आता है । भारी पानी का प्रयोग परमाणु भट्टियों में किया जाता है । भारत में भारी पानी (D_2O) का निर्माण होता है—
(अ) भिलाई में (ब) दुर्गापुर में
(स) नांगल में (द) उपर्युक्त सभी स्थानों पर

94. पानी की अस्थाई कठोरता का कारण है—
(अ) कैल्सियम बाइकार्बोनेट
(ब) कैल्सियम और मैग्नीसियम के सल्फेट और क्लोराइड
(स) कैल्सियम और मैग्नीसियम के बाइकार्बोनेट

95. पानी की स्थाई कठोरता का कारण है—
(अ) कैल्सियम और मैग्नीसियम के बाइकार्बोनेट
(ब) कल्सियम और मैग्नीसियम के सल्फेट और क्लोराइड्स
(स) कैल्सियम और मैग्नीसियम के क्लोराइड्स

96. सोडियम नाइट्रेट को चिली साल्ट पीटर कहते हैं बताइए निम्नलिखित में से किस लवण को नील थोथा नाम से पुकारते हैं ?
(अ) कापर सल्फेट (ब) सिल्वर नाइट्रेट
(स) कापर नाइट्रेट (द) कॉपर एसीटेट

97. आतिशबाजी बनाने के काम में जो पदार्थ काम में आते है. वह है—
(अ) कैल्सियम नाइट्रेट (ब) बेरियम नाइट्रेट
(स) स्ट्रांशियम नाइट्रेट (द) मैग्नीशियम नाइट्रेट

98. लोहे के ऊपर जिंक की परत (Coating) चढ़ाने को कहते हैं—
(अ) इलेक्ट्रोप्लेटिंग (ब) गैल्वेनाइजिंग
(स) अपरूपण (द) इनमें से कोई नहीं

99. कार्बन का प्रकृति में पाया जाने वाला सबसे शुद्ध रूप हीरा है । बताइए निम्न में से कार्बन के किस रूप को गैस मास्क (gas masks) बनाने के काम में लाते हैं ?
(अ) काजल (ब) लकड़ी का कोयला
(स) कोक (द) गैस कार्बन

100. कार्बन के अपर रूपों में कार्बन का सबसे क्रियाशील रूप लकड़ी का कोयला है । बताइए निम्न में से कार्बन का सबसे कम क्रियाशील रूप क्या है ?
(अ) ग्रेफाइट (ब) कोयला
(स) गैस कार्बन (द) हीरा

101. पौधे कौन सी गैस अपने भोजन बनाने के काम में लाते हैं ?
(अ) आक्सीजन (ब) कार्बन मोनोक्साइड
(स) कार्बन डाइआक्साइड (द) नाइट्रोजन

102. चश्मों के काँच के निर्माण के काम में फ्लिण्ट ग्लास का उपयोग होता है । बताइए निम्न में से किस लोकप्रिय नाम से सोडियम सिलीकेट को जाना जाता है ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(अ) पाइरैक्स काँच (ब) फ्लिण्ट ग्लॉस
(स) वाटर ग्लॉस (द) हार्ड ग्लॉस

103. नाइट्रोजन की खोज लेवाइजर ने की थी । वायु-मण्डल में नाइट्रोजन की मात्रा होती है—
(अ) 20% (ब) 40%
(स) 60% (द) 80%

104. आक्सीजन जीवन दायिनी होती है पर नाइट्रोजन नहीं और इसमें प्राणियों की मृत्यु हो जाती है, क्योंकि—
(अ) यह रक्त की हीमोग्लोबिन को विषैली बना देती है ।
(ब) यह स्वस्थ पेशियों का विघटन करती है
(स) जन्तु बिना आक्सीजन के जीवित नहीं रह सकते ।

105. नाइट्रस ऑक्साइड को हंसाने वाली गैस भी कहते हैं। प्रयोगशाला में इसको बनाते हैं—
(अ) अमोनियम नाइट्रेट को गरम करके
(ब) सोडियम नाइट्रेट और अमोनियम सल्फेट के मिश्रण को गरम करके
(स) नाइट्रिक अम्ल को स्टेनस क्लोराइड द्वारा अवकरित करके

106. निम्न में से कौन सा सबसे अधिक विस्फोटक है—
(अ) नाइट्रोग्लिसरीन (ब) पिक्रिक अम्ल
(स) ट्राइ नाइट्रोबेंजीन (द) ट्राइ नाइट्रो टोल्यूईन

107. फोटोग्राफिक प्लेटों पर पतली कोटिंग होती है—
(अ) सिल्वर नाइट्रेट की
(ब) सिल्वर ब्रोमाइड की
(स) सिल्वर क्लोराइड की

108. सबसे उच्च गलनांक (Melting point) स्टील का होता है । निम्न में से सबसे कम गलनांक किसका होता है—
(अ) कास्ट आयरन (ब) रॉट आइरन
(स) स्टील (द) किसी का नहीं

109. लोहे में कार्बन मिलाया जाता है, जो—
(अ) कड़ापन बढ़ाता है
(ब) कड़ापन को घटाता है
(स) ऐसा कुछ भी नहीं करता

110. स्टेनलैस स्टील में होता है—
(अ) 1% क्रोमियम और 1.4% कार्बन
(ब) 1% क्रोमियम और 1.5% वैनेडियम
(स) 1% क्रोमियम और 2.5 से 5% निकिल

111. लोहे में जंग लगती है—
(अ) वायु और Co_2 के कारण
(ब) वायु और नमी के कारण
(स) वायु और Co_2 की नमी के कारण

112. पेट्रोलियम से प्राप्त तेल को कहते हैं—
(अ) सुगंधित तेल (essential oil)
(ब) वनस्पति तेल (स) खनिज तेल
(द) जांतव तेल

113. वैज्ञानिक ड्यूमास ने क्लोरोफार्म नाम दिया था । औषधि के रूप में क्लोरोफार्म का प्रयोग करते हैं—
(अ) हाइपोटानिक के रूप में
(ब) सीडेटिव के रूप में
(स) एनेस्थीसिया के रूप में

114. फलों को कृत्रिम रूप से पकाना मुख्य गुण है—
(अ) मीथेन का (ब) इथेन का
(स) इथाइलीन का (द) हाइड्रो कार्बनों का

115. निम्नलिखित में से कौन सा अम्ल तनु करने पर सिरका बनता है ?
(अ) टार्टेरिक अम्ल (ब) फार्मिक अम्ल
(स) एसिटिक अम्ल (द) साइट्रिक अम्ल

116. वनस्पति को तेलों में हाइड्रोजन घी प्रवाहित करने से प्राप्त होता है। इस अभिक्रिया को कहते हैं—
(अ) विनिर्जलीकरण (ब) हाइड्रो जेनोलिसिस
(स) निर्जलीकरण (द) एस्टरीकरण

117. मामूली कीमत की मोमबत्तियों में होता है—
(अ) मधुमक्खी का मोम + स्टैरिक अम्ल
(ब) मधुमक्खी का मोम + पैरेफिन का मोम
(स) पैरेफिन का मोम + स्टैरिक अम्ल
(द) केवल उच्च वसा अम्ल

118. कपड़ों से स्याही के धब्बे को निम्न से मिटाया जा सकता है—
(अ) फार्मिक अम्ल (ब) साइट्रिक अम्ल
(स) एसिटिक अम्ल (द) आक्सैलिक अम्ल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

119. नींबू में होता है—
(अ) आक्सैलिक अम्ल (ब) लैक्टिक अम्ल
(स) टार्टेरिक अम्ल (द) साइट्रिक अम्ल

120. निम्नलिखित में कौन सा पदार्थ शिशु आहारों (Baby food) में दूध को दही बनने से रोकने को दिया जाता है—
(अ) मैग्नीशियम साइट्रेट
(ब) सोडियम साइट्रेट
(स) फेरिक अमोनियम साइट्रेट

121. दर्पणों (mirrors) पर चांदी की पालिश करने के लिए जो कार्बोहाइड्रेट काम में लाया जाता है, वह है—
(अ) सुक्रोज (ब) स्टार्च
(स) ग्लूकोज (द) फ्रक्टोज

122. हमारे भोजन में कौन सा कार्बोहाइड्रेट होना जरूरी है—
(अ) सैल्यूलोज (ब) ग्लूकोज
(स) स्टार्च (द) सुक्रोज

123. कौन सा कार्बोहाइड्रेट उतना ही महत्वपूर्ण है जितना इस्पात और जिसको दैनिक उपयोग की अनेक वस्तुओं के निर्माण में काम में लाते हैं—
(अ) स्टार्च (ब) सुक्रोज
(स) ग्लूकोज (द) सैल्यूलोज

124. मार्फोलाजी के अन्तर्गत शारीरिक रचना का अध्ययन किया जाता है, वह कौन सी शाखा है जिसमें कोशिकाओं (Cell's) की रचना का अध्ययन किया जाता है—
(अ) साइटोलॉजी (ब) हिस्टोलॉजी
(स) फिजिआलॉजी (द) जेनेटिक्स

125. आनुवांशिकी के अन्तर्गत वंशानुगत लक्षणों का अध्ययन किया जाता है। जीवाश्म (fossil) के अध्ययन को-पेलिऑटोलॉजी कहते हैं, बताइए जैव विकास (evolution) के अन्तर्गत किसका अध्ययन किया जाता है—
(अ) भ्रूण विकास (ब) अंगों का विकास
(स) जीव की उत्पत्ति

126. वे समस्याएँ जिन पर आधुनिक जीवविज्ञान को प्राथमिक ध्यान देना आवश्यक है—
(अ) भोजन और जनसंख्या
(ब) भोजन, जनसंख्या और प्रदूषण
(स) जन्तु संरक्षण और भोजन

127. जीव द्रव्य (Protoplasm) को वैज्ञानिक हक्सले ने जीवन का भौतिक आधार' (Physical basis of life) कहा था। प्रोटोप्लाज्म है एक—
(अ) मिश्रण (ब) यौगिक
(स) तत्व (द) कललीय (Colladial) पदार्थ

128. मनुष्य की कोशिकाओं में गुण सूत्रों (Chromosomes) संख्या होती है—
(अ) 48 (ब) 46
(स) 42 (द) 44

129. प्रोटीन संश्लेषण का नियंत्रण करता है—
(अ) RNA (ब) DNA
(स) TPN (द) इनमें से कोई नहीं

130. प्रायः दिन में पौधे आक्सीजन और रात में कार्बन डाइ आक्साइड निकलते हैं। परन्तु दिन और रात के 24 घण्टों के बीच में एक ऐसा भी काल होता है जब पौधे न तो आक्सीजन छोड़ते हैं और न कार्बन डाइ आक्साइड। ऐसा होता है—
(अ) सूर्य के प्रकाश में
(ब) रात्रि के अंधकार में
(स) दोपहर के समय
(द) गोधूलि की वेला में

131. नाखून, सींग और खुर अपवृद्धि (outgrowth) है—
(अ) एपीडर्मल उपकला की
(ब) अस्थि ऊतक की (स) उपास्थि ऊतक की

132. हमारी देह का बाहरी स्तर बना होता है—
(अ) वर्णक (Pigmented) उपकला का
(ब) भ्रूणीय (germinal) उपकला का
(स) तंत्रिका संवेदी (neuro-Sensory) उपकला का

133. प्रायः देखा जाता है कि नवजात बच्चा (new born child) ठण्डे मौसम में ठण्ड होने पर नहीं काँपता है। ऐसा निम्न के कारण होता है—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(अ) एडीपोज ऊतक
(ब) अधिक ताप पैदा करने वाली-भूरी वसा
(स) कंकाल (Skeleton) और संयोजी ऊतक

134. रुधिर (blood) है —
(अ) द्रव (ब) सीरम
(स) प्लाज्मा (द) संयोजी ऊतक

135. वे कोशिकाएँ जो शरीर की रक्षा में भाग लेती है, उनको—
(अ) रक्ताणु (erythrocytes) कहते हैं
(ब) श्वेताणु (Leucocytes) कहते हैं
(स) लसिकाणु (lymphoeytes) कहते हैं

136. उड़ने वाले पक्षियों की अस्थियों में —
(अ) अस्थि मज्जा (bone-marrow) होती है
(ब) लाल मज्जा (red-marrow) होती है
(स) वायु मज्जा (air-marrow) होती है

137. मनुष्य का प्राणि वैज्ञानिक नाम (Zoological name) है—
(अ) क्रोमेगनन (ब) जावा मैन
(स) होमोसेपियन (द) इनमें से कोई नहीं

138. मधुमक्खी सुगन्धित फूलों से मकरंद (nectar) इकट्ठा करके उसको—
(अ) अपने छत्ते तक पहुँचने तक अपने मुख के अंदर रखती है
(ब) अपने छत्ते तक पहुँचने तक अपने आमाशय में रखती है
(स) अपने छत्ते तक पहुँचने तक उसको अपनी टाँगों पर एकत्र करके रखती है

139. प्रायः लोग मनुष्य के हृदय की धड़कन सुनने के लिए सीने के बाई ओर कान लगाकर सुनने की कोशिश करते हैं, क्योंकि—
(अ) हृदय का बाँया निलय (lefr ventricle) सीने के बाएँ भाग में होता है
(ब) हृदय का महाधमनी कांड (aorta) सीने के बाएँ भाग की ओर होता है
(स) सम्पूर्ण हृदय सीने के बाई ओर होता है

140. संपेरे विषैले सांपों के दांतों को उखाड़कर अपनी टोकरियों में बंद कर लेते हैं। यह दाँत—
(अ) दुबारा निकल आते हैं पर विषैले नहीं होते
(ब) कालांतर में दुबारा निकल आते हैं और पहले के ही समान हानिकारक होते हैं
(स) कालांतर में निकलते तो हैं पर छोटे और अ-हानिकारक होते हैं

141. मनुष्य के दाँतों में पायरिया का रोग अधिकतर चम्बन से फैलता है। मलेरिया की खोज रोनाल्डरॉस ने की थी। मलेरिया की बीमारी होती है—
(अ) जूं के काटने से
(ब) सैंड फ्लाई के काटने से
(स) मादा एनाफिलीस के काटने से
(द) मादा क्यूलेक्स के काटने से

142. मलेरिया रोग के निवारण के लिए 'टीका' लगाना असंभव है क्योंकि—
(अ) मलेरिया परिजीवी (Plasmodium) एण्टी बाडीज पैदा करता है परन्तु बहुत कम
(ब) मलेरिया परिजीवी एण्टी टाक्सिन पैदा करता है।
(स) मलेरिया परिजीवी एण्टी बाडीज और एण्टी-टाक्सिन पैदा नहीं करता।

143. विटामिन्स कार्बनिक यौगिक होते हैं जो जरूरी होते हैं—
(अ) पाचन क्रिया के लिए
(ब) सामान्य शारीरिक क्रियाओं के लिए
(स) हार्मोन्स की उत्पत्ति के लिए

144. यदि शरार में विटामिन 'सी' की कमी हो जाये तो स्कर्वी रोग हो जाता है। बताइए विटामिन 'बी' की कमी से कौन सा रोग होता है—
(अ) स्कर्वी (ब) रतौंधी
(स) भूख न लगने और बेरी बेरी का
(द) वृद्धि रुक जाती है।

145. कुछ जन्तुओं में नपुंसकता या बंध्यता (Sterlity) का रोग अथवा गर्भ रह जाने पर भ्रूण की मृत्यु हो जाने का रोग होता है—
(अ) विटामिन A की कमी से
(ब) विटामिन C की कमी से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(स) विटामिन E की कमी से
(द) विटामिन B की कमी से

146. बच्चों में होने वाला सूखा रोग (rickets) विटामिन D की कमी के कारण होता है। रूधिर क्षीणता (anaemia) का रोग होता है—
(अ) विटामिन A की कमी के कारण
(ब) विटामिन E की कमी के कारण
(स) फोलिक अम्ल की कमी के कारण

147. चोट लगने पर रूधिर का थक्का निम्न के कारण नहीं बनता—
(अ) विटामिन A की कमी के कारण
(ब) विटामिन K की कमी के कारण
(स) विटामिन E की कमी के कारण

148. मनुष्य में मधुमेह (diabities) का कारण होता है शरीर में इन्सुलिन नामक हार्मोन की कमी। यह लंगरहैसद्वीप समूह में उत्पन्न होता है। इन्सुलिक हार्मोन आवश्यक है—
(अ) यकृत में ग्लाइकोजन और ग्लूकोज का संग्रह करने के लिए
(ब) वृक्क मलिकाओं द्वारा पदार्थों के शोषण के लिए
(स) लैंगिक भागों के वर्धन के लिए

149. शरीर की शारीरिक क्रियाओं का नियंत्रण मूल रूप से अंतः स्रावी तंत्र (indocrine System) द्वारा होता है। अंतःस्रावी ग्रंथियों द्वारा स्रवित द्रव को कहते हैं—
(अ) लार (ब) रस
(स) हार्मोन्स (द) सैरिब्रल द्रव

150. जिस हार्मोन की कमी नर स्तनियों में नर लक्षणों के पैदा होने को रोक देती है, वह है—
(अ) एड्रीनिलीन (ब) प्रोगैस्ट्रीन
(स) एण्ड्रोस्टैरोन (द) कार्टिन

151. मनुष्यों में होने वाला होता घोंघा (Goitre) रोग का कारण—
(अ) थायराक्सिन की कमी से
(ब) इन्सुलिन की कमी से
(स) एड्रीनेलिन की कमी से
(द) प्रोगैस्ट्रिन की कमी से

152. जन्तुओं के जीवन में उनकी कोशिकाओं को बनाने वाला प्रमुख घटक है—
(अ) सैल्यूलोज (ब) वसा
(स) प्रोटीन (द) स्टार्च

153. हमारी देह की पेशियां बनी होती हैं—
(अ) कार्बोहाइड्रेट से (ब) वसाओं से
(स) अमीनो अम्लों से
(द) कार्बोहाइड्रेट और अमीनो अम्लों से

154. संतुलित आहार में अवश्य होना चाहिए—
(अ) कार्बोहाइड्रेट (ब) तेल और वसाएं
(स) प्रोटीनें (द) विटामिन

155. शरीर क्रिया विज्ञान की दृष्टि से वह महत्वपूर्ण पदार्थ जिसकी कमी शरीर की उचित वृद्धि को कम करती है—
(अ) विटामिन (ब) एजांइम
(स) प्रोटीन (द) लवण

156. प्रोटीन्स अमीनो अम्ल की लम्बी शृंखला हैं प्रोटीन्स की आवश्यकता होती है—
(अ) टूट-फूट की मरम्मत के लिए नए ऊतकों के निर्माण के लिए
(ब) शरीर को ऊर्जा प्रदान करने के लिए
(स) शरीर की उचित वृद्धि के लिए

157. एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में आनुवांशिक गुण DNA द्वारा पहुँचते हैं। DNA का पूरा नाम है—
(अ) राइबो न्यूक्लियक एसिड
(ब) डि आक्सी राइबो न्यूक्लियक एसिड
(स) मैलिक एसिड

158. आंतो द्वारा वसाओं का अवशोषण जल अपघटन के बाद होता है। वसाओं के जल अपघटन (hydrolysis) के फलस्वरूप जल और कार्बन डाइ आक्साइड बनते हैं। शरीर की कोशिकाओं में वसा के विघटन से क्या उत्पन्न होता है?
(अ) ताप और ऊर्जा
(ब) ताप और ऊर्जा का अवशोषण
(स) जल अपघटन
(द) वसा, अम्ल और ग्लिसरॉल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृषि तथा पशु चिकित्सा पर वस्तुपरक परीक्षण

1. भारत एक कृषि प्रधान देश है। कुल जनसंख्या के कितने प्रतिशत भाग का जीवन कृषि पर आश्रित है ?
(अ) 50%से 60% (ब) 60%से 70%
(स) 70%से 80% (द) 80%से 90%

2. कुल राष्ट्रीय आय में कृषि का कितना प्रतिशत योगदान है ?
(अ) 25%से 35% (ब) 40%से 50%
(स) 60%से 70% (द) 75%से 80%

3. कृषिप्रधान देश होने के बावजूद भारत को समय-समय पर अनाज का आयात करना पड़ता है। किस वर्ष कुल उत्पादन का सर्वाधिक प्रतिशत (14%) अनाज आयात किया गया ?
(अ) 1955 (ब) 1967
(स) 1971 (द) 1973

4. भारतीय कृषि के सम्बन्ध में क्या असत्य है ?
(अ) फसल एवं जुताई में विविधता
(ब) जल आपूर्ति में भीषण अनिश्चयता
(स) भूमि की अल्प उत्पादकता
(द) छोटे किसानों की बाहुल्यता
(ध) मध्यम किसानों की बाहुल्यता
(च) कृषि योग्य भूमि का अनुपयोग
(छ) भूमि के स्वामित्व का एकाधिकरण
(ज) व्यावसायिक कृषि का नितान्त अभाव

5. भारतीय कृषि के अविकसित होने का क्या कारण नहीं है ?
(अ) कृषकों की रूढ़िवादिता
(ब) रोजगार में विविधता का अभाव
(स) जनसंख्या की तेज वृद्धि दर
(द) कृषि क्षेत्र में पूंजीनिवेश का अभाव
(ध) संस्थागत त्रुटि
(च) कृषि का सामूहिकीकरण न होना

6. भारतीय संविधान के किस अनुच्छेद में राज्य द्वारा कृषि और पशुपालन के संघटन का उल्लेख किया गया है ?
(अ) अनुच्छेद 35 (ब) अनुच्छेद 39
(स) अनुच्छेद 42 (द) अनुच्छेद 48

7. भारत में हरित क्रान्ति के फलस्वरूप किस फसल के उपादन में अभूतपूर्व उन्नति हुई ?
(अ) चावल (ब) गेहूं
(स) गन्ना (द) कपास

8. कृषि की उन्नति के लिये भूमि सुधार अत्यन्त आवश्यक समझा जाता है। भारत में इस दिशा में कौन से प्रयत्न नहीं किये गये हैं ?
(अ) जमींदारी का उन्मूलन
(ब) भूस्वामित्व की सुरक्षा
(स) लगान सम्बन्धी नियम-कानून
(द) सहकारी खेती
(च) खेतों का सामूहिकीकरण
(छ) सहकारी ग्राम प्रबन्ध
(ज) भूदान व ग्रामदान

9. राष्ट्रीय कृषि आयोग ने 1972 में पाँच इकाइयों के परिवार के जोत की सीमा कितनी निश्चित करने का सुझाव दिया था ?
(अ) 5 से 10 एकड़ (ब) 5 से 25 एकड़
(स) 10 से 30 एकड़ (द) 25 से 100 एकड़

10. भूमिहीन मजदूरों को रोजगार दिलाने तथा उनके भूमि अभाव को समाप्त करने के उद्देश्य से विनोबा भावे का भूदान आन्दोलन का श्रीगणेश कहाँ से हुआ ?
(अ) उ. प्र. (ब) म. प्र.
(स) आं. प्र. (द) महाराष्ट्र

11. भारत में कृषि उत्पादन की औसत वृद्धि दर कितनी है ?
(अ) 2% (ब) 3.5% (स) 5.5% (द) 8%

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

12. स्वातन्त्र्योत्तर भारत में कृषि को ठोस आधार प्रदान करने में निम्न में किसका हाथ है ?
(अ) सिंचाई व्यवस्था का विस्तार
(ब) उन्नत किस्म के बीज का प्रयोग
(स) देश में रासायनिक उर्वरकों का उत्पादन
(द) कृषि यान्त्रिक उपकरणों के प्रयोग में वृद्धि
(घ) भूमि सुधार
(च) कृषि सम्बन्धी निवेश व निर्गत की सुविधा
(छ) उपर्युक्त सभी

13. प्रति हेक्टयर उत्पादन की दृष्टि से भारत अन्य देशों से बहुत पीछे है, इसका प्रमुख कारण क्या नहीं है ?
(अ) भूमि की अनुर्वरता
(ब) आवश्यकता अनुरूप जल का अभाव
(स) रासायनिक उर्वरकों का कम प्रयोग करना
(द) उन्नत किस्म के बीजों का सीमित प्रयोग
(घ) आधुनिक कृषि यान्त्रिक उपकरणों का सीमित उपयोग ।

14. स्वातन्त्र्योत्तर काल में सरकार ने कृषि को किस प्रकार सहायता प्रदान की ?
(अ) कृषि के इन्फ्रास्ट्रक्चर जैसे, सिंचाई आदि के विकास के लिये प्रचुर साधन की व्यवस्था
(ब) उन्नत बीज, रासायनिक उर्वरक, ऋण आदि के वितरण के लिये अनेक एजेन्सियों की स्थापना
(स) कृषकों की आय में स्थायित्व लाने के लिये वसूली तथा मूल्य नीति की व्यवस्था
(द) भूमि के स्वामित्व, पट्टे के अधिकार व जोत की सीमा आदि निश्चित कर भूमि सुधार करना
(य) छोटे कृषकों तथा कृषक श्रमिकों को सहायता के लिये विभिन्न योजनायें व कार्यक्रम
(र) उपर्युक्त सभी

15. निम्नलिखित में कौन सरकार द्वारा ग्रामीण पिछड़े वर्ग की उन्नति हेतु कार्यक्रम नहीं है ?
(अ) कैश स्कीम फार रूरल इम्प्लायमेन्ट
(ब) इन्टीग्रेटेड रूरल डेवलपमेन्ट प्रोग्राम
(स) ड्राट प्रोन एरिया प्रोग्राम
(द) मार्जीनल फारमर्स एण्ड एग्रीकल्चर लेबर प्रोग्राम
(घ) स्मॉल फारमर्स डेवलपमेन्ट एजेन्सी
(च) नेशनल एग्रीकल्चर कोआपरेशन एजेन्सी

16. कृषि श्रमिकों की दशा सुधारने के लिये सरकार ने न्यूनतम मजदूर अधिनियम कब पारित किया ?
(अ) 1948 (ब) 1955 (स) 1967 (द) 1975

17. भारत में कृषक श्रमिकों की दिन प्रति दिन बढ़ती संख्या का क्या कारण है ?
(अ) जनसंख्या में तीव्र वृद्धि
(ब) औद्योगिक रोजगार का अभाव
(स) अलाभकारी जोत
(द) कृषकों की ऋणग्रस्तता में वृद्धि
(घ) उपर्युक्त सभी

18. भारत में खाद्य समस्या का प्रमुख कारण क्या है ?
(अ) जनसंख्या में तीव्र वृद्धि
(ब) निर्धनता और बेरोजगारी
(स) अनाज की उत्पादन वृद्धि का निम्न दर
(द) कृषि उत्पादन की अनिश्चयता
(य) अपर्याप्त विपणन व्यवस्था
(र) अनाज की जमाखोरी
(ल) आय की वृद्धि के साथ अनाज की मांग में उतार-चढ़ाव (व) उपर्युक्त सभी

19. सार्वजनिक वितरण व्यवस्था तथा अनाज के सुरक्षित भण्डार बनाये रखने के लिये सरकार किसानों से किस प्रकार अनाज की वसूली (Procurement) करता है ?
(अ) सम्पूर्ण अनाज की वसूली सरकार द्वारा की जाती है
(ब) लेवी लगा कर सरकार द्वारा अनाज के एक निश्चित भाग की वसूली की जाती है
(स) लेवी लगाकर सरकार द्वारा मिल मालिक व अनाज के डीलरों के स्टॉक के एक निश्चित भाग की वसूली की जाती है
(द) सरकार द्वारा खुले बाजार से अनाज की खरीददारी की जाती है
(घ) उपर्युक्त सभी

20. अनाज की सरकारी वसूली किस संस्था द्वारा की जाती है ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(अ) स्टेट ट्रेडिंग कार्पोरेशन
(ब) फूड कार्पोरेशन ऑव इण्डिया
(स) एग्रीकल्चर प्राइस कार्पोरेशन (द) नाबार्ड
(द) सेन्ट्रल वेयरहाऊस कार्पोरेशन

21. न्यूनतम समर्थन मूल्य और वसूली मूल्य का निर्धारण कृषि मूल्य आयोग करता है। इसकी नियुक्ति कौन करता है ?
(अ) केन्द्र सरकार (ब) राज्य सरकार
(स) इण्डियन काउन्सिल ऑव एग्रीकल्चर रिसर्च
(द) योजना आयोग

22. जिन क्षेत्रों में वार्षिक वर्षा 20 इंच या इससे कम होती है वहाँ शुष्क खेती (Dry Farming) की जाती है, ऐसे क्षेत्र में साधारणतः क्या नहीं बोया जाता है ?
(अ) ज्वार (ब) बाजरा
(स) दाल (द) मक्का (घ) तिलहन

23. भारत की गिनती विश्व के प्रथम दस औद्योगिक देशों में होने के बावजूद भी यहाँ कृषि का यन्त्रीकरण अत्यन्त धीमा है। इसका क्या कारण है ?
(अ) मानवीय व पशु श्रम की अधिकता
(ब) कृषकों की निर्धनता
(स) कृषकों की रूढ़िवादिता
(द) जोतों का छोटा व बिखरा हुआ होना
(घ) ग्रामीण क्षेत्र में तकनीकी श्रमिकों का अभाव
(च) उपर्युक्त सभी

24. भारत में किस प्रकार की खेती आम तौर पर की जाती है ?
(अ) मिश्रित खेती (ब) बहु प्रकारीय खेती
(स) विशिष्ट खेती (द) शुष्क खेती

25. भारत के लिये कौन सी कृषि सर्वाधिक उपयुक्त है ?
(अ) पूंजीवादी (ब) साम्यवादी
(स) सहकारी (द) सामूहिक

26. ऋतुओं के आधार पर फसलों को रबी, खरीफ तथा जायद में बाँटा गया है। निम्न में से कौन सी जायद की फसल है ?
(अ) गेहूँ व चना (ब) कपास व तिलहन
(स) धान व सोयाबीन (द) ककड़ी व तरबूजा

27. धान की अच्छी फसल के लिये बढ़वार के समय 25°—30° से. ग्रे. तापमान होना चाहिए। पकने के समय कितना तापमान होना चाहिये ?
(अ) 20°—25° से. ग्रे. (ब) 20°—30° से. ग्रे.
(स) 25°—40° से. ग्रे. (द) 30°—45° से. ग्रे.

28. धान के लिये सबसे उपयुक्त नमी को रोकने की अच्छी क्षमता वाली क्ले या क्ले लोम होती है। इसके अलावा भूमि की क्या अन्य विशेषता होनी चाहिए ?
(अ) लवणीय (ब) क्षारीय
(स) अम्लीय (द) क्षारीय-लवणीय

29. यद्यपि धान खरीफ की फसल है परन्तु देश के किस क्षेत्र में यह रबी में उगाया जाता है ?
(अ) असम (ब) तमिलनाडु
(स) केरल (द) आन्ध्र प्रदेश

30. धान के लिये औसत वार्षिक वर्षा 75 से. मी. होनी चाहिए। अल्प अवधि तथा दीर्घ अवधि में पकने वाले धान की किस्में क्रमशः कितने दिन पकने में लेती है ?
(अ) 110, 150 (ब) 115, 135
(स) 120, 150 (द) 90, 120

31. बालियाँ निकलने के कितने दिन पश्चात धान की सभी किस्में पक जाती हैं ?
(अ) 15 (ब) 25
(स) 30 (द) 45

32. बिहार में सबसे अधिक क्षेत्र में धान बोया जाता है परन्तु सर्वाधिक पैदावार प. बंगाल में होती है। निम्न में कौन धान के बीज नहीं है ?
(अ) साकेत-4 (ब) नगीना-22
(स) आई. आर-8 (द) सोनालिका
(ध) प्रसाद (च) जलमडन

33. निम्न में कौन सा रोग धान का फसल को नहीं लगता है ?
(अ) आभासी कंड (False Smut)
(ब) पर्णच्छद (स) प्रध्वंस (Blast)
(द) खैरा (घ) टुंग्रो
(च) अनावृत कंड (Loose Smut)

34. गेहूँ अक्टूबर-नवम्बर में बोया जाता है। और इसे 50-100 से. मी. वार्षिक वर्षा की आवश्यकता होती है। भारत के कुल कृषि योग्य क्षेत्रफल के लगभग कितने भाग में गेहूँ की फसल उगायी जाती है ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(अ) 10% (ब) 16%
(स) 30% (द) 40%

35. भारत में गेहूँ की प्रति हेक्टेअर सर्वाधिक उपज पंजाब में होती है। निम्न में किस राज्य में गेहूँ का सबसे अधिक उत्पादन क्षेत्र व उत्पादन है ?
(अ) महाराष्ट्र (ब) हरियाणा
(स) पंजाब (द) उत्तर प्रदेश

36. निम्न में किस प्रकार की मिट्टी गेहूँ की अच्छी पैदावार के लिये सर्वोत्तम है ?
(अ) कछारी मिट्टी (ब) जलोढ़ मिट्टी
(स) काली मिट्टी (द) पीट मिट्टी

37. अच्छी फसल प्राप्ति के लिये गेहूँ की बोआई जमीन में कितनी गहराई में करनी चाहिए ?
(अ) 3 से. मी. (ब) 4-5 से. मी.
(स) 6 से. मी. (द) 8-10 से. मी.

38. गेहूँ की फसल के किस स्थिति के पश्चात खेत में पानी भरे रहना फसल के लिये क्षतिपूर्ण होता है ?
(अ) कल्लें फूटना (ब) तने में गांठ बनना
(स) बालियां निकलना (द) दाने का कड़ा होना

39. गेहूँ की फसल को कौन सा रोग नहीं लगता है ?
(अ) किट्ट रोग (ब) सेहूँ रोग
(स) करनाल ब्लंट (द) शीर्ष कंड (Head Smut)
(ध) आल्टर्नेरिया रोग

40. निम्नलिखित फसलों में कौन सी फसल खरीफ के समय बोयी जाती है और रबी के समय काटी जाती है ?
(अ) सोयाबीन (ब) अलसी
(स) मूंगफली (द) अरहर

41. उत्तरी मैदान क्षेत्र जहाँ की मिट्टी अत्यधिक उर्वर है, हल्की भूरी होती है। इसका क्या नाम है ?
(अ) लैटेराइट मिट्टी (ब) बागर मिट्टी
(स) काली मिट्टी (द) पीट मिट्टी

42. ज्वार की फसल के पश्चात अगले मौसम में बोयी गयी फसल की उत्पादकता के सम्बन्ध में क्या सत्य है ?
(अ) अपेक्षाकृत अच्छा होता है
(ब) अपेक्षाकृत कमजोर होता है
(स) कोई अन्तर नहीं पड़ता
(द) कुछ निश्चित नहीं कहा जा सकता

43. हाल में विकसित किये गये ज्वार के उन्नत किस्म के दानों में ल्यूसिन की अधिकता होने के कारण अधिक ज्वार खाने वाले को कौन सा रोग होता है ?
(अ) पेलग्रा (ब) लाइसीन
(स) सर्सीनिटा (द) एन्थ्रेक्नोज

44. मक्का साधारणतः आलू, गन्ना तथा गेहूँ के साथ फसलचक्र में लगाया जाता है। खाद्यान्न तथा मवेशियों के रातिब के अलावा निम्न में किस वस्तु के निर्माण के लिये भारत में मक्का अधिक मात्रा में पैदा किया जाता है ?
(अ) स्टार्च (ब) ग्लूकोस
(स) कागज (द) रंग
(ध) कृत्रिम रबड़ (च) चमड़ा
(छ) उपर्युक्त सभी

45. जौ और गेहूँ को प्रायः एक ही मौसम में उगाया जाता है। गेहूँ जौ की तुलना में पाले के प्रति अधिक सहनशील है, परन्तु सूखे के प्रति कौन अधिक सहनशील है ?
(अ) गेहूँ (ब) जौ
(स) गेहूँ व जौ समान रूप से

46. काली मिट्टी में नमी रोकने की सर्वाधिक क्षमता होने के कारण इसमें उगाई जाने वाली फसलों को कम सिंचाई की आवश्यकता पड़ती है। यह मिट्टी किस फसल के लिये सर्वाधिक उपयुक्त होती है ?
(अ) गेहूँ (ब) गन्ना
(स) बाजरा (द) कपास

47. भारत में कृषक किस प्रकार के उर्वरक का उपयोग सर्वाधिक करते हैं ?
(अ) फास्फेट उर्वरक (ब) पोटेशियम उर्वरक
(स) नाइट्रोजन उर्वरक (द) उपर्युक्त सभी

48. भूमि में जीवांश बढ़ाने और उसे लवणीय या क्षारीय बनने से रोकने के लिये किस प्रकार के खाद का उपयोग आवश्यक होता है ?
(अ) फास्फेटिक खाद (ब) पोटेशियम खाद
(स) नाइट्रोजन खाद (द) कंपोस्ट खाद

49. कंपोस्ट खाद बनाने के लिये क्या आवश्यक तत्व है ?
(अ) गन्ने की पतोई (ब) पशुओं के मल-मूत्र
(स) सदाबहार सूखी पत्तियां (द) उपर्युक्त सभी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

50. धान की फसल में खर-पतवार रोकने के लिये निम्न में कौन सी रासायनिक दवा का प्रयोग नहीं किया जाता है ?
(अ) प्रोपेनिल (ब) ट्रिबुनिल
(स) ब्यूटा क्लोर (द) एम. सी. पी. ए.

51. क्षारीय भूमि में अमोनियम सल्फेट, जिप्सम व सुपर फास्फेट तथा ऊसर भूमि में यूरिया व सुपर फास्फेट डालने से फसल की पैदावार अच्छी होती है। अम्लीय भूमि में किस प्रकार का उर्वरक लाभप्रद होता है ?
(अ) अमोनियम सल्फेट क्लोराइड (ब) रॉक सल्फेट
(स) अमोनियम नाइट्रेट (द) पोटेशियम सल्फेट

52. निम्न में कौन सी फसल सबसे जल्दी तैयार होती है ?
(अ) धान (ब) मक्का (स) गेहूँ (द) ज्वार

53 भारत के कृषि योग्य क्षेत्र के सर्वाधिक भाग में कौन सी फसल बोयी जाती है ?
(अ) गन्ना (ब) मक्का
(स) धान (द) गेहूँ (ध) ज्वार

54. बहुफसली खेती में हर वर्ष कम से कम कितनी फसलें ली जा सकती हैं ?
(अ) 2 (ब) 3 (स) 4 (द) 6

55. पानी भरे खेतों में कौन सा उर्वरक सर्वाधिक उपयोगी होता है ?
(अ) अमोनियम नाइट्रेट (ब) सुपर फास्फेट
(स) अमोनियम सल्फेट नाइट्रेट
(द) कैल्शियम (ध) यूरिया

56. निम्नलिखित फसलों में किसमें पोषक तत्व के रूप दी जाने वाली रासायनिक उर्वरक प्रति हेक्टेअर सर्वाधिक लगती है ?
(अ) गन्ना (ब) कपास (स) गेहूँ (द) धान

57. दलहनी फसलों के लिये किस प्रकार का उर्वरक अत्यन्त आवश्यक होता है ?
(अ) फास्फेटिक (ब) नाइट्रोजनीय (स) पोटाशीय

58. सोडियम उर्वरक किस प्रकार के फसलों के लिये उपयोगी होता है ?
(अ) चुकन्दर (ब) सरसों
(स) मूली (द) बन्दगोभी
(च) उपर्युक्त सभी

59. वर्षा काल में कृषियोग्य भूमि के कटाव को रोकने के लिये कौन से उपाय अपनाने चाहिए ?
(अ) समोच्च रेखा पर खेती की जाय
(ब) खेत के ढाल के खिलाफ छोटे-छोटे बांध बनाये जाय
(स) पहाड़ी खेतों में सीढ़ीदार खेत बनाया जाय
(द) मूंग, मूंगफली, उड़द व लोबिया आदि बो कर भूमि को ढका रखा जाय
(ध) उपर्युक्त सभी

60. दलहनी फसलों में चना भारत का सर्वाधिक पुराना फसल है। इसकी खेती मुख्यत गंगा के दोआब मैदान में होती है और इसको तैयार होने में 125 से 170 दिन लगते हैं। विश्व की कुल पैदावार का कितना प्रतिशत चना भारत में पैदा होता है ?
(अ) 25% (ब) 45% (स) 65% (द) 80%

61. एकवर्षीय फसल होने के कारण अरहर की मिश्रित खेती की जाती है। साधारणतः यह किनके साथ मिलाकर बोया जाता है ?
(अ) बाजरा (ब) पटसन
(स) मूंगफली (द) मक्का
(ध) तिल (च) कपास
(छ) उपर्युक्त सभी

62. निम्न में कौन सी फसल में, जिसे हाल के वर्षों में अत्यन्त महत्व प्रदान किया जा रहा है, प्रोटीन की दृष्टि से उपयोगी है ?
(अ) मूंगफली (ब) सोयाबीन
(स) लोबिया (द) सूरजमुखी

63. विभिन्न तिलहनी फसलों में प्रमुख-मूंगफली का उत्पादन क्षेत्रफल व उत्पादन की दृष्टि से भारत का क्या स्थान है ?
(अ) प्रथम, तृतीय (ब) द्वितीय, पंचम
(स) प्रथम, प्रथम (द) द्वितीय, तृतीय

64. मूंगफली की फसल के लिये किस प्रकार की जलवायु हानिकारक नहीं है ?
(अ) पाले का पड़ना
(ब) सूर्य के पर्याप्त प्रकाश का होना
(स) खेत में जल का भरा होना
(द) उपर्युक्त सभी

65. सूरजमुखी, जिसे सभी मौसमों का फसल कहा गया है, का किस चीज के लिये पिछले कुछ वर्षों से भारी मात्रा में व्यावसायिक खेती की जा रही है ?
(अ) खाद्य तेल (ब) मवेशी का चारा
(स) दलहन (द) प्रोटीन

66. निम्न में कौने सी फसल शर्करा का प्रमुख स्रोत नहीं है ?
(अ) चुकन्दर (ब) गन्ना
(स) कुत्थी (द) रिजका

67. गन्ने की अच्छी पैदावार के लिये 20°-35° से. ग्रे. (प्रथमांश), साधारणतः अधिक आर्द्रता, तेज धूप की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवश्यकता होती है। यद्यपि गन्ने के लिये सर्वोत्तम जलवायु दक्षिण भारत में है। किस राज्य में गन्ने की पैदावार सर्वाधिक है ?

(अ) महाराष्ट्र (ब) गुजरात
(स) उत्तर प्रदेश (द) पंजाब

68. निम्न में गन्ने की उन्नत किस्म कौन सी नहीं है ?

(अ) को. शा. 510 (ब) को. 1148
(स) को. 62399 (द) बी. ओ. 70
(ध) उपर्युक्त सभी

69. गन्ने की फसल की बोआई के सम्बन्ध में क्या सत्य है ?

(अ) गन्ने का पूरा तना बोया जाता है
(ब) गन्ने के तने का टुकड़ा बोया जाता है
(स) गन्ने के तने का गांठ बोया जाता है
(द) उपर्युक्त सभी असत्य है

70. जूट की अच्छी फसल के लिये क्या आवश्यक है ?

(अ) फसल काल में तापक्रम 40-45° से ग्रे रहे
(ब) फसल काल में कम से कम 25 से. मी. वर्षा हो
(स) क्रमिक धूप और क्रमिक वर्षा हो
(द) कंकरीली, रेतीली, लैटराइट व जलोढ किसी प्रकार की भी मृदा हो
(ध) उपर्युक्त सभी

71. निम्नलिखित में कौन सी फसल को काटने के पश्चात सम्पूर्ण रूप तैयार करने के लिये सड़ाना आवश्यक होता है ?

(अ) रबर (ब) कहवा
(स) जूट (द) बरसीम

72 कपास की अच्छी फसल के लिये आवश्यक है कि मृदा (काली मृदा, जलोढ मृदा, लाल मृदा, लैटराइट मृदा) में अच्छी जलधारण क्षमता हो, औसत तापमान 150° से. ग्रे. तथा वार्षिक वर्षा 50 से. मी. हो। कपास की फसल 5 से 8 महीने में तैयार होती है। कपास के बीजों के बाह्यत्वचा से निकले रेशों की लम्बाई 1-5 से मी. होती है। एक बीज में लगभग कितने रेशें होते हैं ?

(अ) 200 से 600 (ब) 5000 से 10000
(स) 22000 से 40000
(द) 60000 से 80000

73. कपास की उन्नत किस्म 320 एफ., जे 34, जी 27, एल. एस. एस, सुजाता, बदनावार-1, एम. सी. यू 5 आदि है। कपास की फसल पर निम्न में कौन सा रोग का प्रकोप लगता है।

(अ) म्लानि (wilt) (ब) शुष्क विलगन
(स) श्याम व्रण (द) कृष्ण शाखा रोग
(ध) उपर्युक्त सभी

74. कपास की फसल तैयार होने पर उसके उपज को सर्वप्रथम

(अ) काटना पड़ता (ब) सुखाना पड़ता
(स) चुनना पड़ता (द) सड़ाना पड़ता

75. निम्न में कौन पशुओं का चारा नहीं है ?

(अ) बरसीम (ब) रिजका
(स) जई (द) ग्वार
(ध) नेपियर घास (च) कुल्थी
(छ) पैरा घास

76. निम्न में कौन सी फसल भूमि की उर्वरा शक्ति को बढ़ाती है ?

(अ) सोयाबीन (ब) बरसीम
(स) ग्वार (द) अलसी

77. चाय के सम्बन्ध में क्या सत्य है ?

(अ) चाय का पौधा मूलतः झाड़ीनूमा होता है
(ब) गहरी, भूरभूरी, उपजाऊ व अपवाहित मृदा आवश्यक होती है
(स) गर्म आर्द्र जलवायु तथा अधिक वर्षा
(द) चाय को पौधे की औसत आर्थिक आयु 25 वर्ष
(ध) चाय के पौधे में केवल अल्पायु पत्तियाँ व कलिकाएं उपयोगी होती हैं
(च) उपर्युक्त सभी

78. कहवा के लिये गहरी, भुरभुरी सुअपवाहित उपजाऊ भूमि के साथ-साथ गर्म जलवायु (25°-35° से ग्रे.), 150 से. मी प्रति वर्ष की एक समान रूप से वितरित वर्षा तथा उच्च वायुमण्डलीय आर्द्रता की आवश्यकता होती है। कहवा का कौन भाग आर्थिक दृष्टि से उपयोगी होता है ?

(अ) पत्ती (ब) फूल
(स) बेरी (द) कोमल कलिकाएं

79. निम्न फसलों में किसकी पैदावार बढ़ाने के लिये छायादार वृक्षों का रोपण आवश्यक होता है ?

(अ) रबर (ब) सोयाबीन
(स) चाय (द) कहवा

80. रबर वृक्ष के आर्थिक उत्पादन (लेटेक्स) को प्राप्त करने के लिये वृक्ष की छाल पर चीरा लगाया जाता है। प्रति वर्ष एक रबड़ वृक्ष से लगभग कितना लेटेक्स प्राप्त किया जाता है ?

(अ) 150 कि. ग्रा (ब) 400 कि. ग्रा.
(स) 800 कि ग्रा. (द) 1000 कि. ग्रा.

81. नारियल के लिये क्षारीय मृदा की आवश्यकता होती है। क्षेत्रफल व उत्पादन की दृष्टि से केरल सर्वाधिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आगे है । नारियल का कौन सा व्यावसायिक उपयोग है ?

(अ) मादक पेय (ब) जटा व जटा उत्पाद
(स) तेल व खली (द) उपर्युक्त सभी

82. भारत में अफीम बनाने के लिये मुख्यतः किसकी खेती की जाती है ?

(अ) इसबगोल (ब) पोस्ता
(स) सर्पगन्धा (द) काकुन

83. आलू की उन्नत किस्में अपटूडेड, कुफरी, ज्योति, जी-2524. कुफरी सुन्दरी आदि है । आलू को मोजेक, काला रूसी रोग, पर्ण बेलन तथा अंगमारी रोग का प्रकोप लगता है । निम्न में किसकी मात्रा आलू में सर्वाधिक पायी जाती है ?

(अ) प्रोटीन (ब) वसा
(स) कार्बोहाइड्रेट (द) खनिज

84. सम्पूर्ण देश के 43% भाग पर फसलों की बोआई होती है और इनमें लगभग 26% भाग सिंचित क्षेत्र है । किस प्रदेश के सर्वाधिक क्षेत्र में सिंचाई की सुविधा है ?

(अ) बिहार (ब) उत्तर प्रदेश
(स) महाराष्ट्र (द) पंजाब

85. बीज के अन्दर छिपे हुए बीजाणुओं को नष्ट करने के लिये निम्न में कौन सी विधि सर्वाधिक उपयुक्त है ?

(अ) सौर उष्णता से (ब) रासायनिक दवाओं से
(स) गर्म पानी से उपचार (द) उपर्युक्त सभी

86. योजना आयोग ने सन् 2000 तक 113 मिलियन हेक्टेयर को सिंचाई सुविधा उपलब्ध कराने का निर्णय लिया है । इसी वर्ष तक गेहूँ का वार्षिक उत्पादन कितने मिलियन टन करने का निर्णय लिया गया है ?

(अ) 175 (ब) 190 (स) 204 (द) 225

87. भारत की मिट्टी में किस तत्व की अत्यधिक कमी है जो अच्छे फसल उत्पादन के लिये आवश्यक है और जिसकी कमी को रासायनिक उर्वरकों का उपयोग कर पूरा किया जा सकता है ?

(अ) पोटाश (ब) हाइड्रोजन
(स) फास्फेट (द) नाइट्रोजन

88. निम्न में से क्या सत्य है ?

(अ) भारत में रबी खाद्यान्न का उत्पादन खरीफ खाद्यान के उत्पादन से अधिक है
(ब) भारत में खरीफ खाद्यान्न का उत्पादन रबी खाद्यान्न के उत्पादन से अधिक है
(स) भारत में रबी व खरीफ खाद्यान्न का उत्पादन लगभग समान है

89. दक्षिण भारत में मुख्यतः उपलब्ध लाल मिट्टी में फास्फोरस, पोटाश व नाइट्रोजन की कमी तथा लोहा व एल्मुनियम की अधिकता पायी जाती है । यह किस फसल के लिये सर्वाधिक उपयुक्त होती है ?

(अ) धान व कपास (ब) मूंगफली व सोयाबीन
(स) ज्वार व बाजरा (द) अरहर व उर्द

90. स्थानान्तरित खेती को समाप्त करने पर क्यों जोर दिया जा रहा है ?

(अ) इससे अनाज की उत्पादन मात्रा कम होती है
(ब) इससे भूमि का क्षरण होता है
(स) इस प्रकार की खेती आर्थिक दृष्टि से लाभप्रद नहीं होती है
(द) इससे भूमि की उर्वरक शक्ति का क्षय होता है
(ध) उपर्युक्त सभी सत्य

91. भारत के सिंचित कृषि योग्य क्षेत्र के सर्वाधिक भाग में कौन सी फसल बोई जाती है ?

(अ) गन्ना (ब) धान (स) गेहूँ (द) कपास

92. 'शुष्क खेती' जिस पर सरकार हाल में काफी बल दे रही है, का सफलतापूर्वक उपयोग के लिये निम्न में से कौन उपाय सर्वाधिक उपयोगी है ?

(अ) भूमि को परती रखना और बेसिन लिस्टिंग करना
(ब) सुखा सहने की क्षमता रखने वाले बीज का उपयोग
(स) उथली जुताई करना
(द) उपर्युक्त सभी

93. भारत में हरित क्रान्ति के फलस्वरूप अन्न उत्पादन में अभूतपूर्व उन्नति हुई । इसके अन्तर्गत क्या किया गया ?

(अ) उन्नत किस्म के बीजों का प्रयोग
(ब) रोगमुक्त संकर बीजों का प्रयोग
(स) रासायनिक उर्वरकों तथा पेस्टीसाइड का प्रचुर प्रयोग
(द) उपर्युक्त सभी

94. भारत की हरित क्रान्ति के सम्बन्ध कौन सा कथन सर्वाधिक उपयुक्त है ?

(अ) यह एक असफल क्रान्ति थी
(ब) इसकी सफलता आशानुरूप नहीं थी
(स) यह केवल 'गेहूँ' क्रान्ति थी क्योंकि इससे केवल गेहूँ का उत्पादन दूना हुआ
(द) यह एक अत्यन्त सफल क्रान्ति थी क्योंकि इससे सभी खाद्यान्नों के उत्पादन वृद्धि में अप्रत्याशित सफलता मिली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

95. छठी पंचवर्षीय योजना में व कृषि सम्बद्ध क्रियाओं के लिये कितना करोड़ रुपया नियोजित किया गया है ?

(अ) 6956 (ब) 8695
(स) 9276 (द) 12539

96. वर्ष 1981-82 में उर्वरक की खपत की वृद्धि दर कितनी थी ?

(अ) 4% (ब) 8% (स) 10% (द) 18%

97. वर्ष 1982 के अन्त तक देश में सुरक्षित अनाज का भण्डार लगभग कितना करोड़ टन था ?

(अ) 1.85 (ब) 2.18 (स) 1.32 (द) 1.2

98. भारत में उर्वरक की खपत में न्यून वृद्धि दर का एक कारण उर्वरकों का बढ़ता हुआ मूल्य है। खेतों की लागत में उर्वरकों का कितना हिस्सा है ?

(अ) $\frac{1}{3}$ ब) $\frac{1}{4}$ (स) $\frac{1}{5}$ (द) $\frac{1}{6}$

99. 1982 में देश के कुल 416 जिलों में कितने जिलों को अधिकारिक रूप से सूखाग्रस्त जिला घोषित किया गया ?

(अ) 200 (ब) 156
(स) 113 (द) 90

100. फलीदार फसलों के लिये हरी खाद सर्वाधिक उपयुक्त किस कारण से समझी जाती है ?

(अ) यह मुख्यतः शाक होती है
(ब) ये शीघ्रतापूर्वक मिट्टी में सड़ जाती है
(स) इन फसलों की जड़ों में जीवाणु होते है जो हरी खाद से क्रिया करते है और नाइट्रोजन को एकत्र करके उत्पादन वृद्धि करते हैं
(द) ये जीवाणुओं को नष्ट करके फसलों के उत्पादन में वृद्धि करते हैं

101. जायद की फसल अगस्त से सितम्बर तक बोयी जाती है। इसके कटाई का सर्वाधिक उचित समय क्या है ?

(अ) नवम्बर से दिसम्बर (ब) दिसम्बर से जनवरी
(स) फरवरी से मार्च (द) जनवरी से फरवरी

102. फसल चक्र विधि में खेतों में एक फसल के काटने के तुरन्त बाद दूसरी फसल को बोया जाता है या परती छोड़ा जाता है। इस विधि को अपनाने का मुख्य कारण क्या है ?

(अ) भूमि की उर्वरा शक्ति का ह्रास न हो और पैदावार में वृद्धि हो
(ब) उर्वरा शक्ति को ध्यान में रख कृत्रिम उर्वरक के प्रयोग द्वारा पैदावार में वृद्धि करना
(स) उपर्युक्त दोनों असत्य
(द) उपर्युक्त दोनों सत्य

103. खाद्यान्न के 'सुरक्षित भण्डार' का मुख्य ध्येय क्या है ?

(अ) खाद्यान्नों के मूल्यों में स्थिरता लाने के लिये
(ब) प्राकृतिक विपत्तियों के समय इसका उपयोग करने के लिये
(स) खाद्यान्न उत्पादन की कमी की पूर्ति के लिये
(द) उपर्युक्त सभी

104. सघन खेती और मिश्रित खेती अनाज की उत्पादन वृद्धि के लिये प्रयोग में लायी जा रही है। सघन खेती में दो या इससे अधिक फसल एक ही वर्ष में उगाते हैं जबकि मिश्रित खेती में—

(अ) एक ऋतु के अन्त में फसल बोते हैं और दूसरी ऋतु के प्रारम्भ में काटते हैं
(ब) केवल वर्ष में दो फसल उगाते हैं
(स) एक ऋतु में एक साथ दो या अधिक फसल उगाते
(द) ऋतु के अन्तराल में एक साथ दो या अधिक फसल उगाते हैं

105. सुरक्षित भण्डार का खाद्यान्न—

(अ) केवल घरेलू उत्पादकों से क्रय किया जाता है
(ब) घरेलू उत्पादकों से क्रय के साथ आयात भी किया जाता है
(स) केवल आयात ही किया जाता है
(द) सभी असत्य हैं

106. संकर बीजों का उपयोग क्यों लाभप्रद समझा जाता है ?

(अ) ये अधिक उपज वाली होती है
(ब) इनमें जलवायु के परिवर्तन को सहने की शक्ति होती है
(स) इनमें खर-पतवार व रोग से अप्रभावित रहने की क्षमता होती है
(द) उपर्युक्त सभी सत्य

107. नाइट्रोजननीय उर्वरकों का उचित प्रयोग किस समय करना चाहिए ?

(अ) बोआई के पहले (ब) बोआई के समय
(स) बोआई के समय और उसके पश्चात
(द) किसी भी समय

108. दुधारू पशु के भोजन में खनिज तत्व मिला देने से दूध तथा उसकी चिकनाई में क्या अन्तर पड़ता है ?

(अ) दूध में 10% तथा उसके चिकनाई में 1% की वृद्धि होती है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(ब) दूध और उसके चिकनाई में कोई अन्तर नहीं पड़ता
(स) दूध में 25% की वृद्धि तथा उसके चिकनाई में 5% की कमी होती है
(द) दूध में 30% की वृद्धि की तथा उसके चिकनाई में 10% की वृद्धि होती है

109. दुधारू पशुओं को साधारणतः रिजका, बरसीम, जई की कुट्टी, नेपियर या पारा घास खिलायी जाती है। जब नवम्बर-दिसम्बर में हरा चारा नहीं मिलता है तो इन्हें क्या खिलाया जाता है ?
(अ) ज्वार (ब) बाजरा (स) मक्का (द) कुल्थी

110. चारे के रूप में प्रयुक्त होने वाली पत्तियाँ कौन सी हैं ?
(अ) गन्ना की पत्ती व अगोले (ब) झरबेरी
(स) बांस तथा खजूर की कोपलें
(द) पीपल, गूलर, व बरगद की पत्तियाँ व कोपलें
(ध) उपर्युक्त सभी

111. बीमार पशु को किस प्रकार जाना जा सकता है ?
(अ) रोगी पशु खाना पीना तथा जुगाली करना बन्द कर देता है
(ब) रोगी पशु के नथूने सूख जाते है
(स) नाक से पानी या अन्य प्रकार का स्राव बहता है
(द) आंखे सूजी हुई लाल एवं पीली रंग की हो जाती है
(द) उपर्युक्त सभी

112. गाय, भैंस, बकरी का गर्भकाल क्रमशः 280, 310, 150 दिन है। भेड़ का गर्भकाल क्या है ?
(अ) 120 (ब) 150 (स) 170 (द) 20

113. विभिन्न पशुओं के आयु का निर्धारण उनके शरीर के किस अंग के आधार पर किया जाता है ?
(अ) शरीर का आकार (ब) नथूना
(स) दांत (द) उपर्युक्त सभी

114. रानी खेत, फाउल पाक्स व काक्सी डियोसिस रोग किसको होता है ?
(अ) गाय (ब) बकरी (स) भैंस (द) मुर्गी

115. अण्ड की कृत्रिम हैंचिग के लिये 85 अंश-95 अंश F का तापमान होना चाहिए। यह बताइए मुर्गी के अण्डे से चूजे कितने दिनों में तैयार हो जाते है ?
(अ) 7 (ब) 12 (स) 18 (द) 21 (ध) 28

116. मुर्गी से अण्डा पैदा होना किस प्रकार की क्रिया है ?
(अ) प्राकृतिक (ब) जैविक (स) दोनों सत्य

117. निम्न में मुर्गी की कौन सी किस्म नही है ?
(अ) ह्वाइट लोगहार्न (ब) आस्टरलोव रोड
(स) आइलैण्ड रोड (द) जेनीटेलिया ब्राउन

118. दुधारू पशुओं के थनों को बेकार कर उसके दूध को सुखा देने वाला थनैला रोग का कारण—
(अ) वाइरस (ब) बैक्टीरियां (स) प्रोटोजोआ
(द) फुंगी

119. पशुओं में खुरपका-मुखपका रोग निम्न में किसके कारण होता है ?
(अ) वाइरस (ब) प्रोटोजोआ
(स) बैक्टीरिया (द) फुन्गी

120. पशुओं के लिये हरा चारा अत्यन्त आवश्यक होता है। हरे चारे को सुरक्षित रखने की विधि को क्या कहा जाता है ?
(अ) प्रोस्टेट (ब) साइलेज
(स) केस्ट्रेशन (द) उपर्युक्त सभी

121 पशुओं में कृत्रिम गर्भाधान से क्या लाभ होता है ?
(अ) अच्छी संख्या में उत्तम सन्तति प्राप्त करना
(ब) पशुओं की नयी नयी जातियाँ उत्पन्न करना जो कि प्राकृतिक प्रजनन से बिल्कुल असम्भव है
(स) मनवांछित सन्तति प्राप्त करना
(द) इससे कम लागत पर पशुओं का उत्पादन किया जा सकता है (ध) उपर्युक्त सभी

122. क्या सांड़ से प्राप्त वीर्य का संरक्षण किया जा सकता है ?
(अ) हाँ (ब) नहीं (स) कहा नहीं जा सकता

123. गाय का संभोगकाल वर्ष के किस समय होता है ?
(अ) शीत काल (ब) वर्षा काल (स) गर्मी
(द) वर्ष भर तथा गर्मियों में अधिक

124. गधे और घोड़ी के पारस्परिक संभोग से उत्पन्न सन्तान खच्चर कहलाता है। गधी और घोड़ा के पारस्परिक संभोग से उत्पन्न सन्तान क्या कहलाती है ?
(अ) पीनु (ब) हिनी (स) डेल (द) कटैलो

125. दुधारू गाय का प्रमुख लक्षण क्या होता है ?
(अ) शरीर आगे से पतला और पीछे से भारी होता है
(ब) थन बराबर तथा दुग्ध शिरायें उभरी होती हैं
(स) शरीर लम्बा व मुलायम होती हैं
(द) ब्याने का समय निश्चित होता है
(ध) शीघ्र दूध देने वाली होती हैं और वह अधिक मात्रा में दूध देती है तथा चिकनाई का प्रतिशत अधिक होता है (च) उपर्युक्त सभी

126. भारतीय पशु चिकित्सा अनुसन्धान संस्थान कहाँ स्थित हैं ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(अ) भूमा (नई दिल्ली) (ब) इज्जतनगर (बरेली)
(स) शाहीवाल (पटियाला (द) कोयाम्बटर

127. क्या भारत में पशुओं की बीमा योजना का प्रावधान है ?
(अ) हाँ (ब) नहीं (स) निकट भविष्य में प्रारम्भ होने वाली है

128. दूधारू स्वस्थ गाय का औसत भार क्या होता है ?
(अ) 250 कि. ग्रा. (ब) 300 कि. ग्रा.
(स) 400 कि. ग्रा. (द) 500 कि. गा.

129. निम्नलिखित गायों की नस्लों में कौन सी गाय औसतन दूध अधिक देती है ?
(अ) हरियाना (ब) गिर (स) मुर्रा
(द) शाहीवाल (ध) सिन्धी

130. गलघोंटू रोग का प्रकोप अधिकांशतः जुगाली करने वाले पशु और विशेषकर भैंसों पर होता है। यह रोग किससे होता है ?
(अ) बैक्ट्रिया (ब) वाइरस
(स) फुन्गी (द) बोलिगर

131. गाय, भैंस व भेड़ों को बैक्टीरिया द्वारा लंगड़ी रोग (Black Quarter) होता है जिससे वह लँगड़ा हो जाता है। इस रोग का प्रकोप शरीर के किस अंग पर होता है ?
(अ) अगला कंधा (ब) जबड़ा
(स) अगला पैर (द) पिछला पुट्ठा

132. निम्न पशुओं में किसको क्षय रोग अधिक होता है ?
(अ) गाय (ब) भैंस (स) बकरी (द) भेड़

133. बैक्टीरिया से दुधारू पशुओं को थनैला रोग होता है। यह रोग पशुओं के थन को बेकार कर दूध को सुखा देता है। भारत में यह रोग निम्न में किसमें अधिक पाया जाता है ?
(अ) गाय (ब) भैंस (स) बकरी (द) सभी में समान

134. क्या खुले छोड़ने की अपेक्षा बिछाली पर मुर्गियों को रखने से वे अण्डों का उत्पादन अधिक करते हैं ?
(अ) हाँ (ब) नहीं (स) कोई निश्चित नहीं

135. प्रसंकरण के फलस्वरूप उत्पन्न सन्तान-प्रसंकर के सम्बन्ध में क्या सत्य है ?
(अ) माता की तरह होती है
(ब) पिता की तरह होती है
(स) माता पिता दोनों से मिलती जुलती होती है
(द) माता-पिता दोनों से बिल्कुल भिन्न होती है

136. गाय तथा बकरी के क्रमशः 4 व 2 थन होते है, भैंस के कितने थन होते है ?
(अ) 2 (ब) 4 (स) 6 (द) 8

137. अन्न भण्डार की समस्या के कारण भारत में लगभग कितना खाद्यान्न प्रति वर्ष नष्ट होता है ?
(अ) 50 लाख टन (ब) 1 करोड़ टन
(स) 1.25 करोड़ टन (द) 2 करोड़ टन

138. निम्न में कौन सी फसल अभी भी सबसे अधिक समस्याग्रस्त फसल बनी हुयी है, जिसका उत्पादन लक्ष्य से बहुत कम है ?
(अ) धान (ब) गन्ना (स) दलहन (द) गेहूँ

139. निम्न में किस फसल का प्रति हेक्टेयर औसत उत्पादन सर्वाधिक है ?
(अ) मक्का (ब) ज्वार (स) धान (द) गेहूँ

140. भारत के कुल भौगलिक क्षेत्र (32.80 करोड़-हेक्टेयर) में 18.5 करोड़ हेक्टेयर कृषियोग्य भूमि है, यह बताइये कुल भारतीय भौगलिक क्षेत्र के कितने प्रतिशत भाग पर कृषि की जाती है ?
(अ) 26% (ब) 35% (स) 48% (द) 61%

141. चावल, गेहूँ, मक्का, बाजरा, दाल खाद्यान्न हैं, निम्न में व्यावसायिक फसल के अन्तर्गत कौन नहीं आती है ?
(अ) गन्ना (ब) तिलहन
(स) तम्बाकू (द) कपास (ध) तम्बाकू

142. भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद की स्थापना 1954 में की गयी थी। इसका मुख्यालय कहाँ स्थित है ?
(अ) नई दिल्ली (ब) हिसार
(स) बम्बई (द) बड़ौदा

143. भारतीत कृषि अनुसन्धान परिषद द्वारा 1979 में प्रारम्भ किये गये 'Lab to Land' कार्यक्रम का क्या प्रमुख उद्देश्य है ?
(अ) कम साधनसम्पन्न कृषकों को नयी कृषि तकनीकी अपनाने के लिये उत्साहित करना
(ब) इन आधुनिक तकनीकियों को अपना कर फसलों की उत्पादन वृद्धि करना
(स) अन्ततः उनकी आर्थिक दशा को सुधारना
(द) उपर्युक्त सभी

144. भारत में समग्र राष्ट्रीय आय में 35 से 40 प्रतिशत आय कृषि का है, यह बताइये भारत के कुल आयकर का कितना भाग कृषि से प्राप्त होता है ?
(अ) 13% (ब) 22% (स) 82%
(द) कृषि आय पर किसी प्रकार का आयकर नहीं लगता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

145. 1981-82 में अनाज की कुल सरकारी खरीद 1.5 करोड़ टन की हुई थी, निम्न में से किस राज्य में अनाज की सर्वाधिक खरीद हुई थी ?
(अ) उत्तर प्रदेश (ब) बिहार, मध्यप्रदेश
(स) पंजाब, हरियाणा (द) महाराष्ट्र, गुजरात

146. वर्ष 1982-83 के लिये गन्ने का प्रति क्विंटल मूल्य निर्धारित किया गया ?
(अ) 13 रु. (ब) 46 रु.
(स) 41 रु. (द) 102 रु.

147. नवस्थापित NABARD ने निम्नलिखित किन सस्थाओं का कार्यभार संभाला है ?
(अ) एग्रीकल्चर रीफाइनेन्स एण्ड डेवलपमेन्ट कार्पोरेशन
(ब) रिजर्व बैंक ऑव इण्डिया
(स) फूड कार्पोरेशन ऑव इण्डिया
(द) उपर्युक्त सभी

148. वर्ष 1982 के लिये एग्रीकल्चर प्राइस कमीशन ने धान का वसूली मूल्य प्रति क्विंटल कितना निर्धारित किया है ?
(अ) 122 रु. (ब) 128 रु.
(स) 130 रु. (द) 142 रु.

149. विकसित देशों में प्रति हेक्टेयर में लगभग 400 से 700 कि. ग्रा. उर्वरक का प्रयोग किया जाता हैं, भारत में प्रति हेक्टेयर कितने कि.ग्रा. उर्वरक का प्रयोग किया जाता है ?
(अ) 32 (ब) 75 (स) 110 (द) 144

150. फर्टीलाइजर कापरिशन ऑव इण्डिया भारत के अनुर्वरक भूमि को उपजाऊ बनाने के लिये कृषकों को क्या प्रयोग करने के लिये प्रोत्साहित कर रही है ?
(अ) कंपोस्ट खाद (ब) जिप्सम्
(स) पोटाश (द) उपर्युक्त सभी

151. वर्ष 1981-82 को उत्पादकता वर्ष के रूप में मनाया गया। क्या कृषि के क्षेत्र में भी उत्पादन वृद्धि का कार्यक्रम इस वर्ष अपनाया गया था ?
(अ) हाँ (ब) नहीं
(स) पहले था परन्तु बाद में वापास ले लिया गया था

152. नेशनल फर्टिलाइजर कार्पोरेशन द्रवीय उर्वरकों का विकास किस प्रकार के भूमि में उपयोग के लिये किया है ?
(अ) दलदली (ब) पहाड़ी
(स) अत्यन्त शुष्क (द) बंजर

153. नरेन्द्रदेव विश्वविद्यालय, फैजाबाद द्वारा विकसित उन्नत बीज 'नरेन्द्र-1 किस फसल का है ?
(अ) धान (ब) गेहूँ (स) गन्ना (द) कपास

154. पिछले $1\frac{1}{2}$ दशक के दौरान भारत के सम्बन्ध में क्या सत्य है ?
(अ) जनसंख्या वृद्धि दर कृषि उत्पादन के वृद्धि दर से अधिक
(ब) जनसंख्या वृद्धि दर कृषि उत्पादन के वृद्धि दर से कम
(स) जनसंख्या वृद्धि दर व कृषि उत्पादन का वृद्धि दर समान

155. क्या भारत में कृषकों को फसल बीमा की योजना उपलब्ध है ?
(अ) हाँ (ब) नहीं (स) केवल कुछ राज्यों में उपलब्ध

156. ड्राईलैण्ड फार्मिंग के मदद से निम्न में किस फसल का सर्वाधिक उत्पादन प्राप्त करना है ?
(अ) धान (ब) गेहूँ (स) ज्वार (द) बाजरा
(घ) मक्का

157. भारत प्रति वर्ष एक हजार करोड़ रुपये का खाद्य तेल बीज आयात करता है, इस समय भारत में इसका कितना उत्पादन होता है ?
(अ) 2.3 करोड़ टन (ब) 1.8 करोड़ टन
(स) 1.2 करोड़ टन (द) 2.1 करोड़ टन

158. भारत में बढ़ते हुए छोटे व मध्यम जोतों का कृषि उत्पादन प्रति वर्ष कम होता जा रहा है, भारत के किस राज्य में सर्वाधिक छोटे व मध्यम जोत है ?
(अ) उत्तर प्रदेश (ब) बिहार
(स) मध्यप्रदेश (द) प. बंगाल

159. भारत में गेहूँ की फसल को सबसे अधिक कौन सा रोग लगता है ?
(अ) झुलसा (ब) करनाल ब्लन्ट
(स) रेसिका (द) सोनालिका

160. 1982 में किस फसल के अधिक उत्पादन ने समस्या उत्पन्न कर दी है ?
(अ) गन्ना (ब) लम्बे रेशें वाले कपास
(स) तिलहन (द) सोयाबीन
(घ) उपर्युक्त सभी

161. वर्ष 1981-82 में कृषि निर्यात में 16.2% की वृद्धि हुई। यह निर्यात राशि कितनी है ?
(अ) 302 करोड़ रु. (ब) 710 करोड़ रु.
(स) 1796 करोड़ रु (द) 2223 करोड़ रु.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

162. वर्ष 1981-82 में कृषि उत्पादन ने 1978-79 के पिछले रिकार्ड उत्पादन (13.1 करोड़ टन) को भंग किया। इस वर्ष उत्पादन कितना हुआ ?
(अ) 13.3 करोड़ टन (ब) 14 करोड़ टन
(स) 13.7 करोड़ टन (द) 13.9 करोड़ टन

163. वर्ष 1981-82 में किस फसल का उत्पादन आशानुरूप हुआ ?
(अ) रबी (ब) खरीफ
(स) जायद (द) सभी

164. वर्ष 1981-82 में रिकार्ड उत्पादन के बावजूद भी भारत ने पिछले वर्ष गेहूँ का आयात किया। भारत ने किस देश से यह आयात किया ?
(अ) रूस (ब) आस्ट्रेलिया
(स) अमेरिका (द) कनाडा

165. वर्ष 1981-82 में निम्न में किस राज्य में कपास का रिकार्ड उत्पादन नहीं हुआ ?
(अ) आन्ध्र प्रदेश (ब) मध्य प्रदेश
(स) गुजरात (द) पंजाब
(ध) महाराष्ट्र (च) उत्तर प्रदेश

166 वर्ष 1981-82 में किस फसल के उत्पादन में कमी आयी ?
(अ) गेहूँ (ब) धान
(स) दलहन (द) जूट

167. वर्ष 1981-82 में कृषि उत्पादन की वृद्धि दर 5.47% है। छठी पंचवर्षीय योजना में कृषि उत्पादन की वृद्धि दर कितनी निश्चित की गयी है ?
(अ) 4% (ब) 5% (स) 6.25%
(द) 6.75%

उत्तरमाला :

■ सामान्य विज्ञान

1 स, 2 ब, 3 अ, 4 ब, 5 स, 6 अ, 7 ब, 8 ब, 9 स, 10 अ, 11 अ, 12 द, 13 ब, 14 अ, अ, 15 ब, 16 अ, 17 अ, 18 ब, 19 अ, 20 अ, 21 अ, 22 अ, 23 ब, 24 ब, 25 अ, 26 अ, 27 ब, 28 अ, 29 ब, 30 ब, 31 स, 32 ब, 33 द, 34 अ, 35 स, 36 स, 37 स, 38 अ, 39 अ, 40 ब, 41 अ, 42 स, 43 ब, 44 ब, 45 स, 46 ब, 47 ब, 48 ब, 49 अ, 50 अ, 51 ब, 52 स, 53 ब, 54 अ, 55 ब, 56 ब, 57 अ, 58 ब, 59 अ, 60 ब, 61 अ, 62 स, 63 स, 64 ब, 65 ब, 66 ब, 67 ब, 68 ब, 69 स, 70 ब, 71 ब, 72 अ, 73 ब, 74 स, 75 अ, 76 स, 77 स, 78 अ, 79 ब, 80 अ, 81 ब, 82 ब, 83 स, 84 अ, 85 द, 86 ब, 87 अ, 88 अ, 89 अ, 90 ब, 91 अ, 92 ब, 93 स, 94 स, 95 ब, 96 अ, 97 ब, 98 ब, 99 ब, 100 द, 101 स, 102 स, 103 अ, 104 अ, 105 ब, 106 स, 107 ब, 108 अ, 109 अ, 110 ब, 111 स, 112 स, 113 स, 114 स, 115 स, 116 स, 117 स, 118 द, 119 द, 120 ब, 121 स, 122 स, 123 द, 124 अ, 125 स, 126 ब, 127 द, 128 ब, 129 ब, 130 द, 131 अ, 132 स, 133 अ, 134 द, 135 ब, 136 अ, 137 स, 138 स, 139 अ, 140 ब, 141 स, 142 स, 143 ब, 144 ब, 145 स, 146 स, 147 अ, 148 अ, 149 स, 150 स, 151 अ, 152 स, 153 स, 154 स, 155 अ, 156 अ, 157 ब, 158 अ।

■ कृषि तथा पशु चिकित्सा

1 स, 2 ब, 3 ब, 4 ध, 5 च, 6 द, 7 ब, 8 च, 9 ब, 10 स, 11 ब, 12 छ, 13 अ, 14 च, 15 च, 16 अ, 17 ध, 18 ज, 19 ध, 20 ब, 21 अ, 22 द, 23 च, 24 अ, 25 स, 26 ध, 27 अ, 28 स, 29 ब, 30 अ, 31 स, 32 द, 33 च, 34 ब, 35 द, 36 ब, 37 ब, 38 स, 39 द, 40 द, 41 ब, 42 ब, 43 अ, 44 छ, 45 ब, 46 द, 47 स, 48 द, 49 द, 50 ब, 51 स, 52 ब, 53 स, 54 स, 55 ध,ब, 56 अ, 57 अ, 58 च, 59 ध, 60 द, 61 छ, 62 ब, 63 स, 64 ब, 65 अ, 66 स,द 67 स, 68 ध, 69 ब, 70 ध, 71 स, 72 द, 73 ध, 74 स, 75 च, 76 ब, 77 च, 78 स, 79 स, 80 स, 81 द, 82 ब, 83 स, 84 द, 85 द, 86 स, 87 द, 88 ब, 89 स, 90 ब, 91 ब, 92 द, 93 द, 94 स, 95 ब, 96 स, 97 द, 98 स, 99 द, 100 स, 101 ब, 102 द, 103 द, 104 स, 105 ब, 106 द, 107 स, 108 अ, 109 अ,स 110 ध, 111 ध, 112 ब, 113 स, 114 द, 115 द, 116 अ, 117 स, 118 ब, 119 अ, 120 ब, 121 ध, 122 अ, 123 द, 124 ब, 125 च, 126 ब, 127 अ, 128 स, 129 स,द, 130 अ, 131 अ,द 132 ब, 133 अ, 134 अ, 135 ब, 136 स, 137 स, 138 स, 139 ध, 140 स, 141 द, 142 अ, 143 द, 144 ध, 145 स, 146 अ, 147 अ,ब, 148 अ, 149 अ, 150 ब, 151 अ, 152 स, 153 अ, 154 ब, 155 स, 156 अ, 157 स, 158 अ, 159 ब, 160 अ, ब, 161 स, 162 अ, 163 ब, 164 स, 165 ब, 166 ब, 167 अ, । ■ ■

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

brain wave !

"To darkness are they doomed who devote themselves to the life in the world, and to a greater darkness they who devote themselves only to meditation. They who devote themselves both to life in the world and to meditation, by life in the world overcome death, and by meditation achieve immortality."

—Ish Upanishad.

Test of English Language.

1. Read the following passage carefully, and answer the questions that follow it. Your answers *must* be brief.

The raven built his nest on an island, and when his young were hatched he began carrying them from the island to the mainland. He took the first one up in his claws and flew with him across the sea.

When he reached the middle of the ocean he grew tired, and his wings beat more slowly.

"Now I am strong and he is weak, and I am carrying him across the sea," he thought, "but when he grows great and powerful and I am old and weak, will he remember my toil and carry me from one place to another ?" And the old raven asked the young one : "When I am weak and you are strong, will you carry me ? Tell me the truth !"

The young raven was afraid that his father might drop him into the ocean, and he said : "I will !"

But the old raven did not believe his son, and he opened his claws and let him fall. He dropped like a lump and drowned in the sea. The old raven flew back to the island.

Then he took his second son in his claws and flew with him across the sea. Again he grew tired, and again he asked his son whether he would carry him from place to place when he was old. The raven afraid of being dropped into the ocean, said : "I will !"

The father did not believe this son either, and he let him fall into the sea.

When the old raven flew back to his nest there remained only one young raven. He took his last son and flew with him across the sea. When he came to the middle of the ocean and grew tired he asked : "Will you feed me and carry me from place to place in my old age ?"

"No, I will not," the young raven replied.

"Why not ?" asked the father.

"When you are old and I am grown I shall have my own nest and my own young to feed and carry"

"He speaks the truth," thought the old raven. "I shall exert myself and carry him across the sea."

And the old raven did not drop the young one, but beat his wings with his last remaining strength in order to carry him to the mainland so that he could build his nest and raise his young. ('*The Raven And His Young*' *by* : Lev Tolstoy).

(i) How many sons did the raven have ?

(ii) How did the raven carry his sons to the mainland ?

(iii) Why was the raven angry with his sons ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(iv) What reply did the elder sons give to the raven ?

(v) Why did the old raven carry his third son across the sea ?

(vi) What reply did the third son give ?

(vii) Was the old raven satisfied with the answer of his youngest son ?

(viii) What was the old raven thinking while carrying his sons ?

(ix) Was it the truthfulness of the youngest son that saved him ?

(x) What is the idea behind the story ?

2. Tick the word *nearest* in meaning to the key word.

(i) Interject.
(a) interpose (b) interline
(c) interlock (d) interment

(ii) Knave.
(a) leek (b) stupid
(c) limpid (d) rogue

(iii) Lief.
(a) page (b) paper
(c) gladly (d) willingly

(iv) Maraud.
(a) rave (b) cave
(c) plunder (d) blunder

(v) Moron.
(a) dream (b) food
(c) vessel (d) orb

(vi) Nincompoop.
(a) wise (b) rational
(c) beatitude (d) simpleton

(vii) Fib.
(a) lie (b) cloth
(c) violent (d) fiery

(viii) Pander.
(a) force (b) profit
(c) procurer (d) reprehend

(ix) Rebuke.
(a) love (b) detest
(c) reprehend (d) sardonic

(x) Sedulous.
(a) seduction (b) diligent
(c) seductive (d) pilfer

3. Pick the word you believe is *opposite* in meaning to the key word.

(i) Affable.
(a) fable (b) generous
(c) amicable (d) rude

(ii) Boisterous.
(a) loud (b) noisy
(c) calm (d) quiet

(iii) Concur.
(a) discord (b) disheavel
(c) dislodge (d) disagree

(iv) Desultory.
(a) desert (b) systematic
(c) demerit (d) insolence

(v) Exquisite.
(a) detestable (b) morose
(c) spurious (d) ignominy

(vi) Fade.
(a) exemplify (b) exalt
(c) exuberate (d) bloom

(vii) Gai ty.
(a) doorway (b) melancholy
(c) joy (d) pleasant

(viii) Hideous.
(a) beautiful (b) revulsive
(c) frightful (d) comely

(ix) Induce.
(a) force (b) dissuade
(c) persuade (d) attract

(x) Lavish.
(a) niggardly (b) profuse
(c) prodigal (d) abundant

4. Give one-word/idiom substitution to each of the following.

(i) "To work up into dough."
(a) matricide (b) doctrinate
(c) knead (d) grate

(ii) "One who is the favourite of a distinguished personage and serves him as a slave."
(a) minion (b) flatterer
(c) toady (d) fay

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(iii) "To get into a difficult or unpleasant situation."
(a) to rule the roost
(b) to get into a mess
(c) to have a high ball
(d) to tunnel into troubled waters

(iv) "To compensate for damage, injury, wrongdoings etc."
(a) to make amends
(b) to keep the poy boiling
(c) to kick up ones head
(d) to make a detour

(v) 'Disagreeable vocal sound.'
(a) discordant (b) cacophony
(c) fibbing (d) taleology

(vi) 'Writing or speech in praise of a person.'
(a) Epistemology (b) tautology
(c) Encomium (d) taleology

(vii) "To be less than forty years old."
(a)to be on the right side of forty
(b) to age in young
(c) to be a carnage of youth
(d) to be on the seamy side of forty

(viii) "To be engaged in a task or work which is too difficult."
(a) to be a tool at task
(b) to be out of depth
(c) to face the music
(d) to sing jazz for rock

(ix) "To remove all objectionable or offensive matters."
(a) implicate (b) expulcate
(c) expurgate (d) extricate

(x) "Use of many words where few would do."
(a) circumlocution (b) gullable
(c) paracitamol (d) xyloferation

5. Fill in the blank space(s) in each sentence meaningfully.

(i) Siddhartha's fortune has been..... over the years by.....planning.
(a) built up/careful
(b) made up/wishful
(c) constructed/ardous
(d) contrused/whimsical

(ii) Ritashri doesn't.....with the rest of her group.
(a) accomplish (b) fit up
(c) fit in (d) fit on

(iii) Anudha always..... with her knowledge of psychology, if she thinks she can.....anyone.
(a) shows up/convince
(b) shows upon/convert
(c) show in/talk to
(d) shows off/impress

(iv) Vikram hopes that he.....solve the mystery soon.
(a) shall (b) would
(c) will (d) should

(v) Anushri asked : "What.....you say if someone.....taking a very long time to reach a decision ?
(a) might/were
(b) will/was
(c) would/will be
(d) shouldn't/can't be

(vi) No one brought.....that question.....the meeting.
(a) out/in (b) in/on
(c) into/upon (d) up/at

(vii) Vatsala remembered several occasions in the past.....she had experienced a similar feeling.
(a) since (b) as
(c) on which (d) since then

(viii) There are times.....everyone needs to be alone.
(a) from which (b) upon which
(c) when (d) at which

(ix) The family.....in the small cottage near the coast.
(a) reside (b) dwell
(c) inhabit (d) live

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(x) Anagat is going to.....tonight.
(a) see a film (b) the cinema
(c) see a picture (d) watch a picture

6. Re-write as directed in brackets.
(i) They gave up the search after eight hours.
(Turn into passive)
(ii) "Are you willing to help me do this job ?"
(Turn into reported speech)
(iii) 'Sukriti was brought up in the belief that pleasures were sinful. As a result, she now leads an ascetic life.'
(Join the sentences using participles)
(iv) 'She could see, *looking back over the past*, where she had gone wrong.'
(Replace the words in italics by a single adverb).
(v) 'When Pranita got home, she found that her parents were already in bed.' (go)
(Use a perfect tense of the verb in brackets)
(vi) 'Anagat keeps Suparna's jewels in the bank. He fears the house may be burgled.' (lest)
(Combine into a sentence using word in brackets)
(vii) 'How splendid ! you'll be coming to live near us.'
(Begin the sentence with 'it')

***Test of Numerical/Reasoning Ability.**

7. (i) What is the total of the hour-numbers of a clock ?
(a) 60 (b) 120 (c) 78 (d) 48
(ii) Two groups of labourers are filling a tank with water—Group A in the day and Group B at night. Group B fills the double of the total water filled by Group B. On the night of the 30th day the tank is completely filled. On which day was the tank half-full ?
(a) 20th (b) 15th (c) 30th (d) 10th
(iii) At present the age of 'P' is two times more than that of 'R' but 18 years ago P's age was three times more than that of 'R'. What is the present age of 'P' and 'R'.?
(a) P : 72 yrs., R : 36 yrs
(b) P : 35 yrs., R : 18 yrs
(c) P : 54 yrs., R : 27 yrs
(d) None of these
(iv) R is walking at the speed of 40 km/hour. At a point R meets L whose speed is half of R's. They walk in the same direction without stopping. What will be the distance between them after half an hour.?
(a) 50 km (b) 60 km
(c) 20 km (d) 10 km
(v) A student walked to his school at the speed of 5 km/hr but reached 5 minutes late than the school-time. Next day he walked 20% faster than the first day and reached school five minutes before the school-time. What is the distance between the student's home and the school ?
(a) 20 km (b) 15 km
(c) 10 km (d) 5 km

8. (i) Unscramble these ten Jumbles to form ten ordinary words.
a. kaywg
b. niroy
c. lestus
d. daynit
e. litee
f. immax
g. mercoh
h. pelsog
i. vurec
j. bynad
(ii) Unscramble these Jumbles, add the letter 'B' to each of the mazy word to make it meaningful.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

a. chrea b. has
c. ten d. tyoun
e. nilk f. moos
g. moxu

2. (i) All Tulips are Girls
Agnima is a Girl
Therefore —
(a) Agnima is a Tulip
(b) Girls are generally Tulips
(c) Some girls are Tulips
(d) Girls can be nothing else but girls

(ii) All creation is Music
All Sound is Creation
All Nature is Sound
All Dance is Nature
Therefore —
(a) All Dance is Music
(b) All Nature is Creation
(c) All Mu ic is Sound
(d) All is All

(iii) Add all the Even and Odd numbers, then find out their difference.
14, 5, 12, 3, 4, 11, 9, 1, 2.
(a) 23 (b) 92
(c) 22 (d) 3

(iv) Dulcet is related to Sweet, in the same way as Outlandish is related to.....
(a) Ravish (b) Indigenous
(c) averie (d) Peregrine

(v) Repelling is related to Seductive, in the same way as Whimsical is related to.....
(a) Eccentric (b) Enticing
(c) Staid (d) Moron

KEY TO EXERCISES

Test of English Language :

1. (i) The raven had three sons.
(ii) The raven took his sons in his claws and carried them one by one.
(iii) The raven was angry with his two elder sons because he thought they were being untruthful to him.
(iv) The elder son replied that he would carry the old raven from place to place when he grew strong.
(v) The old raven carried the third son across the sea because he thought that he alone spoke the truth.
(vi) The third son replied that instead of feeding his father and carrying him from place to place he would build a nest of his own, look after his young ones, and feed them.
(vii) The old raven was satisfied with the answer of his youngest son.
(viii) The old raven was thinking whether in his old age, when he becomes weak, his sons will look after and feed him as he is helping his sons grow.
(ix) The youngest son was saved by his truthfulness. Mor over, he was stating a hard fact of life which the old raven realised.
(x) The idea behind the story is to reflect the order of Nature—the chain of progressive change, where the old (once new) procreates new and the new newer still. The old sustains the new.

2. (i) a; (ii) d; (iii) c & d; (iv) c; (v) b; (vi) d; (vii) a; (viii) c; (ix) c; (x) b.

3. (i) d; (ii) c; (iii) d; (iv) b; (v) a; (vi) d; (vii) b; (viii) a & d; (ix) b; (x) a.

4. (i) c; (ii) a; (iii) b; (iv) a; (v) b; (vi) c; (vii) a; (viii) b; (ix) c; (x) a.

5. (i) a; (ii) c; (iii) d; (iv) c; (v) a; (vi) d; (vii) c; (viii) c or d; (ix) d; (x) b.

6. (i) The search was given up after eight hours.
(ii) I asked him if he was willing to help me do the job.
(iii) Having been brought up in the belief that pleasures were sinful, Sukriti now leads an ascetic life.

(Contd. on Page 88)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

South Asian Cooperation

—*by* P. Mukhopadhyay*

The efforts to translate into reality the idea of South Asian cooperation, which was initiated by Bangladesh, have so far remained at a low key. Officials of the seven countries have met a few times to prepere, among other things, the ground for a meeting at the level of foreign ministers; some areas have also been identified for cooperation. But extreme caution, if not reservation hampers this idea of coopera ion from blossoming as it should. The success of such regional groupings elsewhere should encourage regional cooperation in South Asia, but historical interstate relations come in the way.

Of predominant impact are the relations between India and Pakistan, two prominent nations in the region. Bitterness has been their main feature, leading to four wars in 25 years. India is the largest country of the region and after the split up of Pakistan the relative equation in terms of population, resources etc. has futher shifted in its favour, and India looms all the larger on the horizon of its neighbours. They betray all the complexes of a big-small state relationship, but their misgivings are unfounded. India has no territorial ambitions nor has it any ideology to export. Its size, population and state of development have given India the status of a medium power in the community of nations, and full exploitation of its potential, as perceived by Nehru, would perhaps enable it to eventually occupy a predominant position in the world. But this possibility is no hindrance to other nations in the subcontinent to join together for mutual cooperation on the basis of equal sovereignty and rights.

President Ziaur Rahman of Bangladesh when he pressed forward with the idea of South Asian cooperation, expressed this belief. "In South Asia, as in other regions of the world," Zia argued, "we have countries at different levels of development, some are relatively less developed than others....(but) the countries of South Asia share many common values that are rooted in their social, cultural and historical traditions; perceptions about certain specific events or political situation of the world may differ, but such differences do not seem to create a gulf between them that cannot be bridged."

The gulf, of course, is there, such as Pakistan continuing to hold Kashmir that remains a matter of dispute with India, though it has been agreed under the Simla Agreement that resort to war needs to be avoided. There are also divergences in their threat perceptions and the involvement of the superpowers in them remains pronounced. However, after having been involved in different military and other alliances over the years, Pakistan has become a member of the nonaligned movement.

Bangladesh in its brief history also passes through different phases in its relations with India. Some points of dispute still linger though they have now been narrowed down and the possibility of a somewhat stable relationship in the near future has become better. Indo-Nepalese relations also had their ups and downs which to some extent reflected the anxieties and aspirations of a landlocked country. Its desire to play off India and China against each other may have brought

*Institute for Defence Studies And Analyses, New Delhi.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिविल सर्विस विशेषांक (द्वितीय)

प्रगति मंजूषा

प्रतियोगितात्मक परीक्षाओं हेतु सर्वाधिक लोकप्रिय मासिक

मार्च, 1983

मूल्य - रु० 4.00

प्राप्त संख्या 77
प्राप्त दिनांक 12-3-83

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी

• गुटनिरपेक्ष आन्दोलन : बेलग्रेड से नई दिल्ली तक • जरूरत आधुनिक प्रौद्योगिकी की विध्वंसक प्रवृत्तियों के बदलाव की • यूनीस्पेस 82 - अंतरिक्ष में नयी अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था • नवम् एशियाई खेल और भारत • अन्तर्राष्ट्रीय वृद्ध वर्ष

सिविल सर्विसेज प्रारम्भिक परीक्षा हेतु भारतीय राज्य व्यवस्था तथा सामान्य विज्ञान पर महत्वपूर्ण वस्तुपरक परीक्षण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समन्वित ग्रामीण विकास

खुशहाली की ओर बढ़ती जिन्दगी के
अनेक रूपों में आइना-उत्तर प्रदेश।

समन्वित ग्रामीण विकास तथा राष्ट्रीय रोजगार कार्यक्रम को तेजी से चलाने हेतु 200 करोड़ रुपयों का व्यय किया गया है तथा राज्य के सभी 885 विकास खण्डों में से हर एक में सबसे कमजोर 600 परिवारों. विशेषरूप से अनुसूचित जाति एवं जनजाति के परिवारों को चुन लिया गया है तथा 5.31 लाख परिवारों को गरीबी की रेखा से ऊपर उठाने के लिए हर सम्भव प्रयास किया जा रहा है।

एकीकृत ग्राम विकास योजना, जो राज्य सरकार के सभी विकास खण्डों में लागू हो चुकी है के अन्तर्गत अभी तक 1.48 परिवार लाभान्वित हो चुके हैं जिसमें 52 हजार परिवार अनुसूचित जाति तथा जनजाति के हैं।

प्रदेश भर में गांव सभाओं के निर्वाचन सम्पन्न हो चुके है तथा न्याय पंचायतों के गठन की प्रक्रिया आरम्भ हो चुकी है।

राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार योजना में पिछले वर्ष 1358.53 लाख रुपये लगाकर 107.03 लाख मानव दिवसों के बराबर रोजगार के मौके सृजित किये गये।

जनता बायो गैस कार्यक्रम के अन्तर्गत 2,350 बायो गैस प्लान्ट पिछले वर्ष लगाये गये तथा 2,614 इकाइयों के कार्य प्रगति पर है।

ग्रामीण विकास विभाग ने पेय जल की सुविधा जुटाने हेतु, हरिजन बस्तियों में लगभग 53000 कुओं, डिग्गियों का निर्माण तथा हैण्ड पम्प लगाये गये हैं।

प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी का

20 सूत्री कार्यक्रम

बहुमुखी विकास का बीज मंत्र

सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश द्वारा प्रसारित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रगति मंजूषा

प्रतियोगितात्मक परीक्षाओं हेतु सर्वाधिक लोकप्रिय मासिक

[राष्ट्र की भाषा में राष्ट्र को समर्पित]

मार्च—1983

वर्ष—6

अंक—3

इस अंक का मूल्य—रु० 4.00

पृष्ठ संख्या—88

सम्पादक
रतन कुमार दीक्षित

सह-सम्पादक
प्रदीप कुमार वर्मा 'रूप'

उप-सम्पादक
जी. शंकर घोष, राकेश सिंह सेंगर

मुख्य कार्यालय
436, मसफोर्डगंज
इलाहाबाद-211002

शाखा जनसम्पर्क
प-7, प्रेस एन्क्लेव
साकेत, नई-दिल्ली

डी. 47/5, कबीर मार्ग
क्ले स्क्वायर, लखनऊ

विज्ञापन सम्पर्क-सूत्र
169/20 ख्यालीगंज, लखनऊ
दूरभाष : 43792

आवरण : कोलोरैड, इलाहाबाद

चन्दे की दर
वार्षिक : रु. 44.00, अर्द्ध वार्षिक : रु. 22.00
सामान्य अंक (एक प्रति) : रु. 4.00
(चन्दा मनीआर्डर द्वारा मुख्य कार्यालय को ही भेजें)

©पत्रिका में प्रकाशित सामग्री का सर्वाधिकार प्रकाशक के अधीन सुरक्षित है। पत्रिका में प्रकाशित लेखों के विचारों से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

विशेष आकर्षण

- सिविल सर्विस प्रारम्भिक परीक्षा हेतु भारतीय राज्य व्यवस्था पर वस्तुपरक परीक्षण विशिष्ट परिशिष्ट/2
- सिविल सर्विस प्रारम्भिक परीक्षा हेतु सामान्य विज्ञान पर वस्तुपरक परीक्षण विशिष्ठ परिशिष्ठ/25

परीक्षोपयोगी महत्वपूर्ण लेख

- अन्तरराष्ट्रीय वृद्ध वर्ष/55
- यूनीस्पेस 82 : अन्तरिक्ष में नयी अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था/57
- जरूरत आधुनिक प्रौद्योगिकी की विध्वंसक प्रवृत्तियों के बदलाव की है/61
- नवम् एशियाई खेल और भारत/65
- गुटनिरपेक्ष आन्दोलन : बेलग्रेड से नयी दिल्ली तक/70

स्थायी स्तम्भ

- राष्ट्रीय सामयिकी/36
- अन्तरराष्ट्रीय सामयिकी/41
- समसामयिक सामान्य ज्ञान/48
- क्रीड़ा जगत/78
- Focus on Banking/Civil/Defence Services Examination / 81

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिविल सर्विस प्रारम्भिक परीक्षा
विशिष्ट परिशिष्ट

भारतीय राज्य व्यवस्था

भारत का संविधान

प्रस्तावना

"हम, भारत के लोग, भारत को एक 'सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न लोकतन्त्रात्मक धर्मनिरपेक्ष समाजवादी'* गणराज्य बनाने के लिये तथा उसके समस्त नागरिकों को सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय, विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतंत्रता, प्रतिष्ठा और अवसर की समता प्राप्त करने के लिये तथा उन सब में व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता और 'अखण्डता'**सुनिश्चित करने वाली बंधुता बढ़ाने के लिये दृढ़ संकल्प होकर अपनी इस संविधान सभा में आज 26 नवम्बर 1949 ई. (मिति मार्गशीष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हजार छः विक्रमी) को एतद् द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।"

*संविधान (42वें संशोधन) अधिनियम, 1976 द्वारा 'सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न लोकतन्त्रात्मक गणराज्य' तथा**'राष्ट्र की एकता' के लिये प्रतिस्थापित किया गया।

मूल अधिकार

भारत की यथार्थताओं को देखते हुए संविधान के भाग 3 के अनुच्छेद 12 से अनुच्छेद 32 में नागरिकों को सात मूल अधिकार प्रदान किये गये हैं। इन मूल अधिकारों का उपभोग समुचित सीमाओं से प्रतिबन्धित किया गया है। मूल संविधान में प्रदत्त किये गये मूल अधिकार निम्नलिखित हैं।

(1) समानता का अधिकार (अनुच्छेद 14 से अनुच्छेद 18)—विधि के सम्मुख समानता तथा विधि के समान संरक्षण; धर्म, जाति, लिंग या जन्म स्थान के आधार पर भेदभाव न करना; सार्वजनिक सेवाओं में सभी को समान अवसर प्रदान करना; अस्पृश्यता का अन्त; सेना तथा विद्या सम्बन्धी उपाधियों के अलावा अन्य सभी उपाधियों की समाप्ति।

(2) स्वतन्त्रता का अधिकार (अनुच्छेद 19 से अनुच्छेद 22)—सभी नागरिकों को (अ) विचार और अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता, (ब) अस्त्र शस्त्र रहित तथा शान्तिपूर्ण सम्मेलन की स्वतन्त्रता, (स) संस्था व संघ के निर्माण की स्वतन्त्रता, (द) भारत राज्य क्षेत्र में अबाध संचरण की स्वतन्त्रता, (ध) भारत राज्य क्षेत्र में अबाध निवास की स्वतन्त्रता एवं (च) वृत्ति, उपजीविका या कारोबार की स्वतन्त्रता प्रदान की गयी है। इसके अतिरिक्त, सरकार के अनुचित हस्तक्षेप से नागरिकों की व्यक्तिगत स्वतन्त्रता तथा जीवन की सुरक्षा की संरक्षण प्रदान करना है। परन्तु ये सब स्वतन्त्रताएं असीमित नहीं हैं। स्वतन्त्रता सम्बन्धी विभिन्न अधिकारों के सम्बन्ध में संविधान द्वारा विभिन्न प्रतिबन्धों का उल्लेख है जिनका सरकार विवेक सम्मत प्रयोग कर सकती है।

(3) शोषण के विरुद्ध अधिकार (अनुच्छेद 23 से 24)—मनुष्यों के क्रय विक्रय को निषिद्ध ठहराया गया है। बेगार व अन्य प्रकार के बलातश्रम को अपराध घोषित किया गया है जो विधि के अनुसार दण्डनीय होगा। बालश्रम को भी वर्जित ठहराया गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(4) धार्मिक स्वतन्त्रता का अधिकार (अनुच्छेद 25 से अनुच्छेद 28)—सभी व्यक्तियों को समान रूप से अन्तःकरण की स्वतन्त्रता, व धार्मिक मामलों का प्रबन्ध करने की स्वतन्त्रता प्रदान की गयी है। किसी विशेष धर्म की उन्नति के लिये व्यय हेतु निश्चित धन पर कर अदायगी की छूट। राजकीय शिक्षण संस्थाओं में धार्मिक शिक्षा या धार्मिक उपासना में उपस्थित होने के विषय में स्वतन्त्रता।

(5) सांस्कृतिक तथा शिक्षा सम्बन्धी अधिकार (अनुच्छेद 29 तथा 30)—नागरिकों के प्रत्येक वर्ग को अपनी भाषा, लिपि या संस्कृति सुरक्षित रखने का पूर्ण अधिकार प्राप्त है। धर्म तथा भाषा पर आधारित सभी अल्पसंख्यक वर्गों को अपनी रुचि की शिक्षण संस्थाओं की स्थापना तथा उनके प्रशासन का अधिकार होगा।

(6) सम्पत्ति का अधिकार (अनुच्छेद 19 (च), 31 (क) (ख) (ग)—व्यक्ति को सम्पत्ति का अधिकार प्रदान किया गया था। संविधान (42वें संशोधन) अधिनियम द्वारा संशोधन करके सम्पत्ति के मूलाधिकार को समाप्त कर दिया गया। अब यह केवल सामान्य अधिकार रह गया।

(7) संवैधानिक उपचारों के अधिकार (अनुच्छेद 32)—नागरिक संवैधानिक उपचारों (बन्दी प्रत्यक्षीकरण) (Habeas Corpus), परमादेश (Mandamus), प्रेषण (Certiorari), अधिकारपृच्छा (Quo-Warranto), प्रतिषेध (Prohibition) के अधिकार का प्रयोग करके अपने मूलाधिकारों को न्यायपालिका की सहायता से सुरक्षित रख सकते हैं।

राज्य नीति के निदेशक तत्व

संविधान के भाग 4 में अनुच्छेद 38 से अनुच्छेद 51 में वर्णित राज्य नीति के निर्देशक तत्वों का उद्देश्य जनता के कल्याण को प्रोत्साहित करने वाली सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था का निर्माण करना है। यह तत्व देश के शासन चलाने में मूलभूत है और राज्य का यह कर्तव्य है कि विधि निर्माण के समय इनको ध्यान में रखे।

अनुच्छेद 38—लोक कल्याण की उन्नति हेतु सामाजिक व्यवस्था का निर्माण। अनुच्छेद 39—राज्य द्वारा अनुसरणीय कुछ तत्व जैसे प्रत्येक को जीविका के पर्याप्त साधन प्राप्त करने का अधिकार, सामुदायिक साधनों का न्यायपूर्ण वितरण, धन एवं उत्पादन के साधनों को कुछ गैर सरकारी हाथों में केन्द्रित होने से रोकना; समान कार्य के लिये समान वेतन; श्रमिक, स्त्री, पुरुष एवं बालकों के शोषण पर प्रतिबन्ध। अनुच्छेद 39 क—समान न्याय एवं निःशुल्क न्यायिक सहायता प्रदान करने की सुविधा। अनुच्छेद 40—ग्राम पंचायतों का संगठन। अनुच्छेद 41—कुछ अवस्थाओं में कार्य, शिक्षा और लोक सहायता पाने का अधिकार। अनुच्छेद 42—कार्य की न्याय्य व मानवोचित दशाओं का और प्रसूति सहायता का उपबन्ध। अनुच्छेद 43—श्रमिक के लिये निर्वाह मजदूरी। अनुच्छेद 44—उद्योगों के प्रबन्ध में कर्मचारियों के भाग लेने की व्यवस्था। अनुच्छेद 45—बालकों के लिये निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा का उपलब्ध। अनुच्छेद 46—अनुसूचित जातियों, आदिम जातियों तथा अन्य पिछड़े वर्ग को शिक्षा और अर्थ सम्बन्धी हितों की उन्नति। अनुच्छेद 47—आहार पुष्टि और जीवन स्तर को ऊंचा करने तथा सार्वजनिक स्वास्थ्य के सुधार करने में राज्य का कर्तव्य। अनुच्छेद 48—कृषि एवं पशुपालन का संगठन। अनुच्छेद 49—राष्ट्रीय महत्व के स्मारकों, स्थानों और वस्तुओं का संरक्षण। अनुच्छेद 50—कार्यपालिका से न्यायपालिका का पृथक्करण अनुच्छेद 51—अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति एवं सुरक्षा की उन्नति।

मूल कर्तव्य

संविधान (42 वें संशोधन अधिनियम 1976) द्वारा भारतीय संविधान में एक नया अध्याय 4 ए तथा अनुच्छेद 51 ए जोड़ दिया गया है जिनमें नागरिकों के 10 मूल कर्तव्य का उल्लेख किया गया है।

(1) संविधान का पालन करें तथा उसके आदर्शों, संस्थाओं राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करें। (2) स्वतंत्रता के लिए राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को संजोय रखे और उनका पालन करें। (3) भारत की प्रभुता, एकता और अखण्डता की रक्षा करें और उसे अक्षुण्ण रखें। (4) देश की रक्षा करें और आह्वान दिये जाने पर राष्ट्र की सेवा करें। (5) भारत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करें जो धर्म, भाषा, प्रदेश और वर्ग पर आधारित सभी भेदभाव से परे हों, ऐसी प्रथाओं का त्याग करें जो स्त्रियों के सम्मान के विरुद्ध हो। (6) सामाजिक संस्कृति की गौरवशाली परम्परा का महत्व समझे और उसका परीक्षण करे। (7) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अन्तर्गत पन, झील, नदी और वन्य जीव भी हैं, रक्षा करे और उनका संवर्द्धन करे और प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखें। (8) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करें। (9) सार्वजनिक सम्पत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे। (10) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का निरन्तर प्रयत्न करे जिससे राष्ट्र निरन्तर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नयी ऊँचाइयों को छूलें।

सप्तम अनुसूची (अनुच्छेद 246)†

संघ सूची—97 प्रविष्टियाँ

प्रतिरक्षा एवं प्रतिरक्षा सम्बन्धित उद्योगों के सभी पक्षों पर; विदेशी मामले; नागरिकता, रेल, वायु मार्गों एवं विमान अड्डों; राष्ट्रीय मार्गों; समुद्र; नौवहन; राष्ट्रीय जलमार्गों; राष्ट्रीय बन्दरगाहों, डाक-तार; सिक्का एवं मुद्रा; आयात-निर्यात; विदेशी ऋण; अन्तर्राज्यिक वाणिज्य एवं व्यापार; वाणिज्यिक निगम, खनिज तेल; केन्द्र द्वारा नियंत्रित उद्योग; जनगणना; उच्चशिक्षा; कृषि आय छोड़कर अन्य आय इत्यादि।

राज्य सूची-65 प्रविष्टियाँ

लोक व्यवस्था एवं पुलिस; स्थानीय सरकारें; सार्वजनिक स्वास्थ; मादक पेय; जुआ; भूमि, सिंचाई एवं कृषि; मनोरंजन शमशान; संचार के साधन (पुल, सड़के, अन्तर्देशीय) जो केन्द्र के क्षेत्राधिकारी में नहीं आते; उद्योग जो केन्द्र के नियन्त्रण में नहीं आते, कारागार, इत्यादि।

समवर्ती सूची-47* प्रविष्टियां

मूल विधियाँ (जैसे संविधा विधि, अपराध विधि, आदि) श्रम; योजना; व्यवसाय (विधिक चिकित्सा आदि) सामाजिक सुरक्षा, विवाह; मूल्य नियन्त्रण, खाद्य पदार्थों और अन्य वस्तुओं में अपमिश्रण, कुछ विशिष्ट वस्तुओं का व्यापार, उनका उत्पादन एवं संभरण व वियरण, विद्युत, समाचार पत्र इत्यादि।

*आरम्भ में इस सूची में 47 प्रविष्टियाँ थीं। संविधान (42 वें संशोधन अधिनियम 1976 द्वारा वन और शिक्षा को राज्य सूची से समवर्ती सूची में स्थानान्तरित कर दिया गया।

†केन्द्र, संघ सूची के किसी विषय पर भारत के सम्पूर्ण राज्य क्षेत्र अथवा उसके किसी भाग के लिये कानून बना सकेगी। उसी प्रकार राज्य, राज्य सूची के किसी विषय पर उस सम्पूर्ण राज्य के अथवा उसके किसी भाग के लिए कानून बना सकेगा। समवर्ती सूची के विषयों पर केन्द्र एवं राज्य को कानून बनाने का अधिकार प्राप्त है परन्तु यदि समवर्ती सूची में उल्लिखित किसी विषय पर केन्द्र एवं राज्य कानून निर्माण करता है तो केन्द्र द्वारा निर्मित कानून मान्य होगा। केन्द्र को उन सभी विषयों पर कानून बनाने का अधिकार है जिनका उल्लेख सप्तम अनुसूची में नहीं है। अनुच्छेद 249, 252 एवं 253 के अनुसार, केन्द्र कुछ विशेष परिस्थितियों में राज्य के विधायिनी शक्तियों में हस्तक्षेप कर संसदीय कानूनों का निर्माण कर सकती है।

भाषाएं (अष्टम अनुसूची अनुच्छेद-344 (!), 351

1. असमिया, 2. उड़िया, 3. उर्दू, 4. कन्नड़, 5. कश्मीरी, 6. गुजराती, 7. तमिल, 8. तेलुगू, 9. पंजाबी, 10. बंगला, 11. मराठी, 12. मलयालम, 13. सिन्धी [संविधान (21 वें संशोधन) अधिनियम 1967 द्वारा प्रतिस्थापित]। 14. संस्कृत, 15. हिन्दी।

भारतीय संविधान की संशोधन की प्रक्रिया (अनुच्छेद 368)

संविधान के अनुच्छेदों को संशोधन की दृष्टि से तीन वर्गों में विभाजित किया गया और प्रत्येक वर्ग के लिये पृथक-पृथक संशोधन प्रक्रिया अपनायी गयी है। ये वर्ग निम्न प्रकार से हैं—

(1) साधारण बहुमत द्वारा संशोधन—वे उन अनुच्छेद जो विशिष्ट संवैधानिक महत्व नहीं रखते हैं

(शेष पृष्ठ 52 पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

भारतीय राज्य व्यवस्था पर वस्तुपरक परीक्षण

1. ईस्ट इण्डिया कम्पनी के भारत में विस्तारवाद पर ब्रिटिश संसदीय नियन्त्रण का प्रारम्भ 1773 में किस अधिनियम से किया गया ?

(अ) रेग्युलेटिंग एक्ट (ब) इण्डियन काउन्सिल एक्ट
(स) पिट्स इण्डिया एक्ट (द) इण्डियन चार्टर एक्ट

2. भारत में केन्द्रीकरण की प्रक्रिया निम्न में किस अधिनियम ने नहीं की ?

(अ) रेग्युलेटिंग एक्ट (ब) पिट्स इण्डिया एक्ट
(स) 1786 का एक्ट (द) इण्डियन काउन्सिल एक्ट
(घ) इण्डियन चार्टर एक्ट

3. ब्रिटिश संसद ने ईस्ट इण्डिया कम्पनी को भारत में प्रदान की जाने वाली सुविधाओं में अधिनियमों द्वारा परिवर्तन, संशोधन या निराकरण कर अपनी नियन्त्रण की अभिव्यक्ति की, निम्न में वे पाँच अधिनियम कौन हैं ?

(अ) 1986 का एक्ट
(ब) इण्डियन चार्टर एक्ट 1793
(स) इण्डियन चार्टर एक्ट 1813
(द) इण्डियन चार्टर एक्ट 1833
(घ) इण्डियन चार्टर एक्ट 1853
(ब) इण्डियन चार्टर एक्ट 1858

4 पिट्स इण्डिया एक्ट से भारत में द्वैत शासन प्रारम्भ हुआ। यह व्यवस्था कब तक बनी रही ?

(अ) 1833 एक्ट
(ब) इण्डिया गवर्नमेन्ट एक्ट 1858
(स) इण्डियन काउन्सिल एक्ट 1861
(द) मॉर्ले-मिण्टो रिफॉर्म एक्ट 1909

5. गवर्नमेन्ट ऑव इण्डिया एक्ट द्वारा ईस्ट इण्डिया कम्पनी को समाप्त कर सम्पूर्ण बागडोर ब्रिटिश साम्राज्ञी के हाथ सौप दी गई। उनकी शक्ति वास्तव में किसमें केन्द्रित हो गयी ?

(अ) ब्रिटिश मन्त्रिमण्डल
(ब) ब्रिटिश प्रधानमन्त्री
(स) भारत सचिव तथा उसकी परिषद
(द) ब्रिटिश गृह सचिव

6. भारत सचिव के पास निम्न में किस प्रकार की शक्ति केन्द्रित नहीं थी ?

(अ) प्रशासनिक (ब) वैधानिक
(स) वित्तीय (द) सैनिक

7. इण्डिया गवर्नमेन्ट एक्ट के फलस्वरूप भारत में सत्ता निम्न में किसके हाथ आ गयी ?

(अ) गवर्नर जनरल तथा उसकी परिषद
(ब) वायसरॉय तथा उसकी परिषद
(स) गर्वनर जनरल
(द) वायसरॉय

8. इण्डिया गवर्नमेन्ट एक्ट के फलस्वरूप भारत में किसका आविर्भाव हुआ ?

(अ) स्थानीय स्वायत्त शासन
(ब) नौकरशाही शासन
(स) उत्तरदायी सरकार
(द) अर्द्ध संघात्मक शासन

9. भारत में इस केन्द्रित नौकरशाही द्वारा चतुश्रेणी प्रणाली द्वारा शासन किया जाता था। निम्न में कौन इन श्रेणी के अन्तर्गत नहीं आता था ?

(अ) भारत सचिव और उसकी परिषद
(ब) गवर्नर जनरल और उसकी परिषद
(स) गवर्नर (द) चीफ कमिश्नर (घ) कलेक्टर मैजिस्ट्रेट

10. भारत में विकेन्द्रीकरण की प्रक्रिया का प्रारम्भ किस एक्ट से हुआ ?

(अ) गवर्नमेन्ट ऑव इण्डिया एक्ट 1858
(ब) इण्डियन काउन्सिल एक्ट 1861

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(स) इण्डियन काउन्सिल एक्ट 1892
(द) मॉर्ले-मिन्टो सुधार एक्ट

11. ब्रिटिश भारत में प्रशासन में प्रथम बार भारतीयों के सहयोग का आयोजन किस अधिनियम द्वारा किया गया ?
(अ) गवर्नमेन्ट ऑव इण्डिया एक्ट 1858
(ब) इण्डियन काउन्सिल एक्ट 1959
(स) इण्डियन काउन्सिल एक्ट 1861
(द) गवर्नमेन्ट ऑव इण्डिया एक्ट 1919

12. भारत में प्रथम बार विभागीय व्यवस्था (Portfolio System) और इसके संमजन की दिशा में कार्य का आरम्भ किसने किया ?
(अ) लॉर्ड एल्गिन (ब) लॉर्ड कर्जन
(स) लॉर्ड केनिंग (द) लॉर्ड रिपन

13 इण्डियन काउन्सिल एक्ट 1861 निम्न में किस आधुनिक भारतीय संस्था का प्रथम चार्टर था ?
(अ) व्यवस्थापिका (ब) कार्यपालिका
(स) न्यायपालिका (द) उपर्युक्त सभी

14. इण्डियन काउन्सिल एक्ट के अन्तर्गत विधान परिषदों के भारतीय सदस्यों को निम्न में क्या अधिकार थे ?
(अ) मतदान
(ब) प्रस्ताव तथा विधेयक प्रस्तुत करना
(स) वादविवाद
(द) प्रश्न एवं पूरक प्रश्न पूछना

15. स्थानीय स्वायत्त शासन को किस अधिनियम से सर्वाधिक प्रोत्साहन प्राप्त हुआ ?
(अ) इण्डियन काउन्सिल एक्ट 1892
(ब) मॉर्ले-मिन्टो रिफॉर्म एक्ट 1909
(स) गवर्नमेन्ट ऑव इण्डिया एक्ट 1919
(द) कॉन्स्टीट्यूशन एक्ट 1935

16. मॉर्ले-मिन्टो रिफॉर्म एक्ट द्वारा विधान परिषद के सदस्यों को निम्न में कौन से अधिकार प्राप्त हुए ?
(अ) अन्तिम रूप से बजट के स्वीकारने के पूर्व उस पर वाद-विवाद, प्रस्ताव लाना और उनमें प्रस्तावों पर विभक्त रहना
(ब) सार्वजनिक महत्व की समस्याओं पर प्रस्ताव लाना और उस पर निर्णय लेना
(स) प्रश्न एवं पूरक प्रश्न पूछना
(द) उपर्युक्त सभी

17. इण्डिया गवर्नमेन्ट एक्ट 1919 की प्रमुख विशेषता क्या थी ?
(अ) प्रान्तों में द्वैध शासन (ब) उत्तरदायी सरकार
(स) संघीय व्यवस्था (द) उपर्युक्त सभी

18. गवर्नमेन्ट ऑव इण्डिया एक्ट 1919 के अन्तर्गत प्रान्तों के कार्यों को दो भागों में बांटा गया, एक पर गवर्नर-इन-काउन्सिल तथा दूसरे पर गवर्नर मन्त्रियों के साथ मिलकर कानून बनाता था। इनको क्रमशः क्या कहा जाता था ?
(अ) हस्तांतरित विषय, विशेष विषय
(ब) हस्तांतरित विषय, सुरक्षित विषय
(स) सुरक्षित विषय, अवशिष्ट विषय
(द) सुरक्षित विषय, प्रान्तीय विषय

19. गवर्नमेन्ट ऑव इण्डिया एक्ट 1919 के अन्तर्गत प्रान्तों में द्वैध शासन प्रणाली की स्थापना की गयी और इसे 1935 में समाप्त भी कर दिया गया। केन्द्र में द्वैध शासन प्रणाली किस अधिनियम द्वारा प्रारम्भ की गई ?
(अ) मॉर्ले-मिन्टो रिफॉर्म एक्ट 1901
(ब) गवर्नमेन्ट ऑव इण्डिया एक्ट 1919
(स) गवर्नमेन्ट ऑव इण्डिया एक्ट 1935
(द) कभी प्रारम्भ ही नहीं की गयी

20. गवर्नमेन्ट ऑव इण्डिया एक्ट द्वारा निम्न में क्या नहीं प्रारम्भ किया गया ?
(अ) संघात्मक राजतन्त्र
(ब) संघात्मक प्रजातन्त्र
(स) प्रान्तों में स्वायत्तता
(द) एकात्मक प्रजातन्त्र

21. गवर्नमेन्ट ऑव इण्डिया एक्ट के अन्तर्गत, पहली बार कब प्रान्तों के विधान मण्डल के लिये निर्वाचन सम्पन्न हुए ?
(अ) 1935 (ब) 1936
(स) 1937 (द) 1938

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

22. 1935 के गवर्नमेन्ट ऑव इण्डिया एक्ट के अनुसार संघीय सूची (59 विषय), प्रान्तीय सूची (54 विषय) समवर्ती सूची (36 विषय) की व्यवस्था की गयी। गवर्नर जनरल का अवशिष्ट विषयों पर अधिकार था। सुरक्षा, वैदेशिक, धार्मिक मामलें तथा कबाइलें क्षेत्रों के प्रबन्ध का उत्तरदायित्व किसका था ?

(अ) ब्रिटिश सरकार (ब) गवर्नर जनरल

(स) कार्यकारिणी परिषद (द) उपर्युक्त सभी

23. जहाँ 1935 के गवर्नमेन्ट ऑव इण्डिया एक्ट द्वारा भारत सचिव के पद को समाप्त किया गया वहीं अध्यादेश जारी करने की प्रणाली को प्रारम्भ किया गया। यह अधिकार किसको प्राप्त था ?

(अ) ब्रिटिश सम्राट (ब) ब्रिटिश सरकार

(स) गवर्नर जनरल (द) गवर्नर

(ध) चीफ कमिश्नर

24. कैबिनेट मिशन कीयोजना (1946) निम्न में किस-से सम्बन्धित नहीं थी ?

(अ) भारत के भावी संविधान का सुझाव

(ब) संविधान सभा की संरचना सम्बन्धी सुझाव

(स) अन्तरिम सरकार सम्बन्धी सुझाव

(द) भारतीय रियासतों के एकीकरण व विलयन सम्बन्धी सुझाव

25. भारत विभाजन की स्वीकृति किस योजना ने प्रदान की ?

(अ) क्रिप्स योजना 1942

(ब) वैवल योजन 1945

(स) कैबिनेट मिशन योजना 1946

(द) माउन्टबेटन योजना 1947

26. भारतीय स्वतन्त्रता अधिनियम ब्रिटिश संसद ने कब पारित किया ?

(अ) 11 दिसम्बर, 1946

(ब) 20 फरवरी, 1947

(स) 18 जुलाई, 1947

(द) 14 अगस्त, 1947

27. स्वतन्त्र भारत के संविधान निर्माण की जिम्मेदारी संविधान सभा को सौंपी गयी। संविधान सभा के कुल 385 सदस्य थे। उनमें निर्वाचित सदस्यों का निर्वाचन किसने किया ?

(अ) आम जनता ने (ब) विधान सभा के सदस्यों ने

(स) केन्द्रीय व्यवस्थापिका ने

(द) संविधान सभा में कोई निर्वाचित सदस्य नहीं था

28. संविधान सभा के अध्यक्ष राजेन्द्र प्रसाद थे। संविधान को अन्तिम रूपरेखा प्रदान करने का प्रमुख श्रेय किनका हैं ?

(अ) बी. आर. अम्बेडकर (ब) जवाहर लाल नेहरु

(स) के. एम. मुन्शी (द) टी. टी. कृष्णामाचारी

29. संविधान के ढांचे के लिये सामग्री जुटाने के लिये निम्न में किस समिति ने प्रतिवेदन नहीं प्रस्तुत किया था ?

(अ) संघ शक्ति समिति

(ब) संघ संविधान समिति

(स) प्रान्तीय संविधान समिति

(द) अल्प संख्यक एवं मूलाधिकार सम्बन्धी परामर्शदात्री समिति

(ध) मुख्य आयुक्त के प्रान्तों की समिति

(च) संघीय संविधान में वित्तीय उपबन्धों की समिति

(छ) राज्य के नीति निदेशक तत्वों सम्बन्धी परामर्शदात्री समिति

(ज) आदिवासी क्षेत्रों की परामर्शदात्री समिति

30. संविधान सभा की प्रथम बैठक 9 नवम्बर, 1946 को हुई और 26 नवम्बर, 1949 को उसमे 395 अनुच्छेद 8 अनुसूचियों के संविधान को अंगीकार किया। इस का उद्घाटन किस दिन हुआ ?

(अ) 26 जनवरी, 1950

(ब) 15 अगस्त, 1950

(स) 26 नवम्बर, 1949

(द) 1 जनवरी, 1950

31. संविधान के प्रस्तावना में अभिव्यक्त किये गये भाव को सर्वप्रथम किसने कहा था ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(अ) महात्मा गाँधी (ब) जवाहर लाल नेहरू
(स) राजेन्द्र प्रसाद (द) बी. आर. अम्बेडकर

32. भारत के संविधान के प्रस्तावना में क्या स्पष्ट नहीं होता है ?
(अ) संविधान का स्रोत
(ब) संविधान के उद्देश्यों का विवरण
(स) संविधान के अंगीकार करने की तिथि
(द) संविधान के उद्घाटन करने की तिथि

33. 15 अगस्त 1947 और 26 जनवरी 1950 के मध्य भारत की निम्न में क्या स्थिति थी ?
(अ) ब्रिटिश उपनिवेश
(ब) ब्रिटिश राष्ट्र मण्डल का एक अधिराज
(स) स्वतन्त्र गणतन्त्र राज्य
(द) उपर्युक्त कोई भी नहीं

34. प्रस्तावना में वर्णित 'लोकतन्त्र' निम्न में किससे सम्बन्धित है ?
(अ) राजनीतिक लोकतन्त्र (ब) आर्थिक लोकतन्त्र
(स) सामाजिक लोकतन्त्र (द) उपर्युक्त सभी

35. 42वें संशोधन के द्वारा संविधान की प्रस्तावना में 'समाजवादी' धर्मनिरपेक्ष व अखण्डता शब्द जोड़े गये। संविधान के किस भाग में पहले से ऐसी व्यवस्था है जो इन व्यवस्थाओं की परिकल्पना करती है ?
(अ) भाग 1 (ब) भाग 2
(स) भाग 3 (द) भाग 4

36. प्रस्तावना में भारतीय संघ को 'यूनीयन ऑव स्टेट्स' कहा गया है, संविधान के उद्घाटन के समय संघ की इकाइयों के विभिन्न स्तर और विविधतापूर्ण स्थिति थी, यह बताइए कि उस समय इकाइयों को कितने वर्गों में बांटा गया था ?
(अ) 2 (ब) 3 (स) 4 (द) 6

37. संसद किसी राज्य से कोई क्षेत्र पृथक कर, या दो और अधिक राज्यों या उसके भागों को मिलाकर नये राज्यों का निर्माण कर सकती है। परन्तु ऐसे विधेयक संसद में प्रस्तुत करने पूर्व राष्ट्रपति की सिफारिश तथा सम्बन्धित राज्य/राज्यों के विधान मण्डलों की सम्मति की आवश्यकता होती है। संविधान के उद्घाटन के पश्चात सर्वप्रथम किस राज्य की स्थापना की गयी ?
(अ) मध्य प्रदेश (ब) गुजरात
(स) आन्ध्र प्रदेश (द) बम्बई

38. भारत में एकल नागरिकता है। भारतीय नागरिकता निम्न में किस प्रकार प्राप्त की जा सकती है ?
(अ) जन्म जात (ब) वंशानुक्रम द्वारा प्राप्त
(स) पंजीकरण (Registration) द्वारा प्राप्त
(द) देशीयकरण (Naturalization)
(ध) किसी क्षेत्र की समाविष्टि से
(न) उपर्युक्त सभी

39. निम्नलिखित में कौन भारतीय संविधान का स्रोत नहीं है ?
(अ) गवर्नमेन्ट ऑव इण्डिया एक्ट 1935
(ब) ब्रिटिश संविधान
(स) स. रा. अमेरिका का संविधान
(द) कनाडा का संविधान
(घ) आयरलैण्ड का संविधान
(च) ऑस्ट्रेलिया का संविधान
(छ) फ्रान्स का संविधान
(ज) दक्षिण अफ्रीका का संविधान

40. निम्नलिखित में भारतीय संविधान की क्या विशेषता है ?
(अ) लोकप्रिय प्रभुसत्ता पर आधारित संविधान
(ब) मूलतः निर्मित, लिखित व सर्वाधिक व्यापक संविधान
(स) सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न लोकतन्त्रात्मक धर्म निरपेक्ष समाजवादी गणराज्य
(द) संसदीय शासन प्रणाली
(घ) अनम्यता एवं नम्यता का सम्मिश्रण
(च) एकात्मक लक्षणों सहित संघात्मक शासन
(ज) एकल नागरिकता
(झ) संसदीय प्रभुता व न्यायिक सर्वोच्चता में समन्वय (फ) मूलाधिकार व मूल कर्तव्य
(ल) नाति निदेशक तत्व (न) वयस्क मताधिकार
(र) लोक कल्याण की स्थापना का आदर्श
(ष) निरकुंशतावाद, उदारवाद व समाजवाद का सम्मिश्रण (त) उपर्युक्त सभी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

1. भारतीय संविधान के भाग तीन में मूलाधिकार अधिकथित किये गये हैं। मूल अधिकार पर किस देश के संविधान का प्रभाव अंकित है ?
(अ) ऑस्ट्रेलिया का संविधान
(ब) दक्षिण अफ्रीका का संविधान
(स) अमेरिका का संविधान
(द) कनाडा का संविधान

2. क्या न्यायपालिक मूलाधिकारों की रक्षा के लिये कोई आवश्यक कदम उठा सकती है ?
(अ) हाँ (ब) नहीं
(स) हाँ, केवल राष्ट्रपति शासन काल में
(द) हाँ केवल आपातकालीन स्थिति में

3. भारतीय संविधान में अधिकथित किये गये मूलाधिकारों को किन स्थितियों में निलम्बित किया जा सकता है ?
(अ) केवल आपातकाल में
(ब) केवल राष्ट्रपति शासन काल में
(स) किसी भी समय
(द) किसी भी स्थिति में निलम्बित नहीं किया जा सकता

4. किस संवैधानिक संशोधन से संसद को मूलाधिकारों में पूर्णतः संशोधन करने का अधिकार प्राप्त हुआ ?
(अ) मूल संविधान से ही
(ब) 25 वें संवैधानिक संशोधन से
(स) 44 वें संवैधानिक संशोधन से
(द) 24 वें 42 वें संवैधानिक संशोधन से

5. भारतीय संविधान में मूलाधिकार किस अनुच्छेद से किस अनुच्छेद तक सम्मिलित है ?
(अ) अनुच्छेद 10 से अनुच्छेद 32
(ब) अनुच्छेद 11 से अनुच्छेद 32
(स) अनुच्छेद 12 से अनुच्छेद 35
(द) अनुच्छेद 12 से अनुच्छेद 36

6. संविधान के किन अनुच्छेदों में मूलाधिकारों की सामान्य रूपरेखा और उनके सम्बन्ध में कुछ सामान्यताओं का प्रस्थापन किया गया है ?
(अ) अनुच्छेद 9 व 10 (ब) अनुच्छेद 11 व 12
(स) अनुच्छेद 12 व 13 (द) अनुच्छेद 12, 13, व 14

47. संविधान में प्रस्थापित मूलाधिकारों को कितने उपभागों में बांटा जा सकता है ?
(अ) 7 (ब) 8 (स) 11 (द) 14

48. संविधान में वर्णित मूलाधिकार निम्न में किस पर प्रतिबन्ध लगाते है ?
(अ) संघीय सरकार (ब) राज्य सरकार
(स) स्थानीय व अन्य प्राधिकरण
(द) उपर्युक्त सभी

49. क्या भारतीय नागरिक अमेरिकी नागरिकों की भांति प्राकृतिक अधिकार के आधार पर संविधान के भाग तीन में वर्णित मूलाधिकारों के अतिरिक्त किसी अन्य अधिकार के लिये दावा कर सकता है ?
(अ) हाँ (ब) नहीं
(स) राष्ट्रपति के अनुमति मिलने पर
(द) केवल कुछ विशेष स्थितियों में

50. क्या भारतीय संविधान में वर्णित मूलाधिकार निरपेक्ष एवं असीमित है ?
(अ) हाँ (ब) नहीं
(स) केवल कुछ मूलाधिकार निरपेक्ष एवं असीमित है
(द) केवल कुछ मूलाधिकार सीमित है

51. मूलाधिकार न्याय योग्य हैं। अतएव मूलाधिकार का अतिक्रमण करने पर न्यायालय ऐसे अधिनियमों का क्या करता है ?
(अ) सम्पूर्ण अधिनियम को असंवैधानिक घोषित करता है
(ब) अधिनियम के केवल उस भाग को ही असंवैधानिक घोषित करता है जो कि भाग तीन का अतिक्रमण करता है
(स) न्यायालय विधायिका को अधिनियम में संशोधन लाने के लिये कहता है
(द) उपर्युक्त सभी

52. न्यायालय द्वारा संविधान के भाग तीन के अतिक्रमण से आधार पर किसी अधिनियम को असंवैधानिक घोषित करने के पश्चात यदि संविधान में उचित संशोधन करके मूलाधिकारों द्वारा लगाए गये प्रतिबन्धों को समाप्त कर दिया जाय तो क्या उपर्युक्त अधिनियम जीवित व प्रभावी हो सकता है ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(अ) हाँ (ब) नहीं
(स) यदि न्यायालय स्पष्ट रूप से ऐसा कहे
(द) ऐसी स्थिति सम्भव ही नहीं

53. भारतीय संविधान के भाग तीन में किस प्रकार के अधिकारों पर अधिक बल प्रदान किया गया है ?
(अ) आर्थिक अधिकार
(ब) राजनीतिक अधिकार
(स) नैतिक अधिकार
(द) सामाजिक अधिकार
(ध) राजनीतिक व सामाजिक अधिकार

54. समानता के अधिकार का उल्लेख संविधान के किन अनुच्छेदों में किया गया है ?
(अ) अनुच्छेद 12 से 16 (ब) अनुच्छेद 13 से 16
(स) अनुच्छेद 14 से 16 (द) अनुच्छेद 14 से 18

55. समानता के अधिकार का क्या अर्थ है ?
(अ) विधि के समक्ष समानता व विधि का समान संरक्षण
(ब) धर्म, जाति, लिंग या जन्म स्थान के आधार पर भेदभाव न करना
(स) सार्वजनिक सेवाओं में नागरिकों को समान अवसर
(द) उपाधियों का अन्त व अस्पृश्यता का अन्त
(ध) उपर्युक्त सभी

56. भारत का राष्ट्रपति राष्ट्र का प्रथम नागरिक है। क्या वह विधि से ऊपर है ?
(अ) हाँ (ब) नहीं
(स) कुछ कहा नहीं जा सकता

57. भौगोलिकता, ऐतिहासिकता, कार्य की पद्धति, समय, स्थान, विधि के उद्देश्य के आधार पर यदि कोई अधिनियम विधायनी वर्गीकरण करता है तो क्या वह समानता के सिद्धान्त का अतिक्रमण करता है ?
(अ) हाँ (ब) नहीं
(स) हाँ, यदि विधायनी वर्गीकरण वास्तविक व तथ्यपूर्ण आधार पर हो और विधि विशेष के उद्देश्यों से सम्बन्धित हो

58. साधारणतः मूलाधिकार राज्य के विरुद्ध नागरिकों को प्रदान किया जाता है। क्या भारतीय संविधान में जनसाधारण व प्राइवेट व्यक्तियों को भी प्रकार की निर्योग्यता, दायित्व, निर्बन्धन या लगाकर प्रतिषिद्ध किया गया है ?
(अ) हाँ (ब) नहीं
(स) केवल कुछ अधिकारों के सम्बन्ध में

59. पिछड़े वर्गों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से की ओर प्रदान की जाने वाली विशेष सुविधाएं समादता के अधिकार उल्लंघन नहीं करती है ?
(अ) हाँ (ब) नहीं
(स) 24 वें संशोधन के पूर्व करता था
(द) 42 वें संशोधन के पूर्व करता था

60. अनुच्छेद 16 के अनुसार सब नागरिकों को सरकारी पदों पर नियुक्ति के समान अवसर प्राप्त हो किस आधार पर भेदभाव नहीं किया जायेगा ?
(अ) धर्म (ब) मूलवंश
(स) जाति (द) लिंग
(ध) जन्मस्थान (ब) उपर्युक्त सभी

61. अनुच्छेद 17 के अनुसार, अस्पृश्यता से उत्पन्न किसी अयोग्यता को लागू करना एक दण्डनीय अपराध होगा। अस्पृश्यता को समाप्त करने के लिए किस वर्ष अस्पृश्यता अपराध अधिनियम पारित किया गया ?
(अ) 1951 (ब) 1952
(स) 1955 (द) 1958

62. निम्न में किन सम्बन्धी उपाधि के अलावा राज्य अन्य कोई उपाधियाँ प्रदान कर सकता है ?
(अ) सेना सम्बन्धी उपाधि
(ब) सम्पत्ति सम्बन्धी उपाधि
(स) विद्या सम्बन्धी उपाधि
(ध) उपर्युक्त सभी

63. भारत का निम्न में किसकी आज्ञा के बिना नागरिक विदेशी राष्ट्र से कोई भी उपाधि स्वीकार नहीं सकता है ?
(अ) राष्ट्रपति (ब) प्रधानमन्त्री
(स) उच्चतम न्यायालय का मुख्य न्यायाधीश
(द) लोकसभा का अध्यक्ष
(ध) आवासी राज्य के राज्यपाल

64. मूल संविधान के अनुच्छेद 19 द्वारा नागरिकों सात स्वतन्त्रताएं प्रदान की गयी थी। 44 वें धानिक संशोधन द्वारा सम्पत्ति की स्वतन्त्रता समाप्त कर दी गयी है। निम्न में शेष छह स्वतन्त्रताएं नहीं है ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(ङ) विचार और अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता
(ब) अस्त्रशस्त्र रहित तथा शान्तिपूर्ण सम्मेलन की स्वतन्त्रता
(स) समुदाय और संघ निर्माण की स्वतन्त्रता
(द) भारतीय राज्य क्षेत्र में अबाध संचारण करने की स्वतन्त्रता
(ख) पत्रकारिता की स्वतन्त्रता
(च) भारतीय राज्य क्षेत्र के किसी भी भाग में निवास करने या बसने की स्वतन्त्रता
(छ) कोई वृत्ति, उपजीविका या कारोबार करने की स्वतन्त्रता

प्रेस की स्वतन्त्रता का अधिकार का अलग से संविधान में उल्लेख नहीं किया गया है। यह स्वतन्त्रता विचार और अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता में ही सम्मिलित है, इसका उल्लेख संविधान के किस अनुच्छेद में किया गया है ?
(अ) अनुच्छेद 19 (क) (ब) अनुच्छेद (ख)
(स) अनुच्छेद 19 (ग) (द) अनुच्छेद (घ)

विचार और अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता निम्न में किससे सीमित नहीं है ?
(अ) अपमान लेख व वचन
(ब) न्यायालय का अपमान
(स) शिष्टाचार सदाचार पर आघात
(द) विदेशी राष्ट्रों की गलत आलोचना
(इ) राज्य की सुरक्षा

भारत राज्य क्षेत्र में अबाध भ्रमण की स्वतन्त्रता और अबाध निवास की स्वतन्त्रता निम्न में किससे सीमित नहीं है ?
(अ) सामान्य जनता के हित में
(ब) अनुसूचित आदिम जातियों के हित में
(स) अनुसूचित जातियों के हित में
(द) उपर्युक्त में किसी से भी नहीं सीमित है

अनुच्छेद 19 (छ) नागरिकों को वृत्ति, उपजीविका, व्यापार करने की स्वतन्त्रता प्रदान करता है। इस सम्बन्ध में क्या सत्य है ?
(अ) राज्य किसी भी व्यवसाय को करने के लिये आवश्यक योग्यता निर्धारित कर सकता है
(ब) राज्य किसी भी उद्योग या कारोबार को पूर्णरूप से स्वयं अपने हाथ में ले सकता है
(स) राज्य किसी भी उद्योग या कारोबार को आंशिक रूप से स्वयं अपने हाथ में ले सकता है
(द) उपर्युक्त सभी सत्य

69. अनुच्छेद 22 के अनुसार, बन्दीकरण की अवस्था में संरक्षण की सुविधा निम्न में किसको उपलब्ध नहीं होती है ?
(अ) शत्रु राष्ट्र के निवासियों पर
(ब) निवारक निरोध अधिनियम के अन्तर्गत गिरफ्तार व्यक्तियों पर
(स) उपर्युक्त दोनों (द) उपर्युक्त कोई भी नहीं

70. निम्न में से कौन अनुच्छेद सरकार के अनुच्छेदों से नागरिकों के व्यक्तिगत स्वतन्त्रता को संरक्षण प्रदान करता है ?
(अ) अनुच्छेद 19 (ब) अनुच्छेद 20
(स) अनुच्छेद 19, 20 (द) अनुच्छेद 20, 21, 22

71. नागरिकों को प्रदान किये गये जीवन एवं वैयक्तिक स्वतन्त्रता के अधिकार पर हस्तक्षेप करते समय सरकार द्वारा क्या करना आवश्यक है ?
(अ) विधि द्वारा निर्धारित प्रक्रिया अपनाना
(ब) विधि की सर्वोच्चता को मान्यता प्रदान करना
(स) विधि के शासन के सिद्धान्त का पालन
(द) उपर्युक्त सभी

72. शोषण के विरुद्ध अधिकार के अन्तर्गत निम्न में किसको अपराध घोषित किया गया है ?
(अ) मनुष्यों का क्रय-विक्रय
(ब) बेगार तथा अन्य प्रकार के बलातश्रम
(स) उपर्युक्त दोनों
(द) उपर्युक्त कोई भी नहीं

73. अनुच्छेद 24 के अनुसार, कितने वर्ष से कम उम्र के बालकों से किसी कारखानें, खान या अन्य किसी जोखिम भरे कार्यों में काम लेना अपराध है ?
(अ) 10 (ब) 12
(स) 14 (द) 16

74. अनुच्छेद 25 के अनुसार निम्न में क्या असत्य है ?
(अ) सभी व्यक्तियों को समान रूप से अन्तः करण की स्वतन्त्रता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(ब) अपनी इच्छानुसार किसी भी धर्म को मानने, आचरण, तथा प्रचार करने का अधिकार
(स) धर्म विरोधी प्रचार करने का अधिकार
(द) उपर्युक्त सभी सत्य

75. किसी विशेष धर्म या धार्मिक सम्प्रदाय की उन्नति या पोषण में व्यय के लिये निश्चित धन पर क्या सरकार कर लगा सकती है ?
(अ) हाँ (ब) नहीं
(स) निश्चित सीमा के पश्चात सरकार कर लगा सकती है

76. निम्नलिखित में किस प्रकार की शिक्षण संस्था में किसी प्रकार की धार्मिक शिक्षा प्रदान या किसी व्यक्ति को किसी धर्म की शिक्षा ग्रहण करने के लिये बाध्य नहीं किया जा सकता है ?
(अ) राजकीय निधि से संचालित शिक्षण संस्था
(ब) राज्य द्वारा मान्यता प्राप्त शिक्षण संस्था
(स) राज्य द्वारा आर्थिक सहायता प्राप्त शिक्षण संस्था
(द) उपर्युक्त सभी

77. भारत में धार्मिक स्वतन्त्रता प्रतिबन्धरहित नहीं है। राज्य धार्मिक संस्थाओं में निम्न में कौन से आधार पर हस्तक्षेप कर सकती है ?
(अ) नैतिकता (ब) स्वास्थ
(स) सार्वजनिक व्यवस्था (द) राष्ट्र की सुरक्षा
(द) उपर्युक्त सभी

78. अनुच्छेद 29 के अनुसार नागरिकों के प्रत्येक वर्ग को निम्न में किसकी सुरक्षा का पूर्ण अधिकार है ?
(अ) भाषा (ब) संस्कृति
(स) लिपि (द) उपर्युक्त सभी

79. राज्य द्वारा पोषित या राज्य निधि से सहायता पाने वाली किसी शिक्षण संस्था में प्रवेश से किन आधारों पर किसी नागरिक को वंचित रखा जा सकता है ?
(अ) धर्म (ब) मूलवंश
(स) जाति (द) भाषा
(ध) जन्म स्थान (ध) निवास स्थल

80. मूल संविधान में नागरिकों को सम्पत्ति का मूलाधिकार प्राप्त था। क्रमशः सम्पत्ति के अधिकार को सीमित किया जाता रहा। अन्ततः किस संवैधानिक संशोधन द्वारा इस अधिकार को समाप्त कर दिया गया ?
(अ) चौबीसवां संशोधन (1971)
(ब) पच्चीसवां संशोधन (1971)
(स) बयालीसवां संशोधन (1976)
(द) चवालीसवां संशोधन (1978)

81. संवैधानिक उपचारों के अधिकार को "प्रजातान्त्रिक भवन की आधारशिला" कहा गया है। नागरिकों के मौलिक अधिकारों की रक्षा के लिये पांच प्रकार के लेख जारी करने का अधिकार किस संस्था को है ?
(अ) राष्ट्रपति (ब) राज्यपाल
(स) केवल सर्वोच्च न्यायालय को
(द) केवल उच्च न्यायालय को
(ध) सर्वोच्च न्यायालय व उच्च न्यायालय दोनों

82. निम्न में नागरिकों के मौलिक अधिकार की रक्षा के लिये पाँच प्रकार के प्रलेख कौन नहीं है ?
(अ) बन्दी प्रत्यक्षीकरण (ब) परमादेश
(स) प्रतिषेध (द) प्रधिकार
(ध) उत्प्रेषण (च) अधिकरण पृच्छा

83. अवैधानिक ढंग से बन्दी बनाये जाने वाले व्यक्ति की रिहाई के लिये किस प्रकार का प्रलेख जारी किया जाता है ?
(अ) प्रतिषेध (ब) उत्प्रेषण
(स) बन्दी प्रत्क्षीकरण द) परमादेश

84. न्यायालय द्वारा किसी ऐसे व्यक्ति जो कि सार्वजनिक पद ग्रहण करने का अधिकार नहीं रखता है, ऐसा करने से रोकने के लिये न्यायालय कौन प्रलेख जारी करता है ?
(अ) अधिकार पृच्छा (ब) परमादेश
(स) उत्प्रेषण (द) प्रतिषेध

85. किसी व्यक्ति या सार्वजनिक संस्था को उनके दायित्वों तथा कर्तव्यों का पालन कराने के लिये न्यायालय कौन सा प्रलेख जारी करता है ?
(अ) परमादेश (ब) उत्प्रेषण
(स) प्रतिषेध (द) प्राधिकरण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

86. उच्च न्यायालय द्वारा किसी निम्न न्यायालय या प्राधिकरण को उसमें विचाराधीन किसी मुकदमें से सम्बन्धित अभिलेखों को उच्च न्यायालय में विचार करने हेतु प्रेषित करने के आदेश को क्या कहा जाता है ?
(अ) न्यायिक पुनरावलोकन (ब) प्रतिषेध
(स) उत्प्रेषण (द) अधिकरण

87. उच्च न्यायालय द्वारा किसी निम्न न्यायालय या प्राधिकरण को अधिकार क्षेत्र के अभाव के कारण किसी मुकदमें में कार्यवाही स्थगित करने के आदेश को क्या कहा जाता है ?
(अ) अधिकरण (ब) अधिकार पृच्छा
(स) प्रतिषेध (द) अधिकारण्य

88. चवालीसवें संवैधानिक संशोधन से पश्चात सम्पत्ति का अधिकार अब मूलाधिकार न रह कर केवल एक कानूनी अधिकार रह गया है। क्या सरकार बिना उचित वैधिक प्रक्रिया के तथा मुआवजा दिये बिना सम्पत्ति का अधिकरण कर सकती है ?
(अ) हाँ (ब) नहीं
(स) कुछ निश्चित नहीं कहा जा सकता

89. मूल संविधान में मूल कर्तव्यों का कोई प्रावधान नहीं था। संविधान लागू होने के कितने वर्षों पश्चात भाग 4 के अनुच्छेद 51 क में दस मूल कर्तव्यों की सूची को सम्मिलित किया गया है ?
(अ) 21 (ब) 25
(स) 26 (द) 28

90. मूल कर्तव्यों की अवहेलना पर क्या दण्डित करने की व्यवस्था है ?
(अ) हाँ (ब) नहीं
(स) इस समय दण्ड व्यवस्था नहीं परन्तु संसद द्वारा इस सम्बन्ध में दण्ड की व्यवस्था की जा सकती है

91. अनुच्छेद 51 क (8) के अन्तर्गत, निम्न में कौन सी भावना का विकास करना प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य होगा ?
(अ) वैज्ञानिक दृष्टिकोण
(ब) मानववाद
(स) ज्ञानार्जन व सुधार की भावना
(द) उपर्युक्त सभी

92. संविधान के अन्तर्गत गैरनागरिकों को निम्नलिखित में कौन से अधिकार प्राप्त हैं ?
(अ) विधि के समक्ष समानता (अनुच्छेद 14)
(ब) अपराध की दोष सिद्धि के विषय में सर्वेक्षण (अनुच्छेद 20)
(स) व्यक्तिगत स्वतन्त्रता व जीवन की सुरक्षा (अनुच्छेद 21)
(द) बन्दीकरण की अवस्था में संरक्षण (अनुच्छेद 22)
(घ) बेगार और अन्य प्रकार के बलात श्रम से संरक्षण (अनुच्छेद 23)
(च) अन्तःकरण की स्वतन्त्रता एवं अपनी इच्छानुसार किसी धर्म को मानने, आचरण तथा प्रचार का अधिकार (अनुच्छेद 25)
(छ) सांविधानिक उपचारों का अधिकार (अनुच्छेद-32) (ज) उपर्युक्त सभी

93. राज्य के नीति निदेशक तत्वों का प्रयोग करना किसका कर्तव्य है ?
(अ) राज्य (ब) राष्ट्रपति
(स) सर्वोच्च न्यायालय (द) संसद

94. राज्य के नीति निदेशक तत्वों को तीन श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है। निम्न में कौन सा उसमें सम्मिलित नहीं है ?
(अ) समाजवादी विचारधारा को बल देने वाले
(ब) गान्धीवादी विचारधारा को व्यावहारिक रूप देने वाले
(स) प्रजातान्त्रिक समाजवादी विचार धारा को बल देने वाले
(द) उदार व बौद्धिक सिद्धान्तों का समर्थन करने वाले

95. राज्य के नीति निदेशक तत्वों में भारतीय विदेश नीति व विश्व शान्ति को प्रोत्साहन देने के लिये क्या नहीं कहा गया है ?
(अ) अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति व सुरक्षा की उन्नति
(ब) राष्ट्रों के मध्य न्याय व सम्मानपूर्ण सम्बन्धों को बनाये रखना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(स) गुटनिरपेक्षता के सिद्धान्तों का अधिकाधिक प्रचार

(द) संगठित लोगों के एक दूसरे से व्यवहार में अन्तर्राष्ट्रीय विधि व सन्धि के बन्धनों के प्रति आदर बढ़ाने

(घ) अन्तर्राष्ट्रीय विवादों को मध्यस्थता द्वारा सुलझाने का प्रयत्न

96, मूल संविधान में अनुच्छेद 39 से 51 तक में राज्य नीति निदेशक तत्व उल्लिखित थे । बियालिसवें संशोधन द्वारा इनमें कुछ नये तत्व जोड़ दिये गये । निम्न में से वे कौन नहीं है ?

(अ) बालकों में स्वास्थ्य विकास व उनके शोषण के विरुद्ध सुरक्षा

(ब) आर्थिक रूप से पिछड़े हुए वर्ग को निःशुल्क कानूनी सहायता

(स) उद्योगों के प्रबन्ध में कर्मकारों का भाग लेना

(द) कार्यपालिका का न्यायपालिका से पृथक्करण

(घ) देश के पर्यावरण की रक्षा तथा उसमें सुधार करने का और वन तथा वन्य जीवों की सुरक्षा का प्रयास

97. कानूनों के निर्माण में राज्य को नीति निदेशक तत्वों को ध्यान में रखना चाहिए परन्तु यदि वह ऐसा नहीं करता है तो क्या कोई नागरिक उनके क्रियान्वयन के लिये न्यायालय की सहायता ले सकता है ?

(अ) हाँ (ब) नहीं

(स) केवल समाजवादी विचारधारा को बल देने वाले तत्वों के क्रियान्वयन हेतु

(द) केवल गान्धीवादी विचारधारा को व्यावहारिक रूप देने के लिये

98. मूल अधिकार और राज्य नीति निदेशक तत्वों के मध्य मुख्य अन्तर क्या नहीं है—

(अ) मूल अधिकारों पर नीति निदेशक तत्वों को वरीयता प्राप्त है

(ब) नीति निदेशक तत्वों का न्यायिक प्रवर्तन संभव नहीं जबकि मूल अधिकारों के सम्बन्ध में ऐसा सम्भव है

(स) मूल अधिकार मूल संविधान में ही समाविष्ट थे जबकि नीति निदेशक तत्वों को बाद में सम्मिलित किया गया है

(द) मूल अधिकार नकारात्मक हैं जबकि नीति निदेशक तत्व सकारात्मक हैं

99. कुछ ही नीति निदेशक तत्वों के क्रियान्वयन के लिये ही मूल अधिकार को सीमित किया जा सकता है। वे नीति निदेशक तत्व कौन हैं ?

(अ) श्रमिकों के लिये निर्वाह मजदूरी आदि

(ब) सार्वजनिक कल्याण के लिये समाज के भौतिक साधनों का समुचित वितरण

(स) सार्वजनिक हित के विरुद्ध धन के केन्द्रीकरण को रोकना

(द) आर्थिक रूप से पिछड़े हुए वर्ग को निःशुल्क कानूनी सहायता देना

(घ) कार्यपालिका से न्यायपालिका का पृथक्करण

100. नीति निदेशक तत्वों के क्रियान्वयन के लिये बनाये गये कानूनों को क्या न्यायालयों में चुनौती दी जा सकती है ?

(अ) हाँ (ब) नहीं

(स) 42वें संशोधन के पूर्व दी जा सकती थी परन्तु अब नहीं

(द) 24वें संशोधनों के पूर्व नहीं दी जा सकती थी परन्तु अब दी जा सकती है

101. भारतीय संविधान में तीन सूचियों का उल्लेख किया गया—संघ सूची (57 मदें : संघ), राज्य सूची (66 मदें :राज्य), व समवर्ती सूची (47 मदें : संघ व राज्य दोनों)। अवशिष्ट शक्तियाँ किसको सौंपी गयी हैं ?

(अ) केवल केन्द्र को (ब) केवल राज्य को

(स) केन्द्र व राज्य को समान रूप से

(द) अवशिष्ट शक्तियों का कोई प्रावधान नहीं है

102. समवर्ती सूची पर केन्द्र व राज्य को विधि निर्माण का समान अधिकार है। परन्तु, परस्पर विरोध की स्थिति में किसका कानून प्रभावी होगा ?

(अ) केन्द्र (ब) राज्य

(स) दोनों का कानून अपने अपने क्षेत्र में प्रभावी रहेगा

(द) ऐसी स्थिति उत्पन्न ही नहीं हो सकती है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

103. यद्यपि राज्य सूची के विषयों पर विधि निर्माण का अधिकार केवल राज्य को है परन्तु विशेष स्थितियों में केन्द्र राज्य सूची के विषयों पर विधि निर्माण कर सकता है। यह विशेष स्थिति कब पैदा होती है ?
(अ) राज्य सूची का विषय राष्ट्रीय महत्व के होने पर
(ब) आपात कालीन उद्घोषणा के प्रवर्तन होने पर
(स) राज्य विधान मण्डलों द्वारा इच्छा प्रकट करने पर
(द) राज्य में संवैधानिक संकट उत्पन्न होने पर
(ध) किसी विषय पर विदेशी राष्ट्र से सन्धि के क्रियान्वयन के लिये
(च) राज्यपाल का कुछ विषयों पर विशेष अधिकार के फलस्वरूप
(छ) उपर्युक्त सभी

104. राज्य सूची के किसी विषय पर केन्द्र को विधि निर्माण का अधिकार प्रदान करने के लिये राज्यसभा के कितने बहुमत की आवश्यकता होती है ?
(अ) कुल सदस्यों का साधारण बहुमत
(ब) कुल उपस्थित सदस्यों का साधारण बहुमत
(स) कुल उपस्थित सदस्यों का 3/4 बहुमत
(द) कुल उपस्थित और मतदान प्रदान करने वाले सदस्यों का 2/3 बहुमत

105. कम से कम कितने राज्यों के विधानमण्डलों द्वारा इच्छा प्रकट करने पर केन्द्र राज्य सूची के उस विशिष्ट विषय पर विधि निर्माण कर सकता है ?
(अ) एक राज्य (ब) दो या दो से अधिक राज्य
(स) एक राज्य व एक केन्द्र प्रशासित प्रदेश
(द) पांच राज्य

106. केन्द्र सरकार किस प्रकार राज्यों पर प्रशासनिक नियंत्रण रखती है ?
(अ) राज्यों को निर्देश द्वारा
(ब) संघीय कृत्यों का राज्य सरकारों को सौंपना
(स) अखिल भारतीय सेवाओं द्वारा
(द) अनुदान द्वारा
(ध) अन्तर्राज्यिक परिषद द्वारा
(च) उपर्युक्त सभी

107. संघ व राज्य के राजस्व के स्रोत कौन नहीं हैं ?
(अ) संघ के स्रोत (ब) राज्य के स्रोत
(स) संघ द्वारा आरोपित परन्तु राज्यों द्वारा संग्रहीत तथा विनियोजित किये जाने वाले शुल्क
(द) संघ द्वारा आरोपित तथा संगृहीत किन्तु राज्यों को सौंपे जाने वाले कर
(ध) संघ द्वारा आय कर का आरोपण तथा संग्रह परन्तु उनका विभाजन संघ व राज्यों के मध्य
(च) केन्द्र प्रशासित प्रदेश द्वारा आरोपित परन्तु केन्द्र द्वारा संगृहीत तथा विनियोजित किये जाने वाले शुल्क

108. निम्न में किस कृषि उत्पादों के निर्यात के बदले में केन्द्र असम, प. बंगाल, बिहार व उड़ीसा को अनुदान प्रदान करता है ?
(अ) चाय (ब) धान
(स) पटसन (द) उपर्युक्त सभी

109. भारतीय संघ के राज्य निम्न में किससे ऋण ले सकते हैं ?
(अ) केन्द्र से (ब) दूसरे राज्यों से
(स) विदेशी राष्ट्रों से (द) विश्व बैंक से

110. साधारणतः निम्न में क्या असत्य है ?
(अ) राज्य संघीय सम्पत्ति पर कर नहीं लगा सकता
(ब) संघ राज्य की सम्पत्ति पर कर नहीं लगा सकता
(स) राज्य संघीय सम्पत्ति पर असीमित कर लगा सकता है
(द) संघ राज्य की सम्पत्ति पर कर लगा सकता है

111. केन्द्र सरकार राज्य की वित्तीय आवश्यकताओं की पूर्ति किस प्रकार करता है ?
(अ) राजस्व निर्धारण द्वारा
(ब) ऋण प्रदान कर
(स) सहायता अनुदान तथा अन्य अनुदान प्रदान कर
(द) उपर्युक्त सभी

112. भारत का नियन्त्रक महालेखापरीक्षक निम्न में किसके वित्तीय लेखे जोखे की जांच करता है ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(अ) केवल राज्यों का
(ब) केवल केन्द्र का
(स) केवल केन्द्र प्रशासित देशों का
(द) उपर्युक्त सभी का

113. अन्तर्राज्यीय व्यापार का नियमन करने की शक्ति निम्न में किसमें निहित है ?
(अ) केन्द्र सरकार
(ब) योजना आयोग
(स) रिजर्व बैंक ऑव इण्डिया
(द) राज्यों का स्वतन्त्र निकाय

114. भारत में केन्द्र-राज्य सम्बन्धों का अध्ययन करने पर कहा जा सकता है कि भारतीय संघ में—
(अ) शक्तिशाली केन्द्रीय सरकार है
(ब) राज्यों को अधिक स्वायत्तता प्राप्त नहीं है
(स) सरकारी संघ है
(द) भारतीय संघ की आत्मा एकात्मक है
(ध) उपर्युक्त सभी सत्य हैं

115. भारत का राष्ट्राध्यक्ष कौन हैं ?
(अ) भारत का राष्ट्रपति
(ब) भारत का राष्ट्रपति व उपराष्ट्रपति
(स) भारत का केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल
(द) भारत का प्रधानमन्त्री
(ध) उपर्युक्त सभी

116. भारत के राष्ट्रपति की निर्वाचक मण्डली का कौन सदस्य नहीं होता है ?
(अ) संसद के दोनों सदनों के सदस्य
(ब) संसद के दोनों सदनों के निर्वाचित सदस्य
(स) राज्यों के विधान सभाओं के सदस्य
(द) राज्यों के विधान सभाओं के निर्वाचित सदस्य
(ध) राज्यों के विधान मण्डलों के निर्वाचित सदस्य
(च) अ और ध
(छ) ब और द

117. राष्ट्रपति का निर्वाचन निम्न में किस प्रकार होता है ?
(अ) साधारण बहुमत द्वारा
(ब) साधारण बहुमत के अनुसार एकल संक्रमणीय मत से
(स) आनुपातिक प्रतिनिधित्व के अनुसार एकल संक्रमणीय मत से
(द) एकल संक्रमणीय प्रतिनिधित्व के अनुसार आनुपातिक मत से

118. राष्ट्रपति का कार्यकाल पांच वर्ष निश्चित किया गया है । एक व्यक्ति अधिकतम कितनी बार राष्ट्रपति बन सकता है ?
(अ) दो (ब) तीन
(स) चार (द) कोई सीमा निश्चित नहीं है

119. भारत के राष्ट्रपति की तुलना निम्न में किससे करना सर्वाधिक उचित है ?
(अ) फ्रान्स का राष्ट्रपति
(ब) ब्रिटेन का सम्राट
(स) सं. रा. अमेरिका का राष्ट्रपति
(द) श्रीलंका का राष्ट्रपति

120. हालांकि राष्ट्रपति का कार्यपाल पांच वर्ष का होता है परन्तु निम्न में से किन स्थितियों में उसका कार्यकाल उपर्युक्त अवधि से कम भी हो सकती है ?
(अ) केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल के भंग होने पर
(ब) राष्ट्रपति द्वारा पदत्याग करने पर
(स) महाभियोग प्रक्रिया द्वारा पद से हटाने पर
(द) आम चुनाव सम्पन्न होने पर

121. संविधान के उल्लंघन या उसकी धाराओं के विरुद्ध आचरण करने पर महाभियोग प्रस्ताव लिखित रूप में संसद के $\frac{1}{4}$ सदस्यों द्वारा कम से कम पूर्व सूचना पर प्रस्तुत किया जाना चाहिए । महाभियोग प्रक्रिया को सफलतापूर्वक पारित करने के लिये संसद के प्रत्येक सदन में कितने बहुमत की आवश्यकता होती है ?
(अ) $\frac{1}{2}$ (ब) $\frac{2}{3}$
(स) $\frac{3}{4}$ (द) $\frac{5}{6}$

122. राष्ट्रपति पद अचानक रिक्त हो जाने पर उपराष्ट्रपति स्थानापन्न रूप से कार्य करता है परन्तु कार्यकाल की समाप्ति, पदच्युत पदत्याग या अन्य कारण से राष्ट्रपति का पद रिक्त होने पर अगला निर्वाचन कितने अन्तराल में होना चाहिए ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(अ) 15 दिन (ब) 1 महिना
(स) 3 महिना (द) 6 महिना

123. राष्ट्रपति निर्वाचन के लिये निम्न में किस मतदाता के मत का मूल्य सर्वाधिक है ?
(अ) राज्य सभा का सदस्य
(ब) लोक सभा का सदस्य
(स) उत्तर प्रदेश के विधान सभा का सदस्य
(द) महाराष्ट्र के विधान सभा का सदस्य
(घ) तमिलनाडु के विधान सभा का सदस्य

124. संघ की कार्यपालिका शक्ति निम्न में किसमें निहित है ?
(अ) भारत का राष्ट्रपति (ब) केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल
(स) भारत का प्रधानमन्त्री (द) उपर्युक्त सभी

125. भारत का राष्ट्रपति निम्न में किसका प्रधान सेनापति होता है ?
(अ) थल सेना (ब) नौ सेना
(स) वायु सेना (द) उपर्युक्त सभी

126. भारत का राष्ट्रपति निम्न में किसकी नियुक्ति करता है ?
(अ) प्रधानमन्त्री व मन्त्रिमण्डल के सदस्य
(ब) भारत का महान्यायवादी
(स) महानियन्त्रक व महालेखानिरीक्षक
(द) उच्चतम व उच्चन्यायालय के न्यायाधीश
(य) योजना आयोग के सदस्य
(र) वित्त आयोग के सदस्य
(ल) मुख्य निर्वाचन आयुक्त
(व) राज्यपाल

127. भारत का राष्ट्रपति धन विधेयक पर अपनी स्वीकृति प्रदान करने से अस्वीकार नहीं कर सकता है परन्तु साधारण विधायकों पर निलम्बन का निषेधाधिकार लगाकर अधिक से अधिक उसे कितनी बार संसद में वापस भेज सकता है ?
(अ) 1 (ब) 2
(स) 3 (द) असीमित बार

128. संसद के अधिवेशन में न होने पर राष्ट्रपति अध्यादेश जारी कर सकता है। यह अध्यादेश संसद द्वारा पारित अधिनियम के समान प्रभावशाली होता है। संसद का अगला अधिवेशन प्रारम्भ होने के कितने अवधि पश्चात ये अध्यादेश समाप्त समझे जायेंगे ?
(अ) 15 दिन (ब) 1 महीना
(स) 6 सप्ताह (द) 6 महीना

129. किसी दण्डित व्यक्ति को क्षमादान या दण्ड कम करने की शक्ति का प्रयोग राष्ट्रपति निम्न में किस मामले में नहीं कर सकता हैं ?
(अ) उन सभी मामलों में जहाँ दण्ड ऐसे अपराध के लिये प्रदान किया गया हो जो संघीय कार्यपालिका के अन्तर्गत आते हों
(ब) उन सभी मामलों में जहां दण्ड ऐसे अपराध के लिये प्रदान किया गया हो जो संघीय एवं राज्यीय कार्यपालिका के अन्तर्गत आते हों
(स) उन सभी मामलों में जहाँ मृत्यु दण्ड मिला हो
(द) उन सभी मामलों में जहां दण्ड किसी सैन्य न्यायालय द्वारा प्रदान किया गया हो

130. राष्ट्रपति के निर्वाचन के लिये आनुपातिक प्रतिनिधित्व के अनुसार एकल संक्रमणीय मत पद्धति अपनाने का क्या कारण है ?
(अ) राज्यों के मतों में एकरूपता लाने के लिये
(ब) राज्यों और केन्द्र के मतों में सामंजस्य लाने के लिये
(स) राष्ट्रपति का निष्पक्ष निर्वाचन करवाने हेतु
(द) अ तथा ब (य) ब तथा स

131. संसद की स्वीकृति के बिना आकस्मिक खर्चों के लिये धन प्राप्त करने के लिये सरकार को किसकी अनुमति लेनी पड़ती है ?
(अ) राष्ट्रपति (ब) उपराष्ट्रपति
(स) लोकसभा का स्पीकर (द) वित्त आयोग
(य) योजना आयोग

132. निम्नलिखित में किन विषयों पर राज्यों द्वारा अधिनियम बनाने के लिये राज्य के विधान सभा में विधेयक प्रस्तुत करने के पूर्व राष्ट्रपति की स्वीकृति आवश्यक होती है ?
(अ) राज्य द्वारा सम्पति प्राप्त करने के लिये निर्मित अधिनियम
(ब) किसी राज्य के अन्दर या दूसरे राज्यों के साथ व्यापार आदि पर प्रतिबन्ध
(स) अन्तःराज्यीय परियोजना प्रारम्भ करने हेतु अधिनियम
(द) अ तथा ब (य) ब तथा स

133. निम्नलिखित विदेशी राष्ट्रों के पदाधिकारियों में कौन राष्ट्रपति के समक्ष अपना प्रमाणपत्र प्रस्तुत करते हैं ?
(अ) राजदूत (ब) राजनयिक प्रतिनिधि
(स) वाणिज्य दूत (द) उपर्युक्त सभी

134. राष्ट्रपति को निम्न में किन संकटकालीन अवस्थाओं में अपरिमित शक्तियाँ प्राप्त हैं ?
(अ) युद्ध, बाह्य आक्रमण या आन्तरिक संकट की स्थिति होने पर
(ब) राज्यों में संवैधानिक व्यवस्था विफल होने पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(स) आर्थिक-वित्तीय संकट आने पर
(द) उपर्युक्त सभी

135. निम्नलिखित में किस प्रकार का आपातकाल भारत में अभी तक राष्ट्रपति ने नहीं घोषित किया है ?
(अ) राज्यों में संवैधानिक व्यवस्था विफल होने पर
(ब) युद्ध, बाह्य आक्रमण या आन्तरिक संकट की स्थिति उत्पन्न होने पर
(स) आर्थिक-वित्तीय संकट होने पर
(द) ब तथा स

136. युद्ध, बाह्य आक्रमण या आन्तरिक संकट के कारण घोषित आपातकाल के निम्नलिखित में क्या संवैधानिक प्रभाव नहीं होते हैं ?
(अ) संसद को भारत या उसके किसी विशेष भाग के लिये राज्य सूची में उल्लिखित विषयों सहित किसी विषय पर विधि निर्माण का अधिकार होगा जो संकट काल की घोषणा के वापस लेने के 6 महीनों पश्चात प्रभावी नहीं रहेगा
(ब) केन्द्र सरकार किसी भी राज्य सरकार को कार्यपालिका की शक्तियों के उपयोग के लिये आदेश दे सकती है
(स) संघ व राज्यों के मध्य आय के बंटवारे सम्बन्धी उपबन्ध में राष्ट्रपति के आदेशानुसार संशोधन
(द) अनुच्छेद 19 में वर्णित व्यक्तियों की स्वतन्त्रताओं का स्थगन (केवल युद्ध व बाह्य आक्रमण के कारण आपात काल के दौरान, सशस्त्र विद्रोह के दौरान नहीं)
(य) अनुच्छेद 32 में वर्णित संवैधानिक उपचारों के अधिकारों का स्थगन हो सकता है
(र) संसद के कार्यकाल में एक बार में एक वर्ष की वृद्धि की जा सकती है परन्तु आपात काल की समाप्ति होने पर संसद की बढ़ी हुई अवधि छह महीनों से अधिक नहीं हो सकती
(ल) उपर्युक्त सभी सत्य

137. आपात काल की उद्घोषणा के एक महीने के भीतर संसद के सदस्यों की 2/3 बहुमत की स्वीकृति आवश्यक होती है। यह स्वीकृति एक बार में छह महीने के लिय लागू होती है। आपातकाल की समाप्ति के लिये संसद के दोनों सदनों की निम्न में किस प्रकार की बहुमत की आवश्यकता होती है ?
(अ) $\frac{1}{2}$ (ब) $\frac{2}{3}$ (स) $\frac{3}{4}$ (द) $\frac{4}{5}$

138. देश के किसी राज्य में आन्तरिक अव्यवस्था उत्पन्न होने की स्थिति में आपातकाल की घोषणा के लिये, राज्य की विधानसभा/राज्यपाल की संस्तुति क्या आवश्यक होती है ?
(अ) हाँ (ब) नहीं
(स) कुछ निश्चित नहीं

139. राज्य के संवैधानिक व्यवस्था विफल होने पर आपात काल की उद्घोषणा की जा सकती है। संसद की स्वीकृति के बावजूद यह उद्घोषणा एक बार में छह महीनें से अधिक प्रवर्तन में नहीं रहेगी। इसे अधिक से अधिक कितने दिनों तक बढ़ाया जा सकता है ?
(अ) 1 वर्ष (ब) 2 वर्ष
(स) 3 वर्ष (द) अनिश्चित काल

140. राज्य में संवैधानिक तन्त्र की विफलता के कारण उद्घोषित आपात काल का क्या संवैधानिक प्रभाव नहीं होता है ?
(अ) राष्ट्रपति स्वयं या राज्यपाल या किसी अन्य अधिकारी को राज्य का सम्पूर्ण या आंशिक शासन कार्य सौंप सकता है
(ब) राज्य विधान सभा का स्थगन व विघटन कर राज्य की विधायनी शक्तियाँ संसद या उसके प्राधिकार के अधीन प्रयोग की जा सकती हैं
(स) राष्ट्रपति उद्घोषणा के उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु उच्च न्यायालय की शक्ति के अलावा अन्य समस्त शक्ति को हाथों में लेकर उचित प्रासंगिक व्यवस्था कर सकता है
(द) नागरिकों के मूलाधिकारों को निलम्बित किया जा सकता है

141. राष्ट्रीय संकट और सांविधानिक तन्त्र की विफलता से उत्पन्न आपातकाल में मुख्य रूप से क्या अन्तर है ?
(अ) राष्ट्रीय आपात्काल की घोषणा सम्पूर्ण राष्ट्र या उसके किसी भाग में लागू की जा सकती है परन्तु संवैधानिक तन्त्र की विफलता की उद्घोषणा केवल एक राज्य तक ही सीमित रहती है
(ब) राष्ट्रीय आपातकाल की उद्घोषणा में नागरिकों के मूलाधिकार निलम्बित हो जाते हैं जबकि संवैधानिक तन्त्र की विफलता की उद्घोषणा में नागरिकों के मूलाधिकार प्रभावित नहीं होते हैं
(स) हालाकि दोनों आपातकालीन उद्घोषणा में राज्य के प्रशासन एवं राज्य सूची में केन्द्र का नियन्त्रण बढ़ जाता है परन्तु केवल संवैधानिक तन्त्र की विफलता की उद्घोषणा में राज्य विधान मण्डल का स्थगन या विघटन किया जा सकता है
(द) उपर्युक्त सभी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

142. किसी राज्य में संवैधानिक तन्त्र की विफलता की उद्घोषणा के पूर्व क्या राष्ट्रपति को उस राज्य के राज्यपाल का इस विषय पर प्रतिवेदन मिलना आवश्यक होता है ?
(अ) हाँ (ब) नहीं (स) कोई आवश्यक नहीं

143. किस राज्य में सर्वप्रथम संवैधानिक तन्त्र की विफलता की उद्घोषणा की गयी थी ?
(अ) पंजाब (ब) केरल
(स) उड़ीसा (द) राजस्थान

144. राष्ट्रीय आपात काल की भांति क्या राज्य में संवैधानिक तन्त्र की विफलता की उद्घोषणा के लिये केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल द्वारा राष्ट्रपति को परामर्श देना आवश्यक है ?
(अ) हाँ (ब) नहीं (स) कोई निश्चित नहीं

145. सम्पूर्ण भारत या उसके कोई भाग में वित्तीय स्थायित्व और साख को खतरा उत्पन्न होने पर राष्ट्रपति वित्तीय आपातकाल उद्घोषित कर सकता है। इस उद्घोषणा के क्या संवैधानिक प्रभाव होंगे ?
(अ) सर्वोच्च व उच्च न्यायालयों के न्यायाधीशों सहित सभी सार्वजनिक कर्मचारियों के वेतन व भत्ते में कमी करने का निदेश प्रदान किया जा सकता है
(ब) राज्य के धन विधेयकों को राष्ट्रपति की स्वीकृति के लिये मंगवाया जा सकता है
(स) आर्थिक दृष्टि से किसी की राज्य की सरकार को राष्ट्रपति निदेश प्रदान कर सकता है
(द) उपर्युक्त सभी

146. भारत का उपराष्ट्रपति राज्य सभा का अध्यक्ष होता है। उनके सम्बन्ध में क्या सत्य है ?
(अ) राज्य सभा के मतदान में नियमित मतदान करता है
(ब) केवल धन विधेयक व संवैधानिक संशोधन विधेयक पर मत प्रदान करता है
(स) केवल ग्रन्थि (Tie) की स्थिति में निर्णायक मतदान (Casting Vote) करता है
(द) राज्य सभा का सदस्य न होने के कारण कभी भी मतदान नहीं करता है

147. उपराष्ट्रपति द्वारा राष्ट्रपति पद को संभालने पर उन्हें पद की समस्त शक्तियाँ एवं उन्मुक्तियाँ उपलब्ध होती हैं। उपराष्ट्रपति निम्न में किन अवस्थाओं में राष्ट्रपति का पद ग्रहण कर सकता है ?
(अ) राष्ट्रपति की मृत्यु
(ब) राष्ट्रपति का त्याग पत्र
(स) राष्ट्रपति का महाभियोग या अन्य किसी कारण से पदच्युत होना
(द) रोग या अनुपस्थिति के कारण से राष्ट्रपति का कार्यभार संभालने में असमर्थता
(ध) उपर्युक्त सभी

148. एक ही समय राष्ट्रपति और उपराष्ट्रपति का पद रिक्त होने पर कौन व्यक्ति राष्ट्रपति पद का कार्यभार संभालता है ?
(अ) सर्वोच्च न्यायालय का मुख्य न्यायाधीश
(ब) लोक सभा का अध्यक्ष
(स) राज्य सभा का उपाध्यक्ष
(द) भारत का महान्यायवादी

149. सर्वोच्च न्यायालय का मुख्य न्यायाधीश व राष्ट्रपति क्रमशः राष्ट्रपति, व उपराष्ट्रपति को शपथ ग्रहण करवाता है। उपराष्ट्रपति अपना त्यागपत्र राष्ट्रपति को सम्बोधित करता है। राष्ट्रपति अपना त्यागपत्र किसको सम्बोधित करता है ?
(अ) सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश
(ब) लोक सभा के अध्यक्ष
(स) उपराष्ट्रपति
(द) भारत के महान्यायवादी

150. मन्त्रिपरिषद का कोई सदस्य संसद की सदस्यता न प्राप्त कर अधिक से अधिक कितने दिनों तक मन्त्री बना रह सकता है ?
(अ) 2 महीना (ब) 3 महीना
(स) 6 महीना (द) संसद का एक सत्र

151. आकार की दृष्टि से निम्न में कौन सा क्रम सही है ?
(अ) मन्त्रिपरिषद, किचन मन्त्रीमण्डल, मन्त्रिमण्डल
(ब) मन्त्रिमण्डल, मन्त्रिपरिषद, किचन मन्त्रिमण्डल
(स) मन्त्रिपरिषद, मन्त्रिमण्डल, किचन कैबीनेट
(द) तीनों के आकार में कोई अन्तर नहीं है
(ध) ऐसी कोई व्यवस्था भारत में नहीं है

152. वरीयता की दृष्टि से मन्त्रिपरिषद के निम्नलिखित वर्गों का कौन सा क्रम सही है ?
(अ) कैबीनेट मन्त्री, राज्य मन्त्री, उपमन्त्री
(ब) कैबीनेट मन्त्री, उपराज्यमन्त्री, उपमन्त्री
(स) कैबीनेट मन्त्री, राज्यमन्त्री, उपराज्यमन्त्री
(द) कैबीनेट मन्त्री, उपमन्त्री, राज्यमन्त्री

153. केन्द्रीय मन्त्रिपरिषद का अध्यक्ष प्रधानमन्त्री होता है। क्या प्रधानमन्त्री के लिये लोक सभा का सदस्य होना आवश्यक है ?
(अ) हाँ (ब) नहीं
(स) कुछ कहा नहीं जा सकता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

154. केन्द्रीय मन्त्रिपरिषद के सदस्य अपने पदों पर किसके प्रसादपर्यन्त रहते हैं ?
(अ) राष्ट्रपति (ब) प्रधानमन्त्री
(स) लोकसभा (द) संसद

155. मन्त्रिमण्डल एवं राष्ट्रपति के सम्बन्ध में क्या असत्य है ?
(अ) मन्त्रिमण्डल के अधीन न होने कारण राष्ट्रपति के लिये मन्त्रिमण्डल के परामर्श को स्वीकारना बाध्यकर नहीं है
(ब) राष्ट्रपति मन्त्रिमण्डल के परामर्शानुसार कार्य करती है
(स) राष्ट्रपति द्वारा मन्त्रिमण्डल को चेतावनी देने, और प्रोत्साहित करने का अधिकार है
(द) राष्ट्रपति को मन्त्रिमण्डल द्वारा लिये गये निर्णयों तथा प्रशासन सम्बन्धी मामलों की सूचना पाने का अधिकार है

156. लोकसभा निम्न में किन तरीकों से मन्त्रिमण्डल के उत्तरदायित्व को व्यावहारिक रूप प्रदान करता है ?
(अ) मन्त्रियों से प्रश्न तथा पूरक प्रश्न पूछ कर
(ब) मन्त्रिमण्डल द्वारा प्रस्तुत विधेयक या प्रस्ताव को नामन्जूर कर
(स) किसी मन्त्री द्वारा प्रस्तुत की गयी धन की मांग को नामन्जूर कर या किसी मन्त्री के वेतन की कटौती कर
(द) किसी मन्त्री विशेष के प्रति अविश्वास का प्रस्ताव पारित कर
(ध) सम्पूर्ण मन्त्रिमण्डल के विरुद्ध अविश्वास का प्रस्ताव पारित कर (च) उपर्युक्त सभी

157. भारत में प्रधानमन्त्री का निरन्तर शक्तिशाली होने का क्या कारण है ?
(अ) अब तक अधिकांश प्रधानमन्त्रियों का व्यक्तित्व
(ब) प्रतिपक्ष में एकता का अभाव
(स) सत्ताधारी दल में प्रधानमन्त्री के टक्कर के शक्तिशाली व व्यक्तित्वपूर्ण राजनीतिज्ञों का अभाव
(द) अधिकांश महत्वपूर्ण नीति निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान प्रधानमन्त्री सचिवालय का होना
(ध) उपर्युक्त सभी

158. संसद का अनन्य भाग निम्न में कौन है ?
(अ) राष्ट्रपति (ब) उपराष्ट्रपति
(स) लोकसभा (द) राज्यसभा
(ध) उपर्युक्त सभी

159. यद्यपि भारत में ब्रिटिश संसदीय पद्धति को अपनाया गया परन्तु भारत का संसद ब्रिटिश संसद की भांति संप्रभु नहीं है। भारतीय संसद की संप्रभुता पर निम्न में कौन सी मर्यादा नहीं लगी है ?
(अ) लिखित संविधान
(ब) संघात्मक शासन व्यवस्था
(स) संवैधानिक संशोधन
(द) न्यायिक पुनर्विलोकन
(ध) राजनीतिक परिसीमाएं
(च) उपर्युक्त सभी सत्य

160. एक संसद सदस्य कितनें नागरिकों का अपने सदन में प्रतिनिधित्व करता है ?
(अ) $1\frac{1}{2}$ लाख (ब) 3 लाख
(स) $7\frac{1}{2}$ लाख (द) 9 लाख

161. संसद के दोनों सदनों में कम से कम कुल सदस्यता के कितने प्रतिशत के उपस्थित होने पर कार्यवाही का प्रारम्भ, और निर्णय लिया जा सकता है ?
(अ) 5% (ब) 10%
(स) 30% (द) 50%

162. लोकसभा व राज्यसभा की सदस्य संख्या क्रमशः 544 व 250 है। लोकसभा की सदस्य संख्या 1971 के जनगणना के आधार पर निर्धारित की गई थी। अगला निर्धारण कब किया जायेगा ?
(अ) 1985 (ब) 1990
(स) 1995 (द) 2001

163. साहित्य, कला, विज्ञान या समाज सेवा के क्षेत्र में विशेष योग्यता रखने वाले 12 व्यक्तियों को राष्ट्रपति राज्यसभा की सदस्यता के लिये मनोनीत करता है। लोकसभा में किस समुदाय से सम्बन्धित 2 व्यक्तियों का मनोनय राष्ट्रपति कर सकता है ?
(अ) पारसी समुदाय
(ब) एंग्लो इण्डियन समुदाय
(स) बुद्ध धर्मावलम्बी
(द) जैन धर्मावलम्बी

164. राज्यसभा के सदस्यों का निर्वाचन आनुपातिक प्रतिनिधित्व प्रणाली के अनुसार एकल संक्रमणीय मत द्वारा होता है। लोकसभा के सदस्यों का निर्वाचन किस प्रकार होता है ?
(अ) एकत्रीभूत मत प्रणाली
(ब) सूची मत प्रणाली
(स) वैकल्पिक मत प्रणाली
(द) सामान्य बहुमत प्रणाली
(ध) उर्द्धतीय मतदान प्रणाली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

165. यदि कोई व्यक्ति एक ही साथ राज्य विधान मण्डल तथा ससद का सदस्य निर्वाचित होता है तो राज्य विधान मण्डल में उसे पदत्याग देना पड़ेगा। यदि निश्चित अवधि के भीतर वह ऐसा नहीं करता है तो क्या स्थिति उत्पन्न हो सकती है ?

(अ) विधानमण्डल में उसका स्थान रिक्त घोषित किया जायेगा

(ब) राष्ट्रपति संसद में उसका स्थान रिक्त घोषित करेगा

(स) राष्ट्रपति संसद एवं विधानमण्डल दोनों में उसका स्थान रिक्त घोषित करेगा

(द) कुछ भी नहीं हो सकता है

166. कितने दिनों तक लगातार सदन की समस्त बैठकों में सदन की आज्ञा के बिना अनुपस्थित रहने पर सांसद का स्थान रिक्त घोषित किया जायेगा ?

(अ) 15 (ब) 30 (स) 45 (द) 60

167. संसद के दो सत्रों के मध्य अधिक से अधिक कितना अन्तराल हो सकता है ?

(अ) 1 महीना (ब) 2 महीना

(स) 6 महीना (द) 12 महीना

168. राष्ट्रपति संसद के सत्रों को आहूत तथा सत्रावसान करता है। उसे संसद को विघटित करने का अधिकार प्राप्त है। उसे संसद के दोनों सदनों की संयुक्त बैठक बुलाने का अधिकार है परन्तु ऐसी बैठक कब बुलाया जाती है ?

(अ) जब एक सदन से पारित हुए विधेयक को दूसरा सदन अस्वीकार कर दे

(ब) जब विधेयक में किये गये संशोधनों पर दोनों सदन असहमत हों

(स) जब विधेयक पारित न किया गया हो और 6 महीने से अधिक समय व्यतीत हो गया हो

(द) उपर्युक्त सभी स्थितियों में

169. साधारण विधेयक के सम्बन्ध में क्या सत्य है ?

(अ) साधारण विधेयक कोई भी सदस्य प्रस्तुत कर सकता है

(ब) इसे संसद के किसी भी सदन में प्रस्तुत किया जा सकता है

(स) साधारण विधेयक के प्रश्न पर दोनों सदनों को समान अधिकार है

(द) प्रत्येक सदन में इसके तीन बार वाचन होते हैं

(य) उपर्युक्त सभी सत्य

170. धन विधेयक के सम्बन्ध में कौन सा कथन असत्य है ?

(अ) धन विधेयक को प्रस्तुत करने के पूर्व राष्ट्रपति की संस्तुति आवश्यक होती है

(ब) यह केवल मन्त्रिमण्डल का सदस्य ही प्रस्तुत कर सकता है

(स) यह केवल लोकसभा में ही प्रस्तुत किया जा सकता है

(द) लोक सभा राज्य सभा द्वारा धन विधेयक में किये गये संशोधनों को स्वीकारने के लिए बाध्य नहीं है

(ध) राष्ट्रपति धन विधेयकों पर निषेधाधिकार का प्रयोग कर सकता है

171. किसी सदन में विधेयक को सम्पूर्ण प्रक्रिया पूरी करने के लिये निम्नलिखित में कौन सा स्तर पार नहीं करना पड़ता है ?

(अ) प्रथम वाचन (ब) द्वितीय वाचन

(स) समिति स्तर (द) सामान्य विचार विनिमय

(य) प्रतिवेदन स्तर (च) तृतीय वाचन

172. राज्य सभा एक स्थायी सदन है। परन्तु विघटन लोकसभा की कालावधि को समाप्त कर देता है, इस सन्दर्भ में क्या असत्य है ?

(अ) लोकसभा को विघटित करने की शक्ति राष्ट्रपति में निहित है

(ब) विघटन से लोकसभा में विचाराधीन धन विधेयक स्वयं ही समाप्त हो जाते हैं

(स) विघटन से लोकसभा में विचाराधीन सभी विधेयक स्वयं ही समाप्त हो जाते है

(द) विघटित लोकसभा का अध्यक्ष नवनिर्वाचित लोकसभा के प्रथम अधिवेशन तक अपने पद पर बना रहता है

173. लोकसभा के अध्यक्ष का निर्वाचन सदन के सदस्य करते हैं। अध्यक्ष को अपना पद संभालने के लिये शपथ नहीं लेनी पड़ती है। वह किसी भी समय अपना पदत्याग उपाध्यक्ष को पत्र लिख कर करता है। अध्यक्ष के निम्न में कौन से कार्य हैं ?

(अ) किसी विधेयक की प्रकृति (साधारण या धन) के सम्बन्ध में प्रमाणपत्र प्रदान करना

(ब) लोक सभा व राज्य सभा के संयुक्त बैठक की अध्यक्षता करना

(स) सदन में ग्रन्थि की स्थिति में निर्णायक मतदान करना

(द) सदन की कार्यवाही का संचालन करना

(ध) सदन में व्यवस्था बनाये रखना व सांसदों से नियमों का पालन करवाना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(च) सदन में वाद विवाद की विषय सूची सदन से परामर्श करके नियत करना
(छ) सदन में दलों और समूहों को मान्यता प्रदान करना
(ज) उपर्युक्त सभी

174. लोक लेखा समिति संसद की सबसे महत्वपूर्ण तथा सबसे बड़ी (लोक सभा के 15 सदस्य व राज्य सभा के 7 सदस्य) समिति हैं। इस समिति का प्रमुख कार्य क्या है ?
(अ) "लेखो में व्यय के रूप में जिस राशि का वितरण दिखाया गया है और जिस प्रयोजन के लिये उसका व्यय किया गया है क्या वह राशि वास्तव में वैधानिक रूप से उपलब्ध थी तथा उसी प्रयोजन के लिये निर्धारित थी
(ब) क्या व्यय इस प्राधिकार के अनुसार है जिसके वे अधीन है
(स) क्या प्रत्येक पुनर्विनियोग सक्षम प्राधिकारी द्वारा बनाये गये नियमों के अनुकूल किया गया है
(द) सहकारी निगमों, निर्माण संस्थाओं, स्वायत्त-शासी तथा अधिक स्वायत्तशासी संस्थाओं के लेखा विवरण और उनके लाभ-हानि खातों सहित आय व्यय की जांच करना"
(घ) उपर्युक्त सभी

175. साधारण अपराधों के अलावा संसद की आन्तरिक प्रक्रिया व कार्य संचालन को संचालित व नियन्त्रित करने का अधिकार किसको प्राप्त है ?
(अ) राष्ट्रपति (ब) प्रधानमन्त्री
(स) संसद (द) सर्वोच्च न्यायालय

176. संसद की प्रवर समितियों के सम्बन्ध में क्या सत्य है ?
(अ) ये समितियाँ अस्थाई होती हैं
(ब) विभिन्न विषयों पर विचार हेतु आवश्यकता-नुसार सम्बन्धित सदन द्वारा ये समितियाँ गठित की जाती हैं
(स) ये समितियाँ प्रतिवेदन प्रस्तुत करने के पश्चात स्वमेव समाप्त हो जाती हैं
(द) उपर्युक्त सभी सत्य

177. किसी साधारण विधेयक पर संसद के दोनों सदनों के मध्य असहमति का दौर छह महीनों अधिक होने पर दोनों सदनों का संयुक्त अधिवेशन राष्ट्र-पति बुलाता है। पिछले 31 वर्षों में ऐसा अधि-वेशन केवल एक बार बुलाया गया है। यह किस विधेयक से सम्बन्धित था ?
(अ) दहेज विरोधी विधेयक
(ब) हिन्दू विधि विधेयक
(स) दल-बदल विरोधी विधेयक
(द) राज्यों का पुनर्गठन विधेयक

178. सर्वोच्च न्यायालय को तीन प्रकार के क्षेत्राधिकार-प्रारम्भिक, अपीलीय तथा परामर्शदात्री-प्राप्त हैं। सर्वोच्च न्यायालय को निम्नलिखित में किसमें अनन्य क्षेत्राधिकार नहीं प्राप्त है ?
(अ) संघ तथा एक या एक से अधिक राज्यों के मध्य उत्पन्न होने वाले विवाद
(ब) संघ तथा कोई एक राज्य या अनेक राज्यों, और एक या एक से अधिक राज्यों के मध्य के विवाद
(स) यदि उच्च न्यायालय यह प्रमाणित कर दे कि मामला सर्वोच्च न्यायालय के विचारयोग्य है
(द) दो या दो से अधिक राज्यों के मध्य ऐसे विवाद जिनमें उनके वैधानिक अधिकारों का प्रश्न जुड़ा हो

179. विधि या तथ्य का कोई ऐसा प्रश्न उठने पर या यदि उसके उत्पन्न होने की सम्भावना हो और जो सार्वजनिक महत्व का हो तो राष्ट्रपति सर्वोच्च न्यायालय से परामर्श मांग सकता है। क्या सरकार सर्वोच्च न्यायालय के परामर्श को मानने के लिये बाध्य है ?
(अ) हाँ (ब) नहीं
(स) केवल नागरिकों के मूलाधिकारों के सम्बन्ध में प्रदान किये गये परामर्श से
(द) केवल राज्य नीति निदेशक तत्वों के सम्बन्ध में प्रदान किये गये परामर्श से

180. क्या सर्वोच्च न्यायालय को सं. रा. सर्वोच्च न्यायालय, अमेरिका, के समान न्यायिक पुनरावलोकन का अधिकार प्राप्त है ?
(अ) हाँ (ब) नहीं
(स) केवल नागरिकों के मूलाधिकार के सम्बन्ध में
(द) केवल केन्द्र-राज्य सम्बन्ध के विषय में

181. भारत में न्यायपालिका की स्वतन्त्रता की रक्षा के लिये संविधान में क्या उपबन्ध अपनाये गये हैं ?
(अ) न्यायाधीशों को पदच्युत करने की कठिन प्रक्रिया
(ब) न्यायाधीशों का आर्थिक संरक्षण
(स) न्यायाधीशों को राजकीय सेवाओं से अधिक आयु तक सेवा करने की सुविधा
(द) न्यायालय को अपनी कार्यपद्धति स्वयं निश्चित करने का अधिकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(ध) न्यायालयों के निर्णय या अधिकारिक क्षमता में किये गये कार्यों की आलोचना पर प्रतिबन्ध

(अ) उपर्युक्त सभी

182. सर्वोच्च न्यायालय के कार्यालय को नई दिल्ली से स्थानान्तरित करने के लिये किसकी स्वीकृति आवश्यक होती है ?

(अ) राष्ट्रपति (ब) सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश (स) अटॉर्नी जनरल ऑव इण्डिया

(द) स्थानान्तरित होने वाले राज्य के उच्च-न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश

183. सर्वोच्च न्यायालय में मुख्य न्यायाधीश की नियुक्ति के लिये न्यायाधीश की किस विशेषता बात पर बल दिया जाता है ?

(अ) वरीयता (ब) योग्यता

(स) वरीयता व योग्यता दोनों

(द) राष्ट्रपति की स्वेच्छा पर

184. संविधान में संशोधन करने की कितनी विधियाँ हैं ?

(अ) 2 (ब) 3 (स) 4 (द) 5

185. क्या संविधान संशोधन प्रक्रिया में संवैधानिक संशोधन करने के लिये राज्यों की स्वीकृति आवश्यक है ?

(अ) हाँ (ब) नहीं

(स) आपातकाल में राज्यों की सहमति नहीं होती है

186. निम्न में कौन संवैधानिक संशोधन प्रस्तुत कर सकता है ?

(अ) केन्द्र (ब) राज्य

(स) केन्द्र व राज्य या केन्द्र प्रशासित प्रदेश

(द) केन्द्र राज्य दोनों साथ में

187. राज्य में राज्यपाल की शक्तियाँ कुछ अपवादों के अलावा राष्ट्रपति के समान हैं। ये अपवाद किस क्षेत्र से सम्बन्धित हैं ?

(अ) कूटनीतिक (ब) सैनिक

(स) संकटकालीन (द) उपर्युक्त सभी

188. राज्य पाल निम्नलिखित विषयों में अपने स्वविवेक के अनुसार किसमें कार्य कर सकता है ?

(अ) अध्यादेश जारी करने के पूर्व राष्ट्रपति से निर्देश लेना

(ब) राज्य में आपात्कालीन घोषणा हेतु राष्ट्रपति को परामर्श देना

(स) विधानमण्डल द्वारा पारित विधेयक को राष्ट्रपति की स्वीकृति हेतु प्रेषित करना

(द) विधान मण्डल द्वारा पारित विधेयक का पुन-विचार के लिये वापस भेजना

(अ) उपर्युक्त सभी

189. क्या भारतीय राज्यों के लिये विधान मण्डल द्विसदनात्मक होना आवश्यक है ?

(अ) हाँ (ब) नहीं

(स) राज्यों के पुनर्गठन के पश्चात बने राज्यों के लिये आवश्यक है

190. विधान परिषद के कुल सदस्य संख्या के सम्बन्ध में क्या सत्य है ?

(अ) विधान परिषद में कम से कम 40 सदस्य होना चाहिए

(ब) विधान परिषद में कम से कम 100 सदस्य होना चाहिए

(स) विधान परिषद अधिक से अधिक सदस्यता की कुल सदस्यता का एक तिहाई होना चाहिए

(द) विधान परिषद के प्रत्येक सदस्य को औसत 5 लाख राज्य के नागरिकों का प्रतिनिधित्व करना चाहिए

(ध) अ तथा स

191. भारतीय दलीय व्यवस्था के सम्बन्ध क्या सत्य है ?

(अ) बहुदलीय पद्धति

(ब) एक राजनीतिक दल का प्राधान्य

(स) दलीय राजनीति वैयक्तिक नेतृत्व पर आधारित

(द) अवसरवादिता व दल बदल का प्राधान्य

(ध) राजनीतिक दलों में नीतियों का अभाव

(च) राजनीतिक दलों में विभाजन, विघटन व अस्थायित्व की प्रवृत्ति

(छ) क्षेत्रीय राजनीतिक दलों की उभरती प्रवृत्ति

(ज) उपर्युक्त सभी

192. भारत में सभी निर्वाचन जन प्रतिनिधि अधिनियम के अन्तर्गत कराये जाते हैं । यह अधिनियम संसद ने किस वर्ष पारित किया था ?

(अ) 194.9 (ब) 1950

(स) 1951 (द) 1982

193. भारत में बढ़ते हुए दल बदल को रोकने के लिये अभी तक संसद कोई भी कदम नहीं उठा सकी है। भारत के किस राज्य में इस दुर्व्यवस्था पर प्रतिबन्ध लगाने के लिये अधिनियम बनाया गया है ?

(अ) प. बंगाल (ब) तमिलनाडु

(स) त्रिपुरा (द) जम्मू-कश्मीर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

194. अनुच्छेद 370 के अन्तर्गत, भारत के किस राज्य या केन्द्र प्रशासित प्रदेश को भारतीय संघ में विशेष दर्जा प्रदान किया गया है ?

(अ) जम्मू कश्मीर (ब) हिमाचल प्रदेश
(स) त्रिपुरा (द) मिजोरम
(च) अरुणाचल

195. बलवन्त राय समिति की अनुशंसाओं के आधार पर 1959 को प्रारम्भ हुए पंचायती राज व्यवस्था के सम्बन्ध में क्या सत्य है ?

(अ) पंचायती राज स्थानीय शासन का द्विस्तरीय—ग्राम तथा विकास खण्ड—संगठन है
(ब) स्थानीय शासन का द्विस्तरीय—ग्राम व जिला—संगठन है
(स) स्थानीय शासन का त्रिस्तरीय—ग्राम, विकास, खण्ड व जिला—संगठन है
(द) उपर्युक्त सभी असत्य

196. जम्मू-कश्मीर, त्रिपुरा व केरल में एक स्तरीय पंचायती राज व्यवस्था तथा कर्नाटक में दो स्तरीय पंचायती राज व्यवस्था अपनायी गयी है, यह बताइये किस राज्य में पंचायती राज व्यवस्था सर्वप्रथम अपनायी गयी ?

(अ) पं. बंगाल (ब) राजस्थान (स) गुजरात
(द) उड़ीसा (ध) आन्ध्र प्रदेश

197. पंचायती राज व्यवस्था में आवश्यक सुधार लानें के लिये अशोक मेहता समिति ने क्या सिफारिश की है ?

(अ) न्याय पंचायतों की अध्यक्षता जिला न्यायालय का न्यायाधीश करे
(ब) जिला को विकेन्द्रीकरण का बिन्दु माना जाय
(स) स्थानीय शासन का द्विस्तरीय—जिला परिषद व मण्डल पंचायत—संगठन हो
(द) पंचायती राज व्यवस्था के सभी संस्थाओं में राजनीतिक दलों को भाग लेने की अनुमति प्रदान की जाय
(ध) उपर्युक्त सभी

198. प्रत्येक जिले में कितनी जिला परिषदें स्थापित की जाती हैं ?

(अ) 1 (ब) 2 (स) 3 (द) असीमित संख्या

199. न्याय पंचायत की व्यवस्था का प्रमुख उद्देश्य क्या है ?

(अ) पंचायती व्यवस्था के दोषों को सुधारना
(ब) जिला परिषद के लेखा जोखा पर नियन्त्रण रखना
(स) कम खर्च से शीघ्र न्याय दिलवाना
(द) निर्धन ग्रामीणों को मुफ्त में न्याय दिलवाना

200. भारत में पंचायती राज व्यवस्था का आशानुरूप कार्य न करने का क्या कारण है ?

(अ) सत्ता का विकेन्द्रीकरण
(ब) ग्रामीणों में अशिक्षा व निर्धनता
(स) दलगत राजनीति (द) जाति प्रथा
(ध) पंचायती राज संस्थाओं के पास धन की कमी
(च) उपर्युक्त सभी

उत्तरमाला :

■ भारतीय राज्य व्यवस्था

1 अ, 2 द, 3 च, 4 ब, 5 स, 6 द, 7 अ, 8 ब, 9 ध, 10 ब, 11 स, 12 स, 13 अ, 14 स, 15 ब, 16 द, 17 अ, 18 ब, 19 स, 20 अ तथा स, 21 स, 22 ब, 23 स, 24 द, 25 द, 26 स, 27 ब, 28 अ, 29 छ, 30 अ, 31 ब, 32 द, 33 ब, 34 द, 35 द, 36 ब, 37 स, 38 च, 39 छ, 40 त, 41 स, 42 अ, 43 अ तथा ब, 44 द, 45 स, 46 स, 47 अ, 48 द, 49 ब, 50 ब, 51 ब, 52 अ, 53 ध, 54 द, 55 ध, 56 ब, 57 ब, 58 अ, 59 ब, 60 च, 61 स, 62 ब, 63 अ, 64 ध, 65 अ, 66 द, 67 ब, 68 द, 69 स, 70 द, 71 अ, 72 स, 73 स, 74 स, 75 ब, 76 द, 77 ध, 78 ध, 79 ध तथा च, 80 द, 81 ध, 82 द, 83 स, 84 अ, 85 अ, 86 स, 87 स, 88 ब, 89 स, 90 स, 91 द, 92 ज, 93 अ, 94 स, 95 स, 96 द, 97 ब, 98 स, 99 ब तथा स, 100 अ, 101 अ, 102 अ, 103 छ, 104 द, 105 ब, 106 च, 107 च, 108 स, 109 अ, 110 अ तथा ब, 111 द, 112 द, 113 अ, 114 ध, 115 अ, 116 छ, 117 स, 118 द, 119 ब, 120 ब तथा स, 121 ब, 122 द, 123 अ तथा ब, 124 अ, 125 द, 126 ध, 127 अ, 128 स, 129 ब, 130 द, 131 अ, 132 द, 133 द, 134 द, 135 स, 136 छ, 137 अ, 138 ब, 139 स, 140 द, 141 द, 142 ब, 143 अ, 144 ब, 145 द, 146 स, 147 ध, 148 अ, 149 स, 150 स, 151 स, 152 अ, 153 ब, 154 अ, 155 अ, 156 च, 157 ध, 158 ध, 159 च, 160 स, 161 ब, 162 द, 163 ब, 164 द, 165 ब, 166 द, 167 स, 168 स, 169 ध, 170 ध, 171 ध, 172 ब, 173 ज, 174 ध, 175 स, 176 द, 177 अ, 178 स, 179 ब, 180 ब, 181 च, 182 अ, 183 स, 184 ब, 185 अ, 186 अ, 187 द, 188 ध, 189 ब, 190 ध, 191 ज, 192 स, 193 द, 194 अ, 195 स, 196 ब तथा च, 197 ध, 198 अ, 199 स, 200 च। ■ ■

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सामान्य विज्ञान पर वस्तुपरक परीक्षण (2)

159. अधोलिखित में कौन सा रोग संक्रमी रोग नहीं है ?
(अ) टाइफायड (ब) मलेरिया
(स) बेरी बेरी (द) यक्ष्मा

160. अधोलिखित में कौन सा रोग स्वतः प्रतिरक्षी रोग नहीं है ?
(अ) दमा (ब) शीत पित्त
(स) निमोनिया (द) आमवात ज्वर(Reheumatic Fever)

161. अधोलिखित में कौन सी नलिकाएं मनुष्य के शरीर में विशुद्ध रक्त का वहन करती हैं ?
(अ) धमनियाँ (ब) शिराएं
(स) मेरु रज्जा (द) उपरोक्त में कोई नहीं

162. पुरुषों की कोशिकाओं में एक x तथा एक y क्रोमोसोम होते है । बताइये स्त्रियों की कोशिकाओं के संदर्भ में अधोलिखित में कौन सा कथन सत्य है ?
(अ) इनमें दो X क्रोमोसोम होते है
(ब) इनमें एक X तथा दो y क्रोमोसोम होते हैं
(स) इनमें दो X तथा एक y क्रोमोसोम होते हैं
(द) इनमें दो y क्रोमोसोम होते हैं

163. अधोलिखित पदार्थों में कौन सा पदार्थ मानव चर्म में पाया जाता है, जो सूर्य के प्रकाश की उपस्थिति में विटामिन D का निर्माण करता है ?
(अ) कैल्शियम आक्जलेट क्रिस्टल (ब) एरगोस्टेरोल
(स) सोडियम क्लोराइड (द) फास्फेट

164. पुरुष वर्ग के कृत्रिम वन्ध्याकरण को.....कहते हैं ।
(अ) ट्युबेक्टामी (ब) वेसेक्टामी
(स) एनटामी (द) जिप्सोटामी

165. 'क्युसेक' अधोलिखित में किसका मात्रक है ?
(अ) ध्वनि (ब) पानी
(स) ऊष्मा (द) विद्युत प्रवाह

166. 'नेत्र दान' करते समय अधोलिखित में कौन सा भाग दाता दान करता है ?
(अ) कार्निया (ब) लेंस (स) रेटिना (स) आइरिस

167. 'O' रक्त समूह सर्वदाता कहलाता है । बताइये यदि A रक्त समूह वाले व्यक्ति के रक्त को AB रक्त समूह वाले व्यक्ति के शरीर में संचरित किया जाय तो क्या होगा ?
(अ) रक्त जम जायेगा
(ब) रक्त ग्रहण करने वाला मर जायेगा
(स) रक्त ग्रहण करने वाला सामान्य रहेगा
(द) रक्त ग्रहण करने वाले को 'हाइपरटेंशन' हो जायेगा

168. एक नये तत्व की खोज हुई है जो वायुयान निर्माण हेतु एलुमिनियम की अपेक्षा हल्का होने के कारण अधिक उपयोगी होगा । उस तत्व का नाम है—
(अ) टाइटेनियम (ब) ड्यूटीरियम
(स) टंग्स्टन (द) जर्मेनियम

169. अधोलिखित में कौन सबसे अधिक आपेक्षिक घनत्व की धातु है ?
(अ) पारा (ब) चाँदी
(स) सोना (द) तांबा

170. किस ताप पर फारेनहाइट और डिग्री सेन्टीग्रेट एक समान होते हैं ?
(अ) -20 अंश (ब)-30 अंश
(स) -40 अंश (द) 30 अंश

171. उस स्तनपायी का नाम बताइये जो पानी में रहता है ?
(अ) ह्वेल (ब) मगर
(स) बत्तख (द) कीवी

172. वायुमण्डल में आक्सीजन का लगभग कितना प्रतिशत होता है ?
(अ) 20 प्रतिशत (ब) 21 प्रतिशत
(स) 35 प्रतिशत (द) 67 प्रतिशत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

173. अधोलिखित पदार्थों में कौन सा पदार्थ मशीनों के लुब्रीकेटिंग ईंधन के रूप में प्रयोग में लाया जाता है ?
(अ) ग्रेफाइट (ब) कापर
(स) सल्फर (द) उपरोक्त सभी

174. अधोलिखित तत्वों में किसकी कमी से मनुष्य में बौनापन होता है ?
(अ) कैल्शियम (ब) आयोडीन
(स) पोटेशियम (द) आयरन

175. अधोलिखित में किस माध्यम में ध्वनि की गति सबसे तेज होती है ?
(अ) वायु (ब) लोहा
(स) पानी (द) कार्बन डाई सल्फाइड

176. अधोलिखित में कौन सा पदार्थ रेफ्रीजरेशन में प्रयुक्त होता है ?
(अ) बोरेक्स (ब) निऑन
(स) फ्रेआन (द) वाईनोरिक्स

177. अधोलिखित में कौन सा पदार्थ विद्युतरोधी है ?
(अ) अभ्रक (ब) लोहा
(स) सोना (द) लकड़ी

178. दूध में पाये जाने वाली प्रोटीन—
(अ) हिमीन (ब) केसीन
(स) लाइपो प्रोटीन (द) फास्फो प्रोटीन

179. अधोलिखित में मर्करी लैम्प की क्या विशेषता होती है ?
(अ) इसमें तन्तु होते है
(ब) इसमें हिलियम गैस भरी होती है
(स) इसमें नियान गैस भरी होती है
(द) इसमें ठोस तन्तु नहीं होते है

180. पौधों में वृद्धि हार्मोन के रूप में कौन सा पदार्थ पाया जाता है ?
(अ) सुक्रोज (ब) लैक्टोज
(स) आक्सिन (द) सेलुलोज

181. मसूढ़ों से रक्त का गिरना 'विटामिन C' की कमी से होता है, इसके लिये रोगी को अधोलिखित में किस चीज का अधिक मात्रा में सेवन करना चाहिये ?
(अ) दूध (ब) घी
(स) टमाटर का रस (द) हरी सब्जी

182. अधोलिखित में किस पदार्थ से संयुक्त होकर आक्सीजन शरीर के विभिन्न ऊतकों तक प्रवाहित होती हैं ?
(अ) हिमीन (ब) हीमोग्लोबिन
(स) सैलाइवा (द) पिट्युट्रिन

183. 'एलीफैन्टिआसिस' रोग मनुष्य के शरीर के किस अंग से सम्बन्धित है ?
(अ) मष्तिष्क (ब) यकृत
(स) पैर (द) आँत

184. सूर्य से पृथ्वी तक अपार ऊष्मा का संचारण किस विधि द्वारा होता है ?
(अ) संवहन (ब) विकिरण
(स) चालन द्वारा (द) प्रसार द्वारा

185. साबुन के बुलबुलों का चमकना किस प्रकाशिक क्रिया के कारण होता है ?
(अ) व्यतिकरण (ब) विवर्तन
(स) प्रकीर्णन (द) परावर्तन

186. क्लोरोफार्म सूर्य के प्रकाश की उपस्थिति में वायु आक्सीजन से क्रिया करके एक हानिकारक गैस बनाता है जिससे जीवधारियों की मृत्यु हो जाती है। इसी लिये क्लोरोफार्म की बोतल को अंधेरे में रखा जाता है। सम्बन्धित गैस का नाम है—
(अ) फास्जीन (ब) क्लोरेट
(स) इथाइलीन (द) क्लोरल टेंडा फार्मीन

187. अधोलिखित में किस पौधे के लैटेक्स से रबड़ का उत्पादन होता है ?
(अ) युफारबिया (ब) युफारबिया ब्रासीलिएन्सिस
(स) दोनों से (द) कैलोट्रापिक्स

188. स्त्रियों में गर्भकाल अथवा सगर्भता अवधि (Gestation) लगभग 280 दिन (9 मास 9 दिन) की होती है। बताइये जन्म के समय एक औसत बच्चे का भार लगभग कितना होता है ?
(अ) 6.9 पौंड (ब) 5.5 पौंड
(स) 3.3 पौंड (द) 4.3 पौंड

189. मनुष्य के शरीर के भार का लगभग कितना प्रतिशत पानी होता है ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(अ) 50 (ब) 60 (स) 70 (द) 55

190. कार्बोहाइड्रेट का शरीर में प्रमुख कार्य ऊष्मा तथा ऊर्जा पैदा करना और आहार की मात्रा बढ़ाना है। बताइये अधोलिखित में कौन कार्बोहाइड्रेट का प्रचुर स्रोत है ?
(अ) बादाम (ब) साबूदाना
(स) पनीर (द) मार्गरीन

191. अधोलिखित में कौन सी विटामिन वसा में घुलनशील नहीं है ?
(अ) A (ब) B
(स) D (द) E (य) K

192. मनुष्य के शरीर में कैलशियम का मूलभूत कार्य अस्थियों तथा दांतों का निर्माण, हृदय तथा पेशियों की क्रिया, रक्त का स्कन्दन इत्यादि है। बताइये मनुष्य के शरीर में लोहे का मूलभूत कार्य है—
(अ) रक्त निर्माण (ब) रक्त संचरण
(स) शरीर वृद्धि (द) उपर्युक्त सभी

193. अधोलिखित में कौन सा संक्रामक रोग वायु द्वारा फैलता है ?
(अ) डिफ्थीरिया (ब) हैजा
(स) सुजाक (द) प्लेग

194. 'पीत ज्वर' एडीज एजिप्टी नामक मच्छर से संचारित होता है। 'फाइलेरिया' रोग में एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में रोग का संचारण होता है—
(अ) क्यूलेक्स मच्छरों द्वारा
(ब) वुकेरेरिया मक्खियों द्वारा
(स) पिस्सु द्वारा
(द) उपरोक्त सभी के द्वारा

195. 'गलसुआ' (Mumps) रोग वाइरस द्वारा फैलता है। बताइये 'खसरा' (Measels) तथा 'डिफ्थीरिया' रोग क्रमशः किनके द्वारा फैलता है ?
(अ) वाइरस तथा वाइरस
(ब) बैक्टीरिया तथा बैक्टीरिया
(स) वाइरस तथा बैक्टीरिया
(द) बैक्टीरिया तथा वाइरस

196. अधोलिखित रोगों में कौन जल वाहित रोग नहीं है ?
(अ) हैजा (ब) टायफायड
(स) चेचक (द) पेचिश

197. 'O' रक्त वर्ग वाला व्यक्ति 'सार्विक रक्तदाता' (Universal donor) कहलाता है। बताइये किस 'रक्त वर्ग' वाला व्यक्ति 'सार्विक आदाता' (Universal recipient) कहलाता है ?
(अ) A (ब) B
(स) ABO (द) AB

198. मनुष्य के हृदय में कितनी गुहिकाएं (प्रकोष्ठ) होती है ?
(अ) 4 (ब) 3
(स) 2 (द) 5

199. कोई व्यक्ति यदि अनजाने में बिना देखे हुए किसी गर्म वस्तु को छू लेता है तो क्षति से बचने के लिये उसका हाथ स्वतः ही दूर हट जाता है। यह क्रिया कहलाती है—
(अ) ऐच्छिक क्रिया
(ब) प्रतिवर्ती क्रिया
(स) स्पर्श क्रिया
(द) उपरोक्त में कोई नहीं

200. मानव शरीर में हड्डी के निर्माण हेतु कैल्सियम और फासफोरस अनिवार्य है। इनके लवणों के समुचित उपयोग के लिये कौन सी विटामिन आवश्यक है ?
(अ) B (ब) C
(स) D (द) E

201. अधोलिखित रोगों में कौन नेत्र से संबंधित नहीं है ?
(अ) कैटेरेक्ट (ब) ग्लोकोमा
(स) ट्रेकोमा (द) स्टाइ
(य) उपर्युक्त सभी

202. 'ट्रिपिल वैक्सीन' का अर्थ है—
(अ) 'डिफ्थीरिया' 'काली खांसी तथा 'टेटेनस' के प्रति सुरक्षा प्रदान करने वाला टीका
(ब) 'हीमोफीलिया' का उपचार करने वाला टीका
(स) मात्र डिफ्थीरिया के प्रति सुरक्षा प्रदान करने वाला टीका
(द) उपर्युक्त सभी कथन सत्य है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

203. डाक्टरी स्टैथस्कोप, जो हृदय की धड़कन सुनने के काम आता है, ध्वनि की अधोलिखित किस क्रिया पर आधारित है ?
(अ) अपवर्तन (ब) परावर्तन
(स) विवर्तन (द) अपवर्तन तथा परावर्तन

204. सूर्य के सबसे निकट तथा दूर ग्रह क्रमशः कौन है ?
(अ) बुध और प्लूटो
(ब) बृहस्पति और शुक्र
(स) मंगल और शनि
(द) प्लूटो तथा बृहस्पति

205. आक्सीजन के अलावा और कौन सी गैस हम अधिक मात्रा में सांस लेते समय ग्रहण करते हैं ?
(अ) हाइड्रोजन (ब) कार्बन डाईआक्साइड
(स) नाइट्रोजन (द) उपर्युक्त में कोई नहीं

206. 'अमीटर' और 'अल्टामीटर' का उपयोग क्रमशः निम्न नापने में होता है—
(अ) विद्युत तथा ऊँचाई
(ब) ऊँचाई तथा गहराई
(स) ताप तथा ऊष्मा
(द) दूरी तथा विद्युत

207. कृत्रिम वर्षा करवाने में किस यौगिक का प्रयोग किया जाता है ?
(अ) सिल्वर आयोडाइड
(ब) सोडियम आयोडाइड
(स) सिल्वर ब्रोमाइड
(द) एथाइल ब्रोमाइड

208. बताइये कि हरा, लाल और नीला रंग आपस में मिलाने से कौन सा रंग बनता है ?
(अ) गुलाबी (ब) काला
(स) नीला (द) सफेद

209. पन-बिजली विद्युत केन्द्र (Hydro-electric station) से विद्युत का उत्पादन अधोलिखित में जल की किस ऊर्जा का उपयोग करके किया जाता है ?
(अ) रासायनिक (ब) स्थितिज
(स) चुम्बकीय (द) ऊष्मा

210. नदियों का पानी रोकने के लिये बने बाँधों की चौड़ाई नीचे अधिक एवं ऊपर कम होती है, क्योंकि—
(अ) अधिक गहराई पर जल का दाब अधिक होता है
(ब) अधिक गहराई पर जल की मात्रा अधिक होती है
(स) अधिक गहराई पर जल का घनत्व अधिक होता है
(द) उपर्युक्त कोई नहीं

211. टेप रिकॉर्डर में ध्वनि अधोलिखित किस रूप में एकत्र की जाती है ?
(अ) विद्युत ऊर्जा
(ब) टेप पर चुम्बकीय क्षेत्र
(स) टेप पर अंकित ध्वनि तरंगों के रूप में
(द) टेप पर परवर्ती प्रतिरोध

212. धुएँ में होते है :
(अ) ऋण आवेशित कार्बन के कण
(ब) धन आवेशित कार्बन के कण
(स) कार्बन के उदासीन कण
(द) उपर्युक्त कोई नहीं

213. वह तत्व जो अन्य तत्वों से क्रिया नहीं करता अक्रिय तत्व कहलाता है। अधोलिखित में कौन तत्व अक्रिय (Inert) है ?
(अ) नियॉन (ब) सोडियम
(स) लीथियम (द) हीलियम

214. सूखा बर्फ (Dry Ice) यौगिक है :
(अ) ठोस सल्फर डाईआक्साइड
(ब) ठोस कार्बन डाईआक्साइड
(स) ठोस नाइट्रोज ट्राईआक्साइड
(द) ठोस सोडियम टेट्राआक्साइड

215. पॉलिश किये हुए चावल में अधोलिखित में कौन सा विटामिन नष्ट हो जाता है ?
(अ) B (ब) C (स) B_{12} (द) E

216. सोते समय मनुष्य का रक्त दाब यथावत रहता है। वृद्धावस्था में रक्त का दाब बढ़ता है और धमनियों का लचीलापन—
(अ) घटता है (ब) बढ़ता है
(स) अपरिवर्तित रहता है।
(द) घट या बढ़ सकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

217. अधोलिखित में कौन मनुष्य के शरीर का तापक्रम स्थिर रखने में सहायता करती हैं ?
(अ) प्लीहा (ब) स्वेद ग्रन्थियाँ
(स) यकृत (द) पिट्यूटरी ग्रन्थि

218. सूर्य से आने वाली हानिकारक अल्ट्रावायलेट किरणों को किस गैस की सतह बीच में ही अवशोषित कर लेती है और पृथ्वी पर नहीं आने देती ?
(अ) ओजोन (ब) हीलियम
(स) हाइड्रोजन (द) हाइड्रोजन पराक्साइड

219. विद्युत आपूति में कौन आर्थिक रूप से लाभदायक है ?
(अ) उच्च विभव तथा उच्च धारा
(ब) उच्च विभव तथा निम्न धारा
(स) निम्न विभव तथा उच्च धारा
(द) निम्न विभव तथा निम्न धारा

220. 'प्लाई वुड' सागवन की लकड़ी से बनता है। बताइये कागज उद्योग में किस वृक्ष की लकड़ी से लुग्दी तैयार की जाती है ?
(अ) चीढ़ (ब) आम
(स) बबूल (द) सागवान

221. रिंगवर्म या दाद की बीमारी होती है—
(अ) फफूंदी द्वारा (ब) वाइरस द्वारा
(स) कृमि द्वारा (द) बैक्टीरिया द्वारा

222. बिजली की इस्तरी (Electric Iron) में हीटिंग एलिमेंट अधोलिखित में किस पदार्थ का बना होता है—
(अ) टंग्स्टन (ब) नाइलोन
(स) नाइक्रोम (द) थिरफ्रीक्सीन

223. परिष्कृत यूरेनियम में यूरेनियम 235 की प्रतिशत मात्रा होती है—
(अ) 2.34% (ब) 3.02%
(स) 4.28% (द) 6.39%

224. पीतल (Brass) एक मिश्र धातु है जिसमें उपस्थित होता है—
(अ) ताँबा तथा अल्युमिनियम
(ब) ताँबा तथा निकिल
(स) ताँबा तथा जस्ता
(द) ताँबा, जस्ता तथा निकिल

225. गहरे समुद्र में गोताखोरो के सांस लेने के लिये आक्सीजन तथा हीलियम का मिश्रण प्रयुक्त किया जाता है। बताइये कृत्रिम-श्वसन हेतु किस गैस का उपयोग किया जाता है ?
(अ) आक्सीजन तथा नाइट्रोजन का मिश्रण
(ब) आक्सीजन तथा हाइड्रोजन का मिश्रण
(स) आक्सीजन
(द) आक्सीजन तथा ओजोन का मिश्रण

226. समुद्रतट और पर्वत की जलवायु अक्सर ज्यादा स्वास्थ्यप्रद होती है, क्योंकि—
(अ) यहाँ की जलवायु में ओजोन गैस अधिक मिलती है
(ब) यहाँ ओजोन गैस कम मिलती है
(स) यहाँ वायु में हाइड्रोजन गैस अधिक होती है
(द) यहाँ वायु में हाइड्रोजन गैस कम होती है

227 मनुष्य में मुटापा होता है ?
(अ) संयोजी ऊतक की वृद्धि से
(ब) वसीय ऊतक की वृद्धि से
(स) पेशीय ऊतक की वृद्धि से
(द) ग्रंथिल ऊतक की वृद्धि से

228. बताइये वेल्डिंग करने के लिए एसीटिलीन के साथ कौन सी गैस प्रयुक्त होती है ?
(अ) नाइट्रोजन (ब) आक्सीजन
(स) सल्फर डाईआक्साइड (द) क्लोरीन

229 'पेनिसिलिन' फंजाई से प्राप्त होती है। बताइये 'कुनैन' किस पौधे से प्राप्त होती है ?
(अ) सिनकोना (ब) यूलथिप्टस
(स) सदाबहार (द) जीरोफाइट

230. रेगिस्तान की वनस्पति को जीरोफाइटस कहते हैं। बताइये पानी में उगने वाली वनस्पति को क्या कहते हैं ?
(अ) हिमोट्रोफिन (ब) हाइड्रोफाइट
(स) थैलोफाइट (द) मीजोफाइट

231. अधोलिखित में से किसके द्वारा पेट्रोल से लगी अग्नि सरलता से बुझायी जा सकती है ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(अ) कार्बन डाई आक्साइड
(ब) कार्बन मोनो आक्साइड
(स) फास्फोरस पेण्टाआक्साइड
(द) बेकिंग सोडा

232. पौधे नाइट्रोजन को किस रूप में शोषित करते हैं ?
(अ) नाइट्रेट के कण के रूप में
(ब) गैस के रूप में
(स) नाइट्रोजन टैट्राआक्साइड के रूप में
(द) नाइट्रोजन डाई आक्साइड के रूप में

233. अधोलिखित में 'कम्प्यूटर गणना' की ईकाई—
(अ) बिट्स (ब) वोल्ट
(स) फैदम (द) जूल

234. 'आभूषणों' के निर्माण में अधोलिखित में किस धातु को सोने के साथ मिश्रित किया जाता है ?
(अ) चाँदी (ब) ताँबा
(स) जस्ता (द) एस्बस्टस

235. 'कोयला' वर्तमान काल में विश्व का सबसे बड़ा ऊर्जा स्रोत है । बतलाइये अधोलिखित में किस तत्व के सर्वाधिक यौगिक है ?
(अ) कार्बन (ब) नाइट्रोजन
(स) हाइड्रोजन (द) आक्सीजन

236. मनुष्य के शरीर में हृदय के स्पंदन की सामान्य गति—
(अ) 65 – 80 प्रति मिनट
(ब) 60 – 75 प्रति मिनट
(स) 65 – 75 प्रति मिनट
(द) 80 – 85 प्रति मिनट

237. सामान्य वयस्क व्यक्ति के शरीर में 4-5 लीटर रक्त रहता है । यह मात्रा उसके शरीर के वजन की लगभग कितने प्रतिशत होती है ?
(अ) 27 (ब) 20 (स) 12 (द) 7

238. 'मछली' प्रोटीन की अच्छी स्रोत होती है । बताइये सूर्य का प्रकाश अधोलिखित में किस विटामिन का अच्छा स्रोत है ?
(अ) D (ब) C (स) E (द) B

239. अधोलिखित में किस अंग द्वारा शरीर की ऊष्मा की हानि अत्यधिक होती है ?
(अ) यकृत (ब) त्वचा
(स) फेफड़े (द) उपर्युक्त सभी के द्वारा

240. अधोलिखित में कौन प्राथमिक खाद्य पदार्थ नहीं है ?
(अ) वसा (ब) कार्बोहाइड्रेट
(स) प्रोटीन (द) पानी
(य) हारमोन

241. यदि बर्फ में थोड़ा सादा नमक मिलाया जाय तो बर्फ का तापक्रम—
(अ) O°c ही रहेगा (ब) O°c से नीचे गिर जायेगा (स) –4°c हो जायेगा
(द) 4°c हो जायेगा

242. ओस अधिक शीघ्रतापूर्वक बनती है—
(अ) बादलों वाली रात में
(ब) बिना बादलों की रात में
(स) शाम के समय
(द) सूर्योदय के समय

243. समुद्र के जल से नमक किस विधि द्वारा पृथक किया जाता है ?
(अ) वाष्पन (ब) संघनन
(स) आसवन (द) उर्ध्वपातन

244. एक स्वस्थ्य मनुष्य का रुधिर कैसा होना चाहिये ?
(अ) क्षारीय (ब) अम्लीय
(स) अम्लीय-उदासीन (द) उदासीन

245. निद्रा अवस्था में हमारी नाड़ी की गति कम हो जाती है । बताइये भोजन ग्रहण करने के बाद हमें सुस्ती क्यों आती है ?
(अ) नाड़ी की गति अधिक हो जाने के कारण
(ब) रक्त दाब बढ़ जाने के कारण
(स) रक्त दाब कम हो जाने के कारण
(द) अग्नाशय के सुस्त पड़ जाने के कारण

246. तेलों के हाइड्रोजनीकरण में 'निकिल' का उत्प्रेरक के रूप में प्रयोग होता है । बताइये तेल शोधक कारखानों में से प्रदूषण के रूप में निम्न में कौन सी गैस बाहर निकलती है—
(अ) मीथेन (ब) नाइट्रस ऑक्साइड

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(स) कार्बन मोनो ऑक्साइड
(द) सल्फर डाई ऑक्साइड

247. पृथ्वी पर यदि किसी व्यक्ति का भार 100 किलोग्राम है तो बाहरी अंतरिक्ष में उसका भार कितना होगा ?
(अ) शून्य (ब) 100 किलो ग्राम
(स) 25 किलो ग्राम (द) 150 किलो ग्राम

248. अधोलिखित रंगों में से कौन सा रंग इंद्रधनुष में नहीं दिखाई पड़ता ?
(अ) पीला (ब) काला
(स) लाल (द) हरा

249. घड़ी में पेण्डुलम के दोलन की अवधि निर्भर करती है—
(अ) पेण्डुलम के भार पर
(ब) पेण्डुलम के आकार पर
(स) पेण्डुलम की लम्बाई पर
(द) पेण्डुलम के स्थान पर

250. यदि दूध में से क्रीम निकाल ली जाय तो बचे हुये दूध का घनत्व —
(अ) पहले के समान रहेगा
(ब) पहले की अपेक्षा बढ़ जायगा
(स) पहले की अपेक्षा कम हो जायगा
(द) दूध में पानी की मिलावट पर निर्भर करेगा

251. 'केल्विन' ताप की ईकाई है। बताइये 'न्यूटन' अधोलिखित में किसकी इकाई है ?
(अ) कार्य (ब) विद्युत प्रतिरोध
(स) शक्ति (द) ध्वनि की गति

252. डीजल प्रयुक्त होने वाले इन्जनों में प्रज्वलन किससे होता है ?
(अ) कम्प्रेशर से (ब) कार्बुरेटर से
(स) स्पार्क प्लग से (द) स्टार्टर से

253. अधोलिखित में संश्लेषित रबड़ बनाने में किसका उपयोग होता है ?
(अ) कार्बन (ब) सल्फर
(स) नाइट्रोजन (द) टाइटेनियम

254. दाहक सोडे का रासायनिक नाम सोडियम हाइड्रोक्साइड है। बताइये कपड़े धोने वाले सोडे का रासायनिक नाम क्या है—
(अ) कैलशियम क्लोराइड
(ब) सोडियम क्लोराइड
(स) कैलशियम कार्बोनेट
(द) सोडियम कार्बोनेट

255. मनुष्य को जब पसीना अधिक आता है तो उसे अधोलिखित में किस चीज के अधिक सेवन की सलाह दी जाती है ?
(अ) नमक (ब) हरी सब्जी
(स) टमाटर (द) कैल्शियम

256. जटिल कार्बनिक यौगिकों का एन्जाइम की उत्प्रेरक प्रक्रिया द्वारा धीमी गति से सरल यौगिकों में अपघटित होने की प्रक्रिया को किण्डवन कहते है। अधोलिखित में कौन सी घटना किण्डवन की उदाहरण है ?
(अ) दूध का फटना (ब) दूध का उबलना
(स) दूध से दही बनना (द) बता पाना संभव नहीं
(य) उपर्युक्त सभी

257. अधोलिखित में कौन सा कथन सत्य है ?
(अ) चन्द्रमा में अपना प्रकाश नहीं होता है
(ब) बृहस्पति सबसे बड़ा तथा बुध सबसे छोटा ग्रह है
(स) शुक्र सबसे अधिक चमकीला ग्रह है
(द) सेन्टोरी अल्फा पृथ्वी से सबसे नजदीक तारा है
(य) सूर्य का व्यास 8,66,300 मील है
(र) उपर्युक्त सभी कथन सत्य है

258. जब पृथ्वी की धुरी सूर्य के लगभग समानान्तर रहती है तब सूर्य विषुवत रेखा पर लम्बवत् रहता है। यह स्थिति समदिवा रात्रि (Equinox) कहलाती है। यह स्थिति किस तारीख को होती है ?
(अ) 20 नवम्बर (ब) 21 मार्च
(स) 21 जून (द) 23 सितम्बर

259. दो खुली ट्रकों में एक समान बोझा लदा हुआ है। यदि पहले में लकड़ी के लट्ठे और दूसरे में लोहे की छड़ें हैं तो उनमें से कौन अधिक संतुलित है ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(अ) पहली (ब) दूसरी
(स) दोनों समान रूप से संतुलित है
(द) बता पाना संभव नहीं

260. अधोलिखित में कौन सा कथन असत्य है ?
(अ) भाप इंजन में ऊष्मा ऊर्जा का रूपान्तर यांत्रिक ऊर्जा में होता है
(ब) इंजन में अंतर्दहन रासायनिक ऊर्जा का रूपान्तर यांत्रिक ऊर्जा में होता है
(स) विद्युत मोटर विद्युत ऊर्जा को यांत्रिक ऊर्जा में रूपान्तरित करता है
(द) माइक्रोफोन ध्वनि ऊर्जा को यांत्रिक ऊर्जा में रूपान्तरित करता है
(य) लाउडस्पीकर यांत्रिक ऊर्जा को ध्वनि ऊर्जा में रूपान्तरित करता है

261. वर्षा की बूंदे गोल क्यों होती हैं ?
(अ) अपनी प्रत्यास्थता के कारण
(ब) स्थानता के कारण
(स) पृष्ठ तनाव के कारण
(द) उपरोक्त में किसी के कारण नहीं

262. परम शून्य (Absolute zero) क्या है ?
(अ) O°E (ब) O°K
(स) O°C (द) O°X

263. ठोस, द्रव तथा गैस को गर्म करने पर सबसे अधिक प्रसार किसमें होता है ?
(अ) गैस में (ब) ठोस में
(स) द्रव में (द) तीनों में समान

264. अधोलिखित में किस विधि द्वारा सूर्य की ऊष्मा पृथ्वी तक आती है ?
(अ) परिवाहन (ब) विकिरण
(स) नाभकीय संलग्न (द) संवहन

265. अधोलिखित में किसमें अवतल दर्पण का प्रयोग नहीं होता है ?
(अ) मोटरकार की हेड लाइटों में
(ब) सोलर कुकर में
(स) माइक्रोस्कोप में
(द) हजामती दर्पण में

266. अधोलिखित कार्यों में यकृत क्या कार्य नहीं करता ?
(अ) यह ग्लूकोज को ग्लाइकोजन में बदलने का कार्य करता है
(ब) यह शरीर से यूरिया और यूरिक अम्ल जैसे वर्ज्य पदार्थों को शरीर से बाहर निकालता है
(स) यह वाइरस उत्पन्न करता है जो भोजन पचने में मदद करता है
(द) यह रक्त में आवश्कता से अधिक जल को बाहर निकाल कर रक्त की रचना स्थिर करने में सहायक होता है

267. अधोलिखित में कौन कथन सत्य है ?
(अ) हमारे भोजन में प्रोटीन का पाचन पेप्सीन नामक एन्जाइम द्वारा होता हैं
(ब) हमारे भोजन से वसा का पाचन लाइपेज नामक एन्जाइम द्वारा होता है
(स) मनुष्य की लार में विलाई नामक एन्जाइम स्टार्च पर क्रिया करता है
(द) मनुष्य में नाइट्रोजन वाला मुख्य वर्ज्य पदार्थ यूरिया वृक्क में बनता है

268. अधोलिखित में किसके कुपोषण के कारण बालकों में "क्वाशरकोर' नामक रोग हो जाता है ?
(अ) विटामिन (ब) प्रोटीन
(स) कार्बोहाइड्रेट (द) वसा

269. अस्पतालों में किस मिश्रण के साथ स्वस्थ मनुष्य का रक्त ब्लड बैंक में सुरक्षित रखा जाता है ?
(अ) सोडियम नाइट्रेट और डेक्सट्रेट
(ब) पोटेशियम क्लोराइड और जिवेरलीन
(स) कैल्शियम टेट्राक्लोराइड और सोडियम
(द) आक्सीजन और हैपीब्रिक्स

270. शिशु के यौन (Sex) का निर्धारण होता है—
(अ) उर्वरण काल में पिता के शुक्राणु द्वारा
(ब) उर्वरण काल में माता के शुक्राणु द्वारा
(स) माता व पिता के शुक्राणु द्वारा
(द) यह अभी रहस्य के गर्भ में है

271. हमारे शरीर में स्टार्च का किसमें परिवर्तन होता है ?
(अ) कार्बोहाइड्रेट (ब) वसा
(स) लवण (द) ग्लूकोज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

272. अधोलिखित में कौन सा कथन सत्य नहीं है ?
(अ) शुक्र पृथ्वी का सबसे निकट का ग्रह है
(ब) रोहिणी-I भारतीय उपग्रह-वाहन द्वारा छोड़ा गया प्रथम कृत्रिम उपग्रह था
(स) सौरमंडल का द्वितीय सबसे बड़ा ग्रह शनि है।
(द) चन्द्रमा सूर्य का उपग्रह है। इसका अपना प्रकाश नहीं है

273. 'ग्रीनस' श्रेणी के कृत्रिम अंतरिक्ष उपग्रहों का सम्बन्ध शुक्र ग्रह पर अन्वेषण से है। बताइये 'वाइकिंग' तथा 'वोयेजर' श्रेणी के अंतरिक्ष उपग्रहों का सम्बन्ध अधोलिखित में क्रमशः किसकी खोजों से है ?
(अ) मंगल तथा वृहस्पति
(ब) शनि तथा मंगल
(स) मंगल तथा शनि
(द) शनि तथा चन्द्रमा

274. सुदूर संवेदन (Remote Sensing) दीर्घ दूरी से वस्तुओं के गुण धर्म का अनुसंधान करने वाली एक प्रक्रिया है। बताइये हमारे देश में सुदूर संवेदन एजेंसी (National Remote Sensing Agency) कहाँ स्थित है ?
(अ) बंगलौर (ब) गोआ
(स) त्रिवेन्द्रम (द) सिकन्दराबाद

275. भारतवर्ष का प्रथम प्रयोगिक संचार उपग्रह है—
(अ) एपल (ब) इन्सैट I-A
(स) भास्कर-2 (द) इन्सैट I-B

276. चन्द्रमा के समतल तथा प्रकाशहीन भाग को 'सी ऑव ट्रैंक्विलिटी' के नाम से जाना जाता है। 'ग्रेविटी हिल' का अर्थ है—
(अ) वह बिन्दु जहाँ उपग्रह पृथ्वी की परिक्रमा करते समय पृथ्वी से सबसे अधिक निकट होता है
(ब) वह बिन्दु जहाँ गुरुत्वाकर्षण समाप्त हो जाता है
(स) वह स्थान जहाँ पृथ्वी के गुरुत्व से चन्द्रमा का गुरुत्व अधिक हो जाता है
(द) वह स्थान जहाँ पृथ्वी का गुरुत्व सर्वाधिक रहता है

277. दिन-रात्रि तथा ऋतु परिवर्तन का होना क्रमशः पृथ्वी की किस गति पर निर्भर करता है ?
(अ) मासिक तथा वार्षिक
(ब) वार्षिक तथा मासिक
(स) दैनिक तथा वार्षिक
(द) वार्षिक तथा वार्षिक

278. कृत्रिम उपग्रह से जब हम पृथ्वी की परिक्रमा करते है तो हमारा—
(अ) द्रव्यमान बढ़ जाता है तथा भार स्थिर रहता है
(ब) भार शून्य हो जाता है तथा द्रव्यमान स्थिर रहता है
(स) भार बढ़ जाता है तथा द्रव्यमान घट जाता है
(द) द्रव्यमान घट जाता है तथा भार शून्य हो जाता है

279. वायुयान या अंतरिक्षयान की गति मापन की इकाई 'मैक' होती है। अगर हम कहें कि लूना-11 की गति मैक-10 थी, तो इसका अर्थ होगा—
(अ) प्रकाश की गति से 10 गुना अधिक गति
(ब) ध्वनि की गति से 10 गुना अधिक गति
(स) 10 000 मील प्रति घंटा गति
(द) 10 प्रकाश वर्ष की गति

280. वायुयान से यात्रा करने वाले यात्री अपनी कलम की स्याही निकाल देते है, क्यों कि ऊंचाई पर —
(अ) वायुमण्डल का दबाव कलम के भीतर की वायु के दबाव से अधिक हो जाता है
(ब) कलम के भीतर की वायु का दबाव वायुमण्डल के दबाव से अधिक हो जाता है
(स) कलम के भीतर की वायु तथा वायु मण्डल का दबाव समान रहते है
(द) वायु बहुत तीव्र गति से चलती है

281. अधोलिखित में किस ग्रंथि के अधिक क्रियाशील हो जाने के कारण डरे हुये व्यक्ति का चेहरा पीला पड़ जाता है ?
(अ) थायमिस (ब) एड्रीनल
(स) पिट्यूटरी (द) पैराथायरायड

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

282. हवा की अपेक्षा द्रवों में ध्वनि का तरंग वेग अधिक होता है, क्योंकि—
(अ) द्रव सघन होते है
(ब) हवा सघन होती है
(स) द्रव का श्यानांक अधिक होता है
(द) द्रव विरल होते है

283. अधोलिखित में कौन सा कथन सत्य है ?
(अ) जल का घनत्व गर्म करने पर नहीं बढ़ता है
(ब) रक्त का जमना एक रासायनिक परिवर्तन है
(स) शरीर की सबसे बड़ी ग्रंथि यकृत है
(द) फ्यूज तार का गलनांक निम्न परन्तु प्रतिरोध शक्ति अधिक होती है
(य) जल में चीनी का मिलाया जाना भौतिक परिवर्तन है
(र) जंग लगना एक रासायनिक परिवर्तन है
(ल) उपर्युक्त सभी

284. मनुष्य ने सर्वप्रथम किस धातु का प्रयोग किया था ?
(अ) लोहा (ब) ताँबा
(स) जस्ता (द) अल्यूमिनियम

285. लिटमस पेपर अम्लीय तथा क्षारीय घोलों में डालने पर क्रमशः किस रंग का हो जाता है ?
(अ) नीला व लाल
(ब) लाल व नीला
(स) पीला व लाल
(द) लाल व काला

286. सबसे कम परमाणुभार वाला तत्व हीलियम है। बताइये सर्वाधिक घनत्व वाला तत्व कौन है ?
(अ) इरीडियम (ब) टाइटेनियम
(स) आर्गन (द) जरमेनियम

287. अशुद्धियों के कारण द्रव का क्वथनांक बढ़ जाता है और पदार्थ का हिमांक—
(अ) भी बढ़ जाता है
(ब) कम हो जाता है
(स) समान रहता है
(द) परिस्थितियों के अनुसार घट या बढ़ सकता है

288. 'सेक्स्टेन्ट' का उपयोग सूर्य तथा अन्य ग्रहों की ऊँचाई जानने के लिये किया जाता है। बताइये अधोलिखित में किस यंत्र के माध्यम से वायुयान की गति का निर्धारण होता है ?
(अ) जाइलोफोन (ब) टैकोमीटर
(स) स्ट्रोबोस्कोप (द) काइमोग्राफ

289. यंत्रों के उपयोग से सम्बन्धित अधोलिखित कथनों में कौन सा कथन असत्य है ?
(अ) फैदोमीटर से समुद्र की गहराई मापी जाती है
(ब) क्रेस्कोग्राफ से पौधों की वृद्धि मापी जाती है
(स) पाइरोमीटर से अत्यन्त उच्च ताप मापा जाता है
(द) ओडोमीटर से ट्रेन द्वारा तय की गयी दूरी पता लगती है
(य) हाइग्रोमीटर से वायु की आर्द्रता जानी जाती है
(र) हाइड्रोफोन से जल के अन्दर का ताप मापा जाता है
(ल) ऑनेमोमीटर से वायु का वेग मापा जाता है

290. मानव जाति के मानसिक और शारीरिक स्थिति के अध्ययन से सम्बन्धित विज्ञान है—
(अ) एरोडाइनेमिक्स (ब) एथ्नोलॉजी
(स) जीनिएलॉजी (द) ऐन्थ्रोपोलॉजी

291. नीला, लाल और हरा वस्तुओं का मूल रंग है। अगर नीला और हरा रंग मिला दिया जाय तो हमें आसमानी नीला रंग प्राप्त होगा। बताइये उपर्युक्त तीनो मूल रंगों को समान अनुपात में मिलाने पर कौन सा रंग प्राप्त होगा ?
(अ) काला (ब) सफेद
(स) बैंगिनी (द) गाढ़ा गुलाबी

292. 'क्रायोजेनिक्स' की युक्ति का अधोलिखित में किसमें प्रयोग नहीं होता है ?
(अ) रेफ्रिजेरेशन (ब) इलेक्ट्रॉनिक्स
(स) अन्तरिक्ष अनुसंधान (द) सेक्टॉमी

293. हमारे शरीर में पचे भोजन का अवशोषण किस अंग द्वारा होता है ?
(अ) अग्नाशय (ब) वृक्क
(स) छोटी आँत (द) यकृत

294. वृक्षों की आयु की गणना उसकी आतंरिक संरचना में विद्यमान वलयों की संख्या पर निर्भर करती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। बताइये अधोलिखित में किस पौधे से तैयार औषधि 'रिजपाईन' का प्रयोग रक्तचाप बढ़ाने के लिये किया जाता है ?

(अ) प्रोजेस्टेरोन (ब) सर्पेन्टिना

(स) इल्यूनिरीश्रिक्स (द) वाइजोबा एम्ली

295. 'डर्माटोविया' नामक रोग बॉट फलाई के सहयोग से सोरोफोरा मच्छर के माध्यम से मनुष्य के शरीर में फैलता है। बताइये यह रोग शरीर के किस अंग से सम्बन्धित होता है ?

(अ) अग्नाशय (ब) मस्तिष्क

(स) त्वचा (द) वृक्क

296. अधोलिखित में कौन अन्तर्राष्ट्रीय यूनिट है ?

(अ) M. K. S. (ब) F. P. S

(स) C. G. S (द) उपर्युक्त सभी

297. फोटोग्राफर अपने डार्क रूम में फोटो प्रिंटिंग के समय किस रंग की रोशनी का प्रयोग करते है ?

(अ) हरी (ब) लाल

(स) नीली (द) बैंगनी

298. मनुष्य के नेत्रों का लैंस किस प्रकृति का होता है ?

(अ) समतल उत्तल (ब) अवतल

(स) उत्तल (द) समतल अवतल

299. मानव शरीर में सबसे लम्बी और भारी हड्डी होती है—

(अ) टीबिया (ब) फीमर

(स) ह्यूमरस (द) उपर्युक्त में कोई नहीं

300. 'शर्करा' एक प्रकार की—

(अ) कार्बोहाइड्रेट है

(ब) स्टार्च है

(स) एक्लॉयिड है

(द) कार्बोहाइड्रेट तथा स्टार्च का मिश्रित रूप है

उत्तरमाला

159 स, 160 स, 161 अ, 162 अ, 163 ब, 164 ब, 165 ब, 166 अ, 167 स, 168अ, 169 स, 170 स, 171 अ, 172 ब, 173 अ, 174 ब, 175 ब, 176 स, 177 अ, 178 ब, 179 द, 180 स, 181 स, 182 ब, 183 स, 184 ब, 185 अ, 186 अ, 187ब, 188 ब, 189 स, 190 ब, 191 ब, 192 अ, 193 अ, 194 अ, 195 स, 196 स, 197 द, 198 अ, 199 ब, 200 स, 201 य, 202 अ, 203 द, 204 अ, 205 स, 206 अ, 207 अ, 208 द, 209 ब, 210 ब, 211 ब, 212 अ, 213 अ, 214 ब, 215 स, 216 स, 217 ब, 218 अ, 219 ब, 220 द, 221 अ, 222 स, 223 अ, 224 स, 225 स, 226 अ, 227 ब, 228 ब, 229 अ, 230 ब, 231 अ, 232 अ, 233 अ, 234 ब, 235 अ, 236 स, 237 द, 238 अ, 239 ब, 240 य, 241 ब, 242 ब, 243 अ, 244 अ, 245 स, 246 द, 247 अ, 248 ब, 249 स, 250 ब, 251 स, 252 अ, 253 ब, 254 द, 255अ, 256 अतथाब, 257 र, 258द, 259ब, 260 य, 261 स, 262 ब, 263 अ, 264 ब, 265 स, 266 द, 267 द, 268 ब, 269 अ, 270 स, 271 अ, 272 द, 273 अ, 274 द, 275 अ, 276 स, 277 स, 278 ब, 279 ब, 280 ब, 281 ब, 282 अ, 283 य, 284 ब, 285 ब, 286 अ, 287 ब, 288 ब, 289 र, 290 द, 291 ब, 292 द, 293 स, 294 ब, 295 स, 296 अ, 297 अ, 298 द, 299 ब, 300 अ, ।

पी० सी० एस० तथा अन्य प्रतियोगितात्मक परीक्षाओं के लिये उपयोगी तथा महत्वपूर्ण पुस्तक

प्राचीन भारत का इतिहास

(प्रारम्भ से १२ वीं शती तक)

अपने नवीन संशोधित तथा परिवर्द्धित संस्करण में

लेखक : प्रो० के० सी० श्रीवास्तव

भूमिका

प्रो० ज़े० एस० नेगी

(इलाहाबाद विश्वविद्यालय)

प्रकाशक

यूनाइटेड बुक डिपो

यूनिवर्सिटी रोड, इलाहाबाद-२११००२

(पुस्तक वी० पी० पी० से मंगाने हेतु उपर्युक्त पते पर रु० १०/ अग्रिम धनादेश (Money order) के साथ भेजें)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रीय समीक्षा

■ भारत-चीन वार्ता : वही ढाक के तीन पात

■ दिल्ली चुनाव : इंका का विश्वास लौटा !

■ भारत-नेपाल संयुक्त आयोग

■ महाराष्ट्र में नेता परिवर्तन

■ भारत-चीन वार्ता : वही ढाक के तीन पात

29 जनवरी से 2 फरवरी तक भारत और चीन में अधिकारी स्तर की वार्ता बिना किसी ठोस परिणाम के समाप्त हो गयी। बीजिंग में हुई इस बातचीत में भारतीय दल का नेतृत्व विदेश मंत्रालय में सचिव श्री के. एस. वाजपेयी तथा चीनी दल का नेतृत्व चीनी विदेश मंत्रालय में सलाहकार श्री फू हाओ ने किया। श्री वाजपेयी बीजिंग में भारत के राजदूत भी रह चुके हैं। उन्होंने ही गत वर्ष मई महीने में नयी दिल्ली में हुई दूसरे दौर की वार्ता में भी अपने देश का प्रतिनिधित्व किया था।

सीमा सम्बन्धी विवाद पर भारत और चीन में मतभेद ज्यों का त्यों बना हुआ है। 1962 के युद्ध में चीन द्वारा जीती गयी अपनी लगभग 30 हजार वर्गमील भूमि पर अपना कानूनी दावा छोड़ने के लिए भारत तैयार नहीं है जबकि चीन चाहता है कि पूर्वी क्षेत्र में मैकमोहन रेखा को मान्यता दी जाये और लद्दाख में अक्साई चिन पर चीन के प्रभुत्व को भारत स्वीकार कर ले। जाहिर है कि भारत इस स्थिति को स्वीकार नहीं कर सकता। चीन की सरकारी समाचार समिति ने इतना अवश्य कहा है कि दोनो पक्षों ने 'मैत्रीपूर्ण वातावरण' में बातचीत की और एक दूसरे के दृष्टिकोण को ज्यादा अच्छी तरह समझा है। नयी दिल्ला में पुनः बातचीत होने वाली है जिसके लिए तिथि बाद में निश्चित की जायेगी।

जहां तक सीमा-विवाद का संबंध है, दो दौर की वार्ताओं के बावजूद चीन के दृष्टिकोण में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है और लगता भी नहीं है कि होगा। इसके विपरीत भारत का दृष्टिकोण कुछ नरम अवश्य हुआ है और वह चीना नीति के अनुसार परस्पर सांस्कृतिक, व्यापारिक तथा आर्थिक सहयोग की ओर कदम भी बढ़ा रहा है। कुछ राजनीतिक प्रेक्षकों का तो यहाँ तक कहना है कि चीन की दिलचस्पी सीमा-विवाद सुलझाने में नहीं वरन् भारत से निकटता हासिल कर दक्षिण तथा दक्षिण-पश्चिम एशियाई देशों में अपनी छवि सुधारने और गुटनिरपेक्ष आंदोलन में शामिल होने में है। चीन की चाल यह भी है कि भारत से दोस्ती का हाथ बढ़ाकर वह रूस से उसके सम्बन्धों में दरार पैदा कर दे। पिछले अनेक वर्षों से चीन भी अपने आपको एक महाशक्ति मान कर चल

प्रस्तुति : बच्चन सिंह, 'दैनिक जागरण', वाराणसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहा है। परमाणु बम तथा अंतर्महाद्वीपीय प्रक्षेपास्त्रों का निर्माण उसने महाशक्ति का दर्जा प्राप्त करने के उद्देश्य से ही किया है। एशिया में अपने प्रभाव क्षेत्र के विस्तार में वह सोवियत संघ को अपना मात्र प्रतिद्वंद्वी मानता है। इस स्थिति को देखते हुए चीनी नेता यदि भारत को रूस से अलग करने की कोशिश में हों तो कोई अस्वाभाविक नहीं है। अमेरिका द्वारा चीन की ओर दोस्ती का हाथ बढ़ाये जाने के पीछे भी यही उद्देश्य निहित है। अमेरिका कभी भी स्वीकार नहीं कर सकता कि रूस की शक्ति और प्रभाव में इस हद तक विस्तार हो जाये कि हिंदमहासागर तथा फारस की खाड़ी से होकर गुजरने वाले तेलवाही जहाजों को वह रोक सके। पाकिस्तान को अमेरिकी हथियारों की सप्लाई की पृष्ठभूमि भी यही है। पाकिस्तान, चीन और अमेरिकी त्रिकोण का उद्देश्य एक ओर जहाँ सोवियत संघ के प्रभाव को रोकना है वहीं भारत और सोवियत-संघ की दोस्ती में दरार डालना है। यह बात लगभग स्पष्ट हो चुकी है।

सीमा विवाद को हल करने के लिए चीन कितना उत्सुक है इसका अन्दाज इसी बात से लगाया जा सकता है कि उसने अनेक बार यह सुझाव दिया था कि सीमा-विवाद को भुलाकर आर्थिक, राजनयिक और सांस्कृतिक सम्बन्ध बढ़ाये जायें। मई, 1982 में जब चीनी दल भारत आया था तो उसके साथ चीनी व्यापारी भी आये थे और उन्होंने भारतीय व्यापारियों तथा उद्योगपतियों से बातचीत भी की थी। बहरहाल अब भारत और चीन सांस्कृतिक तथा व्यापारिक सम्बन्धों की दिशा में अग्रसर हुए हैं, इसके बावजूद कि सीमा विवाद हल होने के आसार फिलहाल देर-दूर तक भी दिखाई नहीं पड़ते। दोनों देश वार्ता जारी रखें, इसके सिवा दूसरा चारा भी नहीं है।

दिल्ली चुनाव : इंका का विश्वास लौटा !

दिल्ली महानगर परिषद और नगर निगम के चुनाव में इंका की जीत का एहसास राजनीतिक पंडितों को उस समय तक भी नहीं हुआ था जब 5 फरवरी को मतपेटिकाओं में मत डाले जा रहे थे। उसी दिन रात तक तीन चुनाव क्षेत्रों के परिणाम सामने आये तो बहुत से राजनीतिक प्रेक्षक और विश्लेषक इस बात से खुश नजर आये कि जो भविष्यवाणी उन्होंने की थी वह सही निकली। इस परिणाम में दो भारतीय जनता पार्टी के पक्ष में गये थे और एक इंका के पक्ष में। किन्तु दूसरे दिन यानी 6 फरवरी को जब मतों की गणना प्रारम्भ हुई तो स्थिति आशा के विपरीत जान पड़ी और रात देर गये तक जो परिणाम घोषित हुए उनमें कांग्रेस (इ) को पूर्ण बहुमत मिल चुका था। ये परिणाम आश्चर्यजनक थे।

दक्षिण की पराजय के पश्चात हुए दिल्ली के चुनावों से राजनीतिक स्थिति में कोई विशेष परिवर्तन की आशंका न होने के बावजूद इनके राजनीतिक महत्व से इन्कार नहीं किया जा सकता। इन चुनावों ने जहाँ एक ओर कांग्रेस (इ) में आत्म-विश्वास पैदा किया है वहीं जनता में निरन्तर बढ़ रहा इस धारणा को भी खंडित किया है कि श्रीमती गांधी के व्यक्तित्व का जादू अब बेअसर हो रहा है और यह कि उनका जनाधार खिसक रहा है। लोकतांत्रिक तरीके से राजनीतिक परिवर्तन की दृष्टि से भी इस चुनाव का कम महत्व नहीं था।

दिल्ली के चुनावों में इंका की जीत के और चाहे जो कारण रहे हों, एशियाड के दौरान किये गये निर्माण कार्य एक प्रमुख कारण था। इन चुनावों में अपनी जीत के प्रति पूरी तरह आश्वस्त भारतीय जनता पार्टी को कितना सदमा पहुँचा है इसका अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि उसके राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने अपने पद से इस्तीफा दे दिया था।

दिल्ली महानगर परिषद और नगर निगम के इस चुनाव में रिकॉर्ड प्रत्याशी खड़े हुए थे। दलों, प्रत्याशियों तथा प्राप्त सीटों की स्थिति निम्नलिखित तालिका में दृष्टव्य है—

दिल्ली महानगर परिषद

दल	सीटें लड़ी गयी	सीटें जीती गयी
कांग्रेस (इ)	56	34
भा ज पा	50	19
लोकदल (ग)	6	2
जनता पार्टी	39	1
कांग्रेस (ग)	17	—
लो स प	8	—
भा क पा	2	—
मा क पा	1	—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोकदल (क)	2	—
कांग्रेस (स)	5	—
जनसंघ	12	—
आर. पी. आई(क)	4	—
मुस्लिम लीग	1	—
अकाली	5	—
निर्दलीय	192	—
कुल योग	400	56

नगर निगम

दल	सीटें लड़ी गयी	सीटें जीती गयी
कांग्रेस (इ)	100	57
भा. ज. पा.	91	38
लोकदल (च)	9	3
जनता पार्टी	65	1
कांग्रेस (ग)	18	—
लो. स. पा.	20	—
भा. क. पा.	9	—
मा. क. पा.	5	—
लोकदल (क)	7	—
आर. पी. आई (क)	7	—
कांग्रेस (एस)	9	—
जनसंघ	15	—
मुस्लिम लीग	6	—
निर्दलीय	410	1
	751	100

तालिका से स्पष्ट है कि मुख्य प्रतिद्वन्द्विता को परम्परागत प्रतिद्वन्द्वियों भारतीय जनता पार्टी (पहले की जनसंघ) और कांग्रेस (ई) में ही थी। अपने निर्माण काल 1967 से ही नगर महापरिषद में एक-एक दलों को बारी-बारी से वर्चस्व प्राप्त होता आ रहा है। जनसंघ ने 1967 में 33 सीट जीतकर महानगर परिषद में पूर्ण बहुमत प्राप्त किया था। इसके बाद 1972 में कांग्रेस ने 42 सीटों पर कब्जा किया। 1977 में जनता पार्टी ने 46 सीटों पर विजय प्राप्त की। यह अपने आप में एक नया कीर्तिमान था जो इस चुनाव में नहीं टूट पाया। 1980 में कांग्रेस (इ) के सत्ता में आने पर नगर महापरिषद भंग कर दी गयी थी और तब से चुनाव टाला जाता रहा।

इन चुनावों में भारतीय जनता पार्टी ने अपनी पराजय स्वीकार तो की है किन्तु उसने आरोप लगाया है कि केन्द्र में सत्तारूढ़ दल ने चुनाव मशीनरी का दुरुपयोग किया है। भूतपूर्व कार्यकारी पार्षद तथा भा. ज. पा. की दिल्ली शाखा के अध्यक्ष श्री विजय कुमार मल्होत्रा ने अनियमितता का उदाहरण देते हुए कहा कि जहाँ कहीं भी भाजपा ने पुनर्गणना का अनुरोध किया, उसे ठुकरा दिया गया जबकि इंका प्रत्याशियों के कहने पर लगभग दस मतदान केन्द्रों पर मतगणना पुनः करायी गयी। दो स्थानों पर पुनः मतगणना करा कर गलत तरीके से विजयी भाजपा प्रत्याशियों को हराया गया। बहरहाल भारतीय जनता पार्टी कम से कम 60 स्थानों पर चुनाव याचिकायें दायर करने वाली है।

दिल्ली महानगर परिषद के गठन के बाद विभिन्न दलों की स्थिति इस प्रकार रही—

दल	1967	1972	1977	1983
कांग्रेस (इं)	19	44	10	34
जनसंघ	33	5	—	—
जनता पार्टी	—	—	46	1
भाजपा	—	—	—	19
कम्युनिस्ट पार्टी	1	3	—	—
संगठन कांग्रेस	2	2	—	—
लोकदल	—	—	—	2
निर्दलीय	1	2	—	—

भारत नेपाल संयुक्त आयोग

नेपाल के प्रधानमंत्री श्री सूर्य बहादुर थापा की तीन दिनों की भारत यात्रा काफी महत्वपूर्ण रही। उनके साथ विदेशमंत्री मेजर जनरल पद्म बहादुर खत्री भी थे। वह तीन फरवरी को भारत आये और अपने तीन दिनों के प्रवास के दौरान भारतीय नेताओं से आपसी तथा अंतर्राष्ट्रीय महत्व के प्रश्नों पर विस्तार से बातचीत की।

भारत और नेपाल परस्पर करार की अवधि को कुछ समय के लिए तदर्थ आधार पर बढ़ाने को सहमत हुए हैं और दोनों देशों ने मंत्रिस्तरीय संयुक्त आर्थिक आयोग की स्थापना का भी निश्चय किया है। निश्चय ही भारत और नेपाल के मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों तथा आर्थिक विकास की दिशा में यह एक महत्वपूर्ण कदम है। भारत ने बंगलादेश तथा पाकिस्तान के साथ भी संयुक्त आयोग गठित किया है। दोनों देश करनाली, राप्ति तथा पंचेश्वर नदी परियोजनाओं पर तत्परता से काम करने के लिए सहमत हो गये हैं। जाहिर है कि करनाली परियोजनाओं में भारत की विशेष रुचि है और वह कुछ समय से इसे प्राथमिकता देने का आग्रह करता रहा है। इससे दोनो देशों को सिंचाई के लिये पानी तो उपलब्ध होगा ही साथ ही पनबिजली भी पैदा होगी जो नेपाल से भारत खरीदेगा। विश्व बैंक ने करनाली परियोजना के लिये दो हजार करोड़ रुपये देना स्वीकार कर लिया है। इसके अलावा भारत ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...नेपाल के लिये औद्योगिक बस्तियों की ...स्थापना के लिये साढ़े तीन करोड़ ...रुपये की सहायता देने तथा वहाँ एक ...सीमेंट कारखाना स्थापित करने पर ...सहमति प्रकट की है।

भारत और नेपाल की एक समिति, जिसमें दोनों देशों के विद्युत और सिंचाई सचिव शामिल होंगे, अगले महीने के उत्तरार्ध में नदी परियोजनाओं का समीक्षा करेगी।

जहाँ तक राजनीतिक मुद्दे का सवाल है भारत और नेपाल दोनों ही देशों ने घातक हथियारों की जखीरेबन्दी पर चिंता व्यक्त करते हुए सैनिक गुटों का बहिष्कार तथा राष्ट्रों के बीच मैत्री बढ़ाने का आवाहन किया है। दोनों ही देशों ने निर्गुट आंदोलन के आदर्शों और सिद्धांतों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त की है। दोनों देशों के प्रधानमंत्रियों ने आशा व्यक्त की है कि आगामी गुट निरपेक्ष शिखर सम्मेलन में सदस्य देशों की एकता और मजबूत होगी तथा वे विश्व में अस्थिरता पैदा करने वाली शक्तियों का ठीक से मुकाबिला कर सकेंगे। उन्होंने यह भी आशा व्यक्त की है कि सम्मेलन अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और विनिमय को बढ़ावा देने वाला वातावरण बनाने में सहायक होगा। नेपाली प्रधानमंत्री ने भारत द्वारा दी जा रही सहायता के लिए कृतज्ञता भी व्यक्त की। इसके साथ ही उन्होंने नेपाल को शांति क्षेत्र घोषित किये जाने की बात दुहरायी।

दरअसल नेपाल मनोवैज्ञानिक रूप से असुरक्षा की भावना से ग्रस्त है। वह समुद्र से दूर होने के कारण उसके लिए व्यापारिक समस्याएँ भी हैं। वह भारत और चीन जैसे दो विशाल राष्ट्रों से घिरा है। अतएव भारत तथा चीन दोनों ही देशों से मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध उसकी बाध्यता है। साथ ही नेपाल यह भी चाहता है कि उसका स्वरूप गुटनिरपेक्ष बना रहे तभी वह भारत और चीन के बीच अपनी सही भूमिका निभा सकता है। चूंकि भारत स्वयं एक गुटनिरपेक्ष देश है इसलिये नेपाल की इस भूमिका में उसे कोई अरुचिकर बात नहीं दिखती किन्तु द्विपक्षीय सम्बन्धों को मैत्रीपूर्ण बनाये रखने के लिए निष्क्रिय तटस्थता की नहीं, सकारात्मक प्रयत्न की आवश्यकता है। प्रसन्नता की बात है कि नेपाल और भारत ने ऐसा ही रुख अपनाया है जिसके चलते दोनों देशों के बीच कई मुद्दों पर सहमति सम्भव हो सकी है।

महाराष्ट्र में नेतृत्व परिवर्तन

अब्दुल रहमान अंतुले और बाबा साहब भोंसले के बाद अब बसंत राव पाटिल ने महाराष्ट्र का नेतृत्व सम्हाला है। श्री पाटिल, जो अखिल भारतीय कांग्रेस (इ) कमेटी के महासचिव थे, को 31 जनवरी को गुप्त मतदान द्वारा इन्का विधायक दल का नेता चुना गया। 2 फरवरी को उन्होंने मुख्यमंत्री पद की शपथ ली तथा सात फरवरी को अपने मंत्रिमंडल का गठन किया। उनके द्विस्तरीय मंत्रिमंडल की सूची इस प्रकार है—

कैबिनेट मंत्री—

(1) श्री रामराव आदिक (उपमुख्य मंत्री) (2) प्रो. एस. एम. असीर (3) श्री प्रताप राव भोंसले (4) श्री राय पूसा बरोडे (5) श्री शांता राम गोपाल (6) श्री डा. बलीराम हिरे (7) प्रो. एन. एन. कापले (8) श्री सुधाकर नायक (9) श्री सरूप सिंह नायक (10) श्रीमती प्रतिभा पाटिल (11) श्री शिवाजी राव पाटिल निलांगकर (12) श्री सुशील कुमार सिंह (13) डा. श्रीमती ललिता राव।

राज्य मंत्री

(1) अब्दुल अजीज (2) श्रीमती यशोधरा बजाज (3) श्री शिवाजी राव देशमुख (4) श्री विलास राव देशमुख (5) श्री अरुण किवेकर (6) श्री गणेश दुधगांवकर (7) श्री राव साहब जायकार (8) श्री अजहर हुसैन (9) श्री मधुकर श्रीपतकार (10) श्रीमती पार्वती मालगोडा (11) श्री विजय सिंह मोहिते (12) श्री सतीश पेडणेकर, (13) श्री ए.टी. पवार, (14) श्री अभय सिंह राजे भोसले (15) श्री भाई सामंत, (16) श्री यशवंत श्रीकर (17) श्री वानीराव शिंदे (18) श्री अनन्त राव जोपटे (19) श्री करलप्पा एवाद और (20) श्री चन्द्रकांत त्रिपाठी।

महाराष्ट्र के 23 वर्षों के राजनीतिक इतिहास में श्री रामराव आदिक दूसरे उपमुख्य मंत्री हैं। नये मंत्रिमंडल में अंतुले काल के आठ तथा भोंसले काल के 12 मंत्री शामिल हैं। किन्तु भूतपूर्व मुख्यमंत्री भोंसले के निकट सहयोगियों तथा अंतुले समर्थकों को स्थान नहीं मिला हैं। महाराष्ट्र के 'कामराज' माने जाते श्री पाटिल 16 अप्रैल 1977 से 17 जुलाई 1979 के बीच महाराष्ट्र के मुख्य-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंत्री रह चुके हैं। 1977 में जनता पार्टी की जीत के बाद श्री एस. बी. चह्वाण ने मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा दे दिया था, तब वह महाराष्ट्र के मुख्य-मंत्री बने थे। जुलाई 1979 में जब शरद पवार ने कांग्रेस से अलग हट कर प्रगतिशील लोकतांत्रिक मोर्चा बनाया, तब उन्हें हटना पड़ा था। उस समय खिन्न होकर श्री पाटिल ने राजनीति से सन्यास लेने का फैसला किया था किन्तु 1980 में वह पुनः राजनीति में आये और सांगली क्षेत्र से लोक सभा के लिये चुने गये।

महाराष्ट्र के इंका विधायकों को नेता चुनने की छूट देकर कांग्रेस हाई कमान ने पुनः उस लोकतांत्रिक परम्परा की शुरुआत की है जो श्रीमती गाँधी के शासनारूढ़ होने के पश्चात लुप्त हो गयी थी। आशा की जानी चाहिए कि परम्परा और स्वस्थ रूप में विकसित होगी और नेतृत्व ऊपर से थोपने की परिपाटी हमेशा के लिए खत्म हो जायेगी।

श्री वसंत दादा पाटिल निश्चित रूप से एक अनुभवी और लोकप्रिय नेता हैं किन्तु उन्हें बिल्कुल ही निरा-पद स्थितियाँ मिलेगी, ऐसा दावा नहीं किया जा सकता। मंत्रिमण्डल में प्रतिनिधित्व को लेकर अलग-अलग गुटों में विरोध का स्वर मुखर होने लगा है। मंत्रिमंडल के शपथ ग्रहण के दिन दो विधायकों, श्री नानाभाऊ नारायण राव इमबादवर और सुरेन्द्रपाल भूपार, ने मंत्रि पद की शपथ नहीं ली। इन्हें श्री नाम्बुवंत राव पोले का समर्थक माना जाता है जो अपनी पत्नी सहित कई अन्य समर्थकों को मंत्रि पद न दिये जाने से क्षुब्ध हैं। महाराष्ट्र इंका की भूतपूर्व अध्यक्ष श्रीमती प्रमिलाताई भी नाखुश है। उनके समर्थकों ने एक अलग बैठक कर अपने गुस्से का इजहार भी कर दिया है। श्री अब्दुल रहमान अंतुले और उनके समर्थक चुप बैठेंगे ऐसी आशा नहीं की जा सकती। देखना है कि श्री पाटिल सभी गुटों को किस प्रकार संतुष्ट कर पाते हैं।

"प्रगति मंजूषा" के स्वामित्व एवं अन्य विषयों से सम्बन्धित विवरण

फार्म 4 (नियम 8 देखिये)

1.	प्रकाशन स्थान	—	436, ममफोर्डगंज, इलाहाबाद
2.	प्रकाशन की अवधि	—	मासिक
3.	मुद्रक का नाम	—	रतन कुमार दीक्षित
	राष्ट्रीयता	—	भारतीय
	पता	—	436, ममफोर्डगंज, इलाहाबाद
4.	प्रकाशक का नाम	—	रतन कुमार दीक्षित
	राष्ट्रीयता	—	भारतीय
	पता	—	436, ममफोर्डगंज, इलाहाबाद
5.	संपादक का नाम	—	रतन कुमार दीक्षित
	राष्ट्रीयता	—	भारतीय
	पता	—	436, ममफोर्डगंज, इलाहाबाद
6.	उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों।	—	रतन कुमार दीक्षित 436, ममफोर्डगंज, इलाहाबाद

मैं रतन कुमार दीक्षित एतद्द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं।

(ह.) रतन कुमार दीक्षित
प्रकाशक के हस्ताक्षर

ता. 3-3-1983

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्तर्राष्ट्रीय समीक्षा

- फारस की खाड़ी : 28 माह का युद्ध : क्या कभी समाप्त होगा ?
- विश्व-तेल निर्यात : ओपेक, गहरा होता संकट...
- अन्तरराष्ट्रीय मुद्रा कोष : तात्कालिक समिति के दो निर्णय : कोष ज्यादा ऋण देगा
- उत्तर-दक्षिण सहयोग : ब्रांट कमीशन की दूसरी रिपोर्ट : औपचारिक सिद्धांत का एक और नमूना !
- अमरीका-जापान : रीगेन-नकासोने वार्ता : प्रश्न राष्ट्रीय हित का !

फारस की खाड़ी :

28 माह का युद्ध : क्या कभी समाप्त होगा ?

पिछले 28 माह से चल रहे खाड़ी के युद्ध को समाप्त करने के लिये 3 फरवरी को संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा किया गया नवीनतम प्रयास ईरानियों की हठधर्मिता के चलते पुनः विफल हो गया है। इसके पूर्व गुटनिरपेक्ष संगठन की मंत्रिमंडलीय समिति तथा इस्लामी कांफ्रेंस द्वारा शांति स्थापना के सभी प्रयास व्यर्थ हो चुके हैं। और यह सत्य है कि ईरान कूटनीतिक क्षेत्रों में अपनी हठधर्मिता का प्रभाव डालने में आंशिक रूप से सफल भी हुआ है। उदाहरण के लिये ईरान के सशक्त विरोध के कारण ही गुटनिरपेक्ष सम्मेलन बगदाद के स्थान पर नयी दिल्ली में आयोजित हो रहा है।

पाठकों को ज्ञातव्य हो कि अक्टूबर 80 में खाड़ी के इस युद्ध की शुरूआत इराक द्वारा ईरान के साथ लगी अपनी सीमा के पुनर्निधारण के इरादे से की गयी थी। अब सद्दाम हुसैन युद्ध को समाप्त करना चाहते हैं क्योंकि नवीनतम् घटनाक्रम में इराक शर्मनाक हार का मुँह देख रहा है किन्तु अयातुल्ला खुमैनी द्वारा युद्ध समाप्ति के लिये जो शर्तें रखी गयी हैं उनमें सद्दाम हुसैन पर मुकदमा चलाया जाना तथा हर्जाने की माँग सर्वाधिक प्रमुख है। और ईरान बराबर अपना इसी हठधर्मिता पर दृढ़ है।

फिर भी यदि सद्दाम हुसैन अब भी अपने पद पर बरकरार हैं तो इसका सर्वप्रमुख कारण यह है कि उन्हें खाड़ी के प्रभावशाली देशों विशेष रूप से ईरान के परम्परागत विरोधी सऊदी अरब का समर्थन प्राप्त है। यदि हम तेहरान की सरकारी संवाद समिति को विश्वस्त मान लें तो ऐसा प्रतीत होता है कि ईरान द्वारा युद्ध की नयी शुरूआत नवम्बर, 82 में प्रारंभ युद्ध की प्रक्रिया को पूरा करने के लिये है। अब तक के घटनाक्रम से ऐसा लगता है कि ईरान युद्ध के लिये सद्दाम हुसैन को पूर्णतया उत्तरदायी मानता है तथा इस हेतु उन्हें एक युद्ध बन्दी (WAR CRIMINAL) के रूप में मृत्युदण्ड देने में रूचि रखता है।

जहाँ तक आंतरिक राष्ट्रीय स्थिति का प्रश्न है, दोनों ही देशों में अस्त-व्यस्तता व्याप्त है। ईरान पूर्णतया शिया-उग्रपंथियों के चंगुल में फँस चुका है। हाल में एक अभिजन सभा (ELITE ASSEMBLY) के लिये चुने गये सभी 83 सदस्य उलमाई हैं जो अपनी उग्रपंथवादिता के लिये पहले से ही विख्यात हैं। यह सभा अयातुल्ला खुमैनी का उत्तराधिकारी चुनेगी। ईराक में सद्दाम हुसैन सत्ता प्राप्त बाथ पार्टी (BAATH PARTY) के अन्तर्गत हिंसात्मक परिवर्तन लाकर ही सत्ता में विद्यमान है। सैनिक बिन्दु पर ईरान और ईराक दोनों ही क्रमशः अमरीका तथा सोवियत संघ से पूर्वकाल में भारी मात्रा में एकत्रित हथियारों को समाप्त कर चुके हैं। चूंकि दोनों ही देशों की

प्रस्तुति : नन्द लाल, प्रवक्ता, राजनीति विभाग, काशी विद्यापीठ विश्वविद्यालय, वाराणसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्थव्यवस्था तेल के निर्यात पर ही आधारित है और ऊर्जा के अन्य विकल्पों के विकास के साथ ही अनुमान है कि दिन प्रतिदिन तेल का महत्व विश्व के लिये कम होता जा रहा है। ये देश महसूस कर रहे हैं कि इनकी अर्थव्यवस्था और अधिक ह्रासोन्मुख हो सकती है।

विश्व-तेल निर्यात

ओपेक गहरा होता संकट...।

जनवरी के उत्तरार्ध में 'ओपेक' देशों के तेल मंत्रियों का एक सम्मेलन जेनेवा में आयोजित हुआ किन्तु यह सम्मेलन भी दिसम्बर के उत्तरार्ध में वियना सम्मेलन की कड़ी में ही अगला क्रम सिद्ध हुआ। 13 सदस्यों की उपस्थिति मे सम्पन्न जेनेवा सम्मेलन के उपरांत स्थिति यह है कि 'ओपेक' का भविष्य, जिसकी गतिविधियाँ अब तक विश्व के अधिकांश विकासशील देशों की अर्थव्यवस्था के लिये घातक रही हैं, और अधिक संकटपूर्ण हो गया है।

जेनेवा वार्ता में सबसे प्रमुख बात यह रही कि उपस्थित प्रतिनिधियों में तेल-निर्यात के निर्धारित कोटे के विषय मे सदस्य देशों में एक आम सहमति न हो सकी। जैसा कि पिछले अंक में (देखिये—फरवरी अंक के पृष्ठ 15 पर 'ओपेक' पर टिप्पणी) चर्चा की गयी थी, 1981 के बाद से विभिन्न ओपेक देशों के तेल-निर्यात द्वारा मुद्रा प्राप्ति में तेजी से कमी आती जा रही है और परिणामस्वरूप विभिन्न ओपेक देश अपनी अर्थव्यवस्थाओं को और अधिक स्फीति से बचाने के लिये, ओपेक द्वारा निर्धारित कोटे से और अधिक तेल-निर्यात करके अतिरिक्त विदेशी मुद्रा कमाते आ रहे हैं। परिणामतः प्रति बैरल तेल का निर्यात मूल्य दिन प्रतिदिन गिरता जा रहा है। जहाँ एक ओर सऊदी अरब तेल के निर्यात मूल्य में स्थिरता बनाये रखना चाहता है (जेनेवा सम्मेलन में सऊदी अरब ने 'ओपेक' द्वारा पूर्वकाल में निर्धारित 18.5 मिलियन बैरल प्रतिदिन के उत्पादन कोटे को कम करके 17.5 मिलियन बैरल प्रतिदिन करने के लिये काफी आग्रह किया) वहीं ईरान, वेनेजुएला तथा लीबिया जैसे तेल-निर्यातक देश चाहते हैं कि 'ओपेक' द्वारा तेल के अधिकतम उत्पादन कोटे के विषय में किसी प्रकार का प्रतिबंध सदस्य राष्ट्रों पर नहीं रहना चाहिये। 'ओपेक' के इन उग्रवादी सदस्यों के चलते वर्तमान स्थिति यह है कि 'ओपेक' के सदस्य देश अनौपचारिक रूप से प्रतिदिन 23 मिलियन बैरल तेल का निर्यात कर रहे हैं जबकि ओपेक द्वारा निर्धारित सीमा 18.5 मिलियन बैरल ही प्रतिदिन है। एक अनुमान के अनुसार आज ओपेक देशों द्वारा निर्यात किये जा रहे तेल का औसत मूल्य 32 डॉलर प्रति बैरल से भी कम है जबकि ओपेक द्वारा निम्नतम् निर्धारित मूल्य 34 डॉलर प्रति बैरल है।

'तीसरी दुनिया' के भारत जैसे देश 'ओपेक' के इस संकटपूर्ण भविष्य से आनंद की अनुभूति कर सकते हैं क्योंकि ये देश अपनी समग्र राष्ट्रीय आय का एक बड़ा भाग तेल के मूल्यों के रूप में प्रदान कर देते हैं। दूसरी ओर पश्चिमी देश 'ओपेक' में इस प्रकार के विकास से अधिक चिंतित हो गये हैं; (क) पश्चिमी देशों को यह भय है कि तेल के निर्यात मूल्यों में कमी का प्रभाव मेक्सिको जैसे देशों पर पड़ सकता है जिन्हें पश्चिमी देशों ने भारी मात्रा में ऋण दे रखे हैं, इस आधार पर कि वे तेल निर्यात से भविष्य में प्राप्त मुद्रा से कर्जों की अदायगी कर सकेंगे; (ख) उन्हें यह भी भय है कि हो सकता है मूल्यों में और अधिक कमी आने से अरब देश पश्चिमी बैंकों में जमा अपनी राशि वापस ले लें।

अंतर्राष्ट्रीय मुद्राकोष:

तात्कालिक समिति के दो निर्णय : कोष ज्यादा ऋण देगा !

अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) की तात्कालिक समिति द्वारा फरवरी के पूर्वार्द्ध मे दो ऐसे निर्णय लिये गये जिसस तीसरी दुनिया के आर्थिक संघर्ष से जूझते अर्धविकसित या विकासशील देश संतोष अनुभव कर सकते हैं। अ. मु. को. अब ऋण के अब तक के निर्धारित कोटे में 47.5 प्रतिशत की वृद्धि लाने को तैयार हो गया है। साथ ही अ. मु. को. 'जनरल ऐग्रीमेंट टू बॉरो' (General Agreement to Borrow या GAB) के अन्तर्गत निर्धारित ऋण राशि को दुगना करने को भी सहमत है।

पाठकों को ज्ञातव्य हो कि जनवरी मास के उत्तरार्द्ध में विश्व के 10 सर्वाधिक धनी देशों, जो कोष के सर्वाधिक मुद्रा दाता हैं, की बैठक में 'गैब' के अन्तर्गत निर्धारित राशि को 7000 मिलियन डालर से 19,000 मिलियन डॉलर करने पर सहमति हो गयी थी। पाठकों की जानकारी के लिये, 'गैब' वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से अ. मु. को. विकसित देशों से कर्ज लेता है ताकि विकासशील देशों को आसान शर्तों पर ऋण दिया जा सके।

कहना न होगा कि 'गैब' की राशि में वृद्धि का मुख्य उद्देश्य मेक्सिको तथा ब्राजील जैसे देशों की अर्थव्यवस्था को संतुलित रूप प्रदान करना है जो पहले से ही भारी विदेशी कर्ज में डूबे हुए हैं। अपने नये नियमों के तहत् मुद्रा कोष अब किसी भी कर्ज प्राप्त करने वाले देश को अपने निर्धारित कोटे से 450% अधिक राशि ऋण के रूप में दे सकेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस स्तंभकार की दृष्टि में इस प्रकार के निर्णय विकासशील देशों की राहत तो पहुँचायेंगे किन्तु तीसरी दुनिया के समक्ष आज विकराल समस्यायें हैं। इस प्रकार के निर्णय से तीसरी दुनिया के देशों की ऋण अदायगी क्षमता में तनिक सुधार होगा। अ. मु. को. के दो निर्णयों में से पहले निर्णय से विकासशील देशों को कर्ज के लिये अधिक राशि उपलब्ध हो सकेगी जबकि दूसरे निर्णय के माध्यम से उनके द्वारा पूर्वकाल में लिये गये ऋणों की अदायगी की क्षमता बढ़ सकेगी। किन्तु इन दो निर्णयों के बाद भी विकासशील देश छठवें तथा सातवें दशक की विकास दर को प्राप्त कर सकेंगे अथवा नहीं इस बारे में निश्चित रूप से कह सकना तनिक मुश्किल है। यही कारण है कि पिछले कुछ समय से विकासशील देश 12 बिलियन डालर के अतिरिक्त राशि के नये कोष के निर्माण की माँग कर रहे हैं। यद्यपि अमरीका तथा अन्य विकसित देश इस प्रकार की माँग को स्वीकार करने के पक्ष में नहीं हैं किन्तु फिर भी इन देशों ने इस प्रकार के प्रस्ताव पर विचार करना स्वीकार किया है। पिछले दो वर्षों में विकसित देश मुद्रास्फीति पर नियंत्रण को विकास दर में वृद्धि की पूर्णशर्त मानते रहे हैं और अब जबकि विकसित देश अपनी अर्थव्यवस्थाओं की मुद्रास्फीति पर आंशिक मात्रा में नियन्त्रण पाने में सफल हो गये हैं, ये पुनः तीसरी दुनिया में घुसपैठ की दिशा में उन्मुख दिखायी दे रहे हैं किन्तु यह संयोग ही कहा जा सकता है कि तीसरी दुनिया के विषय में ये सावधानी से चलना चाहते हैं जिसके परिणामस्वरूप तीसरी दुनिया के देशों की अर्थव्यवस्था और अधिक मुद्रा स्फीति की शिकार बन सकती है।

उत्तर-दक्षिण सहयोग :

ब्रांट कमीशन की दूसरी रिपोर्ट : औपचारिक सिद्धांत का एक और नमूना !

9 फरवरी को, प. जर्मनी के भू. पू. प्रधानमंत्री श्री विली ब्रांट की अध्यक्षता में गठित, 'ब्रांट कमीशन' ने अपनी द्वितीय रिपोर्ट प्रस्तुत की। रिपोर्ट में विश्व आर्थिक ह्रास को रोकने के लिये त्वरित एवं आपातकालिक कदम उठाने का आह्वान किया गया है। रिपोर्ट में एक अधिक संतुलित अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक तथा मौद्रिक व्यवस्था के निर्माण का भी सुझाव दिया गया है जिसके अन्तर्गत 'अर्ध विकसित' या विकासशील देशों को उपलब्ध संसाधनों की अधिकाधिक सम्पूर्ति की जा सके। 174 पृष्ठों की ब्रांट रिपोर्ट को 'सामान्य संकट : विश्व राहत के लिये उत्तर-दक्षिण सहयोग' (Common Crisis : North-South Programme for World Recovery) शीर्षक से जारी किया गया है। विली ब्रांट की अध्यक्षता वाले ब्रांट आयोग में, भारतीय आर्थिक प्रशासन सुधार आयोग के अध्यक्ष श्री एल. के. झा, राष्ट्र मंडलीय महासचिव श्रीधर रामफल तथा भू. पू. ब्रिटिश प्रधानमंत्री श्री एडवर्ड हीथ सहित, 17 सदस्य थे।

ब्रांट कमीशन की रिपोर्ट में दिये गये सुझावों को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है :

(1) इसके अन्तर्गत अन्तर्राष्ट्रीय-मुद्रा-कोष (IMF) से सम्बन्धित सुझावों को रखा जा सकता है। विकासशील देश अपने वर्तमान कर्जों को आसानी से चुका सकें, इस कारण आयोग ने एक तात्कालिक ऋणदात्री संस्था की संस्थापना का प्रस्ताव रखा है। विकासशील देशों को अ. मु. को. से दिये जाने वाले कर्जों के साथ कम से कम शर्तें लगायी जानी चाहिये। सर्वाधिक महत्वपूर्ण सुझाव जिसे लागू कर दिये जाने पर मुद्रा-कोष के स्वरूप में एक गुणात्मक परिवर्तन भी आ सकता है. यह है कि ऋण की स्वीकृति करने में मुद्रा-कोष का मापदण्ड यह होना चाहिये कि संबधित देश में विकास, रोजगार तथा आय के स्तर के क्या अवसर हैं ? अथवा उन क्षेत्रों में सम्बन्धित देश कि क्या उपलब्धियाँ रही हैं ? पाठकों को ज्ञातव्य हो कि इसके पूर्व 1979 की ब्रांट आयोग की रिपोर्ट के अन्तर्गत ऋण लेने वाले देश द्वारा मुद्रास्फीति को नियंत्रित करने के प्रयासों तथा समग्र सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक उपलब्धियों एवं भावी उद्देश्यों पर बल दिया गया था।

(2) दूसरी कोटि के अन्तर्गत विश्व बैंक तथा अन्तर्राष्ट्रीय विकास समुदाय (IDA) से संबधित सुझावों को रखा जा सकता है। इन दोनों संस्थाओं को आर्थिक दृष्टि से कमजोर देशों के आर्थिक विकास के लिये अधिकाधिक ऋण उपलब्ध कराने का सुझाव दिया गया है। ऋण की सीमा 10% से 30% कर दी जानी चाहिये।

(3) तीसरी कोटि के अन्तर्गत ब्रांट आयोग के गरीब तथा अमीर देशों के मध्य खाई कम करने हेतु, दिये गये सामान्य सुझावों को रखा जा सकता है : (क) गरीब देशों को दिये जाने वाले आर्थिक सहयोग को 1985 तक दुगना कर दिया जाना चाहिये और (ख) इस सहयोग के माध्यम से कम से कम 0.15% के समग्र राष्ट्रीय आय (GNP) का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिम्मेदारी ऋणदाता देश द्वारा वहन की जानी चाहिये। (ग) कमजोर देशों को सरकारी कर्जे के शिकंजे से राहत दिलाने के लिये इस प्रकार के आर्थिक सहयोग के समझौतों को तुरन्त लागू किया जाना चाहिये।

इसके अतिरिक्त आयोग ने मुद्रा कोष विकास समुदाय तथा इसी प्रकार की अन्य ऋणदात्री संस्थाओं के मध्य वास्तविक तथा अनौपचारिक सहयोग की बात भी कही है। आयोग व्यक्तिगत बैंकों द्वारा विकासशील देशों में पूंजी निवेश का पक्षधर है और यह निवेश अधिक अर्थपूर्ण तरीके से किया जा सके, इस हेतु रिपोर्ट में अनेक सुझाव दिये हैं।

पाठकों को ज्ञातव्य हो कि ब्रांट कमीशन की प्रथम रिपोर्ट (1979) में विकासशील तथा विकसित देशों के मध्य संतुलन के तत्व पर सर्वाधिक बल दिया गया था : विकसित देशों में उपलब्ध पूंजी का निवेश विकासशील देशों में किया जाना चाहिये ताकि विकसित देशों की तकनीकी शक्ति का भी समुचित उपयोग हो सके। किन्तु विकसित देशों ने इस संदर्भ में कोई ठोस कार्य नहीं किया क्योंकि अब द्वितीय रिपोर्ट में समसामयिक विश्वपरक आर्थिक स्थिति को 'खतरनाक' तथा समान विघटन के करीब बताया गया है। विभिन्न मंचों के माध्यम से विकासशील देश पिछले पाँच वर्षों में वार्तालाप करते आये हैं किन्तु इसका कोई विशेष परिणाम नहीं निकल सका। विकसित देशों द्वारा ब्रांट आयोग की पहली रिपोर्ट के प्रति जो उपेक्षा प्रस्तुत की गयी, इसका भी एक प्रमुख कारण हैं। विकसित देश परस्पर संतुलन (Interdependence) की बात से पूर्णतया सहमत हैं किन्तु साथ ही यह एक कटु सत्य है कि विकसित देशों की अर्थव्यवस्थाओं में भी मुद्रास्फीति का तीव्रता से प्रसार हो रहा है; इन देशों में भी आर्थिक ह्रास तथा बेरोजगारी वृत्तियाँ बढ़ रही हैं। इस कारण विकसित देशों की जो स्वयं दुःचिन्ताओं से ग्रस्त है यह आशा करना कि वे 'तीसरी दुनिया' के देशों के विकास समस्याओं की और मानवीय आधारों पर ध्यान देंगे, रेगिस्तान में जल ढूँढने के समान होगा। राष्ट्र संघ के तत्वावधान में सर्वप्रथम प्रारंभ उत्तर-दक्षिण सहयोग की वार्ता रोम, तथा कानकुन के शिखर सम्मेलन तक की यात्रा कर चुकी है किन्तु यह औपचारिक अधिक तथा वास्तविक कम साबित हुई।

आयोग की रिपोर्ट में कानकुन जैसा दूसरा शिखर सम्मेलन बुलाने की भी बात कही गयी है किन्तु ऐसा नहीं लगता कि इससे भी बहुत अधिक लाभ हो सकेगा। आज आवश्यकता है : क्षेत्रीय सहयोग की, जिसकी प्रक्रिया पहले ही प्रारम्भ हो चुकी है। किन्तु वास्तविक अर्थों में तीसरी दुनियाँ के देश आपस में कितना आर्थिक सहयोग कर सकेंगे, यह कहना मुश्किल है।

अमरीका-जापान :

रीगेन नकासोने वार्ता : प्रश्न राष्ट्रीय हित का !

18 से 20 जनवरी तक जापानी प्रधानमंत्री याशुहिरो नकासोने ने संयुक्त राज्य अमरीका की बहुचर्चित सरकारी यात्रा की जिसके बारे में अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के अनुभवी पर्यवेक्षकों द्वारा यह कहा जा रहा है कि जापान-अमरीका-रूस त्रिकोण काफी अर्से बाद पुनः सक्रिय हो रहा है। 20वीं शताब्दी में विशेष रूप से द्वितीय विश्व युद्ध के बाद कोरिया युद्ध (1953) से प्रारंभ, सुदूरपूर्व में उसकी क्रमिक बढ़ती रुचि के परिप्रेक्ष्य में, खासतौर से 'सोवियत भालू' के फैलाव को रोकने के लिये उत्कट रीगेनाइट उग्रवादिता को मद्दे नजर रखते हुये, इस स्तम्भकार की दृष्टि में भी अमरीकी विश्वपरक् कूटनीति में इस यात्रा का निश्चय ही विशेष महत्व है।

सर्वाधिक महत्वपूर्ण तत्व इस वार्ता का यह रहा कि जापानी प्रधानमंत्री ने रीगेन को अश्वस्त किया है कि जापान किसी भी संभावित सोवियत खतरे को रोकने के लिये अपनी सैन्य क्षमताओं का आधुनिकीकरण करने एवं उन्हें अधिक विस्तृत आधार देने की बात पर सहमत है। ज्ञातव्य हो कि जापान का वर्तमान रक्षा व्यय समग्र राष्ट्रीय आय का मात्र 1.11% है जबकि अमरीका इसी मद में 6% तथा भारत लगभग 2.3% व्यय करता है जापान की विपुल आर्थिक प्रगति, जिसमें जापानी विज्ञान तथा टेक्नॉलजी का प्रमुख योग रहा है, को देखते हुए अब तक कोई भी देश (महाशक्तियों सहित) यह नहीं चाहता था कि जापान अपनी सैनिक शक्ति का अधिक विस्तार करें। द्वितीय विश्व-युद्ध के दौरान जापान की सैनिक भूमिका से पाठक परिचित ही है। किन्तु अब रीगेन प्रशासन अपनी नीतियों में क्रमशः परिवर्तन ला रहा है : यह बात दक्षिण पूर्व-एशिया के मसलों पर रीगेन के विशेष सहायक डा. रिचर्ड बील ने हाल में कही है "इस क्षेत्र की प्रतिरक्षा का भार अमरीका जापान को सौंपना चाहता है।"

यद्यपि वार्ता की समाप्ति पर जारी घोषणापत्र में दोनों देशों के मध्य 'अटूट गठबंधन' का जिक्र किया गया है किन्तु स्वयं जापान के कुछ वर्गों द्वारा प्रधानमंत्री नकासोने के इस नीतिनिर्णय की कुछ आलोचना की गयी है। आलोचना का सर्व प्रमुख

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्य यह है कि इस आश्वासन के माध्यम से अमरीका की विश्वपरक-कूटनीति (Global Strategy) के अन्तर्गत जापान एक मोहरा बन सकता है। वैसे अमरीका पिछले कई वर्षों से 'मित्र राष्ट्र' सिद्धान्त का हवाला देते हुए और जापान को विस्तृत सैन्य दायित्व उठाने के लिये जोर देता आ रहा है किन्तु जापानी प्रधानमंत्री के इस आश्वासन के पीछे 'आर्थिक आत्मनिर्भरता, के लिये सैनिक आत्मनिर्भरता भी आवश्यक है' का सिद्धांत अधिक तथा अमरीकी दबाव कम उत्तरदायी प्रतीत होता है। वैसे भी जापानी मष्तिष्क में नागासाकी तथा हिरोशिमा की घटनाऐं यथेष्ट मात्रा में ताजी हैं। सोवियत संघ ने इस शिखरवार्ता पर कटु प्रतिक्रिया व्यक्त की है और अमरीकी कूटीनति के अंग बनने के जापानी निर्णय को चेतावनी देते हुए कहा है कि इसके भयानक परिणाम हो सकते हैं। स्थिति यह है कि जापान अमरीका के साथ-साथ सोवियत संघ के निकट भी रहना चाहता है। सुदूर पूर्व में जापान की तुलना में अमरीका ने चीन को महत्व दिया तथा 1975 में वियतनाम से वापस जाने के अपने निर्णय में अमरीका ने जापान से कोई परामर्श नहीं लिया-ये दोनों पिछले एक दशक के ही घटना क्रम हैं। दूसरी ओर चीन-सोवियत तनाव-शैथिल्यीकरण आने वाले वर्षों में उभर सकता है, इसकी भी संभावना से इंकार नहीं किया जा सकता। अतः जापानी विदेश विभाग केवल अमरीकी सहयोग एवं सौहार्द्र के भरोसे नहीं रह सकता क्योंकि अमरीका अपने वायदों की कभी कद्र नहीं कर पाया-पिछले कुछ वर्षों का कूटनीतिक इतिहास इसका ज्वलंत प्रमाण है।

अतः जापान के इस निर्णय की पृष्ठभूमि में प्रतिरक्षा विषयों में स्वयं को आत्मनिर्भर बनाने की इच्छा अधिक प्रतीत होती है क्योंकि जापान स्वयं अपने को 'सोवियत सैन्य व्यूह' की मार के अन्तर्गत पा रहा है। अब तक रीगेन-ऐन्द्रीपोव परमाणु अस्त्र-परिसीमन वार्ता की जितनी किश्तें समाप्त हुयी हैं, उनमें एक सामान्य तत्व सोवियत पक्ष की ओर से यह रहा है कि सोवियत संघ मध्यम दूरी तक मार करने वाले अपने प्रक्षेपास्त्रों को पश्चिमी अंचल से हटाकर पूर्वी अंचल में ले जाने को तैयार है। जापान की यह धारणा है कि चीन-सोवियत तनाव शैथिल्यीकरण की प्रक्रिया के चलते प्रक्षेपास्त्रों के पूर्वी अंचल में नियोजन का चीन के लिये कोई खतरा नहीं है, बल्कि इनका वास्तविक उद्देश्य जापान को धमकाना होगा। जब चीन, अमरीका तथा पश्चिमी यूरोप के अन्य 'नैटो' देश सोवियत संघ के साथ नये सिरे से सम्बन्ध स्थापना कर रहे हैं तो जापान ही अमरीका के भरोसे क्यों बैठा रहे? ■ ■

उत्तर प्रदेश जल निगम के बढ़ते कदम

: श्रमेव जयते :

1—हमारा लक्ष्य :

बीस सूत्रीय कार्यक्रम के सूत्र संख्या-8 के अन्तर्गत दूर-दराज इलाकों में बसे सभी समस्याग्रस्त ग्रामों व अन्य क्षेत्रों में स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराना जो रोग रहित हो, जिससे आपको जलवाली कीट व्याधियों से छुटकारा मिले व आप स्वस्थ व सुखी रहें। शीघ्र लाभ की दृष्टि से यूनीसेफ द्वारा अधिकृत उत्तर प्रदेश शासन तथा भारत सरकार द्वारा स्वीकृत नहरें नलकूप वाले इण्डिया पार्क-II हैण्ड पम्प द्वारा स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराने को वरीयता।

2—हमारी उपलब्धियाँ :—

	मार्च 1982 तक उपलब्धियाँ	1982-83 का लक्ष्य	दिसम्बर 82 की उपलब्धि
1—नागर जल सम्पूर्ति :—			
1—पुनर्गठन से लाभान्वित नगर	25	10	4
2—लाभान्वित नये नगर	455	20	3
2—नागर जलोत्सारण			
1—पुनर्गठन से लाभान्वित नगर	5	2	—
2—लाभान्वित नये नगर	47	3	—
3—ग्रामीण जल सम्पूर्ति : कुल राजस्व ग्राम 112561 जिनमें 35505 अभावग्रस्त ग्राम है।			
1—अभावग्रस्त ग्राम	8782	3575	2206
2—अभाव ग्रस्त के अतिरिक्त अन्य ग्राम	4288	825	336

पानी की हर बूंद कीमती है इसे नष्ट न करें।

आपके सहयोग से निरन्तर प्रगति की ओर बढ़ता हुआ, उ. प्र. जल निगम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समसामयिक सामान्य ज्ञान

■ शब्द संक्षेप

● N.A.M.—नॉन अलाइन्ड मूवमेन्ट

● S.T.C.—स्टेट ट्रेडिंग कॉर्पोरेशन

● L.P.G. – लिक्विड पेट्रोलियम गैस

● S.S.I. —स्माल स्केल इन्डस्ट्रीज

● H.Y.V.—हाई ईल्डिंग वैरायटी

● I.C.I.C.I.—इण्डियन क्रेडिट एण्ड इन्वेस्टमेन्ट कार्पोरेशन ऑव इण्डिया

● C.A.T.V.—केबॅल टेलीविजन

● U.S.A.I.D.—यूनाइटेड स्टेट्स एजेन्सी फॉर इन्टरनेशनल डेवलपमेन्ट

● S.F.T.S.—स्टोर एण्ड फारवर्ड टेलीग्राफ सिस्टम

● J.R.C.—जॉइन्ट रिवर्स कमीशन

● G.A.B.—जनरल एग्रीमेन्ट टु बॉरो

● C S.O.—सेन्ट्रल स्टैटिस्टिकल आर्गेनाइजेशन

● O.P.I.C.—ओवरसीज प्राइवेट इन्वेस्टमैन्ट कार्पोरेशन

● A.I.T.U.C.—आल इण्डिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस

● U. N. C.T. A.D.—यूनाइटेड नेशन्स कान्फ्रेन्स ऑन ट्रेड एण्ड डेवलपमेन्ट

● F.I.C.C.I.—फेडरेशन ऑव इण्डियन चेम्बर्स ऑव कामर्स एण्ड इन्डस्ट्री

■ प्रमुख पुस्तकें

● फ्रैग्मेन्ट ऑव हिस्टरी, इण्डियाज् फ्रीडम मूवमेन्ट एण्ड आफ्टर—एच. एन. पन्डित

● द लॉस्ट हीरो—मिहिर बोस

● द ट्रान्सनैशनल्स—प्रफुल्ल राय चौधरी

● इण्डियाज् सिक्युअरइटि—यू. एस. बाजपेयी

● सो मेनी हंगर्स—भवानी भट्टाचार्य

● लॉ नवाब—इरेन फ्रेन

● पीपिल्स एण्ड प्रॉबलम्स् —इन्दिरा गान्धी

● इण्डियाज् वॉर सिन्स इन्डिपेनडेन्स—मे. ज. सुखवन्त सिंह

● यू कान्ट प्लीज एवरिवन—कोबिता सरकार

● गान्धार की भिक्षुणी—विष्णु प्रभाकर

● मै भी मानव हूँ—विष्णु प्रभाकर

● समाज के स्वर—डा. राम कुमार वर्मा

● भारतीय संघ व्यवस्था = डा. बी. एल. फाड़िया व एस. जैन

● बादलों के घेरे—कृष्णा सोबती

● द लॉन्गेस्ट वार—जैकब टिमरमैन

● स्ट्रेन्जर एण्ड ब्रदर—फिलीप स्नो

● इन सर्च ऑव गान्धी—रिचर्ड एटनबरो

● गुड वर्क—इ. एफ. शुमाखर

■ विज्ञान

● द्वितीय भारतीय दक्षिण ध्रुव अभियान— 1 दिसम्बर 82 को अन्टार्कटिका पर गया द्वितीय भारतीय अभियान दल वहाँ तीन महीने तक वैज्ञानिक अध्ययन व परीक्षण के पश्चात स्वदेश के लिये रवाना होगा। दक्षिण ध्रुव से 80 कि.मी. दक्षिण में स्थित गंगोत्री में भूगर्भीय सर्वेक्षण सफलता पूर्वक पूरे किये गये है। इस प्रकार के सर्वेक्षण विश्व में पहली बार किये गये है। इस अभियान दल ने दक्षिण गंगोत्री में अस्थायी केन्द्र स्थापित किया। इसका उपयोग मौसम सम्बन्धी आकड़ों को प्राप्त करना होगा। यह दल पूर्व निर्मित बैरकें तथा स्वचालित मौसम केन्द्र वही पर छोड़ कर आयेगा। तृतीय भारतीय अभियान दल के जाने की तैयारी हो रही है।

■ विधेयक/अधिनियम

● ब्रिटिश आव्रजन अधिनियम—ब्रिटेन की थैचर सरकार ने अपने कन्जरवेटिव दल के विद्रोही गुट तथा विरोधी दल-लिबरल दल व लेबर दल को सन्तुष्ट करने हेतु ब्रिटिश आव्रजन अधिनियम में कुछ सुधार का प्रस्ताव रखा है। इस नये प्रस्ताव के अनुसार, ब्रिटिश नागरिकों की सन्तानों तथा ब्रिटेन में बसे व्यक्तियों की सन्तानों को अविवेचित ब्रिटिश नागरिकता पाने का अधिकार न होगा। ब्रिटिश नागरिक के मंगेतर या पति या पत्नी को ब्रिटिश नागरिकता प्राप्त करने के लिये प्रमाण सम्बन्धित व्यक्ति को ही देना पड़ेगा। ऐसे विवाह का अवलोकन दो वर्ष के स्थान पर एक वर्ष के अन्दर किया जायेगा। परन्तु, जाति व लिंग के आधार पर किसी प्रकार का भी विभेद नहीं किया जायेगा।

● उच्च न्यायालय में मुख्य न्यायाधीशों की नियुक्ति—28 जनवरी 83 को केन्द्र सरकार ने यह घोषणा की कि (1) देश के सभी उच्चन्यायालयों के मुख्यन्यायधीश राज्य के बाहर के होगें। (2) किसी भी न्यायाधीश को मुख्य न्यायाधीश के रूप में पदो-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नति उसके स्वयं के उच्चन्यायालय में उसकी वरिष्ठता के आधार पर की जायेगी। (3) ऐसे मुख्य न्यायाधीश को, जिसके सेवा निवृत्ति होने में एक वर्ष या उससे कम का समय रह गया हो तो उसे दूसरे उच्च न्यायालय में स्थानान्तरित नहीं किया जायेगा। (4) ऐसे वरिष्ठ न्यायाधीश जिसकी सेवा निवृत्ति में एक वर्ष या उससे कम रह गया हो और इस अवधि में यदि मुख्य न्यायाधीश बन सकता है, वरिष्ठता के आधार पर मुख्य न्यायाधीश बनाने पर विचार किया जा सकता है तथा (5) उच्च न्यायालय में मुख्य न्यायाधीश की नियुक्ति और स्थानान्तरण के सम्बन्ध में पदोन्नति संविधान के अनुच्छेद 218 व 222 के अनुरूप की जायेगी।

■ चर्चित व्यक्ति

● फूलन देवी—बहमई काण्ड के कारण चर्चित 26 वर्षीया दस्यु सुन्दरी फूलन देवी ने 12 फरवरी 83 को चम्बल में अपने पच्चीस साथियों के साथ बिना किसी शर्त के समर्पण किया।

● कपिल देव—25 वर्षीय हरफनमौला क्रिकेट खिलाड़ी कपिल देव को वेस्ट इण्डीज दौरे में भारतीय क्रिकेट दल के लिये कप्तान चुना गया है। भारतीय क्रिकेट दल के पाकिस्तान दौरे में वे उपकप्तान थे।

● एरियल शेरों—सितम्बर 82 में बेरूत स्थित साब्रा तथा चटीला फिलिस्तीनी शरणार्थी शिविरों में हुए हत्याकाण्ड में इस्रायली रक्षामन्त्री एरियल शेरों का हाथ होने के कारण उन्हें 11 फरवरी 83 को पदत्याग करना पड़ा। अब वे इस्रायली मन्त्रिमण्डल में बिना किसी विभाग के मन्त्री है।

● जे. आर. जयवर्द्धन—76 वर्षीय श्रीलंका के राष्ट्रपति जे. आर. जयवर्द्धन ने संविधान में संशोधन पारित कर 4 फरवरी 83 को द्वितीय अवधि के लिये कार्यभार संभाला। उन्होंने वर्ष 1977 में प्रथम कार्यभार संभाला था।

● नटवर सिंह—भारतीय विदेश मन्त्रालय में सचिव तथा पाकिस्तान में भू. पू. भारतीय राजदूत नटवर सिंह को 7 मार्च से नई दिल्ली में आयोजित होने वाले सातवें गुट निरपेक्ष शिखर सम्मेलन के लिये महासचिव नियुक्त किया गया है।

■ चर्चित स्थल

● उगान्डा-वर्ष 1973 में इदी अमीन सरकार द्वारा उगान्डा में बसे भारतीयों की अधिकृत सम्पत्ति को लौटाने का निर्णय उगान्डा के वर्तमान सरकार ने लिया। इस कदम से 3000 से 4000 भारतीय लाभान्वित होंगे।

● मेलबर्न—आस्ट्रेलिया के मेलबर्न के निकट जंगल में आग लगने के कारण 100 व्यक्तियों की मृत्यु हुई तथा 1000 व्यक्ति घायल हुए। अभी तक आग बुझायी नहीं जा सकी है। यह आस्ट्रेलिया के जंगलों में आग लगने की सबसे भीषण घटना है।

● नाइजीरिया—जनवरी-फरवरी82 में नाइजीरिया में बसे विदेशी श्रमिकों को निष्कासित करने के आदेश जारी किये जाने के फलस्वरूप 20 लाख अप्रवासी प्रभावित हुए। इसमें सर्वाधिक पश्चिमी अफ्रीकी राष्ट्रों, विशेषकर घाना के लोग है।

● नई दिल्ली—12 फरवरी 83 को नई दिल्ली के चाणक्यपुरी स्थित अमेरिकी दूतावास पर कुछ अज्ञात व्यक्तियों ने टैंक निरोधक राकेट से आक्रमण किया। राकेट के विस्फोट से कोई हताहत नहीं हुआ और न ही दूतावास को कोई हानि पहुंची।

● नेल्ली—18 फरवरी 83 को असम में निर्वाचन के दौर में साम्प्रदायिक दंगों के फलस्वरूप बच्चे, तथा महिलाओं सहित 600 व्यक्तियों की मृत्यु तथा लाखों रुपये की सम्पत्ति नष्ट हुई। दारांग, गोरेश्वर, बिजली, भेलुगुड़ी, नौजान आदि स्थानों में भी अनेक लोगों की मृत्यु हुई।

■ अन्तरिक्ष अनुसन्धान

● भारतीय अन्तरिक्ष यात्री का अभियान—वर्ष 1984 में विंग कमान्डर रवीश मल्होत्रा या स्क्वॉड्रन लीडर राकेश शर्मा, जो मास्को के निकट स्थित ब्रेजनेव स्पेस नगर में सोवियत प्रशिक्षकों से प्रशिक्षण ग्रहण कर रहे हैं, में से एक व्यक्ति भारत-सोवियत संयुक्त अन्तरिक्ष अभियान में आठ दिन तक अन्तरिक्ष में रहने वाले प्रथम भारतीय अन्तरिक्ष यात्री होंगे। वे सोल्युत-T नामक सोवियत यान की सहायता से सल्युत-7 नामक सोवियत परिक्रमांक अन्तरिक्ष स्टेशन के कक्ष में जाकर पांच दिन अन्तरिक्ष में व्यतीत करेंगे। इस ऐतिहासिक अभियान के पश्चात भारतीय अन्तरिक्ष यात्री सोवियत अन्तरिक्ष यात्रियों के सहित सोल्युत-T से पृथ्वी पर वापस लौट आयेंगे।

● चैलेन्जर—कोलम्बिया स्पेस शटल के सफल अभियान के दूसरा अमेरिकी स्पेस शटल 'चैलेन्जर' में तकनीकी गड़बड़ी आ जाने के कारण उसकी पहली उड़ान विलम्ब से होगी। अब इस शटल को 13 मार्च से 19 मार्च 83 के मध्य प्रक्षेपित किया जायेगा।

● सकुरा 2 ए—6 फरवरी 83 को जापान का प्रथम व्यावहारिक संचार उपग्रह 'सकुरा 2 ए' का सफल प्रक्षेपण दक्षिणी जापान के एक द्वीप से किया गया।

● अमेरिका की महिला अन्तरिक्ष यात्री—सैली रीड एवं डा. जूडिथ रेनिक नामक दो अश्वेत अमेरिकी नागरिक अमेरिकी स्पेस शटल के क्रमशः सातवें मिशन (मई 1983) तथा ग्यारहवें मिशन (मार्च 1984) में अन्तरिक्ष में जाने वाली क्रमशः प्रथम एवं द्वितीय अमेरिकी महिला अन्तरिक्ष यात्री होगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

■ संगठन, आयोग/सम्मेलन

● अर्थशास्त्री परिषद—भारत की प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने आर्थिक नीतियों और विकास सम्बन्धी विषयों पर सलाह देने के लिये पांच सदस्यीय अर्थशास्त्री परिषद का गठन किया है। इस परिषद के सदस्य सुखमय चक्रवर्ती (अध्यक्ष), डा. के. एन. राज, डा. मनमोहन सिंह, डा. ए. एन. खुसरो, एवं डा. सी. एच. हनुमन्त राव हैं। इनका कार्यकाल सलाहकार के रूप में दो वर्ष का होगा। यह परिषद उन विषयों पर जिन्हें प्रधानमन्त्री उनके पास भेजती है, पर सलाह देगा। वे स्वयं भी कुछ मसलों पर प्रधानमन्त्री को सलाह दे सकते हैं।

● अंक्टाड VI—जून 83 में बेलग्रेड में आयोजित छठें अंक्टाड की मुख्य विषय वस्तु व्यापार, वित्त एवं पण्य पदार्थ होगा। अंक्टाड द्वारा हाल में प्रकाशित एक रिपोर्ट के अनुसार, उसने विश्व बैंक, अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष एवं द्विपक्षीय स्रोतों द्वारा विकासशील देशो की अर्थव्यवस्था को सुधारने हेतु आपातकालीन वित्तीय [illegible] प्रदान करने का सुझाव [illegible] किया है।

● [illegible]न जांच आयोग का रिपोर्ट-सितम्बर 82 में बेरुत स्थित साब्रा एवं शतीला फिलिस्तीनी शरणार्थी शिविरों में हजारों फिलिस्तीनियों की हत्या के लिये इस्रायली रक्षामन्त्री एरियल शेरों को जिम्मेदार बताया। जांच आयोग ने कहा कि शेरों ने फलेंजी अर्द्ध सैनिकों को इन शिविरों में जानबूझ कर भेजा और नरसंहार को रोकने के लिये कोई कदम नहीं उठा कर अपने कर्तव्य की अवहेलना की। जांच आयोग ने शेरों के पदत्याग/बरखास्ती की मांग की है।

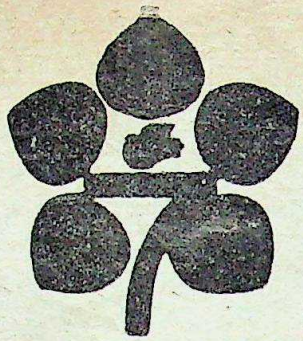

NON-ALIGNED SUMMIT
NEW DELHI-1983

■ महत्वपूर्ण आकड़े

● वर्ष 1982-83 में प्रवासी भारतीयों ने भारत में 11 करोड़ रु. की पूंजी निवेश के लिये आवेदन किया है।

● वर्ष 1982 में हरिजनों पर अत्याचारों और हत्याओं के सर्वाधिक मामलें उत्तर प्रदेश (3977 मामलों में 223 हत्या) में हुए।

● भारत के 87 जिलों में कोई भी उद्योग नहीं है।

● 1981 में कुल 92,330 विचाराधीन कैदी थे। इनमें पिछले पन्द्रह माह में चार सौ से अधिक की जेल में मृत्यु हुई। सर्वाधिक विचाराधीन कैदी उत्तर प्रदेश (17822) में हैं।

● वर्ष 1982-83 में 84.44 करोड़ रु. मूल्य की 4.10 लाख मैट्रिक टन चीनी का निर्यात भारत ने किया।

● जनवरी 82 में मुद्रास्फीति का वार्षिक दर 6.4% थी। जनवरी 83 में यह घटकर 2.8% हो गयी।

● वर्ष 1982-83 में कुल अनाज का अनुमानित उत्पादन पिछले वर्ष के रिकार्ड उत्पादन 133 मिलियन टन से 5 से 8 मिलियन टन कम हुआ।

● 1982-83 में सूखे के कारण 4.8 करोड़ हैक्टेयर भूमि तथा 31.2 करोड़ लोग प्रभावित हुए।

● वर्ष 1982-83 में जनजातीय उपयोजनाओं के लिये विशेष केन्द्रीय सहायता को 85 करोड़ रु. से बढ़ा कर 95 करोड़ रु. किया गया।

● देश में आर्थिक मन्दी के फलस्वरूप केन्द्रीय व राज्यों की योजनाओं पर कुल खर्चा 21% बढ़ गया।

● 18 फरवरी से प्रारम्भ संसद के बजट सत्र में 21 नये विधेयक पेश किये जायेंगे।

● संयुक्त राष्ट्र मानव अधिकार आयोग की रिपोर्ट के अनुसार, विश्व के 39 देशों में पिछले 15 वर्षों में कम से कम 20 लाख व्यक्तियों को एकपक्षीय फैसलों में फांसी दी गयी। इनमें ईरान, द अफ्रीका, ग्वाटेमाला, कोलम्बिया तथा अर्जेन्टीना का रिकार्ड उल्लेखनीय है।

● वर्ष 1981-82 में प्रति व्यक्ति में 11.3% की वृद्धि हुई 1वर्ष 1981-82 में व्यक्ति आय स्थिर मूल्य पर (1970-71 आधार) तथा वर्तमान मूल्य पर क्रमशः 720 रु. तथा 1750 रु. रही।

● वर्ष 1983 में बाम्बे हाई से निकली 40 लाख टन खनिज तेल का निर्यात भारत करेगा।

● रिजर्व बैंक ऑव इण्डिया ने सभी राज्यो को मिलाकर 672 करोड़ रु. के ओवर ड्राफ्ट की सुविधा प्रदान कर रखी है।

● वर्ष 1982 में 64.78 करोड़ का अवैध तस्करी का माल पकड़ा गया। कोफेपोसा के अन्तर्गत इस वर्ष 51[illegible] व्यक्तियो को नजरबन्द किया गया।

● चालू वित्त वर्ष में इण्डियन एयर लाइन्स को 13 करोड़ रु. का लाभ होने का अनुमान है। इण्डियन एयर लाइन्स प्रति दिन 220 उड़ाने भरती है। वर्ष 1981-82 मे 61.7 लाख लोगों की ढुलाई की जबकि वर्ष 82-83 में 70 लाख की उम्मीद है। विमान सेवा की कुल आमदनी 45[illegible] करोड़ रु. होने की सम्भावना है जिसमें ईंधन का खर्चा 40% है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

● इस शताब्दी के अन्त तक भारत में 100000 मेगावाट (वर्तमान 40000 मेगावाट) विद्युत उत्पन्न करने का लक्ष्य रखा गया है।

● गैर तेल उत्पादक विकासशील राष्ट्रों में मुद्रास्फीति की दर 39.2% है।

● वर्ष 2004 तक भारत 100 मिलियन टन खनिज तेल का उत्पादन करेगा।

● सं. रा. अमेरिका द्वारा पाकिस्तान को प्रति वर्ष दी जाने वाली सैनिक सहायता को 150 मिलियन डालर से बढ़ाकर 200 मिलियन डालर किया गया है।

● वर्ष 1982 में फिल्म सेन्सर बोर्ड ने 12 फीचर फिल्मों को प्रदर्शन पर प्रतिबन्ध लगाया।

■ विशिष्ट अतिथि

● सूर्य बहादुर थापा—प्रधानमन्त्री, नेपाल

● सैम नुजोमा—अध्यक्ष, स्वापो

● अनुरुद्ध जगन्नाथ—प्रधानमन्त्री, मॉरीशस

● डा. एम. कुशुमातमड्जू—विदेश-मन्त्री, इन्डोनेशिया

■ निर्वाचन व नियुक्ति :

● डी. के. गोकाक—अध्यक्ष, भारतीय साहित्य अकादमी

● डी. के. स्वामीनाथन—सदस्य, रेलवे बोर्ड

● होकिसे सेमा—राज्यपाल, हिमाचल प्रदेश

● के. टी. सतारावाला—उपराज्यपाल, गोवा

● ए.एन. बनर्जी—राज्यपाल, कर्नाटक

● ए. पी. शर्मा—राज्यपाल, पंजाब

● एच. के. एल. भगत—केन्द्रीय सूचना व प्रसारण व संसदीय मामले के राज्यमन्त्री

● एन.के.पी. साल्वे—केन्द्रीय इस्पात व खान राज्य मन्त्री

● भगवत झा आजाद—केन्द्रीय खाद्य व आपूर्ति राज्यमन्त्री

● श्रीमती रामदुलारी सिन्हा—केन्द्रीय वाणिज्य राज्यमन्त्री

● मोहम्मद उस्मान आरिफ—केन्द्रीय निर्माण व आवास उपमन्त्री

● खुर्शीद आलम खाँ—केन्द्रीय पर्यटन व नागरिक उड्डयन राज्यमन्त्री

● मोशे एरेन्स—रक्षामन्त्री, इस्रायल

● स्पाइरॅस किप्रायनाऊ—राष्ट्रपति, साईप्रस (पुनर्निर्वाचित)

● रंजीत गुप्ता—उत्तरी यमन में भारतीय राजदूत

● अमरेन्द्र शर्मा—अध्यक्ष, त्रिपुरा विधान सभा

● जग प्रकाश चन्द्र—मुख्य कार्यकारी पार्षद, दिल्ली महानगर परिषद

● वसन्त दादा पाटिल—मुख्यमन्त्री, महाराष्ट्र

● अल्फ्रेडो स्ट्रोसेनॅर—राष्ट्रपति, पराग्वे

● लेव तुल्कोनोव—सम्पादक, इजवेस्तिया (मास्को)

● नटवर सिंह—सातवें गुटनिरपेक्ष शिखर सम्मेलन के महासचिव

■ त्यागपत्र व पदनिवृत्ति

● एन. एन. पाई—अध्यक्ष, आई. डी. बी. आई.

● ए. पी. शर्मा—केन्द्रीय संचारमन्त्री

● भीष्म नारायण सिंह—केन्द्रीय नागरिक आपूर्ति मन्त्री

● चेन्ना रेड्डी—राज्यपाल, पंजाब

● गोविन्द नारायण—राज्यपाल, कर्नाटक

● बाबा साहिब भोंसले—मुख्यमन्त्री, महाराष्ट्र

● महेन्द्र सिंह गुजराल—अध्यक्ष, रेलवे बोर्ड

● सुनील गावस्कर—कप्तान, भारतीय क्रिकेट दल

● मार्शल ये जिनामिंग—चीन के प्रमुख राजनीतिज्ञ

● एरियल शेरों—रक्षामन्त्री, इस्रायल

■ निधन

● के.एन. कौल—सुप्रसिद्ध वनस्पतिशास्त्री

● पी. सी. घोष—प. बंगाल के प्रथम मुख्यमन्त्री व सुप्रसिद्ध गान्धीवादी

● के. पी. गोयनका—प्रख्यात उद्योगपति

● ए. के. सरकार—वरिष्ठ पत्रकार व आनन्द बाजार पत्रिका समूह के मालिक

● ट्रानसेडी पसेरो—इतालवी ओपेरा गायक

● श्रीमती मादीरेड्डी सुलोचना—सुप्रसिद्ध तेलगु उपन्यासकार

● सी. के. दफ्तरी—प्रख्यात न्यायविद

● उज्जल सिंह—पंजाब व तमिलनाडु के भू पू. राज्यपाल

● यूबी ब्लैक—अमेरिकी पियानोवादक

● पीटर नीसीवैन्ड—प्रख्यात अमेरिकी पत्रकार व लेखक

● आत्मा राम—सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

● अब्दुल हक—प्रख्यात उर्दू शायर

■ पुरस्कार व सम्मान

● भारत के तैंतीसवें गणतन्त्र दिवस के उपलक्ष्य में निम्नलिखित को सम्मानित किया गया। भारतरत्न—आचार्य विनोवा भावे (मरणोपरान्त) पद्मभूषण—विष्णु गोविन्द जोग (संगीतज्ञ), अय्यंगर (कर्नाटक संगीत के विशेषज्ञ), वेणुधर सरमा, असमिया लेखक, मरणोपरान्त रिचर्ड एटनबरो (फिल्म निर्देशक), प्रेम नजीर (मलायलम फिल्म अभिनेता) राजकुमार (कन्नड़ फिल्म अभिनेता), राजा भलेन्द्र सिंह (भारतीय ओलम्पिक संघ के अध्यक्ष) तथा 10 अन्य। पद्मश्री—विजय अमृतराज (टेनिस), एम डी. वालसम्मा (दौड़ कूद), रघुराज (चेयरमैन, एयर इण्डिया), अमिताभ चौधरी (पत्रकार), चांदराम (दौड़कूद), एलिजा नेल्सन (हाकी), हबीब तनवीर (नाटककार), अहिल्या चारी (शिक्षाविद), सरदार शोभा सिंह (चित्रकार), रघुवीर सरन (कवि व लेखक), एस. जी. गोविन्दराजन (संगीत), डा. राज ववेजा (चिकित्सा) तथा 38 अन्य।

● ओलम्पिक आर्डर—अन्तर्राष्ट्रीय ओलम्पिक समिति ने भारत के प्रधान मन्त्री इन्दिरा गान्धी को भारत में ओलम्पिक आन्दोलन को बढ़ावा देने व खेल में रुचि और योगदान के लिये ओलम्पिक आर्डर का स्वर्ण पदक प्रदान करने के निर्णय लिया है।

● अणुव्रत पुरस्कार—हिन्दी सुप्रसिद्ध उपन्यासकार जैनेन्द्र कुमार जैन को 1982 के लिये 1 लाख के अणुव्रत पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

● नौवां अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह—3 जनवरी से 17 जनवरी तक नई दिल्ली में सम्पन्न नौवें अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह के प्रतियोगिता वर्ग में शामिल 24 फीचर फिल्मों, तथा लघु फिल्म में किसी को सर्वश्रेष्ठ फिल्म का स्वर्ण मयूर पदक नहीं प्रदान किया गया।

सर्वश्रेष्ठ अभिनेता (रजत मयूर पदक)—नार्ल एल शेरिफ (बस ड्राइवर, मिस्र),

सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री (रजत मयूर पदक)—मारिना स्तारिख (ओपन हार्ट, सोवियत संघ)

जुरी का विशेष पुरस्कार—चोख (निर्देशक : उपलेन्दु चक्रवर्ती, भारत) ग्रे फॉक्स (कनाडा) व ऐवलांश (बुलगारिया) को जुरी का विशेष स्मारक प्राप्त हुआ। लघु फिल्म वर्ग में मिलन मिलोव (चेकस्लोवाकिया) को "लैबरिन्थ" के लिये सर्वश्रेष्ठ निर्देशक का पुरस्कार मिला। नौ सदस्यीय निर्णायक समिति के अध्यक्ष लिंडसु एन्डरसन (ब्रिटेन) थे। अदूर गोपाल कृष्णन् व वैजयन्ती माला (भारत) भी इसके सदस्य थे।

● जेरुसलम पुरस्कार—प्रख्यात अंग्रेजी लेखक वी. एस नेपोल द्वारा अपने सभी रचनाओं विशेषकर 'गुरिल्लास' में समाज में व्यक्ति के स्वतन्त्रता के प्रतिरक्षक के रूप में सामने आने के लिये 1982 के जेरूसलम पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

● लेडी ऑव दि डिकेड फॉर पीस—नेशनल इन्टीग्रेशन असेम्बली, नई दिल्ली ने अन्तर्राष्ट्रीय सद्भाव, विश्व शान्ति व गुट निरपेक्ष आन्दोलन में भारत की प्रधानमन्त्री इन्दिरा गांधी को महान भूमिका के लिये "लेडी ऑव द डिकेड फॉर पीस" के सम्मान से विभूषित किया।

● आर्यभट्ट पदक—भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी ने वर्ष 1983 के लिये अन्तरिक्ष आयोग के अध्यक्ष एवं अन्तरिक्ष विभाग के सचिव प्रो. सतीश धवन को वायु गतिकी में विशिष्ट योगदान के लिये आर्यभट्ट पदक से सम्मानित किया है।

● मार्टिन लूथर किंग जूनियर शान्ति पुरस्कार—शान्ति व अहिंसा के लिये अभूतपूर्व योगदान के लिये 'गान्धी' फिल्म के निर्देशक रिचर्ड एटनबरो को मार्टिन लूथर किंग जूनियर शान्ति पुरस्कार 1983 के लिये मनोनीत किया गया है।

● संस्कृति पुरस्कार—विभिन्न क्षेत्रों में नवोदित प्रतिभाओं की उपलब्धियों को मान्यता प्रदान करने के लिये 1982 का संस्कृति पुरस्कार विनोद भारद्वाज (सृजानात्मक साहित्य), चैतन्य कलबाग (पत्रकारिता), गुरुचरन सिंह (ललित कला), मधुप मोदगल्य (नृत्य, नाटक व संगीत) तथा संजीवनी नामक संस्था (सामाजिक कार्य) को प्रदान किया गया।

● मानव अधिकार पुरस्कार—जिमी कार्टर

● आर. डी. बिरला. स्मारक कोश राष्ट्रीय पुरस्कार—डा. राम अवतार सिंह (चिकित्सा क्षेत्र में योगदान)

● द्वितीय आर. डी. बिरला स्मृति पुरस्कार—डा. वी. वी. श्रीकान्तन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

• अर्जुन पुरस्कार—क्यूबाई कवि निकोलस ग्युलेन

• न्यू यार्क फिल्म क्रिटिक्स् अवार्ड 1982—सर्वश्रेष्ठ फिल्म—गान्धी, सर्वश्रेष्ठ अभिनेता—बेन किंग्सले (गान्धी), सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री—मेरील स्ट्रीप (सोफ्ल्स् चॉयस)

• टाइम मैन ऑव द इयर—मानव निर्मित कैम्प्यूटर

• संगीत-नाटक अकादमी पुरस्कार—[illegible]वन्ती माला (नृत्यांगना), अल्ला [illegible]ला (तबला वादक), एम. एस. [illegible]कृष्णन् (वायोलिन वादक), टी. [illegible] त्यागराजन (कर्नाटक संगीत), [illegible]नय राघव राव (सर्जनात्मक संगीत) [illegible]न्त राव देशपान्डे (हिन्दुस्तानी [illegible]ीत) सहित 16 कलाकारों को [illegible]982 के लिये संगीत-नाटक अकादमी [illegible]कार के लिये चुना गया है।

• जेन्टलमैन ऑव द इयर 1982—[illegible]द्ध उद्योगपति जे. आर. डी. टाटा [illegible] उनके साहस, विपत्ति के समय [illegible]ीनता, जोखिम भरे कार्यों को [illegible]ने का अद्यम उत्साह तथा सम्पूर्ण [illegible]क्तित्व के लिये वर्ष 1982 के जेन्टल[illegible] ऑव द इयर के सम्मान से [illegible]ूषित किया गया।

[illegible] वर्ष का आविष्कारक—प्लास्टिक [illegible]तु से बने कृत्रिम हृदय के सफल [illegible]ष्कारक डा. राबर्ट के. जार्विक के [illegible]मान से विभूषित किया गया।

• कालीदास सम्मान—प्रसिद्ध नाटक[illegible] शम्भु मित्र को 1982 के काली[illegible] सम्मान से विभूषित किया गया। [illegible]ी कवि व लेखक भवानी प्रसाद [illegible], शास्त्रीय संगीत के गायक प. [illegible]र गन्धर्व, व प्लास्टिक कला के के प्रख्यात शिल्पी रमेश पाटिल पटेरिया को शिखर सम्मान से विभूषित किया गया। ये सभी पुरस्कार मध्य प्रदेश सरकार द्वारा संयोजित की गयी हैं।

• चकल्लस पुरस्कार—हिन्दी के प्रसिद्ध व्यंग्यकार शरद् जोशी को बीस हजार रु. के चकल्लस पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

• सं. राष्ट्र का सम्मान—सं. रा. के आर्थिक व सामाजिक परिषद ने ब्रह्म कुमारीस विश्व आध्यात्मिक विश्वविद्यालय (माउन्ट आबु, राजस्थान), व बालकान जी बारी नामक संस्था को परिषद में सलाहकार का दर्जा प्रदान करके सम्मानित किया।

• मनीला फिल्म समारोह—जनवरी-फरवरी 82 में आयोजित मनीला फिल्म समारोह के पुरस्कार विजेता इस प्रकार हैं : सर्वश्रेष्ठ फिल्म—माइ मेमोरीज् ऑव ओल्ड बीजिंग (चीन); सर्वश्रेष्ठ निर्देशक—जेनोस रोजसा (हंगरी),—सर्वश्रेष्ठ अभिनेता—तत्सुया काशुअडाई (जापान); सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री—यूइम हे जा (कोरिया), जाई जीन (चीन) तथा रिचर्ड एटनबरो को विशेष गोल्डेन ईगल पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

• गोल्डेन ग्लोब पुरस्कार—रिचर्ड एटनबरो द्वारा निर्देशित 'गान्धी' फिल्म को गोल्डेन ग्लोब का सर्वश्रेष्ठ निर्देशन, सर्वश्रेष्ठ स्क्रीन प्ले, सर्वश्रेष्ठ फिल्म, सर्वश्रेष्ठ अभिनेता आदि के पाँच पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

■ विविधा :

• सं. रा. अमेरिका अन्तर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा आयोग में पुनः वापस लौट आया है। सं. रा. अमेरिका ने आयोग के तथाकथित इस्रायली विरोधी कार्यवाही के विरोध में इस आयोग का बहिष्कार किया था। • गुटनिरपेक्ष आन्दोलन में इस समय 97 पूर्ण, 14 पर्यवेक्षक तथा 24 अतिथि सदस्य है। सातवें शिखर सम्मेलन के दौरान बारबोड्स, कोलम्बिया तथा बहामा को पूर्ण सदस्यता प्रदान करने पर विचार किया जायेगा। • भूटान का एयरलाइन्स—ड्रुक एयर के डोरनियर विमान 228 पाँरो से कलकत्ता की उड़ान भर कर विश्व की नवीनतम एयर लाइन्स के रूप में सामने आया। • जापान में सँकान से होन्सका द्वीप के मध्य विश्व के सबसे लम्बे सुरंग (53.85 किमी.) का उद्घाटन 29 जनवरी 82 को किया गया। • 6 फरवरी 83 को 1979 में अंगीकृत संविधान को अनिश्चित काल के लिये निलम्बित कर दिया गया। • भारतीय परमाणु विभाग ने इन्दौर में एडवान्स्ड टेक्नोलॉजी सेन्टर (C.A.T.) स्थापित करने का निर्णय लिया है। • सं. रा. अमेरिका ने 8 फरवरी 82 को बगैर परमाणु वार हेड के आधुनिक प्रक्षेपास्त्र, जिसका नामकरण अभी तक नहीं किया गया, का प्रथम परीक्षण किया। • वर्ष 1984 के बजट में अमेरिकी राष्ट्रपति रीगन ने रक्षा व्यय के लिये 2 खरब 39 अरब डालर की राशि निश्चित किया है। 1984 के लिये सुरक्षा सहायता पर 4.6 खरब डालर व्यय की व्यवस्था है जो चालू वर्ष से लगभग 600 अरब डालर अधिक है। ■ ■

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(पृष्ठ 4 का शेष)

को संसद के साधारण बहुमत द्वारा परिवर्तित किया जा सकता है। अनुच्छेद 4, 189 तथा 240 का संशोधन इसी सामान्य विधि के अन्तर्गत आता है।

(2) संसद के विशेष बहुमत तथा राज्यों के अनुसमर्थन द्वारा—कुछ संवैधानिक उपबन्ध जैसे अनुच्छेद 54, 55, 73, 162, 241, 245-255, 368, भाग 4 का अध्याय 4, भाग 6 का अध्याय 5 तथा अनुसूची (4) ऐसे भी है जिनमें संविधान के लिये संसद के विशिष्ट बहुमत अर्थात संसद के प्रत्येक सदन के सदस्यों का बहुमत तथा कम से कम 50% राज्यों के विधान मंडलों की स्वीकृति आवश्यक है।

(3) संसद के विशेष बहुमत द्वारा—इस वर्ग में संविधान के वे सभी उपबन्ध समाविष्ट हैं जो उपर्युक्त दो वर्गों 1 तथा 3 में सम्मिलित नहीं हैं। इनके संशोधन के लिये संसद के दोनों सदनों के बहुमत तथा उपस्थित सदस्यों के 2/3 बहुमत की आवश्यकता पड़ती है। हांलाकि अब तक भारतीय संविधान में 45 संवैधानिक संशोधन हो चुके है परन्तु प्रथम (1951), चतुर्थ (1955), सप्तम (1956), पन्द्रहवाँ (1963), चौबीसवां (1971), पच्चीसवां (1971), अड़तीसवां (1975), चवालीसवां (1976), चवालीसवां (1978), संशोधन अधिनियम प्रमुख है।

विधान परिषद् असम; गुजरात; हरियाणा; हिमाचल प्रदेश; केरल; मध्य प्रदेश, मणिपुर, मेघालय नागालैण्ड, उड़ीसा; पंजाब; राजस्थान; सिक्किम; त्रिपुरा पश्चिम बंगाल; दिल्ली; गोवा; दमन; डयू; मिजोरम; पान्डेचरी तथा अरुणाचल में विधान परिषद नहीं है।

उच्च न्यायालय—भारत में उच्चन्यायालय तथा उनके क्षेत्राधिकार इस प्रकार है—1. इलाहाबाद (उत्तर-प्रदेश), 2. आन्ध्र प्रदेश (आन्ध्र प्रदेश), 3. गौहाटी (असम, मणिपुर, मेघालय, नागालैण्ड, अरुणाचल, मिजोरम), 4. बम्बई (महाराष्ट्र,) गोआ दमन य ड्यू दादर व नगर हवेली), 5. कलकत्ता (पश्चिम बंगाल, अन्दमान निकोबार), 6. दिल्ली (दिल्ली), 7, गुजरात (गुजरात), 8. हिमाचल प्रदेश (हिमाचल प्रदेश), 9. जम्मू-कश्मीर (जम्मू कश्मीर), 10. केरल (केरल, लक्ष्यदीप), 11. मध्य प्रदेश (मध्य प्रदेश); 12. मद्रास (तमिलनाडु, पान्डेचरी)। 13. कर्नाटक (कर्नाटक), 14. उड़ीसा (उड़ीसा), 15. पटना (बिहार), 16. पंजाब व हरियाणा (पंजाब, हरियाणा, चन्डीगढ़), 17. राजस्थान (राजस्थान) व 18. सिक्किम (सिक्किम)।

महत्वपूर्ण शासकीय पदाधिकारी : कुछ ज्ञान-वर्द्धक तथ्य

(1) राष्ट्रपति—राष्ट्रपति का निर्वाचन संसद के दोनों सदनों एवं राज्य विधान सभा के निर्वाचित सदस्यों द्वारा आनुपातिक प्रतिनिधित्व के अनुसार एकल संक्रमणीय मत से करते हैं। राष्ट्रपति पद पर निर्वाचित होने वाले व्यक्ति के लिये आवश्यक है कि (क) वह भारत का नागरिक हो, (ख) 35 वर्ष की आयु पूरी कर चुका हो, (ग) लोकसभा के लिये सदस्य निर्वाचित होने की अर्हता रखता हो, (घ) किसी भी सरकार—केन्द्र, राज्य या स्थानीय—के अधीन कोई लाभ का पद ग्रहण नहीं किये हो। राष्ट्रपति को सर्वोच्च न्यायालय का न्यायाधीश शपथ ग्रहण करवाता है। राष्ट्रपति का कार्यकाल पांच वर्ष का है। अन्य मतों एवं सुविधाओं के अलावा राष्ट्रपति को दस हजार रुपये मासिक वेतन प्राप्त होता है। अवकाश प्राप्त राष्ट्रपति को पन्द्रह हजार रुपये वार्षिक पेन्शन आजीवन मिलती है। संविधान का उल्लंघन करने या उसकी धाराओं के विरुद्ध आचरण करने पर राष्ट्रपति को संसद के दो तिहाई बहुमत तथा अभियोग पर जाँच पड़ताल करने के पश्चात संसद द्वारा महाभियोग की प्रक्रिया द्वारा हटाया जा सकता है। राष्ट्रपति अपना त्यागपत्र उपराष्ट्रपति को सम्बोधित करता है।

(2) उपराष्ट्रपति—उपराष्ट्रपति का निर्वाचन संसद के दोनों सदनों के सदस्यों द्वारा आनुपातिक प्रतिनिधित्व के अनुसार एकल संक्रमणीय मत से किया जाता है। उपराष्ट्रपति पद पर निर्वाचित होने वाले व्यक्ति की वही अर्हताएं होनी चाहिए जो राष्ट्रपति पद के लिये हैं। अन्तर केवल यह है कि उसे राज्यसभा, न कि लोकसभा के लिये सदस्य निर्वाचित होने के लिये अर्हताएं रखनी चाहिए। उपराष्ट्रपति को राष्ट्रपति पद की शपथ ग्रहण करवाता है। उपराष्ट्रपति का कार्यकाल पांच वर्ष का होता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। अन्य भत्तों एवं सुविधाओं के अतिरिक्त उपराष्ट्रपति को 2200+500 रुपये का वेतन प्राप्त होता है। उपराष्ट्रपति को किसी भी आधार पर संसद के दोनों सदनों के बहुमत एवं उस पर दोषारोप तथा जांच पड़ताल किये बिना पदच्युत किया जा सकता है। उपराष्ट्रपति अपना त्यागपत्र राष्ट्रपति को सम्बोधित करता है।

(3) सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश एवं न्यायाधीश—सर्वोच्च न्यायालय में एक मुख्य न्यायाधीश के अतिरिक्त अधिकतम 17 न्यायाधीश होते हैं। विशेष स्थिति उत्पन्न होने पर सर्वोच्च न्यायालय का मुख्य न्यायाधीश राष्ट्रपति की अनुमति लेकर तदर्थ न्यायाधीशों की नियुक्ति कर सकता है। मुख्य न्यायाधीश की नियुक्ति राष्ट्रपति करता है। न्यायाधीशों की नियुक्ति में राष्ट्रपति का मुख्य न्यायाधीश से परामर्श करना अनिवार्य है। सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीशों के लिये आवश्यक है कि (क) वह भारत का नागरिक हो, (ख) कम से कम 5 वर्ष तक उच्च न्यायालय में न्यायाधीश या कम से कम 10 वर्षों तक उच्च न्यायालय का अधिवक्ता रह चुका हो या राष्ट्रपति के विचार में पारगंत विधिवेत्ता हो। राष्ट्रपति इन न्यायाधीशों को शपथ ग्रहण करवाता है। मुख्य न्यायाधीश व न्यायाधीश को क्रमशः 5000 रु. व 4000 रु. मासिक वेतन प्राप्त होता है। वे 65 वर्ष की आयु के पश्चात अवकाश प्राप्त करते हैं। सिद्ध कदाचार या अक्षमता के लिये संसद के दो तिहाई बहुमत द्वारा समावेदन करने पर राष्ट्रपति सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश को पदविमुक्त कर सकता है। न्यायाधीश अपना त्यागपत्र राष्ट्रपति को सम्बोधित करते हैं।

(4) लोकसभा-लोकसभा की अधिकतम सदस्य संख्या 547 (545 निर्वाचित व 2 मनोनीत) निश्चित किया गया है। इनमें 525 सदस्यों को राज्य की जनता द्वारा एवं 20 सदस्यों को केन्द्र प्रशासित प्रदेश की जनता द्वारा प्रत्यक्ष रूप से निर्वाचित किया जाता है। राज्यों में उत्तर प्रदेश (85) तथा केन्द्र प्रशासित प्रदेशों में दिल्ली (7) सर्वाधिक प्रतिनिधियों को निर्वाचित करते है। लोक सभा की सदस्यता के लिये आवश्यक है कि (क) वह भारत का नागरिक हो, (ख) उसकी आयु 25 वर्ष या अधिक हो, (ख) किसी सरकार—केन्द्र व राज्य के अन्तर्गत वह कोई लाभ का पद न धारण किये हुए हो, (घ) किसी न्यायालय द्वारा पागल या दिवालिया न ठहराया गया हो, (च) अन्य ऐसी योग्यताएं रखता हो, जिसे संसद विधि द्वारा निर्धारित कर दे। लोक सभा के सदस्य राष्ट्रपति के सामने शपथ ग्रहण करते हैं। अन्य भत्तों एवं सुविधाओं के आलावा लोकसभा के सदस्य को 500 रु. प्रति मेन्सेम (Mensem) प्राप्त होता है। लोकसभा का कार्यकाल पांच वर्ष का होता है वशर्ते कि इसके पूर्व इसे भंग कर पुनः निर्वाचन कराया जाता हो। लोकसभा की कार्यवाही का संचालन करने एवं व्यवस्था बनाये रखने के लिये लोक सभा के सदस्य अपने में से किसी को अध्यक्ष निर्वाचित करते है। अध्यक्ष को 2050 रुपये मासिक वेतन मिलता है और उसे सदस्यों के बहुमत से प्रस्ताव पारित कर पदच्युत किया जा सकता है।

(5) राज्य सभा—राज्य सभा की अधिकतम सदस्य संख्या 250 निश्चित किया गया है। इनमें 228 सदस्यों का निर्वाचन राज्यों की विधान सभाओं के सदस्यों आनुपातिक प्रतिनिधित्व के अनुसार एकल संक्रमणीय मत से करते हैं। राष्ट्रपति द्वारा मनोनीत 12 सदस्य ऐसे होते है जो साहित्य, कला, विज्ञान और समाज सेवा के क्षेत्र में विशेष योग्यता व अनुभव प्राप्त किये हो। राज्य सभा की सदस्यता के लिये वही अर्हताएं आवश्यक है जो लोक सभा की सदस्यता के लिये। अन्तर केवल इतना है कि राज्य सभा के लिये कम से 30 वर्ष- न कि 25 वर्ष, की आयु होनी चाहिए। राज्य सभा के सदस्य राष्ट्रपति के सामने शपथ ग्रहण करते है। राज्य सभा एक स्थायी सदन है। राज्य सभा के सदस्य 6 वर्ष के लिये चुने जाते हैं। राज्य सभा की कार्यवाही का संचालन उपराष्ट्रपति, जो कि सदन का पदेन सभापति होता है, करता है।

(6) राज्यपाल—एक ही व्यक्ति को एक या एक से अधिक राज्यों के लिये राज्यपाल को राष्ट्रपति अपने हस्ताक्षर और मुद्रा सहित अधिपत्र द्वारा नियुक्त करता करता है। राज्यपाल पद के लिये नियुक्त व्यक्ति के लिये आवश्यक है कि (क) वह भारत का नागरिक हो, (ख) वह 35 वर्ष की आयु पूरी कर चुका हो, (ग) किसी भी सरकार—केन्द्र या राज्य—के अधीन लाभ का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पद न धारण किये हों। राज्यपाल को पद ग्रहण के लिये उस राज्य के उच्चन्यायालय के मुख्य न्यायाधीश के सामने शपथ लेनी पड़ती है। अन्य भत्तों व सुविधाओं के अतिरिक्त 5500 रुपये का मासिक वेतन राज्यपाल को प्राप्त होता है। वह राष्ट्रपति के प्रसाद पर्यन्त अपने पद पर रहता है। अर्थात वह किसी भी आधार पर राष्ट्रपति द्वारा पदविमुक्त किया जा सकता है। राज्यपाल अपना त्यागपत्र राष्ट्रपति को सम्बोधित करता है।

(7) उच्च न्यायालय—प्रत्येक राज्य/राज्यों के उच्च न्यायालयों में एक मुख्य न्यायाधीश तथा अन्य न्यायाधीश होते हैं जिनकी संख्या निर्धारित करने का अधिकार राष्ट्रपति को है। राष्ट्रपति उच्चन्यायालय के मुख्य न्यायाधीश की नियुक्ति सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश तथा सम्बन्धित राज्य के राज्यपाल के परामर्श से करता है। अन्य न्यायधीशों की नियुक्ति के सम्बन्ध में वह सम्बन्धित राज्य के मुख्य न्यायाधीश से परामर्श करता है। राष्ट्रपति अस्थाई व कार्यवाहक न्यायाधीश की भी नियुक्ति कर सकता है। कोई व्यक्ति उच्चन्यायालय का न्यायाधीश तभी बन सकता है जब कि वह (क) भारत का नागरिक हो, (ख) भारत के राज्य क्षेत्र में किसी न्यायिक पद पर 10 वर्षों तक पदासीन रहा हो या उच्च न्यायालय में 10 वर्षों तक वकालत किया हो। इन न्यायाधीशों को सम्बन्धित राज्य का राज्यपाल शपथ ग्रहण करवाता है। उच्च न्यायालय का मुख्य न्यायाधीश व न्यायाधीश क्रमशः 4000 रुपये व 3500 रुपये मासिक वेतन प्राप्त करते हैं। उच्च न्यायालय का न्यायाधीश 62 वर्ष की आयु में अवकाश ग्रहण करता है। सिद्ध कदाचार या अक्षमता के लिये संसद के 2/3 बहुमत द्वारा समावेदन करने पर राष्ट्रपति न्यायाधीश को पद विमुक्त कर सकता है। उच्च न्यायालय का न्यायाधीश अपना त्यागपत्र राष्ट्रपति को सुपुर्द करता है।

(8) विधान सभा—किसी राज्य विधान सभा की सदस्य संख्या उसकी जनसंख्या के अनुसार 500 से अधिक व 60 से कम नहीं होना चाहिए। राज्यपाल को विधान सभा में एग्लों इण्डियन समुदाय के कुछ सदस्यों को मनोनीत करने का अधिकार है। असम विधान सभा में स्वायत्तशासी आदिम जिलों के लिये स्थान सुरक्षित किये गये हैं। विधान सभा के सदस्यों के लिये वही अर्हताएं आवश्यक हैं जो लोक सभा के सदस्य के लिए निश्चित किये गये हैं।

(9) विधान परिषद—राज्यों के लिये विधान परिषद का होना अनिवार्य नहीं है। विधान परिषद की सदस्य संख्या कम से कम 40, तथा अधिकतम सम्बन्धित राज्य के विधान सभा के कुल सदस्य संख्या के एक तिहाई से अधिक नहीं होना चाहिए। विधान परिषद के संगठन की अन्तिम शक्ति संसद के पास है। विधान परिषद के 5/6 सदस्य अप्रत्यक्ष रूप से आनुपातिक प्रतिनिधित्व के आधार पर एकल संक्रमणीय मत द्वारा चार भिन्न-भिन्न निर्वाचक मण्डलों द्वारा निर्वाचित होते हैं और शेष $\frac{1}{6}$ सदस्य ऐसे व्यक्ति में से राज्यपाल मनोनीत करता है जिन्हें साहित्य, कला, विज्ञान, सहकारिता व समाज सेवा के क्षेत्र में विशेष योग्यता व अनुभव प्राप्त है। विधान परिषद के सदस्यों के लिये वही अर्हताएं आवश्यक हैं जो राज्य सभा के सदस्य के लिये निश्चित किये गये हैं। ■ ■

उत्थान प्रतियोगिता अकादमी, इलाहाबाद

सफलता का प्रवेशद्वार

हिन्दी-भाषी परीक्षार्थियों की लम्बी प्रतीक्षा का अन्त भारत में सर्व प्रथम-अनुभवी शिक्षकों के परिश्रम का परिणाम हिन्दी माध्यम से आई. ए. एस. का अद्वितीय करेस-पांडेंस कोर्स। 1983 के संशोधित पाठ्यक्रमानुसार तैयार विभिन्न कोर्स।

भारतीय प्रशासनिक सेवायें (प्रारम्भिक) परीक्षा, 1983

सामान्य अध्ययन व चयनित वैकल्पिक विषयों के लिए पत्राचार (Correspondence) कोर्स में प्रवेश प्रारम्भ

विवरण पुस्तिका हेतु रुपये 5/- मनीआर्डर द्वारा अधोलिखित पते पर प्रेषित करें

उत्थान प्रतियोगिता अकादमी
59, नेहरू नगर, मीरापुर, इलाहाबाद-211003

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन्दर्भ : अन्तरराष्ट्रीय वृद्ध वर्ष 1982

वृद्धावस्था : यौवन का विकास, सार्थकता की तलाश

प्रदीप कुमार वर्मा 'रूप'

एक

वृद्धावस्था को जीवन के चरम बिन्दु की ओर अग्रसर होने की एक अवस्था अथवा पड़ाव के रूप में समझना किञ्चितः अनुचित होगा। सार्थकता की खोज का परमोत्कर्ष ही वृद्धावस्था का रूप धारण करता है। "निरन्तर विकास ही शाश्वत यौवन है"—वृद्धावस्था इस जीवन में इस विकास के परमबिन्दु को द्योतित करती है। वृद्धावस्था अन्तश्चेतना के बहुरूपी आयामों के विवर्तन की ओर इङ्गित करती है। मानसी प्रज्ञा की दीप्तोज्ज्वलता, आत्मसंदीप्ति व तेजस्विता को प्रदीप्त करती है—वृद्धावस्था। विश्व चेतना के चिरयुवा मनीषी ब्रह्मर्षि श्री अरविन्द कह गये हैं : प्रगति करने का अर्थ है अब तक अधिकृत योग्यताओं को बिना रुके निरन्तर पूर्णता की ओर ले जाना। बुढ़ापा आयु बढ़ी हो जाने से नहीं आता, बल्कि विकसित होने और प्रगति करने की अयोग्यता के कारण अथवा विकसित होना और प्रगति अस्वीकार कर देने के कारण आता है....ज्यों ही मनुष्य जीवन में स्थित हो जाने और पुराने प्रयासों की कमाई खाने की इच्छा करता है, ज्यों ही मनुष्य यह सोचने लगता है कि उसे जो कुछ करना था वह उसे कर चुका है और जो कुछ उसे प्राप्त करना था वह प्राप्त कर चुका है, संक्षेप में, ज्यों ही मनुष्य प्रगति करना, पूर्णता के मार्ग पर अग्रसर होना बन्द कर देता है, त्यों ही उसका पीछे हटना, क्षीण होना निश्चित हो जाता है।"

वर्तमान काल में अस्तित्ववान आर्थिक विषमताओं, निर्वाण सामाजिक चेतना, भावशून्यता व आत्मता-त्विकता की अपेक्षा विकसित होती यन्त्रतात्विकता ने प्राञ्जल मानवीय भावनाओं प्रभृति रश्मित ज्योति-चेतनाओं को अच्छादित कर तमोगुणी 'चेतना' का संचरण किया है; अतः आज वृद्धावस्था यौवन के पर-मोत्कर्ष के रूप में नहीं अपितु अभिशापरूपेण अभिप्रेत की जाती है। अब, वृद्धावस्था की वस्तुपरक स्थिति की ओर प्रशस्त होना आवश्यक हो जाता है।

दो

बीसवीं शताब्दी की एक प्रमुख उपलब्धि है दीर्घ जीवन काल....यह सम्भव हुआ है स्वास्थ्य, स्वास्थ्य-विज्ञान व सुपोषण में सुधार के कारण। अब 75 वर्ष के जीवन-काल को प्राप्त करना सम्भव सा हो गया है। आज वृद्धजनों की संख्या में—जन्मदर की अपेक्षा—वृद्धि तीव्रतर हो रही है। 1950 में 15 से 59 आयु-वर्ग के प्रत्येक 100 वयस्कों पर केवल 19 व्यक्ति ही साठ वर्ष से अधिक वय के थे। 2025 तक इस संख्या का द्विगुणी हो जाने का अनुमान है।

आज विश्व एक विलक्षण जन वृद्धि को अवलोकित कर रहा है। जन्म दर में ह्रास व जीवन-काल में वृद्धि के कारण एक नवीन पीढ़ी उद्भूत हो रही है—साठोत्तर वय के वृद्धजनों की। इस प्रकार विश्व की जन संरचना में एक अनुपम परिवर्तन आ रहा है। 1975 में केवल 6 देश ऐसे थे जहाँ साठोत्तर पीढ़ी की संख्या 10 मिलियन से अधिक थी; 2025 तक ऐसे देशों की संख्या 19 हो जाने की सम्भावना है। 1950-2025 के मध्य विश्व की जनसंख्या त्रिगुणी हो जाने का अनुमान है; सं. रा. सं. (यू. एन. ओ.) वृद्धजनों की संख्या में पञ्च-गुणी वृद्धि की भविष्यवाणी करता है। अतः 2025 में प्रत्येक सात व्यक्तियों में एक व्यक्ति साठ वर्ष से अधिक का होगा....1950 में 12 व्यक्तियों में केवल एक ही साठोत्तर वय का व्यक्ति था। इसका परिणाम यह होगा कि 2025 में लगभग एक बिलियन साठोत्तर वयो-वृद्धों का अन्नपोषण करना होगा....किन्तु, इनका पोषण करने वालों की संख्या अपेक्षाकृत कम होगी.... वृद्धजनों के कौशल का युवाजनों के साथ सुमुचित उप-योग करने से ही इस समस्या का निदान सम्भव हो सकेगा।

जन संरचना में इस अप्रतिम परिवर्तन के दो प्रमुख कारणों की व्याख्या करना असंगत न होगा....शताब्दियों से युवाजनों की संख्या वृद्धजनों से अधिक रही है किन्तु 2025 तक स्थिति इसके विपरीत हो जाएगी। 1950-2025 तक जन्मदर अर्द्ध हो जाएगी किन्तु, औसत प्रत्याशित आयु 47 से 75 हो जाने का पूर्वानुमान है। विकसित देशों में वृद्धजनों की मृत्युदर निरन्तर ह्रासो-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न्मुख है वहीं विकासशील देशों में 40% मृत्यु पाँच वर्ष से कम वय के बच्चों की होती है जो कुपोषण, निर्धनता व व्याधियों के कारण दीर्घायु से वंचित रह जाते हैं। इन विकासशील देशों में स्वास्थ्य-विकास/सुधार हेतु हो रहे प्रयत्नों के प्रभाववश वृद्धजनों की सर्वाधिक वृद्धि इन निर्धन देशों में होगी....सुपोषण, परिवार कल्याण व परिसीमन के निमित्त प्रयासों के परिणामस्वरूप वर्तमान पीढ़ी दीर्घायु होगी तथा समस्त जनसंख्या वार्द्धक्य को प्राप्त होगी।

वर्तमान किशोर-किशोरियों को वृद्ध होने में अभी 50 वर्ष शेष हैं अतः इस परिवर्तन के परिणाम कुछ देर से अनुभूत होंगे। 2000 तक यह परिवर्तन अल्पतर होगें किन्तु 2025 तक साठोत्तर वयोवृद्धों की संख्या में 40% बढ़ोत्तरी हो जाएगी....बंगलादेश, ब्राजील, मेक्सिको व नाइजेरिया प्रभृति देशो में इनकी संख्या पञ्चदश गुणी हो जाने की सम्भावना है।

वृद्धावस्था का स्पष्टतम प्रभाव विकासशील देशों में अवलोकित होगा। 1975 में तृतीय विश्व में विश्व के वृद्धजनों की आधी संख्या निवास करती थी....2025 में साठोत्तर वयोवृद्धों की संख्या 3/4 हो जाऐगी। यह तथ्य यूनाइटेड नेशन्स वर्ल्ड असेम्बली ऑन एजिंग (26 जुलाई-6 अगस्त 1982) में प्रकाश में आए। यू. एन. डब्ल्यू. ए. ए. के महासचिव विलियम केरीगन ने इन प्रवृत्तियों का अवलोक करते हुए इङ्गित किया कि "इस विलक्षण जनसांख्यिक तथ्य को ध्यानस्थ करके ही शासकों को भविष्य की नीतियों का निर्धारण करना चाहिए।"

तीन

इस भविष्यत्कालिक समस्या के पूर्वाभास के उपरान्त अब यह नितान्त आवश्यक हो जाता है कि इसके निदान हेतु प्रचेष्ट हुआ जाए। वृद्धों की अनागत समस्या के प्रति विश्व सचेत हो रहा है। वृद्धों हेतु सामाजिक सुरक्षा प्रणालियों का विकास किया जा रहा है। लगभग 120 देशों में अवकाश प्राप्त लोगों को निवृत्तिका (Pension) देने का विधान है....किन्तु, इस दिशा में सार्थक प्रयत्न अभी अविद्यमान व अपर्याप्त हैं। आधुनिक उद्योगशालाऐं वृद्धों की अपेक्षा युवाजनों से अधिक अनुरक्त हैं। वृत्ति नियोजन के अभाव में वृद्धजनों का पारम्परिक अवस्थान लुप्तप्राय हो जाऐगा तथा वह "विकास के निश्चेष्ट व असुरक्षित अहेर (उत्पीड़ित) हो जाऐंगे।"

विकासशील देशों में वार्द्धक्य प्राप्त जनसंख्या असुरक्षित व असहता की गति प्राप्त करेगी....उद्योग प्रधान देशों में साठोत्तर वृद्धों के अच्छे स्वास्थ्य व श्रेष्ठ निर्वाहिकाओं के कारण श्रम-शक्ति की संरचना में अनुपमेय परिवर्तन आऐंगे।

प्रायः वृद्धों को निवृत्तिका प्रदान करने हेतु विद्यमान श्रम-शक्ति पर करारोपण किया जाता है....किन्तु वृद्ध जनसंख्या वृद्धि के कारण भविष्य में ऐसा करना दुष्कर हो जाएगा....बेरोजगारी को न्यूनतर करने हेतु सेवा निवृत्ति की आयु किन्हीं देशों में कम की जा रही है। वर्ल्ड असेम्बली ऑन एजिंग की चेतावनी के अनुसार "यह सब एक नवीन समस्या की सृष्टि के साथ एक सामाजिक समस्या के अल्पकालिक व अपूर्ण निदान हैं"....सभा ने कुछ ऐसे उपायों को खोजने का परामर्श दिया जिससे वृद्धों की सुरक्षा व सम्भरण के साथ-साथ उनकी उत्पादन-धर्मी उपयोगिता की सिद्धि हो सके।

पुनः, 2025 तक उद्योग प्रधान देशों में प्रति 3 मतदाताओं में एक मतदाता साठोत्तर वय का होगा.... वही स्वतः देश का नीतिनिर्धारक भी हो जाऐगा।

संयुक्त राज्य ग्रे पैन्थर्स की संस्थापिका मैगी कूह्न की इस विवृति से सत्य का ही बिम्बन होता है कि: वार्द्धक्य ही ऐसी अवस्था है जिसमें हम सभी सहभागी हैं"....आज के युवा कल के वृद्ध हैं: अतः यह सभी के हित में है कि वह एक सुरक्षित भविष्य के लिये कार्य करें।

चार

भारत में भी प्रत्याशित आयु में वृद्धि के कारण सठोत्तर वय के व्यक्तियों में बढ़ोत्तरी हुयी है। 1951 में साठोत्तर वयोवृद्धों की संख्या 20 मिलियन थी.... 1991 में यह संख्या 51 मिलियन हो जायेगी....साठोत्तरी व्यक्तियों की वृद्धि दर सामान्य जनसंख्या वृद्धि से अधिक है। इसका कारण प्रत्याशित आयु में वृद्धि होना है....1901 में पुरुषों व स्त्रियों की औसत आयु क्रमशः 23.63 व 23.96 थी; 1996 में यह क्रमशः 60.1 व 59.8 वर्ष हो जायेगी।

भारत में निवृत्तिकाओं के अतिरिक्त सेवा-निवृत्त लोगो के लिये इम्प्लॉईज' प्रॉविडेन्ट फन्ड स्कीम, पेन्शन स्कीम, व इन्श्योरेन्स स्कीम जैसी योजनाएं कार्यरत हैं। स्वास्थ्य व सामाजिक सुरक्षा हेतु अनेक सरकारी व स्वयं सेवी संस्थाएं इस ओर संलग्न हैं। किन्तु, इन प्रयासों में आवश्यक व सार्थक गति है—यह विषय सन्देह से परे नहीं है।

पाँच

वृद्धजन विषयक कुछ तथ्य :

वृद्धों की समस्याओं की विवृति करने के साथ यह आवश्यक है कि वृद्धावस्था सम्बन्धित भ्रान्त धारणाओं का निराकरण किया जाये। अन्ततः हमें भी वृद्ध होना ही है अतः अपने भविष्य के विषय में अभिज्ञता का अपना ही महत्व है।

(शेष पृष्ठ 80 पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यूनीस्पेस 82 : अन्तरिक्ष में नयी अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था !

अब से लगभग 25 वर्ष पूर्व 4 अक्टूबर, 1957 को सोवियत संघ का कृत्रिम भू-उपग्रह स्पूतनिक अन्तरिक्ष में सफलतापूर्वक प्रक्षेपित किया गया। यह पहला कदम न केवल सोवियत संघ बल्कि सम्पूर्ण मानव सभ्यता के लिये महत्वपूर्ण था। सभी को पूर्ण विश्वास था कि इन वैज्ञानिक उपलब्धियों का समुचित उपयोग मानव जगत के विकास के लिये किया जायेगा। परन्तु, ऐसा न हो सका। विश्व की दो महाशक्तियों—संयुक्त राष्ट्र अमेरिका व सोवियत संघ, ने सम्पूर्ण अन्तरिक्ष को अपनी निजी सम्पत्ति समझ लिया। दोनों राष्ट्र अपनी अन्तरिक्ष सम्बन्धी उपलब्धियों का प्रयोग एक दूसरे को नीचा दिखाने के लिये करने लगे। "इस प्रकार अन्तरिक्ष में इस समय इन दो राष्ट्रों की दादागिरि चल रही है। दोनों एक दूसरे से आगे निकलने की होड़ में लगे हुए हैं।" विज्ञान की हर नयी उपलब्धियों की भांति अन्तरिक्ष का भी सामरिक उपयोग दोनों राष्ट्र सीमित मात्रा में कर रहे हैं। परन्तु, जैसा कि उनके निकट भविष्य के अन्तरिक्ष कार्यक्रम है उससे लगता है कि शीघ्र ही अन्तरिक्ष को युद्ध शास्त्र में महत्व मिलने वाला है जो कि अब तक अन्य को प्राप्त था। परन्तु, अन्तरिक्ष का इस प्रकार उपयोग निश्चित रूप से मानव सभ्यता के हित में नहीं है। अतएव, अन्तरिक्ष के सैन्य उपयोग को रोक कर केवल शान्तिपूर्ण उपयोग में अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग के कार्यक्रम व नीतियाँ बनाने के लिये 'यूनीस्पेस 82' के रूप से बाह्य अन्तरिक्ष के अन्वेषण व शान्तिपूर्ण उपयोग पर दूसरा संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन अगस्त 82 में वियेना में आयोजित किया गया जिसमें 150 से अधिक राष्ट्रों ने भाग लिया।

यूनीस्पेस ने अन्तरिक्ष में अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग बढ़ाने को अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक विकास के लिये, विशेषकर विकासशील राष्ट्रों में, अन्तरिक्ष तकनीकी के अधिकाधिक उपयोग पर बल दिया। इसने सभी राष्ट्रों के मध्य अन्तरिक्ष तकनीकी सहयोग का सुझाव देते हुए संयुक्त राष्ट्र को अन्तरिक्ष सूचना केन्द्र की भूमिका निभाने के लिये आह्वान किया।

यूनीस्पेस के महासचिव प्रो. यशपाल (भारत) ने इस सम्मेलन की समीक्षा करते हुए कहा कि "अन्तरिक्ष में बढ़ रहे सैन्यीकरण को लेकर मुझे गहरी चिन्ता है। वर्षों से उपग्रहों का उपयोग अनेक सैन्य गतिविधियों के लिये किया जाता है, जैसे कि निगरानी के लिये, संचार के लिये, समुद्री बेड़े के मार्गदर्शन के लिये और लड़ाकू विमानों को मौसम की जानकारी देने के लिये। लेकिन, अन्तरिक्ष में युद्धास्त्र भेजने की प्रवृत्ति बढ़ रही है और उसे रणक्षेत्र बनाने की तैयारियाँ शुरु हो गयी हैं। हालांकि सन् 1967 के बाह्य अन्तरिक्ष समझौते के तहत अन्तरिक्ष पर परमाणु अस्त्र और बड़े पैमाने पर विनाश के साधन भेजने या ले जाने पर रोक है। पर, इस प्रतिबन्ध में सभी प्रकार के शस्त्रास्त्र शामिल नहीं हैं। इसके लिये 1967 के समझौते में संशोधन की बहुत बार कोशिश की गयी है पर सफलता नहीं मिली। इसमें कोई दो राय नहीं हो सकती कि मानवता के अधिकतम कल्याण के लिये अन्तरिक्ष का उपयोग करना है, तो अन्तरिक्ष को 'शान्ति क्षेत्र' बनाना होगा। लेकिन, दुर्भाग्य से अन्तरिक्ष सम्बन्धी 75% गतिविधियाँ सैन्य मामलों से जुड़ी हुई है और मेरी यह हार्दिक इच्छा है कि इस प्रवृत्ति को पलटा जाये। इसके लिये हम वैज्ञानिक लोग एक बड़ी भूमिका निभा सकते हैं। क्योंकि, हमें पता है कि अन्तरिक्ष विज्ञान कल्याणकारी विकास का जितना बड़ा साधन है, उतना ही खतरनाक विनाश का भी साधन बन सकता है और अन्तरिक्ष में हथियारों की होड़ के नतीजे बड़े दूरगामी होंगे। दुर्भाग्य यह भी रहा कि 'यूनीस्पेस' 82 में 1967 के अन्तरिक्ष अनुबन्ध में संशोधन करके अन्तरिक्ष को शान्ति क्षेत्र घोषित करने का कोई प्रयास नहीं किया गया।" (दिनमान भाग 19, अंक 3)। यूनीस्पेस ने अपना सुझाव 100 पृष्ठ की रिपोर्ट में पेश किया। संयुक्त राष्ट्र की आम सभा के 37वें अधिवेशन में इसके अभिस्वीकरण के लिये वाद-विवाद होगा। देखना है कि संयुक्त राष्ट्र अन्तरिक्ष सम्बन्धी जानकारियों व तकनीकों को सम्पूर्ण मानव सभ्यता के विकास के लिये उपयोग करने में कितना सफल होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्तरिक्ष कालक्रम (विश्व)

● 1957—अंतरिक्ष युग के आरम्भ का छोतन करता हुआ प्रथम कृत्रिम भूउपग्रह स्पुतनिक 1 यू. एस. एस. आर. द्वारा अक्टूबर में प्रक्षेपित किया जाता है।

● 1959—संयुक्त राष्ट्र महासभा बाह्य अंतरिक्ष में अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग पर बल देने के लिये "बाह्य अंतरिक्ष के शांतिमय उपयोगों पर समिति" की स्थापना करती है।

● 1961—यूरी गैगरीन (यू. एस. एस. आर.) पृथ्वी की परिक्रमा करने वाले प्रथम व्यक्ति हो जाते हैं। उनका अंतरिक्ष यान वॉस्तॉक I लगभग 100 मिनटों में एक परिक्रमा पूरी कर पृथ्वी को लौटता है।

● 1963—महासभा "बाह्य अंतरिक्ष की खोज और उपयोग करने वाले देशों की गतिविधियों को निर्देशित करने वाले वैधानिक सिद्धान्तों की घोषणा" को अपनाती है तथा ये सिद्धांत भी कि बाह्य अंतरिक्ष का प्रयोग समस्त मानवता के कल्याणार्थ होगा और कि बाह्य अंतरिक्ष तथा आकाशीय पिण्ड समान रूप से सभी राष्ट्रों द्वारा खोज तथा उपयोग के लिये खले हैं—राष्ट्रीय अधिग्रहण से मुक्त।

● 1963—अन्तर्राष्ट्रीय दूर संचार संघ, यह सुनिश्चित करने के लिये कि उपग्रह संचार प्रौद्योगिकी का विकास बिना दूसरी रेडियो प्रणालियों में हस्तक्षेप के विकसित किया जा सके, "अंतरिक्ष रेडियो-संचार उद्देश्यों के लिये फ्रीक्वेन्सी बैण्ड्स को नियत करने हेतु असाधारण प्रशासनिक रेडियो सम्मेलन" संयोजित करता है।

● 1965—इन्टेलसैट (अर्ली बर्ड) उपग्रह सं. रा. अमरीका द्वारा प्रक्षपित किया जाता है जो उपग्रह के द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय संचार की सुविधा प्रदान करता है। इनटेलसैट प्रणाली 1964 में 11 राष्ट्रों के द्वारा स्वीकार की गई थी। इस समय 106 देश इस प्रणाली में सहभागी हैं। सदस्यता सभी राष्ट्रों के लिये खुली है।

● 1967—बाह्य अंतरिक्ष संधि लागू हो जाती है। यह 1963 की घोषणा के सिद्धान्तों को सम्मिलित करती है तथा यह भी व्यवस्था करती है कि न्यूक्लीय आयुध अथवा दूसरे महाविनाशकारी आयुध पृथ्वी की कक्षा के चारों ओर अथवा बाह्य अंतरिक्ष में कहीं भी न रखे जायें।

1968—अंतरिक्ष गतिविधियों के व्यावहारिक लाभों तथा गैर-अंतरिक्ष शक्तियों द्वारा उन गतिविधियो में सहयोगिता के उपलब्ध अवसरों के परीक्षण के निमित्त बाह्य अंतरिक्ष की खोज और शांतिमय उपयोगों पर प्रथम संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन वियना में आयोजित किया जाता है।

● 1969—सं. रा. अमरीका चन्द्रमा पर पहली मानव युक्त अवतारणा करता है। अपोलो 11 के अंतरिक्ष यात्री चन्द्रमा के धरातल पर 11 घंटे बिताते हैं, वहाँ से दूर दर्शन के चित्र प्रसारित करते हैं और प्रक्षेपण के 8 दिनों बाद चन्द्रमा की चट्टानों तथा मिट्टी के नमूनों के साथ पृथ्वी पर लौटते हैं।

● 1971—सोवियत रूस सेल्यूत-1 प्रक्षेपित करता है जो रूसी अंतरिक्ष यात्रियों की बार-बार की तथा लम्बी अवधि की यात्रा के लिये प्ररचित प्रथम अंतरिक्ष स्टेशम था। रूसी अंतरिक्ष यात्री बाद के सेल्युत स्टेशनों पर 6 माह की अवधि तक कार्य करते हैं।

● 1972—संयुक्त राज्य अमेरिका लैन्डसैट-1 प्रक्षेपित करता है जो प्राकृतिक संसाधनों तथा धरातल के वातावरण के व्यवस्थित तथा बार-बार के सार्वभौम निरीक्षण के मंतव्य से छोड़ा गया पहला उपग्रह था।

● 1974—सीधे दूरदर्शन प्रसारण में प्रयोगों के लिये सं. रा. अमरीका के द्वारा एप्लीकेशन्स टेक्नॉलजी सैटेलाइट-ए. टी. एस.-6, प्रक्षेपित किया जाता है। उपग्रह का प्रयोग सं. रा. अमेरिका, ब्राजील और भारत में शैक्षिक, चिकित्सा सम्बन्धी तथा सांस्कृतिक उद्देश्यों के लिये दूरदर्शन प्रसारण में प्रयोगों के लिये किया जाता है।

● 1979—पांच भूस्थिर मौसम सम्बन्धी उपग्रह, जिन्हें सं. रा. अमरीका, जापान तथा यूरोपीय अंतरिक्ष अभिकरण द्वारा प्रक्षेपित किया गया है, विश्व मौसम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विज्ञान संगठन के सार्वभौम वातावरणीय अनुसंधान कार्यक्रम (जी. ए. आर. पी.) के प्रथम सार्वभौम प्रयोग के लिये मौसम सम्बन्धी निरीक्षण प्रदान करते हैं।

● 1981—सं. रा. अमेरिका ने स्पेस शटल 'कोलम्बिया' का प्रक्षेपण किया—किसी यान की भाँति बार-बार प्रयोग किया जाना इसकी विशेषता है।

● 1982—इनमारसैट अन्तर्राष्ट्रीय समुद्री उपग्रह संगठन जहाजों तथा तट से हटकर समुद्र में अवस्थित सुविधाओं के निमित्त आपात्कालीन तथा दैनंदिन संचार सेवाओं के लिये अपने अन्तर्राष्ट्रीय रूप से अधिकृत तथा संचालित उपग्रह संचार प्रणाली आरम्भ करता है।

● 1982—यूनीस्पेस 82, अंतरिक्ष अनुसंधान, प्रौद्योगिकी तथा अनुप्रयोग में अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग पर वाद विवाद के लिये बाह्य अंतरिक्ष की खोज और शांतिमय उपयोगों पर दूसरा संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन विएना में होता है। ■ ■

भारतीय अन्तरिक्ष कार्यक्रम का समुत्थान

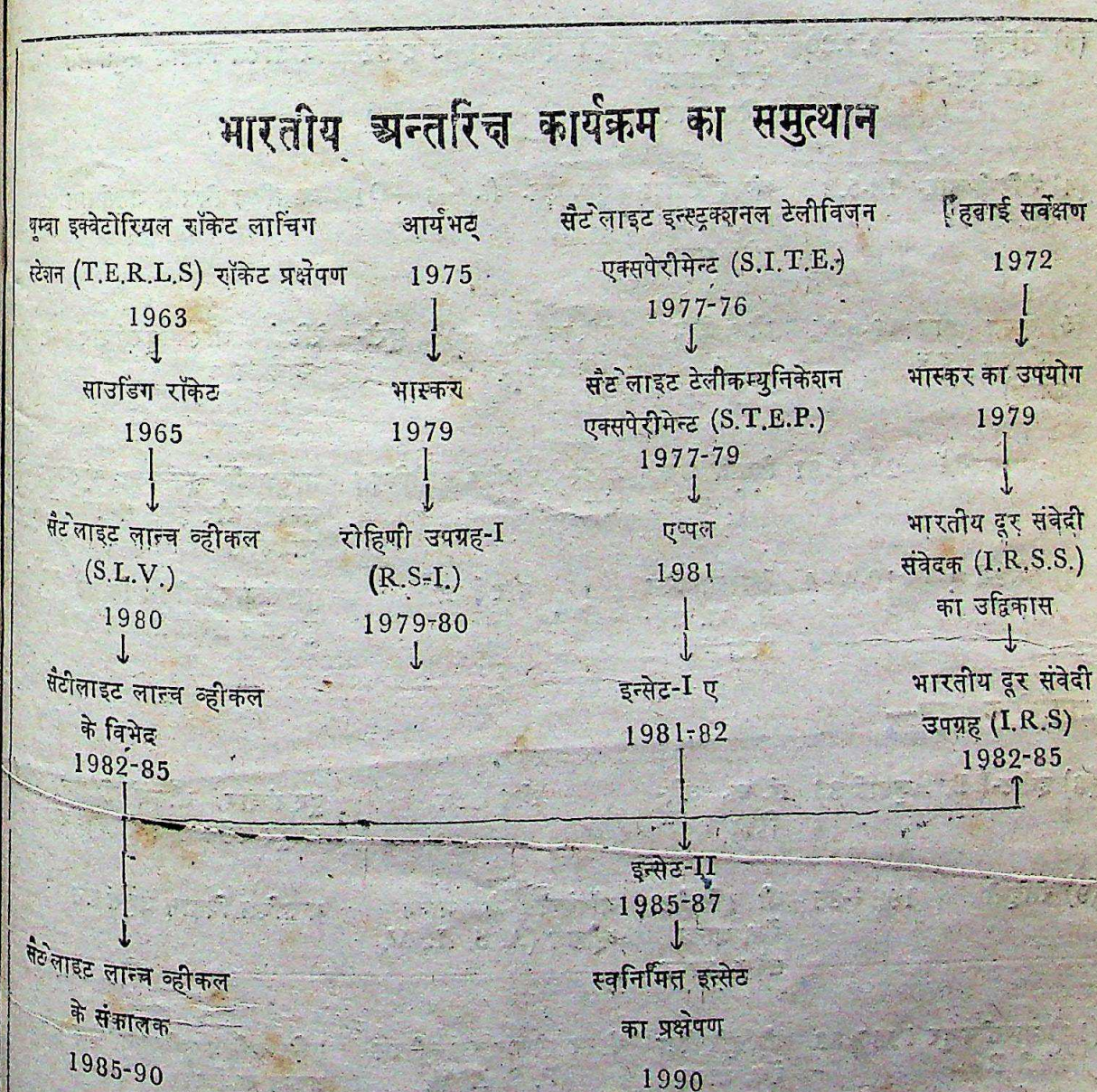

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्तरिक्ष कार्यक्रम (भारत)

उपग्रह का नाम	समय	प्रक्षेपण स्थल	प्रक्षेपण रॉकेट	उद्देश्य
(1) आर्यभट्ट	19.4.75	बियर्स लेक, सोवियत संघ	इन्टर कास्मोस, सोवियत संघ	एक्सरे, वायु विज्ञान, सौर भौतिकी सम्बन्धी प्रयोग
(2) भास्कर-I	7.6.79	बियर्स लेक, सोवियत संघ	इन्टर कास्मोस, सोवियत संघ	हिमाच्छादन, हिमगलन, वन विज्ञान, जल विज्ञान और भू-रचनाओं का अध्ययन
(3) रोहिणी आर. एस.-I	18.7.80	श्री हरिकोटा रेंज, आन्ध्र प्रदेश, भारत	एस. एल. वी.—3 इ-02	अन्तरिक्ष विज्ञान अनुसंधान
(4) रोहिणी आर. एस.-डी-I	18.5.81	श्री हरिकोटा रेंज, आन्ध्र प्रदेश भारत	एस. एल. वी.—3—D1	अन्तरिक्ष विज्ञान अनुसंधान
(5) एप्पल (प्रथम प्रायोगिक संचार उपग्रह)	19.6.81	कौरू, फ्रेन्च गुयाना	एरियन एल—03, यूरोपीय स्पेस एजेन्सी	रेडियो और दूरसंचार सम्बन्धी कार्यक्रम
(6) भास्कर-II	20.11.81	बियर्स लेक, सोवियत संघ	इन्टर कास्मोस, सोवियत संघ	भारत की भूसम्पदा, भूरचना, वन सम्पदा और कृषि सम्बन्धी तथ्यों की जानकारी
(7) इन्सेट-I ए	10.4.82	केप कनावरेल, सं. रा. अमेरिका	थोर डेल्टा	दूर संचार, मौसम विज्ञान, रेडियो व दूरदर्शन सम्बन्धी कार्यक्रम
आगामी कार्यक्रम—				
(8) इन्सेट-I B.	जुलाई 83	सं. रा. अमेरिका	स्पेस शटल	दूर संचार, मौसम विज्ञान, रेडियो व दूर दर्शन सम्बन्धी कार्यक्रम
(9) रोहिणी	1984-85	श्री हरिकोटा रेंज, आन्ध्र प्रदेश, भारत	ऑगमेन्टेड स्पेस लान्च व्हीकल (A. S. L. V.	अन्तरिक्ष विज्ञान अनुसंधान
(10) भारतीय दूर संवेदी (Remote Sensing) उपग्रह	1987-88	श्री हरिकोटा रेंज, आन्ध्र प्रदेश, भारत	पोलर स्पेस लान्च व्हीकल (P. S. L. V.)	कृषि, खनिज भूविज्ञान, जल व सम्पदा प्रबन्ध कार्यक्रम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जरूरत आधुनिक प्रौद्योगिकी की विध्वंसक प्रवृत्तियों के बदलाव की है !

□ शुकदेव प्रसाद*

बढ़ती जनसंख्या और समाप्तप्राय संसाधनों के दौर में, वर्तमान में और आने वाले दशकों में हमें ऊर्जा संसाधनों की खोज, नई-नई प्रौद्योगिकियों के विकास एवं आर्थिक-सामाजिक चुनौतियों का सामना करना होगा। इस संक्रमण काल में, जब कि अपने अस्तित्व रक्षा के लिए अनुसंधान एवं विकास कार्यों में हमें अपनी ऊर्जा लगानी चाहिए, दुनिया के अधिकांश मुल्क अपने सैन्य बल को ही सुगठित और समृद्ध करने की दिशा में सचेष्ठ हैं। यदि शस्त्रास्त्रों की होड़ की गति ऐसी ही बनी रही तो निश्चय ही विश्व युद्ध के बादल मंडरा रहे हैं। परमाणु अस्त्रों से समूची मानवता का नाश होने में विलम्ब नहीं।

देखा जाय तो पता चलता है कि सृजनात्मक एवं असैनिक व्यय की तुलना में सैन्य व्यय कहीं अधिक है। एक अनुमान के अनुसार लगभग 5 खरब डालर की विपुल राशि सारी दुनिया की सैनिक तैयारियों में लगी हुई है तथा इससे लगभग 10 करोड़ लोग प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से प्रभावित हैं।

सैन्य व्यय : कितनी राशि ?

इस समय दुनिया भर में नियमित सेनाओं में भर्ती लोगों की संख्या लगभग 2.5 करोड़ है। दुनिया भर के रक्षा विभागों में सैन्य उद्देश्यों की पूर्ति में लगे असैनिक लोगों (सैनिक उपकरणों की पूर्ति से सम्बन्धित प्रत्यक्ष और औद्योगिक रोजगार में) की संख्या लगभग 40 लाख है।

वर्दी धारी सैनिकों और सैन्य उपकरणों की पूर्ति में लगे असैनिक लोगों के अतिरिक्त प्रत्यक्ष रूप से थोड़ी मानव व्यक्ति और भी इस शामिल है। सैन्य शोध एवं सैन्य विकास में विज्ञानियों एवं अभियंताओं की अपनी अहम् भूमिका है। एक अनुमान के अनुसार वर्तमान में सैन्य शोध एवं सैन्य विकास में लगे वैज्ञानिकों एवं अभियंताओं की संख्या लगभग 5 लाख है।

स्पष्ट है कि विशुद्ध सैन्य क्रिया कलापों में प्रत्यक्ष रूप से 3 करोड़ 95 लाख लोग लगे हुए हैं।

सम्पूर्ण विश्व में वर्दीधारी सैन्य कर्मचारी वर्ग की सेवा करने वाले लोगों के साथ-साथ सेना को वस्तुओं तथा सेवा की पूर्ति करने के कार्य में, सेना द्वारा प्रत्यक्ष रूप से नियोजित श्रमिक बल में, लगभग 43 करोड़ 5 लाख लोग लगे हुए हैं।

प्रत्यक्ष रूप से सैन्य सेवा में नियोजित लोगों की संख्या की अपेक्षा अप्रत्यक्ष रूप से सैन्य सेवाओं में लगे लोगों की संख्या 50 से 100 प्रतिशत अधिक है। पूरे विश्व में औद्योगिक नियोजन में प्रत्यक्ष रूप से लगभग 60 लाख श्रमिक लगे हैं। इस आधार पर ज्ञात होता है कि अप्रत्यक्ष रूप से सैन्य व्यय पर आधारित, औद्योगिक पदों की अतिरिक्त संख्या लगभग 30 लाख से 60 लाख तक है।

इन आंकड़ों से स्पष्ट है कि सैन्य व्यय में कितनी विपुल धनराशि और श्रमिक शक्ति शामिल है। उल्लेखनीय है कि यह राशि और श्रमिक शक्ति इन कार्यों के निमित्त निरन्तर बढ़ती ही जा रही है। सेनाओं में भर्ती किए जा रहे लोगों की संख्या में पिछले 2 दशकों में पर्याप्त वृद्धि हुई है। 1960 की अपेक्षा सन् 1980 में सारी दुनिया में सैनिकों की संख्या तिगुनी हुई है। 1970

*निदेशक, विज्ञान वैचारिकी अकादमी, 34, एलनगंज, इलाहाबाद-211 002

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की अपेक्षा 1980 में सैनिकों की संख्या में 10 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। विकसित देशों में सैनिकों की संख्या में ठहराव आया है (आधुनिक आयुधों के भंडारन में नहीं) पर विकासशील राष्ट्रों में यह संख्या अवश्य बढ़ती रही है। उत्तरी अटलांटिक संधि संगठन-नाटो (नार्थ एटलांटिक ट्रीटी आर्गेनाइजेशन), वारसा संधि संगठन (वारसा ट्रीटी आर्गेनाइजेशन) के कारण सम्पूर्ण विश्व के सैन्य बल में 40 प्रतिशत की वृद्धि हुई है जिसका अनुपात चीन में 17 प्रतिशत, एशिया, अफ्रीका और लातीनी अमेरिका जैसे विकासशील देशों में लगभग 38 प्रतिशत है।

अब आइए, एक नजर सैन्य औद्योगिक उत्पादनों पर भी डाल ली जाय। एक अनुमान के अनुसार समग्र विश्व का सैन्य औद्योगिक उत्पादन 1976 और 1977 का लगभग 10 खरब, 50 अरब डालर का था। ध्यान देने का बात है कि यह अनुमान 1976 के पूरे विश्व के सैन्य व्यय का मात्र 30% भाग है।

सामरिक प्रौद्योगिकी

वर्तमान मूल्यों के अनुसार 1980 में विश्व सैनिक व्यय 50,000 करोड़ डालर का था। यह राशि पृथ्वी पर मौजूद प्रत्येक स्त्री पुरुष और बच्चे के लिए लगभग 110 डालर के बराबर है।

विश्व में अभी तक किए गए अनुसंधान एवं विकास कार्यों पर ध्यान दिया जाय तो पता चलेगा कि अनुसंधान के अन्य क्षेत्रों—ऊर्जा, स्वास्थ्य, प्रदूषण नियंत्रण और कृषि आदि के संयुक्त लक्ष्यों से भी आगे सैनिक लक्ष्य ही रहा है। वास्तव में विश्व व्यापी सैनिक अनुसंधान और विकास, विकासशील देशों में किए जाने वाले समस्त अनुसंधान और विकास की तुलना में कम से कम 6 गुना है।

वस्तुतः द्वितीय विश्व युद्ध के बाद हथियारों की प्रौद्योगिकी में तेजी से परिवर्तन हुए हैं। अनुमानतः बड़े आयुधों की सभी श्रेणियों के 5 से 8 वर्ष के अंदर 'नए माडल' आ जाते हैं। हथियारों की प्रौद्योगिकी में निरंतर परिवर्तन और परिष्करण होता रहता है। सामरिकी और युद्ध कौशल की अपेक्षा प्रौद्योगिकी आगे रही है।

समस्त अनुसंधान और विकास की तुलना में सैनिक अनुसंधान और विकास व्यय सर्वाधिक है। केवल दो देश संयुक्त राज्य अमेरिका, और सोवियत रूस ही सैनिक अनुसंधान और विकास पर इसका बहुत बड़ा अंश व्यय करते हैं। यदि इसमें फ्रांस और ब्रिटेन को मिला दिया जाय तो यह अंश 90 प्रतिशत से ऊपर जायेगा।

रचनात्मक परिवर्तन की व्यापक संभावनाएं

उपर्युक्त आकड़े बताते हैं कि समस्त विश्व की बहुत बड़ी पूंजी विध्वंसक कार्यों की भेंट चढ़ती जाती है। यदि इन्हें सृजनात्मक कार्यों में लगाया जा सके तो युद्ध के बादल तो छटेंगे ही, विश्व शांति की स्थापना के साथ-साथ प्यासी तड़पती मानवता को भी त्राण मिलेगा।

एक रचनात्मक संपरिवर्तन यह होगा कि अभी तक जिन साधनों को सैनिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए लगाया जा रहा है, उन्हें सार्वजनिक क्रिया कलापों तथा गतिशील अर्थ व्यवस्था में लगा दिया जाय।

वस्तुतः यह परिवर्तन बदलाव की उस प्रक्रिया का निर्माण या पुनर्नियोजन है जिसको वास्तविक मानवीय और भौतिक संसाधनों को वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन के एक क्षेत्र से हटाकर दूसरे क्षेत्र में लगाए जाने से मतलब है। यहाँ पर विशेष रूप से आशय सैनिक प्रयोजनों के लिए वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन में लगे साधनों को उन वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन में लगाना है—जो कि आर्थिक एवं सामाजिक विकास में योगदान कर सकें। तात्पर्य विशेष रूप से उन संसाधनों के परिवर्तन और पुनर्नियोजन से है जो कि सेना द्वारा इस्तेमाल या उपयोग की जाने वाली वस्तुओं के उत्पादन में लगे हैं और जिन वस्तुओं की असैनिक उपयोगिता या तो थोड़ी है या बिल्कुल ही नहीं है।

परिवर्तन की समस्या को व्यापक परिप्रेक्ष्य में रखते समय यह ध्यान देना होगा कि परिवर्तन की समस्या को इस रूप में रखना बिल्कुल ही व्यावहारिक नहीं होगा कि—एक बार ही में 500 अरब डालर की मांग को प्रस्थापित किया जाये या असैनिक श्रम शक्ति में करोड़ों लोगों को लगाया जाय, क्योंकि एकाएक सैनिक प्रौद्योगिकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को असैनिक रूप में परिवर्तित करने जैसा विकल्प पास नहीं है और न ही आयुधों के भंडारों को ष्ट ही किया जा सकता है। अतः ये कुछ विचारणीय हैं जिनका समाधान होने में समय लगने की संभावना है।

निरस्त्रीकरण और विकास साथ-साथ

वस्तुतः बदलाव की समूची मानसिकता विश्व स्तर निर्मित करने की जरूरत है, तभी विध्वंसक प्रौद्योगिकी और उसमें अन्तर्निहित श्रम, शक्ति और पूंजी को रचनात्मक कार्यों में लगाया जा सकेगा।

निरस्त्रीकरण एक कारगर उपाय इस दिशा में हो सकता है वशर्ते दुनियां की बड़ी और छोटी सभी शक्तियां इसके लिए तैयार हों। निरस्त्रीकरण जहाँ सशस्त्र सेनाओं के आकार और व्यय में कटौती करने की एक प्रक्रिया है, वहीं शस्त्रों को चाहे वे प्रयोग में ला रहे हों या मात्र संग्रहीत करके रखे गए हों, विनष्ट या विखंडित करना भी है। साथ ही नए शस्त्रों की उत्पादन की क्षमता को निरंतर समाप्त करना और सैनिक कर्मचारियों को मुक्त करके नागरिक जीवन में समाविष्ट करना भी है। इसका चरम उद्देश्य है—प्रभुत्वकारी अन्तर्राष्ट्रीय नियंत्रण के अन्तर्गत व्यापक और सम्पूर्ण निरस्त्रीकरण।

ऐसा करने से हम प्रत्येक व्यक्ति के लिए उर्वर और मर्यादा पूर्ण अस्तित्व से सम्बंधित बुनियादी आवश्यकताओं की व्यवस्था कर सकेंगे और समुचित अर्थों में यही विकास की परिभाषा भी है। विकास का अर्थ यह भी है कि प्रत्येक व्यक्ति को आर्थिक और सामाजिक प्रक्रिया में पूरी तरह से हिस्सा लेने का अवसर मिले और वह उसके लाभों का भागीदार बने। यह तभी होगा जब विकसित और विकासशील देशों के बीच के अंतर को घटाया जाय और वर्तमान तथा भावी पीढ़ियों के लिए शांति एवं न्याय विषयक आर्थिक तथा सामाजिक विकास के कार्य को तत्परता एवं शीघ्रता से आगे बढ़ाया जाये।

इस दिशा में संयुक्त राष्ट्र संघ के जनरल असेम्बली के छठें विशेष अधिवेशन (अप्रैल-मई 1974) में 'नव अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था' (A New International Economic Order) का घोषणा पत्र और उसके कार्यक्रमों की स्वीकृति प्रशंसनीय चरण हैं। इसके व्यापक कार्यक्रमों पर अमल करना आशातीत सफलताओं के द्वार खोल सकता है।

निरस्त्रीकरण की संभावनाएं

इस दिशा में प्रथम चरण तो है सैनिक सामानों के स्थान पर असैनिक सामानों का उत्पादन। इस परिवर्तन की समग्र संभाव्यता के उत्हासजनक परिणाम तो द्वितीय विश्व युद्ध के बाद ही अनुभव किए जाने लगे थे।

अनेक विकासशील देशों में पर्याप्त निरस्त्रीकरण किया जाता है तो वह उससे विकास की योजनाओं को कार्यान्वित करने के कार्य में उपस्थित होने वाली वर्तमान वित्तीय कठिनाइयाँ विशेष रूप से आसान हो जायेंगी। हथियारों तथा अतिरिक्त पुर्जों के आयात तथा स्थानीय सैनिक उत्पादनों के लिए पूंजीगत माल तथा मध्यवर्ती उत्पादों में कमी के परिणाम स्वरुप जिस विदेशी मुद्रा की बचत होगी उसे औद्योगीकरण तथा कृषि उत्पादन के विस्तार के कार्यक्रमों में आने वाली रुकावटों को दूर करने में किया जा सकेगा।

सशस्त्र सेनाओं, सैनिक अधिकारी वर्ग तथा प्रतिरक्षा सामग्री के उत्पादन उद्योगों में लगे हुए कर्मचारी

सारणी-क्षेत्रवार सैनिक व्यय-केन्द्रीय सरकार के व्यय के प्रतिशत के रूप में 1969 और 1978

	1969	1978
विश्व	33.5	22.4
यूरोप	32.8	24.4
उत्तरी अमेरिका	41.3	22.6
ओशेनियां	15.4	8.4
मध्य पूर्व	28.5	24.3
सुदूर पूर्व	31.5	22.5
दक्षिण एशिया	20.4	15.0
अफ्रीका	15.0	10.2
लातीनी अमेरिका	13.5	10.9

स्रोत : संयुक्त राज्य शस्त्र नियंत्रण और निरस्त्रीकरण एजेंसी, 'विश्व सैनिक व्यय और शस्त्र अंतरण' 1969-78, वाशिंगटन डी. सी., दिसम्बर, 1980।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्ग में से खाली हुए व्यक्तियों का एक दल बनाया जा सकेगा जिनसे विभिन्न प्रकार के कुशल-श्रमिकों तथा प्रबंधक कर्मचारी वर्ग की कमी को पूरा किया जा सकेगा।

आज स्कूलों, कलिजों, विश्वविद्यालयों और तकनीकी संस्थाओं से उत्तीर्ण होकर निकलने वाली पीढ़ी के सैनिक सेवाओं में निकल जाने से जिस कुशल श्रम शक्ति की कमी हो जाती है, उसे कम किया जा सकेगा।

खाली हुए कुशल इंजीनियरों एवं वैज्ञानिकों को सृजनात्मक अनुसंधानों में रत किया जा सकेगा जिनकी आज जरुरत है। प्रदूषण नियंत्रण, आहार और कुपोषण की समस्याएं, आनुवंशिकी, कृषि, सूक्ष्म जैविकी आदि अनेक ऐसे क्षेत्र हैं जिनमें संधान की नितांत आवश्यकताएं हैं क्योंकि ये मानव मात्र की मूलभूत समस्याओं से जुड़ी हैं और इनका सुलझाव व समाधान समूची मानवता के लिए हितकारी होगा।

सारिणी—विश्व सैनिक व्यय का वितरण (1955—1980)

प्रतिशत *

समूह	1955	1960	1965	1970	1975	1980
न्यूक्लीय हथियार वाले राज्य (क)	81.4	78.9	76.0	75.8	67.1	64.6
चार अग्रणी शस्त्र निर्यातक (ख)	76.2	73.3	67.4	65.8	57.4	55.8
नाटो और डब्ल्यू टी ओ जिनमें से :	86.9	85.4	80.5	77.4	70.5	68.8
संयुक्त राज्य अमेरिका और सोवियत रूस (ग)	(68.7)	(63.7)	(48.9)	(47.4)	(31.9)	(27.1)
अन्य विकसित देश (घ)	9.8	10.1	13.6	15.4	16.0	15.1
विकासशील देश जिनमें से :	3.3	4.5	5.9	7.2	13.5	16.1
मध्य पूर्व (च)	0.6	0.9	1.3	2.2	7.3	7.8
दक्षिण एशिया	0.6	0.6	1.1	0.9	0.9	1.1
सुदूर पूर्व (छ)	1.0	1.4	1.4	1.6	1.9	3.6
अफ्रीका (ज)	0.1	0.3	0.8	1.2	1.8	1.7
लातीनी अमेरिका	1.0	1.3	1.3	1.3	1.6	1.8

(क) संयुक्त राज्य अमेरिका, सोवियत रूस, फ्रांस, ब्रिटेन, और चीन

(ख) संयुक्त राज्य अमेरिका, सोवियत रूस, फ्रांस, ब्रिटेन

(ग) इन विषयों से सम्बन्धित अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय की मान्यता के अनुसार किसी एक देश के सरकारी दैनिक बजट आंकड़े, अधिकांश अन्य देशों के आंकड़ों के साथ प्रत्यक्ष रूप से तुलना योग्य नहीं हैं, क्योंकि अध्ययन में भिन्नता है और मुद्रा परिवर्तन दरों की कठिनाइयाँ आती हैं। स्टाकहोम अन्तर्राष्ट्रीय शांति अनुसंधान संस्था (एस. आई. पी. आर. आई.) के द्वारा लगाए गए अनुमानों के अनुसार विश्व सैनिक व्ययों में संयुक्त राज्य अमेरिका और सोवियत रूस का हिस्सा निम्न प्रकार है :

1955	1960	1965	1970	1975	1980
65.0	62.6	58.2	58.7	50.1	48.0

(घ) नाटो और डब्ल्यू. टी. ओ. को छोड़कर यूरोप के अन्य देश और आस्ट्रेलिया, चीन, इजराइल, जापान, न्यूजीलैंड और दक्षिणी अफ्रीका इस वर्ग में आते हैं :

(च) इजराइल को छोड़कर (छ) चीन और जापान को छोड़कर, (ज) दक्षिण अफ्रीका को छोड़कर

*स्रोत: विश्व शस्त्रीकरण और निस्त्रीकरण, सिपरी एस. आइ. पी. आर. आइ. शब्दकोष 1981, पृष्ठ 156-169 ((ग) को छोड़कर समस्त पाद टिप्पणियों के लिए)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

□ अनुराग रत्न

नवम् एशियाई खेल और भारत

क्रीड़ा जगत में भारत की स्थिति प्रारम्भ से ही अजीबोगरीब रही है। यही कारण है कि क्षेत्रफल व जनसंख्या की दृष्टि से क्रमशः सातवाँ व दूसरा राष्ट्र क्रीड़ा जगत में निहायत ही बौना राष्ट्र नजर आता है। कुछ लोग इसे भारत के खेल संस्थानों एवं संगठनों में घुसी हुई अन्दुरूनी राजनीति बतलाते है तो कुछ यहाँ के खिलाड़ियों एवं प्रशिक्षकों में प्रयास, लगन, इच्छा शक्ति एवं उचित प्रशिक्षण की कमी, कुछ लोग सरकार द्वारा खेलों और खिलाड़ियों को उचित प्रोत्साहन न देना बताते है तो कुछ भारत की गरीबी पर रोना रोते हैं। यहाँ तक कि कुछ लोग इसका एक प्रमुख कारण भारत की भौगोलिक स्थिति को बताते हैं। कारण चाहे जो भी हो यह स्पष्ट है कि भारत में खेलों का विकास उचित रूप से नहीं हो रहा है जैसा कि न केवल विकसित देशों में बल्कि एशिया व अफ्रीका के छोटे-छोटे राष्ट्रों में हो रहा हैं, खैर।

भारत ने खेलों की दुनिया में मुख्य रूप से पदार्पण 1928 में सम्पन्न एम्सटर्डम ओलम्पिक में किया। इसके पूर्व भी भारतीय खिलाड़ियों ने ओलम्पिक खेलों में भाग लिया था परन्तु वैयक्तिक रूप में भाग लेने वाले भारतीय खिलाड़ियों का प्रदर्शन उल्लेखनीय न होने के कारण उनकी उपलब्धियाँ भी नगण्य सी रही। एम्सटर्डम ओलम्पिक से 1956 के मेलबोर्न ओलम्पिक तक लगातार हॉकी में स्वर्ण पदक जीत कर भारत ने कम से कम एक खेल में अपना वर्चस्व बनाये रखा। इसी के पश्चात भारत का नाम खेल की दुनिया में धूमिल पड़ने लगा। पिछले पच्चीस वर्षों में एक आध बार अन्तर्राष्ट्रीय हॉकी प्रतियोगिताएं जीत कर भारत दुनिया को जताता रहा कि उसने अभी खेलना नहीं त्यागा। जब भारत के राष्ट्रीय खेल हॉकी का यह हाल है तो अन्य खेलों में भारत के अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रदर्शन के विषय में कुछ न कहना ही अधिक उचित होगा। हाँ, इतना अवश्य है कि कुछ खिलाड़ियों जैसे, विल्सन जोन्स व माइकेल फरेरा (बिलियर्डस्), रामानाथन कृष्णन् व विजय अमृतराज (टेनिस), प्रकाश पादूकोन (बेडमिन्टन) एवं दिवेन्दु बरुआ (शतरंज) आदि ने अपने वैयक्तिक परिश्रम, लगन व इच्छा शक्ति से अपने खेलो में वैयक्तिक सफलता प्राप्त कर भारत का नाम रोशन किया।

तो यह रही स्थिति भारत की विश्व स्तर पर, अब देखा जाये कि अपने महाद्वीप, एशिया में, भारत की क्या स्थिति है? एशिया में भारत के खेल प्रदर्शन का मूल्यांकन पिछले सभी एशियाई खेलों के रिकार्ड को देख कर अधिक मुश्किल न होगा। एशियाई खेल प्रारम्भ करने का मुख्य श्रेय भारत के प्रधान मन्त्री जवाहर लाल नेहरू को है। एशिया में ओलम्पिक खेल की भावना को लाने वाले भारत का प्रदर्शन नई दिल्ली में आयोजित प्रथम एशियाई खेल (1951) में शानदार रहा। भारत ने छह खेलों में 15 स्वर्ण सहित कुल 52 पदक प्राप्त कर 11 देशों के मुकाबलों में द्वितीय स्थान अर्जित किया। परन्तु, इस सफल प्रदर्शन को अगले साल एशियाई खेलों में नहीं बनाये रख सका। जब से यह घोषणा हुई कि नवम् एशियाई खेलों का 1982 में नई दिल्ली में आयोजन होगा, सभी खेल प्रेमियों को भारत के शानदार प्रदर्शन की आशा बंध चली थी। भारत सरकार, खेल संस्थान एवं खिलाड़ियों ने अपने देश की इज्जत और सफलता के लिये कोई कसर नहीं रखी। लम्बे समय के लिये प्रशिक्षिण शिविर, विदेशी प्रशिक्षकों द्वारा प्रशिक्षण, अत्याधुनिक खेल उपकरणों का आयात तथा विदेश में अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भाग लेने का अवसर प्रदान कर प्रत्येक भारतीय खिलाड़ी को चरम मुहूर्त के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिये तैयार किया गया। भारत को मेजबान देश होने के कारण नवम् एशियाई खेलों की इक्कीस स्पर्धाओं में 199 स्वर्ण, 200 रजत व 215 रजत पदकों के लिये तैंतीस देशो के पांच हजार खिलाड़ियों से टक्कर लेनी पड़ी। पिछले इक्तीस वर्षों से एशियाई खेलों पर छाये जापान को चीन ने इस बार द्वितीय स्थान पर ढकेल कर प्रथम स्थान प्राप्त किया। आठवें एशियाई खेलों में 11 स्वर्ण, 11 रजत एवं 6 कांस्य पदक जीत कर छठा स्थान प्राप्त करने वाला भारत इस बार 13 स्वर्ण 19 रजत एवं 25 कांस्य पदक प्राप्त कर पांचवें स्थान पर पहुँच गया। भारत को प्राप्त कुल 57 पदक अब तक के नौ एशियाई खेलों में सबसे उत्तम प्रदर्शन है। परन्तु, भारत के इस प्रदर्शन को आशानुरूप नहीं कहा

तैराकी प्रतियोगिताओं में कहीं नहीं ठहरता। अतएव भारतीय तैराकों के प्रदर्शन पर किसी को आश्चर्य नहीं हुआ। परन्तु, पूर्व जर्मनी के प्रशिक्षक के उत्तम प्रशिक्षण के फलस्वरूप लगभग सभी भारतीय तैराक अपने वर्ग के फाइनल राउन्ड में पहुँचे। खजान सिंह, अनिता सूद व बुला चौधरी की शानदार तैराकी के कारण भारत ने पहली बार सबसे बेहतर खेल का प्रदर्शन किया। इस दौरान भारतीय तैराकों ने 29 नये राष्ट्रीय कीर्तिमान स्थापित किये।

भारत के भारोत्तोलकों ने 110 अंक लेकर 14 देशों की प्रतियोगिता में छठा स्थान प्राप्त किया। ब्रिसबेन में आयोजित राष्ट्र मण्डलीय खेलों में भारतीय भारोत्तोलकों के शानदार प्रदर्शन के फलस्वरूप उनसे

एशियाई खेलों में भारत की स्थिति

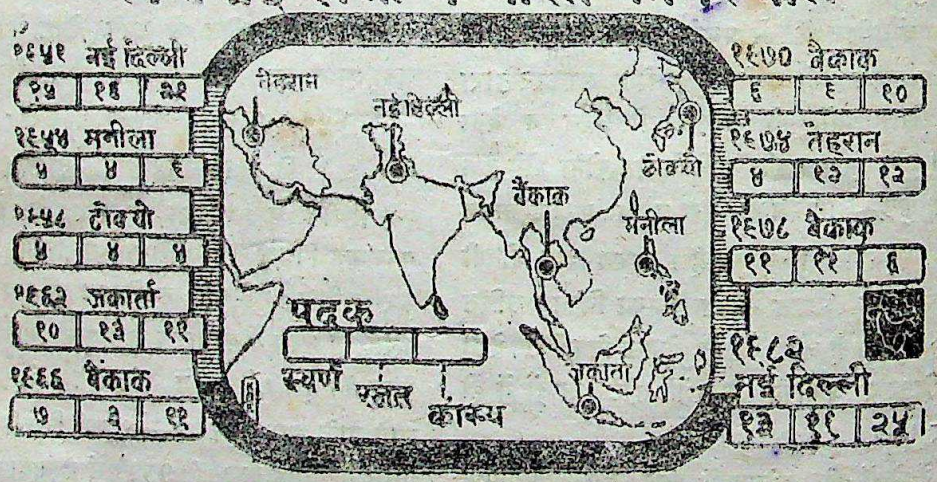

जा सकता है। प्रथम एशियाई खेल में शामिल केवल छह स्पर्धाओं में ही भारत ने 51 पदक जीते थे, तो 21 स्पर्धाओं में 57 पदक जीतकर भारत ने कोई कमाल नहीं किया। फिर, पदक तालिका में भारत को सम्मानजनक स्थिति पर पहुँचाने का काफी मात्रा में श्रेय एशियाई खेल में पहली बार सम्मिलित किये गये खेलों—गॉल्फ, पाल नौकायन, घुड़सवारी व महिला हॉकी को जाता है जिनमें भारतीय खिलाड़ियों ने कुल 6 स्वर्ण, 2 रजत व 1 कांस्य पदक प्राप्त किये।

यह तो रहा नवम् एशियाई खेल में भारत का समग्र प्रदर्शन। अब इक्कीस स्पर्धाओं में एक एक कर भारत के प्रदर्शन का मूल्यांकन किया जाये।

ताल कटोरा स्विमिंग पूल में आयोजित तैराकी प्रतियोगिताओं में भारत सिर्फ एक कांस्य पदक जीत सका-वाटर पोलो में। भारत शुरू से ही एशियाई खेलों में

काफी आशाएं जगी थीं। बुल्गेरियाई प्रशिक्षक के कठोर परिश्रम के कारण ज्ञान सिंह चीमा, नोबिल दशोरा, तारा सिंह व शेखर ने एक एक कांस्य पदक ही नहीं जीता बल्कि तीन एशियाई कीर्तिमान भी भंग किये। वास्तव में प्रथम एशियाई खेल के बाद यही भारतीय भारोत्तोलकों की सबसे बड़ी सफलता है। भारतीय भारोत्तोलकों ने 15 नये राष्ट्रीय कीर्तिमान भी स्थापित किये।

निशानेबाजी में बीस देशों की प्रतियोगिता में भारत ने दो रजत व एक कांस्य पदक जीत कर पांचवां स्थान अर्जित किया। इस प्रतियोगिता में भारत के शानदार प्रदर्शन के सम्बन्ध में कोई दो राय नहीं परन्तु भाग्य के साथ न होने के कारण दो स्वर्ण पदक से वंचित होना पड़ा। ट्रैप शूटिंग की दलगत स्पर्धा में चीन से बराबरी का सामना लेने के बावजूद भारत को रजत पदक पर सन्तोष करना पड़ा। स्टैन्डर्ड पिस्टल वर्ग में भारत के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तोहान और द. कोरिया के पाक गिल के अंक समान थे जिसके फलस्वरूप पुनः भिड़न्त हुई और इसमें शरद तोहान हार गये। पिछले एशियाई खेल में ट्रैप शूटिंग में स्वर्ण पदक विजेता रणधीर सिंह अपनी विजय को बरकरार न रख सके, और उन्हें केवल कांस्य पदक से सन्तुष्ट होना पड़ा।

17 देशों की कुश्ती प्रतियोगिता में भारत ने चौथा स्थान प्राप्त किया परन्तु भारतीय कुश्तीगरों के प्रदर्शन को शानदार नहीं कहा जा सकता है। ब्रिस्बेन के राष्ट्रमण्डलीय खेलों में भारतीय कुश्तीगरों ने 4 स्वर्ण, 4 रजत व 1 कांस्य पदक जीता था। अतएव आशा थी कि ये विजयी कुश्तीगर एशियाई खेल में कमाल तो अवश्य दिखायेंगे। सतपाल (100 कि. ग्रा.) ने स्वर्ण पदक, करतार सिंह (90 कि. ग्रा.) ने रजत पदक, अशोक कुमार (57 कि. ग्रा.) व राजेन्द्र सिंह (110 कि. ग्रा. के ऊपर) ने कांस्य पदक जीता। महावीर सिंह, ईश्वर लाल एवं रणवीर ने बेहद निराश किया।

हालांकि मुक्केबाजी प्रतियोगिता में भारत ने एक स्वर्ण पदक (कौर सिंह, हेवी वेट), दो रजत पदक (परिवर सिंह, लाइट. हेवी) राजेन्द्र कुमार पुनेडा, (मिडल हेवी) तथा तीन कांस्य पदक (जे. एस. प्रधान, लाइट वेट; बी. मचैहा, वेल्टर वेट; मूलक सिंह, लाइट मिडिल) प्राप्त किये परन्तु पिछले एशियाई बॉक्सिंग में भारतीय मुक्केबाजों की सफलता की तुलना में यह प्रदर्शन काफी फीका रहा। बी. एस. मचैहा, अमल दास एवं बी. एस. थापा से तो बहुत अधिक उम्मीद थी। परन्तु, इतना है कि अमेरिकी प्रशिक्षक सैम हिकमैन के कुशल निर्देशन में भारतीय मुक्केबाजों ने एशियाई खेलों में अब तक के सर्वाधिक पदक जीते।

एशियाई खेलों में एथेलेटिक्स प्रतियोगिता में हमेशा भारत को काफी पदक मिलते रहे। आठवें एशियाई खेल तक भारत को प्राप्त 64 स्वर्ण पदकों में से 46 स्वर्ण पदक एथेलेटिक्स में ही मिले। एशियाई खेलों में भारत का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन प्रथम एशियाई खेल में रहा था जहाँ उसे 10 स्वर्ण पदक मिले थे। पिछले एशियाई खेल में भारत को 8 स्वर्ण, 7 रजत एवं 3 कांस्य पदक मिले थे। इस एशियाई खेल में भारत ने 4 स्वर्ण, 9 रजत एवं 8 कांस्य पदक जीत कर तृतीय स्थान पाया। हालांकि, भारत ने इस बार एथेलेटिक्स में कुल पदक पिछले एशियाई खेल से अधिक प्राप्त किये परन्तु गलत निर्णय, खिलाड़ियों की लापारवाही तथा खिलाड़ियों को चोट लगने ने प्रतियोगिता में भारत के समग्र प्रदर्शन को निराशाजनक बनाया। बहादुर सिंह (शॉट पुट), चाँद राम (20 कि. मी. पैदल चाल), चार्ल्स बोरोमियो (800 मी. दौड़) तथा एस. डी. वालसम्मा (400 मी. हर्डल्स) ने स्वर्ण पदक, कुन्दीप सिंह (डिस्कस थ्रो), मर्सी मैथ्यूज कुट्टन (लम्बी कूद), पी. टी. उषा (100 मी. व 200 मी. दौड़), के. के प्रेमचन्द्रन (400 मी. दौड़), गीता जुत्शी (800 मी. व 1500 मी. दौड़), गोपाल सैनी (3000 मी. स्टीपल चेस) तथा 4 × 100 मी. रिले में रजत पदक, बलविन्दर सिंह (शॉट पुट), एस. बालसुब्रह्मण्यम् (त्रिकूद), पद्मिनी टॉमस (400 मी. दौड़), गुरतेज सिंह (जेवलिन थ्रो), प्रवीण जौली (110 मी. हर्डल्स), टी सुरेश यादव (1500 मी. स्टीपल चेस), राजकुमार (5000 मी. दौड़कूद) तथा एस. सीतारमन् (मेराथन) ने कांस्य पदक जीता। स्वर्ण पदक विजेता एम. डी. वालसम्मा, बहादुर सिंह, चार्ल्स बोरोमियो तथा चाँद राम ने नये एशियाई कीर्तिमान स्थापित किये वहीं भारत की महिलाओं के 4 × 400 मी. रीले, लम्बी कूद, 100 मी. तथा 800 मी. दौड़ में दुर्भाग्यवश इतने पदकों से हाथ धोना पड़ा। भारत को पी. टी. उषा, गीता जुत्शी, रीता सेन, शिवनाथ सिंह, हरिचन्द, शब्बीर अली, एंजिल मेरी जोसेफ से काफी उम्मीदें थीं परन्तु कोई भी आशानुरूप प्रदर्शन न दिखा सका।

बैडमिन्टन में भारतीय दल के प्रदर्शन ने पुनः साबित कर दिया कि प्रकाश पादुकोन की अनुपस्थिति में भारत कहीं भी नहीं टिक पाता है। भारत के सईद मोदी (पुरुष एकल), लिराया डीसा व प्रदीप गान्धी (पुरुष युगल), तथा लिराया डीसा व कंवल ठाकुर सिंह (मिश्रित युगल) ने 5 कांस्य जीत कर पाँचवा स्थान प्राप्त किया। पदकों की सूची देखकर भारतीय खिलाड़ियों के प्रदर्शन के प्रति गलतफहमी नहीं होनी चाहिए क्योंकि सेमीफाइनल में पराजित खिलाड़ी को भी कांस्य पदक प्राप्त हुआ, और भारतीय महिला दल को अपने वर्ग में सेमीफाइनल तक कोई मैच नहीं खेलना पड़ा था। केवल राष्ट्रमण्डलीय बैडमिन्टन चैम्पियन सैयद मोदी का ही प्रदर्शन सराहनीय रहा। उन्होंने विश्वविख्यात लिम स्वी किंग, हदियांतो व हान जियात का कुशलतापूर्वक मुकाबला कर अपनी क्षमता का परिचय दिया।

टेबिल टेनिस में हालांकि भारत को एक भी पदक प्राप्त नहीं हुआ परन्तु पुरुष और महिला वर्ग में भारतीय दल पांचवे स्थान पर रहा। विश्वविख्यात चीनी, जापानी व कोरियाई खिलाड़ियों से टक्कर लेकर पांचवाँ स्थान प्राप्त करना कुछ अर्थ रखता है। भारतीय खिलाड़ियों में इन्दु पुरी, कमलेश मेहता, मनजीत दुआ, शैलजा संलोखे का प्रदर्शन उल्लेखनीय रहा।

लॉन टेनिस में पुरुष वर्ग के फाइनल में पहुंचने के अलावा सभी स्पर्धाओं में पुरुष व महिला भारतीय खिलाड़ियों का प्रदर्शन अत्यन्त निराशाजनक रहा। अब तक एशिया के शीर्ष टेनिस खिलाड़ियों में भारतीय खिलाड़ियों का नाम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्यतम था। एशियाई खेल में शीर्षस्थ खिलाड़ी नन्दन बाल सेमी फाइनल में पराजित होकर कांस्य पदक से भी वंचित हो गये। पुरुष वर्ग के दलगत फाइनल में इन्डोनेशिया से पराजित होकर भारत को केवल रजत पदक से सन्तुष्ट होना पड़ा।

बास्केटबॉल में भारत के निराशाजनक प्रदर्शन पर किसी को किंचित मात्र भी आश्चर्य नहीं हुआ। भारत का पुरुष व महिला दल एक भी मैच न जीत सका। हैण्डबॉल में भी भारत एक भी मैच जीतने में असफल रहा। वॉलीबॉल में भारत के पुरुष दल ने ग्रुप मैच में तीनों मैच जीते परन्तु सुपर लीग में सभी मैच हार कर चतुर्थ स्थान प्राप्त किया। परन्तु, पिछले अनुभव के आधार पर इस प्रदर्शन को काफी उत्साहवर्द्धक कहा जा सकता है। भारत के महिला दल को रॉबिन राउन्ड में सभी मैचों में हार का सामना करना पड़ा।

पूर्व जर्मनी के सुप्रसिद्ध प्रशिक्षक द्वारा प्रशिक्षित भारत के पुरुष व महिला दल को जिम्नास्टिक स्पर्धा में क्रमशः पांचवां व सातवां स्थान प्राप्त हुआ। भारतीय पुरुष दल में विश्वेश्वर नन्दी का प्रदर्शन सर्वाधिक उल्लेखनीय रहा। कुल मिलाकर भारतीय जिम्नास्टिक दल का प्रदर्शन निराशाजनक रहा। 12 देशों के गोल्फ प्रतियोगिता के व्यक्तिगत व दलगत, दोनो ही स्पर्धाओं में भारत ने अपनी श्रेष्ठता का परिचय दिया। दलगत स्पर्धा में भारत, तथा लक्ष्मण सिंह (व्यक्तिगत स्पर्धा) को स्वर्ण पदक तथा राजीव मोहता (व्यक्तिगत स्पर्धा) को रजत पदक प्राप्त हुआ। नौकायन में भारत के प्रदर्शन को सराहनीय नहीं कहा जा सकता है। भारतीय खिलाड़ी चार स्पर्धाओं में तीन के फाइनल में प्रवेश करने के बावजूद कोई सफलता न पा सके। पाल नौकायन की चार स्पर्धाओं में भारत एक स्वर्ण पदक (फारुख तारापोर व जहीर करजिया), एक रजत पदक (जीजी ऊनवाला व फाली ऊनवाला) तथा एक कांस्य पदक (चोदाराम प्रदीपक) जीत कर तृतीय स्थान प्राप्त किया। घुड़सवारी में भारत को अविश्वसनीय सफलता प्राप्त हुई। एथलेटिक्स के बाद सर्वाधिक स्वर्ण पदक भारत को घुड़सवारी में ही प्राप्त हुये। रघुवीर सिंह (शो जम्पिंग), नवम् एशियाई खेल में भारत का प्रथम स्वर्ण पदक रूप सिंह (टेंट पेगिंग) तथा भारत (दलगत स्पर्धा) में स्वर्ण पदक, तथा जी एम. खान को एक रजत पदक तथा प्रह्लाद सिंह को एक कांस्य पदक प्राप्त हुआ। साइकिल दौड़ में भारत का प्रदर्शन अत्यन्त निराशाजनक रहा। भारत के उदीयमान साइकिल चालक ट्रेवर मैक्सवेल एशियाई खेल से ठीक पूर्व ज्वर से पीड़ित होने के कारण आशानुरूप प्रदर्शन करने में असफल रहे। तीरंदाजी प्रतियोगिता में भारतीय खिलाड़ियों का प्रदर्शन अत्यन्त ही घटिया दर्जे का रहा।

पिछले अनुभवों को देखते हुए भारतीय फुटबॉल दल का प्रदर्शन सराहनीय रहा। बंगलादेश व मलेशिया को हरा कर तथा शक्तिशाली चीन से बराबरी कर भारत अपने वर्ग में सर्वोच्च स्थान पर रहा परन्तु क्वॉटर फाइनल में सऊदी अरब से काफी संघर्षशील मैच में अन्तिम मिनट में हुए एक गोल से पराजित हुआ। एशियाई महिला हॉकी चैम्पियन भारत ने एशियाई खेल में पहली बार सम्मिलित महिला प्रतियोगिता को आसानी से जीत कर अपनी वर्चस्वता का परिचय दिया। परन्तु, ऐसा भारतीय पुरुष हॉकी दल के सम्बन्ध में नहीं कहा जा सकता है। भारत बिना किसी तगड़े मुकाबले के आसानी से फाइनल में पहुंचा। फाइनल में उसका मुकाबला अपने पुराने प्रतिद्वन्द्वी पाकिस्तान से था। पिछले दो दशकों में भारत को पाकिस्तान के विरुद्ध दुर्लभ सफलता मिली। चूंकि अब मैच अपने ही देश में देशवासियों के मध्य खेलना था, सभी को पूर्ण आशा थी कि भारत पाकिस्तान को पराजित कर पुनः एशियाई खेल में हॉकी का स्वर्ण पदक जीत सकेगा। परन्तु, भारत को पाकिस्तान से 7-1 की शर्मनाक हार का सामना करना पड़ा। यह भारत की अब तक की सबसे अधिक गोलों से हार थी। इसमें कोई सन्देह नहीं कि पाकिस्तान का हॉकी दल भारत के मुकाबले काफी अच्छा है। परन्तु, भारत का हॉकी दल भी इतना खराब नहीं है कि वह इतने अधिक गोलों से पराजित हो। कुछ विशेषज्ञों के अनुसार भारतीय दल की पराजय का प्रमुख कारण दल में अयोग्य खिलाड़ियों का चयन, अनुभवी खिलाड़ियों का अभाव, विरोधी दल के खिलाड़ियों के पास को समय से रोकने में असमर्थता,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पेनेल्टी कार्नर व पेनेल्टी स्ट्रोक को गोल में परिवर्तित करने में असफलता, उचित प्रशिक्षण के अभाव में खिलाड़ियों में तालमेल का अभाव, स्लो रक्षा पंक्ति तथा मैच के अग्रिम पंक्ति में गलत फेर दौरान-बदल इत्यादि है।

इस प्रकार भारत कुल 57 पदक प्राप्त कर आंठवें एशियाई खेल के छठें स्थान से इस बार पांचवें स्थान पर पहुँच गया। परन्तु, क्या इस प्रदर्शन को सराहनीय कहा जा सकता है? भारत ने इस खेल के आयोजन के लिये करोड़ों रुपये व्यय किये। इसके बावजूद भी उसे केवल साधारण सफलता ही मिली तो इस आयोजन से लाभ क्या हुआ। जिस प्रकार की प्रतिद्वन्द्विता एशियाई खेलों में बढ़ती जा रही है उसमें क्या भारत वर्तमान स्तर पर अगले एशियाई खेलों में प्रथम दस राष्ट्र की सूची में स्थान पा सकेगा? भारत ने 1992 में सम्पन्न होने वाले 25वें ओलम्पिक खेल के आयोजन के लिये दावा प्रस्तुत किया है। लेकिन, यह नहीं भूलना चाहिए कि केवल आयोजन मात्र से ही देश में खेल के स्तर में सुधार नहीं आता है। इसके लिये सरकार व वैयक्तिक संगठनों को आगे आना पड़ेगा जो वैज्ञानिक पद्धति से सुसंगठित रूप से खिलाड़ियों को प्रशिक्षित करें। जब तक भारत के गांव-गांव में प्रत्येक व्यक्ति में ओलम्पिक खेलों की भावनाओं को बसाया नहीं जाता है तब तक भारत में खेल की उन्नति की बात तो अलग, उल्टे पतन के गर्त में चला जाता रहेगा। हाल में, भारत सरकार ने इस दिशा में कुछ ठोस कदम उठाये हैं। केन्द्र में एक केन्द्रीय खेलकूद मन्त्रालय का गठन किया गया है। साथ में, नवम् एशियाई खेलों में बने स्टेडियमों का उचित उपयोग करने के लिए इसका प्रबन्ध नवगठित राष्ट्रीय क्रीड़ा विकास निगम को सुपुर्द कर दिया गया है। इस संगठन का कार्य यह होगा कि वे नवोदित खिलाड़ियों का चयन करें और उन्हें वैज्ञानिक ढंग से प्रशिक्षित करके अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ी बनाये। इसके अलावा, खिलाड़ियों को प्रोत्साहित करने के लिये वृत्ति तथा रोजगार की सुविधा आदि की भी व्यवस्था की है। यदि, ये सब प्रयास भलीभांति चलते रहे तो इसमें कोई दो राय नहीं कि भारतीय खिलाड़ियों के स्तर में निरन्तर सुधार आयेगा और अन्ततः वे भारत को खेल की दुनिया में सम्मानजनक स्थान दिलाने में सफल होंगे। ■ ■

VISIT WRITE OR RING 52384

ASIA BOOK CO.

9, University Road, Allahabad.

BOOKS FOR P. C. S. EXAM.

1.	एम० पी० श्रीवास्तव	: प्राचीन भारतीय संस्कृति, कला और दर्शन	40.00
2.	Chaudhary	: English Grammer and Translation	7.50
3.	ओम प्रकाश मालवीय	: आधुनिक हिन्दी निबन्ध	15.00
4.	ओम प्रकाश मालवीय	: सामान्य हिन्दी	8.00
5.	पी० सी० एस० गाइड	: प्राचीन भारतीय संस्कृति	20.00
6.	पी० सी० एस० गाइड	: भारतीय इतिहास I	20.00
7.	पी० सी० एस० गाइड	: भारतीय इतिहास II	20.00
8.	पी० सी० एस० गाइड	: समाजशास्त्र	20.00
9.	पी० सी० एस० गाइड	: हिन्दी साहित्य	12.00
10.	पी० सी० एस० गाइड	: राजनीतिक शास्त्र	14.00
11.	पी० सी० एस० गाइड	: विधि I	18.00
12.	पी० सी० एस० गाइड	: विधि II	15.00
13.	पी० सी० एस० गाइड	: विधि III	16.00
14.	पी० सी० एस० गाइड	: भारतीय दर्शन	20.00
15.	पी० सी० एस० गाइड	: समाज कार्य	25.00
16.	पी० सी० एस० गाइड	: प्रारम्भिक गणित	12.00

नोट : पुस्तकों के लिए आर्डर करते समय 10/- रु. अग्रिम मनीआर्डर द्वारा भेजें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुटनिरपेक्ष आन्दोलन : बेलग्रेड से नई दिल्ली तक

दिवाकर कौशिक*

आज से बाईस वर्ष पूर्व यूगोस्लाविया की राजधानी बेलग्रेड में 25 गुटनिरपेक्ष राष्ट्रों ने गुटनिरपेक्ष आन्दोलन की स्थापना करके अन्तर्राष्ट्रीय सद्भाव और विश्व शांति का जो स्वप्न देखा था वह अभी तक पूरा नहीं हो सका है, और दो दशकों के अनुभव के पश्चात आज जब 97 गुटनिरपेक्ष राष्ट्र 7 मार्च 1983 से इस आन्दोलन के संस्थापक राष्ट्र भारत की राजधानी नई दिल्ली में आयोजित अपने सातवें शिखर सम्मेलन की तैयारी में लगे हुए हैं। गुटनिरपेक्ष आन्दोलन की सार्थकता और सफलता को लेकर कई प्रश्न अनायास ही उठ खड़े होते है। जहाँ एक ओर इस आन्दोलन की अपनी आन्तरिक अनियमितताओं और बिखरी हुई एकता को एकत्रित कर तीसरी दुनिया के एकमात्र प्रतिनिधि के दावे की औचित्यता को सिद्ध करना है, वहीं दूसरी ओर विश्वव्यापी आर्थिक विषमता और तनाव को दूर कर अपने हितों के लिये कार्य भी करना है, परन्तु अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक मंच पर गुटनिरपेक्ष राष्ट्रों द्वारा अभिनीत भूमिका के सम्बन्ध में किसी भी निर्णय पर पहुँचने से पूर्व ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में इस आन्दोलन के कार्यों का अवलोकन करना वांछनीय ही नहीं अनिवार्य हो जाता है।

इस आन्दोलन की कहानी का आरम्भ 1955 में कोलम्बो ग्रुप द्वारा आयोजित ऐफ्रो-एशियाई राष्ट्रों के बाण्डुंग सम्मेलन से होता है जिसने गुटनिरपेक्ष आन्दोलन की नींव डाली। इसमें उपस्थित 25 राष्ट्रों द्वारा उपनिवेशवाद का खण्डन, नव स्वतन्त्र राष्ट्रों में आर्थिक विकास एवं सहयोग की अनिवार्यता, और पंचशील एवं शान्तिपूर्ण सहचारिता के माध्यम से अन्तर्राष्ट्रीय तनाव को दूर करने की माँगों ने गुटनिरपेक्ष आन्दोलन के वैचारिक और दार्शनिक आयामों की ओर इशारा किया। इसके पश्चात जवाहर लाल नेहरू (भारत) और टीटो (यूगोस्लाविया) ने ब्रियोनी में एक संयुक्त घोषणा पत्र द्वारा बाण्डुंग सम्मेलन की नीतियों एवं प्रस्तावों का अनुमोदन कर गुटनिरपेक्ष आन्दोलन का मार्ग प्रशस्त किया। द्वितीय विश्व युद्धोत्तर काल में सं. रा. अमेरिका एवं सोवियत संघ के मध्य प्रारम्भ हुए शीत युद्ध के फलस्वरूप उत्पन्न संकट को दूर करने के लिये नेहरू, टिटो, नक्रुमा (घाना) और सुकर्नो (इण्डोनेशिया) ने संयुक्त राष्ट्र की आम सभा में एक शान्ति और सहयोग का प्रस्ताव रखा जिसमें अमेरिकी राष्ट्रपति आइजेनहॉवर एवं सोवियत प्रधानमन्त्री ख्रुश्चेव को एक साथ मिलकर अन्तर्राष्ट्रीय तनाव को दूर करने का आह्वान किया गया।

इस पृष्ठभूमि में गुटनिरपेक्ष राष्ट्रों के प्रथम शिखर सम्मेलन का आयोजन 1961 में बेलग्रेड में किया गया। इस सम्मेलन में राष्ट्रों को निमन्त्रित करने के लिये चार नियम निर्धारित किये गये। केवल वे ही राष्ट्र इस सम्मेलन में भाग ले सकते थे जो कि (1) शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व पर आधारित एक स्वतन्त्र विदेश नीति अपना रहे हों (2) राष्ट्रीय मुक्ति संगठनों को सहयोग प्रदान करते रहे हों, (3) शीत युद्ध के फलस्वरूप निर्मित सैनिक सन्धियों से अलग हो तथा (4) किसी भी महाशक्ति—सं. रा. अमेरिका एवं सोवियत संघ-को अपने प्रादेशिक क्षेत्र में सैनिक अड्डा निर्माण की अनुमति न दिया हो। बेलग्रेड शिखर सम्मेलन ने मुख्य रूप से बाण्डुंग सम्मेलन द्वारा पारित प्रस्तावों का ही अनुमोदन किया परन्तु जहाँ बाण्डुंग सम्मेलन ने उपनिवेशवाद की समाप्ति एवं नव स्वतन्त्र राष्ट्रों के आर्थिक विकास पर बल दिया था, वहीं बेलग्रेड शिखर सम्मेलन ने विश्व शान्ति के मसलों को प्रथम वरीयता प्रदान की। गुट निरपेक्ष राष्ट्रों

*प्रवक्ता, राजनीतिशास्त्र विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में अन्तर्राष्ट्रीय तनाव को समाप्त करने के लिये अपने सार्थक योगदान का परिचय देते हुए इस बात पर भी जोर दिया कि निर्बल नवस्वतन्त्र राष्ट्र महाशक्तियों के दबाव में न आकर प्रत्येक ऐसी सैनिक सन्धियों का बहिष्कार करें जो कि उनके लिये अहितकर और राष्ट्र विरोधी साबित हो।

प्रारम्भ से ही गुटनिरपेक्ष आन्दोलन ने स्वयं को अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में एक तीसरे गुट के रूप में उभरने की सम्भावना को नकारते हुए इस बात पर जोर दिया कि दो परस्पर विरोधी गुटों—पश्चिमी व साम्यवादी-में प्रतिस्पर्धा के कारण ही विश्व में तनाव और अनिश्चयता के बादल छाये हुए हैं और जिनका उन्मूलन करना ही गुटनिरपेक्ष आन्दोलन का परम उद्देश्य व लक्ष्य है। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में व्याप्त तनाव के प्रश्न पर गुटनिरपेक्ष आन्दोलन ने सं. रा. अमेरिका व सोवियत संघ दोनों की नीतियों का स्पष्ट एवं प्रत्यक्ष रूप से खण्डन किया और दोनों महाशक्तियों से बिना किसी पक्षपात के विश्व शान्ति स्थापित करने के लिये आह्वान किया। परन्तु जब उपनिवेशवाद के उन्मूलन और अविकसित राष्ट्रों के आर्थिक विकास का प्रश्न आया तब इन राष्ट्रों का रवैया स्वाभाविक रूप से पश्चिम विरोधी हो गया। ऐसा होना इसलिये स्वाभाविक था क्योंकि विकसित पश्चिमी पूँजीवादी राष्ट्रों ने अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था में अपनी साम्राज्यवादी व उपनिवेशवादी नीतियों द्वारा तीसरी दुनिया के अविकसित राष्ट्रों को उनके न्यायसंगत अधिकारों से वंचित रख कर उनके विकास के मार्ग में अवरोध उत्पन्न कर दिये थे। इस प्रकार जब तक गुटनिरपेक्ष आन्दोलन ने विश्व शान्ति को प्राथमिकता प्रदान की तब तक वह स्वयं को दोनों प्रतिस्पर्धी खेमों के मध्य सफल मध्यस्थता बनाये रख सका परन्तु ज्यों ही अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था के प्रश्न को उठाया गया तो उसे विवश होकर अपनी मध्यस्थता की नीति को त्याग कर पश्चिम विरोधी रुख अपनाना पड़ा।

जहाँ तक सोवियत संघ का प्रश्न है, उसने अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में गुटनिरपेक्ष राष्ट्रों द्वारा किये गये सफल पदार्पण का कोई विरोध नहीं किया क्योंकि ख्रुश्चेव ने तब तक अपनी विदेश नीति में शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व की अवधारणा को अपना लिया था और दूसरी ओर गुटनिरपेक्ष आन्दोलन द्वारा किये गये विश्व शान्ति के आह्वान का समर्थन करके उसे सं. रा. अमेरिका व साम्यवादी चीन में अपने विरुद्ध प्रचलित वैचारिकी व दार्शनिक प्रतिक्रियाओं से संघर्ष में उचित सहयोग प्राप्त हुआ। तीसरी दुनिया के राष्ट्रों के प्रति "राष्ट्रीय प्रजातन्त्र" के सिद्धान्त को लेकर सोवियत नीति एक आशावादी दौर पर आ चुकी थी और भू. पू. सोवियत शासक स्टालिन द्वारा अपनाया गया टीटो विरोधी रवैया भी धीरे-धीरे समाप्त होने लगा था।

सोवियत नेताओं की तुलना में साम्यवादी चीन ने शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व के सिद्धान्त के प्रति इतना अधिक उत्साह नहीं प्रकट किया परन्तु बाण्डुंग सम्मेलन में चीनी प्रधानमन्त्री चाऊ एन लाइ (इस सम्मेलन में साम्यवादी चीन के भाग लेने के साथ उनका अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में अलगाव की समाप्ति हुई थी) को प्राप्त प्राथमिकता तथा तृतीय विश्व का नेतृत्व करने की निरन्तर आकांक्षा को ध्यान में रखते हुए चीन ने गुटनिरपेक्ष आन्दोलन की सहायता करते हुए उसे शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व और साम्राज्यवादी योजनाओं की भ्रामक असमनताओं के जाल में न उलझ कर अपने अस्तित्व बनाये रखने की चेतावनी भी दी। स्पष्टतः चीन का यह इशारा सोवियत संघ की ओर था।

जहाँ एक ओर साम्यवादी गुट ने भिन्न कारणों से गुटनिरपेक्ष आन्दोलन के उदय पर अपनी सहमति और प्रसन्नता व्यक्त की वहीं दूसरी ओर सं. रा. अमेरिका के नेतृत्व से पश्चिमी पूँजीवादी राष्ट्रों ने इस आन्दोलन को अवहेलना की दृष्टि से देखा क्योंकि उनकी तुलना में गुटनिरपेक्ष राष्ट्रों की सम्मिलित राजनीतिक, आर्थिक व सैनिक शक्ति नगण्य थी। हालांकि पांचवे दशक के प्रारम्भ में अमेरिकी विदेश मन्त्री जान फॉस्टर डलेस के "स्थायी शत्रु या स्थायी मित्र" के सिद्धान्त तथा बाण्डुंग सम्मेलन के उपनिवेशवाद विरोधी प्रस्तावों के प्रति प्रतिक्रिया ने अमेरिकी दृष्टिकोण स्पष्ट कर दिये थे परन्तु गुटनिरपेक्ष आन्दोलन में बढ़ती हुई सदस्य राष्ट्रों की संख्या व तदनुसार बढ़ते हुए प्रभाव ने सं. रा. अमेरिका को अपना रवैया बदलने के लिए विवश किया! छठे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दशक के प्रारम्भ तक सं. रा. अमेरिका को आभास हो चुका था कि गुटनिरपेक्ष आन्दोलन मुख्यतः पश्चिम विरोधी आन्दोलन न होकर विश्व शान्ति का पक्षधर है और कुछ सन्देहों के उपरान्त उसने प्रत्यक्ष रूप से आन्दोलन की नीतियों व उद्देश्यों की आलोचना करना त्याग दिया।

1964 में कायरो (मिस्र) तथा 1970 में लुसाका (जाम्बिया) में आयोजित क्रमशः द्वितीय तथा तृतीय गुटनिरपेक्ष शिखर सम्मेलन प्रथम शिखर सम्मेलन से अधिक भिन्न नहीं थे, और विश्व शान्ति की स्थापना, जो कि इस आन्दोलन के प्रारम्भ होने का प्रमुख कारण था, ने इन दोनों शिखर सम्मेलनों में उचित प्राथमिकता प्राप्त की। यही एक ऐसा विषय था जिसने आन्दोलन को वैचारिक दृष्टि से एकता बनाये रखने में सहायता की क्योंकि उपनिवेशवाद और आर्थिक विकास जैसे मुद्दों में पश्चिमी विरोधी दृष्टिकोण ने आन्दोलन की सैद्धान्तिक व वैचारिक एकता में दरार डाल दी। इसका आभास कायरो व लुसाका शिखर सम्मेलन से मिलना प्रारम्भ हो गया था क्योंकि यही आन्दोलन उग्रवादी, मध्यममार्गी तथा अनुदारवादी राष्ट्रों के वैचारिक नीतियों के मतभेदों से ग्रसित होना प्रारम्भ हुआ।

द्वितीय शिखर सम्मेलन में जहाँ केनिया, भारत, श्रीलङ्का व नाइजीरिया जैसे मध्यममार्गी सदस्य राष्ट्रों ने शीत युद्ध एवं उसके दुष्परिणामों को महत्व दिया तो वही दूसरी ओर मिस्र, घाना, गुयाना, अल्जीरिया तथा क्यूबा जैसे उग्रवादी सदस्य राष्ट्रों ने उपनिवेशवाद और आर्थिक समस्याओं पर अधिक बल देकर आन्दोलन की एकमतता पर प्रहार किया। इस सम्मेलन के दौरान उग्रवादी सदस्य राष्ट्रों की विजय के दो प्रमुख कारण थे, एक तो नव स्वतन्त्र अफ्रीकी राष्ट्रों का प्रबल उपनिवेशवाद विरोधी दृष्टिकोण, और दूसरा, यह सम्मेलन अंक्टाड के उस ऐतिहासिक सम्मेलन के तुरन्त पश्चात हुआ जो कि तृतीय विश्व में एकता एवं पारस्परिक सहयोग का प्रतीक था।

तुलनात्मक दृष्टि से लुसाका शिखर सम्मेलन कायरो शिखर सम्मेलन से अधिक अनुदारवादी था क्योंकि इन छह वर्षों के अन्तराल में आन्दोलन के उग्रवादी सदस्य राष्ट्रों ने नासिर, नक्रुमा, सुकार्नो एवं अहमद बेन बेला जैसे प्रतिष्ठित नेताओं को खो दिया था। परिणामस्वरूप लुसाका शिखर सम्मेलन के अन्तिम घोषणा पत्र में आर्थिक मसलों की अपेक्षा बड़ी शक्तियों की नीतियों की आलोचना की, और पूंजीवाद व साम्राज्यवाद पर अधिक बल नहीं दिया। केवल उपनिवेशवाद के मसौदे से ही पूर्ववत शिखर सम्मेलनों में उग्रवादी स्वर का स्पष्ट आभास होता है।

परन्तु लुसाका शिखर सम्मेलन को गुटनिरपेक्ष आन्दोलन का अन्तिम मध्यममार्गी सम्मेलन कहा जा सकता है और यहाँ पर आकर आन्दोलन के विकास का प्रारम्भिक दौर का अन्त होता है। 1973 में अल्जीयर्स (अल्जीरिया) में सम्पन्न होने वाले गुटनिरपेक्ष आन्दोलन के चतुर्थ शिखर सम्मेलन तक अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में एक अभूतपूर्व परिवर्तन आ चुका था। शीत युद्ध की वैमनस्यता के स्थान पर अब तनाव शैथिल्य का बोलबाला था जिससे शान्ति समस्या के मसौदे की अनिवार्यता क्षीण हो गयी थी और उसके स्थान पर तृतीय विश्व के लिये नयी अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था की अनिवार्यता ने उच्च वरीयता प्राप्त कर ली थी। बदलते हुए अन्तर्राष्ट्रीय वातावरण की इस पृष्ठभूमि में क्यूबा के राष्ट्राध्यक्ष फ़िडेल क़ास्ट्रो के रूप में एक ऐसे अन्तर्राष्ट्रीय नेता का उदय हुआ जिसने कि आगामी वर्षों में गुटनिरपेक्ष आन्दोलन पर अपने व्यक्तित्व की अमिट छाप डाली।

अल्जीयर्स शिखर सम्मेलन से गुटनिरपेक्ष आन्दोलन के विकास का नया दौर प्रारम्भ हुआ परन्तु पिछले तीन वर्षों के अन्तराल में सभी अविकसित राष्ट्रों की आर्थिक स्थिति में तीव्र गति से गिरावट आ गयी थी। 1972-73 में निरन्तर सूखा और बाढ़ ने खाद्य समस्या को गम्भीर बनाया और अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में खाद्य सामग्रियों के भाव आकाश चूमने लगे जिसके परिणामस्वरूप तृतीय विश्व को खाद्य सामग्रियों के निर्यात से विकसित राष्ट्रों को तीन गुना से अधिक का लाभ हुआ। तेल उत्पादक राष्ट्रों के अलावा तृतीय विश्व के अन्य राष्ट्रों में आर्थिक विकास ठप हो गया और भुगतान सन्तुलन व्यवस्था पूर्ण रूप से बिखर गयी। इस अभूतपूर्व आर्थिक संकट ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अविकसित राष्ट्रों की एक अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक सम्बन्ध कायम करने की मांग को लेकर पुनः एकजुट होकर कार्य करने के लिये बाध्य किया। इधर तेल उत्पादक व निर्यातक राष्ट्रों (ओपेक) की उपलब्धियों ने यह विश्वास दिलाया कि अविकसित राष्ट्र अपनी एकता द्वारा विकसित राष्ट्रों को अपनी आर्थिक माँगों को मनवाने के लिये बाध्य कर सकते हैं। इन सब तथ्यों की पृष्ठभूमि में नवीन अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था की मांग रखी गयी जिसे 1974 एवं 1975 में संयुक्त राष्ट्र की आमसभा के अधिवेशनों में भी पेश किया गया।

सं. रा. अमेरिका और सोवियत संघ के 1972 से प्रारम्भ हुए तनाव शैथिल्य के परिणामस्वरूप गुटनिरपेक्ष आन्दोलन के सदस्य राष्ट्रों द्वारा शीत युद्ध के विरुद्ध आह्वान में कमी आयी और नवीन अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था की माँग ने प्राथमिकता प्राप्त कर अल्जीयर्स शिखर सम्मेलन को अपने पूर्ववत तीन शिखर सम्मेलनों से काफी अधिक उग्रवादी स्वरूप प्रदान किया। अल्जीयर्स शिखर सम्मेलन के आर्थिक घोषणा पत्र में यह तथ्य प्रस्तुत किया गया कि महाशक्तियों के मध्य तनाव-शैथिल्य से अन्तर्राष्ट्रीय सहअस्तित्व तथा अविकसित राष्ट्रों को किसी प्रकार का लाभ नहीं हुआ क्योंकि साम्राज्यवाद अभी भी अविकसित राष्ट्रों की स्वतंत्रता और प्रगति के मार्ग में अभी भी अवरोधक बना हुआ है।

अब प्रश्न यह उठा कि ये साम्राज्यवादी राष्ट्र कौन-कौन है? अल्जीयर्स शिखर सम्मेलन का सबसे नाटकीय मसौदा यह था कि विश्वव्यापी आर्थिक समस्याओं को उत्तर व दक्षिण (विकसित व अविकसित राष्ट्र) के आयाम के सन्दर्भ में प्रस्तुत कर 'पश्चिमी साम्राज्यवाद' और 'समाजवादी साम्राज्यवाद' दोनो को समान रूप से दोषी ठहराया जाय या विकसित समाजवादी राष्ट्रों की अपेक्षा विकसित पूंजीवादी राष्ट्रों पर सम्पूर्ण दोष थोपा जाय। जब अल्जीयर्स शिखर सम्मेलन द्वारा पारित प्रस्ताव ने विकसित समाजवादी एवं विकसित पूंजीवादी राष्ट्रों की आलोचना करते हुए साम्यवादी चीन के 'तीन विश्व' के सिद्धान्त को दोहराया तो इसके जवाब में सोवियत नेता ब्रेजनेव ने सम्मेलन में प्रस्तुत एक सन्देश में यह कहा कि समाजवादी राष्ट्र गुटनिरपेक्ष आन्दोलन के 'स्वाभाविक सहयोगी (Natural Ally) हैं और सही अर्थों में विश्व का विभाजन 'बड़े और छोटे', 'धनी और गरीब' की अपेक्षा 'समाजवाद और साम्राज्यवाद, के कारण हुआ।

अल्जीयर्स शिखर में फिडेल कास्ट्रो ने अल्जीरिया एवं लीबिया के 'दो साम्राज्यवाद' के सिद्धान्त का विरोध करते हुए प्रथम तीन गुटनिरपेक्ष शिखर सम्मेलन में क्यूबाई निष्पक्षता की नीति को त्यागा और अपने समाजवादी स्वरूप, और सोवियत संघ से अपनी घनिष्ठता का परिचय प्रस्तुत किया। उन्होंने प्रत्यक्ष रूप से सं. रा. अमेरिका के नेतृत्व में पूंजीवादी साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद एवं नवउपनिवेशवाद फैलाने वाली शक्तियों से अपनी पूर्ववत नीतियों को त्याग करने का आग्रह करते हुए उनकी आलोचना की। फिडेल कास्ट्रो के इस प्रदर्शन ने जहाँ उन्हें गुटनिरपेक्ष आन्दोलन के सर्वोपरि नेताओं की श्रेणी में खड़ा कर दिया वही अल्जीयर्स शिखर सम्मेलन से सोवियत संघ के विरुद्ध आलोचना का जोर ठण्डा पड़ने लगा।

1976 में कोलम्बो (श्री लंका) में आयोजित पांचवें गुटनिरपेक्ष शिखर सम्मेलन में क्यूबा ने अपनी प्रतिष्ठा कायम रखते हुए अन्तिम घोषणा पत्र में सम्मिलित सभी मुद्दों को अपनी नीतियों द्वारा निर्देशित किया। इस घोषणा पत्र में भी अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक समस्याओं को उच्च वरीयता प्रदान करते हुए पश्चिमी पूंजीवादी राष्ट्रों को नवीन अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था के मार्ग में बाधक घोषित कर उनकी आलोचना की गयी। साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद, नवउपनिवेशवाद, रंगभेद नीति और यहूदीवाद जैसे प्रश्नों पर फ्रान्स, ब्रिटेन, पश्चिमी जर्मनी, इस्रायल, दक्षिण अफ्रीका तथा सं. रा. अमेरिका को दोषी ठहराते हुए कोलम्बो शिखर सम्मेलन ने 1979 में आयोजित होने वाले छठे शिखर सम्मेलन के लिये क्यूबा को उपयुक्त माना।

जहाँ एक ओर गुटनिरपेक्ष राष्ट्र तृतीय विश्व और पश्चिमी पूंजीवादी राष्ट्रों के मध्य सम्बन्ध के प्रश्न पर क्यूबा से सहमत थे वहीं दूसरी ओर वे क्यूबा से इस बात पर सहमत न हो सके कि समाजवादी राष्ट्र सही अर्थ मे गुटनिरपेक्ष आन्दोलन के 'स्वाभाविक सहयोगी' हैं। हालांकि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि 1978 में बेलग्रेड में आयोजित गुटनिरपेक्ष राष्ट्रों के विदेश मन्त्रियों की बैठक में क्यूबा के इस पक्षपातपूर्ण भूमिका की आलोचना करने का प्रयत्न किया गया परन्तु वह सफल न हो सका।

इधर छठें गुटनिरपेक्ष शिखर सम्मेलन के पूर्व ही समाजवादी वियतनाम एवं कम्पूचिया के मध्य भीषण युद्ध छिड़ गया, और संयुक्त राष्ट्र की महासभा में क्यूबा ने पूर्णरूप से वियतनाम का समर्थन करते हुए कम्पूचिया के नेता पोल पोट व सिहानूक की आलोचना की। जब कम्पूचिया के प्रश्न पर गुटनिरपेक्ष राष्ट्रों ने वहाँ से विदेशी सैनिकों की वापसी का प्रस्ताव रखा, तब क्यूबा ने निष्पक्ष गुटनिरपेक्ष राष्ट्रों के इस माँग को ठुकरा कर आनेवाले समय में अपनी सम्भावित कठोर उग्रवादिता का परिचय प्रदान किया।

अल्जीयर्स शिखर सम्मेलन की भाँति हवाना शिखर सम्मेलन से भी गुटनिरपेक्ष आन्दोलन में नाटकीय मोड़ की सम्भावना थी। हवाना शिखर सम्मेलन में सभी गतिविधियाँ आशानुरूप ही घटित हुई। क्यूबा के नेतृत्व में वियतनाम, अंगोला, इथोपिया, मोजाम्बिक व अफगानिस्तान आदि उग्रवादी राष्ट्रों ने आन्दोलन को वामपन्थी दिशा प्रदान करने, आन्दोलन की समाजवादी परिभाषा प्रस्तुत करने तथा समाजवादियों को आन्दोलन का 'स्वाभाविक सहयोगी' घोषित करने के लिये एक सुनहरा अवसर प्राप्त हुआ। मेजबान राष्ट्र होने के कारण क्यूबा को शिखर सम्मेलन के अन्तिम घोषणापत्र को सर्वसम्मति से पारित करने की जिम्मेदारी सौंपी गयी थी एवं इस कारण से उग्रवादी खेमे का मनोबल और भी ऊँचा हो गया था। दूसरी ओर, यूगोस्लाविया के नेतृत्व में श्रीलंका, मलेशिया, मिस्र व सिंगापुर आदि मध्यममार्गी राष्ट्रों ने क्यूबा द्वारा प्रेरित और प्रस्तुत अन्तिम घोषणापत्र को विफल करने का जीतोड़ प्रयत्न किया।

सं. रा. अमेरिका जो अब तक गुटनिरपेक्ष आन्दोलन के प्रभाव को अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में नगण्य मानता था, क्यूबा द्वारा आन्दोलन को अधिकाधिक उग्रवादी स्वरूप प्रदान करने के प्रयत्नों से आशंकित होकर उसे विफल करने में लग गया। सं.रा. अमेरिका के इस परिवर्तित रवैये के कुछ कारण थे। अमेरिकी विदेश मन्त्री हेनरी किसिंजर की यथार्थपरक विदेश नीति में आर्थिक व सैनिक दृष्टिकोण से पिछड़े अविकसित राष्ट्रों का कोई महत्व नहीं था, परन्तु अमेरिकी राष्ट्रपति जिमी कार्टर ने मानवाधिकार अभियान और विश्व जनमत के प्रति सजकता से तृतीय विश्व के राष्ट्रों के समक्ष अमेरिका की नूतन छवि प्रस्तुत करने की चेष्टा की। सर्वप्रथम सं. रा. अमेरिका ने क्यूबा का सोवियत संघ के साथ सैनिक गठबन्धन का आरोप लगाते हुए न केवल उसकी निष्पक्षता पर सन्देह प्रकट किया बल्कि साथी निर्गुट राष्ट्रों के मध्य उसकी प्रतिष्ठा कम करनी चाही। अन्त में राजनीतिक प्रयत्नों द्वारा अन्तिम घोषणापत्र में साम्राज्यवादविरोधी भाषा को अधिकाधिक कम करने की भी कोशिश की गयी।

सितम्बर 1979 में हवाना में सम्पन्न छठें शिखर सम्मेलन में गुटनिरपेक्ष आन्दोलन और सोवियत संघ से उसके सम्बन्धों को लेकर टीटो व कास्ट्रो के मध्य टकराव की पूरी सम्भावना थी परन्तु टिटो की कुशल राजनीतिज्ञता और कास्ट्रो की चतुराई ने इस सम्भावना पर पानी फेर दिया। कास्ट्रो ने "स्वाभाविक सहयोगी" के सिद्धान्त के मसले पर अधिक बल नहीं दिया क्योंकि उन्हें अन्य सदस्य राष्ट्रों के समर्थन के सम्बन्ध में संशय था। शिखर सम्मेलन के अन्तिम घोषणापत्र में समाजवादी खेमें से मैत्री को सराहा गया। साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद, नवउपनिवेशवाद, यहूदीवाद और रंगभेद नीति की भरसक आलोचना की गयी और पश्चिमी पूजींवादी राष्ट्रों की नीतियों पर निर्देशित विभिन्न आलोचना के स्थान पर द्विभाषीय 'साम्राज्यवादी शक्तियों' का प्रयोग किया गया। संक्षेप में, अन्तिम घोषणा पत्र द्वारा विश्वव्यापी समस्याओं पर पारित निर्देशों के कारण हवाना शिखर सम्मेलन सबसे अधिक पश्चिमी विरोधी सिद्ध हुआ जबकि 'स्वाभाविक सहयोगी' के सिद्धान्त को कोई महत्व नहीं प्रदान किया गया।

हवाना शिखर सम्मेलन में कम्पूचिया और मिस्र के मसलों को लेकर काफी वादविवाद हुआ। बुडापेस्ट 1979 में सम्पन्न गुटनिरपेक्ष विदेश मन्त्रियों का बैठक कम्पूचिया के असली प्रतिनिधि का मसला तय करने में असफल था। क्यूबा के इच्छा के विरुद्ध हेंग सेमरिन के स्थान पर पाल पोट को बैठक में भाग लेने की अनुमति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिसी और सम्पूर्ण कम्पूचिया मसलें को हवाना शिखर सम्मेलन के ठीक पूर्व सम्पन्न होने वाले राजनयों के सम्मेलन तक के लिये स्थगित किया गया। अन्य सदस्य राष्ट्र कम्पूचिया के हेंग सेमरित को मान्यता प्रदान करने झिझक रहे थे क्योंकि यूगोस्लाविया व उसके समर्थकों के अनुसार यह प्रश्न सम्पूर्ण गुटनिरपेक्ष आन्दोलन का सोवियत संघ के साथ सम्बन्धों पर आधारित था। अन्त में यह निर्णय लिया गया कि छठें शिखर सम्मेलन में कम्पूचिया का स्थान रिक्त रखा जायेगा और इस विषय पर 1981 में नई दिल्ली में होने वाले गुटनिरपेक्ष विदेश मन्त्रियों के बैठक में आगे विचार किया जायेगा। हांलाकि कम्पूचिया के मामलें पर क्यूबा अपने प्रस्ताव को मनवाने में सफल रहा परन्तु यह सर्वसम्मति से पारित प्रस्ताव न था और शिखर सम्मेलन के एक महीने पश्चात ही संयुक्त राष्ट्र की आम सभा में गुटनिरपेक्ष सदस्य राष्ट्रों ने पाल पोट के पक्ष में मत प्रदान कर इस तथ्य की पुष्टि की। मिस्र और इस्रायल के मध्य सम्पन्न कैम्प डेविड समझौतें (1978) के विषय पर भी शिखर सम्मेलन में काफी मतभेद रहा। उग्रवादी राष्ट्रों ने मिस्र को गुटनिरपेक्ष आन्दोलन की भावनाओं पर आघात करने के आरोप में निष्काषित करने की मांग रखी परन्तु अन्तिम घोषणा पत्र में सं. रा. अमेरिका के तत्वावधान में सम्पन्न कैम्प डेविड समझौते की आलोचना करने के पश्चात मिस्र की सदस्यता को एक वर्ष के अन्तराल में होने वाले गुटनिरपेक्ष विदेश मन्त्रियों के बैठक तक के लिये निलम्बित कर दिया गया।

हवाना शिखर सम्मेलन में न तो उग्रवादी और न ही मध्यममार्गी सदस्य राष्ट्र अपनी जीत का दावा कर सकते थे क्योंकि गुटनिरपेक्ष आन्दोलन की सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित करने की परम्परा का उल्लघंन न कर क्यूबा व यूगोस्लाविया द्वारा प्रत्यक्ष रूप से मुकाबला न करने निश्चय ने अनेक महत्वपूर्ण मसलों को समझौते द्वारा समाधान करने पर बाध्य किया। मध्यममार्गी सदस्य राष्ट्र सम्भवतः इसी बांत से सन्तुष्ट थे कि उन्होंने उग्रवादी सदस्य राष्ट्रों द्वारा समाजवादी खेमें को आन्दोलन के 'स्वाभाविक सहयोगी' घोषित करने के प्रयास को विफल कर दिया, पश्चिम विरोधी प्रतिक्रियाओं को अपेक्षाकृत कम किया, हेंग सेमरिन के मान्यता के मुद्दे को नकारा और कैम्प डेविड समझौते की आलोचना को दबाया। उधर क्यूबा के नेतृत्व में उग्रवादी सदस्य राष्ट्र भी इस बात से प्रसन्न थे कि यदि हेंग सेमरिन को शिखर सम्मेलन में योगदान का अधिकार नहीं दिया गया तो पाल पोट भी इससे वंचित रहे, यदि कैम्प डेविड समझौते की अधिक भर्त्सना न हो सकी तो मिस्र को एक वर्ष के लिये निलम्बित किया गया, यदि समाजवादी खेमें को आन्दोलन के स्वाभाविक सहयोगी का दर्जा प्रदान करने में असफल रहे तो इतना अवश्य था कि पश्चिमी राष्ट्र भी आलोचना से वंचित न रह पाये। हवाना शिखर सम्मेलन की आर्थिक घोषणा पत्र में साम्राज्यवाद का विरोध तथा गुटनिरपेक्ष आन्दोलन को एक ही सिक्कें के दो पहलू घोषित कर क्यूबा ने अपनी जीत को सर्वविदित कराया।

मार्च 1981 में नई दिल्ली में आयोजित गुटनिरपेक्ष राष्ट्रों के विदेश मन्त्रियों का सम्मेलन कई दृष्टियों से महत्वपूर्ण था। परन्तु अन्त में सर्वसम्मति द्वारा जारी किये गये घोषणापत्र ने यह बात सोचने पर विवश कर दिया कि क्या मतैक्य की भ्रामक एकता के सहारे गुटनिरपेक्ष राष्ट्रों का यह आन्दोलन अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति अपना महत्व एवं प्रतिष्ठा स्थापित कर सकता है? मेजबान राष्ट्र भारत द्वारा कम्पूचिया के हेंग सेमरिन सरकार की मान्यता को प्रदान करने के बावजूद भी उसके प्रतिनिधियों का सम्मेलन में भाग लेने पर रोक, अफगानिस्तान समस्या पर अपने द्विभाषीय वक्तव्य द्वारा, और हिन्द महासागर में दियागो गार्सिया का नाम लेकर अमेरिकी नीतियों का खण्डन न करना आदि घटनाओं ने इस सम्मेलन को उच्चस्तरीय न होने दिया। इसके लिये काफी सीमा तक उत्तरदायी सिंगापुर के नेतृत्व में अमेरिकी समर्थक कुछ द. पू. एशिराई राष्ट्र रहे। जहाँ तक उपनिवेशवाद, रंगभेद नीति, फिलिस्तीन समस्या, नयी अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था आदि का प्रश्न है, गुटनिरपेक्ष राष्ट्रों को कभी भी सर्वसम्मत होने में असुविधा नहीं हुयी। अफगानिस्तान, कम्पूचिया व हिन्द महासागर की समस्या पर जहाँ एक ओर समाजवादी खेमें की आलोचना हुई, वही दूसरी ओर पश्चिमी एशिया, द. अफ्रीका तथा लातिनी अमेरिका के मसलों पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमेरिका के प्रतिक्रियावादी दृष्टिकोण एवं कार्यवाहियों को नहीं बख्शा गया। ईरान-इराक युद्ध के समाधान के प्रयासों के अलावा नई दिल्ली घोषणा पत्र की प्रमुख उपलब्धि गुटनिरपेक्ष आन्दोलन की बिखरती हुई एकता को एक जुट कर नवीन विश्व व्यवस्था की स्थापना करने के आह्वान को जाता है।

हवाना शिखर सम्मेलन में ही बगदाद (इराक) को सातवें गुटनिरपेक्ष आन्दोलन के शिखर सम्मेलन के लिये आयोजन स्थल नियुक्त किया गया था। परन्तु पिछले चार वर्षों से चल रहे ईरान-इराक युद्ध के कारण सितम्बर 1982 से इस शिखर सम्मेलन का आयोजन सम्भव न हो सका और अन्ततः सर्वसम्मति से नई दिल्ली में सातवें शिखर सम्मेलन का आयोजन करना निश्चित हुआ। जनवरी 1983 में मानागुआ (निकारगुआ) में गुटनिरपेक्ष आन्दोलन के समन्वय ब्यूरो की बैठक में सभी सदस्य राष्ट्र इस बात पर सहमत हुए कि सातवें शिखर सम्मेलन के दौरान सदस्य राष्ट्रों को अपना समय और श्रम छोटी-छोटी बातों पर वादविवाद कर नष्ट न करके मुख्यतः निरस्त्रीकरण एवं तृतीय विश्व के राष्ट्रों के विकास, तथा आन्दोलन की एकता, अखण्डता, प्रतिष्ठा और प्रभाव को शीघ्रातिशीघ्र रूप से अधिकाधिक बढ़ाने के लिये प्रयास करना चाहिए।

सातवें शिखर सम्मेलन के मेजबान राष्ट्र भारत ने सम्मेलन के लिये राजनीतिक व आर्थिक विषयों पर मसविदे तैयार कर लिया है और अध्ययन हेतु उन्हें सभी सदस्य राष्ट्रों को भी प्रेषित कर दिया गया है। राजनीतिक मसविदें में अफगानिस्तान व कम्पूचिया समस्या, पश्चिमी सहारा का प्रश्न, ईरान-इराक युद्ध, पश्चिम एशिया की बिगड़ती हुई स्थिति, हिन्द महासागर का सैन्यीकरण, लातिनी अमेरिका की स्थिति, नामीबिया का प्रश्न और दक्षिण पूर्व एशिया की स्थिति आदि मसलें सम्मिलित है। आर्थिक मसविदें में अन्तर्राष्ट्रीय समझौता वार्ता की शीघ्र पुनारम्भ की आवश्यकता पर जोर प्रदान किया गया जिससे कि सदस्य राष्ट्र विकसित राष्ट्रों की शिकंजे से मुक्त होकर अधिकाधिक आत्मनिर्भरता प्राप्त करके प्रत्येक कमी को दूर कर सके। मसविदें में विकसित राष्ट्रों की संरक्षणवादी नीति में कमी की आलोचना की गयी, और इस सन्दर्भ में विकसित राष्ट्रों में अधिकाधिक सहयोग आवश्यकता पर बल दिया गया है। साथ ही अन्तर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में सुधार के अल्पकालीन एवं दीर्घकालीन प्रयासों की आवश्यकता पर भी बल दिया गया है।

सातवें शिखर सम्मेलन के मसविदें में सम्मिलित सभी मसलों का शीघ्रातिशीघ्र समाधान आवश्यक है परन्तु यह अत्यन्त दुखःदायक होगा यदि सम्मेलन का अमूल्य समय व शक्ति का व्यय राजनीतिक मसलों पर वही घिसे पिटे और जाने पहचाने नीतियों को दोहरा कर किया जाय। यह दोहराने की आवश्यकता नहीं कि गुटनिरपेक्ष शिखर सम्मेलन जैसे अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों से कोई विशेष सकारात्मक लाभ नहीं होता हैं क्योंकि सभीयोगदान कारी राष्ट्र इन मंचों के माध्यम से अपने विचारों और नीतियों का प्रचार अधिक करते है न कि समस्या के समाधान का प्रयत्न करते। ऐसी समस्याओं को द्विपाक्षिक वार्ताओं या क्षेत्रीय स्तर पर अधिक अच्छी तरह सुलझाया जा सकता है। अतएव सातवें शिखर सम्मेलन को इन मुद्दो पर अधिक समय न व्यय कर उन सब मुद्दो को सुलझाने का अधिक प्रयास करना चाहिए जो सभी सदस्य राष्ट्रों की एक समान समस्या हो और जिसके समाधान के लिये सभी सदस्य राष्ट्रों का सामूहिक रूप से कार्य करना वांछनीय हो। फिर, यह सर्वविदित है कि गुटनिरपेक्ष आन्दोलन को राजनीतिक क्षेत्र की अपेक्षा आर्थिक क्षेत्र में अधिक सफलता मिली है और विश्व आर्थिक व्यवस्था में इस आन्दोलन का अपना एक स्वतन्त्र अस्तित्व है क्योंकि इसके अधिकांश सदस्य-जिनमें निम्न आय व मध्यम आय वाले राष्ट्र एवं तेल निर्मातक विकासशील राष्ट्र सम्मिलित है—ग्रुप ऑव 77 (अब 122 सदस्य राष्ट्र) में सम्मिलित है।

ऐसी आर्थिक समस्याओ में सर्वप्रमुख है विकसित राष्ट्रों द्वारा विकासशील राष्ट्रों का आर्थिक शोषण के रूप में नवसाम्राज्यवाद की चुनौती। अंकटाड एवं ब्राण्ड आयोग के आख्या के अनुसार, विकसित राष्ट्र दिन प्रति धनी होते जा रहे है और साथ में कंजूस भी। विकासशील राष्ट्रों के कच्चे माल के शोषण से लाभान्वित पश्चिम के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

औद्योगिक राष्ट्रों का युग अब कलवाधित हो चुका है और वर्तमान स्थिति में अस्वीकार्य है, परन्तु इस अस्वीकार्य स्थिति के लिये ये विकासशील राष्ट्र भी जिम्मेवार है। परस्पर विवाद व कलह के कारण दक्षिण-दक्षिण सहयोग केवल अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में एकत्र होकर भाषणवाजी तक ही सीमित है. विकासशील राष्ट्रों के मध्य आर्थिक व तकनीकी सहयोग आह्वान के वावजूद दक्षिण-दक्षिण सहयोग उतरोत्तर कम होता जा रहा है। पश्चिम के दस औद्योगिक राष्ट्रों के वित्तमन्त्री के सम्मेलन ने हाल में स्वीकार किया है कि तृतीय विश्व का आर्थिक पतन पश्चिमी औद्योगिक राष्ट्रों के हित में नहीं है। जब ये विकसित राष्ट्र ऐसा कह रहें है तो विकासशील राष्ट्रों को चाहिए कि समय का उपयुक्त लाभ उठाया जाय। अंकटाड का छठा अधिवेशन जून 1983 में वेलग्रेड में होगा। अतएव अंकटाड के अगले अधिवेशन, जिसमें अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार व विकास पर महत्वपूर्ण निर्णय लिया जायेगा। के पूर्व ही सातवें गुटनिरपेक्ष शिखर सम्मेलन के दौरान अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक मुद्दों पर महत्वपूर्ण निर्णय लेना होगा। गुटनिरपेक्ष राष्ट्रों में परस्पर व्यापार व तकनीकी सहयोग का उपाय अपनाना होगा, साथ में, अपनी भूमिका में ओज्स प्रदान कर अह्वष विकसित राष्ट्रों को यह सोचने के लिये मजबूर करना होगा कि मन्दी के तौर से गुजरती विश्व आर्थिक व्यवस्था में धनी और निर्धन राष्टों के मध्य उतरोत्तर बढ़ती हुई आर्थिक विषमता अन्तर्राष्ट्रीय बिरादरी में असहनीय तनाव उत्पन्न करेगी जो कि अन्ततः सम्पूर्ण विनाश का कारण बन सकता है एवं इस कारण से इन विकसित राष्ट्रों को शीघ्रातिशीघ्र नयी विश्व आर्थिक व्यवस्था की स्थापना के लिये रचनात्मक प्रयत्न करना होगा।

ऐसे प्रयासों में सफलता प्राप्ति के लिये सातवें शिखर सम्मेलन के दौरान स्थायी समिति के रूप में कतिपय विशेषज्ञ कार्यदल का स्थापना करना आवश्यक है, जो संयुक्त राष्ट्र में और दूसरे मंचों पर समान विचारों वाले अन्य समूहों के साथ मिलकर इन समस्याग्रस्त विषयों का अध्ययन कर समाधान का उपाय सुझा सके। फिर, किसी संगठन को स्थापित करने से अच्छा होगा कि आधारभूत समस्याएं जैसे, विकास के लिये संसाधन नीति, शस्त्रों का अधिकतम परिसीम न एक दूसरे की सुरक्षा समस्याओं को भलीभाति समझने तथा सघर्ष के मुद्दो का यथासम्भव समाप्त करने हेतु सर्वसम्मति प्राप्त किया जाय। शिखर सम्मेलन में प्रति चार वर्ष पर मिलने वाले राष्ट्राध्यक्षों के मात्र क्लब की अपेक्षा इस संगठन को अधिक सार्थक बनाने हेतु ध्यान देना होगा। आवश्यकता है एक ऐसे प्रभावकारी स्थायी संगठन की जो एक छोटे सचिवालय के रूप में कार्य करे। यह अमेरिकी छलप्रयोग के कारण संयुक्त राष्ट्र की असमर्थता की वजह से और अधिक आवश्यक हो गया है। यद्यपि गुटनिरपेक्ष आन्दोलन संयुक्त राष्ट्र का विकल्प नहीं है तथापि वह सदैव इस निकाय की समर्थता का पूरण एवं सम्बर्द्धन कर सकता है।

दोनो महाशक्तियों के मध्य देतां के परिणामस्वरूप संघर्ष का क्षेत्र यूरोप के स्थान पर तृतीय विश्व हो गया है, किन्तु अब महाशक्तियों के मध्य कटुता के पुनारम्भ होने के के कारण तृतीय विश्व के राष्ट्रों में प्रतिताधिकार (Proxy) के द्वारा युद्ध बढ़ जाने की सम्भावना है। गुटनिरपेक्षता पर विशेषज्ञ के सुब्रमणयम के अनुसार, नई दिल्ली शिखर सम्मेलन गुटनिरपेक्ष आन्दोलन की मूल भावना—गुटनिरपेक्षता विश्व में शान्ति, सम्बृद्धि तथा विश्व को परमाणु विध्वंस से बचाने का एकमात्र विचारशील उपाय है—को सच्चे रूप में प्रतिविम्बित करता है। अब यह गुटनिरपेक्ष आन्दोलन के सदस्य राष्ट्रों के परिप्रेक्षा पर निर्भर हैं तथा जिसमें भारत जो इसका संस्थापक सदस्य राष्ट्र, तथा विकासशील राष्ट्रों में सर्वाधिक बड़ा और विकसित राष्ट्र है, एक महत्वपूर्ण निमित्त बन सकता है कि वे इस आन्दोलन की परस्पर विरोध तथा अनिश्चय के पथ पर ले जाते है या इस आन्दोलन के प्रारम्भिक उद्देश्यों पर बल देने हुए प्रगति की ओर ले जाते है, यदि सातवां शिखर सम्मेलन अपने इन उद्देश्यों को पूरा करने में सफल होता है तो अल्जीयर्स में सम्पन्न चतुर्थ शिखर सम्मेलन के दौरान टिटो का यह कथन कि "गुटनिरपेक्षता को अब अपने हितों की रक्षा तथा गुटों विभाजन से मुक्ति पाने का जरिया ही नहीं माना जाता बल्कि आम तौर पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धो में लोकतन्त्रीकरण की वकालत करने वाली नीति के रूप में जाना जाता है। यह एक गतिशील कारक बन चुका है जो अधिक से अधिक संख्या में राष्ट्रों को आन्दोलित कर रहा है तथा स्वतन्त्रता व समानता के लिये संघर्ष के लिये, उपनिवेशवाद व नस्ल भेदभाव, प्रत्येक प्रकार के प्रभुत्व तथा दूसरे राष्ट्रों के अन्दूरूनी मामलों में हस्तक्षेप के विरूद्ध प्रेरित कर रहा है। यह विश्व में शान्ति तथा प्रगति के लिये और अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं के समाधान के लिये प्रेरणा देता है।" न केवल आज बल्कि आगे आने वाले कल के लिये भी उसी रूप में सत्य बना रहेगा। ■ ■

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रीड़ा जगत

एथलेटिक—

● 29 जनवरी से 2 फरवरी 83 तक कलकत्ता के रवीन्द्र सरोवर स्टेडियम में सम्पन्न 21वें राष्ट्रीय एथलेटिक प्रतियोगिता में विजेता केरल, और पंजाब ने समान 150 अंक अर्जित कर संयुक्त विजेता होने का श्रेय प्राप्त किया। पुरुष व महिला वर्ग में सर्वाधिक अंक क्रमशः बिहार व केरल को मिला। प्रतियोगिता का सर्वश्रेष्ठ पुरुष व महिला खिलाड़ी का सम्मान क्रमशः अदिल सुमारीवाला एवं रोहित हेगरे (दोनों महाराष्ट्र), व शिनी अब्राहम (केरल) को प्राप्त हुआ। प्रतियोगिता के दौरान एक भी नया राष्ट्रीय कीर्तिमान नहीं स्थापित हो सका।

फुटबाल—

● 10 फरवरी 83 को नई दिल्ली के अम्बेडकर स्टेडियम में आयोजित फाइनल में कलकत्ता के मोहनबागान व ईस्ट बंगाल ने गोल शून्य बराबर खेल कर डूरन्ड कप के संयुक्त विजेता होने का श्रेय प्राप्त किया। ● 6 फरवरी 83 को मैसूर में सम्पन्न फाइनल में मणिपुर ने केरल को 3-0 से पराजित कर सातवीं महिला राष्ट्रीय फुटबाल प्रतियोगिता जीता। पिछले कई वर्षों के विजेता बंगाल सेमी-फाइनल में केरल से पराजित हुई। ● 3 फरवरी 83 को नागपुर में सम्पन्न फाइनल में आर्टिलरी सेन्टर (हैदराबाद) ने राष्ट्रीय केमिकल्स एण्ड फर्टिलाइजर (बम्बई) को 6-5 से हरा कर रोवर्स कप फुटबाल ट्राफी जीत ली। ● 31 जनवरी 83 को नई दिल्ली में खेले गये फाइनल में मध्यमग्राम हाई स्कूल (प. बंगाल) ने सेन्ट इगनाशियस हाई स्कूल, गुमला, रांची को 1—0 से पराजित कर सुब्रत मुखर्जी फुटबाल ट्राफी लगातार दूसरे वर्ष जीत ली। ● 24 जनवरी 83 को मडगांव में सम्पन्न फाइनल में डेम्पो क्लब (पणजी) ने भारतीय टेलीफोन उद्योग (बंगलूर) को 5—1 से पराजित कर अखिल भारतीय बंडोदकर स्वर्ण कप फुटबाल टूर्नामेन्ट जीत लिया।

बैडमिन्टन—

● 10 फरवरी 83 को गान्धीनगर (अहमदाबाद) में सम्पन्न 47वें राष्ट्रीय बैडमिन्टन प्रतियोगिता के फाइनल में पिछले दो वर्ष के विजेता सैयद मोदी ने पार्थो गांगुली को 2—15, 15—4, 15—2 से एवं महिला वर्ग में राधिका बोस ने हुफरीश नरीमान को 11—7, 11-9 से पराजित कर क्रमशः पुरुष एवं महिला एकल खिताब जीत लिया। उदय पवार व प्रदीप गांधी, एवं राधिका बोस व अमी धिया, ने क्रमशः पुरुष युगल, एवं महिला युगल खिताब जीता। ● 22 जनवरी 83 को योकोहामा में सम्पन्न जापानी इनामी बैडमिन्टन प्रतियोगिता में हान जियान (चीन) ने प्रकाश पादुकोन (भारत) को 6—15, 15—8, 15—9 से पराजित कर पुरुष एकल खिताब जीतने का श्रेय प्राप्त किया।

ब्रिज—

● जनवरी 83 के अन्तिम सप्ताह में कलकत्ता में आयोजित आल इण्डिया इन्वीटेशन ब्रिज टूर्नामेन्ट को बम्बई के आनन्द मेहता दल ने 150 अंक प्राप्त कर जीता। 119 अंक पाकर पाकिस्तान के दल को द्वितीय स्थान से सन्तुष्ट होना पड़ा।

हाकी—

● 5 फरवरी 83 को जबलपुर में खेले गये फाइनल में विजेता उत्तर प्रदेश ने हरियाणा को 2—0 से हरा कर राष्ट्रीय जूनियर हाकी प्रतियोगिता पुनः जीत ली। ● 25 जनवरी 83 को लखनऊ में सम्पन्न फाइनल में इण्डियन एयरलाइन्स ने केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल (दिल्ली) को 2—1 से पराजित कर के. डी. सिंह बाबू स्मारक हाकी प्रतियोगिता जीत ली। ● 18 जनवरी को रामपुर में सम्पन्न फाइनल में रांची विश्वविद्यालय ने गुरुनानक विश्वविद्यालय को 1—0 से पराजित कर अखिल भारतीय अन्तः क्षेत्रीय विश्वविद्यालय चैम्पियनशिप जीती।

वॉलीबॉल—

● 27 जनवरी 83 को कलकत्ता में आयोजित फाइनल में आन्ध्र प्रदेश ने राजस्थान को 15—13, 15—13, 15—13 से तथा केरल ने पश्चिम बंगाल को 15—9, 15—9, 15—8 से हरा कर जूनियर राष्ट्रीय वॉलीबाल चैम्पियनशिप का क्रमशः बालक तथा बालिका वर्ग का खिताब जीता।

बाक्सिग—

● 6 फरवरी 83 को कानपुर के ग्रीन पार्क स्टेडियम में सम्पन्न बाक्सिग स्पर्धा में सेना के मुक्केबाजों ने सात मुकाबलों में चार जीता और सर्वाधिक 20 अंक प्राप्त कर लगातार 8वें वर्ष राष्ट्रीय जूनियर प्रतियोगिता में दलगत चैम्पियनशिप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीता। उत्तर प्रदेश 14 अंक लेकर द्वितीय स्थान पर रहा। उत्तर प्रदेश के डी. पी. भट्ट (वेन्टम वेट) को प्रतियोगिता का सर्वश्रेष्ठ मुक्केबाज घोषित किया गया।

■ क्रिकेट—

● जनवरी-फरवरी 83 में पटना से खेले गये फाइनल में दिल्ली ने पहली पारी में मिली रनों की बढ़त के आधार पर पुणे को हरा कर अन्तः विश्वविद्यालय क्रिकेट प्रतियोगिता के सिरमौर की प्रतीक रोहिन्टन बारिया ट्राफी पर अपना अधिकार बरकरार रखा। अन्तिम स्कोर—पुणे: 198 व 3 विकेटपर 245 रन; दिल्ली : 5 विकेट पर 427 रन। ● जनवरी के प्रथम सप्ताह में चंडीगढ़ में खेले गये फाइनल में गुजरात ने विजेता उत्तर प्रदेश को प्रथम पारी में रनों की बढ़ौती के आधार पर पराजित कर सी. के. नायडू स्कूली क्रिकेट चैम्पियनशिप जीत ली। अन्तिम स्कोर—उत्तर प्रदेश : 156 व 6 विकेट पर 245 रन; गुजरात : 216 व 4 विकेट पर 156 रन। ● 23 जनवरी 83 से लाहौर में आयोजित भारत व पाकिस्तान के मध्य खेला गया पांचवा टेस्ट मैच अनिर्णीत रहा। अन्तिम स्कोर—पाकिस्तान : 323 रन; भारत : 3 विकेट पर 235 रन। ● 29 जनवरी 83 से कराची में सम्पन्न भारत व पाकिस्तान के बीच खेला गया छठा टेस्ट मैच हार जीत के फैसले के बिना समाप्त हो गया। अन्तिम स्कोर—भारत : 8 विकेट पर 393 रन व 2 विकेट पर 224 रन; पाकिस्तान : 6 विकेट पर 420 रन। सीरिज का सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी—भारत : मोहिन्दर अमरनाथ; पाकिस्तान : इमरान खान।

■ बिलियर्ड—

● 2 फरवरी 83 को पटना में सम्पन्न फाइनल में विश्व चैम्पियन माइकेल फरेरा ने पिछले विजेता गीत सेठी को 2110—1029 अंकों से पराजित कर राष्ट्रीय बिलियर्ड चैम्पियनशिप जीत ली। आर. के. वकील ने आशीष पारिख को 1370—593 अंकों से हरा कर जूनियर राष्ट्रीय बिलियर्ड चैम्पियन बनने का श्रेय प्राप्त किया।

■ शतरंज—

● 3 फरवरी 83 को बीकानेर में समाप्त हुए राष्ट्रीय महिला शतरंज प्रतियोगिता में विजेता जयश्री खाडिलकर व रोहिणी खाडिलकर ने समान आठ अंक अर्जित किये। परन्तु $1\frac{1}{2}$ मेडियन अंकों की बढ़ौती के आधार पर जयश्री खाडिलकर ने चैम्पियनशिप जीती।

■ साइकिल पोलो—

● 1 फरवरी 83 को अहमदाबाद में सम्पन्न दूसरी सब जूनियर तथा छठी जूनियर राष्ट्रीय साइकिल पोलो चैम्पियनशिप में क्रमशः पंजाब ने राजस्थान को 10—5 तथा पंजाब ने राजस्थान को 7—5 गोल से हराकर दोनों खिताब जीत लिया।

■ टेनिस

● 24 जनवरी को न्यूयार्क में सम्पन्न वोल्वो मास्टर्स टेनिस टूर्नामेन्ट में इवान लेण्डल (चेकोस्लोवाकिया) ने जान मैकनरो (अमेरिका) को 6-4, 6-4, 6-2 से पराजित कर पुरुष एकल खिताब जीता। ● जनवरी-फरवरी 83 में भारत में सम्पन्न पांच चक्रीय इण्डियन सैटीलाइट टेनिस टूर्नामेन्ट के विजेता इस प्रकार रहे—(1) हैदराबाद—ब्रूनो कोरवियरे (फ्रान्स) (2) मद्रास—पेन्डर मर्फी (अमेरिका), (3) कलकत्ता—पेन्डर मर्फी (अमेरिका), (4) पुणे-थियरे फाँम (फ्रान्स) व (5) बम्बई-पेन्डर मर्फी (अमेरिका)

■ विविधा

● विम्बलडन व अमेरिकी ओपन चैम्पियन जिमी कोनर्स को 1982 का शीर्ष पुरुष टेनिसखिलाड़ी घोषित किया गया। ● भारत में खेल के विकास व प्रसार के लिये शीघ्र ही एक स्वतन्त्र संगठन खेल विकास निगम बनाया जायेगा। ● भारतीय प्रशिक्षक संघ ने गोला फेंक व 400 मीटर बाधा दौड़ में एशियाड स्वर्ण पदक विजेता बहादुर सिंह व एम. डी. वालसम्मा को 1982 के क्रमशः सर्वश्रेष्ठ पुरुष व महिला एथालीट चुना है। ए. के कुट्टी को वर्ष का सर्वश्रेष्ठ प्रशिक्षक चुना गया है। ● 23 जनवरी 83 को भारत के राष्ट्रपति ने कलकत्ता में नेताजी सुभाष राष्ट्रीय खेल संस्थान के पूर्वी केन्द्र का उद्घाटन किया। इस संस्थान का मुख्यालय पटियाला में और दक्षिणी केन्द्र बंगलूर में स्थित है। ● इंग्लैण्ड और श्रीलंका के पश्चात अब लारेन्स रोव के नेतृत्व में वेस्ट इण्डीज की एक क्रिकेट दल अन्तर्राष्ट्रीय क्रिकेट जगत से बहिष्कृत रंगभेदी नीति अपनाने वाली दक्षिण अफ्रीका के दौरे पर गयी है। ■ ■

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(पृष्ठ 56 का शेष)

यह एक भ्रान्ति है कि वृद्धावस्था में कार्य करने की क्षमता कम हो जाती है। अध्ययनों द्वारा यह प्रमाणित किया जा चुका है कि वृद्धजनों की कार्यशालाओं में उपस्थिति युवाजनों से अधिक होती है, वह अपने काम से अधिक सन्तुष्ट रहते हैं, उनसे दुर्घटनाएँ भी कम होती हैं तथा वह समान रूप से क्षम होते हैं।

अधिकांश वृद्धजन रूग्ण नहीं रहते हैं। साठोत्तर वय के केवल 10% वृद्ध ही किसी व्याधि के आक्रान्त रहते हैं। सर्वाधिक महत्वपूर्ण व रोचक तथ्य यह है कि ऐसा कोई शरीरवैज्ञानिक आधार नहीं है जिससे यह सिद्ध होता हो कि वृद्धावस्था में यौन-चेतना (Sexual vigour) में किसी प्रकार का ह्रास होता हो....वृद्धजन प्रायः युवाजनों के समक्ष अपनी इस चेतना को लज्जावश स्वीकार नहीं किया करते....!

*1950 में विश्व में साठ वर्ष से अधिक वय के लोगों की संख्या लगभग 214 मिलियन थी; 2025 तक यह संख्या 1121 मिलियन तक पहुँच जाएगी।

*केवल विकासशील देशों में ही 1950-2025 के मध्य वृद्धजनों की संख्या 800 मिलियन हो जाएगी।

*1950 में विकासशील देशों में अपनी षष्ठि पूर्ति करने वालों की संख्या केवल 56% थी; 2025 में साठोत्तर वय के 72% जन इन देशों में होंगे।

*प्रायः प्रत्येक देश में स्त्रियाँ पुरुषों की अपेक्षा अधिक दीर्घायु प्राप्त करती हैं। अतः वृद्धाओं की संख्या वृद्धों से अधिक है। 1975 में, विकसित देशों में साठ से अधिक वय वाली प्रत्येक 100 वृद्धाओं पर 74 वृद्ध थे। विकासशील देशों में यह अनुपात अभी समान है किन्तु प्रत्याशित आय में वृद्धि हो जाने पर स्त्रियों की संख्या बढ़ जाएगी।

*विश्व स्वास्थ्य सङ्गठन (WHO) के अन्वेषण द्वारा अनेक तथ्य उजागर हुए हैं। इन अध्ययनों से विदित होता है कि विकसित क्षेत्रों में 75% वृद्धजन सक्रीय रहते हैं तथा स्वयंसिद्ध भी; 5% से कम लोग ही मानसिक विकारों से पीड़ित हैं। किन्तु, विकासशील देशों में कुपोषण आदि के कारण व्याधिग्रस्त वृद्धजनों की संख्या अधिक हो सकती है।

*अन्तरराष्ट्रीय श्रमिक सङ्गठन (ILO) के आकलनों के अनुसार, 1975 में, पैंसठ वर्ष की आयु से अधिक के 39% पुरुष व 12% स्त्रियाँ रोजगारशुदा थे; 2000 में यह संख्या क्रमशः 27% व 10% हो जाएगी। 2025 में वृद्धजनों की वृद्धि के पूर्वाभास की दृष्टि में यह स्थिति गम्भीर ही प्रतीत होगी।

स्थितियों व तथ्यों को अवलोक करते हुये वृद्धजनों के कल्याण व सुरक्षा हेतु प्रयासों को तीव्रतर करने के निमित्त संयुक्त राष्ट्र संघ ने 1982 को "अन्तरराष्ट्रीय वृद्ध वर्ष" (इन्टरनैशनल इयर ऑव द ऐजिड) के रूप में घोषित किया था।

छह

क्या वृद्धावस्था अभिशाप है? कदापि नहीं। इसको वरदान सिद्ध करने हेतु आवश्यकता है सामाजिक चेतना की....व्यक्तिगत प्रयत्नों की....वृद्धों द्वारा सञ्चित अपार अनुभवों को प्रगति का आधार बनाने की। क्या ही अच्छा हो यदि वृद्धजनों का ज्ञान व अनुभव तथा युवाजनों की क्रियात्मक ऊर्जा समञ्चित होकर प्रगति पथ प्रशस्त करे।

विश्व विवर्तन सोद्देश्यवादी है....वृद्धावस्था इस चिरन्तन सत्यानन्द की ओर प्रगति की सङ्केतक है....! अन्ततः आत्मतत्व के महाप्रज्ञ श्री अरविन्द के अक्षर-वाक्य ही स्मृत होते हैं: अपने जीवन को अपने आप से कुछ उच्चतर और विशालतर वस्तु को चरितार्थ करने पर एकाग्र करो तो तुम्हें बीतते हुये वर्षों का भार कभी न लगेगा....तुम जितने वर्ष जिए हो उनकी संख्या तुम्हें बूढ़ा नहीं बनाती; तुम बूढ़े तब होते हो जब प्रगति करना बन्द कर दो....विकसित होने का अर्थ है अपनी अन्तर्निहित शक्तियाँ, अपनी क्षमताएं बढ़ाना....जैसे ही तुम्हें अनुभव हो कि तुम्हें जो कुछ करना था वह कर चुके तुम एकदम बूढ़े हो जाते हो और तुम्हारा क्षय शुरू हो जाता है....जब तुम भविष्य को प्राप्त करने योग्य अनन्त सम्भावनाओं से भरे चमकते सूर्य के रूप में देखो तब तुम युवा हो....तुमने धरती पर चाहें जितने वर्ष बिताए हों तुम युवा और भावी कल की उपलब्धियों से समृद्ध हो....! ■ ■

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

FOCUS Banking/Civil/Defence Services Examination

Vibrations ! Man does not live by breath alone, but by him in whom is the power of breath.

—Katha Upanishad.

Test of English Language.

I: Read the following passage carefully, and answer the questions that follow it. Your answers *must* be brief.

Once upon a time there were a fox and a bear. The bear had a barrel of honey in the loft that he had put away for the winter.

Now the fox heard about that honey and wondered how she could get some of it. She went to the bear's house and stood under the window.

"Brother Bear, can you help me in my trouble ?"

"What's your trouble, Sister Fox ?"

"My house is old, it's falling to pieces and I have no fire. Please let me stay in your house for the night."

They lay down to sleep beside the fire, but the cunning fox was thinking all the time about the honey. She kept wagging her tail, and the bear was soon awakened by the fox's tail going tap-tap-tap on the floor.

"Who's that knocking, Sister Fox ?"

"Somebody has come for me. There's a baby been born."

"Then you'd better go."

The fox went out, not to see the new baby, but up into the loft by the outside ladder to eat some honey. When she had had enough, back she went and lay down again beside the fire.

"Sister Fox," said the bear, "what did they call the baby ?"

"Starter."

"A nice name."

The next night they lay down to sleep and again the fox's tail went tap-tap-tap on the floor.

"Brother Bear, again they're calling me to see a new baby."

"Then you'd better go, Sister Fox."

This time the fox ate the honey half-way down the barrel, and when she got back into the house, the bear wanted to know what they had called the baby.

"Half-way."

"A nice name."

And the third night, too, the fox went tap-tap-tap on the floor with her tail.

"Another baby for me to see to," she said.

"All right," said the bear, "but you hurry back, I am going to make pan-cakes for breakfast."

"I won't be long."

The fox ran straight up to the loft and finished the honey, she even scraped the bottom of the barrel.

When she got back the bear was already up.

"Well, Sister Fox, what did they call the baby this time ?"

"Scraper."

"That's the best name yet. Now let's make the pancakes." The bear was busy frying pancakes when the fox asked him.

"Where is the honey for these pancakes."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"In the loft."

The bear climbed up into the loft and found the empty barrel.

"Who ate the honey ? It was you, Sister Fox, no one else could have eaten it."

"Why, I never even saw your honey," said the fox, "you ate it yourself and now you are blaming me."

The poor bear thought and thought.....

"I know what we'll do to find out who ate it," he said at last' "we'll lie down on our backs in the sun, and if either of us has been eating honey, the sun will melt it and it will come out through the skin."

And so they lay down in the sun. The bear soon fell asleep but the cunning fox was afraid to sleep. She watched until she saw spots of honey oozing through the skin of her belly. She quickly brushed them off and rubbed them on the bears belly.

"Hi, Brother Bear, wake up ! Look whose been eating honey !"

And there was nothing the poor bear could do about it !

('The Bear and the Fox,' *in* Russian Folk Tales About Animals; *translated by* : George Hanna).

(a) What did the bear keep in the loft ?
(b) What is a loft ?
(c) What did the fox say to the bear ?
(d) Did the fox deceive the bear ?
(e) Why did they lay down to sleep beside the fire ?
(f) What did the fox do to deceive the bear ?
(g) What does 'Starter', 'Half-way' and 'Scraper' signify ?
(h) When did the bear come to know that there was no honey left ?
(i) The bear suspected rightly that the fox had licked the barrel clean of honey, however, he suggested a plan to bring out the truth when accused by the fox. What plan did he suggest ?
(j) What did the fox do in the end ?
(k) What does the 'bear' and the 'fox' symbolize ?

Directions : In questions 2-11 spot the word *nearest* in meaning to the key word.

2. Assiduous.
(a) careful (b) assure
(c) hard-working (d) accede

3. Berate.
(a) pistol (b) kill
(c) stupify (d) scold

4. Celerity.
(a) festival (b) swiftness
(c) carnival (d) slothful

5. Dawdle.
(a) loiter (b) roam
(c) waste (d) stroll

6. Effete.
(a) pretty (b) feeble
(c) girlish (d) charming

7. Frowzy.
(a) unkempt (b) dilirious
(c) sinews (d) ill-smelling

8. Genesis.
(a) ful ome (b) origin
(c) scram (d) scramp

9. Hubbub.
(a) disturbance (b) hue
(c) serenity (d) squeeze

10. Improbity.
(a) wickedness (b) shallowness
(c) sluggish (d) leer

11. Jimp.
(a) libido (b) odium
(c) doctrination (d) graceful

Directions : In questions 12-21 give one word substitution choosing from the alternatives given in each case.

12. A person who is a native of Spain called....

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(a) spanish (b) spanial
(c) spaniard (d) espainise

13. "Image of something seen continuing when the eyes are closed or turned away."
(a) spectral (b) spectre
(c) speculum (d) spectrum

14. "Take and use another person's thoughts, writings, inventions etc. as one's own."
(a) immulate (b) imitate
(c) plagiarize (d) plangent

15. "One who sells small articles such as ribbons, laces, thread etc."
(a) haberdasher (b) muskogie
(c) orokie (d) tiny-bop

16. "One who goes from place to place mending pots, pans etc."
(a) tinker (b) tucker
(c) pansy (d) pronto

17. "Nationalistic and anti-Communist system of government, where all aspects of society are controlled by the State and all criticism or opposition is supressed."
(a) Fabianism (b) Euro-socialism
(c) Totalitarianism (d) Fascism

18. "One who maliciously sets fire to a building."
(a) incendiary (b) redadayar
(c) saboteur (d) illuminator

19. "Putting off for tomorrow what can be done today."
(a) idler (b) procrastination
(c) postpone (d) foregone

20. One who is a man of varied learning, a great scholar.
(a) polyhistor (b) elysium
(c) elite (d) sophonomist

21. Doctrine that only one being exists, or, any of the theories that deny the duality of matter and mind.
(a) monotheism (b) monism
(c) monopause (d) monopolytheism

Directions : In questions 22-31 find the word you believe is *opposite* in meaning to the key word from the alternatives given in each case.

22. Hazy.
(a) obscure (b) real
(c) genuine (d) apparent

23. Coddle.
(a) caress (b) humour
(c) repel (d) cajole

24. Delectable.
(a) unpleasant (b) charming
(c) dulour (d) enchanting

25. Lascivious.
(a) lustful (b) chaste
(c) lewd (d) noxious

26. Temperance.
(a) firmness (b) resolute
(c) obdurate (d) laxity

27. Variety.
(a) monotony (b) varled
(c) melodious (d) pep

28. Flourish.
(a) last (b) flaunder
(c) philanderer (d) moulder

29. Requital.
(a) refurbish (b) retribution
(c) revenge (d) forgiveness

30. Salubrious.
(a) salutary (b) unwholesome
(c) sanity (d) pleasant

31. Expose.
(a) screen (b) reveal
(c) shrimp (d) relevate

Directions : In questions 32-41, the word to fill in the blank(s) is given as one of the alternatives among the four given below each sentence. Spot the correct alternative in each case.

32. "I.....not marry you.....you were the last girl on earth," said Varanjoy.
(a) will/even though (b) shall/if
(c) should/but (d) would/although

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

33. "We must get.....the core of the problem."
(a) at (b) to
(c) in (d) into

34. "Nobody.....agree with Varuni....all her arguments and ideas sprang from assumptions that were fallacious."
(a) could/because (b) would/as
(c) should/since (d) must/for

35. Vatsala was growing up into a.....young lady.
(a) regal (b) perusal
(c) vervy (d) vivacious

36. ".....you are asking me to do is out of question."
(a) The thing that (b) Something
(c) Why (d) What

37. "My girl-friend and..... have been.....for months."
(a) me/going over (b) I/admiring
(c) I/going out (d) me/pulsating

38. It was Devanita who bewitched me..... her smile.
(a) by (b) with
(c) in (d) between

39. "I should prefer.....the.....rather than sit here talking to mother-in-law."
(a) to see/picture (b) look at/film
(c) to go to/cinema (d) to view/picture

40. ".....you.....to speak to her like that ?"
(a) Did/have (b) Do/have
(c) Did/had (d) Do/had

41. "Madhira's memory is.....with stories about interesting people; she told us her..... of her school-days in Spain."
(a) bubbling/rememberances
(b) fresh/reminiscents
(c) alive/knowledge
(d) filled memories

Directions : In questions 42-46 re-write the sentences according to the instructions given in brackets below each sentence.

42. "If you should want to kiss me again, you can contact me at this number."
(*Make an inversion in the conditional clause*)

43. "Couldn't we ask someone to do the work privately without anyone knowing?"
(*Rewrite in the passive*)

44. "I thought that if we caught the early plane, we'd get there by lunch-time."
(*Turn into active voice*)

45. "I can't bear the thought of (you, go) home without someone (accompany) you."
(*Rewrite, using the verbs in brackets*)

46. "She felt very angry, *as she had every reason to be*, at the way she had been treated."
(*Replace the words in italics by a single adverb*)

---

*Reasoning Ability Test.

Part I

Directions : Questions 1—5 are based on letter series from each of which some of the letters are missing. The missing letters are given in the proper sequence as one of the alternatives among the five given under each question. Find the correct alternative in each case.

1. - c - a b - c a - c c - b c -
(i) b a c b c b
(ii) a c b b b a
(iii) b c c b a c
(iv) c b a c a a
(v) c b a b a b

2. y - x - - z x - y - x y - z x
(A) z y y y z y
(B) x y z x y z
(C) z x y z y z
(D) z y x z y x
(E) z y y z y x

3. - a b a - c c - - a b c - a b -
(1) a b c a b c
(2) c b a c b a
(3) b c a c b c

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(4) b a c a b c
(5) c b a b c a

4. - a - b a - a - b b a a - a b -
(1) a b a a a b
(2) b a b a b a
(3) a a b b b a
(4) b a a a b a
(5) b b b a a a

5. - k t - k k - x k - t x k - -
(1) k k t k k x
(2) x x t t k x
(3) x k t t x k
(4) t k x t k x
(5) k x t k k t

Directions : Questions 6—15 are based on the following five letter series. Study these carefully:

(1) acb, bdc, ced, dfe
(2) cad, dbe, ecf, fdg
(3) zbx, ycw, xdv, weu
(4) acy, cew, egu, gis
(5) abd, bce, cdf, deg

In each of the following questions a term is given which belongs to one of the above series. Find out to which series it belongs.

6. noq
7. htf
8. qor
9. mom
10. tvu
11. dxb
12. kil
13. lnm
14. uwe
15. uvx

Directions : Questions 16—20 are based on number series in which one figure is out of step with others. Find out that figure in each of the series.

16. 25, 27, 31, 35, 38, 41, 51.
17. 7, 9, 16, 23, 26, 30, 37.
18. 2, 7, 17, 27, 37, 77, 157.
19. 23, 46, 138, 184, 1104, 8832.
20. 27, 120, 140, 882, 6027, 42000.

Directions : Questions 21—25 are based on number series. The number to fill in the blank is given as one of the alternatives among the four given under each question. Find the correct alternative in each case.

21. 7 9 40 74 1526 ?
(a) 5436 (b) 8465
(c) 6543 (d) 4563

22. 2 5 9 19 37 —
(a) 45 (b) 55
(c) 65 (d) 75

23. 7 5 9 7 11 — —
(a) 9 5 (b) 5 9
(c) 13 9 (d) 9 13

24. 4 7 14 17 34 — —
(a) 44 57 (b) 23 13
(c) 37 74 (d) 16 25

25. 4 7 12 21 38 —
(a) 49 (b) 71
(c) 94 (d) 17

PART II

Directions : Questions 1—3 are based on logical reasoning. The conclusion is given as one of the alternatives among the four given under each question. Spot out the correct alternative in each case.

1. Agnima is prettier than Sukriti
Suparna is prettier than Agnima
Vatsala is prettier than Suparna
Anushri is prettier than Vatsala
Therefore—
(a) All the girls are pretty
(b) Agnima is prettier than Vatsala
(c) Anushri is prettier than Sukriti
(d) Vatsala is prettier than Suparna.

2. "If justice consists in keeping property safe the just man must be a kind of thief; for the same kind of skill which enables a man to defend property, will also enable him to steal it." (Plato in *Republic*).
This statement is a case of :
(a) false analogy due to confusion between essential and inessential points
(b) correct analogy by proper use of metaphorical language.
(c) bad analogy, although the case in point is good
(d) good analogy, although the case in point looks confusing.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

3— Which of the six numbered figures fits into the vacant space?

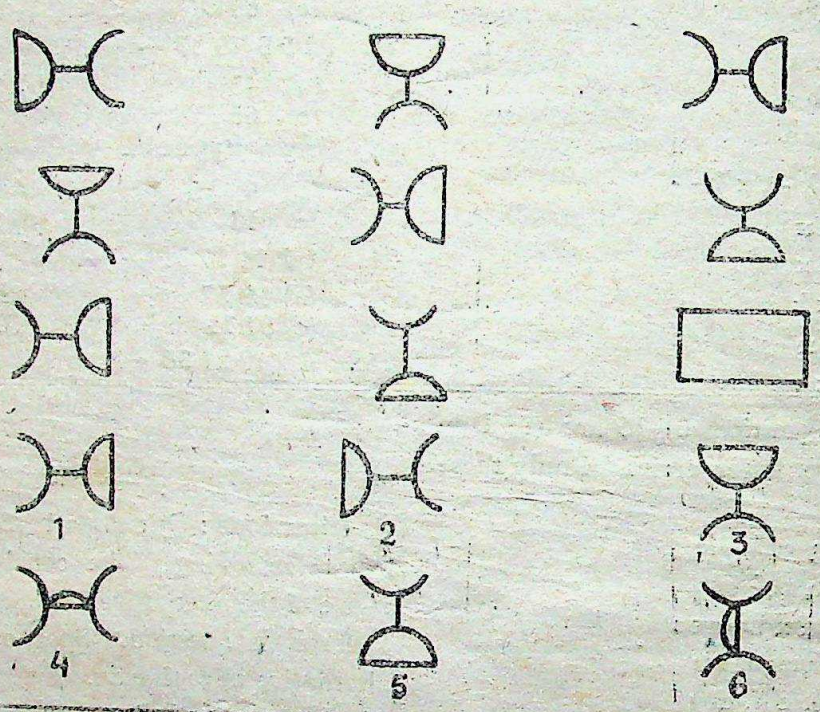

KEY TO EXERCISES

***Test of English Language :**

1. (a) The bear kept a barrel of honey in the loft.
   (b) A loft is a room or space under a roof.
   (c) The fox said that her house was crumbling and that she had no fire in her house.
   (d) Yes, the fox deceived the bear.
   (e) They lay down to sleep beside the fire to keep themselves worm. Obviously, it was the winter season.
   (f) The fox pounded her tail on the floor, made the beer think that somebody was knocking, and lied that she was being called to see a new-born baby. The bear thus deceived went to sleep, the fox climbed up the loft to eat honey.
   (g) 'Starter', 'Half-way' and 'Scraper' imply the various stages of the fox's honey licking.
   (h) The bear was going to make pancakes and when he went up the loft to fetch honey he found the barrel scraped clean.
   (i) The bear suggested that they go and lie down on their backs in the sun. Melted by the sun the honey will ooz out through the skin of the culprit. Thus truth will speak.
   (j) When the fox saw honey coming out of her belly she wiped it and rubbed

(Contd. on Page 88)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CORRIDOR

Darkness : Corruption in Public Life.

—Sarvamitra

The caption would create an impression that it is intended to project a grim picture of the existing state of affairs in the country. Indeed, the caption has been deliberately chosen to generate this effect. Only when you are in such a mood that you would be able to appreciate the serious implication of the present scenario which not only affects the society as a whole but also the individual—you, we and everybody. After all, what else is society but a group of individuals, living and functioning together !

Undoubtedly, the country has progressed technologically after the advent of independance. But, the benefits of progress have not been evenly distributed. The result is that wealth has concentrated in a small segment of the society, and the majority of it does not have the capability nor capacity to modernise. This in a way symbolizes a quest for elevation, more material comfort.... But, when normal channels are blocked it is natural for man to look elsewhere. This is where corruption begins. But, can deviation from an unjust system be called corruption ? Yes ! Because, by persuing the informal way one is ultimately heading towards the membership of the ethics which one initially believed in. Thus corruption is essentially a consequence of man's selfishness when instead of trying to correct the system he tries to correct himself in relation to the existing system.

Selfishness, therefore, is the root of our present problems. After all, why can't we think in terms of the society, the nation and work accordingly. Reasons are many. To refer to a few, the concept of a national society is totally new to our people. In the ancient time, India was a cultural unit, but the events in the medieval and modern period not only shook the image of a united cultural society, it also failed to generate the feeling of genuine nationalization. Therefore, today we are prone more to think in terms of caste, religion and region than is terms of a nation But, a society can progress only when it thinks and acts in a unified framework. It is precisely the absence and the lack of perception of such a concept that has resulted into the malady of corruption.

Furthermore, political system in any society is architectonic. Politics is the science of the state-thus, the standard of this science determines the quality of the state. Unfortunately, politics in our country has become an instrument to serve vested interests. Politicians are supposed to be the leaders of the society in the pursuance of it's general interest. But our leaders have become pioneers of self-interests. The logical casuality, therefore, has been education. Instead of making a person aware of his surroundings education has become a tool for producing only literates.

Why is politics considered more important then education ? Because, education has been patronized.

Then, how can we improve ? We can improve only when we develop and nurture a sense of duty to sacrifice self-interest for general good.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

When working for self-interest one should not forget that the particular is only a part of the general. We are, in fact, working against the well-being of our own selves. To illustrate, a man who has produced seven children can very well justify his action by saying that he can afford them. But can the nation? Certainly not. Nowadays youngmen when warned against corruption and malpractices are quick to retort: "This is the general way of life so why should we go against it. Moreover we are under no obligation to reform society." This is precisely the root of all problems.

So, we will have to come out of the shell we have built around us. And, we have to think above ourselves. Our obligation is to build for the future generations. Is it not that the firm ground we stand upon now has been built by the magnificent efforts of our ancestors? If the freedom-fighters had thought of their own-selves only, perhaps, we would have remained slaves till date. Each person's circumferance should contain the entire nation, the whole man kind.....This exactly is the point, not only to ponder over, but also to be acted upon.

(Contd. from pg. 86)

it on the bear's belly. Thus, freeing herself of the blame.

(k) The bear is the symbol of the common man—strong, compassionate, kind but innocent and simple The fox symbolises the exploiter—weak, cunning, clever, deceitful.

2. (a) or (c); 3. (d): 4. (b); 5. (c);
6. (b); 7. (a) or (d); 8. (b); 9. (a);
10. (a); 11. (d);
*12. (c); 13. (d); 14. (c); 15. (a); 16. (a);
17. (d); 18. (a); 19. (b): 20 (a); 21. (b).
*22. (d); 23. (c); 24 (a); 25 (b); 26. (d);
27. (a); 28. (d); 29. (d); 30. (b); 31. (a);
*32. (d) 33. (c); 34. (a); 35. (d); 36. (a/d);
37. (c); 38. (b); 39 (c); 40. (a); 41. (d).

*42 Should you want to kiss me again, you can contact me at this number.

43. Couldn't someone be asked to do the work privately without it being known?

44. If we catch the early plane, we'll get there by lunch-time.

45. I can't bear the thought of your going home without someone accompanying you.

46. Naturally, she felt very angry at the way she had been treated.

***Reasoning Ability Test.**

Part I

1. (iii); 2. (a); 3. (5); 4. (1); 5. (5).
6. (5); 7. (3); 8. (2); 9. (4); 10. (1); 11. (3); 12. (2); 13. (1); 14. (4);
15. (5);
16. (38). All others are odd numbers.
17. (26). The first number 7 has been added to 9 to get 16, 7+16=23, etc.
18. (27). Multiply the first number by 2 and add 3 to get the second number; multiply the second number by 2 and add 3 to get the third number, and so on. 27 is out of step with others.
19. (138). is the odd man out. Multiply 23 by 2, to get 46; multiply 46 by 4 to get 184, 184×6=1104, and so on.
20. (120). Subtract 7 from the first number and multiply the difference by 7 to get the second number; subtract 14 from the second number and multiply the difference by 7; likewise add 7 to each subtracting number and multiply by 8, and so on.
21. (a). "There are two series, beginning respectively with 7 and 9, and going on to alternate numbers For the one series square 7 and subtract the figure following it, i e. $7^2-9=40$; $40^2-74=1526$. For the other series, square 9, and subtract the figure immediately before 9, i. e. $9^2-7=74$, and so on.
22. (d). "Each number is twice the preceding one, with one added and subtracted alternately."
23. (d). There are two alternate series, going up by two each.
24. (c). The series is formed by alternately adding three and doubling the preceding number; thus 34+3=37, 37+37=74.
25. (b). Each number is twice the preceding one, with one, two, three, four, etc. subtracted.

Part II

1. (c); 2. (a); 3. (2).

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समाज के कमजोर और पिछड़े वर्गों का उत्थान

खुशहाली की ओर बढ़ती जिन्दगी के

अनेक रूपों का आइना-उत्तर प्रदेश ।

किसी भी सरकार के कार्यकलापों की समीक्षा करते समय स्वाभाविक ही है यदि सबसे पहले यह देखा जाय कि समाज के कमजोर तबकों के लिये क्या कुछ किया गया है।

उत्तर प्रदेश के कमजोर वर्गों के 18.36 लाख से अधिक लोगों को 6.49 लाख हेक्टेयर से भी अधिक गांव सभा की भूमि पिछले अक्टूबर तक आवंटित की जा चुकी है तथा 15 लाख से अधिक परिवारों को मकानों की जगह दे दी गई है।

स्पेशल कम्पोनेन्ट योजना के अन्तर्गत हरिजन उत्थान के कार्यों में पिछले दो वर्षों में 178.02 करोड़ रुपये खर्च किये जा चुके है। 19,144 हरिजन बस्तियों का विद्युतीकरण तथा 45,000 से अधिक कुओं, 6100 हैन्डपम्प तथा 2449 डिग्गियों का निर्माण पेय जल की सुविधाएं जुटाने हेतु किया जा चुका है।

इसके अलावा ग्रामीण विकास योजना के अन्तर्गत 41000 से ज्यादा मकानों का निर्माण हो चुका है और 1300 हजार से अधिक दूकानें अनुसूचित जातियों के व्यक्तियों को आवंटित कर दी गई है। इसी वर्ग के अधिक उत्थान की दृष्टि से 1,216 एकड़ कृषि भूमि इनमें बांटने हेतु खरीदी गई है। इस भूमि में से 786 एकड़ का आवंटन भी किया जा चुका है।

प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गान्धी का

20 सूत्री कार्यक्रम

बहुमुखी विकास का बीज मंत्र

सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, उत्तर प्रदेश द्वारा प्रसारित

रतन कुमार दीक्षित द्वारा 436, मुमफोर्डगंज, इलाहाबाद से प्रकाशित तथा उन्हीं के द्वारा चन्द्रा प्रिंटिंग वर्क्स, 37, एलनगंज, इलाहाबाद में मुद्रित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Regd. No R. N. 33028/77
Postal Regd. No. AD-137
Licence No. W.P.-43
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

JUST RELEASED

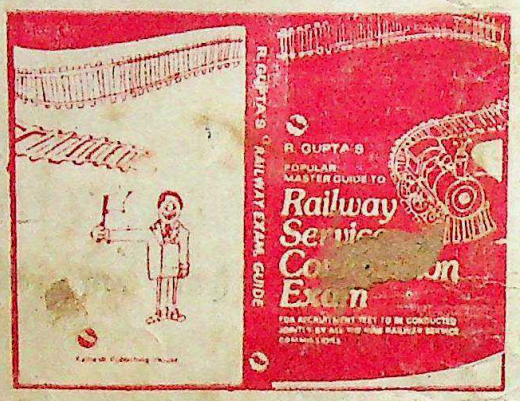

Rs 20/-

R. Gupta's Railway Exam Guide

New edition of R. Gupta's famous Railway Exam. Guide According to new syllabus announced by the Railway Board. Model test papers and intelligence test are specialities of the guide. Attractive double spread cover. For success you can depend on this book.

A Hand Book of English Grammar

There is no dearth of good books on English Grammar. But this one is unique. It is written specially for those going to appear in competitive exams. Essentials of grammar well-explained. Lot of exercises for practice. A complete section devoted to English spelling.

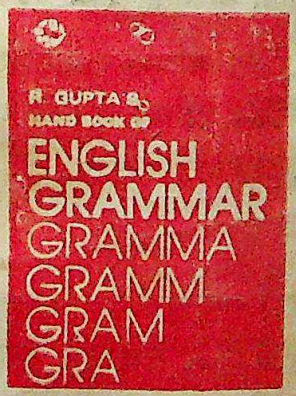

Rs. 10/-

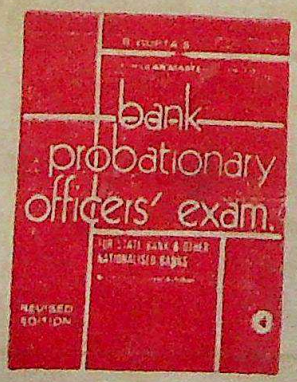

R. Gupta's Bank P.O. Exam Guide

R. Gupta's Bank P.O. Exam Guide is already a synonym of success in Bank P.O. Exam. Its 1983 edition contains a new model Test Paper and latest essays. Attractive glossy cover. Moderately priced.

Rs. 35/-

While ordering, please, send Rs. 10/- in advance by money order to :

Ramesh Publishing House
4457 Nai Sarak, Delhi-110 006

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रगति मंजूषा

प्रतियोगितात्मक परीक्षाओं हेतु सर्वाधिक लोकप्रिय मासिक

अप्रैल 1983

सिविल सर्विस परीक्षा विशेषांक तृतीय

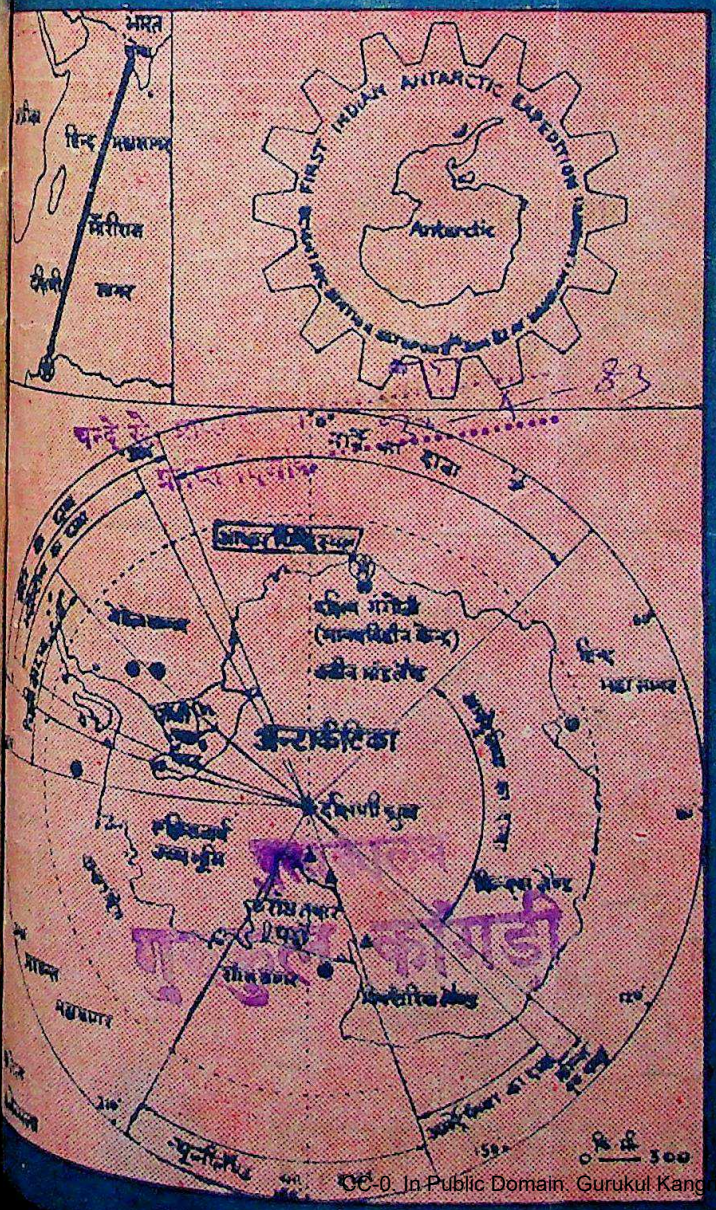

भारतीय इतिहास पर वस्तुपरक परीक्षण

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन पर वस्तुपरक परीक्षण

30-4-83

• क्षेत्रीय राजनीतिक दल और राष्ट्रीय राजनीतिक व्यवस्था • भारत के विदेशी व्यापार की संरचना • असम समस्या तथा विधान सभा चुनाव • अन्टार्कटिका: एक अज्ञात महाद्वीप की खोज • 7वें गुट निरपेक्ष सम्मेलन की समीक्षा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

चन्दे से प्राप्त संख्या 77
30-4-83

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आई.ए.एस./पी.सी.एस. एवं अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं के लिये

हमारे उपयोगी प्रकाशन

1—राष्ट्रीय प्रतिरक्षा और सुरक्षा-ले० डा. लल्लन जी सिंह — रु. 40/-
2—प्राचीन भारत का इतिहास-ले० डा. विनोद चन्द्र सिन्हा [प्रारम्भ से 1200 ई. तक] — रु. 12-50
3—प्रारूप लेखन, अनुवाद, सम्पादक के नाम पत्र और सामयिक निबन्ध-ले० डा. सुरेश चन्द्र गुप्त — रु. 12-00
4—English Literature for Competitive Examinations-By Dr. S. C. Mundra — Rs. 35-00
5—General English for Higher Compe titive Examination-By Dr. Raghukul Tilak. — Rs. 2-00
6—Sociology for Competitive Examinations-By Dr. R. N. Mukerjee & Dr. A. K. Chatterjee — Rs. 40-00
7—Advanced Literary Essays-By Prof. J. N. Mundra & Dr. C. L. Sahni — Rs. 22-00
8—Indian Sociology (Society, Problem and Institutions)-By Dr. V. pradhan. — Rs 15-00
9 General English for U. P. S. C., P. C. S. & other Examinations-By Dr. Raghukul Tilak. — Rs. 14-00

प्रकाशक

प्रकाश बुक डिपो

बड़ा बाजार, बरेली-243003

सम्पूर्ण धनराशि अग्रिम प्राप्त होने पर डाक खर्च मुफ्त। कृपया विस्तृत सूची पत्र के लिये उपरोक्त पते पर लिखें।

VISIT RING 54995 OR WRITE

सभी प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए हमारी अति उपयोगी पुस्तकें

1. Comprehensive General English—O. P. Malaviya 25.00
2. सामान्य ज्ञान परिचय—ओम प्रकाश मालवीय 22-00
3. सामान्य हिन्दी—सुशील कुमार 10-00
4. प्राचीन भारतीय संस्कृति, कला एवं दर्शन—डा. राम लाल सिंह 25-00
5. हमारे प्राचीन नगर—डा. राम लाल सिंह 6-00
6. गाइड टू पुलिस सब इन्सपेक्टर परीक्षा— 20-00
7. प्रारम्भिक गणित—आर. सी. सिनहा 9-00
8. सामान्य ज्ञान—कौन, क्या, कहां 3-25
9. L. D. A./U. D. A. Unsolved paper— 5-00
10. P. C. S. Compulsory Paper— 4-50

प्रयाग पुस्तक सदन

यूनिवर्सिटी रोड, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अप्रैल—1983

वर्ष—6

अंक—4

इस अंक का मूल्य—रु० 4.00

पृष्ठ संख्या—88

प्रगति मंजूषा

प्रतियोगितात्मक परीक्षाओं हेतु सर्वाधिक लोकप्रिय मासिक

[राष्ट्र की भाषा में राष्ट्र को समर्पित]

सम्पादक
रतन कुमार दीक्षित

सह-सम्पादक
प्रदीप कुमार वर्मा 'रूद्र'

उप-सम्पादक
जी. शंकर घोष, राकेश सिंह सेंगर

मुख्य कार्यालय
436, मम्फोर्डगंज
इलाहाबाद-211002

शाखा जनसम्पर्क
ए-7, प्रेस एन्क्लेव
साकेत, नई-दिल्ली

डी. 47/5, कबीर मार्ग
पले स्क्वायर, लखनऊ

विज्ञापन सम्पर्क-सूत्र
169/20 ख्यालीगंज, लखनऊ
दूरभाष : 43792

आवरण : कोलोरैड, इलाहाबाद

चन्दे की दर
वार्षिक : रु. 44.00, अर्द्ध वार्षिक : रु. 22.00
सामान्य अंक (एक प्रति) : रु 4.00
(चन्दा मनीआर्डर द्वारा मुख्य कार्यालय को ही भेजें)

पत्रिका में प्रकाशित सामग्री का सर्वाधिकार प्रकाशक के अधीन सुरक्षित है। पत्रिका में प्रकाशित लेखों के विचारों से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

विशेष आकर्षण

■ सिविल सर्विस प्रारम्भिक परीक्षा हेतु भारतीय इतिहास पर वस्तुपरक परीक्षण विशिष्ट परिशिष्ट/2

■ सिविल सर्विस प्रारम्भिक परीक्षा हेतु भारतीय राष्ट्रीय स्वतन्त्रता आन्दोलन पर वस्तुपरक परीक्षण विशिष्ट परिशिष्ठ/33

परीक्षोपयोगी महत्वपूर्ण लेख

■ सातवां गुटनिरपेक्ष सम्मेलन : एक समीक्षा/60

■ क्षेत्रीय राजनीतिक दल और राष्ट्रीय राजनीतिक व्यवस्था/65

■ भारत के विदेशी व्यापार की संरचना/68

■ असम समस्या तथा विधान सभा चुनाव/73

■ अन्टार्कटिका : एक अज्ञात महाद्वीप की खोज/76

स्थायी स्तम्भ

■ राष्ट्रीय सामयिकी/42

■ अन्तरराष्ट्रीय सामयिकी/49

■ समसामयिक सामान्य ज्ञान/57

■ क्रीड़ा जगत/83

■ Focus on Banking/Civil/Defence Services Examination / 84

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय इतिहास

प्राचीन युग

आनुतिथ्य

उत्तरायन

प्राक्ऐतिहासिक काल

ई. पू. (B. C.)

c. 3000 —बलूचिस्तान में कृषक समुदाय
c. 2700 —कीश में प्राप्त सिन्धु घाटी की मुद्राओं कि तिथि
c. 2500-1550 —हड़प्पा सभ्यता

आद्य-ऐतिहासिक काल

c. 1500 —'आर्यों' का भारत में प्रव्रजन
c. 1500-900 —ऋग वेद के स्त्रोतों की रचना
c. 900 —महाभारत युद्ध
c. 900-500 —परवर्ती वेदों, ब्राह्मणों व पूर्ववर्ती उपनिषदों का काल
c. 800 —लौह का प्रयोग; आर्य सभ्यता का विस्तरण

"बौद्ध" काल

c. 1200-600 —महाजनपदयुगीन कला
c. 600 —मगध का अभ्युदय
c. 519 —ईरानी सम्राट सायरस द्वारा उ.प. भारत के कुछ भागों पर विजय
c. 566-486 —गौतम बुद्ध
c. 546-494 —मगध नृपति बिम्बिसार
c. 494-462 —अजातशत्रु, मगध नृपति
c. 540 468 —वर्द्धमान महावीर, जैन मत के 24 वें तीर्थङ्कर
c. 362-21 —नन्द वंश (मगध)
327-25 —मेसिडॉन का एलेक्सेन्डर भारत में

मौर्य काल

321 —चन्द्रगुप्त मौर्य द्वारा सिंहासन-ग्रहण
c. 315 —मेगेस्थनीज का भारत आगमन
c. 305 —सेल्यूकस निकेटर का भारत अभियान
c. 298-73 —बिन्दुसार, मगध का शासक
268-31 —सम्राट अशोक मौर्य
273-31 —अशोक मौर्य का राज्यकाल
c. 260 —अशोक मौर्य का कलिङ्ग युद्ध
c. 206 —सिरिया के नृपति एन्टिओकस तृतीय का भारत अभियान
c. 250 —पाटलीपुत्र में तृतीय बौद्ध सङ्गीति
c. 185 —मौर्य वंश का पतन। मगध में शुङ्ग वंश की स्थापना; पुष्यमित्र शुङ्ग सिंहासनासीन

आक्रमणों का काल

c. 190 —उ. प. भारत में ग्रीक राज्य
180-65 —डिमिट्रिअस द्वितीय, उत्तर पश्चिम का इन्डो-ग्रीक शासक
155-30 —मेनेन्डर, उत्तर पश्चिम का इन्डो-ग्रीक शासक
c. 90 —शकों द्वारा उत्तर पश्चिम भारत पर आक्रमण
c. 80 —मौस, पश्चिम भारत में प्रथम शक नृपति
c. 71 —शुङ्ग वंश का अन्त
58 —कृत-मालव-विक्रम संवत्

ईसवी (A. D.)

c. 47 —तख्त-ए-बाही, गोन्डोफरनीस का अभिलेख

प्रथम शताब्दी का प्रारम्भ —कुषाणों का उ. प. भारत पर आक्रमण

c. 78-101 —कनिष्क, कुषाण नृपति
78 —शक संवत् प्रारम्भ
119-24 —नाहपान, गौतमी पुत्र शातकर्णी द्वारा पराजित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

180-50	—रुद्रदामन, प. भारत का शक् नृपति
c. 130-388	—उज्जैयनी में शक् क्षत्रप
248	—त्रैकुटक-कल्चरी संवत प्रारम्भ
गुप्त काल	
319-20	—चन्द्र गुप्त प्रथम द्वारा मगध का सिंहासन ग्रहण, गुप्त वंश की स्थापना
320-35	—चन्द्र गुप्त प्रथम
फर. 26, 320	—गुप्त संवत् प्रारम्भ
335-76	—सम्राट समुद्र गुप्त
c. 360	—समुद्र गुप्त के दरबार में श्रीलङ्का के राजदूत
375-415	—चन्द्र गुप्त द्वितीय 'विक्रमादित्य'
405-11	—चीनी यात्री फा-हियन भारत में
415-54	—कुमार गुप्त प्रथम
476	—खगोलवेत्ता आर्यभट् का जन्म
c. 454	—प्रथम हूँण आक्रमण
c. 454-467	—स्कन्द गुप्त
473	—कुमार गुप्त द्वितीय
c. 477-495	—बुद्ध गुप्त
495	—द्वितीय हूँण आक्रमण
c. 500	—उ. प. भारत पर हूँणों का नियन्त्रण
505	—वराहमिहिर का जन्म
507-8	—विनय गुप्त
510-11	—भानु गुप्त
533	—यशोधर्मन, हूँण शासक मिहिरकुल का विजेता
c. 540	—गुप्त वंश का पराभव
परिवर्त काल	
606-47	—हर्ष वर्द्धन, कान्यकुब्ज का नृपति
619-20	—पू. भारत में शशाङ्क का प्रभुत्व
620	—पुलकेशिन् द्वितीय चालुक्य द्वारा हर्ष पराजित
630-44	—ह्वेन-साङ्, चीनी यात्री भारत में
637	—अरबों द्वारा सिन्ध में थाना पर आक्रमण
639	—स्रॉङ्-त्सान-गाम्पो द्वारा ल्हासा की स्थापना
643	—हर्ष द्वारा प्रयाग में षष्टम् पञ्च-वर्षीय सम्मेलन आयोजित
675-85	—इत् सिङ् नालन्दा में
c. 730	—कान्यकुब्ज का यशोवर्मन
736	—ढिल्लिका (दिल्ली) की स्थापना

दक्षिणायन	
ई.पू.c. 1000-325	—दक्षिण का क्रमिक "आर्यीकरण" अशोक के द्वितीय व त्रयोदश अभिलेख में चोल, पाण्ड्य, सतीयपुत्र, केरलपुत्र तथा तम्बपर्णि (श्रीलङ्का) का उल्लेख
c. 230 ई. पू. से ई. 250	—दक्कन में सातवाहन वंश
ई. पू. 128-10	—सातवाहन शक्ति का उत्कर्ष
ई. पू. c. 50	—खारवेल, कलिङ्ग का राजा
प्रथम शताब्दी ई. से चतुर्थ शताब्दी ई.	—मदुरा में "सङ्गम" साहित्य का काल
c. ई. पू. 50 से ई. 100	—रोम का द. भारत से व्यापार
ईस्वी	
86-114	—गौतमीपुत्र, साहवाहन शासक
114-21	—वशिष्ठिपुत्र, सातवाहन नृपति
300-888	—काञ्ची के पल्लव*
चतुर्थ से पञ्चम शताब्दी	—मध्य प्रदेश के वाकाटक*
600-30	—महेन्द्रवर्मन् प्रथम् द्वारा पल्लव शक्ति का सम्वर्द्धन
c. 650-757	—चालुक्य वंश, वातापी [प. व. म. दक्कन]
608-42	—पुलकेशिन् द्वितीय द्वारा चालुक्य शक्ति का सम्वर्द्धन
630-68	—नरसिंह वर्मन् प्रथम् महामल्ल पल्लव
642	—नरसिंह वर्मन् प्रथम पल्लव द्वारा पुलकेशिन् द्वितीय पराजित
740	—चालुक्यों द्वारा पल्लवों की पराजय
c. 630-970	—पूर्वी चालुक्य, वेङ्गी (आं. प्र.)*
757-973	—राष्ट्रकूट, मान्यखेट (प. व म.-दक्कन)*
c. 800	—महान दार्शनिक शङ्कराचार्य
c. 850-1267	—तन्जौर का चोल वंश*
c. 907	—परान्तक प्रथम् द्वारा चोल शक्ति की स्थापना
985-1014	—राजराज प्रथम्, चोल शक्ति का विस्तार

c. लगभग अथवा सम्भाव्य काल

* = राजवंशों के शासन काल के सर्वाधिक महत्वपूर्ण समय को ही अङ्कित किया गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य विहार

भाषा लिपि

भाषाएँ

• संस्कृत : संस्कृत भारत की अति प्राचीन भाषा है। फिनिष, एस्टोनियन, हंगेरियन, टर्किश व बैस्क भाषाओं के अतिरिक्त इसका सम्बन्ध अन्य सभी योरोपीय भाषाओं से है—ऐसा सिद्ध हो चुका है। वैदिक संस्कृत अन्य भारोपीय (इन्डो-योरोपियन) भाषाओं की अपेक्षा उस मूल भाषा के अधिक निकट है जो कभी यूरेशिया (म. एशिया) के निवासियों द्वारा व्यवहृत थी। संस्कृत का प्रारम्भिक रूप ऋग्वेद में प्राप्त होता है। ऋग्वेद की रचना के बाद संस्कृत का विकास हुआ तथा व्याकरण का सरलीकरण। वेदों की शुद्धता का सरक्षण करने हेतु व्याकरण तथा ध्वनि-विज्ञान (फॉनेटिक्स) का विकास हुआ। भाषा-विज्ञान का प्राचीनतम् ग्रन्थ है यास्क का 'निरुक्त' जो पञ्चम् शताब्दी ई पू के लगभग लिखा गया। दूसरा महान ग्रंथ है पाणिनी की "अष्टाध्यायी" जो सम्भाव्यतः चतुर्थ शताब्दी ई. पू. के समापन काल की रचना है। पाणिनी के साथ संस्कृत ने अपना प्रकृष्टतम् रूप प्राप्त कर लिया था....इसके पश्चात शब्द-भण्डार के अतिरिक्त भाषा में कोई उल्लेखनीय विकास नहीं हुआ। व्याकरण के अन्य ग्रंथ पाणिनी के ग्रंथ की टिकाएँ है जिनमें पतञ्जली का "महाभाष्य" (द्वितीय शती ई. पू.) तथा जयादित्य व वामन का "काशिका वृत्ति" (सप्तम् शती ई. पू.) सर्व-प्रमुख हैं।

गुप्त काल तक शासकीय भाषा के रूप में प्राकृत का ही प्रयोग होता था। उज्जैन का शक क्षत्रप रुद्र-दामन ही ऐसा शासक था जिसने संस्कृत को शासकीय कार्यों हेतु स्वीकृत किया रुद्रदामन का गीरनार अभि-लेख संस्कृत का सर्वप्रथम महत्वपूर्ण लेख है।

• प्राकृत व पाली : समाज का उच्च व पुरोहित वर्ग संस्कृत का प्रयोग करता था....बुद्ध काल तक जन-सामान्य अधिक सरल प्राकृत भाषाएँ बोलता था पूर्व गुप्त काल के अधिकांश अभिलेख इन्हीं भाषाओं में हैं। कालसी (उ. प्र.) से लेकर कर्णाटक तक अशोक मौर्य के सभी शिलालेख इसी भाषा में उत्कीर्ण हैं। प्राकृत का एक महत्वपूर्ण स्वरूप पाली थी जिसमें अधिकाश बौद्ध साहित्य का सृजन हुआ....पाली आज भी श्रीलङ्का, द. पू. एशिया व बर्मा के बौद्धों की धार्मिक भाषा है। मागधी बोली में ही अशोक मौर्य के अभिलेख रचे गए जैन साहित्य अर्द्ध-मागधी में प्राप्त होता है। शौरसेनी व महाराष्ट्री सदृश्य प्राकृत बोलियाँ क्रमशः प. उत्तर प्रदेश व उ. प. दक्कन में बोली जाती थीं। तदनन्तर "अप-भ्रन्श" का विकास हुआ जो राजस्थान व गुजरात के साहित्य की भाषा बनी। तत्प्रकार प्राकृत के ही एक विकृत रूप से बङ्गला भाषा का विकास हुआ।

• द्रविड भाषाएँ द्रविड़ भाषाएं मुख्य रूप से तमिल, कन्नड, तेलुगु व मलयालम हैं। तमिल प्राचीनतम भाषा है....इसका साहित्य अन्य से अधिक समृद्ध व प्राचीन है। प्रारम्भिक तमिल में संस्कृत का प्रभाव न्यूनतर था.... "आर्यीकरण" के फलस्वरूप इसका प्रभाव अवलोक होने लगा ...किन्तु, अन्य भाषाओं पर संस्कृत का प्रभाव स्पष्ट है। यह सभी प्रायः स्वतन्त्र भाषाएँ हैं।

लिपियां :

भारत की प्राचीनतम् लिपि हड़प्पा सभ्यता की लिपि है जिसे प्रामाणिक रूप से पढ़ा नहीं जा सका है। तृतीय शताब्दी ई. पू. तक किसी अन्य लिपि का लिखित प्रमाण नहीं मिला है। अशोक मौर्य के अभिलेख ही सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रथम लिपिबद्ध भाषा के प्रमाण हैं। अशोक ने मुख्यतः दो लिपियाँ प्रयुक्त की—ब्राह्मी व खरोष्टी। ब्राह्मी लिपि प्रायः बायें से दायें पढ़ी जाती है। ब्राह्मी लिपि से ही देवनागरी लिपि का विकास हुआ जिसमें संस्कृत, प्राकृत, हिन्दी तथा मराठी भाषायें लिखी जाती हैं....पञ्जाबी, गुजराती, बङ्गला व उड़िया की लिपियों की उद्भावना भी ब्राह्मी लिपि से मानी गयी है।

तमिल ने "ग्रंथ" लिपि का विकास किया। सम्पूर्ण द. पू. एशिया तथा फिलिपीन्स की लिपियों का विकास भारतीय लिपियों से हुआ—विशेषतः ब्राह्मी से। तिब्बत की लिपि का विकास उ. प. भारत की गुप्त लिपि से हुआ। उत्तर पश्चिम भारत तथा मध्य एशिया में अशोक ने खरोष्ठी लिपि प्रयुक्त की जो अरेमिक लिपि से विक-सित हुयी थी।

रचनाकार पुस्तक/ग्रन्थ

संस्कृत काव्य

- अश्वघोष—बुद्ध चरित; प्रथम शती ई.
- कालिदास—कुमारसम्भव, रघुवंश, मेघदूत, ऋतु संहार; गुप्त काल
- कुमार दास—जानकी हरण
- भारवि—किरातार्जुनीयम; षष्ठम् शती ई.
- भट्टि—रावण वध (भट्टि काव्य); सप्तम् शती ई.
- माघ—शिशुपाल वध; षष्ठम् शती.
- सन्ध्याकर—रामचरित; द्वादशम् शती.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

- भर्तृहरि—शृङ्गार शतक, नीति शतक, वैराग्यशतक, वाक्यपदीय; सप्तम् शती.
- अमरु—अमरुशतक; सप्तम् शती.
- बिल्हण—चौरपञ्चाशिका; 11-12 शती. ई.
- जयदेव—गीत गोविन्द; द्वादशम् शती.

■ कथनात्मक काव्य

- सोमदेव—कथा-सरित-सागर; एकादशम् शती.
- कल्हण—राजतरङ्गिणी; द्वादशम् शती.
- बाण भट्ट हर्षचरित; सप्तम् शती.
- बिल्हण - विक्रमाङ्कदेवचरित; 11-12 वीं. शती.
- जयचन्द्र सूरी—हम्मीर महाकाव्य

■ नाटक

- भास—स्वप्नवासवदत्ता, प्रतिज्ञायौगन्धरायण, चारुदत्त;
- कालिदास—मालविकाग्निमित्र, विक्रमोर्वशी, अभिज्ञानशकुन्तल; गुप्त काल
- शूद्रक—मृच्छकटिक; गुप्त काल
- विशाखदत्त—मुद्राराक्षस, देवीचन्द्रगुप्त; षष्ठम् शती.
- नृपति हर्ष—रत्नावली, प्रियदर्शिका, नागानन्द; सप्तम् शती.
- नृपति महेन्द्र (विक्रम) वर्मन्—मत्तविलास
- भवभूति—मालती-माधव, महावीर चरित, उत्तर रामचरित; अष्टम् शती

■ संस्कृत गद्य

- दण्डिन्—दशकुमारचरित्; सप्तम् शती.
- बाण भट्ट—हर्षचरित (काव्यात्मक गद्य), कादम्बरी; सप्तम् शती.
- सुबन्धु—वासवदत्ता
- विष्णु शर्मा—पञ्चतन्त्र; गुप्त काल
- नारायण—हितोपदेश

■ पाली साहित्य

- बौद्ध जातक, महावंश, दीपवंश, ठेर गाथा व. ठेरी-गाथा।

■ प्राकृत साहित्य

- समस्त जैन साहित्य
- वाकपति—गौड़वध; अष्टम् शती.
- राजशेखर—कर्पूरमञ्जरी; दशम् शती.
- हाल सातवाहन—गाथा सप्तशती (गाहा सतसई); प्रथम शती ई. पू.
- गुणाढ्य—वृहत्कथा; 1-2 शती.
- सर्वनन्दिन्—लोकविभाग; पञ्चम शती.

■ तमिल साहित्य

- इलंगोवडिगल (?)—शिलप्पदिगारम्; 1-2 शती.
- शात्तनार—मणिमेगलै
- तिरुत्तक्कदेवर—शिवाग-शिन्दामणि
- कम्बन —रामायणम् या रामावतारम्, नवम् शती.
- तिरुवल्लुवर—कुरल; c. 450-550 ई.
- पोयेगैयार—कलवली; c. 450-550 ई.
- कुडलूकिलार—मुदमोलिक्काञ्जी; c. 450-550 ई.
- कल्लाडनार—कल्लाडम; c. 850-1200 ई.
- कुट्टन —नालायिरकोवै, तक्कयागप्परणी; c. 850-1200 ई.

■ विविध

- अमर सिंह—अमरकोष; गुप्तकाल
- अश्वघोष—सौन्दरानन्द, सूत्रालङ्कार; कनिष्क कालीन
- आर्यभट्—आर्यभटीयम; गुप्तकाल
- ईश्वर कृष्ण सांख्यकारिका
- कामन्दक—नीतिसार; गुप्त काल
- कौटिल्य —अर्थशास्त्र; मौर्यकाल (?)
- चरक—चरकसंहिता; प्रथम शती.
- फाह्यान—फो-क्यो-की; चतुर्थ शती.
- बादरायण—ब्रह्मसूत्र
- मम्मट—काव्य प्रकाश; 11वीं शती.
- वराहमिहिर—वृहत्संहिता, पञ्चसिद्धान्तिका; गुप्त काल
- वात्स्यायन—कामसूत्र; गुप्तकाल
- विज्जिका—कौमुदी-महोत्सव; 8-9वीं शती.
- सोड्ढल—उदयसुन्दरीकथा; एकादशम् शती.
- सोमदेव सूरी—यशस्तिलक चम्पू, नीति वाक्यामृत; एकादशम् शती.
- क्षेमेन्द्र—वृहत्कथामञ्जरी; एकादशम् शती.
- वासुमित्र—महाविभाष सूत्र
- नागार्जुन—माध्यमिक सूत्र; कनिष्क काल

■ नृपति साहित्यकार

- अमोघ वर्ष I (राष्ट्रकूट)—कविराज मार्ग, प्रश्नोत्तर मालिका; नवम् शती.
- प्रवरसेन II (वाकाटक)—सेतुबन्ध; चतुर्थ शती.
- भोज (परमार)—शृङ्गार प्रकाश, युक्तिकल्पतरु, सरस्वती कंठाभरण; एकादशम् शती.
- सोमेश्वर III (प. चालुक्य)—मानसोल्लास; द्वादशम् शती.

■ जैन साहित्य

- जोएन्द्र—परमात्म प्रकाश, योगसार
- रामसिंह—पाहुडदोहा; दशम शती.
- देवसेन्स—सावयधम्मदोहा; दशम शती.

श्वेताम्बर ग्रन्थ—

- उमास्वाति—तत्वार्थाधिगम सूत्र; प्रथम सदी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

- भद्रबाहु प्रथम—निर्युक्ति, भद्रबाहु संहिता;
- कुन्दकुन्दाचार्य—समयसार, पञ्चास्तिकाय; प्रथम सदी
- हेमचन्द्र—प्रमाणमीमांसा, महावीरचरित; द्वादशम् सदी

दिगम्बर ग्रन्थ—

- अलङ्कदेव—अष्टशती;
- माणिक्यनन्दिन—परीक्षामुखसूत्र; नवम् सदी
- प्रभाचन्द्र—प्रमेयकमलमार्तण्ड; दशम् सदी
- नेमिचन्द्र—गोम्मटसार, लब्धिसार; एकादशम् सदी

जैन 'अङ्ग'—1. आचाराङ्गसूत्र, 2. सूत्रकृताङ्ग, 3. स्थानाङ्ग, 4. समवायाङ्ग, 5. भगवती सूत्र 6. ज्ञाताधर्मकथा, 7. उपासकदशा, 8. अन्तकृद्दशा, 9. अनुत्तरोपपादिकदशा, 10. प्रश्नव्याकरणानि, 11. विभाकसुतम्, 12. दृष्टिवाद

■ बौद्ध साहित्य

- त्रिपिटक—(1) विनयपिटक; (2) सुत्तपिटक : (क) दीर्घ निकाय, (ख) मज्झिम निकाय, (ग) संयुक्त निकाय (घ) अंगुत्तर निकाय, (ङ) खुद्दक निकाय; (3) अभिधम्म-पिटक।

हीनयान बौद्ध—(1) वैभाषिक शाखा : वसुबन्धु-अभिधर्मकोष; 283-363 ई.; सङ्घभद्र—समयप्रदीपिका, न्यायानुसार; धर्मकीर्ति-न्यायबिन्दु। (2) सौत्रान्तिक शाखा : यशोमित्र—अभिधर्मकोष।

महायान बौद्ध—• मैत्रेयनाथ—महायान सूत्रालङ्कार, योगाचार भूमिशास्त्र; असङ्ग—पञ्चभूमि, महायान संग्रह; वसुबन्धु—विज्ञप्ति मात्रतासिद्धि (विज्ञानवादिन् शाखा)। • नागार्जुन—प्रज्ञापारमिताशास्त्र, शून्यतासप्तति; आर्यदेव—चतुःशतक; चन्द्रकीर्ति—माध्यमिकावतार; शान्तिदेव—बोधिचर्यावतार (शून्यवादिन्)। • अद्वयवज्रसंग्रह (वज्रयान)।

- नागसेन—मिलिन्दपञ्हो।

■ ■ ■ कला दीर्घा

भारतीय कला में प्रांशुता, भावप्रवणता, रुचिता तथा सौन्दर्य के नानाविध आयामों से सम्पृक्त लौकिक व पारलौकिक आत्मानन्दानुभूति की उद्भावना के स्पष्ट लक्षण प्राप्त होते हैं....भारतीय कला सङ्गम है—सौन्दर्य व शक्ति का, प्रतीक व अभिव्यक्ति का, भूततत्व व आत्मतत्व का, भुवन तथा मोहिनी का। ग्रीक कला की भांति इसके लाक्षणिक भेद के निमित्त केवल सौन्दर्य शास्त्र तथा शिल्प का ज्ञान ही पर्याप्त नहीं है.....इस हेतु आवश्यक है बोध, अन्तरानुभूति, आत्मसंदीप्ति तथा उत्तुङ्ग मनस्-चेतना! भारतीय कला के प्रारम्भ बिन्दु के रूप में यहाँ केवल उसके वास्तुस्वरूप की विवृति की जा रही है—प्रमुख प्रकारों के संक्षिप्ततम् उल्लेख द्वारा।

■ सिन्धु घाटी की कला

हड़प्पा व मोहन जो दड़ों के खंडहरों में अनेक कला की वस्तुएँ प्राप्त हुई हैं। इस प्रदेश की वास्तुकला में भारतीय दुर्ग के दस अङ्ग—प्राकार, वप्र, द्वार, अट्टालक, महापथ, प्रासाद, आपण, पुष्करिणी, संथागार—अवलोक होते हैं ....परकोटे, गोपुरद्वार, महाकुण्ड आदि वास्तुशास्त्र की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। पाषाण शिल्प की 11 मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं जिनके या तो मस्तक या मध्यष्टि ही सुरक्षित मिले हैं। ताम्र शिल्प की सर्वाधिक प्रसिद्ध कृति एक नग्न नृत्याङ्गना की रुचिर व भावयुक्त मूर्ति है जो मोहनजोदड़ों से प्राप्त हुई। इसके अतिरिक्त पुरुषों, स्त्रियों व पशुओं की अनेक मृण्मयी मूर्तियाँ भी प्राप्त हुई हैं।

सिन्धु उपत्यका से लगभग 1200 मुद्राएँ या मोहरे उपलब्ध हुई हैं जिनमें पशुओं तथा मानवाकृतियाँ उकेरी गयी हैं.....सर्वाधिक महत्वपूर्ण वह मुद्रा है जिसमें पशु आवृत महायोगी (शिव) का अङ्कन किया गया है। मुद्राओं पर अङ्कित लिपि प्रमाणिक रूप से पढ़ी नहीं जा सकी है। अन्य उपलब्ध ताम्र पदक या मुद्राएँ सम्भाव्यतः सिक्कों के रूप में प्रचलित थीं।

■ अशोक के स्तम्भ

अशोक कालीन कला की प्रांशुता ऊर्ध्व स्तम्भों में उद्भासित होती है....लम्बी मध्यष्टि युक्त इन स्तम्भों के ऊपर पशु शीर्षक है। इन स्तम्भों की योजना धर्म-सम्बन्धी आदर्शों की अभिव्यक्ति का माध्यम, बौद्ध धर्म के पवित्र स्थानों व प्रमुख राजधानियों और सीमाओं को इङ्गित करने हेतु बनायी गयी थी। इनको "एकाश्मक स्तम्भ" भी कहा जाता है। बलुआ पत्थर से निर्मित इन स्तम्भों पर चमकदार पॉलिश की जाती थी। स्तम्भ दो प्रकार के हैं—अभिलेख युक्त व अभिलेख रहित। यष्टि (लाट) की ऊँचाई प्रायः 40-50 फुट के लगभग है। इनको अनेक भागों में विभक्त किया जाता है—क. स्तम्भयष्टि, (ख) अधमुख कमल, (ग) फलक, तथा इनके ऊपर पशुओं की आकृति। कुछ में पशुओं की पीठिका पर विशाल धर्मचक्र है। अशोक के अधोलिखित स्तम्भों की सूची अभीष्ट हो जाती है :

1. सारनाथ स्तम्भ जो चार सिंहों की आकृतियों से युक्त है 2. साञ्ची का पशुराज आकृति युक्त स्तम्भ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(3) रामपुरवा स्तम्भ, सिंह शीर्षक युक्त; (4) रामपुरवा स्तम्भ, वृष शीर्षक युक्त (लेख रहित); (5) लौरिया नन्दनगढ़ स्तम्भ, सिंह शीर्षक युक्त, (6) लौरिया अरराज स्तम्भ; (7) इलाहाबाद स्तम्भ (कौशाम्बी से स्थानान्तरित) (8) कौशाम्बी स्तम्भ (लेख रहित); (9) रुम्मिनिदेई (लुम्बिनी) स्तम्भ; (10) निगलीवा स्तम्भ (11) बाखीरा स्तम्भ, सिंह शीर्षक युक्त; (12) सांकाश्य (संकीशा) स्तम्भ, गजशीर्षक युक्त (लेख रहित); (13) दिल्ली के दो स्तम्भ [टोपरा--(अम्बाला)व मेरठ से स्थानान्तरित)]।

■ दरीगृह या गुहावास्तु

गुहाओं को उत्कीर्ण करने की परिपाटी का प्रवर्तन अशोक मौर्य ने किया था। इन गुफाओं को धार्मिक सभा स्थल के रूप में प्रयुक्त किया जाता था। ऐसा जान पड़ता है कि गुफाएँ ग्राम में विद्यमान झोपड़ों तथा गृहों के वास्तविक रूप को ध्यान में रखकर बनाई गयी। गृह रूप को चट्टानों में खोदकर सौन्दर्यपूर्ण स्थिर रूप देना ही गुहावास्तु की विशेषता है।

बिहार में गया से 16 मील की दूरी पर स्थित बराबर (प्रवरगिरि) व नागार्जुनी पहाड़ियों में अनेक बौद्ध अवशेष प्राप्त होते हैं। इन गुहाओं का निर्माण अशोक व उसके पौत्र दशरथ ने करवाया था। बराबर समूह में चार गुहाएँ हैं—(1) कर्ण-चौपड़, (2) सुदामा गुफा, (3) लोमस ऋषि गुफा, (4) "विश्व झोपड़ी" गुफा। नागार्जुनी समूह में तीन गुफाएँ हैं—1. गोपी गुफा, (2) वहियाकाकुभा गुफा, (3) वडथिका गुफा।

गुहा वास्तुकला की दृष्टि से भुवनेश्वर के निकट उदयगिरि—खण्डगिरि (कुमारी पर्वत) की गुहाएँ महत्वपूर्ण है। शुङ्ग काल (c. 184-72 ई. पू.) में शिलाटङ्कित यह गुहाएँ जैन भिक्षुओं हेतु निर्मित की गयी थी जिनका संरक्षक कलिङ्गपति खारवेल (c.150 ई. पू.) था। उदयगिरि की 19 गुफाओं में प्रमुख हैं—(1) रानी गुम्फा, (2) अलकापुरी, (3) जगन्नाथ गुम्फा, (4) गणेश गुम्फा, (5) हाथी गुम्फा (6) सर्प गुम्फा --और खण्डगिरि की गुफाओं में प्रसिद्ध हैं—(1) नवमुनि गुम्फा (2) सतभरा गुम्फा, (3) आकाश गङ्गा (4) देव सभा (5) अनन्त गुम्फा।

भारतीय कला के विकास में जैन व बौद्ध मतों का विशेष योगदान रहा है। बौद्ध गुहाओं के दो प्रकार हैं—चैत्य-गृह व विहार। चैत्यगृह बौद्ध मत का उपासनालय अथवा देवशाला है जो तीन भागों में विभक्त है—मण्डल, प्रदक्षिणापथ व गर्भगृह। विहार भिक्षुओं का निवास स्थान था। प्रायः विहार चैत्यगृहों के साथ होते हैं। 200 ई. पू. व 200 ई. के मध्य शिलाटङ्कित कुछ प्रमुख चैत्यगृहों/विहारों के नाम इस प्रकार हैं—

1. भाजा—द्वितीय शती ई. पू.—भोरघाट (बम्बई-पुणे मार्ग); सात वाहन वंश
2. पीतलखोरा (पीतंगल्य)—द्वितीय शती ई. पू.—औरंगाबाद
3. अजन्ता—2 शती ई. पू. से 7 शती ई.—महाराष्ट्र
4. बेडसा की गुफाएँ—सातवाहन काल—पुणे
5. नासिक की गुफाएँ—प्रथम से द्वितीय शती ई. पू.—नासिक (नासिक्या)
6. जुन्नार—द्वितीय शती ई. पू. से प्रथम शती ई. पुणे
7. कार्ले—प्रथम शती, सातवाहन काल—भोरघाट (पुणे)
8. कन्हेरी—द्वितीय शती ई., सातवाहन काल—बम्बई
9. ऐलोरा—550-750 ई.—औरंगाबाद।
10. ऐलिफेण्टा— 635 ई.—ऐलिफेण्टा द्वीप (बम्बई)।

अधिकांश गुहाओं में सुन्दर भित्ति चित्र, तैल चित्र, मूर्तियाँ, अलंकृत स्तम्भ व द्वार आदि उत्कीर्ण किये गये हैं।

■ स्तूप

स्तूप मूलतः मृत्तिका का एक टीला हुआ करता था जिसे चिता के स्थान पर बना दिया जाता था। स्तूप बनाने की प्रथा प्राङ्बौद्धकालीन है किन्तु समयकाल में इसका सम्बन्ध बौद्ध मत से सम्पृक्त हो गया। प्रमुख स्तूपों की रचना प्रायः बुद्ध की शरीर-धातु अथवा बोधीसत्वों के देहावशेषों के ऊपर की गयी। स्तूप के स्थापत्य में छत्रावली, हर्मिका, अंड, महावेदिका व तोरण मुख्य अङ्ग हैं। प्रमुख स्तूपों के नाम, काल व निर्माण स्थल इस प्रकार हैं—

1. पिपरहवा—प्राङ्मौर्ययुग—कपिलवस्तु
2. भरहुत—द्वितीय शती ई. पू.—सतना (म. प्र.)
3. साञ्ची—लगभग 300 ई. पू. (निर्माण कार्य 300 ई. पू. से 900 ई. तक)—विदिशा(भेलसा, म. प्र.)
4. बोध गया—उत्तर मौर्य युग बिहार
5. अमरावती—c. 200 ई.—गुन्टूर (आं. प्र.)
6. धर्मराजिका स्तूप—अशोक /कनिष्क/ 5 वीं शती ई.—तक्षशिला
7. नागार्जुनकोंड—इक्ष्वाकु वंश कालीन—गुन्टूर (आं. प्रा.)
8. सारनाथ— अशोक/प्राङ्गुप्तकालीन— वाराणसी (उ. प्र.)
9. नालन्दा—प्राङ्गुप्तकालीन—नालन्दा (बिहार)
10. जग्गय्यमपेट्ट—इक्षवाकु/पल्लव वंश कालीन—पल्लेरू नदी तट (आ. प्र.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रायः स्तूपों का सुन्दर अलङ्करण किया जाता था, तोरण द्वारों व प्रदक्षिणापथ को विभिन्न कला रूपों से सज्जित किया जाता था। साञ्ची, अमरावती व भरहुत के स्तूप उल्लेखनीय हैं।

■ मन्दिर वास्तु

चतुर्थ शती में प्रतिमा की प्राण प्रतिष्ठा निमित्त मन्दिरों का निर्माण हुआ....आरम्भ में ईटों तथा पत्थरों की कोठरी के मूल आकार का अनुसरण कर गुप्त शैल कर्मकारों ने मन्दिर का निर्माण किया। वस्तुतः गुप्त-कालीन मन्दिर ही प्रथम मन्दिर थे। प्राङ्गुप्तकालीन मन्दिर प्रायः मृत्तिका, काष्ठ एवं ईष्टों (ईट) के बनाये जाते थे अतः उनके भग्नावशेष ही प्राप्त होते हैं। गुप्त-कालीन मन्दिर छोटे होते थे तथा उनकी छत चपटी होती थी....मन्दिर प्रायः भित्ति चित्रों व उत्कीर्णित स्तम्भों से अलंकृत होते थे। (1) देवगढ़ (झासी) का दशावतार मन्दिर, (2) तिगवा (जबलपुर) का विष्णु मन्दिर, (3) भुमरा (नागोद, म. प्र.) का शिव मन्दिर, (4) नचना कुठारा (आजमगढ़) का पार्वती मन्दिर, (5) बोध गया व साञ्ची के बौद्ध देवालय, तथा (2) डाब-परबतिया (दर्राङ्ग, असम) का भग्न मन्दिर उल्लेखनीय गुप्तकालीन मन्दिर हैं। भीतर गाँव (कानपुर, उ. प्र.) का प्रसिद्ध ईष्ट मन्दिर उत्कीर्णित ईष्टो का बना है....शिखर युक्त इस मन्दिर में प्रारम्भक प्रकार के मेहराब का प्रयोग हुआ है।

भारतीय मन्दिरों में प्रायः 'गर्भगृह' (प्रतिमा कक्ष), 'मण्डप' (उपासना कक्ष) तथा दोनों को युक्त करता 'अन्तराल' होता है। मन्दिर में प्रवेश हेतु एक द्वारमण्डप होता है जो "अर्द्धमण्डप" कहलाता है। मन्दिर की संरचना एक प्रांगण में होती है जिसमें अनेक छोटे मन्दिर भी हो सकते हैं। मन्दिरों का सुन्दर व जटिल अलङ्करण भी होता है। उत्तरी अथवा भारतीय-आर्य शैली के मन्दिरों के विमानों (Tower) के शीर्ष गोल व वक्रे-खीय है....दक्षिणी या द्रविड़ शैली के मन्दिर के शिखरों के शीर्ष प्रायः आयताकार होते हैं। मन्दिर निर्माण में प्रायः तीन शैलियाँ प्रयुक्त होती है—(1) उत्तर भारतीय 'नागर' शैली, (2) द्रविड़ शैली, व (3) वेसर शैली। मध्य भारत अथवा दक्कन की वेसर शैली में दोनो अन्य शैलियों का सायास मिश्रण जान पड़ता है।

● उड़ीसा के मन्दिर

उड़ीसा के मन्दिरों की एक विशिष्ट शैली है। भुवनेश्वर उड़ीसा की स्थापत्य कला का प्रमुख केन्द्र रहा है। मन्दिर स्थापत्य के निमित्त भिन्न भिन्न नाम आते हैं: (1) देवल या विमान, (2) जगमोहन या सभा भवन, (2) नट मन्दिर (नृत्य कक्ष), (4) भोग मन्दिर, (5) मन्दिर का पिष्ट (आधार) (6) मन्दिरों पर परकोटा, (6) विमान के गर्भ गृह, जगमोहन, नट व भोग मण्डपों के ऊपरी भाग पर शिखर। इन मन्दिरों में स्तम्भों का प्राय अभाव है व बाह्य अलङ्करण की प्रधानता है।

भुवनेश्वर का लिङ्गराज मन्दिर (ई. 1000) सबसे भव्य माना जाता है। उड़ीसा के अन्य प्रसिद्ध मन्दिरों के नाम-काल इस प्रकार हैं: (1) भुवनेश्वर का मुक्तेश्वर मन्दिर (ई. 975), (2) पुरी का जगन्नाथ मन्दिर (c. ई. 1000), (3) सूर्य मन्दिर, कोणार्क (गङ्ग नृपति नरसिंह देव, 1238-64 ई.), (4) राजरानी मन्दिर, भुवनेश्वर (1100-1250 ई.)

● खजुराहो के मन्दिर: बुन्देलखण्ड के चन्देल नृपतियों के संरक्षण में ई. 950-1050 में एक महान वास्तु शिल्प सम्प्रदाय (School) पनपा जिसकी अभिव्यक्ति झाँसी से लगभग 100 मील द. पू. में स्थित खजुराहों के मन्दिर शिल्प के रूप में हुई। खजुराहों के मन्दिरों की विशिष्ट-ताएँ कुछ इस प्रकार हैं—(1) परकोटे का अभाव, (2) मन्दिर उत्सेध (ऊँचाई) में 100 फीट से नीचे हैं, (3) गर्भगृह, मण्डप, अर्द्ध मण्डप से मन्दिर का विभाजन, (4) अन्तराल (गर्भगृह निकट), (5) प्रदक्षिणापथ, (6) गर्भ गृह का उच्छ्राय (height) अर्द्ध मण्डप से अधिक, (7) बाह्य भित्तियों (wall) पर मनुष्याकृतियों का तक्षण (carving), (8) ऊर्ध्व स्थित मीनार, (9) शिखर, (10) अन्तस्त भित्तियों पर तक्षण कला, (11) आमलक, स्तूपिका व कलश, (12) पूर्व में प्रवेश-द्वार। प्रायः मन्दिरों में यौन-कला व मैथुन के भावपूर्ण दृश्य तष्ट किये गए हैं।

(क) कन्दरिया महादेव, (ख) चौसठ योगिनियों का मन्दिर, (ग) लक्ष्मण मन्दिर, (घ) मातङ्गेश्वर, (ङ) चतुर्भुज (वैष्णव), (च) आदिनाथ (जैन) नामक मन्दिर भारत में तक्षण-कला व शैल-शिल्प के प्रकृष्टतम आयाम को उद्भासित करते हैं।

11वीं से 13वीं शती में गुजरात के सोलंकी (चौलुक्य) वंशी नृपतियों के संरक्षण में प. भारत में एक वास्तुशिल्प सम्प्रदाय समृद्ध हुआ जिसकी परिणती राज-स्थान के माउन्ट आबू के जैन मन्दिरों के रूप में हुई। यह जैन देवालय शुद्ध श्वेत राजाश्म (marble) के बने हैं। इनकी अन्तश्छदों (छत) पर सुन्दर तक्षण किया गया है।

● दक्कन के मन्दिर: दक्कन में वेसर शैली का विकास हुआ जिसमें नागर व द्रविड़ शैली के लक्षण पाये जाते हैं। इस क्षेत्र के प्राङ्चालुक्य कालीन मन्दिरों में 1. हच्छीमालतीगुडीमन्दिर (शिव) तथा (2) ऐहोल का लडखन मन्दिर (c. ई. 450) उत्तरी शैली में निर्मित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। दक्षिणी नागर शैली के आर्य शिखर युक्त मन्दिरों में (3) पापनाथ (ई. 680) (4) 'जम्बूलिङ्ग, व (5) पट्टदकल का करसिद्धेश्वर मन्दिर हैं....द्रविड़ शिखर युक्त मन्दिरों में पट्टदकल (बादामी निकट) का (6) विरूपाक्ष मन्दिर, जिसका निर्माण नृपति विक्रमादित्य द्वितीय की रानी (c. 740) ने करवाया था, विशेष रूप से प्रसिद्ध है। इसके अतिरिक्त पट्टदकल के (7) सङ्गमेश्वर व (8) मल्लिकार्जुन मन्दिर भी ख्यात हैं। शैलरूपकर्म (Sculpture) का प्रकृष्ट उत्कर्ष ऐलोरा के कैलास मन्दिर में अवलोक होता है। राष्ट्रकूट नृपति कृष्ण प्रथम (c. ई. 756-773) के निर्देश पर निर्मित इस शैल-तक्षित मन्दिर में पौराणिक कथाओं का चित्रण किया गया है।

● दक्षिण के मन्दिर : पल्लवों के संरक्षण में दक्षिण में भव्य मन्दिरों के निर्माण का पर्व प्रारम्भ होता है..... द्रविड़ शैली का प्रथम आभास पल्लव वास्तु तक्षण कला से ही होता है। पल्लव वास्तुकला ने भारतीय प्रायद्वीप की कला के साथ जावा, कम्बोडिया व वियतनाम की कला को भी प्रभावित किया।

महान कलाकार नृपति महेन्द्र वर्मन् प्रथम पल्लव (590-630) ने अनेक शैल-वितक्षित (rock cut-out) मन्दिरों का निर्माण करवाया - मण्डगप्पट्टू (द. आरकोट), पल्लावरम (मद्रास), मामन्दूर (उ. आरकोट), सियमङ्गलम (उ. आरकोट) का अवनिमञ्जन पल्लवेश्वरम्, तिरुच्छिरपल्ली आदि के शैल-वितक्षित मन्दिरों का निर्माण महेन्द्रवर्मन् के निर्देश पर हुआ। इन शिव मन्दिरों के अतिरिक्त महेन्द्रवादी (उ. आरकोट) में महेन्द्र-विष्णुगृह तथा श्रीगवरम में रङ्गनाथ का विष्णु मन्दिर भी बने। महेन्द्र द्वारा कला के इस नवोत्थान की प्रक्रिया को नरसिंहवर्मन् प्रथम महामल्ल (630-68) तथा नरसिंह वर्मन् द्वितीय "राजसिंह" (695-728) ने अक्षुण्ण रखा। इस काल की प्रसिद्ध व कलासौन्दर्य से परिपूर्ण वास्तु-शिल्पीय कृतियाँ इस प्रकार हैं :

1. मामल्लपुरम् के 15 चित्र-तष्ट गुहा-मन्दिर अथवा मण्डप; 2. मामल्लपुरम् के एकाश्म मन्दिर—(क) पञ्च पाण्डव रथ, (ख) पिदारी रथ, (ग) वलयनकुट्टै रथ, (घ) गणेश रथ।

राजसिंह समूह (700-800) के मन्दिरों में प्रमुख हैं, 1. मामल्लपुरम् के तट (Shore), ईश्वर व मुकुन्द मन्दिर, और 2. काञ्चीपुरम् के कैलाशनाथ व प्रसिद्धतम् वैकुण्ठपेरुमाल मन्दिर....नन्दीवर्मन् समूह (800-900) के प्रमुख मन्दिर हैं, 1. मुक्तेश्वर व मातङ्गेश्वर मन्दिर, काञ्चीपुरम्, 2. वाडामल्लीश्वर (चिंगलेपुट), 3. वीरट्टानेश्वर मन्दिर, तिरुत्तणी, तथा 4. परशुरामेश्वर मन्दिर, कुडीमल्लम्।

चोलों ने पल्लव शैली का विकास व सम्वर्धन किया। चोल नृपतियों के निर्देश पर निर्मित कुछ विशिष्ट मन्दिरों के नाम, निर्माणकाल व संरक्षक नृपति के नाम कुछ इस प्रकार से हैं :

1. बालसुब्रह्मण्य मन्दिर—871-907—आदित्य प्रथम्-कन्ननूर
2. नागेश्वर—871-907—आदित्य प्रथम—कुम्बकोनम
3. कोरङ्गनाथ—907-55—परान्तक प्रथम—तिरुचिरापल्ली
4. तिरुवालीश्वरम्—985-1016—राजराज—ब्रह्मदेशम् (तिन्नेवेली)
5. शिव मन्दिर (वृहदेश्वर/राजराजेश्वर)—985-1009-राजराज—थान्जुवूर (तन्जौर)
6. वृहदेश्वर (शिव)—1012-44—राजेन्द्र—गङ्गैकोण्डषोलपुरम्
7. ऐरावतेश्वर—1146-73—राजराज द्वितीय—दारासुरम (तंजौर)
8. कम्पहरेश्वर—कुलोतुङ्ग तृतीय—त्रिभुवनम्

चोल युग के पश्चात पाण्ड्य नृपतियों का युग आता है। इस काल में वृहदाकार उत्सेध के 'गोपुरम' (द्वार) बनाने की प्रथा प्रारम्भ होती है। जम्बुकेश्वर (श्रीरङ्गम), चिदम्बरम, आदि प्रसिद्ध पाण्ड्य मन्दिर हैं। हैदराबाद का कालेश्वर मन्दिर (12 वीं शती) व हेलेबिद का भव्य होयसलेश्वर मन्दिर (1200-1300) होयसल शैली के प्रतिनिधि मन्दिर है। मदुरै के मन्दिरों में सुन्दरेश्वर तथा मीनाक्षी (युगल मन्दिर, 1623-1659) मन्दिर सर्वाधिक प्रसिद्ध हैं।

● मूर्तिकला : भारतीय मूर्ति व अभिघटन कला विशेष रूप से उल्लेखनीय है। मौर्य काल के समापन व गुप्त-काल के उदय के अन्तवर्ती काल में भरहुत, साञ्ची, बोध-गया, मथुरा, अमरावती, नागार्जुनकोण्ड तथा गान्धार कला-सम्प्रदायों का विकास हुआ जिनका प्रभाव न्यूनाधिक सभी परवर्ती शैलियों में अवलोक हो सकता है। बुद्ध, महावीर, शिव, विष्णु, यक्ष-यक्षिणी, अप्सराओं पौराणिक कथाओं, बोधीसत्वों, काम-कला, तष्ट-पट्टों (carved panels) आदि की अभिव्यक्ति मूर्तियों तथा तक्षकला के रूप में हुयी। यहाँ मथुरा व गांधार कला का उल्लेख असङ्गत न होगा।

यवनों द्वारा गान्धार में राज्य स्थापित करने पर उनकी यूनानी कला का भारतीय कलाकारों के मस्तिष्क पर बहुत प्रभाव पड़ा। गान्धार के ये यवन, शक और युइशि राजा बाद में बौद्ध हो गये थे। इन यूनानी और भारतीय मूर्ति कलाओं के सम्मिश्रण से एक अपूर्व कला का जन्म हुआ जो गान्धार कला कहलाई—कुषाण काल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में मथुरा भी मूर्तिकला का बड़ा केन्द्र था। इस समय लोक शैली व भरहूत और साञ्ची की उन्नत शैलियाँ दोनों बराबर चल रही थीं; कुषाण काल में दोनों मिलकर एक हो जाती हैं; यह कुषाण काल में मथुरा शैली के नाम से प्रसिद्ध है।

● लेप चित्रण (Painting) : अजन्ता की गुहाएँ द्वितीय शती ई. पू. से सप्तम् शती ई. तक भारतीय चित्रकला के विकास को प्रदर्शित करती हैं। अजन्ता की कला भारतीय कला की पराकाष्ठा थी। अजन्ता में "अवलोकितेश्वर" व "मरणासन्न राजकुमारी" "माता व शिशु" नामक तूलिकाचित्र विशेष रूप से प्रशस्ति हैं। लेपचित्रण के अन्य प्रसिद्ध केन्द्र हैं—बाघ, सित्तनवसल, बादामी तथा ऐलोरा। चोल काल के कुछ उदाहरण थान्जुवूर के राजराजेश्वर मन्दिर में मिलते हैं। अजन्ता शैली के सुन्दर तूलिकाचित्र श्रीलङ्का के सीगिरिय नामक स्थान पर मिलते हैं।

■ मध्य कालीन संस्कृति ■

● कलाएँ : मध्यकालीन स्थापत्य कला में महराब, शहतीर, गुम्बद, शिला, कण्ठाग्रमुख का प्रयोग बहुतायत से मिलता है। सल्तनत तथा मुगल काल में इमारतों में अलङ्करण भी किया जाता था, जिसके अन्तर्गत बेलबूटे, फलों आदि का वितक्षण होता था। पशु पक्षियों व मानवाकृतियों का प्रायः अभाव था क्योंकि इस्लामी धर्म में इनका अङ्कन निषिद्ध है। इस काल की इमारतों में लाल पत्थर, मटमैला भूरा पत्थर तथा संगमरमर का प्रयोग किया जाता था। मुगल कालीन स्थापत्य पर ईरानी कला का प्रभाव देखा जा सकता है। तुर्की स्थापत्य कला में बाइजेन्टाइन, ईरानी तथा तुर्की स्थापत्य कला का भारतीय कलाओं से सायास सम्मिश्रण अवलोक होता है। इस युग की कला कि एक अन्य विशेषता है मीनारों का प्रयोग। मुगल काल में चित्र कला का यथेष्ट विकास हुआ। समकालीन पुस्तकों को चित्रों द्वारा सज्जित किया जाता था। मुगल तथा विभिन्न शैलियों की "मिनिएचर" चित्रकला का विकास इसी काल में हुआ, जिसमें राधाकृष्ण, राग-रागिनियों, शाही जीवन तथा रोजमर्रा के जीवन का सुन्दर चित्रण मिलता है। मुगल काल की एक अन्य विशेषता थी संगीत में अनुपम विकास। सम्राटों के रुचिर संरक्षण के कारण इस विधा में अनुपमेय प्रगति हुई।

● साहित्य: इस काल की साहित्यिक रचनाओं का उल्लेख कुछ इस प्रकार से किया जा सकता है :

सल्तनत काल : 1. अमीर खुसरो—खजियान-उल-फतह, तुगलक नामा, तारीख-ऐ-अलायी; गुलाम व तुगलक वंश कालीन
2. मिन्हाज-उस-सिराज—तबक़त-ऐ-नासिरी
3. जिया-उद-दीन बरनी—तारीख-ऐ-फिरोज शाही तुगलक वंश कालीन
4. शम्स-ऐ-सिराज 'अफीफ'—तारीख-ऐ-फिरोजशाही तुगलक काल
5. रामानुज—श्री भाष्य, ब्रह्म सूत्र पर टीका
6. वामन भट्ट बाण—पार्वती परिणय
7. रूप गोस्वामी—ललित माधव
8. विज्ञानेश्वर—मिताक्षरा
9. कृष्णदेव राय—अमुक्तमल्यद
10. जीमूतवाहन—दायभाग
11. भास्कराचार्य—नक्षत्र शास्त्र

मुगल काल :

1. बाबर—बाबर नामा;
2. गुलबदन बेगम—हुमायूँनामा;
3. अबुल फजल—आईन-ए-अकबरी व अकबर नामा;
4. बदायुनी—मुन्तखब-उत-तवारीख;
5. फैजी सरहिन्दी—अकबरनामा;
6. अब्दुल हमीद लाहौरी—पादशाहनामा;
7. मुहम्मद साक़ी—म'आसीर-ए आलमगीरी;
8. जहाँगीर—तुजक-ए-जहाँगीरी
9. औरङ्गजेब—फतवा-ए-आलमगीरी
10. मलिक मुहम्मद जायसी—पद्मावत
11. अब्दुर रहीम खान-ए-खानान—रहीम सतसई;
12. रस खाँ प्रेम वाटिका;
13. केशवदास—कवि प्रिया, रामचन्द्रिका, रसिकप्रिया, अलंकृत मञ्जरी;
14. भूषण—शिवराज भूषण, छत्रसाल दशक;
15. बिहारी लाल चौबे—बिहारी सतसई

■ आचार-विचार-संस्कार-परम्परा-संस्कृति ■

● भक्ति आन्दोलन : आर्थिक, सामाजिक व उपासना सम्बन्धी भेद-भावों व विषमताओं के परिणामस्वरूप 12-13वीं शती में एक आन्दोलन प्रारम्भ हुआ जिसने भक्ति को ईश्वर की प्राप्ति का सेतु बताया। (1) मूलतः सभी ईश्वरपरक मत (religions) समान हैं, (2) ईश्वर एक है, (3) मनुष्य की स्थिति उसके कर्मों द्वारा होती है जन्म से नहीं—जैसी बातों का प्रसार इस आन्दोलन के प्रणेताओं ने प्रायः समान रूप से किया। इसने जाति-प्रथा, मूर्ति-पूजा, धार्मिक आडम्बरों व यज्ञानुष्ठानों, पंडित-पुरोहितवाद का विरोध करते हुए सहज-सरल भक्ति को ही मुक्ति का मार्ग बताया। इस आन्दोलन के प्रवर्तकों में (1) रामानुज (12वीं शती, तेरकुदूर), (2) मध्वाचार्य (1238-1317 ई, द. भारत), (3) रामानन्द (14वीं से 15वीं शती(?), ज. इलाहाबाद); (4)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वल्लभाचार्य (ज.1479, बनारस, तेलुगु ब्राह्मण, शुद्ध अद्वैतवाद दर्शन); (5) चैतन्य (1485-1533. ज. नादिया, बंगाल कृष्णभक्त) (6) नामदेव (1270-1350, महाराष्ट्र), (7) कबीर (14वीं या 15वीं शती, ज. बनारस); (8) नानक (1469-1538, ज. तलवन्डी, पंजाब) प्रमुख हैं।

● सूफी आन्दोलन : लगभग 10वीं शती में सूफी मत का विकास ईरान (फारस) में हुआ। यह भारत में तुर्की साम्राज्य की स्थापना से पहले आए थे। सूफी सन्त एकेश्वरवाद में आस्था रखते थे। इस्लामी विचारधारा के होने पर भी यह लोग एक ही ईश्वर को मानते थे तथा भेद-भाव में विश्वास नहीं रखते थे। ईश्वर की भक्ति को ही ईश्वर से मिलने का मार्ग बताया गया। सूफी सन्तों को उदार विचारों वाले हिन्दुओं व मुसलमानों दोनों द्वारा आदर प्राप्त था। भक्ति आन्दोलन पर सूफियों का प्रभाव देखा जा सकता है।

● नृत्य कला : भरतमुनी का 'नाट्य शास्त्र' भारतीय संगीत, नृत्य व रंगकर्म का प्राचीनतम् ग्रन्थ माना जाता है। भारत के कुछ प्रमुख नृत्य हैं—(1) कथकली (केरल) (2) मोहिनी अत्तम (केरल); (3) भरत नाट्यम् (तमिल नाडु), (4) कथक (उ. भारत), ओडिसी (उड़ीसा), कुचिपुडी (आं. प्र.) व मणिपुरी (मणिपुर, पू. भारत)।

● अन्तर्जातीय विवाह : हिन्दू समाज में प्राचीन काल से ऐसे विवाह होते रहे हैं। इनके अन्तर्गत 'अनुलोम' व 'प्रतिलोम' विवाह का प्रचलन हुआ। अनुलोम विवाह में उच्च जाति का पुरुष निम्न जाति की कन्या से विवाह करता था। प्रतिलोम में निम्न वर्ण का पुरुष उच्च वर्ण की कन्या से विवाह करता था।

● भारतीय आस्तिक दर्शन (वेदों के प्रामाण्य को स्वीकारने वाले) हैं—(1) न्याय, वैशेषिक, साँख्य, योग, मीमांसा व वेदान्त। नास्तिक दर्शन (वेदों के प्रामाण्य को अस्वीकारने वाले दर्शन) हैं—चार्वाक, बौद्ध, जैन।

● हड़प्पा सभ्यता के प्रमुख केन्द्र जो वर्तमान भारतीय सीमा में हैं—रोपड़, बनवाली, कालीबङ्गन, लोथल, रंगपुर, सुरकोटदा, आलमगीरपुर, भगवानपुरा।

● हेलिओडोरस : तक्षशिला निवासी यूनानी राजदूत जिसने वैष्णव मत स्वीकार किया तथा विदिशा (बेसनगर) में विष्णु के सम्मान में गरुड़ स्तम्भ स्थापित करवाया।

● आष्टाङ्गिक मार्ग : बुद्ध ने दुःख-निवारण हेतु—(1) सम्यक् दृष्टि, (2) सम्यक् संकल्प, (3) सम्यक् वाणी, (4) सम्यक् कर्मान्त, (5) सम्यक् आजीव, (6) सम्यक् व्यायाम, (7) सम्यक् स्मृति, (8) सम्यक् समाधि—का मध्यम मार्ग बताया।

● जैन मत के त्रिरत्न हैं—(1) सम्यक् श्रद्धा, (2) सम्यक् ज्ञान, (3) सम्यक् चरित्र।

● चोल ग्राम प्रशासन : चोल साम्राज्य के विविध प्रशासनिक विभाजन थे—मण्डलम् (प्रान्त), वलनाडु (जिला), कुर्रम, नाडु, कोट्टम (नगर/ग्राम) थे। ग्रामों में स्थानीय स्वशासन की व्यवस्था थी। प्रशासकीय कार्यों हेतु समितियाँ (वेरियम) थी (तडाग, कृषि, उपवन, न्याय समिति मुख्य)। ग्राम सभाएँ जनहित सम्बन्धी कार्य, भूमिकर, मन्दिरों की स्थापना, शिक्षा प्रसार करती थीं। राजा का हस्तक्षेप प्रायः नहीं था। सभा न्याय करती थी किन्तु मृत्यु दण्ड का अधिकार न था। एक मटके में प्रत्याशियों के नामों की पर्चियाँ डाल दी जाती थीं। मन्दिर के पुरोहितों के निर्देश में दर्शकों के आगे से एक छोटे लड़के को बुलाकर पर्चियाँ निकलवाई जाती थीं। पर्चियों में जिनके नाम निकलते थे वह चुना हुआ घोषित होता था।

प्राचीन भारत : वस्तुपरक परीक्षण

लेखांश—I/ 1-2. भारतीय सभ्यता की एक लम्बी, निरन्तर व गौरवशाली परम्परा रही है। इतिहासविद् भी एकमत हैं कि अपने प्रारम्भिक कालों में भी इसने परिपक्वता, सहिष्णुता, जीवन-शक्ति के प्रमाण दिये हैं। यह एक स्वस्थ समाज था, लोग ओजपूर्ण व जीवन्त थे जिन्होंने जीवन के सुख व समस्याओं को स्वीकार किया तथा सदा सम्पूर्णता व 'सर्व व्यापक' की तलाश में संलग्न रहे। कला, भाषा, दर्शन व विज्ञान के क्षेत्र में उनका योगदान अनुपम रहा।

1. भारतीय सभ्यता का सर्वाधिक महत्वपूर्ण योगदान था—
   (क) 'सर्व व्यापक' व सम्पूर्णता की तलाश
   (ख) जीवन के सुखों व समस्याओं को समान रूप से स्वीकार करना
   (ग) कला तथा विज्ञान के क्षेत्र में
   (घ) विचार दर्शन के क्षेत्र में
2. भारतीय सभ्यता की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता है :
   (क) उसका लम्बा व अनवरत इतिहास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(ख) उसके समाज में विभिन्न जातियों का एक साथ रहना
(ग) पुरोहित वर्ग का उस पर वर्चस्व रहना
(घ) उसकी सहिष्णुता, आत्मसात्करण का गुण व उसकी सर्वव्यापकता

लेखांश II/ 3-4 कलिङ्ग युद्ध के अन्त की विशिष्टता एक नए युग को आरम्भ करना है। इसके बाद से अशोक ने यह निश्चय कर लिया कि नए प्रदेश विजित करने के लिए बल प्रयोग का मार्ग नहीं अपनाएगें। उन्होंने धर्म प्रसार द्वारा विजय प्राप्त करने का निर्णय किया। सैनिक विजय का युग समाप्त हुआ और आध्यात्मिक जात या धर्म विजय का युग आरम्भ होने को था।

3. कलिंग युद्ध किस वर्ष लड़ा गया ?
(अ) 322 ई. पू. (ब) 273 ई. पू.
(स) 261 ई. पू. (द) 187 ई. पू.

4. इतिहास में अशोक की प्रसिद्धि का कारण है—
(अ) उसकी कलिङ्ग में विजय
(ब) अनेक शिल्प स्मारकों का निर्माण
(स) शान्तिपूर्ण साधनों से धम्भ प्रसार
(द) अच्छा एवं कुशल प्रशासन

लेखांश III/5-7 गुप्त सम्राटों द्वारा भारत की राजनैतिक एकता व समृद्धि तथा संस्कृत के संरक्षण के फलस्वरूप संस्कृत साहित्य का सर्वतोमुखी विकास हुआ। इसी काल में पुराणों का पूर्ण विकास व स्मृति साहित्य का अन्तिम चरण देखा गया। किन्तु, सर्वाधिक प्रगति लौकिक साहित्य में हुई। इसी काल में विज्ञान, ज्योतिविज्ञान, गणित के साथ साहित्य की सभी विधाओं में सर्वश्रेष्ठ लेखक आविर्भूत हुए।

5. गुप्त काल की सबसे प्रमुख विशेषता थी—
(क) राजनैतिक एकता की स्थापना
(ख) वाणिज्य व उद्योग को प्रोत्साहन
(ग) ब्राह्मण धर्म का पुनरुत्थान
(घ) संस्कृत साहित्य को संरक्षण

6. निम्नाङ्कित में से कौन चन्द्र गुप्त द्वितीय विक्रमादित्य का दरबारी कवि था ?
(क) कालिदास (ख) भवभूति
(ग) भारवि (घ) बाण भट्ट

7. गुप्तकाल को भारत का प्रतिष्ठित युग (Classical Age) कहा जाता है क्योंकि इस काल में :
(क) कला में अद्वितीय प्रगति हुई
(ख) भौतिक वैभव के नए मानक स्थापित किए गए
(ग) अश्वमेध यज्ञ का पुनर्प्रचलन हुआ
(घ) सांस्कृतिक उपलब्धि की चरम सीमा प्राप्त की गयी

8. निम्नांकित में से कौन भारतीय आर्य भाषा नहीं है ?
(अ) गुजराती (ब) तमिल
(स) उड़िया (द) मराठी

9. निम्नलिखित में से कौन भारत का प्राचीनतम वंश है ?
(अ) मौर्य (ब) गुप्त
(स) कुषाण (द) कण्व

10. निम्नलिखित नृपतियों में कौन स्वयं साहित्यकार नहीं या यद्यपि साहित्य का संरक्षक था ?
(अ) हर्ष (ब) कृष्ण देव राय
(स) भोज परमार (द) चन्द गुप्त

11. कल्हण रचित "राजतरङ्गिणी" में किसका इतिहास वर्णित है ?
(अ) गुप्त साम्राज्य का (ब) मौर्य साम्राज्य का
(स) कलिङ्ग का (द) काश्मीर का

12. प्राचीन भारतीय इतिहास ज्ञात करने का कौन सा साधन नहीं है ?
(क) मुद्राएं (ख) अभिलेख
(ग) साहित्य (घ) हड़प्पा के ताम्रपत्र

13. गुप्त शासकों ने सर्वाधिक स्वर्ण-मुद्राएँ निर्गमित की....पश्च-गुप्त काल में इनकी संख्या कम होती गयी; स्वर्ण मुद्राओं की अधिकता अथवा कमी क्रमशः क्या द्योतित करती है ?
(क) युद्धों में निरन्तर विजय अथवा पराजय
(ख) स्वर्ण का आधिक्य अथवा कमी
(ग) व्यापार, वाणिज्य में वृद्धि अथवा ह्रास
(घ) शान्ति अथवा युद्ध की अवस्था

14. भारत में ग्राम जीवन प्रायः कब से प्रारम्भ हुआ ?
(क) पुरा-प्रस्तर अवस्था से
(ख) नव-प्रस्तर अवस्था से
(ग) प्रस्तर-ताम्र अवस्था से
(घ) मध्य-प्रस्तर अवस्था से

15. भारत में सभ्यता का विकास मुख्यरूपेण पश्चिम में हुआ, क्योंकि :
(अ) आर्य सर्वप्रथम पश्चिम में आकर बसे
(ब) आर्यों को पूर्व की ओर जाने में अधिक समय लगा
(स) पश्चिम में अपेक्षाकृत कम वर्षा होने के कारण जंगल प्रायः कम थे अतः बसने में सुविधा थी
(द) यह एक रहस्य है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

16. तृतीय शती ई. पू. में प्रथम अभिलेख किस भाषा में लिखे गए ?
(अ) संस्कृत (ब) पाली
(स) ब्राह्मी (द) प्राकृत

• ई. पू. 2500—1700

17. हड़प्पा सभ्यता की खोज किस वर्ष की गयी ?
(अ) 1888 (ब) 1919
(स) 1846 (द) 1922

18. हड़प्पा सभ्यता किस युग की थी ?
(अ) लोह युग (ब) ताम्र-युग
(स) स्वर्ण युग (द) काँस्य युग

19. निम्नलिखित में से किस स्थान का सम्बन्ध हड़प्पा सभ्यता से नहीं था ?
(अ) कालीबङ्गन/लोथल
(ब) चान्हु-दड़ो/कोटदीजी
(स) रङ्गपुर/रोजडी (द) कोटद्वार/सीरगालिङ्ग

20. अधोलिखित में से किस साधन द्वारा हड़प्पा सभ्यता की जानकारी प्राप्त होती है ?
(अ) मृत्तिका लेखों द्वारा
(ब) भोजपत्र अभिलेखों द्वारा
(स) पुरातत्व व उत्खनन द्वारा
(द) उपरिलिखित सभी से

लेखांश IV/21-23. हड़प्पा सभ्यता अपनी समकालीन सभ्यताओं से श्रेष्ठ थी। लोग अनेक विकसित सुविधाओं का उपभोग करते थे—चौड़ी सड़कें, नालियों की उत्तम व्यवस्था और सार्वजनिक स्नानागार, सभा-स्थलों व पूजा-घरों की भी व्यवस्था थी; मकान पक्की ईंटों के बने होते थे; उनमें पानी व नालियों की व्यवस्था रहती थी; कुछ घरों में कुएँ भी थे; सड़कें पक्की ईंटों अथवा पत्थर की होती थीं, जिनके किनारे नालियाँ थीं; नगरों में अन्न भण्डार हुआ करते थे।

21. हड़प्पा सभ्यता मुख्यतः—
(अ) नगरीय सभ्यता थी
(ब) ग्राम्य-सभ्यता थी
(स) धार्मिक सभ्यता थी
(द) स्पष्ट नहीं है

22. हड़प्पा सभ्यता की प्रमुख विशेषता है—
(अ) एक सुविकसित अर्थ व्यवस्था
(ब) श्रेष्ठ नगर व्यवस्था व जीवन
(स) अस्वच्छ जीवन से दूर रहना
(द) सुख-सुविधापूर्ण जीवन बिताना

23. हड़प्पा जन किसके निर्माण के लिए प्रसिद्ध है जिसका प्रमाण मोहन-जो-दड़ो में प्राप्त हुआ है ?
(अ) पक्की सड़कें (ब) नालियाँ
(स) स्नानागार (द) पूजा स्थल

24. निम्नांकित में से कौन हड़प्पा-जनों के कृषि-कर्म के सन्दर्भ में सत्य कथन नहीं है ?
(अ) सम्भाव्यतः काष्ठ हलों का प्रयोग होता था
(ब) उनके हँसिए पत्थरों के होते थे
(स) वह गेहूं, ज्वार, राई, मटर तथा सरसों आदि उगाते थे
(द) नहर-सिंचाई की व्यवस्था थी

25. किस वस्तु का उत्पादन व प्रयोग करने में हड़प्पा-जन विश्व के प्रथम लोगों में थे ?
(अ) लोह (ब) स्वर्ण
(स) चावल (द) कपास

26. हड़प्पा-जनों द्वारा प्रयोग में लायी गयी लिपि :
(अ) वैदिक भाषा है
(ब) प्रामाणिक रूप से पढ़ी नहीं जा सकी है
(स) चित्रलिपि है
(द) द्रविड़ भाषाओं से साम्य रखती है

27. हड़प्पा सभ्यता के विलुप्तप्राय हो जाने का क्या कारण माना जाता है ?
(अ) मरुस्थल के विकास के साथ भूमि की उर्वरता का निरन्तर ह्रास
(ब) बाढ़ों का आना
(स) विजातियों का आक्रमण
(द) उपरिलिखित सभी कारण

• ई. पू. 1500—600

28. 'आर्य' वस्तुतः एक भाषा विज्ञानी शब्द है जो भारोपीय (इन्डो-योरोपियन) व्युत्पत्ति के एक भाषा समूह को द्योतित करता है, किसी जाति विशेष को नहीं ... लगभग 1500 ई. पू. में ईरान के मार्ग से उनका भारत आगमन हुआ। यह "आर्य भाषी" लोग मूलतः कहाँ के निवासी थे ?
(क) मध्य योरोप के
(ख) मध्य-पूर्व के
(ग) यूरेशिया के
(घ) भारत के, यहीं से वह योरोप की ओर गए

29. भारत में आर्य समाज व सभ्यता मुख्यतः—
(क) मातृ शासित थी (ख) मातृवंशज थी
(ग) वृद्धतान्त्रिक थी (घ) पितृ-शासित थी

30. आर्यों ने सर्वप्रथम भारत के किस प्रदेश में निवास कर समयकाल में पूर्व की ओर प्रयाण किया ?
(क) पाञ्चाल (ख) पञ्जाब
(ग) अवन्ती (घ) कोसल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

31. निश्चुलिखित किस स्रोत द्वारा आर्यों के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त नहीं होती है ?
(क) कथाएँ (ख) काव्य
(ग) स्तुतियाँ (घ) पुरावशेष

32. ऋग वैदिक आर्य युद्ध को 'गविष्ठि' कहते थे— इसका तात्पर्य किससे है ?
(क) अनार्यों का वध
(ख) असुरों को यज्ञापित करना
(ग) गायों की खोज
(घ) सुन्दर अनार्य युवतियों को दासी/उपपत्नी बनाना

33. ऋग्वेद में उल्लिखित 'दास' व 'दस्यु' सम्भाव्यतः कौन थे ?
(क) सप्तनद प्रदेश में भृत्य बनाए गए भारतवासियों को 'दास' तथा पाञ्चाल निवासी प्राचीन डकैतों को 'दस्यु' कहा गया
(ख) प्रारम्भिक आर्य अधिवासी 'दास' तथा लिङ्ग-योनी पूजने वाले मूल भारतीय 'दस्यु' कहे गए
(ग) आर्यों के शूद्र वर्ण को 'दास' व अनार्यों के शूद्र वर्ग को 'दस्यु' कहा गया
(घ) विजित असुरों को 'दास' व राक्षस सम्प्रदाय के लोगों को 'दस्यु' माना गया

34. उत्तर वैदिक काल की समापनवेला में मुख्यतः पाञ्चाल व विदेह में वैदिक कर्मकाण्ड, यज्ञानुष्ठानों के प्रतिक्रियास्वरूप बौद्धिक नवोत्थान हुआ तथा उससे विकसित दर्शन ने सम्यक् ज्ञान व धारणा को अभीष्ट समझा। इसकी अभिव्यक्ति हुयी—
(क) ब्राह्मण गन्थों में (ख) स्मृति ग्रन्थों में
(ग) उपनिषदों में (घ) आरण्यकों में

35. ऋग्वैदिक काल में आर्यजन देवताओं की आराधना करते थे :
(क) पुत्रों, पशुओं, भोजन, धन व स्वास्थ्य की प्राप्ति के लिए
(ख) मोक्ष प्राप्ति के लिए
(ग) दुःखों के निवारण के लिए
(घ) प्रकृति की समृद्धि के लिए

36. आर्य भारत में अनेक समूहों में आए; आर्यों को भारत में निवास करने व मूल भारतीयों पर आधिपत्य स्थापित करने में कैसे सफलता मिली ?
(क) आर्यों की संस्कृति अधिक विकसित थी अतः उन्हें मूल देशज संस्कृति को प्रतिस्थापित करने में अधिक समय न लगा
(ख) आर्य युद्धास्त्रों व युद्ध-कला में अधिक निपुण थे, उन्हें अश्व के उपयोग ने अधिक गतिशील बनाया
(ग) देशज जन समृद्ध नगरों में रहने के कारण माँस, मदिरा, मैथुन में लीन होकर कायर व असमर्थन हो गए थे
(घ) देशज जनों ने आर्य आक्रमणों को अपना भाग्य मानकर उनकी अधीनता स्वीकार करली

37. आर्य यायावर व प्रव्राजी जातियाँ थी; उत्तर वैदिक काल में कृषि जीवनयापन का मुख्य साधन हो गयी, लौह का प्रयोग भी इसी काल से प्रारम्भ हुआ; लौह का प्रयोग प्रारम्भ हुआ ?
(क) c. 600 ई. पू.
(ख) c. 1500 ई. पू.
(ग) c. 1000 ई. पू.
(घ) उपरिलिखित सभी कालों में क्रमिक विकास में

● c. 600—325 ई. पू.

38. c. 600 ई. पू. में उत्तरापथ में 16 मुख्य राज्य थे जिनको 'महाजनपद' कहा जाता था; इन महाजनपदों में सर्वाधिक उत्कर्ष हुआ :
(अ) अवन्ती का (ब) मगध का
(स) वत्स का (द) कोसल का

39. मगध के उत्कर्ष व भारत में प्रथम शक्तिशाली प्रशासनिक तन्त्र की स्थापना करने का श्रेय हर्यङ्क वंशीय किस नृपति को जाता है ?
(अ) बिम्बिसार (ब) अजातशत्रु
(स) चन्द्रगुप्त मौर्य (द) प्रद्योत महासेन

40. बिम्बिसार की राजधानी गिरिव्रज थी, अजातशत्रु की राजगृह; पाटलीपुत्र की आधारशिला पाटलीग्राम के नाम से किसने रखी ?
(अ) अजातशत्रु ने (ब) महापद्म नन्द ने
(स) कालाशोक ने (द) उदयन ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

41. बिम्बिसार ने अङ्ग तथा अजातशत्रु ने कौसल एवं काशी विजित किए; अजातशत्रु ने 17 वर्षों के सङ्घर्ष के पश्चात, अपने मन्त्री की कूटनीति से किस प्रसिद्ध महासङ्घ को पराजित किया ?
(अ) कम्बोज (ब) गान्धार
(स) तक्षशिला (द) वज्जी [लिच्छवी]

42. अजातशत्रु की मृत्यूपरान्त पुत्र उदाई [460-444-ई. पू.] सम्राट बना, उसके बाद 5 पितृहन्ताओं ने शासन किया; 413 ई. पू. के लगभग शिशुनाग वंश सत्ता में आया। इस वंश का उच्छेदन कर किस व्यक्ति ने नन्द वन्श की स्थापना की जो 321 ई. पू. तक चला ?
(अ) जरासन्ध (ब) परान्तक नन्द
(स) महापद्मनन्द (द) काल भैरव

43. 'बौद्ध काल' में अनेक गणराज्य भी थे, निम्नलिखित में से कौन इस श्रेणी में नहीं आता ?
(अ) शाक्य/कोलीय (ब) वत्स/अवन्ती
(स) मल्ल/कम्बोज (द) वज्जी/महासङ्घ

44. षष्ठम् शती ई. पू. से एक विलक्षण परिवर्तन अवलोक होता है, इस परिवर्तन का प्रमुख लक्षण है :
(अ) राजपूतों के उद्भव तक उत्तर भारत के प्रमुख राजवंश प्रायः अक्षत्रीय हैं
(ब) धार्मिक शिक्षक कभी कभी क्षत्रीय होते थे
(स) ब्राह्मण तथा शूद्र भी यदाकदा राजा होने लगे
(द) उपरिलिखित सभी

प्रश्न 45-49 में सिद्धार्थ गोतम बुद्ध से सम्बन्धित एक घटना दी गयी है जो स्तम्भ II में किसी एक से सम्बन्ध रखती है। पता लगाइए वह किससे सम्बन्ध रखती है।

I	II
45. 566 ई. पू. में बुद्ध का जन्म	(अ) सारनाथ
46. 35 वर्ष की अवस्था में बुद्ध को "ज्ञान दीप्ति"	(ब) कुशीनगर
47. बुद्ध द्वारा प्रथम प्रवचन (धर्मचक्रप्रवर्त्तन)	(स) राजगृह
	(द) बोधगया
	(घ) वैशाली

48. 486 ई. पू. में बुद्ध का
(अ) महापरिनिर्वाण (ब) लुम्बिनीवन
49. प्रथम बौद्ध सङ्गीति (स) पाटलीपुत्र

50. बौद्ध मत की सफलता का कारण था :
(अ) बुद्ध ने जन साधारण की भाषा में उपदेश दिए
(ब) सामान्य जन निरर्थक यज्ञानुष्ठानों व ब्राह्मण आधिपत्य से त्रस्त हो चुके थे
(स) बुद्ध ने सभी वर्णों के लोगों के लिए मुक्ति का द्वार खोल दिया था
(द) उपरिलिखित सभी कारणों से

51. महात्मा बुद्ध ने किस बोली में अपने प्रवचन दिए ?
(अ) संस्कृत में (ब) प्राकृत में
(स) मागधी में
(द) उपरिलिखित सभी भाषाओं में

52. समयान्तर में बौद्ध मत का तीन मुख्य शाखाओं में विस्तार हुआ। महायान, हीनयान, वज्रयान; हीनयान निकाय का साहित्य पाली भाषा में निबद्ध है तथा महायान का ?
(अ) प्राकृत में (ब) संस्कृत में
(स) तिब्बती में (द) सिंहली में

53. बौद्ध सङ्गीति (महासभा) का आयोजन चार बार हुआ : प्रथम सङ्गीति बौद्ध धर्म व उसके सिद्धान्तों और नियमों को निर्धारित करने के निमित्त बुद्ध के महापरिनिर्वाण के पश्चात 483 ई. पू. में राजगृह की शातपर्णा गुहा में अजातशत्रु के काल में आहूत हुयी; द्वितीय सङ्गीति 383 ई पू. में बौद्ध सङ्घ के अनुशासन और नियम बनाने के उद्देश्य से कालाशोक के संरक्षण में कहाँ आहूत हुयी ?
(अ) वैशाली में (ब) पाटलीपुत्र में
(स) बोधगया में (द) सारनाथ में

54. निम्नलिखित में से कौन भारत में बौद्ध-मत के पतन का कारण नहीं है ?
(अ) शनैः शनैः राजाओं का संरक्षण समाप्त हो गया
(ब) बौद्ध-विहारों में अतुल सम्पत्ति एकत्र हो गया थी जिससे विलासाचार बढ़ा
(स) बौद्ध शिक्षकों ने अपनी मूल सरलता-सरसता विलुप्त कर दी थी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(द) विदेश में प्रचार पर विशेष बल दिया जाने लगा था

(घ) ब्राह्मण धर्म का नवोत्थान हुआ

55. अधोलिखित में से बौद्धमत के सम्बन्ध में कौन सा कथन सत्य है ?

(अ) बुद्धवाद का प्रभाव उत्तरवर्ती काल की कला पर नहीं पड़ा

(ब) बौद्ध भिक्षुओं ने द. पू. एशिया के देशों को विजित किया

(स) ईसायी मत पर बुद्धवाद व बौद्ध सङ्घों का प्रभाव नहीं पड़ा

(द) बौद्ध भिक्षुओं ने भारतीय संस्कृति का प्रसार विदेशों में किया

प्रश्न 56-61 में जैन मत सम्बन्धित दो समूह हैं जो परस्पर किसी प्रकार सम्बन्धित हैं; स्तम्भ I के प्रश्नों का सही सम्बन्ध स्तम्भ II के तथ्यों से ज्ञात कीजिए।

56. 540 ई. पू. में महावीर का जन्म	(अ) जृम्भिकग्राम
57. 42 वर्ष की आयु में महावीर को 'केवल ज्ञान' प्राप्ति	(ब) ऋषभदेव
	(स) सम्यक् दर्शन, सम्यक ज्ञान, सम्यक चरित्र
58. 468 ई. पू. में महावीर का देहावसान	(द) बाहुबली
	(घ) महावीर
59. जैन मत के प्रवर्त्तक	(य) पावापुरी
60. जैन मत के 24 वें तीर्थङ्कर	(र) वैशाली
	(ल) मति, श्रुति, केवल
61. जैन मत के त्रिरत्न	(व) श्रवणबेलगोला

62. भारत पर प्रथम महत्वपूर्ण विदेशी आक्रमण लगभग 530 ई. पू. व 516 ई. पू. में क्रमशः कम्बोज और गान्धार तथा सिन्ध और प. पञ्जाब पर हुआ; इन आक्रमणकर्त्ताओं के नाम हैं :

(अ) सायरस व डेरियस

(ब) एन्टीओकस व नेबूकदनेजार

(स) रामसेस व असुरबानीपाल

(द) थटमोस व अमोन रा

63. मेसीडॉन के एलेक्सेन्डर ने 326 ई. पू. में भारत पर आक्रमण कर किस युद्ध में राजा पुरु को परास्त करके भारत में ग्रीक शासन की नींव रखा ?

(अ) विपासा का युद्ध

(ब) चन्द्रभागा का युद्ध

(स) दृशद्वती का युद्ध

(द) झेलम का युद्ध

64. भारत में सिकन्दर की सफलता का प्रमुख कारण क्या था ?

(अ) सिकन्दर की सेना अधिक गतिशील थी

(ब) तक्षशिला के आम्भी जैसे राजाओं का देशद्रोह

(स) भारत में राजनैतिक एकता का अभाव

(द) सिकन्दर कुशल सेनानायक था

65. ग्रीक सम्पर्क का निम्नलिखित में कौन सा प्रभाव नहीं है ?

(अ) उ. प. भारत ने ग्रीक संस्कृति आत्मसात कर ली

(ब) भारत तथा प. योरोप में व्यापार सुगम हुआ

(स) उ. प. भारत में भारतीय-ग्रीक सङ्गम से गान्धार कला का विकास हुआ

(द) भारत के उ. प. के छोटे राज्य समाप्त हो गए

c.321—185 ई. पू.

66. मौर्य कालीन व्यवस्था की जानकारी हेतु कौन सा स्रोत उपयोगी है ?

(क) मेगेस्थनीज/इन्डिका

(ख) कौटिल्य/अर्थशास्त्र

(ग) अशोक के शिलालेख XIII, XII तथा स्तम्भ अ. VII

(घ) दीपवंश, महावंश व दिव्यावदान

(ङ) उपरिलिखित सभी

67. चन्द्रगुप्त मौर्य के सम्बन्ध में अधोलिखित में से कौन सा कथन सत्य नहीं है ?

(क) वह अपने मार्ग प्रशस्ता चाणक्य की सहायता से सिंहासनासीन हुआ

(ख) 305-3 ई. पू. में उसने उ. प. भारत के ग्रीक शासक सेल्यूकस निकेटर पर विजय प्राप्त की

(ग) 315 ई.पू. में उसके दरबार में से. निकेटर का राजदूत मेगेस्थनीज आया

(घ) उपरिलिखित सभी कथन असत्य हैं

68. सिकन्दर के भारतीय अभियान के समय मगध पर बृहद्रथ वंशीय किस नृपति का शासन था जिसको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिंहासनच्युत करके चन्द्रगुप्त मौर्य ने सिंहासन-ग्रहण किया ?

(क) महापद्मनन्द (ख) भूतपाल नन्द
(ग) दशसिद्धक नन्द (घ) धन नन्द

69. चन्द्रगुप्त मौर्य का उत्तराधिकारी था ?

(क) अशोक मौर्य (ख) बिन्दुसार
(ग) रामगुप्त (घ) सन्दिग्ध है

70. अशोक को बौद्ध मत में किसने दीक्षित किया था ?

(क) अवलोकितेश्वर ने (ख) अतिशा ने
(ग) रुपाङ्कर श्रीमञ्जुल ने
(घ) श्रमण उपगुप्त ने

71. किस लघु शिला-लेख में अशोक को "देवानामपिय अशोक" सम्बोधित किया गया है ?

(क) सित्तनवसल (ख) तोशाली
(ग) मास्की (घ) रुम्मिनदेई

72. 1837 में अशोक के अभिलेखों को पढ़ने में सर्व-प्रथम किसको सफलता मिली ?

(क) जेम्स प्रिन्सेप (ख) पी. वी. काणे
(ग) ए. कनिङ्घम (घ) सर मॉर्टिमर वीलर

73. निम्नाङ्कित में से कहाँ अशोक ने बौद्ध मत का प्रचार नहीं करवाया ?

(क) बर्मा (ख) पश्चिमेशिया
(ग) श्रीलङ्का (घ) द. पू. एशिया

74. अधोलिखित में से कौन मौर्य वंश के पतन का कारण नहीं है ?

(क) अशोक ने अहिंसा का मार्ग अपनाकर सेना भंग कर दी थी
(ख) उत्तराधिकारी अयोग्य थे अतः केन्द्रीकृत शासन दुर्बल हो गया
(ग) आर्थिक दशा खराब होने लगी थी
(घ) उ. प. में विदेशी आक्रमण होने लगे थे

75. लगभग 185 ई. पू. में मौर्य वंश के अन्तिम शासक बृहद्रथ की हत्या करके उसके किस सेनापति ने अपने वंश की स्थापना की ?

(क) अग्निमित्र/शुङ्ग (ख) पुष्यमित्र/शुङ्ग
(ग) विक्रमादित्य/कण्व (घ) हाल/आंध्र

•ई. 180 ई. पू.—ई. 150

76. बौद्ध मत की महायान शाखा का एक प्रसिद्ध संरक्षक था :

(क) अजातशत्रु (ख) बिम्बिसार
(ग) अशोक मौर्य (घ) कनिष्क

77. तृतीय बौद्ध सङ्गीति अशोक के शासन काल में पाटलिपुत्र के अशोकाराम विहार में आहूत हुयी जिसमें पिटको के दार्शनिक तत्वों का निर्धारण किया गया। चतुर्थ बौद्ध सङ्गीति कनिष्क के शासन काल में कहाँ समवेत हुयी ?

(क) कुण्डल वन, काश्मीर (ख) पुरुषपुर
(ग) मथुरा (घ) बोध गया

78. मेनेन्डर (155-30 ई. पू.) सर्वाधिक प्रसिद्ध बैक्ट्रि-अन-ग्रीक शासक था जिसकी राजधानी शाकल (स्यालकोट) थी; मेनेन्डर को बौद्ध धर्म के सिद्धांतों से परिचित तथा दीक्षित कराने वाले विद्वान के रूप में किसका उल्लेख 'मिलिन्दपञ्हो' नामक ग्रंथ में हुआ है ?

(अ) अतिशा (ब) दीपाङ्कर
(स) नागसेन (द) थूसीडायडीस

79. भारत में सर्वाधिक प्रसिद्ध शक नृपति रुद्रदामन था (ई. 130-50)। निम्नलिखित में उसके सम्बन्ध में कौन सा कथन असत्य है ?

(क) उसने कुषाणों से मैत्री की
(ख) उसने कठियावाड़ के सुदर्शन तड़ाग का परि-वर्द्धन करवाया
(ग) उसने संस्कृत का सर्वप्रथम लम्बा अभिलेख जारी किया
(घ) उसने सातवाहनों को दो बार पराजित किया

प्रश्न 80-85 में कनिष्क कालीन तथ्यों का वर्णन है। प्रश्न स्तम्भ एक का सम्बन्ध उत्तर स्तम्भ दो से है। प्रश्नों व उत्तरों में सम्यक् सम्बन्ध स्थापित कीजिए।

प	80. कनिष्क की राजधानी	(अ) पेशावर
ब	81. कला केन्द्र-वास्तुकला की नयी शैलियाँ	(ब) मध्य एशिया व सुदूर पूर्व
अ	82. विशाल बौद्ध स्तूप/चैत्य का निर्माण स्थल	(स) सिरसुख (तक्षशिला)
क	83. बौद्ध मत का प्रचार	(द) कनिष्कपुर (काश्मीर)
न	84. विजित प्रदेश	(य) मथुरा/गान्धार
स	85. एक मए उपनगर का निर्माण	(न) मध्य एशिया
		(प) पुरुषपुर/मथुरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

86. कुषाण शक्ति के ह्रास के बाद सर्वाधिक प्रभावशाली वंश गुप्त वंश का प्रादुर्भाव लगभग ई. 275 में हुआ; चन्द गुप्त प्रथम गुप्त वंश का सर्वप्रथम प्रतापी व महत्वपूर्ण शासक था जिसने गुप्त साम्राज्य की स्थापना की; गुप्त वंश का संस्थापक था :
(अ) घटोत्कच (ब) श्री गुप्त
(स) चन्द्र गुप्त (द) विक्रमादित्य

87. स्वर्ण मुद्राओं का वृहद् उपयोग सर्वप्रथम किसके काल में प्रारम्भ हुआ ?
(अ) शक-पहलव काल (ब) बैक्ट्रियन-ग्रीक काल
(स) कनिष्क काल (द) गुप्त काल

88. विक्रम सम्वत् का प्रारम्भ 58 ई. पू. से हुआ; ई. 78 से शक सम्वत् को प्रारम्भ करने का श्रेय जाता है :
(अ) रुद्रदामन को (ब) चन्द्र गुप्त विक्रमादित्य को
(स) मेनेन्डर को (द) कनिष्क को

● ई. 319-540

89. मूर्तिपूजा का उद्भव काल क्या माना जाता है ?
(क) कुषाण काल (ख) गुप्त काल
(ग) शुङ्ग काल
(घ) मूर्तिपूजा आदि काल से होती आयी है

90. गुप्त काल में भूमध्यसागर व प. एशिया से समुद्र व्यापार किस पत्तन से होता था ?
(क) ताम्रलिप्ति/घन्टशाला (ख) कदूरा
(ग) काञ्चीपुरम्
(घ) बारिगाजा (भडौच)/कैम्बे

प्रश्न 91-96 गुप्त काल पर आधारित हैं; प्रश्न स्तम्भ एक के कथ्य उत्तर स्तम्भ दो से सम्बन्धित हैं; स्तम्भ II के उत्तर क्रम में व्यवस्थित नहीं हैं। प्रश्न स्तम्भ के सन्दर्भ में उत्तर स्तम्भ का सम्यक् क्रम निर्धारित कीजिए।

91. भारत का एकीकरण-कर्ता सम्राट — (क) सङ्गीत प्रेमी नृपति की वीणा वादन करते आकृति अङ्कित मुद्रा
92. चन्द्र गुप्त द्वितीय — (ख) समुद्र गुप्त की विजयों का वर्णन
93. समुद्र गुप्त — (ग) मन्दसौर
94. आचार्य हरिषेण की 'प्रयाग प्रशस्ति' — (घ) स्कन्द गुप्त
95. प्रसिद्ध कला केन्द्र — (ङ) कुमार गुप्त प्रथम
96. हूणों के प्रथम आक्रमण का काल — (च) समुद्र गुप्त
(छ) मथुरा/सारनाथ
(ज) शकों का विजेता; चीनी यात्री फाह्यान का समकालीन

97. कुख्यात हूँण शासक मीहिरकुल को दो शासकों ने पराजित किया : पतनोन्मुख गुप्त वंश के नृपति नरसिंह गुप्त बालादित्य ने तथा 530 ई. में मन्दसौर के सुख्यात नृपति :
(क) कम्पवर्मन् ने (ख) अश्व वर्मन् ने
(ग) मधुरान्तक वर्मन् ने (घ) यशोधर्मन् ने

98. ई. 550 तक गुप्त साम्राज्य समाप्त हो गया; निश्चुलिखित में से कौन गुप्त साम्राज्य के पतन का कारण नहीं है ?
(क) कट्टर शैव होने के कारण गुप्तों का शक्तिशाली बौद्धों से संघर्ष होता रहा
(ख) स्कन्द गुप्त के बाद केन्द्र की शक्ति क्षीण हो गयी थी
(ग) आर्थिक दशा खराब होने लगी थी
(घ) हूंणों के आक्रमण होने लगे थे

99. गुप्तों के पतन के बाद प्रमुख राज्य—
(क) पाल (ख) प्रतिहार
(ग) राष्ट्रकूट (घ) उपरिलिखित सभी

100. गुप्त काल प्राचीन भारत के इतिहास में महत्वपूर्ण है क्योंकि :
(क) वह हिन्दू धर्म के नवजागरण का साक्षी था
(ख) प्राचीन कवि कालिदास उसकी देन थी
(ग) उसने बाहरी जगत् से सम्बन्ध विकसित किए
(घ) उसने कला के विकास को प्रोत्साहित किया

● ई. 606-712

101. हर्षवर्द्धन के राजकाल में कौन चीनी यात्री (बौद्ध अध्येता) भारत आया ?
(अ) इत्सिङ् (ब) मिङ् ती
(स) चाङ् किएन (द) ह्वेन साङ्

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

102. हर्षवर्द्धन ने बङ्गाल के शशाङ्क तथा गुजरात के मैत्रक राजा पर विजय प्राप्त की किन्तु - से हार गया।
(अ) नरसिंह वर्मन् द्वितीय पल्लव
(ब) अरिकेसरी परांकुस मारवर्मन् पाण्ड्य
(स) पुलकेशिन् द्वितीय चालुक्य
(द) मधुरान्तक राजेन्द्र द्वितीय चोल

103. हर्ष कालीन व्यवस्था के सम्बन्ध में ह्वेन साङ् ने कौन सा विवरण नहीं दिया ?
(अ) कानून व्यवस्था ठीक नहीं थी
(ब) पाटलीपुत्र और वैशाली का पतन हो रहा था व कन्नौज तथा प्रयाग महत्वशाली होते जा रहे थे
(स) राजा के अंतःपुर में रानियों की विशेष व्यवस्था थी
(द) शूद्रों का उसने कृषकों के रूप में उल्लेख किया

104. हर्षकाल में किस कुप्रथा के स्पष्ट लक्षण प्राप्त होते हैं ?
(अ) शिशु वध (ब) विधवा पुनर्विवाह
(स) सती प्रथा (द) बाल विवाह

105. बिहार-बंगाल के पाल बौद्ध थे; उनके साम्राज्य से बौद्ध मत का विस्तार कहाँ हुआ ?
(अ) दक्षिणोत्तर एशिया में
(ब) तिब्बत में
(स) पाल नृपति बौद्ध थे ही नहीं
(द) मंगोलिया में

■ दक्षिणापथ

106. दक्षिण भारत का ऐतिहासिक काल सम्भवतः ई. पू. 1000 से प्रारम्भ होता है; तमिल व्याकरण व साहित्य का प्रणेता किसे माना जाता है ?
(क) तोलकाप्पियम (ख) पेराशिरियर
(ग) अगस्त्य (घ) श्वेतकेतु

107. c. 230 ई. पू. में मौर्यों के पतन के बाद सातवाहनों का उदय हुआ; निम्नलिखित में सातवाहनों से सम्बन्धित कौन सा कथन वस्तुतः असत्य है ?
(क) उनकी राजधानी प्रतिष्ठान थी
(ख) श्रीयज्ञ शातकर्णी ने जलपोत अङ्कित मुद्राएँ चलाईं
(ग) उनके राजकाल में व्यापार-वाणिज्य को प्रोत्साहन नहीं मिला
(घ) गौतमी पुत्र शातकर्णी ने शक नृपति नहपान को पराजित करके उ. महाराष्ट्र तथा कोंकन, नर्मदा घाटी व सौराष्ट्र, मालवा तथा प. राजस्थान विजित किए

108. पल्लवों की राजधानी काञ्चीपुरम् थी; समुद्र गुप्त ने अपने दक्षिण अभियान में किस पल्लव राजा से युद्ध किया था ?
(क) नन्दि वर्मन (ख) विष्णु गोप
(ग) कुमार विष्णु (घ) रूपश्री वर्मन्

109. 'सङ्गम' से क्या अभिप्राय है ?
(क) पाण्ड्य नृपतियों के संरक्षण में हुयी मदुरा में तमिल साहित्यकारों की सभाएँ
(ख) चोल-पल्लव नृपतियों की वार्षिक सभा
(ग) कार्तिकेय का एक प्रसिद्ध मन्दिर
(घ) अभिप्राय रहस्यात्मक है

110. पाण्ड्य-देश की राजधानी मदुरा थी; पाण्ड्यों के सम्बन्ध में निम्नलिखित कथ्यों में से कौन सत्य के सर्वथा विपरीत है ?
(क) 26 ई. पू. के लगभग एक पाण्ड्य नृपति ने रोमन नृपति अगस्टस को राजदूत भेजे
(ख) पाण्ड्य-देश में मातृसत्ता की व्यवस्था थी
(ग) तिरुनेलवेली व मलैयडिकुरिची का गुहा-मन्दिर जयन्तवर्मन् के निर्देश पर बने
(घ) श्रीमार श्रीवल्लभ (ई. 815-62) ने श्रीलङ्का के राजा सेन I को पराजित नहीं किया था

111. रविकीर्ति की 'ऐहोल प्रशस्ती' में किसका वर्णन है ?
(क) राजराज I चोल/985-1016
(ख) महेन्द्र वर्मन I पल्लव
(ग) पुलकेशिन II चालुक्य/609-42
(घ) कोङ्णीवर्मन् गङ्ग/ई. 400

112. चीनी यात्री ह्वेन-साङ् ने अपनी दक्षिणी यात्रा में किन राजाओं के राज्यों का भ्रमण किया ?
(क) पुलकेशिन II चालुक्य
(ख) नरसिंह वर्मन पल्लव
(ग) कृष्ण I राष्ट्रकूट
(घ) उपरिलिखित क-ख

113. चोल-देश की राजधानी पहले कावेरीपट्टनम थी तथा बाद में गङ्गैकोण्डषोलपुरम्; चोलों में परम्परा थी कि उनका उत्तराधिकारी भी राजा के साथ शासन करता था; यशस्वी सम्राट राजराज I (985-1016) ने मालद्वीप व श्रीलङ्का पर विजय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राप्त की; किस चोल नृपति ने श्रीलङ्का को पूर्ण रूप से तथा श्री विजय (मलाया प्रायद्वीप, सुमात्रा, जावा तथा अन्य निकटवर्ती द्वीप) पर विजय प्राप्त की ?

(क) मधुरान्तक उत्तम चोल (ख) राजराज II
(ग) राजेन्द्र I (फ़) अरिञ्जय

■ धर्म→अर्थ→काम→मोक्ष ■

114. प्राचीन भारत में पटल नामक राज्य में दो राजाओं का शासन था। भारत में राजतन्त्र, कुलीन तन्त्र, गणराज्यों के अतिरिक्त नगर-राज्य भी थे; निम्नलिखित में कौन नगर-राज्य था ?

(अ) न्यास (ब) पिम्परम
(स) संगल (द) उपरिलिखित सभी

115. निम्नलिखित में कौन सा कथन सत्य नहीं है ?

(अ) वैदिक कालीन शासन व्यवस्था राजतन्त्रीय थी
(ब) पूर्व वैदिक काल में 'सभा' व 'समिति' का राजा पर नियन्त्रण रहता था किन्तु उत्तर वैदिक काल में यह शिथिल हो गया
(स) जनता को असमर्थ तथा कुशासक राजा का वध करने का अधिकार था
(द) उत्तर वैदिक काल में कुलीनतन्त्रीय सभाओं द्वारा राजा का अप्रत्यक्ष निर्वाचन होने लगा था

116. बुद्ध कालीन गणराज्य कुलीनतन्त्रीय सभाओं द्वारा शासित थे; कम्बोज नामक राजतन्त्र इस काल में गणतन्त्र में परिवर्तित हो गया था; वृज्जी महासङ्घ था :

(अ) स्वतन्त्र जनजातियों का महासङ्घ
(ब) एक नगर-राज्य
(स) विभिन्न जातियों का राजतन्त्र
(द) यह विषय गोपनीय है

117. प्राचीन गणतन्त्रों के सम्बन्ध में कौन सा कथन असत्य है ?

(अ) राजधानी में जनजातियों के प्रतिनिधियों की 'सार्वजनिक सभा' में बैठक होती थी
(ब) सभा की अध्यक्षता करने वाले को 'राजा' की उपाधि दी जाती थी
(स) इस सङ्घ प्रमुख अथवा राजा के पुत्र/पुत्री मुखिया बनते थे
(द) सभा में वाद-विवाद तथा मत-संग्रह द्वारा निर्णय होते थे

118. कौटिल्य के अर्थशास्त्र के अनुसार राजा का कार्य "धर्मप्रवर्त्तन" था; मौर्य काल में प्रशासन तथा अर्थव्यवस्था राज्य-नियन्त्रित व केन्द्रीकृत थी; शासन प्रबन्ध मुख्यतः अति विशाल अधिकारी-तन्त्र द्वारा संचालित होता था; मौर्य काल के सम्बन्ध में निम्न कौन सा कथन असत्य नहीं है ?

(अ) भूमि के उपयोग का किराया व उत्पाद का आकलन भू-राजस्व थे
(ब) जल कर भी लगता था; सिंचाई की शासकीय व्यवस्था थी
(स) शिल्प लघु उद्योगों में परिवर्तित हो गये थे तथा शिल्पकारों व वणिकों के निकाय (श्रेणी) भी बन गए थे
(द) उपरिलिखित सभी

119. गुप्त काल के सम्बन्ध में किस कथन में सत्य उस विकल्प के सर्वथा विपरीत है ?

(अ) श्रेणियाँ बैङ्करों, व्यापारियों व शिल्पकारों के स्वशासित निकाय थे
(ब) विदेश व्यापार में ह्रास तथा भूमिपतियों, विशेषतः ब्राह्मण भूमिपतियों, में वृद्धि हुयी
(स) साम्राज्य भुक्ति (मण्डल), विषय (जिला) तथा ग्रामों में विभाजित था जिसके प्रशासक क्रमशः उपरीक तथा विषयपति नहीं कहलाते थे
(द) शिव तथा विष्णु प्रधान देवता थे

प्रश्न 120-126 में एक समुच्चय है; समुच्चय में प्रश्न स्तम्भ I में कुछ पद (Terms) दिये गए है और उत्तर स्तम्भ II में उनके अभिप्राय दिए गए हैं—दोनों में अन्तर्सम्बन्ध है; स्तम्भ II का सही क्रम में होना अनिवार्य नहीं है। उन सही अभिप्रायों को खोजिए जिसके अन्तर्गत प्रत्यक पद आता हो।

I	II
120. धर्ममहामात्र	(अ) शान्ति तथा युद्ध सचिव/गुप्त
121. राजुक	(ब) सेना सम्बन्धी कार्य/गुप्त
122. तीर्थ	(स) शासकीय धर्म-प्रचारक/मौर्य
123. सान्धिविग्रहिक	(द) प्रान्त प्रमुख/गुप्त
124. कुमारामात्य	(ध) रिकर्ड रखने वाला अधिकारी/नन्द
125. महाबलाधिकारी	(न) भूमि-सर्वेक्षक व राजभाग मापक/नन्द
126. रज्जुग्राहिक	(प) न्यायकर्त्ता/मौर्य
	(फ) मन्त्री, पुरोहित, सेनापति, युवराज/मौर्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रश्न 127-32 के स्तम्भ I में प्रश्न दिये गये है। उत्तर स्तम्भ II में दिए गए 'उत्तरों' का 'प्रश्नों' से सही सम्बन्ध खोजिए।

I	II
127. चतुर्वर्णों का प्रथम उल्लेख	(अ) अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य
128. पुरुषार्थ प	(ब) पुरुषों के समान स्वतन्त्र थीं
129. वैदिक आर्य न	(स) ज्ञान, कर्म
130. हड़प्पा जन फ	(द) सभा में सम्मिलित होना निषिद्ध था
131. ऋग वैदिक कालीन स्त्रियाँ ब	(य) ऋग्वेद के 'पुरुषसूक्त' में
132. उपनिषदों में मोक्ष के उपाय स	(न) प्रकृत्योपासक थे
	(प) धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष
	(फ) महामाता तथा पशुपति के उपासक थे

133. वैदिक काल के सम्बन्ध में कौन सा कथन निरर्थक है ?
(अ) वर्ण-व्यवस्था कठोर न थी, सहभोज-प्रतिबन्ध कठोर न थे
(ब) स्त्रियाँ शिक्षा प्राप्त कर सकती थीं
(स) वैदिक काल में वरुण व इन्द्र क्रमशः प्रधान देवता थे
(द) वैदिक संहिताओं में मन्त्रों का संग्रह नहीं है

134. मौर्य काल मे राजा की अङ्गरक्षिकाएँ व परिचारिकाएँ होती थीं। ई. 300-700 में तीव्र सामाजिक परिवर्तन हुये। निम्नांकित में कौन से परिवर्तन का विपरीत सत्य है ?
(अ) उच्च वर्गीय स्त्रियाँ प्रशासन में भाग लेती थी; दक्षिण में स्त्रियाँ अपनी कला का सार्वजनिक प्रदर्शन भी करती थीं
(ब) स्वयंवर प्रथा प्रचलित थी, विधवा विवाह निषिद्ध था
(स) दास प्रथा स्थापित हो गयी थी; वैश्य तथा शूद्र कृषि, पशु पालन तथा व्यापार में संलग्न थे
(द) ब्राह्मणों तथा शिल्पकारों द्वारा शस्त्र-ग्रहण, क्षत्रियों का व्यापारी हो जाना इस काल में नहीं देखा गया; वैश्य तथा शूद्र अब शक्तिशाली राजा नहीं होते थे

135. निम्नोल्लिखित में कौन जैन मत के सम्बन्ध में असत्य कथन है ?
(क) देववाद, कर्मकाण्ड, हिंसात्मक यज्ञ, वर्ण व जाति-व्यवस्था का विरोध और अहिंसा व अभेद का समर्थन किया गया
(ख) कायक्लेश और तपश्चर्या ही मोक्ष का मार्ग हैं
(ग) संसार की उत्पत्ति 'जिन' द्वारा हुयी
(घ) अहिंसा, सत्य, अस्तेय व अपरिग्रह चार अनुपालनीय व्रत हैं

136. बौद्ध मत से सम्बन्धित किस कथन को असत्य माना जा सकता है ?
(क) कठोर कायक्लेश व घोर तपस्या की अपेक्षा मध्यम या अष्टाङ्गिक मार्ग ही मोक्ष का मार्ग है
(ख) "नश्वर और रोगग्रस्त होने के कारण सम्पूर्ण अनुभूत जगत में आत्मा नहीं है"
(ग) वेदों व जाति व्यवस्था को अमान्य घोषित किया गया, यज्ञानुष्ठानों का विरोध व सम्बोधी प्राप्त सन्तों का सम्मान किया
(घ) वर्षा ऋतु में सङ्घारामों में भिक्षुओं के निवास को वर्जित किया गया

उत्तरमाला

1 घ, 2घ, 3 स, 4 स, 5 क, 6 क, 7 घ, 8 ब, 9 अ, 10 द, 11 द, 12 ग, 13 ग, 14 ग, 15 स, 16 द, 17 द, 18 द, 19 द, 20 स, 21 अ, 22 ब, 23स, 24द, 25द, 26स, 27द, 28ग, 29घ, 30ख, 31घ, 32ग, 33ख, 34ग, 35क, 36ख, 37ग, 38ब, 39अ, 40अ, 41द, 42स, 43ब, 44द, 45य, 46द, 47अ, 48ब, 49स, 50द, 51स, 52ब, 53अ, 54द, 55द, 56र, 57अ, 58य, 59ब, 60घ, 61स, 62अ, 63द, 64स, 65अ, 66घ, 67घ, 68घ, 69ख, 70घ, 71ग, 72क, 73घ, 74क, 75ख, 76द, 77अ, 78स, 79क, 80प, 81घ, 82अ, 83ब, 84न, 85स, 86ब, 87स, 88द, 89ख, 90घ, 91च, 92ज, 93क, 94ख, 95छ, 96घ, 97घ, 98क, 99घ, 100घ, 101द, 102स, 103स, 104स, 105ब, 106ग, 107ग, 108ख, 109क, 110घ, 111ग, 112घ, 113ग, 114द, 115द, 116अ 117स, 118द, 119स 120स, 121प, 122फ, 123अ, 124द. 125ब, 126न, 127घ, 128प, 129न, 130फ, 131ब, 132स, 133द, 134द, 135ग, 136घ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आधुनिक युग | मध्य युग

डॉ. श्रीमती गायत्री गहलोत

1. पल्लव वंश का अंत 897 ई. में चोल राजा आदित्य प्रथम ने किया। अंतिम पल्लव राजा कौन था ?
(अ) नृपतुंग वर्मा (ब) अपराजित वर्मा
(स) नरसिंह वर्मा (द) नन्दि वर्मा

2. किस चोल राजा ने नौसैनिक अभियान में द. पू. एशिया के शैलेन्द्रों को हराया ?
(अ) राजराज महान (ब) कुलोतुंग
(स) राजेन्द्र चोल (द) राजेन्द्र देव द्वितीय

3. राजेन्द्र चोल के बारे में क्या असत्य है ?
(अ) वह कलाप्रेमी व कलाकार भी था
(ब) उसके गंगैकोंड की उपाधि धारण की
(स) उसकी राजधानी गंगैकोंडचोलपुरम् थी
(द) उसने बंगाल विजय नहीं की

4. 14 वीं शताब्दी में चोल राज्य का अंत किसके आक्रमण से हुआ ?
(अ) जफर खाँ (ब) मुहम्मद तुगलक
(स) मलिक काफूर (द) फिरोज तुगलक

5. चोल प्रशासन के बारे में क्या असत्य था ?
(अ) राजा निरंकुश नहीं होता था
(ब) शासन में जन सहयोग नहीं लिया जाता था
(स) साम्राज्य अनेक मंडलों में विभाजित था
(द) भूमिकर राज्य की आय का प्रमुख साधन था

6. तंजौर का राजराजेश्वर शिव मंदिर किस चोल राजा ने बनवाया ?
(अ) राजेन्द्र चोल (ब) राजराज प्रथम
(स) परान्तक प्रथम (द) आदित्य प्रथम

7. गहरवार वंश का अंतिम शासक कौन था ?
(अ) जयचन्द (ब) हरिश्चन्द्र
(स) गोविंद चन्द्र (द) विजयचन्द

8. 1019 में महमूद गजनवी ने प्रतिहार राजा त्रिलोचन पाल को हराया था। इस वंश का अंतिम शासक कौन था ?
(अ) यशपाल (ब) राज्यपाल
(स) महेन्द्रपाल (द) विजय पाल

9. निम्न कौन स्थान प्रारम्भिक मध्यकाल में शिक्षा का केन्द्र न था ?
(अ) तक्षशिला (ब) नालंदा
(स) उदन्दपुर (द) विक्रमशिला

10. 1008 में महमूद गजनवी के खिलाफ हिन्दू राजाओं के संघ में कौन चंदेल राजा शामिल था ?
(अ) विजयपाल (ब) विद्याधर
(स) गंड (द) धंग

11. चंदेल कालीन स्थापत्य कला का प्रमुख केन्द्र कौन था ?
(अ) महोबा (ब) कालिंजर
(स) जबलपुर (द) खजुराहो

12. राष्ट्रकूट वंश का पतन 974 ई. में हुआ। इस वंश का अंतिम शासक कौन था ?
(अ) कर्क द्वितीय (ब) कृष्ण द्वितीय
(स) अमोघवर्ष चतुर्थ (द) गोविन्द तृतीय

13. 12 वीं सदी में बंगाल के प्रसिद्ध पालवंश का अंत हो गया। उसका अंतिम प्रमुख शासक कौन था ?
(क) रामपाल (ख) महीपाल
(ग) मदनपाल (घ) विग्रहपाल

14. निम्न राजवंशों में किसका अस्तित्व देर तक रहा ?
(अ) चालुक्य (ब) पाल
(स) राष्ट्रकूट (द) प्रतिहार

15. द्वारसमुद्र के होयसल वंश के बारे में क्या असत्य है ?
(क) वीर बल्लाल इस वंश का सबसे प्रतापी राजा था
(ख) होयसल शासकों ने कवियों को राजाश्रय दिया
(ग) उन्होंने विशाल मन्दिर व इमारतें बनवाई
(घ) विजयनगर राज्य की स्थापना में होयसलों ने मदद नहीं की

16. निम्न में कौन दक्षिणापथ का राज्यकुल नहीं था ?
(अ) देवगिरि के यादव (ब) वारंगल के काकतीय
(स) द्वारसमुद्र के होयसल (द) पल्लव

17. कदम्ब कुल दक्षिणापथ का राज्यकुल था। सुदूर दक्षिण का कौन राजवंश न था ?
(क) कलिंग के पूर्वीय गंग (ख) मदुरा के पाण्ड्य
(ग) चोल (घ) चेर राजवंश

18. कर्णाटक के गङ्गवंशीय राजा राचमल्ल चतुर्थ के मन्त्री चामुण्डराय ने इन्द्रबेट्ट पहाड़ी पर किस जैन विभूति की प्रतिमा स्थापित करवायी ?
(क) बाहुबली/श्रवण बेलगोला
(ख) गोमटेश्वर/श्रवण बेलगोला
(ग) पार्श्वनाथ/चन्द्रगिरि
(घ) क — ख सत्य है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

19. दक्षिण के किस प्रसिद्ध सम्राट तथा उसकी रानी की प्रतिमा एक मन्दिर में स्थापित है ?
(क) कृष्णदेव राय (ख) राजेन्द्र I चोल
(ग) महेन्द्रविक्रम वर्मन् I पल्लव
(घ) पुलकेशिन् II चालुक्य

20. वेदों के प्रसिद्ध टीकाकार सायण का सम्बन्ध किस राज्य से था ?
(क) चोल (ख) कदम्ब
(ग) विजय नगर (घ) होयसल

21. मुहम्मद बिन कासिम ने किस राजा को हराकर सिंध पर अधिकार किया था ?
(क) जयपाल (ख) आनंदपाल
(ग) दाहिर (घ) त्रिलोचनपाल

22. महमूद गजनवी द्वारा भारत पर आक्रमण का निम्न कौन कारण नहीं था ?
(अ) धन प्राप्त करने की इच्छा
(ब) इस्लाम के प्रति निष्ठा प्रकट करना
(स) अपनी सेना के लिए हाथी एकत्र करना
(द) अपना सामाज्य विस्तार करना

23. महमूद गजनवी ने निम्न किस राज्य पर हमला नहीं किया ?
(क) मुल्तान (ख) भटिंडा
(ग) मालवा (घ) थानेश्वर

24. महमूद गजनवी के आक्रमण के प्रभाव के बारे में निम्न कौन तथ्य असत्य है ?
(अ) सीमांत प्रांत तुर्कों के पास चला गया
(ब) भावी विजेताओं का कार्य सुगम हुआ
(स) भारत की अपार संपति बाहर चली गयी
(द) जनता में इस्लाम के प्रति सम्मान बढा

25. मुहम्मद गोरी ने भारत पर प्रथम आक्रमण 1175 ई. में किया। उसके आक्रमण के उद्देश्य के बारे में निम्न कौन तथ्य असत्य है ?
(क) भारत में मुस्लिम साम्राज्य की स्थापना
(ख) भारत में इस्लाम का प्रचार
(ग) अपनी शक्ति में वृद्धि करना
(घ) भारत का धन लूटकर वापस जाना

26. पृथ्वीराज चौहान तराइन के द्वितीय युद्ध में गोरी से हारा। उसकी पराजय का कारण क्या नहीं था ?
(क) अकुशल रणनीति
(ख) कन्नौज नरेश जयचंद का विरोध
(ग) सेना का अभाव
(घ) सेनापति का अचानक मरना

27. कुतुबुद्दीन ऐबक के बारे में निम्न कौन तथ्य असत्य है ?
(क) भारत में गुलाम वंश का संस्थापक था
(ख) मुहम्मद गोरी का दास था
(ग) मुहम्मद गोरी का पुत्र था
(घ) इल्बरी वंश का प्रथम सुल्तान था

28 कुतुबुद्दीन ऐबक को भारत में विजय अभियान में सर्वाधिक मदद किसने की ?
(क) मुहम्मद बिन बख्तियार खिलजी
(ख) ताजुद्दीन यल्दौज
(ग) नासिरुद्दीन कुबाचा
(घ) अलीमर्दान खाँ

29. कुतुबुद्दीन ऐबक की मृत्यु किस तरह हुई ?
(अ) लाहौर में पोलो खेलते समय
(ब) अजमेर में युद्ध के दौरान
(स) कन्नौज में बीमार पड़ने पर

30. इल्तुतमिश के बारे में कौन तथ्य असत्य है ?
(क) उसने मंगोलों के संभावित हमले से सल्तनत को बचाया
(ख) वह आरामशाह को हटाकर सुल्तान बना
(ग) वह नागदा के गहलौत राजा क्षेत्रपाल से हारा
(घ) वह इल्बरी तुर्क नहीं था

31. कुतुबमीनार के बारे में निम्न कौन तथ्य असत्य है ?
(क) इसका निर्माण कुतुबुद्दीन ऐबक ने शुरू कराया
(ख) इसका निर्माण इल्तुतमिश ने पूरा कराया
(ग) इसका नाम फकीर कुतुबशाह के नाम पर पड़ा
(घ) कुतुबमीनार में अलाई दरवाजा कुतुबुद्दीन ने बनवाया

32. महमूद गजनवी के साथ कौन सुप्रसिद्ध विद्वान व इतिहासकार भारत आया था ?
(अ) जियाउद्दीन बर्नी (ब) अलबेरुनी
(स) फरिश्ता (द) याहियाबिन अहमद

33. शाहनामा का लेखक फिरदौसी था। बताइये जियाउद्दीन बर्नी ने कौन सा ग्रंथ लिखा था ?
(क) तारीखे फिरोजशाही
(ख) तुगलक नामा
(ग) तारीखे दाऊदी
(घ) तारीखे मुबारक शाही

34. 'तबकाते नासरी' 'मिनहाजुद्दीन सिराज ने लिखी। बताइये वह किस सुल्तान का समकालीन था ?
(क) इल्तुतमिश (ख) अलाउद्दीन खिलजी
(ग) मुहम्मद तुगलक (घ) इब्राहिम लोदी

35. अमीर खुसरो के बारे में निम्न कौन तथ्य असत्य है ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(क) वह प्रसिद्ध कवि व इतिहासकार था
(ख) वह निजामुद्दीन औलिया का शिष्य था
(ग) वह कुशल संगीतकार था
(घ) खुसरो ने सिर्फ तीन ग्रंथ लिखे

36. इब्न बतूता मूर यात्री था। वह किस सुल्तान के शासनकाल में भारत आया ?
(क) गयासुद्दीन तुगलक (ख) फिरोज तुगलक
(ग) बहलोल लोदी (घ) मुहम्मद तुगलक

37. रजिया इल्तुतमिश की पुत्री थी। उसके पतन का कौन निम्न कारण नहीं था ?
(क) मुस्लिम सामन्त एक महिला से शासित नहीं होना चाहते थे
(ख) निर्मम राजनीतिक हत्याओं के कारण सामंत नाराज थे
(ग) जमालुद्दीन याकूत से विवाह
(घ) वह अनुभवी व कूटनीतिज्ञ नहीं थी

38. दिल्ली सल्तनत में अंतिम इल्बरी तुर्क सुल्तान कौन था ?
(अ) नासिरुद्दीन महमूद (ब) कैकुबाद
(स) बुगरा खाँ (द) शम्सुद्दीन

39. राजत्व सिद्धान्त की घोषणा करने वाला दिल्ली का प्रथम सुल्तान कौन था ?
(क) अलाउद्दीन खिलजी (ख) इल्तुतमिश
(ग) बलबन (घ) फिरोज तुगलक

40. मुस्लिम धार्मिक नेताओं के चंगुल से पूरी तरह कौन सुल्तान मुक्त हो सका ?
(अ) फिरोज तुगलक (ब) अलाउद्दीन खिलजी
(स) सिकंदर लोदी (द) रजिया

41 किस सुल्तान ने दासों के प्रबंध के लिए पृथक विभाग स्थापित किया ?
(अ) मुहम्मद बिन तुगलक (ब) बहलोल लोदी
(स) इल्तुतमिश (द) फिरोजशाह तुगलक

42. अलाउद्दीन खिलजी ने अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए बाजार नियंत्रण किया। बताइये ताँबे के सिक्के किस सुल्तान ने चलवाये थे ?
(अ) इब्राहिम लोदी (ब) कैकुबाद
(स) बलबन (द) मुहम्मद बिन तुगलक

43. दिल्ली सल्तनत में कई राजवंशों का शासन रहा। शीघ्र राजवंश परिवर्तन का कौन कारण नहीं था ?
(क) उत्तराधिकार नियम का अभाव
(ख) षडयंत्रों की अधिकता
(ग) सैन्य शक्ति पर आधारित शासन
(घ) राजपूतों का प्रबल विरोध

44. दिल्ली के किस सुल्तान ने ब्राह्मणों पर भी जजिया कर लगाया ?
(अ) मुहम्मद तुगलक (ब) अलाउद्दीन खिलजी
(स) फिरोज तुगलक (द) बलबन

45 तुगलक वंश का संस्थापक गयासुद्दीन तुगलक था। बताइये इस वंश के पतन में कौन कारण सहायक नहीं था ?
(क) मुहम्मद तुगलक का चरित्र व नीतियाँ
(ख) तैमूर का आक्रमण
(ग) खिलजी सरदारों का विरोध

46. बलबन ने दिल्ली सल्तनत की स्थिति मजबूत की। उसकी सैनिक सफलताओं के बारे में निम्न क्या असत्य है ?
(क) मेवातियों का दमन
(ख) दोआब के डाकुओं का विनाश
(ग) वारंगल विजय
(घ) मंगोल आक्रमण का सामना

47. जलालुद्दीन खिलजी ने खिलजी वंश की स्थापना की। उसके शासन काल में कौन निम्न घटना नहीं हुई ?
(क) मलिक छज्जू का विद्रोह
(ख) सीदी मौला का षडयंत्र
(ग) मंगोलों के सतत् आक्रमण
(घ) ठगों का दमन

48. अलाउद्दीन खिलजी के दक्षिण अभियान का प्रमुख उद्देश्य क्या था ?
(क) दक्षिण के राजाओं को दंड देना
(ख) विशाल सेना का प्रयोग करना
(ग) अथाह संपत्ति प्राप्त करना
(घ) साम्राज्य विस्तार करना

49. अलाउद्दीन खिलजी ने दक्षिण के किस राज्य पर चढ़ाई नहीं कराई ?
(क) द्वारसमुद्र (ख) देवगिरि
(ग) वारंगल (घ) विजयनगर

50. अलाउद्दीन खिलजी के समय मंगोलों ने छह बार हमला किया। किस मंगोल सेनापति ने दिल्ली को घेर लिया था ?
(क) इकबाल मंदा (ख) सालदी
(ग) तार्गी (घ) कादर

51. अलाउद्दीन खिलजी के बाजार नियंत्रण का प्रमुख उद्देश्य क्या था ?
(क) नगरों में अनाज की नियमित आपूर्ति
(ख) हिन्दू व्यापारियों को दंडित करने के लिए
(ग) कम वेतन पर सैनिकों की भर्ती
(घ) सामान्य जनता का समर्थन पाने के लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

52. अलाउद्दीन खिलजी की हत्या विष खिलाकर उसके किस सेनापति ने की ?
(अ) उलुग खाँ (ब) मलिक काफूर
(स) जफरखाँ (द) नुसरत खाँ

53. 1347 में बहमनी राज्य की स्थापना किसने की ?
(क) मुजाहिदशाह (ख) ताजुद्दीन फिरोज शाह
(ग) हसन अलाउद्दीन (घ) मुहम्मद शाह

54. जौनपुर में शर्की राज्य की स्थापना किसने की थी ?
(क) महमूद शाह (ख) मलिक सरवर
(ग) इब्राहिम शाह (घ) मुबारक शाह

55. 1336 में हरिहर व बुक्का ने विजयनगर साम्राज्य की स्थापना की। इसका सर्वश्रेष्ठ शासक कौन था ?
(क) देवराय प्रथम (ख) वीर नरसिंह
(ग) कृष्णदेवराय (घ) हरिहर द्वितीय

56. विजयनगर में सबसे अंत में किस राजवंश का शासन था ?
(क) संगम वंश (ख) अरविन्दु वंश
(ग) सलुव वंश (घ) तलुव वंश

57. भारतीय इतिहास में विजयनगर साम्राज्य के राजाओं का महत्व किसलिए है ?
(क) ये दक्षिण में इस्लाम का प्रसार रोकने में सफल रहे
(ख) ये परंपरागत भारतीय संस्कृति के संरक्षक थे।
(ग) इन्होंने दक्षिण पूर्व एशियाई देशों से व्यापारिक संबंध बनाये

58. मुहम्मद तुगलक ने सर्वप्रथम सांकेतिक मुद्रा चलायी। इसका क्या निम्न कारण नहीं था ?
(क) उसे चीनी व ईरानी शासकों से प्रेरणा मिली थी
(ख) राजकोष में चाँदी का अभाव
(ग) उसे अभिनव प्रयोग का व्यसन था
(घ) उसने जनता की अज्ञानता का लाभ उठाना चाहा

59. मुहम्मद तुगलक ने निम्न कौन कार्य नहीं किया था ?
(क) दोआब में कर वृद्धि
(ख) राजधानी परिवर्तन
(ग) खुरासान विजय का प्रयास
(घ) दास प्रथा को प्रोत्साहन

60. 1398 में नासिरुद्दीन महमूद के समय तैमूर का आक्रमण हुआ। आक्रमण के प्रभाव के बारे में क्या असत्य है ?
(क) हिंदुओं को जनधन की अपार क्षति हुई
(ख) भारतीय कला पर प्रभाव
(ग) तुगलक वंश का पतन हो गया
(घ) विदेश व्यापार को बढ़ावा मिला

61. फिरोज तुगलक के संबंध में कौन कथन असत्य है ?
(क) उसकी धार्मिक नीति असहिष्णु थी
(ख) उसका शासन भ्रष्ट तथा अव्यवस्थित था
(ग) उसने सार्वजनिक हित के कई कार्य किये
(घ) उसके सैन्य संगठन का आधार सामंती न था

62. 1414 में खिज्र खाँ ने सैय्यद वंश की स्थापना की। इसका अंतिम सुल्तान कौन था ?
(अ) मुहम्मद शाह (ब) अलाउद्दीन आलम शाह
(स) मुबारक शाह

63. लोदी वंश की स्थापना बहलोल लोदी ने 1451 में की। सिकन्दर लोदी के बारे में कौन असत्य है ?
(अ) वह दानशील तथा न्यायप्रेमी था
(ब) वह कला व साहित्य का प्रेमी था
(स) वह कुशल सेनानायक तथा शासक था
(द) उसकी धार्मिक नीति उदार थी

64. पानीपत का प्रथम युद्ध 1526 में हुआ। इसमें बाबर की मुठभेड़ किससे हुई थी ?
(अ) राणा साँगा (ब) दौलत खाँ लोदी
(स) मेदिनीराय (द) इब्राहिम लोदी

65. बाबर भारत में मुगल साम्राज्य का संस्थापक था। उसमें निम्न कौन गुण नहीं था ?
(क) साहित्यिक अभिरुचि (ख) प्रशासनिक कुशलता
(ग) कुशल सैन्य प्रतिभा (घ) परिवार के प्रति प्रेम

66. बाबर का जन्म 1483 में फरगना में हुआ था। वह पितृ पक्ष से किस महान विजेता का वंशज था ?
(क) मुहम्मद बिन कासिम (ख) सुबुक्तगीन
(ग) तैमूर (घ) चंगेज खाँ

67 हुमायूँ की अनेक कठिनाइयाँ उसे बाबर से विरासत में मिली थी। कौन उसकी व्यक्तिगत दुर्बलता नहीं थी ?
(क) अत्यधिक आत्मविश्वास
(ख) विलासप्रियता
(ग) दूरदर्शिता व कूटनीतिज्ञता का अभाव
(घ) विवेकरहित दयालुता

68. शेरशाह से किस युद्ध में हार कर हुमायूँ को सिंध की ओर भागना पड़ा ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(क) चौसा का युद्ध (ख) गौंड़ का युद्ध
(ग) विलग्राम का युद्ध (घ) चुनारगढ़ का युद्ध

69. हुमायूँ को किसकी मदद पाने के लिए शिया धर्म स्वीकार करना पड़ा ?
(अ) अली अकबर जामी
(ब) सिंध का शाह हुसैन गरगों
(स) ईरान का शाह तहमास्प

70. सूर वंश के किस शासक को हराकर हुमायूँ ने पुनः गद्दी प्राप्त की ?
(क) इस्लाम शाह (ख) आदिलशाह
(ग) फिरोजशाह (घ) सिकदरशाह

71. शेरशाह सूर ने 1540 में सूरवंश की स्थापना की । सूरवंश के पतन का निम्न कौन कारण नहीं था ?
(अ) अफगानों में राष्ट्रीय संगठन का अभाव
(ब) शेरशाह के अयोग्य उत्तराधिकारी
(स) उत्तराधिकार के नियम का अभाव
(द) अफगान सरदारों का विश्वासघात

72 शेरशाह का इतिहास में स्थान किसलिए महत्वपूर्ण है ?
(क) महान सेनानायक होने के कारण
(ख) प्रशासनिक सुधार करने के कारण
(ग) हुमायूँ को हराने के कारण
(घ) अपने परिश्रम से राज्यपद पाने के कारण

73 1556 में पानीपत के दूसरे युद्ध में अकबर ने किसे हराया ?
(क) मुजफ्फर खाँ तृतीय (ख) बाजबहादुर
(ग) हेमू (घ) सिकन्दर शाह सूर

74. अकबर ने प्रशासन में अनेक परिवर्तन किये । राजस्व प्रशासन में उसने कौन नयी प्रथा लागू की ?
(अ) दाबसाला (ब) बंटाई प्रथा
(स) जब्ती (द) नश्क प्रथा

75. अकबर द्वारा शुरु की गयी मनसबदारी प्रथा के बारे में कौन तथ्य असत्य है ?
(क) इस प्रथा में हर अधिकारी को मनसब का दर्जा मिलता था
(ख) इसमें दर्जों को जार व सवार में बाँटा गया था
(ग) मनसबदारों को जागीरे मिलती थी नगद वेतन नहीं
(घ) मनसबदारों को अपने सैनिकों की भर्ती का हक था

76. अकबर ने 1581 में दीनइलाही धर्म की स्थापना की । इसकी विफलता का कौन कारण असत्य है ?
(अ) कट्टर हिंदू व मुस्लिम इसके विरोधी थे
(ब) तत्कालीन रूढ़िवादी परिस्थितियाँ
(स) इसके प्रचार में अकबर द्वारा अधिक रुचि न लेना
(द) इसके सिद्धान्त अस्पष्ट थे

77. जहाँगीर के शासन काल में मुगलों व मेवाड़ में संधि हुई । संधि के बारे में कौन कथन असत्य है ?
(क) राणा ने मुगल अधीनता स्वीकार की
(ख) राणा का पुत्र मुगल दरबार में भेजा गया
(ग) चित्तौड़ का किला राणा को वापस दिया गया
(घ) राणा से मुगलों से विवाह सबंध के लिये कहा गया

78. जहाँगीर तथा नूरजहाँ को किसने कैद कर लिया था ?
(क) एतमादुद्दौला (ख) महावत खाँ
(ग) शेर अफगन (घ) नजर मुहम्मद

79. नूरजहाँ के बारे में कौन कथन असत्य है ?
(क) वह निर्भीक व महत्वाकांक्षिणी थी
(ख) वह पक्षपाती तथा गुटबाज न थी
(ग) कविता, ललित कला तथा श्रृंगार में उसकी रुचि थी
(घ) वह उदार किंतु अभिमानी थी

80. जहाँगीर के दरबार में प्रथम अंग्रेज राजदूत हाकिन्स था उसके शासन काल में दूसरा राजदूत कौन आया ?
(क) हेनरी मिडिलटन (ख) सर टॉमस रो
(ग) सर मैन (घ) जोशुआ चाइल्ड

81. शाहजहाँ का कौन विजय अभियान सर्वाधिक विफल व क्षतिकारक रहा ?
(क) अहमदनगर (ख) कंधार अभियान
(ग) मध्य एशिया अभियान (घ) गोलकुंडा

82. उत्तराधिकार के युद्ध में औरंगजेब ने सामूगढ़ में किसे हराया ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(क) शुजा (ख) दाराशिकोह
(ग) मुराद (घ) सुलेमानशिकोह

83. मुगल साम्राज्य के पतन का कौन निम्न कारण असत्य है ?
(अ) मुगल साम्राज्य की विशालता
(ब) औरंगजेब का राजपूत राज्यों से युद्ध
(स) मराठों के विरुद्ध औरंगजेब का सतत अभियान
(द) उत्तर पश्चिम सीमांत प्रांतों की अपेक्षा

84. नादिरशाह ने भारत पर कब हमला किया ?
(क) 1761 (ख) 1738-39
(ग) 1741-42 (घ) 1728-29

85. मुहम्मद तुगलक ने कृषि योग्य भूमि बढ़ाने के लिए 'दीवाने कोही' नामक विभाग की स्थापना की। उसके प्रयास की असफलता का कौन कारण नहीं था ?
(क) निर्धारित क्षेत्र उपजाऊ नहीं था
(ख) इसके लिए आवंटित धन का दुरुपयोग हुआ
(ग) सुल्तान ने इसमें व्यक्तिगत रुचि नहीं ली
(घ) सुल्तान ने किसानों से लगानों के रूप में आधी फसल माँगी

86. 1748 में अहमदशाह अब्दाली ने भारत पर पहला हमला किया। उस समय दिल्ली में कौन मुगल सम्राट था ?
(क) अहमद शाह (ख) आलमगीर द्वितीय
(ग) शाहआलम द्वितीय (घ) जहाँदारशाह

87. पानीपत का तीसरा युद्ध 14 जनवरी 1761 को हुआ। इसमें अब्दाली ने किस भारतीय शक्ति को हराया ?
(अ) राजपूत (ब) मराठा
(स) सिख (द) जाट

88. 18वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में पेशवा दरबार का बहुचर्चित कूटनीतिज्ञ कौन था ?
(क) परशुराम भाऊ पटवर्धन
(ख) नाना फड़नवीस (ग) रघुनाथ राव

89. पुर्तगालियों ने भारत के जलमार्ग का पता लगाया। उनके बारे में निम्न क्या असत्य है ?
(क) उन्होंने हिंदमहासागर से मुस्लिम देशों के जहाज खदेड़े
(ख) उन्होंने हिंसा व आतंक के बल पर व्यापार किया
(ग) उन्होंने इसाई धर्म के प्रचार हेतु प्रयास नहीं किया

90. शिवाजी के मराठा राज्य की राजधानी कौन थी ?
(अ) सतारा (ब) कोल्हापुर
(स) राजगढ़ (ब) पूना

91. शिवाजी की राजस्व व्यवस्था के बारे में क्या असत्य है ?
(क) यह मलिक अंबर की व्यवस्था पर आधारित था
(ख) नया राजस्व आकलन 1679 में पूर्ण हुआ
(ग) इसमें देशमुखी प्रथा समाप्त की गयी
(घ) अधीन राज्यों से चौथ ली जाती थी

92. 'मराठा मैकियावली' किसे कहा जाता है ?
(अ) महादजी सिंधिया (ब) माधवराव
(स) बाला जी बाजीराव (द) नाना फड़नवीस

93. 'मराठा संघ' का मूल सदस्य कौन नहीं था ?
(क) गायकवाड़ (ख) होल्कर
(ग) भोसले (घ) सावंत
(च) पेशवा (छ) पवार

94. कौन मुगल बादशाह अंग्रेजों का पेंशनभोगी नहीं रहा ?
(अ) अहमद शाह (ब) अकबर द्वितीय
(स) बहादुरशाह द्वितीय (द) शाह आलम

95. मराठा राज्य के पतन का निम्न कौन कारण न था ?
(क) सेना में आधुनिक हथियारों का अभाव
(ख) अनुशासन व एकता की कमी
(ग) सामंत प्रथा व उसके कुपरिणाम
(घ) भारत में अंग्रेजों का प्रभाव

96. द्वितीय आंग्ल-मराठा युद्ध 1803 में हुआ। तीसरा आंग्ल मराठा युद्ध कब हुआ ?
(अ) 1816 (ब) 1825
(स) 1810 (द) 1820

97. हैदर अली के बारे में क्या असत्य है ?
(क) वह अपने पिता के बाद मैसूर का शासक बना
(ख) उसमें धार्मिक सहिष्णुता थी
(ग) वह अशिक्षित किन्तु कुशल प्रशासक था
(घ) प्रारंभ में वह मैसूर सेना में सामान्य पद पर था

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

98. सिखों को लड़ाकू जाति के रूप में किसने प्रयुक्त किया ?
(अ) गुरु गोविंद सिंह (ब) गुरु हरगोविंद
(स) गुरु नानक (द) बंदा बहादुर

99. रानी एलिजाबेथ ने एक अधिकार पत्र द्वारा भारत में ईस्ट इंडिया कम्पनी की स्थापना की स्वीकृति किस वर्ष में दी ?
(क) 1602 (ख) 1599
(ग) 1600 (घ) 1604

100. ईस्ट इंडिया कम्पनी को बंगाल, बिहार व उड़ीसा की दीवानी किसने दी ?
(अ) शाहआलम (ब) मीरजाफर
(स) मीरकासिम (द) बहादुरशाह

101. प्लासी का युद्ध क्लाइव व सिराजुद्दौला के बीच 1757 में हुआ। सिराजुद्दौला की हार का कौन कारण असत्य है ?
(क) मीरजाफर व रायदुर्लभ का विश्वासघात
(ख) क्लाइव का षडयंत्र
(ग) सिराजुद्दौला में वीरता का अभाव

102. अंग्रेजों की आर्थिक नीतियों से भारत की अर्थ-व्यवस्था किस तरह की हो गयी ?
(क) सामंतीय अर्थव्यवस्था
(ख) अर्द्ध औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था
(ग) शहरी अर्थव्यवस्था
(घ) औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था

103. भारतीय उद्योगों के शीघ्र पतन का कारण कौन नहीं था ?
(क) ब्रिटेन से आये मशीन निर्मित सस्ते सामान से स्पर्धा
(ख) कच्चे माल का अभाव
(ग) कारीगरों के खिलाफ दमन अभियान
(घ) ब्रिटेन व यूरोप में भारतीय सामान पर अधिक कर व प्रतिबंध

104. ब्रिटिश काल में भारतीय जनता की गरीबी का कौन प्रमुख कारण नहीं था ?
(अ) खेती के प्रसार में कमी
(ब) महाजनी प्रथा
(स) लगान में वृद्धि
(द) कुटीर उद्योगों का क्षय
(च) अकालों की भीषणता
(छ) भारतीय धन का ब्रिटेन जाना

105. भारत में मशीन युग का प्रारम्भ 18वीं सदी के किस दशक में हुआ ?
(क) छठवें (ख) आठवें
(ग) सातवें (घ) नवें

106. बक्सर का युद्ध 1764 में हुआ। इसके बारे में निम्न कौन कथन असत्य है ?
(अ) इसमें मीरकासिम, शुजाउद्दौला तथा शाह-आलम की सम्मिलित सेनाये पराजित हुई
(ब) इसने बंगाल को पूरी तरह कम्पनी के नियंत्रण में ला दिया
(स) हेक्टर मुनरो के नेतृत्व में अंग्रेज सेना जीती
(द) मुगल बादशाह अंग्रेजों के कब्जे में नहीं आया

107. भारत में रेल सर्वप्रथम किसके शासनकाल में प्रारंभ हुई ?
(क) लॉर्ड कैनिंग (ख) लॉर्ड डलहौजी
(ग) लॉर्ड वेलेजली (घ) लॉर्ड विलियम बैन्टिक

108. 'सहायक संधि' के लिए कौन गवर्नर जनरल प्रसिद्ध है ?
(अ) लॉर्ड वॉरेन हेस्टिंग्ज (ब) लार्ड हेस्टिंग्ज
(स) लॉर्ड वेलेजली (द) लॉर्ड कॉर्नवॉलिस

109. श्रीरंगपट्टनम् की संधि 1792 में हुई। इसमें किसे लाभ नहीं हुआ ?
(अ) अंग्रेज (ब) मराठा
(स) टीपू सुल्तान (द) निजाम

110. सालबाई की संधि 1782 में हुई। इसके बारे में कौन कथन असत्य है ?
(क) मराठों व अंग्रेजों में मैत्री संबंध स्थापित हुए
(ख) इसने मैसूर को मराठों की मदद से वंचित किया
(ग) यह हेस्टिंग्ज की कूटनीतिज्ञ सूझ नहीं थी
(घ) सिंधिया ने इसे स्वार्थवश स्वीकार किया

111. बसीन की संधि 1802 में हुई। अंग्रेजों ने यह संधि किससे की थी ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(अ) राघोबा (ब) पेशवा बाजीराव द्वितीय
(स) जसवंतराव होल्कर (द) दौलतराव सिंधिया

112. प्रथम बर्मी युद्ध 1824 में हुआ। इस समय भारत का गवर्नर जनरल कौन था ?
(क) लॉर्ड हेस्टिंग्ज (ख) लॉर्ड एमहर्स्ट
(ग) जॉन एडम्स (घ) लॉर्ड विलियम बैन्टिक

113. द्वितीय बर्मी युद्ध 1852 में हुआ। इस समय भारत का गवर्नर जनरल कौन था ?
(अ) लॉर्ड डलहौजी (ब) लॉर्ड ऑकलैंड
(स) सर चार्ल्स मेटकाफ (द) लॉर्ड एलनबरो

114. डलहौजी के बेदखली के सिद्धान्त से कौन राज्य कम्पनी में नहीं मिलाया गया ?
(क) जैतपुर (ख) सतारा
(ग) ग्वालियर (घ) नागपुर
(च) उदयपुर (छ) झाँसी

115. 1843 में सिन्ध अंग्रेजी राज्य में मिलाया गया। इस समय गवर्नर जनरल कौन था ?
(अ) लॉर्ड ऑकलैंड (ब) लॉर्ड हार्डिग
(स) लॉर्ड एलनबरा (द) सर चार्ल्स मेटकाफ

116. 1816 में लॉर्ड हेस्टिंग्ज के काल में सगौली की संधि हुई। यह संधि अंग्रेजों ने किससे की थी ?
(क) मराठों से (ख) पिंडारियों से
(ग) गोरखों से (घ) निजाम से

117. क्लाइव ने 1765 में बंगाल में द्वैध शासन लागू किया। इसे किसने समाप्त किया ?
(अ) सर जॉन शोर (ब) वॉरेन हेस्टिंग्ज
(स) सर जॉर्ज वार्लो (द) लॉर्ड कॉर्नवॉलिस

118. बहमनी साम्राज्य की राजधानी क्या थी ?
(क) गुलबर्गा (ख) देवगिरि
(ग) दौलताबाद (घ) बीदर

119. बहमनी सुल्तानों द्वारा निर्मित गोल गुंबज कहाँ स्थित है ?
(अ) बीजापुर (ब) गोलकुन्डा
(स) बीदर (द) गुलबर्गा

120. ख्वाजा मुईनुद्दीन 'चिश्ती' सम्प्रदाय के संस्थापक थे। कौन संत इस सम्प्रदाय का नहीं था ?
(क) कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी
(ख) फरीदुद्दीन गंज-ए-शकर
(ग) शेख नासिरुद्दीन चिराग देहलवी
(घ) सईद जलाल

121. सुहरावर्दी सम्प्रदाय के संस्थापक शेख शिहाबुद्दीन थे। कौन इस सम्प्रदाय से संबद्ध नहीं था ?
(अ) शेख शर्फुद्दीन मूसा (ब) शाह दौला दरयाई
(स) निजामुद्दीन औलिया (द) सैय्यद जलालुद्दीन

122. कादरी सम्प्रदाय के संस्थापक शेख अब्दुल कादिर जिलानी थे। कौन मुगल शाहजादा इस सम्प्रदाय का अनुयायी था ?
(क) कामरान (ख) दारा शिकोह
(ग) मुराद (घ) हिन्दाल

123. भारत में नक्शबंदी सम्प्रदाय का प्रचार शेख अहमद फ़ारूखी सरहिंदी ने किया। कौन इस सम्प्रदाय का संत नहीं था ?
(क) ख्वाजा मीर दर्द (ख) संत वहीदुल्ला
(ग) ख्वाजा मुहम्मद बाकी
(घ) शेख सलीम चिश्ती

124. सूफीमत के बारे में कौन तथ्य असत्य है ?
(क) सूफीमत तथा अद्वैतमत में कई समानताये हैं
(ख) इसका मुख्य आधार निष्काम भक्ति व प्रेम था
(ग) यह मत हिन्दुओं के प्रति उदार न था
(घ) सूफी संतों ने जनभाषा में उपदेश दिये

125. निम्न कौन मुगल काल में नहीं था ?
(अ) अब्दुल रहीम खानखाना
(ब) अमीर खुसरो
(स) अबुल फजल
(द) तानसेन

126. तारीखे शेरशाही अब्बास सरवानी ने लिखी थी। हुमायूंनामा किसने लिखा था ?
(क) शेख अबुल फैज फैजी
(ख) खफी खाँ
(ग) गुलबदन बेगम
(घ) रोशन आरा

127. किस मुगल सम्राट ने विभिन्न भाषा के ग्रंथों का फारसी में सर्वाधिक अनुवाद कराया ?
(अ) बहादुरशाह जफर (ब) अकबर
(स) शाहजहाँ (द) जहाँगीर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

128. नादिरशाह ने किस मुगल सम्राट के शासन काल में भारत पर हमला किया ?
(क) फर्रुखसियर (ख) मुहम्मदशाह
(ग) जहाँदारशाह (घ) अहमदशाह

129. शिवाजी के बारे में निम्न कौन तथ्य असत्य है ?
(अ) उनकी लगान व्यवस्था रैय्यतवाड़ी थी
(ब) उन्होने नौ सेना का भी निर्माण किया था
(स) उनकी सेना संगठित तथा नियमित थी
(द) उनका व्यवहार इस्लाम के प्रति उदार न था

130. शिवाजी के पुत्र शम्भाजी को औरंगजेब, ने कैद करवा दिया था। शम्भाजी के बारे में क्या असत्य है ?
(क) उसमें राजनीतिज्ञता का अभाव था
(ख) वह विलासी तथा क्रूर था
(ग) वह योग्य सैनिक तथा साहसी न था

131. जहाँगीर ने सिखों के गुरु अर्जुन सिंह को प्राणदंड दिया। औरंगजेब ने सिखों के किस गुरु को कत्ल करवाया ?
(क) हरगोबिंद सिंह (ख) गोविन्द सिंह
(ग) तेग बहादुर सिंह (घ) गुरु रामदास

132. बाबर ने पानीपत की काबली बाग मस्जिद बनवाई। उसने कहाँ भवन निर्माण नहीं कराया ?
(अ) थौलपुर (ब) ग्वालियर
(स) बनारस (द) आगरा

133. पशु पक्षियों के चित्र मुगलकालीन चित्रकला की विशेषता थे। इस काल की चित्रकला के बारे में क्या असत्य है ?
(क) चमकीले रंगों का प्रयोग
(ख) दरबारियों के चित्रों की बहुलता
(ग) मानवीय चित्रों का अभाव
(घ) इसका ऐतिहासिक महत्व न था

134. निम्न कौन मंदिर निर्माण शैली दक्षिण की नहीं है ?
(अ) चोल शैली (ब) होयसल शैली
(स) नागर शैली (द) पल्लव शैली

135. कहाँ के मंदिर नागर शैली के नहीं हैं ?
(क) खजुराहो (ख) भुवनेश्वर
(ग) काँचीपुरम् (घ) कोणार्क

136. निम्न कौन कवि व संत सल्तनत कालीन नहीं था ?
(क) कबीर (ख) नानक
(ग) तुलसीदास (घ) तुकाराम
(च) ज्ञानेश्वर (छ) नामदेव

137. सल्तनत काल में राजस्थान व दक्षिण में हिन्दू स्थापत्य की इमारतें बनी। निम्न में क्या इसकी विशेषता न थी ?
(अ) पतले चौकोर स्तम्भ
(ब) सज्जा के लिए मूर्तियाँ
(स) ऊँची मीनारे
(द) नोकदार मेहराबें

138. दक्षिण में भक्ति आंदोलन का कौन संत न था ?
(क) रामानुजाचार्य (ख) रामानंद
(ग) नामदेव (घ) शंकराचार्य

139. सूफी संतों की निम्न क्या विशेषता न थी ?
(अ) सूफियों में गुरु का विशेष महत्व था
(ब) सूफी संत संगीत प्रेमी थे
(स) सूफी संत हिन्दुओं को आकर्षित न कर सके
(द) वे सादा जीवन बिताते थे

140. भक्ति आंदोलन के परिणामों के बारे में कौन कथन असत्य है ?
(क) इससे धार्मिक सहिष्णुता बढ़ी
(ख) प्रादेशिक साहित्य का संवर्धन हुआ
(ग) हिन्दुओं का धर्मान्तरण न रुका
(घ) नये तीर्थों की वृद्धि हुई

141. जहाँगीर ने अपनी आत्मकथा तुजुके जहाँगीरी लिखी थी। औरंगजेब के काल में 'मुन्तखब उललुबाब' ग्रंथ किसने लिखा ?
(अ) गयास बेग (ब) खफी खाँ
(स) अब्दुल हक देहलवी (द) नकीब खाँ

142. दाराशिकोह ने 'सकीनत अल औलिया' ग्रंथ लिखा था। शाहजहाँ के समय अब्दुल हमीद लाहौरी ने किस ग्रंथ की रचना की ?
(क) पादशाहनामा (ख) अमल सालह
(ग) आलमगीर नामा (घ) तारीखे जहाँगीरी

143. शाहजहाँ ने मुमताज महल के मकबरे के रूप में ताजमहल बनवाया। निम्न कौन किला अकबर ने नहीं बनवाया ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(क) आगारा का किला
(ख) इलाहाबाद का किला
(ग) लाहौर का किला
(घ) दिल्ली का लाल किला

144. राजपूत चित्र शैली से पहाड़ी शैली का विकास हुआ। राजपूत शैली की निम्न क्या विशेषता नहीं है ?
(अ) अत्मिक तत्व की प्रधानता
(ब) परम्परागत विषयों के चित्रों की कमी
(स) जन जीवन का सुन्दर चित्रण
(द) भावों की अभिव्यन्जना पर अधिक जोर

145. औरंगजेब की चित्रकला में कोई रुचि नहीं थी। दसवंत किस बादशाह का दरबारी चित्रकार था ?
(क) जहाँगीर (ख) अकबर (ग) शाहजहाँ

146. शाहजहाँ के काल की इमारतों की निम्न क्या विशेषता न थी ?
(क) हिन्दू शैली का नगण्य प्रभाव
(ख) अधिकाँश भवन संगमरमर के
(ग) इमारतों पर लेखों का सर्वथा अभाव
(घ) कई मोड़ों वाली मेहराबें

147. अकबर कालीन इमारतों की निम्न क्या विशेषता न थी ?
(अ) पच्चीकारी की बहुलता
(ब) लाल पत्थर का प्रयोग
(स) एक मोंड़ वाली मेहराबें
(द) हिन्दू स्थापत्य का स्पष्ट प्रभाव

148. निम्न कौन इमारत फतेहपुर सीकरी में नहीं है ?
(क) बुलंद दरवाजा (ख) अकबर का मकबरा
(ग) सलीम चिश्ती का मकबरा
(घ) जोधाबाई का महल

149. मुगल स्थापत्य की निम्न क्या विशेषता न थी ?
(क) विशाल खुले प्रवेश द्वार
(ख) ऊँचे चबूतरों पर इमारतों का निर्माण
(ग) सफेद पलस्तर (घ) गोल गुम्बद
(अ) नक्काशी का अभाव (ब) ऊंची मीनारें

150. अकबर को संगीत से विशेष प्रेम था। निम्न कौन इसके दरबार का गायक न था ?
(अ) तानसेन (ब) बैजू बावरा
(स) बाबा रामदास (द) छतर खाँ

151. भारत को अंग्रेजी शासन की निम्न क्या देन न थी ?
(क) भारत का एकीकरण
(ख) सुव्यवस्थित शासन
(ग) औधोगिक विकास तथा संपन्नता
(घ) ललित कलाओं में पुनर्जागरण

152. प्रारम्भिक ब्रिटिश काल में इसाई मिशनरियों का प्रमुख केंद्र कहाँ था ?
(अ) सेरामपुर (श्रीरामपुर) (ब) बम्बई
(स) मद्रास (द) चन्द्रनगर

153. इसाई मिशनरियों ने निम्न कौन काम नहीं किया ?
(क) भारतीय भाषाओं के व्याकरण तथा शब्द-कोष बनवाये
(ख) मुद्रण तथा पुस्तक प्रकाशन शुरु किया
(ग) शिक्षण संस्थाओं की स्थापना की
(घ) अन्य धर्मों से सहयोग किया

154. गोपाल कृष्ण गोखले ने सर्वेन्ट्स ऑव इण्डिया सोसायटी की स्थापना की थी। स्काउट आंदोलन का श्रीगणेश किसने किया ?
(अ) नारायण मल्हार जोशी
(ब) रामकृष्ण गोपाल भंडारकर
(स) श्रीराम वाजपेयी
(द) महादेव गोविंद रानाडे

155. रामकृष्ण मिशन के बारे में कौन कथन असत्य है ?
(क) इसका उद्देश्य लोकसेवा व आध्यात्मिक उत्थान है
(ख) यह धार्मिक कट्टरता से रहित है
(ग) इसने विदेशों में हिंदू धर्म का प्रचार किया
(घ) यह मूर्तिपूजा के विरुद्ध है

156. थियोसोफिकल समाज के बारे में निम्न क्या असत्य है ?
(क) इसने हिंदू धार्मिक विश्वासों का वैज्ञानिक आधार पर समर्थन किया
(ख) इसका उद्देश्य सभी धर्मों की मूलभूत एकता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(ग) इसने भारतीय पद्धति की शिक्षा का विकास किया
(घ) इसका प्रसार केवल दक्षिण में हुआ

157. ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने एक कानून बनाकर किस वर्ष शिशु हत्या को गैर कानूनी घोषित किया ?
(क) 1829 (ख) 1831
(ग) 1802 (घ) 1849

158. जौनपुर के शर्की शासकों ने किस भवन का निर्माण नहीं कराया ?
(अ) हिंडोला महल (ब) अटाला मस्जिद
(स) पाताल मस्जिद (द) लाल दरवाजा

159. सल्तनत कालीन स्थापत्य मुख्य रूप से किस प्रकार का था ?
(क) भारतीय-मुस्लिम स्थापत्य
(ख) भारतीय-मध्य एशियाई स्थापत्य
(ग) भारतीय-इस्लामी स्थापत्य
(घ) तुर्क-अफगान स्थापत्य

160. तुर्क भारत में निम्न कौन वाद्ययंत्र लाये ?
(अ) डमरु (ब) सारंगी
(स) तबला (द) सितार

161. मुगल काल में 'रैय्यत' किसे कहा जाता था ?
(क) जमींदार (ख) भूमिहीन कृषक
(ग) बराईदार (घ) बंधुआ कृषि मजदूर

162. अकबर के शासनकाल में निम्न कौन प्रांतीय अधिकारी न था ?
(अ) सदर (ब) काजी
(स) बख्शी (द) वाकया नवीस

163. किस मुगल सामंत ने भक्ति तथा मानवीय सम्बन्धों पर कविताएं लिखीं ?
(अ) अबुल फजल (ब) अब्दुर्रहमान खानखाना
(स) मलिक मुहम्मद जायसी
(द) मिर्जा अजीज कोसा

164. भक्ति आंदोलन का महाराष्ट्र में प्रमुख संत कौन था ?
(क) संत ज्ञानेश्वर (ख) संत तुकाराम
(ग) गुरु दत्तात्रेय (घ) समर्थ रामदास

165. ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने भारत में पहली फैक्ट्री कहाँ स्थापित की ?
(अ) मसुलीपट्टम् (ब) भड़ौच
(स) सूरत (द) अहमदाबाद

166. मुगलकाल में भारत से विदेशों में सर्वाधिक कौन सी वस्तु निर्यात की जाती थी ?
(क) सोना-चाँदी (ख) सूती कपड़े
(ग) मसाले (घ) रेशम

167. औरंगजेब के पश्चात गद्दी पर कौन बैठा ?
(अ) फर्रुखसियर (ब) मुहम्मद शाह
(स) बहादुरशाह प्रथम (द) जहाँदारशाह

168. निम्न किस अधिनियम से भारतीय व्यापार पर से ईस्ट इण्डिया कम्पनी का एकाधिकार समाप्त करके उसे सभी अंग्रेजों के लिए मुक्त कर दिया गया ?
(क) 1773 का रेग्युलेटिंग एक्ट
(ख) 1784 का पिट का इण्डिया एक्ट
(ग) चार्टर एक्ट ऑव 1813
(घ) चार्टर एक्ट ऑव 1833

उत्तरमाला

1 ख, 2 स, 3 घ, 4 स, 5 ख, 6 ख, 7 ब, 8 ब, 9 क, 10 स, 11 घ, 12 अ, 13 ग, 14 स, 15 घ, 16 द, 17 क, 18 घ, 19 क, 20 ग, 21 ग, 22 द, 23 ग, 24 द, 25 घ, 26 ग, 27 ग, 28 क, 29 ब, 30 घ, 31 घ, 32 ब, 33 क, 34 क, 35 घ, 36 घ, 37 घ, 38 द, 39 ग, 40 ब, 41 द, 42 द, 43 घ, 44 स, 45 ग, 46 ग, 47 ग, 48 ग, 49 घ, 50 ग, 51 ग, 52 ब, 53 ग, 54 ख, 55 ग, 56 ख, 57 ख, 58 घ, 59 घ, 60 घ, 61 घ, 62 ब, 63 द, 64 द, 65 ख, 66 ग, 67 क, 68 ग, 69 स, 70 ख, 71 द, 72 ख, 73 ग, 74 अ, 75 ग, 76 द, 77 घ, 78 ख, 79 ख, 80 ख, 81 ग, 82 ख, 83 ब, 84 ख, 85 क, 86 क, 87 ब, 88 ख, 89 ग, 90 स, 91 ग, 92 द, 93 घ, 94 अ, 95 घ, 96 अ, 97 क, 98 ब, 99 ग, 100 अ, 101 ग, 102 घ, 103 ख, 104 ब, 105 क, 106 द, 107 ख, 108 स, 109 स, 110 ग, 111 ब, 112 ख, 113 अ, 114 ग, 115 स, 116 ग, 117 ब, 118 क, 119 अ, 120 घ, 121 स, 122 ख, 123 घ, 124 ग, 125 ब, 126 ग, 127 ब, 128 ख, 129 द, 130 ग, 131 ग, 132 स, 133 घ, 134 ग, 135 ग, 136 ग, 137 स, 138 ख, 139 स, 140 ग, 141 ब, 142 क, 143 घ, 144 ब, 145 ख, 146 ख, 147 अ, 148 ख, 149 अ, 150 द, 151 ग, 152 ग, 153 घ, 154 स, 155 घ, 156 घ, 157 ग, 158 ग, 159 ग, 160 ब, 161 क, 162 क, 163 ब, 164 ख, 165 स, 166 ख, 167 स, 168 ग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन

1. 1857 के विद्रोह के समय इंग्लैंड के प्रधानमन्त्री डिजरायली थे। उस समय भारत का गवर्नर जनरल कौन था ?
(अ) डलहौजी (ब) जॉन लॉरेन्स
(स) लॉर्ड कैनिंग (द) लॉर्ड एल्गिन

2. 29 मार्च 1857 को देशभक्त सैनिक मंगल पांडेय को बैरकपुर (बंगाल) में फाँसी दी गयी थी। कौन क्रांतिकारी नेता अंत तक नहीं पकड़ा जा सका ?
(अ) अजीमुल्ला खाँ (ब) बहादुर शाह 'जफर'
(स) तात्या टोपे (द) नाना साहब

3. 1857 के विद्रोह को प्रथम भारतीय स्वातंत्र्य युद्ध की संज्ञा वीर सावरकर ने दी थी। निम्न में से डिजरायली का विचार कौन था ?
(अ) 'यह सिपाही विद्रोह था'
(ब) 'यह राष्ट्रीय विद्रोह था न कि सैनिक या सिपाही विद्रोह'
(स) यह गोरी व काली जाति के बीच युद्ध था
(द) यह मध्ययुगीन व्यवस्था को बनाये रखने का अंतिम प्रयास था

4. 1857 के विद्रोह के सम्बन्ध में निम्नलिखित कौन सा कथन असत्य है ?
(अ) विद्रोह के पीछे कोई स्थिर सुव्यवस्थित संगठन नहीं था
(ब) विभिन्न कारणों से विद्रोह देश के कुछ भागों में ही हुआ
(स) विद्रोह के नेताओं के पास कोई निश्चित योजना कार्य नहीं था
(द) विद्रोह का सम्बन्ध ब्रिटिश आर्थिक नीति व शोषण से नहीं था

5. 1857 के विद्रोह से निम्न में से किसका सम्बन्ध नहीं था ?
(अ) बख्त खान (ब) वाजिद अली शाह
(स) मौलवी अहमदुल्ला (द) बिरजिस कदर

6. 1857 के विद्रोह की असफलता का एक कारण उसके नेताओं में केन्द्रीय नेतृत्व का अभाव होना था। निम्न कथन में कौन असफलता का कारण नहीं था ?
(अ) अधिकांश बड़े देशी राजाओं ने विद्रोह में भाग नहीं लिया
(ब) रणनीति की दृष्टि से ब्रिटिश सेनाएँ भारतीयों से काफी श्रेष्ठ थीं
(स) विद्रोही नेताओं के पास जन-धन के प्रचुर साधन नहीं थे
(द) विद्रोह को व्यापक जनसमर्थन नहीं मिला
(क) हिन्दू व मुसलमानों में एकता का अभाव था

7. सैनिकों में असंतोष 1857 के विद्रोह का एक प्रमुख कारण था। निम्न में कौन सा विद्रोह का कारण नहीं था ?
(क) देशी रियासतों का कम्पनी में विलय
(ख) दोषपूर्ण भूमि व्यवस्था से किसानों व जमींदारों में क्षोभ
(ग) भारतीय सामाजिक व धार्मिक मामलों में हस्तक्षेप
(घ) भारत के आर्थिक स्रोतों का ब्रिटेन के लिए उपयोग
(च) इसाई मिशनरियों की गतिविधियाँ
(छ) शिक्षित भारतीयों का प्रबल विरोध

8. निम्न में से कौन सा नगर 1857 के विद्रोह का केन्द्र नहीं था ?
(अ) नागपुर (ब) कानपुर
(स) दिल्ली (द) रीवा
(क) लखनऊ (ख) झांसी

9. 1867 के विद्रोह का दमन करने में सर्वाधिक नर-संहार करने वाला ब्रिटिश सैनिक अधिकारी कौन था ?
(क) ह्यूरोज (ख) निकल्सन
(अ) हैवलॉक (ब) नील
(स) विलसन (द) कैम्पबेल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

10. 1857 के विद्रोह के पश्चात भारत के शासन को ब्रिटिश क्राऊन ने ईस्ट इन्डिया कम्पनी से अपने हाथों में ले लिया। निम्न में विद्रोह का परिणाम क्या नहीं था ?
(य) विद्रोह की असफलता ने हिन्दुओं व मुसलमानों में गलतफहमी पैदा कर दी
(र) भारतीय देशी राज्यों के प्रति ब्रिटिश नीति में बदलाव आया
(ल) अंग्रेजों ने भारतीय सामाजिक मामलों में निष्पक्षता की नीति बरती
(व) अंग्रेजों ने रुढ़िवादी शक्तियों को प्रश्रय दिया
(स) भारत का आर्थिक शोषण बहुत कम कर दिया

11. रानी विक्टोरिया का घोषणापत्र लॉर्ड कैनिंग ने 1 नवम्बर, 1858 को इलाहाबाद में पढ़कर सुनाया था। घोषणापत्र मे निम्न कौन सी बात नहीं थी ?
(अ) इसमें भारतीय नरेशों व जनता के प्रति नयी नीति का समावेश था
(ब) भारतीयों को योग्यतानुसार सरकारी नौकरी देने को कहा गया था
(स) जनता के धार्मिक विश्वास में हस्तक्षेप नहीं किया जायेगा
(द) भारत में इसाई मिशनरियों पर रोक लगी

12. ब्रह्म समाज की स्थापना 1828 में राजा राम मोहन राय ने की थी। बताइये वेद समाज की स्थापना किसने की थी ?
(क) अक्षय कुमार दत्त
(ख) के के. श्रीधरालु नायडु
(ग) बालशास्त्री आम्भेकर
(घ) ईश्वर चन्द्र विद्यासागर

13. आर्य समाज की स्थापना 1875 में स्वामी दयानन्द ने की थी। निम्न कौन सा सिद्धान्त आर्यसमाज का नहीं था ?
(अ) वेदों के युग में लौटो
(ब) जात पात व मानुषिक असमानता दूर करो
(स) प्राचीन शिक्षा पद्धति का विरोध
(द) मूर्ति पूजा का विरोध

14. स्वामी दयानन्द सरस्वती ने 'सत्यार्थ प्रकाश' की रचना की थी। ईश्वर चन्द्र विद्यासागर ने निम्न में किस पुस्तक की रचना की थी ?
(अ) बहुविवाह (ब) धर्म का विज्ञान
(स) गीता रहस्य (द) कृष्ण चरित्र

15. वर्नाक्युलर प्रेस एक्ट, 1878 में वाइसरॉय लॉर्ड लिटन ने लागू कराया था। बताइये किस वाइसरॉय के कार्यकाल में इसे रद्द किया गया ?
(अ) लॉर्ड लैन्सडाउन (ब) लॉर्ड एल्गिन
(स) लॉर्ड डफरिन (द) लॉर्ड रिपन

16 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रथम अधिवेशन के अध्यक्ष व्योमेश चन्द्र बनर्जी थे। बताइये इसके संस्थापक कौन थे ?
(अ) विलियम बेडरबर्न (ब) एलन ऑक्टेवियन ह्यूम
(स) जॉर्ज यूल (द) सर हेनरी कॉटन

17. राजा राम मोहन राय उन्नीसवीं शताब्दी के महान समाज सुधारक थे। उनके बारे में निम्न कौन सा कथन असत्य है ?
(अ) वे विश्व बंधुत्व के प्रबल समर्थक थे
(ब) भारतीय पत्रकारिता के क्षेत्र में उन्होंने कई महत्वपूर्ण कार्य किये
(स) उन्होंने इसाई मिशनरियों के हमले से हिंदू धर्म व दर्शन की रक्षा की
(द) वे जाति प्रथा के समर्थक थे
(क) सती प्रथा के खिलाफ उन्होंने वैचारिक आंदोलन शुरू किया था

18 'इलबर्ट बिल' सर कोर्टनी इलबर्ट ने 1883 में लॉर्ड रिपन के शासन काल में न्यायिक सेवाओं में रंगभेद नीति दूर करने के लिए प्रस्तुत किया था। इसे निम्न किस कारण से वापस लिया गया ?
(क) हिंसात्मक घटनाओं के कारण
(ख) भारतीयो की अयोग्यता के कारण
(ग) यूरोपीयों के उग्र आन्दोलन के कारण
(घ) संवैधानिक विवाद के कारण

19. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना का प्रमुख कारण निम्न में से कौन था ?
(अ) भारतीय राष्ट्रीय जागृति को वैधानिक मार्ग पर लाने के लिए
(ब) 1857 के विद्रोह जैसी घटना की पुनरावृत्ति न होने देने के लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(स) भारत को स्वतंत्रता दिलाने के लिए
(द) भारतीय नेताओं व जनता को गुमराह करने के लिए

20. श्रीमती एनी बेसेन्ट भारत में थियोसोफिकल समाज की प्रमुख नेता थीं। निम्न में भारत में इसका मुख्यालय कहाँ था ?
(अ) कलकत्ता (ब) मद्रास
(स) अडयार (द) पूना

21. प्रार्थना समाज की स्थापना केशव चन्द्र सेन ने महाराष्ट्र में की थी। स्वामी विवेकानन्द ने निम्न किस वर्ष में रामकृष्ण मिशन स्थापित किया था ?
(क) 1890 (ख) 1896
(ग) 1900 (घ) 1894

22. कलकत्ता में 1817 में डेविड हेयर ने हिन्दू कॉलेज की स्थापना की थी। बताइये 1820-30 में यंग बंगाल मूवमेंट का प्रणेता व नेता कौन था ?
(क) रिचर्डसन (ख) हेनरी लुइ विवियन डिरोजियो
(ग) हीरेम हेमैन विल्सन (घ) पार्कर

23. ब्रिटिश इंडिया सोसायटी 1839 में लंदन में स्थापित हुई थी। मुहम्मडन लिटरेसी सोसायटी की स्थापना कब और कहाँ हुई थी ?
(अ) 1880 में लखनऊ में
(ब) 1875 में अलीगढ़ में
(स) 1863 में कलकत्ता में
(द) 1876 में हैदराबाद में

24. दिसम्बर, 1829 में सती प्रथा गैर कानूनी घोषित की गयी। उस समय गवर्नर जनरल कौन था ?
(अ) लॉर्ड ऑकलैंड (ब) लॉर्ड मिन्टों
(स) लॉर्ड हेस्टिंग्ज (द) लॉर्ड विलियम बैन्टिक

25. मिर्जा गुलाम अहमद से 1889 में अहमदिया आंदोलन की शुरूवात की। इस आंदोलन के बारे में निम्न कौन बात असत्य है ?
(अ) इसके संस्थापक पाश्चात्य उदारवाद से प्रभावित थे
(ब) इसने गैर मुसलमानों के विरुद्ध जेहाद का विरोध किया
(स) इसने मुस्लिमों में पाश्चात्य शिक्षा का प्रचार किया
(द) वहाई आंदोलन की तरह यह भी रहस्यवाद से प्रभावित था
(च) सभी राष्ट्रों व सम्प्रदायों के आपसी भाईचारे के सिद्धान्त में इसकी आस्था न थी

26 अलीगढ़ आंदोलन के अगुआ सर सैय्यद अहमद थे। इस आंदोलन के बारे में निम्न कौन सा कथन असत्य है ?
(अ) इसने मुस्लिम सम्प्रदाय में समाज सुधार भी किया
(ब) इसने आधुनिक संस्कृति व इस्लाम में तालमेल बैठाने का प्रयास किया
(स) इसका उद्देश्य मुसलमानों में पाश्चात्य शिक्षा का प्रचार करना था
(द) इसने विधवा विवाह का विरोध किया

27. निम्न में से किसका अलीगढ़ आंदोलन से संबन्ध नहीं था ?
(अ) नजीर अहमद
(ब) ख्वाजा अल्ताफ हुसैन हाली
(स) बदरुद्दीन तैय्यबजी
(द) शिबली नोमानी

28. बंगाल में स्वदेशी आंदोलन राजनारायण बोस ने शुरू किया। यह आंदोलन महाराष्ट्र में किसने शुरू किया ?
(अ) शकर घोष (ब) गणेश वासुदेव जोशी
(स) नवगोपाल मित्र (द) राम सिंह कूका

29. सुरेन्द्र नाथ बनर्जी सिविल सर्विस आंदोलन के प्रमुख नेता थे। इस आंदोलन के बारे में निम्न कौन सा कथन असत्य है ?
(अ) इसका उद्देश्य भारतीय जनता में एकल व संहति भावना को जन्म देना था
(ब) इसका नेतृत्व पूर्णतः भारतीयों के हाथ में था
(स) इस संबंध में लालमोहन घोष 1879 में ब्रिटेन गये
(द) इससे भारतीय मध्यम वर्ग में आंदोलन का नेतृत्व करने की क्षमता नहीं बढ़ी

30. लॉर्ड कर्जन ने 1905 में बंगाल विभाजन की घोषणा की। बंग विभाजन के बारे में निम्न कौन सा कथन असत्य है ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(अ) देश मे इससे क्रांतिकारी आंदोलन का सूत्रपात हुआ
(ब) इसके देशव्यापी विरोध से राष्ट्रीय जाग्रति को नयी दिशा मिली
(स) यह विभाजन काफी दिनों तक बना रहा
(द) यह राष्ट्रवासियों के प्रसार को रोक नहीं सका

31. लॉर्ड कर्जन के बारे में निम्न कौन सा कथन असत्य है ?
(अ) उसकी नीति प्रतिक्रियावादी थी
(ब) कार्य क्षमता की ओट में उच्चशिक्षा पर आघात किया
(स) उसके शासन के अंतिम वर्ष बहुत सफल रहे
(द) उसने कृषि सुधार किये

32. विदेश में सर्वप्रथम किस क्रांतिकारी ने संगठन स्थापित किया ?
(अ) रासबिहारी बोस (ब) लाला हरदयाल
(स) मदाम कामा (द) श्यामजी कृष्ण वर्मा

33. चापेकर बन्धुओं को 1898 में फाँसी दी गयी। वे निम्न किस संगठन से संबंधित थे ?
(अ) अनुशीलन समिति (ब) व्यायाम मंडल
(स) मित्र मेला (द) अभिनव भारत

34 भारत में संगठित आतंकवाद 19 शताब्दी के अंत में शुरू हुआ। भारत में यह सर्वप्रथम निम्न किस प्रांत में प्रारंभ हुआ ?
(अ) बिहार (ब) मध्य भारत
(स) महाराष्ट्र (द) बंगाल

35. 1913 में अमरीका में गदर पार्टी की स्थापना लाला हरदयाल ने की। बताइये अरविंद घोष निम्न किस पत्र से संबद्ध थे ?
(अ) युगांतर (ब) वंदेमातरम्
(स) नवशक्ति (द) संध्या

36. 'ऑल इंडिया मुस्लिम लीग' की स्थापना 1906 में ढाका में हुई। निम्न में इसका कौन प्रारम्भिक उद्देश्य नहीं था ?
(अ) मुसलमानों के अधिकारों की सुरक्षा करना
(ब) मुस्लिमों व अन्य धर्मावलम्बियों मे मैत्री बढ़ाना
(स) मुस्लिमों में ब्रिटिश सरकार के प्रति वफादारी बढ़ाना
(द) मुसलमानों के लिए पृथक देश बनाना

37. बाल गंगाधर तिलक कांग्रेस के गरम दल के नेता थे। बताइये किस अधिवेशन में उदारवादियों व उग्रवादियों में अलगाव हुआ ?
(अ) 1916 में लखनऊ में
(ब) 1908 में मद्रास में
(स) 1906 में कलकत्ता में
(द) 1907 में सूरत में

38. मॉर्ले-मिंटो सुधारों का उद्देश्य शासन सुधारों से भारतीयों को संतुष्ट करना था। ये किस वर्ष लागू किये गए ?
(अ) 1913 (ब) 1911
(स) 1910 (द) 1909

39. श्रीमती ऐनी बीसेंट ने 1916 में होम रूल लीग की स्थापना की। इसके बारे में निम्न कौन कथन असत्य है ?
(अ) यह आंदोलन शांतिपूर्ण व वैध था
(ब) अरेन्डेल, वाडिया व तिलक इसके प्रमुख नेता थे
(स) इसमें जिन्ना व अन्य मुस्लिम नेताओं ने भी भाग लिया
(द) जनता व सरकार इससे अप्रभावित रही

40. 1916 में हुए कांग्रेस के लखनऊ अधिवेशन के बारे में कौन निम्न तथ्य असत्य है ?
(अ) इसमें कांग्रेस व मुस्लिम लीग दोनों ने भाग लिया
(ब) ऐनी बीसेंट के प्रयास से कांग्रेस में पुनः एकता हुई
(स) कांग्रेस के अनेक नियमों में संशोधन किये गये
(द) इसमें लीग के प्रति तुष्टीकरण की नीति नहीं अपनायी गयी

41. गदर पार्टी की ओर से कामागाटामारु जहाज 1914 में भारत रवाना हुआ था। निम्न में से इसके प्रमुख नेता कौन थे ?
(अ) गुरु दत्त सिंह (ब) भाग सिंह
(स) सरदार सिंह राना (द) बलवन्त सिंह

42. रेशमी पत्र 'षड्यंत्र कांड' का नेता मौलाना ओबेदुल्ला था। इस कांड के बारे में निम्न कौन तथ्य असत्य है ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(अ) इसका उद्देश्य इस्लामी राष्ट्रों से मदद लेना था
(ब) रेशमी पत्र 9 जुलाई 1916 को लिखे गए
(स) यह कांड अंग्रेजों के खिलाफ जेहाद छेड़ने के लिए किया गया
(द) यह कांड अपने उद्देश्य में सफल रहा

43. भारत में मुहम्मद अली खिलाफत आंदोलन के प्रमुख नेता थे। उसके बारे में निम्न कौन सा तथ्य असत्य है ?
(क) यह आंदोलन टर्की के सुल्तान के समर्थन में था
(ख) कांग्रेस ने इस आंदोलन मे पूरी मदद की
(ग) 'इससे भारतीय मुस्लिम अंग्रेजों के खिलाफ हो गए
(घ) इससे हिन्दू मुस्लिम एकता स्थाई हुई

44. जलियाँवाला बाग कांड 13 अप्रैल 1919 को हुआ। इसके बारे में कौन निम्न तथ्य असत्य है ?
(क) इस कांड के लिए जनरल डायर जिम्मेदार था
(ख) इसकी जाँच के लिए हंटर आयोग बैठा
(ग) हंटर आयोग के सदस्यों के विचारों में मतभेद था
(घ) ब्रिटिश सरकार ने डायर को दंडित किया

45. रॉलेट बिल का उद्देश्य क्रांतिकारी आंदोलन का दमन करना था। इस बारे में निम्न कौन तथ्य असत्य है ?
(क) इसे कांग्रेस ने काला कानून कहा
(ख) इसके विरोध में देशव्यापी आंदोलन हुआ
(ग) रॉलेट बिल न्यायाधीश रॉलेट की संस्तुतियाँ थीं
(घ) इसके दूरगामी परिणाम अच्छे हुए

46. अंग्रेजी दैनिक 'लीडर' मदन मोहन मालवीय ने शुरू किया था। 'इंडिपेन्डेन्ट' पत्र के संस्थापक कौन थे ?
(क) सी. वाई. चिंतामणि (ख) मोतीलाल नेहरू
(ग) गोपाल कृष्ण गोखले (घ) जवाहरलाल नेहरू

47. मोपला विद्रोह 1921 में हुआ। निम्न में इसके प्रमुख नेता कौन थे ?
(क) कुन अहमद हाजी (ख) अली मुसालियर
(ग) सीथी कोया संगल

48. प्रथम राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक पत्र 'हिन्दुस्तान' था। इसके प्रथम संपादक कौन थे ?
(क) राजा राम पाल सिंह
(ख) मदन मोहन मालवीय
(ग) बाल मुकुन्द गुप्त
(घ) बालकृष्ण भट्ट

49. अवध में 1920-22 में किसान आंदोलन के प्रमुख नेता बाबा रामचन्द्र थे। बताइये राजपूताना में भील आंदोलन के प्रमुख नेता कौन थे ?
(क) मणिलाल कोठारी (ख) मोतीलाल तेजावत
(ग) राम राजा (घ) गौतम डोरा

50. मॉटेग्यू-चेम्सफर्ड सुधार 1919 में लागू हुए। इसके बारे में निम्न कौन कथन असत्य है ?
(क) इससे द्वैध शासन प्रथा लागू हुई
(ख) इससे नरम दल को छोड़ कोई संतुष्ट नहीं हुआ
(ग) अंग्रेजों ने विश्व युद्ध के दौरान किये वायदे पूरे किये
(घ) इसने अनेक सामाजिक सुधारों का प्रवर्तन किया

51 असहयोग आंदोलन 9 अगस्त, 1920 को प्रारंभ हुआ। इसके बारे में निम्न कौन तथ्य असत्य है ?
(क) इसका उद्देश्य विदेशी सरकार से असहयोग था
(ख) समाज के सभी वर्गों ने इसमें भाग लिया
(ग) इससे सरकार के प्रति असंतोष बढ़ा
(घ) इसमें मुसलमानों ने भाग नहीं लिया

52. 4 फरवरी, 1922 को चौरीचौरा कांड के कारण सहयोग आंदोलन स्थगित हो गया। इस बारे में निम्न कौन तथ्य असत्य है ?
(अ) आंदोलन न रोकने से हिंसा भड़कने का खतरा था
(ब) अधिकांश कांग्रेसी नेता आंदोलन जारी रखना चाहते थे
(स) गाँधी जी केवल अहिंसात्मक आंदोलन चाहते थे
(द) गाँधी जी आंदोलन रोकने के अवसर की ताक में थे

53. असहयोग आंदोलन की उपलब्धि के बारे में निम्न कौन कथन असत्य है ?
(अ) जनता में राजनीतिक जागरूकता बढ़ी
(ब) कांग्रेस के प्रति जनता की आस्था बढ़ी
(स) सरकारी दमन नीति से जनता भयरहित हो गयी
(द) यह अपने उद्देश्य में पूरी तरह सफल रहा

54. 1920 के लगभग राष्ट्रीय शिक्षा के उद्देश्य से निम्न कौन संस्था नहीं खोली गयी ?
(क) काशी विद्यापीठ
(ख) जामिया मिलिया इस्लामिया
(ग) काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
(घ) गुजरात विद्यापीठ

55. 1922 में कुछ कांग्रेसी नेताओं ने स्वराज्य दल स्थापित किया। निम्न कौन नेता इससे संबद्ध नहीं था ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(क) चितरंजन दास (ख) बिठ्ठलभाई पटेल
(ग) मोतीलाल नेहरू (घ) डा. राजेन्द्र प्रसाद

56. स्वराज्य दल के बारे में निम्न कौन तथ्य असत्य है ?
(क) यह कौंसिल में रहकर सरकार का विरोध चाहता था
(ख) इसे चुनाव में प्रारंभ में बहुत सफलता मिली
(ग) इस दल को बाद में कांग्रेस का अंग माना गया
(घ) यह सरकार का विरोध करने में असफल रहा

57. सायमन कमीशन फरवरी, 1928 में भारत आया। इसके बारे में निम्न कौन कथन असत्य है ?
(क) कमीशन में कोई भारतीय सदस्य नहीं था
(ख) यह भारतीय दलों के आशानुरूप नहीं था
(ग) इससे किसी तरह के न्याय की आशा न थी
(घ) भारतीय पूंजीपति कमीशन के विरुद्ध थे

58 नेहरू रिपोर्ट मोतीलाल नेहरू ने बनाई थी। नेहरू रिपोर्ट क्या थी ?
(क) भारतीय संविधान के सिद्धान्तों का मसविदा
(ख) साम्प्रदायिक दंगों की जांच का विवरण
(ग) कांग्रेस के आंतरिक मामलों की रिपोर्ट
(घ) राजनीतिक दलों में एकता के उपाय

59. 1929 का कांग्रेस का लाहौर अधिवेशन क्यों प्रसिद्ध है ?
(क) जवाहरलाल नेहरू इसके अध्यक्ष थे
(ख) इसमें कांग्रेस का उद्देश्य पूर्ण स्वराज्य घोषित हुआ
(ग) इसमें नेहरू रिपोर्ट में निहित योजना रद्द की गयी
(घ) 26 जनवरी को स्वतंत्रता दिवस मनाना निश्चित हुआ

60. गाँधी जी ने डाँडी यात्रा 12 मार्च, 1930 को शुरू की। यह किसलिए की गयी थी ?
(अ) समुद्र तट पर नमक कानून तोड़ने के लिए
(ब) लोक जागरण के लिए
(स) सरकारी दमन नीति के विरोध के लिए
(द) किसानों को संगठित करने के लिए

61. गाँधी-इर्विन समझौता 1931 में हुआ। इसमें निम्न किस नेता ने मध्यस्थता का प्रयास किया ?
(क) तेज बहादुर सप्रू (ख) मुहम्मद अली जिन्ना
(ग) डॉ. राजेन्द्र प्रसाद (घ) सुभाष चन्द्र बोस

62. गाँधी-इर्विन समझौते में निम्न कौन बात नहीं थी ?
(क) कांग्रेस ने सविनय अवज्ञा आंदोलन रोक दिया
(ख) सरकार ने बंदी कांग्रेस नेताओं को मुक्त किया
(ग) कांग्रेस पर से सभी प्रतिबन्ध हटाये गये
(घ) नमक पर से कर हटा लिया गया

63. द्वितीय गोलमेज सम्मेलन के समय भारत का गवर्नर जनरल कौन था ?
(अ) लॉर्ड इरविन (ब) रैम्जे मैकडॉनेल्ड
(स) लॉर्ड विलिंग्टन (द) लॉर्ड लिनलिथगो

64. लाहौर षडयंत्र कांड में 23 मार्च, 1931 को भगत सिंह को फांसी हुई। उनके साथ किस क्रांतिकारी को फांसी नहीं हुई ?
(क) शिवराम राजगुरु (ख) सुखदेव
(ग) बटुकेश्वर दत्त

65. द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में गाँधी जी ने भाग लिया। यह सम्मेलन क्यों असफल हुआ ?
(क) साम्प्रदायिक समस्या की पेचीदगी
(ख) कांग्रेसी नेताओं की अदूरदर्शिता
(ग) अस्पृश्य जातियों की मांगे
(घ) ब्रिटिश सरकार का रुख

66. पूना समझौता कराने में किस नेता ने सर्वाधिक योग दिया ?
(क) जवाहर लाल नेहरू
(ख) मौलाना शौकत अली
(ग) मदन मोहन मालवीय
(घ) डॉ. अम्बेदकर

67. अब्दुल गफ्फार खाँ ने 1930 में खुदाई खिदमतगार संगठन की स्थापना की। बताइये खाकसार पार्टी के संस्थापक कौन थे ?
(क) मुहम्मद शफी (ख) अफजल हसन कादरी
(ग) अल्लामा मशरीकी (घ) फजलुल हक

68. हिन्दू महासभा की स्थापना 1925 में हुई थी। निम्न में से कौन इसका नेता नहीं था ?
(अ) गणेश शंकर विद्यार्थी (ब) वी. डी. सावरकर
(स) मदनमोहन मालवीय (द) लाला लाजपत राय

69. पूना समझौता गाँधी जी के साथ निम्न किस नेता से सहमति होने पर हुआ ?
(क) श्रीनिवास शास्त्री (ख) सी. वाई. चिन्तामणि
(ग) डॉ. अम्बेदकर (घ) मोहम्मद अली जिन्ना

70. निम्न में से कौन राष्ट्रीय विचारों का नेता नहीं था ?
(अ) एम. ए. अंसारी (ब) अब्दुर्रहीम
(स) मंजर अली सोख्ता
(द) मौलाना अबुल कलाम आजाद
(च) हाफिज मुहम्मद इब्राहिम
(छ) हकीम अजमल खाँ

71. राम प्रसाद बिस्मिल ने अपनी आत्मकथा फांसी की कोठरी में लिखी। 'बंदी जीवन' पुस्तक का लेखक कौन क्रांतिकारी था ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(क) एम. एन. राय (ख) शचीन्द्र नाथ सान्याल
(ग) रासबिहारी बोस (घ) वारीन्द्र घोष

72. 'कांग्रेस का इतिहास' पुस्तक पट्टाभि सीतारमय्या ने लिखी थी। 'भारत में अंग्रेजी राज' किसने लिखी थी ?
(अ) महादेव देसाई (ब) सुन्दर लाल
(स) बल्लभ भाई पटेल (द) सी. वाई. चिंतामणि

73. रामानंद चटर्जी अंग्रेजी मासिक मॉडर्न रिव्यू के संपादक थे। गाँधी जी ने निम्न किस पत्र का संपादन किया था ?
(क) न्यू इंडिया (ख) यंग इंडिया
(ग) सर्वेन्ट ऑव इंडिया (घ) नेशन
(अ) कॉमनवील (ब) बंगाली

74. 1872 में वहाबियों ने अंडमान में किस वायसरॉय की हत्या की ?
(क) लॉर्ड जॉन लॉरेंस (ख) लॉर्ड नॉर्थब्रुक
(ग) लॉर्ड मेयो (घ) लॉर्ड एल्गिन

75. 1937 में गठित कांग्रेसी मंत्रिमंडलों ने 1939 में त्यागपत्र क्यों दिये ?
(क) भारत को बिना पूछे प्रथम विश्वयुद्ध में शामिल करने के विरोध में
(ख) कांग्रेसी नेताओं में मतभेद के कारण
(ग) प्रान्तीय गवर्नरों के असहयोग के कारण
(घ) प्रशासनिक अयोग्यता के कारण

76. व्यक्तिगत सत्याग्रह आन्दोलन अक्टूबर, 1940 में शुरू हुआ। गांधी जी ने पहला सत्याग्रही किसे चुना ?
(क) आचार्य कृपालानी (ख) विनोबा भावे
(ग) महादेव देसाई (घ) जवाहर लाल नेहरू

77. 'हम ब्रिटेन का नाश करके भारत की आजादी नहीं चाहते' 1940 में यह किस कांग्रेसी नेता ने कहा था ?
(अ) जवाहर लाल नेहरू (ब) राजेन्द्र प्रसाद
(स) महात्मा गाँधी (द) राजगोपालाचारी

78. क्रिप्स मिशन 1942 में भारत आया। इसके बारे में निम्न कौन तथ्य असत्य है ?
(क) यह जापान के संभावित हमले के खिलाफ जनसहयोग पाने के लिए आया था
(ख) ब्रिटेन ने इसे अमरीकी राष्ट्रपति के दबाव में भेजा था
(ग) इसकी योजना सभी प्रमुख दलों को नामंजूर थी
(घ) इसकी विफलता का भारतीय राजनीति पर प्रभाव नहीं पड़ा

79. 'क्रिप्स मिशन जापान के विरुद्ध चाल थी, भारत की माँगों की स्वीकृति नहीं'। यह कथन किसका था ?
(क) जिन्ना (ख) लास्की
(ग) सुभाष चन्द्र बोस (घ) रूजवेल्ट

80 1939 में फॉरवर्ड ब्लॉक की स्थापना किसने की ?
(अ) एम. एन. राय (ब) सुभाष चन्द्र बोस
(स) रास बिहारी बोस (द) अनिल चटर्जी

81. 1940 में मुस्लिम लीग ने स्पष्ट रूप से पाकिस्तान की माँग की। 'अलग हो जाओ और झगड़ा खतम करो' किस कांग्रेसी नेता ने कहा था ?
(क) सरदार बल्लभ भाई पटेल
(ख) जवाहरलाल नेहरू
(ग) डॉ. राजेन्द्र प्रसाद (घ) राजगोपालाचारी

82. भारत छोड़ो आन्दोलन अगस्त 1942 में शुरू हुआ। इसके बारे में निम्न कौन तथ्य असत्य है ?
(क) आन्दोलन के दौरान सभी प्रमुख नेता जेल में बन्द थे
(ख) आन्दोलन में व्यापक तोड़फोड़ हुई
(ग) देश में सरकारी दमन नीति से हजारों लोग मारे गए
(घ) आन्दोलन के दमन में सेना का प्रयोग नहीं किया गया

83 आजाद हिन्द फौज की स्थापना सुभाष चन्द्र बोस ने 1941 में की। निम्न कौन इससे सम्बद्ध नहीं था ?
(अ) शाहनवाज खाँ (ब) मुहम्मद जमान कियानी
(स) लियाकत अली खाँ (द) सरदार मोहन सिंह

84. 1945 में शिमला सम्मेलन लॉर्ड वैवेल ने बुलाया था। इसकी विफलता का निम्न कौन कारण था ?
(अ) कांग्रेसी नेताओं की अदूरदर्शिता
(ब) जिन्ना की हठधर्मिता
(स) लॉर्ड वैवेल की अक्षमता
(द) मुख्य राजनीतिक नेताओं द्वारा न भाग लेना

85. 1945 में लाल किले में आजाद हिन्द फौज के निम्न किस अधिकारी पर मुकदमा नहीं चलाया गया ?
(क) कैप्टेन सहगल (ख) गुरबख्श सिंह ढिल्लों
(ग) शाहनवाज (घ) सरदार मोहन सिंह

86. 1946 में भारतीय नौ सेना के विद्रोह के सम्बन्ध में निम्न कौन तथ्य असत्य है ?
(क) कांग्रेस व लीग ने विद्रोह को अनुचित माना
(ख) विद्रोह मुख्य रूप से बम्बई, करांची व कलकत्ता में हुआ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(ग) विद्रोही सैनिकों के साथ जनता की सहानुभूति नहीं थीं

(घ) विद्रोह आजाद हिन्द सेना के अधिकारियों को दंडित करने के विरोध में हुआ

87. 1946 में भारत आये कैबिनेट मिशन का कौन सदस्य नहीं था ?

(क) स्टैफर्ड क्रिप्स (ख) ए. वी. अलेक्जेण्डर

(ग) लॉर्ड पैट्रिक लॉरेंस (घ) मि. एटली

88. 1946 में अंतरिम सरकार में मुस्लिम लीग का निम्न कौन प्रतिनिधि नहीं था ?

(क) चुन्द्रीगर (ख) अब्दुल रब नश्तर

(ग) आसफ अली (घ) लियाकत अली खाँ

(अ) गजनफर अली खाँ (ब) जोगेन्द्र नाथ मंडल

89. अंतरिम सरकार में कांग्रेस का निम्न कौन प्रतिनिधि नहीं था ?

(क) सरदार बलदेव सिंह (ख) डॉ. जॉन मथाई

(ग) मौलाना अबुल कलाम आजाद

(घ) जगजीवन राम

90. अगस्त, 1946 में मुस्लिम लीग ने 'प्रत्यक्ष कार्रवाई' प्रारम्भ की। इसका प्रमुख उद्देश्य निम्न में से कौन था ?

(अ) कांग्रेस का विरोध करना

(ब) पाकिस्तान की स्थापना

(स) हिन्दू मुस्लिम दंगे कराना

(द) सरकार के समक्ष शक्ति प्रदर्शन

91. मार्च, 1947 में लॉर्ड माउन्टबेटन भारत के वाइसरॉय बने। भारतीय नेताओं से बातचीत के बाद वे निम्न किस निष्कर्ष पर पहुंचे ?

(क) लीग व कांग्रेस में एकता संभव है

(ख) भारत विभाजन ही एकमात्र हल है

(ग) पाकिस्तान की माँग वापस कराना सम्भव है

92. 14 जून, 1947 को दिल्ली अधिवेशन में कांग्रेस ने भारत विभाजन स्वीकार किया। उस समय कांग्रेस का अध्यक्ष कौन था ?

(क) राजगोपालचारी (ख) जवाहर लाल नेहरू

(ग) आचार्य जे. बी. कृपालानी (घ) पी. डी. टंडन

93. कांग्रेस ने भारत विभाजन क्यों स्वीकार किया ?

(क) राजनीतिक गतिरोध दूर करने के लिए

(ख) देश को गृह युद्ध से बचाने के लिए

(ग) मुस्लिम लीग को संतुष्ट करने के लिए

(घ) माउन्टबेटन के दबाव के कारण

94. भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम ब्रिटिश संसद में 18 जुलाई, 1947 को पारित हुआ। इस समय ब्रिटिश प्रधानमंत्री कौन था ?

(क) मि. एमरी (ख) मि. एटली

(ग) रैम्जे मैकडॉनल्ड (घ) चर्चिल

95. भारतीय उग्र राष्ट्रीय विचारधारा से निम्न कौन नेता सम्बद्ध न थे ?

(क) लाला लाजपत राय (ख) बालगंगाधर तिलक

(ग) देशबंधु चितरंजन दास (घ) विपिन चन्द्र पाल

96. उग्र राष्ट्रीय विचारधारा के नेताओं के बारे में निम्न कौन बात असत्य है ?

(क) स्वराज्य को ये अपना लक्ष्य मानते थे

(ख) शांतिमय वैधानिक आन्दोलन में इनका विश्वास न था

(ग) वे स्वदेशी वस्तुओं के प्रचार के हिमायती थे

(घ) क्रांतिकारी दलों के प्रति इनकी सहानुभूति नहीं थी

97. महात्मा गांधी के बारे में निम्न कौन तथ्य असत्य है ?

(क) राजनीति में धर्म का समावेश किया

(ख) देश के विकास हेतु रचनात्मक कार्य शुरू किये

(ग) स्वतंत्रता आन्दोलन को व्यापक बनाया

(घ) अहिंसक राजनीति का सफल प्रयोग किया

(ङ) आर्थिक स्वतंत्रता के लिए विशेष प्रयास नहीं किया

98. 1934 में कांग्रेस के अन्तर्गत समाजवादी दल गठित हुआ। निम्न में कौन इसमें नहीं था ?

(क) आचार्य नरेन्द्र देव (ख) जयप्रकाश नारायण

(ग) आचार्य कृपलानी (घ) अशोक मेहता

99. 1924 में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी गठित हुई। इसके बारे में निम्न कौन असत्य है ?

(क) काफी समय तक यह पार्टी गैर कानूनी रही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(ख) इसके नेता सरकारी विरोधी विप्लवी कार्यों में लगे रहे

(ग) 1943 में ब्रिटिश सरकार ने इस पर से पाबंदी हटाई

(घ) स्वतंत्रता आन्दोलन में इसकी विशिष्ट भूमिका थी

100. 1946 में संविधान सभा का स्थायी अध्यक्ष निम्न में से कौन था ?

(क) शरद चन्द्र बोस (ख) शफात अहमद खान

(ग) डॉ. सच्चिदानन्द सिन्हा (घ) डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

101. सायमन कमीशन की रिपोर्ट निम्न में किसका आधार बनी ?

(क) प्रथम गोलमेज सम्मेलन

(ख) 1931 का गाँधी-इरविन समझौता

(ग) 1935 का अधिनियम

(घ) 1938 का साम्प्रदायिक समझौता

102. निम्न में कौन असहयोग आन्दोलन (1920) का कार्यक्रम नहीं था ?

(क) सरकारी उपाधियों का त्याग

(ख) विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार

(ग) कर न चुकाओ अभियान

(घ) सरकारी संस्थाओं का बहिष्कार

103. लीग की पाकिस्तान माँग का किसने विरोध नहीं किया ?

(अ) कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी (ब) हिन्दू महासभा

(स) भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी

104. अखिल भारतीय हरिजन संघ की स्थापना किसने की थी ?

(अ) जगजीवन राम (ब) डा. अम्बेदकर

(स) महात्मा गाँधी (द) डा. मुतुलक्ष्मी रेड्डी

105. 1918 के बाद किसानों में राजनीतिक चेतना की शुरूवात हुई। निम्न में बिहार का कौन प्रमुख किसान नेता था ?

(अ) स्वामी सहजानन्द सरस्वती (ब) फजलुल हक

(स) एन. जी. रंगा (द) इंदुलाल याज्ञिक

106. 'डिवाइन लाइफ' के लेखक अरविन्द घोष थे। बताइये 'डिवाइडेड इंडिया' किसने लिखी थी ?

(क) जवाहर लाल नेहरू (ख) सुचेता कृपालानी

(ग) राजेन्द्र प्रसाद (घ) सुभाष चन्द्र बोस

107. भारत में अंग्रेजी शिक्षा किसने प्रारम्भ की ?

(क) लॉर्ड मेयो (ख) लॉर्ड डलहौजी

(ग) लॉर्ड कर्जन (घ) लॉर्ड मैकॉले

108. कैबिनेट मिशन भारत किस लिये आया था ?

(क) साम्प्रदायिक दंगो को शांत करने के लिए

(ख) संवैधानिक समस्या के हल के लिए

(ग) भारत-पाक सीमा निर्धारण के लिए

(घ) भारत में इसाई धर्म के प्रचार के लिए

109. जलियांवाला बाग कांड कहाँ हुआ था ?

(क) जालंधर (ख) अमृतसर

(ग) अम्बाला (घ) पटियाला

110. सर्वप्रथम पाकिस्तान नाम किसने दिया था ?

(अ) फजलुल हक (ब) रहमत अली

(स) मुहम्मद अली जिन्ना (द) इकबाल

उत्तरमाला :

1 स, 2 द, 3 ब, 4 द, 5 ब, 6 क, 7 प, 8 द 9 ब, 10 स, 11 द, 12 ख, 13 स, 14 अ, 15 द, 16 ब, 17 द, 18 ग, 19 ब, 20 स 21 ख, 22 ख, 23 अ, 24 द, 25 घ, 26 च, 27 ग, 28 ब, 29 घ, 30 ग, 31 स, 32 द, 33 ख, 34 स, 35 ख, 36 घ, 37 घ, 38 द, 39 घ, 40 द, 41 क, 42 घ, 43 द, 44 घ, 45 घ, 46 ख, 47 क, 48 ख, 49 ख, 50 ग, 51 घ, 52 द, 53 द, 54 ग, 55 घ, 56 घ, 57 घ, 58 क, 59 ख, 60 अ, 61 क, 62 घ, 63 स, 64 ग, 65 क, 66 ग, 67 ग, 68 अ, 69 ग, 70 ब, 71 ख, 72 ब, 73 ख, 74 ग, 75 क, 76 ख, 77 स, 78 घ, 79 ख, 80 ब, 81 घ, 82 घ, 83 स, 84 ब, 85 घ, 86 ग, 87 घ, 88 ग, 89 ग, 90 घ, 91 ख, 92 ग, 93 ख, 94 ख, 95 ग, 96 घ, 97 च, 98 ग, 99 घ, 100 घ, 101 ग, 102 ग, 103 स, 104 स, 105 अ, 106 ग, 107 घ, 108 ख, 109 ख, 110 ब। ■ ■

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रीय समीक्षा

- केन्द्रीय बजट : मूल सिद्धान्त
- रेलवे बजट
- अकालियों की धार्मिक मांगे स्वीकृत
- डाक तार मूल्यों में वृद्धि
- असम विधान सभा चुनाव

केन्द्रीय बजट :

मूल सिद्धांत :

28 फरवरी को वित्त मन्त्री प्रणव मुकर्जी ने वर्ष 1983-84 का केन्द्रीय बजट संसद के समक्ष प्रस्तुत किया। बजट की अवधारणा यह है कि—(अ) अर्थव्यवस्था में उत्पादनकारी शक्तियों का विकास हो (ब) मुद्रास्फीति पर कड़ा नियंत्रण रखा जाय (स) व्यक्तिगत और सामूहिक स्तर पर बचत को बढ़ावा मिले, और (द) आवश्यक क्षेत्रों में अधिकाधिक पूंजी निवेश हो। इसके लिए (अ) उपभोग को सीमित करना आवश्यक समझा गया है, और (ब) विदेशी मुद्रा कोष को निवेश के अनुकूल बनाने का प्रयत्न किया गया है।

आय के स्रोत :

पूरे वर्ष में 32.586 करोड़ की आय और 34.836 करोड़ रु. के व्यय का अनुमान है। इस प्रकार कुल घाटा 1,555 करोड़ रु. के लगभग ठहरता है। वैसे, 2,250 करोड़ रु. का घाटा होने का अनुमान था किन्तु, विभिन्न छूटों और राहतों के द्वारा इसे कम करने की कोशिश की गई है। कुल आय में बजट से पूर्व, पेट्रोकेमिकल्स के मूल्यो में 800 करोड़ रु. की, रेलवे बजट से 490 करोड़ रु. की, डाकतार से 70 करोड़ रु. की, अतिरिक्त प्रभारी शुल्क से 250 करोड़ रु. की, और, सिगरेटों पर शुल्क छूट की समाप्ति से 450 करोड़ रु. [illegible] अतिरिक्त आय सम्मिलित है। इस [illegible] बाद भी घाटे को पूरा करने के लि[illegible] 1695 करोड़ रु. के अतिरिक्त [illegible] लगाए गए हैं।

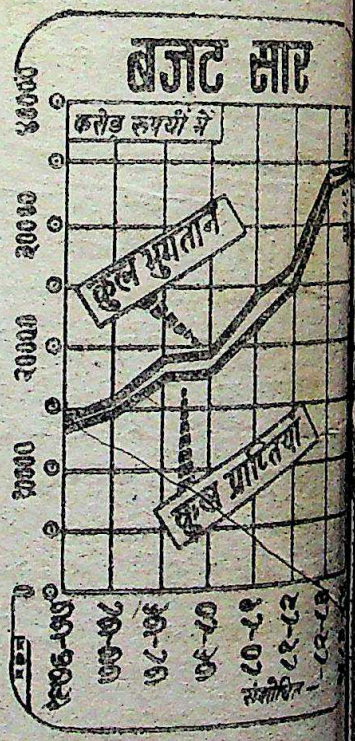

अ प्रत्यक्ष और प्रत्यक्ष कर :

अप्रत्यक्ष करों के क्षेत्र में [illegible] करोड़ रु. केन्द्रीय एक्साइज [illegible] 397.96 करोड़ रु. कस्टम शुल्कों [illegible] माध्यम से अर्जित किए जाएंगे। [illegible] क्षेत्रों में क्रमशः 83.58 करोड़ [illegible] 4.93 करोड़ रु. की छूटें भी दी [illegible] हैं। इस प्रकार शुद्ध आय 325.[illegible] करोड़ रु. और 393.03 करोड़ [illegible] क्रमशः, के लगभग होने का अनु[illegible] है। इनमें से 589.71 करोड़ [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...ीय और 128.74 करोड़ रु. ...ों के कोष में विभाजित किए ...ेंगे।

प्रत्यक्ष करों के क्षेत्र में यद्यपि ...भोगी वर्ग को नई छूटें दी गई है, ...कर से केन्द्र को 25.6 करोड़ रु. ...अतिरिक्त आय और राज्यों को ...करोड़ रु. की हानि होने का ...मान है।

...कर और वृद्धि :

...करों और शुल्कों में वृद्धि के ...प्रमुख क्षेत्र इस प्रकार हैं—

(1) सीमेन्ट पर प्रभारी शुल्क ...5 रु. प्रति टन से बढ़कर 205 रु. ...जायगा जिसमें 82 करोड़ रु. की ...तिरिक्त आय होने का अनुमान है।

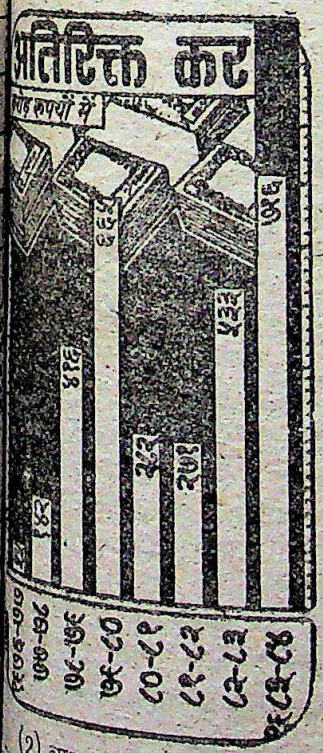

(2) व्यापार और वाणिज्य के ...में "उन्मुक्त खर्चों" के आधार ...कर योग्य आय में मिलने वाली ...% छूट को समाप्त कर दिया ...है।

(3) घुड़दौड़, लाटरी और प्रश्न पहेली, आदि, आकस्मिक धनालाभ पर अब अधिक कर देय होगा।

(4) आयकर सरचार्ज, गैर सहकारी करदाताओं के लिए 10% से बढ़ा कर 12 5% कर दिया गया है तथा 25,001 रु. और 30,000 रु. कर आय के लिए भी आयकर को 1% बढ़ा दिया गया है।

(5) अनिवार्य जमा योजना दो वर्षों के लिए बढ़ा दी गई है।

छूट, राहतें व प्रोत्साहनकारी कदम :

इसके अतिरिक्त जिन प्रमुख क्षेत्रों में छूट एवं राहतें दी गई हैं; वे इस प्रकार हैं—

(1) घरेलू कामकाज की वस्तुएं, जैसे प्रेशर कुकर, केरोसिन स्टोव, सूती कपड़े, बिजली के बल्ब, आदि पर एक्साइज शुल्क समाप्त कर दिया गया है।

(2) आयकर दाताओं की मानक कटोती अब 5000 रु. की बजाय 6000 रु. होगी और 15,001 रु. तथा 20,000 रु. के वर्ग पर आयकर 30% से घटा कर 25% हो जायगा

(3) बचत को प्रोत्साहन देने के लिए जमा योजनाओं पर ब्याज की दरों को बढ़ा दिया गया है। ये इस प्रकार है—

(अ) पोस्ट आफिस टाइम डिपाजिट पर अब 10.5% ब्याज देय होगा जबकि आवर्त्ती जमा योजना पर 12.5% ब्याज मिलेगा।

(ब) भविष्य निधि योजना के अन्तरगत जमा की गई राशि पर ब्याज की दर एक प्रतिशत बढ़ा दी गई है।

(स) सार्वजनिक भविष्य निधि जमा योजना का समयावधि 15 वर्ष कर दी गई है और वार्षिक देय राशि की अधिकतम सीमा को बढ़ा कर 40.000 रु. कर दिया गया है।

(4) निवेश को प्रोत्साहित करने के लिए निम्नलिखित कदम प्रस्तावित हैं—

(अ) वाणिज्य बैंकों द्वारा दिए जाने वाले ऋण पर ब्याज की दर को 19.5% से घटा कर 18% कर दिया जाय। ऋण संरचना को इस प्रकार व्यवस्थित किया जाय जिससे लघु उद्योगों और कृषि एवं निर्यात को बढ़ावा मिले।

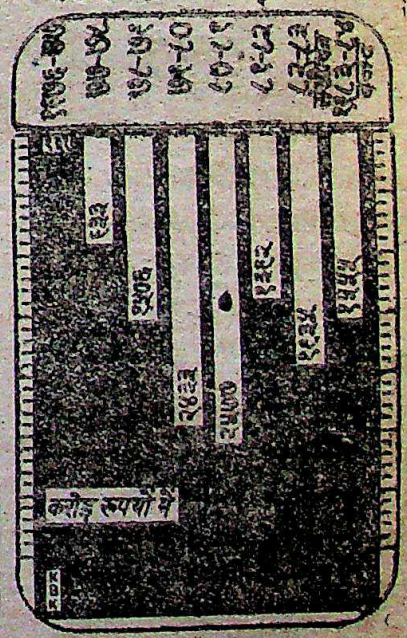

(ब) भारतीय मूल के गैर-प्रवासियों द्वारा निवेश को और आकर्षक बनाया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(ख) विदेशी मुद्रा में खरीदे जाने वाले 6 वर्षीय राष्ट्रीय बचत सर्टिफिकेटों पर ब्याज में एक प्रतिशत की वृद्धि।

अन्य उल्लेखनीय पक्ष :

नए बजट के कुछ अन्य उल्लेखनीय पक्ष इस प्रकार हैं—

(1) वर्ष 1983-84 के योजना आवंटन को चालू वित्त वर्ष के अंतिम विनियोग के आधार पर 2.1% बढ़ा दिया गया है। केन्द्र, राज्यों और केन्द्रशासित प्रदेशों के लिए यह कुल राशि 25,495 करोड़ रु. होगी (पिछले वर्ष यही आवंटन 20,989 करोड़ रु. था) जिसमें तीनों को क्रमशः 13,870 [केन्द्र] 17,11 144.62 [राज्य] व 480.52 करोड़ रु. [केन्द्र शासित प्र.] प्राप्त होंगे। बजट में एक नया कदम यह उठाया गया है कि विशिष्ट योजनाओं को सफलतापूर्वक पूरा करने वाले राज्यों को अतिरिक्त अनुदान देने के लिए 300 करोड़ रु. के कोष का प्रावधान किया गया है। योजना के लिए कुल आवंटित राशि विभिन्न क्षेत्रों में इस प्रकार विभाजित की गई है :—

ऊर्जा—8,446.25 करोड़ रु.

उद्योग व खनिज—3.502.91 करोड़ रु.

कृषि—1,408.06 करोड़ रु.

ग्रामीण विकास—1.256.48करोड़ रु.

सिंचाई और बाढ़ नियन्त्रण—2,520.45 करोड़ रु.

संचार, सूचना व प्रसारण—701.72 करोड़, तथा

विज्ञान और तकनीकी—243.23 करोड़ रु.

(2) रक्षा व्यय 5971 करोड़ रु. होगा जो कि पिछले वर्ष की तुलना में 621 करोड़ रु. अधिक है और पहले की ही भाँति कुल आवंटन का 17% है।

(3) अणु ऊर्जा पर 583 करोड़ रु. व्यय किए जाएगे। यह राशि पिछले वर्ष की तुलना में 200 करोड़ रु. अधिक है।

(4) राज्यों की योजना में पिछले वर्ष के 3894 करोड़ रु. के मुकाबले आगामी वर्ष में केन्द्राय सहायता बढ़ कर 4,462 करोड़ रु. हो जायगी।

(5) ग्रामीण विकास के लिए प्रधानमंत्री कोष की स्थापना।

(6) केन्द्रीय कर्मचारियों के लिए चौथे वेतन आयोग का गठन।

विश्लेषण :

हमेशा की ही तरह से बजट पर मिली-जुली प्रतिक्रिया हुई है। कुछेक ने इसे विकासोन्मुखी बताया है जबकि अधिकांश के मत में इस बजट से यथास्थिति में कोई महत्वपूर्ण परिवर्तन नहीं आने वाला। बजट के पक्ष में दिए गए मुख्य तर्क यह हैं—

(1) सामान्य नौकरीपेशा और वेतनभोगी वर्ग को नए करों से मुक्त रखा गया है।

(2) निवेश के लिए नए प्रोत्साहनों का प्रावधान है।

(3) आयकर में दी गई राहतों से कम कर देने वाले वर्ग को लाभ होगा।

(4) अन्तरराष्ट्रीय आर्थिक परिवेश को देखते हुए घाटे को न्यूनतम रखा गया है।

(5) चतुर्थ वेतन आयोग के गठन से केन्द्रीय सरकार के कर्मचारियों को राहत मिलेगी।

बजट के विरोध में यह कहा जा सकता है कि—

(1) यह कहना कि बजट में कम कर लगाए गए हैं असत्य है क्योंकि पैट्रोकेमिकल्स डाक, रेलवे, सिगरेटों, आदि, पर बजट के पूर्व ही दाम बढाए जा चुके थे और इनसे होने वाली अतिरिक्त आय बजट में दर्शाई गई कुल आय में सम्मिलित है। फलस्वरूप, इससे मुद्रास्फीति को बढ़ावा मिलेगा।

(2) चीनी, आदि, पर दी गई राहतें प्रभावकारी नहीं हो पाएगी क्योंकि रेलवे ने माल भाड़े में वृद्धि पहले ही कर दी है।

(3) सीमेन्ट पर बढ़े हुए शुल्क का प्रभाव न तो निर्माता और न ही अधिक पूंजी वालों पर पड़ेगा, बल्कि इससे वेतनभोगी वर्ग प्रभावित होगा, दाम बढ़ेगे और काला बाजारी को प्रोत्साहन मिलेगा।

(4) बचत के नए प्रोत्साहनों का कोई विशेष प्रभाव नहीं होगा क्योंकि सामान्य वेतन भोगी वर्ग भविष्य निधि और बीमा के अतिरिक्त बचत करने की स्थिति में नहीं होता। बचत में बढ़ोत्तरी तभी हो सकती है जब लोगों को अपनी आय सार्वजनिक रूप से घोषित करने के लिए तथा उसे अपने पास बनाए रखने के लिए प्रोत्साहित किया जाय। इस सम्बन्ध में बजट मौन है।

(5) बजट में मौलिकता का अभाव है और इसमें दोषपूर्ण अर्थ-व्यवस्था में साहसिक परिवर्तन करने का कोई प्रयत्न नहीं किया गया है।

रेलवे बजट :

24 फरवरी को संसद में केन्द्रीय रेल मंत्री खान अब्दुल गनी ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंत्री ने वर्ष 1983-84 का रेलवे बजट पेश किया। बजट के अनुसार आगामी वर्ष में रेलवे को 5,145,62 करोड़ रु. की कुल यातायात आय होने का अनुमान है जबकि कार्यकारी आय 4,520,77 करोड़ रु. होने की आशा है। शुद्ध राजस्व आय 671.20 करोड़ रु. होने की संभावना है जबकि शुद्ध कार्यकारी व्यय 465.47 करोड़ रु. के आस-पास ठहरता है। इस प्रकार रेलवे बजट में कुल 205.73 करोड़ रु. का लक्ष्य दर्शाया गया है। किन्तु

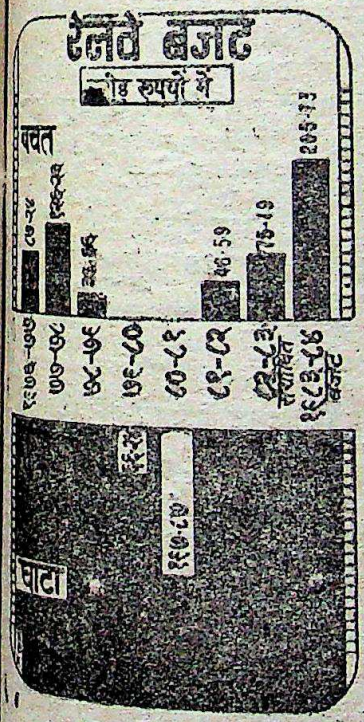

इसके लिए 488.90 करोड़ रु. के नए करावान की भी प्रस्तावना है जिसमें से 172.80 करोड़ रु. यात्री और 310 करोड़ रु. माल भाड़े पर लगाए जायेंगे।

यात्री भाड़ा :

यात्री भाड़े में अनेक क्षेत्रों में वृद्धि की गई है। इनमें से प्रमुख इस प्रकार है—

(1) द्वितीय श्रेणी के सामान्य टिकट का न्यूनतम मूल्य 70 पैसे बढ़ा कर 80 पै. कर दिया गया है जबकि मेल और एक्सप्रेस गाड़ियों के लिए यह राशि अब 2 रु. होगी।

(2) 1200 कि. मी. तक की यात्रा के लिए द्वितीय श्रेणी का टिकट अब 47 रु. की बजाय 52 रु. में मिलेगा। इस प्रकार प्रति कि. मी. सामान्य द्वितीय श्रेणी के भाड़े में 0.70 पै., एक्सप्रेस और मेल गाड़ियों के लिए 1.17 पै. और प्रथम श्रेणी के लिए 2.41 पै. की वृद्धि होगी।

(3) राजधानी एक्सप्रेस के किराए में भी वृद्धि होगी जो कि इस प्रकार रहेगी—

(अ) दिल्ली-हावड़ा यात्री किराया—

(i) वातानुकूलित श्रेणी का किराया 862 रु. से बढ़कर 863 रु. हो जायेगा।

(ii) कुर्सीयान पर अब 230 रु. के मुकाबले 253 रु. व्यय करने होंगे।

(iii) दो टियर वातानुकूलित शयनयान का किराया अब 468 रु. के बजाय 482 रु. होगा।

(ब) दिल्ली-बम्बई मार्ग पर—

(i) वातानुकूलित श्रेणी के लिए प्रति टिकट 771 रु. के स्थान पर 843 रु.

(ii) वातानुकूलित कुर्सीयान का किराया 224 रु. की बजाय 247 रु. और,

(iii) दो टियर वातानुकूलित शयनयान की टिकट दर 453 रु. से बढ़कर 471 रु.

(4) मासिक टिकटों की दरों में भी वृद्धि की गई है जो कि इस प्रकार है—

(दूरी)	(वर्तमान)	(प्रस्तावित)
2-5 कि. मी.	6.50 रु.	15 रु.
6-25 कि. मी.	18.00 रु.	25 रु.
26-50 कि.मी.	28.00 रु.	42 रु.
51-80 कि.मी.	36.50 रु.	59 रु.

इसके अतिरिक्त बजट में मासिक टिकटों की सुविधा के लिये महानगरीय क्षेत्रों और लखनऊ-कानपुर, दिल्ली-मेरठ, दिल्ली-लखनऊ, मद्रास-बंगलौर तथा बम्बई-पूना, जैसे उप-शहरी संस्थानों तक सीमित करने का प्रस्ताव है जहाँ अधिकतम दूरी 20 कि. मी. तक सीमित रहे।

(5) जहाँ एक ओर यात्री भाड़े में उपर्युक्त वृद्धि की गई है, वहीं वातानुकूलित श्रेणी, ा-टियर शयनयान, सुपर-फास्ट गाड़ियों और शायिका पर लगने वाले अतिरिक्त शुल्क में वृद्धि नहीं की गई है। आरक्षण और प्लेटफार्म टिकटों की दर को भी नहीं बढ़ाया गया है।

माल-भाड़े में वृद्धि :

माल-भाड़े में की गई वृद्धि से 310 करोड रु. की अतिरिक्त आय होने का अनुमान हैं। पिछले वर्षों में प्रतिशत के आधार पर जो पूरक शुल्क लगाए गए थे उन्हें नई कर-व्यवस्था में सम्मिलित कर लिया गया है। माल भाड़े में प्रस्तावित वृद्धि के महत्वपूर्ण पक्ष इस प्रकार हैं—

1. आधार मानक के अन्तर्गत आने वाली वस्तुओं के वाहन में प्रति क्विंटल 100 कि. मी. तक के लिए 46 पैसे ले कर 2500 कि. मी. तक 3.10 पै. की वृद्धि की गई है।

2. नमक, खाद्यान्न, चीनी और खाने के तेल सरीखी वस्तुओं के वहन में प्रति टन कि. मी 1.3 पै. से लेकर 2.3 पै. की वृद्धि का प्रस्ताव है।

3. कोयला, गन्ना, चूना डोलोमाइट, मैगनीज ओर, और, पैट्रोकेमिकल, आदि वस्तुएं जिनका कि औसत वहन 750 कि. मी. से कम है, प्रति टन कि. मी. 4.5 पै. से लेकर 2 पै. तक की अतिरिक्त राशि का भार वहन करेगी।

4. असम तथा अन्य उत्तर-पूर्वी राज्यों से आने वाले या उनको ले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाने वाले माल पर भाड़े में 5% की छूट दी जायेगी।

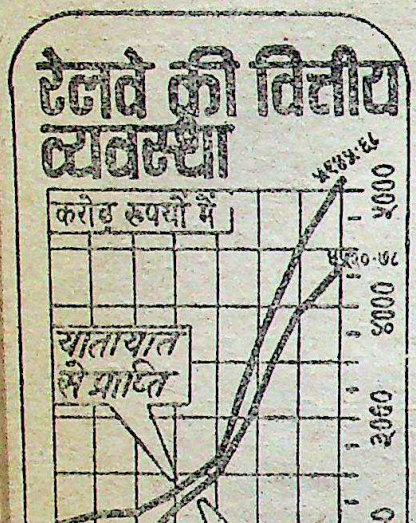

रेलवे की उपलब्धियाँ :

बजट में गत वर्ष रेलवे द्वारा अर्जित उपलब्धियों का भी लेखा-जोखा प्रस्तुत किया गया। रेल मंत्री ने बताया कि—

(1) इस वर्ष के अन्त तक रेलवे द्वारा 22.7 करोड़ टन माल का रिकार्ड वहन किया जायगा जिससे राजस्व में अप्रत्याशित वृद्धि होगी। वर्ष 1980-81 में रेलवे ने केवल 19.59 करोड़टन माल का वहन किया था। रेलमन्त्री ने यह भी स्पष्ट किया कि इस्पात, खाद्यान्न, उर्वरक, सीमेन्ट और पेट्रोकेमिकल्स जैसी 'आधार क्षेत्र' वस्तुओं के वहन के लिए रेलवे के पास पर्याप्त अतिरिक्त क्षमता है जिससे अर्थव्यवस्था को सम्बल मिल सकेगा।

(2) रेलवे में एयर-ब्रेक, अधिक और स्वच्छ क्षमता के युग का आरम्भ हो चुका है जिनमें दिल्ली-हावड़ा/बम्बई मार्ग पर चलने वाली राजधानी एक्सप्रेस विशेष रूप से उल्लेखनीय है। ग्रान्ड ट्रंक, तमिलनाडु, कर्नाटक, आंध्र और केरल एक्सप्रेस जैसी सुपर फास्ट गाड़ियाँ जो महानगरों को जोड़ती है और 1000 लोगों को आरक्षित स्थान देती है; जनता में लोकप्रिय हुई है।

(3) रेलवे स्टेशनों पर सफाई व्यवस्था को बेहतर बनाने के लिए संभागीय और मण्डलीय स्तर पर वरिष्ठ अधिकारियों के कार्यकारी दल बनाए गए हैं। खान-पान व्यवस्था में सुधार के लिए एक विशेष दल का गठन किया गया है। इसी प्रकार सुरक्षा को भी मजबूत बनाने के लिए कदम उठाए जा रहे हैं।

(4) आरक्षण में भ्रष्टाचार को रोकने के लिए इस व्यवस्था को कम्प्यूटर से चलाए जाने का प्रस्ताव है। पहले इसे दिल्ली में लागू किया जायगा और उससे प्राप्त अनुभवों के आधार पर अन्य महानगरों में भी यह सुविधा प्रदान की जायगी।

(5) अप्रैल और दिसम्बर 82, के बीच 1981 के समवर्ती अन्तराल की तुलना में रेल दुर्घटनाओं में 26% की कमी हुई। रेल मंत्री का अध्यक्षता में केन्द्रीय सुरक्षा समिति का भी गठन किया गया है। रेलों को समय से चलवाने और उनमें सुरक्षा को विशेष महत्व और प्राथमिकता दी जायगी।

भावी योजनाएँ :

(1) रेल मंत्री के अनुसार तकनीकी दृष्टि से भी रेलवे ने काफी प्रगति की है। इसके फलस्वरूप तेज गति से चलने वाली गाड़ियो में दो इंजन लगाए जा रहे हैं। इससे बड़े शहरों के बीच द्रुत रेल सेवा की सुविधा उपलब्ध करवाई जा सकेगी। यहाँ तक कि दिल्ली-अहमदाबाद और दिल्ली-जोधपुर जैसे छोटी लाइन के सेक्शनों पर भी तेज गति से चलने वाली गाड़ियों को चलाया जाना सम्भव होगा। इसी प्रकार 1983-84 में दिल्ली-बम्बई/हावड़ा राजधानी एक्सप्रेस को सप्ताह में क्रमशः पाँच और चार बार चलाया जाना सम्भव हो सकेगा।

(2) कलकत्ता की भूमिगत रेल सेवा पर कार्य का गति को बढ़ा दिया गया है और यह प्रयत्न किया जा रहा है कि एस्प्लेनेड से भवानीपुर तक के मार्ग को 1981 तक चालू किया जा सके। योजना के विनियोग को बढ़ाकर 62 करोड़ रु. कर दिया गया है जबकि सन् 1982-83 में यह केवल 40 करोड़ रु. था।

(3) विश्व बैंक से मिली आर्थिक सहायता द्वारा 20 उच्च अश्व क्षमता वाले इंजनों का आयात किया जायगा जिनमें विश्व में उपलब्ध नवीनतम तकनीकी का समावेश रहेगा।

(4) बजट में रेलवे मार्ग, इंजनों, डिब्बों, आदि की मरम्मत के लिए 1000 करोड़ रु. का प्रावधान है जबकि पिछले वर्ष यही राशि 860 करोड़ रु. थी।

(5) नई लाइनें बिछाने के लिए 70 करोड़ रु. का प्रावधान है जबकि लाइनों के परिवर्तन पर 50 करोड़ रु. व्यय किए जाएगे।

(6) छठी योजना के दौरान रेल पथ के विद्युतीकरण पर 200 करोड़ रु. पहले ही खर्च हो चुके हैं। इस बजट में इस कार्य के लिए 90 करोड़ रु. का आवंटन किया गया है। रेलवे पथ के पुनर्नवीनीकरण के लिए भी 220 करोड़ रु. का प्रावधान किया गया है।

कठिनाइयाँ :

रेलवे मंत्री ने बताया कि छठी योजना में रेलवे को कुल 5,100 करोड़ रु. आवंटित किए गए थे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिनमें से 3,514 करोड़ रु. अभी तक खर्च किए जा चुके हैं। 1,586 करोड़ रु के शेष को छोड़ते हुए, अभी भी रेलवे को कम से कम 1,920 करोड़ रु. अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए जरूरी होंगे। योजना आयोग से इस सम्बन्ध में सहायता माँगी गई थी जिसने 1 342 करोड़ रु. देना मंजूर किया है। इसके बावजूद रेलवे को लगभग 700 करोड़ रु. अपने साधनों से एकत्र करने होंगे।

विश्लेषण :

समीक्षकों के अनुसार बहुत अर्से बाद यह ऐसा बजट है जिसमें सस्ती जनप्रियता और राजनीतिक दबावों को अनदेखा करते हुए रेलवे ने अपने आर्थिक प्रशासन को व्यवस्थित करने का प्रयत्न किया है। यद्यपि यात्री भाड़े में हुई अधिकांश वृद्धि का भार द्वितीय श्रेणी के यात्रियों को वहन करना होगा और माल-भाड़े में बिना किसी छूट की वृद्धि का प्रभाव बाजार में मूल्यों पर भी पड़ेगा, रेलवे की अपनी समस्याओं को देखते हुए यह वृद्धि अपरिहार्य कही जा सकती है। रेल उपकरणों के नवीनीकरण, जिसमें रेलवे लाइनें प्रमुख हैं, आदि के लिए, अतिरिक्त धनराशि इसी माध्यम से अर्जित की जा सकती थी। विशेषकर जबकि, योजना आयोग ने आवश्यक राशि देने से इंकार कर दिया है। वैसे, आमदनी बढ़ाने का यह जरिया बहुत कारगर नहीं होता। टिकटों के बढ़े दाम बिना टिकट यात्रा को प्रोत्साहित करते हैं जिसमें रेलवे कर्मचारियों का विशेष सहयोग रहता है। 1982-83 में यह अपेक्षा की गई थी कि गैर-उपशहरी और उपशहरी यात्री यातायात में क्रमशः 94.9 करोड़ व 219.3 करोड़ की वृद्धि होगी जबकि वास्तविक बढ़ोत्तरी केवल 346.9 करोड़ व 185.5 करोड़ ही रही। अतः यह आवश्यक है कि भविष्य में रेलवे यात्री भाड़े में वृद्धि न करके, बिना टिकट यात्रा पर प्रतिबन्ध लगाने हेतु ठोस कदम उठाए। जहाँ तक माल भाड़े में वृद्धि का प्रश्न है, बढ़ी हुई दरों से दाम कुछ अवश्य बढ़े, पेट्रोल और डीजल के दामों को देखते हुए, रेल परिवहन अभी भी बहुत किफायती कहा जा सकता है।

अकालियों की धार्मिक माँगे स्वीकृत :

20 फरवरी को दिल्ली के गुरुद्वारा बांगला साहिब के प्राँगण में बोलते हुए प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी ने अकालियों की चार धार्मिक माँगों में से तीन को स्वीकार करते हुए उनके तत्कालिक क्रियान्वन की घोषणा की। यह तीन माँगे इस प्रकार थी --

(1) अमृतसर के स्वर्ण मन्दिर के आसपास गोश्त, शराब और तम्बाकू की बिक्री पर प्रतिबन्ध

(2) आकाशवाणी के जलन्धर केन्द्र से गुरुबानी और कीर्तन का नियमित रूप से प्रसारण, और,

(3) इन्डियन एअरलाइन्स के विमानों में सिक्खों को 9 इंच लम्बे कृपाण को ले जाने की छूट।

चौथी धार्मिक माँग देश के समस्त गुरुद्वारों को एक अधिनियम के अन्तर्गत प्रशासित करने से सम्बन्धित थी। श्रीमती गाँधी ने कहा कि ऐसा विधेयक तभी प्रस्तुत किया जा सकता है जब इससे सम्बन्धित सिक्ख संगठन अपनी अनुशंसाएँ प्रेषित करें और विचार-विमर्श द्वारा उन पर सहमति हो सके। इस अवसर पर श्रीमती गाँधी ने गुरुद्वारा सीसगंज के समीपस्थ कोतवाली के दो ऐतिहासिक कमरों को भी दिल्ली गुरुद्वारा प्रबन्धक समिति को औपचारिक रूप से प्रदान कर दिया। कोतवाली के अन्य कमरे जहाँ गुरु तेगबहादुर को बन्दी बनाया गया था शीघ्र ही दिल्ली गुरुद्वारा प्रबन्ध समिति को सौंप दिए जाएंगे। इन्हें शीघ्र ही खाली करने के आदेश दिये गए हैं।

श्रीमती गाँधी की यह घोषणा इस बात का प्रतीक है कि केन्द्र, अकालियों के साथ खुले दिमाग से उनकी राजनीतिक माँगों पर बातचीत करने को तैयार है। इससे केन्द्र यह आशा करता है कि वार्ता के लिए सौहार्द्रपूर्ण वातावरण बन सकेगा। दुर्भाग्यवश, एक प्रमुख अकाली नेता सन्त लोंगोवाल ने इस घोषणा को एक दिखावा करार दिया है। उनके अनुसार, इसका उद्देश्य सिक्खों में दिग्भ्रम और विभाजन उत्पन्न करना है। सन्त लोंगोवाल का यह वक्तव्य अकाली समस्या को और जटिल बनाएगा जिसमें उसका समाधान और कठिन हो जायगा। आशा की जानी चाहिए कि सिक्ख केन्द्रीय सरकार के नए रुख का स्वागत करेंगे और फलस्वरूप अकाली नेताओं की हठधर्मिता में परिवर्तन आएगा।

डाक-तार मूल्यों में वृद्धि :

डाक-तार विभाग ने कुछ सेवाओं के मूल्यों में पहली मार्च से वृद्धि कर दी है। इससे 70 करोड़ रु. की अतिरिक्त आय का अनुमान है जिसमें 10.5 करोड़ डाक और 59 5 करोड़ तार पक्ष से प्राप्त होंगे। विभाग के प्रवक्ता के अनुसार इस बढ़ोत्तरी के निम्नलिखित कारण थे—

(1) 82 करोड़ रु. के बढ़ते हुए भत्तों की देयता।

(2) 3 करोड़ रु. मूल्य की नासिक मुद्रणालय द्वारा वृद्धि, और,

(3) टेलिकॉम लेखा में 10 करोड़ रु. की अतिरिक्त आवश्यकता।

(4) योजना आयोग द्वारा विभाग को कुल योजना आवंटन का आन्तरिक साधनों द्वारा अर्जित किए जाने का निर्देश।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बढ़ी हुई दरें निम्नलिखित क्षेत्रों में लागू होंगी—

(1) सामान्य डाक लिफाफे पर छपे हुए 50 पै. मूल्य के अतिरिक्त 5 वें स्टेशनरी शुल्क के रूप में देय होंगे।

(2) मनीआर्डर फार्म का दाम 5 से बढ़कर 10 पै. हो जायगा, हालाँकि कमीशन की दर अपरिवर्तित रहेगी।

(3) मासिक पत्रों के बुक पैकेट के प्रथम 100 ग्राम पर 25 पै. और अतिरिक्त प्रत्येक 50 ग्राम पर 30 पै. देय होंगे।

(4) बीमा शुल्कों में निम्नलिखित परिवर्तन किए गए हैं—

100 रु. से कम—2 रु. (वर्तमान 1 रु.)

100 रु. से 5000 रु.—प्रथम 100 रु. के लिए 2 रु. तथा प्रत्येक अतिरिक्त 100 रु. के लिए 1 रु. (वर्तमान 0.50 पै.)

5000 रु. से 10000 रु.—उपर्युक्त दरें, किन्तु 5000 के ऊपर प्रत्येक 1000 रु. के लिए 5 रु. (वर्तमान 1.50 रु.)

(5) वी. पी. शुल्कों में हुआ परिवर्तन इस प्रकार है—

10 रु. तक—1 रु. (वर्तमान 50 पै.)

10 रु. से 50 रु. तक—2 रु. (वर्तमान 1 रु)

20 रु. से अधिक—3 रु. (वर्तमान 1.50 रु.)

(6) पोस्टल आर्डरों पर कमीशन की दर को 2% से बढ़ा कर 3% कर दिया गया है।

(7) इसके अतिरिक्त, अन्तर्देशीय गैर-प्रेस तार, संक्षिप्त पते के पंजीकरण, निरंतता शुल्क, फोटो टेलिग्राम, रेडियो टेलिग्राम, टेलिफोन लगवाने के शुल्क, विभागीय टेलिफोन केन्द्रों से अतिरिक्त कनेक्शनों और 500 कि. मी. व 1000 कि. मी. से अधिक दूरी के ट्रंककालों पर दाम बढ़ा दिए गए हैं।

डाक-तार के बढ़े हुए मूल्यों से आम आदमी के न प्रभावित होने की बात कही गई है क्योंकि पोस्टकार्ड और अन्तर्देशीय पत्रों के दाम को अपरिवर्तित बना रहने दिया गया है। यह भी कहा गया है कि जिन क्षेत्रों में वृद्धि हुई है, उनकी दरें 1976 से परिवर्तित नहीं हुई थी। वैसे बढ़ोत्तरी का मुख्य प्रभाव व्यापार और वाणिज्य वर्ग पर पड़ेगा। यदि डाक-तार विभाग की कार्यकुशलता में भी तुलनात्मक वृद्धि होती है तो मूल्य वृद्धि को बुरा नहीं माना जायगा। हाँ, एक बात अवश्य है कि केन्द्रीय बजट के पेश होने के 4 दिन पहले पृथक रूप से की गई यह बढ़ोत्तरी, केन्द्रीय बजट को बेहतर छवि देने के उद्देश्य से प्रेरित थी। किन्तु, यह तथ्य इतना स्पष्ट था, कि सरकार के वास्तविक मन्तव्य को बड़ी सहजता और सरलता से समझ लिया गया।

असम विधान सभा चुनाव :

हिंसा और रक्तपात के बीच फरवरी के उत्तरार्ध में हुए विधान सभा चुनावों में काँग्रेस (आई) को स्पष्ट बहुमत प्राप्त हो गया। 126 सदस्यों की विधानसभा के 108 घोषित परिणामों में उसे 90 स्थान प्राप्त हुए जबकि शेष स्थान वामपंथी-प्रजातांत्रिक मोर्चे के विभिन्न दलों को प्राप्त हुए। श्री हितेश्वर सइकिया काँग्रेस (आई) विधान मण्डलीय दल के नेता चुने गए और 27 फरवरी को उनके नेतृत्व में 13 सदस्यीय मन्त्रिमण्डल ने राज्य का कार्यभार ग्रहण किया।

वामपंथी-प्रजातांत्रिक मोर्चे को छोड़ सभी दलों और असम आंदोलन के संगठनों ने चुनावों का बहिष्कार किया। इसका परिणाम व्यापक हिंसा और कमजोर मतदान के रूप में सामने आया। काँग्रेस का एक प्रत्याशी केवल 266 मत प्राप्त करके विजई हो गया। इसी प्रकार धमीजा निर्वाचन में कुल 90,481 मतों में 360 का प्रयोग हुआ और महज 237 मत प्राप्त करने वाला उम्मीदवार विजई हो गया। मतदान 10% से लेकर 60% तक हुआ, किन्तु कुछेक मतदान केन्द्र ऐसे भी थे जहाँ मतदान शून्य रहा। केवल ऐसे निर्वाचन क्षेत्रों में मतदान भारी रहा जहाँ या तो नए अनुप्रवेशियों की संख्या अधिक थी या बंगला-भाषियों का प्रभुत्व था, जैसे कछार, उत्तरी कछार और कर्बी अंगलोंग/ऐसे क्षेत्रों में मतदान 40% से 60% के बीच हुआ। लेकिन, उन क्षेत्रों में जहाँ असमिया मूल के असमिया-भाषियों का बहुमत था, मतदान नहीं के बराबर रहा। शेष क्षेत्रों में मतदान का अनुमानित प्रतिशत इस प्रकार रहा—गोलपारा 30%, कामरूप 15%, दरांग 10 से 15% नवगाँव 20%, शिवसागर, लखीमपुर और डिबरूगढ़ —10% से भी कम। इसके अतिरिक्त, यह उल्लेखनीय है कि 17 निर्वाचन क्षेत्रों में मतदान पूरा नहीं हो सका जबकि एक में दुबारा चुनाव कराने की घोषणा की गई है।

ऐसे चुनावों में चुने गए विधायक कितना जन समर्थन रखते हैं, यह कहे जाने की आवश्यकता नहीं है। हालाँकि, नए मुख्यमंत्री के विरोधी भी उनकी नेतृत्व और प्रशासनिक क्षमता को स्वीकार करते हैं, उनके मन्त्रिमण्डल में कई ऐसे सदस्य भी हैं जिनकी जन छवि उज्ज्वल नहीं कही जा सकती। जिस दिन नई सरकार ने शपथ ग्रहण की असम आंदोलनकारियों ने 24 घंटे के सम्पूर्ण बन्द का आह्वान किया जो निश्चित रूप से सफल रहा। ऐसे परिवेश में नई सरकार का गठन असम समस्या को सुलझाने में कितना कारगर होगा, यह समय ही बता सकेगा। ■ ■

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्तर्राष्ट्रीय समीक्षा

- भारत-पाक : संयुक्त आयोग का गठन : सही दिशा में सही कदम
- 'ओपेक' : लंदन वार्ता : संकट गहरा हो रहा है···!
- पश्चिमी यूरोप : प. जर्मनी चुनाव : कोह्ल विजयी : यूरोपीय सुरक्षा जरूरी है !
- परमाणु अस्त्र प्रहासन : जेनेवा वार्ता : अब केन्द्र प. जर्मनी
- जिम्बाब्वे : गृहयुद्ध व आतंकवाद की स्थिति
- बंगलादेश : इस्लामीकरण या धर्मनिरपेक्ष लोकतन्त्र की वापसी
- पाकिस्तान : इस्लामीकरण की दिशा में नया क़दम
- हिन्द-चीन : कम्पूचिया समस्या का समाधान कब !

भारत-पाक :

संयुक्त आयोग का गठन : सही दिशा में सही कदम

10 मार्च को, पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अन्तर्गत भारत तथा पाकिस्तान के विदेश मंत्रियों ने 'भारत-पाक संयुक्त आयोग' के गठन पर हस्ताक्षर किये। ज्ञातव्य है कि इस आशय का निर्णय 27 दिसम्बर, 1982 को दोनों देशों के विदेश-मंत्रियों द्वारा लिया गया था।

गुटनिरपेक्ष सम्मेलन के दौरान राष्ट्रपति जिया तथा श्रीमती गांधी के मध्य अनेक द्वि-पक्षीय वार्तायें भी सम्पन्न हुयीं जिन्होंने समझौते पर हस्ताक्षर का वातावरण तैयार किया। समझौते के उपरांत जारी संयुक्त विज्ञप्ति में आयोग को, "दोनों देशों के मध्य पारस्परिक आधार पर बहु-पक्षीय (Multi-faceted) सहयोग स्थापित करने का एक संयंत्र" बताया गया है। इसके पूर्व अपने भाषण में जनरल जिया ने कश्मीर का उल्लेख किया था किन्तु दोनों नेताओं की बातचीत तथा विदेश-मन्त्रियों द्वारा समझौते पर हस्ताक्षर के दौरान इस प्रकार का कोई जिक्र नहीं किया गया। समझौते में आयोग का सर्वप्रमुख कार्य 'आर्थिक, व्यापारिक, औद्योगिक, शैक्षिक, स्वास्थ्य, सांस्कृतिक, पर्यटन, सूचना तथा वैज्ञानिक क्षेत्रों में द्वि-पक्षीय सहयोग' को बढ़ाना बताया गया है। समझौते पर हस्ताक्षर के तुरन्त बाद संबोधित एक प्रेस कांफ्रेंस में जनरल जिया ने कहा कि, "मुझे इस बात का संतोष है कि समझौता दोनों देशों की इच्छाओं तथा प्राथमिकताओं के अनुकूल है तथा यह घनिष्ठ सम्बन्धों के लिये मार्ग प्रशस्त करेगा।

जनरल जिया इस बार भली भांति समझ गये होंगे कि 'गुट निरपेक्ष आंदोलन' के मंच को द्वि-पक्षीय विवादों या मुद्दों को उठाने के लिये प्रयोग किया जाना असंभव है। ज्ञातव्य हो कि पाकिस्तान को पहली बार हवाना सम्मेलन (1979) में आंदोलन की औपचारिक सदस्यता प्रदान की गयी थी। उस बार पाकिस्तान ने कश्मीर के मसले को अनावश्यक तूल देने की कोशिश की थी किन्तु नयी दिल्ली सम्मेलन में कश्मीर का नामोल्लेख पूर्णतया मैत्री-पूर्ण संदर्भ में किया गया। फिर भी भारतीय विदेश विभाग के प्रवक्ता ने पूर्ण सावधानी तथा तीव्रता के साथ जनरल जिया को यह स्मरण कराया कि कश्मीर के संदर्भ में दोनों देशों के

प्रस्तुति : नन्द लाल, प्रवक्ता, राजनीति विभाग, काशी विद्यापीठ विश्वविद्यालय, वाराणसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मध्य एक मसला तय होना है, और वह है पाक-अधिकृत कश्मीर का भारत को वापस किया जाना; भारत की शिमला समझौते में पूर्ण आस्था है और वह उसी के अनुकूल कश्मीर या किसी भी अन्य द्वि-पक्षीय मसले को हल करने का इच्छुक है।

इस प्रकार के माहौल में, नये आयोग का प्रयोग 'उत्साह तथा दूर-दृष्टि' के साथ सम्बन्धों को ठोस तथा सहयोगात्मक आधार प्रदान करने के लिये किया जाना चाहिये। आयोग की स्थापना करके निश्चित रूप से दोनों देशों ने सही दिशा में सही कदम उठाया है किन्तु यदि दोनों देश सम्बन्धों में कोई स्थायी तथा ठोस प्रगति चाहते हैं तो भूतकाल में 'एक कदम आगे, दो कदम पीछे' की नीति दोनों देशों को छोड़नी होगी।

'ओपेक' :

लंदन वार्ता : संकट गहरा हो रहा है.... ..!

सीमित उत्पादन तथा निर्यात के विषय में पिछले 4-5 माह के ऊहापोह के उपरांत, अपने इतिहास में पहली बार मार्च के पूर्वार्ध में लंदन में लंबे वाद-विवाद के उपरान्त तेल-निर्यातक देशों का संगठन ओपेक (OPEC) प्रति बैरल कच्चे तेल का मूल्य 5 डॉलर प्रति बैरल कम करके 29 डॉलर प्रति बैरल करने पर सहमत हो गया है जबकि मूल रूप से सुझाव 34 डॉलर प्रति बैरल से घटाकर 30 डॉलर प्रति बैरल किये जाने का था (कृपया देखें मार्च तथा फरवरी, 83 अंक में इसी स्तम्भ के अन्तर्गत 'ओपेक' पर टिप्पणी)।

पाठकों को ज्ञातव्य हो कि तेल निर्यातक देशों तथा उनके द्वारा तेल निर्यात को एक संस्थाबद्ध स्वरूप प्रदान करने में 'ओपेक' का एक प्रमुख योगदान रहा है किन्तु पिछले कुछ समय में 'ओपेक' द्वारा निर्धारित सीमाबद्ध मूल्य के स्थान पर, कुछ सदस्य राष्ट्र अत्यधिक गिरे दामों पर तेल का निर्यात कर रहे हैं; प्रमुख कारण है, इन देशों की अर्थव्यवस्था में मुद्रास्फीति का प्रसार बढ़ रहा है। और भारी मात्रा में 'पेट्रो डालर्स' कमाकर ये ते. नि. देश इससे उबरना चाहते हैं।

तेल-निर्यात के मुद्दे पर ओपेक के विभिन्न सदस्यों के विचार यद्यपि अलग अलग हैं किन्तु लंदन बैठक के दौरान सदस्य-राष्ट्रों में स्पष्ट रूप से दो वर्ग परिलक्षित हुए जिनका नेतृत्व क्रमशः सऊदी अरब तथा ईरान द्वारा किया जा रहा है। सऊदी अरब, कुवैत, संयुक्त अरब अमीरात तथा क्वांतार जैसे देश संगठन के कहीं अधिक अनुदारवादी सदस्य हैं जबकि लीबिया तथा अल्जीरिया, ईरान के अधिक निकट प्रतीत हुए। ईरान बराबर यह मांग करता रहा है कि सदस्य राष्ट्रों द्वारा तेल निर्यात की कोई सीमा नहीं निर्धारित की जानी चाहिये। ईरान की इस मांग का समर्थन नाइजीरिया द्वारा भी किया गया। ज्ञातव्य हो कि संगठन में सऊदी अरब के नेतृत्व वाला समूह संगठन द्वारा निर्यात किये जाने वाले सम्पूर्ण तेल के 40% भाग का उत्पादन करता है। इस वर्ग के पास तेल का बड़ा सुरक्षित भण्डार भी है जबकि संगठन में, सऊदी अरब के विरोधी वर्ग में शामिल अधिकांश राष्ट्रों की अपनी आंतरिक समस्यायें हैं। लंदन वार्ता से पूर्व दो वार्ताओं को मद्देनजर रखते हुए, तेल विक्रय प्रतिष्ठानों ने मूल्य कम होने की संभावनाओं के कारण तेलक्रय में सावधानी का दृष्टिकोण अपनाया। परिणामस्वरूप लंदन बैठक प्रारंभ होने के ठीक पूर्व 'ओपेक' के तेल के निर्यात की मात्रा प्रतिदिन 13 मिलियन बैरल मात्र रह गयी। किन्तु, अब जबकि तेल का निर्यात मूल्य 29 डॉलर प्रति बैरल निर्धारित कर दिया गया है, 17.2 मिलियन बैरल प्रतिदिन के तेल-निर्यात का 'ओपेक' द्वारा निर्धारित कोटे की पूर्ति में 'ओपेक' को कोई परेशानी नहीं होनी चाहिये। किन्तु लंदन सम्मेलन के उपरांत भी सदस्य राष्ट्र, मात्रा तथा मूल्य के संबन्ध में, 'ओपेक' द्वारा निर्धारित सीमा को व्यवहार में लागू करेंगे या नहीं, इस बारे में निश्चित रूप से कुछ भी कहना मुश्किल है। ईरान ने पहले ही निर्धारित सीमा का पालन करने से इंकार कर दिया है और आशा की जा रही है कि वेनेजुएला तथा कुछ अन्य सदस्य राष्ट्र भी यही दृष्टिकोण अपनायेंगे। इस संभावना की चर्चा करते हुए एक अनुभवी पर्यवेक्षक ने तो यहां तक कहा है कि मूल्य-प्रतिद्वन्द्विता के चलते हो सकता है कि आगामी कुछ समय में प्रति बैरल तेल का मूल्य 20 डालर हो जाये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्ञातव्य हो कि इस वर्ष में भारत को 10 मिलियन बैरल कच्चा तेल 'ओपेक' से आयात करना है तथा 5 डालर प्रति बैरल की कटौती से भारत को 350 करोड़ रूपये कम देने पड़ेंगे। सरकारी तौर पर, भारत अपने से अधिक तेल ईरान से आयात करता है, जो अब तक 'ओपेक' के निर्धारित प्रति बैरल मूल्य में 3 डॉलर की कटौती करता आ रहा है। अब देखना यह है कि क्या 5 डालर प्रति बैरल की कटौती के उपरांत भी ईरान यह कटौती जारी रखता है या नहीं।

पश्चिमी यूरोप :

प० जर्मनी-चुनाव : कोह्ल विजयी : यूरोपीय सुरक्षा जरूरी है !

मार्च के प्रथम सप्ताह में सम्पन्न प. जर्मनी के राष्ट्रीय चुनावों में कोहल की पुनः विजय को आश्चर्य का विषय नहीं माना जाना चाहिये। चुनावों के पूर्व भी यह स्पष्ट हो गया था कि क्रिश्चियन डेमॉक्रेटिक यूनियन(CDU) तथा 'क्रिश्चियन सोशल यूनियन' (CDU) का गठबंधन प्रतिद्वन्द्वी सोशल डेमॉक्रेटिक पार्टी' पर हावी रहेगा। जबकि अपने दृष्टिकोण में परमाणु-विरोधी, शांति समर्थक तथा पर्यावरण की सुरक्षा के लिये कृतसंकल्प 'ग्रीन' (Greens) वर्ग ने भी 'सोशल डेमॉक्रेटिक पार्टी' (SDP) को अपना समर्थन प्रदान किया।

एक बार प. जर्मनी के चुनाव किसी खास कारण से विशेष महत्व के रहे। ज्ञातव्य हो कि आने वाले वर्षों में अमरीका द्वारा 'नाटो' के सहयोगी राष्ट्रों विशेषरूप से जर्मनी में, 'पर्शिग—2' तथा 'क्रूज' प्रक्षेपास्त्रों का नियोजन प्रस्तावित है (विस्तृत जानकारी हेतु देखिये : इसी स्तम्भ की 'परमाणु-अस्त्र परिसीमन' पर टिप्पणी)। चुनाव में SDP के प्रत्याशी हैन्स जोहेन वोगेल ने इनके प. जर्मनी में नियोजन का कड़ा विरोध किया। चुनाव के ठीक पूर्व कुछ पर्यवेक्षकों का यह विश्लेषण था कि अनुमानतः CDU तथा CSU के गठबंधन (कोह्ल) तथा SDP (वोगेल) को बराबर मत प्राप्त होंगें। पिछली सरकार में 'फ्री डेमॉक्रेटिक पार्टी' का भी समर्थन प्राप्त था। किन्तु जर्मन संसद (बुंडस्टाग) में प्रतिनिधित्व हेतु किसी दल को कम से कम 5% मत मिलने आवश्यक है। अतः यह कहा जा रहा था कि यदि FDP को इतने मत नहीं मिलते तथा CDU एवं CSU के गठबंधन को तथा SDP को लगभग बराबर मत मिलते हैं तो 'ग्रीन' वर्ग की स्थिति, कौन सरकार बनाये ? यह निर्धारित करने में महत्वपूर्ण हो जायेगी। इस विश्लेषण के तहत वोगेल ने प्रक्षेपास्त्रों के प्रस्तावित नियोजन का खुलकर विरोध किया ताकि 'ग्रीन' वर्ग का निश्चित समर्थन प्राप्त हो सके। पाठकों को ज्ञात होगा कि प. यूरोप के अधिकांश राष्ट्रों में 'परमाण अस्त्रों' का विरोध आंदोलन क्रमशः तीव्र होता जा रहा है। किन्तु प. जर्मनी में परमाणु प्रक्षेपास्त्रों के नियोजन के विरोध में वोगेल के दृष्टिकोण ने जनमानस पर विपरीत प्रभाव डाला। मतदान से ठीक पूर्व प. जर्मनी में यह आम जनमत था कि वोगेल के विजयी होने का तात्पर्य होगा : प. जर्मनी की सुरक्षा को खतरे में डालना; सम्पूर्ण प. यूरोपीय सुरक्षा के लिये कृतसंकल्प 'नाटो' तथा अमरीका से इसके संबंध दिन प्रतिदिन खराब होते जाना जिसका परिणाम होगा, अनावश्यक सोवियत दबाव। इस प्रकार की सार्वजनिक राय के निर्माण में मॉस्को ने भी भूमिका निभायी। चुनावों से पूर्व प. जर्मनी के विभिन्न सोवियत समर्थक संगठनों ने वोगेल का खुलकर समर्थन किया। अप्रत्यक्ष सोवियत समर्थन ने, वोगेल की विजय के स्थान पर पराजय में अधिक सहयोग किया।

विजय होने के बाद भी कोह्ल की अपनी समस्यायें हैं। उन्हे सरकार बनाने के लिये पुनः FDP का सहयोग लेना पड़ेगा और इसके बदले में FDP को "परराष्ट्र, अर्थ, न्याय तथा कृषि जैसे महत्वपूर्ण मंत्रालय प्राप्त हो जायेंगें। इसके अतिरिक्त CSU को बावेरिया (Bavaria) में 60% से भी अधिक मत प्राप्त हुए हैं। इसलिये कोहल को CSU के बावेरियन नेता फ्रैंज जोसेफ स्ट्रॉस को भी मंत्रिमण्डल में कुछ पद देने पड़ेंगे। यह भी संभावना है कि स्ट्रॉस स्वयं अपने लिये विदेश विभाग को माँगें जबकि योग्यता क्रम में यह विभाग FDP के हैन्स डिट्रिच गेनश्चर को मिलना चाहिए जो श्मिड्ट तथा कोहल दोनों के काल में विदेश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विभाग संभालते रहे हैं। 'ग्रीन' वर्ष का संसद में इस बार पहला प्रवेश है। उनकी वाक तथा कार्य-प्रक्रिया भी कोहल के लिये सिरदर्द बन सकती है।

परमाणु अस्त्र प्रहासन

जेनेवा वार्ता : अब केन्द्र पः जर्मनी

परमाणु अस्त्र प्रहासन वार्ता (Start) के नवीनतम् चरण के रूप में राष्ट्रपति रीगेन ने 'जब भी, जहाँ भी' आधार पर सोवियत नेतृत्व के समक्ष प्रक्षेपास्त्रों के मामले पर वार्ता करने का प्रस्ताव रखा है (1फरवरी), किन्तु जैसे जैसे अमरीका द्वारा पश्चिमी यूरोप में क्रूज तथा परशिंग II प्रक्षेपास्त्रों के नियोजन का समय निकट आता जा रहा है, जेनेवा वार्ता इसी प्रकार के शाब्दिक मुहावरों में उलझती जा रही है।

ज्ञातव्य हो कि 20 जनवरी को यूरी ऐन्द्रोपोव ने स्पष्ट शब्दों में यह चेतावनी दी थी कि यदि अमरीका ने मध्य दूरीय परमाणु प्रक्षेपास्त्रों के पश्चिमी यूरोप में प्रस्तावित नियोजन का इरादा नहीं छोड़ता है तो सोवियत संघ की 'स्टार्ट' वार्ता में कोई रुचि नहीं है। इसके पूर्व नवम्बर 82 में रीगेन ने शून्य विकल्प (Zero option) का प्रस्ताव किया था जिसके अन्तर्गत अमरीका भारी नियोजन को रोक सकता था यदि सोवियत संघ अपने सम्पूर्ण एस. एस.-20 (55-20) प्रक्षेपास्त्रों को हटाने हेतु तैयार हो किन्तु इस प्रकार का प्रस्ताव सोवियत संघ द्वारा अस्वीकार कर दिया गया। 20 दिसम्बर को सोवियत साम्यवादी दल के नये महासचिव पद संभालने के उपरांत यूरी ऐन्द्रोपोव ने अमरीकी प्रस्ताव पर व्यंग्यभरी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुये कहा था : "हम प्रशिक्षार्थी नहीं हैं" जो अपनी वर्तमान सैन्यक्षमता में इतनी कटौती कर ले, मात्र इस लिये कि अमरीका द्वारा प्रक्षेपास्त्रों में कागजी कटौती की जायेगी, वे भी ऐसी मिसाइले जिन्हें लगाया जाना है.....। उस समय सोवियत नेतृत्व ने इस विषय पर अपना प्रतिवेदन भी प्रस्तुत किया था जिसे 'सम्पूर्ण शून्य विकल्प' (Absolute Zero Option) की संज्ञा दी गयी थी। इसके अन्तर्गत सोवियत संघ ने 'वारसा पैक्ट' तथा 'नैटो' के समस्त सदस्य देशों द्वारा नियोजित सभी 'मध्य दूरीय प्रक्षेपास्त्रों' को हटाने की बात कही थी। मुख्य बात यह है कि मॉस्को के इस प्रस्ताव का पश्चिमी यूरोपीय देशों द्वारा मौन स्वागत किया गया और इसके चलते अमरीका तथा नैटो के अन्य प्रभावशाली सदस्यों के मध्य विवाद की स्थिति पैदा कर दी। अब स्थिति यह है कि फ्रांस तथा ब्रिटेन इस विवाद से दूर रहना चाहते है और प्रक्षेपास्त्रों के परिसीमन में महाशक्तियों से किसी प्रकार का समझौता नहीं करना चाहते। किन्तु अमरीका द्वारा प. यूरोप में प्रक्षेपास्त्रों के भावी नियोजन के विरुद्ध व्यापक जनमत को देखकर अनुवादवादी नेता मार्गरेट थैचर ने भी यह स्वीकार किया है कि अमरीकी दृष्टिकोण में तनिक अधिक व्यावहारिकता होनी चाहिए।

किन्तु इस बार विवाद का मुख्य केन्द्र बिन्दु प. जर्मनी है क्योंकि परशिंग-II प्रक्षेपास्त्र पूर्णतः प. जर्मनी में ही लगाये जाने है और यह मुद्दा यहाँ चुनावों में भी एक प्रमुख तत्व बन गया है। सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी इस समय विरोध में है, इस नियोजन का विरोध कर रही है जबकि सत्ता प्राप्त क्रिश्चियन डमोक्रेटिक पार्टी इसका समर्थन कर रही है यद्यपि मुख्तः यह मौन समर्थन ही है। और 6 मार्च के जर्मन चुनावों को मद्देनजर रखते हुए दोनों ही महाशक्तियां सक्रिय हो गयी थीं। कुछ ही दिनों पूर्व सोवियत विदेश मंत्री बॉन की यात्रा कर चुके हैं और सो. डे. पार्टी के नेता वोगेल का मॉस्को यात्रा के दौरान भव्य स्वागत किया गया। दूसरी ओर अपनी प. जर्मन यात्रा के दौरान जर्मन संसद बुण्डस्टाग (Bundestag) को सम्बोधित करते हुए फ्रांसीसी राष्ट्रपति मितरां ने सोवियत संघ द्वारा प. यूरोप को अमरीका से पृथक किये जाने के सोवियत प्रयास के खतरे के विरुद्ध प. जर्मनी को आगाह किया और उसी के समानांतर अमरीकी उपराष्ट्रपति जॉर्ज बुश ने अपनी बॉन यात्रा के दौरान राष्ट्रपति रीगेन का वह 'खुला' पत्र पढ़ा जिसमें सोवियत संघ के साथ 'जब भी जहाँ भी' आधार पर वार्ता का प्रस्ताव कियागया था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिम्बाब्वे

गृहयुद्ध व आतंकवाद की स्थिति

वर्षों के कठिन संघर्ष के पश्चात जब अप्रैल, 80 को जिम्बाब्वे का जन्म हुआ तो सभी आशान्वित थे कि अफ्रीका के अन्य राष्ट्रों से भिन्न जिम्बाब्वे में लोकतन्त्र व नागरिकों की स्वतन्त्रता सुरक्षित रहेगी। जिम्बाब्वे अफ्रीकन नैशनल यूनियन (जानू) के नेता रॉबर्ट मुगाबे तथा जिम्बाब्वे अफ्रीकन पीपुल्स यूनियन (जापू) के नेता जोशुआ एनकोमो परस्पर विरोधी होने के बावजूद गृहयुद्ध से जर्जरित देश के आर्थिक व सामाजिक पुर्ननिर्माण के लिये परस्पर सहयोग हेतु सहमत हुए। यही कारण है कि मुगाबे ने अपनी सरकार में एनकोमो को सम्मानित मन्त्रिपद प्रदान किया। परन्तु, शासन भार सम्भालते ही दोनों के मध्य मतभेद पुनः उभर कर सामने आने लगे और अन्ततः एनकोमो को सरकार विरोधी कृत्यों के तथाकथित आरोप में पदच्युत होना पड़ा। लोकतन्त्र के लिये वचनबद्ध मुगाबे ने अपनी गद्दी बरकरार रखने के लिये वही करना प्रारम्भ किया जो अन्य अफ्रीकी शासक अब तक करते चले आये हैं। उन्होंने सभी प्रतिपक्षी राजनीतिक दलों पर प्रतिबन्ध लगाकर जिम्बाब्वे में एक दलीय शासन व्यवस्था को अपनाया, परन्तु प्रतिपक्षी राजनीतिक दलों पर प्रतिबन्ध लगाने का अर्थ यह नहीं है कि देश में राजनातिक विरोध ही समाप्त हो जाये। सम्पूर्ण देश में, विशेषकर मैटाबेलैण्ड प्रान्त में एनकोमो समर्थकों ने विरोधात्मक कार्यवाहियाँ प्रारम्भ कर दी। मुगाबे सरकार ने एनकोमो को नजरबन्द कर लिया और मातेबेलेलैण्ड, जो एनकोमो का अपना क्षेत्र है, में विरोध के दमन के लिये पांचवी ब्रिगेड के सैनिकों को भेजा। इन सैनिकों ने हजारों निर्दोष लोगों की हत्या कर अपनी नृशंसता का परिचय दिया परन्तु, वह एनकोमो के समर्थकों के विरोध को कुचलने में असमर्थ रहे। एनकोमो के निवासस्थान पर आक्रमण कर उनकी हत्या का प्रयत्न किया गया। एनकोमो अपने प्राण बचाने के लिये बोत्सवाना भाग गये और तत्पश्चात उन्होंने लन्दन में अस्थायी शरण ली। सातवें गुट निरपेक्ष आन्दोलन (नई दिल्ली) के दौरान मुगाबे ने एक पत्रकार सम्मेलन में जिम्बाब्वे की स्थिति को सामान्य, तथा एनकोमो को प्राण के खतरे के आरोप को निराधार बताया परन्तु जिम्बाब्वे के विभिन्न चर्च व मानवाधिकार संस्थाएं स्थिति को कुछ और ही बताती हैं। आज जिम्बाब्वे में गृहयुद्ध और आतंकवाद की स्थिति बनी हुई है। यदि इस स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं आता है तो निकटभविष्य में दक्षिण अफ्रीका का जिम्बाब्वे के गोरे अल्पसंख्यकों के नेता इयान स्मिथ के माध्यम से वहाँ की राजनीति में हस्तक्षेप अवश्यम्भावी है। इसलिये आवश्यक है कि मुगाबे और एनकोमो आपसी मतभेदों को सुलझा कर जिम्बाब्वे की राजनीति में स्थायित्व लायें।

बंगलादेश

इस्लामीकरण या धर्मनिरपेक्ष लोकतन्त्र की वापसी

बंगलादेश के मुस्लिम प्राधान्य देश होने के बावजूद भी बंगलादेशवासियों की एक अलग सांस्कृतिक विशिष्टता होने के कारण वहाँ इस्लामीकरण का अधिक प्रसार न हो सका। जनता की धर्मनिरपेक्ष भावना के कारण ही बंगलादेश के सैनिक शासक भी देश का इस्लामीकरण करने में असफल रहे। ऐसी अवस्था में बांगलादेश के मुख्य मार्शल लॉ प्रशासक लेफ्टि. जनरल एच. एम. इरशाद ने यह घोषणा की कि देश में मार्शल लॉ नियमों को अधिकाधिक सख्त किया जायेगा और साथ में इस्लामीकरण की दिशा में शीघ्रातिशीघ्र कदम उठाये जायेगे। इरशाद की इस घोषणा के पीछे सम्भवतः धनी अरब राष्ट्रों का दबाव कार्य कर रहा होगा क्योंकि वे आर्थिक मदद से बंगलादेश की आर्थिक व्यवस्था को संभाले हुए हैं। बहरहाल इरशाद का जो भी उद्देश्य रहा हो, इस घोषणा के प्रतिक्रियास्वरूप ढाका विश्वविद्यालय के उदारवादी, धर्म निरपेक्ष व इस्लामी कट्टरवादी छात्रों के मध्य हिंसात्मक संघर्ष प्रारम्भ हो गया। देश के 18 प्रतिपक्षी राजनीतिक दलों ने संयुक्त मोर्चा का गठन कर इरशाद को विरोध करना प्रारम्भ किया। परन्तु, मार्शल लॉ प्रशासन ने सभी प्रतिपक्षी नेताओं को गिरफ्तार कर लिया और सेना की सहायता से छात्रों के विरोध का दमन किया। साथ में इन घटनाओं से इरशाद को यह समझने में देर न लगी कि इस्लामीकरण की आड़ में दमन की नीति अख्तियार कर अधिक दिन तक शासन नहीं चलाया जा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकता है। अनेक प्रतिपक्षी नेताओं को मुक्त कर उन्होंने प्रतिपक्षियों से राष्ट्रीय स्तर पर वार्तालाप का प्रस्ताव रखा। प्रतिपक्षी दलों ने इस सम्बन्ध में अपनी कोई प्रतिक्रिया नहीं व्यक्त की। अब सम्पूर्ण बंगलादेश, विशेषतः राजधानी ढाका में अस्वाभाविक शान्ति छायी हुई है। परन्तु यदि इरशाद ने स्थिति का जायजा लेते हुए शीघ्र ही धर्मनिरपेक्ष लोकतन्त्र की पुनर्स्थापना की दिशा में कदम नहीं उठाया तो इस समय सुप्त जनआक्रोश निकटभविष्य में भयंकर जनआन्दोलन का रूप धारण कर लेगा।

पाकिस्तान

इस्लामीकरण की दिशा में नया कदम

जब से राष्ट्रपति जिया-उल-हक सत्ता में आये, उन्होंने पाकिस्तान के इस्लामीकरण में कोई कसर नहीं छोड़ी है। हाल में पाकिस्तान के सभी कानूनों के पुनर्परीक्षण के लिये नियुक्त "काउन्सिल फॉर इस्लामी आइडियोलॉजी' की यह सिफारिश कि "देश के न्यायालयों में दो महिलाओं के साक्ष्य (evidence) को एक पुरुष के साक्ष्य के बराबर माना जाय" ने पाकिस्तानी महिलाओं की सामाजिक व राजनीतिक स्थिति को और अधिक दयनीय बना दिया। 12 फरवरी, 83 को मजलिस-ए-शोरा (संघीय परिषद) की महिला सदस्यों सहित अनेक महिला संगठनों ने जब लाहौर उच्चन्यायालय के सामने इन सिफारिशों के विरुद्ध जोरदार प्रदर्शन किया तो पुलिस ने उन पर लाठियाँ बरसायीं। पाकिस्तान के मुल्लाओं ने पुलिस की बर्बरता का विरोध न कर उल्टा इन प्रदर्शनकारी महिलाओं के कृत्य को इस्लामविरोधी बताया। जिया सरकार ने कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की। उल्लेखनीय है कि 1977 में लाहौर में पाकिस्तानी महिलाओं जिन्हें अब द्वितीय दर्जा प्रदान करने की कोशिश की जा रही है, ने ही तत्कालीन राष्ट्रपति भुट्टो द्वारा निर्वाचन में की गयी गड़बड़ियों के विरोध की अगुवाई की थी, और जिसने बाद में जनतान्त्रिक आन्दोलन का रूप धारण कर लिया था। पुरुष प्राधान्य समाज होने के बावजूद पाकिस्तान के सभी पुरुष अभी शान्त है। हो सकता है कि 1977 की भाँति इस बार की यह घटना पुनः उत्प्रेरक का कार्य कर पाकिस्तान की जनता को देश में लोकतन्त्र की पुर्नस्थापना एवं नागरिकों के अधिकारों के लिये जनतान्त्रिक आन्दोलन प्रारम्भ करने के लिये विवश करे।

हिन्द-चीन

कम्पूचिया : समस्या का समाधान कब !

22 व 23 फरवरी 83 को हिन्द-चीन के तीन राष्ट्रों-वियेतनाम, कम्पूचिया व लाओस, के नेताओं ने वियनतियान शिखर सम्मेलन में आर्थिक, तकनी की वसांस्कृतिक सहयोग बढ़ाने के लिये समझौता किया। साथ में, वियेतनाम ने कम्पूचिया के क्षेत्र से अपनी सेना का कुछ अंश वापस बुलाने के लिये सहमति प्रकट की। इस प्रकार उपर्युक्त शिखर सम्मेलन से यही प्रतीत होता है कि हिन्द-चीन में शान्ति ही शान्ति है। परन्तु वास्तव में ऐसा नहीं है। हिन्द चीन में कम्पूचिया के कारण अभी भी विस्फोटक स्थिति बनी हुई है। कम्पूचिया समस्या अभी भी इसी बात पर उलझी हुई है कि कम्पूचिया की भूमि व जनता पर कौन शासन कर रहा है? वियेतनाम द्वारा समर्थित हेंग सैमरिन सरकार के अनुसार उसका कम्पूचिया के 90 प्रतिशत भूमि व जनता पर शासन है, जबकि चीन व एशियान राष्ट्रों द्वारा समर्थित राजकुमार सिहनूक की मिश्रित सरकार, जिसमें खेमर रोज व पीपुल्स नेशनल फ्रन्ट भी शामिल है, के अनुसार, वे ही कम्पूचिया के वास्तविक शासक है। वस्तुतः वियनतियान शिखर सम्मेलन एक दिखावा मात्र था। वियेतनाम इसके माध्यम से सांतवें गुटनिरपेक्ष सम्मेलन को यह प्रदर्शित करना चाहता था कि हिन्द-चीन के राष्ट्रों में आपसी सहयोग है और वियेतनाम कम्पूचिया से अपनी सेना की वापसी स्वयं ही चाहता है परन्तु चीन व एशियान राष्ट्रों द्वारा द्वारा समर्थित छापामारों से हेंग सैमरिन सरकार, की रक्षा के लिये उन्हें विवशतावश वहाँ रूकना पड़ रहा है। उधर राजकुमार सिहानुक भी अन्तर्राष्ट्रीय मान्यता प्राप्त करने के लिये हेंग सैमरिन सरकार की स्थापना व कम्पूचिया में वियेतनामी सेना की बहाली की अवैधता का प्रचार करने में कोई चूक नहीं की। परन्तु सांतवें गुटनिरपेक्ष सम्मेलन के दौरान कम्पूचिया का स्थान खाली रखना इसी बात को इंगित करता है कि किसी भी पक्ष सफलता को नहीं मिली। फिलहाल कम्पूचिया की स्थिति उसी प्रकार है जैसा कि आज से चार वर्ष पूर्व थी और न ही निकटभविष्य में किसी प्रकार के समाधान की आशा दिखती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समसामयिक सामान्य ज्ञान

■ शब्द संक्षेप

- I.N.I.S.S.E.—इन्टरनेशनल इन्स्टीट्यूट फॉर स्पेस साइन्सेस एण्ड इलेक्ट्रानिक्स
- I.R.C.O.N.—इण्डियन रेलवे कंसट्रक्शन कम्पनी लिमिटेड
- O.P.E.C.—आर्गेनाइजेशन ऑव पेट्रोलियम एक्सपोर्टिंग कन्ट्रीज
- I.D.A.—इन्टरनेशनल डेवलपमेन्ट एजेन्सी
- A.D.B.—एशियन डेवलपमेन्ट बैंक
- G.C.C.—गल्फ कोआपरेशन काउन्सिल
- N.A.F.E.D.—नेशनल एग्रीकल्चरल कोआपरेटिव मार्केटिंग फेडरेशन
- O.C.S.—ओवरसीज कम्युनिकेशन सर्विस
- R.D.F.—रेपिड डिप्लायमेन्ट फोर्स
- O.E.C.D.—आर्गेनाइजेशन फॉर इकोनामिक कोआपरेशन एण्ड डेवलपमेन्ट

■ प्रमुख पुस्तकें

- साइन्स : गुड, बैड एण्ड वोगेंस—मार्टिन गार्डनर
- द थर्ड मूवमेन्ट—अम्लान दत्त
- मिसेज गान्धीस् फारेन पालिसी—वी. पी. ओझा
- द नानअलॉइन्ड मूवमेन्ट—अम्बिका वन्द्योपाध्याय
- नान अलाइन्मेन्ट : फ्रन्टियर एण्ड डायनामिक्स्—के. पी. मिश्र
- जुल्फी माई फ्रेन्ड—पीलू मोदी
- ए सेलर रिमेम्बर्स—एडमिरल आर. डी. कटारी
- गान्धी एण्ड हिज् टाइम्स—मन्मथ नाथ गुप्त
- डार्कनेस एट नून—आर्थर कोएस्टलर
- कीपिंग फेथ : मेमवाज ऑव ए प्रेसीडेन्ट—जिमी कार्टर
- रूट्स ऑव कनफ्रनटेशन इन साउथ एशिया : अफगानिस्तान, पाकिस्तान, इण्डिया एण्ड द सुपरपावर्स—स्टेनली वोलपर्ट
- ग्लास मेनेजरी—टेनेसी विलियम्स
- कॉमन क्राइसिस : नार्थ साउथ—द ब्राण्ड कमीशन 1983
- इण्डिया एण्ड द नानअलाइन्ड वर्ल्ड : सर्च फॉर ए न्यू आर्डर—हरि जयसिंह
- नान-अलाइनमेन्ट : पर्सपेक्टिव्स एण्ड प्रासपेक्ट्स—यू. एस. बाजपेई

■ निर्वाचन व नियुक्तियाँ

- इन्द्रजीत सिंह—मेडगास्कर में भारतीय राजदूत
- डा. आर. ए. सज्जाद—ओमॉन में भारतीय राजदूत
- डी. पी. माडोन—न्यायाधीश, सर्वोच्च न्यायालय
- एस. मुखर्जी—न्यायाधीश, सर्वोच्च न्यायालय
- एम. पी. ठक्कर—न्यायाधीश, सर्वोच्च न्यायालय
- आर. मिश्र—न्यायाधीश, सर्वोच्च न्यायालय
- रियर एडमिरल तारिक कमाल खान—पाकिस्तान के नौसेनाध्यक्ष
- बाब हॉक—प्रधानमन्त्री, आस्ट्रेलिया
- हेल्मुट कोल—प्रधानमन्त्री, पश्चिम जर्मनी (पुर्ननिर्वाचित)
- सुहार्तो—राष्ट्रपति, इण्डोनेशिया (पुर्ननिर्वाचित)
- उमर विराहीखुसुमाला—उपराष्ट्रपति, इण्डोनेशिया
- वीरेन्द्र बहादुर सिंह—सभापति, उत्तर प्रदेश विधान परिषद
- जगदीश राना—भारत में नेपाल के राजदूत
- वासिली एन. रिकोव—भारत में सोवियत संघ के राजदूत
- के. टी. सतारावाला—लेफ्टि. गर्वनर, गोवा, दमन, द्वीव
- ब्रिगटन बुहाई लिंगदोह—मुख्यमन्त्री, मेघालय
- हितेश्वर साइकिया—मुख्यमन्त्री, असम
- श्रीमती इन्दिरा गान्धी—अध्यक्ष, गुट निरपेक्ष आन्दोलन
- डेविड मैकडावेल—भारत में न्यूजीलैण्ड के राजदूत (1982 में नईदिल्ली में स्थित न्यूजीलैण्ड के दूतावास को बन्द कर दिया गया था। उपर्युक्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजदूत अपने देश में ही रहेंगे तथा समय समय पर भारत आयेंगे।)

पदत्याग व पदनिवृत्ति

● मार्शल ये यांगयिंग—चीन के संसद के स्टेंडिंग कमिटि के अध्यक्ष

● माइकेल फ्रेजर—प्रधानमन्त्री, आस्ट्रेलिया

● फिडल कास्ट्रो—अध्यक्ष, गुट-निरपेक्ष आन्दोलन

निधन

● रबेका वेस्ट—सुप्रसिद्ध ब्रितानी लेखिका व पत्रकार

● कैथी बरबेरीमन—सुप्रसिद्ध अमेरिकी अंवा गार संगीतकार

● इगोर मारकेविच—प्रख्यात फ्रांसिसी संगीत रचयिता व निर्देशक

● जार्जेस रेमी—विश्वचर्चित 'टिन-टिन' कॉमिक के रचयिता

● आर्थर कोएस्टलर— सुप्रसिद्ध ब्रितानी लेखक

● वालेरी टारसिस—प्रख्यात सोवियत लेखक

● कोबिता सरकार (रीता सेन)—प्रख्यात फिल्म समीक्षक व लेखिका

● नन्दा तलुकदार—सुप्रसिद्ध असमी लेखक

● कैरेन कारपेन्टर—पॉप संगीत की प्रख्यात गायिका

● गारिन्चा—प्रख्यात ब्राजीली फुटबाल खिलाड़ी

● टेनीसी विलियम्स—सुप्रसिद्ध अमेरिकी नाटककार

● अन्द्रेइ बोयल्ट—प्रख्यात ब्रितानी संगीत निर्देशक

● भानु बन्दोपध्याय—बंगाली फिल्म के सुप्रसिद्ध हास्य अभिनेता

प्रमुख अतिथि

● 7 मार्च 83 से नई दिल्ली में आयोजित सातवें गुट निरपेक्ष शिखर सम्मेलन में भाग लेने के लिये 97 सदस्य राष्ट्रों तथा 26 पर्यवेक्षकों के नरेश, राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, प्रधानमन्त्री, विदेशमन्त्री तथा अन्य प्रमुख प्रतिनिधियों का भारत आगमन हुआ था। उनकी सूची स्थानाभाव के कारण प्रकाशित करना सम्भव नहीं है। सं. रा. संघ के महासचिव जेवियर डी पेरेज कुएलर का नाम केवल उल्लेख करना सम्भवत अनुचित न होगा।

पुरस्कार व सम्मान

● टेम्पेलटन पुरस्कार—सं. रा. अमेरिका में निर्वासित जीवन व्यतीत कर रहे रूसी लेखक अलेकजन्डर सोलजनित्सिन को वर्ष 1983 के टेम्पलटन पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार धर्म के विकास में महत्व पूर्ण योगदान प्रदान करने वाले को प्रत्येक वर्ष दिया जाता है।

● भुवालकर पुरस्कार—संगीत के क्षेत्र में उल्लेखनीय साधना के लिये प्रदान किये जाने वाले भुवालकर पुरस्कार से विष्णुपुर घराने के प्रसिद्ध संगीत शिल्पी गोकुल चन्द्र नाग को सम्मानित किया गया।

● बर्नीनेल पुरस्कार—उपलेन्दु चक्रवर्ती द्वारा निर्देशित फिल्म 'चोख' को इन्टरनेशनल फोरम ऑव यंग सिनेमा 'बर्नीनेल' में सर्वोत्तम फिल्म घोषित किया गया।

● रामेश्वर दास बिरला पुरस्कार—बल्लभभाई चेष्ट इन्स्टीट्यूट के निदेशक डा. ए. एस. पटेल को चिकित्सा एवं चिकित्सा से सम्बद्ध अन्य क्षेत्रों में महत्वपूर्ण अनुसंधान कार्य के लिये रामेश्वर दास बिरला पुरस्कार प्रदान किया गया है।

● डाइरेक्टर्स गिल्ड ऑव अमेरिका पुरस्कार—हालीवुड स्थित डाइरेक्टर्स गिल्ड ऑव अमेरिका ने चर्चित फिल्म 'गांधी' के निर्देशन के लिये ब्रितानी फिल्म निर्माता व निर्देशक रिचर्ड एटनबरो को सर्वश्रेष्ठ निर्देशक का सम्मान प्रदान किया।

चर्चित व्यक्ति

● जगजीत सिंह चौहान—11 मार्च 83 को सं. रा. अमेरिका की सरकार ने खालिस्तान आन्दोलन के नेता जगजीत सिंह चौहान को अमेरिका प्रवेश के लिये वीसा प्रदान करने का विवादास्पद निर्णय लिया। भारत ने इस प्रश्न पर अपनी नाराजगी प्रकट की है।

● सुहार्तो—10 मार्च 83 को इण्डोनेशिया के राष्ट्रपति सुहार्तो चौथी बार अगले पांच वर्षों के लिये पुनः राष्ट्रपति चुने गये। 1966 से इस पद पर आसीन सुहार्तो इस बार भी निर्विरोध चुने गये।

● मोख्तार हाशिम—मलेशिया के उच्चन्यायालय ने मलेशिया के संस्कृति, युवा एवं खेल मन्त्री मोख्तार हाशिम को अपने निर्वाचन प्रतिद्वन्दी के हत्या के आरोप में फांसी की सजा प्रदान किया है।

● हेल्मुट कोल—6 मार्च 83 को पुनः निर्वाचित प. जर्मनी के प्रधानमन्त्री हेल्मुट कोल नाटो को शक्तिशाली बनाने की प्रस्तावित योजना के कारण काफी चर्चित बने।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

● जोशुआ एनकोमो—जिम्बाब्वे के विरोधी दल-जापू पार्टी के नेता डा. जोशुआ एनकोमो को सरकार के विरुद्ध असन्तोष फैलाने के आरोप में नजरबन्द किया गया था। राबर्ट मुगाबे सरकार से जान का खतरा होने के कारण देश से भागकर अब उन्होंने ब्रिटेन में आश्रय लिया है।

■ चर्चित स्थल

● कच्छ—तेल व प्राकृतिक गैस आयोग ने गुजरात स्थित कच्छ जिले में तेल व प्राकृतिक गैस के विशाल भण्डार का पता लगाया है।

● फापुन—पाक अधिकृत कश्मीर में स्थित फापुन में हिमस्खलन से 100 से अधिक व्यक्तियों की मृत्यु हुई।

● गान्सु—चीन के उत्तर पश्चिमी प्रान्त गान्सु में बर्फ की भारी चट्टानें गिरने के फलस्वरूप 270 व्यक्तियों की मृत्यु हुई।

● जोगुलडाक—8 मार्च 83 को उत्तरी टर्की के जोगुलडाक नामक स्थान में कोयले के खान में गैस विस्फोट से 06 खदान मजदूरों की मृत्यु हुई तथा 100 मजदूर घायल हुए।

● आस्ट्रेलिया—5 मार्च 83 को आस्ट्रेलिया में सम्पन्न निर्वाचन में लेबर दल विजयी होकर 9 वर्ष पश्चात पुनः सत्ता में आयी। लेबर दल के नेता बॉब हॉक ने राष्ट्रीय सरकार का गठन किया।

■ अन्तरिक्ष अनुसन्धान

● विकास—भारत द्वारा देश में ही उपग्रह प्रक्षेपण क्षमता विकसित करने के प्रयासों का ऊंचे दबाव वाले लिक्विड राकेट इंजन के विकास से काफी सफलता मिली है। इसरो के वैज्ञानिकों ने इस इंजिन का विकास किया है और इसका नाम 'विकास' रखा है। यह इंजिन ध्रुवीय उपग्रह प्रक्षेपण वाहन में लगाया जायेगा जिसके माध्यम से भारत का 1000 कि. ग्रा वाला दूर संग्राही उपग्रह ध्रुवीय कक्षा में स्थापित किया जा सकेगा। यह ध्रुवीय कक्षा 900 कि. मी की दूरी पर होगा। यह दूर संग्राही उपग्रह 1987-88 में प्रक्षेपित किया जायेगा।

■ प्रतिरक्षा

● ए. एन. 32 विमान—भारतीय वायु सेना विश्व की पहली वायु सेना होगी जिसे इस वर्ष के मध्य तक सोवियत संघ के आधुनिकतम् सैनिक परिवहन विमान ए. एन. 32 मिलना प्रारम्भ हो जायेगा। बाद में यह विमान कानपुर स्थित हिन्दुस्तान एरोनेटिक्स लि. में निर्मित किया जायेगा।

● आर 23 आर. गाइडेड मिसाइल—भारत ने एयर टु एयर आर. 23 आर. गाइडेड मिसाइल को अपने सैन्य साजसज्जा में सम्मिलित कर लिया है। इन मिसाइलो को एयर बार्न रॅडार से संचालित किया जाता है।

■ योजना/परियोजना

● ककारपार परमाणु उर्जा संयन्त्र—गुजरात स्थित ककारपार में भारत का पांचवां परमाणु उर्जा संयन्त्र केवल देशी उपकरणो की सहायता से बनाया जायेगा। इस परमाणु संयन्त्र का कार्य 1982 में ही प्रारम्भ हो गया है। इसमें 235 मेगावाट की दो इकाइयाँ होगी।

● कोरबा सुपर ताप विद्युत परियोजना—1 मार्च 83 से मध्य प्रदेश में स्थित कोरबा सुपर ताप विद्युत परियोजना के 200 मेगावाट की प्रथम इकाई ने विद्युत उत्पन्न करना प्रारम्भ किया है। 2100 मेगावाट के इस सुपर ताप विद्युत परियोजना का सम्पूर्ण कार्य 1989 तक 6 चरणों में समाप्त होगा। यह संयन्त्र परियोजना नेशनल थर्मल पॉवर कार्पोरेशन के देख-रेख में निर्मित हो रहा है।

■ विविधा

● इण्डियन एग्रीकल्चर इन्स्टीट्यूट ने इस समय सर्वाधिक लोकप्रिय गेहूं की वैराइटी 'सोनालिका' को प्रतिस्थापित करने के लिये एक नये वैराइटी एच. डी. 2285 का विकास किया है। इससे प्रति हैक्टर 50 से 55 क्विन्टल गेहूँ की पैदावार हो सकेगी। ● नार्वे ने 20 वर्ष के पश्चात सोवियत संघ के साथ लगे 145 कि. मी. की सीमा को स्थानीय यातायात के लिये खोलने का निर्णय लिया है। ● आइवरी कोस्ट की सरकार ने देश की राजधानी अबिदजान को बदल कर याम्माऊस्सोक्रो (Yammoussoukro) ले जाने निश्चय किया है।

■ महत्वपूर्ण आंकड़े

● वर्ष 1982-83 में 34 उद्योगों में क्षमता के उपयोग में भारी कमी आयी।

● वर्ष 1982-83 में ट्रेक्टर, रेल वैगन, कागज व लुगदी मशीनरी, एयर कंडीशनर, विद्युत ट्रान्समीटर, स्कूटर व ट्रेक्टर टायर, डीजल इंजन,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बैटरी, व्यावसायिक वाहन, कार, बाई-सिकिल, बाल व रोलर बियरिंग, विस्कोस स्टेपल फाइबर के उत्पादन में भारी गिरावट आयी।

● वर्ष 1982 में हिमालय क्षेत्र में 222 पर्वतारोहण दल अभियान में गये। इसमें जापान का योग सर्वाधिक रहा। 222 पर्वता रोहण दल में 152 भारतीय व 70 नेपाली क्षेत्र से गये।

● फरवरी 83 में तेल के मूल्य वृद्धि से केन्द्र सरकार को 800 करोड़ रु. की अतिरिक्त आय होगी।

● सम्पूर्ण भारत में 17.5 लाख भिखारी हैं। सर्वाधिक भिखारी (50 हजार) कलकत्ता में हैं।

● फरवरी 83 में भारत ने मॉरीशेंस को 5 करोड़ रु. का ऋण प्रदान करने का निर्णय लिया है।

● विभिन्न न्यायालयों में विचाराधीन उत्पादन शुल्क सम्बन्धित मामलों के कारण सरकार का 1900 करोड़ रु. अटका पड़ा है। सर्वोच्च न्यायालय व उच्चन्यायालय में क्रमशः 650 तथा 3400 ऐसे मामले विचाराधीन है।

● वर्ष 1981-82 के कृषि उत्पादन के रिकार्ड वर्ष में कृषि का विकास दर 5.5% था जबकि छठी योजना में यह 4% निर्धारित किया गया था।

● वर्ष 1981-82 में देश की राष्ट्रीय आय में 5% की वृद्धि हुई जबकि 1980-81 में यह वृद्धि 8% थी। वर्ष 1981-82 में राष्ट्रीय आय स्थिर मूल्य पर (1970-71 आधार) तथा वर्तमान मूल्य पर क्रमशः 49,687 करोड़ रु. तथा 121,243 करोड़ रु. रही।

● भारत सरकार ने वर्ष 1982-83 में पांच पांच अरब के तीन ऋण जारी किए है।

● भारत में लगभग 5 लाख लोग ऐसे है जो कि पुर्णतः अन्धे हैं।

● असम को छोड़कर शेष भारत में विकलांगों की संख्या इस समय 11.20 लाख है।

● 1945 से अब तक 1000 से भी अधिक परमाणु परीक्षण किये जा चुके हैं। इनमें सर्वाधिक परीक्षण अमेरिका (638) तथा सोवियत संघ (398) ने किया है।

● भारतीय तेल निगम 1983 में 10 लाख टन तेल का निर्यात करेगा।

● आस्ट्रेलिया एवं न्यूजीलैण्ड ने मार्च 83 के द्वितीय सप्ताह में डालर का अवमूल्यन किया है।

● भारत में इस समय चल रहे 19 सिंचाई परियोजनाओं को विश्व बैंक से 195.90 करोड़ डालर का ऋण मिला है।

● विश्व बैंक ने ऋण लेने वाले विकासशील राष्ट्रों के लिये शुल्क 0.75%से घटा कर 0.25% कर दिया है।

● 1971 की जनगणना के अनुसार, भारत में बेघरों की संख्या 1985761 थी।

● दिसम्बर 82 तक भारत के पास 407 व्यापारिक जहाज थी।

● 1982 में भारत में 12,86079 विदेशी पर्यटक आये थे। पिछले तीन वर्षों में पर्यटन से भारत ने 1934 करोड़ रु. (1982 में अनुमानित 750 करोड़ रु.) की विदेशी मुद्रा अर्जित किया।

● 1982 में आर्थिक दृष्टि से कमज़ोर लोगों को 81000 आवास उपलब्ध कराये गये।

● 1981 व 1982 में राष्ट्रीयकृत बैंकों की 102 शाखाएं लूटी गयी और 213.2 लाख नकद व 33.8 लाख मूल्य का सोना लूटा लिया गया।

● दिसम्बर 82 के अन्त तक सभी शेड्यूल्ड व्यापारिक बैंकों में जमाराशि 50671 करोड़ रु. थी जबकि 1969 में 14 व्यापारिक बैंकों के राष्ट्रीयकरण के पूर्व उनमें जमाराशि 4669 करोड़ रु. थी।

● विभिन्न एजेन्सियों ने पिछड़े हुए ग्रामीण क्षेत्रों के 3975 गांवों को उनके शीघ्रातिशीघ्र विकास करने के लिये अपनाया है।

● 1982 में 474 साम्प्रदायिक दंगों में 238 व्यक्तियों (1981 में 196 व्यक्ति) की मृत्यु हुई।

● अब तक सर्वाधिक विवाह विच्छेद प. बंगाल व दिल्ली में हुआ है।

● भारत में इस समय 11289 सिनेमा घर है।

● 1981 के अन्त में टाटा व बिरला औद्योगिक घरानों की सम्पत्ति क्रमशः 1840.16 करोड़ रु. (1980 में 1538.97 करोड़ रु.) व 1691.69 करोड़ रु. (1980 में 1309.9 करोड़ रु.) थी। भारत के प्रथम 20 घरानों औद्योगिक घरानों की कुल सम्पत्ति 8987.07 करोड़ रु. थी।

● भारत में भूक्षरण के कारण प्रति वर्ष 60000 मिलियन टन मृदा का ऊपरी भाग नष्ट हो रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

• 1982-83 में केन्द्र सरकार ने 710 करोड़ रु. अनाज के परिदाय (Food Subsidy) पर व्यय किया है।

• 1983-84 के दौरान भारत को प्रदान किये जाने वाले आर्थिक सहायता में प. जर्मनी 6% की कटौती होगी।

• अगले तीन वर्षों में पाकिस्तान को अरब राष्ट्रों से बिलियन डालर की सामरिक सहायता प्राप्त होगी।

• 31 दिसम्बर 82 को भारत पर 29033 करोड़ रु. (अमुको ऋण सहित) का ऋण का बोझ था। विश्व के सर्वाधिक ऋणग्रस्त 13 विकासशील राष्ट्रों में भारत का चौथा स्थान है।

• 1981-82 में भारत ने 727.26 करोड़ रु. (1982-83 में अनुमानित 940 करोड़ रु.) के हीरों का निर्यात किया है।

• 1982 में भारत में 905 रेल दुर्घटनाएं हुई।

• 1982 में 590 विदेशी सहयोगों की स्वीकृति प्रदान की गयी।

• 1982-83 के दौरान गांवों में 50000 व्यक्ति विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं।

• 1980-82 के मध्य 12120 बिना लाइसेंस वाले हथियार पकड़े गये। सर्वाधिक हथियार उ. प्र. में पकड़े गये।

• परमाणु ऊर्जा के कार्यक्रम के लिये भारत ने अब तक 81.70 करोड़ रु. की लागत से 547.6 टन भारी जल का आयात किया है।

• 2 मार्च 83 को भारत ने अ. मु. को से एस. डी. आर. 610 करोड़ से अधिक राशि की एक और किश्त निकाली है। अब भारत को एस. डी. आर. 300 करोड़ और निकालना है। दिसम्बर 81 से 1983 के मध्य तक भारत अ. मु. को से एस. डी. आर. 2.7 अरब निकाल लेगा।

• 1982 में देश भर में 557 हरिजन महिलाएं बलत्कार की शिकार हुई।

• भारतीय रिजर्व बैंक ने व्यावसायिक बैंकों के ऋणों की दर में 1½ प्रतिशत आम कमी कर इसकी अधिकतम सीमा 18 प्रतिशत निश्चित कर दिया है।

• 1982 के अन्त तक देश भर 152338 बंधुआ मजदूर थे। 1982 में 30350 बंधुआ मजदूरों का पुनर्वास किया गया।

• 1983-84 में भारत 17.7 मिलियन टन कच्चा तेल ईरान, इराक, सौदी अरब, यू. ए. इ., सोवियत संघ व वेनेजुएला से आयात करेगा।

• छठें योजना के अन्त तक भारत में कच्चे तेल का उत्पादन 105.24 मिलियन मैट्रिक टन होने का अनुमान है।

• 1082-83 के दौरान कच्चे तेल के आयात के फलस्वरूप 4497 करोड़ रु. (1981-82 में 4978 करोड़ रु.) की विदेशी मुद्रा का व्यय हुआ।

• 1982-83 में देश में लिक्विड पेट्रोलियम गैस का उत्पादन 6.77 लाख टन (1983-84 में अनुमानित 8.4 लाख टन) हुआ।

• जून 1982 तक देश के विभिन्न उच्चन्यायालयों में तीन वर्षों से अधिक अवधि के विचाराधीन मुकदमों की संख्या 271062 है।

• 1982-83 में भारत ने अमेरिका से 39.5 लाख टन गेहूँ के आयात के लिये समझौता किया था।

• इस समय विद्युत के भयंकर अभाव से सर्वाधिक प्रभावित राज्य केरल, तमिलनाडु, कर्नाटक, पश्चिम बंगाल है। महाराष्ट्र, राजस्थान, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, जम्मू कश्मीर में भी विद्युत की स्थिति सन्तोषजनक नहीं है।

• रीगन प्रशासन ने 1984 के लिये भारत को 209 मिलियन डालर की सहायता का प्रस्ताव रखा है। इसमें 86 मिलियन डालर विकास सहायता के रूप में तथा 123 मिलियन डालर पी. एल. 480 के अन्तर्गत प्राप्त होना है।

• 1982 में विश्व के विभिन्न विमान सेवाओं को 2 बिलियन डालर की हानि हुई। 1982-83 में एयर इण्डिया ने 3 एयर बस, 3 बोइंग 707 व 10 बोइंग 747 विमान की सहायता से अनुमानित 35 करोड़ रु. का लाभ अर्जित किया।

• छुपाई गयी आय का सूचना देने के लिये 1981-82 में सरकार द्वारा 20.07 लाख रु. की राशि पुरस्कार स्वरूप प्रदान की गयी।

• 1982 में विश्व के 25 राष्ट्रों में 294 परमाणु ऊर्जा संयन्त्र द्वारा 170108 मेगावाट विद्युत उत्पन्न किया गया। देश के कुल विद्युत उत्पादन का सर्वाधिक अंश (40 प्रतिशत) परमाणु ऊर्जा संयन्त्र से प्राप्त करने वाला फिनलैण्ड था।

• भारत में इस समय 5470 कि. मी. रेलवे मार्ग (कुल रेलवे मार्ग का 8.93 प्रतिशत) का विद्युतीकरण हो चुका है। इस समय मुख्य ट्रंक रेलवे मार्गों में केवल कलकत्ता-दिल्ली के मध्य रेलवे मार्ग का विद्युतीकरण हो चुका है तथा 1985 तक दिल्ली-बम्बई मार्ग के मध्य विद्युतीकरण हो जायेगा। 2000 ई. तक शेष मुख्य ट्रंक रेलवे मार्गों—बम्बई-मद्रास, दिल्ली-मद्रास, बम्बई-कलकत्ता, कलकत्ता-मद्रास का विद्युतीकरण सम्पूर्ण होने की सम्भावना है। • •

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन्दर्भ : गुटनिरपेक्ष आंदोलन

□ उर्मिला लाल*

नयी दिल्ली सम्मेलन : एक समीक्षा

गुटनिरपेक्ष देशों का सातवां शिखर सम्मेलन दो सप्ताह पूर्व नयी दिल्ली में समाप्त हुआ है। लगभग 100 सदस्यों वाले इस आन्दोलन का नया अध्यक्ष श्रीमती गाँधी को चुना गया है। पिछले अंक में आपने 'गुटनिरपेक्ष आन्दोलन : बेलग्रेड से नयी दिल्ली तक' नामक लेख में नयी दिल्ली सम्मेलन से पूर्व तक के गुटनिरपेक्ष आन्दोलन का लेखा-जोखा पढ़ा। यहाँ प्रस्तुत है नयी-दिल्ली सम्मेलन तथा वार्ता के दौरान उभर कर आये विभिन्न समीकरणों की अलोचनात्मक समीक्षा।

—सम्पादक

एक सप्ताह के बहुपक्षीय विचार-विमर्श के उपरान्त गुटनिरपेक्ष देशों का सातवां सम्मेलन 12 मार्च को नयी दिल्ली में समाप्त हो गया। निश्चित रूप से, सम्मेलन के सफल आयोजन के लिये भारतीय आयोजक बधाई के पात्र हैं किन्तु विश्व-राजनीति की विभिन्न विसंगतियों के परिप्रेक्ष्य में, सम्मेलन के दौरान विभिन्न विषयों पर हुयी चर्चा किस सीमा तक प्रभावकारी सिद्ध होगी, इसका मूल्यांकन कुछ समय के उपरान्त ही किया जा सकेगा। सम्मेलन के उपरांत पृथक-पृथक विषयों पर विस्तृत घोषणापत्र जारी किये गये हैं जिनमें विश्व शांति (World Peace) निःशस्त्रीकरण (Disarmament) तथा एक 'संतुलित विश्व आर्थिक व्यवस्था' (Balanced World Economic Order) की चर्चा की गयी है।

नई दिल्ली सम्मेलन की सबसे विशिष्ट बात यह रही कि सम्मेलन के दौरान निवर्तमान विश्व राजनीति के 'विशिष्ट' या 'पहचान योग्य' (Specific Identifiable) मुद्दों पर व्यावहारिक चर्चा हुयी, जैसे: फिलिस्तीनी समस्या, ईरान-इराक युद्ध, नामीबिया की स्वतंत्रता ,आदि। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि 6 सम्मेलनों (बेलग्रेड, 1-6 सितम्बर, 1961; काहिरा 5-10 अक्टूबर, 1964; लुसाका, 6-10 सितम्बर, 1970; अल्जीयर्स, 5-9 सितम्बर, 1973; बेलग्रेड, 16-19 अगस्त, 1976, हवाना, 7-11 मार्च 1979) के माध्यम से 22 वर्षों की यात्रा करने के उपरान्त गुटनिरपेक्ष आन्दोलन का स्वरूप सैद्धान्तिक से क्रमशः व्यावहारिकता की ओर उन्मुख हो रहा है। 1979 में प्रकाशित एक प्रपत्र 'विदर नॉनएलाइण्ट मूवमेंट' में गुटनिरपेक्ष आन्दोलन के विसंगतियों की चर्चा करते हुए आन्दोलन के समक्ष कुछ संकटों की चर्चा की गई थी। जैसे सदस्यता के मापदण्ड का संकट; पृथक पहचान का संकट आदि पर। बेलग्रेड तथा हवाना सम्मेलनों की वार्ता की निरपेक्ष समीक्षा को मद्देनजर रखते हुए, इस प्रकार का दृष्टिकोण सर्वथा उचित था क्योंकि बेलग्रेड सम्मेलन के दौरान सदस्य देशों के वॉशिंग्टन, मॉस्को तथा बीजिंग के साथ राजनैतिक तथा सैनिक सम्बन्ध, उपस्थित सदस्यों के मध्य ठोस वार्ता में प्रमुख अवरोध रहे। दक्षिणी अफ्रीका में क्यूबा की गतिविधियों के कारण जहाँ एक ओर उसे 'सोवियत संघ का पिछलग्गू' (Toeing the Soviet Line) कहा गया, वहीं कम्बोडिया पर चीनी नेतृत्व का अंधानुकरण करने का आरोप सदस्य राष्ट्रों द्वारा लगाया गया था। बेलग्रेड सम्मेलन में क्यूबा ने भी कुछ अन्य सदस्य राष्ट्रों, विशेष रूप से ओमान, मोरक्को, जैरे, सोमालिया, मिस्र तथा कम्बोडिया, पर महाशक्तियों से

*अनुसंधात्री, अन्तराष्ट्रीय राजनीति, काशी विद्यापीठ, वाराणसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...मण' का आरोप लगाया था। इसी प्रकार हवाना ...लन के दौरान 1978 के 'कैम्प डेविड' समझौते ...विशेष में, वॉशिंग्टन के साथ काहिरा के गठबन्धन ...की निंदा की गयी थी और इस बात की भी चर्चा ...थी कि मिस्र की सदस्यता औपचारिक रूप से ...कर दी जाये। इन सब तथ्यों का उल्लेख करने ...उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि नयी दिल्ली ...लन में इन सब बातों पर अधिक विवाद ...होकर विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में पनप रही शांति ...विसंगतियों की अधिक चर्चा की गयी। ऐसा ...है कि इस प्रकार का विवाद हुआ ही न हो, किन्तु ...स्थित सदस्यों ने एक-दूसरे की निन्दा करने जैसी

के राजनीतिक तथा आर्थिक घोषणा पत्र, श्रीमती इन्दिरा गाँधी के अध्यक्षीय भाषण तथा आन्दोलन के पूर्व अध्यक्ष फिदेल कैस्ट्रो द्वारा प्रस्तुत दो रिपोर्टों (पहले हवाना सम्मेलन से नयी दिल्ली सम्मेलन के 4 वर्षों के अंतराल में आन्दोलन की गतिविधियों तथा दूसरी, निवर्तमान विश्व के आर्थिक तथा सामाजिक संकटों के विषय में) का मूल्यांकन किया जाये तो यह कहा जा सकता है कि द्वि-पक्षीय तथा कुछ विशिष्ट मसलों पर परस्पर वैभिन्नपूर्ण दृष्टिकोण के बावजूद, साम्राज्यवाद, उपनिवेश तथा नव-उपनिवेशवाद एवं रंगभेद के विरोध में आज भी आंदोलन के सभी राष्ट्र एकमत हैं और पाठकों को ज्ञातव्य हो कि इन चार तत्वों का विरोध

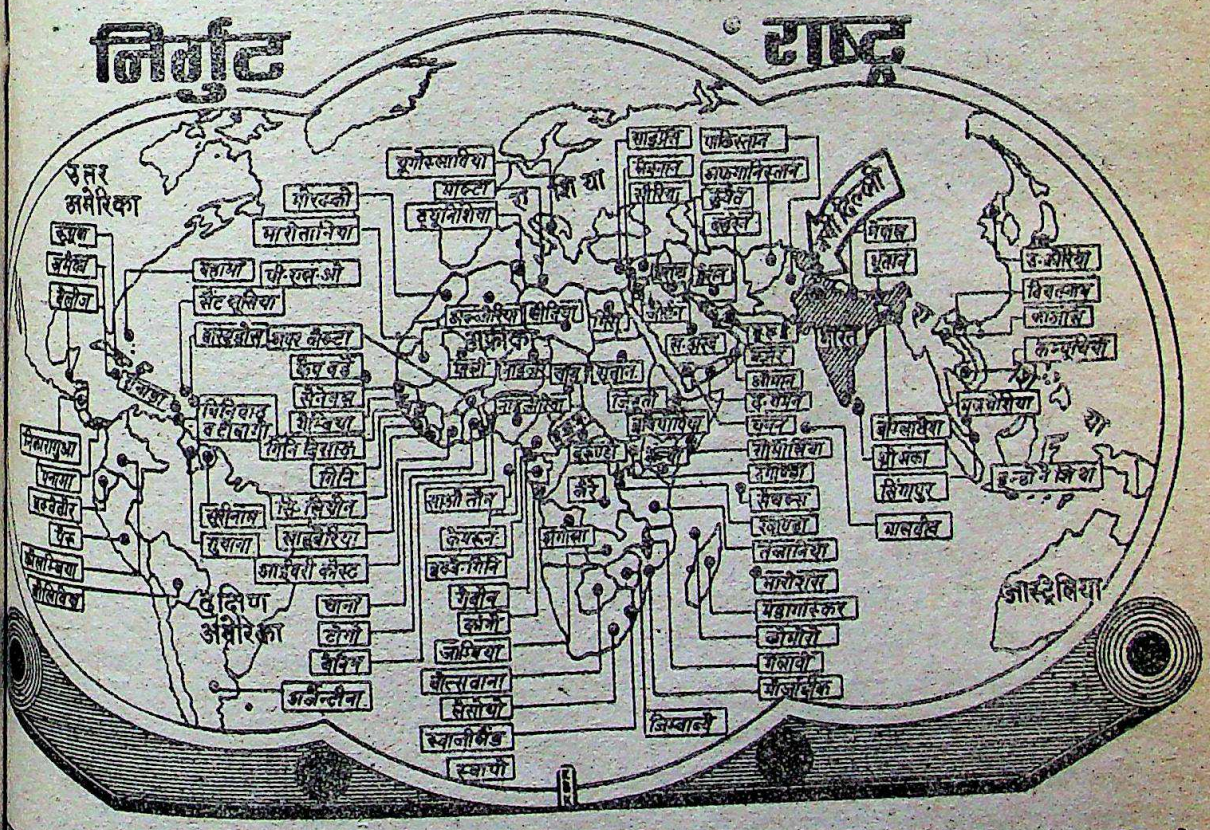

...कारी प्रवृत्ति के स्थान पर विश्व की भावी शांति ...ताओं तथा समान एवं संतुलित आर्थिक व्यवस्था ...पन में अधिक रुचि प्रदर्शित की। इस प्रकार ...दिल्ली सम्मेलन ने निश्चय ही गुटनिरपेक्ष ...लन को एक ठोस आधार प्रदान किया है। ...सम्मेलन की समाप्ति पर जारी 120 पृष्ठों

गुटनिरपेक्ष-गुट की सदस्यता के लिये एक अनिवार्य आवश्यकता है।

सम्मेलन के दौरान मुख्य रूप से फिलिस्तीनी समस्या तथा उसके दौरान प्रदर्शित इस्रायली उग्रवादिता, ईरान-इराक युद्ध, कम्पूचिया तथा दक्षिण अफ्रीका द्वारा प्रदर्शित रंगभेद की नीति पर विस्तृत विचार किया गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिलिस्तीनी समस्या के प्रति दृष्टिकोण तथा बेरूत नरसंहार के लिये इस्राइल की कटु आलोचना की गयी। बल्कि यह कहा जाये कि पूरे सम्मेलन के दौरान फिलिस्तीनी स्वायत्तता के प्रति इस्राइल तथा नामीबिया की स्वतंत्रता के प्रति दक्षिण अफ्रीकी दृष्टिकोण कि सर्वाधिक कठोर शब्दों में भर्त्सना की गयी। सम्मेलन के दौरान पश्चिमी एशिया में स्थायी शांति के लिये रीगेन योजना की तुलना में फेज योजना को स्वीकार किया गया। एक आठ-सदस्यीय समिति के निर्माण का भी निर्णय लिया गया जो पश्चिमी एशिया में शांति की स्थायी संभावनाओं का अध्ययन करेगी। इसी प्रकार सम्मेलन के उपरांत जारी राजनीतिक घोषणापत्र में सबरा तथा छित्तला नरसंहार के लिये इस्राइल को दोषी माना गया है।

सम्मेलन में, कम्पूचिया के प्रतिनिधित्व के प्रश्न पर यथेष्ट वाद-विवाद हुआ। सम्मेलन के प्रारम्भ होने के ठीक पूर्व सदस्य राष्ट्रों के विदेशमंत्रियों की बैठक में मात्र 31 सदस्यों ने पोलपॉट को, कम्पूचिया का प्रतिनिधित्व दिये जाने की बात का समर्थन किया जबकि शेष न या तो हेंग सामरिन सरकार का अथवा कम्पूचिया का स्थान फिलहाल खाली रखने का समर्थन किया। यहाँ उल्लेखनीय है कि इसके पूर्व संयुक्त राष्ट्र में मतदान के दौरान 52 गुटनिरपेक्ष देशों ने पोलपोट सरकार का समर्थन किया था। इनमें से कम से कम 21 देश, कम्पूचिया के स्थान पर बहस के दौरान मौन रहे। पर्यवेक्षकों का ऐसा अनुमान है कि मतदान-व्यवहार में इस प्रकार का विभेद अमरीकी दृष्टिकोण के कारण हुआ क्योंकि संयुक्त राष्ट्र के अनेक विकासशील देशो को अमरीकी सहायता--आर्थिक तथा सैनिक—के साथ ही साथ प्रत्येक अन्तर्राष्ट्रीय तथा वैदेशिक विषयों पर अमरीकी दृष्टिकोण के समर्थन के भी अनुदेश दिये जाते रहे हैं। इस स्थान पर, सातवें गुटनिरपेक्ष सम्मेलन के प्रति अमरीकी दृष्टिकोण कि संक्षिप्त चर्चा शायद विषय संगत होगी।

नयी दिल्ली सम्मेलन में राष्ट्रों का एक अल्पमत वर्ग काफी सक्रिय रहा। 20-25 सदस्यों का यह वर्ग, सैनिक तथा आर्थिक रूप से अमरीका के साथ गठबंधित है। यह वर्ग सम्मेलन के औपचारिक रूप से प्रारम्भ होने के पूर्व से ही अमरीका-समर्थक वर्ग (Pro-American Lobby) के रूप में—सम्मेलन की कोई ठोस उपलब्धि न हो—कम से कम उन मुद्दों पर जहाँ अमरीकी दृष्टिकोण के विरोध की संभावना हो—हेतु प्रयास रत हो गया था। पहले इस वर्ग ने समन्वय (Coordinating) तथा मंत्रिमण्डलीय (Ministerial) ब्यूरों की बैठकों में कम्पूचिया तथा अफगानिस्तान के मसलों को आवश्यकता से अधिक तूल देने का प्रयास किया किन्तु इसमें असफल होने के उपरान्त इसने विभिन्न राजनीतिक तथा आर्थिक समितियों की बैठकों को प्रभावित करने का प्रयास किया। निश्चित रूप से, इस लॉबी की यह गतिविधि सोद्देश्यपूर्ण थी। इसका समग्र उद्देश्य आंदोलन की साम्राज्यवाद विरोधी-प्रवृत्ति (Anti-imperialist Strain) को कमजोर करना था; क्योंकि सिंगापुर ने नयी दिल्ली सम्मेलन के दौरान जिस प्रकार की भूमिका का निर्वाह किया और आंदोलन की तुलना एक 'ब्रॉथल एरिया' (Brothel Area) से की, उसे देखते हुए और क्या कहा जा सकता है? यदि, गुटनिरपेक्ष आंदोलन के पिछले कुछ वर्षों के इतिहास-क्रम का मूल्यांकन किया जाये तो यह सहज ही स्पष्ट है कि अमरीका द्वारा लॉबी के प्रत्येक सदस्य को, आंदोलन को निर्बल बनाने हेतु अलग-अलग भूमिकाएँ सौंपी गयी थीं। उदाहरण के लिये सिंगापुर का कार्य था कम्पूचिया के मसले को उलझाये रखने का प्रयास करना ताकि इस पर कोई ठोस निर्णय न हो सके और सिंगापुर ने यह दायित्व 'भली-भाँति' पूरा किया किन्तु इसके परिणाम स्वरूप सिंगापुर पूरे सम्मेलन से अलग-थलग पड़ गया; यहाँ तक कि 'लॉबी' के कुछ अन्य सदस्यों के लिये सिंगापुर की भूमिका का समर्थन करना मुश्किल हो गया। श्रीलंका की भूमिका अमरीकी नीति निर्धारकों द्वारा यह निर्धारित की गयी थी कि वह 'हिन्द महासागर तथा दियागो गार्शिया के मुद्दों पर सम्मेलन के दौरान लिये जाने वाले निर्णयों में नर्मी लाने का प्रयास करे ताकि हिन्दमहासागर के 'परमाणुकरण' (Nuclearization) की अमरीका द्वारा प्रस्तावित योजना के विरुद्ध कोई सशक्त विश्वमत न तैयार हो सके। पाकिस्तान की मुख्य भूमिका 'विश्वपरक मामलों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर आर्थिक घोषणापत्र को कमजोर करना रहा। जनरल जिया ने सम्मेलन के दौरान कश्मीर का जिक्र करके अपने परम्परागत 'भारतीय भय' को पुनः एक बार प्रकट किया। मिस्र सहित, अमरीकी 'लॉबी' के सभी सदस्यों ने अपने दायित्व को भली भांति पूरा किया। वॉशिंग्टन को वैसे भी नयी दिल्ली सम्मेलन से यथेष्ट संतुष्ट होना चाहिये। फिडेल कैस्ट्रो अब आंदोलन के अध्यक्ष नहीं रहे, श्रीमती गांधी, प्रत्येक स्थिति में अमरीकी दृष्टिकोण के अनुसार, कहीं अधिक नरम हैं। हो सकता है, अमरीका सम्मेलन के दौरान हुए वार्ताक्रम से कुछ दुःखी हो किन्तु जिस प्रकार से वार्ता के दौरान श्रीलंका ने मॉरीशस की दियागो गार्शिया की वापसी की माँग को हिन्द महासागर के 'गैर-शस्त्रीकरण' (De-militarization) करने के तथ्य से एकबद्ध नहीं होने दिया और जिस प्रकार से 'एसियान' देशों ने कम्प्यूचिया के मसले पर अमरीका-विरोधी निर्णय नहीं होने दिया, वॉशिंग्टन के संतुष्ट होने के यथेष्ट तथ्य सम्मेलन में विद्यमान थे।

सम्मेलन के राजनीतिक घोषणापत्र में यद्यपि अनेक मसलों पर सोवियत संघ तथा अमरीका-दोनों की कटु आलोचना की गयी है किन्तु रीगेन प्रशासन की इस्रायल तथा दक्षिण-अफ्रीका समर्थक दृष्टिकोण की तीव्र भर्त्सना की गयी है। मध्य अमरीका में साम्राज्यवादी प्रवृत्तियों के लिये भी वॉशिंग्टन की आलोचना की गयी।

सोवियत संघ की अपनी अलग चिंताएं थीं: क्या फिडेल कैस्ट्रो के अध्यक्ष न रहने पर गुटनिरपेक्ष देशों द्वारा अधिकांशतः सोवियत नीतियों का पहले की भाँति समर्थन किया जाता रहेगा? क्योंकि अफगानिस्तान में सोवियत सैनिक हस्तक्षेप तथा सतत् उपस्थिति का प्रश्न पूरे सम्मेलन में चर्चा का विषय बना रहा। पाठकों को ज्ञातव्य हो कि गुटनिरपेक्ष आंदोलन द्वारा कैस्ट्रो का 'नैसर्गिक मित्र' (Natural-ally) का सिद्धान्त पहले ही अस्वीकार किया जा चुका है। ऐसा ही दृष्टिकोण नयी अध्यक्षा श्रीमती गांधी के अध्यक्षीय भाषण में भी लक्षित हुआ। सम्मेलन शुरू होने के कुछ दिनों पूर्व भी भारत की ओर से नयी-दिल्ली सम्मेलन के संदर्भ में जो 'ड्राफ्ट' प्रसारित किया गया वह अपने स्वरूप में निश्चित रूप से मॉस्को की अपेक्षा के अनुरूप नहीं था किन्तु सोवियत संघ को यह संतोष निश्चित रूप से होना चाहिये कि कैस्ट्रो के पश्चात श्रीमती गाँधी अध्यक्षा हैं, न कि सिंगापुर के ली क्वान यू। राजनीतिक घोषणापत्र में मॉस्को को कहीं भी आक्रमणकारी (Aggressor) नहीं कहा गया है। अफगानिस्तान तथा कम्प्यूचिया के मामले को, अंतिम घोषणापत्र में मात्र कुछ पंक्तियाँ दी गयी है। घोषणापत्र में अनेक स्थानों पर 'अ-हस्तक्षेप' (Non-intervention and non-interference) की जोरदार तीमारदारी को देखते हुए, घोषणापत्र में अफगानिस्तान में 100,000 सोवियत सैनिक तथा कम्प्यूचिया में सोवियत समर्थन प्राप्त 1,80,002 वियतनामी सैनिकों की उपस्थिति का उल्लेख न किया जाना, सोवियत संघ को धैर्य बंधाने हेतु काफी है। जबकि उसी भाग में अमरीकी नीतियों की और यहाँ तक कि फॉकलैण्ड के मसले पर ब्रिटेन की खुलकर निंदा की गयी है।

सम्मेलन में ईरान-इराक युद्ध पर भी तीखी बहस हुयी: ईरान चाहता था कि पहले इराक को आक्रमणकारी करार दिया जाये तथा इराक द्वारा युद्धकारी मुआवजा दे देने के उपरांत ही तेहरान युद्ध रोकने जैसे विषय पर बातचीत करने को तैयार है। इन शर्तों से अपनी असहमति व्यक्त करते हुए, इराक ने आंठवें गुटनिरपेक्ष सम्मेलन के बगदाद में आयोजन का प्रस्ताव किया। पाठकों को स्मरण रहे कि 7वें सम्मेलन का पूर्व निर्धारित आयोजन स्थल बगदाद था किन्तु ईरान-इराक युद्ध के चलते अंतिम समय में इसे नयी दिल्ली में आयोजित किया गया। किन्तु, ईरान, जिसे कि सम्मेलन के दौरान सीरिया तथा लीबिया का खुला समर्थन मिला, ने इस प्रकार के प्रस्ताव पर असहमति व्यक्त की। समन्वयवादी प्रवृत्ति के भारत जैसे कुछ सदस्य राष्ट्र आठवें सम्मेलन के बगदाद में आयोजन के पक्ष में थे किन्तु ईरान के उग्रवादिता को देखते हुए इन राष्ट्रों ने, आंदोलन के 'आयोजन स्थल' जैसे औपचारिक विषय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर विभाजित होने से रोकने के लिये, नरम दृष्टिकोण अपनाया। अनौपचारिक ढंग से खाडी के दोनों देशों में आपसी समझ तथा दृष्टिकोण के परस्पर समन्वय पैदा करने में, पी. एल. ओ. के अध्यक्ष यासिर अराफत ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। राजनीतिक घोषणापत्र में, दो वर्ष से अधिक पुराने खाडी के इस युद्ध की नाम मात्र की चर्चा की गयी है। श्रीमती गाँधी ने अध्यक्षा की हैसियत से दोनों देशों से युद्ध समाप्त करने की अपील की है। आठवें गुटनिरपेक्ष सम्मेलन का आयोजन स्थल 1985 में विदेश मंत्रियों की बैठक में तय किया जायेगा।

वास्तव में, सम्मेलन के उपरांत जो घोषणापत्र जारी किया गया वह मूल भारतीय मसौदे से कहीं अधिक उग्र था! अब यह श्रीमती गाँधी के ऊपर है कि वे किस प्रकार से व्यावहारिक स्तर पर आंदोलन को आगामी वर्षों में दिशा प्रदान करती हैं? सम्मेलन के दौरान श्रीमती गाँधी के अध्यक्षीय भाषण का व्यापक स्वागत हुआ विशेषरूप से उस अंश का जिसमें उन्होंने विश्व को परमाणु शक्तियों से "किसी भी परिस्थिति में परमाणु अस्त्रों के प्रयोग करने या प्रयोग करने की धमकी न देने, सभी परमाणु-अस्त्र परीक्षण तथा परमाणु अस्त्रों के उत्पादन तथा नियोजन को रोक देने तथा समझौते की निश्चित प्रवृत्ति से पुनः निःशस्त्रीकरण वार्ता शुरू किये जाने' का आग्रह किया है।

आर्थिक घोषणापत्र में, उत्तर-दक्षिण वार्ता, 'विश्व-परक आर्थिक विचार विमर्श' की यथेष्ट चर्चा के साथ ही 'अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था की विसंगतियों को दूर करने तथा विकासशील राष्ट्रों के पक्ष में संतुलन बनाये रखने के लिये तुरंत कारगर कदम उठाने की मांग की गयी है।

गुटनिरपेक्ष आंदोलन अब 'भूमिका की तलाश में एक विश्व-व्यापी क्लब' (Worldwide club in search of a role) नहीं है, जैसाकि 1979 'नॉन-एलाइन्मेण्ट : द क्रिटिकल इयर्स' शीर्षक से प्रकाशित एक प्रपत्र में प्रो. भवानी सेनगुप्त ने कहा था। नयी दिल्ली सम्मेलन का सर्वाधिक महत्व इस तत्व में निहित है कि अब गुटनिरपेक्ष आंदोलन 'विकासशील या अर्ध विकसित' देशों के मंच के स्थान पर एक विश्वव्यापी मंच बनता जा रहा है और इस कारण आंदोलन की गतिविधियां एवं कार्य प्रणाली आने वाले वर्षों में न केवल तीसरी दुनिया 'को वरन् सम्पूर्ण विश्व समुदाय को प्रभावित करेंगी। इस प्रकार सातवें सम्मेलन को 'अन्तर्राष्ट्रीयतावाद' की दिशा में एक कदम माना जा सकता है। ज्ञातव्य हो कि सातवें सम्मेलन के राजनीतिक घोषणापत्र में 'निःशस्त्रीकरण', जीवन तथा सह अस्तित्व' से एक पूरा अध्याय शामिल किया गया है तथा क्रम में इसे 'गुटनिरपेक्षता की भूमिका' नामक अध्याय के तुरंत बाद स्थान दिया गया है। सम्मेलन ने 'परमाणु अस्त्र परिसीमन' पर संयुक्त राष्ट्र अमरीका की डेमॉक्रेटिक पार्टी तथा योरोप की कुछ अन्य संस्थाओं द्वारा सम्मिलत रूप से प्रस्तावित 'ड्राफ्ट' का भी समर्थन किया है।

अन्त में यह कहना विषयसंगत होगा कि नयी दिल्ली सम्मेलन के दौरान विभिन्न विषयों पर विचार विमर्श तथा महाशक्तियों द्वारा इनमें ली जा रही रुचि ने यह सिद्ध कर दिया है कि संयुक्त राष्ट्र की सदस्य संख्या के लगभग ⅔ सदस्यों की सदस्यता वाला गुटनिरपेक्ष आंदोलन (NAM), अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में सर्वाधिक विशाल एवं सशक्त मंच है। यद्यपि सदस्य राष्ट्रों में आपसी मतभेद हैं और उग्रवादी एवं नरमवादी-दोनों ही प्रकार के सदस्य आंदोलन में विद्यमान हैं, फिर भी अलग-अलग प्रकार की राजनीतिक व्यवस्था तथा अलग-अलग स्तर के आर्थिक विकास वाले ये देश यदि विश्व की अनेक ज्वलंत राजनीतिक तथा आर्थिक समस्याओं पर लगभग एकमत हो सकते हैं तो निश्चय ही गुटनिरपेक्ष आंदोलन का भविष्य उज्ज्वल है। ■ ■

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्षेत्रीय राजनीतिक दल और राष्ट्रीय राजनीतिक व्यवस्था

■ सर्वमित्र

वर्ष के आरम्भ में हुए देश के दक्षिणी राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेश दिल्ली में हुए आम चुनावों ने भारतीय राजनीति में क्षेत्रीयता के प्रश्न को एक बार पुनः जीवन्त कर दिया है। संघीय शासन व्यवस्था में क्षेत्रीय राजनीतिक दलों का उदय आश्चर्यजनक नहीं कहा जा सकता। किन्तु, भारतीय राजनीति के विशिष्ट संदर्भ में यह तथ्य काफी महत्वपूर्ण हो जाता है। भारतीय राजनीति के विशिष्ट संदर्भ से तात्पर्य यह है कि इस देश में व्याप्त विविधताओं एवं उसके विस्तृत आकार को देखते हुए, राष्ट्रीय एकता के लिए ऐसे राष्ट्रीय राजनीतिक दलों की आवश्यकता है जो क्षेत्रीय विविधताओं को एकीकृत करके उन्हें राष्ट्रीय जीवनधारा में जोड़ने का प्रयत्न करें। क्षेत्रीय राजनीतिक दलों का बढ़ता प्रभाव उपर्युक्त अवधारणा के प्रतिकूल ठहरता है। और, आज हमें यह सोचने को विवश करता है कि क्षेत्रीयता के प्रभाव में बढ़ोत्तरी क्यों हुई? क्या यह तथ्य स्वस्थ राष्ट्रीय राजनीतिक संरचना के अनुकूल सिद्ध होगा? और, समयाकाल में इसके दूरगामी प्रभाव क्या होंगे?

तो आइए, शुरूआत पहले प्रश्न के साथ की जाये। यहाँ प्रयत्न क्षेत्रीयता के विकास के कारणों को जानने का है। इसके लिए पहले आवश्यक है कि उसके ऐतिहासिक संदर्भ का विश्लेषण हो जिसके आधार पर क्षेत्रीयता के विकास को विश्लेषित किया जा सके। भारतीय राजनीतिक व्यवस्था को उसका वर्तमान स्वरूप देने में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण रही है। स्थापना के बाद से ही यह दल देश के विभिन्न क्षेत्रों में अपना विस्तार बढ़ाता गया और परिपक्व अवस्था आने तक इसके अन्तर्गत इन विभिन्न क्षेत्रों के प्रतिनिधि व उनकी विचार-धाराओं का समावेश हो चुका था। यही कारण था कि देश के इतने बड़े विस्तार और विविधताओं के बावजूद, यह दल स्वतंत्रता आंदोलन में एकजुट हो कर ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध विजयी हुआ। ऐसा नहीं कि कांग्रेस में क्षेत्रीय गुटों या विरोधी विचारधाराओं का अस्तित्व समाप्त हो गया। स्वतंत्रता-पूर्व कई ऐसे अवसर आए जब छोटे-छोटे गुट कांग्रेस से अलग हो गए। फिर भी, दल का राष्ट्रव्यापी स्वरूप अक्षुण्ण रहा।

स्वातंत्र्योत्तर काल में कांग्रेस दल के इस स्वरूप ने देश की संघीय शासन प्रणाली को प्रतिष्ठापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। फलतः संघीय व्यवस्था में भी केन्द्र और अधिकांश राज्यों का शासन कांग्रेस के हाथों में रहा और क्षेत्रीय स्वायत्तता के साथ-साथ राष्ट्रीय एकता का भी सामन्जस्य बना रहा। इस बीच कांग्रेस से अलग होकर कई गुट बने जिन्होंने विरोधी पक्ष का निर्माण किया। किन्तु, ऐसे गुटों का आकर्षण कुछेक व्यक्तित्वों तक सीमित रहा जिसके कारण यह न तो शक्तिशाली क्षेत्रीय दल बन सके और न ही कांग्रेस का राष्ट्रीय विकल्प।

छठे दशक की समाप्ति तक कुछ महत्वपूर्ण राजनीतिक और सामाजिक परिवर्तन हो चुके थे। राजनीतिक क्षेत्र में ऐसे व्यक्तित्व समाप्त होने लगे थे जो क्षेत्रीय भावनाओं का वास्तविक प्रतिनिधित्व करते थे। उनके स्थान पर ऐसे राजनीतिक व्यक्तित्व प्रमुखता ग्रहण करने लगे थे जो केवल सत्ता की राजनीति में विश्वास रखते थे। दूसरी ओर, समाज एक महत्वपूर्ण परिवर्तन के दौर से गुजर रहा था। जनसंख्या का विस्तार जारी था, साक्षरता में वृद्धि हुई थी, औद्योगीकरण विकास की ओर अग्रसर था और प्रजातांत्रिक मूल्य गहरी जड़ पकड़ रहे थे। ऐसे सामाजिक परिवेश में अपेक्षाओं का बढ़ना स्वाभाविक था। और, इन अपेक्षाओं की पूर्ति केवल ऐसे किसी राजनीतिक दल द्वारा की जा सकती थी जो उनको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समझने में समर्थ होता। किन्तु, जैसा कि पहले ही स्पष्ट हो चुका है, समाज और जनता से सम्बन्ध रखने वाले राजनीतिज्ञों का युग समाप्त हो रहा था और सत्ता लोलुप राजनीति का उदय हो रहा था। जब कांग्रेस जैसा विशाल राजनीतिक संगठन, सामाजिक अपेक्षाओं के साथ अन्तर्सम्बन्ध बनाने में असफल रहा तो फिर विरोधी दलों की तो बात ही क्या। और फिर कहने को यह विरोधी दल अधिकतर थे तो पुराने कांग्रेसी, उसी दल की संस्कृति से पूर्णतया प्रभावित।

राष्ट्रीय राजनीतिक दल और सामाजिक अपेक्षाओं के बीच बढ़ती हुई दूरी ही क्षेत्रीयता के उदय का पहला और सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारण बनी। इसकी पहली अभिव्यक्ति 1967 के चुनावों में हुई जब क्षेत्रीय दलों ने प्रभाव ग्रहण करना शुरू किया। यह प्रयोग राज्यों में आरम्भ हुआ और 1969 तक इसका प्रभाव केन्द्र तक पहुँचना आरम्भ हुआ। किन्तु, यहीं पर राष्ट्रीय राजनीति ने एक महत्वपूर्ण करवट ली। श्रीमती गाँधी ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को नई छवि देने का प्रभाव दिया। बाह्य परिस्थितियों एवं उनकी स्वयं की नेतृत्व क्षमता ने 1971 के संसदीय चुनावों ने क्षेत्रीयता के विकास पर अंकुश लगा दिया और ऐसा प्रतीत होने लगा कि श्रीमती गाँधी की कांग्रेस, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के स्वरूप को पाने का प्रयत्न करेगी। 'गरीबी हटाओ' जैसे नारों और बैंक-राष्ट्रीयकरण तथा प्रिवी-पर्स की समाप्ति, सरीखे कदमों ने ऐसी ही आशाओं का सूत्रपात किया।

दुर्भाग्यवश श्रीमती गाँधी की कांग्रेस व्यक्तित्व-प्रधान सिद्ध हुई जिसकी कार्यप्रणाली का आधार संशय और अविश्वास थे। आपसी विवादों में उलझे इस दल ने 1975 में आपातकालीन स्थिति घोषित कर भले ही अपनी सत्ता को दो और वर्षों के लिए सुरक्षित कर लिया, अपरोक्ष में उसका यह कदम देश और समाज पर से उसके घटते हुए प्रभाव का प्रतीक था। ऐसे में जहाँ राष्ट्रकालीन विघटन की उद्घोषणा हो रही हो, क्षेत्रीय भावनाओं की ओर ध्यान देने का समय किसे था। आपातकाल समाप्त हुआ और जनता पार्टी सत्ता में आई। प्रजातांत्रिक मूल्यों और क्षेत्रीय स्वायत्तता के प्रति आस्था प्रकट करने वाली यह पार्टी अगर दो वर्षों में ही सत्ता-च्युत हो गई, तो इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं थी। जनता पार्टी, ऐसे राजनीतिक दलों का संगठन थी जो स्वयं सत्ता-प्रधान कांग्रेसी संस्कृति से प्रभावित थे। सत्ता में उनका अधिकांश समय अधिकाधिक प्रभाव बटोरने में व्यय हुआ जिसके फलतः राष्ट्र को क्षति पहुँची और साथ ही साथ उससे सम्बद्ध क्षेत्रीय राज्यों को भी। प्रतिक्रिया स्वाभाविक थी। श्रीमती गाँधी, 'सरकार जो काम करे', के नारे पर 1980 में पुनः सत्तासीन हुई। किन्तु, यह अन्तिम अवसर था।

1980 से ले कर आज तक का जो समय गुजरा है उसने मतदाता को ऐसी स्थिति में डाल दिया है जहाँ वह यह सोचने के लिए मजबूर है कि राष्ट्रीय राजनीतिक दल का दावा करने वाले देश और उसके राज्यों के लिए कुछ क्यों नहीं कर पाते ? आंध्र प्रदेश का उत्थान क्या केवल मुख्य मंत्रियों के परिवर्तन से संभव है ? एकाधिकारवादी गुंडू राव ही क्या कर्नाटक के मसीहा है ? ऐसे ही प्रश्नों का उत्तर था, जनवरी के चुनावों में क्षेत्रीय राजनीतिक दलों का बढ़ा हुआ वर्चस्व। यद्यपि श्रीमती गाँधी ने इसके फलस्वरूप दल के संगठन को नई दिशा प्रदान करने का संकल्प लिया है और केन्द्रशासित प्रदेश दिल्ली के मतदाताओं ने उन्हें सुधार के लिए एक और अवसर दिया है, यह कहना कठिन है कि इन प्रयत्नों का अन्तिम परिणाम क्या रहेगा। यहीं से प्रारम्भ होते हैं कुछ और सैद्धांतिक प्रश्न।

II

इनमें से सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि यदि क्षेत्रीय राजनीतिक दलों के प्रभाव में निरंतर वृद्धि होती गई तो इसका प्रभाव राष्ट्रीय राजनीतिक व्यवस्था पर क्या होगा। जैसा कि सर्वविदित है, संसदीय गणतंत्र के लिए द्वि-दलीय राजनीतिक संरचना का होना आवश्यक रहता है। विश्व के अपेक्षाकृत रूप से सफल गणतंत्र अमेरिका और ब्रिटेन है और उनकी सफलता के मूल कारणों में एक महत्वपूर्ण कारण वहाँ पर विकसित हुई द्वि-दलीय राजनीतिक व्यवस्था है। भारतीय गणतंत्र आरम्भ से ही इस दिशा में कमजोर रहा है। यही कारण था कि तमाम कमियों और केवल एक-तिहाई मतदाताओं के समर्थन से एक ही दल 1977 तक केन्द्र में शासन करता आया। 1984

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में जनता पार्टी के रूप में जो राष्ट्रीय राजनीतिक दल का प्रयोग किया गया वह कारगर सिद्ध न हो सका और दो ही वर्षों में उसकी असफलता सामने आ गई। अतः मतदाता ने 1980 में कांग्रेस को पुनः एक अवसर दिया कि वह अपने संगठन और कार्य-प्रणाली में परिवर्तन करके स्वस्थ समाज सुधार की दिशा में पहल करे जो कि जनता और समाज की अपेक्षाओं के अनुकूल हों। 1980 के चुनाव ने यही तथ्य विरोधी दलों के सामने भी स्पष्ट किया और साथ ही यह भी उजागर कर दिया कि सिर्फ सत्ता के लोभ से संगठित हुए लोगों में जनता का विश्वास नहीं है। किन्तु, 1983 तक यह स्पष्ट हो गया कि न तो कांग्रेस ने और न ही विरोधी दलों ने इस चेतावनी को समझा। परिणामतः नवीनतम चुनावों में क्षेत्रीय दलों के प्रति जनता ने एक बार फिर अपना विश्वास प्रकट किया। किन्तु, इसी बिन्दु से राजनीतिक संरचना के लिए एक कठिन दौर की शुरूआत भी हुई।

यदि पिछले वर्ष हरियाणा और हिमांचल तथा इस वर्ष आंध्र एवं कर्नाटक में हुए चुनावों को विश्लेषण का आधार बनाया जाये तो यह कहा जा सकता है कि यदि इस समय संसद के लिए आम चुनाव हों तो संभवतः कोई भी राजनीतिक दल स्पष्ट बहुमत प्राप्त करने में सफल न हो सके। भले ही दिल्ली नगर निगम और परिषद के परिणामों से श्रीमती गाँधी यह सन्तोष प्राप्त कर लें कि अभी उसके सभी गढ़ नहीं ढहे हैं, यह कहने की आवश्यकता नहीं कि इस समय यह दल एक कठिन संगठनात्मक संकट के दौर से गुजर रहा है। दूसरी ओर विरोधी दल एक दूसरे के करीब आने की बजाय और दूर होते जा रहे हैं। जनता पार्टी और लोकदल दिन प्रतिदिन नए रूप ग्रहण कर रहे हैं जबकि भारतीय जनता पार्टी और साम्यवादी दल अपनी वर्तमान संगठन शक्ति पर ही आश्वस्त प्रतीत होते हैं। और, इसी बीच उभर रहे हैं क्षेत्रीय राजनीतिक दल जिनका न तो राष्ट्रोन्मुखी दृष्टिकोण है और न ही राष्ट्र-व्यापी संगठन, और साथ ही जिनका अस्तित्व केवल क्षेत्रीय भावनाओं और संवेग पर आधारित है। अतः ऐसी स्थिति में केन्द्र में बहुदलीय शासन का योग बनता है तथा परिस्थितिजन्य बने इस योग में केवल सत्ता का लोभ ही बंधन का प्रेरक बन सकता है। यदि ऐसा होता है तो भारतीय गणतंत्र और संसदीय शासन व्यवस्था को इससे गहरी क्षति पहुँचेगी और इसके परिणाम सम्पूर्ण राष्ट्र के जीवन पर पड़े बिना न रह सकेंगे।

III

तो आइए अंत में इन सम्भावित परिणामों पर भी दृष्टिपात करें। स्वस्थ राजनीतिक परिवेश के लिए राजनीति और समाज के अन्तर्सम्बन्ध की आवश्यकता पर आरम्भ से ही बल दिया गया है। उक्त स्थिति में सबसे बड़ी क्षति इसी पक्ष की होगी। राजनीति का प्रेरक तत्व महज सत्ता हो कर रह जायगी। इससे शासन और समाज के बीच की दूरी बढ़ेगी, जन-असन्तोष में वृद्धि होगी और सामान्य जन-जीवन कठिनतर होता जायेगा।

ऐसी स्थिति का सीधा प्रभाव देश के आन्तरिक प्रशासन पर भी पड़ेगा। अस्थिर राजनीतिक परिवेश में, प्रशासन नीतियों के क्रियान्वन में एकजुट हो कर कार्य न कर सकेगा। तेजी से बदलते राजनीतिक पदाधिकारियों के अनुरूप ढ़ालने में ही उसका अधिकांश समय व्यतीत होगा जिससे उसका मनोबल शिथिल पड़ेगा।

वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय परिवेश में भी ऐसी परिस्थिति की विवेचना की जा सकती है। अफगानिस्तान में सोवियत हस्तक्षेप के उपरांत दक्षिण-एशिया के कूटनीतिक सम्बन्धों में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं। इसके फलस्वरूप इस क्षेत्र में न केवल महाशक्तियों को स्पर्धा का अवसर सुलभ हुआ है बल्कि यहाँ के देशों के बीच सैनिक प्रतिस्पर्धा का भी तेजी के साथ विस्तार हुआ है। अतः ऐसी स्थिति में जब अन्तरराष्ट्रीय परिवेश में भी अस्थिरता और अशांति के लक्षण दिखाई देते हों, इस क्षेत्र के राष्ट्रों की आन्तरिक स्थिरता का महत्व और भी बढ़ जाता है। पाकिस्तान की आन्तरिक स्थिति अभी तक स्थायित्व ग्रहण नहीं कर सकी है और जनरल जिया केवल सोवियत संघ और भारत से उपजने वाले सम्भावित खतरों तथा क्रूर धार्मिक सिद्धांतों के आधार पर अपनी सत्ता बनाए हुए हैं। बंगलादेश में जनरल इरशाद अभी तक रूठे लोकतंत्र को मनाने में सफल नहीं हुए हैं। नेपाल की राजशाही भी कुछेक प्रतिशत मतों के बहुमत से अपना अस्तित्व बनाए हुए है। केवल भारत ही इस क्षेत्र का अकेला ऐसा देश है जो तमाम समस्याओं के बावजूद लोकतांत्रिक स्थिरता को बनाए

(शेष पृष्ठ 72 पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत के विदेशी व्यापार की संरचना

□डॉ. वी. के. एल. श्रीवास्तव*

किसी भी देश के विदेशी व्यापार का महत्वपूर्ण पहलू उसकी सरचना होती है। 'व्यापार संरचना' का तात्पर्य है कि वह देश किन-किन वस्तुओं का आयात एवं निर्यात करता है। इससे यह स्पष्ट होता है कि उस देश के पास कौन-कौन सी वस्तुएँ हैं और कौन-कौन सी नहीं हैं। इस प्रकार जिस देश के पास अपनी वस्तुओं का आधिक्य होता है उसे वह निर्यात करता है और जिस वस्तु का अभाव होता है उसे वह आयात करता है। अतः व्यापार संरचना को देखकर किसी देश के आर्थिक ढांचे एवं समय-समय पर होने वाले परिवर्तनो को जाना जा सकता है।

स्वतन्त्रता के पूर्व भारत के विदेश व्यापार की संरचना पूर्णरूप से औपनिवेशिक थी क्योंकि भारत ब्रिटिश शासन का एक उपनिवेश था। इसीलिए भारत विशेषरूप से इग्लैण्ड को कच्चे माल एवं खाद्य पदार्थों का निर्यात एवं इग्लैण्ड से निर्मित वस्तुओं का आयात करता था। इस प्रकार भारत के निर्मित वस्तुओं के लिए, विदेशों पर निर्भर होने के कारण, देश में औद्योगीकरण का मार्ग अवरुद्ध हो गया।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात यह निश्चय किया गया कि भारत में विकास कार्यक्रमों को लागू करके उत्पादन क्षमता को तेजी से बढ़ाना है अतः विकासशील अर्थ व्यवस्था की आवश्यकताओं को ध्यान में रख कर विदेशी व्यापार के औपनिवेशिक ढांचे में परिवर्तन करना अनिवार्य है; अतः ऐसी स्थिति में एक ऐसे 'व्यापार संरचना का निर्माण करना है जिसमें वस्तुओं का आयात एवं निर्यात इस ढंग से किया जाये जिससे विदेशी व्यापार का सन्तुलन बना रहे। पिछले वर्षों में भारत के विदेशी व्यापार की संरचना में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुआ है। जिनका विवेचन आयात एवं निर्यात नामक शीर्षकों के अन्तर्गत किया गया है।

आयात की संरचना

भारत के आयात व्यापार को मुख्य रूप से तीन वर्गो मे विभाजित किया जा सकता है—(i) पूंजीगत वस्तुएं (ii) कच्चे माल एवं (iii) उपभोग वस्तुएं। पूंजीगत वस्तुओं में सभी प्रकार की मशीनें, धातुएं-लोहा एवं इस्पात और अन्य अलौह धातुएँ एवं परिवहन सामान सम्मिलित किये जाते हैं। कच्चे माल में कच्ची एवं व्यर्थ रुई, कच्ची पटसन, रग एवं रसायन, उर्वरक और खनिज तेल शामिल किये जाते हैं। उपभोग वस्तुओं में बिजली की वस्तुएँ, ओषधि, रेयन, कागज एवं गन्ना एवं खाद्य पदार्थ आते हैं।

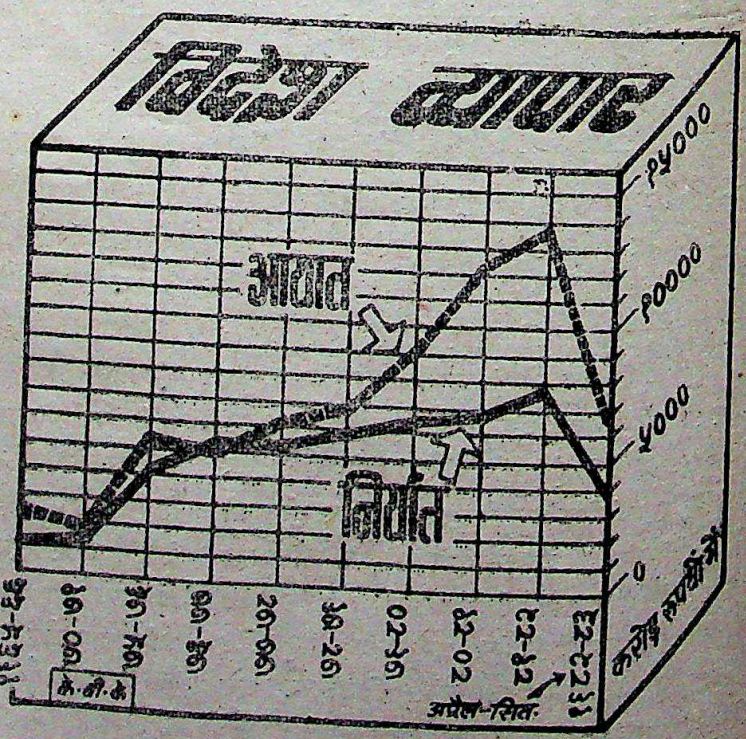

*प्रवक्ता वाणिज्य विभाग, डी. ए. वी. डिग्री कॉलेज, वाराणसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तालिका 1

योजनावधि में वस्तुओं का औसत वार्षिक निर्यात

(करोड़ रुपये में)

वस्तुएं	प्रथम योजन 1951-56	द्वितीय योजना 1956-61	तृतीय योजना 1961-66	तान-वार्षिक योजनाये 1966-69	चतुर्थ योजना 1969-74	पाँचवीं योजना 1974-78	छठी योजना 1978-81
1—खाद्यान	120	161	241	400	196	774	90
2—मशीनरी (इंजनों समेत)	116	265	472	518	484	949	1400
3—खनिज तेल	73	80	85	90	226	1338	3513
4—कच्ची रुई	77	45	54	77	88	96	9
5—धातुएँ (लौह तथा अलौह)	54	131	172	185	309	498	1090
6—रसायन तथा औषधियाँ	34	53	55	126	113	204	290
7—रसायनिक खाद	—	—	28	121	96	445	565
8—हीरे तथा बहुमूल्य पत्थर	—	—	—	—	—	162	401

तालिका 1 के द्वारा यह स्पष्ट होता है कि भारत में मुख्य आयात की जाने वाली वस्तु खाद्यान रही है। देश के विभाजन एवं बढ़ती हुई आबादी के कारण खाद्यान्न का निरन्तर आयात किया गया। पंचवर्षीय योजनाओं में कृषि उत्पादन में विकास हेतु किये गये प्रयत्नों से खाद्यान्न के आयात में कमी हुई है। प्रथम योजना में 120 करोड़ रुपये का खाद्यान आयात किया गया था जो क्रमशः बढ़कर द्वितीय योजना में 161 करोड़ रुपये, तृतीय योजना में 241 करोड़ रुपये एवं तीन-वार्षिक योजनाओं में 400 करोड़ रुपये हो गया। सन् 1965-66 और 1966-67 में भयंकर सूखा पड़ने के कारण स्थिति प्रतिकूल हो गयी और आयात बढ़ाना पड़ा। चतुर्थ योजना में अनुकूल कृषि उत्पादन के कारण आयात में गिरावट की प्रवृत्ति रही और इस योजना में केवल 196 करोड़ रुपये का आयात किया गया था। पाँचवी योजना में स्थिति पुनः प्रतिकूल हो गयी और 774 करोड़ रुपये के खाद्यान्न का औसत वार्षिक आयात करना पड़ा। 1981-82 में अमेरिका से भी भारी मात्रा में गेहूँ का आयात किया गया था।

जिस देश में औद्योगीकरण के लक्ष्य को अपनाया गया हो वहाँ मशीनों का तीव्रगति से आयात करना आवश्यक हो जाता है। प्रथम योजना में 116 करोड़ रुपये, द्वितीय योजना में 265 करोड़ रुपये, तृतीय योजना में 472 करोड़ रुपये एवं तीन-वार्षिक योजनाओं में 518 करोड़ रुपये का आयात किया गया था। चतुर्थ योजना में मशीनों का आयात घटकर 484 करोड़ रुपये हो गया परन्तु पाँचवी योजना में इसमें पुनः वृद्धि हुई और यह बढ़कर 949 करोड़ रुपये हो गया। सन् 1978-81 में 1400 करोड़ रुपये की मशीनों (इंजन सहित) का औसत वार्षिक आयात किया गया था।

देश के आर्थिक विकास में पेट्रोलियम पदार्थों का अत्यधिक महत्व है। इसका उपयोग परिवहन, मशीनों तथा पुर्जों को गतिशील बनाये रखने में किया जाता है। भारत में पेट्रोलियम का उत्पादन उपयोग की तुलना में कम होने के कारण विदेशों से आयात किया जाता है। प्रत्येक पंचवर्षीय योजना में पेट्रोलियम पदार्थों के आयात में वृद्धि हुई है। सन् 1973-74 में पेट्रोलियम निर्यातक देशों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के संघ (Organisation of Petroleum Exporting Countries) द्वारा रुक्ष तेल (crude oil) की कीमतों में वृद्धि कर देने से आयातित पेट्रोलियम के मूल्यों में काफी वृद्धि हो गयी। सन् 1981-82 में असम एवं बाम्बे हाई द्वारा पर्याप्त उत्पादन के कारण आयात में कमी हुई है और पेट्रोलियम के अन्तर्राष्ट्रीय मूल्यों में भी गिरावट आयी है।

कच्ची एवं व्यर्थ रुई का आयात निरन्तर कम होता जा रहा है क्योंकि पंचवर्षीय योजनाओं में रुई उत्पादन के विकास हेतु सरकार ने काफी प्रयत्न किया है। सन् 1978-81 में मात्र 9 करोड़ रुपये की कच्ची एवं व्यर्थ रुई का औसत वार्षिक आयात किया गया था। जिससे यह स्पष्ट होता है कि भविष्य में रुई के आयात के और कम होने की सम्भवना है।

भारत में लोहा एवं इस्पात उद्योग का तीव्रगति से विकास होने के बाद भी इसकी पूर्ति, माँग से कम है। अतः आधिक्य माँग को विदेशों से आयात किया जाता है साथ ही कुछ अंश में अलौह धातुओं का भी आयात किया जाता है। प्रथम योजना से छठीं योजना तक अलौह धातुओं के औसत वार्षिक आयात में निरन्तर वृद्धि हुई है। प्रथम, द्वितीय, तृतीय, तीन-वार्षिक योजनाएँ, चतुर्थ, पाँचवी एवं छठी योजना में क्रमशः 54 करोड़ रुपये, 131 करोड़ रुपये 172 करोड़ रुपये, 185 करोड़ रुपये, 309 करोड़ रुपये, 493 करोड़ रुपये एवं 1090 करोड़ रुपये का आयात किया गया था। धातुओं का आयात विशेष रूप से औद्योगिक विस्तार, जल विद्युत परियोजनाओं के निर्माण एवं रेलों के विकास के लिए किया गया था।

पंचवर्षीय योजनाओं में विभिन्न प्रकार के रसायन एवं औषधियों का भी आयात किया गया था। प्रथम योजना से तीन-वार्षिक योजनाओं तक रसायन के आयात में वृद्धि हुई थी परन्तु चतुर्थ योजना में यह घटकर 113 करोड़ रुपये हो गया किन्तु पाँचवी एवं छठीं योजना में वृद्धि हुई और बढ़कर क्रमशः 204 करोड़ रुपये एवं 290 करोड़ रुपये हो गया।

कृषि उत्पादन के लिए उर्वरकों की माँग के अनुरूप पूर्ति न होने के कारण आयात को प्रोत्साहन मिला एवं तृतीय योजना से छठीं योजना तक क्रमशः 28 करोड़ रुपये, 121 करोड़ रुपये, 96 करोड़ रुपये, 440 करोड़ रुपये एवं 565 करोड़ रुपये का आयात किया गया था। अन्तर्राष्ट्रीय बाजारों में उर्वरक के मूल्यों में गिरावट एवं घरेलू उत्पादन में वृद्धि के कारण भविष्य में आयात कम होने की सम्भावना है।

इसके अतिरिक्त हीरे तथा बहुमूल्य पत्थर, बिजली के सामान, कागज तथा गन्ने, कच्ची जूट, खाद्य तेल, विज्ञान, फोटोग्राफी से सम्बन्धित वस्तुएँ, घड़ियाँ एवं गाड़ियों का भी आयात किया जाता है।

निर्यात की संरचना :

निर्यात वस्तुओं को परम्परागत एवं अपरम्परागत दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है। परम्परागत निर्यात में कच्चा सूत, मसाले, जूट, चमड़ा, चाय, सिल्क इत्यादि वस्तुएँ आती है जिनका भारत एक लम्बे समय से निर्यात करता आ रहा है। अपरम्परागत निर्यात का तात्पर्य ऐसी वस्तुओं से है जिनका निर्यात 15-20 वर्षों से किया जा रहा है। इनकी मुख्य मदें मशीनरी, पंखें, सायकिल, रेलवे उत्पाद, लोहा, इंजीनियरिंग का समान, प्लास्टिक एवं लकड़ी के सामान इत्यादि हैं। विदेशों को निर्यात की जाने वाली कुछ प्रमुख वस्तुओं को तालिका 2 द्वारा दर्शाया गया है।

तालिका 2 के द्वारा यह स्पष्ट होता है कि चाय भारत के निर्यात वस्तुओं का सबसे महत्वपूर्ण मद है। भारत के कुल चाय उत्पादन का 75 प्रतिशत भाग अमेरिका, इंग्लैण्ड, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया, पश्चिम जर्मनी, रूस एवं मिस्र को निर्यात किया जाता है। प्रथम योजना में 106 करोड़ रुपये, द्वितीय योजना में 132 करोड़ रुपये, तृतीय योजना में 120 करोड़ रुपये, तीन-वार्षिक योजनाओं में 163 करोड रुपये, चतुर्थ योजना में 142 करोड़ रुपये, पाँचवी योजना में 328 करोड़ रुपये एवं छठी योजना में 365 करोड़ रुपये का निर्यात किया गया था। चाय के व्यापार में भारत को इंडोनेशिया, कीनिया, श्रीलंका एवं अफ्रीका से प्रतिस्पर्धा करनी पड़ती है।

जूट एवं जूट से निर्मित वस्तुओं का निर्यात भारत के परम्परागत निर्यात में से एक हैं। भारत द्वारा अमेरिका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तालिका 2

योजनावधि में वस्तुओं का औसत वार्षिक निर्यात

(करोड़ रुपये में)

वस्तुएँ	प्रथम योजना 1951-56	द्वितीय योजना 1956-61	तृतीय योजना 1961-66	तीन-वार्षिक योजनाएँ 1966-69	चतुर्थ योजना 1969-74	पाँचवी योजना 1974-78	छठीं योजना 1978-81
1—चीनी	—	—	—	—	25	244	99
2—चाय	106	132	120	163	142	328	365
3—पटसन सूत तथा निर्मित वस्तुएँ	149	120	157	220	221	248	249
4—सूत तथा कपड़ा	81	76	55	99	163	202	268
5—चमड़ा तथा खाले	32	35	35	70	119	215	385
6—कच्ची धातुएँ (लोहा, अभ्रक, मैगनीज)	30	37	50	103	138	246	301
7—तम्बाकू	15	16	20	29	47	100	123
8—लौह तथा इस्पात एवं इंजीनियरिंग सामान	27	16	10	95	190	620	885
9—खली	1	10	32	48	76	140	116
10—काजू	11	16	23	50	63	117	107
11—हस्तशिल्प	—	—	—	—	—	411	897
12—मछली एवं मछली के समान	—	—	—	—	—	137	238
13—रेडीमेड वस्त्र	—	—	—	—	—	185	390

कनाडा एवं इंग्लैण्ड को जूट एवं जूट पदार्थों का निर्यात किया जाता है। प्रथम, द्वितीय, तृतीय तीन-वार्षिक योजनाएँ, चतुर्थ, पाँचवी एवं छठीं योजनाओं में क्रमशः 149 करोड़ रुपये, 120 करोड़ रुपये, 157 करोड़ रुपये 220 करोड़ रुपये 221 करोड़ रुपये, 248 करोड़ रुपये, एवं 249 करोड़ रुपये का निर्यात किया गया था। जूट के निर्यात में भारत को बंगलादेश से तीव्र प्रतिस्पर्धा करनी पड़ती है।

प्रथम योजना में सूत तथा कपड़े का निर्यात 81 करोड़ रुपये था परन्तु द्वितीय एवं तृतीय योजना में यह घटकर क्रमशः 76 करोड़ रुपये एवं 55 करोड़ रुपये हो गया। इसके पश्चात तीन-वार्षिक योजनाओं से छठी योजना तक निर्यात में निरन्तर वृद्धि हुई है। भारतीय सूती वस्त्र उद्योग में अधिक उत्पादन लागत विशेष रूप से अधिक श्रम लागत एवं पुरानी मशीनों के प्रयोग के कारण होती हैं जिससे भारत को अन्तर्राष्ट्रीय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाजार में सूत तथा कपड़ा बेचना कठिन हो जाता है। सूतीवस्त्र का निर्यात ब्रिटेन, अमेरिका, आस्ट्रेलिया, लंका, मिस्र, ईरान, इण्डोनेशिया एवं सूडान को किया जाता है।

चमड़ा तथा खालें निर्यात की परम्परागत वस्तुएँ है। पंचवर्षीय योजनाओं में इनके निर्यात में निरन्तर वृद्धि हुई है। इससे प्रमुख ग्राहक अमेरिका, रूस, फ्रांस, पश्चिम जर्मनी, हॉलैण्ड आदि हैं। सोवियत रूस में भारत में निर्मित जूते की माँग काफी अधिक है।

प्रत्येक पंचवर्षीय योजना में कच्ची धातुओं के निर्यात में वृद्धि हुई हैं। भारत द्वारा कच्चा लोहा, मैंगनीज एव अभ्रक का निर्यात ब्रिटेन एवं जापान को किया जाता है।

लोह तथा इस्पात एवं इंजीनियरी सामानों का भी निर्यात तीव्रगति से किया जा रहा हैं। भारत में बने मालगाड़ी के डिब्बे, ट्रांसमीशन लाइन टावर, रासायनिक संयन्त्र, हल्की मशीने, पंखे, साइकिल, मोटर इत्यादि वस्तुएँ मूल्य एवं गुणवत्ता की दृष्टि से अन्तर्राष्ट्रीय बाजारों में मुकाबला कर रही है। भारत द्वारा लोह तथा इस्पात एवं इंजीनियरी वस्तुओं का निर्यात करके चतुर्थ, पाचवी एवं छठीं योजना में क्रमशः 190 करोड़ रुपये, 620 करोड़ रुपये एवं 885 करोड़ रुपये प्राप्त किया गया था।

भारत खली एवं काजू का भी निर्यात करता है। पाँचवी एवं छठीं योजना में खली का निर्यात 140 करोड़ रुपये एवं 116 करोड़ रुपये तथा काजू का निर्यात 117 करोड़ रुपये एवं 107 करोड़ रुपये का किया गया था। भारत को काजू से व्यापार में ब्राजील तथा मोजाम्बिक से प्रतिस्पर्धा करनी पड़ती है। भारतीय काजू की माँग अमेरिका तथा यूरोपीय देशों में काफी अधिक है।

हस्तशिल्प का पाँचवी एवं छठी योजना में क्रमशः 411 करोड़ रुपये, 897 करोड़ रुपये का निर्यात किया गया था। हस्तशिल्प के सामनों में कागज की लुग्दी के खिलौने, लकड़ी एवं पीतल पर खुदाई किये हुए बर्तन एवं जवाहरात की सामग्री का विशेष रूप से निर्यात किया जाता है। पाँचवी पंचवर्षीय योजना में अमेरिका कनाडा तथा यूरोपीय देशों को रेडीमेड वस्त्रों का तीव्र-गति से निर्यात किया जा रहा है।

इन वस्तुओं के अतिरिक्त भारत नमक, वनस्पति, तेल, चावल, लोंहा और इस्पात की कतरन, मसाले, कॉफी, चाँदी इत्यादि वस्तुओं का भी निर्यात करता है। भारत के निर्यात व्यापार का ढ़ाँचा एक विकासशील अर्थ व्यवस्था का प्रतिबिम्ब है। जिसमें अधिकतर भाग उपभोग वस्तुओं, कच्चे माल एवँ कृषि पदार्थों का है। अतः यह स्पष्ट होता है कि भारत के आयात एव निर्यात व्यापार की संरचना में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुआ है। इसलिए भविष्य में व्यापार संरचना को और अधिक विकसित करने की आवश्यकता है जिससे परम्परागत वस्तुओं के अतिरिक्त अन्यवस्तुओं के निर्यात को तीव्रगति से बढ़ाया जा सके। ■ ■

(पृष्ठ 67 का शेष)

हुए हैं। सच कहा जाये तो दक्षिण एशिया में महाशक्तियों के प्रभाव के विरुद्ध कार्य करने वाला सबसे मजबूत कारण यही है। किन्तु, यदि वहाँ भी क्षेत्रीयता के प्रभाव में वृद्धि हुई तो राष्ट्रीय राजनीतिक संरचना में बिखराव उत्पन्न हो सकता है। यहाँ यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि क्षेत्रीयता का प्रभाव न केवल क्षेत्रीय राजनीतिक दलों द्वारा बढ़ता है, बल्कि पंजाब और असम में चल रहे कथित जन आंदोलनों द्वारा भी इसमें वृद्धि होती है। अतः केन्द्रीय राजनीतिक संरचना में बिखराव की स्थिति देश को बड़े ही नाजुक मोड़ पर ला सकती है जहाँ इसका प्रत्यक्ष लाभ महाशक्तियाँ उठा सकती हैं। ऐसी किसी भी तनावपूर्ण परिस्थिति में सर्वाधिक हानि विकासशील देशों की अर्थव्यवस्था की होती है जब पूंजी निवेश विकास की बजाय रक्षा क्षेत्रों में किया जाना आवश्यक हो जाता है। इसका सीधा प्रभाव आम आदमी पर पड़ता है जिसका जीवन कठिनतर होता जाता है। अतः आशा की जानी चाहिए कि हमारी क्षेत्रीयता, राष्ट्रीयता की ओर अग्रसर होगी और हमारी राष्ट्रीयता में क्षेत्रीय हितों का यथोचित समावेश होगा। ■ ■

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

असम समस्या तथा विधान सभा चुनाव

देश के राजनीतिक इतिहास में कोई भी चुनाव इतनी हिंसा और इतने रक्तपात के बीच नहीं कराया गया जितना कि नवीनतम असम विधान सभा चुनाव के दौरान देखने को मिला। ऐसे संदर्भ में हुए चुनाव की वैधानिकता और उपयोगिता पर प्रश्न चिन्ह लगाया जाना न केवल स्वाभाविक है बल्कि आवश्यक भी है। प्रश्न का पहला पक्ष यह है कि हिंसा और रक्तपात का वातावरण क्यों बना ? इसका उत्तर पिछले कई वर्षों से चली आ रही असम समस्या के विश्लेषण से मिल सकता है।

असम समस्या मूलतः संस्कृतिक एवं राजनीतिक अस्मिता से सम्बद्ध है। राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन के उत्तरवर्ती काल से जब विभाजन की राजनीति प्रारम्भ हुई, अन्य क्षेत्रों के अलावा असम भी इसका एक महत्वपूर्ण बिन्दु बन गया। धार्मिक बहुमत के आधार पर विभाजन के सिद्धान्त की परिकल्पना को दृष्टि में रखते हुए यह प्रयत्न किए गए कि इस क्षेत्र की जनसंख्या में किसी विशिष्ठ धर्म का बहुमत पैदा किया जा सके जिससे आर्थिक ससाधनों की दृष्टि से यह बहुमूल्य प्रदेश विभाजन कारी राजनीतिज्ञों के स्वार्थ को पूरा करने में सफल हो। तभी से असम में अनुप्रवेश की प्रवृति ने विस्तार पाया और आज यह असम समस्या व आंदोलन का केन्द्र बिन्दु बनी हुई है। आंकडों पर गौर किए जाने से यह स्पष्ट होता है कि 1951 और 1961 के मध्य असम की जनसंख्या में 36% की वृद्धि हुई जबकि राष्ट्रीय जनसंख्या वृद्धि का औसत महज 24% था। जनसंख्या आख्या के भाग एक में यह स्पष्ट रूप से कहा गया कि कम से कम 2.2 लाख अवैधानिक अनुप्रवेशी असम में बस चुके है। इसी प्रकार सन् 1961 और 1971 के बीच जबकि असम की जनसंख्या में 35% की वृद्धि हुई, राष्ट्रीय वृद्धि का औसत इससे कहीं कम था। आंकड़े एक और क्षेत्र में महत्वपूर्ण संकेत देते है। यह क्षेत्र मतदाता सूचियो का है। 1972 में जहाँ कुल मतदाताओं की संख्या 63 लाख थी, वहीं 1977 में बढ़कर यह 72 लाख हो गई। 1978 में यह 79 लाख थी और 1979 में 86 लाख। इसी तरह जहाँ 1951 और 1971 के बीच असमी बोलने वालों की संख्या में 79.6 की वृद्धि हुई, बंगाली भाषियों की संख्या में उल्लेखनीय कमी हुई। इन सबका परिणाम यह हुआ की प्रदेश की राजनीति में एक विशिष्ट धर्म का प्रभाव बढ़ा। कई निर्वाचन क्षेत्र में इसका बाहुल्य बढ़ा और 1951 में 6 के मुकाबले 1977 में 26 विधायक इसी सम्प्रदाय के चुने गए।

ऐसा ही एक निर्वाचन क्षेत्र मंगलदई था। 1979 में इस क्षेत्र के लिए लोकसभा उपचुनाव की घोषणा हुई। मतदाता सूचियों के प्रकाशन पर यह जाहिर हुआ कि नई सूचियों में जोड़ गए नाम एक विशिष्ट सम्प्रदाय के ही है। फलस्वरूप लगभग 70,000 आपत्तियाँ उठाई गईं जिनमें से न्यायालय ने लगभग 47000 को सही पाया। मंगलदई में घटी इस घटना ने असम में वर्षों से सुलग रही आग को चिंगारी दी और यहीं से आरम्भ हुआ असम आंदोलन का वर्तमान चरण। 1979 में जब लोकसभा को भंग किया गया तो असमियों ने इस आधार पर आंदोलन आरम्भ किया कि जब तक मतदाता सूचियों से विदेशियों का नाम नहीं निकाला जाता, अगले चुनाव नहीं हो सकते। इस मांग को उपर्युक्त आंकड़ों के संदर्भ में समझा जा सकता है। वर्षों से चले आ रहें अनुप्रवेश के कारण इन लोगो की संख्या बढ़ती जा रही थी जो न देश के वैधानिक नागरिक थे और न ही जिनकी प्रादेशिक संस्कृति से सम्बद्धता थी। ऐसे नागरिकों को संवैधानिक अधिकार देने का प्रतिफल यह हो रहा था कि प्रदेश की शासन व्यवस्था में ऐसे लोगों का बहुमत बढ़ रहा था जो उसकी वास्तविक समस्याओ से या तो अनभिज्ञ थे या उन्हें सुलझाने के प्रति पूणतया उदासीन।

असमियों की इन भावनाओं का प्रतिनिधित्व अखिल असम विद्यार्थी परिषद और अखिल असम गण संग्राम परिषद ने किया। विदेशियों का पता लगाए जाने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लिए और उनके बहिर्गमन के लिए इन्होंने राष्ट्रीय संविधान का सहारा लिया जिसके अनुसार

कोई भी व्यक्ति जो पाकिस्तान से भारत में अनुप्रवेश 19 जुआई 1948 के पूर्व करता है, भारतीय नागरिक तभी माना जायगा जब—

(अ) कि वह स्वयं या उसके माता -पिता अथवा इनके भी जनक अविभाजित भारत मे पैदा हुए हैं, और

(ब) अनुप्रवेश के बाद वह सामान्य रूप से भारत में निवास कर रहा हो

19 जुलाई 1942 के बाद किन्तु 25 जुलाई 1949 के पहले पाकिस्तान से भारत में अनुप्रवेश करने वाले व्यक्ति तभी भारतीय नागरिक माने जायेंगे जब कि वह नागरिकता के लिए आवेदन करें और उनके पास नागरिकता का प्रमाण-पत्र रहें। 24 जुलाई, 1949 को और उसके बाद पाकिस्तान से भारत में अनुप्रवेश करने वालों को भारतीय नागरिक नहीं माना जायगा।

चूंकि संविधान प्रभावी होने के बाद पहली जनसंख्या रपट 1951 को वर्षाधार मानकर प्रकाशित हुई, असम आंदोलनकारियों की मूल माँग यह थी कि इस सीमा के बाद असम में प्रवेश करने वाले सभी अनुप्रवेशियों को विदेशयों की संज्ञा दी जाय। किन्तु, तदोपरान्त आंदोलन निम्नलिखित माँगों के आधार पर विकसित हुआ —

(1) 1951 से 1961 तक आए अनुप्रवेशियों को भारतीय नागरिकता प्रदान कर दी जाय।

(2) 1961 से 1972 के मध्य प्रवेश करने वाले अनुप्रवेशियो को या तो संवैधानिक अधिकारों से वंचित किया जाय अथवा उन्हें देश के अन्य भागों में विस्थापित किया जाय जिससे प्रदेश की अर्थव्यवस्था पर बाह्य व्यक्तियों के प्रभाव को कम किया जा सके।

(3) 1971 के बाद के अनुप्रवेशियों को 1971 के इन्दिरा-मुजीब समझौते के अन्तर्गत, बांगलादेश वापस भेजा जाय।

पहली माँग को लेकर आन्दोलकारियों और केन्द्र सरकार के बीच कोई मतभेद नहीं है। तीसरी माँग को भी केन्द्र सरकार ने सैद्धान्तिक रूप से स्वीकार कर लिया है, हालाँकि इस माँग के अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप और बांगला देश की वर्तमान राजनीतिक स्थिति को देखते हुए, इसे माँग को व्यावहारिक रूप दिया जाना संभव नहीं प्रतीत होता। वहरहाल, विवाद और गतिरोध का मुख्य मुद्दा तीसरी और पहली माँग न होकर, आंदोलनकारियों की दूसरी माँग है। केन्द्र सरकार यह महसूस करती है कि 1965 के भारत-पाकिस्तान युद्ध तक जो अनुप्रवेश हुआ, उसे मानवीयता के आधार पर नजरअंदाज किया जाना चाहिए। केन्द्र इस तथ्य को भी स्पष्ट करना चाहता है कि 1951 और 1972 के बीच 1.9 लाख अवैधानिक अनुप्रवेशियों को पहले ही वापस भेजा जा चुका है जबकि 1972 के मध्य भी लगभग एक लाख बांगलादेशी नागरिक वापस भेजे जा चुके हैं जिनमें से 60 प्रतिशत से अधिक हिन्दू थे। व्यावहारिक दृष्टिकोण से केन्द्रीय सरकार या यह मत है कि 1961 और 1972 के बीच आए अनुप्रवेशियों का पता लगाना लगभग असम्भव है और इसीलिए उन्हें संवैधानिक अधिकारों से वंचित करना और उन्हें देश के अन्य भागों में विस्थापित किया जाना भी सम्भव नहीं है। आन्दोलनकारी इस तर्क को मानने के लिए तैयार नही है। इसीलिए वार्ताओं में गतिरोध बना हुआ है और आन्दोलन जारी है।

ऐसे राजनीतिक संदर्भ में विधान सभा के नवीनतम चुनाव सम्पन्न हुए, या बेहतर कहना यही होगा, कि किसी तरह कराए गए। केन्द्र सरकार द्वारा चुनाव करवाये जाने के लिए जो तर्क दिया गया वह यह था कि संवैधानिक प्रावधानों के अनुसार किसी राज्य में एक वर्ष से अधिक राष्ट्रपति का शासन नहीं रह सकता। और इस सम्बन्ध में यथोचित संवैधानिक संशोधन के लिए उसे विरोधी दलों से सहयोग नहीं मिला। हालाँकि विपक्ष ने इस तर्क का खण्डन किया है, फिलहाल इस तथ्य को नजरअन्दाज किया जा सकता है लेकिन यहाँ यह अवश्य कहा जाना चाहिए कि क्या केन्द्र ने इसके पूर्व किसी संवैधानिक संशोधन के लिए विपक्षी दलों को विश्वास में लेने की इतनी उत्सुकता और तत्परता दिखाई थी? केन्द्र द्वारा चुनाव करवाने के लिए दिया गया दूसरा तर्क यह था कि चुनाव आगे बढ़ा कर आन्दोलनकारियों के सामने झुक जाना एक गलत उदाहरण स्थापित करना होगा। यह तर्क स्वीकारणीय है परन्तु जैसा कि पूर्व

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर्यवेक्षक ने कहा कि क्या पंजाब में भी केन्द्रीय सरकार ऐसा दृष्टिकोण अपनाने का साहस कर सकती है। वैसे विपक्षी दलों और असम आंदोलन के नेताओं के अनुसार चुनाव इसलिए कराए गए क्योंकि वर्तमान मतदाता सूची केन्द्र में सत्तारूढ़ दल को अल्पसंख्याकों का समर्थन देती है और बहुमत प्रदान करवाने में सफल हो सकती है। चुनाव के दौरान देखा भी यह गया कि इस दल ने काफी संख्या में अल्पसंख्यक प्रत्याशी खड़े किए और अन्ततः उसे बहुमत भी प्राप्त हुआ। लेकिन, ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि साम्यवादी दलों और कांग्रेस को छोड़ कर जनता पार्टी और भारतीय जनता पार्टी तथा असम आंदोलनकारियों ने चुनाव का बहिष्कार कर दिया।

चुनावी हिंसा में बहिष्कार का यह निर्णय ही केन्द्र बिन्दु था। वस्तुपरक दृष्टि से देखे जाने पर यह प्रतीत होता है कि संभवतः केन्द्र सरकार का ऐसा विश्वास था कि जनता द्वारा चुने गये प्रतिनिधि असम समस्या का सर्वमान्य समाधान ढूंढ़ सकते हैं। किन्तु, आंदोलनकारियों द्वारा इस चुनाव का बहिष्कार कर देने से यह आशा समाप्त सी हो गई। प्रतीत तो कुछ ऐसा होता है कि नए प्रशासन का अधिकांश समय नवनिर्वाचित विधायकों की सुरक्षा में ही खत्म हो जायगा। बहरहाल असम आंदोलनकारियों द्वारा चुनाव का बहिष्कार करना भी कम विवादास्पद नहीं है। एक मत यह भी है कि 1977 में इसी मतदाता सूची के आधार पर जनता पार्टी सत्ता में आई थी। यदि असम के आंदोलनकारी संगठन इन राष्ट्रीय राजनीतिक दलों के साथ मिल कर चुनाव लड़ते तो बहुत संभव था कि वे विधानसभा में ऐसी स्थिति प्राप्त करने में सफल हो जाते जिसके आधार पर उनकी सम्पूर्ण शक्ति में वृद्धि ही होती। इसलिए, केन्द्र द्वारा चुनाव करवाए जाने के कारण कुछ भी रहे हों, यह स्पष्ट है कि चुनाव का बहिष्कार करके असम आंदोलनकारियों ने न केवल अपना जन-प्रभाव दिखाने का अवसर खो दिया है बल्कि असम समस्या के समाधान को उलझाते हुए अत्यन्त दीर्घगामी बना दिया है।

चुनावी हिंसा ज्यादातर ऐसे क्षेत्रों में हुई जहाँ पर अनुप्रवेशियों का बाहुल्य था। इसका लाभ असम की जनजातियों और बंगलादेशी घुसपैठियों ने भी उठाया। चुनाव करवाने में तल्लीन सरकार के सीमित साधनों का लाभ उठाकर, यह प्रयत्न किया गया कि उर्वर और उपजाऊ भूमि को अधिक से अधिक हड़प लिया जाय। इन घटनाएँ असम आंदोलन के प्रति जनजातियों के दृष्टिकोण और इस संदर्भ में अन्तर्राष्ट्रीय स्वार्थों के हस्तक्षेप पर प्रकाश डालती हैं। देश की एकता के संदर्भ में यह आवश्यक है कि केन्द्र सरकार इन घटनाओं पर मनन करें और आवश्यक कार्यवाही करने में न झिझके। एक और बात जो चुनावी हिंसा के फलस्वरूप प्रकाश में आती है असम आंदोलनकारियों और हिंसा को लेकर है। आंदोलनकारी चाहे कुछ भी कहें हिंसा में उनके उत्तरदायित्व को नकारा नहीं जा सकता। अभी तक इस जन आंदोलन की जो अहिंसक छवि बनी हुई थी वह निस्संदेह धूमिल पड़ी है। इसी प्रकार हिंसा को न रोक सकने में केन्द्रीय सरकार की असफलता भी विचारणीय है। इससे यह स्पष्ट होता है कि स्थानीय अधिकारियों ने शासन के प्रति प्रतिबद्धता नहीं दिखाई। तभी देश के विभिन्न भागों से अधिकारियों का आयात असम में किया गया। आंदोलन की सार्थकता चाहे कुछ भी हो, शासकीय अधिकारियों के इस रवैए को गम्भीरता से देखा जाना चाहिए।

अन्तिम प्रश्न इस बात को लेकर है कि असम समस्या का समाधान क्या हो। जैसा कि पहले ही स्पष्ट किया जा चुका है, मतभेद का मुख्य मुद्दा 1961 और 1971 के बीच आए अनुप्रवेशियों को लेकर है। गहराई से विश्लेषण किए जाने पर इस समय अन्तराल को और सीमित किया जा सकता है क्योंकि 1965 तक हुआ अनुप्रवेश मानवीयता के आधार पर विवादास्पद नहीं है और इस समय तक आए अनुप्रवेशियों को नियमित रूप से तत्कालीन पूर्व पाकिस्तान में वापस भी भेजा गया है। अतः मुख्य समस्या 1965 और 1971 के बीच आए हुए अनुप्रवेशियों का पता लगाना है तथा उनके भविष्य पर निर्णय लेना है। ऐसे लोगों को देश के विभिन्न भागों में प्रतिस्थापित करना था उन्हें संवैधानिक अधिकारों से विमुख कर देना यदि अव्यावहारिक प्रतीत होता है, तो केन्द्र सरकार को प्रदेश के आर्थिक विकास के लिए अधिक पूंजी का निवेश करना आवश्यक है। इस सम्बन्ध में यह भी कहा जाना आवश्यक है कि पूंजीनिवेश ऐसे क्षेत्रों में होना चाहिए जिससे अधिकाधिक लोगों को रोजगार और आर्थिक लाभ मिल सके। इसके द्वारा अनुप्रवेशियों के आगमन से स्थानीय लोगों के आर्थिक हितों को हुई क्षति को कम किया जा सकेगा। अन्त में केन्द्र सरकार को 1971 के बाद आए अनुप्रवेशियों को बांगलादेश लौटाने के लिए कड़ा रूख अपनाना होगा। यह सोचना कि इससे भारत और बांगलादेश के पारस्परिक सम्बन्ध तनावपूर्ण होंगे, ठीक नहीं है क्योंकि भारतीय पक्ष अन्तर्राष्ट्रीय विधि पर आधारित है और वैधानिक अधिकारों के प्रवर्तन हेतु झिझकने की कोई आवश्यकता नहीं है। ■ ■

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

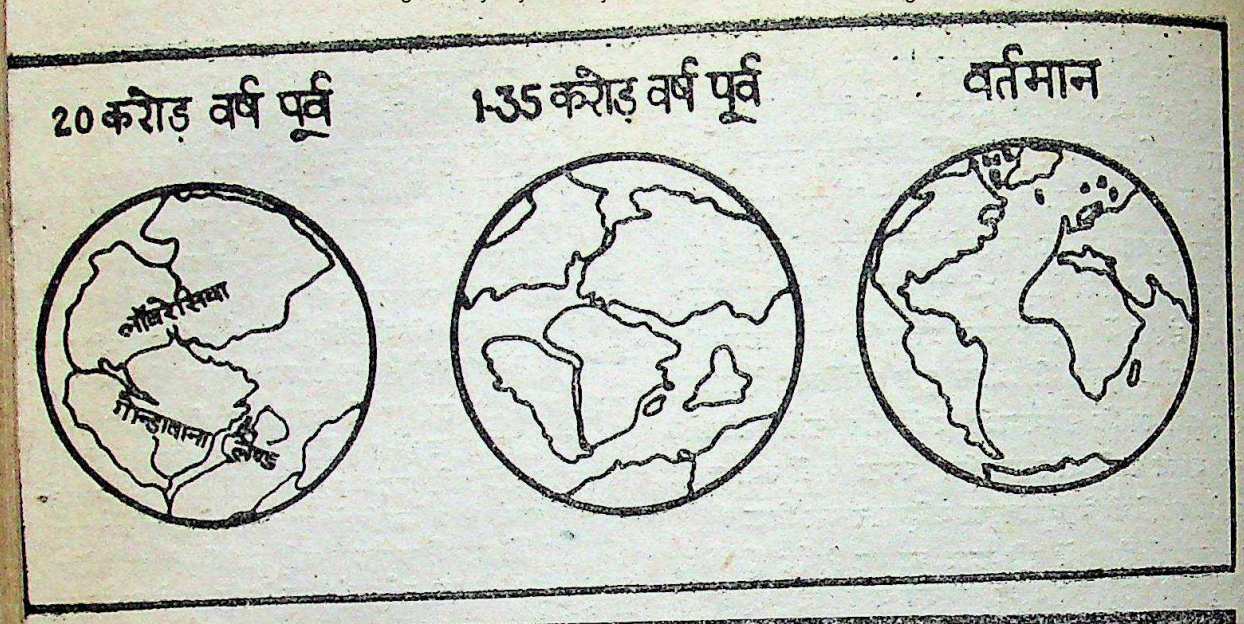

भौगोलिक अभियान :

□ शंकर

अन्टार्कटिका : एक अज्ञात महाद्वीप की खोज

इस ग्रह के नितल में स्थित है एक हिमाच्छादित महाद्वीप.....एक गौरवदना निद्रामग्न राजकुमारी की भांति जिसका अलौकिक सौन्दर्य तृष्णा व भय की सृष्टि करता है.....तुषार दीप्ति से संदीप्त अक्षत यौवना यह राजकन्या ऐसी प्रतीत होती है जैसे वह अपने हिममणि टंकित शुभ्र वस्त्रों को तरंगायमान करके बहुवर्णीय छटा निःसृत कर रही हो—क्षितिज पर नीले, हरे व स्वर्णाभा से प्रांजल रंगों की निराली मुस्कान के साथ। ऐसा है यह अनुपम महाद्वीप—अन्टार्कटिका. जिसका विस्तार पृथ्वी के सतह पर 1.42 करोड़ वर्ग कि.मी. तक है। पृथ्वी के सात महाद्वीपों में सर्वाधिक ठण्डा, सूखा व दुर्गम महाद्वीप—अन्टार्कटिका—का क्षेत्रफल पृथ्वी के कुल क्षेत्रफल का $\frac{1}{10}$ भाग है। क्षेत्रफल की दृष्टि से अन्टार्कटिका संयुक्त रूप से आस्ट्रेलिया, यूरोप व भूमध्य रेखा के दक्षिण के अफ्रीका महाद्वीप; संयुक्त रूप से सं. रा. अमेरिका व मेक्सिको या संयुक्त रूप से भारत व चीन के क्षेत्रफल से बड़ा है। अन्टार्कटिका महाद्वीप को ट्रान्स अन्टार्कटिक पर्वत दो असमान भागों में विभाजित करता है। दोनों में बड़ा भाग पूर्वी अक्षांश में है और पूर्वी या वृहत अन्टार्कटिका कहलाता है तथा छोटा भाग पश्चिमी अक्षांश में है— पश्चिमी अन्टार्कटिका कहलाता है। अन्टार्कटिका का $\frac{1}{10}$ भाग 1.6 कि.मी. से 4.5 कि.मी. मोटी बर्फ की परत से सर्वदा ढका रहता है। इस बर्फ का कुल आयतन 3 करोड़ घन टन है। यदि यह कुल बर्फ एक साथ गल जाये तो पृथ्वी के सभी समुद्रों का जलस्तर 50 से 60 मीटर ऊंचा हो जायेगा। साथ में, पूर्वी आन्टार्कटिका पर्वतों से भरा एक क्षेत्र हो जायेगा। इस क्षेत्र के मध्य में एक विशाल झील नजर आयेगी जो समुद्र के जलस्तर के 2500 मीटर नीचे होगी। पश्चिमी अन्टार्कटिका अलग-अलग द्वीपों का समूह नजर आयेगा। अन्टार्कटिका की औसत ऊंचाई 1830 मीटर है। सर्वाधिक ऊंचाई विन्सन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैसिफ (5180 मीटर) की है। अन्टार्कटिका में बर्फ से मुक्त भाग का क्षेत्रफल 2 लाख वर्ग कि.मी. है। अन्टार्कटिका का अधिकांश भाग सूखा रहता है। केवल कुछ भागों में 15 से.मी. वार्षिक वर्षा होती है। अन्टार्कटिका में वर्ष में एक दीर्घ दिन (अक्टूबर से फरवरी) और एक दीर्घ रात (मार्च से सितम्बर) होता है। जब भारत में ग्रीष्म ऋतु चल रही होती है तब अन्टार्कटिका में शीत ऋतु चलती है और जब भारत में शीत ऋतु चल रही होती है तो अन्टार्कटिका में ग्रीष्म ऋतु चलती है। ग्रीष्म ऋतु के दौरान आकाश स्वच्छ, व दीर्घ दिन होने के कारण अन्टार्कटिका प्रदेश में सूर्य की उष्मा अधिक पहुंचने के बावजूद भी बर्फ की सतह से 80 से 90 प्रतिशत सौर विकिरण परावर्तित हो जाती है। शीत ऋतु की दीर्घ रात के दौरान सौर उष्मा का प्रश्न ही नहीं उत्पन्न होता है। शीत ऋतु के दौरान अन्टार्कटिका का तापक्रम 88 डिग्री सेलसियस तक पहुँच जाता है (पृथ्वी का न्यूनतम तापक्रम अन्टार्कटिका के वोस्तोक नामक स्थान में अंकित किया गया है)। निरन्तर तूफानी बर्फीली हवाएं 45 कि.मी. से 300 कि.मी. प्रति घण्टा के वेग से चलती है। अन्टार्कटिका के भीतरी भाग में 23 मी.मी. तथा बाहरी भागों में 5 से.मी. वार्षिक तुषारापात होता है।

आज से 25 करोड़ वर्ष पूर्व आस्ट्रेलिया, अमेरिका, अफ्रीका, भारतीय प्रायद्वीप, मेडगास्कर तथा अन्टार्कटिका एक संयुक्त भूखण्ड थे, जिसे भूविज्ञानियों ने गोन्डवानालैण्ड की संज्ञा प्रदान की है। यह नाम प्राचीन भारत में नर्मदा नदी के दक्षिण में स्थित गोंड राज्य से लिया गया है। लगभग 14 करोड़ वर्ष पूर्व अफ्रीका अन्टार्कटिका से, लगभग 11 करोड़ वर्ष पूर्व भारत आस्ट्रेलिया अन्टार्कटिका से तथा 5 करोड़ वर्ष पूर्व आस्ट्रेलिया अन्टार्कटिका से विखण्डित हो गये थे। हालांकि अन्टार्कटिका एवं आर्कटिक दोनों ध्रुवीय महाद्वीप हैं परन्तु दोनों एक दूसरे से भिन्न हैं। जहाँ अन्टार्कटिका में बर्फ की परत अधिकांशतः ठोस चट्टान पर टिकी हुयी है और यह वर्फ स्वयं निरन्तर चट्टान का निर्माण करती रहती है, वहीं आर्कटिक एक महाखण्ड न होकर एक हिमसागर है। यही कारण है कि आर्कटिक महाद्वीप के नीचे से परमाणु ऊर्जा द्वारा चालित पनडुब्बियाँ आसानी से आ-जा सकती है। अन्टार्कटिका द्वीप में पेड़-पौधे तथा स्तनपायी पशुओं का नितान्त अभाव है, कहीं-कहीं पर शैवाल (Moss) जैसी वनस्पति तथा मक्खी की जाति के सूक्ष्म जीव पाये जाते हैं। अन्टार्कटिका के आदि अधिवासियों में पेंग्विन, सील तथा कुछ पक्षियों की गिनती की जा सकती है। पेन्ग्विन के अलावा सभी मूलतः जलचर प्राणी है, ये केवल रहने व प्रजनन के लिये स्थल पर आते हैं, और तटवर्ती भागों में रहते हैं। इनको अपना खाद्य प्रदार्थ समुद्र से ही प्राप्त होता है।

II

अन्टार्कटिका महाद्वीप इतना अधिक अनार्षक, दुर्गम व अनातिथेय होने के बावजूद मनुष्यों को सदैव से आकर्षित करता रहा है। अन्टार्कटिका महाद्वीप का खोज-अध्ययन-अनुसन्धान मनुष्य के लिये सदैव एक चुनौती रहा है। अन्टार्कटिका के लिये सर्वप्रथम अभियान न्यूजीलैण्डवासियों ने आज से 650 वर्ष पूर्व किया था। यह अभियान दल अधिक से अधिक बर्फीले समुद्र तक ही पहुँच सका। सत्रहवीं शताब्दी में अंग्रेज यात्री जेम्स कुक ने हालांकि अन्टार्कटिका का चक्कर लगाया परन्तु उसकी भूमि को देखने में असमर्थ रहे। 1839 में चार्ल्स विल्की नामक एक अमेरिकी वर्फीले समुद्र को पार कर सर्वप्रथम अन्टार्कटिका के तटवर्ती क्षेत्रों को देखने में सफल हुए। उन्हें अन्टार्कटिका का अन्वेषक कहा जाता है। बीसवीं शताब्दी के प्रथम दो दशक में अन्टार्कटिका महाद्वीप के सम्बन्ध में मनुष्य को आशातीत सफलता मिली। एच. जे. बुल (नॉर्वे) अन्टार्कटिका की भूमि पर पहला कदम रखने वाला अन्वेषक था। इसी प्रकार की सफलता रोनाल्ड अमुन्डसन (नॉर्वे), रॉबर्ट स्कॉट (ब्रिटेन) तथा अर्नेस्ट शैकलटन (ब्रिटेन) को भी मिली। इसी के पश्चात विश्व के सभी राष्ट्रों द्वारा अन्टार्कटिका को हड़पने के लिये दौड़ प्रारम्भ हुयी। अन्टार्कटिका के विभिन्न क्षेत्रों पर ब्रिटेन (1908 व 1933), आस्ट्रेलिया (1913), न्यूजीलैण्ड (1923), फ्रान्स (1924), नार्वे (1939) तथा चीली व अर्जेन्टीना (1946 तक) ने अपने प्रादेशिक दावे प्रस्तुत किये। ब्रिटेन, आस्ट्रेलिया, न्यूजी-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ड़, फ्रान्स, चीली व अर्जेन्टीना ने संलग्नता व अविछिन्नता के आधार पर तथा नॉर्वे ने खोज के आधार अपने प्रादेशिक दावे प्रस्तुत किये। अन्टार्कटिका के प्रतिशत भाग—मेरी वाइरेड लैण्ड तथा पैसीफिक ड—पर किसी राष्ट्र ने कोई प्रादेशिक दावा अब तक प्रस्तुत किया। सं. रा. अमेरिका एवं सोवियत संघ अन्टार्कटिका पर अपने दावे सुरक्षित रख कर अन्य राष्ट्रों के दावों को मानने से अस्वीकार किया है।

अन्टार्कटिका पर प्रादेशिक दावे परस्पर विरोधी और अन्य राष्ट्रों को अमान्य होने के कारण स्थिति बिगड़ने की अधिक सम्भावना थी। अन्टार्कटिका की समस्या समाधान हेतु 1959 में वॉशिंग्टन में एक अन्तरराष्ट्रीय सन्धि हुई। 23 जून 1961, को लागू इस सन्धि को अन्टार्कटिका प्रदेश के सात दावेदार राष्ट्रों (अर्जेन्टीना, आस्ट्रेलिया, ब्रिटेन, चीली, फ्रान्स, न्यूजीलैण्ड व नार्वे) के अतिरिक्त बेल्जियम, जापान, दक्षिण अफ्रीका, सं. रा. अमेरिका व सोवियत संघ ने स्वीकार किया। इस सन्धि के अनुसार, (1) अन्टार्कटिका प्रदेश का प्रयोग केवल शान्तिमय उद्देश्यों के लिये किया जाए, (2) वहाँ कोई सैनिक अड्डे न स्थापित किये जाए, (3) और न किसी प्रकार के शस्त्रों का परीक्षण किया जाए, तथा (4) प्रदेश में सभी राष्ट्रों के नागरिकों को शान्ति पूर्ण वैज्ञानिक परीक्षण करने की स्वतन्त्रता हों और इन परीक्षणों में सभी राष्ट्र परस्पर सहयोग करे। यह सन्धि 30 वर्ष के लिये है अर्थात 1991 में इसकी अवधि समाप्त होगी, इस दौरान अन्टार्कटिका प्रदेश पर किसी राष्ट्र का किसी भी आधार पर स्वामित्व नहीं होगा अर्थात सभी राष्ट्रों के प्रादेशिक दावे 1991 तक के लिये निलम्बित रहेगें। इस प्रकार, अन्टार्कटिका सन्धि ने अन्टार्कटिका को "विशुद्ध अनुसन्धान का महाद्वीप" बना दिया।

अन्टार्कटिका प्रदेश पर पहला वास्तविक वैज्ञानिक अनुसंधान अन्तर्राष्ट्रीय भूभौतिकीय वर्ष (1957-58) के दौरान आरम्भ हुआ। आज अनेक देशों के वैज्ञानिक स्थायी रूप से वर्ष भर अन्टार्कटिका प्रदेश पर वैज्ञानिक अनुसंधान करते है। अन्टार्कटिका प्रदेश में शीतकाल में 750 तथा ग्रीष्म काल में 2500 वैज्ञानिक अध्ययन-अनुसंधान सम्बन्धी कार्य करते हैं। यह सभी वैज्ञानिक अन्टार्कटिका में निर्मित स्थायी वैज्ञानिक अड्डों में निवास करते हैं। इन स्थायी वैज्ञानिक अड्डों में 9 अन्टार्कटिका सन्धि द्वारा निश्चित क्षेत्र के बाहर स्थित हैं और 42 अन्टार्कटिका सन्धि द्वारा निश्चित क्षेत्र के भीतर स्थित हैं। सन्धि द्वारा निश्चित क्षेत्र में अर्जेन्टीना (8), सोवियत संघ (6), ब्रिटेन (5), सं. रा. अमेरिका (4), आस्ट्रेलिया (4), फ्रान्स (4), दक्षिण अफ्रीका (3), चीली (3), जापान(2), न्यूजीलैण्ड(2), पोलैण्ड, (1) ने स्थायी वैज्ञानिक अड्डे स्थापित किये है। पूर्व जर्मनी व पश्चिमी जर्मनी भी निकट भविष्य में अन्टार्कटिका में स्थायी वैज्ञानिक अड्डा निर्माण करने की योजना बना रहे हैं। अधिकांश स्थायी वैज्ञानिक अड्डे अटलान्टिक महासागर के निम्नवर्ती वडेल सागर क्षेत्र में है और कुछ प्रशान्त महासागर क्षेत्र में स्थित है। अन्टार्कटिका का हिन्द महासागर क्षेत्र अधिक बर्फीला व दुर्गम होने के कारण आज तक वहाँ कोई स्थायी वैज्ञानिक अड्डा नहीं बनाया गया है। अन्टार्कटिका में स्थित नोवोलाजरेवस्कया (Novolazarevskaya) व मलोदेझानया (Molodezhnaya) नामक सोवियत स्थायी वैज्ञानिक अड्डे सर्वप्रमुख हैं।

III

डा. एस. जेड. कासिम के अनुसार, विज्ञान स्वयं साहसपूर्ण कार्यो जैसा रोचक है चाहें वह प्रयोगशाला में हो या अन्तरिक्ष में या प्राणी जगत में हो या अज्ञात महाद्वीपों व समुद्रों की खोज हो। इन सभी का मन्तव्य मानव ज्ञान की वृद्धि करना है तथा सम्पूर्ण मानवता के लिये इसे आर्थिक रूप से लाभकारी बनाना है। भारतीय वैज्ञानिकों ने स्वातन्त्र्योत्तर काल में कृषि, अणु, अन्तरिक्ष व नाभिकीय ऊर्जा के क्षेत्र में आशातीत सफलता प्राप्त की है। परन्तु, वे इस तथ्य से अनभिज्ञ नहीं हैं कि कृषि, अणु, अन्तरिक्ष व नाभिकीय ऊर्जा के क्षेत्र में उपलब्धि के पश्चात महासागर ही वस्तुतः एक ऐसा क्षेत्र बचता है जिसके दोहन की अपार सम्भावनाएं हैं। वास्तव में विकसित औद्योगिक राष्ट्रों द्वारा यह सिद्ध किया जा चुका है कि सामुद्रिकी के क्षेत्र में जाने के पहले अन्तरिक्ष व नाभिकीय ऊर्जा के क्षेत्र में जाना उपयुक्त न होगा। भारत में पिछले दशकों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से समुद्र विज्ञान पर अनेक शोध कार्य चल रहे हैं। 26 जनवरी, 1981 को सामुद्रिकी विज्ञान में भारत को प्रथम ठोस सफलता प्राप्त हुई जब भारतीय वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद के अन्वेषक जहाज 'गवेषणी' ने हिन्द महासागर के समुद्रतल से 'पोलीमेटालिक' मैंगनीज नोड्यूल्स नामक दुर्लभ खनिज का दोहन किया। इन नोड्यूल्स में निकल, तांबा, मैंगनीज व सोना का काफी अंश है। भूमिगत तथा समुद्र में सम्भावित नोड्यूल्स संचय में निकेल, तांबा, कोबाल्ट व मैंगनीज की मात्रा 54, 290; 498; 240; 1.5; 60; व 5400, 6000 मिलियन टन है। तृतीय सामुद्रिक विधि सम्मेलन में भारत की इस उपलब्धि से सन्तुष्ट होकर उसे समुद्रतल के खनिज हेतु अग्रणी पूंजी निवेशकर्त्ता का दर्जा प्रदान किया। परन्तु, समुद्रतल से नोड्यूल्स के सफल दोहन मात्र से कोई राष्ट्र सामुद्रिकी विज्ञान पर सम्पूर्ण नियन्त्रण नहीं प्राप्त करता है। इसके लिये उसे अनेकानेक कठिन मार्गों से गुजरना पड़ता है। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिये जुलाई 1981 में भारत के प्रधानमन्त्री की देखरेख में सागर विकास विभाग (Department of Ocean Development) की स्थापना की गयी। सामुद्रिकी विज्ञान से "सम्बन्धित सभी कार्यों का समन्वयन कर योजना बनाना ही इसका प्रमुख कार्य है"। इस विभाग की स्थापना के साथ सामुद्रिकी विज्ञान से सम्बन्धित अनुसन्धानों को प्रोत्साहन मिला।

भारत से 1100 कि. मी. दूर स्थित अन्टार्कटिका का अध्ययन-अनुसंधान करना अधिक उपयुक्त समझा गया। वास्तव में अन्टार्कटिका के सम्बन्ध में पहली बार गम्भीरता पूर्ण विचार-विमर्श सागर विकास विभाग की स्थापना के पश्चात किया गया। सागर विकास विभाग ने न केवल छह माह के भीतर भारत के प्रथम अन्टार्कटिका अभियान "ऑपरेशन गंगोत्री" की योजना बल्कि अभियान दल का चयन व उनका प्रशिक्षण, आधुनिकतम जहाज की व्यवस्था व अन्य उपकरणों की खरीददारी आदि भी की।

26 नवम्बर, 1981 को प्रथम भारतीय अन्टार्कटिका अभियान दल मार्वेजियाई जहाज एम. वी. पोलर सर्किल द्वारा गोवा के मार्मागोवा बन्दरगाह से रवाना हुआ। इस अभियान दल के नेता पर्यावरण विभाग के सचिव डा. एस. जेड. कासिम थे। अभियान दल के 20 सदस्य नेशनल इन्स्टीट्यूट ऑव ओशनोग्राफी, इण्डिया मीटिअरॉलॅजि डिपार्टमेन्ट, नेशनल फिजिकल लेबॅरेट, इण्डियन इन्स्टीट्यूट ऑव जियोमैग्निटिज्म् एवं भारतीय नौ सेना के थे। 1 जनवरी, 1982 को भारतीय अभियान दल आन्टार्कटिका की बर्फशिलाओं के किनारे पहुँचा पर अनुपयुक्त स्थान के चयन और खराब मौसम के कारण अन्टार्कटिका की भूमि पर कदम रखने में बिलम्ब हुआ। अन्ततः 9 जनवरी को भारतीय समयानुसार 0030 बजे भारतीय अभियान दल ने अन्टार्कटिका पर 69 डिग्री 59 मिनट दक्षिण (अक्षांश) एवं 11 डिग्री 54 मिनट पूर्व (देशान्तर) पर प्रथम बार कदम रखा। यह स्थान पूर्व अन्टार्कटिका में नार्वे द्वारा दावा किये गये क्षेत्र महारानी मॉउद् लैण्ड (Dronning Maud Land) के राजकुमारी आसत्रिद तटवर्ती भाग (Princess Astrid kyst) में स्थित है। अन्टार्कटिका में यह सफलता भारत के पूर्व विकासशील राष्ट्रों में चीली और अर्जेन्टीना, तथा एशिया में केवल जापान को प्राप्त हुई थी।

प्रथम अभियान दल अन्टार्कटिका में 10 दिन रह कर अध्ययन-अनुसन्धान करता रहा। आधार शिविर से 93 कि. मी. दूर एक पहाड़ी क्षेत्र में मौसम तथा भूरचना पर आकड़े एकत्र करने के लिये मानवरहित वैज्ञानिक केन्द्र स्थापित किया गया और इसका नाम 'दक्षिण गंगोत्री' रखा गया। इसके पूर्व 26 दिसम्बर को अभियान दल ने 53 डिग्री. 21 मिनट व 48 सेकेन्ड (दक्षिण अक्षांश) तथा 3 मिनट व 23 सेकेन्ड पूर्व (देशान्तर) पर जल के नीचे 3500 मीटर ऊँचे पर्वत की खोज की। भारतीय प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी के नाम पर इस पर्वत का नाम 'इन्दिरा माउन्ट' रखा गया। इस अभियान दल ने मौसम, दक्षिण सागर व अन्टार्कटिका महासागर में प्रदूषण का स्तर, अन्टार्कटिका के सम्बन्ध में भूरचना आकड़े आदि एकत्र किये। इस अभियान दल का प्रमुख उद्देश्य हिन्द महासागर और दक्षिण अन्टार्कटिका में गहरे समुद्र में खोज कार्य तथा जीवित व बेजान संसाधनों का पता लगाना था।

30 नवम्बर, 1982 को द्वितीय अन्टार्कटिका अभियान दल अन्टार्कटिका के लिये रवाना हुआ। दल के नेता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जियोलॉजिकल सर्वे ऑव इण्डिया के निदेशक वी. के. रैना थे। अन्य सदस्य नेशनल फिजिकल लेबॅरटॅरि, नेशनल जिअग्रैफइकल रिसर्च इन्स्टीट्यूट, इण्डियन मीटि-ऑरालॅजि डिपार्टमॅन्ट तथा नौ सेना से सम्बन्धित थे। 28 दिसम्बर, 82 को यह दल अन्टार्कटिका में वहीं उतरा जहाँ वर्ष भर पूर्व प्रथम अभियान दल उतरा था। द्वितीय अभियान दल का कार्यक्रम प्रथम की अपेक्षा अधिक व्यापक होने के कारण यह दल 60 दिन तक अन्टार्कटिका में रहा और वहाँ के भूरचना, मौसम, पर्यावरण, जीवाष्म, जीव वनस्पति खनिज सम्पदा आदि सम्बन्धी वैज्ञानिक परीक्षणों को आगे बढ़ाया। इसके अलावा केन्द्रीय भवन अनुसंधानशाला द्वारा डिजाइन व निर्मित किये गये फाइबर ग्लास व थर्मोकोल से बने इनसुलेटेड आवासों की भी स्थापना की गयी। वास्तव में उनकी स्थापना अन्टार्कटिका में स्थायी भारतीय अन्वेषण शिविर की स्थापना, जो 1985 के अन्त तक की जायेगी, की प्रारम्भिक भूमिका है। साथ में, अन्टार्कटिका के आधार शिविर से भारत का सीधा संचार सम्पर्क स्थापित किया गया। भारतीय दल ने कार्यक्रम के अनुसार, दक्षिण गंगोत्री में अस्थायी केन्द्र की स्थापना की। यहाँ पर रखे गये स्वचालित मौसम यन्त्र मौसम सम्बन्धी आकड़े एकत्र करता रहेगा। द्वितीय अन्टार्कटिका अभियान दल 25 फरवरी,83 को रवाना होकर 18 मार्च,83 को गोवा लौट आया। केन्द्रीय मन्त्रालय में सागर विकास विभाग के सचिव और प्रथम अभियान दल के नेता डा. एस. जेड. कासिम ने एक सरकारी विज्ञप्ति में कहा कि तृतीय भारतीय अभियान दल के जाने की तैयारी हो रही है। तृतीय अभियान न केवल और अधिक सदस्यों व आधुनिकतम् वैज्ञानिक यन्त्रों को ले जायेगा बल्कि उसका कार्यक्रम पूर्ववत अभियान दलों से अधिक व्यापक, जटिल व महत्वाकांक्षी होगा।

IV

प्रथम भारतीय अन्टार्कटिका अभियान एवं द्वितीय भारतीय अन्टार्कटिका अभियान में क्रमशः 2 करोड़ रुपया एवं 3 करोड़ रुपया व्यय हुआ। अब प्रश्न यह पैदा होता है कि अन्टार्कटिका जैसे दुर्गम, अनार्षक व असत्कारशील महाद्वीप के लिये इतने खर्चीले और जोखिमभरे अभियान क्या वांछनीय है? यह सत्य है कि अन्टार्कटिका महाद्वीप अत्यन्त दुर्गम, अनार्षक व असत्कारशील है परन्तु इसमें कोई दो राय नहीं कि इस महाद्वीप का समन्वेषण न केवल भारत सहित प्रत्येक राष्ट्र बल्कि सम्पूर्ण मानवता के लिये हितकारी होगा।

अन्टार्कटिका में भौगोलिक तथा भूविज्ञान से सम्बन्धित अनेक रहस्य अपने पूर्ववत अवस्था में छिपे हुए है। अन्टार्कटिक के अध्ययन से यह मालूम हो सकेगा कि पृथ्वी के अन्य भाग में भौगोलिक व भूगर्भिक परिवर्तन किस प्रकार हुए। आज से 15 करोड़ वर्ष पूर्व अन्टार्कटिका के गोन्डवानालैण्ड का अभिन्न भाग होने के कारण आज तक अनन्वेषित इस महाद्वीप के अध्ययन से भारतीय प्रायद्वीप, लातनी अमेरिका, अफ्रीका, व आस्ट्रेलिया के सम्बन्ध में अनेक अनुत्तरित जिज्ञासाओं का समाधान हो सकेगा।

अन्टार्कटिक के हिमाच्छादित भाग की भौतिक परिस्थितियाँ सम्पूर्ण पृथ्वी, विशेषकर दक्षिणी गोलार्द्ध की जलवायु को निरन्तर प्रभावित करती रहती है। भारत के लिये मानसून विशेष महत्वपूर्ण होता है। हांलाकि इस मानसून की उत्पत्ति हिन्द महासागर में होती है परन्तु वास्तव में इसके लिये आधारशील परिस्थितियाँ अन्टार्कटिक महासागर और ऊपरी वायुमण्डल के मध्य उष्मा के विनिमय चक्र के फलस्वरूप उत्पन्न होती है। अन्टार्कटिका का अध्ययन कर मानसून के अनिश्चित स्वरूप को सुनिश्चित कर कृषि उत्पादन में वृद्धि की जा सकती है।

अन्टार्कटिक के चारों ओर स्थित दक्षिण सागर समुद्रीय जीवन के विशालतम धारकों में से एक है। इनमें क्रिल नामक एक प्रकार की झींगा मछली पायी जाती है जो समुद्री प्लैंक्टन पर पलती हैं। वैज्ञानिकों के अनुसार, सोयाबीन के पश्चात प्रोटीन की सबसे अधिक मात्रा क्रिल में ही पायी जाती है। सोवियत संघ, जापान व पोलैण्ड प्रति वर्ष 2 लाख टन क्रिल मछली मनुष्य व पशु के उपभोग के लिये पकड़ते हैं। क्रिल की नस्ल व जनसंख्या को हानि न पहुँचाये बिना प्रत्येक वर्ष 4 करोड़ टन क्रिल का उपयोग किया जा सकता है। भारत के मत्स्य क्षेत्र में मछलियों के निरन्तर निःशेषण के कारण अन्टार्कटिका सागर में क्रिल का यह अथाह भण्डार उसके लिये अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्टार्कटिका के ट्रान्स अन्टार्कटिक पर्वत क्षेत्र में कोयला, लोहा, तांबा, निकिल, जस्ता, यूरेनियम, सोना, चांदी, प्लेटियम तथा अन्य मूल्यवान धातुओं का अथाह भण्डार है। पश्चिमी अन्टार्कटिका के रॉस सागर, बेलिंगहासेन व वेडेल सागर के कान्टिनेनटल शेल्फ में तेल का विपुल सुरक्षित भण्डार है। वैज्ञानिकों के अनुसार, यहाँ 50 विलियन बैरल तेल का सुरक्षित भण्डार है जो कि उत्तरी ध्रुव के अलास्का में पाये जाने वाले तेल की मात्रा से बहुत अधिक है। इसके अलावा, यहाँ लगभग 115 ट्रिलियन घन फीट प्राकृतिक गैस का सुरक्षित भण्डार है। तेल व गैस के इस सुरक्षित भण्डार के समुचित दोहण से विश्व उर्जा समस्या का सरलतापूर्वक समाधान हो सकता है।

संसार का 80 प्रतिशत पेय जल वर्फ के रूप में अन्टार्कटिका में संचित है। यह प्रदुषण रहित जलराशि है। अन्टार्कटिका के तट से 100 वर्ग कि.मी. क्षेत्रफल में प्रदुषण रहित जलराशि के हिम खण्ड निरन्तर टूटती है। इन्हे बहाकर विश्व के कम पानी वाले क्षेत्रों में ले जाकर वहाँ शुद्ध पेय जल की आपूर्ति की समस्या का समाधान किया जा सकता है। अन्टार्कटिका में तापक्रम सदैव बहुत ही कम रहने के कारण इसका उपयोग एक "विशाल प्राकृतिक रैफ्रिजरेटर" के रूप में किया जा सकता है।

अन्त में, भारत के लिये अन्टार्कटिका राजनीतिक दृष्टिकोण से भीअत्यन्त महत्वपूर्ण है। भारत और अन्टार्कटिका के मध्य केवल एक आध द्वीप स्थित है। अतः दोनों के मध्य स्थित हिन्द महासागर के मामलों में नियन्त्रण रखने हेतु भारत के लिये आवश्यक हो जाता है कि वह शीघ्रातिशीघ्र अन्टार्कटिका पर अपना स्थायी उपस्थिति का एजहार करे।

VI

अन्टार्कटिका में खनिज सम्पदा का अथाह भण्डार है। जैसा कि डा.एस. जेड. कासिम ने कहा है कि 1991 तक अन्टार्कटिका से सम्बन्धित मामलों का नियंत्रण अन्टार्कटिका सन्धि द्वारा होता रहेगा परन्तु इस सन्धि से यह स्पष्ट नहीं होता कि अन्टार्कटिका से क्या तेल व खनिज का दोहण आवश्यक है? क्या दोहण के फलस्वरूप आर्थिक लाभ पर्यावरण के खतरों से अधिक महत्वपूर्ण है? कौन इस खनिज सम्पदा का दोहण करेगा? दावेदार राष्ट्र? सन्धिकर्त्ता राष्ट्र? खनन कम्पनियाँ? सं. रा. संघ? शक्तिशाली राष्ट्र? 77 राष्ट्रों का समूह? इस पर कौन नियन्त्रण करेगा? अन्टार्कटिका के विकास सम्बन्धी कार्यों में कौन भाग लेगा? कौन लाभान्वित होगा? सम्पूर्ण विश्व समुदाय?

अन्टार्कटिका सन्धि की अनिश्चयता का सम्पूर्ण लाभ विकसित औद्योगिक राष्ट्र उठा रहे हैं। जुलाई 1980 में ब्यूनेस एयर्स में अन्टार्कटिका सन्धि के 14 हस्ताक्षरकर्त्ता राष्ट्र महाद्वीप के खनिज भण्डार के दोहण को नियन्त्रित करने हेतु एक व्यवस्था के गठन के लिये सहमत हुए। इन राष्ट्रों ने अन्टार्कटिका महासागर के समुद्रीय संसाधनों, विशेषकर क्रिल के संरक्षण व प्रबन्ध के लिये भी समझौता किया। समुद्रीय संसाधन रिन्यूअलेबेल (renewable) होने के कारण ऐसे समझौते के लिये विशेष मतभेद नहीं उत्पन्न हुए परन्तु नान रिन्यूलबेल (non-renewable) खनिज सम्पदा से सम्बन्धित किसी समझौते के पूर्व हितों का टक्कर होना अवश्यम्भावी है। फिर, क्या अन्टार्कटिका केवल इन 14 हस्ताक्षरकर्त्ता की अनन्य सम्पत्ति है कि वे मनमाने ढंग से उसके मसलों को नियन्त्रित करे? सं. रा. संघ के शेष 144 राष्ट्र क्या केवल दर्शक मात्र हैं। इस समय अन्टार्कटिका सन्धि पर हस्ताक्षरकर्त्ता राष्ट्रों की संख्या 19 (12 मूल हस्ताक्षरकर्त्ता राष्ट्र के अलावा पोलेण्ड, पश्चिमी जर्मनी, पूर्व जर्मनी, चेकोस्लवाकिया, रूमानिया, हालैण्ड व डेनमार्क) है। परन्तु सन्धि पर हस्ताक्षर करना ही पर्याप्त नहीं है। सम्पूर्ण परामर्शक सदस्यता (Full consultative membership) (संयुक्त निर्णयों पर निषेधाधिकार सहित) उसी राष्ट्र को प्राप्त होता है जिसने अन्टार्कटिका में ठोस वैज्ञानिक अनुसन्धान, जैसे वैज्ञानिक केन्द्र की स्थापना या वैज्ञानिक अभियान दल का प्रेषण आदि किया हो। सम्पूर्ण परामर्शक सदस्यता केवल 14 हस्ताक्षरकर्त्ता राष्ट्रों को प्राप्त है। हालाकि सं. रा. संघ का कोई भी सदस्य राष्ट्र इस सन्धि पर हस्ताक्षर कर सकता है परन्तु इस 14 राष्ट्रों का अनन्य समूह अपना एकाधिकार बरकरार रखने के लिये सभी नये हस्ताक्षर-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्त्ता राष्ट्रों को सम्पूर्ण परामर्शक सदस्यता से वंचित करे केवल साधारण सदस्यता प्रदान किया है। साथ में, यह अनन्य समूह अन्टार्कटिका के किसी मसले, चाहे वह खनिज सम्पदा के दोहण से सम्बन्धित हो या उसके भविष्य से, में बाहरी अभिक्रम (Initiative) को विफल करने में लगा रहता है। भारत ने अन्टार्कटिका सन्धि पर हस्ताक्षर के प्रश्न पर अभी तक कोई निर्णय नहीं लिया है। अगर वह इस सन्धि पर हस्ताक्षर के लिये आग्रही है तो कोई अड़चन की सम्भावना नहीं क्योंकि उसने अपने दो अभियानों द्वारा सदस्यता की अर्हताओं को पूरा कर लिया है। प्रश्न केवल इस बात है पर कि भारत को किस प्रकार की सदस्यता—सम्पूर्ण परामर्शक सदस्यता या साधारण सदस्यता, प्राप्त होगी। अधिक सम्भावना है साधारण सदस्यता की। वर्तमान सन्दर्भ में तो इस प्रकार की सदस्यता से भारत को विशेष लाभ नहीं होने वाला परन्तु हो सकता है कि सन्धि की अवधि समाप्त होने पर कोई विशेष लाभ हो।

ऐसी स्थिति में विकासशील राष्ट्रों का यह सोचना गलत नहीं है कि अन्टार्कटिका सन्धि न केवल औपनिवेशिक मनोवृत्ति का परिचायक है बल्कि औद्योगिक राष्ट्रों द्वारा विश्व व्यवस्था को नियन्त्रित करने का एक और साधन है। तृतीय समुद्री विधि सम्मेलन (1973-82) में विकासशील राष्ट्रों ने इस मत का सर्वसम्मति से समर्थन किया कि अन्टार्कटिका को मानवता की सम्पत्ति (Common heritage of mankind) माना जाय। सातवें गुटनिरपेक्ष सम्मेलन (1983) के अन्त में जारी किये गये आर्थिक घोषणा पत्र में "अन्टार्कटिका को मानवता के हित में केवल शान्तिपूर्ण उद्देश्य के लिये प्रयोग पर बल दिया गया है। घोषणा पत्र में कहा गया है कि विश्व के लिये इस क्षेत्र की आर्थिक सम्भावनाओं का महत्व है। इस क्षेत्र को अन्तर्राष्ट्रीय विवाद का मसला या दृश्य नहीं बनाया जाना चाहिए बल्कि इस क्षेत्र में सभी राष्ट्रों के प्रवेश की इजाजत होनी चाहिए। घोषणापत्र में यह भी स्वीकार किया गया कि उस क्षेत्र का अनुसन्धान और उसके साधनों का उपभोग सारे संसार के लिये किया जाना चाहिए।" अन्टार्कटिका सन्धि को समाप्त होने में 9 वर्ष बाकी है। इस दौरान उसकी वर्तमान स्थिति में सन्धिकर्त्ता राष्ट्र कोई परिवर्तन न कर सकेंगे। विकासशील राष्ट्रों के लिये यह जरूरी हो जाता है कि इस दौरान वे विकसित राष्ट्रों पर दबाव डाले और अपने दृष्टिकोण को उन्हें समझाकर बीसवीं सदी के आखिरी दशक में अन्टार्कटिका में नयी व्यवस्था का शिलन्यास करे। ■ ■

VISIT WRITE OR RING 52384

ASIA BOOK CO.

9, University Road, Allahabad.

BOOKS FOR P. C. S. EXAM.

1.	एम० पी० श्रीवास्तव	: प्राचीन भारतीय संस्कृति, कला और दर्शन	40.00
2.	Chaudhary	: English Grammer and Translation	7.00
3.	ओम प्रकाश मालवीय	: आधुनिक हिन्दी निबन्ध	15.00
4.	ओम प्रकाश मालवीय	: सामान्य हिन्दी	8.00
5.	पी० सी० एस० गाइड	: प्राचीन भारतीय संस्कृति	20.00
6.	पी० सी० एस० गाइड	: भारतीय इतिहास I	20.00
7.	पी० सी० एस० गाइड	: भारतीय इतिहास II	20.00
8.	पी० सी० एस० गाइड	: समाजशास्त्र	20.50
9.	पी० सी० एस० गाइड	: हिन्दी साहित्य	12.50
10.	पी० सी० एस० गाइड	: राजनीतिक शास्त्र	14.00
11.	पी० सी० एस० गाइड	: विधि I	18.00
12.	पी० सी० एस० गाइड	: विधि II	15.50
13.	पी० सी० एस० गाइड	: विधि III	16.00
14.	पी० सी० एस० गाइड	: भारतीय दर्शन	20.00
15.	पी० सी० एस० गाइड	: समाज कार्य	25.00
16.	पी० सी० एस० गाइड	: प्रारम्भिक गणित	12.00

नोट : पुस्तकों के लिए आर्डर करते समय 10/- रु. अग्रिम मनीआर्डर द्वारा भेजें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रीड़ा जगत

■ फुटबाल

● 6 मार्च 83 को कलकत्ता में आयोजित 39वें राष्ट्रीय फुटबाल चैम्पियनशिप (सन्तोष ट्राफी) के फाइनल की दूसरी टक्कर में विजेता पश्चिम बंगाल और गोवा बराबर खेल कर सन्तोष ट्राफी पर संयुक्त रूप से कब्जा करने का श्रेय प्राप्त किया। फाइनल के पहले टकराव में भी कोई गोल नहीं हो सका था। इस विजय के साथ प. बंगाल 20वीं बार राष्ट्रीय चैम्पियन बना। विश्वजीत भट्टाचार्य सर्वोच्च गोलदाता रहे।

■ हाकी

● 13 मार्च 83 को मेरठ में खेले गये 47वें राष्ट्रीय हाकी चैम्पियनशिप के फाइनल में पंजाब ने बम्बई को 1—0 से पराजित कर रंगास्वामी कप लगातार तीसरे वर्ष जीत लिया। इस विजय के साथ पंजाब 16वीं बार राष्ट्रीय चैम्पियन बना। ● 21 फरवरी 83 को झांसी में आयोजित तृतीय ध्यान चन्द स्मृति स्वर्ण कप हाकी प्रतियोगिता के फाइनल में एम. ई. जी. (बंगलूर) ने पिछले विजेता आर्टिलरी (नासिक) को ट्राइ ब्रेकर दौर में 8—4 गोल से पराजित कर कप जीत लिया। ● मार्च के द्वितीय सप्ताह में खेले गये तीन टेस्टों की श्रृंखला में भारतीय महिला हाकी दल ने रूसी महिला दल को 2—1 से पराजित कर श्रृंखला जीत लिया। फरीदाबाद (2-1), जयपुर (3—2) व नई दिल्ली (1—2)।

■ क्रिकेट

● 15 मार्च को समाप्त हुए रणजी ट्राफी फाइनल में कर्नाटक ने बम्बई को पहली पारी में 17 रनों की बढ़ौती के आधार पर पराजित कर राष्ट्रीय क्रिकेट चैम्पियनशिप बनने का श्रेय प्राप्त किया। बम्बई—534 व 213 रन पर 2 विकेट; कर्नाटक—551 रन व 179 रन पर 5 विकेट। ● फरवरी 83 के द्वितीय सप्ताह में आयोजित फाइनल में आस्ट्रेलिया ने न्यूजीलैण्ड को हराकर बेन्सन हेजेज विश्व श्रृंखला कप जीत लिया। तीसरा दल इंग्लैण्ड था। ● न्यूजीलैण्ड में आयोजित तीन टेस्टों सीमित ओवरों के श्रृंखला में न्यूजीलैण्ड ने 3—0 से इंग्लैण्ड को पराजित कर विजयश्री अर्जित की। ● 14 फरवरी को जयपुर में समाप्त होने वाले फाइनल में रांची विश्वविद्यालय ने पूणे विश्वविद्यालय को 117 रनों से हराकर अंतः विश्वविद्यालय महिला क्रिकेट चैम्पियनशिप जीत ली। अन्तिम स्कोरः रांची—200 व 99 रन; पूणे—81 व 101 रन। ● 1 मार्च 83 को किंगस्टन समाप्त हुए प्रथम क्रिकेट टेस्ट मैच में वेस्ट इण्डीज ने भारत को 4 विकेट से पराजित किया। अन्तिम स्कोर—भारतः 251 व 174 रन; वेस्ट इण्डीज : 254 व 173 रन पर 6 विकेट। ● 9 मार्च 83 को पोर्ट ऑव स्पेन में खेले गये प्रथम एक दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय मैच में वेस्ट इण्डीज ने भारत को 52 रनों से पराजित किया। अन्तिम स्कोर—वेस्ट इण्डीज : 215 रन पर 4 विकेट; भारत : 163 रन पर 7 विकेट। ● 2 मार्च 83 को ड्यूनडिन में खेले गये प्रथम एक दिवसीय सीमित ओवर मैच में न्यूजीलैण्ड ने श्रीलंका को 65 रनों से पराजित किया। अन्तिम स्कोर : न्यूजीलैण्ड—183 रन पर 8 विकेट; श्रीलंका—118 रन पर 9 विकेट ● 6 मार्च 83 को क्राइस्टचर्च में समाप्त हुए प्रथम क्रिकेट टेस्ट मैच में न्यूजीलैण्ड ने श्रीलंका को एक पारी व 25 रन से पराजित किया। अन्तिम स्कोर : न्यूजीलैण्ड—344 रन; श्रीलंका—144 व 175 रन। ● 13 मार्च 83 को समाप्त हुए फाइनल में पिछले विजेता प. बंगाल ने कर्नाटक को प्रथम पारी में रनों की बढ़ोतरी के आधार पर पराजित कर 9वीं राष्ट्रीय महिला क्रिकेट चैम्पियनशिप जीत ली। अन्तिम स्कोर : प. बंगाल—221 व 248 रन पर 7 विकेट; कर्नाटक—200 व 27 रन पर 2 विकेट।

■ टेबिल टेनिस

● फरवरी 83 में इन्दौर में आयोजित 44वीं राष्ट्रीय टेबिल टेनिस प्रतियोगिता के फाइनल में दिल्ली ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तामलनाडु को 5—2 से और महाराष्ट्र ने रेलवे को 3—2 से पराजित कर क्रमशः पुरुषों व महिलाओं की दलगत चैम्पियनशिप जीत ली। कमलेश मेहता ने चन्द्रशेखर को 22—20, 22—20, 21—19 से तथा इन्दु पुरी ने स्निग्धा मेहता को 21—13, 21—19, 21—17 से हरा कर क्रमशः पुरुष व महिला एकल चैम्पियनशिप जीत ली। दलगत स्पर्धा—जूनियर वर्ग : बालक—असम, बालिका मध्य प्रदेश; सब जूनियर वर्ग : बालक—प. बंगाल, बालिका—असम। अरुण ज्योति बरुआ तथा मीना सिन्हा राय ने क्रमशः जूनियर बालक व बालिका वर्ग का एकल खिताब जीता।

■ शतरंज

● 27 फरवरी को अगरतला में समाप्त हुए 20 वीं राष्ट्रीय 'ए' शतरंज चैम्पियनशिप युवा अन्तर्राष्ट्रीय मास्टर दिव्येन्दु बरुआ ने 13 अंक प्राप्त कर जीत ली। एक ही वर्ष में राष्ट्रीय 'बी' तथा 'ए' खिताब जीतने वालों में बरुआ सबसे कम उम्र के खिलाड़ी है। द्वितीय स्थान पवित्र मोहन्ती ($12\frac{1}{2}$ अंक) को प्राप्त हुआ।

■ स्क्वैश

● फरवरी के प्रथम सप्ताह में जयपुर में आयोजित राष्ट्रीय स्क्वैश चैम्पियनशिप के फाइनल में सेना ने दिल्ली को 3-2 से पराजित कर मानिक शॉ ट्राफी पर लगातार तीसरे कब्जा बनाये रखा। राज मनचन्दा ने दिनयार अली खाँ को 9-5, 9-4, 9-7 से तथा भुवनेश्वरी कुमारी ने हनी शर्मन को 4-9, 9-5, 9-2, 9-0 से पराजित कर क्रमशः पुरुष व महिला का एकल खिताब जीता।

■ टेनिस

● मार्च 83 के प्रथम सप्ताह में ब्यूनस आयर्स में खेले गये डेविस कप प्रतियोगिता के पहले चक्र में अर्जेन्टीना ने पिछले विजेता सं. रा. अमेरिका को 4-1 से पराजित किया। ● मार्च के प्रथम सप्ताह में कोलम्बो में आयोजित डेविस कप प्रतियोगिता के पूर्वी क्षेत्र के क्वाटर फाइनल में भारत ने श्रीलंका को 4-1 से पराजित किया। ● 27 फरवरी 83 को कुवैत में खेले गये फाइनल में विजय अमृतराज ने इली नास्तासे के साथ मिल कर राड फाले व ब्राड डायक को 6-3, 3-6, 6-2 से पराजित कुवैती टेनिस प्रतियोगिता का युगल खिताब जीता। प्रतियोगिता का एकल खिताब विटास जेरूलाइटिस को प्राप्त हुआ। ● 21 फरवरी 83 को मेमफिस में सम्पन्न फाइनल में जिमी कोनर्स ने जीन मेयर को 7-5, 6-2, से पराजित कर पुनः अमेरिकी राष्ट्रीय इन्डोर टेनिस प्रतियोगिता का एकल खिताब जीता। ● 21 फरवरी को बंगलूर में आयोजित फाइनल में एंरिको पिपर्नो ने बसन्त मयूर को 6-2, 7-6 से तथा नम्रता अप्पाराव ने विद्या प्रिया को 6-1, 6-2 से पराजित कर अखिल भारतीय हार्डकोर्ट टेनिस प्रतियोगिता का क्रमशः पुरुष तथा महिला एकल खिताब जीता।

■ बैडमिन्टन

● 14 फरवरी 83 को न्यूवेजीन में सम्पन्न फाइनल में मार्ट फ्रास्ट हेन्सन (डेनमार्क) ने प्रकाश पादूकोन (भारत) को 15-11, 15-4 से तथा सेली पोडगार (ब्रिटेन) ने नेटी नीलसेन (डेनमार्क) को 11-7, 11-3 से पराजित कर डच ओपन बैडमिन्टन प्रतियोगिता का क्रमशः पुरुष व महिला एकल खिताब जीता।

■ कुश्ती

● फरवरी 83 के तृतीय सप्ताह में जलन्धर में सम्पन्न 32वीं राष्ट्रीय फ्री स्टाइल कुश्ती चैम्पियनशिप के सीनियर वर्ग में दिल्ली ने सर्वाधिक 39 अंक प्राप्त कर विजयश्री अर्जित की। रेलवे 32 अंक प्राप्त कर उपविजेता बना। पंजाब व दिल्ली ने क्रमशः 18 वर्ष व 14 वर्ष से कम आयु वर्ग का खिताब जीता।

■ विविधा

● सेना सेवा कोर ने भारतीय सैनिक अकादमी को 7—$6\frac{1}{2}$ गोल से पराजित कर सवाई मानसिंह स्वर्ण कप पोलो टूर्नामेन्ट जीता। ● कर्नाटक व महाराष्ट्र ने 10वीं जूनियर राष्ट्रीय खो-खो चैम्पियनशिप के क्रमशः बालक व बालिका वर्ग मे विजयश्री अर्जित की। ● महाराष्ट्र ने 23 वीं राष्ट्रीय शरीर सौष्ठव प्रतियोगिता में दलगत खिताब जीता। ● डोनाल्ड करी (सं. रा. अमेरिका) ने जुन सो ह्वांग (द. कोरिया) को पराजित कर विश्व वेल्टर वेट बाक्सिग खिताब जीत लिया। ● भारत में खेले गये पांच टेस्ट की साफ्टबाल श्रृंखला में चीन की महिला दल ने भारतीय महिला दल को पांचों टेस्ट में पराजित कर श्रृंखला जीत ली। ● ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

FOCUS Banking/Civil/Defence Services Examination

Inner View

"...be ye lamps unto yourself. Be ye a refuge to yourself. Betake yourself to no external refuge. Hold fast to the Truth as a lamp. Hold fast as a refuge to the Truth. Look not for refuge to any one besides yourself."

Gautama Buddha.

Test of English Language.

Directions : In questions 1-10 spot the word *nearest* in meaning to the key word.

1. Cant.
   (a) tilt (b) boat
   (c) mischief (d) None of these
2. Momentary.
   (a) temporary (b) transitory
   (c) lasting (d) ephemeral
3. Persuade.
   (a) prevent (b) convince
   (c) forward (d) induce
4. Perpetual.
   (a) continual (b) contiguous
   (c) continuous (d) continuity
5. Differ.
   (a) decent (b) dissent
   (c) descent (d) deride
6. Deceptive.
   (a) illusive (b) illusionary
   (c) luminous (d) elusive
7. Pretend.
   (a) fain (b) fend
   (c) faience (d) feign
8. Excusable.
   (a) venal (b) vale
   (c) venial (d) valice
9. Intution.
   (a) instinct (b) perception
   (c) foresight (d) insight
10. Malice.
    (a) mischief (b) ill-will
    (c) harmful (d) improper

Directions : In questions 11-20 find the word you believe is *opposite* in meaning to the key word, from the alternatives given in each case.

11. Jaded.
    (a) weary (b) fatigued
    (c) refreshed (d) dissipated
12. Cheerful.
    (a) woeful (b) blithesome
    (c) convivial (d) gay
13. Inference.
    (a) implication (b) corollary
    (c) deduce (d) intution
14. Docility.
    (a) complaisance (b) obstinacy
    (c) fragile (d) regail
15. Persuasive.
    (a) dissuasive (b) disdainful
    (c) despicable (d) dissimulation
16. Ephemeral.
    (a) momentary (b) temporary
    (c) eternal (d) everlasting
17. Constant.
    (a) resolute (b) firm
    (c) continual (d) fluctuate
18. Stiff.
    (a) rigid (b) lithe
    (c) stubborn (d) hard
19. Relaxation.
    (a) drudgery (b) instill
    (c) repose (d) None of these
20. Activity.
    (a) stiletto (b) stodgy
    (c) strenuous (d) stupor

Directions : In questions 21-25 give one-word/idiom substitution choosing from the alternatives given in each case.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

21. "To restrain a person to do something by force."
(a) force (b) coerce
(c) instigate (d) invoke

22. People leaving one country to settle in another.
(a) emigrants (b) immigrants
(c) migrants (d) immigration

23. Something capable of being prepared as food.
(a) potable (b) eatable
(c) gourmat (b) edible

24. (Of plants, fashions, words etc.) introduced or coming from abroad.
(a) imported (b) foreign
(c) exotic (d) alien

25. To suspect that something is wrong.
(a) to smell a rat
(b) to feel the pulse
(c) to taste folk in rock
(d) to hear the ballads of yore

Directions : In questions 26-30 the word(s) to fill in the blank(s) is given as one of the alternatives among the four given below each sentence. Spot the correct alternative in each case.

26, The American.....left their plane at Leningrad, stepping for the first time on Russian soil.
(a) emigrants (b) migrants
(c) immigrants

27, Sumnima shot a shy.....at her fiance.
(a) glimpse (b) glance
(c) gaze (d) look

28. One who requires.....is a lazy person.
(a) arousing (b) arising
(c) raising (d) rising

29. Paulima.....not go to sleep.....she was over-excited.
(a) could/because (b) will/for
(c) must/since (d) would/as

30. Anushri.....dreamily.....the distance in wonderment.
(a) glanced/into (b) glimpsed/in
(c) gazed/into (d) looked/at

*Reasoning Ability Test.

Directions : Questions 1-2 are based on letter series from each of which some of the letters are missing. The missing letters are given in the proper sequence as one of the alternatives among the five given below each question. Find the correct alternative in each case.

1. n c - dcn - cddc -n - ddcnn -
(1) c d n d c (2) d n n c c
(3) d c n d d (4) n c c d n
(5) c n d n c

2. - b b a - b a - - a a - a b - a
(1) b b a a b b
(2) a b a b a a
(3) a a b b b b
(4) b b a a a a
(5) b a b b a b

Directions : Questions 3-7 are based on logical reasoning. The conclusion is given as one of the alternatives among the four given under each question. Spot out the correct alternative in each case.

3. (i) A bag contains 16 balls, of which 10 are red and 6 are blue. The chances of drawing a red and a blue ball are respectively :
(a) 26 and 6 (b) 6 and 26
(c) 10/16 and 6/16 (d) 6/16 and 10/16

(ii) The chance of drawing either red or blue ball is :
(a) 1 (b) 2
(c) 3 (d) 4

4. The chances of Nilakshi eating chocolates is 5/6
The chances of Devayani eating chocolates is 2/3
The chance of their having actually eaten chocolates is :
(a) 7/9 (b) 9/7
(c) 18/17 (d) 17/18

5. If it has rained, the ground is wet
The ground is wet
∴ It has rained
(a) The conclusion necessarily follows from the statements
(b) The conclusion does not follow from the statements
(c) The conclusion is a case of 'False Cause.'
(d) The conclusion is a case of 'ignorance of the nature of the refutation.'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

6. No girl is divine
Some daffodils are girls
∴

(a) Some girls are divine
(b) All daffodils are not girls
(c) Some daffodils are either girls or divine
(d) Some daffodils are not divine

7. So far, all the girls with whom I have come into contact are beautiful orchids; why should I not infer, therefore, that Girls are like Orchids ?

(a) The inference is correct
(b) The inference speaks volumes of experience
(c) This kind of reasoning at best can be merely probable and not certain
(d) The reasoning is certainly correct as far as I am concerned, it may be probable for others

Directions : Question 8 (a-j) is based on jumbled spellings of ordinary words Unscramble these ten Jumbles to form ten common words.

8. a. euque f ullks
b. yands g. foyfap
c. bophis h. grufie
d. mirads i. whiss
e. duwne j. loogi

Directions : Question 9 (a-j) is, again, based on jumbled spellings in which the first letter of each word is missing. Unscramble the word-maze, add the letter 'C' to each of the word to make it meaningful.

9. a. sasre f. romaul
b. lora g. gdnnio
c. larna h. ngrie
d. toirah i. dldue
e. elcri j. nicy

Directions : In question 10-13 spot the correct alternative from the four alternatives given below each question.

10. The triangle *ABC* has AB = 5 cms, AC = 8cms and BC = 9 cms. Then

A. the triangle ABC is obtuse-angled
B. the triangle ABC is not obtuse-angled
C. the triangle ABC is right-angled
D. none of the above statements is correct

11. Vikram earns 10% more than Anagat, then Anagat gets :

A. 10% less than Vikram
B. 9% less than Vikram
C. $9\frac{1}{11}$% less than Vikram
D. 10% more than Vikram

12. Two plane mirrors are set at right angles and a flower is placed in any position in between the mirrors. The number of images of the flower which will be seen is

A. one B. two
C. three D. four

13. State which of the statements is true ? For every integer n, $n(n+1)(n+2)$ is divisible by:

A. 7 B. 6
C. 9 D. 12

Directions : Questions 14-17 are based on word series in each of which one word is different from the others. Find that word in each case.

14. 1. endless 2. eternal 3. transient
4. perpetual 5. interminable

15. 1. quiet 2. peaceful 3. calm
4. serene 5. boisterous

16. 1. refuse 2. regard 3. refute
4. regain 5. regal

17. 1. tense 2. tenree 3. tenotomy
4. tender 5. tenor

Directions : In questions 18-22 there is a question mark in a blank space in each question in which only one of the four alternatives given under the question satisfies the same relationship as is found between the two words to the left of sign : : given in the question. Find the correct answer.

18. Bears : Growl : : ___?___ : Coo
(A) Ducks (B) Screech
(C) Doves (D) Monkeys

19. Rumbles : Thunder : : ___?___ : Wind
(A) Whistles (B) Rustles
(C) Lapps (D) Roars

20. Gypsy : Caravan : : ___?___ : Wigwam
(A) Hermit (B) Eagle
(C) Monk (D) Red Indian

21. Stone : Sculptor : : ___?___ : Brazier
(A) Iron (B) Brass
(C) Brassiere (D) Wine

22. Brevity : Brief : : ___?___ : Accessible
(A) Activity (B) Access
(C) Accede (D) Accentual

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

*Clerical Aptitude Test.

Directions: In Questions 1-12 under the column 'Question' are pairs of words and numbers. Four 'answers' are given under column A B C and D. Which 'answer' is exactly the same as given under the 'question'?

Question	A	B	C	D
1. Forthright — 55154	Forthright — 56154	Fortlright — 55153	Fonthright — 55154	None
2. Lopamudra 79863	Lopamudra 79863	Lopamudra 79863	Lopamudra 79863	All
3. Henpecked Slumber	Henpecked Slunber	Henpacked Slumber	Henpecked Slumber	None
4. 986532 235689	985632 235689	986532 235689	986532 236589	All
5. Madhurantaka Uttama Chola	Madhurantaka Uttama Chola	Madhurantaka Uttama Chola	Madhurantaka Uttama Chola	All
6. Indolent 1470741	Indolent 1477041	Inlodent 1470041	Indolent 1470741	None
7. Proffer BoTwOn6	Profeer BoTWon9	Proffer BoTwOn6	Porffer BoTwOn6	None
8. Pradyota T6M9N3	Pradyota T6M9N2	Prodyota T6M9N3	Pradyota T6M9N3	All
9. Sumnima 0009696	Sumnima 0009696	Sunmima 0009696	Sumnma 0009696	All
10. Apala Paulima	Apala Paulmai	Aqala Paulima	Apala Paliuma	None
11. 1357901 Pilfer	1357901 Pilfer	1357901 Pilfer	1357901 Pilfer	All
12. Parantaka Sreyashri	Parantaka Sreyashri	Panartaka Sreyashri	Parankata Sreyashri	None

KEY TO EXERCISES

***Test of English Language :**

1. (a); 2. (b) 3. (d); 4. (c); 5. (b);
6. (a); 7. (d) 8. (c); 9 (d); 10. (b);
11. (c); 12. (a); 13. (d); 14. (b); 15 (a);
16. (c) or (d); 17. (d); 18. (b); 19. (a): 20 (d);
21. (b); 22. (a); 23. (d); 24. (c); 25. (a);
26. (c); 27. (b); 28. (a); 29. (d); 30. (c);

***Reasoning Ability Test.**

1. (2); 2. (3); 3. (i)—(c); (ii)—(a); 4. (d); 5. (b); 6. (d); 7. (c);

8. a. Queue, b. sandy; c. bishop, d. disarm, e. unwed, f. skull, g. payoff, h. figure, i. swish, j. igloo,

9. a. caress, b. carol, c. carnal, d. chariot, e. circle, f. clamour, g. condign, h. cringe, i. cuddle, j. cynic:

10. B; 11. C; 12. C; 13. B;

14. 3 : All other words except 'transient' are similar in meaning.

15. 5 : 'Boisterous' is different in meaning from others.

16. 2 : All other words except 'regard' have been arranged as they are in a dictionary.

17. 4 : 'Tender' is the odd man out. The words have been arranged in the reverse order as of in a dictionary.

18. (C); 19. (A); 20. (D); 21. (B) 22. (B);

***Clerical Aptitude Test.**

1. D, 2. D, 3. C, 4. B, 5. D, 6. C, 7. B, 8. C, 9. A, 10. D, 11. D, 12. A,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिवार कल्याण का एक आसान तरीका दूरबीन विधि से महिला नसबन्दी

- यह एक सुरक्षित और आसान तरीका है।
- इसमें केवल पाँच मिनट का समय लगता है।
- अस्पताल में रुकने की जरूरत नहीं होती।
- सेवा प्राप्त महिला 3 या 4 घन्टे के आराम के बाद घर वापस जा सकती है।
- प्रदेश के समस्त जिला महिला चिकित्सालयों एवं मेडिकल कालेजों में दूरबीन विधि से महिला नसबन्दी (लैपरोस्कोपिक ट्यूबेक्टामी) की कुशल सेवा सुविधायें उपलब्ध है।
- साथ में नकद प्रोत्साहन तथा समस्त चिकित्सकीय सुविधायें निःशुल्क प्रदान की जाती है।
- प्रदेश में अब तक सवा लाख से अधिक महिलायें इस विधि को अपना चुकी हैं।
- सलाह और सेवा सुविधाओं के लिए अपने पास के मेडिकल कालेज अथवा जिला महिला चिकित्सालय से सम्पर्क कीजिए।

सुख, स्वास्थ्य और समृद्धि का आधार : छोटा परिवार

राज्य परिवार कल्याण ब्यूरो, उत्तर प्रदेश द्वारा प्रसारित

R. GUPTA'S

BOOKS FOR CAREER CONSCIOUS

Civil Services *(Prel. Exam.)*

Optionals
Rs. 15 Each

Just released-only book available in market. Rs. 15/- Order today to get the book in time.

- Economics* ● Political Science*
- Geography ● Sociology
- History ● Philosophy
- Syllabus for Civil Service Rs. 6
- Improve your Mental Ability Rs. 10

BANK COMPETITIONS

- Study Material for Aptitude Test and Test of Reasoning Rs. 50
- Bank Probationary Officers' Exam. Guide Rs. 35
- Bank Recruitment Test Guide* *(For Clerks/Typists etc.)* Rs. 18
- Superb Essays* Rs. 10
- Aptitude Test Rs. 10

OTHER BOOKS

NDA Exam Guide.	30.00
CDS Exam. Guide	30.00
Air Force (Technical Trades) Guide	25.00
*Assistants' Grade Exam. Guide**	30.00
*Railway ServiceCommission Exam. Guide**	18.00
*Junior Auditors'/Accountants' Exam. Guide**	30.00
A Dictionary of Idioms & Phrases	10.00
M.B.A. Admission Test Guide	
Objective General English	10.00
Business Letters	7.50
General English for Competitive Exams.	10.00
*Objective Arithmetic**	15.00
*Objective General Knowledge**	15.00
*A Guide to General Knowledge**	7.50
Hand Book of English Grammar	10.00
*Clerks' Grade Exam. Guide**	18.00

* *Hindi medium edition also available*

LATEST GK *FOR A COPY OF THE LATEST GENERAL KNOWLEDGE BOOK, PLEASE SEND M.O. OF RS. 2.50*

For VPP, Please Send Rs. 10/- in Advance by M.O.

RAMESH PUBLISHING HOUSE
4457, NAI SARAK DELHI-110006

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

रतन कुमार दीक्षित द्वारा 436, ममफोर्डगंज, इलाहाबाद से प्रकाशित तथा

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Regd. No R. N. 33028/77

Postal Regd. No. AD-137
Licence No. W.P.-43

JUST RELEASED

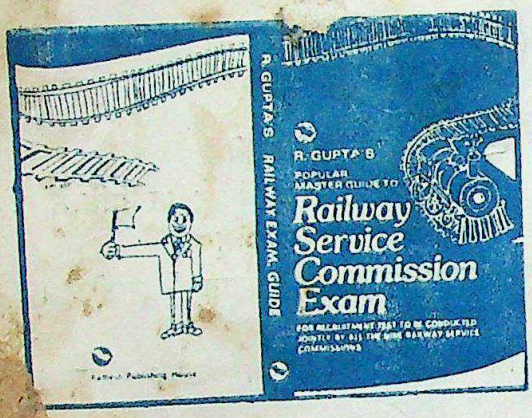

Rs 20/-.

R. Gupta's Railway Exam Guide

New edition of R. Gupta's famous Railway Exam. Guide According to new syllabus announced by the Railway Board. Model test papers and intelligence test are specialities of the guide. Attractive double spread cover. For success you can depend on this book.

A Hand Book of English Grammar

There is no dearth of good books on English Grammar. But this one is unique. It is written specially for those going to appear in competitive exams. Essentials of grammar well-explained. Lot of exercises for practice. A complete section devoted to English spelling.

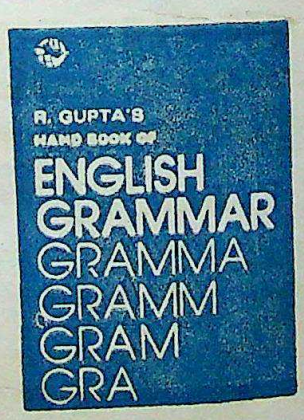

Rs. 10/-

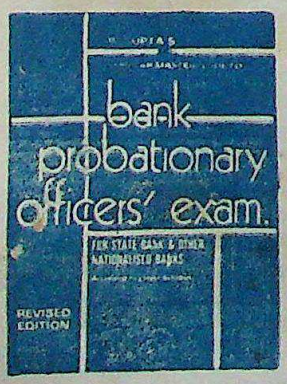

R. Gupta's Bank P.O. Exam Guide

R. Gupta's Bank P.O. Exam Guide is already a synonym of success in Bank P.O. Exam. Its 1983 edition contains a new model Test Paper and latest essays. Attractive glossy cover. Moderately priced.

Rs. 35/-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

While ordering, please, send Rs. 10/- in advance by money order to :

Ramesh Publishing House

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रगति मंजूषा

प्रतियोगितात्मक परीक्षाओं हेतु सर्वाधिक लोकप्रिय मासिक

मई 1983 रु. 4.50

बन्दे से प्राप्त संख्या 77
प्राप्ति दिनांक 19-5-83

सिविल सर्विस परीक्षा विशेषांक चतुर्थ

भारतीय भूगोल पर वस्तुपरक परीक्षण
भारतीय अर्थव्यवस्था पर वस्तुपरक परीक्षण
मानसिक योग्यता पर वस्तुपरक परीक्षण

महत्वपूर्ण लेख -

- केन्द्रीय बजट 1983-84 - एक समीक्षा
- भारतीय नौकरशाही के सामाजिक आयाम
- विश्व के अस्वशासित प्रदेश : स्वतंत्रता की परीक्षा
- तेल की राजनीति

वार्षिक योजना परिव्यय १९८३-८४

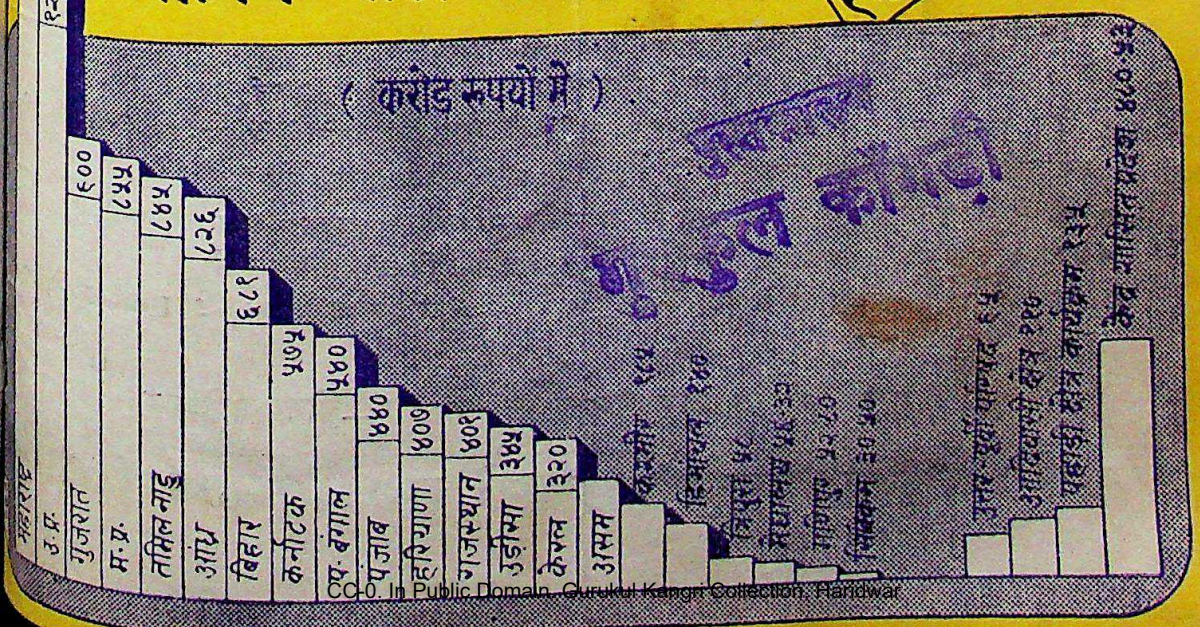

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Books for Munsifship Examination 1983

1. Bangia—Contract Act 35.00
2. Shukla—Transfer of Property Act 30.00
3. Tandon—Equity Trust & S. R. Act 30.00
4. Diwan—Modern Hindu Law 40.00
5. Diwan —Mu lim Law 25.00
6. G. S Pande—Evidence Act 32.00
7. Tandon—Criminal Procedure Code 45.00
8. Tandon—Civil Procedure Code- 40.
9. M. L. Singhal—Pleading, Judgment & Charge 15.
10. Singhal—How to Write Judgment 20
11. O. P. Tewari—U.P. Land Laws 20.
12. S. N. Misra—Indian Penal Code 50.
13. M. P. Tandon —Indian Penal Code 40
14. Narula—Legal Dictionary 25.

ये सभी पुस्तकें हिन्दी व अंग्रेजी में उपलब्ध है। पुस्तकें मंगवाने के लिये 10 रु० Advance M. O. से अवश्य भेजें।

ASIA BOOK COMPANY

9, UNIVERSITY ROAD, ALLAHABAD.

परिवार कल्याण का एक आसान तरीका दूरबीन विधि से महिला नसबन्दी

- यह एक सुरक्षित और आसान तरीका है।
- इसमें केवल पाँच मिनट का समय लगता है।
- अस्पताल में रुकने की जरुरत नहीं होती
- सेवा प्राप्त महिला ३ या ४ घन्टे के आराम के बाद घर वापस जा सकती हैं।
- प्रदेश के समस्त जिला महिला चिकित्सालयों एवं मेडिकल कालेजों में दूरबीन विधि से महिला नसबन्दी (लैपरोस्कोपिक ट्यूबेक्टामी) की कुशल सेवा सुविधायें उपलब्ध है।
- साथ में नकद प्रोत्साहन तथा समस्त चिकित्सकीय सुविधायें निःशुल्क प्रदान की जाती है।
- प्रदेश में अब तक सवा लाख से अधिक महिलायें इस विधि को अपना चुकी हैं।
- सलाह और सेवा सुविधाओं के लिए अपने पास के मेडिकल कालेज अथवा जिला महिला चिकित्सालय से सम्पर्क कीजिए।

सुख, स्वास्थ्य और समृद्धि का आधार—छोटा परिवार

राज्य परिवार कल्याण ब्यूरो, उ० प्र० द्वारा प्रसारित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मई—1983

प्रगति मंजूषा

प्रतियोगितात्मक परीक्षाओं हेतु सर्वाधिक लोकप्रिय मासिक

[राष्ट्र की भाषा में राष्ट्र को समर्पित]

वर्ष—6

अंक—5

इस अंक का मूल्य—रु० 4.50

पृष्ठ संख्या—96

सम्पादक
रतन कुमार दीक्षित

सह-सम्पादक
प्रदीप कुमार वर्मा 'रूप'

उप-सम्पादक
बी. शंकर घोष, राकेश सिंह सेंगर

मुख्य कार्यालय
436, ममफोर्डगंज
इलाहाबाद-211002

शाखा जनसम्पर्क
डी. 47/5, कबीर मार्ग
क्ले स्क्वायर, लखनऊ

विज्ञापन सम्पर्क-सूत्र
169/20 ख्यालीगंज, लखनऊ
दूरभाष : 43792

आवरण : कोलोरेड, इलाहाबाद

चन्दे की दर
वार्षिक : रु. 44.00, अर्द्ध वार्षिक : रु. 22.00
सामान्य अंक (एक प्रति) : रु 4.00
(चन्दा मनीआर्डर द्वारा मुख्य कार्यालय को ही भेजें)

पत्रिका में प्रकाशित सामग्री का सर्वाधिकार प्रकाशक के अधीन सुरक्षित है। पत्रिका में प्रकाशित लेखों के विचारों से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

विशेष आकर्षण

- सिविल सर्विस प्रारम्भिक परीक्षा हेतु वैकल्पिक विषयों पर महत्वपूर्ण पुस्तकें /7
- सिविल सर्विस प्रारम्भिक परीक्षा हेतु भारतीय भूगोल पर वस्तुपरक परीक्षण विशिष्ट परिशिष्ट/9
- सिविल सर्विस प्रारम्भिक परीक्षा हेतु मानसिक योग्यता पर वस्तुपरक परीक्षण विशिष्ट परिशिष्ट/22
- सिविल सर्विस प्रारम्भिक परीक्षा हेतु भारतीय अर्थव्यवस्था पर वस्तुपरक परीक्षण विशिष्ट परिशिष्ट/42

परीक्षोपयोगी महत्वपूर्ण लेख

- तेल की राजनीति/58
- भारतीय नौकरशाही के सामाजिक आयाम/65
- विश्व के अस्वशासित प्रदेश : स्वतन्त्रता की प्रतीक्षा/71
- केन्द्रीय बजट 1983-84 : एक समीक्षा/77
- घाटे की वित्त व्यवस्था और भारतीय अर्थव्यवस्था/82

स्थायी स्तम्भ

- समसामयिक सामान्य ज्ञान/2
- राष्ट्रीय सामयिकी/4
- व्यक्तित्व विकास/69
- अन्तरराष्ट्रीय सामयिकी/87
- क्रीडा जगत/91

भूलसुधार—पृष्ठ संख्या 56 के बाद भूल से पृष्ठ संख्या 65 से 72 छप गया है। कृपया इसे पृष्ठ संख्या 57 से 64 ही समझ कर पढ़ें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समसामयिक सामान्य ज्ञान

■ निर्वाचन एवं नियुक्तियाँ :

● ए.एन.बनर्जी—राज्यपाल, कर्नाटक

● होकिशी सेमा—राज्यपाल, हिमाचल प्रदेश

● वी.बी. सिंह—मुख्यमन्त्री, हिमाचल प्रदेश

● के. टी.वी. राघवन—अध्यक्ष, रेलवे बोर्ड

● ए. के. जैन—अध्यक्ष, फिक्की

● अबदाऊ ड्लाउफ—राष्ट्रपति, सेनेगल

● केप्टन डब्लू.ए. सैंगमा—मुख्यमन्त्री, मेघालय

● अश्विनी कुमार -उपाध्यक्ष, अन्तर्राष्ट्रीय ओलम्पिक समिति

● वी. चिदाम्बरम—अध्यक्ष, सेन्ट्रल बोर्ड ऑव डायरेक्ट टैक्सेस

● जार्ज रैमरीज—भारत में पेरू के राजदूत

● थियेम छुनी—भारत में कम्पूचिया के राजदूत

● एक्सेल एड्लस्टॉन—भारत में स्वीडन के राजदूत

● आर.एस. सरकारिया—केन्द्र-राज्य सम्बन्धों का पुर्ननिरीक्षण हेतु नियुक्त पैनल के अध्यक्ष

● रणजीत सेठी—मलेशिया में भारत के उच्चायुक्त

■ पदनिवृत्ति/पदत्याग

● ए. एन. बनर्जी—राज्यपाल, हिमाचल प्रदेश

● राम लाल—मुख्यमन्त्री, हिमाचल प्रदेश

● बी. बी. लिंगदोह—मुख्यमन्त्री, मेघालय

■ निधन :

● के. राजामल्लू—अध्यक्ष, अनुसूचित जाति व जनजाति आयोग

● ग्युला इलेयर—हंगरी के सुप्रसिद्ध लेखक

● प्रबोध कुमार सान्याल—बंगला के प्रख्यात उपन्यासकार

● डी. डी. रायो—प्रख्यात हालीवुड अभिनेत्री

● डेसमॉन्ड बेगले—सुप्रसिद्ध ब्रितानी रोमांच उपन्यासकार

● इशाम सारवाते--फिलिस्तीनी मुक्ति संगठन के नेता

● फौजा सिंह बाजवा—सुप्रसिद्ध सिख इतिहासकार

● सुलोचना (रूबी मेयर)—प्रख्यात हिन्दी फिल्म अभिनेत्री

● रूडोल्फ वान लेडोन—भारतीय कला के सुप्रसिद्ध विशेषज्ञ

● सोमनाथ खोशा—प्रख्यात भारतीय चित्रकार

● डा. ज्ञान चन्द -सुप्रसिद्ध भारतीय अर्थशास्त्री

● ग्लोरिया स्वानसन—सुप्रसिद्ध हालीवुड अभिनेत्री

● जनरल जे. एन. चौधरी—भारत के भूतपूर्व थल सेनाध्यक्ष

● चेलापति राव—प्रख्यात भारतीय पत्रकार व लेखक

● केदार पाण्डे—भूतपूर्व केन्द्रीय सिंचाई मन्त्री

● बार्नी क्लार्क—कृत्रिम हृदय को प्राप्त करने वाले विश्व में प्रथम व अकेले यक्ति

● डी.एम.खटाऊ--प्रख्यात उद्योगपति

● इम्बरटो II— भूतपूर्व इतालवी नरेश

● एल. सी. तलवार—प्रख्यात स्वतन्त्रता संग्रामी

■ अतिथि :

● मेलिना मरकौरी—संस्कृति एवं विज्ञान मन्त्री, ग्रीस

● कर्नल खू येग यान—नौ सेनाध्यक्ष, सिंगापुर

● जे. ए. समसांच—अध्यक्ष, अन्तर्राष्ट्रीय ओलम्पिक समिति

● लोथाठ कोल्डीज—अध्यक्ष, नेशनल काउन्सिल, पूर्व जर्मनी

● कारोलोस पापऊलीस—उपविदेश मन्त्री, ग्रीस

● सी. एस शिलिंग—डाक व संचार मन्त्री, पश्चिमी जमनी

● क्लॉड शेसों—विदेश मन्त्री, फ्रांस

■ महत्वपूर्ण आंकड़े :

● अनुमानतः उच्च शिक्षा प्राप्त तीस हजार भारतीय वैज्ञानिक व तकनीकी कर्मचारी अमेरिका तथा ब्रिटेन में काम कर रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

• 1971 की जनगणना के अनुसार देश में कुष्ठ रोगियों की कुल अनुमानित संख्या 32.5 लाख है।

• पिछले पांच वर्षों के दौरान भारत ने विदेशों से बिना ब्याज के 5877.09 करोड़ रु. का ऋण लिया और अभी तक इस अवधि के लिये उसे 1260.27 करोड़ रु. का ब्याज चुकता करना है।

• फरवरी 1983 के अन्त तक भारत के पास 4166 करोड़ रु. की विदेशी मुद्रा का भण्डार था. जबकि 31 मार्च 1982 को यह 3354 करोड़ रु. था।

• भारत में गरीबी के स्तर से नीचे रहने वाले व्यक्तियों की संख्या वर्ष 1979-80 में 3168 लाख, वर्ष 1980-81 में 2923 लाख तथा वर्ष 1981-82 में 2820 होने का अनुमान है।

• भारत में सर्वाधिक समाचार पत्र उत्तर प्रदेश (2702) व सबसे कम मेघालय (40 से प्रकाशित होते हैं।

• चर्चित फिल्म 'गांधी' के निर्माण पर 34 करोड़ रु. व्यय हुए हैं जिसमें राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम का हिस्सा 36.64% है।

• 31 मार्च 1982 तक भारत में 462271 ऐसे गांव थे जिनमें कोई डाक घर नहीं था।

• पिछले 30 वर्षों के दौरान भारत में राष्ट्रीय विकास दर मात्र 3.5% रही है और प्रति व्यक्ति आय में केवल 1.3% का वृद्धि हो सकी है। इसी अवधि में कृषि क्षेत्र में 2.7% तथा औद्योगिक क्षेत्र में 6.1% की विकास दर हासिल की गयी है।

• राज्य सरकारों की वर्ष 1982-83 की कुल मिलाकर वित्तीय स्थिति में 380 करोड़ रु. का घाटा हुआ।

• वर्ष 1981-82 के वित्तीय वर्ष की समाप्ति पर 16 राज्यों का कुल ओवर ड्राफ्ट 1492.85 करोड़ रु. था। जबकि वर्ष 1980-81 में यह राशि 535.91 करोड़ रु. था।

• इस समय सम्पूर्ण विश्व में हथियारों पर प्रति व्यक्ति 110 डालर व्यय हो रहा है। विकसित राष्ट्रों ने हथियारों के व्यापार से 25 अरब डालर प्रति वर्ष अर्जित कर रहे हैं।

• भारत में प्रति वर्ष 60 लाख एकड़ भूमि नष्ट होती जा रही है। भारत में प्रति वर्ष 37 करोड़ हेक्टेयर मीटर वर्षा होती है जिसमें केवल 8 करोड़ हेक्टेयर पानी जमीन द्वारा सोख लिया जाता है

• भारतीय खाद्य निगम, केन्द्रीय भण्डारण निगम के गोदामों में उचित व्यवस्था न होने के कारण प्रति वर्ष 10% खाद्यान्न नष्ट हो जाता है।

• वर्ष 1977-78 के मूल्यों के आधार पर शहरी क्षेत्रों एवं ग्रामीण क्षेत्रों में क्रमशः गरीबी की सीमा रेखा 75 रु. तथा 65 रु. है।

• केन्द्रीय सरकार ने वर्ष 1983-84 विपणन सीजन के लिये गेहूं का वसूली मूल्य 151 रु. प्रति क्विन्टल निर्धारित किया है जबकि कृषि मूल्य आयोग ने 150 रु. प्रति क्विन्टल का सुझाव दिया था। वर्ष 1982-83 में गेहूं का वसूली मूल्य 142 रु प्रति क्विन्टल था।

• वर्ष 1951-52 से वर्ष 1982-83 तक परिवार कल्याण कार्यक्रमों पर 1629.12 करोड़ रु. खर्चा किया गया।

• भारी उद्योग विभाग के अन्तर्गत सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों को वर्ष 1982-83 के दौरान अनुमानित 63 करोड़ रु. का लाभ हुआ। वर्ष 1981-82 इन उद्यमों को 19 करोड़ रु. का लाभ हुआ था।

• वर्ष 1982-83 में भारत को विभिन्न राज्यों में आई बाढ़ व तूफान से 410 करोड़ रु. का नुकसान हुआ वर्ष 1981-82 में यह नुकसान 1132 करोड़ रु. का था। देश को इस सम्बन्ध में 1953 से 1981 की अवधि के दौरान 365 करोड़ रु. का औसत वार्षिक नुकसान हुआ। वर्ष 1978 में सर्वाधिक 1455 करोड़ रु. का नुकसान हुआ था।

• 1980 के अन्त तक भारत के विभिन्न जेलों में 159672 कैदी बन्दी थे। इनमें 60% विचाराधीन कैदी थे। महिला बन्दियों की संख्या 2637 थी।

• वर्ष 1951 से वर्ष 1982 के तीस वर्षों में देश में सिंचाई क्षमता बढ़ाने का लक्ष्य केवल 67.5% ही पूरा किया जा सका और कम से कम आठ बड़ी सिंचाई परियोजनाएँ पिछले पन्द्रह से बीस वर्ष से लटकी हुई है।

• वर्ष 1978-79 और वर्ष 1982-83 के मध्य 65.96 करोड़ रु. मूल्य की भारतीय फिल्में विदेशों में बेची गयी।

• देश के विभिन्न उच्चन्यायालयों में 8 महिला न्यायाधीश कार्यरत हैं।

• भारत में संगठित क्षेत्र में महिलाओं की संख्या 1975 में जहाँ 11.3 प्रतिशत थी वहाँ वर्ष 1981 में 12.2 प्रतिशत हुई।

• रिजर्व बैंक ऑव इण्डिया प्रति दिन 30 हजार रुपये से 40 हजार रुपये के सिक्के जारी कर रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रीय समीक्षा

- दक्षिण की संयुक्त परिषद : केन्द्र से टकराव के नये आयाम
- सरकारिया आयोग : नये सम्बधों की तलाश
- पुलिस आयोग की रिपोर्ट : एक रस्म और पूरी हुई
- धारा ३०२ अवैध घोषित एक अन्याय की समाप्ति
- मेघालय सरकार का पतन : हरियाणा की पुनरावृत्ति
- हिमाचल प्रदेश में सत्ता परिवर्तन एक मोहरा और पिटा
- भारत-बंगलादेश : प्रयास जारी है

दक्षिण की संयुक्त परिषद : केंद्र से टकराव के नये आयाम

दक्षिण के चार राज्यों कर्नाटक आंध्रप्रदेश तमिलनाडु तथा पांडिचेरी के मुख्यमंत्री 20 मार्च बंगलोर में मिले और उन्होंने निम्नलिखित 8 प्रस्ताव पारित किये —

(1) राज्यों को पर्याप्त प्रतिनिधित्व देते हुए एक ऐसे आर्थिक आयोग का गठन हो जिसे केन्द्र-राज्य सम्बन्धों की अर्थ विषयक समीक्षा के आवश्यक कानूनी अधिकार प्राप्त हो। वह संसाधनों के अधिक संतुलित वितरण के सिलसिले में संविधान में संशोधन से लेकर नये कानून बनाने तक की सिफारिश कर सके।

(2) कृषिजन्य उत्पादनों की कीमतों का निर्धारण असंतोषजनक रहा है अतः वह अधिकार राज्यों को मिलना चाहिये ताकि वे किसान संगठनों से राज्य-मशविरा करके कीमतों का निर्धारण स्वयं करें।

(3) राज्यों के बीच संसाधनों का बँटवारा उनकी जिम्मेदारी को देखते हुए पर्याप्त नहीं है।

(4) केन्द्र द्वारा राज्यों को दी जाने वाली सहायता के स्वरूप में परिवर्तन होना चाहिए जिससे उस सहायता में कर्ज के मद में दिखाई जाने वाली रकम का बोध कम हो सके।

(5) संविधान के अनुच्छेद 250 से 257 के अंतर्गत प्रशासनिक संबंधों के प्रावधान की, कानून बनाने के अधिकारों की पुनर्समीक्षा हो। राज्य सूची के अंतर्गत आने वाले विषयों पर कानून बनाने का अधिकार राज्यों को हो और उसमें राष्ट्रपति की संपुष्टि की अनिवार्यता न हो।

(6) न्यायपालिका की स्वतंत्रता को सुरक्षित रखने के लिये उच्च-न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश पद पर उसी राज्य के व्यक्ति की नियुक्ति हो।

(7) खनिज पदार्थों पर राज्यों को मिलने वाली रायल्टी तथा आय-कर और आबकारी कर से होने वाले मुनाफे की दर में संशोधन हो।

(8) राज्यों को अंतर्राष्ट्रीय वित्त संस्थानों से कर्ज लेने का स्वतंत्र अधिकार हो।

दक्षिणी राज्यों की इस 'संयुक्त परिषद' का विपक्षी दलों ने आमतौर पर स्वागत किया जबकि कांग्रेस (इ) में इसे संदेह की दृष्टि से देखा गया है। इंका नेताओं का ख्याल है कि यह गैर कांग्रेसी दक्षिणी राज्यों का केन्द्र से संघर्ष करने का तथा उससे समानांतर एक नया संगठन खड़ा करके उसे चुनौती देने का पहला कदम है। इस बैठक में शामिल होने का निमंत्रण केरल के मुख्यमंत्री श्री करुणाकरन को भी दिया गया था

प्रस्तुति बच्चन सिंह 'दैनिक जागरण' वाराणसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किन्तु उन्होंने असमर्थता व्यक्त की [illegible] स्वाभाविक था। कुछ हलकों में [illegible] भी कहा जा रहा है कि जब [illegible]रीय और क्षेत्रीय विकास परिषद [illegible] संस्थायें मौजूद हैं जिनमें मुख्य-[illegible]त्रियों को अपनी बात कहने का [illegible]सर उपलब्ध रहता है, तब दक्षिणी [illegible]य अपनी अलग खिचड़ी पका कर [illegible]ष्ट्रीय एकता को हानि पहुँचाने का [illegible] नहीं करेंगे क्या? इसके उत्तर [illegible] कर्नाटक के मुख्यमंत्री श्री रामकृष्ण [illegible]ड़े का कहना है कि दरअसल मुख्य-[illegible]त्रियों की इस बैठक का उद्देश्य, [illegible]द्र और राज्यों के सम्बन्धों के वर्त-[illegible]मान स्वरूप की गहराई के साथ [illegible]रीक्षा करना है। इसका उद्देश्य [illegible]हकारी संघवाद को दृढ़तर करना [illegible]न कि केन्द्र से संघर्ष करना। [illegible] हेगड़े के मुताबिक दक्षिणी मुख्य-[illegible]त्रियों को एक मंच पर बैठने की [illegible]रूरत ही इसलिये पड़ी क्योंकि एक [illegible]रफ राष्ट्रीय विकास परिषद में केंद्र [illegible]र आयोजना आयोग का पलड़ा [illegible]री पड़ने की वजह से मुख्यमंत्रियों [illegible] अपना पक्ष प्रस्तुत करने का [illegible]वसर नहीं मिलता था और दूसरी [illegible]र क्षेत्रीय परिषदें व्यावहारिक अर्थों [illegible] निष्क्रिय हो चुकी थीं। उन्होंने [illegible]स परिषद का एक उद्देश्य आपसी [illegible]मस्याओं को मिलबैठकर हल करना [illegible] बताया।

राज्यों के बीच असंतुलन और गैर [illegible]कार शासित राज्यों के प्रति केन्द्र द्वारा [illegible]दभाव बरतने की शिकायत अरसे से [illegible] जाती रही है। क्षेत्रीय असंतलन [illegible] है, इससे कोई इनकार नहीं कर [illegible]कता। ऐसी स्थिति में राज्यों की [illegible] है यह मानने का कोई कारण नहीं दिखता। किन्तु दक्षिणी मुख्यमंत्रियों की सभी मांगें उचित ही है ऐसा भी नहीं माना जा सकता। उदाहरण के लिए अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थाओं से ऋण लेने की स्वतंत्रता को लिया जा सकता है। यदि कोई राज्य अंतर्राष्ट्रीय वित्त संस्था से ऋण ले ले और उसकी अदायगी न कर पाये तो इसके लिए जवाबदेह क्या केन्द्रीय सरकार को होना पड़ेगा?

इसी प्रकार उच्च न्यायालयों में मुख्य न्यायाधीश के पद पर भूमिपुत्रों की नियुक्ति की मांग भी क्षेत्रीयता को बढ़ावा देने वाली है। बहरहाल दक्षिणी राज्यों के मुख्यमंत्रियों से इतनी आशा तो की ही जा सकती है कि वे जो भी कदम उठायेंगे वे विवेकपूर्ण होंगे और उससे राष्ट्रीय एकता को कोई धक्का नहीं लगने पायेगा।

सरकारिया आयोग : नये सम्बन्धों की तलाश

बंगलोर में दक्षिणी राज्यों के मुख्यमंत्रियों की बैठक के चौथे दिन यानी 24 मार्च को प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने संसद के दोनों सदनों में केन्द्र और राज्यों के बीच वर्तमान सम्बन्धों का पुनरीक्षण करने के लिये सर्वोच्च न्यायालय के अवकाश प्राप्त न्यायाधीश श्री आर. एस. सरकारिया की अध्यक्षता में एक सदस्यीय आयोग के गठन का निर्णय किया है।

श्रीमती गांधी ने यह भी घोषणा की कि कुछ समय से सरकार केन्द्र और राज्यों के बीच वर्तमान सम्बन्धों का पुनरीक्षण करने का विचार करती रही है। पिछले कुछ वर्षों की सामाजिक और आर्थिक घटनाओं को देखते हुए इस प्रकार का पुनरीक्षण लोगों के हित और देश की एकता तथा अखण्डता के महत्व को ध्यान में रखेगा। श्रीमती गांधी ने यह भी स्पष्ट किया कि यह आयोग केन्द्र और राज्यों के सम्बन्धों की कार्यप्रणाली की जाँच करके इस व्यवस्था में ऐसे यथोचित परिवर्तनों की सिफारिश करेगा जो वर्तमान सांविधानिक ढाँचे के अंतर्गत हो।

देश की आजादी के 35 वर्षों के इतिहास में यह पहला अवसर है जब 'केन्द्र और राज्यों' के सम्बन्धों को परिभाषित करने के लिए आयोग गठित किया गया है। तमिलनाडु के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री अन्नादुराई ने 1967 में केन्द्र और राज्यों के सम्बन्धों को परिभाषित करने हेतु मद्रास उच्च न्यायालय के मुख्य-न्यायाधीश न्यायमूर्ति राजामन्नार की अध्यक्षता में एक आयोग का गठन किया था लेकिन केन्द्र सरकार ने राजामन्नार आयोग की रिपोर्ट तथा उसकी संस्तुतियों को नहीं माना। 1967 में ही केरल के मुख्यमंत्री श्री ई. एम. एस. नम्बूदरीपाद ने देश के प्रख्यात अर्थशास्त्री प्रो. के. एन. राव की अध्यक्षता में केन्द्र और राज्यों के बीच आर्थिक सम्बन्धों को परिभाषित करने हेतु एक विशेषज्ञ समिति का गठन किया था। इस समिति की सिफारिशों को भी केन्द्र सरकार ने ठुकरा दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसके अलावा केन्द्र-राज्य संबंधों विशेष रूप से आर्थिक सम्बन्धों को नये सिरे से परिभाषित करने की मांग बराबर की जाती रही हैं। अकाली दल की मांगों में से एक प्रमुख मांग यही है। दक्षिणी राज्यों के मुख्यमंत्रियों की बैठक का प्रमुख स्वर भी यही था। इस बैठक के पश्चात की गयी उक्त केन्द्रीय घोषणा को यद्यपि राजनीतिक क्षेत्रों में इस बैठक से ही जोड़ा जा रहा है किन्त केन्द्र सरकार का कहना है कि वह इस प्रश्न पर बराबर सोचती रही है और अकालियों की मांगों के संदर्भ में तो आयोग गठन का निर्णय लिया भी जा चका था। इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि केन्द्र सरकार के इस निर्णय से अकाली आंदोलन को जबर्दस्त धक्का लगा है। इसके अतिरिक्त दक्षिणी राज्यों के मुख्यमंत्रियों की हाल की चाल को एक हद तक कमजोर भी किया जा सका है। आमतौर पर सभी हलकों में इस निर्णय का स्वागत किया गया है। यदि किसी को कोई एतराज हुआ भी है तो आयोग के कार्य क्षेत्र को लेकर। यद्यपि आयोग के कार्यक्षेत्र और सीमाओं का निर्धारण होना अभी बाकी है किन्तु यह माँग की जा रही है कि इसका कार्य क्षेत्र व्यापक होना चाहिए।

जहाँ तक सरकारिया आयोग का सवाल हैं उसे संविधान के ढाँचे के अंतर्गत ही केन्द्र-राज्य सम्बन्धों की स्थिति की समीक्षा करनी होगी। सहयोग और सहायता के लिए आयोग में विभिन्न क्षेत्रों के कुछ विशेषज्ञ भी होंगे। आशा की जानी चाहिए कि वह राज्यों की दिक्कतों को ध्यान में रख कर ही अपनी सिफारिशें तैयार करेगा।

पुलिस आयोग की रिपोर्ट : एक रस्म और पूरी हुई

पुलिस आयोग की रिपोर्ट के शेष सात खण्ड भी संसद में प्रस्तुत कर दिये गये। इसके पूर्व के अंश जनता सरकार के शासन काल में संसद में प्रस्तुत किये जा चुके हैं। 12 वर्षों पुरानी पुलिस व्यवस्था में बदलाव के लिए 1977 में जनता पार्टी की सरकार ने पश्चिम बंगाल के राज्यपाल श्री धर्मवीर की अध्यक्षता में एक राष्ट्रीय पुलिस आयोग की स्थापना की जिसको यह भार सौंपा गया कि वह पुलिस के अधिकारों और कर्त्तव्यों को पुनर्परिभाषित करें। आयोग के के सदस्य के रूप में मद्रास उच्च-न्यायालय के भूतपूर्व न्यायाधीश श्री एस. के. रेड्डी, मध्य प्रदेश के भूतपूर्व पुलिस महानिरीक्षक श्री के एफ. रुस्तम जी, उत्तर प्रदेश के भूतपूर्व पुलिस महानिरीक्षक श्री एम. एम सक्सेना, टाटा सामाजिक विज्ञान के प्रो. एम. एस. गोरे तथा सी. बी. आई. के निदेशक श्री सी. बी. नरसिंह राव शामिल किये गये। आयोग ने अपनी रिपोर्ट का प्रथम खण्ड जनता सरकार को दिया जिसने फरवरी 1979 में इसे संसद में प्रस्तुत किया। 6 माह बाद रिपोर्ट का दूसरा खण्ड भी प्रस्तुत किया गया किन्तु तभी जनता सरकार का पतन हो गया और रिपोर्ट दबी रह गयी। इसके बाद एक वर्ष 10 माह के दौरान शेष 6 खण्ड वर्तमान कांग्रेस (इ) सरकार को समर्पित किये गये। अंतिम दो खण्ड जून 1981 में प्रस्तुत किये गये थे। इन रिपोर्टों को संसद में पेश करने की माँग एक अरसे से की जाती रही है।

22 माह तक लगातार मांगों और दबावों तथा टाल मटोल के उपरांत जो रिपोर्ट संसद में प्रस्तुत की गयी वह आयोग की रिपोर्ट की सही तस्वीर नहीं उजागर करती। रिपोर्ट के काफी अंश 'आपत्तिजनक' करार दिये गये और उन्हें निकाल दिया गया। वर्तमान सरकार ने रिपोर्ट के इन खण्डों की समीक्षा का भार सी. बी. आई. के भूतपूर्व निदेशक श्री डी. सेन को सौंपा था जो आपातकाल के दौरान अत्याचारों से सम्बधित बताये गये थे और जिन्हें शाह आयोग ने इंगित किया था। श्री सेन के लिये यह स्वाभाविक था कि वह आयोग की रिपोर्ट को वर्तमान सरकार की इच्छा के अनुरूप तोड़ते-मरोडते। कुल मिलाकर यह बात लगभग साफ है कि आयोग की रिपोर्ट का असली स्वरूप जनता की जानकारी में नहीं लाया गया।

किंतु रिपोर्ट की बहुत सी बातें विगत तीन वर्षों से प्रकाश में आती रहीं। यह काम पत्रकारों ने किया जो अनौपचारिक रूप से रिपोर्ट के पन्ने उलटते रहें। जो बातें प्रकाश में आई उनके अनुसार रिपोर्ट के प्रथम खण्ड में पुलिसजनों 'खस्ता स्थिति' पर प्रकाश डाला गया है और सिफारिश की गई है कि उन्हें 'कुशल' मजदूर माना जाय। दूसरे खण्ड में विस्तार पूर्वक बताया गया है कि

(शेष पृष्ठ 93 पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिविल सर्विस प्रारम्भिक परीक्षा
विशिष्ट परिशिष्ट

वैकल्पिक विषयों पर महत्वपूर्ण पुस्तकें

पत्रिका के फरवरी 83 अंक में प्रकाशित 'सिविल सर्विसेज प्रारम्भिक परीक्षा की अध्ययन पद्धति सम्बन्धी कुछ सुझाव' एवं सामान्य अध्ययन के लिये कुछ उपयोगी पुस्तकों की सूची को अनेक सुधी पाठकों ने सराहा। इस अंक में सिविल सर्विसेज प्रारम्भिक परीक्षा के कुछ वैकल्पिक विषयों के लिये महत्वपूर्ण एवं उपयोगी पुस्तकों की सूची दी जा रही है। निम्नांकित विषयों पर अनेक पुस्तकें उपलब्ध है परन्तु समयाभाव के कारण एक से अधिक पुस्तक का अध्ययन करना सम्भवतः सम्भव न होगा। सभी विषयों के प्रत्येक वर्ग • • के लिये कम से कम दो पुस्तकों को सूची में सम्मिलित किया गया है। आप उनमे जिस पुस्तक को सर्वोचित समझें, को पढ़े। अन्त में, राजनीति विज्ञान, इतिहास, अर्थशास्त्र एवं भूगोल के लिये एन. सी. इ. आर. टी., नई दिल्ली, एन. बी. टी., नई दिल्ली एवं प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित पुस्तकों (जिनकी सूची फरवरी 83 अंक में प्रकाशित की गयी थी) की सहायता लेना न भूलें।

• • • राजनीति विज्ञान

• राजनीति शास्त्र के आधार—पन्त, गुप्ता, जैन
(सेन्ट्रल बुक डिपो, इलाहाबाद)

• राजनीति के सिद्धान्त—के. के. मिश्र
(मैकमिलन, नई दिल्ली)

• राजनीति शास्त्र का परिचय—ओ. पी. ग्वाला
(मैकमिलन, नई दिल्ली)

• • पाश्चत्य राजनीतिक विचारधाराएं—के. एन वर्मा
(रस्तोगी प्रकाशन, मेरठ)

• राजनीतिक चिन्तन का इतिहास—जीवन मेहता
(साहित्य भवन, आगरा)

• • तुलनात्मक राजनीति एवं राजनीतिक संस्थाएं
—सी. बी. गेना
(विकास, नई दिल्ली)

• तुलनात्मक राजनीति—पी. शरण
(मिनाक्षी प्रकाशन मेरठ)

• Comparative Governments And Politics
—Hitchner and Levine
(Harper Row Publishers, N. Y.)

• • संविधानों की दुनिया—प्रभुदत्त शर्मा
(कालेज बुक डिपो, जयपुर)

• विश्व के प्रमुख संविधान—इकबाल नारायण
(शिवलाल अग्रवाल कम्पनी, आगरा)

• भारतीय शासन एवं राजनीति- जैन एवं फड़िया
(साहित्य भवन, आगरा)

• भारतीय शासन और राजनीति- जे. सी. जौहरी
(विशाल पब्लिकेशन, नई दिल्ली)

• • • विधि

• • भारतीय संविधान के प्रमुख तत्व -पी. के. सिंह
(विधि साहित्य प्रकाशन, भारत सरकार, नई दिल्ली)

• भारतीय संवैधानिक विधि—जे. एन. पाण्डेय
(सेन्ट्रल लॉ एजेन्सी, इलाहाबाद)

• • संविदा विधि—आर. सी. चतुर्वेदी
(विधि साहित्य प्रकाशन, भारत सरकार, नई दिल्ली)

• संविदा विधि—अवतार सिंह
(ईस्टर्न बुक कम्पनी, लखनऊ)

• • अन्तर्राष्ट्रीय विधि—एच. एम. जन
(मैकमिलन, नई दिल्ली)

• अन्तर्राष्ट्रीय विधि—एस. के. कपूर
(सेन्ट्रल लॉ एजेन्सी, नई दिल्ली)

• • प्रशासनिक विधि—के. सी. जोशी
(विधि साहित्य प्रकाशन, भारत सरकार, नई दिल्ली)

• प्रशासनिक विधि - यू. पी. डी. केसरी
(सेन्ट्रल लॉ एजेन्सी, इलाहाबाद)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

- अपकृत्य विधि के सिद्धान्त—एस. एन. अग्रवाल (विधि साहित्य प्रकाशन, भारत सरकार, नई दिल्ली)
- अपकृत्य विधि—जे. एन. पाण्डेय (इलाहाबाद लॉ एजेन्सी, इलाहाबाद)

इतिहास

- भारत का वृहत् इतिहास 3 खण्ड—दत्ता, राय चौधरी व मजूमदार (मैकमिलन, नई दिल्ली)
- भारत का सामाजिक, सांस्कृतिक, एवं आर्थिक इतिहास 3 खण्ड पुरी, चोपड़ा व दत्त (मैकमिलन, नई दिल्ली)
- प्राचीन भारत का इतिहास भाग 1—वी. सी. पांडेय (केदारनाथ एण्ड सन्स, मेरठ)
- प्राचीन भारत का इतिहास भाग 2—वी. सी. पाण्डेय (सेन्ट्रल बुक डिपो, इलाहाबाद)
- प्राचीन भारत का धार्मिक, सामाजिक व आर्थिक जीवन—सत्यकेतु विद्यालंकार (श्री स्वरस्वती सदन, मसूरी)
- भारत का इतिहास भाग 1—रोमिला थापर (राजकमल, नई दिल्ली)
- मध्यकालीन भारत—आर्शीवादी लाल श्रीवास्तव (शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी, आगरा)
- पूर्व मध्यकालीन भारत | वी. डी. पाण्डय
- उत्तर मध्यकालीन भारत | (सेन्ट्रल बुक डिपो, इलाहाबाद)
- मध्ययुगीन समाज एवं संस्कृति—चौबे व श्रीवास्तव (उ० प्र० हिन्दी संस्थान, लखनऊ)
- आधुनिक भारत का इतिहास—एम. एस. जैन (मैकमिलन, नई दिल्ली)
- आधुनिक भारत का इतिहास—बी. सिह (ज्ञानदा, पटना)
- आधुनिक भारत का सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास—पी० सिह (कालेज बुक डिपो, जयपुर)
- भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि—ए. आर. देसाई (मैकमिलन, नई दिल्ली)
- आज का भारत—रजनी पाम दत्त (मैकमिलन, नई दिल्ली)
- भारत में मुक्ति संग्राम—अयोध्या सिंह (मैकमिलन, नई दिल्ली)

अर्थशास्त्र

- भारतीय अर्थशास्त्र—दन्त व सुन्दरम् (एस चांद, नई दिल्ली)
- भारतीय अर्थशास्त्र—आर. सी. कुलश्रेष्ठ (नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली)
- भारतीय अर्थशास्त्र—ए. एन. अग्रवाल (विकास, नई दिल्ली)
- भारत का आर्थिक विकास—नामोरित्रा व जैन (साहित्य भवन, आगरा)
- उन्नत आर्थिक सिद्धान्त—आहूजा (एस. चांद, नई दिल्ली)
- उच्च आर्थिक सिद्धान्त—झिंगन (विकास, नई दिल्ली)
- अन्तर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र—अग्रवाल व बरला (लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा)
- अन्तर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र—एस. सी. श्रीवास्तव (नई दिल्ली)
- अन्तर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र—जी सी. सिंघई (साहित्य भवन, आगरा)
- मुद्रा, बैंकिंग एवं अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार—एम.सी. वैश्य (विकास, नई दिल्ली)

समाजशास्त्र

- समाजशास्त्र—एल. एम. गुप्ता व डी. डी. शर्मा (साहित्य भवन, आगरा)
- समाज शास्त्र—जी. के. अग्रवाल (साहित्य भवन, आगरा)
- समाजशास्त्र—सत्यकेतु वेदालकार (श्रीस्वरस्वती सदन, मसूरी)
- समाजशास्त्र के सिद्धान्त—विद्याभूषण व सचदेव (किताब महल, इलाहाबाद)

(शेष पृष्ठ 93 पर)

सिविल सर्विस परीक्षा हेतु वस्तुपरक परीक्षण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय भूगोल पर महत्वपूर्ण वस्तुनिष्ठ परीक्षण

1. भारतवर्ष में विश्व की 15 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है। इस देश का क्षेत्रफल विश्व का 2.4 प्रतिशत है। बताइये क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का विश्व में कौन सा स्थान है ?
(अ) पाँचवाँ (ब) छठाँ
(स) सातवाँ ✓ (द) चौथा

2. भारत की आकृति चतुष्कोणीय है। यह पूर्वी गोलार्द्ध के मध्य में स्थित है। इसका अक्षांशीय विस्तार 8°4' से 37°6' तथा देशान्तरीय विस्तार 68°7' से 97°25' पूर्व में है। इसकी पूर्व से पश्चिम तक लम्बाई 2,933 किलोमीटर है। बताइये इसकी उत्तर से दक्षिण तक लम्बाई कितने कि. मी. है ?
(अ) 4,339 (ब) 3,214
(स) 2,836 (द) 5,019

3. भारतवर्ष की समुद्री सीमा लगभग 6,100 किलोमीटर है। बताइये इसकी स्थलीय सीमा लगभग कितने कि. मी. है ?
(अ) 12,395 (ब) 13,210
(स) 15,893 (द) 15,200

4. भारतवर्ष की प्रादेशिक समुद्री सीमा 12 नाटेकिल मील है। बताइये इसकी आर्थिक समुद्री सीमा कितने नाटेकिल मील है ?
(अ) 100 (ब) 290
(स) 160 (द) 200

5. दक्षिण-पश्चिम तथा उत्तर में क्रमशः अरब सागर तथा हिमालय पर्वत श्रेणी द्वारा भारत की प्राकृतिक सीमाओं का निर्धारण होता है। बताइये धुर दक्षिण तथा दक्षिण-पूर्व में भारत का प्राकृतिक सीमाओं का निर्धारण क्रमशः किसके द्वारा होता है ?
(अ) हिन्द महासागर तथा नेपाल
(ब) हिन्द महासागर तथा बंगाल की खाड़ी
(स) बंगाल की खाड़ी तथा हिन्द महासागर
(द) बंगाल की खाड़ी तथा बर्मा

6. अधोलिखित में कौन सा देश भारत के साथ मानव कृति सीमाएँ नहीं बनाता ?
(अ) पाकिस्तान (ब) चीन
(स) नेपाल (द) श्रीलंका ✓
(य) बर्मा (र) बांगलादेश

7. बताइये अधोलिखित भारतीय राज्यों में किस राज्य की सीमा पाकिस्तान को स्पर्श नहीं करती है ?
(अ) जम्मू व कश्मीर (ब) गुजरात
(स) प. बंगाल ✓ (द) पंजाब
(य) राजस्थान

8. तमिलनाडु तीन समुद्रों की सीमाओं को स्पर्श करता है। बताइये अधोलिखित में कौन भारतीय राज्य दो देशों की सीमा रेखाओं को स्पर्श करता है ?
(अ) प. बंगाल (ब) जम्मू-कश्मीर ✓
(स) गुजरात (द) पंजाब

9. प. बंगाल; असम, मेघालय तथा त्रिपुरा बंगला देश की सीमा को स्पर्श करते है। उस केन्द्र शासित प्रदेश का नाम बताइये जो कि बंगला देश को स्पर्श करता है ?
(अ) अरूणाचल प्रदेश (ब) मणिपुर
(स) मिजोरम (द) अण्डमान एवं निकोबार द्वीप

10. दक्षिणी एशिया के तीन बड़े प्राय-द्वीपों का सही वरीयता क्रम—
(अ) अरब, चीन तथा भारत ✓
(ब) भारत, अरब तथा हिन्द चीन
(स) श्री लंका, भारत तथा चीन
(द) भारत, इण्डोनेशिया तथा हिन्द चीन

11. भारत यूरोप से किस समुद्री जल मार्ग द्वारा सम्बद्ध है ?
(अ) फारस की खाड़ी (ब) भूमध्य सागर ✓
(स) स्वेज नहर (द) इंगलिश चेनल

12. भारत के सम्पूर्ण क्षेत्रफल का 43% भूभाग मैदानी है। बताइये भारतीय क्षेत्रफल में पर्वतीय तथा पठारी भाग क्रमशः कितने प्रतिशत है ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(अ) 20.20% तथा 36.80%
(ब) 29.3% तथा 27.7%
(स) 17.00% तथा 40 00%
(द) 38 80% तथा 19.20%

13. हिमालय पर्वत का निर्माण टियीज सागर में हुआ था। बताइये अधोलिखित में कौन सी नदी हिमालय पर्वत श्रृंखला से नहीं निकलती है ?
(अ) घाघरा (ब) नर्मदा
(स) यमुना (द) ब्रह्मपुत्र

14. हिमालय पर्वत श्रेणी की तीन सबसे ऊँची चोटियों का सही वरीयता क्रम—
(अ) एवरेस्ट, कंचनजंगा, गॉडविन आस्टिन
(ब) एवरेस्ट, गॉडविन आस्टिन, कंजनजंगा
(स) एवरेस्ट, गॉडविन आस्टिन, मकालू
(द) एवरेस्ट, कंजनजंगा, मकालू

15. भौगर्भिक इतिहास के आधार पर भारत को कितने विभागों में विभाजित किया गया है ?
(अ) 3 (ब) 4 (स) 5 (द) 6

16. अरावली पर्वत माला को भारत की सबसे प्राचीन पर्वत माला स्थित माना जाता है। इसकी मुख्य पहाड़ियाँ किस राज्य में है ?
(अ) गुजरात (ब) हरियाणा
(स) राजस्थान (द) महाराष्ट्र

17. प्रायद्वीपी भारत का सर्वोच्च शिखर 'अनैमुदि' है। बताइये पूर्वी तथा पश्चिमी घाट की सर्वाधिक ऊँची चोटियां क्रमशः कौन है ?
(अ) महेन्द्रगिरि तथा दादाबेटा
(ब) गुरुशिखर तथा महादेव
(स) नमचारवा तथा अन्नपूर्णा
(द) नीलगिरि तथा भोरघाट

18. अण्डमान-निकोबार द्वीप तथा लक्षद्वीप कहाँ स्थित है ?
(अ) बंगाल की खाड़ी में
(ब) अरब सागर में
(स) हिन्द महासागर में
(द) भूमध्य सागर में

19. भारतवर्ष की सबसे बड़ी नदी 'ब्रह्मपुत्र' है। बताइये प्रायद्वीप भारत की सबसे बड़ी नदी कौन है ?
(अ) गोदावरी (ब) कावेरी
(स) नर्मदा (द) कृष्णा

20. शिवसमुद्रम जल प्रपात कावेरी नदी पर है। बताइये भारत का सबसे बड़ा जोग प्रपात [जिरप्पा] किस नदी पर है ?
(अ) कृष्णा (ब) शरवती
(स) वरुणा (द) चित्रावती

21. अपवाह क्षेत्र की दृष्टि से भारत की पाँच बड़ी नदियों का सही वरीयता क्रम—
(अ) गंगा, ब्रह्मपुत्र, यमुना, गोदावरी तथा घाघरा
(ब) ब्रह्मपुत्र, गंगा, यमुना गोदावरी तथा कृष्णा
(स) गंगा, यमुना, ब्रह्मपुत्र, सिंधु तथा गोदावरी
(द) ब्रह्मपुत्र, गंगा, यमुना, कृष्णा तथा महानदी

22. 'ब्रह्मपुत्र' तथा 'गंगा' नदी का उद्गम स्थान क्रमशः स्थित है—
(अ) नेपाल तथा तिब्बत में
(ब) तिब्बत तथा तिब्बत में
(स) तिब्बत तथा उत्तर प्रदेश में
(द) असम तथा तिब्बत में

23. गंगा की सबसे बड़ी सहायक नदी 'कोशी' है। 'गंगा' अपनी सहायक नदियों के साथ बंगाल की खाड़ी में गिरती है। बताइये 'ब्रह्मपुत्र' तथा 'सिंधु' अपनी सहायक नदियों के साथ क्रमशः कहाँ गिरती है ?
(अ) अरब सागर, अरब सागर
(ब) बंगाल की खाड़ी, अरब सागर
(स) अरब सागर, बंगाल की खाड़ी
(द) बंगाल की खाड़ी, बंगाल की खाड़ी

24. 'गोदावरी' नदी-जिसे दक्षिण की गंगा नदी या वृद्ध नदी भी कहा जाता है—का अपवहन क्षेत्र मुख्यतः महाराष्ट्र में है। बताइये महाराष्ट्र के अतिरिक्त अन्य किन दो राज्यों में इसका क्षेत्र है ?
(अ) कर्नाटक तथा उड़ीसा
(ब) आंध्र-प्रदेश तथा कर्नाटक
(स) कर्नाटक तथा मध्य प्रदेश
(द) कर्नाटक तथा गुजरात

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

25. अधोलिखित नदियों में कौन अरब सागर में गिरती है ?
(अ) नर्मदा (ब) साबरमती
(स) ताप्ती (द) उपर्युक्त सभी

26. अधोलिखित नदियों में कौन बंगाल की खाड़ी में नहीं गिरती है ?
(अ) कृष्णा (ब) गोदावरी
(स) कावेरी (द) महानदी
(य) माही (र) दामोदर
(ल) पेन्नार

27. महानदी के अपवहन क्षेत्र में मध्य प्रदेश, उड़ीसा, बिहार तथा महाराष्ट्र के भाग आते है। कृष्णा के अपवहन क्षेत्र में महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेस तथा कर्नाटक सम्मिलित है। बताइये कावेरी के अपवहन क्षेत्र में कौन से राज्य आते है ?
(अ) महाराष्ट्र, कर्नाटक तथा तमिलनाडु
(ब) कर्नाटक, आंध्र प्रदेश तथा केरल
(स) तमिलनाडु, कर्नाटक तथा केरल
(द) आंध्र-प्रदेश, महाराष्ट्र तथा तमिलनाडु

28 अधोलिखित में कौन सा कथन असत्य है ?
(अ) बंगला देश में गंगा को 'पद्मा' के नाम से जाना जाता है
(ब) नेपाल तथा तिब्बत में ब्रह्मपुत्र को 'सांपो' के नाम से जाना जाता है
(स) सिंधु नदी का स्त्रोत कैलाशपर्वत का मानसरोवर तालाब है
(द) नर्मदा ताप्ती के बहाव की दिशा पूर्व से पश्चिम की ओर है
(य) महानदी, गोदावरी, कृष्णा, कावेरी को बहाव की दिशा दक्षिण की ओर है
(र) उत्तरी भारत की नदियों की अपेक्षा दक्षिणी भारत की नदियों में मैदानी भाग कम होता है

29. कृष्णा नदी का उद्गम स्त्रोत महाबलेश्वर [महाराष्ट्र] है। नर्मदा अमर कंटक (म. प्र) से निकलती है। महानदी का निकास सिहावा [म. प्र] के निकट है। गोदावरी नासिक जिले [महाराष्ट्र] में पश्चिमी घाट से निकलती है। बताइये कावेरी का उद्गम कहाँ पड़ता हैं ?
(अ) कुर्ग [कर्नाटक]
(ब) मुल्ताई [म. प्र]
(स) शिमोगा [कर्नाटक]
(द) नन्दी दुर्ग

30. अधोलिखित में कौन सा पठार पर स्थित प्रदेश नहीं है ?
(अ) कोकण (ब) मेघालय
(स) मालवा (द) छोटा नागपुर

31. उस भारतीय राज्य का नाम बताइये जिसकी राजधानी गंगा के तट पर स्थित है ?
(अ) मध्य प्रदेश (ब) बिहार
(स) प. बंगाल (द) उपर्युक्त में कोई नहीं

32. भारत की जलवायु 'मानसूनी' है। 'मानसून' अरबी भाषा का शब्द है। मानसूनी शब्द का अर्थ उन पवनों से है जिनमें मौसमानुसार परिवर्तन हुआ करता है। इसके संबन्ध में अधोलिखित में कौन कथन सत्य नहीं है ?
(अ) इसमें गर्मियों में समुद्री हवायें स्थल से समुद्र की ओर चला करती है
(ब) इसमें जाड़ों में स्थलीय हवायें स्थल से समुद्र की ओर चला करती है
(स) इसमें गर्मियों में समुद्री हवायें समुद्र से स्थल की ओर चला करती है
(द) भूमण्डल पर विस्तृत जलखंड और भूखंड होने के कारण इसकी उत्पत्ति होती है

33. भारत की सम्पूर्ण वर्षा का सर्वाधिक भाग किस मानसून से प्राप्त होता है ?
(अ) उत्तर-पूर्व (ब) दक्षिण-पूर्व
(स) दक्षिणी-पश्चिमी (द) उत्तरी-पश्चिमी

34. तमिलनाडु में अधिकांश वर्षा मुख्यतः प्रत्यावर्तित मानसून धाराओं के कारण होती है। इस प्रत्यावर्तित मानसून की ऋतु किस माह में प्रारम्भ होती हैं ?
(अ) अक्टूबर (ब) जनवरी
(स) मार्च (द) जून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

35. सबसे अधिक और सबसे कम औसत वर्षा वाले राज्यों का क्रमशः सही क्रम—
(अ) असम तथा तमिलनाडु
(ब) असम तथा बिहार
(स) मेघालय तथा राजस्थान
(द) असम तथा राजस्थान

36. अधोलिखित शहरों में दिसम्बर माह में किस शहर का औसत न्यूनतम तापमान सबसे कम होगा ?
(अ) मद्रास (ब) दिल्ली
(स) बम्बई (द) कलकत्ता

37. अधोलिखित शहरों में जून माह में किस शहर का औसत अधिकतम तापमान सबसे अधिक होगा ?
(अ) मद्रास (ब) बम्बई
(स) दिल्ली (द) कलकत्ता
(य) जोधपुर (र) नागपुर

38. बताइये भारतीय जलवायु के संबंध में अधोलिखित में कौन सा कथन असत्य नहीं है ?
(अ) स्थल से समुद्र की ओर बहने वाली पवनें उत्तर-पश्चिम स्थायी पवनें होती है
(ब) जाड़े की मानसूनी हवाएँ उत्तर-पूर्व से दक्षिण-पश्चिम की ओर चलती है
(स) शीत ऋतु में भारत के उत्तर-पश्चिमी भाग में सबसे कम तापमान पाया जाता है
(द) तमिलनाडु के कारोमडल तट पर शीत ऋतु में उत्तर-पूर्वी मानसूनों के कारण वर्षा होती है
(य) उपर्युक्त सभी

39. वर्षा ऋतु में किस समय वायुमण्डल सबसे अधिक आद्रता रखता है ?
(अ) मध्यान्ह (ब) प्रातःकाल
(स) रात्रि (द) सायंकाल

40. अप्रैल और मई में दक्षिणी भारत में होने वाली वर्षा को आम्र वर्षा कहते हैं। बताइये पश्चिमी बंगाल तथा असम में नौरवेस्टर तुफान किस ऋतु में आते हैं ?
(अ) मार्च-मई (ब) जनवरी-फरवरी
(स) जुलाई-सितम्बर (द) अक्टूबर-जनवरी

41. अधोलिखित में किस समय भारत के किसी भी स्थान पर तापमान अधिकतम रहता है ?
(अ) 12 बजे दोपहर (ब) 3 बजे सायंकाल
(स) 10 बजे दोपहर (द) 5 बजे सायंकाल

42. अधोलिखित में कौन सा कथन असत्य है ?
(अ) ग्रीष्म ऋतु में सूर्य कर्क रेखा पर उत्तरी गोलार्द्ध में चमकता है
(ब) हमारे देश में मई का महीना सबसे गर्म होता है
(स) ग्रीष्मकाल में पूर्वी तट पश्चिमी तट की अपेक्षा गर्म रहता है
(द) दक्षिण-पश्चिमी मानसून पूरब से जैसे-जैसे पश्चिम की ओर बढ़ता जाता है वैसे वर्षा की मात्रा बढ़ती जाती है

43. भारत की वार्षिक वर्षा का औसत 115 सेमी. है। बताइये अधोलिखित में कहाँ वार्षिक वर्षा का औसत सर्वाधिक रहता है ?
(अ) प. बंगाल (ब) बिहार
(स) उड़ीसा (द) उत्तर प्रदेश
(य) पंजाब

44. राजस्थान में अधिक वर्षा न होने के कारण क्या नहीं है ?
(अ) अरावली पर्वत अरब सागरीय मानसून को रोक नहीं पाता क्यों कि इसका विस्तार पवन की दिशा में है
(ब) इस क्षेत्र में अधिक गर्मी पड़ने से हवा गर्म हो जाती है
(स) दक्षिण-पश्चिमी मानसून अरब सागर की ओर न आकर बंगाल की खाड़ी के सिरे से ही पूर्वी तट की ओर मुड़ जाता है

45. राष्ट्रीय वन नीति के अन्तर्गत देश के लिए 33% वन क्षेत्र आवश्यक माना गया है। बताइये भारतीय वन देश की कुल भूमि का लगभग कितने प्रतिशत है ?
(अ) 22.7% (ब) 30.08%
(स) 19.01% (द) 26.09%

46. वनों के सर्वाधिक क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत के प्रथम तीन राज्यों का सही वरीयता क्रम—
(अ) मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश तथा असम
(ब) असम, मध्यप्रदेश तथा महाराष्ट्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(स) मध्यप्रदेश, राजस्थान तथा महाराष्ट्र
(द) असम, मध्यप्रदेश तथा उत्तर प्रदेश

47. राज्य के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल की दृष्टि से वनों का सर्वाधिक प्रतिशत त्रिपुरा में है। बताइये इस दृष्टि से सबसे कम वनों का प्रतिशत किस राज्य में है ?
(अ) राजस्थान (ब) पंजाब
(स) गुजरात (द) हरियाणा

48. हिमालय की वनस्पतियों में आर्थिक दृष्टि से सर्वाधिक महत्वपूर्ण वृक्ष—
(अ) साखू (ब) शीशम
(स) साल (द) स्प्रूस

49. अधोलिखित में डेल्टा के वनों का प्रमुख वृक्ष—
(अ) चन्दन (ब) सुन्दरी
(स) सिल्वर फर (द) नीला पाइन

50. चन्दन के वृक्ष सर्वाधिक किस राज्य में पाये जाते हैं ?
(अ) केरल (ब) आँध्र प्रदेश
(स) तमिलनाडु (द) कर्नाटक

51. स्प्रूस की लकड़ी से कागज की लुगदी तैयार की जाती है। बताइये कत्था किस वृक्ष की लकड़ी से प्राप्त होता है ?
(अ) खैर (ब) सफेद सेडार
(स) हल्दू (द) खेजरा

52. भारत की सर्वाधिक उपजाऊ मिट्टी कौन हैं ?
(अ) जलोढ़ (ब) लाल
(स) काली (द) लैटेराइट

53. प्रतिशत की दृष्टि से सर्वाधिक सिंचित भूमि वाले प्रथम तीन राज्यों का सही वरीयता क्रम—
(अ) हरियाणा, पंजाब तथा तमिलनाडु
(ब) पंजाब, तमिलनाडु तथा हरियाणा
(स) पंजाब, हिमाचल प्रदेश तथा हरियाणा
(द) हरियाणा, पंजाब तथा हिमाचल प्रदेश

54. देश की किस नहर द्वारा सर्वाधिक भूमि की सिंचाई की जाती है ?
(अ) भाखड़ा (ब) शारदा
(स) नाँगल (द) ऊपरी गंगा नहर

55. प्रतिशत की दृष्टि से सबसे कम सिंचित भूमि वाला राज्य—
(अ) त्रिपुरा (ब) महाराष्ट्र
(स) राजस्थान (द) मध्य प्रदेश

56. भारत की कुल कृषि योग्य भूमि के लगभग कितनी प्रतिशत भूमि में सिंचाई की सुविधा उपलब्ध है ?
(अ) 42% (ब) 28%
(स) 33% (द) 39%

57. भारत में सर्वाधिक सिंचाई अधोलिखित में किस साधन द्वारा होती है ?
(अ) नलकूप (ब) नहर
(स) तालाब (द) कुआँ

58. खनिज उत्पादन की दृष्टि से भारत के प्रथम तीन राज्यों का सही वरीयता क्रम—
(अ) मध्य प्रदेश, बिहार तथा उड़ीसा
(ब) बिहार, मध्य प्रदेश तथा प बंगाल
(स) बिहार, उड़ीसा तथा मध्य प्रदेश
(द) मध्य प्रदेश, बिहार तथा उड़ीसा

59. भारत में मैंगनीज का मुख्य उत्पादक राज्य मध्य प्रदेश है। द्वितीय स्थान पर महाराष्ट्र है। बताइये विश्व में मैगनीज उत्पादन में भारत का कौन सा स्थान है ?
(अ) प्रथम (ब) तृतीय
(स) चतुर्थ (द) द्वितीय

60. अधोलिखित में किस खनिज के उत्पादन में भारत का विश्व में सर्वोच्च स्थान है ?
(अ) क्रोमाइट (ब) लाख
(स) अभ्रक (द) उपर्युक्त सभी

61. सर्वाधिक अभ्रक उत्पादक प्रदेश बिहार है। बताइये सर्वाधिक लाख का उत्पादन किस राज्य में होता है ?
(अ) मध्य प्रदेश (ब) उड़ीसा
(स) बिहार (द) केरल

62. हरसौठ (जिप्सम), ग्रेफाइट, थोरियम तथा यूरेनियम के क्रमशः मुख्य उत्पादक राज्य—
(अ) राजस्थान, उड़ीसा, केरल तथा बिहार
(ब) बिहार, बिहार, केरल तथा बिहार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(स) बिहार, मध्य प्रदेश, केरल तथा बिहार
(द) मध्य प्रदेश, बिहार, राजस्थान तथा प. बंगाल

63. भारत में सोने के उत्पादन का लगभग 98% सोना किस राज्य की कोलार तथा हट्टी खानों से प्राप्त होता है ?
(अ) मध्य प्रदेश (ब) कर्नाटक
(स) बिहार (द) आंध्र प्रदेश

64. बॉक्साइट लोहे का प्रमुख अयस्क है। बताइये घूल फ्राम, मैगनेटाइट, लैटेराइट तथा हैमेटाइट क्रमशः किस खनिज के अयस्क है ?
(अ) मैगनीज, ताँबा, लोहा तथा ताँबा
(ब) ताँबा, मैगनीज, एल्युमिनियम तथा शीशा
(स) टंगस्टन, लोहा, लोहा तथा लोहा
(द) थोरियम, लोहा, ताँबा तथा मैगनीज

65. अधोलिखित में कौन राज्य/केन्द्र शासित प्रदेश मुख्यतः जल विद्युत उत्पादन करता है ?
(अ) प. बंगाल (ब) बिहार
(स) केरल (द) दिल्ली

66. अधोलिखित में विद्युत की सर्वाधिक खपत की दृष्टि से प्रथम तीन क्षेत्रों का सही वरीयता क्रम—
(अ) कृषि, उद्योग तथा वाणिज्य
(ब) उद्योग, कृषि तथा घरेलू
(स) कृषि, घरेलू तथा उद्योग
(द) घरेलू, उद्योग तथा कृषि

67. देश में कोयले की सर्वाधिक खपत रेल उद्योग में होती है। बताइये कोयला उत्पादन की दृष्टि से प्रथम दो भारतीय राज्य कौन है ?
(अ) प. बंगाल तथा बिहार
(ब) बिहार तथा उड़ीसा
(स) बिहार तथा प. बंगाल
(द) प. बंगाल तथा मध्य प्रदेश

68. 'झरिया' का सम्बन्ध कोयले के उत्पादन से है। बताइये 'सिंहभूमि' का सम्बन्ध मुख्यतः किस खनिज से है ?
(अ) लोह (ब) ताँबा
(स) मैगनीज (द) लौह तथा ताँबा

69. 'पिचब्लेंड' यूरेनियम का मुख्य खनिज है। बताइये 'मोनोजाइट' किस खनिज का प्रमुख अयस्क है ?
(अ) ग्रेफाइट (ब) बैरीलियम
(स) थोरियम (द) ताँबा

70. अधोलिखित में किस खनिज का भारत सर्वाधिक निर्यात करता है ?
(अ) अभ्रक (ब) मैगनीज
(स) लोहा (द) लाख

71. ऊनी वस्त्र बनाने की सर्वाधिक मिलें पंजाब में स्थित है। बताइये देश में सर्वाधिक चीनी मिलें किस राज्य में है ?
(अ) महाराष्ट्र (ब) बिहार
(स) उत्तर प्रदेश (द) पंजाब

72. प्राकृतिक रेशम का सर्वाधिक उत्पादन किस राज्य में होता है ?
(अ) जम्मू-कश्मीर (ब) महाराष्ट्र
(स) कर्नाटक (द) उपर्युक्त में किसी में नहीं

73. 'लिग्नाइट' का संबंध अधोलिखित में किससे है ?
(अ) ताँबा (ब) कोयला
(स) लोहा (द) जस्ता

74. भारत में सर्वप्रथम जल विद्युत केन्द्र की स्थापना 'शिव समुद्रम' में वर्ष 1900 में की गयी थी। बताइये वर्तमान समय में अधोलिखित में किसकी ऊर्जा उत्पादन क्षमता सर्वाधिक है ?
(अ) जल विद्युत (ब) आणविक विद्युत
(स) तापीय विद्युत (द) सौर विद्युत

75. भारत की राष्ट्रीय आय का कितना प्रतिशत वन से प्राप्त होता है ?
(अ) 2 (ब) 6
(स) 4 (द) 9

76. अधोलिखित में किस वृक्ष के वन सर्वाधिक क्षेत्र में विस्तृत है ?
(अ) नीम (ब) साल
(स) सागौन (द) चीड़

77. वैधानिक दृष्टि से भारतीय वनों को 9 वर्गों में विभाजित किया गया है। निम्नलिखित में कौन उसमें सम्मिलित नहीं है ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(अ) अवर्गीकृत (ब) व्यक्तिगत
(स) सुरक्षित (द) संरक्षित

78. सामाजिक वानिकी के अन्तर्गत अधोलिखित में कौन सा नारा प्रदान किया गया है ?
(अ) "A Tree for each child Programme"
(ब) "A Tree for each Person Programme"
(स) "A Tree for each house programme"
(द) उपर्युक्त में कोई नहीं

79. राणा प्रताप सागर बांध किस परियोजना का एक अंग है ?
(अ) कोसी (ब) चम्बल
(स) गंगा (द) नर्मदा

80. गण्डक परियोजना में नेपाल और उत्तर प्रदेश के अतिरिक्त और कौन सा राज्य सम्मिलित है ?
(अ) मध्यप्रदेश (ब) राजस्थान
(स) बिहार (द) प. बंगाल

81. मयूराक्षी परियोजना प. बंगाल की प्रमुखतम सिंचाई योजना है। उकाई परियोजना गुजरात से संबंधित है। बताइये गोविन्द वल्लभ सागर तथा हीराकुण्ड परियोजना क्रमशः किन राज्यों से संबंधित है ?
(अ) मध्य प्रदेश तथा बिहार
(ब) उत्तर प्रदेश तथा उड़ीसा
(स) राजस्थान तथा उड़ीसा
(द) उत्तर प्रदेश तथा केरल

82. सर्वाधिक लाख का उत्पादन किस राज्य में होता है ?
(अ) उड़ीसा (ब) बिहार
(स) मध्य प्रदेश (द) राजस्थान

83. बोकारो [बिहार] का इस्पात कारखाना सोवियत संघ के, राउरकेला [उड़ीसा] का इस्पात कारखाना प. जर्मनी के, दुर्गापुर [प. बंगाल] का इस्पात कारखाना ब्रिटेन के तथा भिलाई [म. प्र.] का इस्पात कारखाना सोवियत संघ के सहयोग से स्थापित किया गया है। बताइये भारत के इस्पात कारखानों में सर्वाधिक क्षमता वाला कौन है ?
(अ) बोकारो (ब) भिलाई
(स) राउरकेला (द) दुर्गापुर

84. किस राज्य में सर्वाधिक जूट मिलें स्थित है ?
(अ) असम (ब) उड़ीसा
(स) प. बंगाल (द) महाराष्ट्र

85. अखबारी कागज बनाने का प्रथम कारखाना नेपा नगर [म. प्र.] में स्थापित किया गया था। बताइये टीटागढ़ पेपर मिल किस राज्य में स्थित है ?
(अ) प. बंगाल (ब) महाराष्ट्र
(स) बिहार (द) मध्य प्रदेश

86. दामोदर घाटी परियोजना बिहार तथा प. बंगाल का सामूहिक प्रयास है। बताइये 'सतलज' पर बनी भाखड़ा नांगल परियोजना में अधोलिखित कौन राज्य सम्मिलित है ?
(अ) हरियाणा (ब) राजस्थान
(स) पंजाब (द) उपर्युक्त सभी

87. औद्योगिकरण की दृष्टि से प्रथम व द्वितीय भारतीय राज्यों का सही क्रम—
(अ) प. बंगाल तथा पंजाब
(ब) महाराष्ट्र तथा कर्नाटक
(स) महाराष्ट्र तथा प. बंगाल
(द) प. बंगाल तथा तमिलनाडु

88. पटसन उद्योग का मुख्य केन्द्र प. बंगाल है। बताइये सूती वस्त्र उद्योग का प्रमुख केन्द्र अधोलिखित राज्यों में कौन है ?
(अ) महाराष्ट्र (ब) कर्नाटक
(स) उत्तर प्रदेश (द) मध्य प्रदेश

89. वनस्पति तेल उद्योग में महाराष्ट्र और गुजरात अग्रणी राज्य है। बताइये चमड़ा उद्योग में कौन राज्य प्रथम स्थान पर है ?
(अ) प. बंगाल (ब) तमिलनाडु
(स) आंध्र प्रदेश (द) महाराष्ट्र

90. भारत के किस राज्य को गरम मसालों तथा नारियल का देश कहा जाता है ?
(अ) केरल (ब) कर्नाटक
(स) तमिलनाडु (द) गुजरात

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

91. कांधला [गुजरात] बन्दरगाह में मुक्त व्यापार क्षेत्र स्थापित किया गया है। बताइये भारत का एकमात्र भूमिबद्ध बन्दरगाह कौन है ?
(अ) पाराद्वीप (ब) विशाखापट्टनम
(स) कोचिन (द) मार्मगोआ

92. केन्द्र सरकार ने अभी हाल में किस बन्दरगाह के निर्माण कार्य प्रारम्भ करने की अनुमति प्रदान की है ?
(अ) न्हावा शेवा (ब) हल्दिया
(स) पोरबन्दर (द) मार्मगोआ

93. सरकारी क्षेत्र में स्थित कोचिन जहाज निर्माण यार्ड किस देश के सहयोग से निर्मित हो रहा है ?
(अ) ब्रिटेन (ब) जापान
(स) अमरीका (द) रूस

94. अधोलिखित में कौन भारतीय राज्य भू-आवेष्ठित है ?
(अ) बिहार (ब) गुजरात
(स) तमिलनाडु (द) आन्ध्र प्रदेश

95. प्राकृतिक तेल के कुएं की खुदाई के बाद 1. जल 2. तेल, 3. प्राकृतिक गैस की स्थिति ऊपर से किस क्रम में होती है ?
(अ) 2,3,1 (ब) 3,2,1
(स) 3,1,2 (द) 1,2,3

96. भारत में ग्रीष्म ऋतु से पूर्व वृक्ष अपने पत्ते झाड़ देते हैं। इसका क्या कारण है ?
(अ) इसके द्वारा वृक्ष प्रदूषण की संभावना को दूर करते है
(ब) वृक्ष अपने भीतर की आद्रता को अधिक वाष्पकृत होने से बचाये रखने के लिए ऐसा करते हैं
(स) उपरोक्त दोनों कारणों से

97. भारत की तट रेखा पर अच्छे पोताश्रयों की कमी क्यों है ?
(अ) तट रेखा कटी फटी है
(ब) तट रेखा प्रायः सीधी और सपाट है
(स) तट रेखा विषुवत रेखा से दूर है
(द) उपर्युक्त सभी कारणों से

98. अधोलिखित में कौन हिन्दू-आर्य भाषा नहीं है—
(अ) तमिल (ब) गुजराती
(स) मराठी (द) उड़िया

99. अधोलिखित में किस राज्य में वन सम्पदा की प्रति एकड़ उपज सबसे अधिक है ?
(अ) मध्य प्रदेश (ब) बिहार
(स) असम (द) त्रिपुरा

100. भारतवर्ष के किस राज्य की समुद्री सीमा रेखा सबसे लम्बी है ?
(अ) आँध्र प्रदेश (ब) तमिलनाडु
(स) केरल (द) महाराष्ट्र

101. वह कौन सा भारतीय राज्य है जिसकी सीमा सबसे अधिक अन्य राज्यों (7 राज्यों) की सीमाओं से सम्बद्ध है ?
(अ) मध्य प्रदेश (ब) महाराष्ट्र
(स) कर्नाटक (द) उत्तर प्रदेश

102. अधोलिखित में कौन सी भाषा द्रविड़-समुदाय की नहीं है ?
(अ) तेलगू (ब) मलयालम
(स) कन्नड़ (द) उड़िया

103. भारत की सर्वाधिक लम्बी स्थल सीमा किस देश के साथ लगती है ?
(अ) चीन (ब) पाकिस्तान
(स) बांगला देश (द) बर्मा

104. केन्द्र शासित प्रदेश दिल्ली की सीमा कितने राज्यों से घिरी हुई है ?
(अ) 1 (ब) 2 (स) 3 (द) 4

105. खडगपुर-जहाँ विश्व का सर्वाधिक लम्बा रेलवे प्लेटफार्म है—किस राज्य में स्थित है ?
(अ) बिहार (ब) प. बंगाल
(स) उड़ीसा (द) महाराष्ट्र

106. लाल पत्थर सर्वाधिक किस राज्य में पाया जाता है ?
(अ) मध्य प्रदेश (ब) गुजरात
(स) मेघालय (द) राजस्थान

107. किस भारतीय क्षेत्र को 'स्काटलैण्ड ऑव द ईस्ट' की संज्ञा प्रदान की गयी है ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(अ) मेघालय (ब) अरुणाचल प्रदेश
(स) नागालैण्ड (द) प. बंगाल

108. भारत में एकमात्र चट्टाना नमक का निक्षेप हिमाचल प्रदेश में है। बताइये नमक का उत्पादन करने वाली सांभर झील किस भारतीय राज्य में स्थित है ?
(अ) बिहार (ब) गुजरात
(स) राजस्थान (द) उड़ीसा

109. सागरीय नमक के उत्पादन में कौन राज्य सबसे आगे है ?
(अ) राजस्थान (ब) आंध्र प्रदेश
(स) गुजरात (द) उड़ीसा

110. कलकत्ता से 105 किलोमीटर दक्षिण में हुगली नदी के किस बन्दरगाह का चयन शोधन केन्द्र बनाने तथा कलकत्ता बन्दरगाह की व्यस्ता को बांट लेने के लिए किया गया है ?
(अ) बालासोर (ब) हाल्दिया
(स) चन्द्रपुर (द) तूतीकोरन

111. कर्नाटक के उस एकमात्र बन्दरगाह का नाम बताइये जिसका विकास कुन्द्रेमुख परियोजना से सम्बन्धित है ?
(अ) बंगलौर (ब) न्यू तूतीकोरन
(स) मंगलौर (द) मार्मगोआ

112. नागार्जुन सागर परियोजना के अन्तर्गत किस नदी पर बाँध बनाया गया है ?
(अ) कृष्णा (ब) गोदावरी
(स) कावेरी (द) तुंगभद्रा

113. वर्तमान समय में देश में 11 तेल शोधन शालाएं है जिनमें 1निजी क्षेत्र के तथा 10 सार्वजनिक क्षेत्र के अन्तर्गत है। बताइये अधोलिखित शोधनशालाओं में किसकी क्षमता सर्वाधिक है ?
(अ) कोयाली (ब) बरौनी
(स) कोचीन (द) बोनगाई गाँव

114. टाटा जल विद्युत परियोजना भारत के किस राज्य में स्थित है ?
(अ) गुजरात (ब) तमिलनाडु
(स) प. बंगाल (द) महाराष्ट्र

115. भारत की सबसे बड़ी जल विद्युत परियोजना कौन है ?
(अ) शारदा (उ. प्र.)
(ब) शरवती (कर्नाटक)
(स) इदिकी (केरल)
(द) रिहन्द (उ. प्र.)

116 चीनी उत्पादन में उत्तर प्रदेश प्रथम स्थान पर है। बताइये चीनी उत्पादन में द्वितीय व तृतीय स्थान क्रमशः किन राज्यों का है ?
(अ) बिहार तथा आन्ध्र प्रदेश
(ब) महाराष्ट्र तथा बिहार
(स) बिहार तथा कर्नाटक
(द) महाराष्ट्र तथा आन्ध्र प्रदेश

117. नेवेली का रासायनिक कारखाना तमिलनाडु में स्थित है। बताइये एशिया का सबसे बड़ा खाद कारखाना 'सिन्दरी' का कारखाना किस राज्य में स्थित है ?
(अ) उड़ीसा (ब) राजस्थान
(स) महाराष्ट्र (द) बिहार

118. हिन्दुस्तान एंटीबायोटिक्स लिमिटेड पूणे में स्थित है। बताइये इंडियन ड्रग एंड फर्माक्यूटिकल लिमिटेड कहाँ स्थित है ?
(अ) रासयानी (ब) बम्बई
(स) नयी दिल्ली (द) लखनऊ

119. सीमेंट निर्माण हेतु सबसे प्रमुख कच्चा माल होता है—
(अ) मैंगनीशियम फास्फेट
(ब) कैल्शियम कार्बोनेट
(स) कैल्शियम सल्फेट
(द) सोडियम कार्बोनेट

120. 'पोर्टलैण्ड' का सम्बन्ध अधोलिखित में किससे है ?
(अ) कोयला (ब) सीमेण्ट
(स) सूती वस्त्र (द) रेशमी वस्त्र

121. भारतवर्ष की प्रथम बहुउद्देशीय परियोजना—
(अ) भाखड़ा नांगल (ब) दामोदर घाटी
(स) हीराकुंड (द) रिहन्द

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

122. देश में सर्वाधिक कपास महाराष्ट्र में है 'एम्बैसडर' कार का निर्माण हिन्दुस्तान मोटर्स द्वारा होता है। बताइये इसका कारखाना कहाँ स्थित है ?
(अ) बम्बई (ब) मद्रास
(स) कलकत्ता (द) दिल्ली

123. गार्डन रीच वर्कशाप कलकत्ता में, मझगांव गोदी बम्बई में तथा कोचीन शिपयार्ड, कोचीन में स्थित है। बताइये भारत का एक अन्य बड़ा जलयान निर्माण घाट हिन्दुस्तान शिपयार्ड कहाँ स्थित है ?
(अ) मद्रास (ब) बम्बई
(स) त्रिवेन्द्रम (द) विशाखापत्तनम

124. रेल के डिब्बे बनाने का कारखाना मद्रास के निकट पैराम्बूर में है। बताइये विद्युत चलित इंजनों का निर्माण किस राज्य में होता है ?
(अ) महाराष्ट्र (ब) उत्तर प्रदेश
(स) प. बंगाल (द) तमिलनाडु

125. वर्ष 1981 की जनगणना के अनुसार भारतवर्ष की अनुमानित जनसंख्या लगभग कितने करोड़ है ?
(अ) 64,34,35,629 (ब) 67,39,54,702
(स) 68,39,97,512 (द) 66,95,34,392

126. वर्तमान समय में भारत में 1000 जनसंख्या पर जन्म दर तथा मृत्यु दर क्रमशः लगभग कितनी है ?
(अ) 36 तथा 14.8 (ब) 54 तथा 21.3
(स) 39 तथा 16.4 (द) 49 तथा 16.0

127. क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत के प्रथम पाँच राज्य-- 1. मध्य प्रदेश 2. राजस्थान 3. महाराष्ट्र 4. उत्तर प्रदेश तथा 5. आन्ध्र प्रदेश है। बताइये जनसंख्या की दृष्टि से भारत के प्रथम पाँच राज्यों का सही क्रम क्या है ?
(अ) 1. उत्तर प्रदेश 2. महाराष्ट्र 3. बिहार 4. प. बंगाल 5. आन्ध्र प्रदेश
(ब) उत्तर प्रदेश 2. बिहार 3. प. बंगाल 4. महाराष्ट्र 5. मध्य प्रदेश
(स) 1. उत्तर प्रदेश 2. महाराष्ट्र 3. बिहार 4. आन्ध्र प्रदेश 5. प. बंगाल
(द) 1. उत्तर प्रदेश 2. बिहार 3. महाराष्ट्र 4. आन्ध्र प्रदेश 5. तमिलनाडु

128. लक्षद्वीप तथा चंडीगढ़ क्रमशः सबसे कम क्षेत्रफल वाले केन्द्र शासित प्रदेश है। सर्वाधिक क्षेत्रफल वाले दो केन्द्र शासित प्रदेशों का सही वरीयता क्रम
(अ) 1. अरूणाचल प्रदेश 2. मिजोरम
(ब) 1. मिजोरम 2. दिल्ली
(स) 1. गोआ, दमण तथा द्वीव 2. अंडमान और निकोबार द्वीप

129. सबसे कम जनसंख्या वाला केन्द्र शासित प्रदेश लक्षद्वीप है। बताइये सर्वाधिक जनसंख्या वाला केन्द्र शासित प्रदेश कौन है ?
(अ) गोआ, दमण तथा द्वीव (ब) अरूणाचल
(स) पांडिचेरी (द) दिल्ली

130. सबसे कम जनसंख्या वाले दो राज्यों का सही वरीयता क्रम—
(अ) 1. नागालैण्ड 2. मेघालय
(ब) 1. मणिपुर 2. मेघालय
(स) 1. सिक्किम 2. नागालैण्ड
(द) 1. नागालैण्ड 2. त्रिपुरा

131. अधोलिखित में किस जनसंख्या वर्ष में भारतीय जनसंख्या की वृद्धि दर सर्वाधिक रही ?
(अ) 1971 (ब) 1981
(स) 1961 (द) 1941

132. 1981 की जनगणना के अनुसार देश का जन घनत्व 221 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है। सर्वाधिक जन घनत्व वाला राज्य केरल है। बताइये सबसे कम जन घनत्व वाला राज्य कौन है ?
(अ) नागालैण्ड (ब) सिक्किम
(स) जम्मू-कश्मीर (द) त्रिपुरा

133. सबसे कम जन घनत्व वाला केन्द्र शासित प्रदेश अरूणाचल प्रदेश है। बताइये सर्वाधिक जन घनत्व वाला केन्द्र शासित प्रदेश कौन है ?
(अ) चंडीगढ़ (ब) लक्षद्वीप
(स) दिल्ली (द) पॉडिचेरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

134. 1981 की जनगणना के अनुसार हमारे देश में लिंग अनुपात (Sex Ratio) प्रति 1000 पुरुषों पर 935 स्त्रियां है। राज्यों में सर्वाधिक लिंग अनुपात केरल में (1000 पुरुषों पर 1034 स्त्रियाँ) है। बताइये किस राज्य में सबसे कम लिंग अनुपातहैं ?
(अ) त्रिपुरा (ब) मेघालय
(स) नागालैण्ड (द) सिक्किम

135. केन्द्र शासित प्रदेशों में सबसे कम लिंग अनुपात अंडमान निकोबार (1000 पुरुषों पर 761 स्त्रियां) है। बताइये किस केन्द्र शासित प्रदेश में लिंग अनुपात सर्वाधिक है ?
(अ) चंडीगढ़ (ब) लक्षद्वीप
(स) पांडिचेरी (द) दादरा नगर हवेली

136. अधोलिखित में किस आयु वर्ग के लोगों का भारतीय जनसंख्या में सर्वाधिक प्रतिशत है ?
(अ) 9 वर्ष से कम (ब) 15 वर्ष से कम
(स) 60 वर्ष से कम (द) 45 वर्ष से कम

137. भारतीय जनसंख्या में साक्षरता 36.17% है, जिसमें पुरुष साक्षरता 46.74% तथा स्त्री-साक्षरता 24.8% है। सर्वाधिक साक्षरता वाला राज्य केरल (69.17%) है। उसके बाद महाराष्ट्र तथा तमिलनाडु का स्थान है। बताइये सबसे कम साक्षरता वाला राज्य कौन है ?
(अ) मध्य प्रदेश (ब) बिहार
(स) राजस्थान (द) उड़ीसा

138. सर्वाधिक साक्षर केन्द्र शासित प्रदेश चंडीगढ़ है। बताइये सबसे कम साक्षरता वाला केन्द्र शासित प्रदेश कौन है ?
(अ) अरुणाचल प्रदेश
(ब) दादरा नगर एवं हवेली
(स) अंडमान और निकोबार
(द) लक्षद्वीप

139. हमारे देश की 76.63% जनसंख्या गाँवों में निवास करती है। बताइये सबसे अधिक गाँव किस राज्य के अन्तर्गत है ?
(अ) मध्य प्रदेश (ब) उत्तर प्रदेश
(स) महाराष्ट्र (द) बिहार

140. राज्योंवार किस राज्य के अन्तर्गत सर्वाधिक ग्रामीण जनसंख्या निवास करती है ?
(अ) उड़ीसा (ब) उत्तर प्रदेश
(स) मेघालय (द) हिमाचल प्रदेश

141. भारत की कुल जनसंख्या में शहरी जनसंख्या का प्रतिशत 23.27% है। बताइये भारत में सर्वाधिक जनसंख्या वाले प्रथम 5 नगरों का सही क्रम क्या है ?
(अ) बम्बई, कलकत्ता, दिल्ली, मद्रास तथा कानपुर
(ब) कलकत्ता, बम्बई, दिल्ली, मद्रास तथा बंगलौर
(स) कलकत्ता, बम्बई, मद्रास, दिल्ली तथा कानपुर
(द) बम्बई, कलकत्ता, दिल्ली, मद्रास तथा हैदराबाद

142. राज्योंवार किस राज्य में सर्वाधिक शहरी जनसंख्या निवास करती है ?
(अ) महाराष्ट्र (ब) गुजरात
(स) कर्नाटक (द) तमिलनाडु

143. अधोलिखित आदिवासी जातियों में किसकी जनसंख्या देश में सर्वाधिक है ?
(अ) भील (ब) खरिया
(स) संथाल (द) नागा

144. भारतीय संविधान के अन्तर्गत 15 भाषाओं को मान्यता प्राप्त है। संविधान के अन्तर्गत नवीनतम सम्मिलित भाषा 'सिंधी' है। बताइये लुशाई, मिरी तथा खासी भाषाएं मुख्यतः क्रम से किन राज्यों/संघ प्रदेशों से संबंधित है ?
(अ) मिजोरम, अरुणाचल प्रदेश तथा मेघालय
(ब) मणिपुर, नागालैण्ड तथा त्रिपुरा
(स) त्रिपुरा, मेघालय तथा मिजोरम
(द) सिक्किम, मणिपुर तथा त्रिपुरा

145. भारत में हिन्दू धर्म को मानने वाले सबसे अधिक हैं। बताइये इस दृष्टि से द्वितीय व तृतीय स्थान पर कौन से धर्म हैं ?
(अ) मुस्लिम व सिख (ब) मुस्लिम व ईसाई
(स) सिख व मुस्लिम (द) मुस्लिम व बौद्ध

146. किस भारतीय राज्य में अनुसूचित जाति की जनसंख्या सर्वाधिक है ?
(अ) बिहार (ब) उत्तर प्रदेश
(स) महाराष्ट्र (द) मध्य प्रदेश

147. देश में अनुसूचित जनजातियों की संख्या सर्वाधिक मध्य प्रदेश में है। बताइये किस भारतीय राज्य की कुल जनसंख्या में जनजातीय जनसंख्या का सर्वाधिक प्रतिशत है ?
(अ) असम (ब) नागालैण्ड
(स) त्रिपुरा (द) मणिपुर

148. गद्दी हिमाचल प्रदेश की, थारू उत्तर प्रदेश की, गोंड मध्य प्रदेश की, मुण्ड बिहार की तथा टोडा सुदूर दक्षिण भारत की महत्वपूर्ण जनजातियाँ हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बताइये भील, भोटिया, संथाल खासिया तथा उराँव क्रमशः किन राज्यों की जनजातियाँ हैं।

(अ) राजस्थान, उत्तर प्रदेश, बिहार, बिहार तथा उड़ीसा
(ब) राजस्थान, नागालैण्ड, बिहार, मध्य प्रदेश तथा बिहार
(स) राजस्थान, मध्य प्रदेश, बिहार, उत्तर प्रदेश तथा बिहार
(द) राजस्थान, त्रिपुरा, बिहार, उत्तर प्रदेश तथा बिहार

149. लेपचा सिक्किम के मूल निवासी हैं। बताइये तिपेरा, खासी, गारो तथा जयन्तिया क्रमशः किन राज्यों की जातियाँ हैं?
(अ) नागालैण्ड, मेघालय, त्रिपुरा तथा मणिपुर
(ब) मणिपुर, मेघालय, त्रिपुरा तथा त्रिपुरा
(स) त्रिपुरा, मेघालय, मेघालय, मेघालय
(द) नागालैण्ड, मेघालय, असम, असम

150. 'विषु' केरल का, रथयात्रा उड़ीसा का, गणेश पूजा महाराष्ट्र का, बैसाखी पंजाब का प्रमुख पर्व है। बताइये पोंगल, नोंगक्रोम, ओणम तथा बिहु क्रमशः किन राज्यों के प्रमुख पर्व है?
(अ) तामलनाडु नागालैण्ड, केरल तथा असम
(ब) तमिलनाडु, नागालैण्ड, कर्नाटक तथा असम
(स) आँध्र प्रदेश, त्रिपुरा, केरल तथा हिमाचल प्रदेश
(द) केरल, असम, तमिलनाडु तथा गुजरात

151. 'कार्नीवाल' कहाँ का प्रमुख पर्व है?
(अ) नागालैण्ड (ब) गोआ
(स) मिजोरम (द) पांडिचेरी

152. लाईहरा ओवा मणिपुर का, कथकली केरल का, भाखड़ा व गिद्दा पंजाब का, यक्षगान कर्नाटक का लोकनृत्य है। बताइये गरबा, कूचिपुडि, हिकत व 'छ' क्रमशः किन राज्यों के प्रमुख लोकनृत्य है?
(अ) गुजरात, आँध्रप्रदेश, जम्मू कश्मीर व बिहार
(ब) असम, आँध्रप्रदेश, कर्नाटक व बिहार
(स) कर्नाटक, तमिलनाड, गुजरात व उड़ीसा
(द) महाराष्ट्र, आँध्रप्रदेश, कर्नाटक व गुजरात

153. 'भरतनाटयम्' तमिलनाडु का लोकनृत्य है। बताइये 'चेराव' कहाँ का लोकनृत्य है?
(अ) उड़ीसा (ब) मिजोरम
(स) अरुणाचल प्रदेश (द) लक्षद्वीप

154. बांदीपुर सेक्चुअरी कर्नाटक में, मनास सेक्चुअरी असम में, सिम्पलीपाल नेशनल पार्क उड़ीसा में तथा गिरि नेशनल फारेस्ट गुजरात में स्थित है। बताइये कान्हा नेशनल पार्क, काजीरंगा सेक्चुअरी, चन्द्र प्रभा सेक्चुअरी तथा पेरियार सेक्चुअरी क्रमशः किन राज्यों में स्थित है?
(अ) महाराष्ट्र, असम, उत्तर प्रदेश तथा तमिलनाडु
(ब) मध्य प्रदेश, असम, उत्तर प्रदेश तथा आँध्र प्रदेश
(स) गुजरात, नागालैण्ड, उत्तर प्रदेश तथा आँध्र प्रदेश
(द) महाराष्ट्र, असम, उत्तर प्रदेश तथा तमिलनाडु

155. घना बर्ड सेक्चुअरी तथा जगर घाटी क्रमशः किन राज्यों में स्थित है?
(अ) केरल तथा आँध्र प्रदेश
(ब) महाराष्ट्र तथा आँध्र प्रदेश
(स) राजस्थान तथा कर्नाटक
(द) राजस्थान तथा केरल

156. नेशनल फिजिकल लेबोरेटरी-नई दिल्ली में स्थित है। बताइये नेशनल कैमीकल लैबोरेटरी कहाँ स्थित है?
(अ) पूणे (ब) नई दिल्ली
(स) हैदराबाद (द) बगलौर

157. इण्डियन इन्स्टीट्यूट ऑव पेट्रोलियम देहरादून में स्थित है। बताइये जियोलॉजिकल सर्वे ऑव इण्डिया कहाँ स्थित है?
(अ) हैदराबाद (ब) कोचीन
(स) कलकत्ता (द) त्रिवेन्द्रम्

158. नेशनल मेटलर्जीकल लेबारेटरी जमशेदपुर में स्थित है। बताइये नेशनल एरोनॉटिकल लेबोरेटरी तथा फारेस्ट रिसर्च इन्स्टीट्यूट क्रमशः कहाँ स्थित है?
(अ) बंगलौर तथा देहरादून
(ब) कानपुर तथा त्रिवेन्दम
(स) हैदराबाद तथा पालमपुर
(द) बंगलौर तथा गौहाटी

159. भारतीय तेल स्रोत में असम का स्थान सर्वोपरि है। बताइये इसके पश्चात किस राज्य का स्थान आता है?
(अ) गुजरात (ब) बिहार
(स) महाराष्ट्र (द) प. बंगाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

160. हमारे देश में 10 बड़े बन्दरगाह [सभी पश्चिमी तट के] कलकत्ता, मद्रास, तूतीकोरन, पाराद्वीप तथा विशाखापट्टनम [सभी पूर्वी तट के]—है। हमारे सामुद्रिक विदेशी व्यापार का एक चौथाई बम्बई बन्दरगाह से होता है। बताइये नारियल तथा इलायची का निर्यात प्रमुख रूप से किस बन्दरगाह से होता है ?

(अ) पाराद्वीप (ब) कोचीन
(स) मार्मगोआ (द) तूतीकोरन

161. भारतीय रेलवे एशिया में सर्वोच्च तथा विश्व में चौथा स्थान रखती है। 1980 तक देश में रेल मार्गों की लम्बाई 60,933 किलोमीटर थी। बताइये देश में विद्युतीकृत रेल मार्गों की लम्बाई लगभग कितने कि. मी. है ?

(अ) 4,820 (ब) 5,260
(स) 8,490 (द) 6,670

162. राज्यों में सबसे अधिक तथा सबसे कम रेल मार्गों की लम्बाई क्रमशः किन राज्यों में है ?

(अ) मध्य प्रदेश तथा राजस्थान
(ब) महाराष्ट्र तथा राजस्थान
(स) उत्तर प्रदेश तथा नागालैण्ड
(द) महाराष्ट्र तथा त्रिपुरा

163. विद्युत चलित इंजनों का निर्माण किस राज्य में होता है ?

(अ) महाराष्ट्र (ब) उत्तर प्रदेश
(स) प. बंगाल (द) तमिलनाडु

164. प्रशासनिक दृष्टिकोण से भारतीय रेलवे को 9 क्षेत्रों में विभक्त किया गया है। ये क्षेत्र इस प्रकार से है—दक्षिणी, मध्य, पश्चिमी, उत्तरी, पूर्वोत्तर, पूर्वी, दक्षिणी पूर्वी, पूर्वोत्तर सीमांत तथा दक्षिणी मध्य। बताइये किस रेलवे क्षेत्र के अन्तर्गत सर्वाधिक रेल क्षेत्र आता है ?

(अ) पूर्वोत्तर (ब) दक्षिण पूर्वी
(स) दक्षिणी (द) उत्तरी

165. भारत में अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डों की संख्या—

(अ) 3 (ब) 5
(स) 6 (द) 4

166. भारत में सड़कों की कुल लम्बाई 5,40,720 कि. मी है [पक्की सड़क—4, 20, 165 कि. मी.; कच्ची सड़क—120555 कि. मी.] है। बताइये किस राज्य मे पक्की सड़कों का सर्वाधिक विस्तार है ?

(अ) कर्नाटक (ब) आँध्र प्रदेश
(स) महाराष्ट्र (द) तमिलनाडु

167. रानीगंज अधोलिखित में किस उद्योग के कारण प्रसिद्ध है ?

(अ) लोह (ब) कोयला
(स) काँच (द) जूट

उत्तरमाला

1 स, 2 ब, 3 द, 4 द, 5 ब, 6 द, 7 स, 8 ब, 9 स, 10 ब, 11 स, 12 ब, 13 ब, 14 ब, 15 ब, 16 स, 17 अ, 18 ब, 19 अ, 20 ब, 21 ब, 22 स, 23 ब, 24 द, 25 द, 26 य, 27 स, 28 य, 29 अ, 30 ब, 31 ब, 32 अ, 33 स, 34 अ, 35 स, 36 ब, 37 स, 38 अ, 39 ब, 40 अ, 41 ब, 42 द, 43 अ, 44 स, 45 अ, 46 स, 47 अ, 48 अ, 49 ब, 50 द, 51 अ, 52 अ, 53 स, 54 स, 55 अ, 56 द, 57 ब, 58 ब, 59 द, 60 स, 61 ब, 62 अ, 63 ब, 64 स, 65 स, 66 ब, 67 स, 68 द, 69 स, 70 अ, 71 स, 72 स, 73 स, 74 स, 75 अ, 76 ब, 77 ब, 78 अ, 79 ब, 80 स, 81 ब, 82 ब, 83 अ, 84 स, 85 अ, 86 द, 87 स, 88 अ, 89 ब, 90 अ, 91 ब, 92 अ, 93 द, 94 अ, 95 ब, 96 ब, 97 ब, 98 अ, 99 अ, 100 अ, 101 अ, 102 द, 103 स, 104 स, 105 ब, 106 द, 107 अ, 108 स, 109 स, 110 ब, 111 स, 112 अ, 113 अ, 114 द, 115 ब, 116 ब, 117 द, 118 स, 119 ब, 120 ब, 121 ब, 122 स, 123 द, 124 स, 125 स, 126 अ, 127 द, 128 अ, 129 द, 130 स, 131 अ, 132 ब, 133 स, 134 द, 135 द, 136 ब, 137 स, 138 अ, 139 ब, 140 द, 141 ब, 142 अ, 143 स, 144 अ, 145 ब, 146 अ, 147 ब, 148 अ, 149 स, 150 अ, 151 ब, 152 अ, 153 ब, 154 ब, 155 स, 156 अ, 157 स, 158 अ, 159 अ, 160 ब, 161 अ, 162 स, 163 स, 164 द, 165 द, 166 अ, 167 ब। ■ ■

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानसिक योग्यता पर महत्वपूर्ण वस्तुपरक परीक्षण

1. आज 6 जनवरी है और शनिवार आज से चार दिन बाद। पिछले वर्ष के दिसम्बर का प्रथम दिवस किस दिन था ?
(क) शनिवार (ख) रविवार
(ग) सोमवार (घ) मंगलवार
(द) बुधवार (घ) गुरुवार

2. राम, श्याम, दिलीप, सुनील और अजय परस्पर सौ सौ रुपये के नोट इस प्रकार बाँटते हैं कि राम को श्याम से एक नोट कम मिलता है, दिलीप को सुनील से 5 अधिक, अजय को श्याम से 3 अधिक और सुनील को श्याम के बराबर गिनती के नोट मिलते हैं। कौन सबसे कम सौ रुपये के नोट प्राप्त करता है ?
(क) राम (ख) श्याम
(ग) दिलीप (घ) सुनील
(द) अजय (च) श्याम व सुनील

3. फारुक सलीम से 526 दिन बड़ा हैं जबकि इमरान फारूक से 75 सप्ताह बड़ा है। यदि इमरान का जन्म मंगलवार को हुआ तो सलीम का जन्म किस दिन हुआ ?
(क) बुधवार (ख) शनिवार
(ग) रविवार (घ) सोमवार
(च) शुक्रवार

4. कागज के एक वर्गाकार पत्र को कर्ण से दो बराबर त्रिभुजों में काटा गया हैं। उनमें से एक त्रिभज को कितने न्यूनतम टुकडों में काटा जाय कि इन टुकड़ों को एक आयात में क्रमबद्ध किया जा सके ?
(क) 6 (ख) 3 (ग) 4
(घ) 12 (च) 15 (छ) 22

5. एक भवन में दो तल हैं। प्रथम तल में 6 युवतियाँ निवास करती हैं जिनमें से 2 युवतियाँ स्टर्क पहनती हैं तथा 4 युवतियाँ जीन्स पहनती हैं। दूसरे तल में 12 युवतियाँ रहती हैं जिनमें से 3 युवतियाँ स्कर्ट तथा शेष 9 युवतियाँ जीन्स धारण करती हैं। सन्ध्या काल में प्रत्येक तल से एक युवती भ्रमण करने हेतु निकलती है। इस बात की क्या प्रसम्भाव्यता (Probablity) है कि इन दोनों युवतियों के परिधान एक जैसे होंगे ?
(क) $\frac{8}{27}$ (ख) $\frac{1}{2}$
(ग) $\frac{7}{12}$ (घ) $\frac{1}{2}$ व $\frac{1}{4}$

6. विक्रम ने कहा : "सब मनुष्य भावुक हैं"।
अनुश्री ने कहा : "सब मनुष्य अपूर्ण हैं"।
अब, नीलाक्षी का तर्कणापरक निष्कर्ष क्या होगा ?
(क) कुछ अपूर्ण प्राणी भावुक हैं
(ख) सब अपूर्ण प्राणी भावुक हैं
(ग) कुछ भावुक प्राणी अपूर्ण हैं
(घ) सब मनुष्य या अपूर्ण हैं या भावुक हैं

7. यदि विक्रम अपनी कलात्मक-प्रतिभा का विकास करे तो वह श्रेष्ठ चित्रकार बन सकता है; यदि वत्सला उसकी प्रेरणा बन जाए तो वह अपनी कलात्मक-प्रतिभा का विकास कर सकता है। अतः यह कहना सर्वथा युक्तियुक्त होगा कि :
(क) विक्रम में कलात्मक प्रतिभा होने पर भी प्रेरणा शक्ति का अभाव है
(ख) यदि विक्रम में कलात्मक प्रतिभा हैं तो उसे किसी की प्रेरणा की आवश्यकता नहीं है
(ग) यदि वत्सला विक्रम की प्रेरणा बन जाए तो वह श्रेष्ठ चित्रकार बन सकता है
(घ) यदि विक्रम श्रेष्ठ चित्रकार बन जाए तो उसे वत्सला की प्रेरणा की आवश्यकता नहीं है

8. एक क्लब की 24 सदस्याओं में से 18 रूपवती हैं तथा 8 शिक्षित हैं। इन 24 सदस्याओं में से कितनी सदस्याएँ रूपवती व शिक्षित दोनों हैं ?
(क) $\frac{3}{4}$ (ख) $\frac{1}{3}$
(ग) $\frac{4}{5}$ (घ) $\frac{1}{12}$

9. प्रश्न 8 को पुनः पढ़िये और खोजिए कि इन 24 सदस्याओं में कितनी सदस्याएं शिक्षित तो हैं पर रूपवती नहीं ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(क) 2 (ख) 10
(ग) 18 (घ) 20

10. विद्यमान विषम परिस्थितियों को देखते हुए यह अनुमान लगाया गया है कि किसी एक बालिका, जिसकी वर्तमान आयु 10 वर्ष की है, की 20 वर्ष तक जीवित रहने की प्रसम्भाव्यता $\frac{2}{3}$ है। यदि वह 20 वर्ष तक जीवित रहती है तो उसके शिक्षित होने की प्रसम्भाव्यता $\frac{1}{3}$ है। अतः बालिका के शिक्षित होने की प्रसम्भाव्यता क्या है ?
(क) $\frac{1}{3}$ (ख) $\frac{2}{3}$ (ग) $\frac{2}{9}$ (घ) 1

11. एक घट में 16 पुष्प हैं जिसमें से 10 पुष्प श्वेत हैं तथा 6 पुष्प नीले हैं। इस घट में से बिना देखे एक पुष्प निकाला जाता है। इस बात की क्या प्रसम्भाव्यता है कि यह पुष्प श्वेत ही होगा ?
(क) $\frac{5}{8}$ (ख) $\frac{3}{8}$ (ग) $\frac{7}{10}$ (घ) $\frac{10}{18}$

12. पांच युवक अपने क्लब की सदस्याओं के संदर्भ में परस्पर वार्तालाप कर रहे थे जो कुछ इस प्रकार से था—
प्रथम युवक : "सभी युवतियां सुन्दर हैं"।
द्वितीय युवक : "यह सुन्दर युवतियां बुद्धिमान हैं"।
तृतीय युवक : "यह सभी बुद्धिमनाएं चतुर हैं"।
चतुर्थ युवक : "कोई भी मूर्ख चतुर नहीं है"।
चतुर्थ युवक की बात क्योंकि क्रम से भिन्न थी अतः पञ्चम युवक कुछ कहने में असमर्थ रहा। एक सदस्या, जो इस वार्तालाप को सुन रही थी, ने इस वार्तालाप के निष्कर्ष के रूप में सम्यक् उत्तर दिया। क्या आप उस उत्तर को खोज सकते हैं ?
(क) सभी सुन्दर युवतियाँ मूर्ख हैं
(ख) कुछ मूर्ख युवतियां सुन्दर नहीं हैं
(ग) कोई युवती मूर्ख नहीं है
(घ) उत्तर देना दुष्कर है

13. यदि यह कहा जाये कि "सभी मनुष्य नश्वर हैं," तथा "सभी मनुष्य विवेकशील हैं" तो क्या इसका निष्कर्ष यह निकाला जा सकता है कि "सभी विवेकशील प्राणी नश्वर हैं" ?
(क) हाँ (ख) नहीं
(ग) सन्दिग्ध है (घ) अंशतः

14. अनेक वर्षों तक बेरोजगार रहने के परिणामस्वरूप तक्षिता यह सोचने पर मजबूर हो गयी कि शिक्षा ही असन्तोष की जननी है, क्योंकि शिक्षित व्यक्ति किसी उपयुक्त रोजगार के अभाव में सदा असन्तुष्ट ही रहते हैं। क्या तक्षिता की यह युक्ति ठीक हैं ?
(क) हाँ, यह एक कटु सत्य ही है
(ख) प्रायः ठीक है क्योंकि इसमें व्यक्तिपरक युक्ति द्वारा सत्य स्थापित किया गया है
(ग) नहीं, यह युक्ति दोषपूर्ण है क्योंकि इसमें अनियमित सामान्यीकरण किया गया है
(घ) तार्किक नियमों के विरुद्ध है किन्तु अनुभव के आधार पर सत्य है

15. आज जल 32° F. के तापमान पर जम गया; अतएव, आगामी वर्ष में आज ही के समय जल 32° F. के तापमान पर जम जाएगा। क्या यह युक्ति वैध है ?
(क) हाँ, यदि परिस्थितियाँ समान रहती हैं तो यह वैध है
(ख) नहीं, क्योंकि इसमें अविचारित निष्कर्ष का आभास होता है
(ग) हाँ, क्योंकि उस स्थान पर जल हमेशा उसी तापमान पर जमेगा
(घ) नहीं, यह एक दोषपूर्ण युक्ति है जिसका स्वरूप सर्वथा अतार्किक है

16. "अमेरिका के लोग परिश्रमी हैं इसलिए वह धनवान है।" इस युक्ति का परीक्षण करके यह कहा जा सकता है कि—
(क) धनवान होने के लिए परिश्रम ही एक उपाय है
(ख) धनवान होने का मात्र एक कारण है परिश्रमी होना
(ग) अन्य देशों के लोग अधिक परिश्रम नहीं करते अतः निर्धन हैं
(घ) इस युक्ति में परिश्रम तथा धनवान होने के कारण सम्बन्ध का अनुमान लगाया गया है अतः यह पूर्णतः सत्य नहीं है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

17. "अंग्रेजों के भारत से चले जाने से पहले उनके विरुद्ध एक दीर्घकालिक अहिंसक संघर्ष हुआ था; अतः देश की स्वतन्त्रता का कारण यह अहिंसक संघर्ष ही है।" टिप्पणी कीजिए।

(क) स्वतन्त्रता प्राप्ति का यह कारण सम्भाव्य है निश्चित नहीं

(ख) इसमें एक परिस्थिति को पूर्ण कारण मान लिया गया है

(ग) तार्किक रूप से यह युक्ति ऐतिहासिक रूप से पूर्णतः सत्य नहीं है

(घ) इस युक्ति में अनियमित कार्य-कारण का दोष है

18. नारी मुक्ति आन्दोलन की सभा में पुरुषों के विरोध में सम्वाद चल रहा था जो कुछ इस प्रकार से था—

अध्यक्षा : "सभी पुरुष अहङ्कारी हैं"

सचिवा : "सभी अहङ्कारी कायर हैं"

प्रथम सदस्या : "सभी कायर मिथ्याभिमानी हैं"।

द्वितीय सदस्या : "सभी पुरुष मनोविक्षिप्त हैं"।

नारी मुक्ति आंदोलन के समर्थक एक पुरुष सदस्य ने निष्कर्ष रूप में अन्तिम वाक्य बोला जिसके बाद सभा समाप्त हो गयी। वह अन्तिम वाक्य क्या है?

(क) कुछ मिथ्याभिमानी मनोविक्षिप्त हैं

(ख) सभी पुरुष कायर हैं

(ग) सभी मनोविक्षिप्त प्राणी पुरुष हैं

(घ) कुछ अहङ्कारी मिथ्याभिमानी हैं

19. कोई युवती दुष्टता नहीं करती हैं; सभी पुरुष दुष्टता करते हैं; सभी पराश्रयी पुरुष हैं; तथा सभी मनोरोगी पराश्रयी हैं; अतः —

(क) कोई पराश्रयी युवती नहीं है

(ख) कोई मनोरोगी स्त्री नहीं है

(ग) सभी पुरुष मनोरोगी हैं

(घ) सभी पुरुष पराश्रयी हैं

20. जनधारणा चाहें जो भी हो तथ्य यह है कि परिवार द्वारा निश्चित कुछ विवाह ही सुखमय होते हैं; सुखमयता की स्थिति आपसी सहयोग से आती है और आपसी सहयोग प्रेम द्वारा विकसित होता है। अतः यह कहा जा सकता है कि :

(क) प्रेम-विवाह ही सुख की सृष्टि कर सकता है

(ख) निश्चित किए गये विवाह में आपसी सहयोग का अभाव रहता है

(ग) परिवार द्वारा निश्चित कुछ विवाह ही प्रेम द्वारा विकसित होते हैं

(घ) विवाह चाहे जैसा भी हो सुख-दुःख सभी में रहते हैं

21. अन्धपुरुषभक्ति के समर्थक सदियों से स्त्री को अबला समझते आये हैं। किन्तु, यह बात निर्विवाद है कि कोई स्त्री हीन नहीं है; शक्ति का साकार रूप है स्त्री; और, वात्सल्यता ही शक्ति है। इस दृष्टि से स्त्री को समझने के उपरांत यह निष्कर्ष निकलता है कि :

(क) कोई वात्सल्यता हीन नहीं है

(ख) स्त्री ही शक्तिमय है

(ग) स्त्री ही सर्वगुणसम्पन्न है

(घ) सभी वात्सल्यमय और शक्तिवान प्राणी स्त्रियाँ हैं

22. यदि यह द्रव्य पौधा है, तथा यदि यह एक जीव है इसमें प्राण हैं; यदि इसकी संरचना जैविक है, यह या तो पौधा है या जीव है। इससे क्या निष्कर्ष निकलता है?

(क) निष्कर्ष स्वयं भ्रान्त है

(ख) यदि इसकी जैविक संरचना है, तो इसमें प्राण हैं

(ग) यह द्रव्य या तो जैविक है या जीव है

(घ) यदि यह एक पौधा, या जीव है तो इसकी जैविक संरचना है

23. "केवल हिन्दू ही शिव की आराधना करते हैं; सभी बंगाली हिन्दू हैं; अतः सभी बंगाली शिव की आराधना करते हैं"; यह युक्ति :

(क) वैध है (ख) दोषपूर्ण है

(ग) सन्दिग्ध है (घ) रहस्यमय है

24. अफगानिस्तान की मिट्टी में काजू बहुतायत से होते हैं। मैंने बंगाल अथवा उड़ीसा में काजू कहीं नहीं देखे। अतः मेरे इस विचार की पुष्टि होती है कि :

(क) अफगानिस्तान की मिट्टी में कोई ऐसी चीज है जो काजू की पैदावार में सहायक होती है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(ख) काजू अफगानिस्तान की आय का प्रमुख साधन है

(ग) बंगाल व उड़ीसा के लोग काजू पसन्द नहीं करते

(घ) अफगानिस्तान की परिस्थितियाँ बंगाल व उड़ीसा से भिन्न हैं

25. विश्वविद्यालय विद्या का मन्दिर है, अतः इसमें राजनीति का कोई स्थान नहीं है। यह युक्ति :

(क) वैध है, क्योंकि मन्दिर राजनीति से ऊपर होता है

(ख) दोषपूर्ण है, क्योंकि निष्कर्ष असङ्गत है

(ग) सन्दिग्ध है, क्योंकि इसमें अविचारित तथ्य दिए गए हैं

(घ) अंशतः सत्य है, क्योंकि इसमें केवल अर्धसत्य का ही निरूपण किया गया है

26. आज सभी पुरुष भयभीत हैं; सभी भयभीत सशङ्कित हैं; सशङ्कित होना ही व्याकुल होना है; और व्याकुल होना ही दुःखी होना है। इसलिये यह कहना असङ्गत न होगा कि :

(क) सभी पुरुष सशङ्कित हैं

(ख) कुछ पुरुष व्याकुल हैं

(ग) सभी पुरुष दुःखी हैं

(घ) दुःख ही भय को जन्म देता है

निर्देश —27 से 32 तक के प्रश्नों में प्रथम पंक्ति अक्षरों की एक श्रेणी और द्वितीय पंक्ति में संख्याओं की एक श्रेणी दी गयी है। संख्याओं की श्रेणी की प्रत्येक तथा अक्षरों की श्रेणी के प्रत्येक अक्षर से स्थापित है। प्रत्येक श्रेणी में जो कुछ लुप्त पद है उन्हें ज्ञात कीजिए।

27. p r – q m – – r s q – – – r s – – – – – –
– 3 1 – 4 0 0 – – 2 0 0 0 – – – – 0 0 3

अक्षर श्रेणी के अन्तिम पांच पद हैं

(क) r p p p s (ख) p p p p r

(ग) s s s s p (घ) s s p p r

(ङ) r r s s r

28. n – g f – t – f n b h – h – – f – b
1 3 – 2 4 5 0 – – 3 – 5 4 – – – – –

अंक श्रेणी के अन्तिम पांच पद हैं

(क) 5 9 2 3 1 (ख) 8 0 2 3 2

(ग) 5 2 7 2 3 (घ) 6 0 3 2 1

(ङ) 5 0 2 1 3

29. a – h n – c – n e – h – e a c – – – – –
21 – 43 – 5 – – 254 – – – – – – – –

अंक श्रेणी के अन्तिम पांच पद हैं

(क) 1 3 2 5 4 1 (ख) 8 2 5 2 4

(ग) 4 5 3 7 4 (घ) 4 3 2 1 5

(ङ) 2 5 6 3 4

30. – b n t – – n a m – n a b – – a – – – –
1 3 – 2 5 3 – – 5 2 4 – 3 2 5 – – – –

अंक श्रेणी के अन्तिम पांच पद हैं

(क) 5 7 8 2 5 (ख) 1 3 4 2 5

(ग) 4 9 7 5 2 (घ) 9 4 1 2 5

(ङ) 1 3 4 5 2

31. g – p – r – p d r – p – – g a – – – – –
– 3 4 5 – 3 – 5 2 1 – 5 2 – – – – – – –

अंक श्रेणी के अन्तिम पांच पद हैं

(क) 3 4 5 2 1 (ख) 1 3 4 5 2

(ग) 5 2 1 3 4 (घ) 2 1 3 4 5

(ङ) 4 5 2 1 3

32. – b x p m – x g m p – – b p – – – –
– –
2 – 3 – 5 1 – – – 4 – – – – – – – – – – –

अक्षर श्रेणी के अन्तिम पांच पद हैं

(क) g b m x p (ख) g b x m p

(ग) m b g p x (घ) m g b p x

(ङ) p x m g b

निर्देश :— प्रश्न 33-37 नीचे दिये गये चित्र पर आधारित हैं जिसमें आयत निरक्षरों का प्रतीक है, वर्ग नियोजितों (employed) का प्रतीक है, त्रिकोण कृषकों का प्रतीक है, और वृत्त पिछड़े हुओं का प्रतीक है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

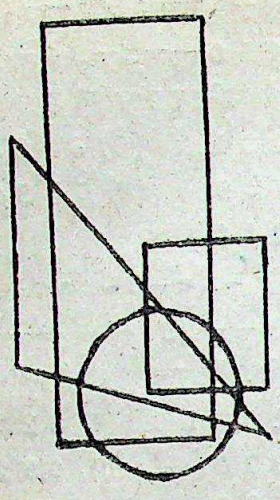

33. उपर्युक्त चित्र में निम्नलिखित कथनों में से कौन सा एक कथन सत्य नहीं है ?

(क) वे सभी कृषक जो नियोजित हैं या तो पिछड़े हुए हैं या निरक्षर हैं या दोनों हैं

(ख) कुछ अनियोजित कृषक पिछड़े हुए और निरक्षर हैं

(ग) कुछ पिछड़े हुए कृषक, जो नियोजित हैं, निरक्षर नहीं हैं

(घ) वे सभी पिछड़े हुए व्यक्ति जो निरक्षर नहीं हैं या तो कृषक हैं या नियोजित हैं या दोनों

(ङ) कुछ पिछड़े हुए व्यक्ति जो साक्षर नहीं हैं न तो कृषक और न नियोजित हैं

34. उपर्युक्त चित्र में निम्नलिखित कथनों में से कौन सा एक सत्य नहीं है ?

(क) कुछ व्यक्ति, जो नियोजित हैं, साक्षर हैं किन्तु पिछड़े हुए नहीं हैं

(ख) कुछ कृषक, जो नियोजित हैं, न पिछड़े हुए हैं और न साक्षर हैं

(ग) कुछ कृषक, जो अनियोजित हैं, साक्षर हैं, किन्तु पिछड़े हुए हैं

(घ) कुछ पिछड़े हुए व्यक्ति, जो नियोजित हैं, साक्षर हैं और किसान नहीं हैं

(ङ) कुछ कृषक, जो न पिछड़े हुए हैं और न अनियोजित हैं, साक्षर हैं

35. उपर्युक्त चित्र में निम्नलिखित कथनों में से कौन सा एक सत्य है ?

(क) सभी निरक्षर जो कृषक नहीं हैं, पिछड़े हुए हैं

(ख) सभी साक्षर कृषक, जो नियोजित हैं, पिछड़े हुए हैं

(ग) सभी कृषक, जो पिछड़े हुए हैं, अनियोजित हैं

(घ) सभी साक्षर, जो कृषक नहीं हैं, नियोजित हैं या पिछड़े हुए हैं किन्तु दोनों नहीं हैं

(ङ) सभी निरक्षर नियोजित व्यक्ति पिछड़े हुए कृषक हैं

36. उपर्युक्त चित्र में निम्नलिखित कथनों में से कौन सा एक सत्य है ?

(क) सभी निरक्षर व्यक्ति, जो नियोजित हैं, पिछड़े हुए नहीं हैं

(ख) सभी कृषक, जो निरक्षर हैं, या तो अनियोजित हैं या पिछड़े हुए हैं

(ग) सभी पिछड़े हुए व्यक्ति, जो कृषक हैं, नियोजित हैं

(घ) सभी पिछड़े हुए व्यक्ति, जो निरक्षर हैं, अनियोजित हैं

(ङ) सभी अनियोजित कृषक निरक्षर हैं

निर्देश—प्रश्न 37 से 41 नीचे दर्शायी गयी 1 से 100 तक की संख्याओं के पिरामिड की व्यवस्था पर आधारित हैं।

1
2 3 4
9 8 7 6 5
10 11 12 13 14 15 16
25 24 23 22 21 20 19 18 17
26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36
49 48 47 46 45 44 43 42 41 40 39 38 37
50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64
81 80 79 78 77 76 75 74 73 72 71 70 69 68 67 66 65
82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100

प्रत्येक प्रश्न में चिन्ह : : के बायीं ओर संख्याओं के दो समूह हैं जो परस्पर किसी प्रकार सम्बन्धित हैं। वही सम्बन्ध तीसरे समूह और एक रिक्त संख्या में है जिसे ? द्वारा इंगित किया गया है। विकल्पों में रिक्त संख्या को ढूढ़िये ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

37. 3812 : 3614 : : 284753 : ?
(क) 284654 (ख) 282930
(ग) 294455 (घ) 304357
(ङ) 284555

38. 151933 : 425774 : : 132131 : ?
(क) 435675 (ख) 44576
(ग) 455477 (घ) 304554
(ङ) 324356

39. 171210 : 31315 : : 19415856 : ?
(क) 335957 (ख) 333342
(ग) 333460 (घ) 335961
(च) 194139

40. 432946 : 443241 : : ? : 706267
(क) 725675 (ख) 705878
(ग) 695972 (घ) 696366
(च) 715774

41. 151835 : 193439 : : 274655 : ?
(क) 274656 (ख) 465574
(ग) 475475 (घ) 455673
(च) 264754

निर्देश—एक ठोस घन को, जिसकी दो भुजाएं लाल रंगी गयी हैं और लाल रंगी भुजाओं की सम्मुख भुजाएं नीली रंग गयी हैं तथा शेष भुजाएं पीली रंगी गई हैं, समान आकार वाले 64 समान क्षेत्रफल के छोटे घनों में काटा गया। उपर्युक्त कथन के आधार पर प्रश्न 42 से 46 का क्या उत्तर होगा ?

42. ऐसे कितने घन है जिनकी भुजा रंगी नहीं है ?
(क) 0 (ख) 4 (ग) 8
(घ) 16 (च) 24

43. ऐसे कितने घन है जिनकी तीन भुजाएं रंगी हैं ?
(क) 0 (ख) 4 (ग) 8
(घ) 16 (च) 24

44. ऐसे कितने घन हैं जिनकी एक भुजा रंगी है ?
(क) 48 (ख) 32 (ग) 42
(घ) 16 (च) 8

45. ऐसे कितने घन हैं जिनकी एक या दो भुजाएं रंगी हैं किन्तु तीन भुजाएं नहीं रंगी हैं ?
(क) 0 (ख) 24 (ग) 28
(घ) 48 (च) 56

46. ऐसे कितने घन हैं जिनकी एक भुजा पीली रंगी है और उसकी पार्श्व भुजा लाल या नीली रंगी है ?
(क) 8 (ख) 16 (ग) 24
(घ) 28 (च) 36

निर्देश – प्रश्न 47 से 51 में संख्याओं के उसी समुच्चय में निम्नलिखित नियम लागू किये गये। प्रत्येक प्रश्न में कौन सा नियम लागू किया गया है।

नियम — (अ)—संख्या के वर्ग में से उस संख्या का दूना घटाया जाये; (ब)—संख्या को पांच से गुणा कर गुणनफल में से तीन घटाया जाये; (स)—संख्या के वर्ग में संख्या को जोड़ दिया जाये; (द)— संख्या को सात से भाग देकर भागफल के वर्ग को संख्या में जोड़ दिया जाये; (घ)—संख्या में तीन का गुणा कर गुणनफल में तीन जोड़ा जाये।

47. 56, 210, 462, 812
(क) अ (ख) ब (ग) स (घ) द (च) घ

48. 35, 168, 339, 728
(क) अ (ख) ब (ग) स (घ) द (च) घ

49. 32, 67, 102, 137
(क) अ (ख) ब (ग) स (घ) द (च) घ

50. 24, 45, 66, 87
(क) अ (ख) ब (ग) स (घ) द (च) घ

51. 8, 18, 30, 44
(क) अ (ख) ब (ग) स (घ) द (च) घ

निर्देश—प्रश्न 52 से 56 के रिक्त स्थान में निम्नांकित विकल्पों में केवल एक ही विकल्प उस प्रकार के सम्बन्धों की तुष्टि करता है जो प्रश्न में दिये गये : : के बायीं ओर लिखे दो पदों के मध्य पाया जाता है।

52. 12 : 30 : : 20 : ?
(क) 25 (ख) 32 (ग) 35 (घ) 42 (च) 48

53. 3 : 10 : : 08 : ?
(क) 10 (ख) 13 (ग) 14 (घ) 16 (च) 17

54. 01 : 04 : : 08 ?
(क) 96 (ख) 81 (ग) 72 (घ) 64 (च) 49

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

55. 11 : 17 : : 19 : ?

(क) 29 (ख) 27 (ग) 25 (घ) 23 (च) 21

56. 08 : 28 : : ? : 65

(क) 9 (ख) 12 (ग) 15 (घ) 18 (च) 24

57. सेना की संचार प्रणाली में LOSE शब्द को सांकेतिक रूप में 1357 से तथा GAIN शब्द को 2468 से व्यक्त किया जाता है। बताइये 84615 का क्या तात्पर्य है ?

(क) SILKS (ख) NAILS

(ग) NALIS (घ) KALIS

58. निम्नांकित अक्षर समूहों में असंगत समूह कौन है ?

(क) RNJF (ख) WSOK

(ग) KHEB (घ) ZVRN

59. उपग्रह का सम्बन्ध कक्षा से है तो प्रक्षेप्य का सम्बन्ध किससे है ?

(क) वेग (ख) लक्ष्य

(ग) ट्रेजेक्टरी (घ) पलायन

60. केबिल का सम्बन्ध टेलीफोन से है तो बेतार का सम्बन्ध किससे है ?

(क) दूरदर्शन (ख) रेडियो

(ग) टेप रिकॉर्डर (घ) सिनेमा

61. यदि 24 + 35 = 28, 15 + 42 = 24 तथा 57 + 48 = 48 है तो 63 + 87 = ?

(क) 62 (ख) 56

(ग) 38 (घ) 50

62. एक अण्डे को उबालने के लिये 2 मिनट समय लगता है तो बताइए 10 अण्डों को उबालने के लिये कितना समय लगेगा ?

(क) 2 मिनट (ख) 15 मिनट

(ग) 20 मिनट (घ) उष्मा की मात्रा पर समय निर्भर करेगा

63. निम्नलिखित श्रेणी में रिक्त स्थान की पूर्ति निम्नांकित वैकल्पिक अंकों में एक से करें ?

1, 2, 5, 26,—

(क) 209 (ख) 422

(ग) 626 (घ) 677

64. नूरी रेखा से लम्बी है और रेखा भी रेशमा से लम्बी है। निम्नलिखित में कौन सा कथन सत्य है ?

(क) रेखा सबसे लम्बी है

(ख) रेशमा सबसे लम्बी है

(ग) नूरी और रेखा की लम्बाई समान है

(घ) कुछ निश्चित नहीं कहा जा सकता है

65. एक विद्यार्थी प्रत्येक प्रश्न के सही समाधान के लिये 1 अंक अर्जित करता है परन्तु प्रत्येक प्रश्न का समाधान गलत करने पर $\frac{1}{3}$ अंक खो देता है। यदि 108 प्रश्नों की परीक्षा में विद्यार्थी शून्य अंक प्राप्त करता है तो बताइए उसने कितनी प्रश्नों का उत्तर गलत किया ?

(क) 47 (ख) 81

(ग) 85 (घ) 93

66. (अ) सभी लड़कियाँ विवाह करना पसन्द नहीं करती है।

(ब) कुछ लड़कियाँ विवाह करना पसन्द नहीं करती है।

यदि उपर्युक्त दोनों कथन सत्य हैं तो इस आधार पर निम्नांकित कथनों स एवं द में कौन सत्य है ?

(स) सभी लड़कियाँ विवाह करना पसन्द करती हैं

(द) सभी लड़कियाँ विवाह नहीं करती हैं

(क) स सत्य हैं (ख) द सत्य हैं

(ग) स व द दोनो सत्य हैं

(घ) स व द दोनो असत्य हैं

67. रमेश ने पहले किसी संख्या में से 20 घटा दिया और फिर शेषफल का 20% उसमें जोड़ दिया। यदि अन्तिम संख्या और मूल संख्या में 8 का अन्तर है तो बताइए मूल संख्या क्या है ?

(क) 200 (ख) 225

(ग) 285 (घ) 400

68. निम्नांकित चित्र में वर्ग अ ब स द का क्षेत्रफल x है तो बताइये पूरे चित्र का क्षेत्रफल क्या होगा ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

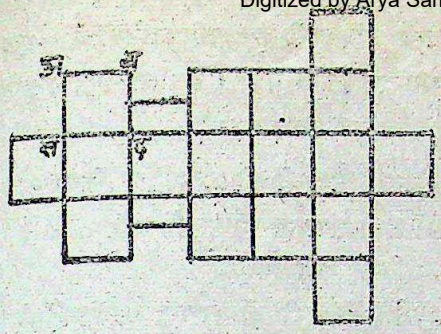

(क) 18 x (ख) 18 x^2

(ग) 18 x^4 (घ) $17\frac{1}{2}$ x^2

69. एक व्यक्ति चीनी पर एक निश्चित राशि व्यय करता है। बताइये वह व्यक्ति कितनी मात्रा में चीनी का उपभोग करेगा यदि चीनी का मूल्य 6 रुपया प्रति कि. ग्रा. है ?

चीनी के मूल्य में वृद्धि की प्रवृत्ति निम्नानुसार है :

रुपया/कि. ग्रा.	1.5	2	3	4.5	6
उपभोग मात्रा/कि.ग्रा.	60	45	30	20	?

(क) 18 (ख) 16

(ग) 13.5 (घ) 12

70. एक बैंक ने जमाकर्त्ताओं में प्रचार के लिये निम्नांकित चित्र प्रकाशित किया। यदि बैंक की कुल प्रतिभूति 57.6 करोड़ है तो चित्र के आधार पर बताइए कि अन्य प्रतिभूतियों से बैंक की वार्षिक आय क्या होगी यदि ब्याज की वार्षिक दर 4.8% है ?

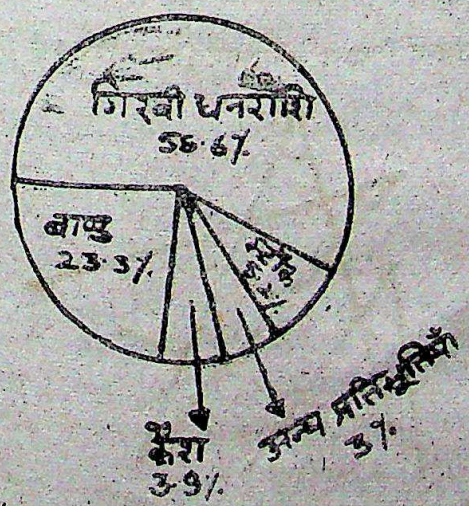

(क) 56130 (ख) 82944

(ग) 172800 (घ) 2764800

71. चतुर्भुज अ ब स द की भुजाएं चतुर्भुज अ छ ज झ की संगत भुजाओं की $\frac{2}{3}$ है। यदि अ छ ब = 12 मीटर और अ झ द = 6 मीटर तो बताइए रेखांकित भाग का क्षेत्रफल कितना होगा ?

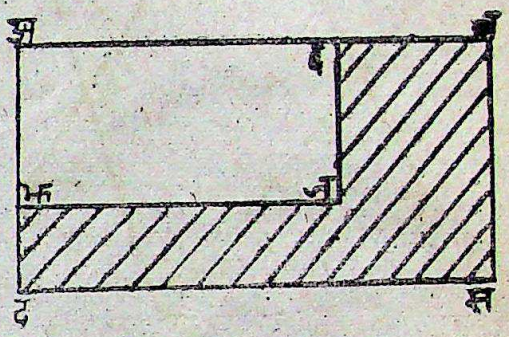

(क) 24 (ख) 32

(ग) 36 (घ) 40

72. दो संख्याओं का औसत xy है। यदि एक संख्या x है तो दूसरी संख्या क्या होगा ?

(क) y (ख) 2 y (ग) xy − x

(घ) xy—2x (च) 2xy − x

73. चतुर्भुज अ ब स द में अ च = च ब तथा द छ = छ स है तथा ज, अ द पर कोई बिन्दु है। त्रिभुज ज ब स और चतुर्भुज च ब स छ के क्षेत्रफल में क्या अनुपात होगा ?

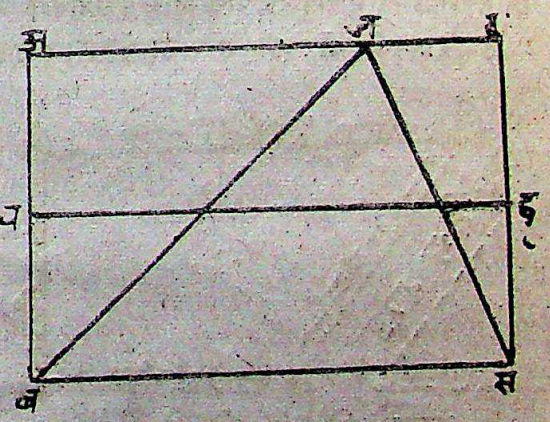

(क) 1 : 1 (ख) 1 : 2 (ग) 2 : 1

(घ) 3:2 (ङ) 2:3

74. संलग्न चित्र में यदि ब अ = ब स, कोण x = 60° और कोण y = 100° तो कोण z का मान बताइए ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

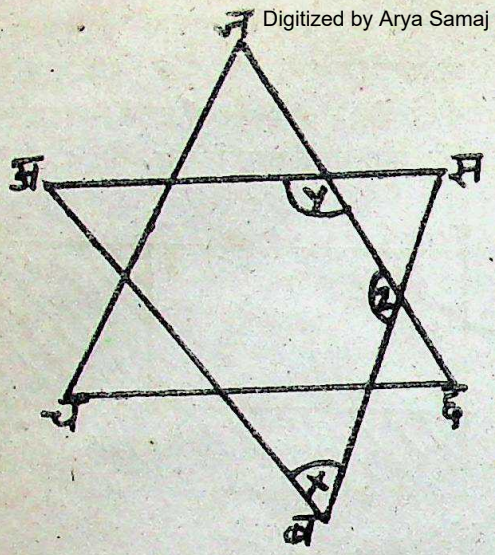

(क) 100° (ख) 110°

(ग) 140° (घ) 125° (ङ) 145°

75. अ संख्याओं का औसत च है और ब संख्याओं का औसत छ है। बताइए (अ + ब) संख्याओं का क्या औसत होगा ?

(क) $\frac{च + छ}{2}$ (ख) $\frac{च + छ}{अ + ब}$

(ग) $\frac{च + छ}{अब}$ (घ) $\frac{अच + बछ}{अ + ब}$

76. संलग्न चित्र में सर्वोदय पार्क और यूनीवर्सिटी रोड से लगे कोणीय क्षेत्र अ ब स द का क्षेत्रफल क्या है ?

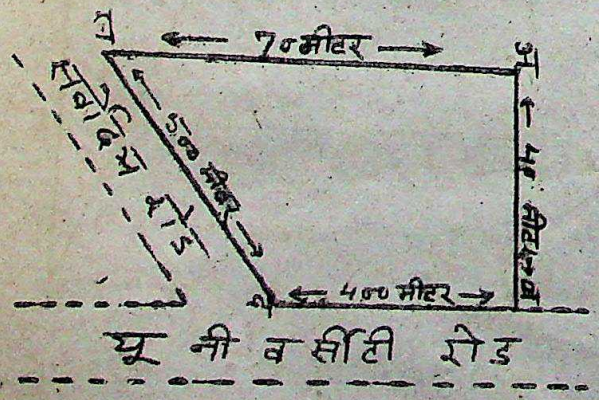

(क) 1600 वर्ग मीटर (ख) 2400 वर्ग मीटर

(ग) 2200 वर्ग मीटर (घ) 3200 वर्ग मीटर

77. एक क्लब के सभी सदस्य सम्भ्रान्त व्यक्ति हैं। कुछ सदस्य अधिकारी हैं। अधिकारियों को एक पार्टी में आमन्त्रित किया गया। इस आधार पर निम्नांकित में कौन सा कथन सत्य है ?

(क) सभी सदस्यों को आमन्त्रित किया गया

(ख) सभी सम्भ्रान्त व्यक्तियों को पार्टी में आमन्त्रित किया गया

(ग) वे अधिकारी जो सम्भ्रान्त व्यक्ति हैं को आमंत्रित किया गया

(घ) कुछ सम्भ्रान्त व्यक्तियों को आमन्त्रित किया गया

78 किसी सर्वेक्षण में सर्वेक्षित व्यक्तियों में 60% व्यक्तियों के पास निजी मकान हैं तथा 80% के पास निजी कार है। बताइए सर्वेक्षित व्यक्तियों में से कितने प्रतिशत के पास निजी मकान या कार है ?

(क) 20% (ख) 35%

(ग) 70% (घ) 140%

79. एक वर्ष में अधिकतम और न्यूनतम तापक्रम क्रमशः 22°c तथा −41°c रहा। अधिकतम और न्यूनतम तापक्रम के मध्य कितने का निरपेक्ष अन्तर है ?

(क) −63°c (ख) −19°c

(ग) $-31\frac{1}{2}$°c (घ) 63°c

(च) 19°c

80. संलग्न चित्र में अधिकतम कितने त्रिभुज हैं ?

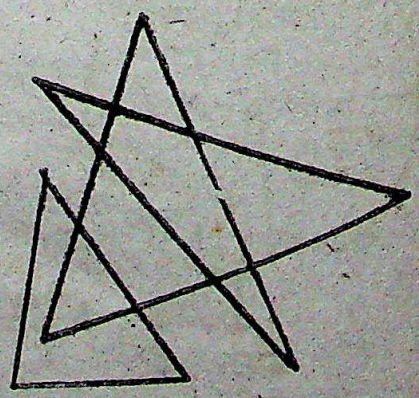

(क) 6 (ख) 10

(ग) 12 (घ) 14

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

81. निम्नांकित विभिन्न अक्षरों के लिये भिन्न भिन्न कोड चुने गये है। जैसे – BRAIN = 12345, STATE = 78386, BREAD = 12630 तथा DRAFT = 02398। बताइए D के लिये कौन सा अंक चुना गया है ?
(क) 0 (ख) 4 (ग) 6 (घ) 9

82. शीला एक निश्चित स्थान से चलना प्रारम्भ कर 5 कि.मी. की दूरी तय करती है। फिर बायें मुड़कर उत्तर दिशा में 4 कि.मी. चलती है। पुनः बाये मुड़ कर 3 मील चलती है। निम्न में किस दिशा में शीला चल रही है ?
(क) पश्चिम (ख) उत्तर
(ग) दक्षिण (घ) पूरब

83. एक घड़ी को किसी शीशे में देखने पर 9.15 बजता हुआ दिखाई पड़ता है। वास्तविक समय क्या है ?
(क) 3.15P. M. (ख) 3.15 A. M.
(ग) 2.45 P. M. (घ) 2.45 A. M.
(च) 2.45 (छ) 3.15

84. निम्न में से कौन अधिक भारी है ?
(अ) 1 कि. ग्रा. कपास (ब) 1 कि. ग्रा. सोना
(स) 1 कि. ग्रा. तेल
(क) अ (ख) ब (ग) स
(घ) कोई भी नहीं (च) निश्चित नहीं कहा जा सकता

85. 4 लड़के और 3 लड़कियाँ 5 मिनट में उतना ही कार्य करते है जितना कि 3 लड़के और 5 लड़कियाँ 4 मिनट में। बताइए 1 लड़का एवं 1 लड़की में कौन अधिक शीघ्रता से कार्य करता है ?
(क) लड़का (ख) लड़की (ग) दोनों
(घ) निश्चित नहीं कहा जा सकता

86. एक चिकित्सक ने राम को 4 गोली प्रत्येक आधे घन्टे पर खाने के लिये दिया। बताइये राम को सभी गोलियाँ खाने में कितना समय लगेगा ?
(क) 2 घन्टा (ख) $2\frac{1}{2}$
(ग) $1\frac{1}{2}$ घण्टा (घ) 3 घण्टा

87. मोहन की आयु सोहन की आयु का $\frac{3}{4}$ है और दोनों की आयु में 6 वर्ष का अन्तर है तो बताइए सोहन की क्या आयु है ?
(क) 24 वर्ष (ख) 28 वर्ष
(ग) 36 वर्ष (घ) 14 वर्ष

88. सभी भिखारी गरीब हैं। निम्नांकित में कौन सा कथन उपर्युक्त कथन को सत्यापित करता है ?
(क) वे सभी जो गरीब है, भिखारी है
(ख) यदि अ धनी है तो अ भिखारी नहीं है
(ग) यदि अ धनी नहीं है तो अ भिखारी भी नहीं है
(घ) यदि अ भिखारी है तो अ धनी नहीं है

89. एक श्रेणी 6, U, 9, T, 13, S, 18, R, 24, Q M, N को अक्षर व अंकों से बनाया गया है। इस श्रेणी में (अ) O के स्थान पर N है और 31 के स्थान पर M है तथा (ब) 31 के स्थान पर M है और P के स्थान पर N है तो निम्नांकित कथनों में कौन सा सत्य है ?
(क) कथन अ गलत है (ख) कथन ब सही है
(ग) दोनों कथन अ और ब अनिश्चित है
(घ) दोनों कथन अ और ब सही है

90. (अ) कोई भी विमान चालक दुर्घटनामुक्त नहीं है।
(ब) सभी विमान चालक मनुष्य है। यदि उपर्युक्त दोनों विवरण सत्य है तो
(च) कोई भी मनुष्य दुर्घटना मुक्त नहीं है तथा
(छ) सभी कुशल विमान चालक दुर्घटना मुक्त हैं, हेतु निम्नांकित में सही विकल्प चुने।
(क) च सत्य है (ख) छ सत्य है
(ग) च तथा छ दोनों सत्य हैं (घ) च और छ दोनों असत्य हैं।

91. रहीम, शमीम तथा मुनीर एक ही कक्षा के विद्यार्थी हैं। यदि यह सत्य है कि (अ) रहीम शमीम से तेज विद्यार्थी है तथा (ब) शमीम मुनीर से कमजोर विद्यार्थी है तो रहीम और मुनीर की सापेक्ष स्थिति क्या है ?
(क) रहीम मुनीर से तेज विद्यार्थी है
(ख) मुनीर रहीम से तेज विद्यार्थी है
(ग) रहीम और मुनीर समान रूप से तेज विद्यार्थी हैं
(घ) कुछ निश्चित नहीं कहा जा सकता

92. संलग्न चित्र में प्रत्येक वृत्त का क्षेत्रफल 4 π है तो वग अ ब स द का परिमाप कितना होगा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

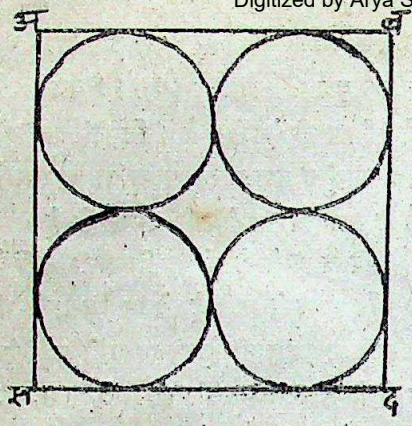

(क) 16 (ख) 16π

(ग) 32 (घ) 64π

93. किसी शैक्षिक संस्था में आधे विद्यार्थी जापानी भाषा पढ़ते है । शेष विद्यार्थियों का $\frac{1}{3}$ भाग फ्रेन्च भाषा पढ़ता है । शेष 300 विद्यार्थी कोई भी विदेशी भाषा नहीं पढ़ते है । बताइए उस शैक्षिक संस्था में कुल कितने विद्यार्थी हैं ?

(क) 750 (ख) 900

(ग) 1200 (घ) 1800

94. एक आयताकार टैंक में, जिसकी लम्बाई और चौड़ाई क्रमशः 25 मीटर और 9 मीटर है । इस टैंक में 2 मीटर तक पानी भरा हुआ है । इस पानी को बेलनाकार बर्तन, जिसकी त्रिज्या 6 मीटर है, में भर दिया जाता है । बताइए बेलनाकार बर्तन में पानी कितनी ऊँचाई तक पहुँच जायेगा ?

(क) 18 π (ख) $\frac{\pi}{18}$ (ग) $\frac{18}{\pi}$

(घ) 18 + π

निर्देश—निम्नांकित चित्र में विभिन्न स्थानों के मध्य दूरियाँ तथा इन दूरियों को ट्रेन द्वारा तय करने में लगा समय घण्टों में दिया गया है । इस चित्र के आधार पर निम्न प्रश्नों का सही उत्तर बताइए ।

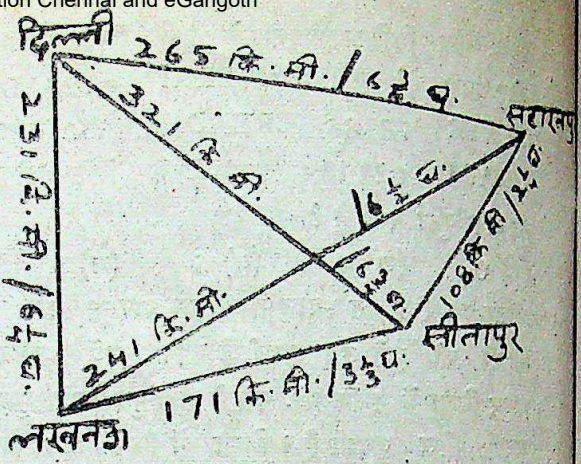

95. लखनऊ से सहारनपुर की दूरी सीधे तय करने की अपेक्षा सीतापुर होकर तय करने में कितना अधिक समय लगेगा ?

(क) 15 मिनट (ख) 30 मिनट

(ग) 45 मिनट (घ) 60 मिनट

96. दिल्ली से सीतापुर सीधा जाने के लिये ट्रेन की औसत चाल क्या है ?

(क) 25 कि. मी. प्रति घण्टा

(ख) 37 कि. मी. प्रति घण्टा

(ग) 44 कि मी. प्रति घण्टा

(घ) 51 कि. मी. प्रति घण्टा

97. एक ट्रेन लखनऊ से सीधे सीतापुर के लिये रवाना हुयी । पहले 2 घन्टे तक वह 60 कि. मी. प्रति घण्टे की चाल से चली । शेष यात्रा को निश्चित समय के भीतर पूरा करने के लिये ट्रेन की औसत चाल लगभग कितनी होनी चाहिए ?

(क) 34 कि. प्रति घण्टा

(ख) 38 कि. मी. प्रति घन्टा

(ग) 40 कि.मी. प्रति घन्टा

(घ) 66 कि. मी. प्रति घण्टा

निर्देश-प्रश्न 98-102 निम्न चित्र पर आधारित हैं जिसमें वृत्त से शिक्षित व्यक्तियों का, त्रिभुज से शहरी व्यक्तियों का, आयत से ईमानदार व्यक्तियों का तथा वर्ग से परिश्रमी व्यक्तियों का बोध होता है, चित्र में विभिन्न क्षेत्र 1 से 12 तक अंकित है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

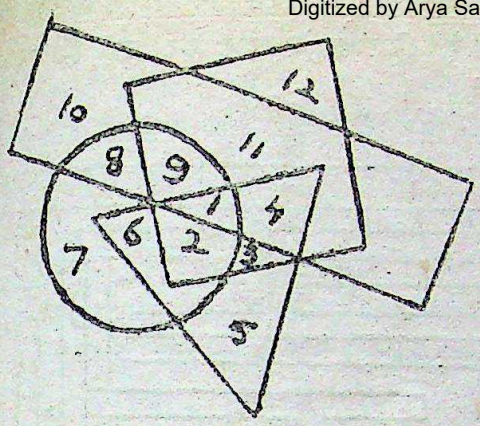

98. ईमानदार, शहरी और परिश्रमी व्यक्ति, जो शहरी नहीं हैं, निम्न से इंगित हैं —

(क) 4 (ख) 5 (ग) 7 (घ) 9 (च) 13
(छ) 14

99. ने शिक्षित व्यक्ति जो न तो शहरी हैं और न ही परिश्रमी और ईमानदार है, निम्न से इंगित हैं ?

(क) 2 (ख) 4 (ग) 5 (घ) 7 (च) 9 (छ) 16

100. शिक्षित, परिश्रमी और ईमानदार शहरी व्यक्ति निम्न से इंगित है ?

(क) 1 (ख) 3 (ग) 4 (घ) 6 (च) 9
(छ) कोई भी नहीं

101. ऐसे शहरी व्यक्ति जो ईमानदार तो नहीं हैं परन्तु परिश्रमी और शिक्षित है, निम्न से इंगित है ?

(क) 6 (ख) 4 (ग) 8 (घ) 2 (च) 5 (छ) 10

102. शिक्षित शहरी व्यक्ति जो न परिश्रमी है और न ही ईमानदार है, निम्न से इंगित है ?

(क) 1 (ख) 3 (ग) 6 (घ) 9
(च) कोई भी नहीं

निर्देश :—प्रश्न 103-7 निम्नांकित ग्राफ पर आधारित है। ग्राफ का आकलन कर प्रश्नों के उत्तर का सही विकल्प चुनिये।

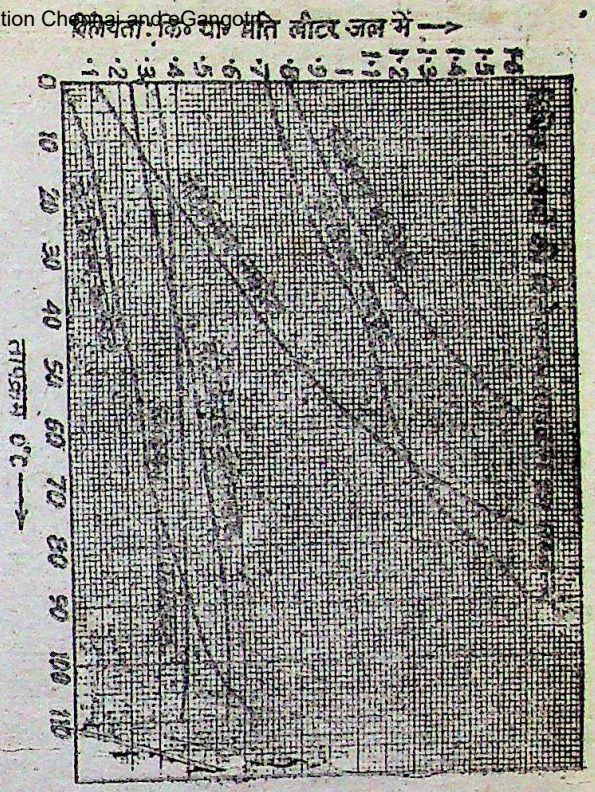

103. निम्न में से किस लवण की विलेयता सर्वाधिक है ?

(क) पोटेशियम क्लोरेट की 81°c पर
(ख) पोटेशियम क्लोराइड की 45°c पर
(ग) पोटेशियम नाइट्रेट की 29°c पर
(घ) सोडियम क्लोराइड की 85°c पर
(च) सोडियम क्लोराइड की 21°c पर

104. 10 लीटर पानी में 23°c पर पोटेशियम नाइट्रेट की लगभग कितनी मात्रा घुलेगी ?

(क) 1 2 किग्रा. (ख) 1.75
(ग) 4.45 किग्रा (घ) 5.75 किग्रा.

105. यदि पानी का तापक्रम 31°c से बढ़ाकर 65°c कर दिया जाये तो पोटेशियम क्लोराइड की विलयता में कितने प्रतिशत वृद्धि होगी ?

(क) 15% (ख) 75%
(ग) 115% (घ) 150%
(च) 210%

106. निम्न लवण युग्मों में किनका 10°c से 90°c के मध्य किसी भी तापक्रम पर विलयता एक समान नहीं है ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(क) पोटेशियम क्लोराइड व पोटेशियम नाइट्रेट
(ख) पोटेशियम क्लोराइड व सोडियम क्लोराइड
(ग) पोटेशियम क्लोरेट व सोडियम क्लोराइड
(घ) पोटेशियम क्लोरेट व पोटेशियम क्लोराइड
(च) पोटेशियम नाइट्रेट व सोडियम नाइट्रेट

107. निम्न में से किस लवण की विलेयता में 15°c से 25°c तापक्रम के मध्य सर्वाधिक परिवर्तन हुआ है ?
(क) पोटेशियम क्लोरेट
(ख) पोटेशियम नाइट्रेट
(ग) सोडियम क्लोराइड
(घ) सोडियम क्लोरेट व सोडियम नाइट्रेट

निर्देश—प्रश्न 108-110 में प्रत्येक वर्ग की नौ कोष्ठिकाओं में एक रिक्त है। विकल्पों में से किसी एक सही संख्या को चुनकर रिक्त स्थान को भरिए ?

108.

24	3	15
?	0	48
80	63	35

(क) 4 (ख) 9 (ग) 17 (घ) 23
(च) 31 (छ) 46

109.

1	2	1
4	1	3
?	9	27

(क) 16 (ख) 29 (ग) 8 (घ) 41
(च) 13 (छ) 7

110.

6	42	?
12	2	30
72	20	90

(क) 79 (ख) 49 (ग) 27
(घ) 15 (च) 34 (छ) 56

निर्देश—प्रश्न 111-120 निम्नांकित चक्रव्यूह पर आधारित है। चित्र का अध्ययन कर सही विकल्प का चयन करें ?

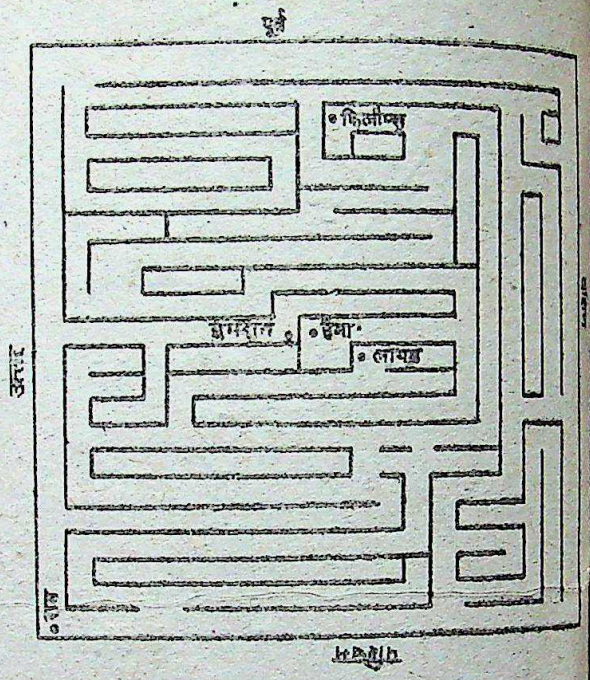

111. राम को हेमा के पास पहुँचने के लिये कम से कम कितने मोड़ लेने पड़ेंगे ?
(क) 5 (ख) 7 (ग) 9
(घ) 11 (च) 13 (छ) 16

112. फिलीप्स को हेमा तक सबसे छोटे मार्ग द्वारा पहुँचने के लिये कितने मोड़ लेने पड़ेंगे ?
(क) 2 (ख) 3 (ग) 6
(घ) 8 (च) 10 (छ) 12

113. लायड को हेमा तक पहुँचने के लिये कम से कम कितने मोड़ लेने पड़ेंगे ?
(क) 1 (ख) 3 (ग) 5
(घ) 3 (च) 7 (छ) 4

114. इमरान को लायड तक सबसे छोटे मार्ग द्वारा पहुँचने के लिये कितने मोड़ लेने पड़ेंगे ?
(क) 11 (ख) 5 (ग) 8
(घ) 3 (च) 7 (छ) 4

115. फिलीप्स को लायड से मिलने के लिये सबसे छोटे मार्ग द्वारा मिलने के लिये उसे पूर्व की दिशा में कितनी बार मुड़ना पड़ेगा ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(क) 5 (ख) 14 (ग) 16
(घ) 3 (च) 6 (छ) 2

116. राम को हेमा तक पहुँचने के लिये दक्षिण की दिशा में कितनी बार मुड़ना पड़ेगा ?
(क) 9 (ख) 5 (ग) 7
(घ) 3 (च) 4 (छ) 11

117. इमरान को फिलीप्स तक सबसे छोटे मार्ग द्वारा पहुँचने के लिये उत्तर की दिशा में कितनी बार मुड़ना पड़ेगा ?
(क) 17 (ख) 3 (ग) 8
(घ) 9 (च) 4 (छ) 7

118. इमरान को लायड तक सबसे छोटे मार्ग द्वारा पहुँचने के लिये पश्चिम की दिशा में कितनी बार मुड़ना पड़ेगा ?
(क) 9 (ख) 6 (ग) 4
(घ) 10 (च) 8 (छ) 5

119. लायड को राम से मिलने के लिये दक्षिण की दिशा में कम से कम कितनी बार मुड़ना पड़ेगा ?
(क) 7 (ख) 4 (ग) 1
(घ) 3 (च) 6 (छ) 8

120. फिलीप्स को हेमा तक पहुँचने के लिये पश्चिम की दिशा में कम से कम कितनी बार मुड़ना पड़ेगा ?
(क) 10 (ख) 12 (ग) 5
(घ) 4 (च) 7 (छ) 6

121. एक प्रकाशक 5000 पुस्तक पर 20% लाभ कमाना चाहता है। पहली 1000 पुस्तकों को प्रकाशक ने 10% लाभ पर बेचा तो बताइए शेष पुस्तकों को कितने प्रतिशत लाभ पर बेचा जाये कि प्रकाशक को अभीष्ट लाभ मिल सके ?
(क) $18\frac{1}{2}$ प्रतिशत (ख) $22\frac{1}{2}$ प्रतिशत
(ग) 27 प्रतिशत (घ) 30 प्रतिशत

122. एक फियेट कार 1 लीटर पेट्रोल से 10 कि.मी. तक चलती है। जब उसी कार में 6 यात्री यात्रा करते हैं तो 1 लीटर तेल से खाली फियेट कार की तुलना में केवल 85 प्रतिशत दूरी तय करती है। बताइये 50 कि.मी चलने के लिये भरी हुई फियेट कार को लगभग कितने लीटर तेल की आवश्यकता होगी ?
(क) 5 (ख) 5.25
(ग) 5.88 (घ) 6.25

123. यदि किसी आयत की लम्बाई 11% बढ़ा दी जाये तो आयत का क्षेत्रफल कितना प्रतिशत बढ़ जायेगा ?
(क) 11 प्रतिशत (ख) 22 प्रतिशत
(ग) 44 प्रतिशत (घ) 121 प्रतिशत

124. 5 व्यक्ति किसी गढ्ढे को 2 घण्टें में खोदते हैं तो बताइए 12 आदमी उसी गढ्ढे को खोदने में कितना समय लेंगे ?
(क) 45 मिनट (ख) 50 मिनट
(ग) 60 मिनट (घ) 75 मिनट
(च) 90 मिनट

125. दिन के एक निश्चित समय में 6 फीट लम्बे व्यक्ति की छाया की लम्बाई 9 फीट होती है। उसी समय यदि एक खम्बे की छाये की लम्बाई 75 फीट हो तो खम्बे की वास्तविक लम्बाई कितनी होगी ?
(क) 25 फीट (ख) 50 फीट
(ग) 100 फीट (घ) 150 फीट

126. निम्न में कौन सी भिन्न सबसे बड़ी है ?
(क) $\frac{5}{6}$ (ख) $\frac{11}{14}$
(ग) $\frac{12}{15}$ (घ) $\frac{17}{21}$

127. यदि $8A = 6B$ और $3A = 0$ है तो निम्न में कौन सा विकल्प सत्य है ?
(क) A और B समान है
(ख) $A = 6$ और $B = 8$ है
(ग) $\frac{A}{B} = \frac{4}{3}$ (घ) $\frac{A}{B} = \frac{3}{4}$

128. अ और ब का योग 135 है ? अ ब से 6 कम है परन्तु ब से 23 अधिक है। स का मान क्या है ?
(क) 45 (ख) 85
(ग) 125 (घ) 75
(च) 100

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

129. एक विद्यार्थी ने 4 विषयों में औसत 78 प्रतिशत अंक प्राप्त किये। बताइए पाचवें विषय में उसे कितने अंक प्राप्त करना चाहिए यदि वह कुल 80 प्रतिशत अंक प्राप्त करना चाहता हो ?

(क) 85 (ख) 87

(ग) 88 (घ) 90 (च) 91

130. एक कक्षा में अ लड़कियाँ और ब लड़के हैं। लड़कियाँ कक्षा के कुल विद्यार्थियों का कौन सा भाग है ?

(क) $\frac{अ}{अ+ब}$ (ख) $\frac{अ+ब}{अ}$

(ग) $\frac{अ+ब}{अब}$ (घ) $\frac{अब}{अ+ब}$

131. दिन के बारह बजे से रात के बारह बजे के मध्य चलती हुई घड़ी में कितनी स्थितियाँ ऐसी आती हैं जबकि घण्टे और मिनट की सूईयां आपस में मिली हैं ?

(क) 11 (ख) 12 (ग) 13

132. एक निबन्ध प्रतियोगिता में कुल योगदानकारी प्रतियोगियों में 5% को कुल 30 पुरस्कार के विजेता के रूप में चुना गया। यदि प्रत्येक विजेता को एक-एक पुरस्कार प्रदान किया गया तो बताइए कुल कितने योगदानकारी प्रतियोगी थे ?

(क) 60 (ख) 150

(ग) 400 (घ) 600

133. निम्नांकित चित्रानुसार सभी रेखाएं परस्पर लम्ब हैं तथा अ स = स द = द घ = ङ झ = च छ = छ ज = x तथा घ च = झ ज = ब ङ = y हैं। अ ब की लम्बाई कितनी होगी यदि x और y का मान क्रमशः 2 और 3 है ?

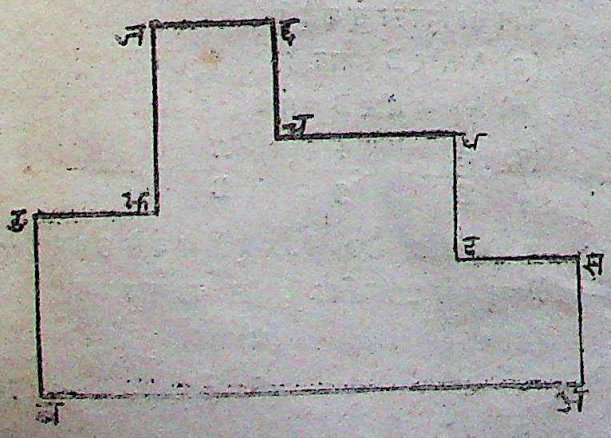

(क) 8 (ख) 9

(ग) 10 (घ) 12

निर्देश :—संलग्न ग्राफ किसी कम्पनी की आय और व्यय का सम्बन्ध व्यक्त करता है। ग्राफ का आकलन कर प्रश्न 134-138 का उत्तर बताइए।

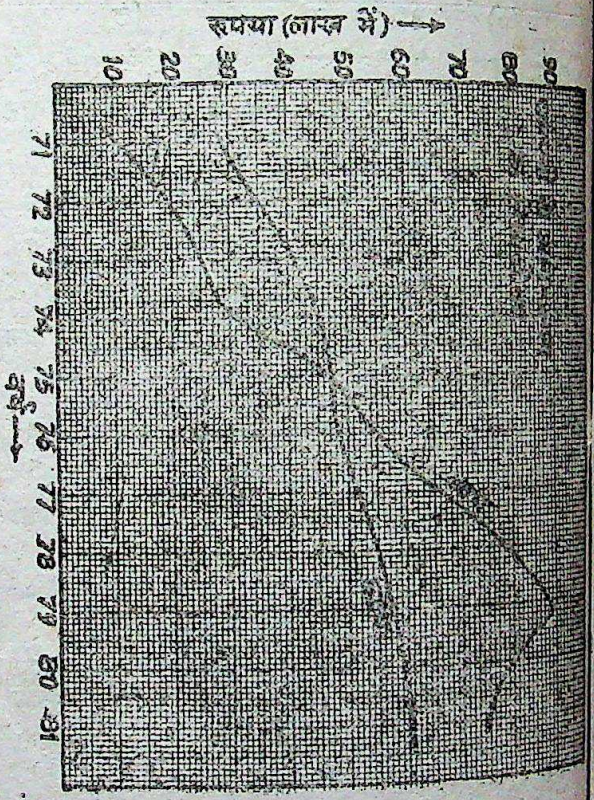

134. जब कम्पनी की वार्षिक आय 25 लाख रुपये थी तो उस वर्ष कम्पनी की आर्थिक स्थिति क्या थी ?

(क) कम्पनी को 17 लाख रुपये का लाभ हुआ

(ख) कम्पनी को 17 लाख रुपये की हानि हुयी

(ग) कम्पनी को कोई लाभ-हानि नहीं हुयी

(घ) ग्राफ से कुछ निश्चित नहीं कहा जा सकता

135. वर्ष 1975 में कम्पनी की क्या स्थिति थी ?

(क) कम्पनी को 25 लाख रुपये की लाभ हुआ

(ख) कम्पनी को 13 लाख रुपये की हानि हुयी

(ग) कम्पनी की कोई लाभ-हानि नहीं हुयी

(घ) ग्राफ से कुछ निश्चित नहीं कहा जा सकता

136. वर्ष 1980 में कम्पनी को लाभ हुआ या हानि ?

(क) लाभ (ख) हानि

(ग) लाभ-हानि कुछ नहीं हुयी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

137. कम्पनी को किस वर्ष सर्वाधिक लाभ हुआ ?

(क) 1973 (ख) 1976
(ग) 1979 (घ) 1981

138. 1971-81 से मध्य किस वर्ष में कम्पनी को सर्वाधिक घाटा हुआ ?

(क) 1971 (ख) 1973
(ग) 1980 (घ) 1981

139. एक बेलनाकार टैंक की त्रिज्या 100 फीट और ऊंचाई 20 फीट है। टैंक में कितने गेलन (1 गेलन =.13 घन फिट) तेल भरा जा सकता है ?

(क) 42208 (ख) 44703
(ग) 48307 (घ) 47808

140. किसी वृत्ताकार तालाब की त्रिज्या एक वृत्ताकार फुलवारी की त्रिज्या की दूनी है। बताइए तालाब का क्षेत्रफल फुलवारी के क्षेत्रफल का कितना गुना है ?

(क) $\frac{1}{4}$ (ख) $\frac{1}{2}$
(ग) 2 (घ) 4
(च) 8

141. अ ब का वर्ग है तथा स द का वर्गमूल है। बताइए निम्नांकित विकल्पों में कौन सही है ?

(क) $अ^2 = \sqrt{द}$ (ख) $स = अ^2$
(ग) $ब^2 = \sqrt{अ}$ (घ) $द = ब^2$
(च) $अ^2 = द$

142. वह छोटी से छोटी संख्या बताइए जिसे 7,8,9 से भाग देने पर क्रमशः 5 शेष रहे ?

(क) 88 (ख) 92
(ग) 84 (घ) 96

143. एक गुलाब बाड़ी में 154 पौधे हैं। सभी फूल रंगीन है। लाल गुलाबों की संख्या पीले गुलाबों की संख्या से 3 कम तथा काले गुलाबों की संख्या से 5 अधिक है। बताइए पीले गुलाब की संख्या काले गुलाबों से कितनी अधिक है ?

(क) 5 (ख) 8
(ग) 11 (घ) 7
(च) 15

144. एक बक्से में 120 गेंद रखी हुई है। इनमें 70 गेंद लाल और 40 गेंद नीले रंग की है। 20 गेंद न लाल रंग की है और न ही नीले रंग की है। बताइए कितनी गेंद दोनों रंगों में रंगी हुई है ?

(क) 30 (ख) 110
(ग) 10 (घ) कोई भी नहीं

निर्देश :—भारत में प्रदूषण को रोकने के लिये सातवें दशक में विनिमयित धनराशि (करोड़ रुपये में) का विवरण निम्नांकित ग्राफ द्वारा प्रदर्शित किया गया है।

145. वायु प्रदूषण तथा जल प्रदूषण को रोकने के लिये विनियोजित धनराशि का क्या अनुपात है ?

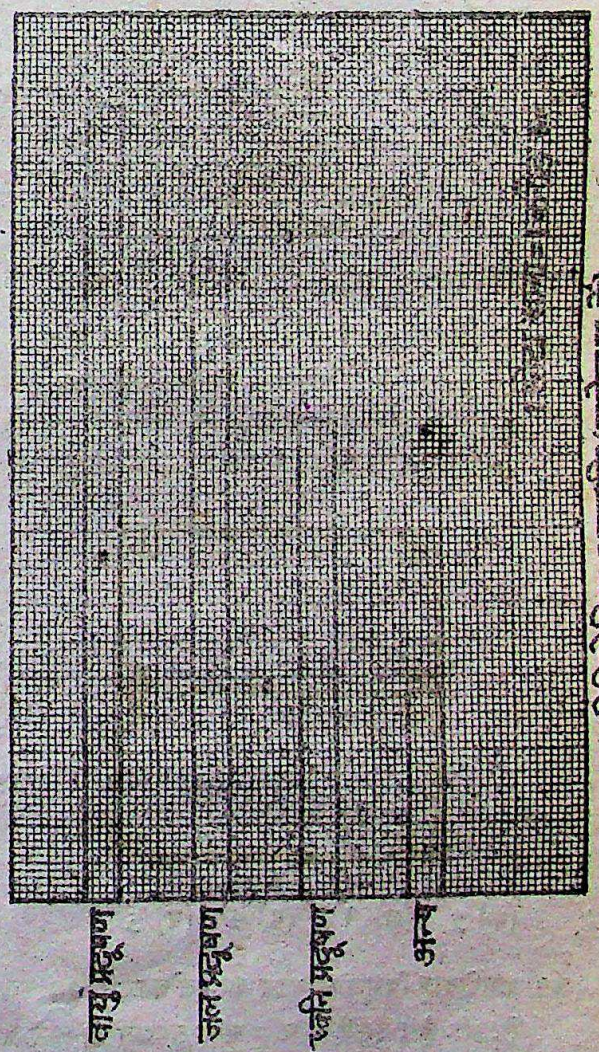

(क) 2 : 3 (ख) 4 : 3
(ग) 6 : 5 (घ) 8 : 5

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

146. वायु प्रदूषण पर विनियोजित धनराशि प्रदूषण पर कुल विनियोजित धनराशि का लगभग कितना प्रतिशत है ?

(क) 25% (ख) 33%

(ग) 36% (घ) 54%

147. निम्नांकित चित्र के रेखांकित भाग का क्षेत्रफल और सम्पूर्ण वृत्त के क्षेत्रफल में क्या अनुपात है ? (वृत्त की त्रिज्या = 4 से. मी., कोण $x = 60^\circ$)

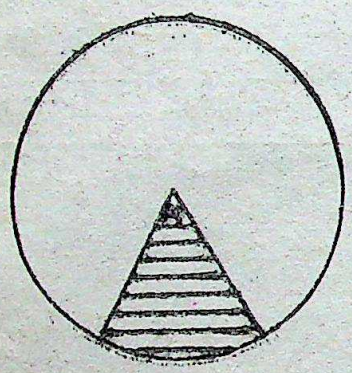

(क) 2 : 3 (ख) 1 : 3 (ग) 1 : 5 (घ) 1 : 6

148. दो समान आयतों अ ब स द और च छ ज झ को इस प्रकार जोड़ दिया गया कि एक वर्ग बन गया है। यदि आयत अ ब स द की लम्बाई उसकी चौड़ाई की x गुनी है तो x का क्या मान होगा ?

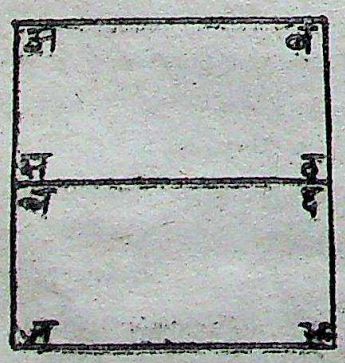

(क) 2 (ख) 3 (ग) 4 (घ) 5

149. समद्विबाहु त्रिभुज अ ब स का क्षेत्रफल 48 वर्ग से. मी. है। इसमें अ च = च स तथा अ छ = छ ब है। यदि आयत च छ ज झ का क्षेत्रफल x है तो x का क्या मान होगा ?

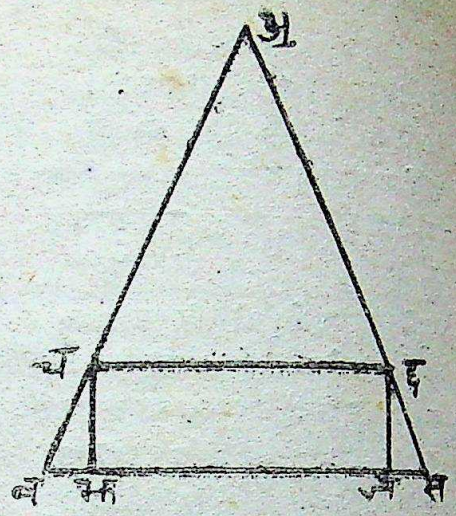

(क) 3 वर्ग सेमी. (ख) 12 वर्ग सेमी.

(ग) 24 सेमी. (घ) 32 सेमी.

150. 1 सेमी. व्यास वाले 4 वृत्त निम्नांकित चित्र के अनुसार 4 बिन्दुओं पर एक दूसरे को स्पर्श करते हैं। रेखांकित भाग का क्षेत्रफल क्या होगा ?

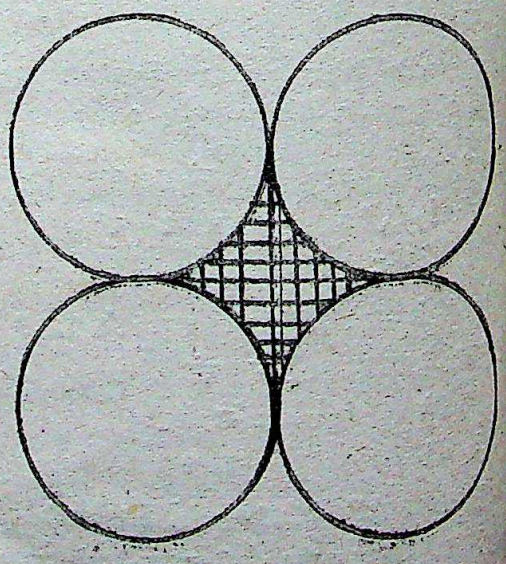

(क) $1 - \frac{\pi}{4}$ (ख) $1 - 4\pi$

(ग) π (घ) 4π

151. निम्नांकित चित्र में अ स और ब स वृत्तों की त्रिज्याएं हैं। यदि अ ब = 4 सेमी. तथा अ ब = [illegible] सेमी. है तो ब स कितना सेमी. होगा ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

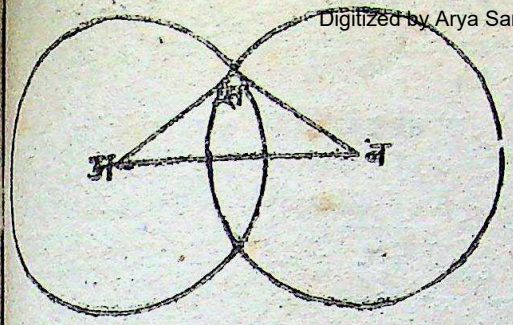

(क) 2 (ख) 3

(ग) $2\sqrt{3}$ (घ) $3\sqrt{2}$

152. निम्नांकित चित्र में अ ब स द एक वर्ग है। वर्ग की प्रत्येक भुजा के साथ एक अर्धवृत्त बनाया गया है। यदि अ ब = 2 सेमी. है तो सम्पूर्ण चित्र का क्या क्षेत्रफल होगा ?

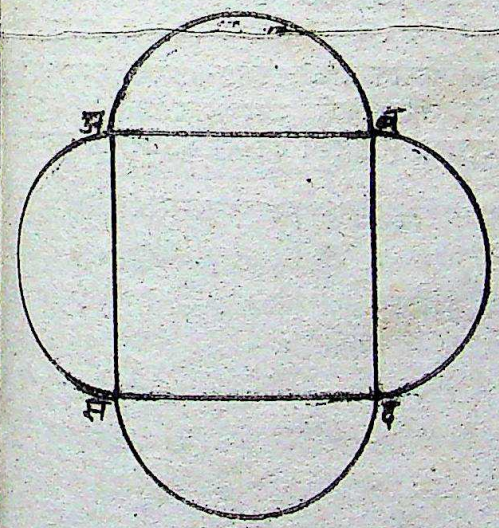

(क) $2+4\pi$ (ख) $4+2\pi$

(ग) 8π (घ) $4-2\pi$

निर्देश :—प्रश्न 153 से 156 में पांच भिन्न-भिन्न नियमों का प्रयोग कर शब्द CENTRAL को पांच भिन्न-भिन्न सांकेतिक भाषा में (अ) JYPRLCA, (ब) FOUSBM, (स) KZQSMDB, (द) XVMGIZO तथा (घ) DDOSSZM लिखा गया। निम्नांकित शब्दों को सांकेतिक भाषा में लिखने के लिये उपर्युक्त में से किस नियम लागू किया गया।

153. ORIENT (शब्द) —LIRVMG (संकेत)

(क) अ (ख) ब

(ग) स (घ) द

(च) ध

154. FRANCE (शब्द) —GQBMDD (संकेत)

(क) अ (ख) ब

(ग) स (घ) द

(च) ध

155. METHOD (शब्द) —GNGSDL (संकेत)

(क) अ (ख) ब

(ग) स (घ) द

(च) ध

156. DOUBLE (शब्द) —GJZSMB (संकेत)

(क) अ (ख) ब

(ग) स (घ) द

(च) ध

157. उपर्युक्त वर्गाकार चित्र में दी हुई स्थिति से राम व दिलीप भुजाओं पर घड़ी की सूई की दिशा में चलते हैं और श्याम व सुनील सूई की उल्टे दिशा में चलते है। यदि सभी एक ही गति से चलकर $1\frac{1}{2}$ भुजा की दूरी तय करते हैं तो

(क) श्याम राम के उत्तर पर होगा

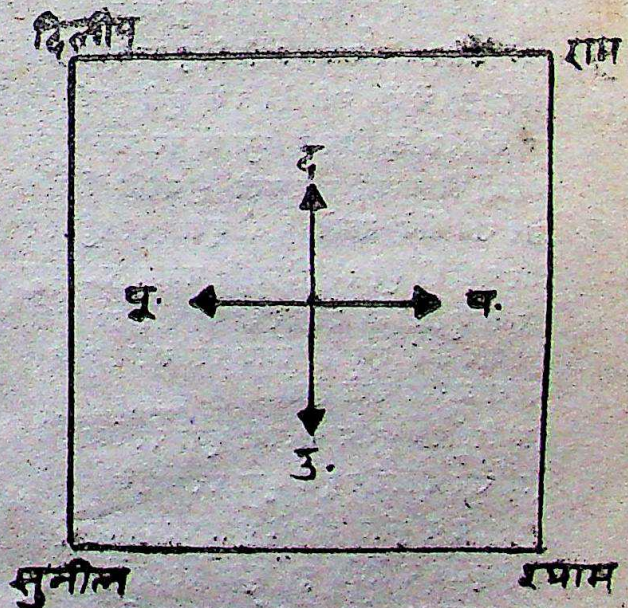

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(ख) सुनील राम के उत्तर पर होगा
(ग) राम दिलीप के उत्तर-पूर्व पर होगा
(घ) श्याम दिलीप के दक्षिण-पश्चिम पर होगा
(च) सुनील दिलीप के दक्षिण पर होगा

158. प्रश्न संख्या 157 में दी गयी स्थिति से सुनील तथा राम घड़ी की सुई की उल्टे दिशा में क्रमशः 1½ और 1 भुजा चलते हैं जबकि दिलीप सामने की दूसरी भुजा पर आ जाता है तो
(क) दिलीप सुनील के दक्षिण पर होगा
(ख) श्याम सुनील के पूर्व पर होगा
(ग) श्याम दिलीप के दक्षिण-पश्चिम पर होगा
(घ) श्याम राम के उत्तर-पश्चिम पर होगा
(च) राम दिलीप के पूर्व पर होगा

159. प्रश्न संख्या 158 में दी गयी स्थिति में सुनील और दिलीप घड़ी की सुई की दिशा की ओर भुजाओं पर चलकर 3 भुजा की दूरी चलते है जबकि श्याम सीधा सामने दूसरी भुजा पर पहुँच कर वहाँ से घड़ी की सुई की विपरीत दिशा की ओर भुजा पर चलकर एक भुजा की दूरी तय करता है, तो
(क) श्याम और दिलीप एक ही बिन्दु पर होंगे
(ख) राम और सुनील एक ही बिन्दु पर होंगे
(ग) राम और श्याम एक ही बिन्दु पर होंगे
(घ) श्याम और सुनील एक ही बिन्दु पर होंगे
(च) दिलीप और राम एक ही बिन्दु पर होंगे

160. प्रश्न 159 में दी गयी स्थिति से सुनील घड़ी की सुई की विपरीत दिशा में भुजाओं पर चलकर दो भुजाओं की लम्बाई पार करते हैं जबकि दिलीप और राम सीधे सामने वाली भुजा पर पहुंचकर फिर घड़ी की सुई की दिशा में भुजाओं पर चल कर दो भुजाओं के बराबर की लम्बाई तय करते है। यदि सभी एक ही समय पर समान गति से चलना प्रारम्भ करते है तो
(क) दिलीप व श्याम पश्चिमी भुजा पर मिलेंगे
(ख) राम व दिलीप पूर्वी भुजा पर मिलेंगे
(ग) राम व सुनील दक्षिणी भुजा पर मिलेंगे
(घ) सुनील व दिलीप पूर्वी भुजा पर मिलेंगे
(च) श्याम व सुनील पश्चिमी भुजा पर मिलेंगे

निर्देश : प्रश्न 161—165 में संख्याओं के एक समुच्चय (Set) में निम्नांकित नियमों का अनुप्रयोग किया गया है।

(अ) संख्या के वर्ग में संख्या को जोड़ा जाये, (ब) संख्या में 3 का गुणा कर गुणनफल में 3 जोड़ा जाये, (स) संख्या के वर्ग में से उस संख्या का दूना घटाया जाये, (द) संख्या को 5 से गुणा कर गुणनफल में 3 घटाया जाय तथा (ध) संख्या को 7 से भाग देकर उसे भागफल के संख्या में जोड़ दिया जाये।

161. 32 67 102 137
(क) अ (ख) ब (ग) स (घ) द (च) ध

162. 56 210 462 812
(क) अ (ख) ब (ग) स (घ) द (च) ध

163. 8 18 30 44
(क) अ (ख) ब (ग) स (घ) द (च) ध

164. 35 168 399 728
(क) अ (ख) ब (ग) स (घ) द (च) ध

165. 24 45 66 37
(क) अ (ख) ब (ग) स (घ) द (च) ध

निर्देश—निम्नोक्त ग्राफ 1982-83 के मध्य सार्वजनिक क्षेत्र तथा निजी क्षेत्र में इस्पात के तुलनात्मक उत्पादन (मिलियन टन में) को प्रदर्शित करता है।

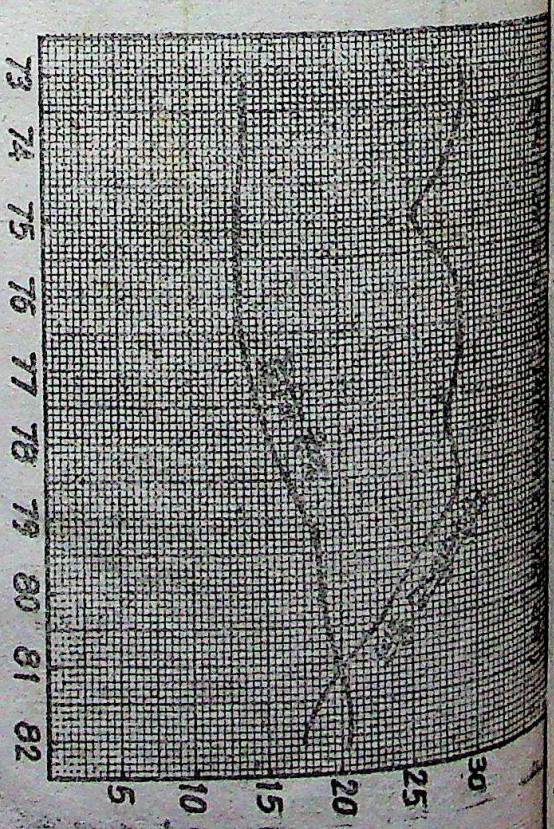

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

166. किस वर्ष के दौरान दोनों क्षेत्रों में इस्पात के उत्पादन में सर्वाधिक अन्तर रहा ?
(क) 1973 (ख) 1975
(ग) 1976 (घ) 1978

167. किस वर्ष निजी क्षेत्र में इस्पात के उत्पादन की वृद्धि दर सर्वाधिक रही ?
(क) 1974 (ख) 1978
(ग) 1979 (घ) 1982

168. किस वर्ष के दौरान दोनों क्षेत्रों में इस्पात के उत्पादन में न्यूनतम अन्तर रहा ?
(क) 1980 (ख) 1981
(ग) 1982 (घ) किसी भी वर्ष नहीं

169. 1973-82 के मध्य सार्वजनिक क्षेत्र तथा निजी क्षेत्र में किसके उत्पादक में औसत रूप से अपेक्षाकृत कम उतार चढ़ाव आया ?
(क) सार्वजनिक क्षेत्र (ख) निजी क्षेत्र
(ग) दोनों में समान रूप से
(घ) निश्चित कहा नहीं जा सकता

170. किस वर्ष इस्पात का कुल उत्पादन सर्वाधिक हुआ ?
(क) 1976 (ख) 1977
(ग) 1979 (घ) 1980

171. 170 मीटर लम्बाई के वृत्ताकार साइकिल वेलोड्रोम में जब दो साइकिल चालक राम स्वरूप और अखिलेन्द्र अपरिवर्तित गति से एक दूसरे की विपरीत दिशा में चलते हैं तो वे प्रत्येक 10 सेकेण्ड में एक दूसरे से मिलते हैं परन्तु जब वे एक ही दिशा में चलते हैं तो 170 सेकेण्ड पश्चात मिलते हैं। यह बताइये दोनों कितने मीटर प्रति सेकेण्ड की चाल से साइकिल चला रहे हैं ?
(क) 17, 9 (ख) 9, 8
(ग) 11, 19 (घ) 7, 25

172. नव वर्ष के समारोह में 20 लोगों ने नृत्य में भाग लिया। डॉरोथी ने सात पुरुषों के साथ नृत्य किया, पिकली ने नौ के साथ, — — — — — और अन्त में शुभा ने सभी पुरुषों के साथ नृत्य किया। बताइये नृत्य समारोह में कितने पुरुष सम्मिलित हुए थे ?
(क) 11 (ख) 12 (ग) 13 (घ) 14

173. 8 दांतों के एक छोटे पहिये को 24 दांतों के एक बड़े पहिये की धुरी पर सम्पूर्ण चक्कर पूरा करने के लिए 8 दांतों वाला पहिया स्वयं कितनी बार घूमेगा ?

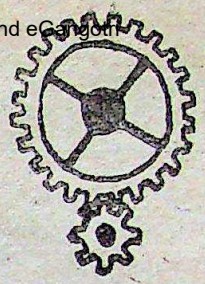

(क) 4 (ख) 3 (ग) $2\frac{1}{2}$ (ग) $3\frac{1}{3}$

174. प्रदीप के पास 2.25 लाख रु. है। यदि वह प्रत्येक महीने में 3000 रु. व्यय करता हैं तो कितने वर्ष पश्चात उसके पास कोई रुपया शेष नहीं रहेगा ?
(क) 3 वर्ष (ख) 4.5 वर्ष
(ग) 5 वर्ष (घ) 6.25 वर्ष

175. एक तरबूजा (अ) का व्यास एक दूसरे तरबूजे (ख) के व्यास से $\frac{1}{4}$ गुना बड़ा है परन्तु अ का मूल्य ब के मूल्य से $1\frac{1}{2}$ गुना अधिक है ? बताइये कौन सा तरबूजा खरीदना लाभप्रद है ?
(क) अ (ख) ब (ग) अ तथा ब दोनों ही

निर्देश—प्रश्न 176—180 में कुछ सम्बन्धों को निम्नांकित प्रतीकों द्वारा व्यक्त किया गया है।

△ कम; □ = कम नहीं; × = बृहत्तर; + = बराबर नहीं; ● = बराबर तथा ÷ = बराबर नहीं। इन प्रतीकों को समझ कर सही विकल्पों को चुनें।

176. यदि अ + ब + स, तो इसका यह अर्थ नहीं है कि
(क) स ● ब △ अ (ख) अ △ ब ● स
(ग) अ ● ब ● स (घ) अ △ ब △ स
(च) अ ● ब △ स

177. यदि अ × ब △ स, तो इसके अनुसार यह असम्भव नहीं है कि
(क) ब □ अ ● स (ख) अ ● स △ ब
(ग) स + ब □ अ (घ) ब □ अ × स
(च) ब □ ब + स

178. यदि अ△ब△स, तो इसका यह अर्थ नहीं है कि
(क) अ △ स × ब (ख) ब × अ △ स
(ग) ब + अ △ स (घ) स × ब × अ
(च) अ × स × ब

179. यदि अ □ ब × स, तो इसका यह अर्थ है कि
(क) अ × स + ब (ख) अ □ ब ● स
(ग) स × ब × अ (घ) अ △ ब □ स (ङ) ब × अ × स

180. यदि अ ÷ ब ÷ स, तो इसका यह अर्थ नहीं है कि
(क) ब × अ ● अ (ख) ब × अ ● स
(ग) ब △ स × अ (घ) स × ब △ अ
(च) अ △ ब × स

■ प्रस्तुति : अखिलेश्वर झा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय अर्थव्यवस्था

1. भारत को अल्प विकसित देश कहा जाता है। अल्प विकसित देश की क्या विशेषताएं होती हैं ?
   (क) प्राथमिक उत्पादन की प्रधानता
   (ख) जनसंख्या का दबाव
   (ग) पूंजी निर्माण का निम्न स्तर
   (घ) औद्योगिक पिछड़ापन
   (च) विदेशी व्यापार में स्थिरता
   (छ) प्राकृतिक संसाधनों का अल्प उपयोग

2. भारत में आर्थिक विकास के लिये विकास की कौन सी प्रक्रिया अपनायी गयी है ?
   (क) सन्तुलित विकास (ख) असन्तुलित विकास
   (ग) द्रुत विकास (घ) मध्यम विकास

3. भारत में आर्थिक विकास के लिये सन्तुलित विकास का मार्ग अपनाया जाना क्यों आवश्यक समझा गया ?
   (क) देश में एक अग्र भाग, विशेषकर निर्यात क्षेत्र कायम करना सम्भव नहीं
   (ख) देश में औद्योगिक विकास का न होना
   (ग) जनसंख्या की अधिकता के कारण श्रम प्रधान उद्योगों में विनिमय की आवश्यकता
   (घ) उपर्युक्त सभी

4. भारत में आर्थिक विकास निम्नांकित किन कारणों पर निर्भर नहीं करता है ?
   (क) पूंजी निर्माण
   (ख) पूंजी-उत्पाद अनुपात
   (ग) विदेशी व्यापार की उन्मुखता
   (घ) व्यावसायिक ढांचा
   (च) जनसंख्या में निरन्तर वृद्धि

5. क्या भारत में जनसंख्या वृद्धि आर्थिक विकास के लिये गतिरोधक सिद्ध हुयी है ?
   (क) हाँ (ख) नहीं
   (ग) निश्चित नहीं कहा जा सकता

6. भारत सम्भवतः प्रथम अल्प विकसित प्रजातांत्रिक देश है जहाँ आर्थिक विकास के लिये नियोजन का मार्ग चुना गया। आर्थिक नियोजन की क्या प्रमुख विशेषताएं होती हैं ?
   (क) निश्चित लक्ष्यों एवं प्राथमिकताओं का निर्धारण
   (ख) सगठित प्रणाली
   (ग) निश्चित अवधि
   (घ) केन्द्रीय नियोजन व्यवस्था
   (च) राजकीय कार्यक्रम
   (छ) संसाधनों का अधिकतम उपयोग
   (ज) दीर्घ कालीन प्रक्रिया
   (झ) सामाजिक उत्थान
   (य) उपर्युक्त सभी

7. भारत के लिये आर्थिक नियोजन की व्यवस्था को क्यों सर्वोचित समझा गया ?
   (क) उपलब्ध साधनों का सर्वोत्तम उपयोग
   (ख) आर्थिक दुष्चक्रों का अन्त
   (ग) बेरोजगारी समस्या का निदान
   (घ) पूंजी का अभाव
   (च) जनसंख्या की समस्या
   (छ) सम्पत्ति एवं साधनों के असमान वितरण की समाप्ति
   (ज) शिक्षित एवं प्रशिक्षित लोगों का अभाव
   (झ) विभिन्न क्षेत्रों के विकास में समन्वय
   (य) आर्थिक संरचना का विकास
   (र) उपर्युक्त सभी

8. भारत में आर्थिक नियोजन का दृष्टिकोण प्रधानतः किस प्रकार है ?
   (क) पूंजीवादी (ख) समाजवादी
   (ग) असमाजवादी (घ) निरकुशवादी

9. भारत में योजना आयोग की स्थापना 15 मार्च, 1950 को हुई। योजना आयोग के सम्बन्ध में क्या असत्य है ?
   (क) यह एक गैर संवैधानिक (Extra-constitutional) सस्था है
   (ख) यह एक पूर्णतः सलाहकारी संस्था है
   (ग) इसका उल्लेख सविधान के अनुच्छेद 343 में है
   (घ) इसकी स्थापना संसदीय विधि के द्वारा हुयी है

10. योजना आयोग, जिसका पदेन अध्यक्ष भारत का प्रधान मन्त्री होता है, का प्रमुख कार्य क्या है ?
   (क) साधनों का आकलन करना
   (ख) प्राथमिकताओं का निर्धारण
   (ग) उपलब्ध संसाधनों का विभाजन
   (घ) अवरोधक तत्वों की ओर ध्यानाकर्षित करना
   (च) सरकार को सुझाव देना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(छ) योजना का निर्माण
(ज) योजना के लागू होने पर मध्यकालीन मूल्यांकन
(झ) उपर्युक्त सभी

11. भारत में आर्थिक नियोजन का प्रमुख उद्देश्य है ?
(क) आत्मनिर्भरता
(ख) कल्याणकारी राज्य की स्थापना
(ग) समाजवादी समाज की स्थापना
(घ) राष्ट्रीय आय एवं प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि
(च) रोजगार के अवसरों में वृद्धि
(छ) सार्वजनिक क्षेत्र का विस्तार एवं विकास
(ज) उपर्युक्त सभी

12. भारत में आर्थिक नियोजन का प्रारम्भ किस वर्ष किया गया ?
(क) 1947-48 (ख) 1948-49
(ग) 1949-50 (घ) 1950-51
(च) 1951-52

13. प्रथम पंचवर्षीय योजना (1950-51—1955-56) :
(क) द्वितीय विश्वयुद्ध एवं फिर देश विभाजन के फलस्वरूप बर्बाद हुई अर्थव्यवस्था का पुनरुत्थान
(ख) खाद्यान संकट का समाधान एवं कच्चे माल की स्थिति को सुधारना
(ग) स्फीतिकारी प्रवृत्तियों का प्रतिरोध
(घ) भविष्य में विशाल विकास परियोजनाओं की नींव तैयार करने के लिये विकास कार्यक्रमों का निर्माण एवं क्रियान्वयन
(च) राज्य नीति निदेशक तत्वों के अनुसार विस्तृत रूप में सामाजिक न्याय के उपायों को प्रारम्भ करना
(छ) आर्थिक उपरिव्यय-सड़क, सिंचाई एवं विद्युत परियोजनाओं का निर्माण
(ज) देश में विकास सम्बन्धी कार्यक्रमों को कार्यान्वित करने के लिये प्रशासनिक एवं अन्य संस्थाओं की स्थापना
(य) उपर्युक्त सभी

14. प्रथम पंचवर्षीय योजना में निम्न में किस क्षेत्र को सर्वाधिक प्राथमिकता प्रदान की गयी थी ?
(क) कृषि एवं सिंचाई
(ख) उद्योग एवं खनिज
(ग) परिवहन एवं संचार
(घ) सामाजिक सेवा एवं पुनर्वास

15. प्रथम पंचवर्षीय योजना मे कुल विनियोग की राशि 3360 करोड़ रुपये थी। इसमें सार्वजनिक क्षेत्र में विनियोग की राशि कितनी थी ?
(क) 2969 करोड़ रुपये
(ख) 2300 करोड रुपये
(ग) 1960 करोड़ रुपये
(घ) 1675 करोड़ रुपये

16. प्रथम पंचवर्षीय योजना में सार्वजनिक क्षेत्र के लिये धनराशि के सर्वाधिक भाग का अर्थ प्रबन्धन किस प्रकार किया गया ?
(क) विदेशी सहायता द्वारा
(ख) सार्वजनिक ऋण द्वारा
(ग) अल्प बचत द्वारा
(घ) चालू राजस्व एवं अतिरिक्त कराधान द्वारा
(च) घाटे की व्यवस्था द्वारा
(छ) जमा एवं विविध प्राप्तियाँ द्वारा

17. प्रथम पंचवर्षीय योजना के दौरान राष्ट्रीय आय में 18% की वृद्धि हुई जबकि 11% का लक्ष्य निर्धारण किया गया था। प्रति व्यक्ति आय में कितने प्रतिशत की वृद्धि हुई ?
(क) 4% (ख) 6%
(ग) 10% (घ) 13%

18. प्रथम पंचवर्षीय योजना के दौरान कृषि उत्पादन में कितने प्रतिशत की वृद्धि हुई ?
(क) 11 प्रतिशत (ख) 14 प्रतिशत
(ग) 17 प्रतिशत (घ) 20 प्रतिशत

19. प्रथम पंचवर्षीय योजना के दौरान भूमि सुधार में उल्लेखनीय सफलता प्राप्त हुई। भूमि सुधार में किसमें सर्वाधिक सफलता प्राप्त हुई ?
(क) मध्यस्त की समाप्ति
(ख) काश्तकारी सुधार
(ग) लगान में कमी
(घ) उपर्युक्त सभी

20. हालांकि प्रथम पंचवर्षीय योजना काल में औद्योगिक विकास को अधिक प्राथमिकता नहीं प्रदान की गयी थी परन्तु इस क्षेत्र में कुल विकास दर सर्वाधिक रही। बताइए यह विकास दर कितनी थी ?
(क) 12 प्रतिशत (ख) 22 प्रतिशत
(ग) 28 प्रतिशत (घ) 40 प्रतिशत

21. प्रथम पंचवर्षीय योजना काल में इतने अधिक औद्योगिक विकास दर का क्या कारण था ?
(क) औद्योगिक क्षेत्र में निजी क्षेत्र की सन्तोषजनक भूमिका
(ख) अधिक मात्रा में कच्चे मालों का उपलब्ध होना
(ग) अतिरिक्त क्षमता का समुचित उपयोग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(घ) नये निवेश
(च) उपर्युक्त सभी

22. प्रथम पंचवर्षीय योजना का क्या दोष था ?
(क) हालांकि औद्योगिक विकास के लिये निजी क्षेत्र को दायित्व सौंपा गया परन्तु उसके लिये संसाधनों की कोई उचित व्यवस्था नहीं की गयी
(ख) अल्पकालीन परियोजनाओं पर अधिक ध्यान न देकर दीर्घकालीन परियोजनाओं को प्राथमिकता प्रदान की गयी
(ग) इस दौरान परियोजनाओं के समुचित क्रियान्वयन के लिये विशेष रूप से किसी संस्था को स्थापित नहीं किया गया
(घ) उपर्युक्त सभी

23. द्वितीय पंचवर्षीय योजना (1955-56—1960-61) में निम्नांकित में कौन सा लक्ष्य निर्धारित किया गया ?
(क) राष्ट्रीय आय में बृहदाकार वृद्धि जिससे कि देश के लोगों का जीवन स्तर उन्नत हो सके
(ख) शीघ्रगामी औद्योगीकरण को प्रोत्साहित करना जिसमें प्रमुख महत्व आधारिक एवं भारी उद्योग पर हो
(ग) बेरोजगारी को शीघ्रातिशीघ्र समाप्त करने के लिए रोजगार के अवसरों में भारी विस्तार
(घ) आय एवं सम्पत्ति की असमानताओं को न्यून करना और आर्थिक शक्ति का न्यायोचित वितरण करना
(च) उपर्युक्त सभी

24. द्वितीय पंचवर्षीय योजना में कुल विनियोग राशि 7772 करोड़ रुपये रखी गयी। इसमें सार्वजनिक क्षेत्र के लिये विनियोग की राशि कितनी थी ?
(क) 4672 करोड़ रुपये
(ख) 4936 करोड़ रुपये
(ग) 5201 करोड़ रुपये
(घ) 5670 करोड़ रुपये

25. द्वितीय पंचवर्षीय योजना से निम्नांकित किस क्षेत्र को सर्वाधिक प्राथमिकता प्रदान की गयी ?
(क) कृषि एवं सम्बद्ध क्षेत्र
(ख) सिंचाई एवं शक्ति
(ग) उद्योग एवं खनिज
(घ) परिवहन एवं संचार

26. द्वितीय पंचवर्षीय योजना में शीघ्रगामी औद्योगीकरण तथा अर्थव्यवस्था के नानारूपकरण पर बल दिया गया। बताइए उद्योग एवं खनिज, तथा सिंचाई एवं संचार पर क्रमशः कितनी राशि विनियोजित की गयी ?
(क) 1125 तथा 1261 करोड़ रुपया
(ख) 549 तथा 855 करोड़ रुपया
(ग) 1009 तथा 1324 करोड़ रुपया
(घ) 1300 तथा 900 करोड़ रुपया

27. द्वितीय पंचवर्षीय योजना में सार्वजनिक क्षेत्र के लिये राशियों के अर्थ-प्रबन्ध में निम्नांकित में कौन सा क्रम सत्य है ?
(क) विदेशी सहायता, चालू राजस्व व अतिरिक्त कराधान, सार्वजनिक ऋण, अल्प बचत, सार्वजनिक उपक्रमों में बचत घाटे की व्यवस्था
(ख) चालू राजस्व व अतिरिक्त कराधान, विदेशी सहायता, घाटे की व्यवस्था, सार्वजनिक ऋण, अल्प बचत, जमा व विविध प्राप्तियां, सार्वजनिक उपक्रमों से बचत
(ग) चालू राजस्व व अतिरिक्त कराधान, सार्वजनिक ऋण, विदेशी सहायता, घाटे की व्यवस्था, अल्प व्यवस्था

28. द्वितीय पंचवर्षीय योजना में राष्ट्रीय आय की विकास दर का लक्ष्य 25 प्रतिशत निर्धारित किया गया था। इस दौरान राष्ट्रीय आय में कितने प्रतिशत की वृद्धि हुई ?
(क) 27 प्रतिशत (ख) 28 प्रतिशत
(ग) 20 प्रतिशत (घ) 22 प्रतिशत

29. क्या द्वितीय पंचवर्षीय योजना को उतनी ही आशातीत सफलता प्राप्त हुई जितनी कि प्रथम पंचवर्षीय योजना को प्राप्त हुई थी ?
(क) हाँ (ख) नहीं
(ग) दोनों योजनाओं को समान सफलता प्राप्त हुई
(घ) कुछ निश्चित नहीं कहा जा सकता

30. द्वितीय पंचवर्षीय योजना को पूर्व निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति में असफलता क्यों मिली ?
(क) इस योजना में प्राथमिकता कृषि से हटाकर उद्योग पर देने के लिये
(ख) जनसंख्या में तीव्र वृद्धि
(ग) स्फीतिकारी रीति, विशेषकर घाटे की व्यवस्था, से वित्तीय प्रबन्ध करना
(घ) विदेशी व्यापार की असफलता
(च) उपर्युक्त सभी

31. द्वितीय पंचवर्षीय योजना में उद्योग को उच्च प्राथमिकता प्रदान की गयी थी। औद्योगिक क्षेत्र में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगभग सम्पूर्ण व्यय निम्नांकित में से किन उद्योगों पर किया गया ?

(क) लोहा व इस्पात (ख) कोयला

(ग) उर्वरक (घ) विद्युत उपकरण

(च) भारी इन्जीनियरी के उपकरण

(छ) उपर्युक्त सभी

32. तृतीय पंचवर्षीय योजना (1960-61—1965-66) के प्रमुख उद्देश्य क्या थे ?

(क) राष्ट्रीय आय में 5 प्रतिशत वार्षिक वृद्धि प्राप्त करना और विनियोग की ऐसी संरचना निर्मित करना कि आगामी योजनाओं में भी इस विकास दर को जारी रखा जा सके

(ख) खाद्यानों में आत्मनिर्भरता प्राप्त करना, तथा उद्योग की जरूरतों को पूरा करने के लिये कृषि उत्पादन में वृद्धि करना

(ग) इस्पात, रसायन, ईंधन जैसे मूल उद्योगों का विस्तार करना और मशीन निर्माण की क्षमता में वृद्धि करना जिससे भावी औद्योगीकरण की जरूरतों को अगले दस वर्षों में देश के आन्तरिक साधनों द्वारा पूरा किया जा सके

(घ) देश की मानव शक्ति का अधिकतम सम्भव सीमा तक उपयोग करना तथा रोजगार के अवसरों का अधिकाधिक विस्तार करना

(च) समय के साथ-साथ अधिकाधिक मात्रा में जनता में समान अवसर उपलब्ध कराना तथा सम्पत्ति की असमानता को न्यून करना एवं आर्थिक शक्ति का अधिक न्यायसंगत वितरण करना

(छ) उपर्युक्त सभी

33. तृतीय पंचवर्षीय योजना में किस क्षेत्र को उच्च प्राथमिकता प्रदान की गयी ?

(क) कृषि एवं सिंचाई

(ख) संगठित उद्योग एवं खनिज

(ग) परिवहन एवं संचार

(घ) सामाजिक सेवाएं

(च) ग्राम एवं लघु उद्योग

34. तृतीय पंच वर्षीय योजना में सार्वजनिक क्षेत्र के लिये व्यय का सर्वाधिक अर्थ प्रबन्ध निम्नांकित में किससे किया गया था ?

(क) विदेशी सहायता (ख) घाटे की व्यवस्था

(ग) चालू राजस्व एवं अतिरिक्त कराधान

(घ) सार्वजनिक ऋण

35. तृतीय पंचवर्षीय योजना की कुल विनियोग राशि 10400 करोड़ रु.म सार्वजनिक क्षेत्र के लिये कितनी राशि का प्रावधान था ?

(क) 6424 करोड़ रुपये

(ख) 6939 करोड़ रुपये

(ग) 7125 करोड़ रुपये

(घ) 8577 करोड़ रुपये

36. तृतीय पंचवर्षीय योजना में कृषि उत्पादन औद्योगिक उत्पादन तथा राष्ट्रीय आय में क्रमशः 30 प्रतिशत, 70 प्रतिशत तथा 30 प्रतिशत वृद्धि का लक्ष्य निर्धारित किया गया था। क्या इस निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करने में सफलता मिली ?

(क) हाँ (ख) नहीं

(ग) काफी मात्रा में सफलता मिली

37. तृतीय पंचवर्षीय योजना में कृषि उत्पादन को बढ़ाने के लिये निम्नलिखित में किस पर बल प्रदान किया गया ?

(क) सिंचाई (ख) भूसंरक्षण

(ग) सूखी खेती एवं भूमि उद्धार

(घ) उर्वरकों की भरपूर आपूर्ति

(च) उच्च किस्म के कृषि उपकरण

(छ) उपर्युक्त सभी

38. तृतीय पंचवर्षीय योजना की असफलता का क्या प्रमुख कारण है ?

(क) अवास्तविक लक्ष्य निर्धारण

(ख) प्राकृतिक एवं वित्तीय साधनों में सन्तुलन का अभाव

(ग) स्वस्थ मूल्य नीति का अभाव

(घ) प्राकृतिक एवं राष्ट्रीय विपत्ति

(च) उपर्युक्त सभी

39. तृतीय पंचवर्षीय योजना के दौरान मुद्रास्फीति में तेजी से वृद्धि हुई। इसका क्या प्रमुख कारण नहीं है ?

(क) काफी मात्रा में अतिरिक्त अप्रत्यक्ष करारोपण

(ख) विदेशी व्यापार में सफलता

(ग) घाटे का वित्त प्रबन्ध

(घ) उत्पादन में कमी

40. प्रथम तीन पंचवर्षीय योजनाओं में से किस योजना में कुल विनियोग की राशि में निजी क्षेत्र का अंश सार्वजनिक क्षेत्र से अधिक था ?

(क) प्रथम (ख) द्वितीय

(ग) तृतीय (घ) द्वितीय एवं तृतीय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

41. योजना अवकाश, जिसके दौरान तीन वार्षिक योजनाओं की व्यवस्था की गयी, किस अवधि म लागू किया गया था ?
(क) 1965-66—1968-69
(ख) 1966-67—1968-69
(ग) 1965-66—1967-68
(घ) 1966-67—1969-70

42. निम्नलिखित में किन कारणों से चतुर्थ पंचवर्षीय योजना का पुनर्गठन आवश्यक हो जाने के कारण लगातार तीन वर्ष तक वार्षिक योजना का सहारा लिया गया ?
(क) 1962 एवं 1965 का युद्ध
(ख) 1965-66 एवं 1966-67 में लगातार कृषि उत्पादन में भयंकर कमी
(ग) द्वितीय व तृतीय पंचवर्षीय योजनाओं की असफलता
(घ) जून, 1966 में रुपये का अवमूल्यन
(च) उपर्युक्त सभी

43. इन तीन वार्षिक योजनाओं में सर्वाधिक व्यय निम्नलिखित में किसमें किया गया ?
(क) कृषि, सामुदायिक विकास एवं सहकारिता
(ख) परिवहन एवं संचार
(ग) संचालन शक्ति
(घ) संगठित उद्योग
(च) सामाजिक सेवाएं एवं विविध

44. किस वार्षिक योजना में पहली बार खाद्यान्नों के सुरक्षित भण्डार के निर्माण हेतु व्यय किया गया ?
(क) 1966-67 (ख) 1967-68
(ग) 1968-69 (घ) उपर्युक्त कोई भी नहीं

45. इन वार्षिक योजनाओं में सार्वजनिक क्षेत्र के व्यय (6626 करोड़ रुपये) की राशि का अर्थ-प्रबन्ध निम्न में से किससे सर्वाधिक हुआ ?
(क) सार्वजनिक ऋण (ख) कराधान
(ग) अल्प बचत (घ) विदेशी सहायता
(च) घाटे की अर्थ व्यवस्था

46. चौथी पंचवर्षीय योजना (1969-70—1973-74) का प्रमुख उद्देश्य क्या था ?
(क) राष्ट्रीय आय की $5\frac{1}{2}$ प्रतिशत वार्षिक विकास दर प्राप्त करना
(ख) आर्थिक स्थिरता और आत्मनिर्भरता प्राप्त करना
(ग) सामाजिक न्याय और समानता प्राप्त करना
(घ) आय की असमानताओं को न्यून करना
(च) राष्ट्रीय न्यूनतम रोजगार को प्राप्त करना
(छ) आर्थिक संस्थानों का पुनर्गठन करना
(ज) उपर्युक्त सभी

47. चौथी पंचवर्षीय योजना के कुल परिव्यय के 24882 करोड़ रुपये में कितना करोड़ रुपया सार्वजनिक क्षेत्र के हिस्से का था ?
(क) 13654 (ख) 14246
(ग) 15902 (घ) 16106

48. चौथी पंचवर्षीय योजना में उच्च प्राथमिकता निम्नलिखित में किसको प्रदान की गयी ?
(क) कृषि एवं सिंचाई
(ख) सचालन शक्ति
(ग) उद्योग एवं खनिज
(घ) परिवहन एवं संचार

49. निम्न में किस को पहली बार चौथी पंचवर्षीय योजना में काफी महत्व प्रदान किया गया ?
(क) स्वास्थ (ख) शिक्षा एवं वैज्ञानिक खोज
(ग) गृह निर्माण (घ) परिवार नियोजन

50 चौथी पंचवर्षीय योजना में व्यय की राशि के लिये अर्थ प्रबन्ध में विदेशी सहायता का कितना अंश रहा ?
(क) पिछली दो योजनाओं से बहुत कम
(ख) पिछली तीन योजनाओं से अधिक
(ग) स्फीतिकारी प्रवृत्ति को रोकने के लिये इस योजना में कोई विदेशी सहायता नहीं ली गयी

51. चौथी योजना काल में राष्ट्रीय आय, कृषि उत्पादन, औद्योगिक उत्पादन तथा निर्यात के लिये वार्षिक वृद्धि दर क्रमशः 5.5%, 5%, 8% से 10% तथा 7% निश्चित किया गया था। बताइए इन क्षेत्रों में औसत वार्षिक वृद्धि दर कितनी प्राप्त हुई ?
(क) 7 प्रतिशत, 2.6 प्रतिशत, 10 प्रतिशत तथा 9 प्रतिशत
(ख) 3 प्रतिशत, 6.5 प्रतिशत, 8 प्रतिशत तथा 11.3 प्रतिशत
(ग) 6 प्रतिशत, 7.5 प्रतिशत, 7.6 प्रतिशत तथा 10 प्रतिशत
(घ) 3.3 प्रतिशत, 1.6 प्रतिशत, 4.2 प्रतिशत तथा 13.1 प्रतिशत

52. चौथी पंचवर्षीय योजना में कृषि को उच्च प्राथमिकता प्रदान की गयी। इस दौरान कृषि उत्पादन को बढ़ाने के लिये निम्नलिखित में क्या किया गया ?
(क) बड़े पैमाने पर सिंचाई व्यवस्था का विस्तारण
(ख) उर्वरकों की समुचित आपूर्ति एवं उपयोग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(ग) फार्म मशीनरियों का प्रावधान
(घ) ग्रामीण क्षेत्रों में उदार ऋण व्यवस्था
(च) उच्च किस्म के बीजों की आपूर्ति एवं उपयोग
(छ) उपर्युक्त सभी

53. चौथी पंचवर्षीय योजना में औद्योगिक उत्पादन अत्यन्त निराशाजनक रहा। इसका क्या कारण था ?
(क) औद्योगिक उत्पादों की अपर्याप्त मांग
(ख) कच्चे माल, गोदाम एवं पुर्जों का अभाव एवं अनियमित संभरण
(ग) संचालन शक्ति का अभाव
(घ) परिवहन सम्बन्धी असुविधाएं
(च) अशान्त औद्योगिक सम्बन्ध
(छ) सार्वजनिक उद्यमों मे अकुशल प्रबन्ध
(ज) उपर्युक्त सभी

54. पांचवी पंचवर्षीय योजना (1974-75 — 1979-80 के प्रमुख उद्देश्य क्या थे ?
(क) कुल राष्ट्रीय उत्पाद में 5.5 प्रतिशत की वार्षिक वृद्धि
(ख) उत्पादक रोजगारों के अवसरों में वृद्धि
(ग) न्यूनतम आवश्यकताओं का एक राष्ट्रीय कार्यक्रम
(घ) सामाजिक कल्याण का विस्तृत कार्यक्रम
(च) कृषि क्षेत्र को भलीभांति विकसित करना
(छ) मूल उद्योगों एवं जनोपभोग के लिये वस्तुएं उत्पादन करने वाले उद्योगों पर जोर
(ज) गरीब जनता को उचित स्थिर मूल्यों पर अनिवार्य उपभोग की वस्तु उपलब्ध कराने के लिये एक पर्याप्त सरकारी वसूली तथा वितरण प्रणाली
(झ) सशक्त निर्यात प्रोत्साहन एवं आयात प्रतिस्थापन
(य) अनावश्यक उपभोग पर कठोर प्रतिबन्ध
(र) एक न्यायोचित मूल्य वेतन-आय नीति
(ल) उपयुक्त संस्थानात्मक, वित्तीय एवं अन्य उपायों की सहायता से सामाजिक, आर्थिक एवं क्षेत्रीय असमानताओं को न्यून करना
(व) उपर्युक्त सभी

55. पांचवीं पंचवर्षीय योजना में कुल परिव्यय का 69303 करोड़ रुपये में 39287 करोड़ रुपया सार्वजानक क्षेत्र पर व्यय किया गया। बताइए इस क्षेत्र में निम्नलिखित में किस पर सर्वाधिक अंश व्यय किया गया ?
(क) उद्योग एवं खनिज (ख) कृषि एवं सिंचाई
(ग) परिवहन एवं संचार (घ) सचालन शक्ति

56. पांचवीं पंचवर्षीय योजना में कुल परिव्यय का कितना प्रतिशत निजी क्षेत्र पर व्यय किया गया ?
(क) 37 (ख) 39
(ग) 43 (घ) 52

57. पांचवीं पंचवर्षीय योजना में निम्नांकित में किस पर सर्वाधिक बल दिया गया ?
(क) गरीबी उन्मूलन (ख) आत्मनिर्भरता
(ग) उपर्युक्त दोनों (घ) उपर्युक्त दोनों नहीं

58. पांचवीं पंचवर्षीय योजना में सार्वजनिक क्षेत्र पर परिव्यय की राशि का सर्वाधिक अंशका किस प्रकार अर्थ प्रबन्ध किया गया ?
(क) विदेशी सहायता (ख) बजट के साधन
(ग) घाटे की अर्थव्यवस्था (घ) उपर्युक्त सभी

59. पांचवीं पंचवर्षीय योजना में कृषि एवं औद्योगिक उत्पादन की वार्षिक वृद्धि दर क्रमशः 5.5 प्रतिशत तथा 7.1 से 9 प्रतिशत निर्धारित की गयी थी। बताइए इस योजना में औद्योगिक उत्पादन की औसत वार्षिक वृद्धि दर कितनी थी ?
(क) 2.5 तथा 5.2 प्रतिशत
(ख) 3.9 तथा 9.2 प्रतिशत
(ग) 3.5 तथा 7.5 प्रतिशत
(घ) 3.9 तथा 9.2 प्रतिशत

60. पांचवीं पंचवर्षीय योजना की अवधि मार्च, 1979 तक थी परन्तु इसको समय के पूर्व ही कब समाप्त कर दिया गया ?
(क) मार्च, 1977 (ख) मार्च, 1978
(ग) जून, 1978 (घ) मार्च, 1979

61. जनता सरकार द्वारा प्रारम्भ किये गये रोलिंग प्लान की क्या प्रमुख विशेषता थी ?
(क) यह एक वार्षिक योजना थी
(ख) इसमें समय तथा परिस्थितियों के अनुसार निर्धारित लक्ष्यों में परिवर्तन का प्रावधान था
(ग) यह केन्द्रीय बजट और राज्यों के बजट के साथ मिलकर कार्य करता था
(घ) इसे पंचवर्षीय योजना के ढांचे के अन्तर्गत कार्य करना था
(च) उपर्युक्त सभी

62. ड्राफ्ट पंचवर्षीय योजना का क्या कार्यकाल था ?
(क) 1977—82 (ख) 1978—83
(ग) 1979—84 (घ) उपर्युक्त कोई भी नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

63. ड्राफ्ट पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत किस वर्ष वार्षिक योजना को प्रस्तुत किया गया था ?

(क) 1977—78 (ख) 1978—79
(ग) 1979—80 (घ) 1980—80

64. ड्राफ्ट पंचवर्षीय योजना का क्या प्रमुख उद्देश्य था ?

(क) बेरोजगारी एवं अल्प रोजगारी की समाप्ति
(ख) समाज के गरीब वर्ग के जीवन स्तर में समुचित सुधार
(ग) गरीब आर्य वर्ग के लोगों को जीवन की मूल आवश्यकताओं को प्रदान करना
(घ) उपर्युक्त सभी

65. ड्राफ्ट पंचवर्षीय योजना में कुल विनियोग की राशि 116240 करोड़ रुपये निश्चित की गयी थी जबकि इसमें सार्वजनिक क्षेत्र का अंश 69380 करोड़ रुपये था। बताइए इस योजना में समग्र वार्षिक विकास दर कितनी निर्धारित की गयी थी ?

(क) 8% (ख) 4.7%
(ग) 5.6% (घ) 7%

66. ड्राफ्ट पंचवर्षीय योजना में निम्नांकित में किस पर उच्च प्राथमिकता प्रदान की गयी थी ?

(क) कृषि (ख) सिंचाई
(ग) संचालन शक्ति (घ) ऊर्जा
(च) सामाजिक सेवा

67. प्रथम पांच पंचवर्षीय योजना में से किस योजना में पूंजी-उत्पादन (Capital-output) अनुपात सर्वोत्तम था ?

(क) प्रथम (ख) द्वितीय
(ग) तृतीय (घ) चतुर्थ
(च) पंचम

68. प्रथम पांच पंचवर्षीय योजना में से किस योजना में राष्ट्रीय आय में लक्ष्य से बहुत अधिक वृद्धि दर प्राप्त हुई ?

(क) प्रथम (ख) द्वितीय
(ग) तृतीय (घ) चतुर्थ
(च) पंचम

69. छठी पंचवर्षीय योजना (1980-81—1984-85) ने क्या प्रमुख लक्ष्य निर्धारित किया है ?

(क) विकास दर में महत्वपूर्ण वृद्धि, संसाधनों के उपयोग में कुशलता एवं उनकी उत्पादकता को बढ़ाना
(ख) आर्थिक एवं तकनीकी आत्मनिर्भरता प्राप्त करने के लिये आधुनिकीकरण की प्रवृत्ति को बढ़ावा देना
(ग) गरीबी एवं बेरोजगारी के प्रभाव में उत्तरोत्तर कमी लाना
(घ) ऊर्जा के आन्तरिक संसाधनों का तीव्रगति से विकास करना
(च) न्यूनतम आवश्यकता कार्यक्रम द्वारा आर्थिक एवं सामाजिक दृष्टि से कमजोर वर्ग के सन्दर्भ में आम जनता के जीवन स्तर में सुधार लाना
(छ) आय और सम्पत्ति की असमानताओं को कम करने के लिये सार्वजनिक नीतियों एवं सेवाओं के पुनर्वितरक आधार को गरीबों के हितों में सशक्त करना
(ज) विकास दर और तकनीकी लाभों के प्रसार में क्षेत्रीय असमानताओं को न्यून करना
(झ) जनसंख्या की वृद्धि को कम करने के लिये छोटे परिवार के मानक को ऐच्छिक आधार पर लागू करना
(ञ) पारिस्थितिकीय एवं पर्यावरणीय परिसम्पत्तियों के संरक्षण और सुधार को बढ़ावा देकर विकास के अल्पकालिक एवं दीर्घकालिक लक्ष्यों के मध्य सामंजस्य स्थापित करना
(ट) उपयुक्त शिक्षा, संचार एवं संस्थागत कार्यविधियों द्वारा विकास प्रक्रिया में जनता के सभी वर्गों की सहभागिता को बढ़ावा देना
(ल) उपर्युक्त सभी

70. छठी पंचवर्षीय योजना में 177210 करोड़ रुपये के कुल परिव्यय में सार्वजनिक और निजी क्षेत्रों पर व्यय की राशि क्रमशः 97500 एवं 74710 करोड़ रुपया है। बताइये दोनों के मध्य क्या अनुपात है ?

(क) 55 प्रतिशत, 45 प्रतिशत
(ख) 60 प्रतिशत, 40 प्रतिशत
(ग) 56.6 प्रतिशत, 43.4 प्रतिशत
(घ) 53.7 प्रतिशत, 45.3 प्रतिशत

71. छठी पंचवर्षीय योजना में सार्वजनिक क्षेत्र में व्यय का सर्वाधिक वित्त-प्रबन्ध निम्न में किससे होगा ?

(क) चालू राजस्व से आधिक्य
(ख) सार्वजनिक ऋण
(ग) अतिरिक्त कराधान
(घ) विदेशी सहायता
(च) घाटे की वित्त व्यवस्था

72. सार्वजनिक क्षेत्र के कुल परिव्यय में उच्च प्राथमिकता ऊर्जा, विज्ञान, एवं तकनीकी, तथा उनकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाढ़ कृषि सम्बद्ध क्रियाओं, सिंचाई एवं बाढ़ नियंत्रण को प्रदान किया गया। बताइए इन दोनों क्षेत्रों पर कुल परिव्यय का क्रमशः कितना प्रतिशत व्यय किया जायेगा ?

(क) 23.6 प्रतिशत तथा 21.2 प्रतिशत
(ख) 29 9 प्रतिशत तथा 24.5 प्रतिशत
(ग) 31.2 प्रतिशत तथा 28.1 प्रतिशत
(घ) 28.1 प्रतिशत तथा 25.4 प्रतिशत

73. छठी पंचवर्षीय योजना में राष्ट्रीय आय की वार्षिक वृद्धि दर 5.2% निर्धारित की गयी है। बताइये इस दौरान प्रति व्यक्ति आय की वार्षिक दर कितनी निर्धारित की गयी ?

(क) 5.5 प्रतिशत (ख) 2 प्रतिशत
(ग) 3.8 प्रतिशत (घ) 4.3 प्रतिशत

74. छठी पंचवर्षीय योजना के परिव्यय में विदेशी सहायता से कितनी राशि का अर्थ-प्रबन्ध किया जायेगा ?

(क) 5889 करोड़ रुपये
(ख) 9928 करोड़ रुपये
(ग) 6443 करोड़ रुपये
(घ) 9395 करोड़ रुपये

75. विकासगत समस्याओं के निदान हेतु छठी पंचवर्षीय योजना का निर्माण दीर्घकालीन परिप्रेक्ष्य में किया गया है। इस दृष्टि से यह निर्दिष्ट वर्ष कौन सा है ?

(क) 1989-90 (ख) 1990-92
(ग) 1995-96 (घ) 1999-2200

76. छठी पंचवर्षीय योजना के अन्त तक गरीबी की रेखा के नीचे की जनसंख्या (1980 में 48 प्रतिशत) कुल जनसंख्या का कितना प्रतिशत हो जायेगी ?

(क) 45 प्रतिशत (ख) 42 प्रतिशत
(ग) 38.9 प्रतिशत (घ) 30 प्रतिशत

77. ग्राम और लघु उद्योगों के माध्यम से ग्रामीण कारीगरों की सहायता करने के लिये निम्न में से कौन कार्यक्रम छठी पंचवर्षीय योजना के दौरान आयोजित किये जायेंगे ?

(क) इण्डस्ट्रियल इस्टेट प्रोग्राम (I.E.P.)
(ख) ऑन्ट्रप्रनःर (Entrepreneur) डेवेलपमेन्ट प्रोग्राम (E.D.P.)
(ग) ट्रेनिंग ऑव रूरल यूथ फॉर सेल्फ एम्प्लॉयमेन्ट (Trysem)
(घ) उपर्युक्त सभी

78. छोटे किसानों एवं जनों की सहायता के लिये छठी पंचवर्षीय योजना के दौरान निम्नलिखित में कौन कार्यक्रम प्रायोजित किये जायेंगे ?

(क) ड्राईलैण्ड फारमर्स प्रोग्राम (DFP)
(ख) इन्टेन्सिव फॉरेस्ट्री डेवेलपमेन्ट प्रोग्राम (IFDP)
(ग) इनलैण्ड एण्ड कोस्टल एक्वाकल्चर प्रोग्राम (ICAP)
(घ) डेरी, पोल्ट्री एवं पशुपालन सम्बन्धित कार्यक्रम
(च) उपर्युक्त सभी

79. "काम के बदले अनाज" कार्यक्रम का नाम छठी पंचवर्षीय योजना में परिवर्तित कर 'राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार कार्यक्रम' रखा गया है। इस कार्यक्रम में आधा-आधा योगदान केन्द्र एवं राज्यों का होगा। इस कार्यक्रम से कितने ग्रामीण परिवार लाभान्वित होंगे ?

(क) 10 लाख (ख) 15 लाख
(ग) 25 लाख (घ) 30 लाख

80. छठी पंचवर्षीय योजना में पांचवीं पंचवर्षीय योजना में प्रवर्तित न्यूनतम आवश्यकता प्रोग्राम (Minimum Needs Programme) को तीव्र गति से आगे बढ़ाया जायेगा। बताइये यह कार्यक्रम निम्न में किससे सम्बन्धित है ?

(क) प्राथमिक शिक्षा
(ख) ग्रामीण स्वास्थ
(ग) ग्रामीण जल आपूर्ति
(घ) ग्रामीण सड़क
(च) ग्रामीण विद्युतीकरण
(छ) ग्रामीण बेघरों को आवास
(द) शहरी गन्दी बस्तियों के पर्यावरण में सुधार
(ध) पोषण
(न) उपर्युक्त सभी

81. छठी पंचवर्षीय योजना के दौरान समन्वित ग्राम विकास कार्यक्रम (IRDP) से कितने परिवारों के लाभान्वित होने की आशा है ?

(क) 1.7.5 लाख (ख) 75 लाख
(ग) 4.5 करोड़ (घ) 7.5 करोड़

82. छठी पंचवर्षीय योजना के दौरान निर्यात की वृद्धि के लिये कौन से कदम उठाने का निश्चय किया गया है ?

(क) आयात पर लगे उन प्रतिबन्धों को हटाना जिससे निर्यात को भुगतना पड़ता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(ख) निर्यात की क्षमता को बढ़ाने के मार्ग में आने वाले प्रतिबन्धों को दूर करना

(ग) निर्यातकों को करारोपण तथा अन्य भौतिक प्रतिबन्धों से छूट प्रदान कर अधिकाधिक नकदी तथा अन्य प्रकार से मुआवजा देना

(घ) निर्यात, तथा निर्यात के लिये उत्पादन पर राजकीय नियन्त्रण को कम करना

(च) तकनीकी विकास की दिशा में समुचित ध्यान देना

(छ) उपर्युक्त सभी

83. छठी पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत सम्पूर्ण खाद्यान्न उत्पादन का वार्षिक लक्ष्य कितना निर्धारित किया गया है ?

(क) 135 लाख टन (ख) 140 लाख टन
(ग) 148 लाख टन (घ) 150 लाख टन

84. छठी पंचवर्षीय योजना में सार्वजनिक क्षेत्र हेतु निर्धारित कुल परिव्यय केन्द्र, राज्यों तथा केन्द्र शासित प्रदेशों में क्रमशः विभाजित धनराशि (करोड़ रुपये में) का सही क्रम—

(क) 47250, 48600, 1650
(ख) 53160, 43080, 1260
(ग) 59750, 47125, 625
(घ) 48400, 47400, 1700

85. छठी पंचवर्षीय योजना को अत्यधिक महत्वाकांक्षी बताया गया है। इस योजना में परिव्यय की राशि पिछली पांच पंचवर्षीय योजनाओं के कुल परिव्यय से कितनी प्रतिशत अधिक है ?

(क) 27 प्रतिशत (ख) 32 प्रतिशत
(ग) 47 प्रतिशत (घ) 42 प्रतिशत

86. छठी पंचवर्षीय योजना ने प्रति व्यक्ति आय की क्या वार्षिक वृद्धि दर निर्धारित की है ?

(क) 5 प्रतिशत (ख) 3.3 प्रतिशत
(ग) 4.2 प्रतिशत (घ) 5.6 प्रतिशत

87. छठी पंचवर्षीय योजना के उच्च प्राथमिकता वाले क्षेत्र ऊर्जा, विज्ञान एवं तकनीकी पर 27000 करोड़ रुपये का व्यय निर्धारित किया गया। बताइए निम्नलिखित में किस पर सर्वाधिक राशि व्यय की जायेगी ?

(क) विद्युत (ख) पेट्रोलियम
(ग) कोयला (घ) विज्ञान एवं टेक्नोलॉजी

88. छठी पंचवर्षीय योजना में सामाजिक सेवाओं के अन्तर्गत परिव्यय की राशि 14838 करोड़ रुपये निर्धारित की गयी है। बताइए सामाजिक सेवाओं के उपान्तर्गत निम्नलिखित क्षेत्रों, जिनके साथ कोष्टकों में परिव्यय की राशि भी अंकित है, के सम्बन्ध में कौन असत्य है ?

(क) शिक्षा (2524 करोड़ रुपये)

(ख) स्वास्थ एवं परिवार कल्याण (2831 करोड़ रुपये)

(ग) आवास एवं शहरी विकास (2488 करोड़ रुपये)

(घ) जल आपूर्ति एवं स्वच्छता (3922 करोड़ रु.)

(च) सामाजिक कल्याण, पोषक एवं श्रमिक कल्याण (3075 करोड़ रु)

(छ) उपर्युक्त सभी सत्य (ज) उपर्युक्त सभी असत्य

89. छठी पंचवर्षीय योजना में रोजगार के अवसरों में 4.17 प्रतिशत की वार्षिक वृद्धि होगी। बताइए इससे सम्पूर्ण योजनाकाल में कितने लोग बेरोजगारी से मुक्ति पायेंगे ?

(क) 1.36 करोड़ (ख) 2.75 करोड़
(ग) 3.43 करोड़ (घ) 4.75 करोड़

90. छठी पंचवर्षीय योजना के अन्त तक सम्पूर्ण विद्युत उत्पादन (वर्ष 1979-80 में 112 बिलियन के. डब्लू. एच.) कितने बिलियन के. डब्लू. एच. होने की आशा है ?

(क) 137 (ख) 153
(ग) 175 (घ) 191

91. भारत में वित्तीय वर्ष कब प्रारम्भ होता है और कब समाप्त होता है ?

(क) 1 जनवरी से 31 दिसम्बर

(ख) 1 अप्रैल से 31 मार्च

(ग) 1 जुलाई से 30 जून

(घ) 1 अगस्त से 31 जुलाई

92. रेलवे बजट एवं आम बजट लोक सभा में क्रमशः रेलवे मन्त्री एवं वित्त मन्त्री पेश करते हैं। यह बताइए दोनों में कौन सा बजट पहले पेश किया जाता है ?

(क) रेल बजट (ख) आम बजट

(ग) दोनों एक साथ

93. आम बजट में उल्लिखित किस मुद्दे पर संसद में कोई वाद-विवाद नहीं किया जा सकता है ?

(क) घाटे की व्यवस्था

(ख) संचित निधि पर आधारित व्यय

(ग) आकस्मिकता निधि पर आधारित व्यय

(घ) उपर्युक्त सभी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

94. वर्ष 1982-83 के रेल बजट में 109.79 करोड़ रुपये का लाभ दिखाया गया। वर्ष 1983-84 के प्रस्तावित बजट में बचत की कितनी राशि दिखाई गयी है ?

(क) 125.25 करोड़ रुपये
(ख) 142.3 करोड़ रुपये
(ग) 189.72 करोड़ रुपये
(घ) 205.73 करोड़ रुपये

95. वर्ष 1982-83 के रेलवे बजट में यात्री किरायों में एवं माल भाड़े में वृद्धि के फलस्वरूप 261.45 करोड़ रुपये की प्राप्ति हुई। बताइए वर्ष 1983-84 के प्रस्तावित बजट में इस प्रकार कितने करोड़ रुपये की आय होने का अनुमान है ?

(क) 498 करोड़ रुपये (ख) 502 करोड़ रुपये
(ग) 489 करोड़ रुपये (घ) 398 करोड़ रुपये

96. वर्ष 1982-83 के आम बजट में 1365 करोड़ रुपये के घाटे का प्रावधान था। बताइए कि वर्ष 1983-84 के प्रस्तावित आम बजट में कितने करोड़ रुपये का घाटा दिखाया गया है ?

(क) 1555 (ख) 1624
(ग) 1700 (घ) 1903

97. वर्ष 1982-83 के आम बजट में 533 करोड़ रुपये का नया करारोपण किया गया था। वर्ष 1983-84 के प्रस्तावित आम बजट में 820 करोड़ रुपये के नये कर का प्रस्ताव है। यह राजस्व निम्न में से किससे नहीं प्राप्त होगा ?

(क) सीमा शुल्क से (ख) उत्पादन शुल्क से
(ग) कम्पनियों के आयकर से (घ) निगम कर से

98. वर्ष 1982-83 के आम बजट के कुल परिव्यय का 39 प्रतिशत छठी पंचवर्षीय योजना पर, 19 प्रतिशत अन्य विकास कार्यों पर, 17 प्रतिशत रक्षा पर, 13 प्रतिशत ब्याज की अदायगी पर, 4 प्रतिशत सांविधिक तथा अन्य हस्तान्तरणीयों पर, तथा 8 प्रतिशत अन्य पर व्यय हुआ। बताइए कि वर्ष 1983-84 के प्रस्तावित आम बजट में यह क्रमशः कितना कितना प्रतिशत है ?

(क) 37 प्रतिशत, 20 प्रतिशत, 17 प्रतिशत, 14 प्रतिशत, 4 प्रतिशत तथा 8 प्रतिशत
(ख) 35 प्रतिशत, 18 प्रतिशत, 21 प्रतिशत, 15 प्रतिशत, 3 प्रतिशत तथा 8 प्रतिशत
(ग) 40 प्रतिशत, 21 प्रतिशत, 16 प्रतिशत, 14 प्रतिशत, 3 प्रतिशत तथा 6 प्रतिशत

99. वर्ष 1982-83 के आम बजट में योजना परिव्यय के लिये 20989 करोड़ (संशोधित) रुपये का प्रावधान था। वर्ष 1983-84 के प्रस्तावित आम बजट में इसके लिये कितने रुपये का परिव्यय निर्धारित किया गया है ?

(क) 21137 करोड़ रुपये
(ख) 22445 करोड़ रुपये
(ग) 25495 करोड़ रुपये
(घ) 27179 करोड़ रुपये

100. वर्ष 1982-83 के आम बजट की कुल आय का 17 प्रतिशत उत्पाद शुल्क से, 17 प्रतिशत सीमा शुल्क से, 8 प्रतिशत निगम कर से, 2 प्रतिशत आय कर से, 9 प्रतिशत उधार की वसूली से, 14 प्रतिशत कर भिन्न राजस्व से, 20 प्रतिशत बाण्ड बचत आदि से, 5 प्रतिशत विदेशी ऋण से तथा 1 प्रतिशत अन्य प्राप्तियों से तथा 4 प्रतिशत घाटे से प्राप्त हुआ। वर्ष 1983-84 के प्रस्तावित आम बजट में यह क्रमशः कितना प्रतिशत है ?

(क) 17 प्रतिशत, 17 प्रतिशत, 6 प्रतिशत, 3 प्रतिशत, 10 प्रतिशत, 15 प्रतिशत, 19 प्रतिशत, 3 प्रतिशत 2 प्रतिशत, तथा 4 प्रतिशत
(ख) 17 प्रतिशत, 17 प्रतिशत, 7 प्रतिशत 2 प्रतिशत, 9 प्रतिशत, 15 प्रतिशत, 20 प्रतिशत, 5 प्रतिशत, 2 प्रतिशत तथा 5 प्रतिशत

101. वर्ष 1983-84 के प्रस्तावित आम बजट का मुख्य लक्ष्य क्या है ?

(क) उत्पादक शक्तियों को मजबूत करना
(ख) मुद्रास्फीति पर नियन्त्रण बनाये रखना
(ग) निजी एवं कम्पनी, दोनों क्षेत्रों में बचत को बढ़ावा देना
(घ) आवश्यक पूंजी निवेश को प्रोत्साहित करना
(च) उपर्युक्त सभी

102. भारत में उद्योगों के धीमे विकास का क्या कारण नहीं है ?

(क) औद्योगिक पूंजी का अभाव
(ख) शक्ति के साधनों की कमी
(ग) आधुनिक मशीनों एवं तकनीकी विशेषज्ञों का अभाव
(घ) लोगों में पहलकम एवं साहस का अभाव
(च) प्रतिकूल सामाजिक वातावरण
(छ) विदेशी निगमों का दुष्चक्र
(ज) परिवहन एवं संचार के अत्याधुनिक साधनों का अभाव

103. मार्च, 1980 में घोषित औद्योगिक नीति के अनुसार निम्नांकित में क्या सत्य है ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(क) सार्वजनिक क्षेत्र की उन्नति करना तथा विद्यमान सार्वजनिक उपक्रमों की कार्यक्षमता में वृद्धि करना, एवं प्रबन्धकीय व्यवस्था अपनाना

(ख) एकाधिपत्य प्रवृत्ति की सम्भावना पर रोक लगाते हुए राष्ट्रीय योजनाओं एवं नीतियों के अन्तर्गत निजी उद्योग को विकास का मौका देना

(ग) लघु उद्योगों के विकास के लिये सरकारी सहायता

(घ) सभी उद्योगों को स्वतः विकास की अनुमति

(च) निर्यात में वृद्धि को दृष्टि में रखते हुए उद्योगों को आधुनिकतम तकनीकी अपनाने की अनुमति

(छ) क्षेत्रीय सन्तुलन के लिये पिछड़े क्षेत्रों में उद्योगों की स्थापना

(ज) बीमार औद्योगिक इकाईयों का सुदृढ इकाईयों के साथ विलय तथा विशेष परिस्थितियों में स्वयं सरकार द्वारा अधिग्रहण

(झ) उपर्युक्त सभी

104. औद्योगिक नीति के अनुसार लघु उद्योग के विकास के लिये पूंजी की सीमा कितनी निश्चित की गयी है ?

(क) 10 लाख रु. (ख) 20 लाख रु.

(ग) 60 लाख रु. (घ) 1 करोड़ रु.

105. लघु एवं कुटीर उद्योग में क्या प्रमुख अन्तर है ?

(क) लघु उद्योग श्रमिकों की सहायता से मुख्य जीविका के रूप में चलाये जाते हैं जबकि कुटीर उद्योग सामान्यत पारिवारिक सदस्यों द्वारा पूर्णकालीन या अल्पकालीन जीविका के रूप में

(ख) लघु उद्योग में लाखों रुपये का विनियोग होता है जबकि कुटीर उद्योग में पूंजी निवेश की मात्रा न्यून होती है

(ग) सामान्यतः लघु उद्योग में यान्त्रिक क्रिया की प्रधानता होती है जबकि कुटीर उद्योग में हस्तक्रिया की

(घ) लघु उद्योग एक विस्तृत क्षेत्र की मांग की पूर्ति करता है जबकि कुटीर उद्योग स्थानीय, प्राथमिक एवं कुशलता का उपयोग कर परम्परागत वस्तुओं का निर्माण करता और सामान्यतः स्थानीय मांग की पूर्ति करता है

(च) उपर्युक्त सभी

106 भारतीय अर्थ व्यवस्था को लघु एवं कुटीर उद्योगों से क्या लाभ है ?

(क) बेरोजगारी एवं अर्द्ध बेरोजगारी में कमी

(ख) कृषि पर आश्रित जनसंख्या में कमी

(ग आय के समान वितरण में सहायक

(घ) बृहत उद्योगों के लिये सहायक

(च) औद्योगिक विकेन्द्रीकरण

(छ) उपर्युक्त सभी

107. सार्वजनिक उद्यमों के सम्बन्ध में क्या सत्य है ?

(क) इन उद्यमों पर स्वामित्व पूर्णयता सरकार, चाहे वे संघीय या राज्य, का होता है या सरकार अधिकांश अंशपूंजी पर नियन्त्रण रखती है

(ख) सरकार इन उद्यमों का संचालन एवं नियन्त्रण करती है

(ग) यह वस्तुओं एवं सेवाओं की बिक्री करती है

(घ) यह निजी उद्योगों की भांति अपना कार्य करती है

(च) उपर्युक्त सभी सत्य

108. भारत में सार्वजनिक उद्यमों की स्थापना के क्या उद्देश्य रहे हैं ?

(क) योजनाबद्ध विकास

(ख) क्षेत्रीय व आय में असमानता न्यून करना

(ग) एकाधिपत्य की प्रवृत्ति को रोकना

(घ) तकनीकी क्षेत्र में आत्मनिर्भरता प्राप्त करना

(च) भावी विकास के लिये वित्तीय साधन एकत्र करना

(छ) वस्तुओं के अभाव को अधिकतम उत्पादन एवं समुचित वितरण व्यवस्था की सहायता से दूर करना

(ज) राष्ट्रीय महत्व की, जैसे सुरक्षा सम्बन्धित वस्तुओं का उत्पादन

(झ) उपर्युक्त सभी

109. भारतीय अर्थ व्यवस्था में सार्वजनिक उद्यमों का निम्नांकित में किसमें योगदान है ?

(क) राष्ट्रीय आय में वृद्धि

(ख) रोजगार के अवसरों में वृद्धि

(ग) आत्मनिर्भरता की प्राप्ति में

(घ) निर्यात में वृद्धि

(च) आधारभूत एवं पूंजीगत उद्योगों का विकास

(छ) पिछड़े क्षेत्रों का विकास

(ज) लघु एवं सहायक उद्योगों का विकास, तथा बीमार इकाईयों का पुनर्वास

(झ) उपर्युक्त सभी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

110. सार्वजनिक उद्यमों में लाभ [illegible] होने का क्या कारण है ?
(क) किसी भी कार्य को पूर्वनिर्धारित समय के अन्दर न करना
(ख) क्षमता का अपूर्ण उपयोग
(ग) अधिक ऊपरी व्यय
(घ) आवश्यकता से अधिक श्रम शक्ति का उपयोग
(च) न लाभ और न हानि की मूल्य नीति
(छ) श्रम अनुशासनहीनता
(ज) उपर्युक्त सभी

111. भारत में लगभग 75 प्रतिशत आर्थिक कार्यकलाप निजी क्षेत्र में होते हैं। फिर भी निजी उद्यमों के कार्यक्षेत्रों पर अनेक प्रतिबन्ध हैं। बताइए निम्न में किसको निजी उद्यमों के लिये छोड़ दिया गया है ?
(क) सुरक्षा उपकरण (ख) उपयोग वस्तुएं
(ग) रेलवे (घ) डाकतार

112. भारत में निजी क्षेत्र की इकाईयां निम्न में से किन समस्याओं से ग्रस्त हैं ?
(क) वित्त व्यवस्था
(ख) औद्योगिक रुग्णता
(ग) प्रतिकूल औद्योगिक सम्बन्ध
(घ) एकाधिपत्य एवं सत्ता का केन्द्रीकरण
(च) अपर्याप्त सहभागिता
(छ) उपर्युक्त सभी

113. एकाधिकारी एवं प्रतिबन्धात्मक व्यापारिक व्यवहार अधिनियम (MRTPC) निजी उद्यमों द्वारा आर्थिक सत्ता के केन्द्रीकरण पर रोक लगाता है। यह अधिनियम केवल एक निश्चित मात्रा के सम्पत्ति वाले निजी उद्यम पर लागू होता है। यह निश्चित सीमा क्या है ?
(क) 5 करोड़ रु. या अधिक
(ख) 10 करोड़ रु. या अधिक
(ग) 20 करोड़ रु. या अधिक
(घ) 50 करोड़ रु. या अधिक

114. निम्नलिखित में भारत में औद्योगिक वित्त प्रदान करने वाली संस्थाएं कौन हैं ?
(क) भारतीय औद्योगिक वित्त निगम
(ख) राज्य वित्त निगम
(ग) भारतीय औद्योगिक विकास बैंक
(घ) औद्योगिक साख एवं विनियोग निगम
(च) यूनिट ट्रस्ट ऑफ इण्डिया
(छ) राष्ट्रीय औद्योगिक विकास निगम
(ज) उपर्युक्त सभी

115. भारत में पाये जाने वाली बेरोजगारी निम्न में किस प्रकार की है ?
(क) पूर्ण बेरोजगारी
(ख) मौसमी बेरोजगारी
(ग) अदृश्य बेरोजगारी
(घ) औद्योगिक बेरोजगारी
(च) शिक्षित बेरोजगारी
(छ) उपर्युक्त सभी

116. भारत में बेरोजगारी का प्रमुख कारण क्या है ?
(क) जनसंख्या में तीव्र गति से वृद्धि
(ख) दोषपूर्ण शिक्षा प्रणाली
(ग) आर्थिक एवं औद्योगिक विकास की मन्द गति
(घ) जनसंख्या का असन्तुलित व्यावसायिक वितरण
(च) जनता की गिरती हुई क्रय शक्ति
(छ) कृषि पर अत्यधिक निर्भरता
(ज) लागत-व्यय एवं मूल्य के मध्य सामंजस्य का अभाव
(झ) श्रमिकों में गतिशीलता की कमी
(य) उपर्युक्त सभी

117. भारत में औद्योगिक संघर्ष के प्रमुख कारण क्या हैं ?
(क) कम मजदूरी
(ख) बोनस व मंहगाई भत्ता
(ग) श्रमिकों की छटनी
(घ) मालिकों एवं प्रबन्धकों का असहृदयतापूर्ण दृष्टिकोण
(च) काम करने का निर्धारित समय
(छ) काम की दशा (ज) श्रमिक संघ
(झ) उपर्युक्त सभी

118. भारत में औद्योगिक संघर्ष को सुलझाने के निमित्त औद्योगिक संघर्ष एक्ट कब पारित हुआ ?
(क) 1949 (ख) 1956
(ग) 1962 (घ) 1977

119. भारतीय अर्थव्यवस्था को क्यों मिश्रित अर्थ-व्यवस्था कहा जाता है ?
(क) इसमें पूंजीवादी एवं समाजवादी दोनों नीतियों का पालन किया जाता है
(ख) इसमें सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्र के विकास और विस्तार का समान अवसर है
(ग) इसमें कृषि एवं उद्योग को समान प्राथमिकता प्रदान की गयी है
(घ) उपर्युक्त सभी

120. रुपये का प्रथम अवमूल्यन वर्ष 1949 में 30.5 प्रतिशत किया गया था। बताइए रुपये का द्वितीय अवमूल्यन, जो कि 57 प्रतिशत था, किस वर्ष किया गया था ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(क) 1956 (ख) 1962
(ग) 1966 (घ) 1972

121. राष्ट्रीय आय के सम्बन्ध में निम्नांकित कौन सा कथन सत्य है ?
(क) यह राष्ट्रीय सम्पत्ति के समान होती है
(ख) यह दूसरे देशों से सेवाओं के माध्यम से प्राप्त आय है
(ग) यह आयात-निर्यात से हुए लाभ के समान होती है
(घ) कुल राष्ट्रीय आय, राष्ट्रीय आय, मूल्य ह्रास एवं अप्रत्यक्ष कर योग है
(च) कुल राष्ट्रीय आय एवं नियत राष्ट्रीय आय में कोई अन्तर नहीं है

122. निर्यात संवर्द्धन का क्या अर्थ है ?
(क) वे सभी उपाय, जो व्यापार शेष को कम करते है
(ख) वे सभी उपाय, जो निर्यात में वृद्धि करते है
(ग) वे सभी उपाय, जो आयात को कम करते हैं
(घ) वे सभी उपाय, जो आयात-निर्यात दोनों को बढ़ाते है

प्रश्न 123-128 के स्तम्भ I में सम्बन्धित विषयों का अर्थ पूछा जा रहा हैं। उत्तर स्तम्भ II में दिये गए उत्तरों का प्रश्नों से सही सम्बन्ध खोजिए ?

I	II
123. घाटे का बजट	(क) सरकारी आय सरकारी व्यय से अधिक हो
124. मुद्रा स्फीति	(ख) जब मुद्रा की पूर्ति में वृद्धि हो
125. अतिरेक बजट	(ग) जब कीमतें गिरने लगे
126. मुद्रा अवस्फीति	(घ) सरकारी आय सरकारी व्यय से कम हो
127. प्रत्यक्ष कर	(च) जब मुद्रा की पूर्ति में वृद्धि और कीमतों में गिरावट आये
128. सन्तुलित बजट	(छ) जब सरकारी आय-व्यय समान हो
	(ज) जब सरकारी व्यय गैर सरकारी व्यय से कम हो
	(झ) जो कभी कभी उत्पन्न होने वाले अवसरों पर लगाया जाता है
	(य) जब किसी कर का कराघात एवं करापात एक ही व्यक्ति पर पड़ता है

129. रिजर्व बैंक का निम्नांकित में कौन सा कार्य नहीं है ?
(क) विभिन्न मूल्य वर्गों के नोट जारी करना
(ख) संघीय एवं राज्यीय सरकार तथा विभिन्न बैंकों के बैंकर के रूप में कार्य करना
(ग) वित्त मन्त्री को सलाह देना
(घ) औपचारिक विनिमय दर स्थिर बनाये रखना
(च) वाणिज्यिक बैंकों के खातों का परीक्षण करना
(छ) आकलन के नियन्त्रक का कार्य करना

130. भारत में प्रत्यक्ष करों की तुलना में अप्रत्यक्ष कर के सम्बन्ध में क्या सत्य है ?
(क) तेजी से बढ़ रहा है
(ख) तेजी से घट रहा है
(ग) दोनो समान तेजी से बढ़ रहे हैं
(घ) उपर्युक्त सभी असत्य

131. नवस्थापित आयात निर्यात बैंक (Exim Bank) के सम्बन्ध में क्या असत्य है ?
(क) यह वस्तुओं के आयात-निर्यात की व्यवस्था करता है
(ख) यह विदेशों से ऋण की व्यवस्था करता है
(ग) यह घरेलू बाजार से धन उगाहता है
(घ) यह रिजर्व बैंक ऑव इण्डिया, आई. डी. बी. आई. तथा वाणिज्यिक बैंकों का प्रतिनिधि है

132. यह जनसाधारण से धन की जमापूर्ति स्वीकारता है। वर्ष 1981-82 में राष्ट्रीय आय स्थिर मूल्य पर (1970-71 आधार वर्ष) तथा वर्तमान मूल्य पर क्रमशः 49,687 करोड़ रुपये तथा 121,243 करोड़ रुपये थी। यह बताइए इस वर्ष राष्ट्रीय आय की वृद्धि दर कितनी थी ?
(क) 14 प्रतिशत (ख) 11 प्रतिशत
(ग) 5.2 प्रतिशत (घ) 12 प्रतिशत

133. वर्ष 1981-82 में प्रति व्यक्ति आय स्थिर मूल्य पर (1970-71 आधार वर्ष) तथा वर्तमान मूल्य पर क्रमशः 720 रुपये तथा 1750 रुपये थी। बताइए इस वर्ष प्रति व्यक्ति आय की वृद्धि कितनी थी ?
(क) 5 प्रतिशत (ख) 1.5 प्रतिशत
(ग) 2 प्रतिशत (घ) 4 प्रतिशत

134. वर्ष 1982 के अन्त तक भारत पर कुल कितने करोड़ रुपये (अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष के ऋण को लेकर) के ऋण का बोझा है ?
(क) 25672 (ख) 28230
(ग) 29033 (घ) 34797

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

135. छठी पंचवर्षीय योजना में वार्षिक विकास दर 5.2% निर्धारित की गयी। इस योजना के प्रथम दो वर्षों में (1980-81 व 1981-82) में विकास दर कितनी थी ?

(क) 6 प्रतिशत, 3.9 प्रतिशत

(ख) 4.6 प्रतिशत, 4 प्रतिशत

(ग) 8.4 प्रतिशत, 5 प्रतिशत

(घ) 7.7 प्रतिशत, 4.5 प्रतिशत

136. निम्नलिखित में किस राज्य ने कृषि आय कर लगाया है ?

(क) असम (ख) कर्नाटक

(ग) केरल (घ) महाराष्ट्र

(च) तमिलनाडु (छ) त्रिपुरा

(ज) प. बंगाल (झ) उपर्युक्त सभी

137. वर्ष 1982-83 की आयात-निर्यात नीति में किन मुद्दों पर बल दिया गया ?

(क) उत्पादन में वृद्धि तथा उत्पादकता में सुधार लाने हेतु उद्योगों, विशेषकर लघु उद्योगों की निवेश की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु सुगम एवं नियमित सुविधाएं प्रदान करना

(ख) निर्यातकों तथा, उन उत्पादक इकाईयों, जो काफी मात्रा में निर्यात करती हैं, को प्रोत्साहन

(ग) लाइसेंस की औपचारिका समाप्त कर या उन्हे कम कर तथा प्रक्रिया को सरल बनाकर निश्चित समय के भीतर सम्पूर्ण कार्य करना

(घ) उत्पादकता को बढ़ाने, ऊर्जा के संचय एवं परिव्यय में कटौती को ध्यान में रखते हुए तकनीकी के समुन्नय का समर्थन करना

(च) देशी उद्योग को निश्चित उपायों द्वारा बल प्रदान कर आत्मनिर्भरता प्राप्त करना

(छ) उपर्युक्त सभी सत्य

138. टण्डन समिति ने भारत में फ्री ट्रेड जोन की स्थापना में क्या सुझाव दिया है ?

(क) भारत में फ्री ट्रेड जोन की संख्या को बढ़ाया जाये

(ख) फ्री ट्रेड जोन के औद्योगिक इकाईयों को वर्तमान 5 के स्थान पर 10 वर्ष के लिये कर अवकाश प्रदान किया जाये

(ग) सभी ट्रेड जोन पर नियन्त्रण रखने के लिये फ्री ट्रेड जोन्स आथॉरिटी ऑव इण्डिया की स्थापना की जाये

(घ) उपर्युक्त सभी

139. व्हाई. बी. चह्वाण की अध्यक्षता में गठित आठवें वित्त आयोग को निम्न में किस मुद्दे पर राष्ट्रपति को सुझाव नहीं देना है ?

(क) केन्द्रीय करों, जैसे आय कर (निगम कर को छोड़कर) तथा केन्द्रीय उत्पादन शुल्कों से प्राप्य शुद्ध आय का केन्द्र एवं राज्यों के मध्य एवं राज्यों में परस्पर वितरण

(ख) भारत की संचित निधि में राज्यों के राजस्व को अनुदान सहायता देने के लिये सिद्धान्त का प्रतिपादन एवं जरूरतमन्द राज्य को दी जाने वाली सहायता राशि को निश्चित करना

(ग) सम्पूर्ण वित्तीय व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने के लिये आवश्यक विदेशी ऋणों एवं सहायता का पता लगाना

(घ) कोई ऐसा विषय जिसे राष्ट्रपति अच्छी वित्त व्यवस्था के लिये आवश्यक समझता हो

140. वर्ष 1980-81 तथा 81-82 में औद्योगिक उत्पादन की वार्षिक वृद्धि दर 8.6% तथा 5.6% थी, वर्ष 1982-83 में औद्योगिक उत्पादन की वार्षिक दर कितनी होने की आशा है ?

(क) 4.5% (ख) 5%

(ग) 5.5% (घ) 5.8%

141. वर्ष 1981-82 में अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष से भारत ने 638 करोड़ रुपये निकाले, वर्ष 1982-83 में कितने करोड़ रुपये और निकाले गये ?

(क) 976 करोड़ रु. (ख) 1055 करोड़ रु.

(ग) 1185 करोड़ रु. (घ) 1880 करोड़ रु.

142. अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष से 5400 करोड़ रुपयों के ऋण की सम्पूर्ण राशि प्राप्त करने के कितने वर्ष पश्चात से भारत को ऋण की अदायगी करनी पड़ेगी ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(क) 1 वर्ष (ख) 2 वर्ष
(ग) 4 वर्ष (घ) 5 वर्ष

143. भारत को अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष से ऋण लेने की आवश्यकता क्यों पड़ा ?
(क) छठी योजना के परिव्यय की राशि को पूरा करने के लिये
(ख) भुगतान सन्तुलन की संकटापन्न स्थिति को सुधारने के लिये
(ग) सातवें दशक में लिये गये ऋण की अदायगी के लिये
(घ) ऊर्जा के नवीनीकृत एवं अनवीनीकृत स्रोतों की खोज के लिये

144. वर्ष 1980-81 तथा 1981-82 में आयात की वृद्धि दर 38.8% तथा 8.9 प्रतिशत थी जबकि उन्हीं वर्षों में निर्यात की वृद्धि दर क्रमशः 3.9 प्रतिशत व 16.2 प्रतिशत थी। बताइए वर्ष 1982-83 में आयात तथा निर्यात की वृद्धि दर कितनी होने की आशा है ?
(क) 5.6 प्रतिशत तथा 8.6 प्रतिशत
(ख) 15.3 प्रतिशत तथा 12.3 प्रतिशत
(ग) 14.2 प्रतिशत तथा 16.1 प्रतिशत
(घ) 16.1 प्रतिशत तथा 7.8 प्रतिशत

145. भारत में सार्वजनिक उद्यमों में सर्वाधिक लाभ अर्जितकरने वाला उद्यम कौन है ?
(क) इण्डियन ऑयल कॉर्पोरेशन
(ख) फूड कॉर्पोरेशन ऑव इण्डिया
(ग) ऑयल एण्ड नैचुरल गैस कमीशन
(घ) भारत हेवी इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड
(च) मिनरल्स एण्ड मेटल्स कॉर्पोरेशन ऑव इण्डिया

146. योजना आयोग ने सभी राज्यों के वर्ष 1983-84 के कुल परिव्यय में कितने प्रतिशत की वृद्धि की है ?
(क) 5 प्रतिशत (ख) 9 प्रतिशत
(ग) 11 प्रतिशत (घ) 14 प्रतिशत

147. वर्ष 1982 के अन्त तक सभी शेड्यूल्ड व्यापारिक बैंकों में कितनी राशि जमा थी ?
(क) 15226 करोड़ रु.
(ख) 50671 करोड़ रु.
(ग) 29719 करोड़ रु.
(घ) 41089 करोड़ रु.

148. केन्द्र सरकार ने राज्यों द्वारा रिजर्व बैंक ऑव इण्डिया से किये गये ओवर ड्राफ्ट के सम्बन्ध में क्या निर्णय लिया है ?
(क) इन ओवर ड्राफ्टों को अनुदान में बदल दिया
(ख) इन ओवर ड्राफ्टों को मध्यकालीन ऋण में बदल दिया
(ग) इन ओवर ड्राफ्टों को बट्टे खाते में डाल दिया
(घ) अभी तक ओवर ड्राफ्ट के विषय में कोई निर्णय नहीं लिया गया है

149. भारत में प्रति व्यक्ति आय की दृष्टि से कौन राज्य तथा केन्द्र प्रशासित प्रदेश सर्वोपरि है ?
(क) (1) पंजाब; (2) महाराष्ट्र,
(ख) (1) गोवा, दमण, द्वीव; (2) पंजाब
(ग) (1) पंजाब; (2) केरल
(घ) (1) पंजाब; (2) दिल्ली

150. देश में उत्पादन दर बढ़ाने के लिये आवश्यक है कि बचत पर ध्यान दिया जाये। इस समय बचत की वार्षिक दर लगभग कितनी है ?
(क) 11 प्रतिशत (ख) 18 प्रतिशत
(ग) 22 प्रतिशत (घ) 35 प्रतिशत

151. छठीं पंचवर्षीय योजना के प्रथम तीन वर्षों में कितने करोड़ रु. की घाटे की मात्रा हो गयी है ?
(क) 5226 (ख) 7667
(ग) 10000 (घ) 11714

152. वर्ष 1979-80 एवं 1980-81 में सार्वजनिक उद्यमों को क्रमशः 74 करोड़ रु. एवं 203 करोड़ रु. का घाटा हुआ था। बताइए वर्ष 1981-82 में सार्वजनिक उद्यमों को कितने करोड़ रुपये का लाभ या घाटा हुआ ?
(क) 485 करोड़ रु. का लाभ
(ख) 485 करोड़ रु. का घाटा
(ग) 17 करोड़ रु. का लाभ
(घ) 286 करोड़ रु. का घाटा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

153. आठवें वित्त आयोग का निर्माण किस अवधि के लिये प्रभावी होगा ?
(क) 1983-84—1987-88
(ख) 1984-85—1988-89
(ग) 1984—1989 (घ) 1985—1989

154. निम्नलिखित में कौन अप्रत्यक्ष कर नहीं है ?
(क) बिक्री कर (ख) उत्पाद शुल्क
(ग) उपहार कर (घ) मनोरंजन कर
(च) पंजीकरण एवं स्टैम्प शुल्क
(छ) मोटर वाहन कर
(ज) उपर्युक्त सभी अप्रत्यक्ष कर

155. निम्नलिखित में कौन प्रत्यक्ष कर हैं ?
(क) आय कर (ख) निगम कर
(ग) उपहार कर (घ) व्यय कर
(च) सम्पत्ति कर (छ) उपर्युक्त सभी

156. भारतीय राजस्व में अप्रत्यक्ष कर की वर्चस्व (1980-81 में 77 प्रतिशत) का क्या कारण है ?
(क) सरकार के वित्तीय आवश्यकताओं में निरन्तर एवं त्वरित वृद्धि
(ख) कर वसूली में सरलता
(ग) करदाताओं को कर भुगतान की सुविधा
(घ) करों की प्रगतिशीलता एवं सभी वर्गों से वसूला जाना
(च) उपर्युक्त सभी

157. वर्ष 1983-84 के प्रस्तावित आम बजट में बैंक ऋण पर ब्याज दर कम करने का क्या उद्देश्य है ?
(क) पूंजी निवेश स्थिर करना
(ख) पूंजी निवेश को बढ़ाना
(ग) विदेशी व्यापार को बढ़ाना
(घ) उपर्युक्त सभी

158. नाबार्ड (NABARD) पुनर्वित्त के माध्यम से कृषि, लघु उद्योग, कारीगर, कुटीर एवं ग्रामीण उद्योग, हस्तकला और अन्य आर्थिक क्रियाकलापों के लिये सभी प्रकार के उत्पादन और निवेश ऋण प्रदान करता है। नाबार्ड में किसकी सर्वाधिक शेयर पूंजी है ?
(क) भारत सरकार
(ख) रिजर्व बैंक ऑव इण्डिया
(ग) कृषि पुनर्वित्त एवं विकास निगम
(घ) स्टेट बैंक ऑव इण्डिया

159. भारत में औद्योगिक बीमारी के निरन्तर बढ़ने का क्या कारण है ?
(क) औद्योगिक इकाईयों के व्यवस्थापकों की अकार्यकुशलता व बेईमानी
(ख) वित्तीय कुप्रबन्ध
(ग) व्यवस्थापक-श्रमिकों के हितों का संघर्ष
(घ) किसी वस्तु का गलत अनुमान लगा कर अत्यधिक क्षमता के औद्योगिक ईकाईयों का निर्माण
(च) उपर्युक्त सभी

160. औद्योगिक बीमारी से देश की अर्थव्यवस्था पर क्या प्रभाव पड़ता है ?
(क) बेरोजगारी में वृद्धि
(ख) लोगों का जीवन स्तर निम्न होना
(ग) कीमतों में वृद्धि
(घ) विनियोग में कमी
(च) उपर्युक्त सभी

161. मई 1956 में स्थापित राजकीय व्यापार का क्या प्रमुख कार्य है ?
(क) निर्यात का विविधिकरण
(ख) विद्यमान बाजारों का विकास व विस्तार
(ग) स्थायी आधार पर निर्यात को प्रोत्साहित करना
(घ) आयातित वस्तुओं के वितरण की समुचित व्यवस्था करना
(च) उपर्युक्त सभी

162. अब तक सभी योजनाओं में सिंचाई व्यवस्था की वृद्धि पर काफी बल दिया गया है। निवेश के आधार पर सिंचाई योजनाओं को तीन वर्गों — बृहत, मध्यम एवं लघु में विभाजित किया गया है। तीनों वर्गों पर निवेश की मात्रा क्रमशः कितनी है ?
(क) 5 करोड़ रु. से अधिक,
25 लाख रु. से 5 करोड़ रु. तक,
25 लाख रु. से कम
(ख) 10 करोड़ रु. से अधिक,
50 लाख रु से 10 करोड़ रु. तक,
50 लाख रु से कम
(ग) 25 करोड़ रु से अधिक,
1 करोड़ रु. 50 लाख रु. तक,
1 करोड़ रु से कम

163. भारत के सभी ग्रामीण लोगों को बैंक की सुविधा प्रदान करने के लिये क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों की स्थापना की गयी है। यह बैंक निम्न में किन के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिये ऋण प्रदान करता है ?

(क) फसली ऋण
(ख) सिंचाई साधनों के लिये ऋण
(ग) पशु पालन (घ) गोबर गैस संयन्त्र हेतु ऋण
(च) ग्रामीण दस्तकारों को ऋण
(छ) लघु उद्यमों को प्रोत्साहन ऋण
(ज) कमजोर वर्ग लोगों को व्यावसायिक ऋण
(झ) उपर्युक्त सभी

164. भारत में इस समय काण्डला (गुजरात) एवं सान्ताक्रुज (बम्बई) में दो मुक्त व्यापार क्षेत्र कार्य कर रहे हैं। दण्डन समिति ने और कितने मुक्त व्यापार क्षेत्र खोलने की सलाह दी है ?

(क) 4 (ख) 6
(ग) 12 (घ) 20

165. राज्यों की राजस्व आय का सबसे बड़ा साधन निम्नांकित में कौन है ?

(क) मनोरंजन कर (ख) राज्य उत्पादन कर
(ग) बिक्री कर (घ) कृषि आयकर

अर्थशास्त्र उत्तर माला

1 च, 2 क, 3 घ, 4 ग, 5 क, 6 य, 7 र, 8 ख, 9 ग, 10 झ, 11 ज, 12 घ, 13 य, 14 क, 15 ग, 16 घ, 17 ग, 18 घ, 19 च, 20 घ, 21 च, 22 घ, 23 च, 24 क, 25 ख, 26 क, 27 ख, 28 ग, 29 ख, 30 च, 31 छ, 32 छ, 33 क, 34 ग, 35 घ, 36 ख, 37 छ, 38 च, 39 ख, 40 क, 41 ख, 42 ग, 43 घ, 44 ग, 45 घ, 46 ज, 47 ग, 48 क, 49 घ, 50 ख, 51 घ, 52 छ, 53 ज, 54 न, 55 क, 56 ग, 57 ग, 58 ख, 59 घ, 60 ख, 61 च, 62 ख, 63 ख, 64 घ, 65 ख, 66 घ, 67 घ, 68 क, 69 ल, 70 ग, 71 ग, 72 घ, 73 ग, 74 ख, 75 ग, 76 घ, 77 घ, 78 च, 79 घ, 80 य, 81 घ, 82 छ, 83 घ, 84 क, 85 ग, 86 ख, 87 क, 88 छ, 89 ग, 90 घ, 91 ख, 92 क, 93 ख, 94 घ, 95 ग, 96 क, 97 घ, 98 क, 99 ग, 100 ख, 101 घ, 102 छ, 103 झ, 104 ख, 105 च, 106 छ, 107 च, 108 छ, 109 झ, 110 ज, 111 ख, 112 छ, 113 ग, 114 ज, 115 छ, 116 य, 117 झ, 118 क, 119 ख, 120 ग, 121 घ, 122 ख, 123 घ, 124 ख, 125 क, 126 च, 127 य, 128 छ, 129 ग, 130 क, 131 च, 132 ग, 133 ख, 134 ग, 135 घ, 136 झ, 137 छ, 138 घ, 139 ग, 140 क, 141 घ, 142 ग, 143 ख, 144 घ, 145 क, 146 ग, 147 ख, 148 ख, 149 ख, 150 ग, 151 ख, 152 क, 153 ख, 154 ग, 155 छ, 156 घ, 157 ख, 158 क, 159 च, 160 च, 161 च, 162 क, 163 झ, 164 ख, 165 ग। ● ●

मानसिक योग्यता के वस्तुनिष्ठ परीक्षण का उत्तरमाला

1 ग, 2क, 3 घ, 4 ग, 5 ग, 6 क, 7 ग, 8 घ, 9 ख, 10 ग, 11 क, 12 ग, 13 क, 14 ग, 15 क, 16 घ, 17 ख, 18 क, 19 ख, 20 ग, 21 क, 22 ख, 23ख, 24क, 25ख, 26ग, 27ख, 28द, 29घ, 30द, 31ग, 32ख, 33ग, 34ङ, 35ख, 36क, 37ङ, 38ख, 39घ, 40ग, 41ग, 42ग, 43ग, 44घ, 45घ, 46ग, 47ग, 48क, 49ख, 50च, 51घ, 52घ, 53च, 54ख, 55घ, 56ग, 57ख, 58ग, 59ग, 60ख, 61घ, 62क, 63ग, 64घ, 65ख, 66घ, 67क, 68क, 69ग, 70ख, 71घ, 72च, 73क, 74ग, 75घ, 76ख, 77घ, 78ग, 79घ, 80ग, 81ग, 82ग, 83च, 84घ, 85ख, 86ग, 87क, 88घ, 89क, 90घ, 91घ, 92ग, 93ख, 94ग, 95क, 96ख, 97ख, 98घ, 99घ, 100क, 101घ, 102ग, 103च, 104ग, 105ग, 106घ, 107ख, 108ख, 109ग, 110छ, 111*, 112*, 113*, 114*, 115च, 116ख 117*, 118*, 119*, 120च, 121ख, 122ग, 123क, 124ख, 125ख, 126क, 127क, 128ख, 129ग, 130क, 131ग, 132घ, 133ख, 134ख, 135ग, 136क, 137ग, 138क, 139ग, 140घ, 141घ, 142क, 143ख, 144ग, 145ग, 146ग, 147घ, 148क, 149ग, 150ग, 151ग, 152ख, 153घ, 154च, 155ग, 156क, 157ग, 158च, 159ग, 160घ, 161घ, 162क, 163च, 164ग, 165ख, 166ग, 167ख, 168ख, 169ख, 170ग, 171ख, 172ग, 173क, 174घ, 175क, 176घ, 177च, 178च, 179क, 180ख। ● ●

■ प्रश्न 103 से 107, 134 से 138 एवं 166 से 170 के ग्राफ उलट गये हैं। कृपया सुधार कर पढ़ें।

*प्रश्न 111, 112, 113, 114, 117, 118 एवं 119 के सही उत्तर क्रमशः इस प्रकार से हैं: 19, 28, 17, 9, 1, 1 एवं 2।

■ त्रुटियों के लिये खेद है—सम्पादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तेल की राजनीति

शंकर घोष व पंकज मालवीय

वर्तमान युग उद्योग प्रधान है। उद्योग न केवल हमारे जीवन के आधार से बन गये है बल्कि यही हमारी समृद्धि के मापदण्ड माने जाते है। जो राष्ट्र जितना ही औद्योगिक है वह उतना ही अधिक विकसित माना जाता है। उद्योगों का ऊर्जा से सीधा सम्बन्ध है और इसी के साथ ही जीवन स्तर का प्रश्न जुड़ा हुआ है। जो राष्ट्र जितनी ऊर्जा व्यय कर रहा है, उसे उतना ही विकसित या विकासशील होने का दर्जा प्रदान किया जा रहा है। औद्योगिक क्रान्ति के फलस्वरूप कोयले ने वनस्पति, पशु व मानवश्रम से प्राप्त ऊर्जा का स्थान ग्रहण कर लिया था। प्रमुख ऊर्जा स्रोत के रूप में कोयले की प्राथमिकता 1840 से 1930 तक बनी रही। बीसवीं शताब्दी के चौथे दशक से खनिज तेल ने ऊर्जा के प्राथमिक स्त्रोत के रूप में उसको प्रथम स्थान से स्थानाच्युत करना प्रारम्भ किया। पिछले चार दशक में खनिज तेल का प्राथमिक ऊर्जा के रूप में बढ़ता हुआ महत्व निम्नलिखित सारणी से ही स्पष्ट हो जाता है—

विश्व में ऊर्जा के विभिन्न स्रोतों की खपत

	1940	1950	1960	1972	1980
कोयला	94.2	55.7	44.2	29.2	32.3
खनिज तेल	3.8	28.9	35.8	45.2	41.4
प्राकृतिक गैस	1.5	8.9	13.5	18.3	18.5
प्राथमिक विद्युत	0.5	6.5	6.4	6.6	8.8

बढ़ते हुए औद्योगिक क्षेत्र उसी अनुपात में ऊर्जा की खपत भी अधिकाधिक करते जा रहे है। ऊर्जा की खपत में कोई कमी की सम्भावना नहीं क्योंकि उद्योग तो स्थगित होने से रहे। चूँकि विश्व की कुल ऊर्जा खपत का 40 प्रतिशत खनिज तेल से प्राप्त होता है इसलिये औद्योगिक विकास के लिये उसके महत्व को नकारा नहीं जा सकता है। औद्योगिक विकास जिसके साथ आर्थिक विकास का प्रश्न भी जुड़ा हुआ है, के संदर्भ में पिछले एक दशक में खनिज तेल की प्राप्यता तथा मूल्य में जो उतार-चढ़ाव आया, वह निश्चियतः उद्विग्नता का विषय है। इस दौरान जो कुछ भी हुआ, उसको जानने समझने के लिये इतिहास के पन्नों को पलटना आवश्यक हो जाता है।

इन्टरनेशनल इकॉनमिक रिपोर्ट के अनुसार, विश्व में खनिज तेल की कुल आकलित सुरक्षित भण्डार (~68 बिलियन बैरल) का 59·3 प्रतिशत मध्य पूर्व में, (स्मरणीय रहे कि मध्यपूर्व का तेल बाजार सम्पूर्ण विश्व बाजार को प्रभावित करता है।) उत्तरी अमेरिका में 10.3 प्रतिशत, मध्य व दक्षिणी अमेरिका में 3.3 प्रतिशत, अफ्रीका में 9.8 प्रतिशत, एशिया व पैसिफीक में 3.3 प्रतिशत तथा साम्यवादी (जगत स्मरणीय रहे कि यह क्षेत्र तेल पर आत्मनिर्भर होने के कारण तेल बाजार से एकदम अलग सा है।) में 9.7 प्रतिशत विद्यमान है। मध्यपूर्व में तेल का आधे से अधिक सुरक्षित भण्डार होने के साथ वहाँ पाये जाने वाले तेल की उच्च किस्म, तेल के दोहन की न्यून उत्पादन लागत तथा इस क्षेत्र की पश्चिमी जगत से समीपता ने सभी साम्राज्यवादी शक्तियों को इस क्षेत्र की ओर आकृष्ट किया। 1901 में एक अमेरिकी कम्पनी को पर्शिया (वर्तमान ईरान) में तेल के दोहन की सुविधा प्राप्त हुई। 1935 तक मध्यपूर्व में सभी ज्ञात तेल भंडारों के दोहन की सुविधा अन्तर्राष्ट्रीय तेल कम्पनियों को मिल चुकी थी। चार्ल्स इस्सावी ने अपनी पुस्तक "ऑयल, मिडल ईस्ट, एण्ड द वर्ल्ड" में लिखा है कि ये तेल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कम्पनियाँ तेल उत्पादक राष्ट्रों को 21 सेन्ट प्रति बैरल का लाभांश दिया करती थी। उनके अनुसार, तत्कालीन परिस्थितियों में इस लाभांश को कम नहीं कहा जा सकता है। परन्तु इन तेल कम्पनियों द्वारा अपनी स्वार्थसिद्धि के लिये राजनीतिक भयादोहन, तेल उत्पादक राष्ट्रों की आन्तरिक राजनीति में हस्तक्षेप विद्रोह व सत्ता परिवर्तन करवाना, पड़ोसी राष्ट्रों में युद्ध करवाना आदि को कभी उचित नहीं कहा जा सकता है। तेल का सस्ते मूल्य पर उपलब्ध होते रहना पश्चिमी साम्राज्यवादी राष्ट्रों के हित में होने के कारण वे तेल कम्पनियों के हर सही गलत कदमों का राजनीतिक व सैनिक शक्ति से समर्थन करते रहे। तेल उत्पादक राष्ट्रों के लगभग सभी कमजोर राष्ट्राध्यक्षों के पास इस बात के अलावा कोई चारा नहीं था कि वे इन साम्राज्यवादी राष्ट्रों एवं तेल कम्पनियों के कुकृत्यों की ओर से आँख मूंद ले।

द्वितीय विश्वयुद्ध और उसके बाद के वर्षों में तेल कम्पनियों ने तेल के उत्पादन व मूल्य में काफी वृद्धि कर अपने लाभ की राशि को बढ़ाया। तेल कम्पनियों द्वारा तेल उत्पादक राष्ट्रों के लाभांश में कोई वृद्धि न करने के फलस्वरूप इन राष्ट्रों में असन्तोष की भावना जागृत होने लगी। तेल उत्पादक राष्ट्रों में वेनेजुएला ने सर्वप्रथम 1946 में तेल कम्पनियों के अन्यायोचित लाभ पर कर लगाया और साथ में उनके प्रभाव को कम करने के लिये अन्य कदम भी उठाये। वेनेजुएला द्वारा तेल कम्पनियों पर प्रतिबन्ध लगाने के लिये उठाये गये सफल-असफल कदमों ने मध्य पूर्व के तेल उत्पादक राष्ट्रों को इस दिशा में कदम उठाने के लिये प्रोत्साहित किया। विश्व में चल रही उदारवाद व राष्ट्रवाद की लहर ने इस दिशा में उत्प्रेरक का कार्य किया। 1950 में ईरान की सरकार ने तेल उत्पादन से प्राप्त होने वाली आय का आधे आधे बँटवारे के लिये तेल कम्पनियों से वार्तालाप प्रारम्भ किया। तेल कम्पनियों द्वारा इस मांग को ठुकराये जाने पर मुसद्दीक सरकार ने ईरान में कार्यरत सभी तेल कम्पनियों का राष्ट्रीयकरण कर दिया। 1952 में मुसद्दीक को सैनिक विद्रोह द्वारा सत्ताच्युत करवा कर तेल कम्पनियों के संरक्षक राष्ट्रों ने ईरान का शासन भार अपने चहेते शाह पहलवी को सौंपा।

परन्तु इस घटना से पश्चिमी साम्राज्यवादी राष्ट्रों और तेल कम्पनियों को बदलते समय का अहसास हुआ। उन्हें यह समझने में देर न लगी कि यदि मध्य पूर्व के तेल उत्पादक राष्ट्रों को थोड़ा बहुत सन्तुष्ट न किया गया तो वहाँ साम्यवादी सोवियत संघ से प्रभावित उग्रवादी तत्वों का प्रभाव बढ़ता जायेगा और जो अन्ततः साम्राज्यवादी राष्ट्रों व तेल कम्पनियों के लिये अहितकर सिद्ध होगा। इस सम्भावना को रोकने के लिये जहां एक ओर तेल कम्पनियों ने तेल उत्पादक राष्ट्रों के लाभांश में 12 सेन्ट प्रति बैरल की वृद्धि की, वहीं दूसरी ओर पश्चिमी राष्ट्रों ने मध्य पूर्व से सस्ते मूल्य पर अधिक से अधिक तेल प्राप्त करते रहने के उद्देश्य से अपने समर्थकों को सत्ता पर बैठाया, उन्हें आर्थिक व सैनिक सहायता प्रदान की और इस क्षेत्र में साम्यवाद के प्रसार को रोकने के लिये सैनिक संगठन 'सेन्टो' की स्थापना की।

तेल के लाभांश में वृद्धि के फलस्वरूप मध्यपूर्व के तेल उत्पादक राष्ट्रों की आय में 1950 से 1960 के मध्य चार गुनी वृद्धि हुई। परन्तु इसी तथ्य ने उन्हें इस बात का भी अहसास दिलाया कि वे किस सीमा तक तेल पूर्ति तेल कम्पनियों की अनुकम्पा पर जीवित है। अमेरिका तथा तेल कम्पनियों द्वारा उठाये गये विभिन्न कदमों के फलस्वरूप 1959 में अन्तर्राष्ट्रीय तेल बाजार में तेल का अतिप्रदाय (Glut) उत्पन्न हुआ। बाजार में उपलब्ध तेल की शीघ्रातिशीघ्र बिक्री के लिये तेल कम्पनियों को तेल के मूल्य को 84.5 सेन्ट प्रति बैरल से घटा कर 75.6 सेन्ट प्रति बैरल करना पड़ा। और साथ में तेल के उत्पादन में कटौती भी करनी पड़ी। तेल के उत्पादन के साथ-साथ मूल्य में कटौती के फलस्वरूप तेल उत्पादक राष्ट्रों की आय में कमी आ गयी। तेल से प्राप्त आय पर टिकी इन राष्ट्रों की सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था लड़खड़ा सी गयी। अतः उनके लिये आवश्यक हो गया कि वे इस चुनौती का एकताबद्ध होकर सामना करें। 1959 में आयोजित अरब पेट्रोलियम कांग्रेस की बैठक के दौरान तेल उत्पादक राष्ट्रों ने एक संघटन की स्थापना पर विचार किया। सितम्बर 1960 में प्रमुख तेल उत्पादक राष्ट्रों के निमंत्रण पर तुमार जनवरी 1961 में आर्गेनाइजेशन ऑव पेट्रोलियम एक्सपोर्टिंग कन्ट्रीज (ओपेक) का जन्म हुआ। सऊदी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अरब, कुवैत, ईरान, इराक व वेनेजुएला ओपेक के संस्थापक सदस्य बने। बाद में, लीबिया, अल्जीरिया, कतार, य. ए.ई., नाइजीरिया, गैबन, इन्डोनेशिया तथा इक्वेडोर भी इसके सदस्य बने। ओपेक के प्रमुख उद्देश्य हैं—(1) तेल के मूल्य में एकरूपता लाना, (2) वैयक्तिक एवं सामूहिक रूप से हितों की रक्षा हेतु उपाय अपनाना, (3) तेल से प्राप्त आय को सुदृढ़ बनाये रखने के लिये अन्तर्राष्ट्रीय तेल बाजार में उसकी मांग व मूल्य में स्थायित्व लाने के लिये उपाय अपनाना, (4) उपभोक्ता राष्ट्रों को समुचित रूप से तेल की नियमित आपूर्ति, तथा (5) तेल उद्योग में विनियोजित पूंजी का सन्तोषजनक प्रत्यागमन। ओपेक द्वारा उठाये गये विभिन्न कदमों से तेल और विश्व शक्ति सन्तुलन का ढांचा प्रभावित हुए बिना न रह सका। जून 1968 में ओपेक ने यह प्रस्ताव पारित किया कि (1) प्रत्येक राष्ट्र को अपने प्रादेशिक क्षेत्र में विद्यमान प्राकृतिक संसाधनों का स्वयं दोहन करना चाहिए, (2) विद्यमान तेल खनन सम्बन्धी सभी अनुबन्धों में बदलती परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तन तथा (3) तेल उत्पादक राष्ट्र को उनके क्षेत्र में कार्यरत तेल कम्पनियों के स्वामित्व में सहभागिता आदि। 1970-1971 में मध्य पूर्व के ओपेक राष्ट्रों ने तेल कम्पनियों के साथ अलग-अलग आठ समझौते, जिनमें लीबिया व तेहरान समझौता प्रमुख हैं, किये। इन समझौतों के अनुसार ओपेक राष्ट्रों ने तेल कम्पनियों के आय कर में 50 से 55 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी की और सभी तरह की छूट भी समाप्त कर दी गयी। अभी तक तेल उत्पादक राष्ट्र तेल कम्पनियों के प्रभाव व लाभ को कठोरतापूर्वक कम करने के लिये एक पक्षीय कदम उठाने की बात साधारणतः सोचा नहीं करते थे क्योंकि ऐसा करने पर तेल कम्पनियों द्वारा प्रतिकारात्मक कदम उठाने की सम्भावना रहती थी। परन्तु छठें दशक के अन्त तक तेल कम्पनियों के प्रतिकारात्मक कदमों की सम्भावनाएं ओपेक राष्ट्रों की प्रतियोगी प्रतिक्रियाओं के फलस्वरूप धूमिल हो चुकी थी।

ओपेक की इस सफलता का कुछ श्रेय तेल कम्पनियों एवं अमेरिका को भी है। तेल कम्पनियाँ भलीभाँति समझने लगी थी कि लाभकारी स्थिति एवं यहाँ तक कि अपने अस्तित्व को बनाये रखने के लिए आवश्यक है कि सोने की अण्डे देने वाली मुर्गी के समान तेल उत्पादक राष्ट्रों का लाभांश बढ़ाया जाय, भले ही इससे तेल के मूल्य में वृद्धि हो। सस्ते तेल की आपूर्ति के फलस्वरूप पश्चिमी यूरोपीय राष्ट्र व जापान (सभी आयातित तेल पर पूर्णतः आश्रित) छठें दशक के अन्त तक औद्योगिक क्षेत्र में अमेरिका के प्रतिद्वन्दी के रूप में उभर कर आ रहे थे। तेल के मूल्य में वृद्धि से इन राष्ट्रों का औद्योगिक विकास प्रभावित होना निश्चित था। चूंकि अमेरिका स्वयं तेल के मामलें में काफी सीमा तक आत्मनिर्भर था, अतएव तेल मूल्य वृद्धि से उसे पूर्ण रूप से लाभ होने की सम्भावना थी। इस प्रकार सातवें दशक के प्रथम वर्षों में ओपेक, अमेरिका एवं तेल कम्पनियों का सहयोग विश्व तेल व्यवस्था का एक अभिन्न अंग हो गया। हेनरी शूलर ने लिखा है कि 1971 में अपनायी गयी तेल नीति एवं वार्तालाप एक अप्रशमित विपत्ति थी जिसने ओपेक राष्ट्रों में तेल के मूल्य में निरन्तर वृद्धि की गतिमात्रा उत्पन्न कर दी थी। अमेरिका व तेल कम्पनियाँ ही इस संवृत्ति के सृष्टि में सहायक थे और उन्होंने ने ही इसे आवश्यक अग्रगति प्रदान की थी।

वैसे तो अमेरिका व तेल कम्पनियों का प्राथमिक उद्देश्य यही था कि तेल उत्पादक राष्ट्रों को दिखावे के तौर पर कुछ छूट प्रदान कर उन्हें सन्तुष्ट कर दिया जाय और स्वयं ही तेल के उत्पादन व मूल्य सम्बन्धित नीतियों का निर्धारण पर्दे के पीछे से करे। परन्तु 1972 व 1973 के मध्य तक कुछ ओपेक राष्ट्रों ने अमेरिका व तेल कम्पनियों से पूर्ववत सहयोग की भावना त्याग कर तेल की आपूर्ति पर अपना नियन्त्रण प्रभावशाली बनाने के लिये जो कुछ भी एकपक्षीय कदम उठाये उससे आगे आने वाले समय में विश्वव्यापी तेल संकट की सम्भावना बिल्कुल स्पष्ट दिखाई पड़ने लगी। 1973 के अरब इस्रायल युद्ध ने ओपेक राष्ट्रों की तेल की आपूर्ति एवं उसके मूल्य पर पूर्ण नियन्त्रण स्थापित करने की प्रक्रिया को शीघ्रातिशीघ्र प्रबल करने का उत्तम मौका प्रदान किया। ओपेक के अरब सदस्य राष्ट्रों ने अरब-इस्रायल युद्ध के सन्दर्भ में अमेरिका एवं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नीदरलैण्ड को तेल की आपूर्ति पर घाटबन्दी (embargo) लगा दिया। साथ में, तेल के उत्पादन में कमी एवं मूल्य में वृद्धि भी का गयी। गैरअरब ओपेक राष्ट्रों ने इन कदमों का समर्थन किया। तेल का पहली बार राजनीतिक अस्त्र के रूप में उपयोग ओपेक की एकता का परिचायक था। 1967 के अरब-इस्रायल युद्ध के दौरान तेल का राजनीतिक अस्त्र के रूप में उपयोग का प्रयत्न किया गया था परन्तु ओपेक राष्ट्रों में एकता के अभाव में यह कदम असफल रहा। अमेरिका द्वारा फिलीस्तीनी समस्या के प्रति जल्दी ही सकारात्मक उपाय अपनाने का आश्वासन मिलने के पश्चात तेल की घाटबन्दी को हटा लिया गया तथा तेल के उत्पादन में की गयी कटौती को समाप्त कर दिया गया परन्तु तेल के बढ़े हुए मूल्य में कोई कमी नहीं लायी गयी।

इन सब घटनाओं से सम्पूर्ण विश्व में तेल संकट की स्थिति उत्पन्न हुई। ओपेक राष्ट्रों को अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था में एक विशेष दर्जा प्राप्त हुआ। वर्षों से उपेक्षित ये विकासशील राष्ट्र अभी भी इसी दुविधा में थे कि हाल में अर्जित शक्ति का किस प्रकार उपयोग करें। सऊदी अरब, यू. ए. ई., कुवैत आदि जैसे मध्यममार्गी ओपेक सदस्य राष्ट्र सुरक्षित तेल भण्डार का उपयोग अधिक से अधिक दिनों तक करने के दृष्टि से तेल के उत्पादन एवं मूल्य में अधिक वृद्धि नहीं चाहते थे परन्तु लीबिया, अल्जीरिया, ईरान, इराक, नाइजीरिया आदि ओपेक सदस्य राष्ट्र शीघ्रातिशीघ्र अधिकाधिक तेल के उत्पादन एवं मूल्य में वृद्धि कर शीघ्रातिशीघ्र अधिक से अधिक धन अर्जित करना चाहते थे। ओपेक में इन उग्रवादी तत्वों का बहुमत होने के कारण तेल के उत्पादन एवं मूल्य में समय-समय पर वृद्धि होती रही।

तेल की मूल्य वृद्धि से 1974 में ओपेक सदस्य राष्ट्रों का विदेशी मुद्रा का अतिरिक्त भण्डार 97 बिलियन डालर का हो गया। वही दूसरी ओर तेल के मूल्य वृद्धि से प्रभावित विकसित औद्योगिक राष्ट्रों को 1974 में 67 बिलियन डालर का घाटा हुआ और गैरओपेक विकासशील राष्ट्र उसी वर्ष 26 बिलियन डालर के कर्जदार हो गये। तेल की निरन्तर मूल्य वृद्धि से जहाँ एक ओर ओपेक सदस्य राष्ट्रों का विदेशी मुद्रा का सुरक्षित भण्डार (1979 में 69.8, 1980 में 116.6, 1981 में 68.8 बिलियन डालर) में वृद्धि होती रही वहीं विकसित औद्योगिक राष्ट्र तथा गैरओपेक विकासशील राष्ट्रों (1982 तक 650 बिलियन डालर के कर्जदार) की अर्थव्यवस्था चौपट होता रही। ओपेक राष्ट्रों ने 1974-80 के मध्य अपनी कुल निवेशित पूंजी (588 बिलियन डालर) का 84.5% (528 बिलियन डालर) विकसित औद्योगिक राष्ट्रों में लगाया। इसके अतिरिक्त ओपेक सदस्य राष्ट्रों को अस्त्र-शस्त्र एवं उपभोग की सामग्रियों के निर्यात (उदाहरणस्वरूप 1973-8 के मध्य केवल अमेरिका ने ही सऊदी अरब को 34 बिलियन डालर का अस्त्र-शस्त्र बेचा) तथा वहाँ चल रहे विकास सम्बन्धी कार्यों से अर्जित करोड़ी डालरों के लाभ ने विकसित औद्योगिक राष्ट्रों के आर्थिक बोझ को कुछ कम करने में सहायता प्रदान की। परन्तु ओपेक राष्ट्रों की समृद्धता का पूरा लाभ उठाने में असमर्थ एवं स्वयं ओपेक राष्ट्रों द्वारा उपेक्षित (1974-80 के मध्य ओपेक राष्ट्रों ने केवल 52 बिलियन डालर की पूंजी इन राष्ट्रों में निवेशित किया) गैरओपेक विकासशील राष्ट्रों की अर्थव्यवस्था जर्जरित होती चली गयी।

तेल की मूल्यवृद्धि का सर्वाधिक लाभ अमेरिका को प्राप्त हुआ। तेल की मूल्य वृद्धि से पश्चिमी यूरोपीय राष्ट्र व जापान के बुरी तरह प्रभावित होने के कारण वह पुनः औद्योगिक विश्व में प्रथम स्थान पाने में सफल रहा। परन्तु उसने यह अनुभव किया कि यह स्थिति बनाये रखने के लिये आवश्यक है कि विश्व अर्थव्यवस्था में स्थायित्व एवं निश्चयता स्थापित हो जो कि तेल संकट के फलस्वरूप बुरी तरह आक्रान्त हो चुकी हैं। विश्व अर्थव्यवस्था में स्थायित्व एवं निश्चयता की वापसी के लिये आवश्यक था तेल संकट का समाधान। अतएव 1975 के अन्त तक अमेरिका ने अपनी पूर्ववर्ती ओपेकपरस्त नीति को त्याग कर उससे प्रत्यक्ष टक्कर लेना ही उचित समझा। परन्तु व्यावहारिक दृष्टिकोण से उचित न होने के कारण इस नीति को शीघ्र ही त्यागना पड़ा। अन्ततः पश्चिमी यूरोपीय राष्ट्र व जापान की भांति, अमेरिका को भी तेल की मूल्य वृद्धि की अपरिवर्तनीयता (Irreversibility) को स्वीकार कर ओपेक राष्ट्रों से नियमित रूप से तेल की आपूर्ति के बदले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अत्याधुनिक टेक्नोलॉजी के निर्यात के गठबन्धन के लिये समझौता करना पड़ा।

विकसित औद्योगिक राष्ट्रों एवं ओपेक राष्ट्रों के मध्य हाल में उत्पन्न इस परस्पर आदर की भावना के फलस्वरूप 1978 के अन्त तक उत्साहवर्द्धक परिणाम निकलना लगभग निश्चित था। इसका मुख्य कारण पश्चिमी समर्थक ईरान के शाह एवं सऊदी अरब के नरेश का सहानुभूतिक रवैया भी था। परन्तु 1978 से मध्यपूर्व में ऐसी घटनाएं होने लगी जिसने तेल संकट को पुनर्जीवित कर दिया। ईरान के शाह का तख्ता उलटना ईरान में आन्तरिक अशान्ति, ईरान-इराक युद्ध, कुछ ओपेक राष्ट्रों द्वारा अतिरिक्त व्यय (over-spending) आदि के फलस्वरूप तेल बाजार में पुनः अस्थायित्व व अनिश्चियता की आ गयी, और तेल के मूल्य में एक अल्प समय के भीतर भीषण वृद्धि हुई, जैसा कि सारणी से स्पष्ट होता है—

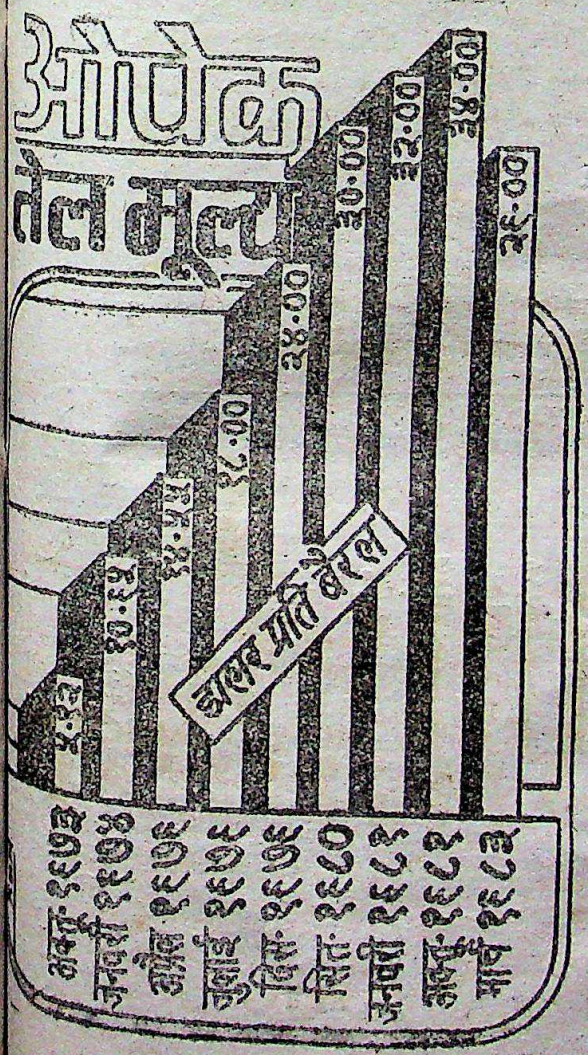

1982 के प्रथमार्द्ध से ही विश्व तेल बाजार में तेल का अतिप्रदाय निम्नलिखित कारणों से उत्पन्न हो गया- (1) विकसित औद्योगिक राष्ट्रों द्वारा ऊर्जा का प्रभावोत्पादक संरक्षण, (2) सम्पूर्ण विश्व में तेल के अलावा अन्य प्रकार की ऊर्जा की खपत में निरन्तर वृद्धि, (3) उत्तरी सागर, मेक्सिको, ब्राजील, अमेरिका में तेल उत्पादन में वृद्धि, (4) विकसित औद्योगिक राष्ट्रों का मन्द आर्थिक विकास, (5) ईरान व इराक द्वारा 978 के तेल उत्पादन सीमा को पुनः प्राप्त करना तथा (6) तेल कम्पनियों द्वारा तेल के विशाल भण्डार को संग्रहित करना। तेल की अतिप्रदाय स्थिति का सामना करने के लिये ओपेक राष्ट्र मई, 1982 में वियेना में एकत्र हुए। इस बैठक में सऊदी अरब के दबाव के कारण तेल का मूल्य 34 डालर प्रति बैरल ही बरकरार रखा गया परन्तु कुल उत्पादन की सीमा कम कर 17.5 मिलियन बैरल प्रति दिन निश्चित कर दिया गया। सऊदी अरब ने स्वयं अपना उत्पादन कोटा कम कर अन्य ओपेक राष्ट्रों को तेल उत्पादन कुछ मात्रा में बढ़ाने के लिये छूट प्रदान किया। परन्तु ईरान एवं लीबिया ने अपने उत्पादन कोटे से अधिक तेल का उत्पादन कर उसे ओपेक द्वारा निश्चित आधार मूल्य से 3-4 डालर प्रति बैरल कम दाम पर बेचना प्रारम्भ किया। इससे तेल के मूल्य में और अधिक गिरावट आने लगी।

स्थिति में कोई सुधार न आने के फलस्वरूप जनवरी 1983 तक ओपेक राष्ट्रों का कुल तेल उत्पादन घट कर केवल 13 मिलियन बैरल प्रति दिन हो गया। 9 0 के पश्चात पहली बार ओपेक राष्ट्रों का कुल उत्पादन गैर-साम्यवादी विश्व के कुल तेल उत्पादन के आधे से भी कम (46 प्रतिशत) हुआ।

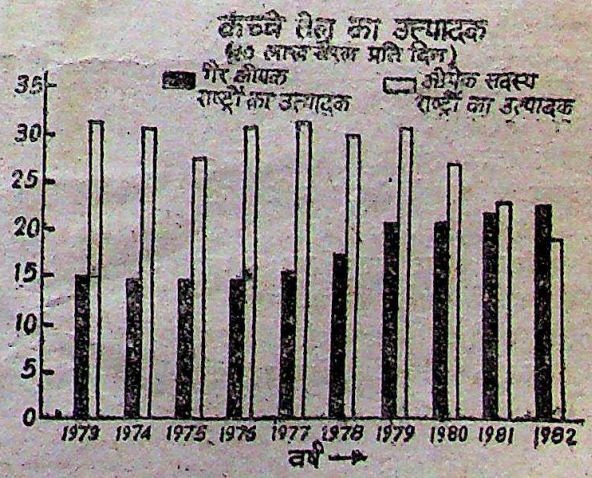

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसी स्थिति में ब्रिटिश नैशनल आर्गेनाइजेशन ऑव पेट्रोलियम द्वारा उत्तरी सागर के तेल मूल्य में 3.5 डालर प्रति बैरल कटौती करके 30.5 डालर प्रति डालर करने की घटना ने नाइजीरिया को तेल का मूल्य 35 डालर प्रति बैरल से घटा कर अधिकारिक रूप से 30 डालर प्रति बैरल करना पड़ा। तेल के मूल्य में अधिकारिक रूप से इस गिरावट ने निश्चितपूर्वक अगस्त, 1981 में ओपेक द्वारा तेल के मूल्य को 34 डालर प्रति बैरल पर बनाये रखने की नीति पर पानी फेर दिया।

अन्ततः मार्च 1982 में लन्दन में सम्पन्न ओपेक राष्ट्रों की बैठक मे तेल का मूल्य 34 डालर प्रति बैरल से घटा कर 29 डालर प्रति बैरल करने की घोषणा की गयी। ओपेक के 22 वर्ष के इतिहास मे तेल केमूल्य में इतनी भारी कमी पहली बार आयी। तेल की उत्पादन सीमा को 17.5 मिलियन बैरल प्रति दिन ही रखा गया। सऊदी अरब अपना उत्पादन कोटा 7.5 मिलियन बैरल प्रति दिन से घटाकर 5 मिलियन बैरल प्रति दिन करने हेतु सहमत हुआ। इन्डोनेशिया के अलावा शेष ओपेक राष्ट्रों के उत्पादन कोटे मे वृद्धि हुई। सर्वाधिक लाभ ईरान को हुआ जिसके उत्पादन कोटा मे 1 मिलियन बैरल प्रति दिन की वृद्धि की गयी। इस छूट के बावजूद भी ईरान ने लन्दन समझोतेको अपने हितो के विरुद्ध बताया और नाइजीरिया की इसके सफलता के सम्बन्ध म संशय व्यक्त किया। सऊदी अरब ने धमकी दी कि यदि किसी ओपेक राष्ट्र ने लन्दन समझोते का उल्लंघन किया तो भविष्य में वह ओपेक को संगठित बनाये रखने के लिये अपने उत्पादन को और अधिक कमकर अपने हितों की तिलांजलि देने में असमर्थ रहेगा।

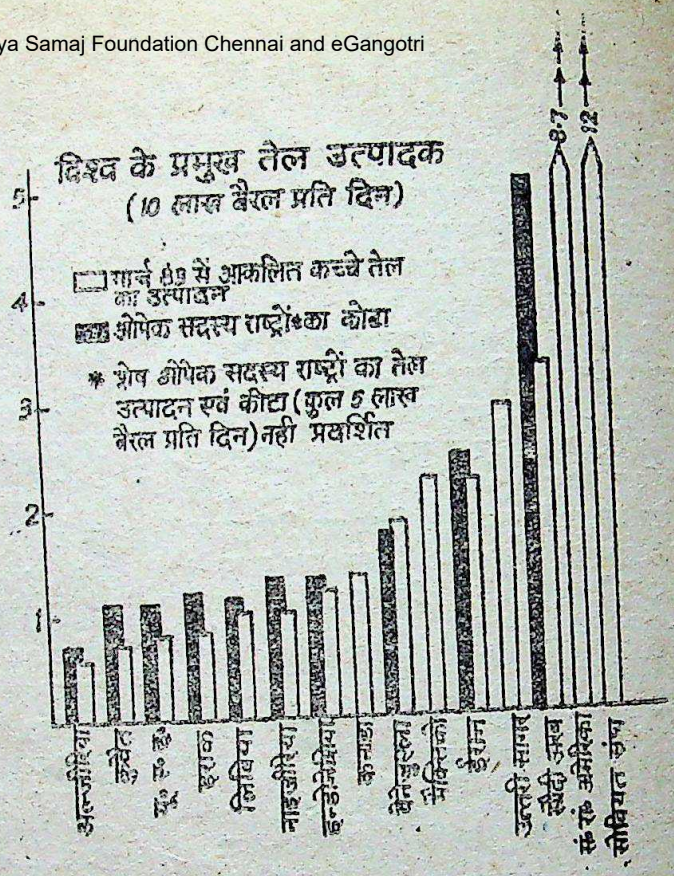

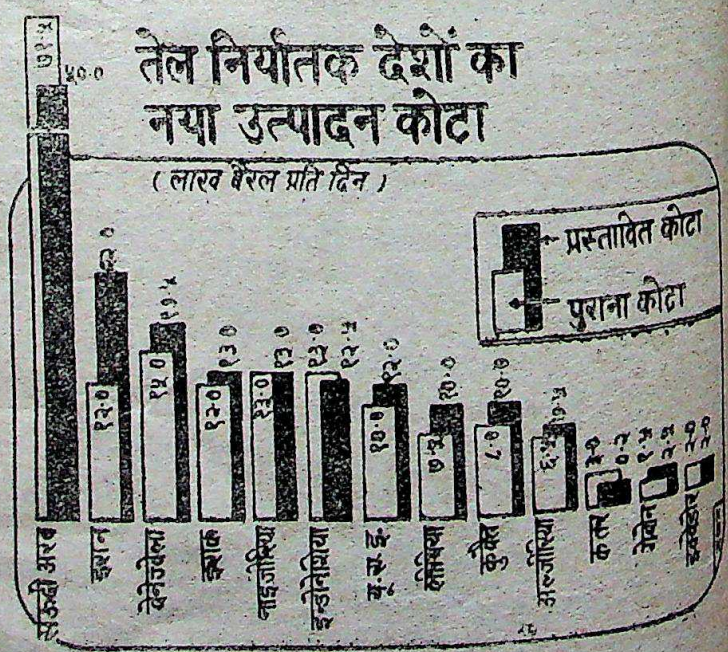

(शेष पृष्ठ 81 पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय नौकरशाही के सामाजिक आयाम

■ सर्वमित्र

आधुनिक समाजशास्त्री यह स्वीकार करते हैं कि विकासशील देशों में आधुनिकीकरण और विकास की प्रक्रिया में नौकरशाही की भूमिका बड़ी महत्वपूर्ण है। ऐसा इसलिए क्योंकि नीतियों का क्रियान्वन व्यवस्था के इसी अंग द्वारा होता है। इस स्थिति में नौकरशाही के सामाजिक आधार और दृष्टिकोण पर विचार किया जाना आवश्यक हो जाता है। सामाजिक विकास और कल्याण से सम्बन्धित नीतियों का सफल क्रियान्वन काफी हद तक नौकरशाह के पारिवारिक परिवेश और सामाजिक संदर्भ पर निर्भर करता है। इस विषय के महत्व को एक छोटे से उदाहरण से जाना जा सकता है। आपने बहुधा पत्र-पत्रिकाओं में इस आशय के व्यक्तित्व-वक्तव्य पढ़े होंगे जिनमें तमाम नीतियों की असफलता को नौकरशाही के सर मढ़ दिया जाता है। कहा जाता है कि स्वतन्त्र भारत में भी नौकरशाह ब्रिटिश साम्राज्यवादी मूल्यों से प्रभावित हैं और राष्ट्रीयता की बजाय वे पश्चिमी औपनिवेश के प्रति अधिक प्रतिबद्ध हैं। इसलिए आज आवश्यकता यह विश्लेषण करने की है क्या यह आरोप भारतीय नौकरशाही के संदर्भ में सही कहा जा सकता है?

इस प्रश्न के उत्तर के पहले आइए आदर्श नौकरशाही की परिकल्पना से अवगत हो लें। इस सम्बन्ध में आज भी प्रसिद्ध समाजशास्त्री मैक्स वेबर की अवधारणा को मानक माना जाता है। वेबर ने आदर्श नौकरशाही के लिए दस सिद्धांत निर्धारित किए थे। उनके अनुसार एक आदर्श व्यवस्था में नौकरशाहों को इन दिशामानों के अनुरूप कार्य करना होता है —

1. वे वैयक्तिक रूप से स्वतन्त्र होते हैं और केवल सरकारी उत्तरदायित्वों के अधीनस्थ रहते हैं।
2. उनके पद एक सुस्थापित प्रशासनिक संरचना के निहित होते हैं।
3. प्रत्येक पद का वैधानिक दृष्टि से स्पष्ट रूप से निर्धारित कार्यक्षेत्र होता है।
4. प्रत्येक पद के लिए स्वतंत्र चयन होता है।
5. पदाधिकारियों का योग्यता के आधार पर चयन होता है, न कि चुनाव।
6. पदाधिकारियों के वेतन सुनिर्दिष्ट होते हैं और कुछेक परिस्थितियों को छोड़ कर इनकी सेवाओं को समाप्त नहीं किया जा सकता।
7. यह पद ही पदाधिकारी का मुख्य जीवन आधार होना चाहिए।
8. सेवा में वरिष्ठता और योग्यता के आधार पर पदोन्नति का प्रावधान होता है।
9. पदाधिकारी अपने पद के महत्व को ध्यान में न रखते हुए वस्तुपरकता से कार्य करता है।
10. पदाधिकारी, पद से सम्बन्धित कठोर अनुशासन के अन्तर्गत कार्य करता है।

इस आदर्श परिकल्पना के आधार पर भारतीय नौकरशाही के सामाजिक इतिहास पर दृष्टिपात किया जा सकता है। मैक्स वेबर ने भारतीय इतिहास का विश्लेषण करते हुए यह मत व्यक्त किया है प्राचीन भारतीय समाज में तार्किक एवं वैधानिक शक्ति और नौकरशाही संगठन के विकास की परिस्थितियाँ उपलब्ध नहीं थीं। वैसे कौटिल्य के, 'अर्थशास्त्र' के अध्ययन से यह प्रतीत होता है कि राज्य प्रशासन की एक निश्चित संरचना थी और राजा के सलाहकार शक्ति-क्षेत्र के आधार पर इस संरचना में जुड़े हुए थे। किन्तु, यह प्रशासनिक व्यवस्था, आधुनिक प्रारूप से मूलभूत रूप में भिन्न थी। पद प्राप्ति के लिए चयन राजा और उसके सलाहकारों पर निर्भर था, विधि सबके लिए समान थी और उच्च वर्ग के प्रति पक्षधर थी तथा सामाजिक और फौजदारी संहिताएं भी कुछेक जातियों, व्यक्तियों और पदों की पक्षधर थी। इसी प्रकार राज-काज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसी सर्वमान्य वैधानिक संविधान के अनुरूप न हो कर राजा की मर्जी से जारी किए फरमानों द्वारा चलाया जाता था। पदाधिकारी विधि के प्रति समर्पित न हो कर राजा के प्रति निष्ठा को समर्पित थे। न तो पदों के अधिकार क्षेत्र परिभाषित थे; न उनका कार्यकाल और न ही पदाधिकारियों के वेतन और भत्ते। मुगल-काल में भी प्रशासनिक व्यवस्था का स्वरूप कुछेक परिवर्तनों के अतिरिक्त वैसा ही बना रहा, हालांकि इस काल में हिन्दू और मुगल विधि, दोनों को प्रशासन और न्याय का आधार बनाने का प्रयत्न किया गया। कुल मिला कर तात्पर्य यह कि प्राचीन और मध्यकालीन युगों में प्रशासनिक व्यवस्था शासक के व्यक्तित्व पर केन्द्रित थी। व्यवस्था भले ही थी परन्तु वह वेबर द्वारा आधुनिक काल के लिए निरुपित किए गए सिद्धांतों से काफी भिन्न थी।

नौकरशाही को उसका वर्तमान स्वरूप प्रदान करने में ब्रिटिश शासन की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण रही है। ब्रिटिश काल में ही इस व्यवस्था को वैज्ञानिक आधार प्राप्त हुआ और नौकरशाही में व्यावसायिक दृष्टिकोण का विकास हुआ। नौकरशाही के जिस रूप को यहाँ लागू किया गया वह अन्य देशों में भी कार्यान्वित हुआ, परन्तु भारतीय परिस्थितियों ने यहाँ की प्रशासनिक व्यवस्था को एक विशिष्ट स्वरूप भी प्रदान किया। इसके प्रमुख लक्षण थे—शैक्षिक योग्यता के आधार पर खुला चयन, नौकरशाही की राजनीतिक परिवर्तनों से अलग रहते हुए सतत्ता, सुनिर्दिष्ठ शासकीय पद संरचना जिसमें प्रत्येक पद का अधिकार-क्षेत्र परिभाषित था, प्रत्याभूत वेतन-मान, वरिष्ठता और योग्यता के आधार पर पदोन्नति, आदि। हालांकि कि इस संदर्भ में एक दिलचस्प तथ्य यह है कि नौकरशाही के इन गुणों का पूरी तौर पर ब्रिटेन से आयात नहीं किया गया। इनमें से बहुतेरे स्वयं ब्रिटिश व्यवस्था में उपस्थित नहीं थे जब भारतवर्ष में इन्हें लागू किया गया। ह्यू टिकर के अनुसार, "अठारहवीं सदी की ब्रिटिश सिविल सर्विसेज में उपर्युक्त कोई भी लक्षण नहीं देखा जा सकता था। राजनीतिक और प्रशासनिक क्षेत्रों का पृथीकरण नहीं था और लोग अलग-अलग समय पर दोनों क्षेत्रों में कार्य करने के लिए स्वतन्त्र थे। नियुक्ति का आधार राजनीतिक प्रश्रय था और वेतन विशिष्ट नियुक्तियों के लिए वैयक्तिक रूप से निर्धारित किया जाता था।" भारतवर्ष में सिविल सेवा को वैज्ञानिक संरचना के तहत लाने का मुख्य उद्देश्य यह था कि सुपरिभाषित अधिकार क्षेत्रों और वेतनमानों के अभाव में कम्पनी के अफसर अक्सर इतना धन बटोरने में सफल हो जाते थे कि उसके माध्यम से वे ब्रिटिश राजनीति में निर्णायक एवं प्रभावकारी भूमिका निभाने के योग्य हो जाते थे। भारतीय नौकरशाही को वस्तुपरक आधार प्रदान करने में 1784 के पिट्स इण्डिया एक्ट ने पहला महत्वपूर्ण कार्य किया जब सुस्पष्ट वेतन, कार्य और पदोन्नति क्षेत्रों की व्याख्या की गयी।

वैसे समाजशास्त्रियों के अनुसार इस समय से स्वतंत्रता की प्राप्ति तक, भारतीय नौकरशाही की सामाजिक संरचना को तीन श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है। पहला चरण ईस्ट इण्डिया कम्पनी के शासन के समय का है जो कि लगभग 1600 और 1740 के बीच आंका जा सकता है जबकि नौकरशाही मुख्यतः व्यापार से सम्बंधित थी। सन् 1740 से 1947 तक के समय को नौकरशाही का वह चरण कहा जा सकता है जब उसमें अपने उत्तरदायित्वों के प्रति एक व्यावसायिक दृष्टिकोण का विकास हुआ। और, तदोपरांत आरम्भ हुआ चरण व्यावसायिकता और राष्ट्रीयता के मिले-जुले दृष्टिकोण से प्रभावित रहा।

कम्पनी युग में नौकरशाही में नियुक्ति का आधार उसके निदेशकों के मित्रवत सम्बंध या पारिवारिक सम्बंध हुआ करते थे। ऐसे अधिकारी समाज के प्रवर, उच्च या उच्च-मध्य वर्ग से आने की बजाय ब्रिटेन की वाणिज्य और व्यापारिक पृष्ठभूमि से सम्बंध रखते थे क्योंकि इस समय प्रशासन का मुख्य उद्देश्य व्यापार और वाणिज्य गतिविधियों को बढ़ाना था। साथ ही साथ इन अधिकारियों को व्यक्तिगत व्यापार करने की भी छूट थी। इसका परिणाम यह हुआ कि नौकरशाही में अपने उत्तरदायित्वों के प्रति व्यावसायिक दृष्टिकोण का विकास न हो सका।

किन्तु, पहले बताए गए कारणों के आधार पर 18वीं सदी के पूर्वार्द्ध से इस स्थिति में परिवर्तन होना प्रारम्भ हुए। "प्रश्रय" की तुलना में योग्यता को महत्व दिया जाना प्रारम्भ हुआ और नौकरशाही के वरिष्ठ पद इण्डियन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिविल सर्विसेज के अधिकारियों के लिए सुरक्षित कर दिए गए। इससे इस क्षेत्र में सततता और व्यावसायिकता का विकास प्रारम्भ हुआ। नौकरशाही को व्यापक सामाजिक आधार देने के लिए 1833 में, मध्य और निम्न वर्ग के पदों में भारतीय लोगों की नियुक्ति आरम्भ हुई। सिविल सेवाओं के लिए खुली प्रतियोगिता की शुरूआत 1855 में हुई जब भारतीय जन को इसमें भाग लेने का अवसर मिला। 1864 में पहले भारतीय सत्येन्द्रनाथ टैगोर इण्डियन सिविल सर्विसेज में चुने गए और 1869 सुरेन्द्रनाथ बैनर्जी, रोमेश चन्द्र दत्त, बिहारीलाल गुप्ता और एस. बी. ठाकुर जैसे व्यक्तित्व इस व्यवस्था के लिए चुने जा चुके थे।

इसके बावजूद अभी भी नौकरशाही संरचना भारतीय समाज से मीलों दूर थी। 1876 में प्रतियोगिता के लिए उच्चतम आयु सीमा 21 वर्ष से घटा कर 19 वर्ष कर दी गई। प्रतियोगिता में भाग लेने के पूर्व स्नातक की उपाधि प्राप्त करने के लिए भारतीय जन को 15 वर्ष की आयु में ब्रिटेन जाना आवश्यक हो गया जिससे सिविल सर्विसेज में उनका प्रतिनिधित्व न बढ़ सका। जब 1922 में यह परीक्षा भारत (इलाहाबाद) और लंदन में एक साथ सम्पन्न हुई, भारतीय जन को इसमें भाग लेने की सुविधा हुई। भारतीयकरण की दिशा में ली आयोग ने भी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। उसकी सिफारिशों के अनुसार 1939 तक सिविल सर्विसेज में भारतीय और ब्रिटिश अधिकारियों की संख्या समान की जानी थी। इसका परिणाम यह हुआ कि इस अवधि के अंत तक आई. सी. एस. में ब्रिटिश और भारतीय अनुपात 55:45 रह गया।

सिविल सर्विसेज के इस भारतीयकरण को सामाजिक संदर्भ में विश्लेषित किए जाने से यह स्पष्ट होता है कि भारतीय अधिकारियों में बाहुल्य केवल दो जातियों का था—ब्राह्मण एवं कायस्थ। इसका कारण यह था कि मुगल काल से ही यह दोनों जातियाँ राजकीय कार्यों से जुड़ी रहीं, आधुनिकीकरण की प्रक्रिया में यह सदैव आगे रही और बदलती परिस्थितियों में इन्होंने व्यावसायिक दृष्टिकोण अपनाया। इस विश्लेषण से यह तथ्य उभर कर सामने आता है कि भारतीयकरण के नाम पर अधिकांशतः ऐसे ही लोग सिविल सर्विसेज में चुने गए जिनकी मानसिकता आधुनिक पाश्चात्य मूल्यों से प्रभावित थी। अतः यह स्वाभाविक था, कि राष्ट्रीय स्वतन्त्रता आंदोलन के नेताओं में इस नौकरशाही के प्रति संशय का भाव जागृत हो। ऐसा नहीं कि सभी सिविल सर्विसेज अधिकारी साम्राज्यवाद के पक्षधर थे। वस्तुतः अधिकांश राष्ट्रीयता और व्यावसायिक कार्य कौशल, दोनों के ही लिए प्रतिबद्ध थे. हालांकि व्यावसायिक दृष्टिकोण को उन्होंने अधिक महत्व दिया जिससे स्वातन्त्र्योत्तर काल में उन्हें भारतीय शासकों के साथ कार्य करने में सुविधा हुई।

स्वातंत्र्योत्तर काल में भारतीय नौकरशाही में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए। भारतीयकरण की प्रक्रिया ने जोर पकड़ा और 1982 तक भारतीय प्रशासनिक सेवा में कोई भी आई. सी. एस. अधिकारी नहीं रह गया था। दूसरा महत्वपूर्ण परिवर्तन, प्रशासकों का प्रशिक्षण था जो कि अब पूर्ण रूप से देश में ही होना आरम्भ हो गया। और, तीसरा उल्लेखनीय परिवर्तन नौकरशाही के व्यापक होते हुए सामाजिक संदर्भ से था।

पहले परिवर्तन के फलस्वरूप तथा दूसरे के प्रभाववश नौकरशाही में भारतीय सामाजिकता और संवैधानिकता के प्रति अभिरुचि जागृत करने का प्रयास किया गया जब कि तीसरे परिवर्तन के परिणामवश देश और समाज के विभिन्न वर्गों को व्यवस्था में स्थान दिया जाना आरम्भ हुआ। एक सर्वे रिपोर्ट के अनुसार प्रति वर्ष नियुक्त किये जाने वाले अफसरों में लगभग 55% ऐसे परिवारों से आते हैं जिनकी आय 500 रु. से 1200 रु. के बीच होती हैं। इनमें से अधिकांश सरकारी अधिकारियों के परिवार के भी होते हैं। लगभग 33% प्रशिक्षार्थी इस आय वर्ग से ऊपर के परिवारों से सम्बन्धित होते है। जब कि 12% ऐसे होते हैं जिनके परिवारों की आय 500 रु. से कम होती है। सरकारी अधिकारियों के बाद, शिक्षकों और वकीलों के परिवार के ही लोग नौकरशाही में आना पसन्द करते हैं। ग्रामीण और कृषि अंचल जो कि असली भारतवर्ष का निर्माण करता है, इस व्यवस्था में अभी भी केवल नाम मात्र के लिए विद्यमान है।

इस सर्वेक्षण से कुछ महत्वपूर्ण निष्कर्ष निकाले जा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकते हैं। पहला यह कि स्वतन्त्रता के बाद भी, स्वतन्त्रता प्राप्ति के पहले की ही तरह, नौकरशाही में उच्च-मध्यम या उच्च वर्ग का प्रभुत्व है। ऐसा इसलिए क्योंकि तीन वर्ष पूर्व तक प्रतियोगितात्मक परीक्षा का माध्यम अंग्रेजी था और केवल इसी वर्ग के लोग अंग्रेजी माध्यम के महँगे विद्यालयों में शिक्षा ग्रहण कर सकते थे। उपर्युक्त परीक्षा में सन् 1979 से क्षेत्रीय भाषाओं को स्थान दे कर सरकार ने निस्संदेह प्रतिभा चयन के आधार को व्यापक बनाने का प्रयत्न किया है, हालाँकि इसका प्रभाव आने में अभी कुछ समय लगेगा क्योंकि अभी भी उच्च शिक्षा के लिए पठनीय सामग्री क्षेत्रीय भाषाओं में उपलब्ध नहीं है। दूसरा निष्कर्ष भी इसी शिक्षा प्रणाली से जुड़ा हुआ है। पब्लिक स्कूलों में अंग्रेजी माध्यम से पढ़े बच्चे भारतीय समाज की मुख्यधारा से अलग रहकर विकसित होते हैं। इससे उनके मूल्य जीवन की वास्तविकताओं से दूर होते जाते हैं और साथ ही उनके भीतर बहुमत के प्रति हीनता का भाव दृष्टिगत होता है। हालाँकि आज-कल प्रशिक्षण के दौरान इस बात का पूरा प्रयत्न किया जाता है कि प्रशिक्षार्थी समाज की वास्तविकताओं को जाने में समझे, बचपन से विकसित हुई मानसिकता और मूल्यों को कुछेक महीनों में बदला नहीं जा सकता। तीसरा निष्कर्ष इसलिए यह है कि जब ऐसे अधिकारी कार्यभार संभालते हैं वे स्वयं को जनता के सेवक या कल्याणकारी रूप में न देखकर शासक के रूप में देखते हैं। ग्रामीण अंचल से जुड़ी हुई समस्याओं से वे अनभिज्ञ रहते हैं और शासकीय मानसिकता उन्हें इनको जानने का प्रयास भी नहीं करने देती। एक अन्य निष्कर्ष यह भी है कि चूँकि हमारा समाज अभी भी सरकारी अफसरों को एक विशिष्ट महत्व प्रदान करता है क्योंकि उनके पास शक्ति अधिकार है, आज कल के नवयुवक सरकारी सेवा में इसलिए नहीं जाना चाहते कि एक अधिकारी की हैसियत से वे सकारात्मक विकास कार्य कर सकेंगे बल्कि इसलिए कि समाज में उन्हें एक विशिष्ट स्थान मिलेगा, उनका विवाह किसी सुन्दर कन्या से हो सकेगा और जब मोटर में बैठ कर वो सड़क पर निकलेंगे तो लोग कहेंगे कि 'अरे भाई, डी0 एम0 साहब जा रहे हैं,' जिसे सुन कर या अनुभव करके उनके अहं को अभूतपूर्व सन्तोष प्राप्त होगा। नौकरशाही के इस सामाजिक संदर्भ का एक सबसे महत्वपूर्ण राजनैतिज्ञों के साथ उसके पारस्परिक सम्बन्धों को ले कर है। ब्रिटिश काल में भारतीय राजनेताओं ने नौकरशाही को ब्रिटिश औपनिवेश का अंग माना। स्वतंत्रता के बाद भी इस दृष्टिकोण में कोई मूलभूत परिवर्तन नहीं हुआ। नौकरशाह आज भी शैक्षिक और सामाजिक रूप से अपने को उस ग्रामीण राजनीतिज्ञ की अपेक्षा श्रेष्ठ समझता जो या तो अशिक्षित है या अंग्रेजी बोलना ही नहीं जानता। फलस्वरूप आज भी व्यवस्था के इन दोनों अंगों के प्रति अविश्वास की भावना अधिकांशतः बनी हुई है।

नौकरशाही सामाजिक विकास के कार्य में तभी सफल हो सकती है जबकि वह अपने उत्तरदायित्वों को सामाजिक कल्याण के सन्दर्भ में निरुपित करें। इसके लिए आवश्यक है कि वह देश के आम आदमी और उसके जीवन परिवेश को प्रत्यक्ष अनुभव द्वारा समझने और जानने का प्रयत्न करें। नौकरशाही को यह तथ्य आत्मसात कर लेना होगा कि जनमानस में कुण्ठा और असन्तोष की वृद्धि किसी भी व्यवस्था के अस्तित्व के लिए गंभीर संकट खड़ा कर सकती है और नौकरशाही व्यवस्था के प्रमुख आधारों में से एक है।

पी० सी० एस० तथा अन्य प्रतियोगितात्मक
परीक्षाओं के लिये
उपयोगी तथा महत्वपूर्ण पुस्तक

प्राचीन भारत का इतिहास

(प्रारम्भ से १२ वीं शती तक)
अपने नवीन संशोधित तथा परिवर्द्धित संस्करण में
लेखक : प्रो० के० सी० श्रीवास्तव
भूमिका
प्रो० जे० एस० नेगी
(इलाहाबाद विश्वविद्यालय)
प्रकाशक
यूनाइटेड बुक डिपो
यूनिवर्सिटी रोड, इलाहाबाद-२११००२
(पुस्तक वी० पी० पी० से मंगाने हेतु उपर्युक्त पते पर रु० १०/ अग्रिम धनादेश (Money order) के साथ भेजें)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

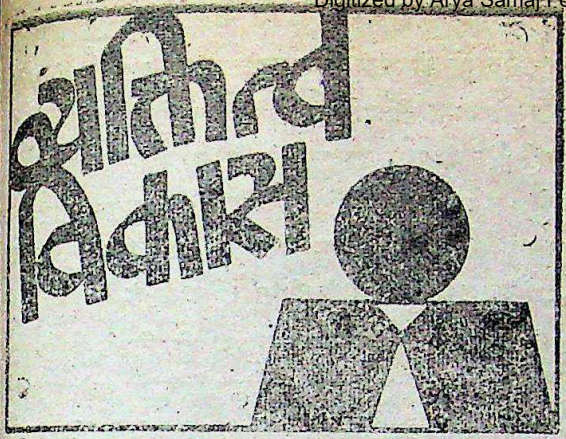

सिविल सर्विस साक्षात्कार परीक्षा हेतु विशेष परिस्थितियाँ-1

साक्षात्कार के दौरान कभी-कभी आयोग के सदस्य अभ्यर्थी को कुछ ऐसी असामान्य और असाधारण परिस्थितियों में डाल देते हैं जिनसे निकलने के लिए अभ्यर्थी को पहले से कोई रास्ता नहीं सुझाया जा सकता है। ऐसे समय में काम आती है आप की तात्कालिक बुद्धि। अनुभव के आधार पर कुछ ऐसी ही परिस्थितियों का वर्णन किया जा सकता है जिनके संदर्भ में आप उपर्युक्त कथन को भलीभाँति समझ सकेंगे।

अभ्यर्थी साक्षात्कार-कक्ष में प्रवेश करता है और देखता है कि सभी सदस्य कुछ पढ़ने में व्यस्त हैं। अभ्यर्थी की ओर बिल्कुल ध्यान नहीं दिया जाता। न तो उसके अभिवादन का उत्तर मिलता है और न ही उससे बैठने को कहा जाता है। प्रश्न उठता है कि ऐसी स्थिति में अभ्यर्थी क्या करे- क्या वह तब तक खड़ा रहे जब तक अध्यक्ष उससे बैठने को नहीं कहते या बिना आज्ञा लिए ही वह कुर्सी पर बैठ जाय? दोनों में से किसी भी विकल्प को अपनाना हितकर नहीं होगा। पहले मार्ग को अपनाने से यह स्पष्ट होगा कि अभ्यर्थी असामान्य परिस्थितियों में सार्थक निर्णय लेने में अक्षम है और वह परिस्थितियों को परिवर्तित करने का प्रयत्न करने के स्थान पर परिस्थितियों में स्वतः परिवर्तन की प्रतीक्षा करना बेहतर समझता है। निश्चित रूप से ऐसा यथास्थितिवादी व्यक्तित्व एक विकासशील देश की प्रशासकीय सेवाओं के लिए उपयुक्त नहीं कहा जा सकता। अभ्यर्थी यदि दूसरा मार्ग लेता है और बिना आज्ञा लिए हुए कुर्सी पर बैठ जाता है तो इसे अभद्रता का परिचायक समझा जायगा और ऐसा प्रतीत होगा कि अभ्यर्थी प्रशासकीय संस्कृति जिसमें शिष्टाचार के छोटे से छोटे पहलू पर अत्यधिक महत्व दिया जाता है, से पूर्णतया अनभिज्ञ है। तो फिर ऐसी स्थिति में क्या किया जाय?

यदि अभिवादन का उत्तर नहीं दिया जाता तो कुछ क्षणों बाद अभ्यर्थी पुनः अभिवादन करते हुए यह कह सकता है कि, "क्षमा करें श्रीमन, संभवतः इसी समय मुझे आपके समक्ष उपस्थित होने को कहा गया है।" 'सम्मान पूर्वक ढंग से इस प्रकार अभ्यर्थी आयोग का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट करके मौन भंग कर सकता है। ऐसी स्थिति में कुछ अभ्यर्थियों के उत्तर इस प्रकार के भी हो सकते हैं, "कृपया ध्यान दें श्रीमन, मैं साक्षात्कार के लिए आया हूँ, या, "श्रीमन, यदि आपके पास अभी समय न हो तो मैं फिर कभी भी आ सकता हूँ।" इस प्रकार के उत्तर अहंकारी और अविवेकशील व्यक्तित्व का पता देते हैं। अभ्यर्थियों को यह सदैव ध्यान में रखना चाहिए कि आयोग स्वाभाविक रूप से आपकी उपेक्षा नहीं कर रहा है और न ही वह आपका अपमान करना चाहता है। वास्तविकता यह है कि ऐसी परिस्थिति कृत्रिम रूप से बनाई गई है, परन्तु जिसका उद्देश्य आपके स्वाभाविक व्यक्तित्व को प्रकाश में लाना है। यहाँ एक और तथ्य की ओर भी ध्यान दिया जाना आवश्यक है कि बहुधा इन परिस्थितियों का सामना उन अभ्यर्थियों को करना पड़ता है जिनके पिछले जीवन वृत्त को देखते हुए आयोग यह अनुमान लगाता है कि अभ्यर्थी में अहंकारी लक्षण हो सकते हैं। उदाहरण के तौर पर एक अभ्यर्थी जो सदैव प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होता आया है और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिसने खेलकूद और सांस्कृतिक क्षेत्रों में भी उपलब्धियां अर्जित की है, वह स्वयं को इतना महत्वपूर्ण समझने लगा हो कि उसने कभी इस बात पर विचार ही न किया हो कि वरिष्ठ अधिकारियों के प्रति शिष्ट व्यवहार के क्या आयाम होते हैं। ऐसे अभ्यर्थी को यदि उक्त स्थिति में डाल दिया जाय तो यह संभव है कि वह आयोग पर अनुकूल प्रभाव छोड़ने में सफल न हो। उसके अभिवादन का उत्तर न दिए जाने को वह अपना अपमान समझेगा और परिस्थिति की गहनता और आयोग के उद्देश्य को समझने में पूर्णरूप से असफल रहेगा।

साक्षात्कार के दौरान कभी-कभी अभ्यर्थी की प्रतिक्रियाओं को परखने के लिए आयोग के सदस्य कुछ अन्य तरीके भी अपनाते हैं। जब अभ्यर्थी किसी एक सदस्य द्वारा पूछे गए प्रश्न का उत्तर दे रहा होगा, तभी बीच में दूसरा सदस्य भी कोई प्रश्न कर बैठेगा। ऐसे में अभ्यर्थी के सम्मुख यह दुविधा उत्पन्न हो जाती है कि वह पहले सदस्य द्वारा पूछे गए प्रश्न के उत्तर को समाप्त करे या उसे बीच में अधूरा छोड़ कर दूसरे सदस्य के प्रश्न का उत्तर देना आरम्भ कर दे। यदि उत्तर को अधूरा छोड़ दिया जाता है तो पहले सदस्य का अपमान होता है और यदि दूसरे प्रश्न की उपेक्षा की जाती है तो दूसरे सदस्य का अपमान होता है। इसलिए ऐसी स्थिति में अभ्यर्थी के सम्मुख दो विकल्प होते हैं। वह दूसरे सदस्य से कह सकता है कि; "श्रीमन, यदि आज्ञा हो तो मैं पहले प्रश्न के उत्तर को समाप्त कर लूं," या वह पहले सदस्य से पूछ सकता है कि, "श्रीमन यदि आप कहें तो मैं नए प्रश्न का उत्तर देना आरम्भ करूं।" सम्बन्धित सदस्यों की आज्ञा के बिना किसी प्रश्न के उत्तर को बीच में छोड़ कर नए प्रश्न की ओर ध्यान देना उचित नहीं कहा जायगा।

कभी-कभी अभ्यर्थी यह भी पाएंगे कि जब वह किसी सदस्य द्वारा पूछे गए प्रश्न का उत्तर दे रहे हैं तो कोई अन्य दो या तीन सदस्य आपके वार्तालाप की पूर्ण उपेक्षा करते हुए आपस में जोर-जोर से बातचीत करने लगे हैं। कुछ अभ्यर्थी शायद यह समझें कि जब तक उन सदस्यों की आपसी बातचीत समाप्त नहीं हो जाती, चुप हो जाना ही उचित है। लेकिन ऐसा सोचना ठीक नहीं है। जब तक प्रश्न पूछने वाले सदस्य आपके उत्तर को ध्यान पूर्वक सुन रहे हैं, आपको अपना उत्तर जारी रखना चाहिए और अन्य सदस्यों की आपसी बातचीत पर ध्यान नहीं देना चाहिए। कभी-कभी यह भी हो सकता है प्रश्न पूछने वाला सदस्य ही किसी दूसरे सदस्य के साथ उक्त विषय पर विचार-विमर्श करना आरम्भ कर दे। हाँ, इस स्थिति में आपका थोड़ी देर के लिए चुप रहना ही उचित रहेगा। सदस्यों की बातचीत समाप्त होने के बाद यदि आप अपने विचार प्रस्तुत करें तो बेहतर होगा। यह भी हो सकता है कि जब आप बोल रहे हों तो कुछ सदस्य आपस में कुछ लिखित नोटों का आदान-प्रदान करने लगें। एक अभ्यर्थी को यह जानने की उत्सुकता हो सकती है कि इन नोटों में क्या लिखा जा रहा है और कहीं यह सब कुछ उसके बारे में ही तो नहीं लिखा जा रहा है। अभ्यर्थी को ऐसे प्रलोभन से बचना चाहिए। सदस्यों के पारस्परिक विचार विनिमय में अभ्यर्थी को प्रवेश करने का अधिकार नहीं है। इसलिए ऐसा करना शिष्टाचार के नियमों के विरुद्ध होगा। एक स्थिति यह भी आ सकती है कि प्रश्न पूछने वाला सदस्य ही किसी दूसरी तरफ देखने लगे, कुछ पढ़ने या लिखने लगे। इसे देख कर यह समझना गलत होगा कि उक्त सदस्य अभ्यर्थी की उपेक्षा कर रहा है। वास्तव में इसके पीछे साक्षात्कार का एक बड़ा ही महत्वपूर्ण रहस्य है। नियमानुसार, सभी उत्तर आयोग के अध्यक्ष को ही सम्बोधित किए जाने चाहिए। इसका तात्पर्य यह नहीं है कि प्रश्न पूछने वाले तथा अन्य सदस्यों की पूरी तरह से उपेक्षा कर दी जाय। अपेक्षा यह की जाती है कि अभ्यर्थी सम्बंधित सदस्य के साथ-साथ अन्य सदस्यों की ओर भी यथोचित ध्यान देते हुए, अन्ततः अपनी दृष्टि आयोग के अध्यक्ष की ओर केन्द्रित रखेगा। ■

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

□शंकर

विश्व के अस्वशासित प्रदेश : स्वतन्त्रता की प्रतीक्षा

यूरोप में औद्योगिक क्रान्ति के आगमन के पश्चात यूरोपीय राष्ट्रों, विशेषकर पश्चिमी यूरोपीय राष्ट्र, के लिये आवश्यक हो गया कि वे अपनी शक्ति, प्रभाव व मर्यादा की वृद्धि, ईसाई धर्म के प्रचार व प्रसार तथा सस्ते कच्चे माल के आयात तथा बने हुए माल के निर्यात हेतु बाजार आरक्षित करने के लिये दुनिया के हर सम्भव स्थान पर अपने उपनिवेश स्थापित करे। इन राष्ट्रों को अपने उद्देश्यों के क्रियान्वयन में मिली आशातित सफलता के फलस्वरूप प्रथम विश्व युद्ध तक विश्व की 72% क्षेत्र की 69% जनसंख्या किसी न किसी रूप में औपनिवेशिक (Colonial) बेड़ियों में जकड़ गये। इसमें 50% क्षेत्र की 31.5% जनसंख्या पूर्णरूप से औपनिवेशिक राष्ट्रों के अधीन थे और शेष अर्द्ध औपनिवेशिक स्थिति में थी। इस समय उपनिवेशवाद अपनी चरम सीमा पर था परन्तु साथ ही, इसके ह्रास व अवनति के लिये आवश्यक परिस्थितियों का निर्माण होना भी प्रारम्भ होने लगा था। साम्राज्यवाद व उपनिवेशवाद (Colonialism) को पहला धक्का 1905 में रूस में जारशाही के विरुद्ध जनक्रान्ति के फलस्वरूप मिला। प्रथम विश्व युद्ध के दौरान अमेरिकी राष्ट्रपति वुड्रो विल्सन द्वारा घोषित 14 सूत्रीय घोषणा के अन्तर्गत सम्पूर्ण विश्व में लोकतन्त्र की स्थापना, तथा द्वितीय विश्व युद्ध में फासीवाद के पराजय के परिणामस्वरूप उत्पन्न उदारवाद की लहर से सम्पूर्ण औपनिवेशिक व्यवस्था बालू की टीलों की भांति ढहने को पूर्णयतः तैयार हो गयी। परन्तु प्रश्न यह था कि इसको ढहने में कितना समय लगेगा।

1945 में सं. रा. संघ का चार्टर को लिखते समय उपनिवेशविरोधी आन्दोलन ने वह उग्र रूप धारण न कर लिया था जो कि उसने अगले दशक में किया था। प्रभावशाली विरोध के अभाव का सम्पूर्ण लाभ औपनिवेशिक शक्तियों ने उठाया। इन शक्तियों ने न केवल न्यास पद्धति के अन्तर्गत अपने औपनिवेशिक क्षेत्र को बढ़ाया बल्कि चार्टर में स्पष्ट रूप से उपनिवेश विरोधी किसी भी बात का उल्लेख नहीं होने दिया। उपनिवेशों (सं. रा. संघ के चार्टर में 'गैर स्वशासित प्रदेश' (Nonself governing territories) शब्द का प्रयोग किया गया), से सम्बन्धित सभी प्रावधानों को चार्टर के अध्याय 11 के अनुच्छेद 73 में स्थान दिया गया है। "गैर स्वशासित प्रदेशों के सम्बन्ध में घोषणा" के नाम से अभिहित यह अध्याय औपनिवेशिक राष्ट्रों और उपनिवेशवादविरोधी शक्तियों के उद्देश्यों के मध्य समझौते का परिणाम था। फिर भी औपनिवेशिक शक्तियों का पलड़ा भारी रहा। उपनिवेशविरोधी शक्तियाँ नैतिकता के अतिरिक्त किसी भी आधार पर परतन्त्र लोगों के अधिकारों के लिये संघर्ष के लिये असक्षम थे। फिर, औपनिवेशिक राष्ट्रों द्वारा नियन्त्रित सं. रा. संघ जैसे अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों से आशा करना भी व्यर्थ था। इसलिये चार्टर में उपनिवेशवाद के सम्बन्ध में, चाहे वह कुछ भी लिखा गया हो, उपनिवेशवाद विरोधी आन्दोलन के प्रारम्भिक अवस्था को देखते हुए निराशाजनक मानना सर्वथा गलत होगा। चूंकि यह घोषणा उपनिवेश तथा वहाँ के लोगों के अधिकारों का समर्थन कर नये मिसालों का निरूपण करता है और इन परतन्त्र लोगों के प्रति औपनिवेशिक राष्ट्रों के कर्तव्यों का उल्लेख करता है, अतएव इस घोषणा के क्रान्तिकारी स्वरूप को देखते हुए इसे "बिल ऑव राइट्स" की संज्ञा दी जा सकती है।

चार्टर के अनुच्छेद 73 का पालन करते हुए औपनिवेशिक शक्तियाँ इस सिद्धान्त की मान्यता करेंगे कि उन प्रदेशों, जहाँ के लोगों ने पूर्ण रूप से स्वतन्त्रता नहीं प्राप्त की है, के निवासियों के हितों की रक्षा सर्वोपरि है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और साथ में वे उन लोगों की अधिक से अधिक भलाई करेंगे। इसके लिये वे इन उपनिवेशों के लोगों की संस्कृति का पूरा-पूरा ध्यान रखते हुए उनकी राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक व शैक्षिक प्रगति, उनके साथ अन्यायपूर्ण व्यवहार और दुर्व्यवहार से रक्षा करेंगे। प्रत्येक उपनिवेश और उनके निवासियों की परिस्थितियों और विकास की भिन्न अवस्था के अनुसार उनमें स्वशासन को, उनकी राजनीतिक आकाँक्षाओं को ध्यान में रखते हुए बढ़ावा देंगे तथा उनकी स्वतन्त्र राजनीतिक संस्थाओं के अधिकाधिक विकास में सहायता देंगे। लेकिन औपनिवेशिक शक्तियाँ अपने उपनिवेशों को राजनीतिक स्वतन्त्रता प्रदान करने हेतु बाध्य नहीं है।

अन्य तथ्यों के अलावा इस घोषणा के फलस्वरूप 1945 से 1959 के मध्य भारत, पाकिस्तान, श्रीलंका, चीन, इण्डोनेशिया, वियतनाम, सूदान, मोरक्को, घाना, गिनी आदि उपनिवेशों को राजनीतिक स्वतन्त्रता प्राप्त हुई। परन्तु ऐसे नवस्वतन्त्र राष्ट्रों की सख्या नगण्य थी। शेष उपनिवेशों की मुक्ति के लिये अनुच्छेद 73 में उल्लेखित "गैर स्वशासित प्रदेशों के सम्बन्ध में घोषणा" पर्याप्त नहीं था। विश्व के शेष उपनिवेशों के शीघ्रातिशीघ्र मुक्ति के लिये सं. रा. संघ के एक ऐसे कदम की आवश्यकता महसूस होने लगी जिससे कि सभी औपनिवेशिक शक्तियाँ अपने उपनिवेशों को जल्द से जल्द स्वाधीनता प्रदान करें। पाँचवें दशक में अन्त तक अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति एवं सं. रा. संघ में नव स्वतन्त्र राष्ट्रों की संख्यात्मक बाहुल्यता, और इन राष्ट्रों के उग्रवादी उपनिवेशवाद विरोधी दृष्टिकोण के कारण औपनिवेशिक शक्तियों पर दबाव निरन्तर बढ़ने लगा। उपनिवेशवाद के मसले पर असंलग्न राष्ट्र भी अब उपनिवेशवाद का प्रत्यक्ष रूप से विरोध करने लगे। फलतः 14 दिसम्बर, 1960 को सं. रा. संघ के महासभा ने 90-0 मत से उपनिवेशों और उनके निवासियों को स्वतन्त्रता प्रदान करने के सम्बन्ध में घोषणा पत्र पारित किया। केवल औपनिवेशिक राष्ट्रों (9) ने इस मसले पर मताधिकार का प्रयोग नहीं किया।

घोषणापत्र के अनुसार, "(1) किसी जाति पर विदेशी शासन, अधीनता और शोषण, मूल मानवाधिकारों के हनन ही नहीं बल्कि चार्टर के प्रावधानों के विरुद्ध तथा विश्व शान्ति व सुरक्षा की स्थापना के मार्ग में अवरोधक है। (2) प्रत्येक जाति को अपने स्वशासन का अधिकार है जिसके अनुसार वह स्वतन्त्रता पूर्वक अपना आर्थिक, सामाजिक व सास्कृतिक विकास करे तथा अपनी राजनीतिक स्थिति का निर्धारण कर सके, (3) राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक व शैक्षिक अनुपयुक्तता, स्वतन्त्रता के मार्ग में अवरोधक नहीं होना चाहिए, (4) अस्वयत्तशासी प्रदेशों के निवासियों को बिना किसी प्रकार के जाति, धर्म, रंग आदि के भेदभाव के उनकी घोषित इच्छानुसार बिना किसी शर्त या अनुरक्षण के सत्ता हस्तान्तरित कर दी जायेगी जिससे कि वे पूर्ण स्वतन्त्रता का उपयोग कर सकें, (5) उनके अपने स्वशासन को प्राप्त करने के प्रयास में किसी प्रकार सैनिक शक्ति का प्रयोग नहीं किया जायेगा, (6) किसी प्रदेश की राष्ट्रीय एकता एवं क्षेत्रीय अखण्डता को नष्ट करने का प्रयास चार्टर के उद्देश्य और सिद्धान्त के अनुरूप नहीं होगा तथा (7) सभी राष्ट्र चार्टर के प्रावधानों में प्रदत्त मानवाधिकारों का सदाशयता के साथ तथा वर्तमान उद्घोषणा का राष्ट्रों के समानता के सिद्धान्त पर आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप न करने तथा सभी जातियों की प्रभुसत्ता व क्षेत्रीय अखण्डता के आधार पर करेंगे।

इस प्रकार उपर्युक्त उद्घोषणा ने स्पष्ट रूप से औपनिवेशिक शक्तियों द्वारा अपने-अपने उपनिवेशों को मुक्त करने के उत्तरदायित्वों को सुनिश्चित कर दिया। इस उद्देश्य की पूर्ति की दिशा में औपनिवेशिक शक्तियों द्वारा उठाये गये कदमों के निरीक्षण करने के लिये आम सभा ने 24 सदस्यीय समिति की भी नियुक्ति की। उपनिवेशवाद विरोधी राष्ट्र इस घोषणा को पारित कर चुप नहीं रहे। उन्होंने गुटनिरपेक्ष आन्दोलन के माध्यम से औपनिवेशिक राष्ट्रों पर दबाव बनाये रखा। एक समीक्षक ने ठीक ही कहा कि वास्तव में नव स्वतन्त्र राष्ट्रों की उपनिवेशवाद विरोध की तुलना केवल उनके द्वारा आर्थिक, सामाजिक व राजनीतिक विकास के सम्बन्ध में किये गये उद्विग्नता से की जा सकती है। इस घोषणा पत्र ने एशिया, अफ्रीका व लातीनी अमेरिका के उपनिवेशों के लोगों की जागरूकता को बुरी तरह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

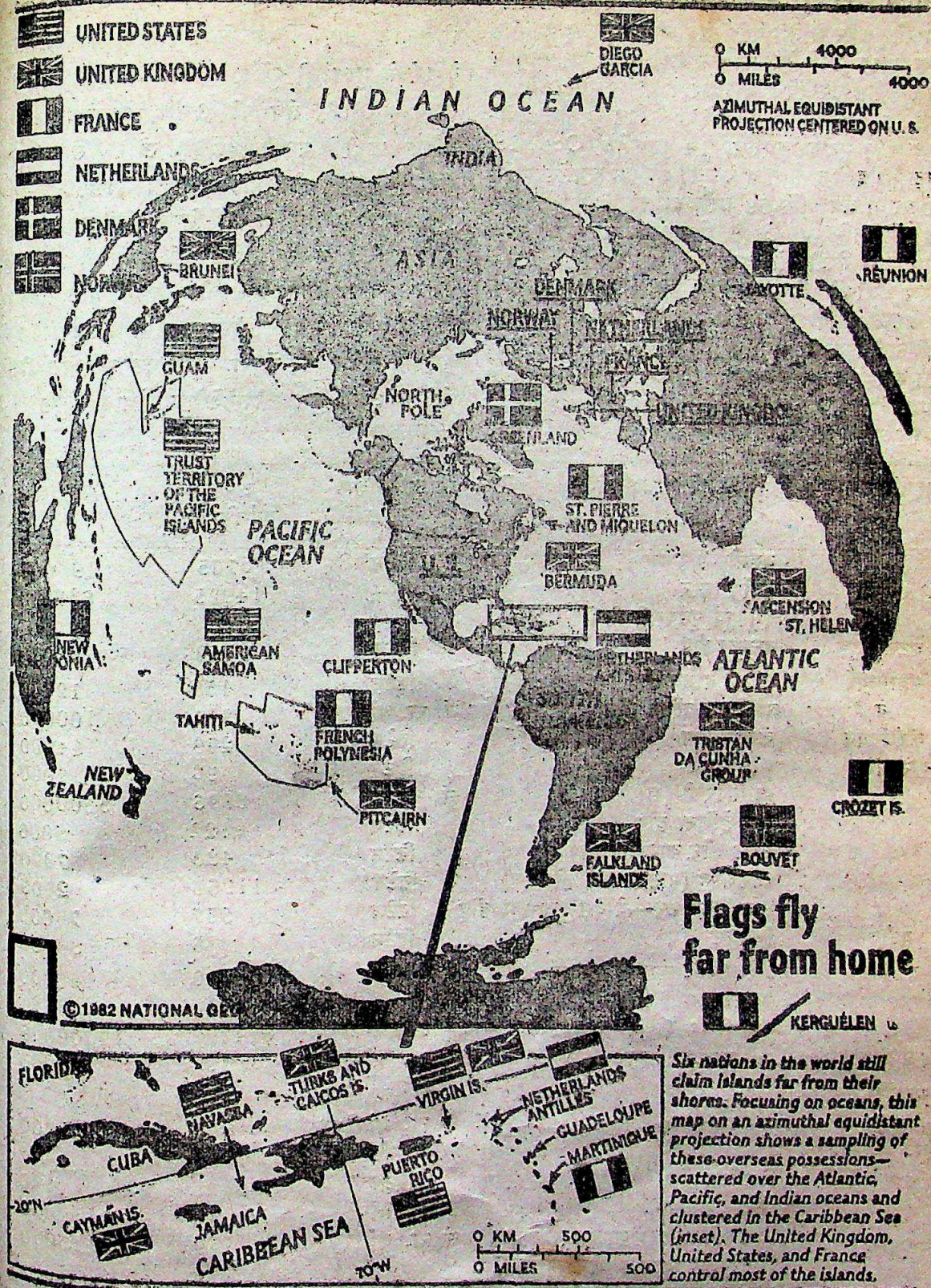

Flags fly far from home

Six nations in the world still claim islands far from their shores. Focusing on oceans, this map on an azimuthal equidistant projection shows a sampling of these overseas possessions—scattered over the Atlantic, Pacific, and Indian oceans and clustered in the Caribbean Sea (inset). The United Kingdom, United States, and France control most of the islands.

Courtesy—National Geographic News Service.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्वेलित किया और फलतः सभी उपनिवेशों में स्वाधीनता की लहर में तेज गति आ गयी। लिहाजा साठ दशक में 17 उपनिवेशों को आजादी मिली। 1960 से अब तक 58 उपनिवेश परातन्त्र के बन्धन से मुक्त हुए। इनमें 25 अफ्रीका के, 7 एशिया के, 11 लातीनी अमेरिका के, 1 यूरोप का तथा 14 सागरीय (Oceanic) राष्ट्र हैं। इन नवस्वतन्त्र राष्ट्रों की कुल जनसंख्या 14 करोड़ तथा क्षेत्रफल 2.59 करोड़ वर्ग कि.मी. है। इनमें से कुछ को शान्तिपूर्ण ढंग से द्विपाक्षिक वार्तालाप द्वारा स्वाधीनता मिली, तो कुछ को सशस्त्र संघर्ष के फलस्वरूप। औपनिवेशिक शक्तियों को भी इन उपनिवेशों पर प्रत्यक्ष नियन्त्रण वर्तमान परिस्थितियों के अनुसार औचित्यहीन लगने लगा क्योंकि वे इन उपनिवेशों को मुक्त कर नव उपनिवेशवाद (Neo-colonialism) के माध्यम से अप्रत्यक्ष रूप से वह सभी लाभ अर्जित करने लगे जो कि प्रत्यक्ष प्रभुत्व के दौरान करते थे।

परन्तु उपनिवेशवाद के पतन का यह अर्थ नहीं है कि आज सम्पूर्ण विश्व में सभी उपनिवेश गुलामी की बेड़ियों से मुक्त हो चुके हैं। आठवें दशक के प्रारम्भ में विश्व के 0.1% क्षेत्र की 0.3% जनसंख्या औपनिवेशिक फन्दों में जकड़ी हुई है। सं. रा. संघ की आम सभा की 1981 की रिपोर्ट के अनुसार, 1960 के उपनिवेशवाद विरोधी घोषणा में निश्चित किये गये उपनिवेशों (अस्वशासित व न्यास क्षेत्र) में अभी भी 20 में 65 लाख लोग परतन्त्रता से अपनी मुक्ति की प्रतीक्षा कर रहे हैं। हालांकि 11 राष्ट्रों के पास अभी भी उपनिवेश बने हुए हैं, ब्रिटेन और सं. रा. अमेरिका सर्वाधिक औपनिवेशिक क्षेत्र (कुल औपनिवेशिक क्षेत्र का 75%) के मालिक है।

महाद्वीप, क्षेत्र	प्रदेश (उपनिवेश)	औपनिवेशिक राष्ट्र	क्षेत्रफल (वर्ग कि. मी.)	जनसंख्या
	बरूनी	ब्रिटेन	5765	190000
एशिया	पूर्वी तिमोर (भूतपूर्व पुर्तगाली तिमोर) (क)	—	14925	637000
अटलान्टिक	बरमुदा द्वीप	ब्रिटेन	53	60000
महासागर	ब्रिटिश वर्जिन द्वीप	ब्रिटेन	153	12000
व	अमेरिकन वर्जिन द्वीप	सं. रा. अमेरिका	344	100000
कैरीबियन	कैमान द्वीप	ब्रिटेन	259	14000
सागर	मांट सेराठ	ब्रिटेन	98	12000
	प्वर्तो रिको (ख)	सं. रा अमेरिका	8896	3300000
	सेन्ट हेलिना द्वीप	ब्रिटेन	122	5000
	टक्स और कायकोस द्वीप	ब्रिटेन	430	7000
	फॉकलैण्ड (माल्वीनास) द्वीप (ग)	ब्रिटेन	11961	2000
	सेन्ट क्रिस्टोफर—नेविस-एन्गुएला द्वीप	ब्रिटेन	357	70000
यूरोप	जिब्राल्टर (घ)	ब्रिटेन	6	30000
अफ्रीका	पश्चिमी सहारा (भूतपूर्व स्पेनी सहारा) (च)	—	266000	140000
	नामीबिया (छ)	द. अफ्रीका	824292	12000000
प्रशान्त	पूर्वी या अमेरिकन समोआ	सं. रा. अमेरिका	197	28000
महासागर				
व	गुआम	सं. रा. अमेरिका	549	100000
हिन्द महासागर	कोकोस या कीलिंग द्वीप	आस्ट्रेलिया	14	1000
	पिटकैरन द्वीप	ब्रिटेन	5	100
	तोकेलाउ द्वीप	न्यूजीलैण्ड	10	2000
	प्रशान्त महासागर का न्यास क्षेत्र (मारियाना, मार्शल और कारोलाइन द्वीप) या माइक्रोनेशिया (द)	सं. रा. अमेरिका	1779	115000

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(क) जून, 1974 में पुर्तगाल ने पूर्वी तिमोर के लोगों के स्वाधीनता के अधिकार को मान्यता प्रदान की थी। परन्तु 1976 में इण्डोनेशिया ने पूर्वी तिमोर का अधिग्रहण कर उसे अपना 27 वाँ प्रान्त घोषित कर दिया। सं. रा. संघ ने पूर्वी तिमोर के लोगों के आत्मनिर्णय को स्वीकार किया, और पूर्वी तिमोर की स्वाधीनता के लिये संघर्षरत फ्रेतिलीनो और इण्डोनेशिया के मध्य द्विपाक्षिक वार्तालाप का परामर्श दिया परन्तु इण्डोनेशिया ने इसे स्वीकार नहीं किया।

(ख) 1952 में सं. रा. संघ ने प्वर्तो रिका को गैर स्वशासित क्षेत्रों की सूची से निकाल दिया क्योंकि उसके अनुसार प्वर्तो रिको ने अपनी स्वेच्छा से अमेरिकी संघ की सदस्यता स्वीकार की है। परन्तु सं. रा. संघ अभी भी प्वर्तो रिको के लोगों के आत्मनिर्णय तथा स्वाधीनता के अधिकार को मान्यता प्रदान करती चली आ रही है।

(ग) हालांकि यह ब्रितानी उपनिवेश है लेकिन अर्जेन्टीना भी इस बात पर अपना दावा करती है। 1965 में फॉकलैण्ड के लोगों ने ब्रितानी आधिपत्य में बने रहने के लिये मत दिया था। 1965 से ब्रिटेन व अर्जेन्टीना के मध्य फाकलैण्ड विवाद के सौहार्दपूर्ण समाधान के लिये वार्तालाप चल रही थी। अप्रैल 1982 में अर्जेन्टीना ने फॉकलैण्ड पर कब्जा कर लिया परन्तु बाद में ब्रितानी सेना ने इस पर पुनः कब्जा कर लिया है।

(घ) स्पेन भूमध्य सागर में स्थित ब्रिटेन के इस उपनिवेश पर दावा करता है परन्तु ब्रिटेन न तो स्पेनी दावे को स्वीकार करता है और न ही जिब्राल्टर को निकट भविष्य में स्वाधीन करने के लिये इच्छुक है।

(च) 28 फरवरी, 1976 को स्पेन ने स्पेनी सहारा (पश्चिमी सहारा) से अपने प्रभुत्व की समाप्ति की घोषणा की और भविष्य में इस क्षेत्र से सम्बन्धित किसी भी अन्तर्राष्ट्रीय उत्तरदायित्व से अपने को मुक्त बताया। सं. रा. संघ व अफ्रीकी एकता संगठन ने पश्चिमी सहारा के भविष्य का दायित्व वहाँ के लोगों के स्वतन्त्रता संग्रामी संगठन "पोलिसारियो मोर्चे" को सौंपा। परन्तु मोरक्को व मॉरितानिया दोनों पश्चिमी सहारा के दावेदार हैं और मोरक्को ने तो उस पर बलात् आधिपत्य कर रखा है। 11 नवम्बर, 1980 को पारित एक प्रस्ताव में सं. रा. संघ की महासभा ने मोरक्को को पश्चिमी सहारा पर अपना आधिपत्य समाप्त कर "पोलिसारियो मोर्चे" से सीधे वार्तालाप के लिये कहा है। अभी भी मामला अधर में लटका हुआ है।

(छ) दक्षिण अफ्रीका नामीबिया पर अवैध रूप से शासन कर रहा है। 27 अक्टूबर, 1966 को सं. रा. संघ की महासभा ने नामीबिया पर दक्षिण अफ्रीका के मैनडेट (Mandate) को समाप्त कर उसे सं. रा. संघ के प्रत्यक्ष नियन्त्रण में रखा। महासभा ने नामीबिया के लोगों के आत्मनिर्णय व स्वाधीनता के अधिकार को स्वीकारा और "साऊथ वेस्ट अफ्रीका पीपुल्स आर्गेनाइजेशन (Swapo)" को उनके वास्तविक प्रतिनिधि के रूप में मान्यता प्रदान की। 1978 से सं. रा. संघ का समर्थन प्राप्त पाँच पश्चिमी राष्ट्रों के 'सम्पर्क गुट' ने नामीबिया की स्वतन्त्रता के लिये दक्षिण अफ्रीका, स्वापो तथा नामीबिया के फ्रन्टलाइन राष्ट्रों से बातचीत कर रहा है परन्तु दक्षिण अफ्रीका की हठधर्मिता के कारण अभी तक कोई परिणाम नहीं निकला।

(ज) द्वितीय विश्व युद्ध के पूर्व जापान का माइक्रोनेशिया पर कब्जा था। जापान की पराजय के पश्चात सं. रा. अमेरिका ने माइक्रोनेशिया पर अपना आधिपत्य जमाया। महासभा द्वारा अमेरिका से इस क्षेत्र को स्वाधीन करने के आह्वान के बावजूद भी अमेरिका ने 1982 में केवल सीमित स्वतन्त्रता प्रदान की है।

सं. रा. संघ की आधिकारिक सूची में ऐसे अनेक अस्वशासित क्षेत्र (जिनकी कुल जनसंख्या लगभग 21 लाख है) सम्मिलित नहीं है, जो प्रशासित शक्तियों के अनुसार उनके तथाकथित ओवरसीज डिपार्टमेन्ट्स (Overseas Departments) है या जिन्हे गैर औपनिवेशिक दर्जा (Non-colonial Status) प्राप्त है। ऐसे प्रदेश निम्नलिखित हैं —

(1) हिन्द महासागर में ब्रितानी प्रदेश (दियागो गार्सिया सहित)—1965 में जब ब्रिटेन ने मॉरीशस को स्वाधीनता प्रदान की तो उसने चागोस द्वीपसमूह के द्वीप दियागो गार्सिया को खरीद लिया और सं. रा अमेरिका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को नौसेना घाटी बनाने के लिये अनिश्चित काल के लिये पट्टे पर हस्तान्तरित कर दिया। हाल में मॉरीशस ने ब्रिटेन से दियागो गार्सिया की वापसी की मांग की है।

(2) फ्रान्स के ओवरसीज डिपार्टमेन्ट्स—(क) गुआदेलू (जनसंख्या-325000, क्षेत्रफल—1786 वर्ग कि. मी.); (ख) मार्तीनी (जनसंख्या—325000, क्षेत्रफल 1107 वर्ग कि. मी.); (ग) फ्रांसीसी गयाना (जनसंख्या—70000, क्षेत्रफल 98124 वर्ग कि. मी); (घ) सेन्ट पियरे व मिकेलोन द्वीप (जनसंख्या—5800, क्षेत्रफल-150 वर्ग कि.मी.); (च) रियूनियन (जनसंख्या-500000, क्षेत्रफल-2519 वर्ग कि.मी.); (छ) मायोटे (जनसंख्या-51800; क्षेत्रफल-374 वर्ग कि. मी.)।

(3) फ्रांसीसी ओवरसीज प्रदेश—(क) न्यू कालेडोनिया (जनसंख्या—140000, क्षेत्रफल—8899 वर्ग कि. मी.); (ख) फ्रांसीसी पोलेनेशिया (जनसंख्या—140000; क्षेत्रफल—4014 वर्ग कि. मी.); तथा (ग) वालिस व फुतुना द्वीप (जनसंख्या—10000, क्षेत्रफल-275 वर्ग कि. मी.)।

(4) न्यूजीलैण्ड के एसोसिएटेड प्रदेश—(क) कुप द्वीप (जनसंख्या—21000, क्षेत्रफल—260 वर्ग कि. मी.); (ख) निउ द्वीप (जनसंख्या—6000) क्षेत्रफल—260 वर्ग कि. मी.)

(5) स्पेन द्वारा प्रशासित प्रदेश—पश्चिमी सहारा के चेटुआ व मोलिल्ला नगर (जनसंख्या—130000)

(6) हालैण्ड द्वारा प्रशासित प्रदेश—डच आंटिल्स (जनसंख्या—240000, क्षेत्रफल-1027 वर्ग कि. मी)।

(7) हांगकांग (जियानजांग) व मकाऊ (आओमेन)—हांगकांग (जनसंख्या—350000, क्षेत्रफल-16000 वर्ग कि. मी.) को ब्रिटेन ने 1898 में चीन से 99 वर्ष के पट्टे पर लिया था। अभी हाल में ब्रितानी प्रधानमन्त्री मारगरेट थैचर के चीन यात्रा के दौरान इस द्वीप के भविष्य के सम्बन्ध में बातचीत हुई परन्तु उसका कोई परिणाम नहीं निकला है। चीन का मकाऊ नामक प्रदेश पुर्तगाल के कब्जे में है। 1976 से पुर्तगाल ने मकाऊ को सीमित स्वतन्त्रता प्रदान की है। 1971 में साम्यवादी चीन की सलाह पर महासभा ने हांगकांग एवं मकाऊ को उपनिवेशों की सूची से अलग कर दिया।

(8) ग्रीनलैण्ड—ग्रीनलैण्ड के कुछ भागों पर अभी भी डेनमार्क का कब्जा बना हुआ है।

इस प्रकार पश्चिमी सहारा व नामीबिया के अतिरिक्त विश्व के जितने भी अस्वशासित प्रदेश शेष हैं लगभग सभी सागरीय उपनिवेश हैं। प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि क्या कारण है कि औपनिवेशिक शक्तियों ने अपने बड़े बड़े उपनिवेशों को तो स्वतन्त्रता प्रदान कर दी है परन्तु इन छोटे-छोटे द्वीपों को स्वाधीनता के सुख से वंचित रखा है? इसका उत्तर यही है कि ये द्वीप स्त्रातिजिक एवं परमाणु अस्त्र के परीक्षण की दृष्टि से सर्वोत्तम है। साथ में, तृतीय समुद्र विधि सम्मेलन द्वारा अनन्य आर्थिक क्षेत्र, मत्स्य क्षेत्र तथा समुद्र तल से मूल्यवान खनिज सम्पदा के खनन के अधिकार को मान्यता प्रदान करने के कारण इनका महत्व और अधिक बढ़ गया है। अन्त में, मायोटे, फॉकलैण्ड जैसे छोटे-छोटे असंलग्न द्वीप, आर्थिक व सुरक्षा की दृष्टि से कमजोर होने के कारण स्वाधीन राष्ट्र का दर्जा प्राप्त करने के लिये अधिक इच्छुक भी नहीं हैं।

इन सब तथ्यों के बावजूद आज के उदारवाद एवं स्वतन्त्रता के जमाने में उपनिवेशी व्यवस्था को बनाये रखने का कोई औचित्य नहीं है। ब्रिटेन और फ्रान्स इस दशक के अन्त तक अपने उन उपनिवेशों, जो विवादास्पद नहीं है, को एक नियोजित और निश्चित रूपरेखा (पहले आन्तरिक स्वयत्तता, तत्पश्चात पूर्ण राजनीतिक स्वतन्त्रता) के अन्तर्गत मुक्त करने का इरादा रखता है। समस्या है नामीबिया और पश्चिमी सहारा जैसे उपनिवेशों की स्वतन्त्रता को लेकर। परन्तु जैसा कि समीक्षक ने लिखा है "आजादी के मार्ग में चाहे लाख अड़चनें आये वह दिन अब दूर नहीं है जब साम्राज्यवादी और उपनिवेशवादी शक्तियों को राष्ट्रवादियों के समक्ष घुटने टेकने पड़ेंगे और हमारी धरती पर उपनिवेशवादी कलंकित चेहरा प्रछन्न होकर रहेगा, क्योंकि आजादी की अदम्य लहरें उन जल प्रवाह और फव्वारों की तरह हैं जिसे थोड़ी देर के लिये रोक जरूर दिया जाये, सदा के लिये दबाया नहीं जा सकता।● ●

CC-0. In Public Domain, Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केन्द्रीय बजट 1983-84 : एक समीक्षा

□ राम नरायन लोहकर*

बजट के प्रति अर्थव्यवस्था में अब अधिक उत्सुकता नहीं दिखाई देती है। ऐसा प्रतीत होता है जैसे किसी रिहर्सल में सभी पक्ष अपनी पूर्व निर्धारित भूमिका को पूरा कर रहे हों। वित्तमंत्री स्थिति की गंभीरता का संकेत करते हुए अपने नये कर-प्रस्तावों को प्रस्तुत करेंगे, पिछली कुछ छूटों को समाप्त करने के लिए छूटों से लाभ उठाने वालों के गैर जिम्मेदाराना व्यवहार का जिक्र करेंगे, नई छूटों के प्रस्ताव सरकार के उदार रवैये के रूप में रखेंगे, और बीच-बीच में आशावादी संपुटों के साथ वर्तमान वर्ष की विपरीत परिस्थितियों के बीच पाई उपलब्धियों की व्याख्या के संदर्भ में अगले वर्ष का आकर्षक खाका खींचेंगे। प्रतिपक्ष बजट की कटु आलोचना करेगा और पक्ष (शासक दल) बजट की प्रशंसा करेगा। अर्थ-व्यवस्था के विभिन्न वर्ग अपने हितों को ध्यान में रखते हुए तथा संसद में बहस के दौरान कुछ रियायतें पा लेने की दृष्टि से अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करेंगे। कुछ औपचारिकताओं के बाद बजट पास हो जायेगा और फिर सारा संदर्भ बेमानी हो जायेगा।

वित्तमंत्री के चातुर्य की परीक्षा अर्थव्यवस्था को दिशा तथा गति देने में नहीं होती है वरन् तरकीबों के आधार पर अनुगणित मांग-प्रस्तावों और व्यय-प्रस्तावों को पास करा लेने में होती है। ऐसा प्रतीत होता है कि अर्थव्यवस्था अपनी दिशा तथा गति स्वयं निर्धारित करती है; दी हुई व्यवस्था के अंतर्गत व्यक्ति इस संबंध में कोई अधिक महत्वपूर्ण भूमिका अदा नहीं कर सकता है : यदि कर सकता तो कोई कारण समझ में नहीं आता कि कई समितियों की सिफारिशों के बावजूद ऐसे व्यवस्थित उपाय क्यों नहीं अपनाये जाते हैं जो राजकोषीय ढांचे को एक निश्चित दिशा में ले जाने के संकेत देते हों। वित्त-मंत्रालय जब वेंकटरमण के नेतृत्व में कार्य कर रहा था उस समय ऐसा प्रतीत होता था कि वास्तविकताओं को स्वीकारते हुए अर्थव्यवस्था को एक निश्चित रूप देने की कोशिश की जा रही है। अज्ञात कारणों से वित्त मंत्रालय के नेतृत्व में पिछले वर्ष फेर-बदल से यह स्वाभाविक ही है कि अर्थव्यवस्था में पुनः ऐसे परिवर्तन हों जो पिछले परि-वर्तनों से संगत रूप में सम्बद्ध न हों। यह सही है कि इस वर्ष के बजट पर आई. एम. एफ. की शर्तों की छाया स्पष्ट रूप में दिखायी नहीं दे रही है किन्तु यह भी सही है कि ऊपरी तौर पर निजी नैगम क्षेत्र को कुछ स्पष्ट लाभों को मिलने के बावजूद इस क्षेत्र की बजट के प्रति प्रतिक्रिया अनुकूल नहीं हैं। कारण यह नहीं है कि वर्त-मान वित्तमंत्री की सदेच्छा या योग्यता में संदेह है वरन् वास्तविक कारण व्यवस्था के प्रति संदेह है। एक ही शासक दल तथा एक ही प्रधानमंत्री के नेतृत्व वाली सरकार के विभिन्न वित्तमंत्री यदि छूट देने और छूट वापस लेने में इतना मनमानापन दिखाते हैं तो इस बात को अधिक गंभीरता से कैसे लिया जा सकता है कि इस वर्ष क्या छूटें दी जा रही हैं।

हाल ही में वित्तमंत्री ने आयात नीति के पुनरीक्षण की दलील देते हुए कहा है कि निहित स्वार्थ उद्योग में प्रवेश पा गये हैं और दी हुई छूटों का नाजायज फायदा उठा रहे हैं। क्या आयात नीति को उदार बनाते समय इस तरह के निहित स्वार्थ नहीं थे या इनके सक्रिय होने की संभावना नहीं थी? क्या आयात नीति को उदार बनाते समय इस तरह के पूर्वोपाय नहीं किये जा सकते थे जिससे इन पर काबू रखा जाता तथा वास्तविक दावेदार

*रीडर, अर्थशास्त्र विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही इस उदार नीति का फायदा उठाते। आयात नीति को उदार बनाने का उद्देश्य निर्यातों को प्रोत्साहित करना था। इस संदर्भ में क्या इस तरह के उपाय नहीं अपनाये जा सकते थे जो इस उदार नीति का दुरुपयोग न होने देते। इसी अवसर पर उद्योग मंत्री ने भी यह विचार व्यक्त किया कि औद्योगिक विकास को नियमित करने की आवश्यकता है अन्यथा विश्व के कई भागों की भाँति भारत जैसी विकासशील अर्थव्यवस्था में भी औद्योगिक अराजकता छा जायेगी। क्या सरकारी नियमन निजी क्षेत्र की औद्योगिक अराजकता को सीमित कर पाया है? क्या सरकारी क्षेत्र की अराजकता ने स्थिति को असह्य नहीं बना दिया है?

इन सब आधारभूत प्रश्नों के उत्तर उस मानदण्ड पर निर्भर करते हैं जिसके सापेक्ष हम अपनी अर्थव्यवस्था को आंकना चाहते हैं। यदि हम बजटों को एक ऐसे अल्पकालिक यंत्रों की शृंखला मानते हैं जिनके माध्यम से हम अपना दीर्घकालीन लक्ष्य प्राप्त करना चाहते हैं तो हमें प्रत्येक वर्ष के बजट को इस शृंखला की एक कड़ी के रूप में देखना होगा। इस रूप में देखने पर यह प्रतीत होता है कि न तो इस तरह का स्पष्ट दीर्घकालीन परिप्रेक्ष्य है और न उसे प्राप्त करने का सतत प्रयत्न। लेकिन जो व्यवस्था को सामयिक मरम्मत के साथ चलाते रहने में विश्वास रखते हैं उनकी दृष्टि में समय विशेष की स्थिति को ध्यान में रखते हुए ही किसी वर्ष के बजट के गुणदोष की चर्चा हो सकती है। इस दृष्टि से देखने पर यह प्रतीत होता है कि दी हुई स्थितियों में वर्तमान बजट काफी हद तक संतोषजनक है। इतने व्यापक पैमाने पर राजस्व की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए कर-ढांचे में या लोक-उद्यमों की कार्यप्रणाली में कोई आधारभूत परिवर्तन इतना जोखिम का कार्य हो सकता है जिसे कोई जनप्रिय सरकार उठाने को तैयार न हो। तब इसके अलावा क्या चारा रह जाता है कि थोड़े बहुत हेर-फेर के साथ काम चलाया जाये। किन्तु फिर सरकार का दीर्घकालीन परिप्रेक्ष्य में नियोजन का दावा निरर्थक हो जाता है।

जहाँ तक वित्तमन्त्री के बजट-उद्देश्यों का सम्बन्ध है, इनकी उपयुक्तता में संदेह नहीं किया जा सकता है। उत्पादन बढ़ाना, स्फीति पर नियंत्रण रखना, बचत को प्रोत्साहित करना, निवेश-संवर्धन, साधनों के गलत उपयोगों पर रोक तथा निर्यात, आयात एवं पूंजी प्रवाहों पर वांछित प्रभाव पैदा करना, ये सभी उद्देश्य भारत के विकास की वर्तमान स्थिति में प्राप्तव्य हैं। वित्त मन्त्री के कथित बयान के अनुसार 1983-84 में संवृद्धि की उच्चतर दर के लिए दशायें अनुकूल हैं: योजनागत निवेश की पर्याप्त वृद्धि माँग के स्तर को ऊँचा रखेगी, औद्योगिक उत्पादन हेतु कच्चे माल की कमी नहीं है, आयात और लायसेंस नीतियाँ अधिक विस्तार, सामर्थ्य के अधिक अच्छे उपभोग और आधुनिकीकरण के लिए अनुकूल हैं; इन दशाओं का स्थिर संवृद्धि के लिए उपयोग होगा या नहीं यह दक्ष प्रबन्ध तथा उद्यमियों के समयानुकूल व्यवहार-क्षमता पर निर्भर है।

वित्त मन्त्री का उपर्युक्त कथन न तो उत्साहवर्धन के लिए है न ही उनके निजी आशावाद का परिचायक है वरन् एक चतुर राजनीतिज्ञ का वाक्जाल है। 1982-83 कृषि-उत्पादन की दृष्टि से एक असफल वर्ष रहा है अतः कच्चे माल की स्थिति प्रतिकूल ही होगी, आयातनीति और लायसेंस नीति के कसे जाने के स्पष्ट संकेत वित्तमन्त्री और उद्योग मंत्री दे चुके हैं। मांग का स्तर 1982-83 में भी पर्याप्त था किन्तु इसके बावजूद औद्योगिक उत्पादन की संवृद्धि-दर में काफी शिथिलता आई। उद्यमियों की समयानुकूल व्यवहार क्षमता और प्रबन्ध की दक्षता से सरकार निश्चित रूप से आश्वस्त तो नहीं ही है, इस सम्बन्ध में वह इच्छाजनित विश्वास चाहे जितना दिखाये। साथ ही सरकार लोक उद्यमों की (अ) दक्षता से भी इतना आश्वस्त हो चुकी है कि इन पर बढ़ती हुई निर्भरता के दुष्परिणामों की उपेक्षा नहीं कर सकती है। विद्युत के क्षेत्र में संभवतः इसीलिए निजी क्षेत्र की इकाइयों को सरकार सीमित आमन्त्रण दे रही है और यह आश्वासन भी दे रही है कि यदि इनका विद्युत उत्पादन इनकी जरूरतों से अधिक होता है तो सरकार अतिरिक्त विद्युत लेने के लिए तैयार रहेगी।

यह सही है कि पूंजी मूल्य ह्रास पर छूट में की गयी वृद्धि अतिरिक्त निवेश को प्रोत्साहित करेगी किन्तु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरी ओर नैगम क्षेत्र को प्राप्त हुई निरपेक्ष व्यय की 20 प्रतिशत की छूट को समाप्त करना उपर्युक्त लाभ को निष्प्रभावी बना देता है। धमार्थ ट्रस्टों के घोषित व्यवसाय कार्य से होने वाले लाभ पर कर लगाना अनैतिक और कर के औचित्य के बाहर तो है ही, सरकार की दीर्घकालीन नीतिपरक संगतिहीनता का भी परिचायक है। यदि ट्रस्ट की आड़ में वैयक्तिक लाभ को सम्वर्धित करने की कोशिश की जाती है तो ऐसे मामलों में उनकी मान्यता पर पुनर्विचार किया जा सकता है किन्तु जब तक कोई ट्रस्ट मान्यता प्राप्त है और पारिभाषित उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए व्यावसायिक कार्य करता है और इससे प्राप्त लाभ को निर्धारित ढंग से प्रयोग करता है तब तक इनकी कर-मुक्ति के प्रावधान को समाप्त करना सरकार की वचनबद्धता के विपरीत है। इसी तरह बजट के कई पश्चगामी प्रभाव (retrospective-effect) वाले प्रस्ताव भी औचित्य की कसौटी पर खरे नहीं हैं।

बचत को प्रोत्साहित करने वाले प्रस्ताव महत्वपूर्ण कहे जा सकते हैं किन्तु इनका कितना बचत संवर्धक प्रभाव होगा यह सुनिश्चितता के साथ नहीं कहा जा सकता है क्योंकि तेजी से बढ़ती हुई कीमतों के संदर्भ में मौद्रिक बचत का वास्तविक मान कम होता जाता है और विभिन्न तरह के ऋणपत्र पूंजीगत हानि के साधन बन जाते हैं। अतः अपेक्षाकृत कम ब्याज की दर पर भी व्यक्ति अन्य आकर्षणों (यथा कर छूट) के प्रभाव में अधिक बचत करने को तैयार हो सकते हैं यदि उनकी बचत के वास्तविक मूल्य को सुरक्षित रखने की गारन्टी सरकार दे।

बजट का प्रभाव कीमतों पर सामान्यतः स्फीतिकारी होगा। 1982-83 का घाटा संशोधित अनुमानों के अनुसार 3678 करोड़ रुपये है जो कुल व्यय का लगभग 10.7 प्रतिशत है। इसमें से 1743 करोड़ रुपये राज्यों को ओवरड्राफ्ट अदा करने के लिए ऋण देने हेतु रखा गया। शेष 1935 करोड़ रुपये का अनुमानित घाटा बजट अनुमान से 560 करोड़ रुपये अधिक है। वर्ष 83-84 में 716 करोड़ रुपये अतिरिक्त कराधान के माध्यम से प्राप्त होंगे, बजट के प्रस्तुत करने के पूर्व की हुई करवृद्धि और कीमत-वृद्धि से 1300 करोड़ रुपये प्राप्त होंगे, तथा रेल के किराये-भाड़े की वृद्धि से भी लगभग साढ़े चार सौ करोड़ रुपये प्राप्त होंगे। इस तरह लगभग 2500 करोड़ रुपयों के अतिरिक्त साधनों को जुटाने की कोशिश लागतों को बढ़ायेगी और 1555 करोड़ रुपये का घाटा इसके ऊपर होगा। अतः इस तथ्य के बावजूद कि विश्व अर्थव्यवस्था तीव्र मंदी से व्याप्त है, बजट का प्रभाव कीमतों पर प्रतिकूल ही होगा।

इतनी अतिरिक्त साधन-वृद्धि के बावजूद वर्ष 82-83 के कुल व्यय के संशोधित अनुमान से 83-84 के व्यय का बजट-अनुमान मात्र लगभग 600 करोड़ रुपये ही अधिक है। वास्तविक व्यय संभवतः इससे अधिक होगा।

वैयक्तिक आय कराधान के सम्बन्ध में कुछ रियायतें की गई हैं: प्रभावी कटौती की अधिकतम सीमा 5000 रुपये से बढ़ाकर 6000 रुपये कर दी गई है, 15001 रुपये से 2,0000 रुपये तक की कर-योग्य आय पर कर की दर में कुछ कमी की गई है किन्तु कर पर लगे अधिभार की दर 10 प्रतिशत से बढ़ाकर 12.5% कर दी गयी है। नैगम आय कर के सम्बन्ध में भी कुछ परिवर्तन किये गये हैं। इस सम्बन्ध में दी गई कुछ छूटों या पहले से प्राप्त छूटों को वापस लेने के निर्णय कुछ उद्देश्यों को ध्यान में रख कर लिये गये हैं; ये उद्देश्य अपने आप में अच्छे भले ही हों, किन्तु इन निर्णयों के औचित्य को विशेष बल प्रदान नहीं करते हैं क्योंकि जिन स्थितियों में यहाँ निजी उद्योग चल रहा है उनमें इन परिवर्तनों के प्रभावी होने की आशा नहीं की जा सकती है।

सरकार निजी उद्यमों पर बहुत से दोषारोपण करती रहती है और बहुत सी आशंकायें भी प्रकट करती रहती हैं जिनमें सत्य का अंश काफी अधिक प्रतीत होता है। किन्तु इस तरह के दोषारोपण या आशंका प्रकट करने के पहले सरकार यदि अपने उद्यमों को सही रास्ते पर ले आये और अपनी एक सुनिश्चित नीति निर्धारित कर ले तथा प्रशासनिक रूप से इस तरह की नीति को प्रभावी बनाने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की पूरी तैयारी कर ले तो निजी उद्यम को सही रास्ते पर लाने के लिए सरकार की पकड़ मजबूत हो सकती है और उसके मंतव्य प्रभावी हो सकते हैं। अन्यथा मात्र सत्ता के प्रयोग से कुछ समय स्थिति भले ही नियंत्रण में बनी रहे, समस्याओं के स्थायी और संतोषजनक हल नहीं प्राप्त हो पायेंगे।

काले-धन के बारे में विविध अटकलें लगाई गई हैं और इसके विभिन्न विश्लेषण किये गये हैं। सरकारी क्रियायें भी न केवल इसके अस्तित्व को ध्यान में रखकर निर्धारित होती हैं वरन् कई क्षेत्रों में संभवतः इससे महत्वपूर्ण रूप में प्रभावित होती हैं। कराधान का स्तर काले धन की मात्रा को महत्वपूर्ण रूप में प्रभावित करता है लेकिन इन तथ्यों की उपेक्षा करके हर वर्ष अतिरिक्त कराधान के माध्यम से साधन प्राप्त करने की कोशिश की जाती है। व्ययों में मितव्ययिता लाने या कर-प्रशासन की दक्षता सुधारने जैसे महत्वपूर्ण मामलों की हर बार उपेक्षा हो जाती है। सरकार का राजस्व हर वर्ष इतना अधिक बढ़ता जा रहा है किन्तु राजस्व खाते का घाटा भी बढ़ता जा रहा है।

समग्र रूप में यह कहा जा सकता है कि वर्ष 1983-84 के केन्द्रीय बजट में कई अच्छी बातें हैं और कई खराब बातें भी हैं तथा हो सकता है कि, यदि प्रकृति अनुकूल रही, वर्ष भर के क्रियाकलापों के बाद सरकार को इतनी उपलब्धियां प्राप्त हो जायें कि सरकार अपनी नीतियों का औचित्य सिद्ध करने में सुविधा महसूस करे, यह तो कहा ही जा सकता है कि संभावनाओं को दृष्टि में रखते हुए तथा समस्याओं की गुरुता को ध्यान में रखते हुए राजकोषीय नीति की कड़ी के रूप में बजट के अवसर का पूरा लाभ नहीं उठाया जा रहा है। वित्तमंत्री की वैयक्तिक योग्यता तथा सद्भावना निश्चित रूप में इस बजट के स्तर से अधिक है किन्तु, जैसा कि पहले कहा जा चुका है, प्रतीत होता है व्यवस्था व्यक्ति पर हावी हो चुकी है। ■

आपके लिए उपयोगी पुस्तकें

S. R. S Francis	:	General Studies	60/-
Unique Quintessence of General Studies,			60/-
O. P. Khanna	:	General Knowledge Refresher	30/-
Mani Ram Agarwal	:	General Knowledge Digest	40/-
डा० आर० सी० जैन	:	सामान्य ज्ञान दिग्दर्शन 1983	30/-
ओ पी० अग्रवाल	:	सामान्य ज्ञान दिग्दर्शन 1983	30/-
एम० पी० श्रीवास्तव	:	प्राचीन भारतीय संस्कृति, कला और दर्शन	40/-
ईश्वरी प्रसाद	:	प्राचीन भारतीय संस्कृति, कला, राजनीति और दर्शन	48/-
के० सी० श्रीवास्तव	:	प्राचीन भारत का इतिहास	30/-
O. P. Malaviya	:	Comprehensive General English	25/-
ओ० पी० मालवीय	:	आधुनिक हिन्दी निबन्ध	15/-
" " "	:	सामान्य हिन्दी	8/-
जैन एवं कुलश्रेष्ठ	:	सामान्य हिन्दी	16/-
ओ० पी० अग्रवाल	:	सामान्य हिन्दी	14/-
सुशील कुमार	:	सामान्य हिन्दी	10/-

पी० सी० एस०, रेलवे, सी० पी० एम० टी० तथा अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं की गाइडें तथा अनसाल्वड पेपर्स के लिये लिखें :—

वोहरा पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स

745, युनिवर्सिटी रोड, इलाहाबाद-211002

(कृपया आदेश के साथ दस रुपया अग्रिम भेजें)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(पृष्ठ 72 का शेष)

तेल के मूल्य में गिरावट के प्रति सभी पर्यवेक्षकों की मिश्रित प्रतिक्रिया हुई। कुछ पर्यवेक्षकों ने तेल के मूल्य में गिरावट का इस आधार पर स्वागत किया कि इससे- (1) सभी राष्ट्रों के व्यापार घाटे में कमी होगी, (2) मुद्रास्फीति न्यून होगी, (३) आर्थिक विकास में तेजी आने के फलस्वरूप इस समय चल रही भीषण मन्दी में कमी आयेगी, (4) गैरओपेक विकासशील राष्ट्रों को और अधिक ऋण लेने से मुक्ति मिलेगी तथा (5) ब्याज की दर में कमी आयेगी। वहीं कुछ पर्यवेक्षकों के अनुसार, (1) ओपेक राष्ट्रों के सौभाग्य मे कमी (तेल के मूल्य में गिरावट के कारण ओपेक राष्ट्रों की आय में प्रतिवर्ष 28.25 बिलियन डालर की कमी होगी) के कारण उनके साथ व्यापार व आर्थिक सम्बन्धों को खतरा, (2) ओपेक राष्ट्रों मे चल रहे विकास सम्बन्धी कार्यों पर होने वाले परिव्यय में सम्भावित छटनी के फलस्वरूप वहाँ कार्यरत अनेक राष्ट्रों की कम्पनियों एवं प्रवासी श्रमिको द्वारा स्वदेश को भेजे जाने वाली विदेशी मुद्रा मे कमी, (3) ओपेक राष्ट्रों द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष आदि को प्रदत्त वित्तीय सहायता में कमी, (4) कुछ घन अभावग्रस्त ओपेक राष्ट्रों (1982) में ओपेक राष्ट्रों का अतिरिक्त विदेशी मुद्रा घटकर केवल 18 बिलियन डालर ही रह गया) द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष जैसे वित्तीय संगठना से ऋण लेने की सम्भावना के कारण गैरओपेक विकासशील राष्ट्रों की ऋण उपलब्धिता पर आघात तथा (5) गैरओपेक विकासशील राष्ट्रों के तेल निर्यातक राष्ट्रों जैसे मेक्सिको, ब्राजील आदि के लिये विशेष प्रकार की समस्या तेल के मूल्य में गिरावट के फलस्वरूप उत्पन्न होगी। उदाहरणस्वरूप, इस समय मेक्सिको पर 83 बिलियन डालर के ऋण का बोझा है और 1983 में उसे 12 बिलियन डालर के ऋण की अदायगी करना है। तेल के मूल्य में प्रति बैरल केवल 1 डालर की गिरावट से मेक्सिको (वह 32.50 डालर प्रति बैरल की दर से तेल बिक्री करता है) को तेल से होने वाले आय में प्रतिवर्ष 550 मिलियन डालर की कमी आयेगी। यदि मेक्सिको को ओपेक द्वारा तेल के निर्धारित मूल्य के समान अपने तेल का मूल्य घटाना पड़े तो उसकी आय में वार्षिक 2200 मिलियन डालर की कमी होगी। ऐसी स्थिति में मेक्सिको के ऋण अदायगी में असमर्थ होने पर उसे ऋण प्रदान करने वाले वैयक्तिक बैंकों का अस्तित्व खतरे में पड़ जायेगा और जो अन्ततः विश्व अर्थ-व्यवस्था को प्रभावित करेगा।

अन्त में, तेल के मूल्य में और अधिक कमी की सम्भावना अभी भी समाप्त नहीं हुई है। उत्तरी सागर के तेल के मूल्य में गिरावट की काफी सम्भावना है। ऐसा होने पर नाइजीरिया द्वारा तेल के मूल्य में कमी करना निश्चित है। पश्चिमी राष्ट्रों के साथ घाटे के व्यापार शेष को सन्तुलित करने के लिये सोवियत संघ द्वारा कम मूल्य (अभी सोवियत संघ 27/28 डालर प्रति बैरल की दर से तेल की बिक्री कर रहा है) पर अधिकाधिक तेल का निर्यात निश्चयतः तेल के मूल्य में कमी लायेगा। ऐसी स्थिति में पर्यवेक्षकों की कहना कि निकटभविष्य में तेल का मूल्य घटकर 20-25 डालर प्रति बैरल हो सकता है। केम्ब्रिज इनर्जी एशोसिएट्स के अनुसार, ऐसा होने पर ऊर्जा का विपरीत दिशा में आघात (Energy Shock in reverse) होगा और अस्थिर विश्व तेल बाजार से सफल समायोजन की सम्भावना समाप्त हो जायेगी और एक ऐसे चक्र (cycle) की शुरूआत होगी जो अन्ततः विश्व भर में तेल के मूल्य में भयंकर वृद्धि लायेगा।

सिविल सर्विसेज प्रिलिमनरी परीक्षा

में निश्चित सफलता के लिए पढ़िये

सुप्रीम जनरल स्टेंड्रोज

हिन्दी संस्करण—जनवरी 1983—पिछले वर्षों के साल्वड पेपर्स सहित

लेखक—खन्ना-अग्रवाल-नाटाजी

सभी पुस्तक विक्रेताओं के पास उपलब्ध

प्रकाशक—पिंकसिटी पब्लिशर्स, चौड़ा रास्ता, जयपुर

V.P.P. द्वारा मंगवाने के लिए 10/- रु० का M.O. भेजने पर पोस्टेज फ्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घाटे की वित्त व्यवस्था और भारतीय अर्थ व्यवस्था

डॉ० बद्री विशाल त्रिपाठी*

वर्तमान शताब्दी के प्रथम चतुर्थांश तक सन्तुलित और अतिरेक का बजट आदर्श बजट माना जाता था, परन्तु आधुनिक अर्थव्यवस्थाओं में विकास प्रक्रिया की विभिन्न आर्थिक और कल्याणकारी क्रियाओं में राज्य का एक समर्थ अभिकर्ता के रूप में प्रवेश होने के कारण सम्प्रति उसके कार्य क्षेत्र में अत्यन्त प्रसार हो गया है। परिणामतः राजकीय व्यय की मात्रा उत्तरोत्तर बढ़ती जा रही है, जिसकी प्रक्रिया में घाटे का बजट तैयार करना सामान्य तथ्य हो गया है। सरकार को अपने व्यय प्रस्तावों की पूर्ति हेतु विभिन्न स्रोतों से वित्त एकत्र करने पड़ते हैं और इसी प्रक्रिया में बजट में घाटा भी उत्पन्न हो जाता है। घाटे की वित्त व्यवस्था सरकारी बजट के घाटे को पूरा करने की एक विधि है जिसका प्रतिपादन पश्चिमी पूंजीवादी अर्थव्यवस्थाओं को विश्वव्यापी महामन्दी से उबारने के लिए वर्तमान शताब्दी के तीसरे दशक में केन्स ने किया था। भारतीय संदर्भ में सरकार को बजट के राजस्व खाते और पूंजी खाते से आय प्राप्त होती है। बजट के राजस्व खाते में करों, सार्वजनिक उद्यमों, ब्याज एवं प्रशासनिक सेवाओं से प्राप्त आय तथा पूंजीगत खाते में आन्तरिक और वाह्य स्रोतों से प्राप्त ऋण, अल्प बचत, विदेशी सहायता, राज्य व केन्द्र शासित सरकारों द्वारा ऋण भुगतान आदि की प्राप्तियाँ सम्मिलित हैं। जब सरकार की समस्त स्रोतों (राजस्व बजट और पूंजीगत बजट) से मिलने वाली आय और विभिन्न मदों पर किये जाने वाले व्यय बराबर होते हैं तो उसे सन्तुलित बजट कहा जाता है। इसके विपरीत जब कुल राजकीय व्यय समस्त स्रोतों से प्राप्त आय से अधिक हो जाता है तो इसे घाटे का बजट कहते हैं। बजट में घाटे के इस अन्तराल को पूरा करने की प्रक्रिया घाटे की वित्त व्यवस्था कहलाती है। घाटे की वित्त व्यवस्था वह विशेष वित्तीय विधि है जिसके द्वारा सरकार प्रस्तावित सार्वजनिक आय की तुलना में सार्वजनिक व्यय के आधिक्य को पूरा करने के लिए संसाधन एकत्र करती है। भारत में घाटे की वित्त व्यवस्था उस अवस्था की सूचक है जब किसी बजट प्रस्ताव के आय और व्यय के अन्तर को पूरा करने के लिए सरकार पिछले नकद शेषों को कम करके या केन्द्रीय बैंक से ऋण लेकर या अतिरिक्त करेन्सी छापकर सन्साधनों का निर्माण करती है। प्रथम पंचवर्षीय योजना के प्रारूप के अनुसार घाटे की वित्त व्यवस्था शब्द का प्रयोग बजट के घाटे द्वारा कुल राजकीय व्यय में प्रत्यक्ष वृद्धि को प्रदर्शित करने के लिए किया जाता है। ऐसी नीति अपनाने का सार यही है कि सरकार अपनी उस आय की तुलना में अधिक व्यय करती है जो उसे करारोपण, सार्वजनिक उद्यम, ऋण, बचत तथा अन्य मदों से उपलब्ध होती है।

विकसित अर्थव्यवस्थाओं में घाटे को पूरा करने के लिए जनता और बैंकों से ऋण लिया जाता है। ऋण ग्रहण की इस प्रक्रिया का प्रभाव मुद्रापूर्ति में वृद्धि के रूप में पड़ता है। परन्तु घाटे की वित्त व्यवस्था की इस प्रक्रिया में नवीन मुद्रा का सृजन नहीं होता है। इस कारण यहाँ घाटे की वित्त व्यवस्था से आशय नवीन मुद्रा के सृजन से नहीं है। इसके विपरीत भारतीय अर्थव्यवस्था में घाटे की वित्त व्यवस्था का विभिन्न अर्थों में प्रयोग किया जाता है। भारत में पूर्व संचित नकद शेषों के अभाव में घाटे की वित्त व्यवस्था की व्यावहारिक परिणति में बजट प्रक्रिया में जब प्रस्तावित सार्वजनिक व्यय से सार्वजनिक आय की मात्रा कम पड़ जाती है। तब सरकार केन्द्रीय बैंक से इस घाटे को पूरा करने के लिए ऋण लेती है। केन्द्रीय बैंक ऐसी दशा में अतिरिक्त मुद्रा सृजित करता है जिसके परिणाम स्वरूप अर्थव्यवस्था में मुद्रा की पूर्ति बढ़ जाती

* अध्यक्ष, अर्थशास्त्र विभाग, इलाहाबाद डिग्री कालेज, इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। जिसे सरकार सार्वजनिक व्यय प्रस्तावों को पूरा करने के लिए व्यय करती है। इस प्रकार भारत में घाटे की वित्त व्यवस्था का सम्बन्ध नवीन मुद्रा सृजित कर कुल मुद्रा की पूर्ति की वृद्धि से है। घाटे की वित्त व्यवस्था द्वारा निर्मित अतिरिक्त मुद्रा सरकार की वस्तुओं और सेवाओं को अविलम्ब प्राप्त कर सकने की क्षमता बढ़ा देती है। व्यय कार्यक्रमों को पूरा करने का यह अपेक्षाकृत अधिक नवीन स्रोत है। केन्सीय अर्थशास्त्र के विकास के बाद इस संकल्पना का प्रसार और महत्व अधिक बढ़ गया है। सिद्धान्ततः घाटे की वित्त व्यवस्था का प्रयोग मुख्य रूप से तीन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए किया जाता है। प्रथम, विकसित देशों में मंदी की अवस्था में जब समर्थ मांग की कमी हो अथवा औद्योगिक इकाइयों में अप्रयुक्त उत्पादन क्षमता विद्यमान हो तो घाटे की वित्त व्यवस्था का सहारा लेकर उत्पादन, रोजगार एवं आय में वृद्धि की जा सकती है। द्वितीय, किसी आकस्मिक घटना यथा युद्ध, बाढ़, अकाल आदि का सामना करने के लिये अतिरिक्त धनराशि प्राप्त करने हेतु घाटे की वित्त व्यवस्था सहारा लिया जाता है। तृतीय, किसी अल्प-विकसित या विकासशील अर्थव्यवस्था, जहाँ अप्रयुक्त व अल्पप्रयुक्त उत्पादक संसाधन विद्यमान है, को विकसित करने, उत्पादन रोजगार और आय बढ़ाने के लिए घाटे की वित्त व्यवस्था का प्रयोग किया जाता है।

भारत में घाटे की वित्त व्यवस्था का आधार मुख्य रूप से आर्थिक विकास की दर तीव्र करना रहा है। योजना आरम्भ के समय यह अनुभव किया गया कि देश में अप्रयुक्त उत्पादन क्षमता विद्यमान है जिसे अतिरिक्त मुद्रा निर्मित किये बिना उत्पादक कार्य में प्रयुक्त नहीं किया जा सकता है। अप्रयुक्त अतिरिक्त भौतिक संसाधनों और अल्प रोजगार व बेरोजगार श्रम शक्ति को उत्पादक कार्य में लगाने के लिये इसे अपरिहार्य माना गया। यह विचार किया गया कि देश की बहुतायत श्रम शक्ति कृषि क्षेत्र से अपने जीवन निर्वाह की आय कमाती है। यहाँ सघन प्रच्छन्न बेरोजगारी है। यदि इन श्रमिकों को कृषि क्षेत्र से विनिर्माण क्षेत्र में हस्तांतरित कर दिया जाय तो इससे निर्माण क्षेत्र में उत्पादन बढ़ जायगा जबकि कृषि उत्पादन में कोई कमी न होगी। औद्योगिक विकास से कृषि को भी गति मिलेगी। इन विनियोग कार्यक्रमों को पूरा करने के लिये वित्त पूर्ति घाटे की वित्त व्यवस्था द्वारा अतिरिक्त मुद्रा का निर्माण करके की जा सकती है नयी मुद्रा सृजित करके सरकार विकास कार्यों को पूरा कर सकती है। यह भी विचार किया गया कि घाटे की वित्त व्यवस्था द्वारा सृजित मुद्रा से मुद्रा पूर्ति बढ़ेगी जिससे कीमतें बढ़ेंगी। फलतः लोग पूर्व स्तर के तुल्य वस्तुयें और सेवायें न खरीद सकेंगे। कीमत वृद्धि जनित कम खरीद के कारण अवशिष्ट संसाधन सरकार को विकासार्थ उपलब्ध हो जायेंगे। समयोपरान्त संसाधनों के उत्पादक कार्यों में प्रयुक्त होने से उत्पादन की मात्रा बढ़ने पर मुद्रा की मात्रा और उपलब्ध वस्तुओं तथा सेवाओं की मात्रा का असन्तुलन समाप्त हो जायेगा। फलतः कीमतों में अनुचित वृद्धि भी न हो सकेगी। इस परिकल्पना की पृष्ठ भूमि में घाटे की वित्त व्यवस्था भारत में आर्थिक विकास के लिए साधन के रूप में अपनायी गयी है। यद्यपि कतिपय वर्षों में युद्ध और अकाल का सामना करने के लिये भी घाटे की वित्त व्यवस्था की गयी। परन्तु आकस्मिक जरूरत को पूरा करने के लिए ही यह व्यवस्था थी। मुख्य रूप से तो घाटे की वित्त व्यवस्था का आधार आर्थिक विकास की दर तीव्र करना ही रहा है। भारत सरकार द्वारा स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद सभी पंचवर्षीय योजनाओं में घाटे के बजट बनाये जाते रहे हैं; जिसकी पूर्ति नव-निर्मित मुद्रा द्वारा की जाती रही है। प्रथम पंचवर्षीय योजना से लेकर अब तक की सभी पंचवर्षीय योजनाओं में घाटे की वित्त व्यवस्था की जाती रही है। यद्यपि सभी पंचवर्षीय योजनाओं में घाटे की वित्त व्यवस्था पृथक-पृथक मात्रा में रही है, परन्तु सामान्य विचलनों सहित उसमें वृद्धि की प्रवृत्ति रही है। योजनाकाल में कुछ ऐसी विशेष परिस्थितियाँ उत्पन्न होती रही है जिनके कारण विभिन्न योजना प्रतिवेदनों में प्रस्तावित राशि से अधिक विनियोग करना पड़ा है। चीन और पाकिस्तान के आक्रमण ने तृतीय पंचवर्षीय योजना में, 1966-67 के महान सूखे ने वार्षिक योजनाओं में, पाकिस्तान के आक्रमण और बंगला देश के शरणार्थियों की समस्या ने चतुर्थ पंचवर्षीय योजना में घाटे की वित्त व्यवस्था को प्रस्तावित राशि से अधिक बढ़ाने के लिए बाध्य कर दिया। वर्ष 1951-52 से 1980-81 तक घाटे की वित्त व्यवस्था द्वारा कुल 13549 करोड़ रुपये की अतिरिक्त मुद्रा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निर्मित की गयी । विभिन्न योजनाओं में प्रस्तावित और वास्तविक घाटे की वित्त व्यवस्था का विवरण निम्नलिखित तालिका—1 में दिया गया है जिससे यह प्रतीत होता है कि योजनागत वास्तविक व्यय का एक बहुत बड़ा भाग घाटे की वित्त व्यवस्था द्वारा प्राप्त किया गया है । तालिका से यह भी स्पष्ट होता है कि घाटे की वित्त व्यवस्था द्वारा प्रभूत धनराशि एकत्र की गयी । इसके प्रमुख कारण के रूप में विकास कार्यों के लिए संसाधन एकत्र करने की अभिलाषा तो रही ही है । साथ-साथ सरकार के गैर विकासात्मक व्यय में बहुत तीव्र गति से वृद्धि हुई । राजकीय पूंजी विनियोग के साथ राजकीय कर्मचारियों के वेतन मान और मंहगाई भत्ते में वृद्धि के कारण सरकार का खर्च उत्तरोत्तर बढ़ता गया । करवचन एक ओर कृषि आय पर करों का अभाव दूसरी ओर सार्वजनिक आय की प्राप्ति में महत्वपूर्ण बाधक तत्व है । खनिज तेल की कीमतों में वृद्धि के कारण हमें अपने संसाधनों का बहुत बड़ा भाग इनके आयात के लिये देना पड़ता है । युद्ध और अकाल के वर्षों में अत्यधिक अतिरिक्त संसाधन एकत्र करने पड़े । इन सब तत्वों का संग्रथित परिणाम यह हुआ कि संसाधन एकत्र करने के लिए सभी योजनाओं में भारी मात्रा में घाटे की वित्त व्यवस्था करनी पड़ी ।

वित्तीय साधन एकत्र करने के दृष्टिकोण से घाटे की वित्त व्यवस्था की गयी । प्रत्येक योजना में उत्तरोत्तर बढ़ती हुई राशि अर्थव्यवस्था में विनियोग की गयी । अभिन्न साधन के रूप में घाटे की वित्त व्यवस्था भी बढ़ाई गयी । नियोजन काल में विभिन्न विकास कार्यक्रमों के कारण अर्थव्यवस्था में व्याप्त दीर्घकालीन गतिरोध की अवस्था समाप्त हुई । अर्थव्यवस्था में विकास के विभिन्न भौतिक सूचकों यथा खाद्यान्न, ऊर्जा, परिवहन, उर्वरक आदि में उल्लेखनीय प्रगति हुई । प्रति व्यक्ति आवश्यक वस्तुओं और सेवाओं की उपलब्धि में वृद्धि हुई । आज हमारे पास प्रौद्योगिकी और उत्पादन कौशल के वे साधन उपलब्ध हैं जिनकी कल्पना भी हम योजना पूर्व नहीं कर सकते थे । नियोजन के पूर्व हम सामान्य उपयोग की साधारण वस्तुयें भी विदेशों से आयात करते थे । आज स्थिति यह है कि औद्योगिक दृष्टि से विश्व के विकसित राष्ट्रों में भारत का स्थान सातवां हो गया है । निर्यात व्यापार की मात्रा में वृद्धि के साथ उसकी सूची में नवीन वस्तुयें जुड़ी है । खेती की मानसून पर निर्भरता कम हुई है और यह अब मात्र जीवन निर्वाह का व्यवसाय न रहकर लाभपूर्ण व्यवसाय के रूप में व्यवहृत होने लगी है । निजी और सार्वजनिक दोनों क्षेत्रों में उत्पादन बढ़ा है, अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि समाजवादी ढांचे के परिप्रेक्ष्य में सार्वजनिक क्षेत्र का अधिक प्रसार हुआ है और इसने निजी क्षेत्र को अधिक विकसित होने के लिये आधारिक अवस्थापना

— : तालिका :—1

योजनागत व्यय और घाटे की वित्त व्यवस्था

योजना	कुल वास्तविक व्यय (करोड़ रु. में)	घाटे की वित्त व्यवस्था		वास्तविक व्यय में वास्तविक घाटे की वित्त व्यवस्था % में
		प्रस्तावित करोड़ रु. में	वास्तविक करोड़ रु. में	
1	2	3	4	5
प्रथम योजना	1960	290	333	17.0
द्वितीय योजना	4672	1200	948	20.4
तृतीय योजना	8577	550	1133	13.2
वार्षिक योजनायें	6756	——	682	10.1
चतुर्थ योजना	16160	850	2060	12.8
पांचवीं योजना	40712	1 00	3560	9.0
छठीं योजना (198 -8) प्रस्तावित	97500	5000	——	——

प्रभाव :—

भारत में स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद 1951 से नियोजित विकास प्रक्रिया अपनाई गयी जिसके लिये अतिरिक्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निर्मित कर दी है। यदि विकास के इन भौतिक सूचकांकों की प्राप्ति में सार्वजनिक व्यय की भूमिका निर्णायक रही है तो घाटे की वित्त व्यवस्था द्वारा सृजित मुद्रा (जो कुल व्यय का एक प्रमुख अंश है) का इन भौतिक सूचकांको की प्राप्ति में निश्चित ही महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इस धनात्मक परिणाम के साथ-साथ घाटे की वित्त व्यवस्था का प्रभाव अर्थव्यवस्था पर हानिकारक भी सिद्ध हुआ है। घाटे की वित्त व्यवस्था के प्रमुख हानिकारक प्रभावों को निम्नलिखित प्रकार से व्यक्त किया जा सकता है।

घाटे की वित्त व्यवस्था अर्थव्यवस्था में कुल मुद्रा आपूर्ति में वृद्धि का एक सशक्त माध्यम है। इसके कारण अर्थव्यवस्था में कुल मुद्रा की आपूर्ति में अत्यन्त तेजी से वृद्धि हुई; मुद्रा पूर्ति की वृद्धि दर अर्थव्यवस्था में वस्तुओं और सेवाओं की उत्पादन वृद्धि दर से अधिक हो गयी। नियोजन काल में कुल मुद्रागत साधनों, एम 3. (संचलन में करेन्सी, बैंकों में माँग जमा, बैंकों में मियादी जमा और रिजर्व बैंक के पास अन्य जमा) में उत्तरोत्तर वृद्धि होती गयी। कुल मुद्रागत साधनों की मात्रा वर्ष 1950-51 में 2015.99 करोड़ रु. थी जो कि 1960-61 और 70-71 में बढ़कर क्रमशः 2868.61 करोड़ रुपये और 10988 करोड़ रुपये हो गयी। इसके पश्चात् मुद्रा आपूर्ति में अधिक द्रुत गति से वृद्धि हुई। वर्ष 1979-80 और 1980-81 में कुल मुद्रागत साधन बढ़कर क्रमशः 46801 करोड़ रुपये और 55221 करोड़ रु. हो गया। एक अन्य महत्वपूर्ण बात यह रही है कि मुद्रा पूर्ति की वृद्धि दर योजना काल में क्रमशः बढ़ती गयी है। (तालिका-2) योजनाकाल में शुद्ध राष्ट्रीय आय की वृद्धि औसतन 3-5 प्रतिशत रही है यदि केवल 1970-80 के दशक पर ही विचार किया जाय तो भी

—:तालिका-२:—

मुद्रा पूर्ति और वास्तविक राष्ट्रीय आय में वृद्धि (प्रतिशत में)

अवधि	मुद्रापूर्ति में वृद्धि	राष्ट्रीय आय में वृद्धि
1951-52 से 1155-56	10.0	18.4
1956-57 से 1960-61	29.4	21.5
1961-62 से 1965-66	56.9	15.0
1966-67 से 1968-69	27.6	13.6
1969-70 से 1973-74	87.7	——
1976-77	18.8	1.3
1977-78	17.8	8.3
1978-79	18.7	4.1
1979-80	16.0	3.1
1980-81	18.0	——

यह स्पष्ट हो जाता है कि वास्तविक राष्ट्रीय आय की वृद्धि की तुलना मे मुद्रा पूर्ति मे अत्यन्त तीव्र दर से वृद्धि हुई है।

मुद्रा पूर्ति की वृद्धि की इस प्रक्रिया में अन्य तत्वों के साथ घाटे की वित्त व्यवस्था से निर्मित मुद्रा की भूमिका प्रमुख रही है। घाटे की वित्त व्यवस्था के कारण मुद्रा पूर्ति में अपेक्षाकृत अधिक तीव्रगति से वृद्धि होने के कारण अर्थव्यवस्था में स्फीतिकारी स्थितियाँ उत्पन्न हो गयी। कीमत निर्धारण की यदि तमाम क्लिष्टताओं को छोड़ दिया जाय तो यह कहा जा सकता है कि कीमत स्तर मुद्रा का वस्तुओं से अनुपात है। किसी वस्तु की कीमत उसकी मांग और पूर्ति के शेष द्वारा निर्धारित होती है। यही सामान्य नियम अर्थव्यवस्था में समस्त वस्तुओं और सेवाओं के सन्दर्भ में भी लागू होता है अर्थात् अर्थव्यवस्था में सामान्य कीमत स्तर का निर्धारण समग्र पूर्ति और समग्र माँग द्वारा होता है। अर्थव्यवस्था में कुल वास्तविक उपज को समग्र पूर्ति और कुल मुद्रा पूर्ति को समग्र माँग माना जा सकता है। जब अर्थव्यवस्था में समग्र माँग (कुल मुद्रा पूर्ति) वहाँ उपलब्ध कुल वस्तुओं और सेवाओं (समग्र पूर्ति) से अधिक हो जाती है तो कीमतों में वृद्धि और इसके विपरीत कीमतों में कमी आरम्भ हो जाती है। एक सरल उदाहरण लें माना समग्र पूर्ति और समग्र माँग के प्रतीक के रूप में अर्थव्यवस्था में क्रमशः 100 'ल' वस्तु और 100 रु विद्यमान हैं। अब वस्तु की प्रति इकाई कीमत एक रु. होगी। यदि रुपये (माँग के आधार) की मात्रा बढ़ती जाय और वस्तु की मात्रा कम होती जाय या अपरिवर्तित रहे या रुपये की मात्रात्मक वृद्धि की तुलना मे वस्तुयें की मात्रात्मक वृद्धि कम हो तो वस्तु की कीमत वृद्धि अवश्यम भावी है। यहाँ जो तथ्य समग्र पूर्ति के प्रतीक 'ल' वस्तु के बारे में सत्य है वही अन्य वस्तुओ और सेवाओं के बारे में भी सत्य है। हम लोगों ने घाटे की वित्त व्यवस्था के माध्यम से करोड़ों रुपये के नोट छाप डाले। फलतः समग्र माँग और पूर्ति में असन्तुलन उत्पन्न हो गया जिससे कीमतें अत्यधिक बढ़ने लगी। यदि मुद्रा पूर्ति और वास्तविक राष्ट्रीय आय की वृद्धि पर विचार किया जाय तो इस असन्तुलन का वीभत्स चित्र साफ दिखाई पड़ता है। आधार वर्ष 1961-62 के आधार पर प्रथम पंचवर्षीय योजना में कीमतों में 7.5 प्रतिशत की कमी आयी। इस अवधि में मुद्रा पूर्ति की वृद्धि की तुलना में वास्तविक राष्ट्रीय आय की वृद्धि अधिक रही है। इसके बाद कीमतों में तेजी से वृद्धि हुई। द्वितीय योजना सामान्य कीमत स्तर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में 35 प्रतिशत, तृतीय योजना में 32 प्रतिशत, वार्षिक योजनाओं में 26 प्रतिशत और चतुर्थ पंचवर्षीय योजना में 54 प्रतिशत की वृद्धि हुई। 1970-80 के दशक में कीमत वृद्धि चिन्ताजनक ही रही है। सभी वस्तुओं के थोक कीमत निर्देशांक 1970-71 के 100 की तुलना में अक्टूबर 1981 तक 280.2 हो गये।

घाटे की वित्त व्यवस्था के परिणामस्वरूप जो अतिरिक्त क्रय शक्ति लोगों के पास पहुँची उनके विविध उपयोग हुये। जो लोग इनमें से भूखे थे उन्होंने इसे आवश्यक उपभोग वस्तुओं पर खर्च किया। उपभोग वस्तुओं का तदनुरूप उत्पादन न बढ़ने के कारण उनकी कीमतें बढ़ी जिससे सामान्य जीवन स्तर यापन का व्यय बढ़ गया और बचत स्तर कम हो गयी। निम्न आय स्तर की स्थिति में अतिरिक्त आय की प्राप्ति आवश्यक उपभोग वस्तुओं के प्रयोग को बढ़ा देती है। दूसरी ओर सम्पन्न आय वर्ग में जिनकी आय बढ़ी उसका अधिकांश भाग उनके द्वारा आरामदायक और विलासिता की वस्तुओं पर व्यय किया गया जिससे उनकी कीमतें और उन वस्तुओं के उत्पादकों के लाभ बढ़े। इसके परिणामस्वरूप सम्पन्न वर्गों द्वारा प्रयोग की जाने वाली वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन के प्रति विनियोग अधिक तेजी से बढ़ा जबकि अपेक्षित यह था कि उन वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन के प्रति विनियोग बढ़ाया जाता जिनका उपयोग जन सामान्य या कम आय वर्ग के लोग करते हैं। आज के बाजार में आरामदायक एवं विलासिता की विभिन्न वस्तुये सर्वत्र बहुसुलभ हैं, लेकिन अनिवार्यताओं की कमी है। इसका मुख्य कारण अतिरिक्त सृजित मुद्रा का प्रमुख भाग सम्पन्न वर्ग के हाथों में पहुँचना रहा है। कीमत स्तर में वृद्धि के कारण विनियोग राशि की क्रय शक्ति में उत्तरोत्तर कमी आई जिसके लिए पूर्व निर्धारित विनियोग राशियों को लक्ष्य प्राप्ति हेतु बढ़ाना पड़ा। इसके परिणामस्वरूप विकास की अन्य मदों की प्रक्रिया के निष्पादन में कठिनाई उत्पन्न हुई अथवा यह कहा जा सकता है कि समग्र विकास प्रक्रिया हतोत्साहित हुई।

इस विश्लेषण से यह प्रतीत होता है कि भारतीय अर्थव्यवस्था में घाटे की वित्त व्यवस्था ने जहाँ एक ओर उत्पादन वृद्धि में सहायता की है वहीं दूसरी ओर कीमत वृद्धि के माध्यम से इसने जन-सामान्य का जीवन यापन अत्यन्त दुष्कर कर दिया है। वस्तुतः 'आज घाटे की वित्त व्यवस्था; ऊँची मुद्रा पूर्ति वृद्धि मान कीमतें और फिर घाटे की वित्त व्यवस्था' का एक दुष्चक्र बन गया है। परन्तु घाटे की वित्त व्यवस्था के अपेक्षाकृत अधिक सघन दुष्परिणामों के बावजूद सतत् घाटे की वित्त व्यवस्था की जा रही है। 1982-83 के बजट में भी 1365 करोड़ रुपये का घाटा दिखाया गया और 1983-84 के बजट प्रस्ताव में 1555 करोड रुपये का घाटा दिखाया गया है। इसलिए प्रश्न उठता है कि फिर यह घाटे की वित्त व्यवस्था क्यों? वस्तुतः इस पर लगाये जाने वाले प्रमुख दोष कीमत वृद्धि पर इसका महत्वपूर्ण प्रभाव अवश्य रहा है। लेकिन इसके साथ-साथ अन्य घटक यथा कृषि व औद्योगिक उत्पादनों में स्थिरता, अर्थव्यवस्था में समुचित प्रबन्ध की कमी, युद्ध, सट्टाजनक कालाधन व्यय, और खनिज तेल की कीमतों में वृद्धि आदि भी कीमत वृद्धि में समान रूप से सहायक रहे हैं। सरकार के गैरउत्पादकव्यय में उत्तरोत्तर अत्यन्त तेजी से वृद्धि हुई है। इनके अलावा मुद्रा पूर्ति ने वृद्धि के बाद साहसियों की कमी, प्राविधिक ज्ञान की कमी, समर्थ आर्थिक संगठन की कमी तथा समुचित उत्पादक योजनाओं का चुनाव न होने के कारण उत्पादन अपेक्षित स्तर तक नहीं बढ़ पाता है। अत्यधिक पूंजी से निर्मित विभिन्न परियोजनाओं और उद्योगों में निहित क्षमता का उपयोग नहीं हो पा रहा है जिससे उत्पादन वृद्धि की क्षमता और सम्भावना होते हुये भी उत्पादन नहीं बढ़ पा रहा है। अब यह आवश्यक है कि एक ओर तो घाटे की वित्त व्यवस्था उत्तरोत्तर घटायी जाये, इससे एक सुरक्षित सीमा तक ही रखा जाय, दूसरे घाटे की वित्त व्यवस्था से सृजित अतिरिक्त मुद्रा का समस्त भाग और कुल राजकीय व्यय का अधिकांश भाग उत्पादक कार्यों पर खर्च किया जाय। तीसरे घाटे की वित्त व्यवस्था से सृजित मुद्रा अनिवार्यतः ऐसी योजनाओं पर खर्च हो जिनकी परिपक्वता अवधि अत्यन्त कम हो ताकि मुद्रा पूर्ति के पश्चात् उत्पादन शीघ्र बढ़े ताकि माँग एवं पूर्ति में वांछित सन्तुलन शीघ्र स्थापित किया जा सके।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्तर्राष्ट्रीय समीक्षा

- विकासशील देशों की ब्यूनेस आयर्स बैठक : व्यावहारिक निष्कर्ष का अभाव
- कम्प्यूचिया : वियतनामी सेनाओं द्वारा संघर्ष की नयी शुरूआत'''।
- निकारगुआ : रीगेनाइट उग्रवादिता का नया शिकार
- परमाणु अस्त्र प्रह्रासन : रीगेन का नया शगूफा''''।
- बगदाद सम्मेलन : सब कुछ अनिश्चित है !

विश्व आर्थिक व्यवस्था :

विकासशील देशों की ब्यूनेस-आयर्स बैठक : व्यावहारिक निष्कर्ष का अभाव

अप्रैल के पूर्वार्द्ध में 'ग्रुप ऑफ 77' (Group of 77) विकासशील देशों की मंत्रिमण्डलीय स्तर की बैठक अर्जेण्टीना की राजधानी ब्यूनेस आयर्स में सम्पन्न हुयी। कुछ समय उपरांत अक्टाड VI (UNCTAD-VI) की बैठक बेलग्रेड में होगी। विकासशील देशों के मंत्रियों की यह बैठक 'अंकटाड' के दौरान उठाये जाने वाले मुद्दों तथा विकास की समस्यायों में एकरूपता लाने के उद्देश्य से आयोजित की गयी। बैठक के उपरांत पारित प्रस्ताव में यह कहा गया कि विश्वपरक आर्थिक संकट तथा असंतुलन को दूर करने के लिये यह नितांत आवश्यक है कि विकसित तथा विकासशील देश सम्मिलत रूप से प्रयास करें क्योंकि दोनों का विकास परस्पर अन्तर्सम्बद्ध है।

किन्तु यदि बैठक के दौरान पारित विभिन्न प्रस्तावों का निरपेक्ष मूल्यांकन किया जाय तो प्रस्तावों में ऐसा कोई विवरण नहीं दिया गया है कि विकसित तथा विकासशील देशों का आर्थिक तथा मौद्रिक विकास किस प्रकार से परस्पर सम्बद्ध है ? अथवा यह कि किस प्रकार मात्र अपने विकास हेतु विकसित या विकासशील देशों द्वारा किये गये एक-पक्षीय प्रयास विश्व को आर्थिक संकट तथा स्खलन के दौर से उबारने में सक्षम नहीं है। पर्यवेक्षकों के एक वर्ग का यह भी विचार है कि बैठक के दौरान पारित प्रस्तावों से विकासशील देशों का ही समग्र हित पूरा होता है। मुख्य रूप से ग्रुप द्वारा जिन चार मांगों को विकासशील देशों द्वारा प्रस्तावों के रूप में प्रस्तुत किया गया, वे इस प्रकार हैं : (क) न्यूनतम् विकसित देशों द्वारा अब तक सरकारी तौर पर जो भी ऋण (Debt) विभिन्न मौद्रिक एजेंसियों से लिया गया है उसे अनुदान (Grant) मान लिया जाना चाहिये। ज्ञातव्य हो कि अनुदान मान लेने पर इन ऋणों की अदायगी का प्रश्न समाप्त हो जायेगा, (ख) विकासशील देशों द्वारा सरकारी विकास सहायता (Official Development Agency) मद के अन्तर्गत जो ऋण लिया गया है, उसकी अदायगी एक वर्ष के लिये स्थगित कर दी जाय, (ग) विश्व बैंक तथा अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष द्वारा विकासशील देशों को प्रदेश कार्यक्रमबद्ध ऋण की राशि में वृद्धि की जानी चाहिये, तथा अन्ततः 36 न्यूनतम् विकसित देशों को, विकसित देशों की समग्र राष्ट्रीय आय का

प्रस्तुति : नन्द लाल, प्रवक्ता, राजनीति विभाग, काशी विद्यापीठ विश्वविद्यालय, वाराणसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कम से कम 0.15 प्रतिशत सरकारी विकास सहायता (ODA) के रूप में दिया जाना चाहिये।

चारों प्रस्ताव प्रारंभिक विश्लेषण पर कम से कम विकासशील देशों के दृष्टिकोण से, पूर्णतया औचित्यपूर्ण प्रतीत होते हैं। किन्तु पूरी वार्ता तथा उसके उपरांत जारी प्रस्तावों मे कहीं भी इस बात की चर्चा नहीं की गयी है कि आखिर विकसित देशों की अर्थ-व्यवस्थायें आर्थिक ह्रास के दौर से क्यों गुजर रही है? तथा विकसित विश्व का आर्थिक ह्रास विकासशील देशों की अर्थव्यवस्थाओं को किस प्रकार प्रभावित कर सकता है? कहना न होगा, कि प. यूरोप के विभिन्न देश वर्तमान समय मे आर्थिक ऊहापोह के जिस दौर से गुजर रहे हैं, उसमें वे किसी प्रकार के नये आर्थिक वायदे नहीं करना चाहते, जबकि विकासशील देश ठीक यही चाहते हैं। इस विरोधाभास को देखते हुए यह कहना उचित होगा कि बेलग्रेड बैठक के संदर्भ में ब्यूनेस आयर्स की मंत्रिमण्डलीय बैठक में किसी ठोस नतीजे की प्राप्ति नहीं हुयी।

हिन्द-चीन :

कम्प्यूचिया : वियतनामी सेनाओं द्वारा सघर्ष की नयी शुरुआत.....।

अभी सातवें गुट निरपेक्ष शिखर सम्मेलन के दौरान कम्प्यूचिया समस्या समाधान पर हुए असफल वादविवाद पर समाचार पत्रों में टीका टिप्पणी हो चल रही थी कि अप्रैल के प्रारंभिक दिवसों में, वियतनामी सेनाओं ने थाईलैण्ड की सीमा पर खमेर रोग (कम्प्यूचिया का विद्रोही गुट) द्वारा नियंत्रित स्थलों पर भयंकर आक्रमण कर दिया। ज्ञातव्य हो कि चार वर्ष पूर्व वियतनामी सेनाओं ने कम्प्यूचिया में हस्तक्षेप किया था और निवर्तमान समय में पर्यवेक्षकों का ऐसा अनुमान है कि लगभग 1,50,000 वियतनामी सेनायें अब भी कम्प्यूचिया में विद्यमान हैं। वियतनामी सेनाओं ने राजकुमार नॉरडम सिहानुक, जो हेंग समेरिन के विरोधी त्रि-पक्षीय साझा सरकार के नेतृत्वकर्त्ता भी है, के प्रति विश्वासपात्र गुरिल्लो के एक शिविर को भी नष्ट कर दिया।

ऐसा अनुमान किया गया है कि वियतनाम की इस गतिविधि के कारण दोनों पक्षों को व्यापक जन एवं शस्त्र हानि के अतिरिक्त, कम से कम 25,000 कम्प्यूचियाई शरणार्थी थाईलैण्ड की सीमा मे पहुंच गये हैं। पहले की भाँति, इस बार भी वियतनामी सेनाओं ने अपनी सैनिक गतिविधि चेतावनी के उपरांत शुरू की। मुख्य रूप से वियतनामी सैनिक आक्रमण का केन्द्र वे ठिकाने तथा प्रदेश रहे जिन पर त्रि-पक्षीय सरकार का नियंत्रण सक्षम नहीं था। वियतनामी सेनाओं की भावी गतिविधि के विषय में सामान्यतया यह मत प्रकट किया गया है कि वियतनामी सेना भविष्य में एक सशक्त सैन्य संघर्ष का अभ्यास कर रही हैं। किन्तु इस मत में अधिक बल नहीं प्रतीत होता क्योंकि हो सकता है अपनी सैनिक गतिविधियों के माध्यम से वियतनामी सेनाएं त्रि-पक्षीय सरकार की शक्ति एवं क्षमता के समक्ष प्रश्नचिन्ह लगाकर, उसे अनौचित्यपूर्ण सिद्ध करना चाहती हों।

ऐसा इस आधार पर भी कहा जा सकता है कि वियतनामी सरकार ने कुछ समय पूर्व यह घोषणा की थी कि क्रमशः कम्प्यूचिया मे विद्यमान सभी वियतनामी सैनिक वापस बुला लिये जायेंगे। किन्तु पुनः 4 अप्रैल को वियतनाम के उप-विदेश मंत्री ने स्पष्ट कहा है कि, "यदि कम्प्यूचिया के आंतरिक मामलों में बाह्य हस्तक्षेप समाप्त नहीं हुआ तो वियतनाम अपनी प्रस्तावित वापसी की योजना पर पुनर्विचार करने के लिये बाध्य हो जायेगा।" और यह सत्य है कि जब तक वियतनामी सेनायें कम्प्यूचिया में विद्यमान हैं तब तक खमेर रोग के 30,000 सैनिक शायद ही कोई गुणात्मक परिवर्तन कम्प्यूचिया की स्थिति में ला सकें। किन्तु यदि वियतनामी सेनाएं कम्प्यूचिया से वापस बुला ली जाती हैं, तब त्रि-पक्षीय साझा सरकार की स्थिति कुछ शक्तिशाली हो सकती हैं। ये तीनों गुट अभी भी पोल पोट सरकार के समर्थक है।

वियतनामी सेनायें निरंतर यह स्पष्ट करने का प्रयास कर रही हैं कि सिहानुक के नेतृत्व वाली त्रि-पक्षीय सरकार निरर्थक है। ज्ञातव्य हो कि त्रि-पक्षीय सरकार को 'एशियाई देशों का भी पूर्ण समर्थन प्राप्त है। वियतनाम की इस बार की गतिविधि के पीछे एक कारण यह भी हो सकता है कि वियतनाम की कम्प्यूचिया के मसले पर एक सम्मेलन बुलाने वाले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की मांग के विषय में 'एशियान' देश कोई विशेष रुचि नहीं ले रहे हैं। पुनः हाल में, वियतनाम ने अपना यह आग्रह भी छोड़ दिया कि 'क्षेत्रीय सम्मेलन' में हेंग समेरिन सरकार को भी आमंत्रित किया जाय। किन्तु कुछ दिनों पूर्व क्वालालमपुर में सम्पन्न 'एशियान' राष्ट्रों के विदेश मंत्रियों की बैठक में, इस प्रकार का कोई निर्णय नहीं लिया जा सका। हो सकता है, इन सब घटनाओं की चरम परिणति हाल के वियतनामी आक्रमण के रूप में हुयी हो।

कहना न होगा कि अब तक कम्पूचिया के मसले पर संयुक्त राष्ट्र द्वारा किसी विशेष भूमिका का निर्वाह नहीं किया गया अब पुनः एक अवसर है जब संयुक्त राष्ट्र को क्षेत्रीय राजनीति में हस्तक्षेप करना चाहिये तथा एक ऐसे समझौते का प्रयास करना चाहिये जिसके अन्तर्गत कम्पूचिया से सभी विदेशी सेनायें वापस बुला ली जानी जानी चाहिये तथा सं. रा की 'पर्यवेक्षण सेना' को कम्पूचिया में निवेशित किया जाना चाहिये। अन्यथा संघर्ष, शरणार्थी तथा विदेशी हस्तक्षेप का सिलसिला जारी रहेगा, यह निश्चित है।

लातीनी अमरीका :

निकारगुआ : रीगेनाइट उग्रवादिता का नया शिकार

अप्रैल के पूर्वार्द्ध घटनाक्रम से प्रायः यह सिद्ध हो गया है कि रीगेन प्रशासन, निकारगुआ की संदनिष्ट सरकार को गिराने के लिये दक्षिण-पंथी विद्रोहकारियों को पूरी-पूरी सहायता कर रहा है। अप्रैल के प्रारंभ से ही निकारगुआ में सरकारी सैनिकों तथा दक्षिण-पंथी विद्रोहकारियों के मध्य भयंकर संघर्ष हो रहा है। प्रमुख पर्यवेक्षकों के अनुसार वाशिंगटन कई माह पूर्व से ही, निकारगुआ के पड़ोस हॉन्डरस (Honduras) में, विद्रोहकारियों को प्रशिक्षित कर रहा है। सरकारी तौर पर रीगेन प्रशासन ने इसका विरोध भी नहीं किया है। आंतरिक सूत्रों का कहना है कि रीगेन प्रशासन का मुख्य उद्देश्य मनागुआ की वामपंथी सरकार को गिराना न होकर, समुचित दबाव को कार्यान्वित करके क्यूबा द्वारा आपूर्ति किये गये सोवियत निर्मित हथियारों को निकारगुआ तथा हॉन्डुरस के माध्यम से अल साल्वाडोर तक न पहुँचने देना है। सरकारी तौर पर वाशिंगटन द्वारा निकारगुआ के मामले में अपने को स्वतंत्र रखा गया है। इसका एक प्रमुख कारण यह है कि अमरीकी कांग्रेस पहले ही यह स्पष्ट कर चुकी है कि संदनिष्ट सरकार को गिराने के लिये संघीय धन का प्रयोग नहीं किया जा सकता। ऐसी स्थिति में रीगेन प्रशासन द्वारा प्रत्यक्ष रूप से यह कहा जाना कि निकारगुआ के विद्रोहकारियों को सहायता के माध्यम से इसका उद्देश्य अल-साल्वाडोर को हथियारों की आपूर्ति को रोकना है, "उचित" ही कहा जा सकता है।

संदनिष्ट सरकार के विरुद्ध संघर्ष करने वाले अधिकांश विद्रोही एनेस्टासियो समोजा के समर्थक हैं। समोजा, निकारगुआ के बहुचर्चित अधिनायक रहे हैं जिन्हें संदनिष्टों द्वारा 1979 में पदविमुक्त कर दिया गया था। इस प्रकार अमरीकी प्रशासन संदनिष्ट सरकार के विरुद्ध विद्रोहियों को समर्थन तथा सैनिक सहायता के माध्यम से किस प्रकार की सरकार निकारगुआ में स्थापित करना चाहता है, यह सुस्पष्ट है। ज्ञातव्य हो कि विद्रोहकारियों में से अधिकांश, निकारागुआ में आतंकवादी लहर फैलाने वाले समोजा के 'नेशनल गार्ड' संगठन के सक्रिय सदस्य रहे हैं।

निकारगुआ के वर्तमान घटनाक्रम के दौरान अमरीकी नीति नियामकों के एक वर्ग ने अनौपचारिक रूप से यह भी दृष्टिकोण प्रस्तुत किया कि विद्रोहियों को अल-साल्वोडोर में बहुपक्षीय सरकार की स्थापना के संदर्भ में विचार-विमर्श में आमंत्रित किया जाना चाहिये किन्तु रीगेन प्रशासन इस बारे में फूंक-फूंक कर कदम रखना चाहता है। प्रशासन को भय है कि कहीं निकारगुआ की भाँति अल-साल्वोडोर में भी क्रमशः वामपंथियों की भूमिका सशक्त न हो जाय, वाशिंगटन कभी भी यह नहीं चाहेगा। रीगेन ने 4 अप्रैल को एक वक्तव्य के दौरान अल-साल्वाडोर को लिंचपिन आफ दि हेमिस्फीयर (Lynchpin of the Hemisphere) कहा है। ऐसी परिस्थितियों में रीगेन प्रशासन द्वारा धन व हथियारों की आपूर्ति को अवरोधित करने के माध्यम से अल-साल्वाडोर के वामपंथी विद्रोहकारियों को अशक्त बनाने की नीति का आश्रय लिया गया है। निकारगुआ का निवर्त-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानें घटनाक्रम इसी नीति का परिणाम है।

निकारगुआ लातीनी अमरीका का एक प्रमुख राष्ट्र है। 57,183 वर्ग मील के क्षेत्रफल तथा 2,080,000 की जनसंख्या वाला राष्ट्र, निकारगुआ (राजधानी मनगुआ) प्रारंभ से ही राजनीतिक अस्थिरता तथा प्राकृतिक आपदा का शिकार रहा है। 1979 में समोजा की पद विमुक्ति के बाद से संदनिष्ट सरकार का शासन चला आ रहा है। अधिनायकवाद से एक लम्बे समय के उपरांत मुक्ति प्राप्त निकारगुआ में संदनिष्ट सरकार ने आते ही एक लोकप्रिय शासन की स्थापना की थी। मिश्रित अर्थ-व्यवस्था, प्रेस तथा इसी प्रकार की अन्य स्वतंत्रताओं, स्वतंत्र न्याय व्यवस्था-इस लोकप्रिय शासन की विशेषतायें बतायी जा सकती हैं। विरोध पक्ष को भी अभिव्यक्ति की पूर्ण स्वतंत्रता प्रदान की गयी किन्तु क्रमशः पिछले 4 वर्षों में (1979-83) एक-एक करके ये स्वतंत्रतायें समाप्त होती गयी। क्योंकि संदनिष्ट सरकार में विद्यमान वामपंथी शक्तियों ने सरकार के केन्द्रीय बिन्दुओं पर अधिकार जमा लिया, अपने विरोधियों को एक-एक करके बाहर कर दिया तथा अब क्रमशः निकारगुआ को उग्रवादी अधिनायकवादी शासन की ओर अग्रसरित किया जा रहा था। यह वह पृष्ठ भूमि है जिसमें अमरीका ने अपनी भूमिका निभायी।

इसमें कोई मतभेद नहीं होना चाहिये कि अमरीकी नीति-नियामक निकारगुआ में संदनिष्ट सरकार को गिराकर एक ऐसी सरकार की प्रतिस्थापना चाहते हैं जो निकारगुआ में अमरीकी भूमिका को स्वीकार कर सके। यदि ऐसा हो सके तो निश्चय ही ग्वाटिमाला तथा अल साल्वाडोर में वामपंथी शक्तियों के प्रभाव को कम किया जा सकेगा। किन्तु रीगेन प्रशासन शायद ही निकारगुआ में प्रत्यक्ष सैनिक हस्तक्षेप करने का साहस करे क्योंकि तब अमरीका को वैसे ही विश्वव्यापी आलोचना का शिकार बनना पड़ेगा जैसा कि सोवियत संघ को अफगानिस्तान के मामले में बनना पड़ा। पुनश्च, निकारगुआ या किसी भी लातीनी अमरीकी राष्ट्र में प्रत्यक्ष अमरीकी भूमिका का तात्पर्य होगा सोवियत संघ की उग्र प्रतिक्रिया। इस कारण अमरीका निकारगुआ में 'गुप्त युद्ध' (Secret War) का आश्रय ले रहा है।

एक तथ्य की ओर और ध्यान दिया जाना चाहिये कि अमरीकी नीति नियामकों के मष्तिस्क से वियतनाम घटनाक्रम की काली छाया दूर नहीं हुयी है। परिणामस्वरूप लातीनी अमरीका के विषय में अमरीकी प्रशासन जल्दबाजी नहीं करना चाहता। परिणामतः अपने प्रभाव की स्थापना के लिये वाशिंगटन ने 'प्रमुख लातीनी अमरीकी देशों की सशक्त शक्तियों की सहायता करने' की नीति का आश्रय लिया है। अपनी इसी नीति के अन्तर्गत, कुछ प्रमुख राष्ट्रों में 'भूमि-सुधार' नियमों को लागू करने का प्रयास किया गया किन्तु इस प्रकार के किसी कार्यक्रम का व्यावहारिक स्तर पर सफल होना मुश्किल है क्योंकि एक लंबे समय से अधिनायकवादी निरंकुश शासकों द्वारा पूरे महाद्वीप का शोषण किया गया है। इस संदर्भ में समोजा परिवार का नाम उल्लेखनीय है।

निःशस्त्रीकरण :

परमाणु अस्त्र प्रह्रासन : रीगेन का नया शगूफा

पिछले कुछ दिनों में, 'परमाणु अस्त्र प्रह्रासन' की दिशा में किये गये प्रयासों के समक्ष पुनः एक बार प्रश्न-चिन्ह लग गया है। मार्च के अंतिम दिनों में एक पत्रकार सम्मेलन के दौरान राष्ट्रपति रीगेन ने यह स्पष्ट रूप से घोषित किया है कि वे 'संयुक्त राज्य अमरीका में एक 'एन्टी-बेलेस्टिक मिसाइल सिस्टम' को विकसित किये जाने" के पक्ष में हैं। निश्चित रूप से इस प्रकार का बयान समग्र जेनेवा वार्ता को खटाई में डाल सकता है। पुनः 'नाटो' देशों ने विलामोरा (पुर्तगाल) में अपनी बैठक के दौरान प० यूरोप में पर्शिंग-II तथा क्रूज प्रक्षेपास्त्रों के नियोजन के संदर्भ में अपने पूर्व निर्धारित कार्यक्रम को लागू करने का निर्णय लिया है। साथ ही 'नाटो' देश सोवियत संघ के साथ वार्ता को भी आगे बढ़ाते रहना चाहते हैं। इसके साथ ही एक तीसरी घटना भी है जो निश्चय रूप से जेनेवा वार्ता के भावी परिणामों को प्रभावित करेगी। वह यह कि सोवियत विदेश मंत्री ऐन्द्राई ग्रोमिको को सोवियत संघ के प्रथम उपविदेश मंत्री का पद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया गया है और इस प्रकार अब ग्रोमिको विदेश नीति के संयोजन तथा क्रियान्वयन के एकछत्र स्वामी हैं। और ग्रोमिको शांति स्थापना में अपने योगदान के लिये यथेष्ट रूप से चर्चित हैं।

पिछले अंक में चर्चा की गयी थी कि प० जर्मनी में हेलमुट कोहल की विजय ने वाशिंगटन को प. यूरोप में प्रक्षेपास्त्रों के नियोजन की दिशा में और बल प्रदान किया है किन्तु 9 मार्च को अमरीकी 'हाऊस ऑव रिप्रेसेन्टेटिव्स' की 'फारेन अफेयर्स कमेटी' ने एक प्रस्ताव पारित करके, सोवियत संघ तथा अमरीका दोनों को 'परमाणु अस्त्रों' के प्रह्रासन पर तुरत वार्ता शुरू करने को कहा है। यद्यपि समिति के इस प्रकार के प्रस्ताव को मानने के लिये राष्ट्रपति पूर्णतया बाध्य नहीं है किन्तु निश्चय रूप से इस प्रकार का प्रस्ताव राष्ट्रपति की भावी योजना के क्रियान्वयन में बाधा पैदा कर सकता है क्योंकि प्रतिनिधि सभा में डेमोक्रेटिक दल का बहुमत है।

इन सबके परिप्रेक्ष्य में निश्चय ही सोवियत नेतृत्व उग्र कदम उठा सकता है। क्योंकि यदि प. यूरोप के राष्ट्रों में परशिंग-II तथा क्रूज प्रक्षेपास्त्रों का नियोजन होता है तो निश्चय ही सोवियत परमाणु ठिकानों को खतरा हो सकता है। सोवियत संघ वाशिंगटन द्वारा विकसित की जा रही ऐन्टी बेलिस्टिक मिसाइल सिस्टम' को रोकने का प्रयास करेगा अथवा हो सकता है मास्को इस प्रकार की 'मिसाइल व्यवस्था' स्वतः विकसित करने का प्रयास करे। दोनों ही परिस्थितियों में परिणाम एक ही होगा। विश्वपरक सैनिक संतुलन में अस्थिरता, तनाव शिथिलीकरण की औपचारिक मृत्यु तथा परमाणु अस्त्र प्रह्रासन वार्ता का अधर में लटक जाना। पाठकों को ज्ञात हो कि परमाणु अस्त्र परिसीमन वार्ता (SALT) जिसे बाद में रीगेन ने परमाणु अस्त्र प्रह्रासन वार्ता (START) का नाम दिया, का पूरा ढाचा 1972 के समझौते पर आधारित है जिसके अन्तर्गत मास्को तथा वाशिंगटन दोनों को 'एन्टी न्यूक्लियर मिसाइल सिस्टम' के विकास करने के लिये कठोरता से प्रतिबंधित किया गया था। दोनों ही महाशक्तियों ने उस समय ही महसूस किया था कि ABM व्यवस्था पर प्रतिबंध आवश्यक है क्योंकि किसी भी समय इसके प्रयोग से दोनों का ही विनाश हो सकता है। राष्ट्रपति रीगेन के इस प्रकार के निर्णय के पीछे कारण कुछ भी हो, कैस्पर वेनबर्गर ने इसे 'मानवता की आशा' संज्ञा दी है। यह व्याख्या करना अत्यन्त मुश्किल है कि 'मानवता की आशा' 'मानवता के विनाश' पर किस प्रकार आधारित होगी?

ईरान-इराक युद्ध

बगदाद सम्मेलन : सब कुछ अनिश्चित है!

पश्चिमी एशिया में अभी लेबनॉन तथा ईरान-इराक युद्ध का संकट पूर्णतया समाप्त नहीं हुआ है। दोनों देशों की अर्थव्यवस्था दीर्घकालिक युद्ध के कारण जर्जर हो चुकी है। पुनः 'ओपेक' में पिछले कुछ दिनों से चले आ रहे संकट, जिसकी चरम परिणति अंततः प्रति बैरल तेल के मूल्य में 5 डॉलर की कमी के रूप में हुयी से खाड़ी के राष्ट्र पहले से हीं चिंतित हैं।

दोनों खाड़ी के देशों के मध्य शान्ति स्थापना के नवीनतम प्रयास के रूप में बगदाद में पिछले सप्ताह हुए इस्लामी सम्मेलन के दौरान एक शांति समिति (Peace Committee) का गठन किया गया है। सम्मेलन के सदस्य मुख्य रूप से मुस्लिम धर्मवेत्ता तथा राजनीतिक नेतागण है। सम्मेलन में यह भी निर्णय लिया गया कि दोनों राष्ट्रों में से जो भी शांति समिति के निर्णयों को स्वीकार नहीं करेगा, उस पर मुस्लिम राष्ट्रों द्वारा सांस्कृतिक, राजनीतिक तथा आर्थिक प्रतिबंध भी लगाये जायेंगे। इराक के राष्ट्रपति सद्दाम हुसैन पहले ही समिति के निर्णयों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता प्रकट कर चुके हैं। ज्ञातव्य हो कि सम्मेलन की अध्यक्षता भी सद्दाम हुसैन द्वारा ही की गयी। किन्तु ईरान द्वारा बगदाद सम्मेलन में न शामिल होना चिंता का विषय है। अब तक के जितने भी शांति प्रयास विभिन्न एजेंसियों द्वारा किये गये हैं, वे सब के सब ईरानी हठधर्मिता के कारण सफल नहीं हो पाये। इस आधार पर यदि यह कहा जाय कि अयातुल्ला खुमैनी पर 'इस्लामी सम्मेलन' द्वारा स्थापित शांति समिति के प्रस्तावों का कोई असर नहीं होगा, तो असंगत नहीं होगा। विशेष रूप से तब जब कि समिति कि अध्यक्षता सऊदी अरब के नेतृत्व में है।

इस घटनाक्रम में, तेल के स्त्रोत का फूट जाना (Oil stick) एक दुःखद प्रसंग ही कहा जाना चाहिये। विशेष रूप से खाड़ी के देशों मे इस प्रकार की घटना अधिक चिंता का विषय बन जाती है क्योंकि इन देशों मे पेय जल की आपूर्ति उन शोध संयत्रों के माध्यम से की जाती है जो समुद्र के तट पर समुद्री जल को साफ करने के लिये लगाये गये है। 578 वर्गमील के जिस समुद्री क्षेत्र में तेल पानी पर तैर रहा है वह इतना घना है कि जल से तेल का पृथक कर पाना बड़ा कठिन है।

ईरान ने कहा है कि खाड़ी के देशों में समुद्र के सतह पर तेल फैलने की जो बात कही जा रही है वह इराक द्वारा विश्व को दिग्भ्रमित करने के लिये है। ■

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रीड़ा जगत

क्रिकेट

● 20 अप्रैल 83 को ब्रिज टाउन में समाप्त हुए चतुर्थ क्रिकेट टेस्ट मैच में वेस्ट इन्डीज ने भारत को 10 विकेट से पराजित किया। भारत : 200 व 277 रन; वेस्ट-इन्डीज 486 रन व 1 रन बिना कोई विकेट खोये। ● 16 अप्रैल 83 को कोलम्बो में सम्पन्न द्वितीय एक दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय मैच में श्रीलंका ने आस्ट्रेलिया को 4 विकेट से पराजित किया। आस्ट्रेलिया : 207 रन पर 5 विकेट; श्रीलंका : 213 रन पर 6 विकेट। ● 13 अप्रैल, 83 को कोलम्बो में आयोजित प्रथम एक दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय मैच में श्रीलंका ने आस्ट्रेलिया को 2 विकेट से पराजित किया। आस्ट्रेलिया : 168 रन पर 9 विकेट; श्रीलंका : 169 रन पर 8 विकेट। ● 8 अप्रैल 83 को सैन्ट जार्ज में खेले गये तृतीय एक दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय मैच में वेस्ट इण्डीज ने भारत को 7 विकेट से हराया। भारत : 166 रन; वेस्ट इण्डीज 167 रन पर 3 विकेट ● 5 अप्रैल, 83 को जार्ज टाउन में समाप्त भारत और वेस्ट इण्डीज के मध्य खेला गया तृतीय टेस्ट मैच अनिर्णीत रहा। वेस्ट इण्डीज : 476 रन; भारत : 284 रन पर 3 विकेट। ● 30 मार्च, 83 को बर्बीस में खेला गया द्वितीय एक दिवसीय मैच में भारत ने पहली बार वेस्ट इण्डीज को 27 रन से पराजित किया। भारत : 282 रन पर 7 विकेट, वेस्ट इण्डीज : 255 रन पर 9 विकेट। ● 17 मार्च, 83 को पोर्ट ऑव स्पेन में समाप्त भारत एवं वेस्ट इण्डीज के मध्य खेला गया द्वितीय टेस्ट मैच अनिर्णीत रहा। भारत: 175 व 469 रन पर 7 विकेट वेस्ट इण्डीज 394 रन। ● 15 मार्च, 83 को वेलिंग्टन में समाप्त द्वितीय टेस्ट मैच में न्यूजीलैण्ड ने श्रीलंका को 6 विकेट से पराजित किया। श्रीलंका: 240 व 93 रन न्यूजीलैण्ड : 261 व 134 रन पर 4 विकेट।

फुटबाल

● 17 अप्रैल, 83 को बैंकाक में आयोजित फाइनल में थाईलैण्ड ने भारत को 3—0 गोल से पराजित कर एशियाई महिला फुटबाल चैम्पियनशिप जीत ली। ● 30 मार्च, 83 को कोचिन में सम्पन्न फाइनल में हंगरी ने चीन को 2—1 गोल से पराजित कर जवाहर लाल नेहरू स्वर्ण ट्राफी को जीतने का श्रेय प्राप्त किया। ● मार्च 83 के अन्तिम सप्ताह में खेले गये फाइनल मैच में सेसा क्लब, गोवा व जे. सी टी. पगवाड़ा अनिर्णीत रहने के कारण दोनों दल मादुराई शतवार्षिकी स्वर्ण कप के संयुक्त विजेता बने।

हाकी

● 21 अप्रैल 83 को क्वालालमपुर में सम्पन्न फाइनल मैच में आयरलैण्ड ने स्पेन को 2—1 गोल से पराजित कर इन्टर कान्टिनेन्टल कप को जीत लिया। ● 21 अप्रैल, 83 को बम्बई में आयोजित फाइनल मैच में ई. एम. ई., जलन्धर ने ट्राई ब्रेकर में 10—9 गोल से टाटा स्पोर्ट्स क्लब बम्बई को पराजित कर गुरू तेज बहादुर स्वर्ण कप को जीत लिया। ● 17 अप्रैल, 83 को बम्बई में खेले गये फाइनल मैच में इण्डियन एयरलाइन्स ने बिहार रेजीमेन्टल सेन्टर, दानापुर को 6—1 गोल से पराजित कर बम्बई स्वर्ण कप जीतने का श्रेय प्राप्त किया।

बैडमिन्टन

● मार्च, 83 में मालमो में सम्पन्न स्वीडिश ओपेन बैडमिन्टन चैम्पियनशिप में मिसबन सिदेक (मलेशिया) ने मार्टन फास्ट (डेनमार्क) को 9-15, 15-10, 15-13 से तथा हेलन ट्रोक (इंग्लैण्ड) ने जेन वेबस्टर (इंग्लैंड) को 11-2, 11-5 से पराजित कर कर क्रमशः पुरुष व महिला वर्ग का एकल खिताब जीता। ● 17 मार्च, 83 को वेम्बली में आयोजित आल इंग्लैण्ड बैडमिन्टन चैम्पियनशिप में लुआन जिन (चीन) ने मार्टन फास्ट को 15-2, 12-15, 15-4 से, तथा झांग ऐलिंग (चीन) ने वुजियान्वी (चीन) को 11-5, 10-12, 12-9 से पराजित कर क्रमशः पुरुष व महिला वर्ग का एकल खिताब जीता।

बाक्सिंग

28 मार्च, 83 को लैरी होम्स ने लूसियम बोडरिस को पराजित कर विश्व बाक्सिंग काउन्सिल का हैवी वेट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वखिताब जीत लिया। ● 16 मार्च 83 को चार्ली मागरी ने इलियांमिया मर्सीडेज को धराशायी कर विश्व बाक्सिंग काउन्सिल फ्लाईवेट विश्व खिताब जीत लिया।

कार रैली

● अप्रैल, 83 में फिनलैण्ड के एरी वेटासीन ने 5000 कि. मी. दूरी के केनियाई सफारी मोटर रैली को जीतने का श्रेय प्राप्त किया। ए क्वाटारॉस एवं मिशेल माउटोन ने क्रमशः द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त किया।

विविधा

● 3 अप्रैल, 83 को नई दिल्ली में सम्पन्न जापान के जे. तामाशाही ने भारतीय इनामी गोल्फ चैम्पियनशिप जीत लिया। ● 17 मार्च 83 को क्वालालमपुर में आयोजित फाइनल मैच में चीन ने 2-1 से भारत को पराजित कर एशियाई राष्ट्र टेनिस चैम्पियनशिप जीत ली। न्यूयार्क में आयोजित ओपन शतरंज चैम्पियनशिप को राष्ट्रीय चैम्पियन दिबेन्दु बरुआ ने अन्य तीन खिलाड़ियों के साथ मिल कर जीतने का श्रेय प्राप्त किया। ● 15 अप्रैल, 83 को डर्बी में खेले गये फाइनल मैच में जहांगीर खान (पाकिस्तान) ने विकी कार्डवेल (आस्ट्रेलिया) को 9-2, 9-5, 9-1 से पराजित कर ब्रिटिश ओपन स्क्वॉश चैम्पियनशिप जीत लिया। ● 5अप्रैल, 83 को सलेम में सम्पन्न फाइनल मैच में रेलवे ने डाक व तार को 15-8, 16-14 15-6 से तथा रेलवे ने तमिलनाडु को 15-7, 15-7 16-4 से पराजित कर फेडरेशन कप का क्रमशः पुरुष व महिला वर्ग का खिताब जीता ● महान टेनिस खिलाड़ी ब्योन बोर्ग (स्वीडन) ने अप्रैल, 83 में सम्पन्न मोण्टो कार्लो टेनिस चैम्पियनशिप के साथ पेशेवर खिलाड़ी के रूप में बड़े टेनिस से पूर्णतः सन्यास ले लिया। ● अन्तर्राष्ट्रीय ओलम्पिक समिति का 86वें अधिवेशन का आयोजन मार्च, 83 में नई दिल्ली में हुआ। इस अधिवेशन में ओलम्पिक सम्बन्धित समस्याओं पर विचार विमर्श किया गया। ● चालू केन्द्रीय खेल योजनाओं के कार्यान्वयन के लिये केन्द्रीय सरकार द्वारा वर्ष 1983-84 के दौरान कुल 4.26 करोड़ रुपया आवंटित किया गया है।

(पृष्ठ 8 का शेष)

● प्रारम्भिक सामाजिक मानव विज्ञान —एस. एल. दोषी
● उच्च सामाजिक मानव विज्ञान
(विकास, नई दिल्ली)

● सामाजिक संरचना, सामाजिक परिवर्तन एवं नियन्त्रण | एम. एल गुप्ता एवं डी डी. शर्मा
(साहित्य भवन, आगरा)

● आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन—एम. एन. श्रीनिवास (राजकमल, नई दिल्ली)

● भारतीय सामाजिक संस्थाएँ—एम. एल. गुप्ता
(राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर)

भूगोल

● भौतिक भूगोल—एस. सिंह
(बसुन्धरा प्रकाशन, गोरखपुर,)

● भौतिक भूगोल—के. एम. एल. अग्रवाल
(साहित्य भवन, आगरा)

● मानव एवं आर्थिक भूगोल—के. एन. सिंह एवं जे. सिंह (तारा पब्लिकेशन, वाराणसी)

● मानव भूगोल—एस. डी. कौशिक
(रस्तोगी पब्लिकेशन, मेरठ)

● भौगलिक चिन्तन के मूलाधार—जे सिंह
(बसुन्धरा प्रकाशन, गोरखपुर)

● मान चित्रांकन एवं प्रायोगिक भूगोल—सी. मामोरिया
(साहित्य भवन, आगरा)

● विश्व का भूगोल—जी. सिंह
(आत्मराम, नई दिल्ली)

● प्रादेशिक भूगोल—मामोरिया व चतुर्वेदी
(साहित्य भवन, आगरा)

● तीन दक्षिणी महाद्वीप—आर. एन. मिश्रा
(साहित्य भवन, आगरा)

● एशिया का भूगोल—सी. मामोरिया व अग्रवाल
(साहित्य भवन, आगरा)

● आधुनिक भारत का वृहत भूगोल | सी. मामोरिया
● आधुनिक भारत का भूगोल
(साहित्य भवन, आगरा)

● भारत प्रगति के मार्ग पर—पी. सिंह
(अजय प्रकाशन, इलाहाबाद)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुलिस व्यवस्था में अनुचित राजनीतिक हस्तक्षेप किस प्रकार किया जाता है। इसी खण्ड में यह सिफारिश की गयी है कि जापानी पद्धति पर जनरक्षा आयोग की स्थापना की जाय जो पुलिस-व्यवस्था पर निगाह रखे और उसके कार्यों की देख-रेख करे। रिपोर्ट के तीसरे खण्ड में पुलिस के कार्यों की देख-रेख में सभी राजनीतिक दलों से सहयोग लेने की सिफारिश की गयी है। चौथे खण्ड में 'डकैतियां और पुलिस' विषय पर चर्चा है तथा तथा पाँचवें खण्ड में पुलिसजनों की भर्ती, प्रशिक्षण और प्रोन्नति सम्बन्धी सिफारिशें की गई हैं। छठे खण्ड में छात्र उपद्रवों तथा साम्प्रदायिक दंगों के दौरान पुलिस की भूमिका की व्याख्या की गई है जबकि सातवें खण्ड में सर्वाधिक महत्वपूर्ण सिफारिश यह की गयी है कि प्रत्येक राज्य में सर्वोच्च पुलिस अधिकारियों को समय-समय पर आवश्यक निर्देश देने के लिए सुरक्षा आयोग की स्थापना की जाय। आठवें और अंतिम खण्ड में वर्तमान पुलिस कानून (1961) के स्थान पर नये कानून का प्रारूप प्रस्तुत किया गया है।

स्वाभाविक था कि आयोग की रिपोर्ट सरकार को पसंद नहीं आयी। कोई भी सरकार पुलिस व्यवस्था में ऐसा परिवर्तन स्वीकार नहीं कर सकती जो उसके अन्दर थोड़ी भी स्वायत्तता भरता हो। 1902 में जब पुलिस आयोग का गठन हुआ था तो उसकी सिफारिशें भी तत्कालीन ब्रिटिश सरकार को रास न आयी थी। आजादी के बाद तो पुलिस का राजनीतिकरण इस तरह हुआ कि सम्पूर्ण पुलिस व्यवस्था ही सत्तासीन दल या सरकार की 'रखैल' बन कर रह गयी। जनता से उसका कोई लगाव ही नहीं रह गया। यही कारण है कि आयोग की रिपोर्ट को स्वस्थ मन से अध्ययन करने को बजाय सत्तारूढ़ दल ने धुआंधार प्रचार किया कि इसकी रिपोर्ट आपातकालीन अत्याचारों की जांच करने वाले शाह आयोग की रिपोर्ट से प्रभावित है। पुलिस आयोग के अध्यक्ष श्री धर्मवीर ने इस आरोप का जोरदार खण्डन किया है। उनका कहना है कि पूरी रिपोर्ट में सिर्फ दो पैराग्राफ ऐसे हैं जिनमें शाह आयोग का उल्लेख हुआ है।

बहरहाल स्थिति चाहे जो हो, यह बात साफ है कि इस रिपोर्ट का भी वही हाल होगा जो खोसला आयोग की रिपोर्ट को लेकर हुआ। खोसला आयोग की रिपोर्ट लागू करने की मांग को लेकर कई बार पुलिस जन आंदोलन का मार्ग पकड़ चुके हैं। यदि इस आयोग की रिपोर्टों को भी रद्दी की टोकरी में डाल दिया गया तो पुलिस महकमे में असंतोष बढ़ेगा ही, जनता और पुलिस के बीच की खाई चौड़ी होती जायेगी और कानून-व्यवस्था की हालत बद से बदतर ही होगी।

धारा ३०३ अवैध घोषित : एक अन्याय का खात्मा

उच्चतम न्यायालय ने भारतीय दण्ड संहिता की धारा 303 को निरस्त घोषित करके लगभग एक शताब्दी से चले आ रहे एक अन्याय को समाप्त कर दिया है। इस प्रकार हत्या के आरोप में आजीवन कारावास की सजा काट रहा कोई मुजरिम यदि जेल के अन्दर या बाहर दूसरी हत्या कर दे तो अब उसे मृत्युदण्ड देना अनिवार्य नहीं होगा।

संविधान के अनुच्छेद 21 का आदेश है कि विधि की प्रक्रिया को पूरा किये बिना किसी व्यक्ति के प्राण और आजादी का हनन नहीं किया जा सकता। फिर अनुच्छेद 14 का कहना है कि कानून गलत भेदभाव नहीं करेगा। इन्हीं अनुच्छेदों को मद्देनजर रखते हुए उच्चतम न्यायालय इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि उम्रकैदी हत्यारे और अन्य हत्यारों के बीच फर्क करना एक गलत भेदभाव है।

ऐसा नहीं कि विधायकों को दंड संहिता की इस धारा और संविधान के 21वें अनुच्छेद के बीच विसंगति की जानकारी नहीं थी। कुछ वर्ष पूर्व संसद में एक संशोधन विधेयक लाया गया था जिसमें कहा गया था कि धारा 303 को निकाल दिया जाय किन्तु 1971 में लोक सभा भंग हो गयी और यह विधेयक दबा पड़ा रह गया। किन्तु संसद ने जिस कार्य को नहीं किया उसे लोक चेतना के चलते उच्चतम न्यायालय ने सम्पन्न किया। और इस प्रकार उसने यह सिद्ध कर दिया कि वह सिर्फ कानून की भाषा और भावना का ही परिपालन नहीं करता बल्कि कानून की पुनर्रचना भी कर सकता है। न्यायालय ने इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सच्चाई को उजागर किया है कि धारा 303 से संविधान के अनुच्छेद 21 की खली अवज्ञा हो रही थी। आश्चर्य इस बात का है कि आजादी के इतने वर्षों तक भी किसी अदालत की नजर इस तथ्य पर क्यों नहीं पड़ी बहरहाल धारा 303 के खात्मे से यह स्पष्ट हो गया है कि समाज में कानून और आदमी की जिन्दगी के प्रति चेतना बढ़ रही है और वह कानून की उन खामियों की ओर विधायिका अथवा न्यायपालिका का ध्यान आकृष्ट कर सकती है जिनका आदमी की जिन्दगी पर प्रतिकूल असर पड रहा है।

मेघालय सरकार का पतन : हरियाणा की पुनरावृत्ति

मेघालय की एक माह पुरानी संयुक्त संसदीय दल की सरकार का 31 मार्च को पतन हो गया और 2 अप्रैल को कांग्रेस (इ) के नेतृत्व में 14 सदस्यीय मंत्रिमंडल पदारूढ़ हो गया। कैप्टन विलियम्सन संगमा के नेतृत्व में 12 कैबिनेट और 2 राज्य मंत्रियों ने पद व गोपनीयता की शपथ ली। हरियाणा की तरह संगमा मंत्रिमंडल में भी लिंगदोह मंत्रिमंडल से दलबदल करने वाले सात सदस्यों में से पांच को स्थान दिया गया है। इन सभी दलबदलुओं ने राज्यपाल से भेंट कर नवगठित 33 सदस्यीय मेघालय लोकतांत्रिक मोर्चा में अपनी पूर्ण निष्ठा व्यक्त की थी। नये मंत्रिमण्डल में कांग्रेस (इ) के 9, हिल स्टेट पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी के 3 तथा आल पार्टी हिल लीडर्स कांफ्रेंस और पब्लिक डिमांड इम्पलीमेंटेशन कंवेशन के एक-एक सदस्य हैं। 60 सदस्यीय सदन में मोर्चे के कुल 32 विधायक हैं।

लिंगदोह की संयुक्त सरकार का पतन 31 मार्च को उस समय हुआ जब उनके खिलाफ पेश अविश्वास प्रस्ताव 27 के मुकाबले 31 मतों से पारित हो गया। अध्यक्ष ने मतदान में भाग नहीं लिया। इस समय सदन में कांग्रेस (इ) के सदस्यों की संख्या 25 थी और उन्हें हिल स्टेट पीपुल्स डेमोक्रेटिक दल के तीन सदस्यों का, आल पार्टी हिल लीडर्स कांफ्रेंस के एक सदस्य का, पब्लिक डिमांड इम्पलीमेंटेशन कमेटी के एक सदस्य का तथा एक निर्दल सदस्य का समर्थन मिला। सरकार के एक मंत्री सदन में उपस्थित नहीं थे। इंका द्वारा पेश इस अविश्वास प्रस्ताव के पारित होने पर मुख्यमंत्री लिंगदोह के समक्ष इस्तीफा देने के अलावा और कोई चारा नहीं रह गया।

दरअसल श्री लिंगदोह की सरकार इतने कम मतों के बहुमत से सत्तारूढ़ हुई थी कि दलबदल कराने में माहिर कांग्रेस (इ) के समक्ष उसका अस्तित्व शुरू से ही संकट ग्रस्त रहा। राजनीतिक प्रेक्षक किसी भी समय उसके पतन की संभावना व्यक्त कर रहे थे और यह संभावना वास्तविकता में बदल गयी।

हिमाचल प्रदेश में सत्ता परिवर्तन : एक मोहरा और पिटा

आठ अप्रैल को हिमाचल प्रदेश में भी सत्ता परिवर्तन हुआ जब केन्द्रीय उद्योग राज्यमंत्री श्री वीरभद्र सिंह ने मुख्यमंत्री पद की शपथ ली इससे एक दिन पूर्व श्री रामलाल ने अपने पद से इस्तीफा दे दिया था। श्री रामलाल को मुख्यमंत्री पद त्याग देने का निर्देश तभी मिल गया था जब वह 5 अप्रैल को हाई कमान के बुलाने पर दिल्ली आकर प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी से मिले थे।

श्री रामलाल के विरुद्ध हिमाचल प्रदेश उच्चन्यायालय द्वारा दिये गये कतिपय निर्णयों को लेकर असंतुष्टों की गतिविधियाँ काफी तेज हो गयी थीं। और वे पार्टी की छवि धूमिल होने से बचाने के लिए नेतृत्व में परिवर्तन की मांग करने लगे थे। श्री रामलाल अपने आप में चाहें जितने ईमानदार रहे हो, वह हिमाचल प्रदेश के प्रमुख उद्योग टिम्बर के कारोबार में अपने परिवारजनों तथा संगेसम्बंधियों के हितों को जाने-अनजाने संरक्षण देने से स्वयं को नहीं रोक पाये और यही उनके पतन का कारण बना।

हिमाचल प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी एक सशक्त विरोधी दल है और विधान सभा में कांग्रेस (इ) का बहुमत बहुत मामूली है। ऐसी स्थिति में जब लोक सभा चुनाव आसन्न हो, कांग्रेस (इ) हाई कमान राज्य में पार्टी की बागडोर एक ऐसे व्यक्ति के हाथ में देने का खतरा मोल नहीं ले सकता था जिसकी ईमानदारी के सामने प्रश्नचिन्ह लग चुका हो।

नये मुख्यमंत्री श्री वीरभद्र सिंह ने लोकसभा की सदस्यता से त्यागपत्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दे दिया है। अब उन्हें राज्य विधान सभा के लिए चनाव लडना होगा। और चुनावी सफलता के लिये उन्हें जनता का विश्वास अर्जित करना पड़ेगा। उनके सामने पहली समस्या है उन लोगों के खिलाफ कार्रवाई की जो श्री रामलाल के जमाने में जंगल सम्पत्ति लूट रहे थे और दूसरी समस्या है प्रशासनिक ढिलाई और भाई-भतीजावाद को समाप्त करनी की। उन्हे पार्टी को संगठित रखते हुए सरकार में सुधार लाकर पार्टी की छवि सुधारनी होगी। यह काम असंभव न भी हो तो कठिन अवश्य है क्योंकि उन लोगों की एक सशक्त दीवार उनके सामने है जो शानशौकत और लूट-खसोट के आदी हो चुके हैं और जिनकी जड़ें पार्टी तथा सरकार दोनों में गहराई तक जा चुकी है।

भारत बंगलादेश : प्रयास जारी है

भारत-बंगलादेश नदी आयोग की बैठक दो फरवरी से लेकर चार फरवरी तक ढाका में हुई। आयोग की इस 24वीं मंत्रिस्तरीय बैठक में भारत का प्रतिनिधित्व तत्कालीन सिंचाई राज्यमंत्री श्री राम निवास मिर्धा तथा बंगलादेश के कृषि मंत्री श्री ए. जेड. ओ. ओबेदुल्ला खां ने किया। चूंकि दोनों पक्ष किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुंच सके इसलिये बातचीत दिल्ली में जारी रखने का निश्चय किया गया। ढाका वार्ता की समाप्ति पर दोनों प्रतिनिधि मंडलों के नेताओं ने इस जटिल समस्या का समाधान निकालने के लिए मिलजुल कर प्रयास जारी रखने का संकल्प व्यक्त किया।

आयोग ने दोनों देशों के विशेषज्ञों की समिति से आग्रह किया है कि फरक्का में गंगाजल के प्रवाह को बढ़ाने की दिशा में अध्ययन पूर्व कार्य को शीघ्रता से पूरा कर ले। ढाका में हुई बैठक में आयोग ने उसका कोटा लिया और उसके अनुसार समिति का काम कुछ आगे बढ़ा है। दिल्ली की बैठक में समिति की सिफारिशों पर पुनः विचार विमर्श किया जायेगा और इस पेचीदा समस्या का कोई न कोई हल निकाल लेने की दिशा में महत्वपूर्ण प्रगति होगी।

वार्ता के बाद जारी की गयी संयुक्त विज्ञाप्ति में इस बात पर प्रसन्नता व्यक्त की गयी कि आयोग की बैठक काफी सौहादपूर्ण वातावरण में हुई। फिर सवाल उठता है कि कोई सर्वसम्मत हल क्यों नहीं निकल सका? दरअसल कई ऐसे मुद्दे हैं जिनपर भारत और बंगलादेश के दृष्टिकोणों में बदलाव नहीं आया है। भारत चाहता है कि दोनों देश समस्या द्विपक्षीय स्तर पर हल कर लें जबकि बंगलादेश नेपाल को भी इसमें घसीटना चाहता है। इस संदर्भ में आयोग की बैठक के बाद नेपाल के प्रधानमंत्री श्री सूर्य बहादुर थापा की बंगलादेश यात्रा को राजनीतिक क्षेत्रों मे विशेष महत्व दिया जा रहा है।

दूसरे यह कि भारत ब्रह्मपुत्र का अतिरिक्त पानी नहर के जरिये गंगा में लाने को अधिक व्यावहारिक मानती है जबकि बंगलादेश नेपाल में जलाशय बनाकर उसमें पानी इकट्ठा करने तथा सूखे मौसम में उसे नहरों में गिराने की जिद पर अड़ा है।

अब अगली वार्ता का आधार विशेषज्ञ समिति की रिपोर्ट होगी। पर, विशेषज्ञ समिति भी तभी सर्वसम्मत प्रस्ताव प्रस्तुत कर सकेगी जब उसमें दोनों पक्षों के प्रतिनिधि पूर्वाग्रह से मुक्त रहकर समस्या पर विचार करें। आवश्यकता इस बात की है कि बंगलादेश अंतर्राष्ट्रीय दबावों और पूर्वाग्रहों से मुक्त होकर इस द्विपक्षीय समस्या को द्विपक्षीय स्तर पर ही हल करने का प्रयास करे। यही आसान भी होगा। ■

'आतंक'

लघु कथाओं का सदर्भ विशेष समायोजन

■

सम्पादन

नन्दल हितैषी

मूल्य — पेपर बैक—बीस रुपया
सजिल्द —पच्चीस रुपया

सम्पर्क—
अन्तरा प्रकाशन
51 श्रीश चन्द्र बसु मार्ग
इलाहाबाद-211003

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

VISIT WRITE OR RING 52384

ASIA BOOK CO.

9, University Road, Allahabad.

BOOKS FOR P. C. S. EXAM.—

1.	एम० पी० श्रीवास्तव	: प्राचीन भारतीय संस्कृति, कला और दर्शन	40.00
2.	Chaudhary	: English Grammer and Translation	7.00
3.	ओम प्रकाश मालवीय	: आधुनिक हिन्दी निबन्ध	15 00
4.	ओम प्रकाश मालवीय	: सामान्य हिन्दी	8.00
5.	पी० सी० एस० गाइड	: प्राचीन भारतीय संस्कृति	25.00
6.	पी० सी० एस० गाइड	: भारतीय इतिहास I	25 00
7.	पी० सी० एस० गाइड	: भारतीय इतिहास II	27.50
8.	पी० सी० एस० गाइड	: समाजशास्त्र	20.00
9.	पी० सी० एस० गाइड	: हिन्दी साहित्य	12.00
10.	पी० सी० एस० गाइड	: राजनीति शास्त्र	14 00
11.	पी० सी० एस० गाइड	: विधि I	25.00
12.	पी० सी० एस० गाइड	विधि II	15.00
13	पी० सी० एस० गाइड	: विधि III	21.00
14.	पी० सी० एस० गाइड	: भारतीय दर्शन	16.00
15.	पी० सी० एस० गाइड	: समाज कार्य	25 00
16.	पी० सी० एस० गाइड	: प्रारम्भिक गणित	12.00

नोट : पुस्तकों के लिए आर्डर करते समय 0/- रु अग्रिम मनीआर्डर द्वारा भेजें।

उत्तर प्रदेश का पर्वतीय अंचल अनुपम प्राकृति-सौन्दर्य के लिए विख्यात है।

हिमालय की हरीतिमा को बनाये रखने हेतु,

१—वृक्ष कटान, साखा तराशी रोकिए।

२—वनों की आग तथा अन्य प्रकार की क्षति से बचाइए।

३—भूमि को भूक्षरण से बचाइए।

जीवित रहने के लिए अधिकाधिक वृक्ष लगाइए

"मानव का अस्तित्व वनस्पति के अस्तित्व पर निर्भर है"

वन संरक्षक, प्रसार एवं जन सम्पर्क,

उत्तर प्रदेश, लखनऊ।

रतन कुमारदीक्षित द्वारा 436, मम्फोर्डगंज, इलाहाबाद से प्रकाशित तथा उन्हीं के द्वारा चन्द्रा प्रिन्टिङ्ग वर्क्स, 37 एल्गिनरोड, इलाहाबाद में मुद्रित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Regd. No. R. N. 33028/77
Postal Regd. No. AD-137
Licence No. W.P.-43

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

JUST RELEASED

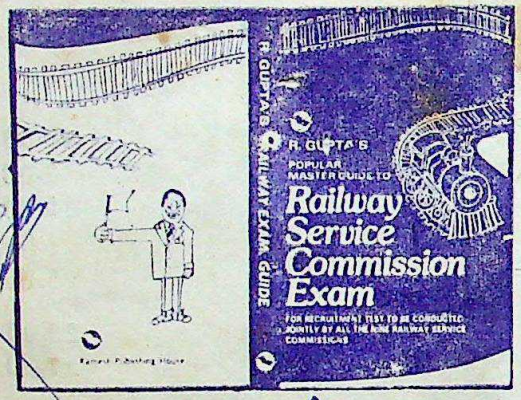

Rs 20/-.

R. Gupta's Railway Exam Guide

New edition of R. Gupta's famous Railway Exam. Guide According to new syllabus announced by the Railway Board. Model test papers and intelligence test are specialities of the guide. Attractive double spread cover. For success you can depend on this book.

A Hand Book of English Grammar

There is no dearth of good books on English Grammar. But this one is unique. It is written specially for those going to appear in competitive exams. Essentials of grammar well-explained. Lot of exercises for practice. A complete section devoted to English spelling.

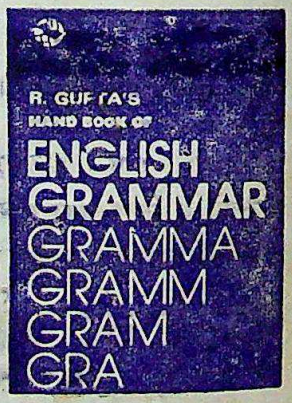

Rs. 10/-

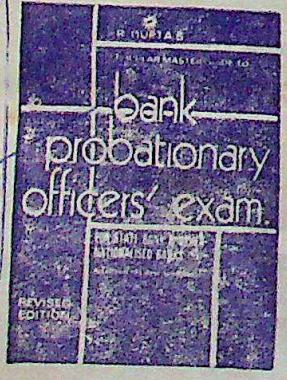

R. Gupta's Bank P.O. Exam Guide

R. Gupta's Bank P.O. Exam Guide is already a synonym of success in Bank P.O. Exam. Its 1983 edition contains a new model Test Paper and latest essays. Attractive glossy cover. Moderately priced.

Rs. 35/-

While ordering, please, send Rs. 10/- in advance by money order to :

Ramesh Publishing House
4457, Nai Sarak, Delhi-110 006.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बन्दे से प्राप्त संख्या ..... 1/.....
प्राप्ति दिनांक 12-8-83

प्रगति मंजूषा

प्रतियोगितात्मक परीक्षाओं हेतु सर्वाधिक लोकप्रिय मासिक

सिविल सर्विस परीक्षा विशेषांक (पंचम)

- सिविल सर्विस (प्रा०) परीक्षा 1982 का सामान्य अध्ययन प्रश्न-पत्र
- अधुनातन अन्तर्राष्ट्रीय गतिविधियाँ
- अधुनातन राष्ट्रीय गतिविधियाँ

एवं विश्व भूगोल पर वस्तुपरक परीक्षण

एस० एल० वी० ३ उड़ान-क्रम

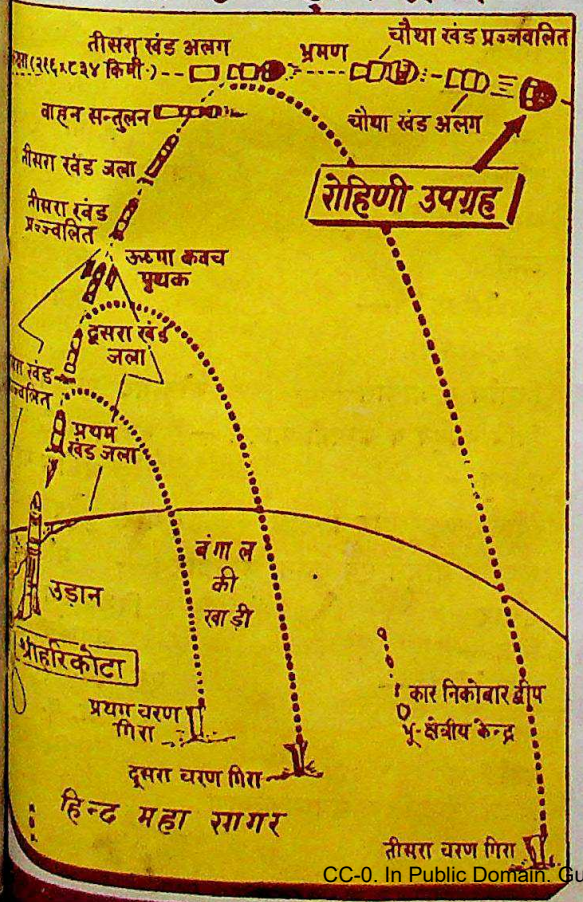

उ.प्र. सचिवालय परीक्षा हेतु विशेष सामग्री

पी०सी०एस० तथा अन्य परीक्षाओं हेतु महत्वपूर्ण लेख

- जनसंख्या विस्फोट → ग्रामीण विकास में विज्ञान और प्रौद्योगिकी: भूमिका → अंकटाड: विश्व व्यापार एवं मौद्रिक नीति → सूर सूर तुलसी ससी

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

मूल्य 4·00 जून 1983

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

? कौन, कहाँ, क्या (भारत)

(31-5-83 तक सामयिक)

केन्द्रीय सरकार

राष्ट्रपति— ज्ञानी जैल सिंह
उपराष्ट्रपति— मोहम्मद हिदायतुल्लाह

केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल

केबिनेट स्तर के मन्त्री

प्रधानमन्त्री, परमाणु ऊर्जा, अन्तरिक्ष विज्ञान और तकनीकी— श्रीमती इन्दिरा गान्धी
वित्त— प्रणव मुखर्जी
विदेश— पी. वी. नरसिंह राव
गृह— प्रकाश चन्द्र सेठी
रक्षा— आर. वेंकटरामन
योजना— एस. बी. चव्हाण
रेल— ए. बी. ए. गनी खाँ चौधरी
ऊर्जा व पेट्रोलियम— शिवशंकर
रसायन व उर्वरक— बसन्त साठे
उद्योग, इस्पात व खान— नारायण दत्त तिवारी
विधि, न्याय व कम्पनी मामलें— जगन्नाथ कौशल
श्रम व पुनर्वास— वीरेन्द्र पाटिल
स्वास्थ व परिवार कल्याण— बी. शंकरानन्द
कृषि व ग्रामीण विकास— राव वीरेन्द्र सिंह
जहाज रानी व परिवहन (अस्थायी तौर पर)— विजय भास्कर रेड्डी
वाणिज्य व आपूर्ति (अस्थायी तौर पर)— विश्वनाथ प्रताप सिंह
संसदीय मामलें व खेल— बूटा सिंह

राज्य मन्त्री

शिक्षा व समाज कल्याण— श्रीमती शीला कौल
ग्रामीण विकास— हरिनाथ मिश्र
सिंचाई आर. एन. मिर्धा
इस्पात व खान— एन. के. पी. साल्वे
सूचना व प्रसारण एवं संसदीय मामलें— एच.के.एल.भगत
खाद्य व आपूर्ति भगवत झा आजाद
पर्यटन व नागरिक उड्डयन— खुर्शीद आलम खाँ

(उपर्युक्त सभी राज्य मन्त्रियों के पास अपने विभागों का स्वतन्त्र कार्यभार है।)

संचार— बी. एन. गाडगिल
वाणिज्य— श्रीमती रामदुलारी सिन्हा
विज्ञान व तकनीक, परमाण ऊर्जा— शिवराज पाटिल
अन्तरिक्ष विज्ञान, इलेक्ट्रानिक्स एवं समुद्र विकास
विदेश— ए. ए. रहीम
वित्त— पट्टाभिराम रा
जहाजरानी व परिवहन— जेड. आर. अंसारी
पेट्रोलियम— गार्गी शंकर मिश्र
स्वास्थ व परिवार कल्याण— एस. मोहसिना किदवई
गृह— निहार रंजन लस्कर
कृषि— योगेन्द्र मकवाना
रसायन व उर्वरक— आर. सी. ग
रेल— सी. के. जाफर शरीफ
कोयला— दलबीर सिंह
उद्योग— बीरभद्र सिं
गृह - पी. वैंकट सुब्बै
उद्योग — एस. एम. कृ
रक्षा— के. पी. कृष्णन
कृषि— आरिफ मोहम्मद ख धर्म
श्रम व पुनर्वास— चन्द्रशेखर सिं
ऊर्जा — कल्पनाथ रा
संसदीय मामलें—

उपमन्त्री

निर्माण व आवास— मोहम्मद उस्मान आरि
विधि कानून व कम्पनी मामलें— गुलाम नबी आज
अशोक गहल
पर्यटन—
स्वास्थ व परिवार कल्याण— कुमारी कुमुदबेन जो
संसदीय मामलें एवं सूचना व प्रसारण— मल्लिकार्ज
संचार— विजय एन. पाटि
वित्त— जनार्दन पुजा
इलेक्ट्रोनिक्स— एम. एस. संजीवाप
वाणिज्य— पी. ए. संगम
पर्यावरण दिग्विजय सिं
शिक्षा, संस्कृति व समाजकल्याण— पी. के. थो

(शेष कवर पृष्ठ 3 पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जून—1983

वर्ष—7

अंक—6

इस अंक का मूल्य—रु० 4.00

पृष्ठ संख्या—88

प्रगति मंजूषा

प्रतियोगितात्मक परीक्षाओं हेतु सर्वाधिक लोकप्रिय मासिक

[राष्ट्र की भाषा में राष्ट्र को समर्पित]

सम्पादक
रतन कुमार दीक्षित

सह-सम्पादक
प्रदीप कुमार वर्मा 'रूप'

उप-सम्पादक
जी. शंकर घोष, राकेश सिंह सेंगर

मुख्य कार्यालय
436, ममफोर्डगंज
इलाहाबाद-211002

शाखा जनसम्पर्क
डी. 47/5, कबीर मार्ग
क्लेस्वायर, लखनऊ

विज्ञापन सम्पर्क-सूत्र
169/20 ख्यालीगंज, लखनऊ
दूरभाष : 43792

आवरण : कोलोरेड, इलाहाबाद

चन्दे की दर
वार्षिक : रु. 44.00, अर्द्ध वार्षिक : रु. 22.00
सामान्य अंक (एक प्रति) रु 4.00
(चन्दा मनीआर्डर द्वारा मुख्य कार्यालय को ही भेजें)

©पत्रिका में प्रकाशित सामग्री का सर्वाधिकार प्रकाशक के अधीन सुरक्षित है। पत्रिका में प्रकाशित लेखों के विचारों से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

विशेष आकर्षण

■ सिविल सर्विस 'प्रारम्भिक परीक्षा 1982' का सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र/9

■ सिविल सर्विस प्रारम्भिक परीक्षा हेतु विश्व भूगोल पर वस्तुपरक परीक्षण विशिष्ट परिशिष्ट/22

■ सिविल सर्विस प्रारम्भिक परीक्षा हेतु राष्ट्रीय सामयिकी पर वस्तुपरक परीक्षण विशिष्ट परिशिष्ट/30

■ सिविल सर्विस प्रारम्भिक परीक्षा हेतु अन्तर्राष्ट्रीय सामयिकी पर वस्तुपरक परीक्षण विशिष्ट परिशिष्ट/41

■ उ. प्र. सचिवालय परीक्षा 1983 (प्रवर एवं अवर प्रभाग) हेतु विशेष सामग्री/51

परीक्षोपयोगी महत्वपूर्ण लेख

■ जनसंख्या विस्फोट के पश्चात्/67

■ विश्व व्यापार एवं मौद्रिक नीति के लिए सुझाव/71

■ सूर-सूर तुलसी ससी, उडुगन केशवदास/74

■ ग्रामीण विकास में विज्ञान और प्रौद्योगिकी/78

स्थायी स्तम्भ

■ समसामयिक सामान्य ज्ञान/2

■ राष्ट्रीय सामयिकी/4

■ अन्तरराष्ट्रीय सामयिकी/7

■ सामान्य हिन्दी /65

■ क्रीड़ा जगत/81

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सामयिक सामान्य ज्ञान

शब्द संक्षेप :

- H.E.P.C.—हैन्डलूम एक्सपोर्ट प्रोमोशन काउन्सिल
- M.M.T.C.—मिनरॅल एण्ड मेटल्स ट्रेडिंग कारपोरेशन
- I.N.C.B.—इन्डीपेन्डेन्ट इन्टरनेशनल नारकोटिक्स कन्ट्रोल बोर्ड
- I. M. D.—मेटीरियोलॉजिकल डिपार्टमेन्ट ऑव इण्डिया
- U N. I. C. E F.—यूनाइटेड नेशन्स चिल्ड्रेन इमरजेन्सी फन्ड
- E.S.C.A P.—इकनॉमिक एण्ड सोशल कमीशन फार एशिया एण्ड पैसेफिक
- U.N.I.D.O.—यूनाइटेड नेशन्स डेवेलपमेन्ट आर्गेनाइजेशन
- I F.C.—इन्डस्ट्रियल फाइनेन्स कारपोरेशन
- A.P.S.—अफ्रीकन प्रेस सर्विस
- E.T.T.D.C.—इलेक्ट्रानिक ट्रेड एण्ड टेक्नोलॉजी डेवेलपमेन्ट कार्पोरेशन
- F.E.R.A.—फारेन एक्सचेन्ज रेगूलेशन एक्ट

महत्वपूर्ण पुस्तकें :

- अराइवल एण्ड डिपार्चर—अबु अब्राहम
- इण्डियन सिनेमा (पास्ट एण्ड प्रेसेन्ट)—फिरोज रंगूनवाला
- द प्लेश्ज़र डोम—ग्राहम ग्रीन
- इन सच आव एक्सीलेन्स—थामस पीटर व राबर्ट वाटरमैन
- द न्यूक्लीयर बैरोन्स—पीटर एण्ड जेम्स स्पाइगेलमैन
- द टर्निंग पॉइन्ट—फ्रीट्जोफ कैपरा
- इण्डियन विमैन्स बैटल फार फ्रीडम—कमलादेवी चट्टोपाध्याय
- इण्डियाज न्यूक्लीयर इस्टेट—धीरेन्द्र शर्मा
- माई ओलम्पिक इयर्स—लार्ड किलानिन
- ए विलेज बाई सी—अनिता देसाई
- भवानी जन्कशन—जान मास्टर्स

निर्वाचन एवं नियुक्तियाँ :

- ली जिया निया—राष्ट्रपति, चीन
- टी. एन. रामचन्द्रन—सदस्य रेलवे बोर्ड
- अशोक छिब—इराक में भारतीय राजदूत
- एम. आर. बी. पुंजा—अध्यक्ष व प्रबन्ध निदेशक इन्डस्ट्रीयल बैंक ऑव इण्डिया
- सुरेश माथुर—अध्यक्ष, सेन्ट्रल बोर्ड ऑव फिल्म सेन्सर
- सी. वेन्कट रमन—प्रबन्ध निदेशक, ब्यूरो ऑव पब्लिक इन्टरप्राइसेज
- सी. पी. रवीन्द्रनाथन—पापुआ न्यूगिनी में भारतीय उच्चायुक्त
- एस. बी. चह्वाण—अध्यक्ष भारत स्काउट्स एण्ड गाइड्स
- जाफर नुमैरी—राष्ट्रपति, सूदान (पुनर्निर्वाचित)
- फ्रेड सिनोवाज—चान्सलर (प्रधान मन्त्री), ऑस्ट्रिया।
- प्रेम तिनसुलानन्द—प्रधामन्त्री, थाइलैण्ड (पुनर्निर्वाचित)

पद निवृत्ति पदत्याग

- ब्रूनो क्रिस्की—चान्सलर (प्रधान मन्त्री), आस्ट्रिया
- अमीनतोर फनफनी—प्रधानमन्त्री, इटली (इस समय कार्यवाहक प्रधानमन्त्री)

निधन

- फिदोर अमामोव—सुप्रसिद्ध सोवियत लेखक
- के. अमरनाथ—प्रख्यात हिन्दी फिल्म निर्माता व निर्देशक
- जान मास्टर्स—सुप्रसिद्ध अंग्रेज लेखक
- जॉनी पुलेओ—प्रख्यात हालीवुड अभिनेता
- बस्टर कैबल—सुप्रसिद्ध अमेरिकी मुक्केबाज
- अर्ल फार्था हाइन्स—विश्वविख्यात पियानोवादक
- डा. के. के. दत्त—ख्याति प्राप्त हृदयरोग विशेषज्ञ

अतिथि :

- साम्बा लैमाइन मेनी—विदेश मन्त्री, गुयेना बिसाऊ
- अहमद तालेब इब्राहामी—विदेश मन्त्री, अल्जीरिया
- जुआन रैमन लनारी—विदेश मन्त्री, अर्जेन्टीना
- इसीडोरो मैलभैरका—विदेश मंत्री, क्यूबा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

● सी. एस. हमीद—विदेशमन्त्री, श्रीलंका

● ए. जेड. एम. ओबैदुल्लाह—कृषि व वन मन्त्री, बंगलादेश

● मोख्तार कुशुमातमाडिया—विदेशमन्त्री, इन्डोनेशिया

● अमीर हबीब जमाल—बिना किसी पद के मन्त्री, तान्जानिया

● लाजेर मोजसोव—विदेश मन्त्री, यूगोस्लाविया

● आइ. वी. आर्किपोव—प्रथम उप-प्रधानमन्त्री, सोवियत संघ

महत्वपूर्ण आँकडें

● वर्ष 1983-84 में भारत में 14 करोड़ 20 लाख टन खाद्यान्न उत्पादन लक्ष्य निर्धारित किया गया

● इस शताब्दी के अन्त तक देश में करीब 1 करोड़ टेलीफोन कनेक्शन उपलब्ध कराने की योजना है। इस समय 6 लाख लोग प्रतीक्षा में है। विकसित राष्ट्रों में जहाँ एक हजार व्यक्ति पर 700 से 800 टेलीफोन सुविधा हैं वही भारत में संख्या साढ़े-तीन है।

● अगले पांच वर्षों में देश भर में 500 छोटे-छोटे रीले स्टेशन स्थापित किये जायेगें। यह कार्य पूरा होने पर देश की लगभग 75% जनसंख्या दूरदर्शन के कार्यक्रम देख सकेगें। अभी केवल 17% जनसंख्या को यह सुविधा उपलब्ध है। सम्पूर्ण योजना पर लगभग 80 करोड़ रुपया खर्च होने का अनुमान है।

● मई, 1983 में उद्घाटित मथुरा तेल शोधक कारखाना भारत का 12वाँ तेल सफाई कारखाना है जिससे देश में करीब 38 करोड़ टन कच्चे तेल की सफाई एवं उससे अन्य पेट्रोलियम पदार्थ प्राप्त होता है। मंगलूर एवं करनाल तेल शोधक कारखाने के निर्माण के पश्चात 2000 तक देश में कुल मिलाकर 62 करोड़ टन कच्चे तेल की सफाई की क्षमता उपलब्ध हो जायेगी।

● पिछले दस वर्षों में रुपये के मूल्य में 57% की कमी हुई। मार्च 1973 में यह 46.30 पैसे थी जो गिर कर मार्च 1983 में 19.22 पैसे रह गयी।

● सातवें गुट निरपेक्ष शिखर सम्मेलन के आयोजन पर लगभग 30 करोड़ रुपया व्यय हुआ।

● भारत में विदेशी बैंकों की 132 शाखाएं कार्यरत हैं।

● भारतीय फिल्मों के निर्यात से पिछले तीन वर्षों में 36.29 करोड़ रुपये की विदेशी मुद्रा अर्जित हुई। पुस्तकों एवं प्रकाशनों के निर्यात से 13.40 करोड़ रुपये की विदेशी मुद्रा अर्जित हुई।

● वर्ष 1982-83 में देश में कुल कोयला उत्पादन 13 करोड़ 6 लाख 50 हजार टन रहा है।

● विदेशों के 90 विश्वविद्यालयों में हिन्दी पढ़ाई जाती है।

● गत पांच वर्षों में हिन्दी भाषा के उत्थान के लिये प्रति वर्ष लगभग 293.44 लाख रुपया व्यय किया गया।

● बिहार एवं उत्तर प्रदेश के जेलों में सर्वाधिक विचाराधीन कैदी है।

● भारत में इस समय 285354 उचित दर दूकाने है इनमें 222470 ग्रामीण क्षेत्रों में तथा 62884 शहरी क्षेत्रों में है।

● भारत में पत्र, पत्रिकाओं की प्रसार संख्या पांच करोड़ से अधिक हो गयी है। इसमें सबसे अधिक 1 करोड़ 37 लाख प्रसार संख्या हिन्दी के समाचार पत्रों, पत्रिकाओं की है। दूसरा स्थान अंग्रेजी समाचार पत्रो पत्रिकाओं (1 करोड़ 32 लाख) है। कलकत्ता से प्रकाशित बंगला दैनिक 'आनन्द बाजार पत्रिका (दैनिक प्रसार संख्या-4.27,997) की प्रसार संख्या अभी भी सर्वाधिक बनी हुई है।

● प्रवासी भारतीयों को भारतीय कम्पनियों में 5 प्रतिशत से अधिक पूंजी लगाने की अनुमति नहीं प्रदान की जायेगी।

● यूनीसेफ की एक रिपोर्ट के अनुसार भोजन के अभाव में या रहन-सहन दयनीय स्थिति के कारण विश्व में प्रत्येक दिन 44000 से अधिक बच्चो की मृत्यु होती है।

● पिछले एक वर्ष में प्रवासी भारतीयों को भारतीय कम्पनियों में 73.80 करोड़ रुपये लगाने की अनुमति प्रदान की गयी हैं।

● वर्ष 1981 के अन्त तक देश में 26, 758 रुग्ण औद्योगिक इकाइयाँ थीं। इनकी तरफ विभिन्न बैंकों में 2026 करोड़ रुपये बकाया था।

● मार्च 1981 तक केवल 16.20 करोड़ ग्रामीण जनता (30.94%) को ही पेय जल की उपयुक्त आपूर्ति कार्यक्रम का लाभ मिल पाया है। उत्तर प्रदेश में सबसे कम (7.2 प्रतिशत) ग्रामीण जनसंख्या इससे लाभान्वित हुई है जबकि गुजरात में 70 प्रतिशत लोगों को लाभ पहुंचा है।●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रीय समायिकी

- जम्मू-कश्मीर चुनाव : एक और शक्ति परीक्षा
- फ्रांस से यूरेनियम : यूरोप से दोस्ती
- भारतीय कम्पनियों में प्रवासा पूंजी : अकुश और भय
- रोहिणी डी-२ का सफल प्रक्षेपण : एक कदम और
- नयी आयात-निर्यात नीति : उद्योगों को नयी रियायतें

जम्मू-कश्मीर चुनाव : एक और शक्ति परीक्षा

जम्मू-कश्मीर विधान सभा के लिए चुनाव कार्यक्रम घोषित कर दिये गए हैं। शेरे कश्मीर और मुख्यमन्त्री श्री शेख अब्दुल्ला के निधन के बाद पहली बार ये चुनाव हो रहे हैं और उनकी पार्टी नेशनल कांफ्रेंस तथा कांग्रेस (इ) एक बार फिर आमने-सामने हैं।

घोषित कार्यक्रमों के अनुसार 76 सदस्यीय विधान सभा के लिये पांच जून को मतदान होगा। उसी दिन श्रीनगर और बारामूला संसदीय उप-चुनावों के लिये भी चुनाव होंगे। विधान सभा के 42 स्थान कश्मीर घाटी से, 32 जम्मू सम्भाग से और दो लद्दाख क्षेत्र से भरे जायेंगे। बाद में दो महिलाओं को मनोनीत किया जायेगा। जम्मू-कश्मीर विधान सभा का कार्यकाल अब भी 6 वर्ष है जब कि अन्य विधान सभाओं का कार्यकाल 1977 में पुनः 5 वर्ष कर दिया गया था।

प्रारम्भ में ऐसा लग रहा था कि जम्मू-कश्मीर चुनाव में नेशनल कांफ्रेंस और कांग्रेस (इ) के बीच चुनावी तालमेल हो जायेगा किन्तु ऐसा सम्भव नहीं हो सका। नतीजतन प्रधानमन्त्री इन्दिरा गांधी और डाक्टर फारुख अब्दुल्ला के बीच पिछले नवम्बर को मां बेटे' के सम्बन्ध थे वे अब परस्पर प्रतिद्वन्द्विता में बदल गये हैं। गत फरवरी माह में श्री त्रिलोकी नाथ कौल को मध्यस्थ बनाकर कांग्रेस (इ) ने मुख्यमन्त्री श्री फारुख अब्दुल्ला को मनाने की कोशिश की थी। फारुख अब्दुल्ला ने दिल्ली के चुनावों में कांग्रेस (इ) का प्रचार भी किया था। किन्तु अब स्थिति यह है कि दोनों दल चुनावी दंगल में अपनी ताकत अजमाने की तैयारी में हैं।

कांग्रेस (इ) के नेता विधान सभा की 76 में से 36 सीटें जीतने की उम्मीद लगाये बैठे हैं। उन्हें एक ओर नेशनल कांफ्रेंस के आंतरिक गुटबन्दी का लाभ मिलने की आशा है तो दूसरी ओर जम्मू में भारतीय जनता पार्टी से उसके सम्बन्ध टूटने का। जम्मू नगर पालिका चुनावों में भारतीय जनता पार्टी और नेशनल कांफ्रेंस में चुनावी समझौता हुआ था जो कश्मीर पुनर्वास विधेयक के प्रश्न पर टूट गया। अब इन दोनों पार्टियों में सम्बन्ध कटु हैं।

डाक्टर फारुख अब्दुल्ला का सम्बन्ध अपने नजदीकी रिश्तेदार गुलाम मुहम्मद शाह से भी ठीक नहीं

प्रस्तुति : बच्चन सिंह, 'दैनिक जागरण' वाराणसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

। इसे ठीक करने की कोशिशें
ारी हैं। डाक्टर अब्दुल्ला ने अपने
ता के निधन के बाद इस बात का
यास किया है कि उनके शासन की
वि एक ईमानदार शासक के रूप में
नता के सामने उभरे। इसका लाभ
न्हें मिलने की पूरी आशा है। इसके
लावा उनकी सबसे बड़ी पूंजी शेख
ब्दुल्ला की लोकप्रियता है। अब
ह तो समय बतायेगा कि डाक्टर
ारुख बदली परिस्थितियों में अपनी
मा और अर्जित पूंजी को किस हद
क भुना पाते हैं।

फ्रांस से यूरेनियम : यूरोप से दोस्ती

फ्रांसीसी यूरेनियम की पहली
खेप 6 मई को भारत पहुँची। इस
खेप में दस टन यूरेनियम था। एयर
इंडिया का मालवाही विमान डी. सी.-
8 कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के बीच
फ्रांसीसी यूरेनियम लेकर हैदराबाद
उतरा और वहाँ से 6 ट्रकों में भरकर
उसे पास स्थित परमाणविक ईंधन
समूह में भेज दिया गया। इस
संवर्धित यूरेनियम को विमान से
उतारने में तीन घंटे लगे।

परमाणविक ईंधन समूह के
अधिकारियों ने यद्यपि यूरेनियम के
बारे में कोई जानकारी नहीं दी लेकिन
पता चला है यह ईंधन यूरेनियम
हेक्जाफ्लोराइड के रूप में है और उसे
यूरेनियम डाई आक्साइड के रूप में
बदला जायेगा और इसके बाद तारा-
पुर भेजा जायेगा।

उल्लेखनीय है कि अमेरिका से
ईंधन आपूर्ति के अभाव में दो वर्ष
से भी ज्यादा समय से तारापुर संयंत्र
अपनी आधी क्षमता पर कार्य करता
रहा है। मार्च में आणविक ऊर्जा
आयोग और फ्रांसीसी फर्म (कोगमा)
के बीच हुए समझौते के अन्तर्गत फ्रांस
संवर्धित यूरेनियम की आपूर्ति कर
रहा है। कोगमा फ्रांसीसी आणविक
ऊर्जा आयोग की सहायक फर्म है।
गत वर्ष जुलाई महीने में प्रधानमन्त्री
श्रीमती इन्दिरा गांधी और अमेरिकी
राष्ट्रपति रोनाल्ड रीगन के बीच हुई
बातचीत के परिणामस्वरूप यह
समझौता हुआ। फ्रांस भारत को
उन्हीं नियमों के अन्तर्गत ईंधन की
आपूर्ति करेगा जो भारत और अमेरिका
के बीच परमाणु समझौते में हैं।
सुरक्षा नियमों का पालन अन्तर्राष्ट्रीय
आणविक ऊर्जा एजेंसी कराती है।

भारतीय कम्पनियों में प्रवासी पूंजी : अंकुश और भय

भारतीय कम्पनियों में प्रवासी
भारतीयों की शेयर खरीदने की सुविधा
से भारतीय उद्योगपतियों में जो भय
और आशंका घर कर गई थी उसके
निराकरण के लिए 2 मई को वित्तमंत्री
श्री प्रणव मुखर्जी ने लोकसभा में
प्रवासी भारतीयों के पूंजी निवेश की
सीमा निर्धारित करने की घोषणा
की। इस घोषणा के अनुसार अब
प्रवासी भारतीय रिजर्व बैंक की
अनुमति के बिना किसी भी कम्पनी
की चुकता शेयर पूंजी का अधिकतम
पाँच प्रतिशत ही खरीद सकेंगे। इससे
अधिक शेयरों के लिये रिजर्व बैंक की
अनुमति लेना अनिवार्य होगा। उन्होंने
यह भी स्पष्ट किया कि वित्तीय
संस्थायें कम्पनियों में स्थिरता कायम
रखने में अपना योगदान करती रहेंगी।
अनेक महत्वपूर्ण कम्पनियों में उन
संस्थाओं के काफी अधिक शेयर हैं।
उन्हें यह निर्देश भी दिया गया है कि
कम्पनियों के प्रबन्ध पर प्रवासी भार-
तीयों के कब्जे के खतरे को रोकने के
लिये अपनी मत शक्ति (वोटिंग पावर)
का उपयोग करें। जैसा कि वित्तमंत्री
ने कहा वर्तमान उदार नीति के दुरुप-
योग की संभावनाओं को रोकने के
लिये प्रवासी भारतीयों द्वारा पूंजी
निवेश की सीमा निर्धारित करने का
निर्णय लिया है।

भारतीय उद्योगपतियों का विरोध
उसी समय मुखर हुआ था जब दिल्ली
की दो बड़ी कम्पनियों के शेयरों की
प्रवासी भारतीयों ने खरीद शुरू की।
उनका तर्क था कि सरकार द्वारा
प्रदत्त रियायतों का दुरुपयोग करते
हुए बाहर बसे भारतीय देश की सबसे
बढ़िया और सुसंचालित कम्पनियों
को हथिया लेंगे और इससे हमारे
यहाँ के उदीयमान पूंजीवाद को गहरा
धक्का लगना लाजिमी है। पहले से
ही आतंकित भारतीय उद्यमी वित्त-
मन्त्री की वर्तमान घोषणाओं से भी
सन्तुष्ट नहीं हैं। उनका कहना है कि
अधिकतर प्रगतिशील कम्पनियों की
40 से 55 प्रतिशत शेयर पूंजी सर-
कारी वित्तीय संस्थाओं के पास है।
यदि ये संस्थायें पांच प्रतिशत शेयर
रखने वालों से मिल जांय तो कम्पनी
के प्रबन्ध को बदलने में अब भी
कठिनाई नहीं होगी। कुछ क्षेत्रों में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह भी भय व्यक्त किया जा रहा है कि प्रवासी भारतीयों के बहाने कहीं बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ भारतीय उद्योगों पर कब्जा न कर लें।

दरअसल भारतीय कम्पनियों में प्रवासी भारतीयों द्वारा पूंजी लगाये जाने का सुझाव स्वयं भारतीय उद्यमियों ने पिछले साल लंदन में हुए भारत महोत्सव के दौरान हुए एक सेमिनार में दिया था। नये बजट में प्रवासी भारतीयों के पूंजी निवेश को बढ़ावा दिया गया तो उद्योग क्षेत्र ने इसका समर्थन किया। पर जब पूंजी आने लगी तो भारतीय उद्यमी चिंतित हो उठे कि कहीं उनकी कम्पनियों पर प्रवासी भारतीयों का कब्जा न हो जाये। सिद्धांत के स्तर पर इस प्रकार के स्वामित्व परिवर्तन का विरोध करना मुमकिन भी नहीं है।

वास्तव में भारतीय उद्योगपतियों का भय वित्तमन्त्री के इस आश्वासन के बाद खत्म हो जाना चाहिये कि सरकारी संस्थायें कभी जमाई कम्पनियों को अस्थिर नहीं करना चाहतीं। इसके बावजूद यदि भय है तो इसलिये कि जिन कम्पनियों का चरित्र अब भी सामन्ती है और जो शेयर होल्डरों के हितों की परवाह किये बिना कम्पनी की जायदाद को इधर-उधर अंतरण करते रहे हैं वे जानते-समझते हैं कि प्रवासी पूंजी आने के बाद उनके खेल में उनका एकाधिकार नहीं रह पायेगा। यह भी है कि हमारे ही पूंजीपतियों ने 20 हजार करोड़ रुपयों का जो काला और सफेद धन विदेशी बैंक आदि में जमा कर रखा है, उसे टैक्स चुकाये बगैर भारत लाने और उससे भरपूर मुनाफा कमाने की सुविधा का एक अन्तर्राष्ट्रीय संस्करण वित्तमन्त्री ने ईजाद किया है।

बहरहाल भारतीय उद्यमियों को सरकार और रिजर्व बैंक के गवर्नर डा. मनमोहन सिंह के इस आश्वासन से सन्तोष करना चाहिए कि वे ऐसे वातावरण के पक्षधर हैं जिससे लोग निर्धन होकर उत्पादन बढ़ाने की दिशा में चलते रहें।

आखिपोव की भारत यात्रा : सहयोग के नये आयाम

सोवियत संघ के उप-प्रधानमन्त्री श्री इवान वीं आखिपोव 6 दिनों की भारत यात्रा समाप्त कर 16 मई को स्वदेश वापस हो गये। हवाई अड्डे पर संवाददाताओं से बातचीत करते हुए उन्होंने कहा कि विभिन्न मसलों पर भारतीय नेताओं से हुए विचार-विमर्श से वह सन्तुष्ट हैं। उन्होंने बताया कि अन्तर्राष्ट्रीय मसलों सहित द्विपक्षीय सम्बन्ध को मजबूत करने के बारे में व्यापक रूप से वार्ता हुई। भारत रूस आर्थिक सहकार के बारे में काफी गहराई से विचार-विमर्श हुआ जिसके परिणामस्वरूप दोनों देशों में राजनीतिक और व्यापारिक सम्बन्ध प्रगाढ़ होने की पूरी संभावना है।

श्री आखिपोव ने भारत प्रवास के दौरान प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी, विदेश मन्त्री श्री नरसिंह राव तथा ऊर्जा मन्त्री श्री. पी. शिवशंकर से विभिन्न मसलों पर बातचीत की। दोनों देशों में विभिन्न क्षेत्रों में आर्थिक सहयोग का विस्तार करने पर सहमति हुई। उसी संदर्भ से सोवियत संघ ने नाभिकीय विद्युत उत्पादन के लिये 440 मेगावाट की क्षमता वाली दो इकाइयाँ स्थापित करने का प्रस्ताव किया है। विशाखापत्तनम इस्पात परियोजना के लिए रूस भारत को 140 करोड़ रुपये का ऋण देगा। इस आशय के एक समझौते पर वित्तमन्त्री श्री प्रणव मुखर्जी तथा श्री आखिपोव ने हस्ताक्षर किये। इस ऋण का उपयोग सोवियत संघ से भारत को दिये जाने वाले सामानों और सेवाओं की खरीद में किया जायेगा। रूस ने इस परियोजना के प्रथम चरण के लिये भी 250 करोड़ का ऋण दिया था।

अन्तर्राष्ट्रीय विषयों पर चर्चा के दौरान अफगानिस्तान, नामीबिया, फिलिस्तीनी समस्या, कम्बुजिया तथा दक्षिण अफ्रीका की रंगभेद नीति के जैसे प्रश्न उठे। भारतीय नेताओं ने इन प्रश्नों पर विभिन्न देशों से हुए विचार-विमर्श के बारे में आखिपोव को जानकारी दी। उन्होंने बताया कि फिलिस्तीनी नेता श्री यासिर अराफात से प्रधानमन्त्री का सम्पर्क निरंतर कायम है। श्री आखिपोव ने हाल ही हुए निर्गुट शिखर सम्मेलन के प्रस्तावों के प्रति सहानुभूति तथा सहयोग का आश्वासन दिया। विदेश मन्त्री श्री नरसिंह राव ने उन्हें राजनीतिक तथा आर्थिक घोषणा के विभिन्न पहलुओं से अवगत कराया। उन्होंने हिन्द महासागर में बढ़ते हुए

(शेष पृष्ठ 84 पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्तर्राष्ट्रीय समीक्षा

- शुल्ट्ज योजना : क्या क्षेत्रीय शान्ति स्थापित हो सकेगी ?
- नई दिल्ली बैठक : आगे की तैयारी
- नामीबिया : आखिर स्वतन्त्रता कब तक
- कम्प्यूचिया : वियतनामी सेनाओं की क्रमिक वापसी....।
- सॉलिडैरिटी : जड़ें गहरी हैं...।
- ऐन्द्रोपोव का नया प्रस्ताव : अब रीगेन की बारी है...।
- ईरान-इराक युद्ध : शान्ति स्थापना एक मरीचिका है।

पश्चिमी एशिया :

शुल्ट्ज योजना : क्या क्षेत्रीय शान्ति स्थापित हो सकेगी ?

लगभग 6 माह के ऊहापोह के उपरान्त अन्ततः अमरीकी विदेशमन्त्री जार्ज शुल्ट्ज के प्रयासों से पश्चिमी एशिया समस्या का कम-से-कम एक औपचारिक समाधान संभव हो सका है। मई के दूसरे सप्ताह में सम्पन्न इस समझौते के अन्तर्गत लेबनन से इसरायली, सीरियाई तथा फिलिस्तीनी —इन सभी सैनिकों के एक साथ वापस लौटने का प्रावधान किया गया है। दीर्घकालिक विचार विमर्श के उपरांत इसरायल मात्र इस शर्त पर लेबनन में विद्यमान अपने 30,000 सैनिकों को वापस बुलाने पर सहमत हुआ है कि सीरिया भी बेक्का घाटी में विद्यमान अपने सैनिकों को वापस बुला ले। सीरियाई सैनिकों की संख्या, विश्वस्त सूत्रों के अनुसार 40,000 बताई जाती है। सीरिया तथा फिलिस्तीनी मुक्ति संगठन (पी. एल. ओ.)—दोनों ही ने न केवल द्वि-पक्षीय समझौते को मानने से इन्कार कर दिया है वरन् कटु शब्दों में अमरीकी कूटनीति तथा लेबनानी नेतृत्व की आलोचना भी की है। सोवियत संघ की सरकारी संवाद समिति 'तास' ने अपने 13 मई, 83 के सम्पादकीय में लेबनन तथा इसरायल के मध्य हुए समझौते को "अमरीकी कूटनीति का करिश्मा" बताया है और यह भी कहा कि '..... भविष्य में किसी प्रकार के क्षेत्रीय संघर्ष में सोवियत संघ निरपेक्ष तथा मूकदर्शक नहीं बना रहेगा।' इन सबके बावजूद लेबनन की अमीन जेमाएल की सरकार ने मन्त्रिमण्डल की आपातकालीन बैठक बुलाकर समझौते, जिसे अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति की शब्दावली में 'शुल्ट्ज योजना' कहा जा रहा है, को अपनी स्वीकृति प्रदान कर दी। अरब राष्ट्रों की समझौते के प्रति भिन्न-भिन्न प्रक्रिया रही है। मिस्र ने समझौते का स्वागत करते हुए, इसे पश्चिमी एशिया में भावी शान्ति की स्थापना में सहायक बताया है जबकि लीबिया ने कड़ी प्रतिक्रिया की स्पष्ट चेतावनी दी है। जहाँ तक फिलिस्तीनी मुक्ति संगठन का प्रश्न है, पी. एल. ओ नेतृत्व इस प्रकार के समझौते से चिंतित है क्योंकि यदि समझौता व्यवहार में लागू हुआ (जिसकी न्यूनतम सम्भावना है) तो पी. एल. ओ. को व्यर्थ में व्यापक कूटनीतिक महत्व के एक स्थल को छोड़ना होगा।

वैसे लेबनन नेतृत्व द्वारा उठाये गये इस प्रकार के कदम से किसी को आश्चर्य नहीं होना चाहिये। अपनी भौगोलिक स्थिति, विगत राजनीतिक इतिहास तथा विशिष्ठ आर्थिक हितों के कारण लेबनन का अरब लीग में विशिष्ठ स्थान है। पिछले 6 जून, 82 के बाद से एक वर्ष के समयकाल

प्रस्तुति : नन्द लाल, प्रवक्ता, राजनीति विभाग, काशी विद्यापीठ विश्वविद्यालय, वाराणसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में लेबनन को, स्वयं के किसी दोष के न होते हुए भी, फिलिस्तीनियों के चलते अत्याचार के नृशंसतम् दौर से गुजरना पड़ा है। लेबनन में सरकारी तथा गैर-सरकारी दोनों ही स्तरों पर अनेक बार प्रत्यक्ष रूप से फिलिस्तीनियों को इसरायली नृशंसता के लिए दोषी ठहराया गया है। वर्तमान समय में लेबनन में जो सीरियाई सैनिक विद्यमान हैं तथा जिनके वापसी की बात 'शुल्ट्ज योजना' में कही गई है लेबनन में उनका प्रवेश सर्वप्रथम 1975 में हुआ था। ज्ञातव्य हो कि उस समय लेबनन में गृहयुद्ध हो रहा था जिसके कारण व्यापक अस्थिर राजनीतिक तथा आर्थिक वातावरण को दूर करने के लिए ही अरब लीग द्वारा जारी एक 'मैन्डेट' के अन्तर्गत, सीरिया द्वारा अपनी सेनाएं लेबनन में नियोजित की गई थीं। तब से अब तक अर्थात् पिछले 8 वर्षों मे सीरियाई सैनिकों की लेबनन से वापसी, बेभिन्नीकृत घटना क्रम के चलते, सम्भव न हो सकी। इस बार सीरियाई सैनिकों की वापसी होगी या नहीं—इस बारे में कुछ निश्चित कह पाना मुश्किल है। किन्तु जहाँ तक लेबनन सरकार का प्रश्न है, उसके लिए सीरियाई, इसरायली तथा फिलिस्तीनी—तीनों ही विदेशी हैं। इसरायल के साथ लेबनन का अनुभव नितान्त कटु तथा सर्वविदित है; फिलिस्तीनी लेबनन के व्यापक विध्वंस के सर्वप्रमुख कारण रहे हैं तथा सीरिया कठिन समय में लेबनान का कितना साथ दे सकता है? यह लेबनान विगत जून में इसरायली आक्रमण के दौरान देख चुका है। इसलिये यदि लेबनानी नेतृत्व ने अपने आर्थिक तथा व्यापारिक हितों को मद्देनजर रखते हुए, इन तीनों देशों के सैनिक हस्तक्षेप से छुटकारा दिलाने वाला समझौता किया है तो इसमें किसी प्रकार की विसंगति नहीं है।

किन्तु यहाँ एक अन्य तथ्य की ओर ध्यान देना आवश्यक है। वह यह कि सीरियायी तथा इस्रायली सैनिक हस्तक्षेप की प्रकृति तथा उसके पीछे विद्यमान उद्देश्यों में निश्चित अन्तर है; क्योंकि सीरियाई सैनिकों का लेबनन में प्रवेश एक क्षेत्रीय संगठन के मैन्डेट के तहत, एक स्थिति विशेष में हुआ था जबकि 6 जून 82 को लेबनन पर जिस इसरायली आक्रमण की शुरुआत हुई, वह दृढ़वादी उग्र सैनिक हस्तक्षेप का प्रत्यक्ष एवं ज्वलन्त नमूना था। दोनों स्थितियों में अन्तर्राष्ट्रीय विधि के स्थापित प्रतिमानों के तहत व्यापक अन्तर है। पुनः इसरायली प्रधानमन्त्री बेगिन की यह शर्त कि सीरिया द्वारा अपनी सेनाओं को वापस बुलाने पर ही इसरायल अपनी सेना लेबनन से हटायेगा, नितांत अनौचित्यपूर्ण है। प्रत्यक्ष आक्रमणकारी होने के कारण, अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति की पूर्व-स्थापित प्रथाओं के अनुकूल, इसरायली सैनिक वापसी का प्रश्न अन्तर्राष्ट्रीय दायित्व तथा मध्यस्थता से आबद्ध है जबकि सीरियाई सैनिकों की वापसी—सीरिया तथा लेबनन के मध्य द्वि पक्षीय समझौते का विषय हो सकता है। पुनः सीरियाई राष्ट्रपति हफीज असद पर समझौते को न स्वीकार करने के लिये, मास्को का दबाव भी पड़ रहा होगा। लेबनन-इसरायल-अमरीका समझौते पर कटु सोवियत प्रक्रिया का उल्लेख ऊपर किया जा चुका है। मास्को कभी नहीं चाहेगा कि दमिश्क की सेनायें बेरुत को छोड़ें। तेल अवीव को वाशिंगटन के प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष राजनीतिक एवं सैनिक सहयोग के चलते, मास्को की दृष्टि में दमिश्क क्षेत्र में सैनिक उपस्थिति का 'क्षेत्रीय सामरिक संतुलन' की स्थापना में कितना महत्व है, शायद इसकी व्याख्या करने की आवश्यकता नहीं है।

जहाँ तक फिलिस्तीनियों का प्रश्न है, उन्हें इसरायली सेनाओं के साथ तुरन्त लेबनन छोड़ देना चाहिए किन्तु त्रिपक्षीय 'शुल्ट्ज योजना' के तहत् ऐसा कुछ व्यवहार में सम्भव हो सकेगा, कह सकना मुश्किल है। यद्यपि समझौते का अन्तिम स्वरूप इसरायल की पूर्ण इच्छानुकूल तो नहीं है किन्तु फिर भी इसरायल को इससे असन्तुष्ट नहीं होना चाहिये क्योंकि यदि फिलिस्तीनी गुरिल्ले लेबनन छोड़ देते हैं तो इसरायल के दक्षिणी किनारे पर फिलिस्तीनी खतरा हमेशा के लिए समाप्त हो जायेगा। साथ ही समझौते के तात्कालिक मसौदे में लेबनन के दक्षिणी भाग में 45 किमी. के क्षेत्र में सीमित इसरायली उपस्थिति की भी अनुमति की गई है। 'टाइम' में प्रकाशित एक रिपोर्ट के अनुसार, निकट भविष्य में तेल अवीव तथा बेरूत के मध्य सम्बन्ध और अच्छे होंगे। रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि लेबनानी नेतृत्व द्वारा सिद्धान्तः 'अरब जगत' से सम्बन्ध विच्छेद करने का भी निर्णय लिया गया है।

लेबनन और सम्पूर्ण मध्यपूर्व में स्थायी शान्ति की स्थापना के लिये कम से कम दो समस्याओं का समाधान किया जाना आवश्यक है: लेबनन से विदेशी सेनाओं की वापसी तथा फिलिस्तीनी स्वायत्तता को सुलझाया जाना। लेबनन तथा इसरायल के मध्य सामञ्जस्य भी पश्चिमी एशिया में शान्ति स्थापना की दिशा में कारगर हो सकता है। किन्तु लेबनन के हां कुछ विरोधी दलो ने "शुल्ट्ज योजना" की कटु आलोचना की है। इसकी परिणति लेबनान में आन्तरिक संघर्ष के रूप में भी हो सकती हैं जिसका लाभ प्रत्येक स्थिति में इसरायल एवं फिलिस्तीनी मुक्ति संगठन को ही मिलेगा। गमाएल के

(शेष पृष्ठ 61 पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिविल सर्विस (प्रारम्भिक परीक्षा) 1982 का सामान्य अध्ययन प्रश्न-पत्र

(स्मृति के आधार पर)

वर्ष 1979 से सिविल सर्विस परीक्षा को दो चरणों—प्रारम्भिक एवं मुख्य, में आयोजित किया जा रहा है। जहाँ सिविल सर्विस (प्रारम्भिक) परीक्षा में सामान्य अध्ययन का प्रश्न पत्र वस्तुनिष्ठ है वहीं मुख्य परीक्षा विवरणात्मक है। वस्तुनिष्ठ प्रश्न पत्रों के लिये विशेष प्रकार के अध्ययन की आवश्यकता होती है। (जैसा कि प्रगति मंजूषा के फरवरी 1983 अंक में प्रकाशित "सिविल सर्विस परीक्षा (प्रारम्भिक) की तैयारी सम्बन्धी कुछ सुझाव" में कहा जा चुका है।) साथ में सिविल सर्विस परीक्षा (प्रारम्भिक) के सामान्य अध्ययन के प्रश्न पत्र के साथ कुछ विशेष असुविधाएं भी हैं। इस परीक्षा में सामान्य अध्ययन के प्रश्न पत्र को परीक्षोपरान्त परीक्षक को जमा कर देना पड़ता है। इससे सभी परीक्षार्थियों को इस प्रश्न पत्र की उपलब्धिता से वंचित होना पड़ता है। हालांकि कुछ पुस्तक /पत्रिकाओं ने समय समय पर परिक्षार्थियों के स्मृति के आधार पर सामान्य अध्ययन के प्रश्नों को प्रकाशित कर नये अभ्यर्थियों का यथासम्भव मार्ग दर्शन करने का प्रयत्न किया। परन्तु ऐसे प्रकाशित प्रश्नों को सामान्य अध्ययन में सम्मिलित विषयों जैसे सामान्य विज्ञान, भारतीय इतिहास व राष्ट्रीय आन्दोलन, भारतीय राज्य व्यवस्था, भारतीय भूगोल व विश्व, भारतीय अर्थव्यवस्था, कृषि व पशुपालन, मानसिक योग्यता तथा अधुनातन राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय घटनाचक्र के आधार पर अलग अलग वर्ग में न प्रकाशित कर खिचड़ी (hotch potch) ढंग से प्रस्तुत किया जाता है।

इस कारण से अधिकांश परीक्षार्थी सदैव यह कठिनायी अनुभव करते हैं कि सिविल सर्विस परीक्षा (प्रारम्भिक) के सामान्य अध्ययन के प्रश्न पत्र में किस विषयों को प्राथमिकता प्रदान की जाती है। यदि परीक्षार्थी को पहले से मालूम हो कि अमुक अमुक विषय पर सामान्यतः कितने प्रश्न पूछे जाते है तो वह अपनी तैयारी तदनुसार कर अध्ययन को अधिकाधिक सुव्यवस्थित कर सकता है। ऐसा करने पर इस प्रश्न पत्र में अधिकाधिक अंक प्राप्त करने की सम्भावना बलवती हो जाती है। इस अंक में वर्ष 1982 के सामान्य अध्ययन के प्रश्नों को अलग अलग वर्गों में यथासम्भव विभाजित कर परीक्षार्थियों की दिक्कतों को दूर करने का प्रयत्न किया गया है। साथ में वर्ष 1979 से 1982 के सामान्य अध्ययन के प्रश्न पत्र में प्रत्येक विषयों पर प्रदान की गयी प्राथमिकता का भी उल्लेख किया जा रहा है।

विषय	1979	1980	1981	1982
सामान्य विज्ञान	19.5%	19.1%	22 8%	21.3%
भूगोल (भारतीय एवं विश्व)	7.1%	8%	6.6%	13%
भारतीय अर्थव्यवस्था	8.1%	6.6%	8%	5.3%
भारतीय इतिहास एवं राष्ट्रीय आन्दोलन	22.1%	19.3%	14%	14.7%
भारतीय राज्य व्यवस्था	11.3%	8%	10.4%	9.3%
कृषि व पशुपालन	6%	3.3%	6.6%	4.6%
मानसिक योग्यता	1.7%	12.5%	11.6 %	14.9 %
अधुनातन घटना चक्र* (राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय) तथा अन्य	25.4%	23.2%	20.0 %	21.3 %
कुल प्रश्न	200	150	150	150

*इस वर्ग में सम्मिलित किये गये कुछ प्रश्नों को भारतीय अर्थव्यवस्था व भारतीय राज्य व्यवस्था के अन्तर्गत रखा जा सकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

1. निम्नांकित में सबसे प्राचीन राजवंश कौन सा है ?
(क) मौर्य वंश (ख) चोल वंश
(ग) गुप्त वंश (घ) कुषाण वंश

2. सिन्धु घाटी की लिपि के सम्बन्ध में क्या सत्य है ?
(क) यह चित्रों एवं रेखाओं में अंकित है
(ख) ऐसी कोई भी लिपि नहीं है
(ग) यह आर्यों की लिपि से प्रभावित है
(घ) अभी तक इस लिपि का अर्थ नहीं निकाला जा सका है

3. लोथल में सिन्धु घाटी सभ्यता के अवशेष किस रूप में प्राप्त हुए हैं ?
(क) पक्की नालियाँ (ख) लकड़ी के अस्त्र शस्त्र
(ग) नक्काशी वाले बर्तन (घ) नाव

4. मध्यकालीन भारत में निम्नांकित स्थापत्य किस क्रम में निर्मित किये गये हैं ?
(क) कुतुबमीनार, आगरे का किला, ताजमहल, फतेहपुर सिकरी
(ख) कुतुबमीनार, फतेहपुर सिकरी, ताजमहल, आगरे का किला
(ग) कुतुबमीनार, फतेहपुर सिकरी, आगरे का किला, ताजमहल
(घ) कुतुबमीनार, ताजमहल, आगरे का किला, फतेहपुर सिकरी

5. कल्हण द्वारा लिखित पुस्तक 'राजतरंगिणी' में निम्न में किसका वर्णन है ?
(क) अशोक के धर्म का
(ख) कश्मीर के इतिहास का
(ग) सिकन्दर के भारत आक्रमण का
(घ) मगध के वणिकों का

6. मध्यकालीन भारत में गुलाम वंशों के सुल्तानों की नियुक्ति किस प्रकार होती थी ?
(क) मनोनयन द्वारा (ख) वंशानुगत द्वारा
(ग) निर्वाचन द्वारा
(घ) प्रतिस्पर्धी उम्मीदवारों के मध्य युद्ध के द्वारा

7. गांधीजी को असहयोग आन्दोलन को समय के पूर्व ही क्यों स्थगित करना पड़ा ?
(क) आन्दोलन का हिंसक होना
(ख) आन्दोलन का उद्देश्य पूरा हो जाना
(ग) अंग्रेजों द्वारा आन्दोलनकारियों का नृशंसतापूर्वक दमन करना
(घ) आन्दोलनकारियों के मध्य मतभेद उत्पन्न होना

8. निम्नांकित किस कारण से गान्धी जी ने 'दांडी मार्च' की थी ?
(क) सत्याग्रह प्रारम्भ करने के लिये
(ख) पूर्ण स्वराज की मांग के लिये
(ग) नमक कानून का उल्लंघन करने के लिये
(घ) जलियानवाला हत्याकान्ड का विरोध करने के लिये

9. गुरु नानक के धर्मोपदेश के सम्बन्ध में क्या सत्य है ?
(क) उन्होंने सार्वभौमिक भ्रातृत्व पर बल दिया
(ख) उन्होंने सिखों के सैनिक संगठन की स्थापना पर जोर दिया
(ग) उन्होंने इस्लाम के विनाश के लिये प्रचार किया
(घ) उन्होंने मूर्तिपूजा पर बल दिया

10. 78 ई. में शक संवत का प्रारम्भ किसने किया था ?
(क) मिहिरकुल (ख) खारवेल
(ग) पुष्यमित्र कुलकर्णी (घ) कनिष्क

11. "भारत को संगठित होकर अपनी शक्ति द्वारा पुनः एक बार सम्पूर्ण विश्व पर विजय प्राप्त करनी है ....." यह कथन किसका है ?
(क) राजा राममोहन राय (ख) विवेकानन्द
(ग) वीर सावरकर (घ) दयानन्द सरस्वती

12. "पुनः वेदों की ओर लौटो" किसका आह्वान था ?
(क) शंकराचार्य (ख) रामानुज
(ग) दयानन्द सरस्वती (घ) विवेकानन्द

13. निम्नलिखित में किस ब्रिटिश गवर्नर जनरल ने राज्य अपहरण नीति को अपनाया था ?
(क) लार्ड कार्नवॉलिस (ख) लार्ड कर्जन
(ग) लार्ड विलियम बेंटिंक (घ) लार्ड डलहौजी

14. 1857 के स्वतन्त्रता संग्राम में निम्न में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

किसने भाग नहीं लिया था ?

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(क) रानी लक्ष्मीबाई (ख) नाना साहिब
(ग) टीपू सुल्तान (घ) तात्या टोपे

15. रामानुज का उपदेश किससे सम्बन्धित था ?
(क) ज्ञान (ख) वेद
(ग) अहिंसा (घ) भक्ति

16. स्वराज दल की स्थापना का क्या उद्देश्य था ?
(क) पूर्ण स्वराज प्राप्त करना
(ख) उग्रवादी तत्वों की शक्ति को कमजोर करना
(ग) विधान परिषद में प्रवेश करना
(घ) अंग्रेजों से समझौता करना

17. निम्नांकित में कौन कांग्रेस दल के मध्यमार्गी गुट का नहीं था ?
(क) गोपाल कृष्ण गोखले (ख) दादा भाई नौरोजी
(ग) फिरोजशाह मेहता (घ) बाल गंगाधर तिलक

18. बुद्धधर्मियों का धर्मग्रन्थ निम्न में कौन सा है ?
(क) अङ्ग (ख) त्रिपिटक
(ग) उपनिषद (घ) महानिर्वाण

19. निम्न में किसने महाबलीपुरम की स्थापना की थी ?
(क) चालुक्य (ख) शक-सातवाहन
(ग) चोल (घ) पल्लव

20 राजा राममोहन राय निम्न में किस क्षेत्र से सम्बन्धित नहीं थे ?
(क) विधवाओं का पुनर्विवाह
(ख) अंग्रेजी भाषा का प्रचार
(ग) सती प्रथा का उन्मूलन
(घ) मूर्ति पूजा पर बल

21. श्वेत पत्र क्या है ?
(क) राजकीय प्रतिवेदन
(ख) सरकारी दफ्तरों में प्रयोग किया जाने वाला कागज
(ग) वह कागज जिससे नोट बनाये जाते हैं
(घ) वह कागज जिस पर सन्देश लिखकर अन्य राष्ट्रों को भेजा जाता है

22. 42वें संविधान संशोधन (1976) द्वारा भारतीय संविधान में जोड़ा जाने वाला एक नया अध्याय किससे सम्बन्धित है ?
(क) केन्द्र-राज्य सम्बन्ध
(ख) मूल कर्तव्य
(ग) वित्तीय आपातकाल
(घ) सम्पत्ति का अधिकार

23. निम्न में से कौन भारत के राष्ट्रपति को निर्वाचित करता है ?
(क) राज्य सभा व लोकसभा के सदस्य
(ख) संसद एवं राज्य विधान मण्डलों के सदस्य
(ग) संसद एवं राज्य विधान मण्डलों के निर्वाचित सदस्य
(घ) संसद एवं राज्य विधान सभाओं के निर्वाचित सदस्य

24. भारत का राष्ट्रपति निम्न में किसको अपना त्याग-पत्र प्रस्तुत करता हैं ?
(क) निर्वाचन आयोग
(ख) लोक सभा के अध्यक्ष
(ग) उपराष्ट्रपति
(घ) सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश

25. लोक सभा द्वारा किसी धन विधेयक को यदि राज्यसभा अस्वीकृत कर देती है तो क्या हो सकता है ?
(क) लोक सभा इस धन विधेयक को पुनः विचार के लिये राज्य सभा भेजती है
(ख) लोक सभा इस धन विधेयक में राज्य सभा द्वारा किए गये संशोधन को स्वीकृत या अस्वीकृत कर सकती है
(ग) राष्ट्रपति इस धन विधेयक पर विचार करने के लिये दोनों सदनों की संयुक्त बैठक बुलाता है
(घ) ऐसा धन विधेयक स्वयं ही समाप्त हो जाता है

26. यदि संसद के दोनों सदनों द्वारा पारित किसी विधेयक को राष्ट्रपति के पास हस्ताक्षर के लिये भेजा जाता है तो
(क) वह विधेयक पर हस्ताक्षर करने से मना कर सकता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

(ख) वह विधेयक को संसद में पुनर्विचार के लिये भेज सकता है

(ग) वह विधेयक में स्वयं संशोधन कर सकता है

(घ) वह विधेयक के सम्बन्ध में जनमत जानने के लिये जनमत संग्रह करा सकता है

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

27. भारत में नागरिकों को निम्न में से कौन सा अधिकार प्राप्त नहीं है ?

(क) हड़ताल करने का अधिकार

(ख) शोषण के विरुद्ध अधिकार

(ग) विचार अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता का अधिकार

(घ) समानता का अधिकार

28. भारत में मन्त्रिपरिषद किसके प्रति उत्तरदायी होता है ?

(क) राष्ट्रपति (ख) प्रधानमन्त्री

(ग) लोकसभा (घ) राज्यसभा

29. भारत का राष्ट्रपति लोकसभा में कितने सदस्यों को मनोनीत कर सकता है ?

(क) 1 (ख) 2 (ग) 6 (घ) 12

30. पंचायती राज से अन्यतम लाभ—

(क) ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार में वृद्धि

(ख) ग्रामीण क्षेत्रों का तीव्र गति से विकास

(ग) ग्रामीण जनता में राजनीतिक जागरूकता की वृद्धि

(घ) शासन का विकेन्द्रीकरण

31. कल्याणकारी राज्य की धारणा को संविधान के किस भाग में परिभाषित किया गया है ?

(क) प्रस्तावना

(ख) राज्य नीति निदेशक के सिद्धान्त

(ग) मूलाधिकार

(घ) आठवीं अनुसूची

32. राष्ट्रपति के निर्वाचन सम्बन्धी विवाद की सुनवाई कौन करता है ?

(क) संसद (ख) उपराष्ट्रपति

(ग) सर्वोच्च न्यायालय (घ) निर्वाचन आयोग

33. यदि किसी मन्त्री के विरुद्ध अविश्वास का प्रस्ताव सफलतापूर्वक पारित हो तो

(क) सम्बन्धित मन्त्री पदत्याग करता है

(ख) सम्पूर्ण मन्त्रिमण्डल पद त्याग करता है

(ग) लोक सभा भंग कर दी जाती है

(घ) कुछ भी नहीं होता है

34. प्रथम पंचवर्षीय योजना का मुख्य उद्देश्य क्या था ?

(क) भारी उद्योगों की स्थापना

(ख) सिंचाई एवं विद्युत परियोजना सहित कृषि उत्पादन बढ़ाना

(ग) बेरोजगारी का उन्मूलन

(घ) जनसंख्या वृद्धि पर रोक

35. भारत में कुल विद्युत उत्पादन का सर्वाधिक अंश किससे प्राप्त होता है ?

(क) ताप विद्युत (ख) जल विद्युत

(ग) परमाणु विद्युत (घ) गोबर गैस

36. निम्नांकित में कौन सा कर राज्य द्वारा नहीं लगाया जाता है ?

(क) बिक्री कर (ख) सम्पत्ति कर

(ग) पथ कर (घ) व्यवसाय कर

37. मिश्रित अर्थव्यवस्था का क्या अर्थ है ?

(क) समन्वयित आर्थिक विकास

(ख) कुटीर, मध्यम व बड़े उद्योगों का एक साथ होना

(ग) पूंजीवाद व समाजवाद का मिश्रण होना

(घ) निजी व सार्वजनिक उद्योगों का मिश्रण होना

38. भारतीय रुपये का मूल्य निम्नांकित किस मुद्रा से सम्बन्धित है ?

(क) पाउन्ड स्टरलिंग (ख) अमेरिकी डालर

(ग) जर्मन मार्क (घ) कुछ चुने हुए राष्ट्रों की मुद्रा

39. गाडगिल फार्मूला निम्नांकित में किससे सम्बन्धित है ?

(क) केन्द्र व राज्य के मध्य वित्तीय साधन का बंटवारा

(ख) गोदावरी नदी के जल का बंटवारा

(ग) औद्योगिक श्रमिकों के लिये बोनस

(घ) पिछड़े राज्यों की जनता को कर में छूट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

40. पूंजी उद्दीपन (incentive) से क्या होता है ?
(क) रोजगार में वृद्धि (ख) बेरोजगारी में वृद्धि
(ग) पूंजी में कमी (घ) पूंजी में वृद्धि

41. जवाहर लाल नेहरू ने नियोजन में किसके विकास पर बल प्रदान किया था ?
(क) अत्याधुनिक तकनीकी की सहायता से कृषि
(ख) विज्ञान व तकनीकी
(ग) भारी व मूल उद्योग (घ) लघु उद्योग

42. भारत में औद्योगिक उत्पादन में तेजी से वृद्धि न होने का क्या कारण नहीं है ?
(क) ऊर्जा की कमी (ख) परिवहन की समस्या
(ग) कच्चे माल की कमी (घ) मांग में कमी

43. भारत निम्नांकित में किस वस्तु का सर्वाधिक निर्यात करता है ?
(क) कपड़ा (ख) जूट
(ग) चाय (घ) इंजीनियरिंग सामान

44. भारतीय प्रायद्वीप में सर्वाधिक लम्बा तट किस राज्य/केन्द्र प्रशासित प्रदेश का है ?
(क) तमिलनाडु (ख) गोवा
(ग) आन्ध्र प्रदेश (घ) केरल

45. चम्बल नदी निम्नांकित किन राज्यों से होकर बहती है ?
(क) मध्य प्रदेश, राजस्थान, गुजरात
(ख) उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार
(ग) राजस्थान, मध्यप्रदेश, बिहार
(घ) उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान

46. उन ढालू क्षेत्रों में जहाँ वार्षिक वर्षा 200 से. मी. होती हो और जहाँ अधिकतम तापकम 25 से०ग्रे० रहता हो, वहाँ किसकी पैदावार सर्वोत्तम होती है ?
(क) चाय (ख) जूट
(ग) कहवा (घ) तम्बाकू

47. निम्नांकित किस अयस्क/खनिज में कार्बन पाया जाता है ?
(क) क्रोमाइट (ख) बाक्साइट
(ग) फास्फोरस (घ) लिगनाइट

48. निम्नलिखित कौन सी नदी विन्ध्य एवं सतपुड़ा पर्वतमालाओं के मध्य से होकर बहती है ?
(क) ताप्ती (ख) नर्मदा
(ग) गोदावरी (घ) मूसा

49. निम्नांकित किस एक राज्य में जाये बिना कांडला मंगलूर, पारद्वीप व तूतीकोरन जाया जा सकता है ?
(क) महाराष्ट्र (ख) उड़ीसा
(ग) कर्नाटक (घ) तमिलनाडु

50. भारत और पाकिस्तान के मध्य सीमा विभाजन कौन सी रेखा करती है ?
(क) डुरन्ड रेखा (ख) रैडक्लिफ रेखा
(ग) मैकमोहन रेखा (घ) उपर्युक्त सभी

51. डंकन मार्ग (pass) किनके मध्य में है ?
(क) उत्तरी अन्डमान व दक्षिणी अन्डमान
(ख) अन्डमान व निकोबार
(ग) पूर्व व पश्चिम अन्डमान
(घ) पॉन्डेचेरी व तमिलनाडु

52. जाड़े के दिनों में उत्तरी भारत में वर्षा किस कारण से होती है ?
(क) पश्चिमी उपद्रव (disturbance)
(ख) पश्चश्रवण (receeding) मानसून
(ग) सामान्य (normal) मानसून
(घ) तिजारती (trade) पवन

53. पहाड़ी क्षेत्रों में छोटे-छोटे भूभाग पर खेती करने को क्या कहा जाता है ?
(क) पगडन्डी (track) खेती
(ख) कॉन्टुर्अ (contour) खेती
(ग) ढलाई (slopy) खेती
(घ) स्थानान्तरित (shifting) खेती

54. भाखड़ा नंगल बाँध, हीराकुन्ड बांध, तथा मैथोन बांध क्रमशः किन नदियों पर बनाये गये हैं ?
(क) ब्यास, महानदी, दामोदर
(ख) सतलज, दामोदर, महानदी
(ग) सतलज, महानदी, दामोदर
(घ) ब्यास, दामोदर, महानदी

55. भारत में सिंचाई की आवश्यकता क्यों है ?
(क) कम वर्षा (ख) अधिक वर्षा
(ग) अनियमित मानसून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

(घ) फसलों को अधिक पानी की आवश्यकता

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

56. चांदी, सोना, लोहा, व कोयला से सम्बन्धित क्षेत्र क्रमशः
(क) खेत्री, कुद्रमुख, कोलार, झरिया
(ख) खेत्री, कोलार, कुद्रमुख, झरिया
(ग) झरिया, कोलार, कुद्रमुख, खेत्री
(घ) कोलार, खेती, कुद्रमुख, झरिया

57. निम्नांकित में चट्टान की कौन सी परिभाषा सर्वोत्तम है ?
(क) आग्नेय (igneous), तलछटी (sedimentary) रूपान्तरित (metamorphic)
(ख) तलछटी, रूपान्तरित, संगमरमर (marble)
(ग) रूपान्तरित, आग्नेय, कार्बोनेट (carbonate)
(घ) उपर्युक्त कोई भी नहीं

58. निम्नांकित किस आधार पर यह कहा जा सकता है कि किसी समय भारत व ऑस्ट्रेलिया भौगोलिक रूप से जुड़े हुए थे ?
(क) दोनों स्थानों के मौसम में समानता
(ख) दोनों स्थानों की संस्कृति में समरूपता
(ग) एशिया की भांति ऑस्ट्रेलिया के बृहत क्षेत्र में भी हरे भरे मैदान का होना
(घ) मारसुपायल के जीवावशेष एशिया में पाये जाते हैं

59. अन्तरिक्ष में यात्रा करते समय एक अन्तरिक्ष यात्री को आकाश किस रंग का दिखाई देगा ?
(क) नीला (ख) भूरा
(ग) काला (घ) रंगहीन

60. निम्न में कौन गोबर गैस का प्रमुख घटक है ?
(क) कार्बन डाइ आक्साइड (ख) मेथेन
(ग) ईथेन (घ) प्रोपेन

61. गैसोहोल गैसोलीन और निम्न में किसका मिश्रण है ?
(क) मेथिल एलकोहल (ख) प्रोपिल एलकोहल
(ग) एथिल एलकोहल (घ) सल्फील एलकोहल

62. यदि कोई जहाज नदी से समुद्र में प्रवेश करता है तो उसका स्तर (level)
(क) नीचे गिर जायेगा (ख) ऊपर उठ जायेगा
(ग) अपरिवर्तित रहेगा
(घ) जहाज के आकार एवं भार पर निर्भर करेगा

63. निम्नांकित में कौन गैस जलने की क्रिया में सर्वाधिक सहायक होती है ?
(क) आक्सीजन (ख) नाइट्रोजन
(ग) हाइड्रोजन (घ) कार्बन मोनो आक्साइड

64. हाइग्रोमीटर का प्रयोग क्या नापने के लिये किया जाता है ?
(क) वायु की आर्द्रता (ख) दुग्ध का घनत्व
(ग) जल में वायु का वेग (घ) प्रकाश का वेग

65. निम्नांकित में 'यूनीवर्सल डोनर' रक्त समूह कौन सा है ?
(क) A (ख) B
(ग) AB (घ) O

66. बाढ के समय निम्नलिखित में से किस रोग के विरुद्ध एहतियाती (Precautionary) कदम उठाना जाना चाहिए ?
(क) कॉलेरा (ख) मलेरिया
(ग) टाइफायड (घ) स्मॉल पॉक्स

67. हृदय रोगी के हृदय की धड़कन यदि बहुत कम होने लगे तो प्राथमिक उपचार के रूप में क्या करना वांछनीय होगा ?
(क) मुख द्वारा ऑक्सीजन देना
(ख) मुख पर पानी छिड़कना व हवा करना
(ग) तुरन्त डाक्टर को बुलाना
(घ) हृदय की मालिश करना

68. तुरन्त ऊर्जा की पूर्ति के लिये एक खिलाड़ी को निम्न में किसका अधिकाधिक सेवन करना चाहिए ?
(क) लवण (ख) प्रोटीन
(ग) कार्बोहाइड्रेट (घ) विटामिन

69. किलोवॉट किसकी इकाई है ?
(क) कार्य (ख) ऊर्जा
(ग) दाब (घ) भार

70. माचिस की तीली पर लगाया जाने वाला पदार्थ कौन सा है ?
(क) सल्फर (ख) सोडियम
(ग) फास्फेट (घ) फास्फोरस

71. मनुष्य के शरीर का आवश्यक अवयव, लोहा निम्नां-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कित में सर्वाधिक मात्रा में पाया जाता है ?
(क) हरी सब्जियाँ (ख) दूध
(ग) अण्डा (घ) मांस

72. विभिन्न समय में तारामण्डल (Constellations) भिन्न-भिन्न स्थितियों में चमकते क्यों दिखते हैं ?
(क) पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा करती है
(ख) पृथ्वी अपने अक्ष पर परिक्रमा करती है
(ग) तारामण्डल पृथ्वी से अधिक तेज गति से चलता है
(घ) तारामण्डल एवं पृथ्वी एक दूसरे के विपरीत दिशा में चलते है

73. मानव जीवन के लिये ओजोन महत्वपूर्ण है क्योंकि यह
(क) सूर्य की अल्ट्रा वायलेट किरणों से रक्षा करती है
(ख) कार्बन डाई आक्साइड को आक्सीजन में परिवर्तित करती है
(ग) वायुमण्डल के तापक्रम को सन्तुलित रखती है
(घ) उपर्युक्त सभी

74. प्लैंकटन (plankton) क्या है ?
(क) बाम्बे हाई में तेल दोहन के लिये ड्रिलिंग प्लेटफार्म
(ख) एक नया ग्रह
(ग) एक समुद्री वनस्पति की विलुप्त जाति
(घ) सूक्ष्म जीव (micro-organism)

75. निम्नांकित में विटामिन किस कार्य के लिये उपयोगी है ?
(क) शक्ति (ख) वर्धन
(ग) पाचन (घ) चयापचय (metabolism)

76. सौर ऊर्जा किस प्रकार उत्पन्न होती है ?
(क) यूरेनियम परमाणु के विखण्डन (fission) से
(ख) हाइड्रोजन परमाणु के विखण्डन से
(ग) हाइड्रोजन परमाणु के संयोजन (fusion) से
(घ) हिलियम परमाणु के संयोजन से

77. निम्नांकित में कौन आग के प्रति सबसे कम प्रवृत्त है ?
(क) रेयन का कपड़ा (ख) टेरीकॉट का कपड़ा
(ग) नाइलॉन का कपड़ा (घ) सूती कपड़ा

78. निम्नांकित में कौन रोग का विरोध करता है ?
(क) यकृत (ख) हृदय
(ग) डब्लू बी सी. (घ) आर. बी. सी.

79. निर्जलन (dehydration) के दौरान निम्न में कौन सा पदार्थ अल्प मात्रा में नष्ट होता है ?
(क) कैल्शियम सल्फेट (ख) कैल्सियम क्लोराइड
(ग) पोटेशियम क्लोराइड (घ) सोडियम क्लोराइड

80. निम्न में किन पदार्थों के समूह से टार्च के सेल (cell) का सिरा (terminal) बनाया जाता है ?
(क) कार्बन-चांदी (ख) जस्ता-चांदी
(ग) कार्बन-जस्ता (घ) जस्ता-ऐल्मुनियम

81. निम्न में कौन सा कृमि (worm) त्वचा के माध्यम से आंत (intestine) तक पहुँच जाता है ?
(क) गोल कृमि (Ringworm)
(ख) फीता कृमि (Tapeworm)
(ग) तन्तु कृमि (Thread worm)
(घ) अंकुश कृमि (Hook worm)

82. ग्रामीण क्षेत्रों में बायो गैस का उपयोग लाभदायक है क्योंकि इससे
(क) रोजगार मिलता है
(ख) ग्रामीण उद्योगों को ऊर्जा प्राप्त होती है
(ग) गांव स्वच्छ रहता है
(घ) ग्रामीण क्षेत्र के घरेलू ऊर्जा की आवश्यकता की पूर्ति होती है

83. गर्मी के दिनों में पंखा आरामदायक होता है क्योंकि
(क) यह ठण्डी हवा प्रदान करता है
(ख) यह शरीर के पसीने को सुखाता है
(ग) यह कमरे की गर्म हवा को बाहर निकालता है
(घ) यह कमरे में ठण्डी हवा के प्रवेश के लिये परिस्थिति उत्पन्न करता है

84. फोटोग्राफिक कैमरा का कौन भाग रेटीना की भांति कार्य करता है ?
(क) शटर (ख) लेन्स
(ग) फोकस समंजक (घ) फिल्म

85. निम्न में कौन सा पदार्थ फोटोग्राफी के लिये प्रयोग किया जाता है ?
(क) सोडियम सल्फेट (ख) पोटेशियम क्लोराइड
(ग) सिल्वर ब्रोमाइड (घ) स्टेडियम ब्रोमाइड

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

86. लोहा पर जस्ते की परत चढ़ाने की प्रक्रिया को क्या कहा जाता है ?
(क) गैलवनाइजेशन (ख) जिंकाइजेशन
(ग) वलकैनाइजेशन (घ) इलेक्ट्रोप्लेटिंग

87. हीरा एव पन्ना निम्न में किससे निर्मित होते हैं ?
(क) सिलिका व बेरीलियम (ख) कार्बन व कार्बन
(ग) कार्बन व बेरीलियम (घ) सिलिका व सिलिका

88. किसी बच्चे के सामान्य स्वास्थ का परीक्षण शीघ्रता पूर्वक किस प्रकार किया जा सकता है ?
(क) उसके नाखून, बाल व त्वचा के परीक्षण से
(ख) शरीर के पूर्ण परीक्षण द्वारा
(ग) केवल कुछ परीक्षणों से ही
(घ) उपर्युक्त कोई भी नहीं

89. निम्न में किस अवस्था में बीजों का सर्वोत्तम परिरक्षण (preservation) हो सकता है ?
(क) ठण्डी एवं शुष्क अवस्था में
(ख) उष्ण, एवं आर्द्र अवस्था में
(ग) उष्ण एवं शुष्क अवस्था में
(घ) किसी भी अवस्था में

90. बीजों की बोआई के पश्चात निम्न में किस प्रकार का उर्वरक प्रयोग किया जाता है ?
(क) पोटास (ख) फास्फोरस
(ग) नाइट्रेट (घ) अमोनिया

91. भारत में कुक्कुटों के लिये सर्वाधिक लोकप्रिय चारा कौन सा है ?
(क) मक्का (ख) बाजरा
(ग) ज्वार (घ) जौ

92. दूध में वसा की मात्रा किस समय कम हो जाती है ?
(क) गर्मी (ख) जाड़ा (ग) वर्षा
(घ) ऋतु परिवर्तन से कोई अन्तर नहीं पड़ता

93. मधुमक्खियां (Honey Bees) सामाजिक कीट हैं क्योंकि
(क) वे प्राणी हैं
(ख) उनकी अपनी भाषा है
(ग) वे एकत्र भोजन को आपस में बांटते हैं
(घ) वे सदैव एक साथ समूह में रहते हैं

94. "फ्लेम ऑव फॉरेस्ट" क्या है ?
(क) वनों के संरक्षण हेतु कार्यरत एक महिला
(ख) वनों में लगी आग
(ग) शरत् काल में खिले हुए फूलों के पौधों का जंगल
(घ) वनों के संरक्षण हेतु कार्यरत एक संगठन

95. हाइड्रोपोनिक्स क्या है ?
(क) भूसंरक्षण पद्धति
(ख) भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ाने की पद्धति
(ग) कम पानी वाले क्षेत्र में अधिक धान उत्पादन करने की पद्धति
(घ) मिट्टी के बिना पेड़ पौधों का पोषण करना

96. गाय और भैंस की प्रजनन प्रक्रिया में क्या मुख्य अन्तर है ?
(क) गाय की तुलना में भैंस की गर्भावधि अधिक होती है
(ख) भैंस की तुलना में गाय की गर्भावधि अधिक होती है
(ग) भैंस का प्रसव गर्मी में होता है
(घ) गाय का प्रसव जाड़े में होता है

97. उन केन्द्र प्रशासित प्रदेश, जिनका अपना विधान परिषद नहीं है, के लिए विधि निर्माण कौन करता है ?
(क) भारत का राष्ट्रपति
(ख) संसद
(ग) केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल
(घ) केन्द्रीय सरकार द्वारा नियुक्त प्रशासक

98. कैबीनेट मिशन का क्या उद्देश्य था ?
(क) भारतीयों को सत्ता हस्तांतरण
(ख) भारत का विभाजन
(ग) स्वतन्त्र भारत की संविधान रचना के लिए संविधान निर्मात्री सभा का गठन
(घ) गवर्नर जनरल के पदको और अधिक शक्तिशाली बनाना

99. वर्ष 1980 का भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार किसे प्राप्त हुआ ?
(क) भगवती चरण वर्मा
(ख) जी. शंकर कुरूप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(ग) आशापूर्णा देवी
(घ) एस. के. पोट्टेकाट

100. भारत के किस राज्य का सर्वाधिक नगरीकरण (urbanization) हुआ है ?
(क) पश्चिम बंगाल (ख) महाराष्ट्र
(ग) पंजाब (घ) तमिलनाडु

101. नाबार्ड (NABARD) क्या है ?
(क) बैंक (ख) रिसर्च संस्था
(ग) औद्योगिक संगठन (घ) शैक्षणिक संस्था

102. कर्नाटक में निम्न में किस जैन महापुरुष की प्रतिमा का मस्तकाभिषेक हुआ था ?
(क) भगवान महाबली (ख) भगवान पीताम्बर
(ग) भगवान बाहुबली (घ) भगवान श्वेताम्बर

103. भारतीय नौसेना के लिए युद्ध पोत निम्न में कहाँ निर्मित किए जाते हैं ?
(क) कोचिन शिपयार्ड
(ख) मजगाँव शिपयार्ड
(ग) विशाखापट्नम शिपयार्ड
(घ) मार्मागोवा शिपयार्ड

104. प्रख्यात खिलाड़ी विल्सन जोन्स किस खेल से सम्बन्धित है ?
(क) गोल्फ (ख) स्क्वॉश
(ग) बिलियर्ड (घ) पोलो

105. वर्ष 1981 में भारत ने निम्नांकित खेलों में किसमें एशियाई चैम्पियनशिप जीती थी ?
(क) बैडमिन्टन (पुरुष) (ख) हॉकी (महिला)
(ग) टेनिस (महिला) (घ) बॉस्केट बॉल (पुरुष)

106. अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना के लिए नेहरू शान्ति पुरस्कार का वर्ष 1980 का कौन विजेता था ?
(क) जुलियस न्येरेरे
(ख) नेल्सन मन्डेला
(ग) पैट्रिक मोनीहन
(घ) अल्वा मिरदाल व गुन्नार मिरदाल

107. भारत ने किस हेतु अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष से कर्जा प्राप्त किया था ?
(क) भुगतान सन्तुलन में स्थायित्व लाने के लिये
(ख) पूर्व लिए गये ऋणों की अदायगी के लिए
(ग) राष्ट्रीय आय में शीघ्रातिशीघ्र वृद्धि करने के लिए
(घ) आधुनिक तकनीकी के आयात के लिये

108. भारत में एशियाई खेल कौन सी बार आयोजित हो रहा है ?
(क) पहली बार (ख) दूसरी बार
(ग) तीसरी बार (घ) चौथी बार

109. वायुदूत क्या है ?
(क) वायुसेना का नया अत्याधुनिक प्रक्षेपास्त्र विमान
(ख) इण्डियन एयरलाइन्स की सम्पूरक विमान सेवा
(ग) एयर इण्डिया की सम्पूरक विमान सेवा
(घ) नौ सेना का विमान

110. अन्त्योदय कार्यक्रम का उद्देश्य निम्न में किसकी सहायता करना है ?
(क) हरिजन
(ख) अल्पसंख्यक वर्ग
(ग) पहाड़ी जनसंख्या
(घ) ग्रामीण क्षेत्र की निर्धनतम जनसंख्या

111. भूतलिंगम समिति का गठन किस समस्या पर विचार विमर्श के लिए किया गया था ?
(क) आर्थिक सुधार (ख) बोनस का मुद्दा
(ग) औद्योगिक विवाद (घ) वेतन और आय

112. ग्रामीण क्षेत्रों में परिवार नियोजन कार्यक्रम की असफलता का क्या कारण है ?
(क) समुचित नियोजन का अभाव
(ख) मनोवैज्ञानिक व सामाजिक रूढ़िवादिता
(ग) शिक्षा का अभाव
(घ) परिवार नियोजन के साधनों की अनुपलब्धिता

113. वर्ष 1981 का विलम्बडन चैम्पियन कौन था ?
(क) ब्योर्न बॉर्ग (ख) जिमी कोनर्स
(ग) ईवान लेन्डल (घ) जान मैक्एनरो

114. निम्नांकित में पोलिश साम्यवादी दल का सत्ताच्युत महासचिव कौन है ?
(क) ब्रेजेन्स्की (ख) जनरल जेरुजेल्स्की
(ग) एडवर्ड गियरेक (घ) स्टानीस्लॉव कानिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

115. न्यू मूर द्वीप विवाद किन दो राष्ट्रों के मध्य है ?
(क) भारत-श्रीलंका (ख) भारत-बंगलादेश
(ग) भारत-पाकिस्तान (घ) ईरान-इराक

116. संयुक्त राष्ट्र का 156वां सदस्य कौन है ?
(क) वानुआतु (ख) बेलीज
(ग) जिम्बाबवे (घ) निकारगुआ

117. संयुक्त राष्ट्र संघ का महासचिव कौन है ?
(क) ए. डब्लू क्लासेन
(ख) जेवीयर पेरेज द कुएलर
(ग) कुर्त वाल्डाइम
(घ) पेट्रीशिया कैटपैट्रीक

118. वर्ष 1981 का नोबेल साहित्य पुरस्कार विजेता कौन है ?
(क) इस्साक सिंगर (ख) रॉबर्ट बेकर
(ग) जेम्स टोबिन (घ) इलियास कनैटी

119. सुरक्षा परिषद का विद्यमान सदस्य निम्न में कौन है ?
(क) सीरिया (ख) पाकिस्तान
(ग) टुनीसिया (घ) जार्डन

120. अंक्टाड निम्नांकित में किससे सम्बन्धित है ?
(क) व्यापार व विकास (ख) पर्यटन व विकास
(ग) व्यापार व प्रशिक्षण
(घ) उपर्युक्त किसी से भी नहीं

121. अभी हाल में अमेरिका ने किस राष्ट्र से अवाक्स (AWACS) का सौदा किया है ?
(क) इस्रायल (ख) मिस्र
(ग) सौदी अरब (घ) जार्डन

122. किस व्यक्ति ने गान्धीजी पर फिल्म बनायी है ?
(क) बेन किंग्स्ले (ख) जेम्स आइवरी
(ग) डस्टीन हॉफमैन (घ) रिचर्ड एटेनबरो

123. सं. रा अमेरिका के उस स्पेस शटल का नाम बताइये जिसका नाम उसके एक राज्य के मिलता है ?
(क) अपोलो (ख) चैलेन्जर
(ग) कोलम्बिया (घ) वोयेजर

124. मेलबर्न शिखर सम्मेलन किससे सम्बन्धित था ?
(क) विश्व की स्वास्थ समस्या
(ख) उत्तर-दक्षिण संचार व्यवस्था
(ग) पर्यावरण की समस्या
(घ) गरीब राष्ट्रों की समस्या

125. विश्व में चाय का सबसे बड़ा निर्यातक कौन है ?
(क) श्रीलंका (ख) भारत
(ग) चीन (घ) केनिया

126. अभी हाल में निर्वाचित फ्रांस का समाजवादी राष्ट्रपति —
(क) फ्रांस्वा मित्तरां (ख) जार्जेस पॉपिन्द्रू
(ग) चार्ल्स द गॉल (घ) जीन नोवा

127. निम्नांकित में किस राष्ट्राध्यक्ष की हाल में हत्या की गई है ?
(क) विक्टर समोजा (ख) चाउ एन लाई
(ग) शाह राजा पहलवी (घ) जियाउर रहमान

128. अन्तर्राष्ट्रीय वार्तालाप में 'उत्तर-दक्षिण' शब्दावली का प्रयोग किन राष्ट्रों के लिए किया जाता है ?
(क) साम्यवादी राष्ट्रों व गैर साम्यवादी राष्ट्रों के
(ख) भूतपूर्व साम्राज्यवादी राष्ट्रों व उनके उपनिवेशों को
(ग) विकसित औद्योगिक राष्ट्रों व विकासशील राष्ट्रों को
(घ) भूमध्य रेखा के उत्तर व दक्षिण के राष्ट्र

129. आइ. क्यू. (Intelligence quotient) को सर्वश्रेष्ठ रूप से कौन सा सूत्र परिभाषित करता है ?
(क) $\frac{\text{मानसिक आयु}}{\text{वास्तविक आयु}} \times 100$
(ख) $\frac{\text{वास्तविक आयु}}{\text{मानसिक आयु}} \times 100$
(ग) $\frac{\text{मानसिक आयु}}{\text{वास्तविक आयु}} + 100$
(घ) $\frac{\text{वास्तविक आयु}}{\text{मानसिक आयु}} + 100$

130. निम्नांकित चित्र में कितने त्रिभुज हैं ?
(क) 5 (ख) 6
(ग) 10. (घ) 12

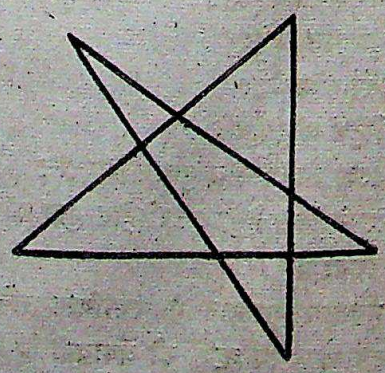

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

131. A, B, C, D, E, F, G, एवं H आठ कवि हैं। A, B, C, एवं D मध्यकालीन कवि हैं और E, F, G, एवं H आधुनिक कवि है। प्रत्येक एकान्तर (alternate) वर्ष में इन कवियों पर प्रश्न पूछा जाता है अर्थात एक वर्ष मध्यकालीन कवि पर तो अगले वर्ष आधुनिक कवि पर। जो परीक्षक H को पसन्द करता है वह G को भी पसन्द करता है। इसी प्रकार F को पसन्द करने वाला परीक्षक E को भी पसन्द करता है। इस वर्ष के परीक्षक ने चूंकि F पर पुस्तक लिखी है इसलिये वह F पर प्रश्न नहीं पूछना चाहते हैं। पिछले वर्ष A पर प्रश्न पूछा गया था। बताइए इस वर्ष किस कवि पर प्रश्न पूछने की अधिक सम्भावना है ?

(क) E (ख) D
(ग) G (घ) C

132. सही क्रम बनाइए

4, 196, 16, 144, 36, 100, 64,—

(क) 16 (ख) 64
(ग) 72 (घ) 96

133. निम्नांकित में विषम (odd) समूह बनाइये

(क) WSUK (ख) ZVRN
(ग) KHEB (घ) RNJF

134. एक कक्षा में 20 विद्यार्थियों की औसत लम्बाई 105 से. मी. है। यदि कक्षा में 120 से. मी. की औसत लम्बाई वाले 10 विद्यार्थी और आ जायें तो कुल विद्यार्थियों की औसत लम्बाई क्या होगी ?

(क) 110 से. मी. (ख) 120 से. मी.
(ग) 125 से. मी. (घ) 130 से. मी.

135. किसी व्यापार में एक व्यक्ति ने वर्ष 1960, 1965 एवं 1970 में क्रमशः पांच-पांच हजार रुपये लगाये। यदि उस व्यक्ति का व्यापार में लगा धन प्रत्येक पांच वर्ष में दूना हो जाता है तो बताइए वर्ष 1980 में इस व्यक्ति का व्यापार से सम्बन्धित पूंजी कितनी होगी ?

(क) 90000 (ख) 120000
(ग) 140000 (घ) 180000

136. एक व्यक्ति पेट्रोल पर प्रतिमाह एक निश्चित धन व्यय करता है जैसा कि निम्नांकित सारणी से स्पष्ट होता है।

मूल्य रु. प्रति लीटर—	1.5	2	3	4.5	6
उपयोग लीटर में —	60	45	30	20	?

बताइए अगर पेट्रोल का मूल्य 6 रु. प्रति लीटर हो जाये तो वह व्यक्ति प्रतिमाह कितने लीटर पेट्रोल का उपभोग करेगा ?

(क) 12 (ख) 14
(ग) 15 (घ) 18

137. किसी आयताकार मैदान के चारों ओर चक्कर लगाने के लिये किसी व्यक्ति को 6 कि. मी. चलना पड़ता है। यदि इस आयताकार मैदान का क्षेत्रफल 2 वर्ग किमी है तो बताइए मैदान की लम्बाई और चौड़ाई में क्या अन्तर है ?

(क) $\frac{1}{2}$ कि. मी. (ख) $\frac{3}{4}$ कि. मी.
(ग) 1 कि. मी. (घ) $1\frac{1}{4}$ कि. मी.

138. निम्नांकित सारणी में प्रत्येक अक्षर को सांकेतिक संख्या से इंगित किया गया है। बताइए D के लिये क्या सांकेतिक संख्या निश्चित की गयी है ?

शब्द	संकेत
BRAIN	12345
STATE	78386
BREAD	12630
DRAFT	02398

(क) 0 (ख) 2
(ग) 3 (घ) 5

139. निम्नांकित सारणी का अध्ययन कर बताइए किस अन्तराल में जनसंख्या में सर्वाधिक वृद्धि दर थी ?

अवधि	जनसंख्या
1940—1950	400000—500000
1950—1960	500000—600000
1960—1970	600000—720000
1970—1980	720000—800000

(क) 1940—1950 (ख) 1950—1960
(ग) 1960—1970 (घ) 1970—1980

140. निम्नांकित चित्रानुसार एक दूसरे पर रखे गये वर्गाकार गुटकों (cube) की कुल संख्या कितनी है ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को समुचित ढंग से प्रदर्शित करता है ?

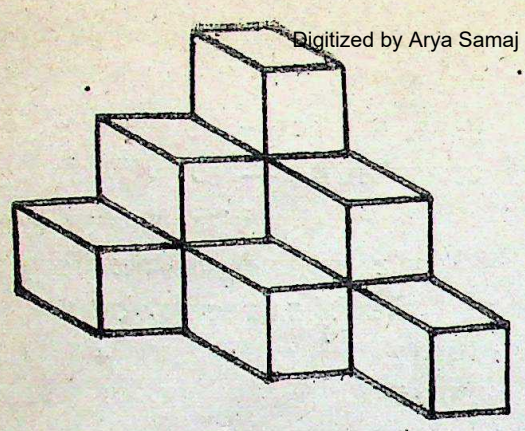

(क) 6 (ख) 8
(ग) 10 (घ) 12

141. निम्नांकित चित्रों का अध्ययन कर बताइए 2 की विपरीत दिशा में कौन सी संख्या होनी चाहिए ?

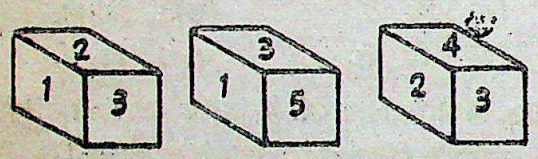

(क) 5 (ख) 6
(ग) 7 (घ) 8

142. यदि लम्बे व्यक्ति वृत्त में, सैनिक त्रिभुज में तथा दृढ़ व्यक्ति वर्ग में रखे जाते हैं तो सैनिक जो दृढ़ है की संख्या कितनी होगी ?

(क) 7 (ख) 3
(ग) 4 (घ) 6

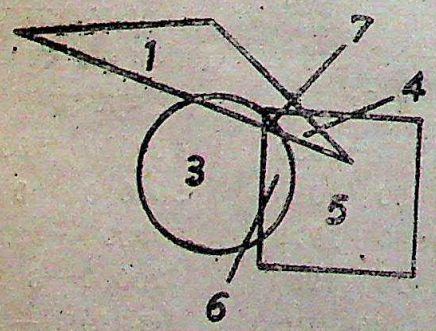

143. निम्नांकित चित्रों का अध्ययन कर बताइए कि कौन न्यायाधीश, चोर एवं अपराधी के मध्य सम्बन्ध

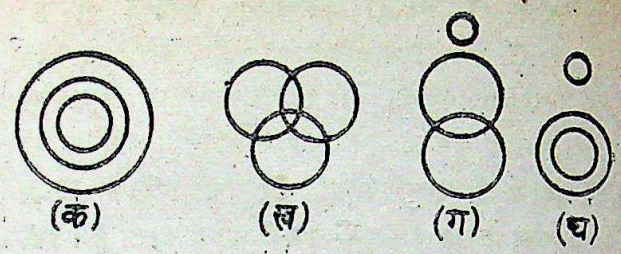

144. निम्नांकित ग्राफ से स्पष्ट होता है कि

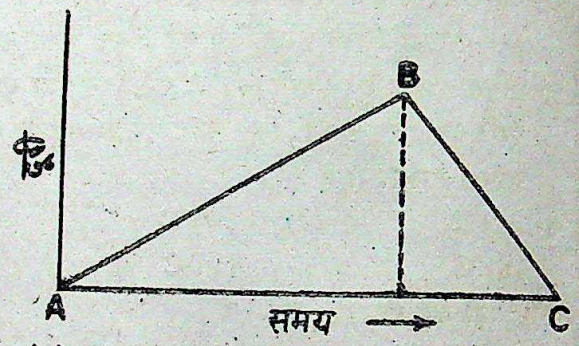

(क) राम एक बिन्दु से चलना प्रारम्भ करता है और उस स्थान पर वापस नहीं लौटता है
(ख) वह अपने पूर्ववत स्थान पर वापस लौट आता है परन्तु द्रुतगति से
(ग) वह अपने पूर्ववत स्थान पर वापस लौट आता है परन्तु धीमी गति से
(घ) वह सम्पूर्ण दूरी एक ही गति से तय करता है

145. एक धुरी में X एवं Y दो निश्चित बिन्दु हैं। यदि धुरी चक्कर लगाना प्रारम्भ करे तो बताइए कि X एवं Y द्वारा चला गया पथ किस प्रकार होगा ?

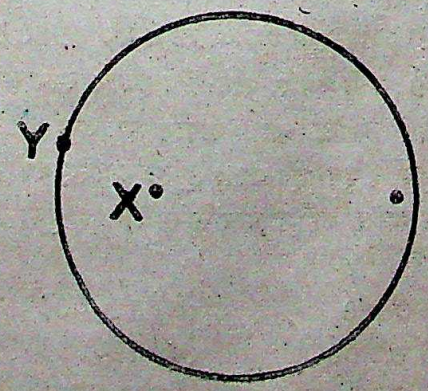

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

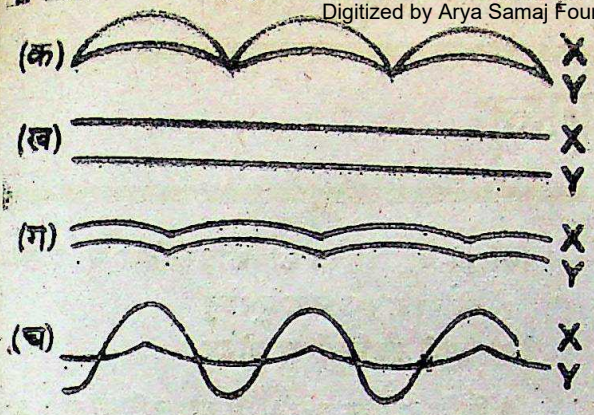

146. एक घन के चारों पार्श्वों को रंग दिया जाता है और फिर घन को समान आकार के छोटे घनों में काट लिया जाता है। यदि छोटे घन का एक पार्श्व मूल घन के एक पार्श्व का एक चौथाई है तो ऐसे छोटे घनों की संख्या कितनी हैं जिनका एक ही पार्श्व रंगा होगा ?

(क) 12 (ख) 24
(ग) 36 (घ) 72

निर्देश:—निम्नांकित चित्र में प्रत्येक तीर का निशान समान (equal traffic) को इंगित करता है।

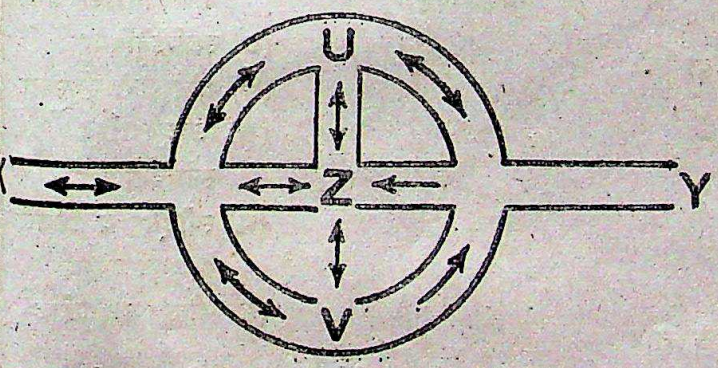

147. बताइए किस स्थान पर सर्वाधिक भीड़ है ?

(क) X (ख) V
(ग) Z (घ) U

148. X से Y तक पहुँचने के लिये कितने बस मार्ग (bus routes) है ?

(क) 2 (ख) 4
(ग) 6 (घ) 8

149. निम्नांकित ग्राफ वर्ष 1980 एवं 1981 में महिलाओं के साथ हुए अपराध को प्रदर्शित करता है। बताइए इस अवधि में किस प्रकार के अपराधों में सर्वाधिक वृद्धि हुई है ?

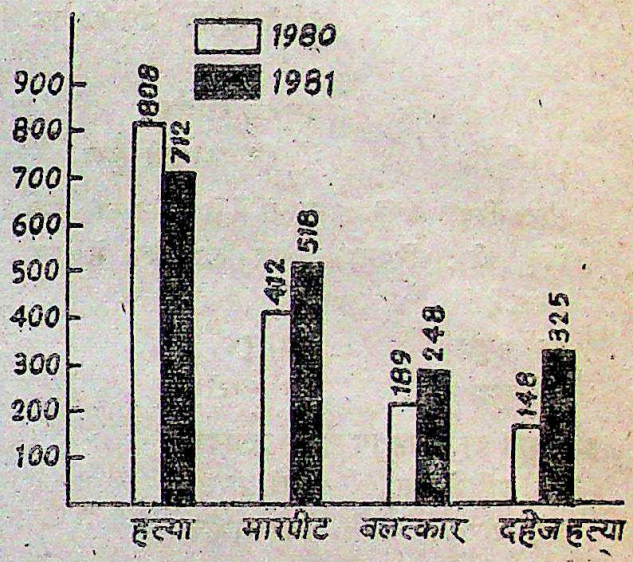

(क) हत्या (ख) मारपीट
(ग) बलात्कार (घ) दहेज हत्या

150. निम्नांकित चित्र में A और B दो वर्ग हैं जिनके पार्श्व की लम्बाई 2 a है। B वर्ग A वर्ग के साथ c बिन्दु पर इस प्रकार जुड़ा है कि वह एक अक्ष (axis) पर चक्कर लगा सकता है। बताइए कौन सा कथन सत्य है ?

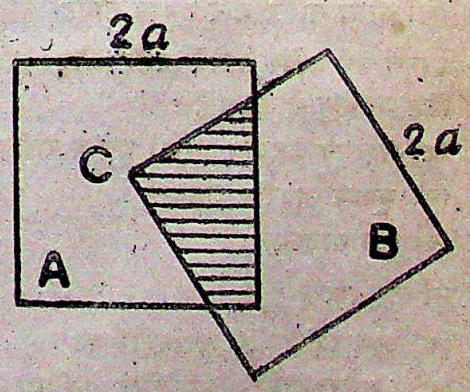

(शेष पृष्ठ 29 पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्व भूगोल

1. निम्न में से कौन सा अन्तर्वेधी आग्नेय शैल का एक रूप है ?
(क) लावा पठार (ख) लावा शंकु
(ग) भित्ति (घ) ज्वालामुखी कुण्ड

2. सौर परिवार के निम्न नक्षत्रों में से कौन सा केन्द्र बिन्दु की परिक्रमा लगभग 88 दिन में पूर्ण करता है ?
(क) मङ्गल (ख) बुध
(ग) शुक्र (घ) प्लूटो

3. संसार का अधिकतम कॉफी उत्पादक है
(क) इथियोपिया (ख) श्री लंका
(ग) भारत (घ) ब्राजील

4. हिमोढ (Moraines) किसके द्वारा निपेक्षित किये जाते हैं ?
(क) बहता पानी (ख) वायु क्रिया
(ग) जल-तरङ्ग क्रिया (घ) हिमनद द्वारा

5. होरमुज जलसंयोग (Strait) किन दो को जोड़ता है ?
(क) अरब सागर और फ़ारस की खाड़ी
(ख) अरब सागर और लाल सागर
(ग) लाल सागर और भूमध्य सागर
(घ) काला सागर और भूमध्य सागर

6. सम्पूर्ण वर्ष अधिक सापेक्ष नमी और अधिक ताप किस जलवायु के लक्षण हैं ?
(क) मानसून जलवायु (ख) भूमध्य रेखीय जलवायु
(ग) भूमध्य सागरीय जलवायु
(घ) स्टेप घासस्थल

7. प्लैंक्टन क्या है ?
(क) उष्ण कटिबन्धीय सदाबहार वन
(ख) एक रहस्यमयी भौगोलिक प्रक्रिया जिसका प्रभाव मनुष्य के अवचेतन मन पर अप्रत्यक्ष रूप से पड़ता है
(ग) 11 मई, 1983 को कैलिफोर्निया में दिखायी देने वाला एक नया धूमकेतु
(घ) समुद्री मछलियों का भोजन

● निर्देश : प्रश्न 8-14 में दो सूचियाँ हैं। प्रश्न सूची I में विश्व की कुछ प्रमुख मानव प्रजातियों का उल्लेख है तथा उत्तर सूची II में उनके निवास स्थान का। सूची I तथा II में सम्यक् सम्बन्ध स्थापित कीजिये।

I	II
8. नॉर्डिक	(क) ग्रीनलैण्ड, एलास्का, लैब्रेडॉर
9. बुशमैन हॉटेन्टॉट्	(ख) इटली, स्पेन
10 बॉन्टू/किरगीज	(ग) दक्षिणी अफ्रीका/मध्य एशिया
11 पिग्मी/बद्दू	(घ) कॉंगो, म. अफ्रीका/प. एशिया उ. अफ्रीका
12. डिनॉरिक	(ङ) स्कैन्डिनेविया
13. लैप्स	(च) कालाहारी मरुस्थल
14. एस्किमॉएड	(छ) स्विट्जरलैण्ड, यूगोस्लाविया
	(ज) स्वीडन व फिनलैन्ड के टुन्ड्रा प्रदेश
	(झ) फ्रान्स, आइसलैन्ड

15. उत्तरीय गोलार्ध के चक्रवात की वायु दिशा क्या होती है ?
(क) दक्षिणावर्त (clockwise)
(ख) वामावर्त (anti-clockwise)
(ग) पश्चिम से पूर्व (घ) पूर्व से पश्चिम

16. चापझील [ox-bow lakes] और विसर्प [meanders] नदी घाटी के कौन से भाग के लक्षण हैं ?
(क) ऊपरी मार्ग (ख) मध्य मार्ग
(ग) निचला भाग (घ) उपर्युक्त में कोई नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

17. बेलग्रेड, बुडापैस्ट और विएना किस नदी पर स्थित हैं ?
(क) शॉन (ख) राइन
(ग) रोन (घ) डॅन्यूब

18. उच्च जलस्तर के समय प्रवाह बल नदी को विसर्प कंठ के पार ले जा सकता है। इस प्रकार नदी जल-मार्ग को सीधा कर लेती है और कर्तित पाश (cut off loop) झील बन जाता है। उपर्युक्त झील का क्या नाम होता है ?
(क) निक्षेपित झील (depositional lake)
(ख) अपरदन झील (erosional lake)
(ग) प्लाया झील (playa lake)
(घ) चाप झील (ox-bow lake)

19. नदीय मैदान और कछार के संलक्षणियों (facies) का संघटन भिन्न होता है। नदीय मैदान के संलक्षणी प्रमुखतः भिन्न-भिन्न कण साइज के बालुओं से सङ्घटित होते हैं, और उनमें अकसर गोल गुटके और कङ्कड़ पाये जाते हैं। उपर्युक्त नदीय निक्षेपण का क्या नाम होता है ?
(क) बालू टिब्बा [Sand-dunes]
(ख) लोएस [loess]
(ग) जलोढक [alluvium]
(घ) बलुआ पहाड़ी [barkhans]

20. सौर परिवार के निम्न नक्षत्रों में से कौन के अधिक ठंडा होने की आशा है ?
(क) नैप्च्यून (ख) मङ्गल
(ग) पृथ्वी (घ) बुध

21. पैनमा नहर [Panama Canal] के सन्दर्भ में निश्चुलिखित में से कौन कथन असत्य है ?
[क] यह मार्ग पहले एक उल्टा के रूप में था
[ख] संसार का 25% व्यापार इस नहर द्वारा होता है
[ग] यह नहर अन्ध महासागर व प्रशान्त महासागर को मिलाती है।
[घ] इस मार्ग की लम्बाई 82 कि. मी. है

● निर्देश : प्रश्न 22-29 में दो समुच्चय हैं। प्रथम में विश्व की कुछ प्रमुख फसलों की सूची है तथा द्वितीय में उन देशों की जो उनका सर्वाधिक उत्पादन करते हैं। द्वितीय समुच्चय उसी क्रम में व्यवस्थित नहीं है जिसमें प्रथम समुच्चय है। दोनों स्तम्भों का ध्यान से अध्ययन कीजिए और दोनों में सम्यक् सम्बन्ध स्थापित कीजिये।

I	II
22. गेहूँ	[क] सं. रा. अ.
23. चावल	[ख] चीन
24. कपास	[ग] मलेशिया
25. मक्का	[घ] बंगलादेश
26. रबड़	[ङ] भारत
27. जूट	[च] इटली
28. नारियल	[छ] फिलिपीन्स
29. मूंगफली	[ज] सं. रा. अ.
	[झ] सोवियत संघ

30. विश्व के किस देश में मत्स्य उद्योग सर्वाधिक विकसित है ?
(क) ब्रिटेन (ख) जापान
(ग) आइसलैण्ड (घ) इटली

31. विश्व के किस देश में मछलियों की खपत सर्वाधिक है ?
(क) जापान (ख) फिलीपीन्स
(ग) कैनाडा (घ) सं. रा. अ.

32. तेल का प्रथम कुआँ वर्ष 1859 में किस देश में खोदा गया ?
(क) सो. सं. (ख) साउदी अरब
(ग) सं. रा. अ. (घ) कुवैत

33. हिमवर्तिका [ioicle] के समान किसी उच्चतोश [elevated point] से लटकने वाले स्तम्भाकार खनिज तत्वों को कहते हैं
(क) वेग्टोफैक्ट (ख) वेन्डावैल्व्स्
(ग) स्टैलेक्टाइट (घ) स्टैलेगमाइट

34. विषुव [Equinox] का सम्बन्ध है
(क) उन घटनाओं से जो लीप वर्ष में घटित होती है
(ख) उस दिन से जब सूर्य कर्क रेखा पर लम्बवत् चमकता है
(ग) उस दिन से जब सूर्य मकर रेखा पर लम्बवत चमकता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

(घ) उस तिथि से जब दिन और रात समान अवधि के होते है

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

35. जब फिलीपीन्स में 6 बजे अपरान्ह का समय है तब पनमा नहर में, जो फिलीपीन्स से 180^0 पश्चिम में स्थिति है, क्या समय है ?
(क) 2 बजे अपरान्ह (ख) 10 बजे पूर्वान्ह
(ग) 6 बजे पूर्वान्ह (घ) 6 बजे अपरान्ह

36. निश्चुलिखित में कौन सा कथन सत्य से सर्वथा परे है ?
(क) आग्नेय शैलों [Igneous Rocks] का निर्माण तप्त एवं तरल मैगमा के ठंडे होने से होता हैं
(ख) ऑर्थो-मैटामॉरफिक शैल लाइमस्टोन में ताप वृद्धि के कारण निर्मित होती है
(ग) चट्टान-चूर्ण के एकत्र होकर नीचे परतों में जमने से अवसादी चट्टानों [Sedimentary rocks] की रचना होती है
(घ) अवसादी शैल तथा आग्नेय शैल में परिवर्तन के फलस्वरूप रूपान्तरित शैल [Metamorphic Rock] की रचना होती है

● निर्देश : प्रश्न 37-44 के स्तम्भ I में कुछ प्रमुख देशों की सूची है—स्तम्भ II में उन खनिजों का उल्लेख है जिसके यह देश मुख्य उत्पादक है। दोनों स्तम्भों में क्रमानुसार सम्यक् संबन्ध ज्ञात कीजिये।

I	II
37. सोवियत संघ	(क) यूरेनियम
38. सं. रा. अ.	(ख) अभ्रक
39. सं. रा. अ.	(ग) थोरियम
40. मलेशिया	(घ) टिन
41. भारत	(ङ) लौह अयस्क, मैंगनीज
42. ब्राजील	(च) पारा
43. सूरीनाम	(ज) चाँदी
44. इटली	[ज] बॉक्साइट
	[झ] एल्युमिनियम, कोयला

45. वायु मण्डल मुख्यतः गर्म होता है
[क] सूर्य की सीधी किरणों से
[ख] पृथ्वी से विकिरण द्वारा
[ग] पृथ्वी के अन्दर की ऊष्मा से
[घ] ज्वालामुखी क्रिया से

46. ग्रेट बैरियर रीफ पायी जाती है
(क) ग्रीन लैन्ड के समीप
(ख) फारस की खाड़ी में
(ग) बङ्गाल की खाड़ी में
(घ) ऑस्ट्रेलियाई तट के सहारे

47. योरोप के भूमध्य सागरीय प्रदेश की विशेषता है
(क) वर्ष भर वर्षा
(ख) मुख्यतः जाड़े में वर्षा
(ग) मुख्यतः गर्मी में वर्षा
(घ) 10 से. मी. से कम वार्षिक वर्षा

48. समुद्र, पृथ्वी के सतह क्षेत्रफल का कितना भाग घेरते हैं ?
(क) 70.8% (ख) 59.6%
(ग) 27.% (घ) .97%

49. हिमालय 'फोल्ड' श्रेणी का पर्वत है तथा जापान का फ्यूजियामा 'वॉल्केनिक' श्रेणी का; प्रसिद्ध ज्वालामुखी 'किलिमन्जारो' कहाँ स्थित है ?
(क) तन्जानिया (ख) इटली
(ग) सिसली (घ) कॉर्सिका

50. निम्नांकित में से कौन का कथन असत्य है ?
(क) समान वायु दाब के स्थानों को जोड़ने वाली रेखाओं को आइसोबार्स कहते हैं
(ख) समान ताप के स्थानों को जोड़ने वाली रेखाओं को आइसोथर्म्स कहते हैं
(ग) बराबर मात्रा में वर्षा प्राप्त करने वाले स्थानों को मिलाने वाली रेखायें आइसोहायट्स कहलाती हैं
(घ) समान शीत वाले स्थानों को जोड़ने वाली रेखाओं को आइसो हेलाइन्स कहा जाता है

51. विश्व का सर्वाधिक प्राकृतिक गैस संसाधन सोवियत संघ में संरक्षित हैं; विश्व के कुल व्यापारिक ऊर्जा उत्पादन का सर्वाधिक भाग किस स्रोत से प्राप्त होता है ?
(क) कोयला (ख) प्राकृतिक गैस
(ग) पेट्रोलियम (घ) परमाणु ऊर्जा

52. सो. सं. सर्वाधिक अशोधित तेल का उत्पादन करता है; संश्लिष्ट रबर [Synthetic Rubber] का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

सर्वाधिक उत्पादक देश है

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(क) फ्रांस (ख) इटली

(ग) नॉर्वे (घ) सं. रा. अ.

53. निम्नांकित में कौन सा धान की खेती का महत्वपूर्ण क्षेत्र है ?

(क) ऑस्ट्रेलिया (ख) दक्षिणी-पूर्वी एशिया

(ग) उत्तरी-पश्चिमी योरोप

(घ) मध्य अमेरिका

54. निम्नाङ्कित कथनों में से कौन सत्य है ?

(क) मिस्र कपास निर्यात करता है

(ख) आइसलैण्ड मछली आयात करता है

(ग) भारत खनिज लोहा आयात करता है

(घ) जापान चावल निर्यात करता है

55. मेरिनो भेड़ पालने अधिक होता है

(क) आर्जेन्टीना में (ख) ऑस्ट्रेलिया में

(ग) अफगानिस्तान में (घ) बेल्जिअम में

56. अपरदन (Erosion) प्रक्रिया है

(क) शैल के अवखण्डन की

(ख) शैल के विघटन की

(ग) बहते जल, हवा तथा हिम द्वारा स्थल के कटाव और अपनयन की

(घ) पदार्थ के निक्षेपण की

57. भूमध्य सागरीय प्रदेश एक बृहद् उत्पादक है

(क) जौ और मक्का का

(ख) गन्ने का

(ग) सरसों के तेल का

(घ) नींबू फलादि का

58. सूर्य ग्रहण होता है जब

(क) चन्द्रमा और पृथ्वी के बीच में सूर्य आ जाता है

(ख) सूर्य और चन्द्रमा के बीच में पृथ्वी आ जाती है

(ग) सूर्य और पृथ्वी के बीच में चन्द्रमा आ जाता है

(घ) चन्द्रमा, सूर्य और पृथ्वी एक सीधी रेखा पर होते हैं

59. लघु ज्वार भाटा (Neap Tide) तब आता है जब सूर्य और चन्द्रमा 90° का कोण बनाते हैं, बृहद् ज्वार-भाटा (Spring tide) आता है जब चन्द्रमा, सूर्य और पृथ्वी एक कोण बनाते हैं

(क) 180° का (ख) 45° का

(ग) 35° का (घ) 360° का

60. भू-कक्ष तल (plane of the orbit) पर भू-अक्ष (earth's axis) का झुकाव है

(क) 90^0 का (ख) $23\frac{1}{2}$ का

(ग) 0° का (घ) $66\frac{1}{2}^0$ का

61. स्कैन्डिनेविया के देश उच्च अक्षांशों में स्थित हैं। समान अक्षांशों में स्थित देशों के भूभाग जाड़े में बर्फ से जम जाते हैं परन्तु नॉर्वे के तट पर स्थित बन्दरगाह नहीं जमते हैं। ऐसा मुख्यतः इस तथ्य के कारण है कि

(क) अनेक छोटी नदियाँ समुद्र में गिरती हैं

(ख) वहाँ ज्वालामुखियों की एक शृंखला है

(ग) उत्तरी अन्ध महासागरीय जलधारा तट के पार बहती है

(घ) पछुआ हवाएँ (westerlies) दक्षिण पश्चिम से बहती है।

62. अक्षांश एवं ऊँचाई के अनुरूप तापमान एक स्थान से दूसरे स्थान पर बदलता है। तापमान को प्रभावित करने वाले कारकों के अनुकूल तापमान बढ़ या घट सकता है। कारकों के अनोखे संयोग के कारण कुछ विसङ्गतियाँ भी उत्पन्न हो सकती हैं। तापमान के व्युत्क्रमण (Inversion of temperature) का अर्थ होगा कि

(क) ऊँचाई के साथ तापमान घटता है

(ख) भिन्न ऊंचाई पर तापमान एक समान होता है

(ग) ऊँचाई के साथ तापमान पहले घटता है और फिर बढ़ता है

(घ) एक ही अक्षांश पर तापमान बदलता है

निर्देश :—प्रश्न 63-70 के स्तम्भ I में कुछ भौगोलिक शब्द/घटनाएं हैं जिनकी व्याख्या स्तम्भ II में की गयी है। दोनों में सम्यक सम्बन्ध स्थापित कीजिये।

I	II
63. आइसोबाथ	(क) समुद्र तल के समान गहरायी वाले स्थानों को जोड़ने वाली रेखा
64. आइसोहेलाइन	
65. लॉरेसिया	

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

66. एस्ट्युअरी
67. इस्थमस
68. डाइक
69. गल्फ स्ट्रीम
70. फेनॉलजी

(ख) मेक्सिको की खाड़ी से अन्ध महासागर में बहने वाली गरम जल की धारा
(ग) ऋतु परिवर्तन के कारण पशु व वनस्पति जीवन पर प्रभाव का अध्ययन करने का विज्ञान
(घ) प्राचीन दो महाद्वीपों में से उत्तर में स्थित महाद्वीप
(ङ) दो महाद्वीपीय भू-भागों को जोड़ने वाला तंग भू-मार्ग
(च) आग्नेय शैल की ऊर्ध्वाधर (Vertical) भित्ती
(छ) महासागरों में समान लवणता वाले स्थानों को जोड़ने वाली रेखा
(ज) नदीमुख, जहाँ ज्वार-भाटीय प्रभाव स्पष्ट होते हैं, तथा जहाँ अलवण जल व सागर जल का सङ्गम होता है

71. 30^0 और 40^0 उत्तर के मध्य महाद्वीपों की पश्चिमी रेखा पर स्थित क्षेत्रों में
(क) वर्ष भर वर्षा होती है
(ख) ग्रीष्म ऋतु शुष्क व शीत ऋतु में वर्षा होती है
(ग) सम्पूर्ण वर्ष में शुष्कता रहती है
(घ) नम ग्रीष्म ऋतु व शुष्क शीत ऋतु होती है

72. चार वायुयान एक ही समय टोक्यो से सेन फ्रान्सिस्को की ओर प्रस्थान करते हैं। सभी की गति समान है। किन्तु, प्रत्येक भिन्न मार्ग तय करता है। कौन सा यान अपने गन्तव्य तक सर्व प्रथम पहुंचेगा ?
(क) हॉनोलूलु के मार्ग से
(ख) दिल्ली से होता हुआ
(ग) मॉस्को के मार्ग से
(घ) अलास्का से होता हुआ

73. निम्न में से किस नदी का स्रोत तिब्बत में मान-सरोवर झील के निकट नहीं है ?
(क) ह्वाङ् हो (ख) ब्रह्मपुत्र
(ग) सिन्धु (घ) सतलज

74. रोम में स्थित प्रगति मंजूषा का प्रतिनिधि इलाहाबाद स्थित प्र. म. के सह-सम्पादक से कार्यालय-समय (10.00 am—5.00 p.m.) में दूरभाष पर बात करना चाहता है। निम्नांकित में से किस समय [ग्रेनिच मीन टाइम के अनुसार] उस प्रतिनिधि को फोन करना चाहिये ?
(क) 01.30 बजे (ख) 07.00 बजे
(ग) 13.30 बजे (घ) 16.00 बजे
(ङ) ऐसा सम्भव ही नहीं है

75. मृदा-अपक्षरण को रोकने का निम्न में से कौन सा उपाय नहीं है ?
(क) बही रेखीय बन्धीकरण [contour bunding]
(ख) सुरक्षात्मक वनस्पति आवरण
(ग) भेड़ तथा बकरियों द्वारा चरण
(घ) आवर्त्तन में सस्य-आरोपण

76. परिवहन के अन्य साधनों की अपेक्षा रेल-यातायात अधिक उपयोगी है क्योंकि
(क) वह तीव्रतम् है
(ख) वह सर्वाधिक सस्ता है
(ग) वह उपभोग्य वस्तुओं को सीधे उपभोक्ता को उपलब्ध कराता है
(घ) वह लम्बी दूरियों तक प्रपुञ्ज वस्तु-भार (bulk freight) को भूमि मार्ग से ले जाता है

77. जापान आर्थिक रूप से कुवैत से अधिक विकसित है क्योंकि
(क) उसकी प्रति व्यक्ति आय अधिक है
(ख) उसके पास पेट्रोलियम संसाधन अधिक हैं
(ग) उसका जनसंख्या घनत्व कम है
(घ) उसके पास अधिक विकसित औद्योगिक शकल [सेक्टर] है

78. ट्रान्सह्यूमेन्स [Transhumance] का अर्थ है
(क) दुग्ध-कृषि
(ख) लोगों का ग्रीष्म व शीत चरण-भूमि में ऋतु-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कालिक आवागमन

(ग) कृषि तथा पशु पालन का संयोजन

(घ) ग्राम्य से शहरी क्षेत्रों की ओर लोगों का प्रव्रजन

79. निम्न में से कौन हिमालय की नदियों की विशेषता नहीं है ?

(क) अधिकांश नदियाँ परिवार्षिक हैं

(ख) नदियों के पानी की मात्रा ऋतुओं के अनुसार भिन्न होती हैं

(ग) उन्होंने अपक्षरण का आधारभूत स्तर प्राप्त कर लिया है

(घ) यह अत्यन्त अपक्षरण कार्य करती हैं

80. हिमालय की अनेक नदियाँ विश्व की उच्चतम् पर्वत मालाओं से होकर तङ्ग घाटियों (gorges) से बहती हैं क्योंकि

(क) उनका बहाव इतना तीव्र है कि उन्होंने पर्वतों को काट कर नहरें बना लीं

(ख) चट्टाने इतनी कोमल हैं कि वह नदियों के बहाव को रोकने में असमर्थ रही

(ग) तङ्ग घाटियों की रचना शिरोभिमुख अपक्षरण द्वारा हुयी

(घ) यह पूर्व-जलोत्सारण का विषय है

● निर्देशः प्रश्न 81-85 के स्तम्भ I में घास वाली वनस्पति के समुदायों के नाम है तथा स्तम्भ II में उनके क्षेत्र/विशेषताएँ। दोनों स्तम्भों में सम्यक् क्रम निर्धारित कीजिये।

I	II
81. प्रेयरी	(क) उष्ण कटिबन्धीय शुष्क प्रदेश-अफ्रीका, द. अमेरिका
82. सवाना	(ख) शुष्क रेगिस्तानी प्रदेश/कटीली, झाड़िया व मरुद्भिद
83. स्टेपी	(ग) भूमध्यरेखीय प्रदेश/फल, मक्का, बारली
84. रेगिस्तानी वनस्पति	(घ) मध्य अक्षांश-उ. अमेरिका, रूमानिया, यूक्रेन; यूराल (सो. सं.)
85. टुन्ड्रा वनस्पति	(ङ) अधिक शुष्क प्रदेश-एशिया उ. व द. अमेरिका व ऑस्ट्रेलिया के रेगिस्तानी छोरों में
	(च) हिमाच्छादित प्रदेश/मॉस, लाइकेन, झाड़ियाँ

86. विश्व के पालतू पशु धन [Livestock population] में भारत का द्वितीय स्थान है तथा तृतीय स्थान सो. संघ का है। प्रथम स्थान है

(क) ऑस्ट्रेलिया का (ख) मङ्गोलिया का

(ग) चीन का (घ) सं. रा. अमेरिका का

87. लकड़ी के लट्ठे (Round wood) के उत्पादन में सो. सं., सं. रा. अ. व चीन अग्रगण्य हैं। कागज के उत्पादन में द्वितीय स्थान सं. रा. अ., व तृतीय स्थान जापान का है। प्रथम स्थान किसका है ?

(क) यू. के. (ख) कैनाडा

(ग) स्वीड्न (घ) फिनलैन्ड

88. ग्रीष्म अथवा शीत काल के उस समय को, जब सूर्य उस स्थान के उदग्रोन्मुख [vertically above) होता है जो विषुवत रेखा के उत्तर या दक्षिण में उसकी सर्वाधिक दूरी दर्शाता है, सॉल्स्टिस (अयनान्त) कहते हैं। इसके सम्बन्ध में निम्न में कौन सा कथन असत्य है ?

(क) उत्तर अयनान्त [Summer Solstice] में दिन सर्वाधिक लम्बे व रात सर्वाधिक छोटा होती है

(ख) दक्षिण (winter) अयनान्त में दिन सर्वाधिक छोटे व रात सर्वाधिक लम्बी होती है

(ग) उत्तर अयनान्त में दिन सर्वाधिक छोटे व रात्रि लम्बी होती है

(घ) दक्षिण अयनान्त में दिन लम्बे व रातें छोटी होती हैं

89. जायरे का पुराना नाम डिमॉक्रेटिक रिपब्लिक ऑव दि कॉंगो था, जाम्बिया का उत्तरी रोडेशिया, जिम्बाब्वे का रोडेशिया तथा इन्डोनेशिया का था:

(क) ओसिनिया (ख) स्याम

(ग) डच ईस्ट इन्डीज (घ) मलय श्री विजय

90. संयुक्त अरब अमीरात [UAE], जिसकी राजधानी अबु धबा है, कितने शेख-राज्यों से मिलकर बना है ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(क) सात (ख) छह
(ग) पांच (घ) चार

निर्देश: प्रश्न 91-96 की सूची I में कुछ महत्वपूर्ण सीमा रेखाओं के नाम हैं। सूची II में उन देशों के नाम हैं जिनकी सीमाओं का विभाजन यह रेखाएँ करती हैं। दोनों में सम्यक् सम्बन्ध स्थापित कीजिये।

I	II
91. 38 वीं पैरेलल	(क) पूर्व जर्मनी व पोलैन्ड की सीमा रेखा
92. 17 वीं पैरेलल	(ख) भारत तथा चीन की सीमा रेखा
93. ओडर नीसे रेखा	(ग) उत्तरी व दक्षिण यमन की सीमा रेखा
94. डूरन्ड रेखा	(घ) विलय से पूर्व उत्तर व दक्षिण वियतनाम की सीमा रेखा
95. मैकमहॉन रेखा	(ङ) अफगानिस्तान व भारत की सीमा रेखा
96. रेडक्लिफ रेखा	(च) उत्तर व दक्षिण कोरिया की सीमा रेखा
	(छ) भारत तथा पाकिस्तान की सीमा रेखा

97. निम्न में से कौन सा महासागर एक ओर एशिया का स्पर्श करता है तथा दूसरी ओर अमेरिका का ?
(क) अन्ध महासागर (ख) प्रशान्त महासागर
(ग) हिन्द महासागर (घ) उपर्युक्त सभी

98. निम्न में से किन देशों का तट भूमध्य सागर का स्पर्श नहीं करता ?
(क) इटली/फ्रांस (ख) स्पेन/ग्रीस
(ग) लीबिया/ट्यूनिसिया (घ) सूडान/नाइजर

99. मकर रेखा निम्न में से किस देश से होकर नहीं जाती ?
(क) द. अफ्रीका (ख) आर्जेन्टीना
(ग) चिली (घ) फिलीपीन्स

100. कौन सा देश पूर्णतः दक्षिणी गोलार्ध में नहीं आता है ?
(क) बोलिविया (ख) कोलम्बिया
(ग) पैराग्वाय (घ) फीजी

101. उत्तरी तथा दक्षिणी गोलार्ध में ऋतु परिवर्तन होते हैं क्योंकि
(क) पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमती है
(ख) पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूमती है
(ग) भू-कक्ष तल पर भू-अक्ष का झुकाव है
(घ) पृथ्वी गोल है

102. मलाका जलसंयोग मलेशिया तथा सुमात्रा का स्पर्श करता हुआ जावा सी तथा बंगाल की खाड़ी को जोड़ता है; जिब्रॉल्टर जलसंयोग भूमध्यसागर व अन्धमहासागर को जोड़ता है: बेयरिंग जलसंयोग [Bearing Straits] निम्न में किन दो को जोड़ता है ?
(क) बेयरिंग सागर व आर्कटिक महासागर को
(ख) आर्कटिक व हिन्द महासागर को
(ग) अन्ध महासागर व प्रशान्त महासागर को
(घ) प्रशान्त महासागर व गल्फ ऑव मेक्सिको को

103 समोच्च रेखा [Contours] है
(क) समुद्र-नितल [Sea-bed] से समान ऊँचाई के स्थानों को जोड़ने वाली रेखा
(ख) भू-तल से समान गहराई वाले स्थानों को जोड़ने वाली रेखा
(ग) समुद्र-समतल [sea-level] से समान ऊँचाई के स्थानों को जोड़ने वाली रेखा
(घ) समान अक्षांशों पर स्थित द्वीपों को जोड़ने वाली रेखा

104. स्कैन्डिनेविया, लैब्रेडोर, अलास्का आदि तथा अन्य उच्च अक्षांशों में मिलने वाली जलमग्न हिमानीकृत घाटियों को कहते हैं ?
(क) हिमगह्वर [cirque]
(ख) दीर्घ कूटिका [Drumlins]
(ग) हिमसोपान [Glacial Stairway]
(घ) प्रोद्दरी [Fiords]

● निर्देश : प्रश्न 105-109 की सूची I में (a) पर्वतों के मुख्य प्रकार तथा (b) उस प्रकार के प्रसिद्ध पर्वतों का उल्लेख है व सूची II में विभिन्न पर्वतों के निर्माण के कारण का। दोनों सूचियों में सम्यक् सम्बन्ध स्थापित कीजिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

105. (a) वलित पर्वत [Folded M.]/(b) हिमालय, एन्डिज, रॉकी

106. (a) अवरोधी [Block] पर्वत/(b) वारजेस; ब्लैक फॉरेस्ट [योरोप], सियरा नेवाडा [सं रा.]

107. (a) गुम्बदाकार [Dome] पर्वत/(b) ब्लैक हिल्स, बिगहॉर्न्स

108. (a) संग्रहीत पर्वत [M. of Accumulation]/ (b) कोटापैक्सी; वेसोवियस [इटली]

109. (a) अवशिष्ट [Residual] पर्वत (b) विन्ध्य, अरावली, सतपुड़ा

(क) सम्पीडन शक्ति [Compressive Force] द्वारा निर्मित पर्वत

(ख) ज्वालामुखी निस्सृत पदार्थों के जमाव से निर्मित पर्वत

(ग) तनाव की शक्तियों [भ्रन्श या अपरदन) द्वारा निर्मित पर्वत

(घ) अपरदन शक्तियों द्वारा घर्षण से कटे प्रारम्भिक पर्वत

(ङ) ज्वालामुखी क्रिया तथा स्थल में उभार से निर्मित पर्वत

उत्तरमाला

1 ग, 2 ख, 3 घ, 4 घ, 5 ग, 6 ख, 7 घ, 8 ङ, 9 च, 10 ग, 11 घ, 12 छ, 13 ज, 14 क, 15 ख, 16 ख, 17 घ, 18 घ, 19 ग, 20 क, 21 क, 22 झ, 23 ख, 24 ज, 25 क, 26ग, 27 घ, 28 छ, 29 ङ, 30 ख, 31 क, 32 ग, 33 ग, 34 घ, 35 ग, 36 ख, 37 ङ, 38 झ, 39 क, 40 घ, 41 ख, 42 ग, 43 ज, 44 च, 45 क, 46 घ, 47 ख, 48क, 49 क, 50 घ, 51 ग, 52 घ, 53 ख, 54 क, 55 ख, 56 ग, 57 घ, 58 ग, 59 क, 60 घ, 61 ग, 62 ग, 63 क, 64 छ, 65 घ, 66 ज, 67 ङ, 68 च, 69 ख, 70 ग, 71 ख, 72 क, 73 घ, 74 ख, 75 ग, 76 घ, 77 घ, 78 ख, 79 ग, 80 क, 81 घ, 82 क, 83 ङ, 84 ख, 85 च, 86ग, 87ख, 88 क व ख, 89ग, 90 क, 91 च, 92घ, 93 क, 94 ङ, 95 ख, 96 छ, 97 ख, 98 घ, 99 घ, 100 ख, 101 ग, 102 क, 103 ग, 104 घ, 105क, 106 ग, 107 ङ, 108 ख, 109 घ ■

(क) चक्कर के दौरान संस्पर्श क्षेत्र (sweep area) समान होगा

(ख) घड़ी की दिशा में चक्कर के दौरान संस्पर्श क्षेत्र कम होगा

(ग) घड़ी की विपरीत दिशा में चक्कर के दौरान संस्पर्श क्षेत्र अधिक होगा

(घ) निश्चित नहीं कहा जा सकता है

उत्तर माला—

1 क, 2 घ, 3 ग, 4 ग, 5 ख, 6 घ, 7 क, 8 ग, 9 क, 10 घ, 11 ख, 12 ग, 13 घ, 14 ग, 15 घ, 16 ग, 17 घ, 18 ख, 19 घ, 20 घ, 21 क, 22 ख, 23 घ, 24 ग, 25 ख, 26 ख, 27 क, 28 ग, 29 ख, 30 ग, 31 ख, 32 ग, 33 क, 34 ख, 35 क, 36 ख, 37 घ, 38 घ, 39 क, 40 ख, 41 ग, 42 घ, 43 ख, 44 ग, 45 घ, 46 क, 47 घ, 48 ख, 49 क, 50 ख, 51ख, 52 क, 53 ख, 54 ग, 55 ग, 56 ख, 57 क, 58 घ, 59 ग, 60 ख, 61 ग, 62 ख, 63 क, 64 क, 65 घ, 66 क, 67 घ, 68 घ, 69 ख, 70 घ, 71 क, 72 ख, 73 क, 74 घ, 75 क, 76 ग, 77 घ, 78 ग, 79 घ, 80 ख, 81 घ, 82 घ, 83 ख, 84 घ, 85 ग, 86 क, 87 ग, 88 क, 89 क, 90 ग, 91 क, 92 क, 93 घ, 94 ग, 95 घ, 96 क, 97 ख, 98 ग, 99 घ, 100 ख, 101 क, 102 ग, 103 ग, 104 ग, 105 ख, 106 घ, 107 क, 108 ख, 109 ख, 110 घ, 111 घ, 112 ख, 113 घ, 114 घ, 115 ख, 116 ख, 117 ख, 118 घ, 119 घ, 120 क, 121 ग, 122 घ, 123 ग, 124 घ, 125 ख, 126 क, 127 घ, 128 ग, 129 ख, 130 ग, 131 क, 132 ख, 133 ग, 134 क, 135 ग, 136 ग, 137 ग, 138 क, 139 क, 140 ग, 141 ख, 142 ग, 143 घ, 144 ख, 145 क, 146 ख, 147 क, 148 ग, 149 घ, 150 क. ■ ■

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रीय सामयिकी पर वस्तुनिष्ठ परीक्षण

1. अभी हाल में किस राज्य/केन्द्र प्रशासित प्रदेश ने कन्नड़ को राजभाषा घोषित किया है ?
(क) गोवा, दमन, द्वीव (ख) कर्नाटक
(ग) आन्ध्र प्रदेश (घ) पांडिचेरी

2. अन्डमान निकोबार ने निम्नांकित किन द्वीपों को पर्यटकों के लिये पहली बार खोल दिया है ?
(क) किन्क (ख) ग्रुब
(ग) रेड स्कीन (घ) जौली बुओज
(च) उपर्युक्त सभी

3. 46वां संवैधानिक संशोधन अधिनियम निम्न में किससे सम्बन्धित है ?
(क) सतलज नदी के जल का बंटवारा
(ख) तीन बीघा क्षेत्र का बंगलादेश को हस्तान्तरण
(ग) जम्मू कश्मीर पुनर्वास विधेयक
(घ) बिक्री कर

4. अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष में भारत का अंश 17117 एस. डी. आर से बढ़कर 22007 एस. डी. आर हो गया है। बताइये अब मताधिकार का अंश 2.6 से घटकर कितना हो गया है ?
(क) 1 (ख) 1.7 (ग) 2 (घ) 2.3

5. अग्निहोत्री क्या है ?
(क) बाम्बे हाई में तेल कूप (ख) अन्वेषक जहाज
(ग) होमोपैथिक दवा (घ) ज्वालामुखी

6. केन्द्र सरकार की नयी नीति के अनुसार, अब किसी राज्य के उच्च न्यायालय का मुख्य न्यायाधीश—
(क) उसी राज्य का व्यक्ति होगा
(ख) बाहरी राज्य का व्यक्ति होगा
(ग) राज्य के राज्यपाल के इच्छानुसार होगा
(घ) सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश के आदेशानुसार होगा

7. भारत तीन बिघा क्षेत्र' किस देश को हस्तान्तरित करने के लिये सहमत हुआ ?
(क) नेपाल (ख) चीन
(ग) भूटान (घ) बंगलादेश

8. भारत के किस अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे में सर्वाधिक यात्रियों का आवागमन होता है ?
(क) बम्बई (ख) दिल्ली
(ग) कलकत्ता (घ) मद्रास

9. वर्ष 1981-82 में सार्वजनिक वितरण प्रणाली के अन्तर्गत किस अनाज की सर्वाधिक मात्रा वितरित की गयी है ?
(क) गेहूं (ख) दाल
(ग) चावल (घ) चीनी

10. वर्ष 1982-83 में देश भर में औसत विद्युत उत्पादन आशानुरूप हुआ। फिर भी निम्न में कौन राज्य विद्युत की भारी कमी का सामना कर रहा हैं ?
(क) उत्तर प्रदेश (ख) राजस्थान
(ग) गुजरात (घ) कर्नाटक

11. जी-1-1 एवं जी-2-2 क्या है ?
(क) माइक्रोवेव संचार प्रणाली
(ख) अत्याधुनिक गाइडेड प्रक्षेपास्त्र
(ग) गोदावरी तट में तेल क्षेत्र
(घ) मौसम सम्बन्धी नया रॉकेट

12. शीतकाल में साईबेरियन क्रेन भारत के किस स्थान पर निवास करते हैं ?
(क) जिम कॉर्बेट नेशनल पार्क, नैनीताल
(ख) केयोलादेव नेशनल पार्क, भरतपुर
(ग) घना बर्ड सैन्कचुरी,
(घ) मानस नेशनल पार्क, असम

13. 100% निर्यातक औद्योगिक उद्यम सर्वाधिक किस राज्य में है ?
(क) गुजरात (ख) केरल
(ग) तमिलनाडु (घ) महाराष्ट्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

14. हाल में निम्नांकित में किस रोग के सम्बन्ध में एक राष्ट्रीय आयोग की स्थापना की गयी है ?
(क) कैन्सर (ख) कुष्ठ रोग
(ग) क्षय रोग (घ) मलेरिया

15. वायुयान वाहक 'आई. एन. एस. विक्रान्त' के सी हॉक विमान का प्रतिस्थापन ब्रिटेन में खरीदे गये किस विमान से किया गया है ?
(क) सी हैरीयर (ख) कॉनकार्ड
(ग) एम. बी. 217 (घ) सी रॉक

16. वर्ष 1983 के प्रारम्भ में किस राष्ट्र ने भारत को प्रदान की जाने वाली आर्थिक अनुदान में कटौती की घोषणा की है ?
(क) अमेरिका (ख) जापान
(ग) पश्चिम जर्मनी (घ) सऊदी अरब

17. सक्रिय राजनीति में प्रवेश के लिये सर्वोच्च न्यायालय से अभी हाल में किसने पदत्याग किया है ?
(क) एस. एम. फजल अली (ख) बी. बी. एराडी
(ग) बी. डी. तुल्जापुरकर (घ) बहरुल इस्लाम

18. नेशनल इन्स्टीट्यूट ऑव एडवान्स्ड स्टडीज का शिमला से किस स्थान पर स्थानान्तरण का प्रस्ताव है ?
(क) नई दिल्ली (ख) बम्बई
(ग) पुणे (घ) मसूरी

19. वर्ष 1982 में विश्व में सर्वाधिक फिल्मों का निर्माण भारत (763) में हुआ। बताइए किस भारतीय भाषा में सर्वाधिक फिल्मों का निर्माण हुआ ?
(क) तेलुगु (ख) तमिल
(ग) मलयालम (घ) हिन्दी

20. निम्न में कौन सा मन्दिर चोरी की घटना के कारण हाल में चर्चा का विषय बना ?
(क) सूर्य मन्दिर (ख) तिरुपति बालाजी मन्दिर
(ग) विश्वनाथ मन्दिर (घ) वैष्णव देवी मन्दिर

21. बन्दर रोग (Monkey disease) से किस राज्य के लोग भारी संख्या में ग्रसित हुए ?
(क) असम (ख) बिहार
(ग) गुजरात (घ) कर्नाटक

22. हाल में किस राष्ट्रीयकृत बैंक ने अपनी 6000 वीं शाखा खोली है ?
(क) स्टेट बैंक ऑव इण्डिया
(ख) बैंक ऑव बड़ौदा
(ग) पंजाब नेशनल बैंक
(घ) इलाहाबाद बैंक

23. वर्ष 1982 में भारत में 19.6 मिलियन टन खनिज तेल का उत्पादन हुआ। सर्वाधिक खनिज तेल कहाँ से प्राप्त हुआ ?
(क) असम (ख) गोदावरी बेसिन
(ग) बाम्बे हाई (घ) अंकलेश्वर

24. श्रीमती इन्दिरा गान्धी ने प्रथम तकनीकी नीति की घोषणा 70 वें राष्ट्रीय विज्ञान कांग्रेस के दौरान की। बताइए इस विज्ञान कांग्रेस का आयोजन कहाँ हुआ था ?
(क) नई दिल्ली (ख) माउन्ट अबु
(ग) चन्डीगढ़ (घ) तिरुपति

25. 70वें राष्ट्रीय विज्ञान कॉंग्रेस की प्रमुख विषय वस्तु क्या थी ?
(क) मूलभूत अनुसंधान (ख) समुद्र विकास
(ग) ऊर्जा के वैकल्पिक स्रोत (घ) अन्तरिक्ष अनुसन्धान

26. भारत ने टैंक विरोधी मिलान प्रक्षेपास्त्र किस राष्ट्र से प्राप्त किये है ?
(क) इटली (ख) सोवियत संघ
(ग) फ्रान्स/ब्रिटेन (घ) स्वीड्न

27. अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन ने किस अधिनियम/विधेयक के पुनर्निरीक्षण से लिये भारत सरकार से अनुरोध किया था ?
(क) नेशनल सिक्यूरिटी एक्ट
(ख) इसेंसियल सर्विस मेन्टेनेन्स एक्ट
(ग) बिहार प्रेस विधेयक
(घ) जम्मू-कश्मीर पुनर्वास विधेयक

28. बिहार प्रस विधेयक के सम्बन्ध में क्या सत्य है ?
(क) अधिनियम बन चुका है
(ख) रद्द कर दिया गया है
(ग) राष्ट्रपति के पास हस्ताक्षर हेतु प्रेषित
(घ) सर्वोच्च न्यायालय के विचाराधीन

29. किस पड़ोसी राष्ट्र की जेल में अनेक भारतीयों के बन्दी होने का आरोप है ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(क) नेपाल (ख) श्रीलंका
(ग) चीन (घ) पाकिस्तान

30. मार्च, 1983 में गठित भारत-पाक संयुक्त आयोग के अध्यक्ष भारत एवं पाकिस्तान के विदेश मन्त्री हैं। इस संयुक्त आयोग का प्रस्ताव सर्वप्रथम किसने रखा था ?
(क) जेवीयर पेरेज द कुएलर
(ख) जियाउल हक
(ग) इन्दिरा गान्धी
(घ) आगा शाही

31. भारत की कुल नेशनल पार्क व सैन्कचुरियों (231) में सर्वाधिक पार्क व सैन्कचुरी हिमाचल प्रदेश में स्थित है। यह बताइए किस राज्य का सर्वाधिक क्षेत्र नेशनल पार्क व सैन्कचुरी के लिये आरक्षित है ?
(क) मध्य प्रदेश (ख) राजस्थान
(ग) उत्तर प्रदेश (घ) महाराष्ट्र

32. भारत में श्वेत क्रान्ति का प्रवर्त्तक कौन है ?
(क) डा. कुरीयन
(ख) डा. एम. एस. स्वामीनाथन
(ग) डा. एस. डी. मेनन (घ) डा. रसगोत्र

33. एशियाड के उपलक्ष्य में रंगीन दूरदर्शन सेट पर आयात शुल्क 330% से घटा कर कितना प्रतिशत किया गया था ?
(क) 275 (ख) 240
(ग) 210 (घ) 190

34. भारत में जेगुअर विमान का सज्जीकरण (assembling) हिन्दुस्तान एरोनॉटिक्स लि. की किस शाखा में हो रहा है ?
(क) लखनऊ (ख) हैदराबाद
(ग) बंगलूरु (घ) नासिक

35. वर्ष 1982 में किस राज्य/केन्द्र प्रशासित प्रदेश को प्रति व्यक्ति के आधार पर सर्वाधिक व न्यूनतम केन्द्रीय आर्थिक अनुदान प्राप्त हुआ ?
(क) पंजाब व पश्चिम बंगाल
(ख) सिक्किम व तमिलनाडु
(ग) आन्ध्र प्रदेश व महाराष्ट्र
(घ) दिल्ली व असम

36. विगत में किससे सम्बन्धित घोषित नीति में उसे निर्यात तुल्य उद्योग कहा गया है ?
(क) जल परिवहन (ख) पर्यटन
(ग) संचार (घ) श्रम

37. नवम्बर, 1982 में गुजरात में आये भयंकर समुद्री तूफान से कौन स्थान अधिक प्रभावित नहीं था ?
(क) अमरेली (ख) भावनगर
(ग) राजकोट (घ) जूनागढ़
(च) खेड़ा

38. भारतीय दूरदर्शन में राष्ट्रीय कार्यक्रम किस दिन प्रारम्भ हुआ ?
(क) 26 जनवरी, 1982 (ख) 15 अगस्त, 1982
(ग) 19 नवम्बर, 1982 (घ) 1 जनवरी, 1983

39. नवम्बर, 1982 में नई दिल्ली में आर्थिक सहयोग बढ़ाने के लिये काउन्सिल फॉर चेम्बर्स ऑव कॉमर्स का कार्यालय खोला
(क) यूरोपीय आर्थिक समुदाय ने (ख) सऊदी अरब ने
(ग) ब्रिटेन ने (घ) अमेरिका ने

40. इस समय चन्डीगढ़ पंजाब व हरियाणा की राजधानी है। पूर्ववत समझौते के अनुसार, चन्डीगढ़ पंजाब की राजधानी बनी रहेगी। इसके बदले हरियाणा को पंजाब का कौन सा क्षेत्र प्राप्त होगा ?
(क) संगरूर (ख) अबोहर-फाजिल्का
(ग) भूपनगर (घ) भटिंडा

41. अन्डमान निकोबार के उपराज्यपाल को कौन शपथ ग्रहण करवाता है ?
(क) सर्वोच्च न्यायालय का मुख्य न्यायाधीश
(ख) सर्वोच्च न्यायालय का कोई भी न्यायाधीश
(ग) कलकत्ता उच्च न्यायालय का मुख्य न्यायाधीश
(घ) मद्रास उच्च न्यायालय का मुख्य न्यायाधीश

42. किस राज्य में राजकीय सेवा में सेवा निवृत्ति की आयु 58 वर्ष से घटाकर 55 वर्ष कर दी गयी है ?
(क) केरल (ख) जम्मू कश्मीर
(ग) पश्चिम बंगाल (घ) आन्ध्र प्रदेश

43. रिहन्द (उत्तर प्रदेश) सुपर ताप विद्युत घर का निर्माण किस राष्ट्र के सहयोग से किया जा रहा है ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(क) अमेरिका (ख) ब्रिटेन
(ग) सोवियत संघ (घ) फ्रान्स

44. वर्ष 1981 में प्रतिरक्षा पर किया गया व्यय प्रति व्यक्ति के आधार पर भारत में कितना था ?
(क) 5 डालर (ख) 6 डालर
(ग) 8 डालर (घ) 12 डालर

45. हाल में वाईपिन आइलैण्ड (केरल) क्यों चर्चा का विषय बना ?
(क) अवैध शराब के पीने से सैकड़ों व्यक्तियों की मृत्यु
(ख) रॉकेट प्रक्षेपण स्थल का निर्माण
(ग) तेल के विपुल भण्डार की प्राप्ति
(घ) विदेशी राष्ट्रों का सैनिक हस्तक्षेप

46. इन्सेट I ए की असफलता के पश्चात भारत द्वारा ईन्टेलसेट V का उपयोग किया जा रहा है। यह उपग्रह किस राष्ट्र/एजेन्सी का है ?
(क) यूनीस्पेस (ख) यूरोपीयन स्पेस एजेन्सी
(ग) सोवियत संघ (घ) कुछ राष्ट्रों के समूहों का

47. इन्सेट I ए की डिजाइन भारतीय अन्तरिक्ष अनुसंधान संस्थान ने की थी परन्तु इस उपग्रह का निर्माण फोर्ड एयरोस्पेस ने किया। बताइए अप्रैल 82, में इन्सेट I ए का प्रक्षेपण किस स्थान से किया गया ?
(क) बियर्स लेक, सोवियत संघ
(ख) कोऊरू, फ्रेन्च गयाना
(ग) थ्री माइल आइलैण्ड, अमेरिका
(घ) केप केनावरेल, अमेरिका

48. राष्ट्रीय जल संसाधन परिषद का अध्यक्ष कौन है ?
(क) ज्ञानी जैल सिंह (ख) इन्दिरा गान्धी
(ग) प्रणव कुमार मुखर्जी (घ) एन. डी. तिवारी

49. इन्सेट I ए की असफलता का प्रमुख कारण क्या है ?
(क) प्रक्षेपण रॉकेट में रचनात्मक त्रुटि
(ख) उपग्रह के आइसोलेशन वैल्व का न खुलना
(ग) उपग्रह में प्रयुक्त होने वाले ईधन का समय के पूर्व जल जाना
(घ) उपर्युक्त सभी

50. एयर इण्डिया की कौन सी शाखा कार्यालय प्रबन्ध विभागीय कर्मचारी के मध्य विवाद के कारण बन्द रहा ?
(क) लन्दन (ख) वॉशिंग्टन
(ग) मॉन्ट्रीयल (घ) पेरिस

51. भारत के केवल मात्र एक परमाणु विद्युत घर में परिवर्धित (enriched) यूरेनियम का प्रयोग किया जाता है। वह कौन सा परमाणु विद्युत घर है ?
(क) राणा प्रताप परमाणु विद्युत घर, कोटा
(ख) तारापुर परमाणु विद्युत घर
(ग) तूतीकोरिन परमाणु विद्युत घर
(घ) नरोरा परमाणु विद्युत घर

52. मॉक्स (Mox) क्या है ?
(क) प्रक्षेपास्त्र विरोधी टैंक (ख) गाइडेड प्रक्षेपास्त्र
(ग) उपग्रह में प्रयोग किया जाने वाला ईधन
(घ) परमाणु संयन्त्र में प्रयोग किया जाने वाला ईधन

53. अगस्त, 1982 में इण्डियन एयरलाइन्स का बोइंग 707 का अपहरण कर पाकिस्तान ले जाया गया। यह भारतीय विमान का कौन सा अपहरण था?
(क) तृतीय (ख) चतुर्थ
(ग) सातवां (घ) आठवां

54. बाम्बे हाई में कार्यरत किस ऑयल रिग में ब्लो आउट (Blow out) हुआ ?
(क) सागर सम्राट (ख) सागर प्रगति
(ग) सागर प्रभात (घ) सागर विकास

55. सागर विकास के ब्लो आउट को किस अमेरिकी कम्पनी ने बुझाया ?
(क) रेड अडायर (ख) बर्मा शेल
(ग) सेवेन सिस्टर्स (घ) विल्की इन्टरनेशनल

56. भारत की सार्वजनिक व निजी कम्पनियां 40 राष्ट्रों में 230 संयुक्त उद्यम (Joint ventures) से सम्बद्ध हैं। बताइए सर्वाधिक संयुक्त उद्यम किस क्षेत्र में है ?
(क) पश्चिमी एशिया (ख) दक्षिण एशिया
(ग) दक्षिण पूर्व एशिया (घ) उत्तरी अफ्रीका

57. किस राष्ट्र से भारतीय मूल के श्रमिकों को भारत वापस लौटाया जा रहा है ?
(क) उगान्डा (ख) केनिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

(ग) मॉरीशस (घ) श्री लंका

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

58. क्या भारत में आर्थिक अपराधों के लिये विशेष अदालतों का गठन किया गया है ?
(क) हाँ (ख) नहीं
(ग) निकट भविष्य में करने वाला प्रस्ताव है

59. इण्डियन एयर लाइन्स की सहायक वायु सेवा वायु-दूत लगभग कितने स्थानों के लिये उड़ान भरती है ?
(क) 15-20 (ख) 20-25
(ग) 25-30 (घ) 35-40

60. बम्बई स्थित वाणिज्य दूत युसुफ होसेन को भारत के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप करने के कारण निष्कासित किया गया। वे किस राष्ट्र के वाणिज्य दूत थे ?
(क) ईरान (ख) लीबिया
(ग) इराक (घ) इस्रायल

61. सहार हवाई अड्डे (बम्बई) में एयर इण्डिया का कौन सा बोइंग विमान दुर्घटनाग्रस्त हुआ था ?
(क) गौरी शंकर (ख) सम्राट अशोक
(ग) अकबर (घ) सम्राट चन्द्रगुप्त

62. इन्सेट I ए के भरपूर उपयोग हेतु कितने अर्थ स्टेशनों (earth stations) की स्थापना की गयी है ?
(क) 10 (ख) 18
(ग) 28 (घ) 86

63 किस राष्ट्र के पर्यटकों के भारत भ्रमण के लिये केन्द्र सरकार ने चार्टर विमान सेवा प्रारम्भ की है ?
(क) स्विट्जरलैण्ड (ख) पश्चिमी जर्मनी
(ग) इटली (घ) उपर्युक्त सभी

64. वर्ष 1981-82 में किस राज्य ने लघु बचत योजना के अन्तर्गत सर्वाधिक पूंजी जमा की है ?
(क) तमिलनाडु (ख) उत्तर प्रदेश
(ग) महाराष्ट्र (घ) पश्चिम बंगाल

65. किस प्रमुख बन्दरगाह की क्षमता वृद्धि के लिये न्हावा शेवा नामक सहायक बन्दरगाह का निर्माण किया जा रहा है ?
(क) कलकत्ता (ख) मद्रास
(ग) मार्मागोवा (घ) बम्बई

66. निम्न में कौन एयर बस का उपयोग करता है ?
(क) वायुदूत (ख) इण्डियन एयर लाइन्स
(ग) एयर इण्डिया (घ) उपर्युक्त सभी

67. निर्यातकों के परिवहन की सुविधा के लिये किसने भारत के आन्तरिक भूभाग में दो शुष्क बन्दरगाहों का निर्माण किया गया है ? ये कहाँ स्थित है ?
(क) दिल्ली (ख) नागपुर
(ग) बंगलूर (घ) पटना

68. ग्रेट इन्डियन बस्टर्ड राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र एवं मध्य प्रदेश में पाये जाते हैं। हाल में किस राज्य ने इस पंक्षी को राजकीय पक्षी घोषित किया है ?
(क) राजस्थान (ख) गुजरात
(ग) महाराष्ट्र (घ) मध्य प्रदेश

69. अभी हाल में ऑल इन्डिया रेडियो का नाम अल्प समय के लिए परिवर्तित कर क्या रखा गया था ?
(क) समाचार भारती (ख) प्रसार भारती
(ग) आकाशवाणी (घ) भारतीय प्रसारण सेवा

70. यूनीवार्ता क्या है ?
(क) केन्द्र सरकार द्वारा प्रकाशित साप्ताहिक पत्रिका
(ख) 20 सूत्रीय कार्यक्रम पर तथा रेडियो कार्यक्रम
(ग) हिन्दी समाचार सेवा
(घ) दूरदर्शन का राष्ट्रीय कार्यक्रम

71. वर्ष 1982 में भारत किस संगठन का सदस्य बना ?
(क) एशियन डेवेलपमेन्ट बैंक
(ख) अफ्रीकन डेवेलपमेन्ट बैंक
(ग) इन्टरनेशनल फाइनेन्स कॉर्पोरेशन
(घ) इन्टरनेशनल फन्ड फॉर एग्रीकल्चर डेवेलपमेन्ट

72. वर्ष 1982 में निर्वाचन आयोग ने सात राजनीतिक दलों को राष्ट्रीय राजनीतिक दल का दर्जा प्रदान किया। बताइये निम्न में कौन राष्ट्रीय राजनीतिक दल नहीं है ?
(क) भारतीय जनता दल (ख) नेशनल कॉन्फ्रेन्स
(ग) भारतीय साम्यवादी दल
(घ) भारतीय साम्यवादी दल (मार्क्सवादी)
(च) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस
(छ) कांग्रेस (सामाजवादी)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(ज) लोकदल (झ) जनता दल

73. पिछले 16 माह से कहाँ कपड़ा मिल मजदूरों की हड़ताल चल रही है ?
(क) अहमदाबाद (ख) कलकत्ता
(ग) सूरत (घ) बम्बई

74. एक्सपोर्ट-इम्पोर्ट बैंक (मुख्यालय-बम्बई) का अध्यक्ष कौन है ?
(क) आर. सी. शाह (ख) आइ. जी पटेल
(ग) मनमोहन सिंह (घ) एम. एन. देसाई

75. हाल में सम्पन्न कन्हार जल समझौता का हस्ताक्षर-कर्त्ता राज्य कौन नहीं है ?
(क) उत्तर प्रदेश (ख) उड़ीसा
(ग) बिहार (घ) मध्य प्रदेश

76. किस राज्य के विधान सभा के स्पीकर ने विवादास्पद निर्णायक मत (casting vote) प्रदान किया ?
(क) जम्मू कश्मीर (ख) हरियाणा
(ग) पश्चिम बंगाल (घ) केरल

77. सामान्यतः भारतीय लोग किस रोग से ग्रस्त रहते है ?
(क) हृदय रोग (ख) क्षय रोग
(ग) मलेरिया (घ) टायफॉयड
(च) कुष्ठ रोग (छ) कॉलेरा
(ज) उपर्युक्त सभी

78. निम्न में कौन सा राज्य जल की भयंकर कमी का सामना कर रहा है ?
(क) केरल (ख) तमिलनाडु
(ग) आन्ध्र प्रदेश (घ) उड़ीसा

79. अभी हाल में दक्षिणी भारत के कुछ राज्यों व केन्द्र प्रशासित प्रदेश तमिलनाडु, कर्नाटक, आन्ध्र प्रदेश व पांडिचेरी ने दक्षिणी परिषद का गठन किया है केन्द्र सरकार ने इस सम्बन्ध में किसकी अध्यक्षता में एक आयोग का गठन किया है ?
(क) आर. एस सरकरिया
(ख) आर. सी. राजमल्लू (ग) एस. हनुमंत राव
(घ) बी. के नेहरू

80. विवादास्पद कुओं समझौता किस वस्तु के आयात से सम्बन्धित है ?
(क) रंगीन दूरदर्शन (ख) गेहूं
(ग) ऑयल रिग (घ) खनिज तेल

81. विदेशी पर्यटकों के लिये विशेष आकर्षण 'पैलेस ऑन व्हील्स' नामक ट्रेन अभी हाल में चालू की गयी है, यह ट्रेन किस स्थान से होकर नहीं गुजरती है ?
(क) दिल्ली (ख) आगरा (ग) जयपुर (घ) अजमेर
(ङ) जैसलमेर

82. गंगा नदी के किस स्थान पर सबसे लम्बे यातायात पुल का हाल में उद्घाटन किया गया है ?
(क) कानपुर (ख) पटना
(ग) मुंगेर (घ) कलकत्ता

83. भारत का पाँचवाँ परमाणु विद्युत घर कहाँ बनाया जा रहा है ?
(क) तुतीकोरिन, तमिलनाड
(ख) रत्नागिरी, महाराष्ट्र
(ग) काकरापाड़ा गुजरात
(घ) बतासकांठा, मध्य प्रदेश

84. भारत में वर्ष 1982 किस राष्ट्रीय वर्ष के रूप में मनाया गया है ?
(क) खेल वर्ष (ख) संचार वर्ष
(ग) उत्पादकता वर्ष (घ) विकलांग वर्ष

85. नवनियुक्त आर्थिक परामर्श परिषद का अध्यक्ष कौन है ?
(क) ए. एम. खुशरो (ख) एस. चक्रवर्ती
(ग) सी. एच. हनुमन्त राव (घ) मनमोहन सिंह

86. किस राष्ट्र ने भारत में 1000 मेगावॉट परमाणु विद्युत घर निर्माण करने का प्रस्ताव रखा है ?
(क) जापान (ख) फ्रान्स
(ग) सोवियत संघ (घ) पश्चिमी जर्मनी

87. भारत ने अभी हाल में किस राष्ट्र से भारी मात्रा में रंगीन दूरदर्शन के उपकरणों का आयात किया है ?
(क) अमेरिका (ख) जापान
(ग) दक्षिणी कोरिया (घ) पश्चिमी जर्मनी

88. जनता कार बनाने वाली सार्वजनिक कम्पनी मारुति उद्योग लि. में किसने सर्वाधिक पूंजी निवेशित की है ?
(क) केन्द्र सरकार (ख) सुजुकी मोटर कम्पनी लि.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

(घ) सार्वजनिक वित्तीय संस्थाएं
(ग) हरियाणा सरकार

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

89. सिंगरौली सुपर ताप परियोजना से कौन लाभान्वित नहीं होगा ?
(क) उत्तर प्रदेश (ख) मध्य प्रदेश
(ग) बिहार (घ) पंजाब
(च) दिल्ली (छ) हरियाणा

90. हाल के वर्षों में भारत की आयात नीति के सम्बन्ध में क्या सत्य है ?
(क) उसे अधिकाधिक उदार बनाया गया
(ख) उसे अधिकाधिक कठोर बनाया गया
(ग) वह पूर्ववत बनी हुयी है
(घ) भारत की कोई आयात नीति नहीं है

91. वर्ष 1981-82 में भारत में कृषि योग्य भूमि के सर्वाधिक भाग पर धान बोया गया। निम्न में प्रति हेक्टेयर पैदावार किसकी सबसे अधिक थी ?
(क) धान (ख) गेहूं (ग) बाजरा (घ) मक्का

92. वर्ष 1981-82 में किस राज्य में अन्न की सर्वाधिक पैदावार हुई ?
(क) पंजाब (ख) महाराष्ट्र
(ग) उत्तर प्रदेश (घ) हरियाणा

93. वर्ष 1981-82 तक भारत ने अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष से 6 किस्तों में कितने एस. डी. आर राशि का आहरण किया ?
(क) 1506 (ख) 2515
(ग) 2894 (घ) 3426

94. पिछले दो वर्षों में भारत की विदेशी मुद्रा की संचित राशि लगभग कितनी बनी रही ?
(क) 1500—3500 (ख) 3000—4500
(ग) 4000—5500 (घ) 5000—5500

95. वर्ष 1981-82 में भारत ने पेट्रोलियम के पश्चात किस वस्तु के आयात पर सर्वाधिक राशि व्यय की ?
(क) अनाज (ख) उर्वरक
(ग) खाद्य तेल (घ) गैर विद्युत मशीनरी

96. वर्ष 1981-82 में भारत ने किस वस्तु के निर्यात से सर्वाधिक विदेशी मुद्रा अर्जित की ?
(क) चाय (ख) जूट
(ग) हस्तशिल्प (घ) इंजीनियरिंग सामान

97. एशियाड के उपलक्ष्य में भारत सरकार ने निम्न में किस राशि का सिक्का नहीं निकाला ?
(क) 10 पैसा (ख) 25 पैसा (ग) 1 रुपया
(घ) 10 रुपया (च) 100 रुपया

98. ओ एण्ड बी वैन का उपयोग किस लिए किया जाता है ?
(क) आकस्मिक चिकित्सा
(ख) ग्रामीण क्षेत्र में चिकित्सा सेवा
(ग) दूरदर्शन कार्यक्रम
(घ) माइक्रोवेव संचार

99. अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में मूल्य की कमी के फलस्वरूप भारत को वर्ष 1981-82 में किस वस्तु के निर्यात से आय बहुत कम हुई ?
(क) कॉफी (ख) चाय
(ग) चीनी (घ) लौह अयस्क

100. वर्ष 1981-82 में भारत का किस राष्ट्र के साथ व्यापार शेष सकारात्मक था ?
(क) ब्रिटेन (ख) जापान
(ग) कनाडा (घ) सोवियत संघ

101. विश्व व्यापार में भारत का किस वस्तु में सर्वाधिक हिस्सा है ?
(क) चाय (ख) तम्बाकू
(ग) बहुमूल्य धातु (घ) मसाला

102. भारत में शक संवत् पर आधारित समान राष्ट्रीय पंचांग, जिसका पहला महीना चैत्र है, को कब से लागू किया गया ?
(क) 23 मार्च, 1957 (ख) 26 जनवरी, 1950
(ग) 22 सितम्बर, 1954 (घ) 1 मार्च, 1955

103 अभी हाल में थल सेना कॉलेज की स्वर्ण जयन्ती मनायी गयी। बताइए यह कॉलेज कहाँ स्थित है ?
(क) नई दिल्ली (ख) पुणे
(ग) देहरादून (घ) माउन्ट आबू

104. वर्ष 1981 की जनगणना के अनुसार भारत में साक्षरता का प्रतिशत 36.17 है। साक्षरता का सर्वाधिक प्रतिशत केरल (69.17) में है। बताइए देश मे कुल निरक्षरों की संख्या लगभग कितनी है ?
(क) 34 करोड़ (ख) 37 करोड़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(ग) 39 करोड़ (घ) 42 करोड़

105. भारत में किस आयु वर्ग के लोगों के लिये प्रौढ़ शिक्षा को प्राथमिकता प्रदान की जा रही है ?
(क) 15 से 35 वर्ष (ख) 19 से 40 वर्ष
(ग) 24 से 45 वर्ष (घ) 30 से 45 वर्ष

106. हाल में नेताजी सुभाष राष्ट्रीय खेलकूद संस्थान (मुख्यालय पटियाला) की नयी शाखा कहाँ खोली गयी है ?
(क) बंगलूरु (ख) कलकत्ता
(ग) बम्बई (घ) कोचीन

107. समुद्र विज्ञान सम्बन्धित कार्यों में समन्वय के लिये अभी हाल में भारत के प्रधानमन्त्री की देख रेख में किस विभाग की स्थापना की गयी ?
(क) समुद्र विज्ञान विभाग (ख) समुद्र उन्नयन विभाग
(ग) समुद्र विकास विभाग
(घ) समुद्र प्रोद्योगिकी अभिकरण

108. भारतीय अन्तरिक्ष अनुसन्धान संगठन (ISRO) का कार्य कहाँ नहीं होता है ?
(क) विक्रम साराभाई अन्तरिक्ष केन्द्र, तिरुअनन्तपुर, केरल
(ख) भारतीय अन्तरिक्ष अनुसंधान संगठन उपग्रह केन्द्र, बंगलूरु
(ग) शार केन्द्र, श्री हरिकोटा, आन्ध्र प्रदेश
(घ) होमी भाभा अन्तरिक्ष केन्द्र, ट्रॉम्बे, महाराष्ट्र
(च) अन्तरिक्ष अनुप्रयोग केन्द्र, अहमदाबाद

109. भारत के किस राज्य में समेकित आहार परियोजना प्रारम्भ की गयी है ?
(क) पश्चिम बंगाल (ख) तमिलनाडु
(ग) पंजाब (घ) गुजरात

110. निम्नांकित किस राज्य/केन्द्र प्रशासित प्रदेश में कोई भी जनजाति अनुसूचित नहीं है ?
(क) हरियाणा (ख) पंजाब
(ग) पॉण्डीचेरी (घ) दिल्ली
(च) उपर्युक्त सभी

111. प्रधानमन्त्री राष्ट्रीय सहायता कोष में वर्ष 1982-83 के अन्त तक जनता की ओर से 48 करोड़ रुपया दान आ चुका था। यह राशि निम्न में से किससे ग्रस्त लोगों की सहायता के लिये उपयोग की जाती है ?
(क) भूकम्प (ख) बाढ़ (ग) तूफान
(घ) दंगा (च) सूखा (छ) अकाल

112. ऑल इण्डिया रेडियो के 86 प्रसारण केन्द्र है। सर्वाधिक प्रसारण केन्द्र मध्य प्रदेश में हैं। ऑल इण्डिया रेडियो की विदेशी सेवा के कार्यक्रम कितनी विदेशी भाषाओं में प्रसारित किये जाते हैं ?
(क) 8 (ख) 13
(ग) 7 (घ) 25

113. भारत में किस राज्य से सर्वाधिक पत्र/पत्रिकाओं का प्रकाशन होता है ?
(क) केरल (ख) महाराष्ट्र
(ग) पश्चिम बंगाल (घ) उत्तर प्रदेश

114. भारत की किस संस्था ने 'गान्धी' फिल्म के निर्माण के लिये पूंजी लगायी ?
(क) फिल्म फाइनेन्स कॉर्पोरेशन
(ख) नेशनल फिल्म डेवलपमेन्ट कॉर्पोरेशन
(ग) नेशनल फिल्म आरकॉइव्स
(घ) उपर्युक्त सभी

115. वर्ष 1982 में घोषित नया 20 सूत्री कार्यक्रम क्या अभिन्न अंग है ?
(क) हाँ (ख) नहीं (ग) निश्चित कहा नहीं जा सकता

116. नये 20 सूत्री कार्यक्रम में किस मुद्दे को प्राथमिकता दी गयी है ?
(क) समाज के उपेक्षित वर्गों का जीवन स्तर सुधारना
(ख) उत्पादकता में चहुंमुखी सुधार
(ग जनसंख्या वृद्धि पर रोक
(घ) आर्थिक अपराधों पर प्रतिबन्ध
(च) उपर्युक्त सभी

117. वर्ष 1981-82 में 20 सूत्री कार्यक्रम पर परिव्यय की राशि अनुमानतः कितनी थी ?
(क) 4276 करोड़ रु. (ख) 6153 करोड़ रु.
(ग) 7196 करोड़ रु. (घ) 8374 करोड़ रु.

118. मरुस्थल विकास कार्यक्रम के अन्तर्गत कौन राज्य नहीं आते हैं ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(क) राजस्थान (ख) हरियाणा
(ग) गुजरात (घ) मध्य प्रदेश

119 भारत में कुल उत्पादित विद्युत की सर्वाधिक खपत कहाँ होती है ?
(क) घरेलू (ख) वाणिज्य
(ग) कृषि (घ) उद्योग

120. भारत की किस विद्युत परियोजना की उत्पादन क्षमता सर्वाधिक है ?
(क) तारापुर परमाणु बिजली घर
(ख) कोरना ताप विद्युत परियोजना
(ग) ओबरा ताप विद्युत परियोजना
(घ) भाखड़ा नंगल जल विद्युत परियोजना

121. भारत में 12 तेल शोधनशालायें कार्यरत हैं। निम्न में कौन सी शोधनशाला का अभी हाल में उद्घाटन हुआ है ?
(क) मद्रास तेल शोधनशाला
(ख) मथुरा तेल शोधनशाला
(ग) हल्दिया तेल शोधनशाला
(घ) विशाखापट्टनम तेल शोधनशाला

122. भारत में इस समय ऐसे 6 कारखानें हैं, जिनमें भिन्न-भिन्न प्रकार का इस्पात निर्मित होता है। यह बताइए निम्न में कौन सा कारखाना निजी क्षेत्र में है ?
(क) इंस्को (ख) बोकारो स्टील क. लि.
(ग) दुर्गापुर स्टील क. लि.
(घ) राउरकेला स्टील क. लि.
(च) टिस्को (छ) भिलाई स्टील क. लि.

123. देश में विदेशी पर्यटकों की सुविधा के लिये किन स्थानों पर कर मुक्त (duty free) दुकानें खोली गयी हैं ?
(क) अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डों में
(ख) पांच सितारे होटलों में
(ग) प्रमुख बन्दरगाहों में
(घ) मेट्रोपॉलिटन नगरों में

124. धारवी (बम्बई) नामक स्थान क्यों चर्चित हैं ?
(क) यहाँ नया परमाणु बिजली घर बनाने का प्रस्ताव है
(ख) यहाँ देश की सबसे बड़ी आवास परियोजना का निर्माण हो रहा है
(ग) यहाँ एशिया की सबसे बड़ी गन्दी बस्ती है
(घ) यहाँ न्हावा शेवा बन्दरगाह का निर्माण हो रहा है

125. भारत निम्न में किससे तेल नहीं आयात करता है ?
(क) ईरान (ख) इराक (ग) सऊदी अरब
(घ) नाइजीरिया (च) मेक्सिको
(छ) वेनेजुएला (ज) सोवियत संघ

126. ब्रेझनेव स्पेस नगर में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे विंगकमान्डर रवीश मल्होत्रा तथा स्कवॉड्रन लीडर राकेश शर्मा में से एक व्यक्ति किस वर्ष भारत-सोवियत संयुक्त अन्तरिक्ष अभियान में सोयुत अन्तरिक्ष यान से अन्तरिक्ष का भ्रमण करेगा ?
(क) 1983 (ख) 1984
(ग) 1985 (घ) कोई निश्चित नहीं

127. भारत किस क्षेत्र से निकाले गये खनिज तेल के एक अंश का निर्यात करता है ?
(क) गोदावरी बेसिन (ख) बाम्बे हाई
(ग) अंकलेश्वर (घ) असम

128. भारत के तैंतीसवें गणतन्त्र दिवस के उपलक्ष्य पर किस व्यक्ति को भारतरत्न की उपाधि से सम्मानित किया गया ?
(क) मीरा बहन (ख) विनोबा भावे
(ग) रिचर्ड एटनबरो (घ) मदर टेरेसा

129. नई दिल्ली में आयोजित नवें अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह की सर्वश्रेष्ठ फिल्म कौन सी थी ?
(क) चोख (ख) ओपन हार्ट
(ग) लैबरिन्थ
(घ) किसी को भी यह पुरस्कार नहीं प्राप्त हुआ

130. इस फिल्म समारोह में सर्वश्रेष्ठ अभिनेता व अभिनेत्री का पुरस्कार किसको प्राप्त हुआ ?
(क) नार्ल एल शेरिफ; मरिना स्तारीख
(ख) डस्टिन हॉफमैन; सिल्विया माइल्स
(ग) ओमर शरिफ, जेन फोन्डा
(घ) इलिमान्सो पसेरो; स्मिता पाटिल

131. इस फिल्म समारोह में जूरी का विशेष पुरस्कार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किस भारतीय फिल्म को मिला ?

(क) चक्र (ख) चोख

(ग) अकालेर सन्धाने (घ) दखल

(च) थनीर थनीर

132. नवें अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह का अध्यक्ष कौन था ?

(क) अदूर गोपाल कृष्णन्

(ख) वैजयन्तीमाला (ग) मिलन मिलोव

(घ) लिंडसु एन्डरसन

133. भारत के किस फिल्म निदेशक को हाल में ब्रिटिश फिल्म इन्स्टीट्यूट ने सम्मानित किया ?

(क) मृणाल सेन (ख) सत्यजित राय

(ग) श्याम बेनेगल (घ) अदूर गोपाल कृष्णन्

134. निम्न में कौन सी संस्था इस वर्ष अपनी जन्मशतवार्षिकी मना रही है ?

(क) राम कृष्ण मिशन (ख) भारतीय विद्या भवन

(ग) थियोसॉफीकल सोसाइटी

(घ) उपर्युक्त कोई भी नहीं

135. निम्न में किसने विश्व का सबसे छोटा व कम वजनी अत्याधुनिक कैमरा का निर्माण किया ?

(क) मोहिन्दर ढिल्लों (ख) जोगिन्दर सिद्दू

(ग) अमरेन्द्र सिंह (घ) पीयूष तिरकी

136. प्रसिद्ध कवि एवं विचारक सुब्रह्मण्य भारती की दिसम्बर, 82 से जन्मशतवार्षिकी मनायी जा रही है। वे किस भाषा में अपनी कविता रचना करते थे ?

(क) मलयालम (ख) तेलुगु

(ग) तमिल (घ) कन्नड

137. जे. आर. डी. टाटा ने अक्टूबर, 82 में लेपर्ड मॉथ विमान से एक लम्बी उड़ान किसकी स्वर्ण जयन्ती के उपलक्ष्य में भरी ?

(क) इण्डियन एयर लाइन्स

(ख) एयर इण्डिया (ग) वायुदूत

(घ) इन्टरनेशनल एयरपोर्ट ऑथरिटी ऑव इण्डिया

138. जे. आर. डी. ने अक्टूबर 82 में लेपर्ड मॉथ विमान से किन स्थानों के मध्य दूरी तय कर 50 वर्ष पूर्व की ऐतिहासिक उड़ान को दोहराया ?

(क) कराची—बम्बई दिल्ली

(ख) लाहौर—बम्बई

(ग) इस्लामाबाद—अहमदाबाद

(घ) कराची—बम्बई

139. इण्डियन एयर लाइन्स निम्न में किन राष्ट्रों में अपनी हवाई सेवा नहीं चलाती है ?

(क) बांगला देश (ख) नेपाल

(ग) अफगानिस्तान (घ) श्रीलंका

(च) पाकिस्तान (छ) बर्मा

140. विश्व विख्यात खिलाड़ी हनूतसिंह, जिनका देहान्त हाल में हुआ, किस खेल से सम्बद्ध थे ?

(क) बिलियर्ड्स (ख) पोलो

(ग) शतरंज (घ) हॉकी

141. एक प्रवासी भारतीय किसी भारतीय कम्पनी में अधिकतम कितना प्रतिशत शेयर खरीद सकता है ?

(क) 2% (ख) 5%

(ग) 10% (घ) 17%

142. निम्न में किस व्यक्ति को 1982 का रेमन मैग्सेसे पुरस्कार प्राप्त हुआ ?

(क) अरुण शौरी (पत्रकारिता, साहित्य व रचनात्मक लेखन)

(ख) मणिभाई भीमभाई देसाई (जनसेवा)

(ग) चण्डी प्रसाद भट्ट (सामुदायिक नेतृत्व)

(घ) एम. जी. के. मेनन (विशिष्ट शासकीय सेवा)

143. 'ओरु देसत्तिण्डे काठू'-नामक पुस्तक पर ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त करने वाले किस मलयाली लेखक का हाल में निधन हुआ ?

(क) शंकर कुरुप (ख) विष्णु देव

(ग) एस. के. पोट्टेकाट (घ) आशापूर्णा देवी

144. पुनर्वास विधेयक के लिये कौन राज्य हाल में काफी चर्चित रहा ?

(क) सिक्किम (ख) असम

(ग) पंजाब (घ) जम्मू-कश्मीर

145 शतरंज में भारत के किस खिलाड़ी ने सबसे कम आयु में अन्तर्राष्ट्रीय मास्टर का सम्मान प्राप्त किया ?

(क) रोहिणी खाडिलकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

(ख) दिबेन्दु बरुआ (ग) [illegible]
(घ) नासिर अली

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

146. निम्नलिखित में कौन सा कथन सत्य है ?
(क) पद्मनाभ – जनगणना आयुक्त
(ख) मनमोहन सिंह – गवर्नर, रिजर्व बैंक ऑव इण्डिया
(ग) आर. के त्रिवेदी – मुख्य निर्वाचन आयुक्त
(घ) के. के. मैथ्यू—अध्यक्ष, द्वितीय प्रेस आयोग/विधि आयोग
(च) बूटा सिंह—अध्यक्ष, नवें एशियाड की विशेष आयोजन समिति
(छ) नटराज कृष्णन्—संयुक्त राष्ट्र में भारत के स्थायी प्रतिनिधि
(ज) सभी सत्य

147. निम्न आयोग/समिति की स्थापना किस उद्देश्य से नहीं की गयी थी ?
(क) गोकाक समिति—कर्नाटक में कन्नड़ भाषा को प्रथम भाषा बनाने पर जांच
(ख) मण्डल आयोग—सरकारी नौकरी व शैक्षणिक संस्थाओं में पिछड़े वर्ग का आरक्षण
(ग) धर्मवीर आयोग—पुलिस सेवा में सुधार
(घ) कुदाल आयोग—गांधी शांति प्रतिष्ठानों के कार्य-कलापों पर जांच
(च) आर्थिक प्रशासन सुधार आयोग—वर्तमान कर ढांचे व आर्थिक प्रशासन में सुधार
(छ) उपर्युक्त सभी सत्य

148. वर्ष 1981 का ज्ञानपीठ पुरस्कार अमृता प्रीतम को किस पुस्तक पर प्राप्त हुआ ?
(क) डॉ. देव (ख) कागज ते कनवास
(ग) रंगीली सभा (घ) गराज जो फुटपाथ तक

149. ज्ञानी जैल सिंह कौन से राष्ट्रपति चुनाव के फलस्वरूप भारत के सातवें राष्ट्रपति निर्वाचित हुए ?
(क) छठें (ख) सातवें
(ग) आठवें (घ) पांचवें

150. अभी हाल में किस व्यक्ति को ऊ थान्ट पुरस्कार से सम्मानित किया गया ?
(क) पी. वी. नरसिंह राव
(ख) श्रीमती इन्दिरा गांधी
(ग) ज्ञानी जैलसिंह (घ) एम. एस. स्वामीनाथन

151. मलन्जखण्ड (मध्य प्रदेश) परियोजना किससे सम्बन्धित है ?
(क) तांबा (ख) कोयला
(ग) अभ्रक (घ) प्राकृतिक गैस

152. भारत महोत्सव का आयोजन कहाँ किया गया ?
(क) नई दिल्ली (ख) वियेना (ग) मॉस्को
(घ) लन्दन (च) वॉशिंग्टन

153. 'शेरे कश्मीर' के नाम से निम्न में कौन व्यक्ति लोकप्रिय था ?
(क) फारुख अब्दुल्ला (ख) महाराजा कर्ण सिंह
(ग) शेख अब्दुल्ला (घ) मीर कासिम

154. तैंतीसवें गणतन्त्र दिवस के उपलक्ष्य में किस राष्ट्र के राष्ट्राध्यक्ष विशेष अतिथि थे ?
(क) फ्रान्स (ख) नाइजीरिया
(ग) पाकिस्तान (घ) श्रीलंका

155. अभी हाल में किस जेम्स बॉण्ड फिल्म की शूटिंग भारत में हुई ?
(क) आक्टोपसी (ख) द स्पाई हु लव्ड मी
(ग) थन्डर बॉल (घ) डॉ. नो

156. चौथे अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार मेले का आयोजन नई दिल्ली में किया गया। कौन व्यक्ति अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार मेला निगम का अध्यक्ष है ?
(क) आइ. पी. खोसला (ख) रघुराज
(ग) प्रणव कुमार मुखर्जी (घ) मोहम्मद युनुस

157. वर्ष 1981 के सर्वोत्तम कथा चित्र का पुरस्कार किसे प्रदान किया गया ?
(क) 36 चौरंगी लेन (ख) उमराव जान
(ग) दखल (घ) आरोहण

158. वर्ष 1981 का सर्वोत्तम निर्देशक, अभिनेता एवं अभिनेत्री का पुरस्कार क्रमशः किसे प्राप्त हुआ ?
(क) मृणाल सेन, नासिरुद्दीन शाह, स्मिता पाटिल
(ख) अपर्णा सेन, ओम पुरी, रेखा
(ग) अडूर गोपाल कृष्णन्, प्रताप पोथेन, जेनीफर कपूर

(शेष पृष्ठ 87 पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आधुनातन अन्तर्राष्ट्रीय गति विधियाँ

1. वर्ष 1982 का सर्वश्रेष्ठ विमान सेवा का सम्मान किसको प्राप्त हुआ ?
(क) एयर इण्डिया (ख) लुफ्तहान्सा
(ग) सबीना (घ) के. एल. एम.

2. हाल में "गोल्डेन क्रिसेन्ट" किस कारण से चर्चा का विषय बना ?
(क) ईरान-ईराक युद्ध (ख) भीषण भूकम्प
(ग) विमान दुर्घटना (घ) नशीली दवा का व्यापार

3. डा. विलियम डिब्राइस ने बर्नी क्लार्क पर स्थायी कृत्रिम हृदय का विश्व में पहली बार प्रत्तिरोपण किया। यह महान उपलब्धि कहाँ हुई ?
(क) सॉल्ट लेक सिटी, अमेरिकी (ख) मैनचेस्टर, ब्रिटेन
(ग) मार्साइ, फ्रांस (घ) वियेना, ऑस्ट्रिया

4. वर्ष 1982 का नोबेल का शान्ति पुरस्कार किसे प्रदान किया गया ?
(क) एडोल्फो पेरेज एस्क्यूबेल, अर्जेन्टीना
(ख) शरणार्थितों हेतु सं. रा. संघ का उच्चायुक्त
(ग) एल्वा मिर्डल (स्वीडन) एवं एलफॉन्सो गार्सिया रॉबेल्स (मैक्सिको)
(घ) गेब्रियल गार्सिया मारक्वेज (कोलम्बिया)

5. पश्चिमी योरोप के राष्ट्रों ने किस साम्यवादी राष्ट्र के साथ प्राकृतिक गैस के आयात के लिये समझौता किया है ?
(क) चेकोस्लोवाकिया (ख) पूर्व जर्मनी
(ग) सोवियत संघ (घ) चीन

6. निम्न में किस राष्ट्र ने हाल में नया संविधान अपना कर ब्रिटेन के साथ सभी संवैधानिक सम्बन्ध विच्छेद कर लिये हैं ?
(क) ऑस्ट्रेलिया (ख) बरमूदा
(ग) मॉरीशस (घ) कनाडा

7. 'एक्जोसेट प्रक्षेपास्त्र' का प्रयोग हाल में किसने किया ?
(क) ब्रिटेन (ख) अर्जेन्टीना
(ग) ईरान (घ) इराक

8. हांगकांग के भविष्य के प्रश्न को लेकर चीन के सम्बन्ध किस राष्ट्र से असमझौतापूर्ण हैं ?
(क) वियेतनाम (ख) ताइवान
(ग) ब्रिटेन (घ) अमेरिका

9. वर्ष 1982 में स्पेन में आयोजित विश्व कप फुटबॉल चैम्पियनशिप का विजेता कौन रहा ?
(क) इटली (ख) ब्राजील
(ग) पश्चिम जर्मनी (घ) अर्जेन्टीना

10. नामीबिया को रंग भेदी दक्षिण अफ्रीका के हाथ से मुक्त कराने के लिये संघर्षरत 'स्वापो' का प्रमुख नेता कौन है ?
(क) नेल्सन मन्डेला (ख) सैम नुजोमा
(ग) रॉबर्ट मुरोजोवा (घ) सेम्युल नेटो

11. पर्यावरण पर प्रमुख बल देने वाली ग्रीन पार्टी ने किस राष्ट्र की संसद में अभी हाल में सफल प्रवेश किया है ?
(क) फ्रान्स (ख) अमेरिका
(ग) पश्चिम जर्मनी (घ) ब्रिटेन

12. 25 अप्रैल, 1982 को इस्रायल ने कैम्प डेविड समझौते के तहत किस क्षेत्र को मिस्र को वापस लौटाया ?
(क) सिनाई (ख) फिलीस्तीन
(ग) गाजा पट्टी (घ) पश्चिमी किनारा

13. वर्ष 1982 की जनसंख्या गणना के अनुसार चीन की वर्तमान जनसंख्या कितनी है ?
(क) 50 करोड़ (ख) 90 करोड़
(ग) 100 करोड़ (घ) 135 करोड़

14. निम्न में किसने लॉर्ड केरिंग्टन के पश्चात ब्रिटेन के विदेश मन्त्री का पद संभाला ?
(क) फ्रांसिस पिम (ख) इनोक पावेल
(ग) वर्ट शटक्लिफ (घ) जॉन पारफिट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

15. अप्रैल, 1982 में सैनिक क्रान्ति के द्वारा सत्ता में आये जिया उर रहमान बंगलादेश के प्रशासन में किस पद पर हैं ?
(क) राष्ट्रपति (ख) प्रधानमन्त्री
(ग) मुख्य मार्शल लॉ प्रशासक
(घ) उपर्युक्त किसी भी पद पर नहीं

16. संयुक्त राष्ट्र संघ की महासभा ने वर्ष 1983 को किस वर्ष के रूप में मनाने का निश्चय किया ?
(क) विश्व संचार वर्ष (ख) वृद्ध वर्ष
(ग) अन्तर्राष्ट्रीय बेघर वर्ष (घ) विश्व महिला वर्ष

17. जून, 1982 में यूनीस्पेस का आयोजन कहाँ हुआ ?
(क) जेनीवा (ख) लन्दन
(ग) वियेना (घ) स्टूटगार्ट

18. 'पोलिसारियो' किस क्षेत्र की मुक्ति के लिये संघर्ष कर रही है ?
(क) मोरक्को (ख) मारितानिया
(ग) पश्चिमी सहारा (घ) सहाल

19. हेग में स्थित अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश कौन है ?
(क) नगेन्द्र सिंह (भारत) (ख) जॉर्ज एक्टन (ब्रिटेन)
(ग) लियोनिद पिकोव (सोवियत संघ)
(घ) तस्लिम ओलावेल इलियास (नाइजीरिया)

20. उत्तरी सागर में तेल उत्पादन में निम्न में कौन राष्ट्र सम्बद्ध नहीं है ?
(क) ब्रिटेन (ख) अमेरिका
(ग) नॉर्वे (घ) पश्चिमी जर्मनी

21. जेनीवा में स्टार्ट (START) वार्तालाप किन राष्ट्रों के मध्य चल रहा है ?
(क) पूर्वी जर्मनी व पश्चिमी जर्मनी
(ख) सोवियत संघ व पश्चिमी यूरोपीय राष्ट्र
(ग) सोवियत संघ व अमेरिका
(घ) अमेरिका व पश्चिमी यूरोपीय राष्ट्र

22. प्रारम्भ में किस राष्ट्र ने सोवियत गैस पाइप लाइन का खुला विरोध किया था ?
(क) ब्रिटेन (ख) अमेरिका
(ग) पश्चिमी जर्मनी (घ) इटली

23. जिम्बाब्वे की राजधानी सेलिसबरी का नया नाम क्या रखा गया है ?
(क) नुलुमा सिटी (ख) हिरारे सिटी
(ग) इलियास सिटी (घ) हरारे सिटी

24. पश्चिमी एशिया में शान्ति स्थापना हेतु कौन अमेरिकी दूत कार्यरत है ?
(क) जॉर्ज बुश (ख) पॉल न्यूमैन
(ग) फिलिप हबीब (घ) हेनरी किसिंगर

25 अभी हाल में दक्षिण अफ्रीका ने किस राष्ट्र पर आक्रमण किया ?
(क) लेसोथो (ख) बचुवानालैण्ड
(ग) नामीबिया (घ) उगांडा

26. जून, 1983 में छठें अंक्टाड सम्मेलन का आयोजन कहाँ किया जायेगा ?
(क) मनीला (ख) ब्यूनेस आयर्स
(ग) वियेना (घ) बेलग्रेड

27. अभी हाल में अन्तर्राष्ट्रीय ओलम्पिक समिति का 86वाँ अधिवेशन कहाँ सम्पन्न हुआ ?
(क) पेरिस (ख) लॉस एंजेलीस
(ग) नई दिल्ली (घ) टोकियो

28. टेनिस खिलाड़ी हु ना के अमेरिका में शरण के प्रश्न को लेकर उसका किस राष्ट्र के साथ राजनीतिक सम्बन्ध में तनाव उत्पन्न हुआ ?
(क) उत्तरी कोरिया (ख) वियेतनाम
(ग) चीन (घ) कम्पूचिया

29. कम्पूचिया के हेंग समरिन सरकार का विरोध करने वाले विद्रोही गुट का नेता कौन है ?
(क) पोल पाठ (ख) राजकुमार सिहावक
(ग) कू हिंच चिंग (घ) दियेम योनीकुरा

30. अभी हाल में किस राष्ट्र ने यूरोपीय आर्थिक समुदाय की सदस्यता त्याग करने का निर्णय लिया ?
(क) डेनमार्क (ख) स्पेन
(ग) स्वीडन (घ) ग्रीनलैण्ड

31. मार्च, 1983 में किस प्रख्यात विचारक की मृत्यु की शतवार्षिकी मानायी गयी ?
(क) हरबर्ट स्पेन्सर (ख) हीगल
(ग) ज्यां पॉल सार्त्र (घ) कार्ल मार्क्स

32. प्रथम दक्षिण-दक्षिण वार्ता का आयोजन कहाँ हुआ ?
(क) नाइरोबी (ख) रायो डी जेनीरो
(ग) नई दिल्ली (घ) क्वालालम्पुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

3. "जिरो ऑप्शन" (Zero Option) किससे सम्बंधित है ?
(क) अन्तरिक्ष अनुसन्धान (ख) हृदय चिकित्सा
(ग) दूर संचार
(घ) परमाणु अस्त्र परिसीमन

4. अभी हाल में किस राष्ट्र ने माइक्रोनेशिया को सीमित स्वतन्त्रता प्रदान की ?
(क) अमेरिका (ख) ब्रिटेन
(ग) फ्रान्स (घ) स्पेन

5. ब्रिटेन से दियागो गार्सिया द्वीप की वापसी की माँग कौन राष्ट्र कर रहा है ?
(क) सेशिल्स (ख) मोजाम्बिक
(ग) मॉरीशस (घ) मालद्वीप

6. अभी हाल में ब्राण्ड् कमीशन ने अपनी कौन सी रिपोर्ट प्रस्तुत की ?
(क) द्वितीय (ख) तृतीय
(ग) प्रथम (घ) चतुर्थ

7. 22वां ओलम्पिक खेल वर्ष 1984 में कहाँ आयोजित किया जायेगा ?
(क) नीस (ख) मॉन्ट्रियल
(ग) लॉस एंजेलीस (घ) एमस्टरडम

8. विश्व का कौन राजनीतिज्ञ लौह महिला (Iron Lady) के नाम से प्रसिद्ध है ?
(क) इन्दिरा गान्धी (ख) मारगरेट थैचर
(ग) जीन किर्कपैट्रिक (घ) श्रीमावो भण्डारनायक

9. जार्विक–70 क्या है ?
(क) कृत्रिम उपग्रह (ख) टैंक विरोधी प्रक्षेपास्त्र
(ग) कृत्रिम हृदय (घ) नया बहुमूल्य खनिज

10. सोवियत संघ का कृत्रिम उपग्रह कॉस्मोस–1402 खराब हो जाने के फलस्वरूप विखण्डित होकर कहाँ गिरा ?
(क) हिन्द महासागर (ख) अटलांटिक महासागर
(ग) प्रशान्त महासागर (घ) दक्षिणी सागर

11. किस नगर में 10वां एशियाई खेल एवं 23वां ओलम्पिक क्रमशः आयोजित किया जायेगा ?
(क) टोकियो, मेक्सिको (ख) मनीला, मनीला
(ग) सिओल, एमस्टरडम (घ) सिओल, सिओल

12. अभी हाल में किस राष्ट्र ने संसदीय शासन प्रणाली का त्याग कर अध्यक्षात्मक शासन प्रणाली अपना ली है ?
(क) चीन (ख) मेक्सिको
(ग) इन्डोनेशिया (ग) श्रीलंका

13. हाल में ऊर्जा वृक्ष (energy tree), जिसके बीजों का उपयोग दिये (lamp) की भाँति किया जा सकता है, कहाँ पाया गया ?
(क) इक्वेडोर (ख) ब्राजील
(ग) फिलीपीन्स (घ) गैबून

14. किस राष्ट्र के अन्तरिक्ष यात्रियों ने अन्तरिक्ष में सबसे अधिक समय तक लगातार रहने का कीर्तिमान स्थापित किया ?
(क) सोवियत संघ (ख) अमेरिका
(ग) दोनों संयुक्त रूप में (घ) पश्चिमी जर्मनी

15. वर्ष 1982 में संयुक्त राष्ट्र की सुरक्षा परिषद ने अपनी कार्य प्रणाली में किस भाषा के उपयोग को मान्यता प्रदान की ?
(क) स्पेनिश (ख) अरबी
(ग) हिब्रू (घ) इतालवी

16. 'सूर्य, सदा आगे व 34 गोला' किस खेल प्रतियोगिता की आदर्शवाणी (motto) है ?
(क) एशियाई खेल (ख) विश्व फुटबॉल कप
(ग) प्रुडेन्शियल कप (घ) राष्ट्रमण्डलीय खेल
(च) ओलम्पिक खेल

17. हाल में पारित किस देश का राष्ट्रीयता अधिनियम (Nationality) चर्चित हुआ ?
(क) फ्रान्स (ख) सोवियत संघ
(ग) ब्रिटेन (घ) कनाडा

18. संयुक्त राष्ट्र की महासभा में कम्पूचिया का स्थान निम्न में से किसके प्रतिनिधि के अधिकार में है ?
(क) प्रिन्स सिहानूक (ख) पोल पाट
(ग) हैंग सैमरिन (घ) कू हिन चिंग

19. पहली बार विश्व के 100 से भी अधिक राष्ट्रों ने एक साथ मिलकर किस सन्धि पर हस्ताक्षर किये ?
(क) परमाणु अस्त्र परिसीमन सन्धि
(ख) परमाणु अप्रसार सन्धि
(ग) समुद्री कानून सन्धि तृतीय
(घ) यूनीस्पेस सन्धि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

50. संयुक्त राष्ट्र के तृतीय समुद्र विधि सम्मेलन का अध्यक्ष कौन है ?
(क) रिनी जयवर्धन (ख) रूडोल्फ मैक्फरसन
(ग) टी. कोह (घ) एस. रिचर्डसन

51. समुद्री विधि सन्धि-तृतीय का घोर विरोधी कौन है ?
(क) सोवियत संघ (ख जापान
(ग) फ्रान्स (घ) अमेरिका

52 समुद्र जल से मैंगनीज पॉलिमेटालिक नोड्यूल्स के खनन का अधिकार केवल मात्र एक विकासशील राष्ट्र को मिला है, वह राष्ट्र कौन है ?
(क) चीन (ख) ब्राजील
(ग) भारत (घ) दक्षिणी कोरिया

53. वर्ष 1982 में सोवियत संघ ने पश्चिमी जगत से किस वस्तु का भारी मात्रा में आयात किया ?
(क) खनिज तेल (ख) भारी मशीनरी
(ग) गेहूँ (घ) चीनी

54. लेबनन के किस निर्वाचित राष्ट्रपति की मृत्यु बम दुर्घटना में हुई ?
(क) बशीर जेमाएल (ख) अमीन जेमाएल
(ग) मासिर जेमाएल (घ) युसुफ जेमाएल

55. चीन के साम्यवादी दल के महासचिव कौन है ?
(क) झाओ झियांग (ख) लिन कुजान् यू
(ग) वु स्यू क्वियन (घ) हुया ओबेंग

56. वर्ष 1982 का तृतीय विश्व का पुरस्कार किसे प्राप्त हुआ ?
(क) केनिथ कौन्डा (ख) श्रीमती इन्दिर गांधी
(ग) जुलियस न्येरेरे (घ) जोस लोपेज पोर्टिलो

57. पर्यावरण संरक्षण हेतु ऑर्डर ऑव द गोल्डेन आर्क से किसे सम्मानित किया गया ?
(क) डा० आत्म प्रकाश (ख) चण्डीप्रसाद भट्ट
(ग) एस० बहुगुणा (घ) इन्दिरा गांधी

58. पुलिट्जर पुरस्कार निम्न में किस क्षेत्र में प्रदान किया जाता है ?
(क) संरचनात्मक लेखन, पत्रकारिता
(ख) तकनीकी आविष्कार
(ग) पर्यावरण संरक्षण
(घ) क्रीड़ा

59. हाल में उद्घाटित ड्रुक एयर (Druk Air) वायुसेना किस राष्ट्र की है ?
(क) वियेतनाम (ख) मॉरीशस
(ग) सेशील्स (घ) भूटान

60. राजकुमारी ग्रेस (भूतपूर्व हॉलीवुड अभिनेत्री ग्रेस कैली) की मृत्यु कार दुर्घटना से हुई । वे किस राष्ट्र से सम्बन्धित थीं ?
(क) लीचटेन्स्टीन (ख) लक्समबर्ग
(ग) मोनाको (घ) जिब्राल्टर

61. सितम्बर, 82 में ईरान के एक भूतपूर्व विदेश मन्त्री को मृत्यु दण्ड दिया गया । उनका नाम बताइए ?
(क) साहिबजादा कुतुबजादा (ख) युसुफ बजारगन
(ग) हाफिज अल हुसैनी (घ) मीर हुसैन मुसावी

62. जुलाई, 1982 में सोवियत यान सोयूज—टी—6 पश्चिमी यूरोप का प्रथम व्यक्ति अन्तरिक्ष में गया, वह किस राष्ट्र से सम्बन्धित था ?
(क) ब्रिटेन (ख) फ्रान्स
(ग) इटली (घ) बेल्जियम

63. मई, 1982 में किस राष्ट्र ने नाटो की सदस्यता ग्रहण की ?
(क) बेल्जियम (ख) स्वीडन
(ग) पुर्तगाल (घ) स्पेन

64. सितम्बर-अक्टूबर, 1982 में बारहवें राष्ट्रमण्डलीय खेल ब्रिसबेन में सम्पन्न हुये । इसमें किस राष्ट्र को सर्वाधिक स्वर्ण पदक प्राप्त हुए ?
(क) ब्रिटेन (ख) ऑस्ट्रेलिया
(ग) कनाडा (घ) भारत

65. अरब लीग का फेज सम्मेलन मुख्यतः किस मुद्दे पर विचार विमर्श करने के लिये बुलाया गया था ?
(क) पश्चिमी एशिया शान्ति हेतु फेज प्लॉन
(ख) पश्चिमी एशिया शान्ति हेतु रीगन प्लॉन
(ग) पश्चिमी एशिया शान्ति हेतु सं० राष्ट्र प्लॉन
(घ) पश्चिमी एशिया शान्ति हेतु ब्रेझनेव प्लॉन

66. मई, 1982 में किस राष्ट्र ने अपने बन्दरगाह नगर खुर्रमशहर पर पुनः कब्जा कर लिया है ?
(क) ईरान (ख) इराक
(ग) जार्डन (घ) मिस्र

67. पोलेण्ड के मार्शल लॉ प्रशासन ने अक्टूबर, 1982 में पोलिश सॉलिडारिटी यूनीयन के सम्बन्ध में क्या निर्णय लिया ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(क) उस पर प्रतिबन्ध लगा दिया
(ख) उस पर से प्रतिबन्ध हटा लिया
(ग) उसकी कार्यवाही को सीमित कर दिया
(घ) उसके सम्बन्ध में कुछ भी नहीं किया गया

68 दंगाग्रस्त जाफना, क्षेत्र किस राष्ट्र में है ?
(क) श्रीलंका (ख) पाकिस्तान
(ग) निकारगुआ (घ) मलेशिया

69. 4 दिसम्बर, 1982 को अंगीकृत चीन के चौथे संविधान में राष्ट्राध्यक्ष (Head of State) के पद को—
(क) समाप्त कर दिया (ख) पुन :प्रतिष्ठित किया गया
(ग) कुछ निश्चित नहीं कहा जा सकता

70. सं० रा० संघ की महासभा ने वर्ष 1986 को किस रूप में मनाने का निश्चय किया है ?
(क) इन्टरनेशनल इयर ऑव द यूथ
(ख) इन्टरनेशनल इयर ऑव शेल्टर फॉर द होमलेस
(ग) इन्टरनेशनल इयर ऑव पीस
(घ) इन्टरनेशनल इयर ऑव द पुअर

71. नवम्बर, 1982 में किसने जापान के प्रधानमंत्री का पद संभाला ?
(क) जेंको सुजुकी (ख) जिग्मे केटो
(ग) ली सान आनेस (घ) यासुहिरो नाकासोनी

72. किस राष्ट्र का नागरिक "ऑल्टरनेटिव नोबल पुरस्कार" प्रदान करता है ?
(क) स्वीडन (ख) अमेरिका
(ग) फ्रान्स (घ) पश्चिमी जर्मनी

73. टाइम पत्रिका ने वर्ष 1982 के सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति का पुरस्कार किसे प्रदान किया ?
(क) जॉर्ज शुल्ट्ज (ख) लेक वालेसा
(ग) डा० रॉबर्ट जारविक (घ) कम्प्यूटर

74 शीतकाल में एवरेस्ट के शृङ्ग पर पहुँचने वाले प्रथम पर्वतारोही कौन हैं ?
(क) यासुओ काटो (जापान)
(ख) इनग्रिड बर्गमैन (स्वीडन)
(ग) यूली वोरोब्रसोव (सोवियत संघ)
(घ) वालेन्टीन लुब्जीन (पश्चिमी जर्मनी)

75 चर्चित एम० एक्स० प्रक्षेपास्त्र के निर्माण हेतु कौन राष्ट्राध्यक्ष बहुत इच्छुक है ?
(क) यूरी आन्द्रोपोव (ख) रोनाल्ड रीगन
(ग) फ्रांस्वा मितेरां (घ) लिऊ राऊ ची

76. वर्ष 1982 के नोबेल साहित्य पुरस्कार से सम्मानित गेब्रियल गार्सिया मारक्वेज (कोलम्बिया) की सर्वाधिक चर्चित पुस्तक कौन सी है ?
(क) वन हनड्रेड इयर्स ऑव सॉलिट्यूड
(ख) लीफ स्ट्रॉम (ग) इनोसेन्ट इरोन डेरा
(घ) द ऑटम ऑव द पेट्रिआर्क (च) इन ईवल ऑवर

77. 'द वीट एण्ड द चैफ' नामक पुस्तक की रचना किसने की है ?
(क) बारबरा वॉर्ड (ख) डेविड सेलबोर्न
(ग) फ्रांस्वा मितेरा (घ) प्रिन्स बर्नहर्ड

78. किस क्षेत्र में विशिष्ट योगदान के लिये अल्वा मिरडल (स्वीडन) एवं अलफान्सो मार्सिया रोबेल्स (मेक्सिको) को वर्ष 1982 के नोबेल शान्ति पुरस्कार से सम्मानित किया गया ?
(क) आणविक निरस्त्रीकरण (ख)अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग
(ग) अस्त्र परिसीमन (घ) उपर्युक्त सभी

79. खुन्जेरब क्या है ?
(क) ईरान द्वारा अधिकृत इराकी भूभाग
(ख) पाकिस्तान में अफगानी विद्रोहियों का शरण स्थल
(ग) पाकिस्तान का आणविक अस्त्र परीक्षण स्थल
(घ) पाकिस्तान एवं चीन को जोड़ने वाला स्त्रातजिक दर्रा

80. दो वर्ष के सैनिक शासन के पश्चात किस लातिनी अमेरिकी राष्ट्र में लोकतन्त्र वापस लौटा ?
(क) चीली (ख) अर्जेन्टीना
(ग) बोलिविया (घ) उरुग्वाये

81 मई, 1982 में इस्रायल ने किस राष्ट्र पर सैनिक आक्रमण किया ?
(क) मिस्र (ख) जार्डन
(ग) लीबिया (घ) लेबनन

82. इनग्रिड बर्गमैन, जिनकी मृत्यु हाल में हुई, ने किस क्षेत्र में सुप्रसिद्धि प्राप्त की ?
(क) गायन (ख) फिल्म अभिनय
(ग) चित्रकारी (घ) साहित्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

83. हाल में सबरा व चतीला (लेबनान) किस कारण से चर्चा के विषय बने ?
(क) बाढ़ (ख) नरसंहार
(ग) ट्रेन दुर्घटना (घ) भूकम्प

84. वर्ष 1982 को 'वृद्धजनों के वर्ष' के रूप में मनाया जा रहा है। इनकी समस्या की ओर सभी का ध्यानाकर्षित करने के लिये कौन सा नारा चुना गया है ?
(क) वृद्धावस्था को सरस बनाइए
(ख) वृद्धावस्था को भी उद्देश्यपूर्ण बनाया जाये
(ग) वृद्धजनों के जीवन को सुखी बनाइए
(घ) वृद्धजन आगे आओ

85. नवम्बर-दिसम्बर 1982 में आयोजित नवें एशियाई खेल में किन राष्ट्रों को आमन्त्रित नहीं किया गया था ?
(क) लेबनन (ख) ताइवान
(ग) इस्रायल (घ) वियेतनाम

86. नवें एशियाई खेल में कितने राष्ट्रों ने भाग लिया ?
(क) 27 (ख) 31
(ग) 33 (घ) 34

87. 19 नवम्बर, 1982 को जवाहर लाल नेहरू स्टेडियम में किसने नवें एशियाई खेल का औपचारिक उद्घाटन किया ?
(क) इन्दिरा गान्धी (ख) ज्ञानी जैल सिंह
(ग) जुआन समरांच (घ) शेख मुहम्मद हुसैन मोहेबी

88. नवें एशियाई खेलों का मंगलगीत 'अथ् स्वागतम् शुभ स्वागतम् शाश्वत सुविकसित इति शुभम्' की रचना नरेन्द्र शर्मा ने की। इस गीत का संगीत किसने प्रदान किया ?
(क) यहूदी मेनुहिन (ख) जुबीन मेहता
(ग) रविशंकर (घ) अमजद अली

89. नवें एशियाई खेलों का आयोजन किसके तत्त्वावधान में हुआ ?
(क) अन्तर्राष्ट्रीय ओलम्पिक समिति
(ख) एशियाई खेल महासंघ
(ग) एशियाई खेल परिषद
(घ) एशियाई ओलम्पिक संघ

90. नवें एशियाई खेलों में प्रतिस्पर्धियों को क्रमशः कितने स्वर्ण, रजत व कांस्य पदक प्रदान किये गये ?
(क) 463, 463, 463 (ख) 463, 484, 503
(ग) 475, 475, 495 (घ) 463, 463, 503

91. नवें एशियाई खेल में किस खिलाड़ी ने सभी प्रतिस्पर्धियों की ओर से शपथ ग्रहण की ?
(क) शिगेनोबू मुरोफोशी (ख) मोंग मी हिओ
(ग) गीता जुत्शी (घ) कलिमुल्लाह

92. कौन राष्ट्र 61 स्वर्ण, 51 रजत एवं 41 कांस्य पदक प्राप्त कर नवें एशियाई खेल में प्रथम स्थान पर रहा ?
(क) जापान (ख) चीन
(ग) उत्तरी कोरिया (घ) दक्षिण कोरिया

93. 9वें एशियाई खेल के दौरान पुरुष व महिलाओं में कौन एशिया का द्रुततम धावक सिद्ध हुआ ?
(क) सीजी ओनों (चीन), हिरोयुकी अबे (जापान)
(ख) हिशाता नोरीतोशी (जापान), डाजहेन झेंग (चीन)
(ग) रबुआत पित (मलेशिया), लीडिया डिवेगा (फिलीपीन्स)
(घ) चोंगली किय (दक्षिण कोरिया), लीडिया डिवेगा (फ़िलीपीन्स)

94. नवें एशियाई खेल में हॉकी एवं फुटबॉल का विजेता कौन रहा ?
(क) पाकिस्तान, इराक (ख) भारत, चीन
(ग) पाकिस्तान, कुवैत (घ) पाकिस्तान, चीन

95. लगातार चार एशियाई खेलों में हैमर थ्रो में स्वर्ण जीतने वाले किस खिलाड़ी को सांग यांग ली कप से सम्मानित किया गया ?
(क) काओ यान (जापान)
(ख) मसानेरी शिताकू (दक्षिण कोरिया)
(ग) मोहम्मद रेजा (ईरान)
(घ) शिगेनोबू मुरोफोंशी (जापान)

96. नवें एशियाई खेल के दौरान कुल कितने नये कीर्तिमान स्थापित किये गये ?
(क) 26 (ख) 46 (ग) 64 (घ) 74.

97. नवें एशियाई खेल में सर्वाधिक पदक जीतने वाली किस खिलाड़िन को एशियाड की जलपरी का सम्मान प्राप्त हुआ ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(क) काओरी यानासे (जापान)
(ख) युहिया ली (चीन)
(ग) मिका साइनो (जापान)
(घ) युहिया चिंग (उत्तरी कोरिया)

98. दक्षिण एशिया के किस राष्ट्र में वर्तमान संसद का कार्यकाल छह वर्ष के लिये बढ़ा दिया गया है ?
(क) मालद्वीव (ख) नेपाल
(ग) श्रीलंका (घ) बंगलादेश

99. सबरा एवं चतीला नरसंहार की जाँच के लिये किस जाँच आयोग का गठन किया गया ?
(क) कहान आयोग (ख) इतिजाहक आयोग
(ग) गुस्ताव हुसेक आयोग (घ) मुल्डन आयोग

100. अभी किस देश में विश्व की सबसे लम्बी भूमिगत सुरंग का उदघाटन किया गया ?
(क) स्विट्जरलैण्ड (ख) जापान
(ग) सोवियत संघ (घ) इटली

101. अभी हाल में हुए बुश फायर (Bush Fire) से किस राष्ट्र में करोड़ो की सम्पत्ति नष्ट हुई ?
(क) ऑस्ट्रेलिया (ख) मेक्सिको
(ग) इथोपिया (घ) अमेरिका

102. दक्षिण एशिया के राष्ट्रों के विदेश मन्त्री अगस्त, 1983 में दक्षिण एशिया सहयोग पर विचार विमर्श के लिये एकत्र होगें । बताइए कितने राष्ट्र इस बैठक में भाग लेगें ?
(क) 4 (ख) 5 (ग) 7 (घ) 9

103. जून, 1982 के निर्वाचन में किस राजनीतिक दल की विजय के फलस्वरूप अनिरुद्ध जुगनाथ मॉरीशस के प्रधानमन्त्री बने ?
(क) रेडिकल पार्टी (ख) लेबर पार्टी
(ग) नेशनल एलायन्स (घ) मॉरीशस मिलिटेन्ट मूवमेण्ट

104. ऑस्ट्रेलिया के मध्यवर्ती चुनाव में मेलकम फ्रेजर: (लिबरल पार्टी) को पराजित कर कौन व्यक्ति देश का प्रधानमन्त्री बना ?
(क) बाब हॉक (लेबर पार्टी)
(ख) वैली ग्राउट (कन्जरवेटिव पार्टी)
(ग) लिन्डसे हैसट (डिमोक्रेटिक पार्टी)
(घ) बिल मॉरी (लिबरल पार्टी)

105. परमाणु निरस्त्रीकरण के लिये शान्ति अभियान (Peace march) निम्न में कहाँ नहीं निकाली गयी ?
(क) सोवियत संघ (ख) पश्चिमी जर्मनी
(ग) ब्रिटेन (घ) अमेरिका

106. ब्राण्ड आयोग की द्वितीय रिपोर्ट का क्या नाम है ?
(क) नॉर्थ ओवर साउथ
(ख) विल नॉर्थ मीट साउथ
(ग) कॉमन क्राईसिस : नॉर्थ-साउथ कोऑपरेशन फॉर वर्ल्ड रिकवरी
(घ) इन्टरडिपेन्डेन्ट साऊथ एण्ड नॉर्थ : एन इवैलुएशन

107. कहान जांच आयोग द्वारा एरियल शेरों को चतीला व साबरा में हुए हत्याकाण्ड के लिये उत्तरदायी घोषित करने के फलस्वरूप उन्हें इस्रायल के रक्षा मन्त्री के पद से पदत्याग करना पड़ा । वर्तमान इस्रायली रक्षामन्त्री कौन है ?
(क) मोशे दियान (ख) मोशे एरेन्स
(ग) राफेल एटन (घ) निवोन लिकुड

108. अप्रैल, 1982 में विश्वविख्यात टेनिस खिलाड़ी ब्योर्न बोर्ग ने पेशावर टेनिस जगत से सन्यास लिया है । वह किस राष्ट्र के है ?
(क) अमेरिका (ख) डेनमार्क
(ग) स्वीडन (घ) हालैण्ड

109. अभी हाल में किस अफ्रीकी राष्ट्र ने अपने यहाँ कार्यरत घाना के सभी प्रवासी श्रमिकों को देश से निकाल दिया ?
(क) नाइजीरिया (ख) आइवरी कोस्ट
(ग) मोरक्को (घ) लाइबीरिया

110. पिछले एक वर्ष में किस राष्ट्रों के विद्रोही क्रिकेट खिलाड़ी रंगभेदी दक्षिण अफ्रीका में खेलने गये ?
(क) ऑस्ट्रेलिया (ख) न्यूजीलैण्ड
(ग) श्रीलंका (घ) वेस्ट इण्डीज

111. 600 एस. एस. प्रक्षेपास्त्र किस राष्ट्र का है ?
(क) अमेरीका (ख) सोवियत संघ
(ग) चीन (घ) फ्रान्स

112. ऐतिहासिक खनन के दौरान पुरातत्वविदों को किस राष्ट्र में 1500 वर्ष से पुरानी सोने की पुस्तक मिली है ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(क) मिस्र (ख) पाकिस्तान
(ग) मेक्सिको (घ) श्रीलंका

113. लेबनन में शान्ति बनाये रखने के लिये तैनात अन्तर्राष्ट्रीय सेना में किस राष्ट्र के सैनिक नहीं थे ?
(क) अमेरिका (ख) इटली
(ग) फ्रान्स (घ) ब्रिटेन

114. विश्व का प्रथम इलेक्ट्रॉनिक उपान्यास 'ब्लाइंड फराओं' (लेखक बर्क कैम्पबेल) कहाँ प्रकाशित किया गया ?
(क) जापान (ख) ब्रिटेन
(ग) ऑस्ट्रेलिया (घ) अमेरीका

115. वर्ष 1982 के लिये किसने विश्व सुन्दरी का खिताब जीता ?
(क) मारिआसेला अल्वारेज (डोमिनिकन रिपब्लिक)
(ख) इंगेबोर्ग ड्रेविट्स (पश्चिमी जर्मनी)
(ग) शर्ले कोनरां (ब्रिटेन)
(घ) अन्ना फायड (पूर्व जर्मनी)

116. अभी हाल में न्यू यॉर्क स्थित किस संगठन ने अमेरिका को ऋण की आखिरी किस्त का भुगतान कर अपने मुख्यालय की इमारत का स्वामित्व प्राप्त किया ?
(क) संयुक्त राष्ट्र संघ
(ख) विश्व बैंक
(ग) अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष
(घ) अन्तर्राष्ट्रीय ओलम्पिक समिति

117. वर्ष 1982 के जेरुसलम पुरस्कार से किस लेखक को सम्मानित किया गया ?
(क) जेन एन फिलिप्स (ख) क्रिस्टी हेफनर
(ग) वी. एस. नायपॉल (घ) समान रशदी

118. पिछले दिनों में अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष ने किस राष्ट्र को विवादास्पद 11 अरब डॉलर का ऋण प्रदान किया ?
(क) इस्रायल (ख) निकारगुआ
(ग) अर्जेन्टीना (घ) दक्षिण अफ्रीका

119. नवम्बर, 1982 में सलांग सुरंग में दुर्घटना से सैकड़ों व्यक्तियों की मृत्यु हुई। यह सुरंग किस राष्ट्र में है ?
(क) सीरिया (ख) अफगानिस्तान
(ग) ऑस्ट्रिया (घ) उगान्डा

120. सोवियत साम्यवादी दल के महासचिव व सोवियत राष्ट्रपति लियोनिद ब्रेझनेव किस अवधि से सोवियत राजनीति में शीर्षस्थ रहे ?
(क) 1962—1982 (ख) 1964—1982
(ग) 1967—1982 (घ) 1970—1982

121. वर्ष 1982 को हिमालय कार रैली का कौन विजेता रहा ?
(क) जयन्त शाह (केनिया)
(ख) रुडोल्फ स्टोयल (ऑस्ट्रिया)
(ग) रोजर मैगरीज (ब्रिटेन)
(घ) शेखर मेहता (केनिया)

122. हाल में स्पेन में सम्पन्न चुनाव के फलस्वरूप किस राजनीतिक दल ने सरकार बनायी ?
(क) पॉप्युलर एलायंस (ख) यू. सी. बी. पार्टी
(ग) सोशलिस्ट वर्कर्स पार्टी (घ) सी डी. एस. पार्टी

123. 9 अक्टूबर, 1982 को विख्यात नोएल बेकर का निधन हो गया। उन्होंने किस क्षेत्र में प्रसिद्धि प्राप्त की थी ?
(क) राजनीति (ख) दर्शनशास्त्र
(ग) ऐथलेटिक्स (घ) उपर्युक्त सभी

124. उन दो राष्ट्रों का नाम बताइए जिन्होंने पिछले दो दशक से चली आ रही शत्रुता को त्याग कर अभी हाल में एक द्विपाक्षिक सन्धि पर हस्ताक्षर किया है ?
(क) क्यूबा व अमेरिका
(ख) जापान व सोवियत संघ
(ग) सोवियत संघ व चीन
(घ) पनामा व अमेरिका

125. वर्ष 1982 में किन दो राष्ट्रों के मध्य पाठ्य-पुस्तक युद्ध छिड़ गया था ?
(क) चीन व उत्तर कोरिया
(ख) कम्पूचिया व लाओस
(ग) चीन व ताइवान
(घ) जापान व दक्षिण कोरिया

126. इस समय सर्वाधिक फिलिस्तीनी कहाँ रह रहे हैं ?
(क) लेबनन (ख) जार्डन
(ग) पश्चिमी किनारा व गाजा पट्टी (घ) इस्रायल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

127. अभी हाल में जिम्बाब्वे के किस नेता को अपनी जान का खतरा होने के कारण ब्रिटेन में शरण लेनी पड़ी ?
(क) रॉबर्ट मुगाबे (ख) जोशुआ एन्कोमो
(ग) न्गुयी व थियौंग (घ) रिचर्ड लीके

128. युद्ध में हार के फलस्वरूप किस देश के राष्ट्राध्यक्ष को पदत्याग करना पड़ा ?
(क) लेबनान (ख) अल सल्वाडोर
(ग सोमालिया (घ) अर्जेन्टीना

129. जून, 1982 में निरस्त्रीकरण पर संयुक्त राष्ट्र संघ का दूसरा सम्मेलन कहाँ आयोजित किया गया ?
क) जेनीवा (ख) न्यूयॉर्क
(ग) वियेना (घ) बर्न

130. आयकर की चोरी के कारण किस विश्वविख्यात अभिनेत्री को जेल जाना पड़ा ?
(क) सोफिया लॉरेन ख) जेन फोन्डा
(ग) फराह फॉसिट (घ) मेरील स्ट्रीप

131. मई, 1982 में किस राष्ट्र में पोप जॉन प्रॉल की ऐतिहासिक यात्रा के साथ पहली बार किस कैथलिक धर्मगुरु ने एक प्रोटेस्टेंट देश में कदम रखा ?
(क) अमेरिका (ख) ऑस्ट्रेलिया
(ग) ब्रिटेन (घ) पश्चिमी जर्मनी

132. निम्नांकित में किस व्यक्ति ने हाल में लगातार चौथी बार राष्ट्रपति का चुनाव जीतने का श्रेय प्राप्त किया ?
(क) बेन बेल्ला (अलजीरिया)
(ख) जनरल सुहार्तो (इन्डोनेशिया)
(ग) ऊ सान यू (बर्मा)
(घ) अल्बर्न नेटो (अंगोला)

133. निम्न में कौन राष्ट्र इस समय गृहयुद्ध के दौर से नहीं गुजर रहा है ?
(क) अल सल्वाडोर (ख) निकारगुआ
(ग) जिम्बाब्वे (घ) लीबिया

134. रूबिक क्यूब (Rubic Cube) के प्रणेता एर्नो रूबिक किस देश से सम्बन्धित हैं ?
(क) फ्रान्स (ख) कनाडा
(ग) हंगरी (घ) ऑस्ट्रिया

135. पाकिस्तान ने निम्न में भारत के किस स्थान पर अपना दावा प्रस्तुत किया है ?
(क) गिलगित (ख) स्कर्दू
(ग) हुंजा (घ) उपर्युक्त सभी

136. निम्न में कौन राष्ट्र संयुक्त राष्ट्र संघ का सदस्य नहीं है ?
(क) पूर्व जर्मनी (ख वियेतनाम
(ग) उत्तरी कोरिया (घ) स्विट्जरलैण्ड

137. फॉकलैण्ड द्वीप समूह को निम्न में किस नाम से और जाना जाता है ?
(क) फाक्सने (ख) गूजग्रीन
(ग) मालविनास (घ) स्टैनले

138. अर्जेन्टीना की सेना ने ब्रिटेन के सैनिकों के सामने फॉकलैण्ड की राजधानी में अपने हथियार डाल दिये। फॉकलैण्ड की राजधानी का क्या नाम है ?
(क) पोर्ट स्टैनले (ख) पोर्ट डार्विन
(ग) पोर्ट पैबल (घ) पोर्ट फाक्सने

139. फॉकलैण्ड युद्ध के दौरान चर्चित जनरल बेलग्रानो एवं शेफिल्ड क्रमशः क्या है ?
(क) अर्जेन्टीना व ब्रिटेन के सेनाध्यक्ष
(ख) अर्जेन्टीना व ब्रिटेन के युद्धपोत
(ग) ब्रिटेन व अर्जेन्टीना के युद्ध अभियान का नाम
(घ) ब्रिटेन व अर्जेन्टीना के दूरभेदी प्रक्षेपास्त्र

140. निम्न में किस व्यक्ति ने फॉकलैण्ड युद्ध के दौरान अर्जेन्टीना व ब्रिटेन के बीच मध्यस्थ की भूमिका निभायी ?
(क) अलेक्जेंडर हेग (अमेरिका)
(ख) फिडेल कास्त्रो (क्यूबा)
(ग) पियरे त्रूदो (कनाडा)
(घ) अलफ्रेडो स्ट्रोयसनर (पैराग्वाये)

141. राष्ट्रमण्डलीय देशों का क्षेत्रीय सम्मेलन कहाँ सम्पन्न हुआ ?
(क) सिंगापुर (ख) सूबा (फिजी)
(ग) ब्रिसबेन (आस्ट्रेलिया) (घ) ओटावा (कनाडा)

142. मार्च में लन्दन में सम्पन्न ओपेक सम्मेलन में खनिज तेल का आधार मूल्य 5 डॉलर कम कर प्रति बैरल कितना निश्चित किया गया ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(क) 32 डालर (ख) 30 डालर
(ग) 29 डालर (घ) 27 डालर

143. वर्ष 1982 में पिछले दो दशक में ओपेक राष्ट्रों का कुल तेल उत्पादन गैर साम्यवादी विश्व के कुल तेल उत्पादन के आधे से भी कम था। यह बताइए वर्ष 1982 का सर्वाधिक तेल उत्पादक राष्ट्र कौन था ?
(क) सौदी अरब (ख) सोवियत संघ
(ग) अमेरिका (घ) कुवैत

144. हाल में प्रख्यात लेखक आर्थर कोएस्लर का निधन हुआ। उनकी सर्वाधिक चर्चित पुस्तक कौन सी है ?
(क) एनीमल फार्म (ख) एक्सपेरिमेन्ट विथ अनट्रूथ
(ग) परालेक्स्ड वर्ल्ड (घ) डार्कनेस एट नून

145. अफगानिस्तान प्रश्न के शान्ति समाधान के लिये संयुक्त राष्ट्र संघ के विशेष प्रतिनिधि कौन हैं ?
(क) डियागो कार्डोवेज (ख) डेविड मैकडावेल
(ग) जार्जेस रेकी (घ) ओलाफ पॉम

146. इस समय गुट निरपेक्ष आन्दोलन के समन्वय ब्यूरो का अध्यक्ष कौन राष्ट्र है ?
(क) क्यूबा (ख) यूगोस्लाविया
(ग) भारत (घ) मिस्र

147. मार्च, 1982 में नयी दिल्ली में आयोजित गुट निरपेक्ष शिखर सम्मेलन कौन सा था ?
(क) पांचवा (ख) छठा
(ग) सातवाँ (घ) आठवाँ

148. सातवें गुट निरपेक्ष शिखर सम्मेलन के महासचिव कौन थे ?
(क) पी० वी० नरसिंह राव (ख) नटराज कृष्णन
(ग) एम० के० रसगोत्र (घ) कुंवर नटवर सिंह

149. आठवाँ गुट निरपेक्ष शिखर सम्मेलन कहाँ आयोजित किया जायगा ?
(क) बेलग्रेड (ख) बगदाद
(ग) नाइरोबी (घ) अभी निश्चित नहीं है

150. अभी हाल में किस अफ्रीकी राष्ट्र ने एशियाई लोगों की जब्त की गयी सम्पत्ति को लौटाने का निर्णय लिया है ?
(क) लीबिया (ख) उगान्डा
(ग) केनिया (घ) नाइजीरिया

151. निम्न में कौन सा 'ऑस्कर' पुरस्कार गान्धी फिल्म को प्राप्त नहीं हुआ ?
(क) सर्वश्रेष्ठ फिल्म (ख) सर्वश्रेष्ठ निर्देशन
(ग) सर्वश्रेष्ठ अभिनेता (घ) सर्वश्रेष्ठ सह अभिनेत्री
(च) सर्वश्रेष्ठ वेशभूषा (छ) सर्वश्रेष्ठ कला निर्देशन
(ज) सर्वश्रेष्ठ छायांकन (झ) सर्वश्रेष्ठ सम्पादन
(ञ) सर्वश्रेष्ठ मौलिक स्क्रीनप्ले

152. किस भारतीय को पहली बार ऑस्कर पुरस्कार जीतने का श्रेय प्राप्त हुआ ?
(क) भानु अथैय्या (ख) रोहिणी हट्टनगड़ी
(ग) रोशन सेठ (घ) मोती कोठारी

उत्तरमाला

1 ख, 2 घ, 3 क, 4 ग, 5 ग, 6 घ, 7 ख, 8 ग, 9 क, 10 ख, 11 ग, 12 क, 13 ग, 14 क, 15 ग, 16 क, 17 ग, 18 ग, 19 घ, 20 ख, 21 ग, 22 ख, 23 घ, 24 ग, 25 क, 26 घ, 27 ग, 28 ग, 29 ख, 30 घ, 31 घ, 32 ग, 33 घ, 34 क, 35 ग, 36 क, 37 ग, 38 ख, 39 ग, 40 क, ख, 41 घ, 42 ग, 43 ग, 44 क, 45 ख, 46 क, 47 ग, 48 ख, 49 ग, 50 ग, 51 घ, 52 ग, 53 ग, 54 क, 55 घ, 56 ग, 57 घ, 58 क, 59 घ, 60 ग, 61 क, 62 ख, 63 घ 64 ख, 65 क, 66 क, 67 क, 68 क, 69 ख, 70 ग, 71 घ, 72 क, 73 घ, 74 क, 75 ख, 76 क, 77 ग, 78 घ, 79 घ, 80 ग, 81 घ, 82 ख, 83 ख, 84 क, 85 ख, ग, 86 ग, 87 ख, 88 ग, 89 ख, 90 घ, 91 ग, 92 ख, 93 ग, 94 क, 95 घ, 96 घ, 97 क, 98 ग, 99 क, 100 ख, 101 क, 102 ग, 103 घ, 104 क, 105 क, 106 ग, 107 ख, 108 ग, 109 क, 110 ग, घ, 111 ख, 112 घ, 113 घ, 114 घ, 115 क, 116 क, 117 ग, 118 घ, 119 ख, 120 ख, 121 क, 122 ग, 123 घ, 124 ग, 125 घ, 126 ग, 127 ख, 128 घ, 129 ख, 130 क, 131 ग, 132 ख, 133 घ, 134 ग, 135 घ, 136 घ, 137 ग, 138 क, 139 ख, 140 क, 141 ख, 142 ग, 143 ख, 144 घ, 145 क, 146 ग, 147 ग, 148 घ, 150 ख, 151 घ, 152 क। □□

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उ० प्र० सचिवालय प्रवर वर्ग सहायक तथा अवर वर्ग सहायक परीक्षा हेतु

विशिष्ट परिशिष्ट

सामान्य ज्ञान का मॉडल प्रश्नपत्र

प्र. 1. भारत के राष्ट्रपति की निर्वाचन प्रक्रिया का संक्षिप्त विवरण दीजिये ?

उ. 1. भारतीय राष्ट्रपति का निर्वाचन 5 वर्षों के लिये होता है। निर्वाचन प्रत्यक्ष रूप से जनता द्वारा न होकर जनता के निर्वाचित प्रतिनिधियों द्वारा अप्रत्यक्ष रूप से किया जाता है। इस कार्य के लिये एक निर्वाचक मण्डल की संवैधानिक व्यवस्था है जिसके अन्तर्गत (अ) संसद के दोनों सदस्यों के निर्वाचित सदस्य और (ब) राज्यों की विधान सभाओं के निर्वाचित सदस्य होते हैं। इस संदर्भ में स्मरणीय रहे कि सदनों के मनोनीत सदस्य राष्ट्रपति के निर्वाचन में भाग नहीं लेते हैं। यह चुनाव एकल संक्रमणीय मत प्रणाली द्वारा होता है। मतदान गुप्त रूप से किया जाता है और निर्वाचन में आनुपातिक प्रतिनिधित्व के सिद्धांत का प्रयोग किया जाता है। एकल संक्रमणीय मत पद्धति के अनुकूल सफलता प्राप्त करने वाले प्रत्याशी को 'न्यूनतम कोटा' प्राप्त करना होता है। न्यूनतम कोटा निर्धारित करने के लिये निम्न सूत्र प्रयोग में लाया जाता है :—

$$\text{न्यूनतम कोटा} = \frac{\text{दिये गये मतों की कुल संख्या} + 1}{\text{निर्वाचित होने वाले प्रत्याशी की सं०} + 1}$$

इसी प्रकार, आनुपातिक प्रतिनिधित्व के सिद्धांत के अन्तर्गत प्रत्येक सदस्य के मत का मूल्य अलग-अलग होता है।

राज्य विधान सभाओं के निर्वाचित सदस्यों का मत मूल्य इस प्रकार निर्धारित किया जाता है—

$$\frac{\text{राज्य की कुल जनसंख्या}}{\text{विधान सभा के निर्वाचित सदस्यों की संख्या}} \div 1000$$

संसद के निर्वाचित सदस्यों का मत मूल्य इस प्रकार निर्धारित किया जाता है—

$$= \frac{\text{राज्य विधान सभाओं के समस्त निर्वाचित सदस्यों के मतों का कुल मूल्य}}{\text{संसद के दोनों सदनों के निर्वाचित सदस्यों की कुल संख्या}}$$

इसके अतिरिक्त एकल संक्रमणीय मत पद्धति के अन्तर्गत निर्वाचक मण्डल के प्रत्येक सदस्य को उतने ही मत देने का अधिकार होता है जितने कि कुल प्रत्याशी होते हैं। प्रत्येक मतदाता प्रत्येक प्रत्याशी के नाम के सामने (1) (2) (3) ·····करके वरीयता क्रम अंकित करता है। इस प्रकार, मतों की गणना प्रारम्भ होती है। यदि प्रथम वरीयता प्राप्त मतों की गणना में न्यूनतम कोटे के बराबर मत नहीं प्राप्त होते तो द्वितीय, फिर तृतीय ·····और इसी प्रकार वरीयता क्रम तक की गणना होती है। किन्तु जब अगले वरीयता के अनुसार मतों की गणना की जाती है तो उस प्रत्याशी को सूची से निकाल दिया जाता है जिसको सबसे कम मत प्राप्त होता है। उसके मतों को (अ) मतपत्रों में अंकित द्वितीय वरीयता क्रम के आधार पर शेष उम्मीदवारों में बाँट दिया जाता है और यह क्रम उस समय तक चलता रहता है, जब तक कि किसी प्रत्याशी को निश्चित कोटा नहीं प्राप्त हो जाता है।

प्र 2. (1) प्रथम एशियाई खेलों का आयोजन कब और कहाँ हुआ था ?

(2) नवें एशियाई खेलों का आयोजन कब और कहाँ हुआ ?

(3) नवें एशियाई खेलों का उद्घाटन कहाँ और किसने किया ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(4) नवें एशियाई खेलों का शुभ चिन्ह तथा शब्द चिन्ह क्या था ?

(5) नवें एशियाई खेलों में कुल कितने देशों ने भाग लिया ?

(6) नवें एशियाई खेलों में खेलों की संख्या कितनी थी ?

(7) नवें एशियाई खेलों में प्रदर्शन खेल कौन-कौन थे ?

(8) नवें एशियाई खेलों में प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान क्रमशः किन देशों ने प्राप्त किया ?

(9) नवें एशियाई खेलों में भारत का कौन सा स्थान रहा और इसने कितने पदक प्राप्त किये ?

(10) भारत ने नवें एशियाई खेलों की किस स्पर्धा में सर्वाधिक स्वर्ण पदक प्राप्त किये ?

(11) नवें एशियाई खेलों में पुरुष हॉकी विजेता तथा उप-विजेता कौन रहा ?

(12) एशियाई खेलों का चिन्ह क्या है ?

(13) आगामी एशियाई खेलों का आयोजन कहाँ होगा ?

(14) आगामी ओलम्पिक खेलों का आयोजन कब और किस स्थान पर होगा ?

(15) एशियाई खेल महासंघ के वर्तमान अध्यक्ष कौन हैं ?

उ. 2. (1) मार्च, 1951 में नयी दिल्ली में (2) 19 नवम्बर, 82से 4 दिसम्बर, 82 तक नयी दिल्ली में (3) 19 नवम्बर, 82 को नयी दिल्ली के जवाहर लाल नेहरू स्टेडियम में भारत के राष्ट्रपति श्री ज्ञानी जैल सिंह द्वारा (4) शुभ चिन्ह-'अप्पू' तथा शब्द चिन्ह-जंतर-मंतर (5) 33 देशों ने (6) 21 (7) 'कबड्डी' और 'सेपकटकरा' (8) 1. चीन, 2. जापान, 3. द० कोरिया (9) पंचम स्थान तथा कुल 57 पदक [13 स्वर्ण–19 रजत तथा 25 कांस्य पदक] (10) एथलेटिक्स [4] (11) विजेता–पाकिस्तान; उप-विजेता–भारत (12) 'सूर्य' (13) द० कोरिया की राजधानी सियोल में (14) 1984 लॉस एन्जिलस [संयुक्त राज्य अमेरिका में] (15) राजा भालिन्द्र सिंह

प्र. 3. अधोलिखित अक्षरों के पूरे शब्द लिखिये :—

(1) O.P.E.C. (2) A.S.E.A.N. (3) S.A.L.T. (4) O.N.G.C. (5) N.A.T.O. (6) T.A.P.P. (7) C.O.F.E. P.O.S.A. (8) EXIM (9) N.A.M. (10) U.N.C.T.A.D. (11) F.I.C.C.I. (12) A.D.B. (13) G.A.T.T. (14) B.O.A.C. (15) T.R.Y.S.E.M. (16) I.N.S.A.T. (17) I.M.F. (18) I.A.E.A. (19) H.U.D.C.O (20) B.H.E.L (21) U.N.I.C.E.F (22) P.L.O

उ. 3. (1) आर्गेनाइजेशन ऑव पेट्रोलियम एक्सपोर्टिंग कन्ट्रीज (2) एसोसियेशन ऑव साउथ ईस्ट एशियन नेशन्स (3) स्ट्रेटजिक आर्म्स लिमिटेशन टॉक्स (4) ऑयल एण्ड नेचुरल गैस कमीशन (5) नार्थ एटलांटिक ट्रीटी आर्गेनाइजेशन (6) तारापुर एटॉमिक पावर प्लांट (7) कन्जरवेशन ऑव फॉरेन एक्सचेंज एण्ड प्रीवेंशन ऑव स्मगलिंग एक्ट (8) एक्सपोर्ट-इम्पोर्ट बैंक ऑव इण्डिया (9) नॉन अलाइनड् मूवमेन्ट (10) यूनाइटेड नेशंस कान्फ्रेन्स आन ट्रेड एण्ड डेवलपमेन्ट (11) फेडरेशन ऑव इण्डियन चेम्बर्स ऑव कामर्स एण्ड इन्डस्ट्री (12) एशियन डेवलपमेन्ट बैंक (13) जनरल एग्रीमेन्ट आन ट्रेड एण्ड टैरिफ (14) ब्रिटिश ओवरसीज एअरवेज कार्पोरेशन (15) ट्रेनिंग ऑव रूरल यूथ फॉर सेल्फ एम्प्लायमेन्ट (16) इण्डियन नेशनल सैटेलाइट (17) इन्टरनेशनल मानीटरी फण्ड (18) इन्टरनेशनल एटामिक एनर्जी एजेन्सी (19) हाउसिंग एण्ड अरबन डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन (20) भारत हैवी इलैक्ट्रिकल्स लिमिटेड (21) यूनाइटेड नेशन्स इन्टरनेशनल चिल्ड्रेन्स इमरजेंसी फण्ड (22) फिलीस्तीनी लिबरेशन ऑर्गेनाइजेशन

प्र. 4. अधोलिखित पदधारियों के नाम बताइये :

(1) केन्द्रीय वित्तमंत्री (2) पंजाब के मुख्यमंत्री (3) आंध्रप्रदेश के मुख्यमंत्री (4) अध्यक्ष, रिजर्व बैंक ऑव इण्डिया (5) अध्यक्ष, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (6) भारत के मुख्य चुनाव आयुक्त (7) उ. प्र. के मुख्य न्यायाधीश (8) अध्यक्ष,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संघीय लोक सेवा आयोग (9) अध्यक्ष, परमाणु शक्ति आयोग (10) मुख्य न्यायाधीश, सर्वोच्च न्यायालय (11) भारत के स्थल तथा वायुसेनाध्यक्ष (12) जनगणना आयुक्त (13) केन्द्रीय रक्षा मंत्री (14) गुटनिरपेक्ष आन्दोलन के अध्यक्ष (15) सोवियत संघ के राष्ट्रपति (16) उ० प्र० के मुख्य सचिव (17) वित्त आयोग के अध्यक्ष (18) केन्द्रीय रेल मंत्री

उ. 4. 1. प्रणव कुमार मुखर्जी 2. दरबारा सिंह 3. एन० टी. रामाराव 4, मनमोहन सिंह 5. डा. श्रीपती माधुरी शाह 6. राम कृष्ण त्रिवेदी 7. न्यायमूर्ति सतीश चन्द्र 8. एम. एल. शहारे 9. एच. एन. सेठना 10. यशवन्त विष्णु चन्द्रचूड़ 11. स्थल सेनाध्यक्ष-जनरल : के. बी. कृष्णाराव, वायु सेनाध्यक्ष : एयर चीफ मार्शल दिलबाग सिंह 12. पी. पद्मनाभ 13. आर. वेंकटरमन 14, श्रीमती इंदिरा गांधी 15. यूरी आन्द्रोपोव 16. राजेन्द्र पाल खोसला 17. वाई. बी. चव्हाण 18. अब्दुल गनी खाँ चौधरी

प्र. 5. (अ) निम्नलिखित पुस्तकों के लेखक का नाम दीजिये :

(1) अकबरनामा (2) हिन्दू व्यू ऑव लाइफ (3) कादम्बरी (4) सत्यार्थ प्रकाश (5) आनन्द मठ (6) लाइफ डिवाइन (7) पंचतंत्र (8) गुलेनामा (9) वार एण्ड पीस (10) गीत गोविन्द (11) कागज ते कनवास (12) एशियन ड्रामा (13) फ्रीडम एट मिडनाइट (14) कैंसर वार्ड (15) टॉनिक ऑव कैन्सर (16) द अनहैपी इण्डिया (17) चित्रलेखा (18) गाईड

उ. 5 (अ) (1) अबुल फजल (2) डा. राधा कृष्णन (3) बाण भट्ट (4) दयानन्द सरस्वती (5) बंकिम चन्द्र चटर्जी (6) अरविन्द घोष (7) विष्णु शर्मा (8) फिराक गोरखपुरी (9) लियो टाल्स्टॉय (10) जयदेव (11) अमृता प्रीतम (12) गुन्नार मिरडल (13) लैरी कालिन्स तथा डोमिनिक लैपियर (14) अलैक्जेण्डर सोल्जेनित्सिन (15) हेनरी मिलर (16) लाला लाजपत राय (17) भगवती चरण वर्मा (18) आर. के. नारायण

प्र. 5 (ब) अधोलिखित देशों की राजधानियों के नाम लिखिये :—

(1) उत्तरी कोरिया (2) ईरान (3) लेबनान (4) स्विट्जरलैण्ड (5) अर्जेन्टीना (6) मारीशस (7) चीन (8) मलेशिया (9) यूगोस्लाविया (10) भूटान (11) इंडोनेशिया (12) पोलेन्ड (13) दक्षिणी अफ्रीका (14) प. जर्मनी (15) चेकोस्लोवाकिया (16) इराक (17) सऊदी अरब (18) इजरायल (19) कम्बोडिया

उ 5 (ब) (1) प्योंगयांग (2) तेहरान (3) बेरुत (4) बर्न (5) ब्यूनस आयर्स (6) पोर्ट लुईस (7) बीजिंग (8) कुआलालम्पुर (9) बेलग्रेड (10) थिम्पू (11) जकार्ता (12) वारसा (13) प्रीटोरिया (14) बॉन (15) प्रेग (16) बगदाद (17) रियाद (18) दमिश्क (19) नोमपेन्ह

प्र 6 (अ) अधोलिखित देशों की मुद्रा का नाम बताइये ?

(1) फ्रांस (2) यू. एस. ए. (3) यू. एस. एस. आर. (4) इटली (5) नेपाल (6) ईरान (7) बंगलादेश (8) सऊदी अरब (9) चीन (10) जापान (11) पुर्तगाल (12) वर्मा (13) मिस्र (14) थाईलैण्ड (15) श्रीलंका (16) आस्ट्रेलिया (17) यूगोस्लाविया (18) यू. के.

उ. 6 (अ) (1) फ्रांक (2) डालर (3) रूबल (4) लीरा (5) रुपी (6) रियाल (7) टाका (8) रियाल (9) यूआन (10) येन (11) एस्कुडो (12) क्यात (13) पाउन्ड (14) बाह्ट (15) रुपी (16) डालर (17) दीनार (18) पाउण्ड

प्र. 6 (ब) अधोलिखित नगर किस नदी के तट पर बसे हैं ?

(1) बर्लिन (2) टोकियो (3) वारसा (4) रंगून (5) न्यूयॉर्क (6) बेलग्रेड (7) लन्दन (8) पेरिस (9) रोम, (10) वाशिंगटन (11) काहिरा (12) बगदाद (13) हैदराबाद (14) गौहाटी (15) जबलपुर (16) सूरत (17) श्रीनगर (18) कलकत्ता

उ. 6 (ब) (1) स्प्री (2) अराकावा (3) विस्टुला (4) इरावती (5) हडसन (6) डेन्यूब (7) टेम्स (8) शॉन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

(9) टाईबर (10) पोटोमेक (11) नील नदी (12) टाइग्रिस (13) मूसी (14) ब्रह्मपुत्र (15) नर्मदा (16) ताप्ती (17) झेलम (18) हुगली।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्र. 7 (अ) अधोलिखित शब्दावली किन खेलों से सम्बन्धित है ?

(1) डायमण्ड (2) बोगी (3) ड्राप (4) पिचर (5) केनन (6) नॉक आउट (7) चिकन (8) एल. बी. डब्लू (9) गुगली (10) चेकमेट (11) थ्रो इन (12) हाफ वाली (13) बोगी (14) शार्ट कार्नर (15) चूकर (16) ड्यूस (17) बूस्टर

उ. 7 (अ) (1) बेसबाल (2) गोल्फ (3) बैडमिन्टन (4) बेसबाल (5) बिलियर्ड्स (6) मुक्केबाजी (7) ब्रिज (8) क्रिकेट (9) क्रिकेट (10) शतरंज (11) फुटबाल (12) टेनिस (13) गोल्फ (14) हॉकी (15) पोलो (16) टेनिस (17) वालीबाल

प्र. 7 (ब) अधोलिखित खेलों में प्रत्येक पक्ष के खिलाड़ियों की संख्या व मैदान की नाप बताइये ?

(1) बासकेटबाल (2) हॉकी (3) फुटबाल (4) वालीबाल (5) वाटरपोलो (6) रग्बी (7) बेसबाल (8) पोलो (9) क्रिकेट पिच (10) बैडमिंटन

उ. 7 (ब) (1) 5; 85 × 56 फीट (2) 11; 100 × 60 गज (3) 11; 130 × 56 गज (4) 6; 60 × 30 फिट (5) 7; 30 × 20 गज (6) 15; 110 × 75 गज (7) 9; 90 फुट का प्रत्येक बेस, वर्ण की दूरी (8) 4; 300 × 200 गज (9) 11; 22 गज की दूरी के मध्य विकेट (10) 17′ × 44′ (सिंगल्स), 20′ × 44′ (डबल्स)

प्र. 7 (स) अधोलिखित ट्राफियाँ/कप किन खेलों से संबंधित है ?

(1) एशेज (2) डेविस कप (3) विम्बिलडन (4) मरडेका कप (5) ग्रेण्ड प्रिक्स (6) डर्बी (7) यूबेर कप (8) रणजी ट्राफी (9) डूरंड कप (10) संतोष ट्राफी (11) आगा खाँ कप (12) नेहरू ट्राफी (13) रोवर्स कप (14) ईरानी कप (15) शीशमहल

उ. 7 (स) (1) क्रिकेट (2) लॉन टेनिस (3) लॉन टेनिस (4) फुटबॉल (5) लॉन टेनिस (6) घुड़दौड़ (7) बैडमिंटन (8) क्रिकेट (9) फुटबाल (10) फुटबाल (11) हॉकी (12) हॉकी (13) फुटबाल (14) क्रिकेट (15) क्रिकेट

प्र. 8 (अ) निम्नलिखित के आविष्कर्त्ताओं के नाम बताइये ?

उ. 8 (अ) (1) टेलीविजन (2) डायनेमाइट (3) ऑक्सीजन (4) टेलीफोन (5) रिवॉल्वर (6) सिलाई मशीन (7) फाउण्टेन पेन (8) ट्रांजिस्टर (9) टाइपराइटर (10) बाइसिकिल (11) विद्युत बल्व (12) चेचक का टीका (13) पेन्सिलिन (14) छापाखाना

(1) बेअर्ड (2) एल्फ्रेड नोबिल (3) प्रीस्टले (4) ग्राहम बेल (5) कोल्ट (6) इलियास हो (7) वाटरमैन (8) डब्लू. गोक्ल (9) शोल्ज (10) मैकमिलन (11) थामस अल्वा एडीसन (12) एडवर्ड जेनर (13) फ्लेमिंग (14) कैक्सटन

प्र. 8 (ब) अधोलिखित इकाइयाँ किन मापों से संबंधित है ?

(1) मीटर (2) किलोग्राम (3) सेकेण्ड (4) ऐम्पीयर (5) केल्विन (6) केन्डेला

उ. 8 (ब) (1) लम्बाई (2) द्रव्यमान (3) समय (4) विद्युत धारा (5) ताप (6) दीप्ति प्रभावोत्पादकता

प्र. 8 (स) कारण स्पष्ट कीजिये :—

(1) नदी के पानी की अपेक्षा समुद्र के पानी में तैरना सरल होता है ?

(2) प्रेशर कूकर में खाना क्यों जल्दी पक जाता है ?

उ. 8 (स) (1) नदी के पानी का घनत्व समुद्र के पानी के घनत्व, की अपेक्षा कम होता है, जिसके कारण नदी के पानी में तैरने पर कम उछाल का अनुभव होता है। जबकि समुद्र के पानी का घनत्व अधिक होने के कारण अधिक उछाल का अनुभव होता है और व्यक्ति सुगमता से तैर सकता है ;

(2) प्रेशर कुकर में अधिक दाब उत्पन्न होता है जिससे ताप भी बढ़ जाता है। अतः अधिक ताप के कारण खाना शीघ्र तैयार हो जाता है।

प्र. 8 (द) तीन पंक्तियों में यकृत के कार्य स्पष्ट कीजिये !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उ. 8 (द) यकृत बाइल रस उत्पन्न करता है जो पाचन में सहयोग देता है। शरीर में जमा हुए अधिक ग्लूकोज को ग्लाइकोजन में बदल देता है।

प्र. 9 (अ) अधोलिखित कहाँ स्थित है ?
(1) सेन्ट्रल माइनिंग रिसर्च स्टेशन (2) सेन्ट्रल बिल्डिंग रिसर्च इन्स्टीट्यूट (3) सेन्ट्रल ड्रग रिसर्च इन्स्टीट्यूट (4) नेशनल केमिकल लेबोरेटरी (5) नेशनल फिजिकल लेबोरेटरी (6) फॉरेस्ट रिसर्च इन्स्टीट्यूट (7) इण्डियन इन्स्टीटयूट ऑव पेट्रोलियम (8) नेशनल बॉटेनिकल गार्डन्स (9) सुभाष नेशनल इन्स्टीट्यूट ऑव स्पोर्ट्स (10) नेशनल ऐरोनॉटीकल लेबोरेटरी

उ. 9 (अ) (1) धनबाद (2 रुड़की (3) लखनऊ (4) पूना (5) नयी दिल्ली (6) देहरादून (7) देहरादून (8) लखनऊ (9) पटियाला (10) बंगलौर

प्र 9 (ब) 1. वर्ष 1981 की जनगणना के अनुसार भारतवर्ष की वर्तमान जनसंख्या कितनी है तथा जन्म दर और मृत्यु दर कितनी है ?
2. वर्ष 1981 की जनगणना के अनुसार बताइये—
(क) देश का जनसंख्या घनत्व (ख) स्त्री-पुरुष अनुपात (ग) कुल साक्षरता प्रतिशत (घ) सर्वाधिक साक्षर राज्य (ङ) सर्वाधिक जनसंख्या वाला राज्य
3. देश का सर्वाधिक क्षेत्रफल वाला राज्य
4. उत्तर प्रदेश की वर्तमान जनसंख्या कितनी है ?
5. उत्तर प्रदेश में कुल कितनी कमिश्नरियाँ तथा जिले हैं ?
6. उत्तर प्रदेश का सर्वाधिक क्षेत्रफल वाला जिला कौन है ?
7. उत्तर प्रदेश का सर्वाधिक जनसंख्या वाला शहर
8. उत्तर प्रदेश की सर्वाधिक ऊँची पर्वत चोटी
9. उत्तर प्रदेश का सबसे पुराना विश्वविद्यालय कौन है ?
10. उत्तर प्रदेश के शिक्षा तथा वित्त मन्त्री का क्रमशः नाम बताइये ?

उ. 9 (ब) (1) 68, 39, 97, 512 (कुल जनसंख्या), 36 प्रति 1,000 [जन्म दर] और 14.8 प्रति 1,000 [मृत्यु दर] (2) (क) 221 प्रति वर्ग किलोमीटर (ख) प्रति 1,000 पुरुषों पर 935 स्त्रियाँ (ग) 36.17% (घ) केरल (ङ) उत्तर प्रदेश (3) मध्य प्रदेश (4) 11,08,58 019 (5) 12 कमिश्नरियाँ तथा 57 जिले (6) मिर्जापुर (7) कानपुर (8) नन्दा देवी (9) इलाहाबाद विश्वविद्यालय (10) शिक्षा मंत्री-स्वरूप कुमारी बख्शी, वित्त मंत्री ब्रह्मदत्त

प्र. 9 (स) अधोलिखित उत्तर प्रदेश में कहाँ स्थित है ?
(1) नरोरा परमाणु संयंत्र (2) डीजल लोकोमोटिव वर्क्स (3) लाल बहादुर नेशनल एकाडमी ऑव एडमिनिस्ट्रेशन (4) हिन्दुस्तान ऐरोनॉटिक्स लिमिटेड (5) इंडियन इन्स्टीट्यूट ऑव पेट्रोलियम (6) स्कूटर इण्डिया लिमिटेड (7) सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इन्स्टीट्यूट (8) इंडियन मिलिटरी एकेडमी (9) हिन्दुस्तान एन्टी बायोटिक्स लिमिटेड (10) इण्डियन टेलीफोन इन्डस्ट्रीज (11) सेन्ट्रल ड्रग रिसर्च इन्स्टीट्यूट (12) गोविन्द बल्लभ सागर परियोजना

उ. 9 (स) (1) नरोरा [बुलन्दशहर] (2) मडुआडीह [वाराणसी] 3) मसूरी (4) लखनऊ (5) देहरादून (6) लखनऊ (7) रूड़की [सहारनपुर] (8) देहरादून (9) ऋषीकेश (10) नैनी [इलाहाबाद तथा रायबरेली] (11) लखनऊ (12) मिर्जापुर।

प्र. 10 (अ) भारतीय इतिहास में अधोलिखित वर्षों में कौन सी महत्त्वपूर्ण घटना हुयी ?
(1) 78 ए. डी. (2) 326 बी. सी. (3) 487 बी. सी. (4) 1793 ए. डी. (5) 1556 ए. डी. (6) 1398 ए. डी. (7) 1757 ए. डी. (8) 1919 ए. डी. 9) 1774 ए. डी. 10) 1905 (11) 599 बी. सी. (12) 1921 ए. डी.

उ. 10 (अ) (1) शक संवत् का प्रारम्भ (2) सिकन्दर का भारत पर आक्रमण 3) गौतम बुद्ध का महापरिनिर्वाण (4) बंगाल में भूमि स्थायी बन्दोबस्त (5) पानीपत का द्वितीय युद्ध (6) तैमूर लंग का भारत पर आक्रमण (7) प्लासी का युद्ध (8) रोलेट एक्ट का लागू होना-जालियाँवाला बाग हत्याकांड (9) रेगुलेटिंग ऐक्ट का पारित होना (10) बंगाल विभाजन (11) महावीर स्वामी का जन्म (12) चौरी-चोरा कांड

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्र. 10 (ब) निम्नलिखित की तिथि दें—
(1) शहीद दिवस (2) राष्ट्रीय अखण्डता दिवस (3) संयुक्त राष्ट्र दिवस (4) मानव अधिकार दिवस (5) नागरिक दिवस (6) विश्व पर्यावरण दिवस (7) शिक्षक दिवस (8) झण्डा दिवस (9) मई दिवस (10) क्रिसमस डे (11) नेशनल मेरीटाइम दिवस

उ. 10 (ब) (1) 30 जनवरी (2) 20 अक्टूबर (3) 24 अक्टूबर (4) 10 दिसम्बर (5) 19 नवम्बर (6) 5 जून (7) 5 सितम्बर (8) 7 दिसम्बर (9) 1 मई (10) 25 दिसम्बर (11) 5 अप्रैल

प्र. 10 (स) विश्व इतिहास में अधोलिखित घटनायें कब घटित हुयीं ?
(1) रूसी क्रांति (2) वाटरलू का युद्ध (3) लीग ऑव नेशंस की स्थापना (4) अमेरिका को स्वतंत्रता प्राप्ति (5) रक्तहीन क्रांति (6) फ्रांस की क्रांति (7) ट्राफलगर का युद्ध (8) चीनी गणतंत्र की स्थापना (9) प्रथम विश्व युद्ध का प्रारम्भ (10) द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति

उ. 10 (स) (1) 1917 (2) 1815 (3) 1920 (4) 1776 (5) 1688 (6) 1789 (7) 1805 (8) 1911 (9) 1914 (10) 1945

प्रश्न 11 :—

निम्नलिखित विषयों पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए :—
(1) नया 20 सूत्री कार्यक्रम, (2) भारत का अन्टार्कटिका अभियान, (3) वायुदूत, (4) पैलेस ऑन व्हील्स, (5) इन्सेट I ए, (6) स्पेस शटल, (7) फाकलैण्ड युद्ध (8) लेबनान युद्ध, (9) भारत महोत्सव, (10) असम समस्या, (11) अकाली समस्या, (12) गुट निरपेक्ष आन्दोलन, (13) सरकारिया आयोग, (14) जम्मू कश्मीर पुनर्वास विधेयक, (15) बिहार प्रेस विधेयक।

उत्तर :—

(1) नया बीस सूत्री कार्यक्रम—परिवर्तित सामाजिक और आर्थिक स्थिति की समीक्षा करने के पश्चात भारत की प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गान्धी ने 14 जनवरी, 1980 को नया 20 सूत्री कार्यक्रम घोषित किया। इसके पूर्व 1 जुलाई, 1975 को 20 सूत्री कार्यक्रम की घोषणा की गयी थी और उसके क्रियान्वयन की दिशा में प्रगति की गयी थी। नये कार्यक्रम में पिछले कार्यक्रम के अनेक मुद्दे शामिल किए गये हैं। वस्तुतः छठीं पंचवर्षीय योजना में शामिल किये गये लक्ष्यों, नीतियों तथा विकास कार्यक्रमों को देखते हुए नये बीस सूत्रीय कार्यक्रम को तैयार किया गया है। बीस सूत्री कार्यक्रम में समग्र ग्रामीण विकास तथा राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार को मजबूत बनाने व उनसे अधिकाधिक लोगों को लाभान्वित करने, कृषि भूमि हदबन्दी व फालतू भूमि के बंटवारे के साथ-साथ हस्तशिल्प, हथकरघा और छोटे व ग्रामीण उद्योगों के विकास का उद्देश्य, रोजगार के अवसर बढ़ाना और ग्रामीण क्षेत्र के निर्धन वर्ग को आर्थिक स्थिति सुधारना है। अनुसूचित जातियों एवं जनजातियों और बन्धुआ मजदूरों की दशा सुधारने वाले विकास कार्यक्रमों के क्रियान्वयन में तेजी लाने का प्रस्ताव है। इसके अलावा, जीवन की प्राथमिक आवश्यकताओं जैसे, पीने का पानी, आवास, स्वास्थ सेवा, शिक्षा आदि भी उपलब्ध करायें जायेंगे, इसके साथ ही आर्थिक क्षेत्र में उत्पादन तथा उत्पादकता बढ़ाने के लिये सिंचाई क्षमता व विद्युत उत्पादन की ओर विशेष ध्यान दिया जायेगा, औद्योगिक नीतियों में सुधार लाया जायेगा तथा सार्वजनिक उद्यमों की क्षमता का भरपूर उपयोग किया जायेगा। अन्त में, आवश्यक वस्तुओं को उचित मूल्य पर उपलब्ध कराने के लिये उचित दर दूकानों और सार्वजनिक वितरण प्रणाली का विस्तार किया जायेगा तथा उपभोक्ताओं के हितों की रक्षा के लिये आवश्यक कदम उठायें जायेंगे। अन्त में, परिवार नियोजन को स्वैच्छिक आधार पर जन अभियान के रूप में चलाया जायेगा। सरकार द्वारा नये बीस सूत्री कार्यक्रम को प्रदान किये जाने वाले महत्व का अनुमान वार्षिक योजनाओं में शामिल किए गये कार्यक्रमों तथा नीतियों का विश्लेषण से ही मालूम पड़ता है। छठें पंच वर्षीय योजनावधि में बीस सूत्री कार्यक्रम पर 42768.। करोड़ रुपये व्यय किये जायेंगे। प्रथम तीन वित्तीय वर्ष (मार्च, 1983 तक) 21724.35 करोड़ रुपया इस कार्यक्रम पर व्यय किया जा चुका है। 14 मार्च, 1982 को राष्ट्रीय विकास परिषद् ने बीस सूत्री कार्यक्रम को समुचित एवं तेजी से लागू करने का संकल्प व्यक्त कर इस कार्यक्रम के निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति को सुनिश्चित कर दिया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(2) भारत का अन्टार्कटिका अभियान—विज्ञान एवं तकनीकी के विभिन्न क्षेत्रों में सफलता अर्जित करने के पश्चात भारत ने अन्टार्कटिका महाद्वीप की चुनौती को स्वीकार किया। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिये जुलाई, 1981 में भारत के प्रधानमन्त्री की देखरेख में सागर विकास विभाग का गठन किया गया। इस विभाग ने अल्प समय के अन्दर भारत के प्रथम अन्टार्कटिका अभियान 'ऑपरेशन गंगोत्री' की तैयारी पूरी करली। अन्ततः 26 नवम्बर, 1981 को डा. एस. जेड. कासिम की अध्यक्षता में 27 सदस्यीय प्रथम अन्टार्कटिका दल नॉर्वेजियाई जहाज 'एम. वी. पोलर सर्किल' द्वारा मार्मागोवा से रवाना हुआ और विभिन्न असुविधाओं का सामना करने के पश्चात 9 जनवरी, 1982 को अन्टार्कटिका के आसन्नित तटवर्ती भाग पर पदार्पण कर गौरवमयी सफलता अर्जित की। अपने 10 दिन के अवस्थान में इस दल ने अन्टार्कटिका के मौसम, प्रदूषण का स्तर, भूरचना सम्बन्धी आँकड़े एकत्र किये और साथ में, एक मानव रहित वैज्ञानिक केन्द्र' दक्षिण गंगोत्री की स्थापना की। प्रथम अभियान दल की सफलता से प्रोत्साहित होकर सागर विकास विभाग ने द्वितीय अभियान दल के कार्यक्रम को और अधिक व्यापक बनाया। वी. के. रैना की अध्यक्षता में द्वितीय अन्टार्कटिका अभियान दल 30 नवम्बर, 1982 को रवाना हुआ। 60 दिन के अन्टार्कटिका निवास के दौरान इस दल ने वहाँ की भूरचना, मौसम, पर्यावरण, जीवाश्म, जीव वनस्पति, खनिज सम्पदा सम्बन्धी वैज्ञानिक परीक्षण किये। इस दल ने वर्ष 1985 तक स्थापित होने वाले अन्टार्कटिका में स्थायी भारतीय अन्वेषक शिविर के लिये उपयुक्त स्थान के चयन के साथ-साथ शिविर से भारत का सीधा सम्पर्क स्थापित किया। यह दल अपना कार्य पूरा कर 20 मार्च, 1982 को भारत लौट आया। अभी तृतीय अभियान दल के जाने की तैयारी चल रही है। तृतीय अभियान न केवल और अधिक सदस्यों, आधुनिकतम जहाज (जैसे,सागर कन्या) व वैज्ञानिक यन्त्रों को ले जायेगा बल्कि उसका कार्यक्रम पूर्ववर्ती अभियानों से अधिक व्यापक, जटिल एवं महत्वाकांक्षी होगा।

(3) वायुदूत—एयर इण्डिया एवं इण्डियन एयर लाइन्स केवल भारत के बड़े-बड़े नगरों को वायु सेवा द्वारा जोड़ती है। छोटे अन्तस्थ एवं दुर्गम नगरों को वायु सेवा द्वारा जोड़ने के उद्देश्य से 26 जनवरी, 1981 से इण्डियन एयरलाइन्स की सम्पूरक सेवा 'वायुदूत' प्रारम्भ की गयी। प्रथम चरण में पूर्वोत्तर भारत के 6 नगरों को इस वायु सेवा द्वारा जोड़ा गया। इस वायु सेवा के लिये 'फॉकर फ्रेन्डशिप' 'एफ – 27' एवं 'एव्रो' वायुयानों को प्रयोग में लाया जा रहा है। इस वायु सेवा की उपयोगिता को देखते हुए पूर्वी भारत एवं उत्तरी भारत के 22 अन्य नगरों को भी हवाई नक्शे में शामिल किया गया। निकट भविष्य में देश के विभिन्न पर्यटन स्थलों को भी इस वायु सेवा से जोड़ने का इरादा है। इस उद्देश्य से भारत अत्याधुनिक छोटे विमान, जैसे ड्रोनियर-228 (प. जर्मनी), ट्विन ओटर (कनाडा), कासा सी – 212 (स्पेन), साब फेयरचाइल्ड-340 (स्वीडन) की खरीददारी के लिये बातचीत कर रहा है। केप्टन बी. के. असीन वायुदूत के जनरल मैनेजर है।

(4) पैलेस ऑन व्हील्स—यह राजस्थानी कला से सज्जित 12 सैलूनों की प्रथम पर्यटक रेलगाड़ी है। इस रेलगाड़ी में यात्रा के माध्यम से देश-विदेश के पर्यटकों, विशेषकर विदेशी, को राजस्थानी इतिहास, संस्कृति और कला को समझने का अवसर प्राप्त होगा और यात्रा के दौरान भूतपूर्व भारतीय राजा महाराजाओं की सुख सुविधाएँ भी उपलब्ध हो सकेगी। यह सेवा भारतीय रेल एवं राजस्थान राज्य पर्यटन विकास निगम ने प्रारम्भ की है। यह रेल सेवा 2 अक्टूबर, 1981 से प्रारम्भ की गयी थी परन्तु उचित योजना के अभाव में यह अधिक पर्यटकों को आकर्षित न कर सकी। इन सब कमियों को दूर कर 'पैलेस ऑन व्हील्स' रेल सेवा को 2 अक्टूबर, 1982 से पुनः आरम्भ किया गया। व्यावसायिक सफर 31 मार्च, 1983 तक चला और काफी सफल भी रहा। इस अवधि में यह रेलगाड़ी तीन रात्रि के सफर में दिल्ली, जयपुर, आगरा तथा दिल्ली और सात रात्रि के सफर में दिल्ली उदयपुर, जैसलमेर जोधपुर, भरतपुर, आगरा तथा दिल्ली के मध्य चला करेगी। रघुवीर सिंह 'पैलेस ऑन व्हील्स के जनरल मैनेजर है।

(5) इन्सेट I ए—फोर्ड एरोस्पेस कम्युनिकेशन कॉर्पोरेशन द्वारा निर्मित बहुउद्देशीय भारतीय उपग्रह इन्सेट I ए को केप कैनेवरल, अमेरिका, से डेल्टा 3910 नामक द्विचरणीय प्रमोचक रॉकेट द्वारा 10 अप्रैल, 1982 को प्रक्षेपित किया गया। यह पृथ्वी से 35140 कि. मी दूर स्थानान्तरणीय कक्षा में स्थापित किया गया। लगभग 20 मीटर ऊँचे उपग्रह का मुख्य ढांचा 2 मीटर लम्बा, 1½ मीटर चौड़ा एवं 1½ मीटर ऊँचा है। यह अन्तरिक्ष विभाग, डाक तार विभाग, भारतीय पदार्थ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विज्ञान विभाग एवं आकाशवाणी तथा दूरदर्शन के संयुक्त प्रयास का परिणाम है। इसका प्रमुख उद्देश्य दूर-संचार, मौसम विज्ञान, रेडियो व दूरदर्शन सम्बन्धी कार्यक्रमों के लिये सुविधा उपलब्ध कराना था। परन्तु प्रारम्भ में 'सी बैण्ड एन्टेना' तथा तत्पश्चात सौर पट्टी न खुलने के कारण 'इन्सेट I ए शुरू से आंशिक रूप से अपंग हो गया। फिर भी यह पांच महीने तक किसी प्रकार कार्य करता रहा। 6 सितम्बर, 1982 को इन्सेट I ए में प्रयुक्त ईंधन समय से बहुत पहले समाप्त हो जाने से यह बहुउद्देशीय उपग्रह सम्पूर्ण रूप से निष्क्रिय हो गया। इसके नष्ट होने से भारत के विकास सम्बन्धी कार्यक्रमों को आघात लगा। ऐसी स्थिति में भारत को वैकल्पिक व्यवस्था के रूप में इंटलसैट उपग्रह का सहायता लेनी पड़ी। इन्सेट I ए की विफलता के कारणों का अध्ययन कर भारतीय अन्तरिक्ष अनुसन्धान संस्थान ने अगले बहुउद्देशीय उपग्रह इन्सेट I बी, जो केप केनेवरल से अगस्त, 1983 में प्रक्षेपित किया जायेगा, की निर्माण प्रक्रिया में कुछ संशोधन किये है।

(6) स्पेस शटल—स्पेस शटल एक ऐसी अन्तरिक्ष गाड़ी है जिसे बार-बार अन्तरिक्ष में किसी यान की भांति प्रयोग किया जा सकता है। एक स्पेस शटल को 50 से 100 बार तक इस्तेमाल किया जा सकता है। अमरिका ने सबसे पहले स्पेस शटल 'कोलम्बिया' को 12 अप्रैल, 1981 में छोड़ा था। जून, 1982 में कोलम्बिया ने अपनी पांचवीं और अन्तिम परीक्षण उड़ान करी थी। अमरिकी स्पेस शटल की शृंखला में द्वितीय 'चलेन्जर' ने 4 अप्रैल, 1983 को प्रथम व्यावसायिक उड़ान भरी। इसने अन्तरिक्ष में 'एक संचार उपग्रह को प्रक्षेपित किया। और, साथ में अनेक परीक्षण कार्य भी किये। हालांकि स्पेस शटल दूर संचार, विज्ञान व तकनीकी के विभिन्न आयामों, धरती के संसाधनों की खोज, अन्तरिक्ष अनुसन्धान आदि क्षेत्रों हेतु उपयोगी है परन्तु वहीं इसके सैन्य उपयोग का भी खतरा है।

(7) फाकलैण्ड युद्ध—दक्षिण अटलांटिक महासागर में केप हॉर्न के पूर्व में स्थित फॉकलैण्ड द्वीप समूह 200 छोटे-छोटे द्वीपों का समूह है जिसमें पूर्वी व पश्चिमी फकलैण्ड, दक्षिण जॉर्जिया तथा सैन्डविच द्वीप प्रमुख है। हालांकि 1833 से इस द्वीप समूह पर ब्रिटेन का कब्जा है परन्तु अर्जेन्टीना स्पेन के उत्तराधिकारी के रूप में इस द्वीप समूह पर अपना दावा प्रस्तुत करता रहा। फाकलैण्ड निवासी स्वयं ब्रिटेन की सम्प्रभुता में रहने को इच्छुक है। पिछले 150 वर्ष से चल रहे विवाद का शान्तिपूर्ण समाधान न होने पर अन्त में अर्जेंटीना ने 2 अप्रैल, 1982 को फाकलैण्ड द्वीप पर बलपूर्वक कब्जा कर लिया। ब्रिटेन ने फाकलैण्ड को मुक्त करने के लिये अपनी नौ सेना भेजी जिसके फलस्वरूप घमासान युद्ध छिड़ गया। अमेरिका विदेश सचिव अलेजन्डर हेग तथा संयुक्त राष्ट्र के महासचिव पेरेज द कुएलर ने युद्ध समाप्ति का असफल प्रयत्न किया 74 दिनों के घमासान युद्ध, जिसमें दोनों पक्ष को अपार क्षति हुई, के पश्चात 14 जून, 1983 को अर्जेन्टीना को पोर्ट लुई में ब्रितानी सेना के सामने हथियार डाल देने पड़े। हालांकि फाकलैण्ड पर ब्रिटेन ने पुन: कब्जा कर लिया है परन्तु विवाद का समाधान अभी तक न हो सका है और न ही निकटभविष्य में होने की सम्भावना है क्योंकि दोनों में कोई भी झुकने के लिये तैयार नहीं हैं।

(8) लेबनान युद्ध—लेबनन की सत्ता एवं राजनीति पर सीरिया एवं फिलिस्तीनियों के सहयोग से मुस्लिमों के निरन्तर हावी होने से इस्रायल को अपने अस्तित्व का तथाकथित खतरा उत्पन्न होने लगा था। अपने पड़ोसी राष्ट्र लेबनन की राजनीति में क्रिश्चियन नेता बशीर गेमायल, तथा मेजर साद हदाद को सहायता प्रदान करने के लिये तथा अपने सीमावर्ती प्रदेशों की सुरक्षा की डर के आड़ में सीरिया एवं फिलिस्तीनियों ने इस्रायली सेना का कड़ा मुकाबला किया परन्तु अन्त में अरब राष्ट्रों के सहयोग के अभाव में उन्हे शक्तिशाली इस्रायल के सामने झुकना पड़ा। इसके फलस्वरूप फिलिस्तीनी छापामारों को बेरूत छोड़ना पड़ा, और लेबनान में शान्ति की जिम्मेदारी अन्तर्राष्ट्रीय पर्यवेक्षक सेना को सौंपी गयी। परन्तु इसमें कोई दो राय नहीं कि छापामारों के बेरुत त्याग से इस्रायल का लेबनान की राजनीति पर प्रभाव पहले से और अधिक हो गया।

(9) भारत महोत्सव—वर्ष 1978 में भारत और ब्रिटेन के मध्य सांस्कृतिक समझौते के तहत वर्ष 1982 में लन्दन में भारत महोत्सव मनाने की योजना बनायी गयी। इस उत्सव का मुख्य उद्देश्य पश्चिमी जगत के सामने भारत की सांस्कृतिक परम्परा, और स्वातन्त्र्योत्तर युग में हुए विकास की छवि प्रस्तुत करना था। यह कार्यक्रम 22 मार्च, 1982 से 14 नवम्बर, 1982 तक चला। आठ महीने की लम्बी अवधि में चलने वाले इस अनोखे उत्सव के दौरान 20 सरकारी और 80 वैयक्तिक कार्यक्रम लन्दन के अलावा ब्रिटेन के अन्य नगरों में दिखाया गया। लगभग बीस लाख लोगों ने इन कार्यक्रमों को देखा। इस महोत्सव की संयोजिका पुपुल जयकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी। ऐसा ही महोत्सव वर्ष [illegible] उन पर निर्बाध व स्वनियन्त्रित आयोजित किया जायेगा।

(10) असम समस्या—अनेक प्रयासों के बावजूद लगभग तीन वर्ष पूर्व आरम्भ असमं आन्दोलन का कोई पुष्ट निदान अभी तक सम्भव न हो सका है। असम आन्दोलनकर्त्ताओं के प्रमुख प्रतिनिधि अखिल असम विद्यार्थी परिषद एवं अखिल असम गणसंग्राम परिषद की दो प्रमुख मांगें हैं—(क) असम की सांस्कृतिक अस्मिता अक्षुण्ण रखने हेतु तथा असमियों की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रखने हेतु गैर असमियों के बढ़ते हुए असम प्रवेश पर प्रतिबन्ध, व (ख) मतदाता सूची से विदेशियों के नाम निकालना। आन्दोलनकर्त्ताओं की मांग है कि वर्ष 1951 की जनगणना तथा वर्ष 1952 की मतदाता सूची में दर्ज लोगों और उनके परिवारों के सदस्यों को ही असम का नागरिक माना जाए। किन्तु केन्द्र सरकार वर्ष 1971 को आधार वर्ष मानने को दृढ़वद्ध है। आधार वर्ष को लेकर दोनों पक्षों में अनेक वार्त्तालापों के पश्चात अभी भी विवाद बना हुआ है। ऐसी स्थिति में वर्ष 1978 के पश्चात पहली बार फरवरी, 1982 के उत्तरार्द्ध में सम्पन्न असम विधान सभा हेतु चुनाव का सभी विरोधी दलों ने बहिष्कार किया। साथ ही में चुनाव के दौरान व्यापक हिंसा और कमजोर मतदान की घटना ने असम के चुनाव की औचित्यता के प्रति अविश्वास प्रकट कर अधिकांश असमियों ने समस्या के प्रति अपनी मनोभावना को प्रकट किया।

(11) अकाली अन्दोलन—पिछले दो वर्षों से अकाली आन्दोलन ने अपनी अतिवादिता के कारण विस्फोटक स्थिति धारण कर ली है। वर्तमान अकाली आन्दोलन की रूपरेखा 17 अक्टूबर 1973 में पारित श्री आनन्दपुर साहब प्रस्ताव में ही तैयार हो गयी थी। इस प्रस्ताव के अनुसार, अकाली दल निम्नलिखित उद्देश्यों की पूर्ति के लिये सक्रिय और प्रतिबद्ध रहेगा। (1) सिख जीवन पद्धति का प्रचार, (2) सिख पंथ की एक पृथक और स्वतन्त्र सत्ता की स्थापना जिसमें सिखों की राष्ट्रीय अभिव्यक्ति हो सके, (3) निरक्षरता, छुआछूत, सामाजिक विषमताओं और जातिपरक भेदभावों को दूर करना, (4) एक नये अखिल भारतीय गुरुद्वारा अधिनियम का निर्माण, (5) विश्वभर में फैले गुरुद्वारों को संगठित करना, (6) देश विदेश में फैले सिख गुरू-आवागमन का अधिकार, (7) पंजाब के बाहर रखे गये अनेक इलाकों जैसे डलहौजी, चन्डीगढ़, पिंजोर, कालका, अम्बाला, ऊना, नालागढ़, शाहाबाद, गुहला, सिरसा, तोहाना, रतिया, गंगानगर का पंजाब राज्य में विलय जिससे सिख धर्म व सिखों के हितों की विशेष रूप से रक्षा हो सके, (8) पंजाब को और अधिक स्वतन्त्रता, (9) भारत के अन्य राज्यों में बसे सिखों के हितों की रक्षा के लिये उचित संवैधानिक व राजनीतिक संरक्षण आदि। केन्द्र सरकार ने अकाली दल की धार्मिक मांगों को स्वीकार कर लिया परन्तु अकाली दल की कुछ राजनीतिक मांग बहुत ही व्यापक होने के कारण बिना संवैधानिक संशोधन के सम्भव नहीं है। फिर, इन मांगों को स्वीकार करने का अर्थ यह है कि अन्य राज्यों के अधिकारों में कटौती। इस कारण से वह अकाली दल की मांगों से सहमत नहीं है। अन्त में, कुछ मुद्दे विदेशी राष्ट्रों से भी सम्बन्धित है। ऐसी स्थिति में केन्द्र सरकार द्वारा अकाली दल की सभी राजनीतिक मांगों को स्वीकार करना सम्भव नहीं है। फिर भी समस्या समाधान के लिये केन्द्र सरकार प्रयत्नरत है। केन्द्र चन्डीगढ़ को पंजाब की राजधानी बनाने के लिये राजी है परन्तु इसके बदले पंजाब को कुछ क्षेत्र हरियाणा को देना पड़ेगा। अकाली दल चन्डीगढ़ को राजधानी बनाने के लिये सहमत है परन्तु अपनी भूमि को त्यागने के लिये राजी नहीं है। अकाली दल के नेताओं की असमझौतापूर्ण नीति के कारण सम्पूर्ण पंजाब व्यापक हिंसात्मक गतिविधियों से ग्रस्त हो चुका है और निकट भविष्य में समस्या समाधान की कोई आशा नजर नहीं आती है।

(12) गुट निरपेक्ष आन्दोलन—द्वितीय विश्व युद्धोपरान्त सम्पूर्ण विश्व, अमेरिका एवं सोवियत संघ के नेतृत्व में दो गुटों में विभाजित हो गया था। अनेक नव-स्वतन्त्र राष्ट्रों ने इस गुट राजनीति में शामिल न होना अपने लिये श्रेयस्कर समझा। इन राष्ट्रों ने आर्थिक विकास एवं सहयोग की अनिवार्यता, और पंचशील एवं शान्तिपूर्ण सहचारिता के माध्यम से अन्तर्राष्ट्रीय तनावों की समाप्ति को विश्वशान्ति के लिये आवश्यक समझा। वर्ष 1955 में बाण्डुंग में आयोजित ऐफ्रो-एशियाई राष्ट्रों ने इन मांगों को स्वीकार कर गुट निरपेक्ष आन्दोलन की नींव डाली। जवाहर लाल नेहरू (भारत),

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मार्शल टीटो (यूगोस्लाविया) तथा जवाहर लाल नेहरू (भारत) के उपक्रम के फलस्वरूप 25 राष्ट्र वर्ष 1961 में बेलग्रेड में आयोजित प्रथम गुट निरपेक्ष शिखर सम्मेलन में शामिल हुए। गुट निरपेक्ष आन्दोलन कीविचार धारा ने अनेक राष्ट्रों को आकृष्ट किया। आज तक गुट निरपेक्ष आन्दोलन के सात शिखर सम्मेलन आयोजित किये जा चुके है। ये शिखर सम्मेलन बेलग्रेड (1961), काहिरा (1964), लुसाका (1970), अल्जीयर्स (1973), कोलम्बो (1976), हवाना (1980) तथा नई दिल्ली (मार्च, 1983) में सम्पन्न हुए। आज 101 राष्ट्र गुट निरपेक्ष आन्दोलन के सदस्य है। गुट निरपेक्ष आन्दोलन ने छठे दशक तक उपनिवेशवाद के अन्त पर बल प्रदान किया। सातवें दशक से आन्दोलन ने विश्व में व्याप्त आर्थिक विषमताओं की समाप्ति को प्राथमिकता प्रदान कि परन्तु इसी तथ्य ने गुट निरपेक्ष आन्दोलन को स्वरूप भी उग्रवादी बना दिया। मार्च, 1983 में सम्पन्न सातवें शिखर सम्मेलन से आन्दोलन का नेतृत्व पुत मध्य-ममार्गी राष्ट्र-भारत के हाथ आ जाने के फलस्वरूप आशा बंधने लगी कि आठवें दशक की अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में गुट निरपेक्ष आदोलन सफल एवं सक्रिय भूमिका निभायेगा।

(13) सरकारिया आयोग—छठें दशक के मध्य से ही अनेक राज्यों द्वारा केन्द्र-राज्य सम्बन्धों के पुनरीक्षण हेतु माँग प्रस्तुत की जाती रही, परन्तु केन्द्र ने इन माँगों को अवांछित करार कर कोई भी कदम नहीं उठाया। परन्तु अकाली आन्दोलन व दक्षिण के राज्यों द्वारा सयुक्त परिषद के गठन आदि ने केन्द्र को इस दिशा में गम्भीरतापूर्वक सोचने के लिये विवश किया। अन्त में, भारत की प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने 24 मार्च, 1982 को संसद के दोनों सदनों में केन्द्र और राज्यों के मध्य वर्तमान सम्बन्धों के पुनरीक्षण के लिये सर्वोच्च न्यायालय के अवकाश प्राप्त न्यायाधीश आर. एस. सरकारिया की अध्यक्षता में एक सदस्यीय आयोग के गठन का निर्णय किया है। यह आयोग केन्द्र और राज्यों के सम्बन्धों की कार्यकारिणी की जाँच करके इस व्यवस्था में ऐसे यथोचित परिवर्तनों की सिफारिश करेगा जो वर्तमान सांविधानिक ढाँचे के अन्तर्गत हो। हालांकि सभी वर्गों ने इस आयोग के गठन का स्वागत किया है परन्तु आयोग के सीमित कार्य क्षेत्र को देखते हुए केन्द्र-राज्य सम्बन्धों में कोई व्यापक परिवर्तन की सम्भावना कम ही मालूम पड़ती है।

(14) जम्मू-कश्मीर पुनर्वास विधेयक—वर्ष 1982 के पूर्वार्ध में जम्मू-कश्मीर की विधान सभा ने विवादास्पद जम्मू-कश्मीर पुनर्वास विधेयक पारित किया। इस विधेयक की प्रमुख व्यवस्था के अनुसार, मार्च, 1947 तथा विभाजन के पश्चात् कश्मीर के जो निवासी पाकिस्तान चले गए और अनिश्चित परिस्थितियों के कारण कश्मीर वापस न लौट सके, वे कुछ विशेष शर्तों को पूरा करने पर (जिनमें भारत के केन्द्र सरकार से वीसा प्राप्त करना भी है) कश्मीर पुनः वापस लौट सकते हैं। जम्मू-कश्मीर के राज्यपाल ने इसको भारतीय संविधान के अनुच्छेदों की गलत व्याख्या पर आधारित बताकर विधान सभा को वापस लौटा दिया। जम्मू-कश्मीर विधान सभा ने अक्टूबर, 1982 में इस विधेयक को पुनः पारित किया और इस प्रकार यह अधिनियम बन गया। भारत के राष्ट्रपति ने इस अधिनियम की संवैधानिकता की जाँच के लिए सर्वोच्च न्यायालय के सुपुर्द कर दिया। जम्मू-कश्मीर सरकार सर्वोच्च न्यायालय द्वारा भविष्य में प्रदान किये जाने वाले निर्णय को स्वीकार करने के लिए सहमत हुई हैं।

(15) बिहार प्रेस विधेयक—पीत पत्रकारिता (yellow journalism) को रोकने के उद्देश्य से 31 जुलाई, 1982 को बिहार विधान सभा ने भारतीय दण्ड प्रक्रिया संहिता (बिहार संशोधन) पारित किया। इस संशोधन विधेयक के अनुसार, यह व्यवस्था की गई है कि अश्लील व गन्दी सामग्री या भयादोहन के लिए आशयित सामग्री के मुद्रण, प्रदर्शन, प्रसार या अपने पास रखने या बिक्री करने पर अभियुक्त को कठोर करावास या जुर्माना या दोनों की सजा दी जा सकती है। विधेयक के अनुसार, 'गन्दा' शब्द के अन्तर्गत ऐसी कोई भी बात समझी जायेगी जो नैतिकता के लिए हानिकर हो या जिससे किसी व्यक्ति को हानि पहुँच सकती हों, लोक कृत्यों का सम्पादन करने वाले लोकसेवकों या सार्वजनिक प्रश्न से सम्बद्ध व्यक्तियों के बारे में या उनके चरित्र के बारे में जहाँ तक उक्त आचरण से उनका चरित्र परिलक्षित होता हो (किन्तु इसके अतिरिक्त नहीं) को प्रकट करने की अनुमति प्रदान की गई है। इस अपराध को अवेक्षणीय एवं गैर जमानती बना दिया गया। यह विधेयक अभी भारत के राष्ट्रपति के पास उनकी स्वीकृति हेतु विचाराधीन है। पूरे देश में इस विधेयक के विरोध के फलस्वरूप हाल में बिहार सरकार ने इस विधेयक को समाप्त करने की घोषणा की है। ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिये यह अधिक उपयुक्त होगा कि वे विदेशी हस्तक्षेप समाप्त करने के साथ-साथ अरब विश्व की भावनाओं का ध्यान भी उन्हें रखना चाहिये।

गुट निरपेक्ष आन्दोलन

नई दिल्ली बैठक : आगे की तैयारी

मार्च, 83 में हुए सातवें गुट निरपेक्ष शिखर सम्मेलन के एक निर्णय के अनुसार 29 अप्रैल, 83 से नई दिल्ली में विश्व के समक्ष मौजूदा प्रमुख आर्थिक समस्याओं पर विकसित राष्ट्रों का ध्यानाकर्षण करने के उपायों पर विचार हेतु बंगलादेश अल्जीरिया, अर्जेन्टीना, क्यूबा, इण्डोनेशिया, श्रीलंका, यूगोस्लाविया, तान्जानिया एवं भारत जैसे 9 गुट निरपेक्ष राष्ट्रों के विदेशमन्त्रियों एवं प्रतिनिधियों ने दो दिवसीय बैठक में भाग लिया। यह बैठक निकट भविष्य में होने वाले चार अन्तर्राष्ट्रीय अर्थिक सम्मेलन के सन्दर्भ में अत्यन्त महत्वपूर्ण है। ये सम्मेलन अमेरिका में होने वाली विलियम्सबर्ग बैठक जिसमें विश्व के समृद्ध सात राष्ट्र भाग लेगें, पारस्परिक अर्थिक एसोसिएशन परिषद (COMECON) अकटाड का व्यापार व विकास बोर्ड का विशेष अधिवेशन, तथा छठा अंकटाड सम्मेलन है। सम्मेलन के दौरान इस बात पर चिन्ता व्यक्त की गयी कि विलियम्सबर्ग सम्मेलन मुख्यतः पूर्व एवं पश्चिम के आर्थिक मुद्दों पर ही विचार विमर्श करेंगा, और उत्तर-दक्षिण वार्ता के प्रश्न पर ध्यान केन्द्रित कर अपना समय नहीं गंवायेगा। बैठक के प्रस्ताव के अनुसार मन्दी के दौर से गुजरती विश्व अर्थव्यवस्था को सुव्यवस्थित करने के लिये उत्तर-दक्षिण वार्ता उतनी महत्वपूर्ण है जितनी कि पूर्व-पश्चिम के राष्ट्रों के मध्य आर्थिक मुद्दों पर विचार विमर्श। इसलिये विश्व आर्थिक सहयोग को नया प्रोत्साहन प्रदान करने के लिये आवश्यक है कि उत्तर दक्षिण वार्ता शीघ्रातिशीघ्र आयोजित की जाये। परन्तु उत्तर दक्षिण वार्ता के आयोजन मात्र से सफलता नहीं मिलती है। सफलता के लिये उचित यह है कि विकासशील राष्ट्र विकसित राष्ट्रों को अपने आर्थिक मांगों से भली भांति अवगत कराये। बैठक ने इस मुद्दे पर यह सलाह दी है कि गुट निरपेक्ष राष्ट्र, जहाँ कहीं भी अवसर मिले, विकसित राष्ट्रों के नेताओं को मार्च, 83 के नई दिल्ली घोषणा पत्र, जिसमें उत्तर-दक्षिण सहयोग एवं विकासशील राष्ट्रों की आर्थिक समस्याओं को विस्तृत रूप से पेश किया गया है, अवगत कराएं। फिलहाल इस बैठक से तुरन्त कोई सकारात्मक लाभ विकासशील राष्ट्रों को नहीं हुआ है परन्तु हो सकता है कि इसके प्रस्ताव अगले एक माह के अन्दर होने वाले चार महत्वपूर्ण आर्थिक सम्मेलन के विचार विमर्श को नया मोड़ प्रदान करने में सहायक हो।

दक्षिणी अफ्रीका

नामीबिया : आखिर स्वतन्त्रता कब तक ?

संयुक्त राष्ट्र की महासभा के आह्वान पर 25 अप्रैल, 83 से पेरिस में नामीबिया की स्वतन्त्रता के प्रश्न पर उठाये जाने वाले कदमों पर विचार विमर्श करने के लिये पांच दिवसीय सम्मेलन का आयोजन किया गया। ज्ञातव्य हो कि वर्ष 1982 में अमेरीका के रीगन प्रशासन के कृपादान से रंगभेदी दक्षिण अफ्रीका ने क्यूबाई सेना का मुद्दा नामीबिया की स्वतन्त्रता के प्रश्न से जोड़ कर यह मांग प्रस्तुत की थी कि नामीबिया से उनकी वापसी के पूर्व अंगोला से क्यूबाई सैनिको को हटाया जाये। दक्षिण अफ्रीका द्वारा निरन्तर लगाये जा रहे अड़चनों के फलस्वरूप नामीबिया सम्बन्धी वार्तालाप में विघ्न उत्पन्न हो रहा है। सम्भवतः दक्षिण अफ्रीका का मौजूदा उद्देश्य ही नामीबिया की स्वतन्त्रता को अनिश्चित काल के लिये टालना है। दक्षिण अफ्रीका के प्रधानमन्त्री बोथा द्वारा जेवियर पेरेज द क्यूलर को लिखे पत्र में यह कहा गया कि दक्षिण पश्चिम अफ्रीकी जन संगठन (स्वापो) के प्रति संयुक्त राष्ट्र एवं संयुक्त राष्ट्र संक्रमण सहायता दल (UNTAG) का पक्षपातपूर्ण रवैया होने के कारण दक्षिण अफ्रीका को दोनों संगठनों की निष्पक्षता के सम्बन्ध में सन्देह है।

पेरिस सम्मेलन के लिये ब्रजेश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चन्द्र मिश्र की अध्यक्षता में नामीबिया परिषद द्वारा तैयार किए गये रिपोर्ट में अमेरिकी एवं दक्षिण अफ्रीका के गुटबन्दी द्वारा उठाये गये क्यूबाई सैनिकों के मुद्दे को नामीबिया की स्वतन्त्रता के प्रश्न के साथ जोड़ने की कार्यवाही पर खेद व्यक्त किया गया। और साथ में यह भी कहा गया कि ये राष्ट्र नामीबिया प्रश्न को उपनिवेशवाद की समस्या न मान कर कुछ दूसरा ही रूप देना चाहते है। पांच दिन के विचार विमर्श के पश्चात पेरिस सम्मेलन ने नामीबिया की जनता द्वारा चलाये जा रहे संघर्ष के पक्ष में प्रस्ताव पारित किया। अधिकांश प्रतिनिधियों ने क्यूबाई सैनिकों के प्रश्न को नामीबिया की स्वतन्त्रता से जोड़ने के प्रयत्न की गलत कर भर्त्सना की। उनके अनुसार अंगोला में क्यूबाई सेना की उपस्थिति की तुलना नामीबिया में दक्षिण अफ्रीका की मौजूदगी से कहना सर्वथा अवांछनीय है क्योंकि अंगोलाई सरकार के अनुरोध पर ही अंगोला में विद्यमान हैं जबकि अन्तर्राष्ट्रीय विधि का उल्लंघन करते हुए दक्षिण अफ्रीका नामीबिया में आधिपत्य जमाये हुए है। दक्षिण अफ्रीका के इस संयोजन (Linkage) नीति का उद्देश्य वस्तुतः संयुक्त राष्ट्र के निरीक्षण में नामीबिया में निर्वाचन न सम्पन्न होने देना है। स्वापों के अध्यक्ष सैम नुजोमा ने नामीबिया की स्वतन्त्रता के लिये कार्यरत पांच सदस्यीय सम्पर्क दल (ब्रिटेन, फ्रान्स, कनाडा, अमेरिका, व पश्चिम जर्मनी) को विघटित करने की मांग की और साथ में यह भी कहा कि नामीबिया के भविष्य का उत्तरदायित्व संयुक्त राष्ट्र को सौंप दिया जाय। उनके अनुसार, सम्पर्क दल को पूर्ण रूप से अमेरिका ने अपहरण कर लिया है। पेरिस सम्मेलन को सर्वाधिक उपलब्धि फ्रांस के दृष्टिकोण में परिवर्तन रहा। सम्मेलन के दौरान फ्रांसिसी विदेशमन्त्री क्लाड सेशां ने दक्षिण अफ्रीका के संयोजन नीति की आलोचना की और कहा कि फ्रांस दक्षिण अफ्रीका द्वारा नामीबिया की स्वतन्त्रता में नित्य उत्पन्न किये जाने वाले अवरोधों को कदापि भी स्वीकार नहीं करेगा। सम्मेलन ने पश्चिमी विकसित राष्ट्रों एवं बहुराष्ट्रीय निगमों द्वारा नामीबिया की खनिज सम्पदा के शोषण के प्रति भी चिन्ता व्यक्त की। इस सम्मेलन ने नामीबिया प्रश्न को संयुक्त राष्ट्र की सुरक्षा परिषद के लिये छोड़ दिया। 24 मई, 83 से सुरक्षा परिषद ने दो वर्ष पश्चात नामीबिया के मसलों पर पुनः विचार करना प्रारम्भ किया। सुरक्षा परिषद की बैठक समाप्ति के पूर्व ही किसी भी संभावित आह्वान को दक्षिण अफ्रीका ने पहले ही अस्वीकार कर दिया और संयुक्त राष्ट्र में दक्षिण अफ्रीका के राजदूत वान शिनडिंग ने कहा कि विश्व के सभी राष्ट्रों को समझ लेना चाहिए कि दक्षिण अफ्रीका सरकार किसी प्रकार की धमकी के सामने मत्था नहीं टेकेगी। नामीबिया की स्वतन्त्रता के प्रश्न पर दक्षिण अफ्रीका की हठधर्मिता पश्चिमी राष्ट्र के समर्थन के कारण है। जब तक इन राष्ट्रों के दृष्टिकोण में परिवर्तन नहीं आता है तब तक दक्षिण अफ्रीका न संयुक्त राष्ट्र के आह्वान से अपने को बाध्य समझेगा और न ही अपने से नामीबिया को स्वतन्त्र करेगा।

हिन्द-चीन

कम्पूचिया : वियतनामी सेनाओं की क्रमिक वापसी।

दीर्घकालिक अहापोह के उपरांत वियतनाम ने कम्पूचिया से अपने 10,000 सैनिकों को वापस बुला लिया है। इसके साथ ही सैनिकों की वापसी की घटना को प्रत्यक्षतः प्रमाणित करने के लिए हनोई ने कम्युनिस्ट तथा गैर कम्युनिस्ट राष्ट्रों के 150 समाचार प्रतिनिधियों को कम्पूचिया में प्रवेश करने की अनुमति प्रदान की। ज्ञातव्य हो कि कम्पूचिया से अपनी सेना को वापस बुलाये जाने की बात वियतनाम द्वारा पिछले वर्ष ही कही गयी थी। निश्चय ही इससे विश्व के सभी देशों तथा विशेष रूप से 'एशियान' देशों को यह विश्वास हो गया है कि वियतनाम द्वारा कई भागों में, अपनी सेना में कम्पूचिया से वापस बुलाने की बात नितांत कपोलकल्पना नहीं हैं।

स्पष्ट है कि सेनाओं की वापसी के माध्यम से वियतनाम का उद्देश्य चीन तथा 'एशियान' देशों के मध्य गठबंधन को तोड़ना है। वियतनाम द्वारा बराबर यह मांग की जा रही है कि कम्पूचिया से सम्बन्धित किसी भी मसले को तय करने के लिए हिन्द चीन तथा 'एशियान' राष्ट्रों के मध्य वार्ता, एक अन्तर्राष्ट्रीय वार्ता की तुलना में कहीं अधिक कारगर सिद्ध हो सकती है। सिंगापुर तथा मलेशिया ने मार्च, 83 में वियतनामी नेतृत्व

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वारा इस प्रकार के किसी भी क्षेत्रीय सम्मेलन में हेंग समेरिन को प्रतिनिधित्व न दिये जाने के निर्णय का स्वागत किया था। किन्तु 'एशियान' के बाकी तीन सदस्य वियतनामी नीतियों से सहमत नहीं प्रतीत होते। कमोबेश मात्रा में, 'एशियान' के सभी सदस्य कम्पूचिया में सोवियत सैनिक उपस्थित के प्रश्न को लेकर चिंतित हैं। किन्तु साथ ही यह भी ध्यान में रखा जाना चाहिए कि कम्पूचिया का मसला, चीन-वियतनाम संघर्ष के चलते एक जटिल मसला बन गया है। ऐसी स्थिति में, चूंकि वियतनाम द्वारा सेनाओं के वापसी की प्रक्रिया प्रारंभ हो गयी है, यह दीर्घकालिक क्षेत्रीय हित में होगा कि 'एशियान' देश वियतनाम से बातचीत कम्पूचियाई समस्या के निर्धारण का प्रयास करें।

पोलैंड

सॉलिडैरिटी : जड़ें गहरी हैं.....।

1 मई, 83 को पोलैंड में काफी समय के उपरांत पुनः व्यापक स्तर पर सरकारी नीतियों के विरुद्ध प्रदर्शन किये गये। जैसी कि आशा थी, 'सॉलिडैरिटी' के विकल्प स्वरूप एक नये प्रकार के श्रमिक संगठन की स्थापना के जनरल जारूजेल्स्की के प्रयास को तनिक भी जन समर्थन नहीं प्राप्त हुआ। 'पैट्रियाटिक सूव-रेन्ट ऑफ नेशनल रिबर्थ' नाम वाले 'राष्ट्र के लिये समझौते का एक मंच' बनाया गया है। 7 मई, 83 को 'प्रोन' (Pron) की पहली राष्ट्रीय कांग्रेस में सामान्य पोलिश द्वारा कोई रुचि नहीं प्रदर्शित की गयी। जबकि 'सॉलिडैरिटी' की सदस्य संख्या 4,50,000 से भी अधिक है। 11 मई को, अन्य मांग यूनियनों के नेताओं सहित, लेक वालेसा द्वारा पोलिश संसद से 'बहुलवादी यूनियन प्रणाली' के पुनर्स्थापना का अनुरोध किया गया है। प्रतिवेदन में गिरफ्तार व्यक्तियों की भी रिहाई की बात कही गयी है।

एक और प्रमुख विकास पोलैंड के संदर्भ में यह है कि पोलिश चर्च द्वारा पुनः कटु शब्दों में दमनकारी नीतियों के लिये सरकार की निन्दा की जा रही है। बिशपों के एक सम्मेलन के उपरांत 5 मई को जारी एक प्रतिवेदन में मार्शल लॉ को तुरन्त हटाने, राजनीतिक बन्दियों को मुक्त करने तथा अगले माह पोप जॉन पॉल II की पोलैंड यात्रा के अवसर पर नागरिकों को समस्त नागरिक अधिकार उपलब्ध कराये जाने की मांग की है। जारुजेल्स्की द्वारा पोप की यात्रा में विशेष रुचि ली जा रही है ताकि यह प्रमाणित हो सके कि पोलैंड में स्थिति शांतिपूर्ण है।

परमाणु-अस्त्र प्रहासन वार्ताः

ऐन्द्रोपोव का नया प्रस्ताव : अब रीगेन की बारी है....?

यह आश्चर्यजनक प्रतीत हो सकता है किन्तु यह एक सत्य है कि परमाणु अस्त्रों के प्रहासन की दिशा में अब तक के सभी अर्थपूर्ण प्रस्ताव सोवियत नेतृत्व द्वारा किये गये हैं। जेनेवा वार्ता में उत्पन्न गतिरोध को दूर करने की दृष्टि के 5 मई,83 को यूरी ऐन्द्रोपोव ने यह प्रस्ताव किया है कि मास्को, पूर्व तथा पश्चिम के मध्य 'डिलेविरी वेहकिल' (Delivery vehicle) तथा 'वारहेड' (Warhead) के संदर्भ में समकक्षता को स्वीकार करने को तैयार है, बशर्ते कि ब्रिटेन तथा फ्रांस की भी परमाणु क्षमता को 'पश्चिम' की क्षमता में सम्मिलत किया जाय।

यूरी ऐन्द्रोपोव ने कहा है कि मास्को उतनी ही मिसाइल एवं 'वारहेड' रखने के पक्ष में है जितना कि 'नाटो शक्तियों के पास उपलब्ध हो। ज्ञातव्य हो कि पूर्वकाल में जब सोवियत नेतृत्व द्वारा यूरोप में एक निश्चित सीमा तक परमाण अस्त्रों के कमी की बात कही गयी थी तब वाशिंगटन द्वारा इस आधार पर इस प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया गया कि सोवियत संघ के पास पहले ही अधिकतम् संख्या में मिसाइलें उपलब्ध है। इस तर्क को, परमाणु क्षमता के अन्तर्गत वारहेड, को शामिल करके, सोवियत नेतृत्व द्वारा समाप्त कर दिया गया है। यूरी ऐन्द्रोपोव ने बड़े ही जोरदार शब्दों में कहा है कि, "हमारे इस प्रस्ताव पर भी यदि कोई 'नहीं' कहता है तो उसे विश्व-जनमानस के भयानक कोप का भाजन बनना पड़ेगा।" नये प्रस्ताव के अन्तर्गत, सोवियत नेतृत्व, ब्रिटिश तथा फ्रांसीसी मिसाइलों में नियोजित 'वारहेड' के बराबर अपनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्षमता कम करने को तैयार है। इस प्रकार के प्रस्ताव का उद्देश्य 'नाटो' तथा 'सोवियत संघ' की परमाणुसमता को समकक्ष बनाना है। पश्चिमी संवाद दाताओं के साथ अपनी बातचीत में, सोवियत नेतृत्व ने प. यूरोप में अमरीका द्वारा प्रस्तावित 'परशिंग' तथा 'क्रूज' मिसाइलों के नियोजन के विरूद्ध कड़ी चेतावनी दी है।

स्पष्ट रूप से, सोवियत प्रस्ताव 'प्रतिरोध' के सिद्धान्त (Concept of deterrence) पर आधारित है। ज्ञातव्य हो कि प्रतिरोध का सिद्धान्त समकक्षता के आधार पर परमाणु क्षमता में कमी का विरोधी नहीं है। समग्र निःशस्त्रीकरण की ओर अग्रसर होने का मात्र एक माध्यम यही है। किसी भी प्रकार की उग्र-नीति समकक्षता पर आधारित संतुलन को खतरे में डाल सकती है जिसका परिणाम और बृहत स्तर पर खतरनाक शस्त्र होड़ के रूप में हो सकता है। अब अमरीकी राष्ट्रपति के निर्णय लेने की बारी है।

खाड़ी के देश :

ईरान-इराक युद्ध : शांति-स्थापन एक मरीचिका है !

एक लम्बे अर्से से चले आ रहे ईरान-इराक युद्ध को समाप्त करने के लिये इराक द्वारा गुटनिरपेक्ष आंदोलन के अध्यक्ष के रूप भारत से इस हेतु प्रयास करने की अपील की गयी है। खाड़ी का युद्ध अब एक क्षेत्रीयनासूर बनकर सड़ रहा है। दोनों में से किसी भी पक्ष के लिये निश्चित विजय प्राप्त करना कठिन ही नहीं असंभव है। यद्यपि ईरानियों द्वारा इराकियों से उन क्षेत्रों को खाली करा लिया गया है जिन पर प्रारंभ में इराकियों ने कब्जा कर लिया था किन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि स्वयं ईरानी भी कभी युद्ध समाप्त करने के पक्ष में नहीं रहे।

पिछले अंक में इसकी चर्चा की गयी थी कि किस प्रकार से 578 वर्गमील में तेल का स्त्रोत फूट गया है और चूंकि खाड़ी के देशों में जल की आपूर्ति उन शोध संयंत्रों के माध्यम से की जाती है जो समुद्र के तट पर दूषित जल को साफ करने के लिये लगाये गये हैं, खाड़ी के देश कुछ अधिक चिंतित हो गये हैं किन्तु वह आश्चर्य की ही बात कही जानी चाहिये कि इस प्रकार की प्राकृतिक विपत्ति के बावजूद खाड़ी के दोनों देशों के मध्य किसी प्रकार का समझौता नहीं हो पाया।

पिछले तीन वर्ष से चल रहे खाड़ी के इस युद्ध ने दोनों देशों की अर्थव्यवस्थाओं को जर्जर कर दिया है विशेष रूप से इराक की। इराक अब शांति स्थापन में पहल क्यों चाहता है? इसका सवप्रमुख कारण देश की आर्थिक विश्रृंखलता है। ज्ञातव्य हो कि खड़ा में अवस्थित अपने तेल के ठिकानों के विनाश तथा सीरिया के पार पाइपलाइन के बंदीकरण के चलते एक अनुभाव के अनुसार इराकी प्रतिदिन 6,00,000 बैरल तेल का निर्यात कर रहे हैं। इराक के 'रिजर्व' गिरकर मात्र 4 बिलियन डॉलर रह गया है और बिना अपने अन्य अरब समर्थकों के सहयोग के, युद्ध को आगे बढ़ा पाना इराकियों के लिये एक कठिन कार्य होगा। जबकि दूसरी ओर ईरान को तेल के निर्यात से 2 बिलियन डॉलर प्रतिमाह की प्राप्ति हो रही है तथा एक समय घटता ईरानी 'रिजर्व' अब पुनः बढ़ रहा है। इस प्रकार आर्थिक उन्नयनात्मक स्थिति भी ईरानी रवैये का एक प्रमुख आधार हो सकती है। ईरान कृतसंकल्प है कि उसकी ओर से युद्ध तभी समाप्त होगा जब ईराकी राष्ट्रपति सद्दाम हुसैन को पदच्युत कर दिया जाये तथा इराक द्वारा उसे 50 बिलियन डॉलर का मुआवजा दिया जाये।

इस प्रकार की मांगे जब तक जारी है, भारत या किसी भी अन्य देश के लिये ईरान को युद्ध की समाप्ति के लिये राजी कर पाना मुश्किल कार्य है। ईस्लामी सम्मेलन संगठन के सदस्य संयुक्त राष्ट्र तथा गुटनिरपेक्ष आंदोलन के सदस्यों द्वारा पूर्वकाल में जितने भी प्रयास किये गये है, वे सब के सब ईरानी हठवादिता तथा ईराक द्वारा अपमानपूर्ण शर्तों को स्वीकार न करने के कारण असफल रहे हैं। मार्च, 83 में सम्पन्न नयी दिल्ली सम्मेलन के दौरान अथक प्रयासों के उपरांत ईरान ने सम्मेलन की युद्ध समाप्ति की अपील स्वीकार किया था। किन्तु बाद में इस प्रकार की आशा मरीचिका सिद्ध हुयी। पुनः ईरान ने न केवल इराक के दक्षिणी एवं मध्य क्षेत्र पर जोरदार हमला बोल दिया वरन इराक की सीमा में ईरानियों द्वारा घुसपैठ भी की गयी। पिछले अनुभव तथा घटनाओं को देखते हुए शांति स्थापन का कोई भी नया प्रयास शायद ही सफल हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सामान्य हिन्दी

उ०प्र० सचिवालय परीक्षा 1983 (प्रवर एवं अवर प्रभाग) मॉडल पेपर

डा० दिलीप पाण्डेय, प्रवक्ता, हिन्दी विभाग, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रानीखेत (उ. प्र.)

उ० प्र० सचिवालय परीक्षा (प्रवर एवं अवर प्रभाग) में अनिवार्य सामान्य हिन्दी का प्रश्नपत्र 'हिन्दी सारांश और आलेखन' के रूप में पूछा जाता है। इसमें एक प्रश्न सारांश लेखन का तथा शेष चार या पाँच प्रश्न शासकीय पत्र लेखन के होते हैं। प्रश्नपत्र का समय तीन घंटे तथा पूर्णांक 100 अंकों का होता है। परीक्षार्थी पाठकों के अध्ययन के लिए यहाँ सम्बन्धित परीक्षा का मॉडल प्रश्नोत्तर दिया जा रहा है। यह मॉडल प्रश्नोत्तर विभिन्न परीक्षाओं में पूछे गये प्रश्नों पर आधारित है।

प्रश्न 1. निम्नलिखित का सारांश लगभग डेढ़ सौ शब्दों में लिखिए। (इस प्रश्न का उत्तर एक निर्धारित कागज पर लिखना होता है जो परीक्षार्थी को परीक्षा भवन में ही मिलता है। कागज पर बने प्रत्येक खाने में एक-एक शब्द लिखना होता है।)

जिस प्रकार देशप्रेम और राष्ट्रीयता का आत्मस्वरूप एक है, उसी प्रकार विश्व प्रेम और अन्तर्राष्ट्रीयता में एक भावना काम करती है। अन्तर्राष्ट्रीयता से दूर हटकर हम राष्ट्रीयता को पवित्र नहीं रख सकते। हमारा उद्देश्य सदा ही उच्च होना चाहिए। जहाँ हम राष्ट्र के लिए सर्वस्व त्याग की भावना रखते हैं वहाँ अन्य राष्ट्रों के लिए कम से कम मंगलकामना की गुंजाइश तो रखे ही। मानवता का विकास हृदय विकास से ही सम्भव है। यही कारण है कि भारत आदिकाल से ही अपनी राष्ट्रीयता के साथ अन्य देशों की राष्ट्रीयता को भी सम्मान देता रहा है। भारत का विश्व बन्धुत्व भाव ऐतिहासिक महत्व रखता है। भारत के इतिहास में ऐसी घटनाओं का सर्वथा अभाव है जिनसे यह सिद्ध किया जा सके कि भारत ने किसी समीपस्थ किंवा दूसरे राष्ट्र पर आक्रमण किया हो। कभी संघर्ष का अवसर आया भी तो वह संघर्ष तक ही सीमित रहा, आक्रान्त देश की राष्ट्रीयता का हनन भारतीयों के द्वारा नहीं हुआ।

दुःख की बात है कि आज भी भू-मण्डल के अधिकांश राष्ट्र अन्तर्राष्ट्रीयता की भावना से दूर हैं। पल-पल सुलगने वाली महासमर की ज्वाला यह स्पष्ट कर रही है कि उन्हें स्वार्थ की ओट में अन्तर्राष्ट्रीयता पर आघात करना ही भाता है। युद्ध के भय से सम्पूर्ण विश्व का वातावरण विषाक्त हो रहा है। कभी 'हाइड्रोजन बम' का सहारा लेकर शक्तिहीन राष्ट्रों को भयग्रस्त करने का प्रयास चलता है तो कभी 'नाइट्रोजन बम' का उद्घोष सुन शक्तिशालियों का हृदय स्वयं कम्पित होता है।

आवश्यक है कि आज प्रत्येक राष्ट्र, जिसे अपनी राष्ट्रीयता प्यारी है, अन्तर्राष्ट्रीयता को महत्व देते हुए ऐसे घातक प्रयासों के विरुद्ध आवाज उठायेंगे। यदि कोई राष्ट्र अपने ढंग से स्वयं को समृद्ध बनाता है तो किसी राष्ट्र को यह अधिकार नहीं होना चाहिए कि वह अपनी नीति का भार उस पर लादने का प्रयास करे। यदि हम अपने पड़ोसी का घोड़े पर चढ़ना पसन्द नहीं कर सकते तो कब सम्भव है कि उसे हमारा मोटर पर चढ़ना पसंद आए।

(उ० प्र० सचिवालय परीक्षा, 1981)

उत्तरः—सारांश—

देश प्रेम और अंतर्राष्ट्रीयता की मूल भावना उसी प्रकार एक है, जिस प्रकार विश्व प्रेम और अन्तर्राष्ट्रीयता। किसी भी देश की राष्ट्रीयता, अंतर्राष्ट्रीयता की भावना के बिना अधूरी है। राष्ट्र के लिए सर्वस्व त्याग की भावना के साथ ही विश्व के लिए मंगलकामना आवश्यक है। भारत में राष्ट्रीयता के साथ अन्तर्राष्ट्रीयता को सदा से सम्मान दिया है। उसकी विश्वबन्धुत्व की भावना ऐतिहासिक है! भारत ने कभी किसी राष्ट्र की राष्ट्रीयता का हनन नहीं किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज अनेक राष्ट्र स्वार्थवश अन्तर्राष्ट्रीयता की भावना पर बराबर चोट कर रहे हैं। विश्व युद्ध के भय से आक्रान्त है। हाइड्रोजन बम और नाइट्रोजन बम से देश एक दूसरे को भयभीत करके स्वयं भी भयभीत हो रहे हैं। ऐसी स्थिति में प्रत्येक राष्ट्र को अन्तर्राष्ट्रीयता को महत्व देना चाहिए। साथ ही समृद्धशाली राष्ट्र दूसरे राष्ट्रों में हस्तक्षेप बंद कर ईर्ष्या का वातावरण समाप्त करें।

प्रश्न 2. श्री च वि. ला. का चयन लोक सेवा आयोग द्वारा सिंचाई विभाग में सहायक अभियन्ता पद के लिए हुआ है। उत्तर प्रदेश शासन के सिंचाई विभाग की ओर से कार्यभार ग्रहण करने के दिनांक से उनकी नियुक्ति की अधिसूचना का आलेख्य प्रस्तुत कीजिए।

(उ. प्र. सचिवालय परीक्षा, 1978)

उत्तर :— उत्तर प्रदेश शासन

सिंचाई विभाग

संख्या 214/सि. वि. 12-1983 दि. 10.4.1983

अधिसूचना

नियुक्ति

लोक सेवा आयोग, उत्तर प्रदेश द्वारा चयनित श्री चंद्रमा विकास लाल को, उनके कार्यभार ग्रहण करने की दिनांक से सिंचाई विभाग प्रतापगढ़ में सहायक अभियंता के एक स्थायी पद पर वेतन क्रम.....में एक वर्ष के परीक्षण काल पर नियुक्त किया जाता है।

आज्ञा से

कमल सहाय

सचिव

संख्या 214 (1)/(4) सि. वि. 12- 1983 दि. 10.4.1983

(i) प्रतिलिपि अधीक्षक, मुद्रण एवं लेखन सामग्री, उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद, को उत्तर प्रदेश गजट के आगामी अंक में प्रकाशन हेतु प्रेषित।

(ii) प्रतिलिपि (एक अतिरिक्त प्रति सहित) महालेखाकार उ० प्र०, इलाहाबाद को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु अग्रसरित।

(iii) प्रतिलिपि, मुख्य अभियंता सिंचाई विभाग, प्रतापगढ़ को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु अग्रसरित।

(iv) प्रतिलिपि श्री चंद्रमा विकास लाल को इस अनुरोध के साथ अग्रसरित कि वे मुख्य अभियन्ता सिंचाई विभाग, लखनऊ, प्रतापगढ़ से कार्यभार ग्रहण करने हेतु यथाशीघ्र सम्पर्क करें।

आज्ञा से

(हस्ताक्षर)

सचिव

प्रश्न 3. सचिव, शिक्षा विभाग, उत्तर प्रदेश सरकार की ओर से शिक्षा निदेशक, उत्तर प्रदेश को एक अर्ध-शासकीय पत्र लिखिए जिसमें जुलाई 1970 से दो हजार नए प्रारम्भिक स्कूलों को खोलने के लिए तैयारी करने को कहिए। (उ० प्र० सचिवालय परीक्षा, 1970)

उत्तर:—

अ. शा. फा. संख्या 103/4

श्री क ख ग — शिक्षा विभाग

सचिव — उत्तर-प्रदेश, सचिवालय

लखनऊ

दि० 1 अप्रैल, 1970

प्रिय श्रीवास्तव जी,

अपने पूर्व पत्र में आपने प्रदेश में प्रारम्भिक स्कूलों की संख्या बढ़ाने की सिफारिश की थी। इस सम्बन्ध में विचार करने के पश्चात शासन ने यह निर्णय लिया है कि जुलाई, 1970 से दो हजार नये प्रारम्भिक स्कूल खोले जायें। अतः कृपया अब आप इन स्कूलों को खोलने के लिए आवश्यक तैयारी आरम्भ करने का कष्ट करें।

प्रति — भवदीय

श्री आर. एन. श्रीवास्तव — क ख ग

शिक्षा निदेशक,

उत्तर-प्रदेश, इलाहाबाद

प्रश्न 4. विकास आयुक्त, उत्तर प्रदेश शासन की ओर से समस्त जिलाधिकारियों को सम्बोधित एक तार का आलेख्य प्रस्तुत कीजिए जिसमें भूसंरक्षण/प्रशिक्षण सम्बन्धी कार्य प्रगति का विवरण माँगा गया हो। (उ० प्र० सचिवालय परीक्षा 1982)

उत्तर :—

तार

सरकारी — साधारण

समस्त जिलाधिकारी

(शेष पृष्ठ 70 पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जनसंख्या

विस्फोट के पश्चात

■ रफेल एम. सेलास*

विश्व की जनसंख्या के भूत, वर्तमान और भविष्य संबन्धी आंकड़ों का सबसे बड़ा और सर्वाधिक पूर्ण स्मृति-बैंक न्यू यॉर्क नगर में ईस्ट नदी के किनारे पर स्थित है। यहाँ पर सं. राष्ट्र संघ का जनसंख्या प्रभाग विश्व के लगभग सभी देशों की जनसंख्या के आकार, वृद्धि और आवागमन सम्बन्धी सूचना को इकट्ठा करता है और उसका विश्लेषण करता है। साल दर साल के इनके रिकॉर्डों को देखने से पता चलता है कि अब तक जनसंख्या कितनी बढ़ी है और भविष्य में क्या होने वाला है। भूतकाल के आंकड़ों को आधार बनाकर यह अनुमान लगाया जाता है कि भविष्य में क्या संभावना है।

यदि इस शताब्दी के छठे दशक वाली स्थिति बनी रहती तो भविष्य में जन्म दर स्थिर बनी रहती और मृत्यु दर में गिरावट आती, जैसा कि कुछ वर्षों तक हुआ था। इन स्थितियों में जनसंख्या बड़ी तेजी से बढ़ती और 2000 ई. तक यह 750 करोड़ हो जाता (1950 ई. में 250 करोड़ थी) जनसंख्या में सर्वाधिक वृद्धि विश्व के अल्पविकसित देशों में होती।

इस शताब्दी के छठे दशक में जब इन संभावनाओं तथा इनसे भयावह कुछ स्थितियों से विश्व अवगत हुआ तब लोग चिंतित हो गए और इस प्रकार 'जनसंख्या विस्फोट' की भावना का जन्म हुआ। जनसंख्या कार्यविधि सम्बन्धी संयुक्त राष्ट्र संघ निधि की स्थापना जिन कारणों से हुई उनमें से यह भी एक है।

इस शताब्दी के सातवें दशक में मृत्यु दर का गिरना जारी रहा इसका अर्थ यह है कि स्वास्थ्य की देखरेख की स्थितियों से सुधरने और घातक रोगों के नियंत्रण के संबंध में जानकारी होने के फलस्वरूप उत्तरजीविता दर बढ़ गई है। लेकिन इसके साथ ही इस दशक में जन्मदर भी गिरी हालांकि अधिकतर देशों में स्थितियां प्रतिकूल थीं। प्रारम्भ में यह गिरावट धीमी गति से हुई लेकिन आगे चलकर तेज हो गई और इस शताब्दी के आठवें दशक के मध्य तक यह दस वर्ष पूर्व की दर से दुगुनी हो गई।

इस शताब्दी के आठवें दशक के अंत तक यह स्पष्ट हो गया कि कुछ वर्ष पूर्व जन्म की जो दर अत्यन्त बढ़ी हुई लग रही थी वह अंततः विश्व के लिए अत्यन्त हानिकारक सिद्ध नहीं होगी। 'यू एन एफ पी ए' की विश्व जनसंख्या स्थिति की रिपोर्ट में इस वर्ष यह कहा गया है कि इस सदी के अंत तक विश्व की जनसंख्या लगभग 610 करोड़ होगी। यह संख्या इस शताब्दी के छठे दशक के आंकड़ों के आधार पर अनुमानित संख्या से 140 करोड़ अर्थात् 20 प्रतिशत कम है।

यह एक अच्छी खबर है परन्तु साथ-साथ यह भी है कि जनसंख्या विस्फोट संबंधी भय में कमी के साथ ही साथ उससे सम्बन्धित स्थिति और भी स्पष्ट होती जा रही है। संभावना इस बात की है कि इस सदी के अंत तक इस धरती पर जितने लोगों की देखरेख कि आवश्यकता पड़ेगी उनकी संख्या आज की अपेक्षा 40

*रफेल एम. सेलास एक फिलिपीन्स वासी हैं। वे संयुक्त राष्ट्र के प्रधान अवर सचिव और आबादी संबंधी गतिविधियों के लिए संयुक्त राष्ट्र कोष के कार्यकारी निदेशक हैं। सन् 1969 से इस संस्था के आरंभ से ही इसके प्रधान हैं। वे फिलिपीन्स और हार्वर्ड विश्वविद्यालयों के स्नातक हैं और फिलिपीन्स सरकार में मंत्री और अन्य उच्च पदों पर काम कर चुके हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतिशत अधिक होगी। इतना जानना ही इस बात के लिए काफी है कि वर्तमान और भविष्य में होने वाली जनसंख्या वृद्धि की आवश्यकताओं के सम्बन्ध में हम सजग हो जाएं।

जनसंख्या वृद्धि रुकी नहीं है और न ही 22वीं सदी के पूर्व इसके रुकने की आशा है। तब तक तो इस ग्रह पर लगभग 10500 करोड़ व्यक्ति हो जाएंगे। इतनी बड़ी जनसंख्या की आवश्यकताओं को पूरा करने के उपाय हमें ढूंढने और साथ-साथ हमें यह भी याद रखना है कि विश्व की वर्तमान जनसंख्या की आवश्यकताओं को पूरा करने में हमें किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। प्रौद्योगिकी और पारिस्थितिक तन्त्र की क्षमता चाहे जो भी हो, सच्चाई तो यह है कि आज करोड़ों लोगों की न्यूनतम आवश्यकताओं की भी पूर्ति नहीं हो पाती। इस जनसंख्या में सैकड़ों करोड़ की और वृद्धि होने जा रही है जिसका 90 प्रतिशत अल्प विकसित देशों में होगा, तब तो केवल उनकी आवश्यकताओं को ही पूरा करने के संबंध में नहीं, बल्कि इस संख्या को सीमित करने के सम्बन्ध में भी सोचने की आवश्यकता है।

पिछले दो दशकों में हुए अनुभवों से बहुत कुछ सीखने की आवश्यकता है जब 1960-65 और 1975-80 के बीच जन्मदर में वृद्धि की दर 1.99 प्रतिशत से घटकर 1.72 प्रतिशत रह गई।

इस सम्बन्ध में सबसे पहली बात यह हुई है कि अनेक सरकारों ने अब यह मानने से इन्कार कर दिया है कि किसी देश की जनसंख्या की संवृद्धि और स्थानिक वितरण का उसके विकास आयोजन के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है। विश्व की 80 प्रतिशत जनसंख्या जिन विकासोन्मुख देशों में रह रही है वहां पर ऐसी सरकार हैं जो प्रजनन शक्ति के राष्ट्रीय स्तर को अत्यधिक मानती हैं और वे उसे घटाना चाहती हैं। विकासशील देशों की 126 में से 110 सरकारें यह मानती हैं कि उनकी जनसंख्या का वितरण ठीक-ठीक नहीं है।

दूसरी बात यह है कि सरकारें यह मानती हैं कि जनसंख्या में वृद्धि और उसके आवागमन का देश की अर्थव्यवस्था और उसके सामाजिक ढांचे पर निश्चित रूप से प्रायः बुरा प्रभाव पड़ता है। वे यह भी स्वीकार करती हैं कि विकास के स्वरूप से जनसंख्या वृद्धि की दर भी प्रभावित होती है और आवागमन के कारण ऐसी नीतियों को अपनाना पड़ा है जो कारण और कार्य से निपटने में सहायक हो। इन नीतियों को अपनाने के दौरान जनसंख्या प्राकृतिक साधनों, पर्यावरण और विकास के बीच के सम्बन्ध और स्पष्ट हो गए हैं। अनुभव और अनुसंधान से यह पता चला है कि जनसंख्या स्वास्थ्य की देखभाल, शिक्षा, स्त्रियों की स्थिति और सामाजिक विकास के बीच वृत्ताकार सम्बन्ध है। इनमें से किसी एक को सशक्त करने से दूसरे पर अच्छा प्रभाव पड़ता है और यदि किसी एक में सुधार लाना चाहे तो अनेक कारकों को सशक्त करना पड़ेगा।

विश्व प्रजनन सर्वेक्षण के सम्बन्ध में बड़े सुव्यस्थित ढंग से अनुसंधान कार्य हुए हैं। इनके फलस्वरूप यह पता चलता है कि जनसंख्या के किसी एक पक्ष और अन्य चरों के बीच क्या पारस्परिक सम्बन्ध है। इस सर्वेक्षण से अन्य अनेक मान्यताओं की भी पुष्टि होती है जैसे यह कि प्रजनन दर घटने के साथ-साथ लोगों की स्थिति बेहतर होती है, स्त्रियों के रोजगार में लगे रहने और जन्मदर घटने के बीच प्रायः पारस्परिक सम्बन्ध होता है, परन्तु विश्व प्रजनन सर्वेक्षण से पता चलता है कि जिन स्त्रियों ने कुछ दिन भी कोई नौकरी की उनको उन स्त्रियों की अपेक्षा कम बच्चे पैदा हुए जिन्होंने कभी भी कोई नौकरी नहीं की। इस सम्बन्ध में यह भी बात देखने में आई कि स्त्रियों का धंधा भी महत्वपूर्ण है। खेतों और कारखानों में काम करने वाली स्त्रियों की प्रजनन में कोई खास अंतर नहीं होता लेकिन कार्यालय तथा उच्च कोटि के धंधों वाली स्त्रियों के परिवार सबसे छोटे होते हैं।

साक्षरता और शिक्षा के स्तर का प्रभाव स्त्रियों के बच्चों की संख्या पर ही नहीं बल्कि इस बात पर भी पड़ता है कि उनमें से कितने जीवित रह पाते हैं। लातीनी अमरीका की अशिक्षित स्त्रियों के बच्चों के सम्बन्ध में जोखिम-खतरा पांच या दस वर्ष तक शिक्षा प्राप्त माताओं के बच्चों की अपेक्षा 3.5 गुना अधिक होता है। माता के शिक्षा का स्तर जितना ही बढ़ता जाता है उसके दो वर्ष तक के उम्र के बच्चे की मृत्यु की संभावना उतनी ही घटती जाती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

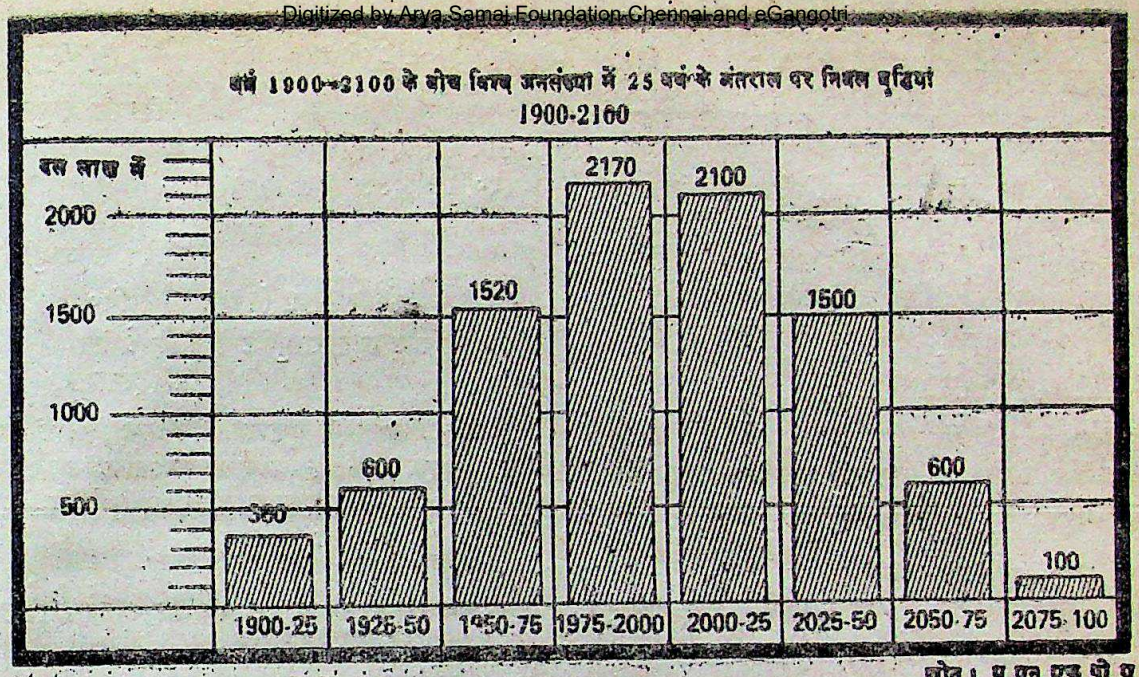

स्रोत : यू.एन. एड. पी.ए.

इस शताब्दी के आठवें दशक के अनुसंधान और अनुभव से यह पता चलता है कि विकासशील देशों में जन्म और मृत्यु दर को घटाने के बेहतर उपाय निम्नलिखित हैं। स्त्रियों की शिक्षा और उनके रोजगार पर ध्यान देना, स्वास्थ्य और परिवार नियोजन सेवाओं में सुधार और परिवार के स्वरूप के संबंध में उनके दृष्टिकोण में परिवर्तन।

इस शताब्दी के सातवें एवं आठवें दशकों में मिला तीसरा प्रमुख सबक है—प्रमुख सेवाओं में सुधार की आवश्यकता। शिशु-मृत्यु की संख्या को कम करने के लिए यह आवश्यक है कि घातक रोगों का उन्मूलन किया

क्या विश्व वयोवृद्ध जनसंख्या की समस्या का सामना कर पाएगा ?

जाये या उन पर नियंत्रण किया जाए। ये रोग मुख्यतः प्रदूषित भोजन और जल तथा सफाई में कमी के कारण होते हैं। रोग की चिकित्सा सेवाओं का उतना अधिक महत्व नहीं होता जितना कि स्वच्छ भोजन तथा जल, पर्याप्त सफाई तथा इन दोनों के संबंध में व्यवस्था का होता है। अन्य सेवाओं के समान ही परिवार नियोजन के सबन्ध में भी यही बात लागू होती है। वर्ल्ड फर्टिलिटी सर्वे ने पाया है कि गर्भ निरोध के विषय में ज्ञान का स्तर व्यावहारिक स्तर से कहीं ऊंचा है जिसका एक कारण सेवाओं की कमी भी है।

चौथी बात यह है कि जनसंख्या कार्यक्रम के संबंध में कोई देश कितना खर्च करने को तैयार है। इस संबंध में रुचि बढ़ने के साथ-साथ जनसंख्या पर लगने वाले राष्ट्रीय बजट की मात्रा भी बढ़ती गई है। उदाहरणार्थ 1971-75 और 1976-80 के बीच कीनिया की सरकार ने इसके संबंधी खर्च में 12 गुनी वृद्धि कर दी।

अंतिम बात यह है कि 1970 ई. से जनसंख्या के संबंध में अन्तर्राष्ट्रीय मदद दुगुनी हो गई है और विकासशील देशों में जनसंख्या कार्यक्रमों पर लगने वाले साधनों में इसका अंश लगभग एक तिहाई है। फिर भी कुल अंतर्राष्ट्रीय सहायता का यह 2 प्रतिशत ही है।

पिछले दशक में जनसंख्या-समस्या के संबंध में जो नियोजित कदम उठाए गए हैं और जन्मदर में जो गिरावट आई है उनकी पृष्ठभूमि में ये ही पाँच आते हैं। फिर भी इस संबंधी समस्त विश्व के आंकड़े क्षेत्रीय और राष्ट्रीय विभिन्नताओं को स्पष्ट नहीं कर पाते। जन्मदर में अधिकतर गिरावट एशिया के थोड़े से उन देशों में आई है जहाँ पर विकासशील विश्व की दो तिहाई जनता रहती है। अन्य अनेक देशों, मुख्यतः अफ्रिका, में तो अभी भी जनसंख्या वृद्धि की दर अधिक तथा जीवनसंभाविता अत्यंत कम है। इन देशों में तो समस्या यह है कि दुर्लभ साधनों तथा दिन प्रतिदिन बढ़ती हुई जनसंख्या के बीच किस प्रकार तालमेल कायम किया जाए। इनमें से अनेक देशों में समस्या का जटिल हो जाने का कारण है जनसंख्या की विविधता तथा उसका बिखरा होना। यहाँ पर स्थिति तो यह है कि चिकित्सा, शिक्षा और परिवहन की मूल सेवाएं भी उपलब्ध नहीं हैं।

भविष्य के संबंध में उत्तर लगभग इसी प्रकार का होना चाहिए। परन्तु आंशिक रूप से ही सही इस शताब्दी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या जीवन स्तर के ऊंचा उठने पर प्रजनन-शक्ति घट जाती है ?

के आठवें दशक में बनाई गई गति को यदि कायम रखना है तो देश के अन्दर से तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर से प्राप्त जन संख्या पर लगाये जाने वाले साधनों में वृद्धि करना आवश्यक है। कायक्रमों के बढ़ने के साथ-साथ जनसंख्या और विकास के संबंधों में जानकारी बढ़ेगी, यह पता चलेगा कि कौन से नए उपाय किए जाएं तथा यह भी मालूम होगा कि प्रगति के संबंध में कौन सी अज्ञानता तथा संशय है जिन के सम्बन्ध में अनुसंधान की आवश्यकता है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि समाज को प्रभावित करने के लिए हमें नए-नए उपाय ढूढ़ निकालने होंगे। अनुभव ने हमें यह तो सिखाया ही है कि लोगों के सक्रिय सहयोग के बिना जनसंख्या कार्यक्रमों को सफलतापूर्वक नहीं चलाया जा सकता। सरकारी कार्यक्रमों को चलाने में समाज से भौतिक साधन, नेतृत्व तथा संचार प्राप्त हो सकते हैं।

इसके अतिरिक्त नई-नई समस्याएं जैसे-जैसे उठेंगी उनके लिए नए-नए समाधान भी ढूंढने होंगे। जैसे नगरों कि जनसंख्या में जो आज अत्यधिक वृद्धि हो रही है तथा भविष्य में जो बढ़ेगी उसके लिए क्या किया जाए। रोम में 1980 ई में हुए नगरों के भविष्य के सम्बन्ध में जो सम्मेलन हुआ था उसमें कुछ संभावित उत्तर सुझाए गये थे। ऐसे लोगों की संख्या में जैसे-जैसे वृद्धि होगी जो अपने घर से दूर काम ढूंढने जाएंगे वैसे-वैसे अन्तर्देशी तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रवास की समस्या से निपटना होगा। इसके अतिरिक्त विकासशील देशों में वृद्ध व्यक्तियों का अनुपात बढ़ेगा और तब ऐसे लोगों की आवश्यकताओं तथा योग्यता के अनुरूप सामाजिक ढांचे में परिवर्तन भी करने होंगे।

1984 ई. में होने वाले अन्तर्राष्ट्रीय जनसंख्या सम्मेलन में ऐसे तथा इन्ही जैसे अनेक प्रश्नों पर विचार करना आवश्यक होगा। बुखारेस्ट में हुए विश्व जनसंख्या सम्मेलन के दस वर्ष पश्चात् विश्व के राष्ट्रों के लिए यह संभव होगा कि वे एक साथ बैठकर अपनी प्रगति और समस्याओं पर विचार करें और ऐसे उपाय ढूंढ निकालें जिससे सभी सहमत हों। वे कितनी सफलता प्राप्त कर पाते हैं यह तो ईस्ट नदी का स्मृति बैंक ही बताएगा। इसके अतिरिक्त विकासशील देशों के करोड़ों स्त्री पुरुषों के चेहरे पर भी इस सफलता की झलक मिलेगी। ●

'यूनेस्को दूत' से साभार मुद्रित

सामान्य हिन्दी—पृष्ठ 66 का शेष

कृपया भूसंरक्षण प्रशिक्षण सम्बन्धी कार्य प्रगति का विवरण शीघ्र भेजें।

विकास आयुक्त

तार के लिए नहीं
दि० 10.3.83

(हस्ताक्षर)
विकास आयुक्त

संख्या 302 (1) दि० 10.3.83

प्रतिलिपि डाक द्वारा पुष्टि के लिए प्रेषित
(हस्ताक्षर)

प्रश्न 5. किसी एक सूखाग्रस्त जिले के जिलाधिकारी की ओर से एक सरकारी पत्र राजस्व विभाग, उत्तर-प्रदेश शासन को लिखिए जिसमें उक्त जिले की सूखे की स्थिति और उससे हुई हानि का विस्तृत उल्लेख हो तथा शासन से सहायता हेतु 25 लाख रुपए की स्वीकृति देने की माँग की गयी हो। (उ० प्र० सचिवालय परीक्षा, 1981)

उत्तर—

संख्या 399/6

प्रेषक—
क ख ग
जिलाधिकारी
गोरखपुर

बलिया
दि. 2 मार्च, 1983

सेवा में—
सचिव
राजस्व विभाग
उत्तर-प्रदेश शासन
लखनऊ

विषय—सूखा ग्रस्त क्षेत्र के लोगों की स्थिति एवं सहायता हेतु राशि की माँग।

महोदय,

सेवा में निवेदन है कि इन दिनों बलिया जिले के सभी क्षेत्रों में सूखा पड़ा हुआ है। भीषण सूखे के कारण जनता को काफी कठिनाई हो रही है। जिले के 25,000 व्यक्ति सूखे से प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित हुए हैं। शासन की ओर से राहत के लिए चालू की गयी योजनाएं पर्याप्त राशि के अभाव में अपर्याप्त सिद्ध हुई हैं। मौसम को देखते हुए वर्षा की शीघ्र कोई सम्भावना नहीं है। अतः ऐसी कठिन परिस्थिति में निवेदन है कि बलिया जिले को सूखाग्रस्त घोषित करते हुए 25 लाख रुपये अनुदान की स्वीकृति शीघ्र देने की कृपा करें।

भवदीय
क ख ग
जिलाधिकारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन्दर्भ : छठा अंकटाड

विश्व व्यापार एवं मौद्रिक नीति के लिए सुझाव

—□डॉ. सुधाकान्त मिश्र*—

8 जून, 1983 से बेलग्रेड में होने वाले छठवें संयुक्त राष्ट्र संघ व्यापार एवं विकास सम्मेलन में विचारार्थ मौद्रिक तथा व्यापारिक सुझाव तैयार किये गये हैं जो आने वाले दशक के लिए बहुत महत्वपूर्ण होंगे। यह सभी को विदित है कि पिछले पांच अंकटाड में शोर-शराबा चाहे जितना भी हुआ हो विकासशील देशों की मुख्य मांग अर्थात विकसित देशों की कुल राष्ट्रीय आय का 1% सहायता के रूप में प्राप्त करना भी अभी तक संभव नहीं हो सका। नई दिल्ली के दूसरे अंकटाड में इस विषय पर सर्वप्रथम समझौते हुए थे परन्तु उस पर क्रियान्वयन अभी तक नहीं हो सका है। इस छठवें सम्मेलन में आशा की जाती है कि कुछ महत्वपूर्ण पहलुओं पर स्थायी रूप से विचार करके निर्णय लिये जायेंगे और विकासशील देशों के लाभार्थ ठोस कदम उठाये जायेंगे।

अंकटाड के मंत्रालय ने निम्नांकित मुख्य सुझाव तैयार किये हैं :—

(1) उपभोक्ता पदार्थों के लिए आपसी समझौते :

सम्पूर्ण विश्व में आज उपभोक्ता पदार्थों की प्राप्ति तथा बिक्री का संकट छाया हुआ है। इससे न केवल विकासशील और अल्पविकसित देश ही प्रभावित हुए हैं, अपितु सम्पूर्ण विश्व अर्थव्यवस्था कुचक्रों में फंस गई है। उपभोक्ता पदार्थ, निर्यात करने वाले देश अपने पूर्व विदेशी ऋणों के भुगतान संकट से त्रस्त हैं और उपभोक्ता पदार्थों के निर्माण तथा बिक्री के लिए सुमुचित योगदान नहीं पा रहे हैं। इससे गंभीर अन्तर्राष्ट्रीय मौद्रिक संकट आरंभ होने वाला है, जिससे सन् 1930 की आर्थिक मन्दी जैसी स्थिति शीघ्र आ सकती है। इसके साथ ही साथ विकसित राष्ट्रों ने निर्माणी पदार्थों के लिए अपनी मांग कम कर दी है। अंकटाड मंत्रालय ने चेतावनी दी है कि विश्व व्यापार एवं मौद्रिक सम्बन्धों के सुधार के लिए यह आवश्यक है कि उपभोक्ता पदार्थों के बिक्री एवं उत्पादन के लिए विकसित तथा अल्पविकसित देशों में समझौते किये जायें और इस पर दृढ़ता से अमल किया जाये।

अंकटाड के सुझाव में यह कहा गया है कि अगले तीन वर्षों के लिए उपभोक्ता पदार्थ निर्यात करने वाले देशों को लगभग 20 बिलियन डॉलर की आय होनी चाहिए। यह तभी संभव है जब मांग दूनी हो जाये और उपभोक्ता पदार्थों की बिक्री करने वाली अन्तर्राष्ट्रीय संस्थायें एक नये समझौते के आधार पर काम करने लगे। वर्तमान 'आई. पी. सी.' या 'अन्तर्राष्ट्रीय उपभोक्ता पदार्थ कार्यक्रम' को हटाकर नये कार्यक्रम तैयार नहीं करने हैं। इस सुझाव का सीधा अर्थ यह है कि जो कई देशों की सम्बद्ध सरकारों से मिली-जुली उपभोक्ता पदार्थ परिषदें बनायी गई हैं, उनको उनकी सरकारों द्वारा निर्देश दिये जायें कि वे अधिक पदार्थों की मांग करें और उनका शीघ्र भुगतान करें।

(2) राशिपातन द्वारा उपभोक्ता पदार्थों की बिक्री पर रोक :

अंकटाड मंत्रालय के सुझाव के पत्र में कहा गया है कि विकसित देश तकनीकी श्रेष्ठता के कारण अधिक उत्पादन कर लेते हैं और फिर घटे मूल्य पर अपने पदार्थों को बेचकर मुनाफा कमा लेते हैं। इस राशिपातन से कठिन और श्रम साध्य साधन द्वारा उत्पादित विकासशील देशों की वस्तुयें बिकने से रह जाती हैं। अनुमान है कि विकासशील देशों में लगभग 100 बिलियन डॉलर की वस्तुयें प्रतिवर्ष बिक नहीं पा रही हैं और मन्दी के आसार नजर आ रहे हैं। इस स्टैगइन्फ्लेशन में रिशेसन या मन्दी की स्थिति को शीघ्र दूर करना होगा अन्यथा यह छुतहा

*प्राध्यापक, अर्थशास्त्र विभाग, काशी विद्यापीठ, वाराणसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्ष 1955 में बान्डुंग सम्मेलन के दौरान एशिया एवं अफ्रीका के विकासशील राष्ट्रों ने पहली बार विकसित औद्योगिक राष्ट्रों के विरुद्ध समान आर्थिक हितों के प्रश्न पर विचार विमर्श कर अफ्रो-एशियाई आर्थिक समिति का गठन किया। वर्ष 1961 में सम्पन्न प्रथम गुट निरपेक्ष शिखर सम्मेलन ने न केवल भविष्य में सहयोग की आधार रूपरेखा तैयार की बल्कि विकासशील राष्ट्रों एवं विकसित औद्योगिक राष्ट्रों के मध्य विकास की अवधारणाओं में सुधार पर बल प्रदान किया। इसने विकासशील राष्ट्रों के द्रुतगामी औद्योगीकरण, व्यापार की और अधिक उचित शर्तें, विकसित औद्योगिक राष्ट्रों से और अधिक एवं बेहतर सहायता का प्रवाह तथा औद्योगिक उन्नति में विकासशील राष्ट्रों द्वारा तकनीकी उन्नति की प्रक्रिया में सक्रिय भूमिका पर प्राथमिकता प्रदान की। शिखर सम्मेलन ने संयुक्त राष्ट्र संघ के तत्वावधान में एक अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक सम्मेलन का भी आह्वान किया।

विकासशील राष्ट्रों के दबाव में सं. रा. संघ की महासभा ने वर्ष 1962 में यह निर्णय लिया कि व्यापार एव आर्थिक विकास पर सं. रा. संघ का एक अधिवेशन (अंकटाड) वर्ष 1964 में बुलाया जायेगा। मार्च, 1964 में अंकटाड का पहला अधिवेशन जेनीवा में आयोजित हुआ। अंकटाड का कार्य इस प्रकार निश्चित किया गया (क) विशेष रूप से आर्थिक गति को बढ़ाने हेतु अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार को बढ़ावा देना, (ख) अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार एवं आर्थिक विकास से सम्बद्ध समस्याओं के विषय में सिद्धान्तों एवं नीतियों का प्रारूप तैयार करना तथा इनके कार्यान्वियन हेतु उपयुक्त सुझाव देना, (ग) सं. रा. संघ सम्बद्ध अन्य संगठनों के मध्य समन्वय स्थापित करना और इसकी समीक्षा करना, (घ) सं. रा. संघ की अन्य उपयुक्त संस्थाओं की बहुपक्षीय व्यापार के विस्तार के लिये मन्त्रणाएँ आयोजित करने हेतु तैयार करना तथा, (ङ) विभिन्न सरकारों एवं क्षेत्रीय आर्थिक गठबन्धनों की व्यापार व आर्थिक विकास सम्बन्धी नीतियों के मध्य समानता स्थापित करने हेतु एक केन्द्र के रूप में कार्य करना, इनके लक्ष्यों में विद्यमान विरोध को कम करना। प्रारम्भ में अंकटाड को स्थायी रूप देने का कोई विचार नहीं था परन्तु प्रथम अधिवेशन की सफलता को देखते हुए सं. रा. संघ की महासभा ने दिसम्बर, 1964 में अंकटाड को, सं रा. संघ की एक स्थायी एजेन्सी के रूप में स्वीकार कर लिया। प्रथम अंकटाड अधिवेशन में योगदानकारी 77 विकासशील राष्ट्रों ने "77 का समूह" (Group of 77) का गठन किया। इस समय 77 के समूह के सदस्यों की संख्या 125 से ऊपर है। इसमें विश्व के न्यूनतम विकसित राष्ट्रों के साथ तेल धनी राष्ट्र भी शामिल हैं। अंकटाड में पश्चिमी औद्योगिक राष्ट्रों को बी समूह, पूर्वी यूरोप के समाजवादी राष्ट्रों को 'डी. समूह' का दर्जा प्राप्त है। चीन को अकेले एक अलग समूह का दर्जा का प्राप्त है। इस समय अंकटाड की कुल सदस्य संख्या 165 से भी अधिक है। अंकटाड के दो अंग-व्यापार व विकास समिति एवं सचिवालय है। समिति का कार्य अंकटाड के अधिवेशनों के अन्तराल में (साधारणतः 4वर्ष) कार्यों को आगे बढ़ाना है। सचिवालय अंकटाड अधिवेशनों की तैयारी में प्रमुख भूमिका निभाता है। अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष, विश्व बैंक जैसी अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं के विपरीत अंकटाड में मताधिकार कोटे पर निर्भर न होकर संख्या पर आधारित होने के कारण इसमें विकासशील राष्ट्रों का काफी प्रभाव है। अतएव वे इसका उपयोग राजनीतिक मंच के रूप में करने में कोई संकोच नहीं करते हैं। परन्तु साथ में वे यह भी भली भांति समझते हैं कि बहुमत का लाभ उठाकर प्रस्ताव पारित करने से ही सभी उद्देश्यों की प्राप्ति नहीं हो सकती है। उद्देश्यों की प्राप्ति के लिये आवश्यक है अल्पसख्यक—विकसित औद्योगिक राष्ट्रों और समाजवादी राष्ट्रों की सहमति एवं सहयोग इस प्रभावशाली अल्पसंख्यक को तुष्ट रखने के लिये अंकटाड के अधिकांश प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किये जाते हैं।

आयोजन स्थल में परिवर्तन तथा योगदानकारी राष्ट्रों के संयोजन के कारण अंकटाड के प्रत्येक अधिवेशन की अपनी अलग विशेषता रही है परन्तु सभी बैठकों में कुछ समान विशेषताएं भी रही हैं। प्रत्येक अंकटाड अधिवेशन के पूर्व "77 के समूह" के सदस्य राष्ट्रों के मन्त्रियों की तैयारी बैठक (Preperatory meeting) में समूह को मांग एवं स्त्रातिजी को अन्तिम रूप से स्वीकारा जाता है। (छठें अंकटाड के संदर्भ में 77 के समूह की बैठक द्वारा स्वीकार की गयी मांग एवं स्त्रातिजी के लिये पिछले अंक का अन्तर्राष्ट्रीय सामयिकी पढ़ें) अभी तक अंकटाड के पांचों अधिवेशन में इन मांगों की विषय व

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगभग एक समान ही रही है। यह अवश्य है कि उनकी प्राथमिकताओं में परिवर्तन आता रहा है। प्रारम्भ में असंगठित माँगों को क्रमशः संगठित कर पांचवें अंकटाड अधिवेशन में नयी अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था के रूप में सामने रखा गया था।

अंकटाड के प्रथम चार अधिवेशनों में एक ही प्रमुख विषय वस्तु थी। प्रथम (1964, जेनीवा) एवं द्वितीय (1968, नई दिल्ली) अधिवेशन की प्रमुख विषय वस्तु व्यापार की शर्तों (Terms) में ह्रास एवं विकासशील राष्ट्रों के उत्पादन में विविधता थी। तृतीय अंकटाड अधिवेशन (1972, सान्तियागो) में अन्तर्राष्ट्रीय मौद्रिक समस्या एवं विकासशील राष्ट्रों को विशेष आहरण अधिकार (S. D. R.) का आकलन करने वाली विद्यमान व्यवस्था को, चतुर्थ अंकटाड अधिवेशन (1976, नाइरोबी) में वस्तुओं के एकाग्रीकृत (Integrated) कार्यक्रम को तथा पाँचवे अंकटाड (1979, मनीला में विकासशील राष्ट्रों एवं विकसित औद्योगिक राष्ट्रों के मध्य आर्थिक अन्योन्याश्रय (interdependence) को प्राथमिकता प्रदान की गयी। अंकटाड को व्यापार, वस्तु, अन्तर्राष्ट्रीय मौद्रिक व्यवस्था संसाधनों का हस्तांतरण, टेक्नॉलाजी का हस्तांतरण, तथा विकासशील राष्ट्रों के मध्य आर्थिक व तकनीकी सहयोग आदि मुद्दों पर काफी सफलता मिली है। परन्तु अनेक विकासशील राष्ट्र अंकटाड के कार्यों से सन्तुष्ट नहीं है। सम्भवतः इसका प्रमुख कारण विकासशील राष्ट्रों की उच्च अपेक्षा तथा वास्तविक परिणाम में भारी अन्तर है।

अन्त में, अंकटाड विश्व अर्थव्यवस्था के कठिन दिनों में तमाम बाधाओं के बावजूद विकासशील राष्ट्रों और विकसित औद्योगिक देशों के मध्य वार्तालाप जारी रखने में सफल रहा। प्रमुख आर्थिक समस्याओं का समझौता पूर्ण समाधान-निकाल कर सभी समूहों के आर्थिक हितों में सन्तुलन बनाये रखने में सफल रहा। अंकटाड ने उत्तर-दक्षिण के राष्ट्रों के परस्पर विरोधी आर्थिक हितों के सन्दर्भ में प्रगालन (channel) के रूप में कार्य कर उनके सम्बन्धों को गम्भीर तनाव से मुक्त रखा। इस प्रकार अंकटाड बहुपक्षीय ढांचें के अन्तगत विकासशील राष्ट्रों और विकसित औद्योगिक राष्ट्रों के हितों के मध्य सामंजस्य की लम्बी प्रक्रिया को निश्चयपूर्वक सकारात्मक कहा जा सकता है। ●

बीमारी अन्य शब्दों में विकसित राष्ट्रों को भी प्रभावित करेगी।

(3) उपभोक्ता पदार्थों के लिए एक विशेष कोष की स्थापना :

सैद्धान्तिक रूप से 1000 बिलियन डॉलर की समेकित पूँजी द्वारा एक उपभोक्ता पदार्थ फण्ड (कोष) या सी. एफ का विचार चतुर्थ और पाँचवें अंकटाड से चला आ रहा है। इस सुझाव पत्र में कहा गया है कि कोष यथाशीघ्र प्रारम्भ कर देना चाहिए। एक बार कोष प्रारम्भ होने पर उत्पादक और उपभोक्ता दोनों को लाभ होगा तथा अतिरिक्त उपभोक्ता पदार्थ समझौतों की व्यवस्था हो जायेगी। इस कोष के लिए वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थाओं में विश्व मुद्रा बाजार से साधन जुटाये जा सकते हैं।

(4) विश्व मुद्रा कोष की अवशेष राशि से विशेष सहायता :

सुझाव पत्र में कहा गया है कि आई. एम. एफ. के बी एस. एफ. एफ. (बफर स्टॉक फाइनेन्सिंग फैसिलिटी) या विश्व मुद्रा कोष की अवशेष राशि से उन कार्यक्रमों के लिए तुरन्त सहायता ली जानी चाहिए जिसके लिए अन्तर्राष्ट्रीय उपभोक्ता पदार्थ समझौतों या आई. सी. एस. में 1980 मे कहा गया है। इन पदार्थों में टिन, कोको, रबर, चीनी विशेष रूप से विश्व मुद्रा कोष द्वारा सहायता के लिए चुने गये हैं। चीनी को ग्यारह देशों से खरीदने की व्यवस्था है और टिन और रबर के लिए जो किसी भी देश से खरीदे जा सकते हैं। विश्व कोष 247 बिलियन एस. डी आर या विशेष आहरण अधिकार के रूप में देता है। विश्व बैंक ने भी 1981 में एक ऋण सहायता कार्यक्रम प्रारम्भ किया था जिसके अन्तर्गत उपलब्ध विदेशी उपभोक्ता पदार्थों के क्रय के लिए ऋण दिये जाते हैं। अति अल्प विकसित देशों के लिए विश्व कोष और विश्व बैंक से मिलाकर 10 वर्षों में ऐसे ऋण दिये जाने चाहिए ताकि उपभोक्ता पदार्थों का ज्यादा से ज्यादा उत्पादन तथा व्यापार हो सके। पूर्वी यूरोप के देशों से आग्रह किया जाना चाहिए कि वे अधिक प्राथमिक तथा तैयार माल को अति विकसित देशों से खरीदें और उनका शीघ्र भुगतान करें।

विश्व कोष से, सुझाव पत्र में जैसा कहा गया है, अपेक्षा की जाती है कि इन देशो को विशेष सहायता देने के लिए कई नये कार्यक्रम प्रारंभ करने होगें—

1—नये कोटा या अभ्यंश का निर्धारण जिसमें 100 प्रतिशत के आधार पर कमी की पूर्ति की जायेगी।

2—कोटा में 50 प्रतिशत सदस्य देश का भाग निर्धारित करके तथा

3—ऋण पत्रों के वर्तमान दो या तीन वर्ष की अवधि को बढ़ाकर दस वर्षों के लिए कर दें। ■ ■

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"सूर-सूर तुलसी ससी उडुगन केशवदास....."

● मुश्ताक अली

सम्पूर्ण हिन्दी साहित्य में उक्तियों का एक संसार है। अपनी-अपनी सुविधा की दृष्टि से समय-समय पर प्रशंसक या आलोचक कोई न कोई उक्ति कहते आये हैं। कभी किसी विज्ञ प्रशंसक ने उक्त पंक्ति का भी उच्चारण किया होगा लेकिन उसने शायद ही सोचा हो कि यह छोटी सी पंक्ति कभी विवाद का विषय बनेगी। परन्तु ऐसा हुआ। प्रस्तुत उक्ति को लेकर सम्बन्धित कवियों के प्रशंसको ने खूब उड़ानें भरीं और एक दूसरे को नीचा दिखाने की भी कोशिश की। यही नहीं, सूरदास को सूर्य, तुलसीदास को चन्द्रमा तथा केशवदास को उडुगन के रूप से प्रस्तुत किया गया।

विज्ञान की अपनी एक दृष्टि है। इसमें सिद्धान्त कार्य करता है। तथा उसे कहीं भी सिद्ध किया जा सकता हैं। सूर्य के प्रकाश से चन्द्रमा एवं तारे प्रकाशित हैं, कदाचित् वैज्ञानिको का ऐसा विचार है। लेकिन जब हम सूर्य रूपी 'सूर' को आगे रखकर देखते हैं तब ऐसा रंचमात्र भी नही प्रतीत होता कि तुलसी रूपी चन्द्रमा एव केशव रूपी उडुगन उनसे प्रकाश लेकर ही हिन्दी साहित्याकाश में प्रकाशित हैं। इतना ही नहीं, कभी-कभी तो कुछ संकुचित दृष्टि के प्रशसकों ने "सूर ससी, तुलसी रवी" कहकर अपनी आलोचनात्मक वृत्ति का परिचय दिया। उन्होने तब न 'केशव' की चिन्ता की और न ही उसकी आवश्यकता समझी। ऐसे में, उनके लिये सूरदास चन्द्रमा हो गये और तुलसीदास सूर्य। सारा विज्ञान उलट-पुलट गया। इससे यही बात ध्वनित होती है कि कोई मनमौजी प्रशंसक बिना तर्क, बिना वैज्ञानिक प्रभाव का विश्लेषण किये जो मन में आया, वह कह गया।

कुछेक आलोचक वयक्रम की दृष्टि से पहले 'सूर' फिर 'तुलसी' एवं अन्त में 'केशव दास' की बात करते हैं। वह तो ऐतिहासिक कालक्रम की दृष्टि से समझ में आने वाली बात है लेकिन उसमें भी एक निहित गुप्त प्रश्न है कि क्या हिन्दी साहित्य में सूर, तुलसी और केशव ही हैं जो उनकी त्रयी का एक साथ स्मरण किया जाये। काल-क्रम की दृष्टि से उनसे पीछे एवं आगे आने वाले कवि साहित्यिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक योगदान की दृष्टि से क्या नगण्य है? हाँ, एक प्रकार का ऐसा प्रभाव जो बड़ा ही सापेक्ष है, उसकी चर्चा की जा सकती है। लेकिन वह तो किसी भी पूर्ववर्ती एवं परवर्ती साहित्यकार को लेकर की जा सकती है। जैसाकि ऊपर कहा जा चुका है कि सूरदास तीनों कवियों में वरिष्ठ थे। उस क्रम में जब हम तुलसीदास पर दृष्टि डालते हैं तो ऐसा प्रतीत होता है कि सूरदास के वात्सल्य एवं बाल-वर्णन से तुलसी दास जी प्रभाव ग्रहण किये होंगे। बल पूर्वक नहीं कहा जा सकता लेकिन 'अवधेश के बालक चारि सदा, तुलसी मन मन्दिर में बिहरैं' वाले प्रकरण से तुलसी दास पर सूरदास का प्रभाव कहा जा सकता है। इसी प्रकार, तुलसीदास और आचार्य केशव दास को लेकर भी विचार किया जा सकता है। कहते हैं, एक बार केशव दास गोस्वामी जी से मिलने काशी पधारे। गोस्वामी जी ने केशव दास का अतिथि-सत्कार उचित ढंग से नहीं किया। बस क्या था, उन्होंने अपने मन में ठान लिया कि मैं भी जब तक एक विशद 'रामकाव्य' न लिख लूंगा तब तक चैन से नहीं बैठूंगा। यदि इसे एक कवि का दूसरे के लिये प्रभाव का उत्प्रेरण माना जा सकता है तो यह निश्चित ही एक प्रभाव था जिसके फलस्वरूप केशव दास की 'रामचन्द्रिका' हिन्दी जगत् में महाकाव्य के रूप में आई। यों 'रामचन्द्रिका' के जन्म को लेकर और भी कथाएं प्रसिद्ध हैं लेकिन उसके जन्म का विवाद सुलझाना यहाँ मेरा विषय नहीं है। अस्तु।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदि इसी उक्ति को बिना विज्ञान के प्रभाव से जोड़े हुये देखा जाये तो प्रश्न उठता है कि क्या सूर का साहित्य सूर्य के प्रकाश के समान, तुलसी का साहित्य चन्द्रमा के प्रकाश के समान और केशव का साहित्य उडुगन के प्रकाश के समान है। यह एक ऐसा विवादास्पद प्रश्न है जिसके लिये प्रायः आलोचक अन्यमनस्क रहे हैं। और साहित्य में सूर्य, चन्द्र या उडुगन के प्रकाश जैसा साहित्य कब होता है, जब तक इसका निर्णय न हो जाये तब तक कुछ भी कहना संगत न होगा। वैसे आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के मतानुसार सूर को सूर केवल यमक के लोभ से कहा गया है। उनके विचार में काव्य के सभी पक्षों का गम्भीर विवेचन करने पर तुलसी को अधिक महत्त्व मिलना चाहिये। अतः, साहित्याकाश के वे ही सूर्य हैं और सूर केवल चन्द्र का स्थान ही ले सकते हैं। जबकि केशव दास जी इस संदर्भ में उपेक्षित कर दिये गये हैं। जो भी हो, एक बात समझ में आती है। वह यह कि तीनों का अपना-अपना साहित्यिक व्यक्तित्व है। तीनों तीन क्षेत्रों के उद्भट प्रतिष्ठाता हैं। तीनों ने स्वतंत्र एवं मुक्त भाव से अपने अपने रचना संभार से हिन्दी साहित्य के मध्य-युग को अकुन्ठ रूप से सुसज्जित किया है। लेकिन जो प्रश्न है, वह यह कि तीनों के आलोचनात्मक एवं तुलनात्मक सम्बन्धों का ध्यान रखते हुये उनका साहित्य में योगदान स्थान एवं साम्य-वैषम्य निर्धारित किया जाये। यहाँ, हम भाव पक्ष एवं कला पक्ष दोनों ही के आधार पर विचार करना तर्कसंगत समझते हैं।

सूरदासजी के आराध्य भगवान् कृष्ण हैं जबकि तुलसी दास जी एवं केशवदास जी के भगवान राम। इस दृष्टि से सूरदासजी दोनों कवियों से भिन्न दिखाई पड़ते हैं। सूरदासजी की भक्ति, उपासना पद्धति सखा भाव की थी। वे तुलसी दास की भाँति अपने आप को कृष्ण का दास नहीं समझते थे। यद्यपि प्रारम्भ में वे भी तुलसी की भाँति दीन-हीन दिखाई देते हैं लेकिन बल्लभाचार्य के सम्पर्क के बाद उनमें यथेष्ट परिवर्तन आ गया। अब कृष्ण उनके स्वामी-सखा बन गये। यही कारण था कि सूरदास जी ने कृष्ण से जो भी कहना चाहा, कह दिया। उनमें तनिक भी झिझक नहीं रह गयी। साथ ही भक्त और भगवान् का अन्तर भी [illegible] अनत कहाँ सुख पावे, जैसे उड़ि ज[illegible] जहाज पर आवे।' यही नहीं, सूरदास जी [illegible] रंजक तथा ललित क्रिया-कलापों के सम्रा[illegible] उनका उद्देश्य जन-सामान्य का रंजन करना है [illegible] उनका काव्य 'निगमागम सम्मत....' की दृष्टि से रचि[illegible] नहीं है। सूरदास जी ने अपनी अंधी आँखों से जिस प्रकार वात्सल्य, ललित, मनोविज्ञान एवं सामाजिक पकड़ को अपने काव्य में स्थान दिया है, विरले ही ऐसा करने में सक्षम होंगे। कल्पना भी जिस प्रकार यथार्थ के धरातल पर जीवन्त हो उठी है, उस प्रकार का निदर्शन अन्यत्र दुर्लभ ही होगा।

हुये तीनों के काव्यों को देखें [illegible] कहीं एक बिन्दु पर एक [illegible] विजय। टूटते हुये [illegible] की पुनर्प्रतिष्ठा। [illegible] अध्यात्म का [illegible] मतो मा [illegible] आ

ऐसे ही, यदि तुलसी दास जी और केशव दास जी पर दृष्टि डालें तो पता चलता है कि तुलसी दास जी का काव्य लोक मंगलकारी होने के साथ ही 'स्वान्तः सुखाय' रचित है चाहे भले ही वही 'परान्तः सुखाय' हो जाता हो और सम्भवतः वही उसका सर्वाधिक उत्कृष्ट गुण है। इसी गुण से तुलसी दास जनमानस और मन दोनों के सम्राट हो गये हैं। वहीं, केशव दास जी संस्कृत की आचार्य परम्परा के भक्ति एवं रीति दोनों कालों के उद्घोषक सिद्ध होते हैं। यदि तुलसी दास जी ने अपने काव्य का उद्देश्य राम भक्ति तथा हिन्दू संस्कृति को पुनः संघटित कर पुनः स्थापित करने के साथ रामचन्द्र जी में मानव-जीवन में उत्पन्न होने वाली हर सम्भव समस्याओं—चाहे व्यक्ति के स्तर पर हो, या समाज के स्तर पर उभाड़ने का प्रयास किया है तो केशव दास जी ने भी मुख्य बल भक्ति पर दिया है लेकिन किंचित मात्र तुलसी के राम से उनके राम में अन्तर हो जाता है। इन्होंने राम की भक्ति आदर्श राजा तथा मानव के रूप में की है। यही कारण है कि केशव दास जी ने अपने काव्य में वैभव-भोग श्रृंगार, उग्रता तथा आवेश आदि अनेक तत्वों की सृष्टि की है। साथ ही उन्होंने आचार्य परम्परा की स्थापना करते हुए यथार्थ का चित्रण प्रस्तुत करना चाहा है। यही कारण है कि तीनों कवियों में क्रमशः सख्य, दास्य एवं राजत्व की झलक दिखाई पड़ती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वि है। भगवत्
। हृदयगत भावों
ह भक्ति ही है।
—

पाछें लागे।
सो अभागे।।

का भी। भक्ति
तो जनता तक
और सरस रूप में

पहुँचाने का एक माध्यम था। यहा नहीं, उनका तो समस्त काव्य ही भक्ति का साहित्य है। भक्ति के लिये जिस प्रेम-प्लावित तन्मयता से पूर्ण हृदय की आवश्यकता होती है, वह तुलसीदास जी के पास ही था। उन्होंने कहा है :—

रामसों बड़ो है कौन, मोसों कौन छोटो।
राम सों खरो है कौन, मोसों कौन खोटो।।

जबकि केशवदास कवि पहले हैं, भक्त बाद में। और कवि भा साधारण नहीं, आचार्य परम्परा के प्रवर्त्तक कवि। वे एक दरबारी कवि थे। 'रामचन्द्रिका' से पूर्व उन्होंने काव्य-शास्त्र सम्बन्धी अनेक ग्रन्थों की रचना की। इसकी रचना तो उन्होंने अपने सिद्धान्तों को व्यवहार रूप में परिणत करने करने के लिये की थी। इस प्रकार पहले वे कवि थे, बाद में भक्त। सूर और तुलसी ने जहाँ भावों को प्रधानता दी है, वहाँ केशवदास जी ने कवि-कौशल का चमत्कार दिखाया है। यही कारण है कि उनके ग्रन्थ क्लिष्ट बन पड़े हैं। जहाँ सूर और तुलसी को जन-सामान्य पढ़ सकते हैं; वहीं केशव का काव्य केवल विद्वत्-समाज के लिए सीमित हो जाता है।

प्रबन्धात्मकता की दृष्टि से तीनों में पर्याप्त अन्तर देखने को मिलता है। सूरदास जी का काव्य मुक्तक रूप में मिलता है जबकि तुलसीदास जी ने 'रामचरित मानस' को प्रबन्ध काव्य के रूप में प्रस्तुत किया है। जहाँ सूरदास के काव्य में केवल बाल्यावस्था एव युवावस्था के चित्रों के साथ श्रीकृष्ण जी के जीवन की तमाम घटनाएं अस्तव्यस्त एवं अक्रमबद्ध रूप में दिखाई देती हैं वहीं तुलसी के काव्य में जीवन का पूर्ण चित्र देखने को मिलता है। जबकि केशव दास जी ने मुक्तक के साथ ही प्रबन्ध काव्य का भी सूत्रपात किया। और उन्होंने 'रामचन्द्रिका', 'विज्ञान-गीता', 'वीर सिंह देव चरित', 'जहाँगीर जसचन्द्रिका' और 'रतनबावनी' जैसे एकाधिक प्रबन्ध काव्यों की रचना की। लेकिन तुलसीदास के साथ उनकी तुलना करते हुये उनके प्रबन्धत्व पर अनेक आक्षेप लगाये जाते हैं। कहा जाता है कि 'रामचन्द्रिका' में क्रम, अनुपात और गति का अभाव है। उनकी योग्यता प्रबन्ध-काव्य के योग्य थी ही नहीं। आचार्य शुक्ल ने तो यहाँ तक कह दिया है—"प्रबन्ध रचना योग्य न तो केशव में अनुभूति थी न शक्ति।"

यदि तीनों महाकवियों की भाषा पर विचार करें तो देखते हैं कि सूर की भाषा ब्रज है। वे ब्रजभाषा की प्रारम्भिक स्थिति के कवि हैं लेकिन उनके काव्य को देखकर लगता है कि सूर के संसर्ग से ब्रजभाषा का कलेवर कञ्चनमय हो गया है। सूरदास जी ने कवि-हृदय पाया था, कवि प्रतिभा पायी थी तथा गायक का स्वर पाया था। फलतः, सूरसागर काव्य और संगीत का संगम बन गया है। वहीं तुलसी दास जी ने अपने प्रबन्ध में अवधी का नैपुण्य प्रदर्शित किया है तथा मुक्तक के लिए प्रायः ब्रजभाषा को ही वरण किया है। इस प्रकार, वे दोनों भाषाओं के समान अधिकारी थे। जबकि केशवदास जी संस्कृत-साहित्य से प्रभावित होने के कारण ब्रजभाषा को संस्कृत के प्रभाव से बचा नहीं पाये हैं। यों उनकी भाषा भी ब्रजभाषा ही थी। उनका भाषा-अधिकार उनके पांडित्य और आचार्यत्व को प्रदर्शित करता है। उन्होंने तो विवश होकर हिन्दी (भाषा) में कविता की है। वे स्वयं स्वीकारते हैं :—

भाषा बोलि न जानहीं, जिनके कुल के दास।
भाषा कवि भो मंदमति, तेहि कुल केशवदास।।

जब हम तीनों महाकवियों के रस-छन्दादि-योजना पर विचार करते हैं तो देखते हैं कि सूरदास के काव्य में प्रायः सभी रस मौजूद हैं लेकिन उनमें वात्सल्य, श्रृंगार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और शान्त रस की विशेष प्रधानता है। जहाँ वियोगी हरि ने-'सूर का दूसरा नाम वात्सल्य है और वात्सल्य का दूसरा नाम सूर' कहा है, वहीं शृंगार चित्रण में सूर एकाधिपति हैं। संयोग और वियोग दोनों पक्षों का सूर ने अत्यन्त मार्मिक चित्रण प्रस्तुत किया है। उसी मार्मिकता का फल है कि आचार्य शुक्ल जैसे समीक्षक उन्हें शृंगार रस का सर्व समर्थ कवि मानते हैं। इसी प्रकार तुलसी दास जी के काव्य में नवों रसों की प्रधानता है किन्तु शान्त रस ही उनका विशेष रस है। इसका मूल कारण भक्ति की प्रधानता भी है। यहाँ रस के मामले में तुलसी दास जी सूरदास जी से पीछे दीखते हैं। जब कि केशव दास जी ने आचार्य विश्वनाथ के मत को स्वीकार करते हुये शृंगार, वीर तथा शान्त रस में से शृंगार रस को प्रधानता दी है साथ ही उसे 'रस राजत्व' की संज्ञा प्रदान की है। यही नहीं, उन्होंने रसिकों के लिये 'रसिक प्रिया' की भी रचना कर दी है। ऐसे छन्दों के सन्दर्भ में केशवदास जी दोनों महाकवियों को पीछे छोड़ गये हैं।

जहाँ तक तीनों महाकवियों के काव्यो में अलंकारों का प्रश्न है, इस संदर्भ में कहा जा सकता है कि प्रथम दोनों महाकवि अलंकारवादी नहीं थे। इन लोगों ने अलंकार की कोई योजना नहीं बनाई थी, फिर भी इनके काव्यों में रूपक और उत्प्रेक्षा का बाहुल्य अपने आप हो गया है। कहते हैं, जब सूरदास जी काव्य रचना में लीन होते थे तब अलंकार शास्त्र हाथ जोड़ कर खड़ा हो जाता था और तुलसीदास जी के काव्य में भी अलंकार स्वयं प्रयुक्त होकर मानों उनकी मनुहार करते हों। जब कि केशवदास जी हिन्दी साहित्य में अलंकार-सम्प्रदाय के आदि संस्थापक भामह के रूप में खड़े होते हैं। उन्होंने स्वयं स्वीकार किया है :—

जदपि सुजाति सुलच्छिनी, सुबरन, सरस, सुवृत्त।
भूषन बिनु न बिराजहीं, कविता बनिता मित्त॥

एक दृष्टि में, तीनों महाकवियों की विवेचना करने पर अब इस प्रकार का धर्म-संकट उपस्थित हो जाता है कि किसे बड़ा तथा किसे छोटा कहा जाये। यदि मध्ययुगीन परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में देश-काल-पात्र की वास्तविक स्थिति को देखते हुये तीनों के काव्यों को देखें तो लगता है कि तीनों कहीं न कहीं एक बिन्दु पर एक हैं। और वह है—असत् पर सत् की विजय। टूटते हुये मूल्यों, धर्म के मानों और आस्थाओं की पुनर्प्रतिष्ठा। समाज को एक नई दृष्टि। संस्कृति और अध्यात्म का उद्घोष। बल्कि यों कहें तो अत्युक्ति नहीं कि 'असतो मा सद्गमय तमसो मा ज्योतिर्गमय' का स्वर प्रधान हुआ है। तीनों महाकवियों के बहुआयामी दृष्टिकोण और क्षेत्र होने के बावजूद भी तीनों अपने-अपने क्षेत्र के धुरन्धर हैं। एक कृष्णभक्ति शाखा का प्रमुख; दूसरा राम भक्ति शाखा का प्रमुख तो तीसरा भक्तिकाल में होते हुये भी रीति का आचार्य कवि। ऐसी दशा में एक को सूर्य, दूसरे को चन्द्र तथा तीसरे को उडुगन कहना कहाँ तक तर्क-सम्मत है? अतः, इन तीनों में कौन बड़ा; कौन छोटा है, यह निर्णय लेना मेरी जैसी अल्पमति के लिये सुकठिन तो है ही साथ ही उचित भी नहीं। ठीक भी है—'को बड़ छोट कहत अपराधू।

पी० सी० एस० तथा अन्य प्रतियोगितात्मक
परीक्षाओं के लिये
उपयोगी तथा महत्वपूर्ण पुस्तक

■

प्राचीन भारत का इतिहास

(प्रारम्भ से १२वीं शती तक)

अपने नवीन संशोधित तथा परिवर्द्धित संस्करण में
लेखक : प्रो० के० सी० श्रीवास्तव
भूमिका
प्रो० जे० एस० नेगी
(इलाहाबाद विश्वविद्यालय)
प्रकाशक
यूनाइटेड बुक डिपो
यूनिवर्सिटी रोड, इलाहाबाद-२११००२
(पुस्तक वी० पी० पी० से मंगाने हेतु उपर्युक्त पते पर रु० १०/- अग्रिम धनादेश (Money Order) के साथ भेजें)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्रामीण विकास में विज्ञान और प्रौद्योगिकी

● सर्वमित्र

अस्सी प्रतिशत के लगभग भारतीय जनता गाँवों में रहती है। यह कोई रहस्योद्घाटन नहीं हैं। इस तथ्य को आप पहले भी कई बार व कई और स्थानों पर पढ़ चके होंगे। अतः इससे आप भलीभाँति परिचित है। अब यदि देश की आबादी का इतना बड़ा भाग गाँवों में रहता है तो यह कहा जाना आवश्यक नहीं कि राष्ट्रीय विकास का सर्वाधिक महत्वपूर्ण पक्ष ग्रामीण विकास होना चाहिए। ग्रामीण विकास छोटे किसानों, भूमिहीन मजदूरों, काश्तकारों, आदि, के आर्थिक पुनरुत्थान में निहित है और इसके लिए कृषि, लघु एवं कुटीर उद्योग, सिंचाई, परिवहन, शिक्षा, आदि, क्षेत्रों में कार्य किया जाना आवश्यक है। आर्थिक समस्याओं के साथ-साथ सामाजिक समस्याएँ भी जुड़ी हुई हैं। इनमें जातिवाद, रूढ़िवादिता और अशिक्षा प्रमुख है। ग्रामीण भारत के सामाजिक और आर्थिक विकास ने देश के योजना निर्धारकों के सम्मुख एक महत्वपूर्ण चुनौती खड़ी की है। समय-समय पर नए कदम उठाए गए और नई नीतियों का निर्धारण किया गया। किन्तु, आज भी यह अनुभव किया जाता है कि स्वतंत्रता के तीन दशकों के बावजूद ग्रामीण जनता के आर्थिक स्तर और जीवन पद्धति में कोई महत्वपूर्ण परिवर्तन नहीं हुआ है, हालाँकि पश्चिमी उत्तर प्रदेश, पंजाब और हरियाणा को अपवाद स्वरूप माना जा सकता है। इसीलिए आज ग्रामीण विकास के लिए एक समग्र-समन्वयित नीति की आवश्यकता है जिसमें विज्ञान, प्रौद्योगिकी और वैज्ञानिक प्रबन्ध का समन्वय अपेक्षित है।

ग्रामीण विकास में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तभी सहायक हो सकते हैं जबकि वे ग्रामीण समस्याओं से पूर्णतया अन्तर्सम्बद्ध हों। हर क्षेत्र की अपनी विशिष्टता होती है। जब तक वैज्ञानिक इन विशिष्टताओं का अध्ययन नहीं करेगा, उसकी तकनीकी कागजी सैद्धान्तिकता बन कर समाप्त हो जायगी। निष्कर्ष यह कि वैज्ञानिक को धरातलीय ज्ञान आवश्यक है। किन्तु, वह अपने कार्यक्षेत्र तक कैसे पहुँच सकता है? आवश्यकता संचार साधनों और परिवहन सुविधाओं की है। प्रश्न उठता है कि क्या हमारे वैज्ञानिकों को यह उपलब्ध हैं?

अधिकांशतः इस प्रश्न का उत्तर नकारात्मक ही होगा। अब यदि शहरी वैज्ञानिक गाँव तक नहीं पहुँच सकते तो क्या यह अपेक्षा की जाय कि हमारे ग्रामीण-जन अपनी समस्याओं के निदान के लिए शहर आएगें? और, यदि वे आए भी तो क्या यह विश्वास के साथ कहा जा सकता है कि उनकी समस्याओं का निदान आशानुरूप संभव हो सकेगा। अतः ग्रामीण विकास में विज्ञान और प्रौद्योगिकी तभी सफल हो सकती है जब शहरी वैज्ञानिकों और ग्रामीण समस्याओं के मध्य यथोचित संचार और संप्रेषण की व्यवस्था हो।

इसी संदर्भ में जब हम ग्रामीण विकास के लिए विज्ञान के प्रयोग की बात कहते है तो हमें ध्यान रखना चाहिए कि कोई भी वैज्ञानिक परिकल्पना ऊर्जा और शक्ति के ऊपर आधारित होती है। अब यदि हम अपने ग्रामीण अंचल पर दृष्टिपात करें तो यह स्पष्ट होते देर न लगेगी कि कुछेक प्रतिशत गाँवों को छोड़कर, शेष में यह सुविधा उपलब्ध नहीं है। तो प्रश्न यह उठता है कि ऐसे में विज्ञान और तकनीकी की हमारे गाँवों के लिए क्या उपयोगिता है?

इसी प्रकार पूंजी की भी समस्या सामने आती हैं। कोई भी वैज्ञानिक अनुसंधान या प्रबन्ध, पूंजी आश्रित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होता है। क्या ग्रामीण क्षेत्रों में यह पूंजी उपलब्ध है? क्या ग्रामीण अंचल के पूंजीपति इस उद्देश्य में निवेश करने को तैयार हैं? स्पष्ट उत्तर होगा कि 'ऐसा सम्भव नहीं है'। कारण बहुत सरल है। नई शिक्षा और ज्ञान के द्वारा हम ऐसे लोगों का उत्थान चाहते हैं जो हमेशा से आश्रित रहे हैं। और, इस उत्थान के लिए हम उन्हीं लोगों की पूंजी चाहते हैं जिनके वे आश्रित थे। ऐसा होना अस्वाभाविक है और इसलिए ग्रामीण विकास के लिए पूंजी-संचय एक दुष्कर कार्य है। ऐसी स्थिति में सरकारी वित्त संस्थाएं महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकती है। हालांकि अभी तक देखा यही गया है कि इन संस्थाओं से मिलने वाले लाभ ग्रामीण समाज के उच्च वर्ग को ही प्राप्त हुए हैं। ग्रामीण विकास के मूल उद्देश्यों की पूर्ति में इनसे अधिक सहायता नहीं मिली है।

इन प्रमुख समस्याओं के बावजूद देश के वैज्ञानिकों ने ग्रामीण समस्याओं का अध्ययन करके उनके निदान के उपाय निरूपित किए हैं। राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला के श्री बी. डी. तिलक ने ग्रामीण विकास के मुख्य क्षेत्रों का निर्धारण किया है। उनके प्रारूप के अनुसार विज्ञान और तकनीकी का प्रयोग निम्नलिखित ग्रामीण समस्याओं के संदर्भ में किया जा सकता है—

१. जल-प्रबन्ध :

यह कहे जाने की आवश्यकता नहीं है कि ग्रामीण अर्थ-व्यवस्था कृषि पर आधारित है, और कृषि के लिए जल का होना आवश्यक है। अतः सफल जल प्रबन्ध ग्रामीण विकास के लिए अत्यावश्यक है। इसके लिए—

(अ) जल संरक्षण को सर्वोच्च प्राथमिकता की जानी चाहिए। ऐसे रसायन उपलब्ध है जो जल के वाष्पीकरण की दर को धीमा करते हैं। इनसे रबी की और गर्मी की फसलों के लिए जल पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हो सकता है। वाष्पीकरण की दर को सीमित करके कुओं में जल स्तर को बढ़ाया जा सकता है और नागरिक जल-आपूर्ति में वृद्धि की जा सकती है।

(ब) उचित रसायनों की सहायता से प्राकृतिक जल का शुद्धीकरण या उपचार करके उसे पीने योग्य बनाया जा सकता है। तथा,

(स) रासायनिक परीक्षणों के आधार पर भूमिगत जल के बारे में नवीनतम जानकारी अर्जित की जा सकती है जिससे उपयोगकारी जल की मात्रा बढ़ाई जा सके।

२. टिशू कल्चर :

पौधों के तन्तुओं में आवश्यक रासायनिक उपचार के प्रभाववश यह देखा गया है कि चीनी, गेहूं, हल्दी और पत्तागोभी की पैदावार में वृद्धि होती है। और, अन्य कई किस्म के फलों, जैसे, काजू, नारियल, आम, आदि, की उपज भी बढ़ती है।

इसके अतिरिक्त निम्नलिखित क्षेत्रों में भी विज्ञान और तकनीकी का प्रयोग या तो हो रहा है अथवा प्रस्तावित है—

1. नाइट्रोजन स्थाईकरण द्वारा तेजी से बढ़ने वाले वृक्षों का शीघ्र गुणन।
2. ग्रामीण क्षेत्र में ऐसे पौधों और वृक्षों का पता लगाया जाना जो कीटाणुनाशक की भूमिका निभा सकते हैं।
3. ऐसी वनस्पतियों का पता लगाया जाना जो औषधियों के निर्माण में प्रयोग किए जा सकते हों।
4. गांवों में लघु और कृषि उद्योग की स्थापना और उसका विकास, स्थानीय कच्चे माल की उपस्थिति के संदर्भ में
5, गांवों में सामूहिक गोबर गैस संयत्रों की स्थापना जिससे ऊर्जा की समस्या का निदान हो सके तथा जहां कहीं ये संयत्र हो वहां ऊर्जा-उत्पादन में वृद्धि के तरीकों का पता लगाया जाना।
6. जिन ग्रामीण क्षेत्रों में जल पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हों और जहां जल संग्रह की सुविधा हों वहां जल खाद्य को विकसित किया जाना। आर्थिक दृष्टि से जल-खाद्य बहुत ही बहुमूल्य होता है और सही पद्धति से इस उद्योग का विकास किए जाने से केवल यही अकेला उद्योग किसी क्षेत्र का आर्थिक कायाकल्प

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने में सक्षम है।

7. ऊर्जा उत्पादन के अन्य विकल्पों का विकास जिसमें पवन-चक्की का उल्लेख विशेष रूप से किया जाना आवश्यक है। सौर ऊर्जा के विकास के लिए किए जा रहे प्रयत्न भी इस संदर्भ में महत्वपूर्ण है, हालांकि इस विकल्प पर अभी अधिक निर्भरता निकट भविष्य में प्रतीत नहीं।

8. मिट्टी की काश्तकारी के लिए वैज्ञानिक सहायक संसाधनों का उपलब्ध किया जाना।

9. यातायात और परिवहन के लिए अधिक कार्यकुशलता और कम दाम वाले साधनों का निर्माण जिससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था को शहरी बाजारों के साथ जोड़ा जा सके।

10. अन्तिम, परन्तु सर्वाधिक महत्वपूर्ण क्षेत्र जहाँ विज्ञान तकनीकी का प्रयोग हो सकता है, बंजर और बेकार पड़ी हुई भूमि को कृषि योग्य बनाने से सम्बन्धित है। देश के क्षेत्रफल को देखते हुए कृषि प्रधान अर्थ-व्यवस्था ही देश के विकास के लिए काफी है। किन्तु इस क्षेत्रफल का अधिकांश भाग अभी तक कृषि योग्य नहीं है। इसे पैदावार के योग्य बनाने के लिए पहली आवश्यकता जल की होती है। इसके लिए आवश्यक है कि सिंचाई योजना राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित की जाय और राष्ट्रीय जल संसाधनों को इस प्रकार समन्वयित किया जाय कि देश के कम जल वाले क्षेत्रों को भी लाभ पहुँचे और बाढ़ के दौरान जल के नुकसान को रोका जा सके। इस सम्बन्ध में दूसरी आवश्यकता बंजर भूमि को कृषि योग्य बनाने की है। केवल जल ही कृषि के लिए आवश्यक नहीं है। इसके लिए मिट्टी का उपचार भी आवश्यक है। वैज्ञानिक सहायता से नदियों और झीलों की तलहटी में जमी 'सिल्ट' को बंजर मरुस्थलों को स्थानांतरित किया जा सकता है जिससे वे कृषि योग्य बन सके।

अन्तिम पक्ष इन सुझावों और विचारों को क्रियान्वित करने से सम्बन्धित है। वैज्ञानिकों और विशेषज्ञों के अनुसार यदि विज्ञान को ग्रामीण विकास में सकारात्मक भूमिका अदा करनी है तो इसके लिए राष्ट्रव्यापी ग्रामीण विज्ञान संगठन की स्थापना आवश्यक है। इस संगठन की शाखाएं राष्ट्रीय प्रयोगशालाओं, विश्वविद्यालयों, वैयक्तिक संस्थानों और समर्पित व्यक्तित्वों तक फैलाई जा सकती है। इनका उद्देश्य ऐसी ग्रामीण समस्याओं का पता लगाना और उनका समाधान ढूंढ़ना होगा जो गाँवों के साथ इनके नियमित सम्पर्क के फलस्वरूप सामने आती हैं। इसके लिए प्रमुखतः दो स्तरों पर कार्य किया जाना आवश्यक है—

1. देश के वैज्ञानिकों और तकनीशियनों में ग्रामीण विकास के लिए अभिरूचि जागृत करना। तथा

2. गाँववालों को अपनी सामाजिक और आर्थिक समस्याओं को इन समर्पित वैज्ञानिकों के सामने लाने के लिए प्रेरित किया जाना।

सफल ग्रामीण विकास वस्तुतः तभी सम्भव है जब वैज्ञानिकों और ग्रामीणजन के मध्य सतत अन्तर्सम्बन्ध बना रहे। इस दिशा में पहल सरकारी स्तर पर की जानी चाहिए क्योंकि जैसा कि पहले भी संकेत दिया जा चुका है अनुसंधान, संगठन और क्रियान्वन के लिए पूँजी सबसे महत्वपूर्ण है। समाजवादी कल्याणकारी राज्य में यह उत्तरदायित्व राज्य को ही वहन करना होगा। पूँजी निवेश के साथ-साथ यह भी आवश्यक है कि विकास कार्यों के लिए राज्य सामान्य प्रशासनिक व्यवस्था पर निर्भर न रहे। प्रशासनिक व्यवस्था आज कल कानून और व्यवस्था बनाए रखने में ही इतनी व्यस्त है कि उसे विकास कार्यों के लिए यथोचित समय प्राप्त नहीं होता। अतः यह अपेक्षित है कि विकास कार्यों में सामाजिक व निजी संगठनों एवं संस्थाओं की सहायता ली जाय, राष्ट्रीय विज्ञान प्रयोगशालाओं को इस प्रक्रिया में सम्मिलित किया जाय और वरिष्ठ वैज्ञानिकों का वैयक्तिक स्तर पर मार्ग दर्शन लिया जाय। संगठन के महत्व पर और अधिक कहा जाना आवश्यक नहीं है। ध्यान रहे कि कार्य कुशल संगठन के अभाव में अच्छे से अच्छा ज्ञान फलहीन सिद्ध होता है। ■ ■

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रीड़ा जगत

■ क्रिकेट

● 26 अप्रैल, 1983 को कैण्डी में समाप्त हुए प्रथम क्रिकेट टेस्ट मैच में आस्ट्रेलिया ने श्रीलंका को एक पारी और 38 रनों से पराजित किया। आस्ट्रेलिया: चार विकेट पर 514 रन, श्रीलंका: 271 व 205 रन। ● 3 मई, 83 को सेंट जोन्स (एंटीगुआ) में समाप्त हुआ भारत और वेस्ट इण्डीज के मध्य खेला गया पांचवां क्रिकेट टेस्ट मैच अनिर्णीत रहा। भारत 467 व 5 विकेट पर 247 रन, वेस्ट इण्डीज 550 रन। वेस्ट इण्डीज ने पांच टेस्ट की इस श्रृंखला को 2—0 से जीत लिया। कप्तान— वेस्ट इण्डीज: क्लाइव लायड, भारत: कपिल देव। ● 13 मई, 83 को बम्बई में समाप्त हुए फाइनल मैच में दक्षिण क्षेत्र ने गत विजेता पश्चिमी क्षेत्र को आठ विकेट से पराजित कर अखिल भारतीय अंतरक्षेत्रीय महिला क्रिकेट प्रतियोगिता के लिये रानी झांसी ट्राफी जीतने का गौरव प्राप्त किया। पश्चिम क्षेत्र 199 रन पर 6 विकेट, दक्षिणी क्षेत्र: 200 रन पर 2 विकेट। ● प्रुडेनशियल कप हेतु सीमित ओवरों वाला तृतीय विश्व कप इंग्लैण्ड में 9 जून, 83 से प्रारम्भ होगा। इसमें 8 देश भाग लेगें।

■ फुटबाल

● 7 मई, 83 को कन्नानोर में खेले गये राष्ट्रीय सब-जूनियर फुटबाल चैम्पियनशिप के फाइनल में केरल ने पश्चिम बंगाल को 2—0 से पराजित कर लगातार तीसरी बार जस्टिस मीर इकबाल हुसैन ट्राफी जीतने का श्रेय प्राप्त किया। ● 9 मई, 83 को कन्नानोर में आयोजित सातवीं फेडरेशन कप फुटबाल प्रतियोगिता के दुबारा खेले गये फाइनल में मोहम्मडन स्पोर्टिंग (कलकत्ता) ने मोहन बागान क्लब (कलकत्ता) को 2—0 से पराजित कर खिताब जीत लिया। ● 18 मई, 83 को पटना में सम्पन्न फाइनल मैच में काठमन्डू एकादश ने पंजाब स्टेट इलेक्ट्रीसिटी बोर्ड (होशियारपुर) को 1—0 से पराजित कर संजय गान्धी फुटबाल टुर्नामेन्ट जीत लिया।

■ हाकी

● 23 अप्रैल, 83 को क्वालालम्पुर में खेले गये फाइनल में नीदरलैण्ड ने कनाडा को 3—1 गोल से पराजित कर पांचवीं विश्व महिला हाकी प्रतियोगिता जीतने का श्रेय प्राप्त किया। 12 राष्ट्रों की इस प्रतियोगिता में भारत ने ग्यारहवां स्थान प्राप्त किया। ● 30 अप्रैल 83 को कलकत्ता में सम्पन्न फाइनल में ई. एम. ई. जलन्धर ने केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल, नीमच को 1—0 से हराकर बेटन कप जीत लिया। ● 3 मई, 83 को म्यूनिख में खेले गये फाइनल मैच में सोवियत संघ ने कनाडा को 8—2 से पराजित कर विश्व आइस हाकी चैम्पियन बने रहने का गौरव प्राप्त किया।

■ टेनिस

● 2 मई 83 को डैलास में खेले गये फाइनल मैच में जॉन मैकनरों ने इवान लैण्डल को 6—2, 4—6, 6—3, 6—7, 7—6 से हरा कर डब्लू. सी. टी टेनिस खिताब तीसरी बार जीत लिया जो कि रिकार्ड है। सात सेट के इस फाइनल मैच ने 972 के पांच सेट वाले फाइनल का कीर्तिमान भी तोड़ दिया। ● 6 मई, 83 से नई दिल्ली में खेले गये पूर्वी क्षेत्र डेविस कप सेमी फाइनल में भारत ने थाइलैण्ड को 5—0 से पराजित किया। विजय अमृतराज के नेतृत्व में भारतीय दल के अन्य सदस्य आनन्द अमृतराज, शशि मेनन एवं नन्दन बाल थे। ● 10 मई 83 को डसिलडॉर्फ में सम्पन्न विश्व टीम टेनिस कप के फाइनल में स्पेन ने आस्ट्रेलिया को 2—0 से पराजित कर सिरमौर जीत लिया। ● 16 मई, 83 को हैम्बर्ग में खेले गये जर्मन इनामी टेनिस प्रतियोगिता के फाइनल में मानिक तोआ ने जोस हिगुरास को 3—6, 7—5, 6—2, 6—0 से पराजित कर सिरमौर जीत लिया। ● 9 मई, 83 को टोकियों में सम्पन्न फाइनल में आन्द्रे ई चेसनोकोव (सोवियत संघ) ने काओरू मारूयामा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(जापान) को 6—3, 6—3 तथा सिलवाना [illegible] (ब्राजील) ने अकेमी निशिया (जापान) को 6—3, 6—3 से पराजित कर विश्व जूनियर टेनिस प्रतियोगिता का क्रमशः पुरुष व महिला एकल खिताब जीत लिया।

■ टेबिल टेनिस

● अप्रैल, 1983 में क्वालालम्पुर में सम्पन्न सातवीं राष्ट्रमण्डलीय टेबिल टेनिस प्रतियोगिता की महिला एवं पुरुष दलगत स्पर्धा हांगकांग ने जीत ली। महिला एवं पुरुष वर्ग में भारत का क्रमशः द्वितीय एवं पंचम स्थान रहा। चियू मैन कुएन (हांगकांग) ने चन कोंग वाइ (हांगकांग) को 21—14, 21—16, 15—21, 21—14 से तथा वू काम काई (हांग कांग) ने हुई रवो हेंग को 13—21, 18—21, 21—9, 21—13, 21—17 से पराजित कर क्रमशः पुरुष एवं महिला का एकल खिताब जीता। पुरुष एवं महिला युगल तथा मिश्रित युगल स्पर्धाओं में भी हांग कांग का वर्चस्व रहा। अगली राष्ट्रमण्डलीय टेबिल टेनिस प्रतियोगिता वर्ष 1985 में हांगकांग में आयोजित होगी। ● अप्रैल मई 83 में टोकियों में 37वें विश्व टेबिल टेनिस चैम्पियनशिप के पुरुष वर्ग में चीन ने स्वीडन को 5—1 से तथा महिला वर्ग में चीन ने जापान को 3—0 से पराजित कर दलगत स्पर्धा जीत ली। भारत के पुरुष व महिला दल को क्रमशः 18वां तथा 25वां स्थान प्राप्त हुआ। पुरुष एकल—गुओ येहुओ (चीन) →कोई क्षेन हुआ (चीन) 21—15, 19—21, 21—18, 21—18; महिला एकल—काई यान हुआ (चीन)→ यांग यंग (दक्षिण कोरिया) 21—9, 10—21, 21—9, 21—13; पुरुष युगल डी सुर्बक व जेड कलिनिक (यूगोस्लाविया)→एक्स साइके व जे. जालियांग (चीन): 21—15, 19—21; 20—22, 21—17, 22—20; महिला युगल—एस. जानपिंग व डी. लीली (चीन) →जी लीजआंन व एस. जुनकुम (चीन): 23—21, 21—12, 15—21, 10—21, 21—17 तथा मिश्रित युगल गुओ यू हुआ व ची जिया लिन (चीन) → जिन हुआ व टाग लिंग (चीन): 21—13, 17—21 21 19, 18—21, 21—12। इस प्रकार चीन ने इस प्रतियोगिता में सात स्पर्धाओं में छह खिताब जीते। 38वीं एवं 39वीं विश्व टेबिल टेनिस प्रतियोगिता क्रमशः 1985 में गोटेबर्ग (स्वीडन) एवं 1987 में नई दिल्ली में आयोजित की जायेगी।

■ बैडमिन्टन

● 25 अप्रैल, 1983 को प्रेसवाम में सम्पन्न आस्ट्रियाई अन्तर्राष्ट्रीय बैडमिन्टन प्रतियोगिता में सैयद मोदी (भारत) ने तारिफ महमूद (पाकिस्तान) को 15—1, 15—2 से तथा ली ऊश (ताइवान) ने अमी घिया (भारत) को 11—7, 11—5 से पराजित कर क्रमशः पुरुष एव महिला वर्ग का एकल सिरमौर जीता। ● एसेन (पश्चिमी जर्मनी) में खेले गये अन्तर्राष्ट्रीय बैडमिन्टन टूर्नामेन्ट में एशिया ने यूरोप को 5—4 से पराजित किया। एशियाई टीम ने पांच में से चार एकल मैच जीते जबकि यूरोप की टीम ने चार में से तीन युगल मुकाबले जीते। ● 9 मई, 83 को कोपेनहेगन में तीसरे विश्व बैडमिन्टन प्रतियोगिता के विजेता इस प्रकार रहे: पुरुष एकल ई सुगियार्तो (इन्डोनेशिया) → लीम स्वी किंग (इन्डोनेशिया): 15—8, 12—15, 17—16; महिला एकला—ली लींग वे (चीन) →हान आइ पिंग (चीन): 11—8, 6—11, 11—7; पुरुष युगल स्टीन फ्लेबर्ग व मेस्पर हिलेडी (डेनमार्क)→माइक ट्रेजर व मार्टिन ड्यू (इंग्लैण्ड): 15—10, 15—10; महिला युगल—लिन यिंग व वू डिक्सी (चीन) →नोरा पेरी व जेन वेब्स्टर (इंग्लैण्ड): 15—4, 15—12 तथा मिश्रित युगल—थामस किलस्ट्रोम (स्वीडन) व नोरा पेरी (इंग्लैण्ड) → स्टीन फ्लेडबर्ग व पिआ नेलसन (डेनमार्क): 15—1, 15—11। पुरुष एकल स्पर्धा में भारत के प्रकाश पदुकोन सेमी फाइनल में ई. सुगीयार्तो से 15—9, 5—15, 1—15 से हार गये। चौथी विश्व बैडमिन्टन प्रतियोगिता 1985 में केलगरी (कनाडा) में आयोजित की जायेगी।

■ दौड़ कूद

● टामी परसोन (स्वीडन) एवं मागदा इलैंडस (बेल्जियम) ने वर्ष 1983 का सियोल अन्तर्राष्ट्रीय मैराथन प्रतियोगिता का पुरुष एवं महिला वर्ग का खिताब जीता। ● अप्रैल, 83 में जलन्धर में आयोजित राष्ट्रीय स्कूली खेलकूद प्रतियोगिता में केरल ने 11 स्वर्ण,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

6 रजत, एवं 10 कांस्य पदक प्राप्त कर प्रतियोगिता जीत ली। राजेन्द्र शर्मा तथा गुरमीत कौर क्रमशः बालक व बालिका वर्ग के सर्वश्रेष्ठ एथलीट घोषित किये गये। ● 14 मई, 83 से सम्पन्न नानजिंग (चीन) अन्तर्राष्ट्रीय ट्रैक एण्ड फील्ड प्रतियोगिता की कुल 37 स्पर्धाओं में चीन ने 23 स्वर्ण पदक प्राप्त कर चैम्पियनशिप जीत लिया। आस्ट्रेलिया को 4, इटली, पश्चिम जर्मनी को दो-दो तथा रूमानिया, नीदरलैण्ड, थाइलैण्ड एवं भारत को एक-एक स्वर्ण पदक प्राप्त हुआ। भारत के एशियाड स्वर्णपदक विजेता मध्यम दूरी के धावक चार्ल्स बोरोमियों ने 800 मीटर दौड़ में स्वर्ण पदक जीता। जुजियान (चीन) एवं डेवी फिलटाफ (आस्ट्रेलिया) को प्रतियोगिता के सर्वश्रेष्ठ पुरुष एवं महिला एथलीट घोषित किया गया। ● जैकी बाक्सबर्गर (फ्रान्स) ने 45 राष्ट्रों के लगभग 13000 धावकों को पछाड़ कर आठवीं पेरिस मैराथन दौड़ जीतने में सफलता पाई। ● टाम पेट्रानोफ (अमेरिका) ने 99.72 मीटर की दूरी तक जेवलीन फेंक कर नया विश्व कीर्तिमान स्थापित किया। ● अनीसोअरा (रूमानिया) ने 7.21 मीटर की छलांग लगाकर नया महिला विश्व रिकार्ड स्थापित किया। ● आन्ट्रियास लेट्ज (पूर्व जर्मनी) ने बेन्टम वेट वर्ग में 160.5 कि.ग्रा का भार एक बार में उठाकर नया कीर्तिमान बनाया।

■ विविधा

● दिल्ली के तुगलकाबाद रेन्ज में आयोजित खुली ट्रैप निशानेबाजी प्रतियोगिता में रनिन्दर सिंह ने 100 में से 74 अंक प्राप्त कर चैम्पियनशिप जीत ली। मनशेर सिंह (पंजाब) ने जूनियर राष्ट्रीय ट्रैप शूटिंग चैम्पियन बनने का श्रेय प्राप्त किया। शरद रस्तोगी (उ. प्र.) महिलाओं की ट्रैप शूटिंग में प्रथम रही। ● वर्ष 1983-84 के लिये लास एंजिल्स ओलम्पिक (1984) हेतु विभिन्न दलों के प्रशिक्षण के निमित्त अखिल भारतीय खेल परिषद 10 लाख रुपये खर्च करेगी। ● अलेक्सेन्डर क्रांसनोव ने 5 कि. मी. की दूरी 5 मिनट 50-21 सेकिण्ड में तय कर नया ट्रैक साइकिलिंग विश्व कीर्तिमान स्थापित किया। ● रॉजर इथर ने डब्लू. बी. ए. जूनियर लाइट वेट बाक्सिंग स्पर्धा में अपना वर्चस्व बनाये रखा। ● 16 मई 83 को मोन्टे कार्लो में आयोजित 41वें मोन्टे कार्लो ग्रां प्री प्रतियोगिता को केकी रोसबर्ग (फिनलैण्ड) ने जीत लिया। नेल्सन पीकेट (ब्राजील) एवं एलेन प्रास्ट (फ्रान्स) ने क्रमशः द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त किया। ● 13 मई, 83 को बम्बई में आयोजित फाइनल में माइकेल फरेरा ने सतीश अग्रवाल को 1997—1504 अंक से पराजित कर गरवारे ओपन बिलियर्ड्स चैम्पियनशिप जीत ली। ● रफैल ओरोनो (वेनेजुएला) ने रॉल बेल्डेक्स (मेक्सिको) को पराजित कर डब्लू. बी. सी. सुपर फ्लाइ वेट बाक्सिंग स्पर्धा में अपना वर्चस्व बनाये रखा। ● 16 मई, 83 को पेरिस में सम्पन्न फाइनल मैच में जहाँगीर खान (पाकिस्तान) ने कमार जमान (पाकिस्तान) को 9—5, 7 9, 9 -1 के पराजित कर फ्रेन्च ओपन स्क्वॉश चैम्पियनशिप जीत लिया। ● क्रिकेट खिलाड़ी कपिल देव (भारत), इमरान खान (पाकिस्तान), माल्कोम मार्शल (वेस्ट इण्डीज), ट्रेवर जेस्टी (इंग्लैण्ड) तथा एल्वन कालीचरन (वेस्ट इण्डीज) को वर्ष 1982 के विस्डेन पुरस्कार से सम्मानित किया गया। विस्डेन पुरस्कार पाने वाले कपिल देव 10वें भारतीय है ■

Every Time You Visit Us

You Will Find
Something New

It's
STUDENT'S FRIENDS

Standard Publishers & Quality Book Sellers

UNIVERSITY ROAD,
ALLAHABAD

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तनाव से उत्पन्न स्थिति पर चिन्ता व्यक्त की और इस समस्या के हल के बारे में भारत के विचारों से श्री आखिपोव को अवगत कराया।

भारतीय नेताओं ने परमाणु संघर्ष की आशंकाओं पर भी चिंता व्यक्त की और कहा कि परमाणु हथियारों के उत्पादन तथा उपयोग पर रोक लगाने की दिशा में तेजी से कदम उठाये जाने चाहिये। नई अन्तर्राष्ट्रीय अर्थ व्यवस्था के निर्माण और वर्तमान आर्थिक समस्याओं के हल के बारे में विश्व वार्ता शीघ्र शुरू करने पर भी बल दिया गया। विदेश मन्त्री श्री राव ने आशा व्यक्त की कि रूस व पूर्व यूरोपीय देशों की आपसी आर्थिक सहायता परिषद के शिखर सम्मेलन में निर्गुट शिखर सम्मेलन द्वारा प्रस्तावित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के प्रति ठोस रुख अपनाया जायेगा।

रोहिणी-डी-२ का सफल प्रक्षेपण : एक कदम और

रोहिणी श्रृंखला का तीसरा उपग्रह 17 अप्रैल को श्रीहरिकोटा रेंज से अंतरिक्ष में भेजा गया। 11 बजकर 6 मिनट पर एस. एल वी. 3 के जरिये इसे प्रक्षेपित किया गया और 11 बजकर 15 मिनट पर यह पृथ्वी की कक्षा में पहुंच गया। इस उपग्रह के सभी यंत्र ठीक ढंग से कार्य कर रहे हैं और इससे प्राप्त संकेतों का विश्लेषण किया जा रहा है।

इस उपग्रह प्रक्षेपण के साथ ही भारत उपग्रह प्रक्षेपण तकनीक वाले देशों की सूची (अंतरिक्ष क्लब) में शामिल हो गया। 41.5 किलोग्राम वजन का यह उपग्रह तिरुअनंतपुरम स्थित विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केन्द्र द्वारा विकसित 23 मीटर लम्बे 17 टन वजन वाले चार चरणों के रॉकेट एस. एल. वी. 3 से पृथ्वी की कक्षा में स्थापित किया गया। उपग्रह लगभग 99 मिनट में पृथ्वी की कक्षा का एक चक्कर पूरा कर रहा है। एस. एल. वी.-3 की यह दूसरी उड़ान थी। राकेट प्रक्षेपण के आठ मिनट बाद उपग्रह को अलग किया गया। 17 टन वजनी यह राकेट छूटने के तत्काल बाद ही आँखों से ओझल हो गया। इसका पता केवल इलेक्ट्रानिक उपकरणों से ही लग सका जो राकेट प्रक्षेपण के साथ ही तिरुअनंतपुरम श्रीहरिकोटा और अहमदाबाद के केंद्रों में सक्रिय हो गये।

एस. एल. वी. -- 3 में पिछले अनुभवों के आधार पर 18 सुधार किये गये हैं। राकेट की डिजाईन को अधिक उपयुक्त बनाया गया है और इसमें स्वदेशी ईंधन वाल्व लगाये गये हैं। इसमें पिछले राकेट की तुलना में 50 कि.ग्राम ज्यादा ईंधन है।

जहाँ तक रोहिणी डी-2 का सवाल है उसके 3 मुख्य उद्देश्य है —(1) यह भारत में विकसित की गयी तकनीकी की विश्वसनीयता की जाँच करेगा (2) भू प्रतिबिम्बियों की पहचान और उनके वर्गीकरण में मदद करेगा (3) इन प्रतिबिम्बियों की मदद से अपनी कक्षा और पृथ्वी की दूरी निर्धारित करेगा। रोहिणी श्रृंखला के इस तीसरे उपग्रह में दूर संवेदन यंत्र लगे हैं। ये यंत्र वनस्पति, बादल, बंजर भूमि और बर्फ को पहचान सकते हैं। इसमें ऐसी विशेष तकनीक का इस्तेमाल किया गया है जो अंतरिक्ष में इसे स्थिर रखने में मदद देगी।

उपग्रह का ताप नियंत्रण व्यवस्था इसके सभी यंत्रों का तापमान शून्य से 40 डिग्री सेण्टीग्रेट के बीच रखने का कार्य करेगी। इसके ऊर्जा के मुख्य स्रोत 16 सौर ऊर्जा पैनल है। इसके अलावा उपग्रह में वैकल्पिक और आपात स्थिति ऊर्जा स्रोत के रूप में निकल कैडमियम बैटरी है। इसके ऊपरी भाग में सौर ऊर्जा पैनल और एरियल लगे हैं। बीच में दूर संवेदन और नियंत्रण यंत्र लगे हैं तथा निचले भाग मे इसे मुख्य राकेट से जोड़ने तथा अलग करने के यंत्र हैं।

इस उपग्रह में दो संचार व्यवस्थायें हैं। एक पैनल से उपग्रह की आंतरिक दशा का पता चलेगा और दूसरे पैनल से उपग्रह द्वारा भेजे गये फोटो और प्रतिबिम्ब प्राप्त होंगे। इस पैनल को आपातस्थिति में उपग्रह के यंत्रों के परिचालन तथा पृथ्वी से दूरी जानने के लिये इस्तेमाल किया जायेगा।

एस. एल. वी.—3 के प्रक्षेपण से भारत ने मध्यम दूरी वाले प्रक्षेपास्त्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बनाने की क्षमता प्राप्त कर ली है। सुविज्ञ अंतरिक्ष सूत्रों का कहना है कि एस. एल. वी.—3 को इस श्रेणी के प्रक्षेपास्त्र में परिवर्तित किया जा सकता है। इसे मध्यम दूरी वाले प्रक्षेपास्त्र में बदलने के लिये राकेट के चौथे चरण और रोहिणी उपग्रह की जगह बस 400 किलो वजन वाले बम को रखने की जरूरत होगी। पूरे आवरण, इलेक्ट्रानिक यंत्रों और विस्फोट व्यवस्था वाले यंत्रों सहित परमाणु बम का भार 400 किलो से कम ही होगा। लेकिन राकेट के तीन चरणों की शक्ति में वृद्धि कर उसे 5 हजार किलोमीटर तक छोड़ा जा सकेगा।

एस. एल वी.—3 की निर्देश और नियंत्रण प्रणाली लगभग वैसी ही है, जैसी प्रक्षेपास्त्र में होती है। लेकिन प्रक्षेपास्त्र में ऊष्मा से बचाव के लिये कवच की व्यवस्था करनी पड़ती है जो वातावरण में पुनर्प्रवेश के दौरान परमाणु बम की रक्षा करता है। पुनर्प्रवेश के दौरान भार 2600 डिग्री सेण्टीग्रेट तक का ताप सहन कर सकता है। एस. एल. वी.—3 का फाइबर ग्लास का बना ताप कवच 650 डिग्री सेण्टीग्रेट ताप सहन कर सकता है।

ताप कवच तकनीक को अत्यन्त गोपनीय रखा जा रहा है। दूसरी ओर रक्षा प्रयोगशालाओं के वैज्ञानिक विकसित प्रणाली के लिये काम कर रहे हैं जिसे प्रक्षेपास्त्रों पर लागू किया जा सकेगा।

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन ने 1984-85 में 150 किलोग्राम वजन का उपग्रह ले जाने वाले प्रक्षेपक वाहन (एस. एल. वी.) छोड़ने का कार्यक्रम बनाया है। 1987-88 में एक हजार किलोग्राम भार का प्रक्षेपक वाहन छोड़ा जायेगा। ठोस ईंधन वाले एस. एल. बी. राकेटों की प्रयोग श्रृंखला खत्म हो, इससे पहले ही हमारे वैज्ञानिक तरल ईंधन वाले नये राकेट बना रहे हैं जो तीन चार साल में एक टन का उपग्रह आकाश में स्थापित कर देंगे। फ्रांस में प्रशिक्षित भारतीय वैज्ञानिकों ने तरल ईंधन से चलने वाला आरम्भिक ईंजन बना भी लिया है। इसी साल अमेरिका के सहयोग से इनसेट एक बी. नामक संचार उपग्रह कायम करने की भी योजना है। यदि यह सफल हुआ तो रेडियो, टेलीविजन, दूर संचार और प्राकृतिक दुर्घटनाओं की भविष्यवाणी के लिये यह काम आयेगी।

नयी आयात-निर्यात नीति : उद्योगों को नयी रियायतें

नये वित्तीय वर्ष के लिये नयी आयात-निर्यात नीति 15 अप्रैल को लोकसभा में घोषित की गयी। नयी नीति की उत्पादन का आधार मजबूत बनाने और निर्यात के प्रोत्साहन के लिये पिछले वर्ष की तरह उदार रखी गयी है। इसके साथ ही आयात में बचत के हर संभव उपाय किये गये हैं। जिनसे 1983-84 में आयात में लगभग 500 करोड़ रुपये की बचत की आशा है। नये वित्तीय वर्ष में 10500 करोड़ रुपये के निर्यात का लक्ष्य तय किया गया है।

कच्चे माल के आयात में राजकीय व्यापार की प्रमुखता जारी रखी गयी है। इनमें आठ नयी वस्तुएं भी शामिल की गयी है। ग्यारह वस्तुओं के आयात पर रोक लगा दी गयीं है। अनुमोदित शतप्रतिशत निर्यात अभिमुख एककों के लिये खुले सामान्य लाइसेंस का पर्याप्त रूप में विस्तार कर दिया गया है और उसके अन्तर्गत नये पूंजीगत माल, कच्चे माल तथा पुर्जे जिनकी पहले ही अनुमति है, के अलावा इस्तेमालशुदा पूंजीगत माल डीजल, जेनरेटिंग सेट, उपयोग की वस्तुएं तथा पैकिंग सामग्री शामिल कर दी गयी है। पूंजीगत माल के लिये ओ. जी. एल. आयातों की सुविधा उन अन्य एककों को भी उपलब्ध करा दी गयी है जो केवल निर्यात के लिये उत्पादन करते हैं।

निर्यात के लिये खुले सामान्य लाइसेंस में कुछ और यंत्रों को जोड़ा गया है। गन्ने और खांडसारी चीनी के निर्यात पर रोक हटा दी गयी है। इन मदों को खुले सामान्य लाइसेंस पर रख दिया गया है। ओ. जी. एल. की सूची में जोड़ी गयी अन्य मदों में पीनट बटर, गुड़, जौ तथा मिश्रित पशु तथा कुक्कुट खाद्य सामग्री को भी शामिल कर लिया गया है। वास्ताविक उपभोक्ताओं को 80 प्रकार के कच्चे माल, पुर्जों तथा उपभोग वस्तुओं का आयात अब खुले लाइसेंस के अधीन करने की छूट होगी। 13 वस्तुओं के आयात से खुले सामान्य लाइसेंस हटा दिये गये हैं। साथ ही चौदह किस्म के पूंजीगत माल के आयात पर रोक लगा दी गयी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निजी व्यापार की पहल क्षमता का लाभ उठाने हेतु सामान्य मुद्रा क्षेत्र के लिये अरण्डी के तेल के निर्यात की अनुमति गैर सरकारी अभिकरणों को भी दी गयी है। बासमती चावल मुक्त रूप से निर्यात योग्य बना रहेगा।

ऐसे निर्यातकों के लिए प्रोत्साहन की व्यवस्था की गयी है जो स्वेच्छा से अपने आयात सम्पूर्ति लाइसेंसों को वापस कर दे और उस प्रकार निर्यात में प्रयोग में लाये गये अंतर्निविष्ट साधनों की प्रतिपूर्ति के रूप में अत्यधिक प्रतिबंधित और निषिद्ध मदों के आयात के लिये अपनी हकदारी छोड़ें। इस प्रकार वापस की गयी सम्पूर्ति हकदारियों के मूल्य को नीति के अन्तर्गत कतिपय लोगों के लिये सम्बन्धित निर्यातक के निर्यात निष्पादन का हिसाब लगाने में ध्यान रखा जायेगा।

वाणिज्यमंत्री श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह के अनुसार नयी नीति न उदार है न ही निषधात्मक। उनका कहना है कि 1982 में अप्रैल से दिसम्बर की अवधि में विदेश व्यापार में लगभग 4060 करोड़ रुपये के घाटे का अनुमान है। इस अवधि में निर्यात में लगभग 15 प्रतिशत तथा आयात में लगभग 8 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। 1983-84 में निर्यात 15 प्रतिशत बढ़ाने का प्रयास किया जायेगा। सरकार शतप्रतिशत माल निर्यात करने वाले उद्यमों को कुल उत्पादन का 25 प्रतिशत देश में बिक्री की छूट देने पर विचार कर रही है। इसके साथ की इस्पात के आयात में सावधानी बरती जायेगी ताकि इस्पात की उन वस्तुओं का आयात रोका जा सके जो देश में निर्मित होती है। ऐसे स्वदेशी निर्माताओं के लिये भी प्रोत्साहन दिया गया है जो वैध आयात लाइसेंसों के आधार पर प्रतियोगी कीमतों पर स्थानीय रूप में अपने माल की पूर्ति करते हैं। ऐसे लाइसेंस स्वदेशी स्रोतों से अधिप्राप्ति की सीमा तक प्रत्यक्ष आयात के लिये वैध नहीं रहेंगे। नयी नीति में 38 किस्म के कच्चे माल व पुर्जों का आयात नियंत्रित किया गया है।

नयी निति में ऊर्जा संरक्षण अथवा ऊर्जा के वैकल्पिक स्रोतों के लिये अपेक्षित मदों के आयात की व्यवस्था जारी रहेगी। इस उद्देश्य के अनुसार ओ. जी. एल. पर कुछ और मदें शामिल की गयी है।

शारीरिक रूप से विकलांग व्यक्तियों के लिये विशिष्ट साधनों के आयात की अनुमति उदारतापूर्वक दी जाती रहेगी। इसके अलावा निशक्त व्यक्तियों के पुनर्वास के लिये उद्योग स्थापित करने हेतु पूंजीगत सामान के आयात के आवदेन पत्रों पर विशेषतौर से विचार किया जायेगा। इसके अलावा खेलकूद के विकास के लिये अपेक्षित उपकरणों के आयात के लिये अपेक्षाकृत अधिक सरल प्रक्रिया तैयार की गयी है।

कुल मिला कर आयात प्रक्रियायें काफी सरल बनायी गायी हैं। निर्यातकों से लिये आर. ई. पी. लाइसेंसिंग कार्य पूरी तरह से विकेंद्रीकृत कर दिया गया है। प्रवासी भारतीयों के लिये आयात लाइसेंस प्रक्रियाओं की औपचारिकतायें समाप्त कर दी गयी हैं। ओ. जी. एल. के अतर्गत पूंजीगत माल तथा कच्चे माल की प्रारंभिक आवश्यकता का आयात करने की अनुमति दी गयी है। वे पाँच लाख रुपये के मूल्य की कम्प्यूटर प्रणाली का आयात कर सकेंगे। किन्ही इलेक्ट्रानिक उद्योग के लिये वे सारी मशीनरी का आयात कर सकेगे।

नयी आयात निर्यात नीति का सभी क्षेत्रों में स्वागत किया गया हो, ऐसा नहीं है। भारतीय वाणिज्य एवं उद्योग महासंघ के अध्यक्ष श्री अशोक जैन के अनुसार नयी नीति बदली हुई आर्थिक परिस्थितियों के अनुकूल नहीं है। उनका कहना है कि 38 चीजों को खुले सामान्य लाइसेंस (ओ. जी. एल.) से हटा देना तथा 40 चीजों को पाबंदी वाली सूची में ले आने जैसे छोटे मोटे हेर फेर से ही व्यापार घाटे में ज्यादा फर्क नहीं आयेगा। इसके अलावा तकनीक के आयात की दिसा में नयी नीति में कोई खास पहल नहीं की गयी है। उद्योगों की किस्म तथा गुणवत्ता उठाने के लिये अत्याधुनिक तकनीक के आयात की इच्छुक इकाइयों को इसकी अनुमति दी जानी चाहिए।

श्री जैन का कहना है कि नयी नयी नीति से वृद्धि को उल्लेखनीय बढ़ावा नहीं मिलेगा। इसके बिना बढ़ते हुए आयात पर पाबदी लगाने की बात करना आश्चर्यजनक है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'राष्ट्रीय सामायिकी' वस्तुनिष्ठ परीक्षण की

शेष पृष्ठ 40 से

159. तारापुर परमाणु बिजली घर को सम्वर्धित यूरेनियम की आपूर्ति अब कौन कर रहा है ?
(क) सोवियत संघ (ख) पश्चिम जर्मनी
(ग) फ्रान्स (घ) ब्रिटेन

160. अभी हाल में भारतीय रक्षा व्यवस्था के किस अंग ने अपनी स्वर्ण जयन्ती मनायी ?
(क) थल सेना (ख) वायु सेना
(ग) नौ सेना (घ) उपर्युक्त सभी

161. कलकत्ता में आयोजित प्रथम जवाहर लाल नेहरू स्वर्ण फुटबॉल टूर्नामेन्ट का विजेता कौन था ?
(क) चीन (ख) उरुग्वाये
(ग) रूमानिया (घ) इटली

162. पाकिस्तान में आयोजित भारत-पाक टेस्ट क्रिकेट श्रृंखला को किसने जीता ?
(क) भारत (ख) पाकिस्तान
(ग) किसी ने नहीं

163. नवें एशियाड में भारत ने कौन स्थान प्राप्त किया ?
(क) तीसरा (ख) चौथा
(ग) पांचवां (घ) छठा

164. नवें एशियाड में भारत ने क्रमशः कितने स्वर्ण, रजत व कांस्य पदक जीते ?
(क) 17. 19, 20, (ख) 13; 19, 25
(ग) 14, 17, 26 (घ) 13 24, 17

165 नवें एशियाड में भारत को प्रथम स्वर्ण पदक किस खेल में प्राप्त हुआ ?
(क) नौकायन (ख) ऐथलेटिक्स
(ग) घुड़सवारी (घ) गोल्फ

166. क्रिकेट, फुटबॉल व हॉकी का राष्ट्रीय चैम्पियन (पुरुष) क्रमशः कौन है ?
(क) कर्नाटक, बंगाल, पंजाब
(ख) दिल्ली, केरल, सेना
(ग) बम्बई, बंगाल, इण्डियन एयरलाइन्स
(घ) कर्नाटक, बंगाल/गोवा, पंजाब

167. खजान सिंह, चार्ल्स बोरोमियो, कौर सिंह, एम. डी. वालसम्मा, रघुबीर सिंह व लक्ष्मण का नवें एशियाड में प्रदर्शन उल्लेखनीय था। बताइए वे क्रमशः किस खेल से सम्बद्ध है ?
(क) तैराकी, एथलेटिक्स, बॉक्सिग, एथलेटिक्स, घुड़सवारी, गोल्फ
(ख) तैराकी, एथलेटिक्स, भारोत्तोलन, टेबिल टेनिस, पाल नौकायन, गोल्फ

168. भारत के प्रथम व द्वितीय अन्टार्कटिका अभियान दल के नेता क्रमशः डा. एस. जेड. कासिम व बी. के. रैना थे। दोनों दल नार्वेजियाई जहाज 'पोलर सर्किल' द्वारा किस भारतीय बन्दरगाह से अन्टार्कटिका के लिये रवाना हुए थे ?
(क) मंगलूर (ख) बम्बई
(ग) मार्मागोवा (घ) कोचिन

169. भारत के अन्टार्कटिका अभियान का क्या नाम रखा गया था ?
(क) ऑपरेशन साउथ पोल (ख) ऑपरेशन गंगोत्री
(ग) ऑपरेशन गवेषणी (घ) ऑपरेशन डी. ओ. डी

170. अन्टार्कटिका सन्धि के विषय में भारत ने क्या निर्णय लिया हैं ?
(क) भारत ने सन्धि पर हस्ताक्षर कर दिया है
(ख) भारत ने सन्धि पर हस्ताक्षर करने से मना कर दिया है
(ग) मामला विचाराधीन है

171. तेलुगू देशम् किस राज्य का राजनीतिक दल है ?
(क) कर्नाटक (ख) केरल
(ग) आन्ध्र प्रदेश (घ) तमिलनाडु

172. इन्दिरा माउन्ट कहाँ स्थित हैं ?
(क) नन्दा देवी पर्वत (ख) बाम्बे हार्बर
(ग) अन्टार्कटिका (घ) न्यू मूर द्वीप

173. अभी हाल में किस राज्य में निर्वाचन के दौरान भीषण अराजकता की स्थिति उत्पन्न हुई ?
(क) आन्ध्र प्रदेश (ख) असम
(ग) पश्चिम बंगाल (घ) कर्णाटक

174. रुपये का वर्तमान मूल्य (1960 आधार वर्ष = 100) क्या हैं ?
(क) 32 पैसा (ख) 30 पैसा
(ग) 26 पैसा (घ) 21 पैसा

175. सोवियत संघ के सहयोग से कहाँ इस्पात का नया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कारखाना बनाया जा रहा है ?

(क) कुद्रमुख (ख) खेत्री

(ग) विशाखापट्नम (घ) हल्दिया

176. किस राष्ट्र में बसे प्रवासी भारतीय वैज्ञानिकों व तकनीकी विशेषज्ञों की सहायता से भारत में तकनीकी नगर के निर्माण का प्रस्ताव है ?

(क) अमेरिका (ख) ब्रिटेन

(ग) कनाडा (घ) पश्चिमी यूरोपीय राष्ट्र

177. 'लैब टू लैण्ड' (Lab to Land) कार्यक्रम किससे सम्बन्धित है ?

(क) हरित क्रान्ति (ख) श्वेत क्रान्ति

(ग) शिक्षा (घ) सचार

178. किस राज्य ने लोकल बॉडी के निर्वाचन में मताधिकार के लिये वांछित आयु 21 वर्ष से घटा कर 18 वर्ष कर दी है ?

(क) पश्चिम बंगाल (ख) केरल

(ग) कर्नाटक (घ) जम्मू-कश्मीर

179. पत्रकारिता के लिये वर्ष 1982 का संस्कृति पुरस्कार किसको प्रदान किया गया ?

(क) एम. जे. अकबर (ख) चैतन्य कलबाग

(ग) अरुण शौरी (घ) ओल्गा टेलिस

180. भारत ने अपना अनन्य आर्थिक क्षेत्र कितने समुद्री मील निर्धारित किया है ?

(क) 150 (ख) 200

(ग) 250 (घ) 320

181. वर्ष 1981-82 में विश्व के कुल चीनी उत्पादन में भारत का क्या स्थान रहा ?

(क) प्रथम (ख) द्वितीय

(ग) तृतीय (घ) छठा

182. सागर कन्या क्या है ?

(क) बाम्बे हाई में नया तेल कूप

(ख) नया ऑयल रिग

(ग) समुद्री अन्वेषण के लिये अत्याधुनिक जहाज

(घ) बंगाल की खाड़ी में उभरा नया द्वीप

183. मन्डल आयोग ने सरकारी सेवा एवं शैक्षणिक संस्थाओं में पिछड़ी जाति के लिये कितने प्रतिशत आरक्षण का सुझाव रखा है ?

(क) 11% (ख) 17 %

(ग) 21% (घ) 27%

184. दूसरी की प्रस्तावित योजना के अनुसार भारत स्वयं कब तक 1000 कि. ग्रा. तक के उपग्रह को अन्तरिक्ष में प्रतिस्थापित करने में सक्षम हो जायेगा ?

(क) 1983-84 (ख) 1985-86

(ग) 1987-88 (घ) 1994-95

185. हाल में नेल्ली एवं दारांग अमानुषिक हत्याकाण्डों के कारण काफी चर्चित रहे। ये किस राज्य में है ?

(क) पंजाब (ख) केरल

(ग) बिहार (घ) असम

अधुनातन राष्ट्रीय घटनाचक्र

उत्तरमाला

1 ख, 2च, 3 घ, 4घ, 5 ग, 6 ख, 7 घ, 8 क, 9 ग, 10 ख, 11 ख, 12 ख, 13 घ, 14 ख, 15 क, 16 ग, 17 क, 18 ग, 19 क, 20 ग, 21 घ, 22क, 23ग, 24घ, 25ख, 26ग, 27ख, 28ख, 29घ, 30ग, 31क, 32क, 33घ, 34 ग, 35ख, 36ख, 37ग, 38ख, 39क, 40ख, 41ग, 42घ, 43ख, 44ख, 45क, 46घ, 47घ, 48ख, 49ख, 50क, 51ख, 52घ, 53घ, 54घ, 55क, 56ग, 57घ, 58क, 59ग, 60घ, 61क, 62ग, 63घ, 64घ, 65घ, 66ख, 67क,ग, 68क, 69ग, 70ग, 71ख, 72ख, 73घ, 74क, 75ख, 76घ, 77ज, 78ख, 79क, 80घ, 81घ, 82ख, 83ग, 84ग,घ 85ख, 86ग, 87ग,घ 88क, 89ग, 90क, 91ख, 92ग, 93ख, 94ख, 95घ, 96ग, 97ग, 98ग, 99क, 100घ, 101क, 102क, 103ग, 104घ, 105क, 106ख, 107ग, 108घ, 109घ, 110च, 111घ, 112ग, 113घ, 114ख, 115क, 116च 117ग, 118घ, 119घ, 120घ, 121ख, 122च, 123क, 124ग, 125घ,च 126ख, 127ख, 128ख, 129घ, 130क, 131ख, 132घ, 133घ, 134ग, 135ख, 136ग, 137 ख, 138घ, 139ज, 140ख, 141ख, 142घ, 143ग, 144घ, 145ख, 146ज, 147छ, 148ख, 149ग, 150ख, 151क, 152घ, 153ग, 154ख, 155क, 156घ, 157ग, 158ख, 159ग, 160ख, 161ख, 162ख, 163ग, 164ख, 165ग, 166घ, 167क, 168ग, 169ख, 170ग, 171ग, 172ग, 173ख, 174घ, 175ग, 176क, 177क, 178ग, 179ख, 180घ, 181 क, 182 ग, 183 घ, 184 ग, 185घ।● ●

111846

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

'कौन कहां क्या भारत' का शेष कवर पृष्ठ 2 से
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संसद के पदाधिकारी

अध्यक्ष, लोकसभा—	बलराम जाखड़
उपाध्यक्ष, लोकसभा—	जी. लक्ष्मण
सभापति, राज्यसभा—	मोहम्मद हिदायतुल्लाह
उपसभापति, राज्यसभा —	श्याम लाल यादव

सेनाओं के प्रधान

स्थल सेनाध्यक्ष—	जनरल के. बी. कृष्णराव
वायु सेनाध्यक्ष—	एयर चीफ मार्शल दिलबाग सिंह
नौ सेनाध्यक्ष—	एडमिरल ओ. एस. डासन

राज्यों के राज्यपाल तथा मुख्यमन्त्री

राज्य	राज्यपाल	मुख्यमन्त्री
असम—	प्रकाश मल्होत्रा	हितेश्वर साइकिया
आन्ध्र प्रदेश—	के. सी. अब्राहम	एन. टी. रामाराव
जम्मू एवं कश्मीर—	बी. के. नेहरू	डा. फारुख अब्दुल्ला
बिहार—	ए. आर. किदवई	डा. जगन्नाथ मिश्र
गुजरात—	श्रीमती एस. मुखर्जी	माधव सिंह सोलंकी
हिमाचल प्रदेश—	होकिशी सेमा	वी. बी. सिंह
महाराष्ट्र—	इदरीस हसन लतीफ	बसन्त दादा पाटिल
हरियाणा—	गणपति देव तपासे	भजन लाल
मध्य प्रदेश—	भगवत दयाल शर्मा	अर्जुन सिंह
पंजाब—	एन. एन शर्मा	दरबारा सिंह
राजस्थान—	ओ. पी. मेहरा	शिव चरण माथुर
तमिलनाडु—	सादिक अली	एम. जी. रामचन्द्रन
केरल —	पी. रामचन्द्रन	के. करूणाकरन
कर्नाटक —	ए. एन. बनर्जी	आर. के. हेगड़े
उत्तर प्रदेश—	सी. पी. एन. सिंह	श्रीपति मिश्र
प. बंगाल—	बी. डी. पाण्डेय	ज्योति बसु
मेघालय—	प्रकाश मल्होत्रा	कैप्टन डब्लू. ए. संगमा
त्रिपुरा—	एस. एम. एच. बर्नी	नृपेन चक्रवर्ती
मणिपुर—	एस. एम. एच. बर्नी	रिशांग कीशिंग
नागालैण्ड—	एस. एम. एच. बर्नी	एम. सी. जमीर
सिक्किम—	होमी जे.एच. तलयारखान	नरबहादुर भण्डारी
उड़ीसा—	रंग नाथ मिश्र	जे. बी. पटनायक

VISIT WRITE OR RING 52384

ASIA BOOK CO.

9, University Road, Allahabad.

BOOKS FOR P. C. S. EXAM. 1983

1.	एम० पी० श्रीवास्तव	: प्राचीन भारतीय संस्कृति, कला और दर्शन	40.00
2.	Chaudhary	: English Grammer and Translation	10.00
3.	ओम प्रकाश मालवीय	: आधुनिक हिन्दी निबन्ध	15.00
4	ओम प्रकाश मालवीय	: सामान्य हिन्दी	10.00
5	पी० सी० एस० गाइड	: प्राचीन भारतीय संस्कृति	25.00
6.	पी० सी० एस० गाइड	: भारतीय इतिहास I	27.50
7.	पी० सी० एस० गाइड	: भारतीय इतिहास II	27.50
8.	पी० सी० एस० गाइड	: समाजशास्त्र	20.00
9.	पी० सी० एस० गाइड	: हिन्दी साहित्य	12.00
10.	पी० सी० एस० गाइड	: राजनीति शास्त्र	14.00
11.	पी० सी० एस० गाइड	: विधि I	25.00
1	पी० सी० एस गाइड	: विधि II	15.00
13	पी० सी० एस गाइड	: विधि III	21.00
14	पी० सी० एस० गाइड	: भारतीय दर्शन	16.00
15.	पी० सी० एस० गाइड	: समाज कार्य	25.00
16.	पी० सी० एस० गाइड	: प्रारम्भिक गणित	12.00
17.	एम० पी० श्रीवास्तव	: प्राचीन भारतीय नगर	7.50
18.	पी० सी० एस० गाइड	: राजनीतिक संगठन (प्रेस में)	

नोट पुस्तकों के लिए आर्डर करते समय 10/- रु. अग्रिम मनीआर्डर द्वारा भेजें।

रतन कुमार दीक्षित द्वारा 436, ममफोर्डगंज, इलाहाबाद से प्रकाशित तथा उन्हीं के द्वारा चन्द्रा प्रिन्टिङ्ग वर्क्स, 37, एलनगंज, इलाहाबाद में मुद्रित।
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Regd. No. R. N. 33028/77

Postal Regd. No. AD-137
Licence No. W.P.-43

R. GUPTA'S

BOOKS FOR CAREER CONSCIOUS

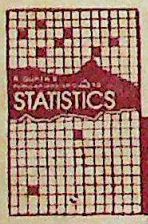

Civil Services *(Prel. Exam.)*

Optionals
Rs. 15 Each

Just released-only book available in market. Rs. 15/- Order today to get the book in time.

- Economics* ● Political Science*
- Geography ● Sociology
- History ● Philosophy
- Syllabus for Civil Service Rs. 6
- Improve your Mental Ability Rs. 10

BANK COMPETITIONS

- Study Material for Aptitude Test and Test of Reasoning Rs. 50
- Bank Probationary Officers' Exam. Guide Rs. 35
- Bank Recruitment Test Guide* *(For Clerks/Typists etc.)* Rs. 18
- Superb Essays* Rs. 10
- Aptitude Test Rs. 10

OTHER BOOKS

NDA Exam Guide.	30.00
CDS Exam. Guide	30.00
Air Force (Technical Trades) Guide	25.00
*Assistants' Grade Exam. Guide**	30.00
*Railway ServiceCommission Exam. Guide**	18.00
*Junior Auditors'/Accountants' Exam. Guide**	30.00
A Dictionary of Idioms & Phrases	10.00
M.B.A. Admission Test Guide	
Objective General English	10.00
Business Letters	7.50
General English for Competitive Exams.	10.00
*Objective Arithmetic**	15.00
*Objective General Knowledge**	15.00
*A Guide to General Knowledge**	7.50
Hand Book of English Grammar	10.00
*Clerks' Grade Exam. Guide**	18.00

• *Hindi medium edition also available*

LATEST GK — FOR A COPY OF THE LATEST GENERAL KNOWLEDGE BOOK, PLEASE SEND M.O. OF RS. 2.50

For VPP, Please Send Rs. 10/- in Advance by M.O.

RAMESH PUBLISHING HOUSE
4457, NAI SARAK DELHI-110006

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

30.00
30.00
25.00
30.00
18.00
30.00
10.00

10.00
7.50
10.00
15.00
15.00
7.50
10.00
18.00

TEST
S. 2.50
nce
USE

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Compiled
1999-2000

11186

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar